CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्तिका

हिन्दी शब्दकोश

आचार्य सुधाकर द्विवेदी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्तिका

हिन्दी शब्द कोश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्तिका

हिन्दी शब्द कोश

काठमाण्डू स्थित भारतीय राजदूतावास
को सौजन्य बाट सप्रेम भेंट
(नेपाल)
With the Compliments of the
Embassy of India in Nepal
Kathmandu

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्तिका

हिन्दी शब्द-कोश

सम्पादक

आचार्य सुधाकर द्विवेदी

संशोधन कर्त्ता

डॉ० बी० एल० त्रिपाठी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

DWIVEDI, ACHARYA SUDHAKAR
VARTIKA HINDI SHABDKOSH
(HINDI-HINDI DICTIONARY)
New Delhi, 1991.

© वर्तिका प्रकाशन

प्रकाशक : वर्तिका प्रकाशन
W—127 ए, ग्रेटर कैलाश-I
नई दिल्ली-110048

संस्करण : 1991 द्वितीय

MAHENDRA SANSKRIT UNIVERSITY

मूल्य : 100·00

मुद्रक : जे० आर० प्रिंटर्स, मौजपुर, दिल्ली-53

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशकीय

हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है, किन्तु इस भाषा को देश के सभी प्रान्तों में लोकप्रिय बनाने के लिए यह आवश्यक है कि इसमें अन्य भाषाओं जैसे व्रज, अवधी आदि से शब्द लेकर इसे और अधिक समृद्ध बनाया जाये।

यों तों हिन्दी में अनेक शब्दकोश हैं, जिनमें संस्कृत मिश्रित हिन्दी के शब्दों के अर्थ दिये जाते हैं, किन्तु इस कोश की एक विशेषता यह है कि इसमें व्रजभाषा, अवधी एवं अन्य कुछ क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों का समावेश कर इसे अधिकाधिक उपयोगी बनाया गया है और इसी कारण यह कोश आधुनिक एवं प्राचीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले जिज्ञासु पाठकों एवं शोधकर्त्ताओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।

यह कोश हिन्दी जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य सुधाकर द्विवेदी द्वारा सम्पादित किया गया था—किन्तु यह नया संस्करण पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्द्धित है।

किसी भी कोश के लिए "सर्वश्रेष्ठ" होने की घोषणा तो नहीं की जा सकती, फिर भी इस कोश की विशेषता एवं महत्व यह है कि इसमें शामिल शब्दों के अर्थ पूर्ण रूप से स्पष्ट करने के लिए इस प्रकार के उदाहरण भी दिये गये हैं कि वह शब्द किस पुस्तक से लिये गये हैं। संशोधनकर्त्ता ने इसे और भी विशिष्ट बनाने के लिए कई अन्य सूत्रों एवं संस्कृत के कुछ कोशों इत्यादि से आवश्यकतानुसार सहायता भी ली है।

इसके अतिरिक्त इस कोश में संविधान परिषद . स्वीकृत हिन्दी-अंग्रेजी, एवं अंग्रेजी-हिन्दी शब्दावली को भी शामिल किया गया है। हमे पूरा विश्वास है कि पाठक इस कोश की इन सभी विशेषताओं को उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक पायेंगे।

—प्रकाशक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संकेतों की सूची ।

कोश में जिन शब्दों को लिया गया उनकी संकेतों की तालिका नीचे दी जा रही है जिसमें कोश के अध्येताओं को सुविधा रहेगी ।

अ०—अव्यय
अक्रि०—अकर्मक किया
अख०—अखरावट
इन्द्रा—इन्द्रावती
उदे०—उदाहरणार्थ देखो
ककौ०—कविताकौमुदी
कबीर०—कबीर ग्रंथावली
कविता०—कवितावली
के०—केशवदासकी रामचन्द्रिका
क्रिवि०—क्रिया-विशेषण
गिरिधर०—गिरिधराय
गीता०—गीतावली
चाचा हित०—चाचा हितवृन्दावन दास
छत्तीस०—छत्तीसगढ़ी बोली
छत्र०—छत्रप्रकाश
छत्र०—छत्रसाल ग्रंथावली
जान०—जानकीमङ्गल
दे०—देखो
दोहा०—दोहावली
नन्द०—नन्ददास
नागरी०—नागरीदास
प०—पद्मावत
पदमा०—पद्माकर
पद्मा०—पद्माभरण
पाठ०—पाठभेद
पा० मं०—पार्वतीमङ्गल
पु०—पुल्लिग
बि०—बिहारीरत्नाकर
बुँदेल०—बुंदेलखण्डी बोली
भावि०—भावविलास, देवकृत
भू०—भूषण ग्रन्थावली
भ्र०—भ्रमरगीत सार
मति०—मतिराम ग्रन्थावली
मुद्रा०—मुद्राराक्षस
रघु०—रघुराजसिंह कृत रामस्वयम्वर
रतन०—रतनहजारा
रवि०, रस वि०—रसविलास, देवकृत
रस०—रसराज, मतिराम कृत
रहीम०—रहीम कवि
राम०—केशवदासकी रामचन्द्रिका, प्र०भा
रामभू०—रामचन्द्र-भूषण, लछिराम कृत
रामरसा०—रामरसायन
रामा—रामायण
रा० ला० न०—रामलला नहछू
ललित०—ललित-ललास, मतिराम कृत
ललित कि०—ललित किशोरी
वि०—विशेषण
विद्या०—विद्यापति -पदावली
विन०—विनयपत्रिका, तुलसीकृत
वृन्द स०—वृन्द सतसई
व्रज०—व्रजमाधुरी सार
सक्रि०—सकर्मक क्रिया
सत्यना०—सत्यनारायण कवि
सर्व०—सर्वनाम
साखी०—कबीरसाखी संग्रह
सुजान०—सुजानचरित्र, सूदनकृत
सुदामा०—सुदामाचरित्र
सुन्द—सुन्दरविलास
सू०—सूरसागर संक्षिप्त
सू मदन०—सूरदास मदनमोहन
सूबे०—सूरसागर संक्षिप्त
सूवि०—सूरकृत विनयपत्रिका
सूरा०—सूर-रामायण
सूसु०—सूरसुधा
स्त्री०—स्त्रीलिंग
हरि०—हरिश्चन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट

भारतीय संविधान परिषद् द्वारा स्वीकृत

अक्षम—Incompetent
अक्षमता—Incompetency
अग्रिम धन—Advance
अतिक्रमण—Violation
अतिरिक्त न्यायाधीश—Judge, extra
अतिरिक्त लाभ—Excess profit
अधिकरण—Tribunal
अधिकार—Right
अधिकार अभिलेख—Record of rights
अधिकार पृच्छा—Quo warranto
अधिग्रहण—Requisition
अधिनियम (n.)—Act
अधिनियम (v.)—Enact
अधिपत्र—Warrant
अधिभार—Sur charge
अधिमान—Preference
अधिवक्ता—Advocate
अधिवास—Domicile
अधिवासी—Domiciled
अधिष्ठाता—Presiding officer
अधिसूचना—Notification
अधीक्षक—Superintendent
अधीक्षण—Superintendence
अधीन—Subject
अधीन अधिकारी—Subordinate Officer
अधीन न्यायालय—Subordinate Court
अध्यक्ष—Speaker
अध्यादेश—Ordinance
अध्यासीन होना—Preside
अनन्य क्षेत्राधिकार—Exclusive juridiction
अनर्हता—Disqualification
अनर्हीकरण—Disqualify
अनियमितता—Irregularity
अनुकूलन—Adaptation
अनुच्छेद—Article
अनुज्ञप्ति—Licence
अनुज्ञा (v.)—Permit
अनुज्ञा (n.)—Permission
अनुदान—Grant
अनुदेश—Instruction
अनुन्मुक्त—Undischarged
अनुपाती प्रतिनिधित्व—Proportional representation
अनुपूरक—Supplementary
अनुपूरक अनुदान—Supplementary grant
अनुमति—Assent
अनुमोदन (v.)—Approve
अनुमोदन (n.)—Approval
अनुशासन—Discipline
अनुशासन संबंधी—Diciplinary
अनुशक्ति—Adherence
अनुष्ठान—Exercise
अनुसमर्थन(n.)—Ratification
अनुसमर्थन (v.)—Ratify
अनुसंधान (v)—Investigate
अनुसंधान (n.)—Investgation
अनुस्मारक—Reminder
अनुसूचित क्षेत्र—Schedule area
अनुसूचित जनजाति-Scheduled Tribe
अनुसूचित जाति—Sheduled Caste

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुसूची—Schedule
अंतर्ग्रंथन—Involve
अंतर्ग्रस्त—Involved
अंतर्देशीय जलपथ—Inland water-way
अंतर्राष्ट्रीय—International
अंतःकरण—Conscience
अन्यदेशीय—Aliens
अन्यसंक्रामण—(v.) Alienate
अन्यसंक्रामण (n.)—Alienation
अपमान लेख—Libel
अपमानवचन—Slander
अपमिश्रण—Adulteration
अपरन्यायाधीश—Additional judge
अपराध—Crime
अपराध—Offence
अपराधी—Criminal
अपवर्जन (v.)—Exclude
अपवर्जन (n.)—Exclusion
अपात्र—Ineligible
अपात्रता—Ineligibility
अपील—Appeal
अपील न्यायालय—Court of Appeal
अप्रवृत्त—Inoperative
अभिकथन—Allegation
अभिकरण—Agency
अभिकर्ता—Agent
अभिमत—Opinion
अभियाचना—Demand
अभियुक्त—Accused
अभियुक्ति—Charge
अभियुक्ति—Prosecution
अभियोग—Accusation
अभियोजन—Prosecution
अभियोज्य दोष—Actionable wrong
अभिरक्षा—Custody
अभिलेख—Record
अभिलेख न्यायालय—Court of record
अभिशस्त—Convicted
अभिशस्ति—Conviction
अभिसमय—Convention
अभ्यर्थी—Candidate
अमान्य—Invalid
अयुक्त प्रभाव—Undue Influence
अर्जन—Acquisition
अर्जी—Petition
अर्थ करना—Construe
अर्थदंड—Fine
अर्हता—Qualifiction
अल्पसंख्यक वर्ग—Minority
अल्पीकरण—Derogation
अवधिदान—Adjourn
अवमान—Contempt
अवयस्क—Minor
अविभक्त कुटुंब—Joint family
अविभक्त परिवार—Joint family
अविश्वास प्रस्ताव—Motion of no confidenc
अवैध—Illegal
अवैधाचरण—Illegal practice
असमर्थता—Incapacity
असमर्थतानिवृत्ति वेतन—Invalidity pension

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

असैनिक–Civil
असैनिक शक्ति–Civil power
अहितकारी–Detrimental
अंकन–Endorse
अंकित–Endorsed
अंग–Unit
अंश–Share
अंशदान–Contribution

आ

आकलन–(v.)–Credit
आकस्मिकतानिधि–Contingency Fund
आचार–Custom
आजादी–Freedom
आजीविका–Callings
आजीविका कर–Callng tax
आज्ञप्ति–Decree
आदेश–Order
आदेशिका–Process
आनुषगिक–Consequential
आपराधिक–Criminal
आपात–Emergency
आपाती–Emergent
आपातकी उद्घोषणा–Proclamation of emergency
आभार–Obligation
आय कर–Incame tax
आयात शल्क–Import duty
आयुक्त–Commissioner
आयोग–Commission
आरक्षक–Police
आरक्षक बल–Police Force
आरोप–Allegation
आरोपण करना–Impose
आरोपण–Levy
आर्थिक–Economic
आर्थिक क्षेत्राधिकार–Pecuniary jurisdiction
आवर्तक–Recurring
आवारागरदी–Vagrancy
आवेदनपत्र–Application
आस्ति–Property
आहिंडन–Vagrancy
आह्वान–Summons
आंक–Estimate

इ

इच्छापत्र–Will
इच्छापत्रहीन–Intestate
इच्छापत्रहीनत्व–Intestacy

उ

उगाहना–Levy (v.)
उच्चतम न्यायालय–Supreme Court
उच्च न्यायालय–High Court
उत्तराधिकार–Succession
उत्तराधिकार शुल्क–Suceession duty
उत्तराधिकारी–Successor
उत्तरवादिता–Liability
उत्पादन–Production
उत्पादन शुल्क–Excise duty
उत्प्रवास–Emigration
उत्प्रेषण लेख–Certiorari
उद्ग्रहण–Levy (n.)
उद्घोषणा–Proclamation
उद्भव–Descent

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उद्यम–Enterprise
उद्योग–Industry
उधार–Loan
उधारग्रहण–Borrowing
उन्मत्त–Lunatic
उन्माद–Lunacy
उन्मुक्ति–Immunity
उपकर–Cess
उपक्रमण–Initiate
उपचार–Remedy
उपजीविका–Occupation
उपदान–Gratuity
उपदेश–Advisory
उपनिर्वाचन–Bye election
उपनिवेशन–Colonization
उपबन्ध–Provision
उपभोग–Consumption
उपराज्यपाल–Lieutenant Governor
उपराष्ट्रपति–Deputy president
उपराष्ट्रपति–Vice President
उपलब्धि–Emolument
उपविभाग–Subdivison
उपवेशन–Sitting
उपविधि–Bye-law
उपसभापति–Deputy Chairman
उपस्थित होना–Appear
उपाध्यक्ष–Appear
उपाध्यक्ष–Deputy Speaker
उपायुक्त–Deputy Commissioner
उपायोजन–Employment
उपार्जित–Accued
उम्मेदवार–Candidate
उल्लंघन–Contravention

ऋ

ऋण–Debt
ऋणग्रस्तता–Ihdebtedness
ऋणपत्र—Debenture

ए

एकक—Unit
एकल निगम—Corporation, Sole
एकलसंक्रमणीय मत—Single trans erable vot
एकस्व—Patent

क

कटक—Cantonment
कणकु—Account
कदाचार—Misbehaviour
कब्जा—Possession
कम्पनी—Company
कर—Tax
करार—Agreement
कर्तव्य—Duty
कर्तुमभिप्रेत–Purporting to be done
कर्मचारीवृंद—Staff
कानून संबंधी—Legal
कारबार—Business
कारागार—Prison
काराबंदी—Prisoner
कारावास—Imprisonment
कर्मिक संघ—Trade Union
कार्य—Business
कार्यकारी—Acting
कार्यपालिका शक्ति—Executive power
कार्यपालिका--Executive

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कालदान—Adjonn
कावल—Custody
कांजी हौस—Cattle pound
किराया—Fare
किसान—Tenant
कुर्की—Attach
कृतिस्वाम्य—Copyright
कृत्य—Function
केंद्रीय गुप्तवार्ता विभाग—Central Intelligence Bureau
कैद—Imprisonment
कैदी—Prisoner

क्ष

क्षति—Injury
क्षतिपूर्ति बिल—Bill of indemnity
क्षमताशाली—Competent
क्षमा—Pardon
क्षेत्र—Area
क्षेत्राधिकार—Jurisdiction

ख

खनिज—Mineral
खनिबसित——Mining setlement
खनिजसंपत्—Mineral resources
खंड—Clause

ग

गजट—Gazette
गणना—Account
गणनानुदान—Vote on account
गणनापरीक्षा—Audit
गणपूर्ति—Quorum
गवेषणा—Research
गुप्तपत्र—Ballot
ग्रामपरिषद्—Village Council
ग्राह्य—Admissibe

घ

घोषणा—Declaration

च

चट्टम—Act (n.)
चर्चा—Discussion
चल अर्थ—Currency
चित्तविकृति—Unsoundness of mind
चिह्न—Mark
चुकती—Agreement
चुने हुए—Elected
चुंगी—Octroi
चेक—Cheque

छ

छावनी—Cantonment

ज

जगह—Post
जनगणना—Census
जनजाति—Tribe
जनजाति क्षेत्र—Tribal Area
जनजाति परिषद्—Tripal Council
जलदस्युता—Piracy
जलप्रांगण—Territorial waters
जामिन—Bail
जाँच करना—Inquire
जिला—District
जिलागण—District Board
जिलानिधि—District Fund

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिला न्यायालय—District Court
जिलापरिषद्—District Council
जिलामंडली—District board
जीविका—Livelihood
जुआ—Gambling
जुर्माना किया—Fined
जेल—Prison
ज्वारजल—Tidal waters

ज्ञ

ज्ञाप—Memo
ज्ञापन—Memorandum

ट

टंकण—Coinage
ठीच—Attach
ट्राम—Tramway
ट्रामगाड़ी--Tam car

ड

डिक्री—Decree

त

तत्समय—For the time being
तत्स्थानी—Corresponding
तदर्थ—Ad hoc
तीर्ण--Passed
तीर्व—Assessment
तृतीय पठन—Third reading

थ

थाना—Police Station

द

दत्तक ग्रहण—Adoption
दत्तक स्वीकरण—Adoption
दस्तकारी—Handicraft
दस्तावेज—Document
दंड देना—Punish
दंड न्यायालय—Criminal Court
दंडविधि—Criminal law
दंड संबंधी-Criminal
दंडादेश-Sentence
दंडाधिकारी न्यायालय-Magistrate's Court
दाखला-Entry
दातव्य-Charities
दाय-Inheritace
दायित्व-Liability
दावा-Claim
दिवाला-Bankruptcy
दीवानी-Civil
दीवानी अदालत-CiviltCourt
दृष्टांक ·Visas
देय-Fee
देशीयकरण-Naturalisation
दोघरा-Bi-cameral
दोष प्रमाणित-Convicted
दोषसिद्धि-Conviction
दोषारोप-Charge (cr.)
द्यूत-Gambling
द्विगृही-Bi-cameral
द्वितीय पठन-Second reading

ध

धन-Money
धनविधेयक-Money-bill
धर्म-Faith
धर्मस्व-Endowments
धंधा-Occupation

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न

नक्श–Design
नगरक्षेत्र–Municipal area
नगर ट्रामवे–Municipal Tramway
नगरनिगम-Municipal Corporation
नगरपालिका–Municipality
नगररथ्यायान–Municipal Tramway
नगरसमिति–Municipal Committee
नागरिकता–Citizenship
नामनिदर्शन–Nominate
नावधिकरण–Admirolty
निकाय–Body
निक्षेप निधि–Sinking Fund
निखात निधि–Treasure trove
निगम–Corporation
निगमकर–Corporation tax
निगमन—Incorporation
निगमनिकाय—Body Corporate
निदेश—Direction
निधि—Fund
निबद्ध—Registered
निबंधन—Registration
निबंधन—Term
नियंत्रक महालेखापरीक्षक—Controller and Auditor General
नियंत्रण—Control
नियम—Rule
नियुक्ति—Appointment
नियाजक उत्तरवादिता—Employer's liability
नियोजक-दातव्य–Employer's liability
निरसन—Repeal
निराकरण करना—Abrogate

निरोध—Custody
निरोधा—Quaranline
निर्णय—Judgment
निर्णायक मत—Castiug vote
निर्देश—Reference
निर्धारण—Asscssment
निर्बंधन—Restriction
निर्माण—Manufacture
निर्यात—Export
निर्यात कर—Export tax
निर्यात शुल्क—Export duty
निर्योग्यता—Disability
निर्वचन—Interpretation
निर्वसीयत—Intestate
निर्वसीयता—Intestacy
निर्वहन—Discharge
निर्वाचकगण—Eltctoral college
निर्वाचक नामावली—Electural rolls
निर्वाचन (v.)—Elect
निर्वाचन(n.)—Election
निर्वाचन अधिकरण-Election Tribunal
निर्वाचन आयुक्त—Election Coumissioner
निर्वाचन क्षेत्र—Constituency
निर्वाचित—Elected
निर्वाह मजूरी—Living wage
निलंबन (v.)—Suspend
निलंबन (n.)—Suspension
निवारक निरोध—Preventive detention
निवृत्त होना—Retire
निवृत्ति—Retirement
निवृत्ति वेतन—Pension

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निषेध—Forbid
निषिद्ध—Forbidden
निष्ठा—Allegiance
नोंदना—Register (v)
नौकरी—Employment
नौकरी कर—Employment tax
नौकाधिकरण—Admmiralty
नौ परिवहन—Navigation
नौ सेना संबंधी—Naval
न्यस्त करना—Entrust
न्यायपालिका—Judiciary
न्यायाधिकरण—Tribunal
न्यायाधिपति—Justice
न्यायाधीश—Judge
न्यायालय—Court
न्यायालय अवमान--Contempt of Court
न्यायिक कार्यरीति--Judicial proceeding
न्यायायिक कार्यवाही—Judicial proceeding
न्यायिक मुद्रांक—Judicial stamps
न्यायिक शक्ति—Judicial power
न्यास—Trust
न्यूनन—Abridge

प

पक्ष—Party
पण लगाना—Bet
पण क्रिया—Betting
पण्यचिह्न—Merchandise Mark:
पत· Credit (n.)
पत्तननिरोधा—Port quarantine
पथकर—Toll
पथनियम—Rule of the roade
पद—Post
पद—Office
पदच्युत करना—Dismiss
पदत्याग—Resignation
पदधारी—Incumbent of an office
पदाधिकारी—Officer
पदावधि—Tenure
पदावास—Official residence
पदेन—Ex-officio
परकीकरण—Alienation
परमादेश—Mandamus
परंतु—Provided
परमिट—Permit (n.)
परामर्श Consultation
परित्यजन—Abandonment
परित्याग--Abandonment
परित्राण—Saleguard
परिपालन—Implement
परिप्रश्न—Inquiry
परिलब्धि—Perquisite
परिवहन—Transport
परिवहन—Carriage
परिव्यय—Cost
परिषद्—Council
परिषद् आदेश—Order in Council
परिसीमन—Delimitation
परिसीमा—Limitation
परिहार--Remission
परिहार विधेयक—Bill of indemnity
परोक्षनिर्वाचन—Indirect election
पर्यवेक्षण--Inspection
पर्यालोचन—Deliberate
पशुअवरोध—Cattle Pounds

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंचाट—Award
पंजी—Register
पंजी—Registered
पंजीबंधन—Registration
पंजीयन—Registration
पात्रता—Eligibility
पात्र—Eligible
पारपत्र—Passport
पारण—Pass
पारित—Passed
पारितोषिक—Reward
पारिश्रमिक—Remuneration
पावती—Receipt (paper)
पीठासीन होना—Preside
पीठासीन पदाधिकारी—Presiding officer
पुनरीक्षण—Revision
पुनर्विचार न्यायालय—Court of Appeal
पुनर्विलोकन—Review
पुरःस्थापन—Introduce
पुरःस्थापना—Introduce
पूर्त—Charity
पूर्त धार्मिक धर्मस्व—Charitable and religious endowment
पूर्त संस्था—Charitable institution
पूर्व मंजूरी—Previous sanction
पूर्व संमति—Previous consent
पूंजी—Capital
पृष्ठांकन—Endorse
पृष्ठांकित—Endorsed
पेशगी—Advance
पेशा—Profession
पोषण—Maintenance
पोषण करना—Maintain
पौरत्व—Citizenship
प्रकट करना—Discovery
प्रकाशन—Publication
प्रक्रिया—Procedure
प्रख्यापन—Promulgate
प्रग्रहण—Arrest
प्रचलित—Current
प्रचार करना—Propagate
प्रतिकर—Compensation
प्रतिकूल असर डालना—Affect prejudicially
प्रतिकूलता—Contravention
प्रतिकूल प्रभाव—Prejudice
प्रतिकूल प्रभाव डालना—Affect prejudicially
प्रतिकृति—Copy
प्रतिज्ञान—Affirmation
प्रतिनिधि—Representative
प्रतिनिधित्व—Representation
प्रतिपत्री—Proxy
प्रतिपालक अधिकरण—Court of wards
प्रतिभूति—Security
प्रतिरक्षा—Defence
प्रतिलिपि—Copy
प्रतिलिप्यधिकार—Copyright
प्रतिवेदन कर—Report
प्रतिव्यक्ति कर—Capitation tax
प्रतिषिद्ध—Prohibited
प्रतिषेध—Prohibition
प्रतिशल्क—Countervailing duties
प्रतिषेधलेख—Writ of prohibition
प्रतिसंहरण—Revoke
प्रत्यक्ष निर्वाचन—Direct election

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्यय—Credit
प्रत्ययपत्र—Letters of credit
प्रत्ययानुदान—Votes ot credit
प्रत्यर्पण—Extradition
प्रत्याभूति—Guarantee
प्रथम पठन—First reading
प्रथम सदन—Lower House
प्रधान मंत्री—Prime Minister
प्रपत्र—Form
प्रभाव—Influence
प्रभु—Sovereign
प्रभुता—Sovereignty
प्रमाणपत्र—Certificate
प्रमाणीकरण—Authentication
प्रमोदकर—Enterta'nment tax
प्रयुक्ति—Application
प्रयोग—Application
प्रयोग—Exercise
प्रविलंबन—Reprieve
प्रवरसमिति—Select
प्रविष्टि—Entry
प्रवेश—Access
प्रवेशन—Accession
प्रव्रजन—Migration
प्रशांति—Tranquillity
प्रशासन—Administration
प्रशासन—Administer
प्रशासन कार्यक्षमता—Efficiency of administration
प्रशासन कार्यपटुता—Efficieney of administration
प्रशासनीय—Administrative
प्रशासनीय कृत्य—Administrative functions
प्रशासित—Administered
प्रशिक्षण—Training
प्रसंग—Context
प्रसारण—Broadcosting
प्रसूति साहाय्य—Maternity relief
प्रसूति सहायता—Maternity relief
प्रस्ताव—Motion
प्रस्तावना—Preamble
प्रस्थापना—Proposal
प्राक्कलन—Estimate
प्रादेशिक आयुक्त—Regional Commissioner
प्रादेशिक क्षेत्राधिकार—Territorial jurisdiction
प्रादेशिक निधि—Regional Fund
प्रादेशिक निर्वाचनक्षेत्र—Territorial constituency
प्रादेशिक परिषद्—Regional Council
प्रादेशिक भार—Territorial charges
प्राधिकार—Authority (ab.)
प्राधिकारी—Authority (con.)
प्राधिकृत—Author'sed
प्रांत—Province
प्रापण—Accrue
प्राप्त होना—Accrue
प्राप्ति—Receipt
प्रामिसरीनाट—Promissory note
प्रासंगिक—Incidental
प्रोद्भवन—Accrue
प्रोद्भूत—Accrued

फ

फरियाद—Complaint

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फारम—Form
फीस—Fees
फेडरल न्यायालय—Federal Court

ब

बटवारा—Allocation
बनाये रखना—Maintain (v.)
बनाये रखना—Maintenance (v.)
बंदी करना—Arrest
बंदी प्रत्यक्षीकरण—Habeas Corpus
बंधक—Mortgage
बल—Forces
बहिःशुल्क—Custom duty
बहुमत—Majority
बाँट—Allotment
बिल—Bill
बीमा—Insurance
बीमापत्र—Policy of insurance
बेकारी—Unemployment
बैठक—Sitting
बैंक—Bank
बोर्ड—Board

भ

भत्ता—Allowance
भविष्य निधि—Provident Fund
भर्ती—Recruitmeut
भागिता—Partnership
भाटक—Rent
भाड़ा—Fare
भार—Charge
भारग्रस्त संपदा-Fucumbered estates
भारत सरकार-Government of India
भारित करना—Charge
भू अभिलेख—Land Records
भूधृति—Land tenures
भूराजस्व - Land Revenue
भ्रष्ट—Corrupt
मजूरी—Wage
मंडल—District
मंडल न्यायालय—Court, District
मंडलाधीश—Deputy Commissioner
मंडलायुक्त-Deputy Commissioner
मंडली—Board
मत—Vote
मतदाता—Voter
मतदान—Voting
मताधिकार—Suffrage
मतिमांद्य—Dullness
मध्यस्थ न्यायाधिकरण—Arbitral tribunal
मध्यस्थ—Arbitrator
मध्यस्थ निर्णय—Arbitration
मनोदौर्बल्य—Mental weakness
मनोनयन—Nominate
मनोवैकल्य—Mental defficiency
मंत्रणा—Advice
मंत्रणा देना—Advise
मंत्रणा परिषद् - Advisory Council
मंत्रि परिषद् - Council of Ministers
मंत्री—Minister
मरण शुल्क—Death duty
महाजनी—Banking
महाधिवक्ता—Advocate General
महान्यायवादी—Attorney General
महाप्रशासक-Administrator General
महालेखापरीक्षक—Auditor General
महाभियोग—Impeachment
मंजूरी Sanction
मानवक्रय—Traffic in human beings
मानहानि—Defamation

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मान्यता—Validity
मार्गप्रदर्शन - Guidance
माँग—Demand
मीन क्षेत्र— Fishery
मीनपरणी— Fishery
मुक्त— Exempt
मुखिया— Headman
मुख्य— Chief
मुख्य आयुक्त Chief Commissioner
मुख्य निर्वाचन आयुक्त-Chief Election-Commissioner
मुख्य न्यायाधिपति— Chief Justice
मुख्य न्यायाधीश —Chief Judge
मुख्यमंत्री— Chief Minister
मुद्रा -- Seal
मुद्रांक शुल्क—Stamp duty
मूलधन मूल्य— Capital value

य

यथास्थिति—As the case may be
यंत्रशास्त्र—Engineering
याचिका—Petition
योगकाल— Joining time

र

रक्षण Reservation
रक्षाकवच —Safeguard
रक्षित वन—Reserved forest
रज्जुयान —Tramcar
रद्द करना —Annulment
रसीद—Reccipt
राजधानी—Escheat
राजनय—Diplomcy
राजस्व—Revenue
राजस्व न्यायालय--Revenue Court
राज्य—State
राज्य की सरकार-Government of a State
राज्यक्षेत्र—Territory
राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन-Extra territorial operation
राज्यनिधि—State Fund
राज्यपरिषद्—Council of States
राज्यपाल—Governor
राज्यसूची—State List
राय—Opinion
राशि—Amount
राष्ट्र—Nation
राष्ट्रऋण—Public debt
राष्ट्रपति—President
राष्ट्रपतिप्रसाद पर्यंत—During the Pleasure of the president
राष्ट्रीय राजपथ—National highways
राष्ट्रों की विधि—Laws of Nations
रिक्तता—Vacancy
रिक्त स्थान—Vacancy
रिक्ति—Vacancy
रिक्थ—Property
रुकावट—Bar
रूढ़ि—Custom
रूप—Form
रूपभेद—Modification
रूपांकन—Design
रेल—Railway

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ल

लगान—Rent
लगाना–Impose
लघूकरण--Commute
लंबमान—Pending
लंबित—Pending
लाइसेंस—Licence
लागत--Cost
लागू होना—Application (n)
लाभ--Profit
लाभांश—Dividend
लिखत—Instrument
लिखित सूचना—Notice in writing
लेख—Writ
लेखा—Account
लेखा परीक्षा—Audit
लेखानुदान—Votes on accounts
लेख्य—Document
लेना देना—Dealings
लोक—People
लोक अधिसूचना–Public notification
लोकसभा—House of the people
लोकसमाज—Community
लोकसेवायें—Public Services
लोकसेवायोग–Public Service Commission
लोकस्वास्थ्य—Public helth

व

वकालत करना—plead
वकील—Pleader
वचनपत्र—Promissory note
वचनबंध—Engagement
वणिक् पोत—Merchant marine
वयस्क—Major
वयस्क मताधिकार—Adult suffrage
वरी—Duty
वसीयत—Will
वस्तुभाड़ा—Freight
वहनपत्र—Bill of lading
वंटन--Allot
वाक स्वातंत्र्य—Freedom of Speech
वाणिज्य—Commerce
वाणिज्यदूत—Consul
वाणिज्य संबंधी—Commercial
वाद—Cause
वादपाद—Issue
वादप्रतिवाद—Controversy
वादमूल—Cause of action
वादविवाद--Debate
वादविषय—Subject matter
वायदा बाजार—Future market
वायुपथ—Airways
वार्षिकी—Annual
वार्षिक चित्तविवरण—Annual financial statement
वार्षिक—Annuities
विकलन—Debit (v)
विकृतचित्त—Unsound mind
विक्रय—Sale
विक्रयकर—Sales tax
विघटन—Dissolution
विचार--Consideration
विचारार्थ प्रस्ताव-Motion for consideration
वितरण—Distribution
वित्त—Finance
वित्त विधेयक- Finance bill
वित्तायोग—Finance Commission
वित्तीय—Financial

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वित्तीय भार—Financial obligation
वित्तीय विवरण–Financial statement
विदेशी कार्य—Foreign Affairs
विदेशी विनिमय—Foreign exchange
विधान—Legislation
विधानपरिषद्—Legislative Council
विधानमंडल—Legislature
विधानसभा–Legislative Assembly
विधायिनी शक्ति–Legislative power
विधि—Law
विधिप्रश्न—Question of law
विधिमान्य—Legal tender
विधियों का समान संरक्षण–Equal protecion of law
विधिसंबंधी—Legal
विधेयक—Bill
विनियम—Regulation
विनियम—Regulation
विनिमयपत्र—Bill of cxchange
विनियोग—Appropriation
विनियोग विधेयक–Appropriation bil
विनिश्चय—Decision
विभाग—Section
विभाजन—Distribution
विभेद—Discrimination
विमति—Dissent
विमान परिवहन—Air navigation
विमानयातायात—Air traffic
विमानबल—Air Forces
विमोचन—Redemption
विमोचनभार–Redemption charges
वियुक्त—Deprive
विराम—Respite
विरुद्ध—Repugunant
विरोध—Repugunance
विरोध—Rcpugunancy
विल—Will
विलेख—Deea
विवरणी—Return
विवाद—Dispute
विवाहविच्छेद—Divorce
विशेषाधिकार—Privilege
विश्वासप्रस्ताव—Motion of confidence
विश्वास का अभाव–Want of confidence
विषय—Subject
विसर्जनDisperse
विसंगत—Irrelevant
विस्तार—Extend
विस्फोटक—Explosive
वीसा—Visas
वृत्ति—Profession
वृत्तिकर—Profession tax
वृद्धि—Interest
वेतन—Pay
वेतन—Salary
वेलई—Employment
वेलाजल—Tidal waters
वैदेशिक कार्य—Ezternal Affairs
वोटदाता—Voter
वंचित करना—Deprive
व्यक्ति—Person
व्यपगत होना—Lapse
व्यय—Expenditure
व्यवसाय—Vocation
व्यवस्था—Order
व्यवहार—Civil
व्यवहार—Dealings
व्यवहार अदालत—Civil Court
व्यवहारालय—Civil Court
व्यवहार न्यायालय—Clvil Court
व्यवहार प्रक्रिया—Civil Procedure
व्यवहार प्रक्रिया संहिता–Civil Procedure Code

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यवहार लाना—Sue
व्यवहारवाद—Civil Suit
व्यवहारविषयक अपकृत्य–Sivil Wrongs
व्यवहारविषय दोष—Civil wrongs
व्यवहारशक्ति—Civil power
व्याख्या—Explanation
व्यापार—Trade
व्यापारकर—Trades Tax
व्यापारचिह्न—Trade mark
व्यापारसंघ—Trade Union
व्यावृत्ति—Savings

श

शक्ति—Power
शर्त—Condition
शलाका—Ballot
शलाकापद्धति—Ballot
शांति—Peace
शाश्वत उत्तराधिकार— Perpetual succession
शासक – Ruler
शासन— Governance
शासन— Govern
शासन— Government
शासी निकाय— Governing body
शिविर— Camp
शिशु—Infant
शिस्त—Diaciplinary
शुल्क—Duty
शुल्कसीमांत— Custom Frontiers
शून्य—Void
शेरिफ— Sheriff
शोधना— Research
श्रद्धा—Faith
श्रम—Labour
श्रमिक संघ—Labour Union
श्रेष्ठि चत्वर—Stock Exchange

स

सक्षम—Competent
सत्र—Session
सत्रन्यायालय—Session Court
सत्रावसान—Prorogue
सदन—House
सदस्य—Member
सदाचरण पर्यंत—During good behaviour
सदाचार—Morality
संस्था—Association
संधि—Treaty
सभा—Assembly
सभापति—Chairman
समता—Equality
समर्पण—Dedicate
समवर्त्ती सूची-Concurrent List
समवाय—Company
समवायसंस्था-Co-operative Society
समवेत होना—Assemble
समागम— Intercourse
समाचारपत्र—Newspaper
समापन—Winding up
समिति—Committee
समुदाय— Community
समुद्र-नौवहन—Maritime shipping
संपदा—Estate

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संपदाशुल्क—Estate duty
संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य —Sovereign Democratic Repubic
सम्मेलन—Conference
सरकार—Government
सरकारी अभियाचना—Public demand
सर्वक्षमा—Amnesty
सर्वोच्च समादेश—Supreme Command
सलाह—Advice
सशस्त्र बल—Armed forces
सहकारी संस्था—Co-operative society
सपमति—Concurrence
सहायक—Ancilary
सहायक अनुदान—Grants-in-aid
संकटमय—Hazardous
संकल्प—Resolution
संक्रमण—Transition
संगणना—Compute
संघ—Union
संघटन—Organisation
संघसूची—Union List
संचार—Communication
संचार करना—Communicate
संचारसाधन—Means of Communications
संचित निधि—Consolidated fund
संदर्भ—Context
संदेश—Message
संबोधित—Addressed
संपत्ति—Property
संपत्ति-हस्तान्तरण-पत्र—Assurances of Property
संपर्क—Contact
संमति—Consent
संभावना—Honorarium
संरक्षक—Guardian
संलग्न—Append
संविदा—Contract
संविधान—Constitution
संविधानसभा—Constituent Assembly
संशोधन—Amendment
संसद्—Parliament
संस्था—Institution
संस्थापन—Establishment
संहिता—Code
साक्ष्य—Evidence
साख—Credit
साधारणनिर्वाचन—General Election
सामर्थ्य—Capacity
सामाजिक बीमा—Social insurance
सामाजिक रूढ़ि—Social custom
सामाजिक सेवा—Social service
सामान्य मुद्रा—Common seal
सामान्य मुहर—Common seal
सार्वजनिक अधिसूचना—Public Notification
सार्वजनिक अभियाचना—Public demand
सार्वजनिककल्याण—Common good
सार्वजनिक व्यवस्था—Public order
साहूकार—Moneylender
साहूकारी—Moneylending
सांसर्गिक—Contagious
सांक्रामिक—Infectious
सिद्धदोष—Convicted
सिफारिश—Recommendation
सिफारिश करना—Recommend
सीमा—Boundary

बाकी आखिरी पृष्ठों पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीमाकर—Terminal tax
सीमान्त -Frontiers
सीमाशुल्क—Custom duty
सीमांकन—Demarcation
सुधार प्रन्यास—Improvement Trust
सुधारालय—Reformatory
सुसंगत -Relevant
सुसंगति—Relevancy
सूचना—Notice
सूचनापत्र—Gazette
सूचनापत्र -Notice
सूची—List
सूत्र—Formula
सूत्रित -Formulated
सूद Interest
सेना—Military
सेना न्यायालय—Court Martial
सेवा—Service
सेवा की शर्तें Condition of service
सेवानियोजन—Employment
सेवाभार – Service charges
सैनिक—Military
सैन्यवियोजन—Demobilization
सौंपना - Assign
सौंपना—Entrust
स्थगन—Adjourn
स्थगित करना—Adjourn
स्थान—Post
स्थान – Seat
स्थानांतरण - Transfer (n.)
स्थानीय क्षेत्र—Local area
स्थानीय गण—Local Board
स्थानीय निकाय—Local body
स्थानीय मण्डली—Local Board
स्थानीय शासन—Local Government
स्थानीय स्वशासन–Local Self Government
स्थापना—Establishment
स्थापित करना—Establish
स्थायी आदेश—Standing Order
स्थायी समिति—Standing Committee
स्पष्टीकरण—Clarification
स्पष्टीकरण—Explanation
स्मारक—Memorial
स्वतंत्रता—Freedom
स्ववश—Possession
स्वविवेक—Discretion
स्वातंत्र्य—Freedom
स्वाधीनता—Liberty
स्वामित्व—Ownership
स्वामिलभ्य—Royalties
स्वामित्व—Royalties
स्वामी—Owner
स्वामिहीनत्व—Bona vacancia
स्वामी होना—Own
स्वायत्तता—Autonomy
स्वीय विधि—Personal law

ह

हक्क—Title
हक्क होना—Entitled
हटाना—Removal
हस्तशिल्प—Handicraft
हस्तांतर पत्र—Conveyance
हस्तांतरण—Transfer (n.)
हिदायतें—Instructions

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

A

Accusation—अभियोग
Accused—अभियुक्त

Abandonment—परित्यजन, परित्याग,
Abridge—न्यूनन
Abrogate—निराकरण
Access प्रवेश
Accout – लेखा, गणना, कणकु
Accrue - प्रापण, प्रोद्भवन
Acquisition—अर्जन
Act (n.)—अधिनियम, चट्टम
Acting (e.g. Chairman)--कार्यकारी
Accrued—प्राप्त, प्रोद्भूत, उपार्जित
Actionable wrong—अभियोज्य दोष
Adaptation—अनुकलन
Addressed—सम्बोधित
Adherence—अनुपक्ति
Ad hoc—तदर्थ
Adjourn—१ स्थगन, अधिदान, २ स्थगित करना, कालदान,
Administer—प्रशासन
Administered—प्रशासित
Administration—प्रशासन
Administrative—प्रशासनीय
Administrative functions—प्रशासनीय कृत्य
Administrator-General--महाप्रशासक
Admiralty—नौकाधिकरण, नावधिकरण,
Admissible—ग्राह्य
Adoption—दत्तक ग्रहण, दत्तक-स्वीकरण
Adulteration—अपमिश्रण
Adult suffrage- वयस्क मताधिकारी
Advance—अग्रिम, पेशगी
Advice—मंत्रणा, उपदेश, सलाह
Advise—मंत्रणा देना
Advisory Council—मंत्रणापरिषद्
Advocate—अधिवक्ता
Advocate General—महाधिवक्ता
Affect prejudicially–प्रतिकूल प्रभाव डालना, प्रतिकूल असर डालना
Affirmation—प्रतिज्ञान
Agent—अभिकर्त्ता
Agreement—करार, चुकती,
Air force—विमान बल
Air navigation—विमान परिवहन
Air taffic—विमान यातायात
Airways—वायुपथ
Alien—अन्यदेशीय
Alienate—अन्य संक्रामण
Alienation—अन्य-संक्रामण, परकीकरण
Allegation—अभिकथन, आरोप
Allegiance—निष्ठा
Allocation—बँटवारा
Allot—बटन
Allotment—बाँट
Allowances—भत्ता
Amendment—संशोधन
Amnesty—सर्वक्षमा
Amount—राशि
Ancillary—सहायक
Annual—वार्षिक
Annual Financial Statement—वार्षिक वित्तविवरण
Annuities—वार्षिकी
Annulment—रद्द करना
Appeal– अपील
Appear –उपस्थित करना
Appended—संलग्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Application— प्रयुक्ति, २ लागू होना, ३ आवेदनपत्र
Appointment--नियुक्ति
Appropriation--विनियोग
Appropriation bill—विनियोग विधेयक
Aprove--अनुमोदन करना
Approval--अनुमोदन,
Arbitral tribunal--मध्यस्थ-न्यायाधिकरण
Arbitrator—मध्यस्थ
Area—क्षेत्र
Armed Forces--सशस्त्र बल
Arrest--बंदी करना, प्रग्रहण
Article—अनुच्छेद
Assemble—समवेत होना, संमिलित होना।
Assembly--सभा
Assent--अनुमति
Assessment--निर्धारण, तीर्वं
Assignment—सौंपना
Association--संस्था
Assurance of property--सपत्ति-हस्तांतरण-पत्र
As the case may be—यथास्थिति, यथाप्रसंग
Artach--कुर्की, टांच
Attorney-General—महान्यायवादी
Audit—लेखापरीक्षा, गणनापरीक्षा
Auditor General—महालेखापरीक्षक
Authentication—प्रमाणीकरण
Authorise—प्राधिकृत
Authority—प्राधिकारी
Autonomous—स्वायत्त
Autonomy—स्वायत्तता
Award--पंचाट

B

Bail—जामिन
Ballot--१ शलाका, २ शलाकापद्धति, गूढ़पत्र,
Bank—बैंक
Banking—महाजनी
Bankruptcy दिवाला
Bar—रुकावट
Benefit—हित
Betting—पण लगाना, पणक्रिया
Bicameral दोघरा, द्विगृही
Bill—विधेयक, बिल
Bill of exchange—विनिमयपत्र
Bill of indemnity--परिहार विधेयक, क्षतिपूर्ति बिल,
Bill of lading--वहनपत्र
Board--मंडली
Body--निकाय
Body, Corporate—निगम निकाय
Body, governing—शासी निकाय
Bona vacancia--स्वामिहीनत्व
Borrowing--उधारग्रहण
Boundary—सीमा
Broadcasting -प्रसारण
Business--कारबार
Bye election--उपनिर्वाचन
Byelaw—उपविधि

C

Calling—आजीविका
Camp—शिविर
Candidates--अभ्यर्थी, उम्मेदवार
Cantonment—कटक, छावनी
Capacity—सामर्थ्य
Capital—मूलधन, पूंजी
Capital value - मूलधन मूल्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Capitation tax--प्रतिव्यक्तिकर
Carriage--परिवहन
Casting vote--निर्णायक मत
Cattle pound—पशुअवरोध, कांजीहौस
Cause--वाद
Cause of Action—वादमूल
Census--जनगणना
Central Intelligence Bureau—केन्द्रीय गुप्त वार्ता विभाग
Certificate—प्रमाणपत्र
Certiorari - उत्प्रेषणलेख
Cess--उपकर
Chairman--सभापति
Charge--भार, भारित करना
Charge (Cr)—दोषारोप, अभियुक्ति
Charity--पूर्त, दातव्य
Charitable and religious endowments—पूर्त, धार्मिक धर्मस्व
Charitable institutions-पूर्त संस्था
Cheque--चेक
Chief--मुख्य
Chief Commissioner-मुख्य आयुक्त
Chief Election Commissioner-मुख्य निर्वाचन आयुक्त
Chief judge--मुख्य न्यायाधीश
Chief Justice--मुख्य न्यायाधिपति
Chief Minister--मुख्य मंत्री
CitiZenship--नागरिकता
Civil--१ व्यवहार,
२ असनिक
Civil Court--१ व्यवहार न्यायालय, दीवानी
२ व्यवहारालय, व्यवहार-अदालत
Civil power—१ व्यवहार शक्ति
२ असनिक शक्ति
Civil wrong-व्यवहार विषयक अपकृत्य
व्यवहारविषयक दोष
Claim--दावा
Clarification--स्पष्टीकरण
Clause--खंड
Code--संहिता
Coinage--टंकण
Colonisation--उपनिवेशन
Commerce--वाणिज्य
Commercial--वाणिज्य संबंधी
Commission--आयोग
Commissioner--आयुक्त
Committee--समिति
Committee, Select--प्रवर समिति
Committee, Standing-स्थायी समिति
Common good--सार्वजनिक कल्याण
Common Seal--सामान्य मुद्रा, सामान्य मुहर
Communicate--संचार करना
Communication, means of--संचार साधन
Community--१ लोकसमाज
२ समुदाय
Commute--लघूकरण
Company--समवाय, कंपनी
Compensation--प्रतिकर
Competent--संक्षम, क्षमताशील
Complaint--फरियाद
Controller and Auditor General--नियंत्रक-महालेखा-परीक्षक
Compute--संगणना
Concurrence--सहमति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Concurrent List –समवर्ती सुची
Condition—शर्त
Conditions of service–सेवा की शर्तें
Conference—संमेलन
Confidence, want of—विश्वास का अभाव
Conscience—अन्तःकरण
Consent—संमति
Consent, previous—पूर्व संमति
Consequential—आनुसंगिक
Consideration—विचार
Consolidated Fund—संचित निधि
Constituency—निर्वाचन क्षेत्र
Constituency, territorial–प्रादेशिक निर्वाचनक्षेत्र
Constituent Assembly–संविधानसभा
Constitution—संविधान
Consul—वाणिज्यदूत
Consultation—परामर्श
Construe—अर्थ करना
Consumption—उपभोग
Contact—संपर्क
Contagious—सांसर्गिक
Contempt—अवमान
Contempt of court—न्यायालय अवमान
Context—संदर्भ, प्रसंग
Contingency Fund–आकस्मिकतानिधि
Contract—संविदा
Contravention—प्रतिकूलता, उल्लंघन
Contribution—अंशदान
Control—नियंत्रण
Controversy—प्रतिवाद
Convention—अभिसमय
Conveyance—हस्तांतरपत्र
Convicted—सिद्धदोष, दोषप्रमाणित, अभिशस्त
Conviction—दोषसिद्धि, अभिशस्ति
Cooperative society—सहकारी संस्था, समवाय संस्था
Copy—प्रतिलिपि, प्रतिकृति
Copyright—प्रतिलिप्याधिकार, कृतिस्वाम्य
Corporation—निगम
Corporation, Sole—एकल निगम
Corporation tax—निगमकर
Corresponding—तत्स्थानी
Corrupt—भ्रष्ट
Cost—परिव्यय, खर्च, लागत
Council—परिषद्
Council of Ministers—मंत्रिपरिषद्
Council of States—राज्यपरिषद्
Council. Regional–प्रादेशिक परिषद्
Countervailing duty—प्रतिशुल्क
Court—न्यायालय
Court of Appeal–पुनर्विचार न्यायालय, अपील न्यायालय
Court, Civil—व्यवहार न्यायालय
Court. Criminal—दंड न्यायालय
Court, District—जिला न्यायालय, मंडल न्यायालय
Court, Federal—फेडरल न्यायालय
Court, High—उच्च न्यायालय
Court, Magistrate—दंडाधिकारी-न्यायालय
Court Martial—सेना न्यायालय
Court of wards-प्रतिपालक अधिकरण
Court, Revenue—राजस्व न्यायालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Court, Session - सत्रन्यायालय
Court, subordinate- अधीन न्यायालय
Court, Supreme - उच्चतम न्यायालय
Credit—प्रत्यय, साख, पत
Credit—आकलन
Crime—अपराध
Criminal—१ अपराधी, दंड संबंधी
२ आपराधिक
Criminal law - दंडविधि
Currency—चल अर्थ, चलावणी ,
Custody अभिरक्षा, निरोध, कावल
Custom duty –बहिः शुल्क, सीमाशुल्क
Custom frontier—शुल्कसीमान्त
Custom रूढ़ि आचार

D

Dealings व्यहार, लेना देना
Debate—वादविवाद
Debentures—ऋणपत्र
Debit—विकलन
Debt—ऋण
Decision—विनिश्चय
Declaration – घोषणा
Decree आज्ञप्ति, डिक्री
Dedicate—समर्पण
Deed—विलेख
Defamation –मानहानि
Defence—प्रतिरक्षा
Deliberate – पर्यालोचन
Delimitation—परिसीमन
Demand – माँग, अभियाचना
Demarcation—सीमांकन
Demobilisation—सैन्य वियोजन
Depriveo—वंचित करना, नियुक्त करना
Deputy Chairman—उपसभापति
Deputy Commissioner—उपायुक्त, मण्डलायुक्त
Deputy president—उपराष्ट्रपति
Deputy Speaker—उपाध्यक्ष
Descent – उद्भव
Derogation—अल्पीकरण
Design—रूपांकण, नक्ष
Detrimental—अहितकारी
Diplomacy—राजनय
Direction—निदेश
Disability—नियोग्यता
Discharge—निर्वहन
Discipline—अनुशासन
Disciplinary—अनुशासन संबंधी, शिस्त
Discovery—प्रकट करना
Discretion—स्वविवेक
Discrimination— विभेद
Discussion –चर्चा
Dismiss—पदच्युत करना
Disperse—विसर्जन
Dispute—विवाद
Disqualification—अनर्हता
Disqualify—अनर्हीकरण
Dissent—विमति
Dissolution—विघटन
Distribution—वितरण, विभाजन
District –जिला, मंडल
District Board—जिला, मंडली
District Council—जिला परिषद
District Fund जिला निधि
Dividend—लाभांश
Divorce—विवाह विच्छेद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Documents—लेख्य, दस्तावेज
Domicile – अधिवास
Domiciled—अधिवासी
Dulness—मतिमान्द्य
During good behaviour–सदाचार पर्यंत
During the pleasure of the president –राष्ट्रपति-प्रसाद-पर्यंत
Duty १ शुल्क, वरी, २ कर्तव्य
Duty, custom—सीमा शुल्क
Duty, death—मरण शुल्क
Duty, estate—संपत्ति शुल्क
Duty, export—निर्यात शुल्क
Duty, import—आयात शुल्क
Duty, stamp—मुद्रांक शुल्क
Duty, succession–उत्तराधिकार शुल्क

E

Economic—आर्थिक
Education—शिक्षा
Efficiency of administration—प्रशासन कार्यक्षमता, प्रशासन कार्यपटुता
Elect—निर्वाचन (v)
Elected—निर्वाचित, चुने हुए
Election—निर्वाचन
Election Commissioner–निर्वाचन आयुक्त
Election, direct—प्रत्यक्ष निर्वाचन
Election, general—साधारण निर्वाचन
Election, indirect – परोक्ष निर्वाचन
Election tribunal–निर्वाचन अधिकरण
Electoral roll—निर्वाचन नामावली
Electoral rolls—निर्वाचक गण
Eligibility—पात्रता
Eligible—पात्र होना
Emergency—आपात
Emergent—आपाती
Emigration—उत्प्रवास
Emoluments—उपलब्धियाँ
Employers liability—नियोजन दातव्य, नियोजक उत्तरवादिता
Enact—अधिनियम
Encumbered estate–भारग्रस्त संपदा
Endorse—१ पृष्ठांकन, २ अंकन
Endorsed—१. पृष्ठांकित, २. अंकित
Endowment—धर्मस्व
Engagements—वचनबंध
Engineering—यंत्र शास्त्र
Enterprise—उद्यम
Entitled—हक्क होना
Entrust—न्यस्त, सौंपना
Entry—प्रविष्टि, दाखला
Equality—समता
Equal protection of Laws—विधियों का समान संरक्षण
Escheat—राजगामी
Establishment—१. स्थापना, संस्थापन २. स्थापन करना
Estates—संपदा
Estimates—आँक, प्राक्कलन
Evidence—साक्ष्य
Excess profit—अतिरिक्त लाभ
Exclude –अपवर्जन करना
Exclusion—अवर्जन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Exclusive Jurisdiction—अनन्य क्षेत्राधिकार
Executive—कार्यपालिका
Executive power—कार्यपालिका शक्ति
Exempt—मुक्त
Exercise—प्रयोग, अनुष्ठान
Ex officio—पदेन
Expenditure - व्यय
Explanation—व्याख्या, स्पष्टीकरण
Explosives—विस्फोटक
Export—निर्यात
Extend—विस्तार
External Affairs—वैदेशिककार्य
Extradition—प्रत्यर्पण
Extra territorial operations—राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन, राज्यक्षेत्रातीत वर्तन

F

Factory—कारखाना
Faith—धर्म, श्रद्धा
Fare—भाड़ा, किराया
Federal Court फेडरल न्यायालय
Fees—देय, फीस
Finance - वित्त
Finance bill—वित्तविधेयक
Finance Commission—वित्तायोग
Financial—वित्तीय
Financial obligation—वित्तीय भार
Financial statement—वित्तीय वितरण
Fine—अर्थदंड, जुर्माना।
Fishery—मीन-क्षेत्र, मीन पर्ण्ये
Forbid—निषेध
Forbidden—निषिद्ध
Forces—बल
Foreign Affairs—विदेशीय कार्य
Foreign exchange—विदेशीय विनिम
Form—१ रूप, २. प्रपत्र, फारम
Formula—सूत्र
Formulated—सूत्रित
For the time being—तत्समय
Freedom—१ स्वतंत्रता, २ स्वातंत्र्य, आजादी
Freights—वस्तु भाड़ा
Frontiers—सीमांत
Function—कृत्य
Function—कृत्य
Function, administrative—प्रशासनीय कृत्य
Fund—निधि
Fund, sinking—विक्षेप निधि
Future market—वायदा बाजार

G

Gambling—द्यूत, जुआ
Gazette—सूचनापत्र, गजट
General Election—साधारण निर्वाचन
Govern—शासन करना
Government—शासन
Government—१ सरकार २ शासन
Government of a State—राज्य की सरकार
Government of India—भारत सरकार
Governor—राज्यपाल
Grant—अनुदान
Grant-in-aid—सहायक अनुदान
Gratuity—उपदान
Guarantee—प्रत्याभूति
Guardian—संरक्षक
Guidance—मार्ग प्रदर्शन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

H

Habeas Corpus – बन्दी प्रत्यक्षीकरण
Handicrafts – हस्तशिल्प, दस्तकारी
Hazardous—संकटमय
Headman – मुखिया
High Court—उच्च न्यायालय
Honorarium— मानदेय, संभावना
House—सदन
House of People—लोकसभा

I

Illegal— अवैध
Illegal Practice – अवैधाचरण
Immunity—उन्मुक्ति
Impeachment – महाभियोग
Implementing—परिपालन
Impose—आरोपण, लगाना
Imprisonment—कारावास, कैद
Improvement trust – सुधार प्रन्यास
Incapacity—असमर्थता
Incidental—प्रासंगिक
Incompetency—अक्षमता
Incorporation – निगमन
Incompetent—अक्षम
Incumbent of an office—पदधारी
Indebtedness—ऋणग्रस्तता
Industry—उद्योग
Ineligible—अपात्र
Ineligibility—अपात्रता
Infants—शिशु
Influence – प्रभाव
Influence, undue—अयुक्त प्रभाव
Inheritance—दाय
Initiate—उपक्रम
Injury—क्षति
Inland waterways—अन्तर्देशीय जलपथ
Inoperative—अप्रवृत्त
Inquiry – परिप्रश्न, जाँच
Insolvency – दिवाला
Inspection – पर्यवेक्षण
Instituion—संस्था
Instruction—१. शिक्षा
२ अनुदेश, हिदायतें
Instrument – लिखत
Insurance— बीमा
Intercours – समागम
Interest – ब्याज, वृद्धि, सुद
International— अंतर्राष्ट्रीय
Interpretation—निर्वचन
Intestacy—इच्छापत्रहीनत्व, निर्वसीयता
Introduce—पुरःस्थापन
Introduction—पुरःस्थापना
Invalid – अमान्य
Invalidity pensions—असमर्थता
—निवृत्ति वेतन
Investigation – अनुसंधान
Involved—अंतर्ग्रसन
Involve—अन्तर्ग्रस्त
Irregularity—अनियमितता
Issue—वादपद

J

Joining Time—योगकाल
Joint family—अविभक्त कुटुंब, अविभक्त परिवार
Judge—न्यायाधीश
Judge, Additional—अपर न्यायाधीश
Judge, extra—अतिरिक्त न्यायधीश
Judgment—निर्णय
Judicial power—न्यायिक शक्ति
Judicial proceeding-न्यायिक कार्यवाही
Judicial stamp—न्यायिक मुद्रांक
Judiciary—न्यायपालिका
Jurisdiction—क्षेत्राधिकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Justice, Chief—मुख्य न्यायाधिपति

L

Labour—श्रम
Labour Union—श्रमिक संघ
Land records—भू अभिलेख
Land revenue—भू राजस्व
Land tenures—भूधृति
Law—विधि
Law of nations—राष्ट्रों की विधि
Legal—विधि संबंधी, कानून संबंधी
Legislation—विधान
Legislative power—विधायिनी शक्ति
Legislative Assembly—विधान सभा
Legislative Council—विधान परिषद्
Legislature—विधान मंडल
Letters of credit—प्रत्ययपत्र
Levy—१ आरोपण २ उद्ग्रहण, उगाहना
Liability—दायित्व
Libel—अपमान लेख
Liberty—स्वाधीनता
Licences—अनुज्ञप्ति, लाइसेंस
Lieutenant Governor—उप राज्यपाल
Limitation—परिसीमा
List—सूची
List, Concurrent—समवर्ती सूची
List, State—राज्यसूची
List, Union—संघसूची
Livelihood—जीविका
Loans—उधार
Local area—स्थानीय क्षेत्र
Local authorities—स्थानीय प्राधिकारी
Local board—स्थानीय मंडली, स्थानीय गण
Local body—स्थानीय निकाय
Local Government—स्थानीय शासन
Local Self Government—स्थानीय स्वशासन
Lock up—बंदीखाना
Lower House—प्रथम सदन
Lunacy—उन्माद
Lunatic—उन्मत्त

M

Maintain—१ पोषण
२ बनाए रखना
Maintenance—पोषण
Major—वयस्क
Majority—बहुमत
Mandamus—परमादेश
Manufacture—निर्माण
Maritime shipping—समुद्र नौवहन
Maternity Relief—प्रसूतिसहायता, प्रसूतिसाहाय्य
Member—सदस्य
Memo—ज्ञाप
Memorandum—ज्ञापन
Memorial—स्मारक
Mental deficiency—मनोवैकल्य
Mental weakness—मनोदौर्बल्य
Merchandise marks—पण्य चिह्न
Merchandise marin—वणिकपोत
Message—संदेश
Migration—प्रव्रजन
Military—१ सेना
१ सैनिक
Mind, unsound—विकृत चित्त
Mineral—खनिज
Mineral resources—खनिज संपद्
Mining settlment—खनिवसति
Minister—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Minor—अवस्यक
Minority—अल्पसंख्यक वर्ग
Misbehaviour—कदाचार
Modifiction—रूपभेद
Money—धन
Money bill—धन विधेयक
Money lender—साहूकार
Moneylending—साहूकारी
Morality—सदाचार
Mortgage—बंधक
Motion—प्रस्ताव
Motion for Consideration—विचारार्थ प्रस्ताव
Motion of Confidence—विश्वास प्रस्ताव
Motion of No Confidence—अविश्वास प्रस्ताव
Municipal area—नगरक्षेत्र
Municipal Committtee—नगरसमिति
Municipal Corporation—नगरनिगम
Municipality—नगरपालिका
Municipal tramways—नगर रथ्यायान, नगर ट्रांबे

N

Nation—राष्ट्र
National highways—राष्ट्रीय राजपथ
Nationalisation—देशीयकरण
Naval—नौ सेना संबंधी
Navigation—नौपरिवहन
Newspaper—समाचारपत्र
Nominate—नामनिर्देशन, मनोनयन
Notice—१ सूचना
२ सूचनापत्र
Notice in writing—लिखित सूचना
Notification—अधिसूचना

O

Obligation—आभार
Occupation—उपजीविका, धंधा
Octroi—चुंगी
Offence—अपराध
Office—पद
Officer—पदाधिकारी
Official residence—पदावास
Opinion—अभिप्राय, राय
Order—१ आदेश
२ व्यवस्था
Order in Council—परिषद् आदेश
Order, standing—स्थायी आदेश
Ordinance—अध्यादेश
Organization—संघटन
Own—स्वामी होना
Owner—स्वामी
Ownership—स्वामित्व

P

Pardon—क्षमा
Parliament—संसद
Party—पक्ष
Partnership—भागिता
Pass—पारण
Passed—पारित, तीर्ण
Passport—पारपत्र
Patents—एकत्व
Pay—वेतन
Peace—शांति
Pecuniary jurisdiction—आर्थिक क्षेत्राधिकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Penalty—शास्ति
Pending—१ लंबित
२. लंबमान
Penson—निवृत्ति वेतन
People—लोक, जनता
Permission—अनुज्ञा
Permit—अनुज्ञा, परमट
Perpetual succession—शाश्वत उत्तराधिकार
Perquisite—परिलब्धि
Person—व्यक्ति
Personal law—स्वीय विधि
Petition—याचिका, अर्जी
Piracy—जलदस्युता
Plead—वकालत करना
Pleader—वकील
Police—आरक्षक
Police Force—आरक्षक बल
Police Station—थाना
Policy of insurance—बीमा पत्र
Port quarantine - पत्तन निरोधा
Possession—स्ववश, कब्जा
Posts—१ पद
२ स्थान, जगह
Power—शक्ति
Preamble—प्रस्तावना
Preference—अधिमान
Prejudice—प्रतिकूल प्रभाव
Preside - पीठासीन, अध्यासीन
President—राष्ट्रपति
Presiding office—अधिष्ठाता
Preventive detention—निवारक निरोध
prime Minister—प्रधानमंत्री
Prison—कारावास, जेल
Prisoner—कारावंदी, कैदी
Privileges—विशेषाधिकार
Procedure—प्रक्रिया
Process—आदेशिका
Proclamation—उद्घोषणा
Proclamation of Emergency—आपात की उद्घोषणा
Production—उत्पादन
Profession—वृत्ति, पेशा
Profit—लाभ
Prohibited—प्रतिषिद्ध
Prohibition—प्रतिषेध
Prohibition, write of—प्रतिषेध लेख
Promissory note—प्रामिसरी नोट, वचन पत्र
Promulagate—प्रख्यापन
Propagate—प्रचार करना
Property—१ संपत्ति
२ रिक्थ, आस्ति
Proportional representation—अनुपाती प्रतिनिधित्व
Proposal—प्रस्थापना
Prorogue—सत्रावसान
Prosecution—१ अभियोजन
२. अभियुक्ति
Provided—परंतु
Provident fund—भविष्यनिधि
Province—प्रांत
Provision—उपबंध
Proxy—प्रतिपत्री
Publication—प्रकाशन
Public debt - राष्ट्र ऋण
Public demands—सार्वजनिक अभियाचना, सरकारी अभियाचना
Publichealth—लोक स्वास्थ्य
Public notification—सार्वजनिक अधिसूचना, लोक अधिसूचना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Public Order—सार्वजनिक व्यवस्था
Public Service Commission—लोक सेवायोग
Public Services – लोक सेवाएं
Punish—दंड देना
Purporting to be done –

Q

Qualification—अर्हता
Quarantine—निरोधा
Question of law – विधि प्रश्न
Quorum गणपूर्ति
Quowarranto - अधिकार पृच्छा

R

Railway—रेल
Ratification—अनुसमर्थन
Ratify—अनुसमर्थन
Reading, first—प्रथम पठन
Reading, second—द्वितीय पठन
Reading, third—तृतीय पठन
Receipt—प्राप्ति
Receipt (paper)—पावती, रसीद
Recommend—सिफारिश करना
Recemmendation—सिफारिश
Record—अभिलेख
Record, court of–अभिलेख न्यायालय
Record of rights-अधिकार अभिलेख
Recruitment—भर्ती
Recurring—आवर्तक
Redemption—विमोचन
Redemption charges–विमोचनभार
Reference—निर्देश
Reformatory—सुधारालय
Refundable to—लौटाया जानेवाला
Regional Commissoners—प्रादेशिक आयुक्त
Regional Council—प्रादेशिक परिषद्
Regional Fund—प्रादेशिक निधि
Register—पंजी
Registered—१ पंजीबद्ध
२ निबद्ध, नौदता
Registration—१ पंजीयन
२ पंजीबंधन
३ निबंधन
Regulate—विनिमयन
Regulation—विनिमय
Relevancy—सुसंगति
Relevant—सुसंगत
Remedy—उपचार
Reminder—अनुस्मारक
Remission—परिहार
Removal—हटाना
Remuneration—पारिश्रमिक
Rent—भाटक, लगान
Repeal—निरसन
Report—प्रतिवेदन
Representation—प्रतिनिधित्व
Representative—प्रतिनिधि
Reprieve—प्रविलंबन
Repugnance—विरोध
Repugnancy—विरोध
Repugnant—विरुद्ध
Requisition—अधिग्रहण
Research—गवेषणा, शोधन
Reservation—रक्षण
Reserved forest—रक्षित वन
Resignation—पदत्याग
Resolution—संकल्प

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Respite—विराम
Restriction—निर्बंधन
Retire—निवृत्त होना
Retirement—निवृत्ति
Revenue—राजस्व, आगम
Review—पुनर्विलोकन
Revision—पुनरीक्षण
Revoke—प्रतिसंहरण
Reward—पारितोषिक
Rights—अधिकार
Rule—नियम
Rule of the road—पथ नियम
Ruler—शासक

S

Sateguard—रक्षाकवच, परित्राण
Salary—वेतन
Sale—विक्रय
Sanction, previous—पूर्व मंजूरी
Sanction—मंजूरी
Savings—व्यावृति
Schedule—अनुसूची
Scheduled area—अनुसूचित क्षेत्र
Scheduled Caste—अनुसूचित जाति
Scheduled Tribes—अनुसूचित जन जाति, अनुसूचित आदिम जाति
Seal—मुद्रा
Seat—स्थान
Section—विभाग
Security—प्रतिभूति
Sentence—दंडादेश
Service—सेवा
Service charges—सेवाभार
Session—सत्र
Share—अंश
Sheriff—शेरीफ
Single transferable vote—एकल संक्रमणीय मत
Sinking Fund—निक्षेपनिधि
Sitting—उपवेशन, बैठक
Slander—अपमान वचन
Social custom—सामाजिक सेवा
Sovereign—प्रभु
Sovereign Democratic Republic—संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य
Sovereignty—प्रभुता
Speaker—अध्यक्ष
Speech, freedom of—वाक्स्वातंत्र्य
Staff—कर्मचारी वृंद
Stamp duties—मुद्रांक शुल्क
Standing order—स्थायी आदेश
State—राज्य
State fund—राज्य निधि
Stock exchange—श्रेष्ठि चत्वर
Sub division—उपविभाग
Subject—१ अधीन २ विषय
Subject matter —वाद विषय
Subordinate officer—अधीन अधिकारी
Succession—उत्तराधिकार
Successer—उत्तराधिकारी
Sue—व्यवहार लाना
Suffrage—मताधिकार
Suit, Civil—व्यवहार वाद
Summons—आह्वान
Superintendence—अधीक्षण
Superintendent—अधीक्षक
Supplementary—अनुपूरक
Supplementary grant—अनुपूरक अनुदान
Supreme Commond—सर्वोच्च समावेश
SupremeCourt—उच्चतम न्यायालय
Suspend—निलंबन
Suspension—निलंबन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Tax—कर
Tax, Calling—आजीविका कर
Tax, Capitaion—प्रतिव्यक्ति कर
Tax, Corporation—निगम कर
Tax, Employment—नौकरी कर
Tax, Entertainment—प्रमोद कर
Tax, Export—निर्यात कर
Tax, profession—वृत्ति कर
Tax, Income—आय कर
Tax, Sale—विक्रय कर
Tax, Terminal—सीमाकर
Tax, Trades—व्यापार कर
Teachnical training—शिल्पीप्रशिक्षण
Tenant—किसान
Tender legal—विधिमान्य
Tenure—पदावधि
Term—निबंधन
Territorial charges—प्रादेशिक भार
Territorial Jurisdiction—प्रादेशिक क्षेत्राधिकार
Territorial Waters—जलप्रांगण
Territory—राज्यक्षेत्र
Tidal Waters—बेलाजल, ज्वारजल
Title—हक्क
Tol—पथकर.
Trade—व्यापार
Trade Mark—व्यापार चिन्ह
Trade Union—कार्मिक संघ, व्यापार संघ
Traffic—यातायात
Traffic in human beings—मानव-
raining—प्रशिक्षण
ramcar—रज्यायान, ट्रामगाड़ी
ramway—ट्राम
ranquillity—प्रशांति
ransfer—१ स्थानांतरण, २ हस्तांतरण
ransition—संक्रमण
Transport—परिवहन
Transportation—निर्वासन
Tteasure trove—निखात निधि
Treaty—संधि
Tribal Area—जनजाति क्षेत्र
Tribe—जनजाति
Tribunal—न्यायाधिकरण
Triennial—त्रैवार्षिक
Trust—न्यास
Undischarge—अनुन्मुक्त
Unemployment—बेकारी
Union—संघ
Unit—एकक
Unsoundness of mind—चित्तविकृति
Vacancy—रिक्त स्थान
Vacancy—१ रिक्ति, २ रिक्तता
Vagrancy—आहिंडन, आवारागर्दी
Validity—मान्यता
Vice president—उप राष्ट्रपति
Village councils—ग्राम परिषद्
Violation—अतिक्रमण
Visas—द्रष्टांक, वीसा
Vocation—व्यवसाय
Void—शून्य
Vote—मत
Vote, casting—निर्णायक मत
Voter—मतदाता, वोटदाता,
Votes on account—लेखानुदान, गणनानुवाद
Votes of credit—प्रत्यापानुदान
Wage—मजूरी
Wage, living—निर्वाह मजूरी
Warrant—अधिपत्र
Will—इच्छापत्र, विल, वसीयत
Winding up—समापन
Writ—लेख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी-शब्द-संग्रह

अ

अ—देवनागरी वर्णमालाका पहिला अक्षर। शब्दोंके पूर्व जोड़ देनेसे निषेध-सूचक या उलटा अर्थ प्रकट करता है, (असफल, अचूक इ०)। स्वरसे शुरू होनेवाले शब्दोंके पहिले 'अ' के बदले प्रायः 'अन्' जोड़ा जाता है।

अंक—पु० संख्याका चिह्न जैसे १,२,३। गोद (अँकवार) 'तउ पुनि जतन करै अरु पोसै, निकसे अंक भरै' सू० ८। अक्षर 'तुम सन मिटहिं कि बिधिके अंका'-रामा० ५९। छाप। निशान, धब्बा। नाटकका भाग। बार (सू० २२)

अँकटा—पु० छोटा कंकड़।

अंकपाली—स्त्री० दाई, धाय।

अंकमाल,-लिका—स्त्री० अँकवार, आलिंगन, भेंट 'अंकमाल दै कुसल वृष्नि कै अर्धासन बैठारे' सू० २७०। (कबीर ५३)। छोटी माला।

अँकरोरी, अँकरौरी—स्त्री० कंकड़ी।

अँकवार—स्त्री० गोद, कोख, भेंट।—भरना = गोदमें भरना; बचा होना। [इ० से चिह्न कराना।

अँकाना—सक्रि० मोल ठहराना, जाँचना। लोहेकी सलाई

अंकित—वि० लिखित, वर्णित, चिह्नित, खचित।

अँकुड़ा—पु० लोहेका टेढ़ा काँटा। पशुओंके पेटकी 'पीड़ा'।

अँकुड़ी—स्त्री० लोहेकी टेढ़ी कँटिया।

अंकुर—पु० नया उगा हुआ तृण आदि, कोंपल, प्ररोह।

अंकुरक—पु० घोंसला।

अँकुरना,-राना—अक्रि० उगना, पैदा होना। 'अँकुरति तरु पात उकठि रहे जे गात बन बेलि प्रफुलित ललित लहरके।' सूबे० ४६

अंकुश, अंकुस—पु० लोहेका काँटा जिससे हाथी चलाया जाता है। हिचक।—ग्रह = महावत।

अँकुसी—कँटिया, हुक।

अंकूर—पु० अंकुर, प्ररोह।

अँकोड़ा—पु० बड़ी कँटिया। एक तरहका लंगर।

अँकोर—पु० गोद। आलिंगन, भेंट, घूस, 'टका लाख दस कीन्ह अँकोरा' प० ३१६, (अ० ५६)। निछावर (सू० १७५)। कलेवा, छाक। दुपहरिया।

अँकोरी—स्त्री० देखो 'अँकोर'।

अंकोल—पु० एक पेड़। अंकोलक।

अँखमीचनी—स्त्री० आँखमिचौनी।

अँखिया—स्त्री० आँख। नक्काशी करनेकी कलम।

अँखुआ—पु० अंकुर, कोंपल।

अँग, अंग—पु० देह, अवयव, भेद, भाग, पक्ष 'अपने अँगके जानिके जोबन नृपति प्रवीन-वि० ४। एक प्रदेश। एक राजाका नाम। तरफ 'धरिय तुला एक अंग' रामा० ४१७। सेनाके ४ अंग—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल; वेदके ६ अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द; राजनीतिके ७ अंग—स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सेना; योगके ८ अंग - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि।—छूना = कसम खाना।—टूटना = अँगड़ाई आना।—तोड़ना = अँगड़ाई लेना।—धरना = पहिनना, व्यवहार करना। फूले—न समाना = बहुत खुश होना।—मोड़ना = लज्जासे देह सिकोड़ना, अँगड़ाई लेना, पीछे हटना।—लगना = लिपटना, शरीरको पुष्ट करना, परचना।—लगाना = आलिंगन करना, विवाह देना।—करना = अंगीकार करना 'जाको मनमोहन अंग करै' सूवि० १५, (बिन० ५४३)।—धारी = प्राणी।—पाक, पु० अंग पकनेका रोग।—भंग, पु० किसी अंगका खण्डन या हानि, वि० लँगड़ा-लूला 'अंग-भंग करि पठवहु बंदर।' रामा ४२७।—भंगी, स्त्री० स्त्रियोंकी चेष्टा।—राग, पु० चन्दन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केसर आदिका लेप या उबटन; महावर ।—राज, पु० कर्ण, लोमपाद।—विकृति, अपस्मार या मृगीका रोग। —विक्षेप, पु० अंग हिलाना या मटकाना, नृत्य ।—विद्या, स्त्री० सामुद्रिकविद्या ।—शोष, पु० सुखंडी रोग ।—संग, पु० संभोग ।—संस्कार, पु० देहकी सजावट ।—सिहरी, स्त्री० कँप-कँपी ।—हार, पु० अंगविक्षेप या नृत्य ।—हीन, वि० जिसके कोई अंग न हो, अनंग, कामदेव ।

अंगज—पु० लड़का, बाल, काम-क्रोध इ०, पसीना, रोग, कामदेव, मद। 'हाव-भाव-हेला' ये तीन सात्विक विकार।

अंगजा,-जाई—स्त्री० लड़की, पुत्री ।

अंगजात—'अंगज' देखो । [टूटना ।

अँगड़ाई—स्त्री० जम्हाईके साथ अंगोंको फैलाना। बदन

अँगड़ाना—अक्रि० अँगड़ाई लेना, बदन तोड़ना ।

अंगण—पु० आँगन, अजिर, सहन ।

अंगद—पु० बाजूबन्द । बालि-पुत्र ।

अंगन, अँगना—पु० 'अंगण' देखो ।

अंगना—स्त्री० (सुन्दर अँगवाली) स्त्री, सुन्दरी ।

अँगनाई—स्त्री० 'अंगण' देखो ।

अँगरखा—पु० घुटनोंके नीचे तकका पहिनावा, चपकन ।

अँगरा—पु० जलता हुआ कोयला । बैलोंका एक रोग ।

अँगराना—अक्रि० अँगड़ाई लेना 'सुनि मुनि-वचन उठे रघुनायक अलसाने अँगराने ।' रघु० ७४

अँगरी—स्त्री० जिरहबख्तर, कवच 'अँगरी पहिरि कूँदि सिर धरहीं ।' रामा २९०

अंगरेज—पु० इंग्लैण्डका निवासी ।

अँगवना—सक्रि० सिरपर लेना, सहना 'सूल कुलिस असि अँगवनि हारे ।'-रामा० २१०

अंगांगीभाव—पु० एक अंग या अंशका सम्पूर्णके साथ ऐसा सम्बन्ध जिसमें अंशके बिना सम्पूर्ण व्यर्थ हो। मुख्य-अमुख्य या आश्रय-आश्रयीका सम्बन्ध। उन अलंकारोंका पारस्परिक सम्बन्ध जिनमें एक दो मुख्य हों और उन्हींके आश्रित अन्य गौण अलंकार हों।

अंगा—पु० अँगरखा । [है, लिट्टी ।

अंगाकड़ी—स्त्री० मोटी रोटी जो अंगारोंपर सेंकी जाती

अंगार, अंगारा—पु० जलता हुआ कोयला ।

अंगारक—पु० अंगार, मंगल ग्रह, भँगरैया । —मणि, पु० मूँगा ।

अंगारिणी—स्त्री० गोरसी, अंगेठी, बरोसी ।

अंगारी—स्त्री० गोरसी । जलते हुए कोयलेका टुकड़ा ।

अंगिका, अँगिया—स्त्री० चोली, कञ्चुकी ।

अँगिरस—पु० एक प्रजापति ऋषिका नाम। एक संवत्सर-का नाम । कटीला गोंद ।

अंगिराना—देखो 'अंगड़ाना' (रस ३०) ।

अंगी—पु० प्राणी । प्रधान या मुखिया । नाटकमें प्रधान नायक या प्रधान रस (शृंगार या वीर) ।

अंगीकार—पु० स्वीकार ।

अँगीठा,-ठी—पु०; स्त्री०; गोरसी या बरोसी ।

अँगुठा—पु० देखो 'अंगूठा' (सू० ४९) ।

अँगुठी—स्त्री० पैरके अँगूठेका एक गहना ।

अंगुर—देखो 'अंगुल' ।

अंगुरी,-रिया—स्त्री० हाथ या पैरका अंग, उँगली ।

अंगुल—पु० आठ जौके बराबर नाप ।

अंगुलिपर्व—पु० उँगलीकी पोर या जोड़ ।

अँगुली—स्त्री० 'अंगुरी' देखो ।

अंगुश्तरी—स्त्री० मुँदरी, अँगूठी ।

अंगुश्ताना—पु० उँगलीपर पहिननेकी पीतलकी टोपी। अँगूठेकी मुँदरी, आरसी ।

अंगुष्ठ—पु० अँगूठा ।

अँगूठा—पु० तर्जनीके पासकी मोटी उँगली ।—चूमना, खुशामद करना ।—दिखाना, अँगूठा दिखाकर या तिरस्कारपूर्वक नाहीं करना ।—पर मारना, तुच्छ समझना ।

अँगूठी—स्त्री० मुँदरी, छल्ला ।

अंगूर—पु० एक मेवा, द्राक्षा। अंकुर।—बँधना या भरना, घाव भरना ।

अँगेजना—सक्रि० अँगवना, सहना । स्वीकार करना ।

अँगेठा,-ठी—पु०, स्त्री०; 'अँगीठी,' गोरसी ।

अँगेरना—सक्रि० देखो 'अंगेजना' ।

अँगोछना—अक्रि० कपड़ेसे बदन पोंछना 'कहा अँगोछति मुगुध तिय पुनि पुनि चन्दन जानि' ललित ५० ।'

अँगोछा— पु०, बदन पोंछनेका वस्त्र, गमछा ।

अँगोछी—स्त्री० छोटी धोती या गमछा ।

अँगोजना—सक्रि०, अँगेजना, सहना, स्वीकार करना ।

अँगोरा—पु० मच्छर, मसा ।

अंग्रेज—पु० इंग्लिस्तानका निवासी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंघस—पु० पाप।
अँघिया—स्त्री० चलनी, 'अँगिया' या 'अँखिया'।
अंघ्रि—पु० पाँव, चरण।
अंघ्रिप—पु० पेड़, वृक्ष।
अँचरा—पु० अञ्चल, साड़ीका वह छोर जो सामने छाती या पेटपर रहता है, पल्ला। (सू० ५५)
अंचल—पु० 'अँचरा' देखो। दिक्प्रदेश। किनारा।
अँचवना—अक्रि० आचमन करना, पीना, 'अष्टदस घट नीर अँचवै, तृषा तउ न बुझाइ।' सू० ४
अंज—पु० कमल।
अंजन—पु० काजल इ० जो आँखमें लगाया जाता है। लेप। रात्रि। एक पेड़।
अंजनसार—वि० अँजा हुआ, अंजन सहित ['एक तो नैना मद भरे दूजे अंजन सार']
अंजनहारी—स्त्री० बरौनीके पासकी फुंसी, गुहेरी। भृंगी कीड़ा।
अंजना—स्त्री०, हनुमानजीकी माता। गुहाई। सक्रि० आँजना 'जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान।' रामा० ४ [माता।
अंजनी—स्त्री०, गुहाई, गुहेरी। माया। हनुमानजीकी
अंजरि—स्त्री० देखो 'अंजलि' 'गुनमंजरि अंजरि कुसुमनकी···' गुणमंजरीदास।
अंजल,-अंजला—पु० देखो अंजलि। अन्नजल।
अंजलि,-ली, अँजली—स्त्री० दोनों हथेलियोंके मिलानेसे बना हुआ गड्ढा, या उतनी वस्तु जो उक्त गड्ढेमें आवे।
अँजवाना—अँजाना—सक्रि० अंजन लगवाना।
अंजसा—क्रिवि० जल्दीसे, शीघ्रतापूर्वक।
अंजाम—पु० नतीजा, अन्त।
अंजित—वि० अंजन लगाये हुए। पूजित।
अंजीर—पु० एक वृक्ष या उसका फल 'नारँग, नीबू, सुरङ्ग, जंभीरा। औ बदाम बहुभेद अंजीरा।' प० १४
अंजुमन—पु० सभा, मण्डली। [उदे० सू० ११२)
अँजुरी, अंजुली, अँजुली—स्त्री० 'अंजलि' (अँजुरी,
अँजोर—पु० उजेला, रोशनी, प्रकाश 'मारगहुत अँधियार जो सूझा। भा अँजोर, सब जाना बूझा।' प० ८
अँजोरना—सक्रि० दे० अजोरना। (विन० ३७९)
अँजोरा—वि० उजेला या रोशनीवाला। पु० अँजोर।
अँजोरी—वि० उजेली, उज्वल। स्त्री० चाँदनी, रोशनी 'रवि सन्मुख खद्योत अँजोरी।' रामा० ३६५
अंझा—स्त्री० अनध्याय, तातील। लोप 'अँझासी दिनकी भई संझासी सकल दिसि' भू० १३७
अँटना—अक्रि० समाना या भर जाना। काफी होना। खप जाना।
अंटा—पु० बड़ी गोली, डल्ला।
अंटाचित—क्रिवि० पीठके बल।
अँटिया—स्त्री० घास इत्यादिका गट्ठा या पूला।
अँटियाना—सक्रि० गायब करना। अँगुलियोंके बीच छिपाना। लपेटना या गट्ठा बाँधना।
अंटी—स्त्री० अँगुलियोंके बीचका गड्ढा या घाई। गाँठ। सूत लपेटनेकी वस्तु जो प्रायः लकड़ीकी बनी रहती है। शरारत, बेईमानी।
अंठी—स्त्री०, गुठली, गिलटी।
अंड—पु० अंडा। ब्रह्माण्ड या विश्व, लोक (सू० ३३,८०)। अंडकोश, वीर्य, एरण्ड वृक्ष, कस्तूरी।
अंडकटाह—पु० ब्रह्माण्ड, जगत्।
अंडकोश, अंडकोष—पु० फोता। ब्रह्माण्ड।
अंडज—पु० अण्डेसे पैदा होनेवाले जीव, पक्षी, साँप, इ०
अंडबंड—स्त्री० बेसिर पैरकी बात। वि० असम्बद्ध, शृंखलाहीन।
अंडस—स्त्री० असुविधा, कठिनाई।
अंडा—पु० वह गोला जिसमेंसे पक्षियोंके बच्चे निकलते हैं।
अंडी—स्त्री० रेंडीका पेड़ या बीज। एक रेशमी कपड़ा।
अंडुआ—पु० वह पशु जो बधिया न किया गया हो। वि० 'आँडू'।
अंत—पु० अवसान, मृत्यु। हद। नतीजा। भेद 'उघरे अन्त न होहि निबाहू।' रामा० ८। अन्तःकरण। पिछला भाग। क्रिवि० अन्यत्र 'मेरी तौ गति पति तुम अंतहि दुख पाऊँ।' सू० १२। अन्तमें 'नल बल जल ऊँचौ चढ़ै, अन्त नीचको नीच।' वि० १४२
अंतक—पु० नष्ट करनेवाला, यमराज, मृत्यु, शंकर।
अंतकर,-कारक,-कारी,—पु० नाश करनेवाला।
अंतक्रिया—स्त्री० मृतककर्म, अन्त्येष्टिक्रिया।
अंतघाई—वि० 'अन्तघाती', अन्तमें विश्वासघात करनेवाला।
अंतच्छद—पु० भीतरी आच्छादन, भीतरी तल।
अंतज—पु० 'अंत्यज'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अँतड़ा—स्त्री० आँत।
अंतरंग,-रंगी—वि० बहुत समीपका, दिली। पु० सुहृद।
अंतर—पु० भेद, फर्क, बीचकी दूरी या समय। अवसर। ओट, छिद्र। वि० अंतर्द्धान। भीतरी 'अन्तर प्रेम तासु पहिचाना।' ३७९ रामा० बीचका (अंतर्दशा, अन्तर्दिशा) क्रिवि० भीतर 'जे पद कमल संभु चतुरानन हृदय कमल अंतर राखे।' सू० ८०। दूर, पृथक् 'सूरदास प्रभुको हियरेतें अंतर करौं नहिं छिनहीं।' सू०
अंतरजामी—पु० दिलकी जाननेवाला। ईश्वर।
अंतरपट—पु० परदा या ओट, कपड़ौरी। दुराव (प० १५०)
अंतरा—पु० मध्यका पद। क्रिवि० पृथक्, निकट, मध्य।
अँतरा—पु० नागा, बीच। वि० एक छोड़कर दूसरा, (अँतरा ज्वर)
अंतरात्मा—स्त्री० अन्तःकरण, जीवात्मा।
अँतराना—सक्रि० भीतर करना, पृथक् करना।
अंतराय—पु० रुकावट, विघ्न।
अंतराल—पु० मण्डल, घेरा, बीच। [गुप्त।
अंतरिक्ष,-रिख,-रिच्छ—पु० आकाश, शून्य स्थान। वि०
अंतरीप—पु० भूमिका वह पतला टुकड़ा जो समुद्रमें दूर तक चला गया हो।
अंतरीय—वि० भीतर। पु० अधोवस्त्र।
अँतरौटा—पु० साड़ीके नीचे पहिननेका कपड़ा (सूवि० २०)। अस्तर।
अंतर्गत—वि० भीतर आया हुआ, शामिल, गुप्त। पु० हृदय।
अंतर्गति—स्त्री० हृदयका भाव।
अंतर्घट—पु० अन्तःकरण, हृदय।
अंतर्जामी—पु० 'अंतर्यामी'
अंतर्ज्ञान—पु० मनकी बात जानना। अपने मनका अनुभव 'अंतर्बोध'।
अंतर्दशा—स्त्री० महादशाके भीतरकी दशा।
अंतर्दृष्टि—स्त्री० 'अन्तर्ज्ञान', प्रज्ञा, आत्मचिन्तन।
अंतर्द्धान,-ध्यान—वि० लुप्त, अदृष्ट, छिपा हुआ। पु० लोप, तिरोधान।
अंतर्द्वार—पु० गुप्तद्वार, खिड़की।
अंतर्पट—पु० आड़, पर्दा।
अंतर्बोध—पु० 'अंतर्ज्ञान', भीतरी अनुभव।
अंतर्भाव—पु० भीतर रहना, तिरोभाव, भीतरी इच्छा।
अंतर्यामी—पु० हृदयकी बात जाननेवाला। ईश्वर।
अंतर्लापिका—स्त्री० वह पहेली जिसका उत्तर उसीके अक्षरोंमें हो।
अंतर्वेद—पु० गंगा-यमुनाके बीचका देश।
अंतर्हित—वि० अन्तर्द्धान, अदृश्य 'अस कहि अंतर्हित प्रभु भयऊ।' रामा० ७७।
अंतश्छद—पु० 'अंतच्छद' देखो।
अंतस—पु० हृदय, अन्तःकरण, कलेजा 'काँचि काँचि बाँकी अनियन सों मेरो अन्तस चलनी कीनो।' ललित कि०
अंतस्ताप—पु० भीतरी दुःख, मानसिक व्यथा।
अंतस्थ—वि० भीतर या बीचमें स्थित, मध्यवर्त्ती। स्पर्श और ऊष्म वर्णोंके बीचवाले वर्ण—य, र, ल, व।
अंतस्सलिला—वि० स्त्री० गुप्त जलप्रवाहवाली। स्त्री० सरस्वती या फल्गू नदी।
अंतहपुर—पु० घरका वह भाग जहाँ स्त्रियाँ रहती हों, जनानखाना (रघु ३२)।
अंतावरी—स्त्री० आँतोंका समूह 'अंतावरी गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं।' रामा० ३७४
अंतिम—वि० सबसे बादका, पिछला। सबसे बढ़कर।
अंतेउर,-वर—पु० अन्तःपुर, जनानखाना।
अंतःकरण—पु० सुख दुःख इत्यादिका अनुमान या भले-बुरेका निर्णय करनेवाली भीतरी इन्द्रिय। सदसद्-विवेचनी शक्ति, हृदय।
अंतःपुर—पु० रनिवास, जनानखाना।
अंत्य—वि० अंतका, सबसे पिछला, अधम।
अंत्यज—पु० शूद्र, अछूत।
अंत्यानुप्रास—पु० पद्यमें चरणके अंतिम अक्षरोंका मेल, तुक, तुकांत।
अंत्येष्टि—स्त्री० मृतकका क्रियाकर्म।
अंत्र, पु० अँत्री—स्त्री० अँतड़ी।
अंधऊ, अँधऊ—पु० स्त्री० जैनियोंका संध्याकालीन [भोजन।
अंदर—वि० भीतर।
अंदरसा—पु० एक तरहकी मिठाई।
अंदरी, अंदरूनी—वि० भीतरी।
अंदाज—पु० अनुमान, अटकल, नाप-जोख। ढँग, तर्ज।
अंदाजन—क्रिवि० लगभग, अटकलसे।
अंदाजा—पु० तखमीना, अटकल।
अँदाना—सक्रि० बरकाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अँदेश,—शा. अँदेस—पु० चिंता। संशय, खटका। दुविधा 'मिलतहु महँ जनु अहौ निनारे। तुम्ह सौं अहै अँदेस, पियारे' प० ४०

अंदोर—पु० शोर, कोलाहल 'बाजन बाजहिं होइ अंदोरा।' प० २०७-(सू० ८१)

अंध—वि० अंधा, अज्ञानी, बावला।—कूप—पु० अँधेरा या सूखा कुआँ।—खोपड़ी, वि० मूर्ख। स्त्री० शून्य मस्तिष्क।—विश्वास, पु० विवेकरहित धारणा

अंधक—पु० अंधा मनुष्य। युधाजित्के पुत्र। एक दैत्य। —रिपु, पु० शिव। अँधेरा मिटानेवाले, सूर्य या चन्द्र।

अंधकार—पु० अँधेरा, मोह, निराशाका भाव।

अंधकाल—पु० अँधेरा। जागिए गोपाललाल प्रगट भई हंसमाल मिट्यो अंधकाल उठौ जननी मुख दिखाई।' सूवे. ९४

अंधड़—देखो 'अंधर'।

अंधधुंध—पु० अन्याय। अँधेरा (सूवे० ५२)। वि० विचारहीन 'सूर श्याम कैसे निबहैगी, अंधधुंध सरकार।' भ्र० १४२

अँधबाई—स्त्री० आँधी 'धावहु नंद गोहारी लागौ किनि तेरो सुत अँधबाइ उड़ायो।' सूवे. ५३

अंधर—पु० आँधी। अंधेरा। 'नखत चहूँदिसि रोवहिं अंधर धरति अकास।'-प० ११५

अंधरा—पु० अंधा मनुष्य। वि० अंधा।

अंधस—पु० भात।

अंधा—वि० नेत्रविहीन, मूर्ख, विवेकहीन। अन्धेकी लाठी = एकमात्र सहारा।

अंधाधुंध—वि० विचारहीन। क्रिवि० सीमासे अधिक, बेरोकटोक। स्त्री० अंधेर, अन्याय, अंधेरा।

अँधार—पु० अँधेरा।

अँधारी—स्त्री० आँधी। अँधेरा। वि० स्त्री० अंधकारमय।

अँधियार,-यारा—पु० अँधेरा। वि० अंधकारयुक्त, सूना।

अंधेर—पु० अनाचार, अन्याय, गड़बड़।

अँधेरना—सक्रि० अंधकारयुक्त करना।

अँधेरा—पु० अंधकार, उदासी। वि० अंधकारमय।

अँधेरिया, अँधेरी—स्त्री० अँधेरी रात। अंधकार।

अँध्यार,-री—पु०, स्त्री० अँधेरा, अँधियारी (ललित १९८)

अंध—पु० शिकारी, व्याधा। एक वंश, एक प्रान्त।

अंब—स्त्री० अंबा, माता। पु० आमका वृक्ष या फल 'बसै मीन जल धरती, अंबा बसै अकास।' प० ८५

अंबक—पु० आँख ('त्र्यंबक' = शिव)। पिता। ताँबा।

अंबर—पु० आकाश या मेघ। वस्त्र। कपास।

अँबराई—स्त्री० आमके पेड़ोंका झुण्ड या बागीचा।

अँबराव—पु० आमका बागीचा।

अंबल—पु० 'अमल', नशेकी वस्तु। खट्टा रस।

अंबष्ठ—पु० एक जातिका नाम, महावत।

अंबा—स्त्री० माता। दुर्गा या गौरी। काशीके राजाकी बड़ी कन्या जो बादमें शिखण्डी हुई थी। आम 'अम्बाफल छाँड़ि कहा सेवरको धाऊँ।' सू० (ब्रज माधुरीसार, ५)

अंबार—पु० ढेर या समूह।

अंबारी - स्त्री० हौदा या छज्जा।

अंबिया—स्त्री० छोटा आम।

अँबिरथा—वि० व्यर्थ 'जेइ अवतरि उन्ह कहँ नहिँ चीन्हा। तेइ यह जनम अँबिरथा कीन्हा।' अख०३४९

अंबु—पु० पानी। चारकी संख्या।—कण्टक = मगर।

अंबुज,-जात—पु० कमल, वज्र, बेंत, शंख, ब्रह्मा।

अंबुद,-धर—पु० मेघ।

अंबुनिधि,-पति—पु०, समुद्र या वरुण।

अंबुभृत,-वाह—पु० बादल।

अंबुरुह—पु० कमल। [भूले।' सूवे०२४५

अंबुवा—पु० आम 'मौरे अंबुवा औ द्रुमबेली परिमल

अंभ—पु० पानी। देव। पितृलोक।

अंबुशायी—पु० नारायण।

अंभोह—पु० भीड़ या समूह (दीन १०२)।

अंभोज—पु० कमल, मोती, चन्द्र इ०।

अंभोद,-धर—पु० बादल।

अंभोरुह—पु० कमल।

अँवरा, अँवला—पु० 'आँवला'।

अँवदा—वि० 'औंधा'।

अंश—पु० भाग। चौथा या सोलहवाँ हिस्सा। वृत्त-परिधिका ३६० वाँ हिस्सा। कंधा।

अंशक—पु० बाँटनेवाला, अंशधारी। पु० हिस्सेदार। भाग। दिन।

अंशसुता—स्त्री० यमुना नदी।

अंशी—पु० हिस्सेदार। वि० अंशधारी, अवतारी।

अंशु—पु० किरण, सूत, लेश। सूर्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंशुक—पु० वस्त्र, उपरना या ओढ़नी। तेजपात।
अंस, अंसु—पु० अंश, भाग, कंधा 'वाम अंस लसत चाप'–गीता ३३७। 'कबहुँक बैठि अंसु भुज धरिकै'–सू० ७५। आँसू 'सुमिरि सुमिरि गरजत जल छाँड़त अंसु सलिलके धारे।' सू० २००
अंसुआ,–वा—पु० आँसू 'रहिमन अँसुआ बाहरे विथा जनावत हेय।' रहीम।
अंसुवाना—अक्रि० अश्रुसहित होना।
अंह, अंहस—पु० पाप, अपराध। विघ्न।
अउ, अउर—अ० और।
अऊत—वि० पुत्रहीन (कबीर ५३)।
अऊलना—अक्रि० तप्त होना, जलना, चुभना।
अएरना—सक्रि० अंगीकार करना, ग्रहण करना (वि० ३९)।
अकंटक—वि० कंटकहीन, विना खटकेका। बाधारहित।
अकंपन—वि० जो काँपे नहीं, दृढ़, स्थिर। एक राक्षस।
अक—पु० पाप या पीड़ा।
अकच—वि० बालोंसे रहित। पु० 'केतु' नामक ग्रह।
अकच्छ—वि० नंगा, लम्पट।
अकड़—स्त्री० ऐंठ, शेखी, ढिठाई। हठ।—बाज, घमण्डी।
अकड़ना—अक्रि० ऐंठना, सूखकर कड़ा हो जाना। घमण्ड करना। हठ करना।
अकत—वि० समूचा, कुल। संपूर्णतया।
अकथ,–नीय—वि० अवर्णनीय, न कहने योग्य, कहनेकी
अकत्थ, अकथ्य—वि० 'अकथ' [शक्तिके बाहर।
अकधक—पु० आगापीछा, आशंका।
अकनना—सक्रि० कान देना, सुनना,। अकनि = आकर्ण्य, सुनकर, 'तुरँग नचावहिं कुँवरबर अकनि मृदंग निसान।' रामा० ७३; 'नगर शोर अकनत सुनत अति रुचि उपजावत।' सूबे० २७७
अकबक—पु० अंडबंड। घबराहट। सुध।
अकबकाना—अक्रि० घबराना या चकित होना।
अकबाल—पु० 'इक़बाल', प्रताप, भाग्य। स्वीकार।
अकर—वि० करहीन। दुष्कर या न करने योग्य। विना महसूलका। पु० आकर, खान 'हिमकर सोहै तेरे जसके अकर सो।'—भू० २०
अकरखना—सक्रि० आकर्षित करना, खींचना।
अकरण, अकरन—वि० कारणरहित। जिसका करना अनुचित या कठिन हो। पु० इंद्रियोंसे रहित, ईश्वर।
अकरणीय,–नीय—वि० न करने योग्य।
अकरा—वि० 'अक्रय्य', महँगा, अमूल्य। खरा, चोखा। 'नफा जानि कै ह्याँ लै आये सबै वस्तु अकरी।' भ्र० ४५। 'नाम प्रताप महामहिमा, अकरे किये खोटेउ, छोटेउ बाढ़े।' [कविता २३४
अकराथ—वि० 'अकारथ', व्यर्थ।
अकराल—वि० जो भयंकर न हो, सुंदर। भयावह।
अकरास—पु० सुस्ती, अँगड़ाई।
अकर्त्तृक—वि० जो किसीके द्वारा रचा न गया हो।
अकर्म—पु० बुरा कर्म। कर्मका न होना।
अकर्मक—वि० जिसमें कर्म न हो (वह क्रिया), जैसे उठना, बैठना।
अकर्मण्य—वि० निकम्मा, निठल्ला, सुस्त।
अकर्मा—वि० बेकाम, 'अकर्मण्य', काम न करनेवाला।
अकर्मी—वि० पापी, खोटा काम करनेवाला।
अकर्षण,–न—पु० आकर्षण, खिंचाव। [रामा० १४५
अकलंकता—स्त्री० कलंकहीनता 'अकलंकता कि कामी लहई'
अकल—वि० अवयवरहित, निराकार, अखंड। बेचैन।
अकस—पु० वैर या डाह, विरोध 'काम क्रोध लाह कै देखाइयत आँखि मोहिं, एते मान अकस कीबेको आपु आहिको।' कविता० २२६
अकसना—सक्रि० वैर करना, झगड़ना, बराबरी करना। (ललित० १९३)
अकसर—क्रिवि० बहुधा, विशेष करके। अकेले ही 'कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयहु तात।' रामा० ३७७। वि० अकेला।
अकसीर—स्त्री० सब रोगोंपर चलनेवाली ओषधि। वि० अचूक।
अकस्मात्—क्रिवि० अचानक, संयोगसे, बिना किसी खास वजहके।
अकह—वि० जो कहा न जा सके। अवर्णनीय, अकथ्य। 'कत्ताकी कराकन चकत्ताको कटक काटि कीन्ही सिवराज वीर अकह कहानियाँ।' भू० १५२। अनुचित।
अकहुवा—वि० अकथनीय, अवर्णनीय।
अकांड—वि० शाखारहित। क्रिवि० अचानक, अकारण।
अकाज—पु० दुष्कर्म, बिगाड़, हानि।
अकाजना—सक्रि० हानि करना। अक्रि०—खो जाना, नष्ट होना, न रहना "मानहुँ राज अकाजेउ आजू।' रामा० ३१७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अकाजी—वि० हानि या विघ्न करनेवाला।

अकाट्य—वि० न काटने योग्य, दृढ़।

अकाथ—क्रिवि० अकारथ, वृथा 'भयो है सुगम तोको अमर-अगम तन समुझि धौं कत खोवत अकाथ।' विनय २३३। वि० 'अकथ'।

अकाम,-अकामी—वि० कामनाविहीन। विना इच्छाका। जितेन्द्रिय।

अकाय— वि० विना कायाके। शरीररहित। निराकार।

अकार—पु० 'आकार'

अकारज—पु० अकाज, हानि, हर्ज।

अकारण,-रन—वि० कारणरहित, हेतुरहित। क्रिवि० व्यर्थ।

अकारथ—क्रिवि० व्यर्थ (साखी ८५)।

अकाल—पु० दुर्भिक्ष। अनवसर 'विनही ऊगे ससि समुझि दैहै अरघ अकाल।' विहारी ११३

अकाली—पु० नानकपंथी साधु।

अकाव—पु० आक या मदार।

अकास—पु० आकाश, गगन।—बाँधना, अनहोनी बातके लिए प्रयत्न करना 'सूधे बात कहौ सुख पावैं बाँधन कहत अकास।' सूबे० १३३

अकासबेल—पु० अमरबेल।

अकासी—स्त्री० एक पक्षी 'बाएँ अकासी धौरी आई। लोवा दरस आइ दिखराई।' प० ६१

अकिंचन—वि० जिसके पास कुछ न हो, दरिद्र, दीन। कर्मशून्य। पु० दरिद्र मनुष्य।

अकिंचित्कर—वि० जिससे कुछ करते न बने, असमर्थ।

अकिल—स्त्री० 'अक्ल', बुद्धि।

अकिल्विष—वि० पापशून्य, निर्मल।

अकीरति, अकीर्त्ति—स्त्री० अपयश, बदनामी।—कर, वि० अपयश देनेवाला।

अकुंठ—वि० जो कुंठित न हो, तीक्ष्ण, खरा। खुला हुआ 'जीवतहि विधिलोक जीवतहि सिवलोक जीवत वैकुंठ लोक जो अकुंठ गायो है।' सुन्द० १६२

अकुनाना—अक्रि० उकताना, अकुलाना या ऊबना।

अकुल—वि० कुलविहीन। अकुलीन। पु० नीच कुल।

अकुलाना—अक्रि० व्याकुल या बेचैन होना। मग्न होना।

अकुलिनी—स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। वि० स्त्री० व्यभिचारिणी।

अकूत—वि० जो कूता न जा सके, अपरिमित, अपार। 'सुनिके दूत अकूत मोद लहि चले तुरत तिरहूता।' रघु० १३३। 'सूर नारिनर देखन धाए घर घर शोर अकूत।' सूबे २५७ (प० ६३) क्रिवि० अकस्मात् 'सबद अकूत मँडप महँ आवा।' प० ७६

अकूहल—वि० बहुत, असंख्य।

अकृच्छ्र—वि० सरल या आसान। पु० आसानी।

अकृत—वि० विना किया हुआ, या नष्ट किया हुआ। स्वयंभू। कर्महीन, निकम्मा 'हौं असोच, अकृत, अपराधी, सम्मुख होत लजाउँ।' सूबे० १४

अकेतन—वि० जिसके घरद्वार न हो, गृहविहीन।

अकेल, अकेला—वि० एकाकी, अद्वितीय। पु० निर्जन स्थान 'अकेलेमें'

अकेले—क्रिवि० एकाकी। सिर्फ।

अकैया—पु० एक तरहकी थैली, खुरजी, गोन।

अकोट—वि० करोड़ों।

अकोतर सौ—वि० एक सौ एक।

अकोर, अकोरी—देखो 'अँकोर'। अँकवार या गोद।

अकोला—पु० 'अंकोल' वृक्ष। [गेंड़ा।

अकोविद—वि० मूर्ख, अदक्ष। पु० ऊखका सिरा या

अकोसना—सक्रि० 'कोसना', भला-बुरा कहना।

अकौआ—पु० मदार या आकका पेड़।

अक्खड़—वि० उजड्ड, मूर्ख, खरीखरी बात कहनेवाला।

अक्खर—पु० 'अक्षर'

अक्रम—वि० क्रमरहित, उलटा-पुलटा। पु० व्यतिक्रम, बेतरतीबी।

अक्रमातिशयोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार।

अक्रूर—वि० दयालु, कोमल स्वभावका। श्रीकृष्णके चाचा।

अक्रु—स्त्री० बुद्धि या समझ।

अक्ष—पु० पहिया या धुरी। गाड़ीका जुआँ या गाड़ी। चौसरका पाँसा, रुद्राक्ष, 'अक्षिस' (आँख)। १६ माशेकी तौल। आत्मा। सर्प। गरुड़।

अक्षकूट—पु० आँखकी पुतली।

अक्षत—पु० विना टूटे चावल, धानका लावा। वि० विना टूटा हुआ। समूचा।

अक्षम—वि० असमर्थ, असहिष्णु।

अक्षय, अक्षय्य—वि० जो नश्वर न हो, अविनाशी।

अक्षर—पु० वर्ण, हरफ। ब्रह्म। गगन। आत्मा। मोक्ष। धर्म। वि० अविनाशी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अक्षरशः—क्रिवि० एक एक अक्षर। पूर्णतया।
अक्षांश—पु० भूगोलके ३६० कल्पित अंशोंपरसे भूमध्य रेखाके समानान्तर होती हुई रेखा।
अक्षि—स्त्री० नेत्र, नयन।
अक्षुण्ण—वि० विना टूटा हुआ, अविकृत, समूचा।
अक्षोनि—पु० 'अक्षौहिणी'।
अक्षौहिणी—स्त्री० वह सेना जिसमें १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २१८७० हाथी हों।
अक्सर—क्रिवि० दे० 'अकसर', प्रायः, बहुधा। एकाकी।
अखंग—वि० समाप्त न होनेवाला, अविनाशी।
अखंड—वि० सम्पूर्ण, जिसका सिलसिला न टूटे। बाधारहित।
अखंडनीय—वि० जिसका खंडन न हो सके। सुदृढ़।
अखंडल—वि० अखंड, सम्पूर्ण।
अखंडित—वि० जिसका खण्ड न हो, समूचा। निर्विघ्न। लगातार।
अखज—वि० अखाद्य, अभक्ष्य 'विहरत पख फुलाय, नहीं खज अखज विचारत।' दीन० २०९
अखबार—पु० समाचारपत्र।
अखय—वि० 'अक्षय', अविनाशी।
अखर—पु० अक्षर।
अखरना—सक्रि० अनुचित या कष्टदायी मालूम होना।
अखरा—वि० खरा नहीं, बनावटी।
अखरोट—पु० एक पेड़ तथा उसका फल।
अखर्व—वि० बड़ा या लम्बा। (राम ४)
अखाड़ा,-रा—पु० कुश्ती लड़नेकी जगह। साधुओंकी मंडली या सभा। 'सूरदास स्वामी ए लरिका इन कब देखे मल्ल अखारे।' सूवे० २६१
अखिल—वि० सम्पूर्ण, अखंड।
अखीन—वि० अक्षीण, अविनाशी।
अखीरमें—क्रिवि० अंतमें।
अखूट—वि० अखंड या अधिक।
अखेट—पु० 'आखेट'।
अखै—वि० 'अक्षय'।
अखैवट,-वर—पु० अक्षयवट।
अखोर—वि० साधु प्रकृतिका, अच्छा, सुन्दर। पु० तुच्छ वस्तु, कूड़ा कचड़ा या मुरझाई हुई घास।
अखोह—पु० विषम भूमि।
अख्तियार—पु० अधिकार।
अख्यान—पु०; **अख्यायिका**—स्त्री० दे० 'आख्यान', 'आख्यायिका'।
अग—वि० न चलनेवाला। पु० पहाड़, पेड़, सर्प। 'अज्ञ' या मूर्ख।
अगज—वि० पहाड़से उत्पन्न। हाथी या शिलाजीत।
अगटना—अक्रि० इकट्ठा होना।
अगड़—स्त्री० 'अकड़', अभिमान या ऐंठ 'साहिन सो विनु डर अगड़, विनु गुमानको दान।' भू० ६०
अगड़धत्ता—वि० ऊँचा-पूरा। बढ़ा-चढ़ा।
अगण—पु० जगण, तगण, रगण, सगण, ये चार गण जो छन्दके आदिमें रखनेसे अशुभ समझे जाते हैं।
अगत, अगति—स्त्री० दुर्गति, बुरी दशा 'अफजलकी अगति सासताकी अपगति बहलोल विपतिसों डरे उमराव हैं।' भू० ३७। 'गति' अर्थात् मोक्षका न मिलना। देखो 'अगती'। [आश्रयहीन।
अगतिक—वि० जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो,
अगती—वि० जिसकी गति अच्छी न हो, दुराचारी। पु० पापी मनुष्य 'अगतिनको गति देनी'-सू० २९ वि० पेशगी। क्रिवि० पहिलेसे।
अगत्या—क्रिवि० आगे चल कर, अन्त में। सहसा।
अगन—स्त्री० अग्नि।—पु० अगण या दुष्टगण (पिंगलमें)। वि०अगणित, बहुत 'पम्पा मानसर आदि अगन तलाव लागे जेहिके परनमें अकथ युत गथके।' भू० ११४
अगनत, अगनित—वि० अगणित।
अगनी—स्त्री० 'अग्नि'।
अगनू—स्त्री० आग्नेय कोण।
अगनेउ, अगनेत—पु० आग्नेय दिशा (प० १८५)।
अगम—वि० जहाँ कोई पहुँच न सके, गहन। कठिन, सुदृढ़ 'लंका बसत दैत्य अरु दानव, उनके अगमसरीरा।' सू०रा० ३९। अपार, बहुत। दुर्लभ। 'आगम'।
अगमन—क्रिवि० पहिले, आगेसे 'हस्ति पाँच जो अगमन धाए। तिन्ह अंगद धरि सूँड़ फिराए।' प० १२६। उठि अकुलाइ अगमने लीने मिलत नैन भरि आये नीर।' सूवे० ४३२
अगमानी—पु० अग्रणी, नायक। 'अगवानी'
अगम्य—वि० 'अगम' देखो।
अगर—पु० एक सुगंधित पेड़। क्रिवि० यदि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अगरना—अक्रि० आगे जाना या बढ़ना।
अगरपार—पु० क्षत्रियोंका एक भेद।
अगर बगर—क्रिवि० अगल बगल 'अगर बगर हाथी घोरनको सोर है।' सुदामा० १५
अगरी—स्त्री० अर्गल या ब्योंड़ा। एक तरहकी घास। अनुचित बात।
अगरू—पु० 'अगर', चन्दन।
अगरो—वि० अगला, श्रेष्ठ, ज्यादा। निपुण (ब्रज० ५०६)।
अगले बगल—क्रिवि० आसपास, इधर उधर।
अगवना—सक्रि० सँभालना, सहना 'अगवै कौन सिंहकी झपटैं।' छत्र० १४
अगवाई—पु० अगुआ 'सफदरजंग भये अगवाई।' सुजा० ११६। स्त्री० अगवानी 'मुनि आगमन सुनत दोउ भूपति चले लेन अगवाई।' रघु० १४७
अगवान—पु० अगवानी करनेवाला 'अगवानन्ह जब दीख बराता।' रामा० १६४। अगवानी।
अगवानी—स्त्री० आगे जाकर स्वागत करना। स्वागत। पु० अग्रणी, नेता ['याही तें अनुमान होत है, पटपदसे अगवानी।' सू०]
अगसारी—क्रिवि० आगे, सामने 'हस्तिक जूह आय अगसारी।' प० १२६ [एक पेड़।
अगस्त, अगस्त्य—पु० एक ऋषि या एक तारेका नाम।
अगह—वि० 'अग्राह्य', जो पकड़ने योग्य न हो, चंचल 'निसि वासर यह भरमति इत उत, अगह गही नहिं जाय।' सू० ४
अगहन—पु० अग्रहायण मास, कार्त्तिकके बादका महीना।
अगहर—क्रिवि० पहिले।
अगहुड़—क्रिवि० आगे 'भयबस अगहुड़ परै न पाऊ।' रामा० २१०
अगाउनी—क्रिवि० आगे। [
अगाऊँ, अगाऊ—वि० पेशगी, आगेका। क्रिवि० पहिले ही, आगेसे 'कौन कौनको उत्तर दीजे तातें भयो अगाऊँ।' सू० २६१
अगाड़ी—क्रिवि० आगे, सामने, पहिले। स्त्री० घोड़ेकी गरदनकी रस्सी।
अगाध—वि० अथाह, अपार। अधिक। दुर्बोध। पु० छेद।
अगामै—क्रिवि० आगे।
अगार—पु० घर। राशि। क्रिवि० आगे 'ईसुर कही कि कुँवर जी हूजे आप अगार।' सुजा० ३२ (३६ भी)

अगारी—क्रिवि० 'अगाड़ी'।
अगास—पु० 'आकाश'। दरवाजेके सामनेका चबूतरा।
अगाह—वि० अथाह, 'भवसागर भारी महा गहिरा अगम अगाह।' साखी १०५। बहुत (प० ३६)। चिन्ताग्रस्त। 'आगाह', विदित।
अगिन—स्त्री० अग्नि 'अहं अगिन निसि दिन जरै, गरुवे चाहै मान।' साखी ४। एक तरहकी घास। एक चिड़िया। वि० 'अगणित,' बहुत।
अगिनित—वि० जिसका गणना न हो सके, असंख्य।
अगियाना—अक्रि० जल उठना।
अगिया वैताल—पु० एक वैताल, 'बलराक्षस', घूमती हुई सी ज्योति।
अगियारी—स्त्री० धूपकी तरह अग्निमें डालनेकी वस्तु।
अगिरीं—स्त्री० घरका सामनेवाला हिस्सा।
अगीठा—पु० सामनेका हिस्सा।
अगीत पछीत—पु० मकानके सामनेवाला और पिछला हिस्सा।
अगुआ, अगुवा—पु० अग्रणी, नेता। मार्गदर्शक।
अगुआई—स्त्री० नेतृत्व, मार्गप्रदर्शन 'कियेउ निषादनाथ अगुआई।' रामा० २९६। दे० 'अगवानी' 'लेन चले मुनिकी अगुआई।' रघु० ५६
अगुआना—सक्रि० अगुआ बनाना। अक्रि० आगे जाना 'संगक सखि अगुआइलि रे हम एकसरि नारी।' विद्या० ८४
अगुण—वि० गुणरहित, मूर्ख। पु० अवगुण।
अगुन, अगुनी—वि० 'अगुण' देखिये। 'खल अघ अगुन साधु गुनगाहा।' रामा० ७
अगुमन—क्रिवि० पहिले, आगे।
अगुरु—पु० अगरका पेड़। 'ऊद।' शीशमका वृक्ष।
अगुवानी—स्त्री० अगवानी, अभ्यर्थना।
अगुसरना—अक्रि० आगे बढ़ना।
अगुसारना—सक्रि० आगे बढ़ाना, 'बाम चरण अगुसारल रे, दाहिन तेजइत लाज।' विद्या० ४७
अगूठना—सक्रि० भगोटना, घेरना 'जेहि कारण गढ़ कीन्ह अगूठी। कित छाँड़े जो आवै मूठी।' प० २८८
अगूता—क्रिवि० सम्मुख, आगे 'बाजन बाजहिं होइ अगूता।' प० ३३०
अगेह—वि० गृहरहित, बेठिकानेका।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अगोचर—वि० जो इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य न हो।

अगोट—पु० ओट, रोक। आश्रय, सहारा (वि० १६२). 'रहिमन चहि संसारमें सब सुख मिलत अगोट।' रहीम० २१। वि० पहरे इत्यादिसे सुरक्षित 'रसखोट भयेते अगोट अगारेमें मचौ चौकी डाँकि आनि घर कीन्ही हद रेवा है।' भू० ३१

अगोटना—सक्रि० रोकना, छेंकना, घेरना 'सचु कोट जो साइ अगोटी।' प० २७८। छिपा रखना या रोक रखना 'जौ गुन ही तौ राखिये आँखिन माँहि अगोट।' वि० १०४। अक्रि० रुकना, फँसना।

अगोना—स्त्री० अगवानी। क्रिवि० सम्मुख (देखो 'अगूना')।

अगोरदार—पु० पहरा देनेवाला।

अगोरना—सक्रि० प्रतीक्षा करना, राह देखना, पहरा देना, रोकना, अगोटना। [मेरे नैनन ही सब खोरि। श्याम बदन छवि निरखि जु अटके पहुरे नहीं बहोरि। जौ मैं कोट जतन करि राखति घूँघट ओट अगोरि।' (सू०)]

अगोनी स्त्री० अगवानी। क्रिवि० पहिले, आगे 'इन्दिरा अगौनी इन्दु इन्दीवर औनी महा सुन्दर सलौनी गज-गौनी गुजरातकी।' रवि० ३१।

अगोरा—पु० गढ़ेका नगरकी ओरका हिस्सा।

अगोहैं क्रिवि० आगेकी ओर, आगे।

अग्नि स्त्री० आग, गर्मी, जठराग्नि।

अग्निकर्म—पु० हवन। दाहक्रिया।

अग्निकुमार—पु० कार्त्तिकेय।

अग्निजिह्व—पु० देवता।

अग्निद्योत—पु० सोना।

अग्निमणि पु० सूर्यकान्त मणि। आतशी शीशा।

अग्निमुख—पु० देवता। प्रेत। ब्राह्मण।

अग्निवल्लभ—पु० सालका पेड़ या उसकी गोंद।

अग्य—वि० देखो 'अज्ञ'। [रामा० ४७

अग्या—स्त्री० आज्ञा 'अग्या सिरपर नाथ तुम्हारी।'

अग्यारी—स्त्री० धूप इ० जलाना। धूप देनेका पात्र।

अग्र—वि० अगला, उत्तम। पु० अगला हिस्सा, सिरा। क्रिवि० सामने या आगे।

अग्रज—पु० बड़ा भाई। नेता, अग्रणी। वि० श्रेष्ठ।

अग्रजन्मा, अग्रजाति—पु० ब्राह्मण।

अग्रणी—पु० नेता, नायक।

अग्रसर—वि० प्रधान। पु० जो आगे जावे, नेता।

अग्रिम—वि० अगला, श्रेष्ठ। पेशगी।

अघ—पु० पातक, दुःख, अधर्म।

अघट—वि० न होने योग्य, कठिन। जो कम न हो, जो न चुके 'दीपक दीन्हा तेल भरि बाती दई अघट।' साखी ६। स्थिर।

अघटित—वि० जो न हुआ हो। अमिट 'काल करम गति अघटित जानी।' रामा० २७८। न घटने योग्य, जो कम न हो, प्रचुर। असंभव, अयोग्य।

अघवाना—सक्रि० (भोजन इ० से) सन्तुष्ट करना।

अघाउ—पु० तृप्ति, सन्तोष 'ता मिसि राजकुमार बिलोकति होत अघाउ न चित्त पुनीता।' रघु १०५।

अघात—पु० 'आघात', चोट, प्रहार 'बुंद अघात सहैं गिरि कैसे।' रामा ४०२। वि० मन भर, बहुत।

अघाना—अक्रि० अफरना, तृप्त होना 'जासु कृपा नहिं कृपा अघाना।' रामा० २१। पूर्णतः सन्तुष्ट होना, थकना 'प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊँ।' रामा० ५८४। अघाइ = अघाकर (पूर्णतः)।

अघी—वि० पातकी, पापी, कुकर्मी।

अघोर—पु० शिवजी। सम्प्रदाय विशेष। वि० घोर नहीं, सुहावना। 'घोर', अत्यन्त विकराल।—नाथ पु० महादेव जी।

अघोरी—पु० अघोरपन्थी। घृणित मनुष्य। वि० घृणित, गन्दा 'एते पर नहिं तजत अघोड़ी कपटी कंस कुचाली।' सूबे० २८०

अघोष—वि० निःशब्द, नीरव। ग्वालोंसे रहित। कवर्गादि पाँच वर्गोंके प्रथम दो अक्षर तथा श, ष, और स।

अघौघ—पु० अघ + ओघ = पापोंका समूह।

अघ्रानना—सक्रि० गंध लेना।

अचंभव—पु० अचम्भा, आश्चर्य 'एक अचम्भव होत बड़ो तिन ओंठ गहे अरि जात न जारे।' भू० ७१

अचंभा,-भो,-भौ—पु० आश्चर्य, विस्मय, ताज्जुबकी बात।

अचक—वि० अचूक, अटूट, बहुत, भरपूर। घबराहट।

अचकन—पु० लम्बा अंगा। (दीन २३)

अचकाँ—क्रिवि० अचानक 'जानत हौ तुम हौं बल पूरे। पै अचकाँ आये नहिं सूरे।' सुजा० १२८

अचगरा—वि० उत्पाती, छेड़छाड़ करनेवाला 'जो तेरो सुत खरोई अचगरो तऊ कोखको जायो।' सूबे० ६८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अचगरी—स्त्री० छेड़छाड़ 'लरिकाईं तें करत अचगरी मैं जाने गुन तबही।' सूबे० ११२। ज्यादती 'जो लरिका कछु अचगरि करहीं।' रामा० १५०

अचना अचवना—सक्रि० आचमन करना, पीना।

अचपली—स्त्री० किलोल, अठखेली।

अचभौना—पु० अचम्भा, तअज्जुबकी बात।

अचमन—पु० 'आचमन'

अचर—वि० न चलनेवाला, जड़। पु० जड़ पदार्थ।

अचरज—पु० 'आश्चर्य', तअज्जुब 'पछिले पहर भूप नित जागा। आजु हमहिं बड़ अचरजु लागा।' रामा० २१७

अचल—वि० स्थिर, दृढ़, चिरस्थायी। पु० पहाड़।

अचला—स्त्री० पृथ्वी।

अचवना—सक्रि० आचमन करना, पीना। 'दावानल अचयो ब्रजराज ब्रजजन जरत बचायो।' सूबे० ९४

अचवाई—वि० प्रक्षालित, स्वच्छ।

अचवाना—सक्रि० आचमन कराना।

अचाक, अचाका—क्रिवि० अचानक, एकाएक 'दिनहिं राति अस परी अचाका। भा रवि अस्त चन्द्र रथ हाँका।' प० २५१

अचान, अचानक—क्रिवि० सहसा, एकाएक।

अचार—पु० आचार। अथाना। एक फल।

अचारज—पु० 'आचार्य'।

अचाह—स्त्री० अरुचि, अनिच्छा। वि० निस्पृही, इच्छारहित (दीन १३०)।

अचाहा—वि० जिसकी इच्छा या चाह न हो। जिसपर प्रीति न हो। पु० वह मनुष्य जिसपर प्रेम न हो या जो प्रेम न करे।

अचाही—पु० जिसे किसी बातकी इच्छा न हो।

अचिंत—वि०निश्चिन्त।

अचिर—क्रिवि० जल्द।

अचीता—वि० जिसका विचार या अनुमान पहिले न किया गया हो, असंभावित। अनुमानसे ज्यादा (छत्र० १४२)। चिन्तारहित।

अचूक—वि० जो न चूके, अमोघ। पक्का, निर्भ्रान्त। क्रिवि० चतुरतासे, सफाईसे। अवश्य।

अचेत—वि० संज्ञारहित, बेसुध। अज्ञान या मूर्ख, जड़। पु० जड़ता, माया।

अचैन—पु० बेचैनी, विकलता। वि० व्याकुल।

अचोना—पु० आचमन करने या पीनेका बर्तन।

अच्छ—वि० अच्छा, स्वच्छ 'मानहु विधि तन अच्छ छवि' वि० १६९। पु० स्फटिक। अग्नि, आँख। रावणपुत्र अक्षयकुमार।

अच्छत—पु० बिना टूटा हुआ चावल। वि० अखंडित।

अच्छर—पु० अक्षर, वर्ण। ब्रह्म, ईश्वर 'बालरूप अच्छर जब कीनो।' छत्र० १५९

अच्छरा, अच्छरी—स्त्री० अप्सरा।

अच्छा—वि० ठीक, भला, चोखा। नीरोग। क्रिवि०-अच्छी तरह। पु० शुभ कर्म, बड़ा आदमी, बहुव्र० आशीर्वाद।

अच्छोत—वि० बहुत। [अ०-खैर, हाँ।

अच्छौहिनी—स्त्री० देखो 'अक्षौहिणी'।

अच्युत—वि० जो गिरा न हो; अविनाशी। पु० विष्णु।

अछक—वि० जिसकी तृप्ति न हुई हो, भूखा 'तेगा या बिहारी मतवारी है अछक तौ लौं जौ लौं गजराजनकों गाजक करै नहीं।' भू० १८१

अछकना—अक्रि० तृप्त न होना।

अछत—क्रिवि० रहते हुए, सामने 'तोर अछत दसकंधर मोर कि अस गति होइ।' रामा० ३७५। न रहते हुए 'गनती गनिबे तें रहे छत हूँ अछत समान।' वि० ११६

अछताना पछताना—अक्रि० बार बार खेद प्रकट करना।

अछन—पु० दीर्घकाल। क्रिवि० धीरे धीरे।

अछना—अक्रि० विद्यमान रहना।

अछप—वि० न छिपने योग्य, प्रकट।

अछय—देखो 'अक्षय'।

अछरा,-री—स्त्री० अप्सरा 'बरनौं राजमँदिर रनिवासू। जनु अछरीन्ह भरा कैलासू।' प० २०

अछवाई—स्त्री० सफाई 'भोजन बहुत, बहुत रुचि चाऊ। अछवाई नहिं, थोर बनाऊ।' प० २१९

अछवाना—सक्रि० अच्छा कराना, सँवारना।

अछाम—वि० पतला नहीं, मोटा, हृष्टपुष्ट।

अछूत—वि० जो छुआ न गया हो। कोरा, पवित्र। न छूने योग्य, अस्पृश्य। पु० अन्त्यज।

अछेद—वि० अछेद्य, अभेद्य। पु० अभिन्नता, निष्कपटता 'चेला सिद्धि सों पावै गुरुसों करै अछेद।' प० १८

अछेद्य—वि० अखंड्य, अविनाशी।

अछेव—वि० छिद्ररहित, निर्दोष 'रामानंद सुखानंद कहिए अनंतानंद सुरसुखानंदहुके आनंद अछेव जू।' सुन्द० ९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अछेह—वि० लगातार 'स्यौं बिजुरी जनु मेह, आनि इहाँ बिरहा धरेउ। आठौ जाम अछेह, दृग जु बरत बरसत रहत।' बि० १८३। बहुत ज्यादा।
अछोप—वि० नंगा, तुच्छ।
अछोभ—वि० क्षोभरहित; स्थिर; निर्भीक। मोहरहित।
अछोह—पु० क्षोभहीनता; शान्ति, निर्दयता।
अछोही—वि० निर्दय, निष्ठुर।
अज—वि० जो जन्म न ले। पु० ब्रह्मा; विष्णु; या महेश। बकरा। कामदेव। दशरथ-पिता।
अजगर—पु० बहुत मोटा साँप।
अजगरी—वि० अजगर जैसी। जिसमें मेहनत न करना पड़े—स्त्री० बिना परिश्रमकी वृत्ति।
अजगव—पु० शिवधनुष।
अजगुत—पु० अद्भुत या असाधारण घटना। तर्कहीन या अयुक्त बात 'कुंदनपुर एक होत अजगुत बाघ घेरी गाइ।' सूबे० ४१९। वि० आश्चर्यजनक।
अजन—वि० अजन्मा, जिसका जन्म न हो।
अजनबी—वि० अपरिचित; परदेसी।
अजन्म, अजन्मा—वि० जन्मरहित, अनादि।
अजब—वि० विचित्र, अनूठा।
अजय—वि० 'अजेय', जो जीता न जा सके। पु० पराजय।
अजया—स्त्री० विजया, भाँग। बकरी 'अजया गजमस्तक चढ़ी, निर्भय कोंपल खाय।' कबीर
अजर—वि० जो वृद्ध न हो। जो न पचे।
अजरायल—वि० जो जीर्ण न हो, स्थायी, टिकाऊ।
अजस—पु० अयश, अपकीर्त्ति।
अजस्र—क्रिवि० निरंतर, सर्वदा।
अजहुँ,-हूँ—क्रिवि० अभीतक।
अजा—वि० स्त्री० जन्मरहित। स्त्री० बकरी। दुर्गा।
अजाचक, अजाचो—पु० न माँगनेवाला 'जाचक सकल अजाचक कीन्हें।' रामा० ५४२
अजान—वि० नासमझ। पु० एक वृक्ष।
अजाया—वि० मृत 'गोलिन वृथा अजाये ह्वै हो।' छग्र० ९५
अजाय—वि० अनुचित।
अजायबघर—पु० कौतुकालय, संग्रहालय।
अजार—पु० बीमारी।
अजिऔरा—पु० आजीका घर।
अजिन—पु० चर्म।
अजिर—पु० आँगन। वायु। मेंढक।
अजीत—वि० अजित, अपराजित।
अजीब—वि० आश्चर्यमय, अद्भुत। [जो पुराना न हो।
अजीरन, अजीर्ण—पु० कुपच, बदहजमी, बहुलता। वि०
अजुगत, अजुगुत—पु० अजगुत, अनुचित या अनहोनी बात 'स्वान संग सिंहिनि रति अजुगुत, वेद विरुद्ध असुर करै आइ।' सू० २६४। वि० अयुक्त, असंभव। 'हरिजी अजुगत जुगत करेंगे।' नागरी०
अजूजा—पु० एक शव-भक्षक जानवर।
अजूबा—वि० अजीब 'प्रेमरूप दरपन अहो रचै अजूबो खेल। यामें अपनो रूप कछु लखि परिहै अनमेल।' रसखानि
अजूरा—वि० बिना जुटा हुआ अलग। पु० मजदूरी।
अजूह—पु० युद्ध।
अजेइ, अजेय—वि० न जीतने योग्य।
अजोग—वि० अयोग्य, बेजोड़।
अजोरना—सक्रि० बटोरना, हरण करना, 'टोनासी पढ़ि नावत शिरपर जो भावत सो लेत अजोरी।' सूबे० ६५। ❀
अजौं—क्रिवि० अब भी। अबतक। [❀ जलाना।
अज्ञ—वि० अज्ञानी, नासमझ। पु० नासमझ मनुष्य।
अज्ञात—वि० अविदित, अपरिचित।
अज्ञान—पु० मूर्खता। वि० मूर्ख, नासमझ।
अज्ञानी—वि० नासमझ, अनाड़ी।
अज्यौं—क्रिवि० 'अजौं।'
अझर—वि० जो न झरे, जो न बरसे।
अझोरी—स्त्री० कंधेसे लटकनेवाली थैली।
अटंबर—पु० बड़ा ढेर।
अटक, अटकन—स्त्री० बाधा, संकोच, उलझन, अकाज। 'ताते यह अटक परी दुहुनकाज सौंह करी उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई।' सूबे० ९५, 'अबलों सकुच अटक रही अब प्रगट करौं अनुरागरी।' सूबे० ११६-७
अटकना—अक्रि० ठहरना, रुकना, उलझना, फँसना (सू० १३१), 'फबि फहरै अति उच्च निसाना। जिन महँ अटकत बिबुध-बिमाना।' पद्माभ० १०
अटकर, अटकल—स्त्री० अन्दाज, अनुमान।
अटकरना, अटकलना—सक्रि० अनुमान करना।
अटका—स्त्री० अटक, रुकावट, (बुंदेल० 'बिबूच') जरूरत। पु० जगन्नाथजीको चढ़ाया हुआ भात।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अटकाना—अक्रि० अटकना, उलझना 'युवती गईं घरनि सब अपने गृहकारज जननी अटकाई।' सूबे० ६९। सक्रि० रोकना, फँसाना 'भौंहनि मरोरि मुरि मोरि गोर गात देखो बातनहिं सगरौ कटक अटकायो है।' रवि० ३१

अटखट—वि० अंड बंड, गड़बड़ (विन० ४३८)।

अटना—अक्रि० काफी होना। आड़ करना या छेंकना। चलना, यात्रा करना (विन० ३०७)।

अटपट—वि० विकट, कठिन, जटिल। अंड बंड, 'सूर प्रेमकी बात अटपटी मन तरंग उपजावति।' सू० १४१। 'जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी।' रामा० ७७। विचित्र 'राखो यह सब योग अटपटो, ऊधो पाइ परौं।' सू०२२४। लड़खड़ाता हुआ 'वाहीकी चित चटपटी, धरत अटपटे पाय।' वि० २०

अटपटाना—अक्रि० आकुल होना, हिचकना, लड़खड़ाना। 'अटपटात अलसात पलक पट, मूँदत कबहूँ करत उघारे।' सू० १६९

अटपटी—वि० स्त्री० देखो 'अटपट'। स्त्री० शरारत।

अटम्बर—पु० आडम्बर। कुटुम्ब, समूह।

अटल—वि० निश्चल, अडोल, दृढ़।

अटवी—स्त्री० जंगल।

अटहर—पु० 'अटाला', राशि। पगड़ी। अड़चन।

अटा—स्त्री० अटारी, ऊपरकी कोठरी या छत 'चढ़ी अटा देखति घटा, बिज्जु छटासी नारि।' वि० १५८।

अटाउ—पु० शरारत। [पु० ढेर।

अटाटूट—वि० बिलकुल। अपरिमित, बेशुमार।

अटारी—स्त्री० देखो 'अटा'।

अटाला—पु० ढेर। सामान।

अटूट—वि० अखंड्य, मजबूत, अजेय। बहुत। लगातार।

अटोक—वि० जिसमें रोक-टोक न हो 'अरु अटोक ड्योढ़ी करी, पैठत बखत तमाम।' राव गुलाबसिंह

अट्टसट्ट—वि० मनमाना, अंड बंड।

अट्टहास—पु० उच्च हास्य, ठठाकर हँसना।

अट्टा—पु० अटा, मचान।

अट्टालिका—स्त्री० अटारी।

अठखेलो—स्त्री० चपलता, क्रीड़ा, विनोद।

अठपाव—पु०ऊधम, शरारत, 'भूषण क्यों अफजल्ल बचै अठपाव कै सिंहको पाँव उमैठो।' भू० १००

अठलाना—अक्रि० ऐंठ दिखलाना, इतराना, मस्ती दिखाना 'सुनि अठिलैहै लोग सब बाँट न लैहै कोय।' रहीम १८

अठवना—अक्रि० जमना।

अठवारा—पु० आठ दिन, एक सप्ताह।

अठसिल्या—पु० 'अष्टशिला', सिंहासन।

अठाई—वि० आततायी, उपद्रवी।

अठान—पु० न ठानने योग्य काम। पु० विरोध।

अठाना—सक्रि० सताना। ठानना, छेड़ना, जमाना।

अठिलाना—अक्रि० 'अठलाना'। 'बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देति करतारि।' सूबे० १३६। 'साँवरे अँग सरोजसे नैन उरोज उठे अठिलाति कपोलैं।' रवि० ३४

अठोठ—पु० आडम्बर, ढोंग।

अडंगा—पु० बाधा, अड़चन, व्यर्थका हस्तक्षेप।

अडंड—वि० अदण्ड्य, निर्भय।

अडंबर—पु० 'आडम्बर'। 'सुन्दर एक अज्ञान गये विनु ये सब दीसत आहिं अडंबर।' सुन्द० ६८

अड़—स्त्री० टेक, हठ।

अड़काना—सक्रि० टिकाना, उलझाना।

अड़चन—स्त्री० कठिनाई, बाधा।

अड़दार—वि० अड़नेवाला, 'अड़ियल', 'ज्यों मतंग अड़दार को, लिये जात गड़दार।' रस० ३१। मतवाला (हाथी) 'अड़दार बड़े गड़दारनके हाँके सुनि अड़े गैर गैर माहिं रोस रस अकसै।' भू० १२९

अड़ना—अक्रि० अटकना, रुकना, हठ करना (उदे० 'अड़दार')।

अडबंग—वि० अटपट, टेढ़ामेढ़ा। अनोखा।

अडर—वि० निडर, निर्भय।

अड़हुल—पु० एक लाल फूल।

अड़ाना—सक्रि० रोकना, उलझाना। टेकना।

अड़ानी—पु० बड़ा पंखा। अडंगा।

अड़ायती—वि० आड़ करनेवाला।

अड़ार—पु० ढेर। वि० नुकीला, तिरछा। 'जग डोलै डोलत नैनाहाँ। उलटि अड़ार जाहिं पल माहाँ।' प० ४६

अडिग—वि० जो डिगे नहीं। स्थिर।

अडियल—वि० अड़नेवाला, सुस्त। हठ करनेवाला।

अड़ी—स्त्री० हठ, जिद, टेक।

अड़ूलना—सक्रि० ढालना, गिराना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अडोर—पु० अंदोर, शोर-गुल।
अडोल—वि० अटल, न डिगनेवाला। स्तब्ध।
अड्डा—पु० ठहरने व मिलनेकी जगह। केन्द्र, डेरा।
अढ़तिया—पु० आढ़त कानेवाला।
अढ़न—पु० मर्यादा, आज्ञा।
अढ़वना—सक्रि० आज्ञा देना।
अढ़ुकना—अक्रि० चोट खाना, ठोकर लगना 'अढ़ुकि परहिं फिर हेरहिं पीछे।' रामा० २६७
अणि—स्त्री० नोक, धार। सीमा या किनारा।
अणिमा—स्त्री० अत्यन्त छोटा रूप धारण करनेकी सिद्धि।
अणी—स्त्री० 'अणि'। अरी (सम्बोधन)।
अणु—पु० कण, छोटा टुकड़ा, रजःकण। वि० अत्यन्त छोटा।
अतंक—पु० आतंक।
अतः—क्रिवि० इसलिये।
अतनु—पु० कामदेव। वि० बिना शरीरका।
अतल—पु० एक लोकका नाम।
अतवान—वि० अधिक।
अतर—पु० इत्र, पुष्पसार।
अतरसों—क्रिवि० परसोंके बादका, या पूर्वका, दिन।
अतरिख—पु० देखो 'अंतरिक्ष'।
अतसी—स्त्री० अलसी, 'अतसी कुसुम बरन मुरलीमुख सूरज प्रभु किन लाए।' सूवे० ३५५
अताई—वि० चतुर, चालाक 'सो तजि कहत औरकी औरै तुम अलि बड़े अताई।' भ्र० १४१
अति—वि० अधिक। स्त्री० अधिकता।
अतिक्रम—पु० उल्लंघन, उलटा व्यवहार।
अतिगत—वि० बहुत अधिक।
अतिगति—स्त्री० उत्तम गति, मोक्ष।
अतिथि—पु० पाहुना।
अतिपतन, अतिपात—पु० अतिक्रम, गड़बड़ी, बाधा।
अतिबल—वि० प्रबल 'नारी अतिबलके भये कुलकर होत बिनास।' गिरिधर राय
अतिमुक्त—वि० मुक्तिप्राप्त, विषय-विरक्त। पु० एक लता।
अतिरिक्त—वि० अलग, शेष। क्रिवि० सिवाय।
अतिवाद—पु० डींग, खरी बात।
अतिवेल—वि० असीम, अत्यन्त।
अतिशय—वि० बहुत। अतिशयोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार।
अतींद्रिय—वि० इन्द्रियोंसे परे, अगोचर।
अतीत—वि० बीता हुआ, भूत, मृत। विरक्त या न्यारा। क्रिवि० परे, बाहर। पु० अतिथि, विरक्त, संन्यासी। 'कबीर भेष अतीतका करै अधिक अपराध। बाहर देखे साध गति माहीं बड़ा असाध।' साखी १३८
अतीतना—अक्रि० बीतना। ठंडा होना, छूटना 'पुत्र सिख लीन तन जौं लगि अतीतही।' राम० १९८
अतीथ—पु० अतिथि।
अतुराई—स्त्री० शीघ्रता, 'चलौ सखी हमहूँ मिलि जैये बेगि करौ अतुराई।' सूवे० ४६। चंचलता।
अतुराना—अक्रि० आतुर होना, घबड़ाना, जल्दी करना। 'जो कछु हमको कहन बूझिये सो तुम कहि आगे अतुराने।' सूवे० १४९। 'एक इक पल जुग सबनको, मिलनको अतुरात।' सू० २१६
अतुल, अतुलित—वि० जिसकी तौल या तुलना न हो सके। बहुत ज्यादा। अद्वितीय।
अतूथ—वि० अपूर्व 'देखो सखि अद्भुत रूप अतूथ।' सू० ४९
अतूल—वि० 'अतुल' (ललित० ११३)।
अतोर—वि० जो न टूटे, मजबूत।
अतोल, अतौल—वि० देखो 'अतुल'। अनन्त (विद्या० १३५)।
अत्त, अत्ति—स्त्री० अति, ज्यादती, ऊधम। 'रहिमन अत्ति न कीजिए गहि रहिये निज कानि।' रहीम १२
अत्यय—पु० अतिक्रमण; मृत्यु; दण्ड; दुःख; दोष।
अत्याचार—पु० अनीति, दुराचार।
अत्र—पु० अस्त्र 'चढ़े अत्र ले कृस्न मुरारी।' प० १२३
अथक—वि० जो न थके। घोर।
अथयना, अथवना—अक्रि० अस्त होना 'उदित सदा अथइहि कबहूँना।' रामा० २९९। तिरोहित होना, 'पूरब उगै पच्छिम अथवै, भखै पवनका फूल।' साखी ७३, (रहीम १२)। नष्ट होना।
अथाई—स्त्री० लोगोंके एकत्र होनेकी जगह 'हाट बाट घर गली अथाई। कहहिं परस्पर लोग लुगाई।' रामा० २०४। बैठनेका स्थान, चौबारा। सभा, मण्डली। 'जनु उडुगण मण्डल वारिदपर नवग्रह रची अथाई।' विन० १९५, (भ्र० ५५)
अथान, अथाना—पु० अचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथाना—अक्रि० अथवना, डूबना। सक्रि० थाह लेना।
अथावत—वि० डूबा हुआ। [डूँढ़ना।
अथाह—वि० जिसकी थाह न हो, अगाध, गूढ़। पु० गहराई। समुद्र।
अथिर—वि० अस्थिर, चंचल। क्षणस्थायी।
अथोर—वि० थोड़ा नहीं। बहुत।
अदंक—पु० आतंक, डर।
अदंड—वि० अदण्ड्य; स्वेच्छाचारी; कररहित।
अदंडमान—वि० अदण्ड्य (राम० ५०)।
अदंत—वि० बेदाँतका, अल्पवयस्क।
अदग—वि० बेदाग, निरपराध। अछूता या साफ।
अदत्त—वि० न देनेवाला, कृपण (२१३ कन्कौ)।
अदद—पु० संख्या।
अदना—वि० छोटा, मामूली, हीन।
अदब—पु० गुरुजनोंका सम्मान, लिहाज।
अदभ्र—वि० अत्यधिक, अपार, प्रचुर (विन० २८०)।
अदरा—स्त्री० आर्द्रा।
अदल—पु० न्याय 'अदल जो कीन्ह उमरके नाईं। भई अहा सगरी दुनियाई।' प० ६। वि० दलरहित, सेना-विहीन, पत्र-विहीन।
अदली—पु० न्यायी (रू० ९८)। बिना पत्तेका।
अदवाइन, अदवान—स्त्री० पैतानेकी रस्सी, ओनचन।
अदहन—पु० दाल आदि पकानेका पानी।
अदा—वि० चुकना।
अदाई—वि० चालाक, होशियार 'सो तजि कहत और की और तुम अलि बड़े अदाई।' सूबे० ३७६
अदाग, अदागी—वि० निष्कलंक। पवित्र।
अदात, अदाता—वि० कृपण 'पूरब जन्म अदात जानिके तातें कछू मँगायो।' सूबे० ४३३
अदान—पु० कंजूस। वि० नासमझ।
अदाना—वि० कंजूस।
अदायाँ—वि० वाम, प्रतिकूल।
अदालत—स्त्री० न्यायालय।
अदावँ—पु० बुरा दाँव, कठिनाई।
अदावत—स्त्री० वैर, दुश्मनी।
अदाह—स्त्री० हावभाव।
अदित—पु० आदित्य, रविवार। 'अदित सूक पच्छिउँ दिसि राहु। बीफै दखिन लंक निसि दाहु। प० १८४
अदिति—स्त्री० देवताओंकी माता। पृथ्वी। प्रकृति। माता। वाणी।
अदिन—पु० बुरा दिन, दुर्भाग्य।
अदिष्ट—पु० अदृष्ट, विपत्ति, दुर्भाग्य।
अदिष्टी—वि० अदूरदर्शी, अविचारी।
अदीठ—वि० अदृष्ट, छिपा हुआ।
अदीन—वि० अनम्र, उग्र। उदार।
अदीह—वि० दीर्घ नहीं, छोटा।
अदुंद—वि० द्वंद्वरहित, बाधारहित। अद्वितीय।
अदुतिय—वि० अद्वितीय, बेजोड़।
अदूजा—वि० अद्वितीय। 'देव अब आस पूजी तूजीमैं अदूजी बसी दूजी तिय भूलै हूँ न देखत गुपाल हैं।' रवि० ६५
अदेख—वि० जो न देखा गया हो, जो न देखा जाय।
अदेखी—वि० जो न देख सके। द्वेष करनेवाला।
अदेय—वि० न देने योग्य। जो न दिया जा सके।
अदेव—पु० असुर राक्षस।
अदेस—पु० 'आदेश', आज्ञा। प्रणाम 'औ महेश कहँ करौं अदेसू। जेहि यहि पन्थ दीन्ह उपदेसू।' प० १३१। देखो 'अंदेस'।
अदेह—वि० विदेह, शरीर-रहित। पु० कामदेव।
अदोख, अदोखिल—वि० निर्दोष 'दुनिहाई सब टोलमें, रही जु सौति कहाय। सुतैं ऐंचि पिय आप त्यों, करी अदोखिल आय।' वि० १४५
अदोष, अदोस—वि० निर्दोष, निरपराध।
अद्ध—वि० अर्द्ध, आधा।
अद्भुत—वि० विचित्र, विलक्षण।
अद्य—क्रिवि० आज, अभी।
अद्रा—स्त्री० आर्द्रा।
अद्रि—पु० पहाड़।—तनया, स्त्री० पार्वतीजी, गंगाजी।
अद्वितीय—वि० बेजोड़, अकेला। विचित्र।
अद्वैत—वि० एकाकी, अद्वितीय। पु० ब्रह्म।
अधः—क्रिवि० नीचे।
अधःपतन,-पात—पु० अवनति, दुर्गति।
अध—क्रिवि० 'अधः', नीचे। वि० आधा।
अधगति—स्त्री० अधोगति, पतन।
अधघट—वि० जिसका ठीक अर्थ न निकले, कठिन।
अधड़ी—वि०, स्त्री० अधर, आधाररहित, बेसिलसिले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अधन—वि० धनहीन, दरिद्र।
अधफर—पु० अधर, 'अन्तरिक्ष', बीच। (कबीर १९६)। क्रिवि० बीचमें।
अधबर—पु० आधा मार्ग, बीच।
अधबैसू—वि० स्त्री० मध्यम अवस्थाकी।
अधमई—स्त्री० 'अधमाई', नीचता।
अधमर्ण—पु० ऋण लेनेवाला, ऋणी।
अधमाई—स्त्री० नीचता, दुष्टता।
अधमुख—वि० मुँहकेबल, औंधा या उलटा।
अधर—पु० नीचेका ओंठ, ओंठ। पु० अन्तरिक्ष, नीचेका स्थान। क्रिवि० अन्तरिक्षमें, न नीचे, न ऊपर। वि० चंचल। तुच्छ 'गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि नीच अधर बुधि रानि।' रामा २०६
अधरज—पु० ओंठोंकी सुर्खी या पानकी लकीर।
अधरम—पु० अधर्म।
अधरात—स्त्री० आधीरात (रवि० ६६)।
अधराधर—पु० नीचेका ओंठ।
अधरोत्तर—वि० ऊँचा-नीचा, अच्छा-बुरा, कम-ज्यादा। क्रिवि० ऊँचे-नीचे।
अधर्म—पु० पाप या कुकर्म, अन्याय।
अधवा—स्त्री० विधवा।
अधार—पु० देखो 'आधार'।
अधारी—स्त्री० आधार, सहारा। साधुओंकी लकड़ी (सू० २३६)। मुसाफिरी थैला। वि० स्त्री० जिससे सहारा मिले, प्रिय।
अधिक—वि० ज्यादा, बहुत।
अधिकाई—स्त्री० अधिकता, बढ़ती। बड़पन 'उमा न कछु कपिकी अधिकाई।' रामा ४१६
अधिकाना—अक्रि० अधिक होना, बढ़ना 'देखत सूर अग्नि अधिकानी नभलौं पहुँची झार।' सूबे० ९२
अधिकार—पु० हक, दावा, प्रभुत्व।
अधिप, अधिपति—पु० स्वामी, मुखिया, राजा।
अधिभौतिक—वि० आधिभौतिक।
अधियान—पु० गोमुखी, जपनी।
अधियाना—सक्रि० आशा करना। [† उत्तमरथ।
अधिरथ—पु० रथपर चढ़ा हुआ व्यक्ति (सारथी)। †
अधिवास—पु० निवासस्थान। सुगन्धि; उबटन। विलम्ब तक ठहरना।
अधिष्ठान—पु० रहनेकी जगह; नगर; पड़ाव। अधिकार या शासन।
अधीन—वि० परवश, आश्रित, लाचार।
अधीर—वि० घबड़ाया हुआ। उतावला। असन्तोषी।
अधुना—क्रिवि० अब, सम्प्रति।
अधूत—वि० अकंपित, निडर। पु० ढीठ व्यक्ति।
अधूरा—वि० असमाप्त, आधा।
अधेड़—वि० उतरती उम्रका।
अधेली—स्त्री० अठन्नी।
अधोगति—स्त्री० पतन, दुर्गति।
अधोरध, अधोर्द्ध—क्रिवि० ऊपर-नीचे।
अध्यक्ष, अध्यच्छ—पु० नायक, अधिपति, अधिकारी।
अध्ययन—पु० पढ़ाई, अभ्यास, पठन-पाठन।
अध्यवसाय—पु० लगातार परिश्रम, उत्साह। निश्चय।
अध्यात्मिक—वि० आध्यात्मिक, आत्मासम्बन्धी।
अध्याय—पु० परिच्छेद, प्रकरण।
अध्यारोप—पु० लाञ्छना, दोष। मिथ्या कल्पना।
अध्रुव—वि० चंचल, अस्थिर, डाँवाडोल, अनिश्चित।
अध्वग—पु० पथिक, मुसाफिर।
अध्वर—पु० यज्ञ।
अनंग—पु० कामदेव। वि० बिना देहका, विदेह।
अनंगना—अक्रि० विदेह होना, देहकी सुध भुलाना।
अनंगी—वि० देहरहित। पु० कामदेव।
अनंत—वि० जिसका अन्त न हो, अपार, अत्यधिक। अविनाशी। पु० विष्णु, शेषनाग, लक्ष्मण। आकाश।
अनंतर—क्रिवि० बाद, लगातार। वि० जिसमें कोई अन्तर न हो, समीपी।
अनंता—स्त्री० पार्वती। पृथ्वी। दूब। पीपर।
अनंद—पु० आनन्द, प्रसन्नता (रामा० ६०)।
अनंदना—अक्रि० आनन्दित होना, प्रसन्न होना 'तब मैना हिमवंत अनन्दे।' रामा० ६०
अनंभ—वि० बिना पानीका, विघ्नरहित।
अन—क्रिवि० बिना 'कहि जु चली अनहीं चितै, ओठ-निहीमें बात।' बि० ८६
अनअहिवात—पु० वैधव्य (रामा० २११)।
अनइस—वि० अनेस, बुरा।
अनऋतु—पु० विरुद्ध ऋतु, अकाल।
अनक—पु० 'आनक', डंका, नगाड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनकना—सक्रि० लुक छिपकर सुनना ।

अनकहा—वि० बिना कहा हुआ, अकथित । **अनकही देना** = कुछ न कहना, चुपचाप होना ।

अनख—पु० क्रोध 'भाव कुभाव अनख आलस हूँ ।' रामा० २१ । कुढ़न (अ० ७७) । दुःख, ईर्षा 'सब जग संपतिके जस गावै । सुनि सुनि अनख भूप उर आवै ।' छत्र० ३४ । झंझट । डिठौना । वि० बिना नखका ।

अनखना,-खाना—अक्रि० क्रोध करना । अप्रसन्न होना ।

अनखाये रहना—अक्रि० बिना भोजनके रहना 'जो तू अनखाये रहै कब कोऊ अनखाय ।' रहीम

अनखी—वि० क्रोधी ।

अनखौंहा—वि० क्रोधित । जल्द चिढ़ जानेवाला । अनुचित (सूबे० १७४) । क्रोधोद्दीपक (कविता १६२)

अनगढ़—वि० बिना गढ़ा हुआ । निराकार (अ० १४५) । कुडौल, अनाड़ी ।

अनगन, अनगना, अनगनिया, अनगिन, अनगिनत, अनगिना—वि० अगणित, बेशुमार, बहुत 'बरी बरा बेसन बहु भाँतिन, व्यंजन विविध अनगनियाँ' सू० ६३, 'अनगन भाँति करी बहुलीला जसुदानंद निबाही ।' अ० ८८

अनगवना, अनगाना—अक्रि० आगे न बढ़ना, देर करना 'मुँह धोवति, एँड़ी धँसति, हँसति, अनगवति नीर ।' वि० २८८

अनगैरी—वि० अपरिचित, बिना जान पहिचानका ।

अनघ—पु० पापका उलटा, पुण्य । वि० निष्पाप, पवित्र ।

अनघरी—स्त्री० कुसमय ।

अनघैरी—वि० अनिमंत्रित ।

अनघोर—पु० अंधेर, अन्याय ।

अनघोरी—क्रिवि० चुपचाप, अचानक 'जाति पाइ अनघोरी आये ।' छत्र० ५२

अनचहा—वि० अवांछित ।

अनचाहत—वि० जो प्रेम न करे, निर्मोही । पु० प्रेम न करनेवाला मनुष्य ।

अनचीन्हा—वि० अपरिचित, अज्ञात ।

अनचैन—स्त्री० चित्तकी अशान्ति, बेचैनी (भू० १३७) ।

अनछता—वि० बिना इच्छाका (सुन्द० १२२) ।

अनजान—वि० अज्ञानी । अपरिचित ।

अनजानना—अक्रि० न जानना 'छमहु चूक अनजानत केरी ।' मारा० १५२

अनट—पु० अन्याय, अनाचार 'सो सिर धरि धरि करिहिं सब मिटिहि अनट अवरेब ।' रामा० ३२८

अनडीठ—वि० बिना देखा ।

अनत—क्रिवि० अन्यत्र 'मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै ।' सू० १२ । वि० अनम्र, सीधा ।

अनति—वि० 'अति' का उलटा; थोड़ा । स्त्री० नम्रताका न होना, अहंकार ।

अनन्य—वि० एकहीमें लीन या एकहीसे सम्बन्ध रखनेवाला ।

अनपच—पु० कुपच, अजीर्ण ।

अनपढ़—वि० मूर्ख, बेपढ़ा, अशिक्षित ।

अनपत्य—वि० जिसके कोई सन्तान न हो ।

अनपायी—वि० [स्त्री० अनपायिनी] अचल, स्थिर । दुर्लभ ।

अनबन—स्त्री० विवाद, झगड़ा, वैमनस्य । वि० विविध, कई 'पुनि अभरन बहु आदा अनबन भाँति जराव ।' प० १५८ (१६ भी)

अनबिंध, अनबेधा—वि० जिसमें छेद न किया गया हो ।

अनबोल,-लता,-बोला—वि० न बोलनेवाला, गूँगा । 'जो तुम हमैं जिवायो चाहत अनबोले होइ रहिए ।' [सूबे० ३५२

अनभल—पु० अहित, हानि ।

अनभला—वि० बुरा, कुत्सित, निन्द्य ।

अनभाय, अनभावना—वि० अरुचिकर, अप्रिय ।

अनभिज्ञ—वि० अनजान, मूर्ख, अपरिचित ।

अनभेदी—वि० भेद न जाननेवाला (साखी० ११८) ।

अनभो—पु० असंभव बात, आश्चर्य । वि० अद्भुत ।

अनभोरी—स्त्री० भुलावा, धोखा ।

अनमद—वि० जिसे अहंकार न हो, गर्वरहित ।

अनमन, अनमना—वि० उदास, सुस्त (साखी० २२) ।

अनमारग—पु० कुमार्ग, अधर्म ।

अनमिख—वि० निमेषरहित । क्रिवि० एकटक । पु० देवता, मछली ।

अनमिल,-मिलन—वि० बेमेल, बेतुका । अलग या निर्लिप्त ।

अनमिलता—वि० जो न मिले, अप्राप्य ।

अनमीलना—सक्रि० नेत्र उन्मीलन करना, आँखें खोलना ।

अनमेल—वि० बेजोड़ । जिसमें मिलावट न हो, शुद्ध ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनमोल—वि० अमूल्य, बेशकीमत, सुन्दर।
अनय—पु० अनीति। अमंगल।
अनयन—वि० नेत्ररहित, अंधा।
अनयस—वि० अनैस, बुरा।
अनयास—क्रिवि० अनायास, बिना परिश्रम, सहसा।
अनरथ—वि० अनर्थ, उलटा अर्थ, बिगाड़, उपद्रव 'आप सिया करना अनरथ भली भई हम्ह हथ्यार न आया।' भू० ८२
अनरना—सक्रि० अनादर करना 'क्यों तू कोकनद बनहिं सर्वे, औ और सर्वे अनरै।' अ० १४६
अनरस—पु० विरसता, रुखाई या क्रोध, अनबन। वि० उदासी।
अनरसना—अक्रि० उदास होना 'हँसे हँसन अनरसे अनरसत प्रतिबिम्बति ज्यों छाँई।' गीता० २८२
अनरसा—वि० अनमना उदास, अस्वस्थ। पु० एक पकवान।
अनरागा—वि० अरक्त, रँगा हुआ नहीं।
अनरीति—स्त्री० कुरीति, अन्धेर।
अनरुचि—स्त्री० अरुचि, अनिच्छा, मंदाग्नि।
अनरूप—वि० असमान, कुरूप।
अनर्गल—वि० बेरोक, अंडबंड। व्यर्थ।
अनर्घ—वि० बहुमूल्य। कम मूल्यका।
अनर्घ्य—वि० अपूजनीय। बहुमूल्य।
अनर्थ—पु० उलटा अर्थ। अकाज, बुराई, बिगाड़।
अनर्थक—वि० निरर्थक, बेफायदा, व्यर्थ।
अनर्ह—वि० अयोग्य, अपात्र।
अनल—पु० आग। चीता। भिलाँवा। तीनकी संख्या।
अनलायक—वि० अयोग्य।
अनलेख—वि० अलख, अगोचर 'आदि पुरुष अनलेख है, सहजै रहा समाय।' दादू
अनल्प—वि० बहुत।
अनवट—पु० पैरके अँगूठेका छल्ला 'अनवट बिछिया नखत तराई। पहुँचि सकै को पायँन ताई।' प० ५२
अनवद्य—वि० निर्दोष, अनिंद्य।
अनवधान—पु० लापरवाही, ध्यान न रहना।
अनवय—पु० देखो 'अन्वय'। वंश, कुल।
अनवरत—क्रिवि० लगातार, निरन्तर।
अनवसर—पु० कुसमय, निरवकाश।
अनवाँसना—सक्रि० बरतन इ० को प्रथम बार काममें लाना।
अनवाद—पु० कुवचन, कुबोल।
अनशन—पु० अन्नत्याग, उपवास।
अनसत्त—वि० असत्य।
अनसमझ, अनसमझा—वि० बेसमझ, अज्ञान।
अनसहत—वि० असहनीय।
अनसाना—अक्रि० अनखाना, क्रोधित होना।
अनसुनी—वि० स्त्री० बिना सुनी हुई।
अनसूया—स्त्री० अत्रि-पत्नी। दूसरेके गुणमें दोष न देखना।
अनहित—पु० अहित, बुराई। हानि करनेवाला, शत्रु।
अनहितू—वि० अशुभ चाहनेवाला, अपकारी।
अनहोता—वि० दरिद्र। 'अनहोना', असंभव। अलौकिक।
अनहोनी—वि० स्त्री० अलौकिक, असंभव। स्त्री० न होनेवाली बात।
अनाकनी, अनाकानी—स्त्री० सुनी अनसुनी करना, टालमटोल। 'सुनि दोउनके मृदु बचन दै अनाकनी राम।' रघु० १९८
अनागत—वि० न आया हुआ। भावी, अपरिचित। अनादि। अपूर्व। विलक्षण 'नीके करि सबको हम जानति बातैं कहत अनागत।' सूर० १३३। क्रिवि० अचानक।
अनागम—पु० न आना।
अनाघात—पु० एक ताल 'उपजावत गावत गति सुंदर अनाघातके ताल।' सू० १८३
अनाचार—पु० दुराचार, अंधेर, कुरीति।
अनाज—पु० अन्न, धान्य।
अनाड़ी—वि० नासमझ, गवाँर, अनिपुण।
अनाथ—वि० प्रभुहीन, असहाय, लावारिस, दीन या दुखी।
अनादर—पु० निरादर, अपमान।
अनादि—वि० जिसका आदि न हो।
अनाना—सक्रि० मँगाना।
अनापशनाप—पु० अटसट, व्यर्थका बकवाद।
अनापा—वि० बिना नापा हुआ। सीमारहित।
अनामय—वि० नीरोग, निर्दोष। पु० नीरोगता।
अनामा—वि० अप्रसिद्ध, 'अनामिका'।
अनामिका—स्त्री० कनिष्ठा और मध्यमाके बीचकी उँगली।
अनायास—क्रिवि० बिना परिश्रम, अचानक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनार—पु० दाड़िम। अन्याय। ऊधम (बुंदेल०)।
अनारो—वि० लाल। 'अनाड़ी'।
अनावश्यक—वि० ग़ैर ज़रूरी, अनुपयोगी।
अनाहक—क्रिवि० बेनाहक। नाहक।
अनिंद, अनिंद्य—वि० निर्दोष, उत्तम।
अनिआई—वि० अन्यायी 'अरे मधुप लंपट अनिआई। यह सँदेस कत कहँ कन्हाई।' सूबे० ३८३
अनिच्छा—स्त्री० इच्छाका न होना, अरुचि।
अनित, अनित्य—वि० जो सदा न रहे, अस्थायी, नाश, वान्। असत्य।
अनिप—पु० सेनानायक, सेनापति।
अनिपुण—वि० जो प्रवीण न हो। अकुशल।
अनिमा—स्त्री० देखो 'अणिमा'।
अनिमिष—वि० निमेष रहित, स्थिरदृष्टि। क्रिवि० एकटक, निरन्तर। पु० देवता, मछली।
अनिमेष—वि०, क्रिवि० देखो 'अनिमिष'।
अनियाउ—पु० अन्याय, अनीति।
अनियारा—वि० नुकीला, तीखा 'बेधक अनियारे नयन बेधत करि न निषेध।' बि० १७, 'जाहि लगै सोई पै जानै, प्रेम बान अनियारो।' सू० २०८। बाँका, बहादुर 'चंपतिराय बड़े अनियारे। हजरतके बहु काज सँवारे।' [छत्र० १६१
अनिर्वचनीय—वि० अवर्णनीय।
अनिल—पु० वायु, हवा।
अनिवार्य—वि० न टलनेवाला, अवश्यंभावी।
अनिष्ट—वि० अवाञ्छित। पु० अहित, हानि।
अनी—स्त्री० नोक, सिरा। समूह, सेना।
अनीक—पु० समूह, सैना, लड़ाई। वि० बुरा।
अनीठ—वि० "अनिष्ट", अप्रिय, बुरा।
अनीत, अनीति—स्त्री० अन्याय, अन्धेर।
अनीश—वि० असहाय, अनाथ, असमर्थ (विन ३५४)। जिसका कोई स्वामी न हो या जिसके ऊपर कोई न हो, श्रेष्ठ। पु० जीव या माया 'ईस अनीसहिं अन्तर तैसे।' रामा० ४३
अनीश्वरवादी—वि० नास्तिक।
अनीह—वि० इच्छाविहीन।
अनु—उप० एक उपसर्ग जो प्रायः इन अर्थोंमें प्रयुक्त होता है—१. पीछे (अनुगामी, अनुयायी) २. समान; (अनुकरण, अनुरूप) ३. प्रत्येक (अनुदिन) ४. साथ; (अनुकम्पा, अनुपान)। क्रिवि० अब, आगे 'अनु रानी तुम्ह गुरु वह चेला। मोहि बूझहु कै सिद्ध नवेला।' प० ११८। हाँ, 'अनु, पाँड़े पुरुषहिं का हानी। जो पावौं पदमावति रानी।' प० २००
अनुकंपा—स्त्री० दया, सहानुभूति।
अनुकरण—पु० देखादेखी, नकल।
अनुकूल—वि० सहायक, प्रसन्न। क्रिवि० तरफ 'चली विपति वारिधि अनुकूला।' रामा० २१५
अनुकूलना—सक्रि० पक्षमें होना, प्रसन्न होना। (दीन० २१७), 'मध्य बरात विराजत अति अनुकूल्यो।' जामं० ५७
अनुक्रम—पु० सिलसिला।
अनुकोश—पु० दया, अनुकम्पा।
अनुग—पु० सेवक (दीन० २००)। वि० अनुगामी।
अनुगत—वि० अनुगामी, अनुकूल। पु० सेवक। खुशामद 'कत अनुनय अनुगत अनुबोधि।' विद्या० १०५
अनुगमन—पु० अनुसरण, सदृश आचरण, सहवास।
अनुगामी—पु० अनुयायी, आज्ञाकारी। सहवास करनेवाला।
अनुग्रह—पु० कृपा, अनिष्ट-निवारण।
अनुचर—पु० अनुयायी, नौकर, साथी।
अनुचित—वि० अयोग्य, बुरा, अन्यायपूर्ण, नीतिविरुद्ध।
अनुज—पु० छोटा भाई।
अनुताप—पु० जलन, दुःख, पश्चात्ताप।
अनुत्तर—वि० निरुत्तर, लाजवाब।
अनुदिन—क्रिवि० प्रति दिन (राम० ४)।
अनुनय—पु० विनय, अनुरोध, प्रार्थना।
अनुपम—वि० जिसकी उपमा न हो, अद्वितीय।
अनुपयुक्त—वि० अयोग्य, अनुचित।
अनुपान—पु० वह वस्तु जिसके साथ औषधि खायी जाय।
अनुप्राशन—पु० भक्षण करने या खानेका कार्य।
अनुप्रास—पु० वर्णसाम्य, वर्णमैत्री।
अनुभव—पु० तजुर्बा, स्वयं देखने, सुनने, जाँचने इ० से प्राप्त ज्ञान।
अनुभवना—सक्रि० अनुभव करना 'पुण्य फल अनुभवत सुतहिं विलोकि कै नन्दधरनि।' सू० ५३
अनुभाव—पु० महिमा, प्रभाव। रसबोधक गुण : क्रियाएँ।
अनुभूति—स्त्री० अनुभव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुमति—स्त्री० सम्मति, अनुज्ञा, आज्ञा।

अनुमान—पु० अटकल, कल्पना, अन्दाज़ा।

अनुमानना—सक्रि० अनुमान करना, समझना। 'जाके जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनी अनुमानति।' सूबे० १३५, (के० ८८)

अनुयायी—वि० अनुसरण करनेवाला, सेवक, शिष्य।

अनुरक्त, अनुरत—वि० प्रेमाभिभूत, आसक्त।

अनुराग—पु० प्रेम, प्रीति।

अनुरागना—अक्रि० प्रेम करना, प्रेममें मग्न हो जाना (सू० ७५), 'वचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिनके भाग सराहन लागे।' रामा० ३१९

अनुराधना—सक्रि० प्रार्थना करना।

अनुरूप—वि० समान, अनुकूल, योग्य।

अनुरूपक—पु० सदृश वस्तु, प्रतिमूर्त्ति (राम० १३५)।

अनुरूपना—सक्रि० सदृश बनाना 'अंग अंग अनुरूपियत जहँ रूपकको रूप।' पद्माभ० ६

अनुरोध—पु० आग्रह, प्रार्थना, प्रेरणा। बाधा।

अनुलोम विवाह—पु० ऊँची जातिके पुरुषका अपनेसे नीची जातिकी स्त्रीके साथ विवाह।

अनुवाद—पु० उल्था। पुनरुक्ति।

अनुशयाना—स्त्री० मिलन-स्थानके नष्ट होनेसे दुःखित परकीया नायिका।

अनुशासन—पु० उपदेश, आज्ञा।

अनुशीलन—पु० मनन, विशेष चिन्तन।

अनुष्ठान—पु० कार्यका किया जाना, उपक्रम, प्रयोग।

अनुसंधानना—सक्रि० ढूँढना, विचारना (रामा० ८८)।

अनुसयाना—स्त्री० देखो 'अनुशयाना'।

अनुसर—वि० देखो 'अनुसार'। समान।

अनुसरण, अनुसरन—पु० अनुगमन, पीछे चलना, अनुकरण।

अनुसरना—सक्रि० अनुगमन करना, किसीके अनुकूल कार्य करना 'सिर धरि गुरु आयसु अनुसरहू।' रामा० २८३। नकल करना।

अनुसार—वि० अनुरूप, समान।

अनुसारना—सक्रि० अनुगमन करना, कोई कार्य करना, चलाना 'पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी।' रामा० ५१६, 'तातें कछुक बात अनुसारी। छमिय देवि बड़ चूक हमारी।' रामा० ५०६

अनुसारी—वि० अनुसरण करनेवाला (रामा० ५८३)।

अनुसाल—पु० पीड़ा, दुःख।

अनुसासन—पु० आज्ञा, अनुमति (रामा० ५४२)।

अनुहरत—वि० समान, अनुरूप, योग्य 'मोहि अनुहरत सिखावन देहू।' रामा० २८४

अनुहरना—सक्रि० देखासीखी करना, समानता करना।

अनुहार—वि० समान (दे० 'अनुहारि') स्त्री० रूप, प्रकार।

अनुहारना—सक्रि० समान करना, उपमा देना, 'खंजनहू न जात अनुहारे।' सू० १२०

अनुहारि—वि० सदृश, 'चुनरी स्याम सतार नभ, मुख ससिकी अनुहारि।' वि० १३६ (बंगवासी), उपयुक्त या अनुसार 'बर अनुहारि बरात न भाई।' रामा० ५५। आकृति 'सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखी सासु आन अनुहारी।' रामा० ३०७

अनूजरा—वि० अनुज्ज्वल, मैला।

अनूठा—वि० अनोखा, अद्भुत, बढ़िया।

अनूढ़ा—स्त्री० अविवाहित स्त्री।

अनूतर—वि० निरुत्तर, मौन।

अनून—वि० पूर्ण, बहुत (भाव० १३)।

अनूप—वि० निरुपम, अद्वितीय, सुन्दर।

अनृत—पु० झूठ। वि० झूठ या उलटा।

अनेक, अनेग—वि० बहुत, अगनित, कई।

अनेड़—वि० निकम्मा, खराब, टेढ़ा 'पियका मारग सुगम है तेरा चलन अनेड़।' साखी० ५१

अनेरा—वि० झूठा, बेमतलब, निकम्मा, व्यर्थका, टेढ़ा, उधमी 'छोटे औ बड़ेरे मेरे पूतउ अनेरे सब...' कविता० १७६। 'रे रे चपल स्वरूप ढीठ तू बोलत वचन अनेरे।' सू० ३८। 'अजहूँ जियजानि मानि कान्ह है अनेरो।' सू० ६४। क्रिवि० व्यर्थ ही 'चरन सरोज बिसारि तिहारे निसिदिन फिरत अनेरो।' विन० ३५०

अनेह—पु० प्रेमका उलटा, विरक्ति।

अनै—पु० 'अनय', अनीति।

अनैसना—अक्रि० रूठना, बुरा मानना।

अनैसा—वि० अप्रिय, बुरा 'सुनु मातु भई यह बात अनैसी।' राम० २१९; 'तरुनिनकी यह प्रकृति अनैसी थोरेहि बात बिसारैं।' सूबे० १५४। द्वेषपूर्ण।

अनैसे—क्रिवि० बुरे भावसे, 'अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे।' रामा० १५१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनैहा—पु० उत्पात, मचलना 'जा कारन सुन सुत सुन्दर वर कीन्हो इतो अनैहो।' सूबे० ५९
अनोकह—पु० अपना स्थान न छोड़नेवाला, पेड़।
अनोखा—वि० विचित्र, निराला, सुन्दर, नया।
अनौट—पु० देखो 'अनवट'।
अन्न—पु० खाद्य वस्तु, अनाज, धान्य, भात। वि० अन्य।
अन्नजल—पु० दानापानी, जीविका।
अन्य—वि० दूसरा, पराया, भिन्न।
अन्यत्र—क्रिवि० दूसरी जगह।
अन्यथा—वि० उलटा, असत्य, मिथ्या। अ० नहीं तो।
अन्यमनस्क—वि० उदास, जिसका चित्त ठिकाने न हो।
अन्याय—पु० अनीति, अन्धेर।
अन्यारा—वि० जो न्यारा न हो। निराला। बहुत 'बढ़ै बंस जग माह अन्यारौ।' छत्र० ७। अनियारा, नुकीला, बाँका 'त्यौं पंचमके भाट अन्यारे।' छत्र० १३३
अन्यास—क्रिवि० बिना प्रयत्न किये, अकस्मात् 'मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास।' सूबे० ३४१
अन्यून—वि० बहुत, पर्याप्त।
अन्योक्ति—स्त्री० वह उक्ति जो कथित वस्तुके सिवाय अन्यपर भी घट सके।
अन्योन्य—सर्व० आपसमें, परस्पर। पु० एक अलंकार।
अन्वय—पु० परस्पर सम्बन्ध, मेल। वंश।
अन्वेषण—पु० खोज, अनुसन्धान।
अन्हवाना—सक्रि० नहलाना, स्नान कराना।
अन्हाना—अक्रि० नहाना।
अपंग—वि० अंगहीन, लँगड़ा, असमर्थ।
अप—पु० पानी। उप० = दूषित (अपयश), रहित (अपमान), विकृत (अपांग)।
अपकर्म—पु० बुरा काम, दुष्कर्म, पाप।
अपकर्ष—पु० पतन, अवनति, उतार, निरादर।
अपकाजी—वि० मतलबी, स्वार्थी (सूबे० १९०)।
अपकार—पु० बुराई, हानि, निरादर या बुरा व्यवहार।
अपकारीचार—वि० हानिकर्त्ता, विघ्नकर्त्ता 'जे अपकारीचार, तिन्ह कहँ गौरव मान्य बहु।' रामा० ५९१
अपकीरति,-कीर्त्ति—स्त्री० अयश, बदनामी।
अपकृति—स्त्री० हानि, अयश।
अपगत—वि० भागा हुआ, दूरीभूत, नष्ट।
अपघन—पु० शरीर (के० १८९)। वि० मेघ रहित।
अपघात—पु० हिंसा, धोखा। आत्मघात।
अपच—पु० कुपच, बदहजमी।
अपचय—पु० हानि, कमी, नाश। पूजा।
अपचार—पु० बुरा व्यवहार, अनिष्ट, निन्दा। भ्रम।
अपचाल—पु० कुचाल, खोटाई। [कुपथ्य।
अपच्छी—पु० विपक्षी, विरोधी। वि० पक्षहीन।
अपछरा—पु० अप्सरा 'बरषि प्रसून अपछरा गाई।' [रामा० १३५
अपजय—स्त्री० हार, पराजय।
अपजस—पु० अपयश।
अपटन—पु० देखो 'उबटन'।
अपट्ठमान—वि० अपठ्यमान, जो न पढ़ा जाय।
अपठ—पु० अपढ़, अशिक्षित।
अपडर—पु० शंका (रामा० ३१५)। डर।
अपडरना—अक्रि० शंकित होना, भयभीत होना।
अपड़ाना—अक्रि० खींचातानी करना। झगड़ना।
अपड़ाव—पु० झगड़ा, तकरार, टंटा 'जन्महिते अपड़ाव करत हैं गुणि गुणि हृदय कहै।' सूबे० २४८
अपढ़—वि० मूर्ख, अज्ञानी।
अपत—वि० बिना पत्तोंका 'अब अलि रही गुलाबमैं अपत कँटीली डार।' वि० १०७। नंगा, निर्लज्ज, नीच। प्रतिष्ठाहीन। (विन० ३०८, कविता० २१७)।
अपतई—स्त्री० निर्लज्जता, धृष्टता, चंचलता।
अपताना—पु० जंजाल, झंझट।
अपति—वि० स्त्री० विधवा। वि० दुष्ट, पातकी। स्त्री० बुरी हालत, अप्रतिष्ठा, (दास ९०)।
अपतोस—पु० अफसोस 'ए सखि काहि करब अपतोस, हमर अभागि पिया नहिँ दोस।' विद्या०
अपत्य—पु० पुत्र या पुत्री, सन्तान।
अपथ—पु० कुमार्ग, विकट रास्ता। 'अपथ्य'। 'कहा करौं अपथि भई मिलि बढ़ी व्यथा दुख दुहरानी।' सूबे० ३२५
अपथ्य—वि० स्वास्थ्यको हानि पहुँचानेवाला, हानिकारी। पु० अहितकर आहार-विहार।
अपद—पु० बिना पाँव वाले जीव, साँप इ० क्रिवि० अनुचित रूपसे 'सजनो अपद न मोहि परबोध।' [विद्या० १९७
अपनपो, अपनपौ—पु० ज्ञान या सुध। अपनापन, (अ० ४८)। आत्मभाव, आत्मगौरव। गर्व।
अपना—सर्व० निजका, स्वीय।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपनाना—सक्रि० अपने पक्षमें करना, वशमें करना। ग्रहण करना, सहारा देना।

अपनाम—पु० बदनामी, अपयश, शिकायत।

अपभय—पु० भयका न रहना, निडरता। व्यर्थका डर; भय 'अपभय कुटिल महीप डराने।' रामा० १५४

अपभ्रंश—पु० पतन या बिगाड़, विकृत रूप। वि० बिगड़ा हुआ।

अपमान—पु० निरादर, तिरस्कार।

अपमानना—सक्रि० अपमान करना, निन्दा करना 'बोले परसुधरहिं अपमाने।' रामा० १४७

अपमानी—वि० निन्दक, तिरस्कार करनेवाला।

अपमार्ग—पु० कुमार्ग, कुपथ।

अपयश—पु० अकीर्ति, कलंक, बदनामी।

अपयोग—पु० कुयोग, कुसमय। कुचाल 'सबै खोटे मधुवन-के लोग। जिनके संग श्यामसुंदर सखी सीखे सब अपयोग।' सूवे० ३६१

अपरंपार—वि० जिसका पार न हो, अनन्त।

अपर—वि० दूसरा। पूर्वका। जिससे कोई परे न हो। पिछला।

अपरछन—वि० अप्रच्छन्न, जो ढँका न हो। छिपा या गुप्त।

अपरता—स्त्री० परायापन। 'परता' नहीं = अपनापन। वि० स्वार्थी।

अपरती—स्त्री० स्वार्थ।

अपरना—स्त्री० पार्वती 'उमा नाम तब भयेउ अपरना।' रामा० ४६

अपरबल—वि० बलवान्, उद्धत, प्रचंड। 'दसो दिसासे क्रोधकी उठी अपरबल आगि।' साखी १४४

अपरस—वि० न छूने योग्य, अलग 'अपरस रहत सनेह तगातें नाहिंन मन अनुरागी।' सू० २५३। पु० एक चर्मरोग।

अपराध—पु० कसूर, दोष, ग़लती, भूल।

अपरूप—वि० अपूर्व। कुरूप, भद्दा।

अपर्णा—स्त्री० पार्वती।

अपलाप—पु० बकवाद, बात बनाना, मिथ्यावाद।

अपलोक—पु० बदनामी, अपवाद 'लोकमें लोक बड़ो अपलोक सु केशवदास जु होउ सु होऊ।' राम० १६३

अपवर्ग—पु० मोक्ष। दान, त्याग।

अपवश—वि० अपने वश, स्वाधीन (ब्रज० ४९)।

अपवाद—पु० दोष, बदनामी; खण्डन; आज्ञा।

अपसगुन—पु० असगुन, बुरा सगुन।

अपसना, अपसवना—अक्रि० सरकना, चलाजाना, भागना, जाना 'पौन बाँधि अपसवहिं अकासा।' प० १४६

अपसव्य—वि० जनेउ दाहिने कंधेपर किये हुए। उलटा।

अपसोस—पु० दुःख, चिन्ता 'काहेको अपसोस मरतिहौ नैन तुम्हारे नाहीं।' सू० १४५

अपसोसना—अक्रि० सोच करना।

अपसौन—पु० अपशकुन।

अपहरना—सक्रि० लूटना, छीन लेना, चुराना (रामा० १६१)।

अपहारी—पु० छीनने वाला, चोर '...भाजि पताल गयो अपहारी।' सू० ५७

अपह्नव—पु० बहाना, छिपाव।

अपह्नुति—स्त्री० छिपाव, मिस या बहाना। एक अर्थालंकार।

अपांग—वि० लूला लंगड़ा, अंगहीन, असमर्थ। पु० कटाक्ष।

अपा—स्त्री० गर्भ, आत्मभाव।

अपान—पु० आत्मज्ञान, सुध-बुध 'देखि भानुकुल भूषनहि बिसरा सखिन अपान।' रामा० १२८। अभिमान, आत्मगौरव। सर्व० अपना।

अपाय—पु० हानि, पीछे हटना, अलगाव। अनरीति या उत्पात। वि० अपाहिज, असमर्थ।

अपार—वि० अनंत, अत्यधिक, असंख्य।

अपाव—पु० अनरीति, उपद्रव।

अपाहिज—वि० लूला-लँगड़ा, असमर्थ, सुस्त।

अपिंडी—वि० अशरीरी।

अपीच—वि० अच्छा, शोभायुक्त।

अपुनपो, अपुनपौ—पु० अपनापन, सुधबुध। आत्मभाव।

अपूठना—सक्रि० विदीर्ण करना, नष्ट करना, चौपट करना, उलटना 'रावण हति लै चलौं साथ ही लंका धरों अपूठी।' सूवे०३९

अपूठा—वि० अपुष्ट, अस्फुट, पक्का नहीं, अजानकार 'निकट रहत पुनि दूर बतावत हौ रसमाहिं अपूठे।' सू०

अपूत—वि० पुत्रहीन। अपवित्र। पु० बुरा लड़का।

अपूर—वि० पूरा, खूब।

अपूरना—सक्रि० भरना, हवा भरकर बजाना।

अपूरब—वि० अपूर्व, अनोखा, उत्तम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपूरा—वि० देखो 'अपूर'। व्याप्त।
अपेल—वि० दृढ़, अटल।
अपैठ—वि० जहाँ पैठ (प्रवेश) न हो, अगम।
अप्रस्तुतप्रशंसा—पु० एक काव्यालंकार।
अप्सर, अप्सरा—स्त्री० परी। देवांगनाओंका एक भेद।
अफरना, अफराना—अक्रि० पेटभर भोजन करना [अघाना, पेट फूलना।
अब—क्रिवि० इस समय।
अबधू—वि० अबोध, मूर्ख। अवधूत, संन्यासी।
अबरन—वि० अवर्णनीय। त्रि० अवर्ण, बिना रूप-रंगका। भिन्न प्रकारका (साखी १३८)।
अबाँह—वि० अनाथ 'चाह आलबाल औ अबाँहके कलपतरु, कीरति मयंक प्रेमसागर अपार हैं।' आनन्दघन
अबाती—वि० वात अर्थात् वायुसे रहित, भीतर जलने [वाला।
अबाद—वि० निर्विवाद।
अबाध, अबाधा—वि० अबाध, बेरोक, निर्विघ्न। अपार 'सँग खेलत दोउ झगरन लागे सोभा बढ़ी अबाध।'
अबान—वि० शस्त्रहीन, निहत्था। [सूबे० ८२
अबार—स्त्री० बेर, देर (सू० ७१), 'आई छाक अबार भई है नैसुक बैया पियहु सबेरे।' सूबे० ७३। क्रिवि० शीघ्र 'तुमको देखावहिं जहँ स्वयंवर होनहार अबार।'
अबास—पु० आवास, भवन (रामा० २८४)। [रघु० ९१
अबिरल—वि० अविरल, घना।
अबीर—पु० गुलाल, एक तरहकी रंगीन बुकनी।
अबुझ, अबुध, अबूझ—वि० अज्ञानी, नासमझ।
अबुहाना-अक्रि० प्रेतादिसे आविष्ट होकर हाथपाँव पटकना 'एक होय तेहि उत्तर दीजै सूर उठी अबुहानी।' भ्र० ६७
अबूत—क्रिवि० वृथा 'धन्य सो माता सुन्दरी जिन जाया साधू पूत। नाम सुमिरि निर्भय भया अरु सब गया अबूत।' साखी १३५
अबेध—वि० अनविधा, जो छिदा न हो।
अबेर—स्त्री० अबार, देर।
अबेश—वि० बहुत!
अबैन—वि० मौन, मूक 'लिये सुचाल बिसालवर समद सुरंग अबैन।' (नैन) पद्माभ० १८
अबोध—वि० अज्ञानी। पु० अज्ञान।
अबोल—वि० चुप। अवर्णनीय। पु० कटु वाणी। क्रिवि० बिना बोले हुए, चुपचाप 'ललितमाधुरी अरे निरदई, कत अबोल द्रुम ओटन जात।' (चन्द्रसे) ल० माधुरी।
अबोला—पु० दुःख इत्यादिके कारण चुप रहना, मौन।
अब्द—पु० वर्ष। बादल।
अब्धि—पु० समुद्र, सरोवर। सातकी संख्या।
अभ्र—पु० अभ्र, बादल।
अभंगो—वि० अभंग, अखण्ड। जिसका कोई कुछ ले न [सके।
अभक्ष, अभक्ष्य—वि० अखाद्य।
अभगत—वि० अभक्त। भक्तिरहित। समूचा।
अभय—वि० निडर। पु० अभय वचन, शरण ['ब्रह्म रुद्र लोक हूँ गयो, तिनहूँ ताहि अभय नहिं दयो।' सू०]
अभर—वि० दुर्वह, जिसका वहन करना कठिन हो।
अभरन—पु० आभरण, गहना। वि० अपमानित।
अभरम—वि० भ्रमरहित, निःशंक, अचूक। क्रिवि० निःसन्देह।
अभल—वि० बुरा, खराब।
अभाऊ—वि० अरुचिकर, अशोभित, अशिष्ट, अभद्र 'भइ अज्ञा को भाँट अभाऊ। बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ।'
अभाग, अभाग्य—पु० दुर्भाग्य, बदकिस्मती। [प० १२३
अभाव—पु० अविद्यमानता, त्रुटि, कमी। कुभाव।
अभावना—वि० अरुचिकर, अप्रिय (सुन्द० ३४)।
अभास—पु० देखो 'आभास'।
अभिजात—वि० उच्च वंशका, पूज्य, सुन्दर, योग्य।
अभिज्ञ—वि० जानकार, परिचित, निपुण।
अभिधा—स्त्री० वह शक्ति जिससे शब्दोंका वाच्यार्थ प्रकट हो।
अभिधान—पु० नाम। शब्दकोष। [† प्रार्थना।
अभिनंदन—पु० प्रशंसा, आनन्द; प्रोत्साहन, नम्र †
अभिनय—पु० नाटकका खेल, नाट्यक्रिया, स्वांग।
अभिप्राय—पु० आशय, प्रयोजन, मतलब।
अभिमत—वि० मनोवाञ्छित, अभीष्ट। पु० मत, राय। अभिलषित वस्तु।
अभिमान—पु० घमंड, गर्व।
अभिरत—वि० अनुरक्त, सहित।
अभिरना—सक्रि० भिड़ना, किसीपर अवलम्बित होना। अक्रि० टकराना 'भीतिनसों अभिरें भहराइ गिरैं फिरि धाइ भिरैं मुख काढ़े।' भाव० ३०
अभिराम—वि० आनन्दप्रद, सुहावना। पु० आनन्द।
अभिलाख, अभिलाखा—स्त्री० अभिलाषा 'सबके हृदय मदन अभिलाखा।' रामा० ५१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभिलाखना—सक्रि० अभिलाषा करना, चाहना।
अभिलाष-पु०, **अभिलाषा**—स्त्री० इच्छा, वाञ्छा, चाह।
अभिलास, अभिलासा—स्त्री० अभिलाषा। इच्छा।
अभिवादन—पु० स्तुति, प्रणाम, नमन।
अभिषेक—पु० जलसे सींचना, स्नान। विधिपूर्वक अधिकार-प्रदान।
अभिसरन—पु० अवलंब, सहारा।
अभिसरना, अभिसारना—अक्रि० जाना, प्रियसे भेंट करनेके लिए निश्चित स्थानपर जाना।
अभिसारिका—स्त्री० निर्दिष्ट स्थानपर प्रियसे मिलने जानेवाली नायिका।
अभिसारी—वि० सहायक। निश्चित स्थानपर प्रिय या प्रियासे मिलने जानेवाला।
अभिसेख—पु० देखो 'अभिषेक'।
अभीर—पु० अहीर। एक छन्द।
अभूखन—पु० आभूषण, अलंकार, गहना
अभूत—वि० जो न हुआ हो, अभूतपूर्व, अनोखा।
अभेद—वि० अभेद्य, जिसका विभाग न हो सके। सदृश, एकरूप। पु० अभिन्नता, एकता, सादृश्य।
अभेय, अभेव—पु० अभेद, एकता। वि० अभिन्न, एक।
अभेरा—पु० मुठभेड़, रगड़, धक्का (विनय ४३८)। 'उठै आगि दोउ ढार अभेरा।' प० २१४
अभोग—वि० जिसका भोग न किया गया हो।
अभोगी—वि० अविषयी, विरक्त (रामा० ५४)।
अभोज—वि० अभक्षणीय, अखाद्य।
अभ्यंतर—पु० मध्य, हृदय। क्रिवि० भीतर।
अभ्यर्थना—स्त्री० स्वागत, प्रार्थना।
अभ्यागत—पु० अतिथि।
अभ्यास—पु० किसी कार्यको पुनः पुनः करना, आदत, आवृत्ति।
अभ्युत्थान—पु० उठान, उदय, उन्नति।
अभ्युदय—पु० उन्नति, उदय, उत्पत्ति।
अभ्र—पु० बादल, आकाश। सोना।
अमनैक—पु० सरदार, दावेदार, अधिकारी।
अमर—वि० मृत्युरहित। पु० देवता।—**लोक**=पु० देवलोक, अमरावती।
अमरख—पु० क्रोध, अमर्ष।
अमरपख—पु० पितृपक्ष।
अमरबेल, अमरबल्ली—स्त्री० एक लता, आकाशबौर।
अमराई—स्त्री०, **अमराउ**—पु० आमका बागीचा। 'धनु अमराउ लागि चहुँ पासा।' प० १२
अमर्ष—पु० क्रोध, कुढ़न।
अमल—पु० नशा (साखी ५०)। व्यसन या टेव 'हरि दरसन अमल परयो लाजन लजानी।' सूबे० १८६। प्रभाव। प्रभुत्व, शासन (छत्र० ९०)। 'अमल चलायो आपनो मुरली गरजि गुमान।' नागरीदास। वि० स्वच्छ, निष्कलंक, दोषरहित।
अमहल—वि० बिना घर-द्वारका। व्यापक।
अमातना—सक्रि० आमंत्रित करना।
अमान—वि० जिसका मान (परिमाण) न हो, अपार, बहुसंख्यक 'आसपास भूपतिनुके बैठे तनय अमान।' सुजा० ८; 'दुहुँ दिशि दीसत दीप अमान।' राम० २९। बहुत 'कविगनको दारिद द्विरद याही दल्यो अमान।' भू० १३५। जिसे मान (घमण्ड) न हो, सीधा। जिसका मान (आदर) न हो (रामा० ४६६)।
अमाना—अक्रि० समाना, पूरा पूरा भरना। आनंदपूर्ण होना, इतराना।
अमानी—वि० अभिमानरहित, साधुप्रकृतिका 'मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी। बालक सुत सम दास अमानी।' रामा० ३९०
अमानुष—वि० मनुष्यकी शक्तिके बाहर, अलौकिक। पैशाचिक।
अमाय, अमाया—वि० निष्कपट 'मन वच क्रम मम भगति अमाया।' रामा० ५५८
अमाल—पु० अधिकार रखनेवाला, आमिल। शासक। लूट्यो खानदौरा जोरावर सफजंग अरु लह्यो मार तलब खाँ मानहुँ अमाल है।' भू० ४१
अमावना—अक्रि० अमाना, भीतर आ सकना।
अमावस,-वास्या—स्त्री० अंधेरे पाखकी अन्तिम तिथि।
अमिट—वि० जो मिट न सके, अटल, स्थायी।
अमित—वि० अत्यधिक, सीमारहित।
अमिय—पु० अमृत, सुधा।
अमियमूरि—स्त्री० संजीवनी बूटी, अमृत बूटी 'अमिय-मूरिमय चूरन चारू।' रामा० ४
अमिल—वि० अप्राप्य। बेमेल, ऊँचा-नीचा, जिससे मेल-मुहब्बत न हो 'हरषि न बोली लखि ललन, निरखि अमिल सँग साथु।' वि० ६६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमिली—स्त्री० वैमनस्य, विद्रोह। इमली।

अमी—पु० अमिय, अमृत 'अमी हलाहल मद भरे स्वेत स्याम रतनार।' रसलीन

अमीत—पु० जो मित्र न हो, शत्रु 'पावक तुल्य अमीतनको भयो'—भू० १३

अमीर—पु० धनवान् व्यक्ति, सरदार। वि० धनवान्।

अमुक—वि० फलाँ।

अमूलक—वि० असत्य, बेजड़का। अनमोल 'पाइ अमूलक देह यहै नर क्यूं न विचार करै दिल अंदर।' सुन्द० १७

अमृत—पु० सुधा; दूध, जल, स्वादिष्ट पदार्थ।

अमेजना—सक्रि० मिलना, मिलावट होना। (जग० ११)

अमेठना, अमैठना—सक्रि० मरोड़ना, उमेठना (रवि० १६,१९,२२)।

अमेली—वि० असम्बद्ध। अनाप सनाप।

अमेव—वि० अमेय, असीम। जो जाना न जाय।

अमोघ—वि० अचूक, व्यर्थ न जानेवाला, अव्यर्थ।

अमोचन—वि० जो छूटे नहीं।

अमोद—पु० आमोद, आनन्द (भू० १२९)।

अमोरी—स्त्री० छोटा आम, आमड़ा।

अमोल—वि० अमूल्य, ज्यादा कीमतका।

अमोलक—वि० क़ीमती, अमूल्य 'लछिमन राम मिलैं अब मोकों दोउ अमोलक मोती।' सू० ४३

अमोही—वि० निर्मोही।

अम्ल—[illegible] खट्टा।

अम्हौरी—स्त्री० ग्रीष्म ऋतुकी छोटी छोटी फुंसियाँ।

अय—पु० लोहा।

अयन—पु० पर, गति, मार्ग, स्थान, थनका वह भाग जो दूसरे [illegible] रहता है

अयानता—स्त्री० अज्ञानी। पेद्रल। पु० स्वभाव, स्थिरता।

अयानत—स्त्री० अज्ञान 'नहिं अयानता छूटी।' नागरी०

अयानप, अयानपन—पु० भोलापन।

अयाल—पु० घोड़े या सिंहकी गर्दनके बड़े बड़े बाल।

अयुत—पु० दस हजारकी संख्या।

अरंभना—सक्रि० आरंभ करना। अक्रि० आरंभ होना, 'अनरथ अवध अरंभेउ जबतें।' रामा० २७४। बोलना, आवाज करना।

अर—स्त्री० अड़, हठ, जिद्द।

अरइल—वि० अड़नेवाला।

अरकना—अक्रि० टकराना 'कहै बनवारी बादसाहिके तखत पास फरकि फरकि लोथ लोथनिसों अरकै।' —बनवारी। दरकना या फटना।

अरकना बरकना—अक्रि० इधर उधर करना।

अरकला—पु० मर्यादा।

अरकान—पु० प्रमुख राजकर्मचारी, सरदार, 'नेगी [illegible] मिले अरकाना। पँवरिहि बाजे घहरि निसाना।' प० २०९

अरगजा—पु० एक सुगन्धित पदार्थ 'खरको कहा अरगजा लेपन'—सू० १७

अरगजी—वि० अरगजी रंगका या अरगजेके समान सुगंध वाला।

अरगट—वि० अलग, निराला 'अरगट ही फानूससी, परगट होति लखाय।' वि० २४

अरगनी—स्त्री० कपड़े टाँगनेका बाँस या रस्सी।

अरगल—पु० ब्योंड़ा, किवाड़ बन्द करनेकी लकड़ी, गज।

अरगाना—अक्रि० अलग होना, चुप रहना (सू बे० ४०९), 'सूने सदन मयनियाँके ढिग बैठि रहे अरगाई।' सूबे० ६२; 'झुकी रानि अब रहु अरगानी।' रामा० २०५। सक्रि० अलग करना (सूबे० ६)। प्राण अरगाना = चकित होना 'देस देसके नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाई।' सूबे० ४४४

अरघ—पु० हाथ धोनेके लिए जल; पूजाका एक उपचार, वह जल जो सम्मान प्रकट करनेके लिए गिराया जाता है।

अरघान, अरघानि—स्त्री० वास, गन्ध 'तेहि अरघानि भौंर सब, लुबुधे तजहिं न बंध।' प० ५२ (४४,८३)

अरचना—सक्रि० अर्चा करना, पूजा करना।

अरचल—स्त्री० अड़चन, रुकावट।

अरचा—स्त्री० पूजा (भू० ११६)।

अरचि—स्त्री० 'अर्चि', ज्योति, प्रकाश।

अरज—स्त्री० विनती, विनय। चौड़ाई।

अरजना—सक्रि० अर्ज करना (भू० १६९)।

अरजी—स्त्री० दरख्वास्त, प्रार्थनापत्र। पु० प्रार्थी, निवेदक।

अरझना—अक्रि० अरुझना।

अरणी—स्त्री० अग्नोत्पादक यंत्र। एक पेड़ या लकड़ी। सूर्य।

अरत—वि० विरक्त।

अरथ—पु० अर्थ, धन। अभिप्राय, हेतु।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अरथाना—सक्रि० आशय स्पष्ट करना, बताना (साखी १०५), समझाना 'दशरथ वचन राम वन गवने यह कहियो अरथाई।' सूरा० १६

अरथी—स्त्री० एक तरहकी नसेनी जिसपर सुलाकर मुर्दा ले जाते हैं। वि० गरजी, धनी।

अरदन—वि० विना दाँतका। पु० कष्ट पहुँचाना। विनाश। माँगना।

अरदना—सक्रि० कुचलना, ध्वस्त करना।

अरदावा—पु० कुचला हुआ अन्न। भरता, चोखा 'कहुँ कहुँ परा कपूर-बसावा। नखतें बघारि कीन्ह अरदावा।' प० २७२

अरदास—स्त्री० भेंट, प्रार्थनापत्र (अर्जदाश्त) 'सुना साह अरदासें पढ़ीं।' प० २६४। विनती 'यह अरदास दासकी सुनिये, तनकी तपनि बुझाइ।' कबीर० १९२

अरधंग—पु० आधा अंग। शिवजी।

अरधंगी, अरधाँगी—पु० शिवजी।

अरध—वि० आधा।

अरना—अक्रि० अड़ना, रुकना 'नवरँग विमल जलदपर मानों द्वै ससि आनि अरे।' सू० ५४

अरनी—स्त्री० देखो 'अरणी'। जलन 'कहा कहौं कपि कहत न आवै, सुमिरत प्रीति होइ उर अरनी।' सू० ३६

अरपना—सक्रि० भेंट देना, अर्पण करना। आरोपित करना (?) (व्रज० ४८)।

अरब—पु० एक देश। घोड़ा। सौ करोड़की संख्या। वि० सौ करोड़।

अरबर—वि० ऊटपटांग, विकट, कठिन।

अरबराना—अक्रि० घबराना।

अरबीला—वि० ऊटपटांग।

अरभक—पु० बच्चा 'गरभनके अरभक दलन, परशु मोर अति घोर।' रामा० १४८

अरमान—पु० साध, लालसा।

अररान—अक्रि० अरर शब्द करके गिरना, गिरते समय शब्द करना 'बरत बन पात भहरात झहरात अररात तरु महा धरनी गिरायो।' सू० ८१

अरवा—पु० ताखा, आला।

अरवाती—स्त्री० छप्परका किनारा जहाँसे वर्षाके समय पानी नीचे गिरता है, ओरौनी ('उरिया, ओरवाती' [बुन्देल०)।

अरवी—स्त्री० एक कन्द।

अरस—पु० आलस्य। वि० रसहीन। फीका। असभ्य। पु० आकाश 'जाकी तेग अरसमें डूलें।' छत्र० १७। महल (?) 'अकिल अरससे ऊतरी विधिना दीन्ही बाँटि।' साखी १५९

अरस परस, अरसन परसन—पु० आँख-मिचौनी, छुआ-छुई। स्पर्श (सू० १८२)। 'सूरदास प्रभुकी बरसगाँठि जोरति यह छविपर तृन तोरति अरस परसनि।' सूबे० ५५

अरसना परसना—सक्रि० छूना, भेंटना।

अरसाना—अक्रि० आलस्य करना "आरस गात भरे अरसात हैं लागि सो लागि गरे गिरि जात हैं।" [दास० २०५

अरसीला, अरसौंहा-वि० आलस्यपूर्ण, (ललित० १९२)

अरहन—पु० 'रेहन', बेसन (प० २७२)।

अरहना—स्त्री० अर्चना, पूजा।

अरहर—स्त्री० एक दाल। तुअर।

अरा—पु० लकड़ी चीरनेका औजार, 'आरा'। झगड़ा (छत्र० १०७)।

अराअरी—स्त्री० अड़ाअड़ी, होड़।

अराक—पु० एक देश। अराक देशका घोड़ा।

अराज—वि० विना राजाका, क्षत्रियविहीन। पु० राज्यका अभाव।

अरात, अराति—पु० वैरी, '...मृदुको कोउ न अरात।' काम, क्रोधादि मनोविकार, छःकी संख्या।

अराधना—सक्रि० पूजा करना, ध्यान करना।

अराधी—पु० पूजा करनेवाला।

अराना—सक्रि० अड़ाना।

अरावा—पु० रथ; तोप लादनेकी गाड़ी 'चामिलघाट अरावों रोप्यो।' छत्र० ४३, (सुजा० १०,५९)।

अराम—पु० बाग 'बिनु घनस्याम अराममैं लागी दुसह दवार।' पद्माभ० ७

अराल—वि० टेढ़ा 'जाल दन्त नख नैन तन प्रथु कुच केस अराल।' रवि० ७६

अरिंद—पु० शत्रु 'दाबि यों बैठ्यो नरिन्द अरिन्दहिं मानो मयन्द गयन्द पछास्यो।' भू० ३९

अरि—पु० शत्रु। काम क्रोधादि। छःकी संख्या।

अरियाना—सक्रि० 'अरे' कहना, अपमान करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अरिहन, अरिहा—पु० शत्रुघ्न।
अरी—अ० स्त्रियोंके लिए सम्बोधन।
अरु—अ० और।
अरुई—स्त्री० 'अरवी' नामक कन्द।
अरुझना—अक्रि० फँसना, रुकना, 'खसि मुद्रावलि चरन अरुझी, गिरि धरनि बलहीन।' सू० (व्रज० २७)। युद्धमें व्यस्त होना (राम० २२५)।
अरुझाना—सक्रि० फँसाना, रोकना (सूवे० १३८)। अक्रि० उलझना, मुग्ध होना (सू० १३४), 'श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई।' रामा ६०६
अरुण, अरुन,—पु० सूर्यका सारथी, सूर्य (गीता० २९४)। संध्या समयकी लालिमा, लाल रंग, सिंदूर। वि० लाल।
अरुणशिखा—पु० मुर्गा, कुक्कुट (रामा० १२५)।
अरुणाई—स्त्री० ललाई, लालिमा।
अरुनई—स्त्री० अरुणाई।
अरुनचूड़—पु० मुर्गा (रामा० १९४)।
अरुनाना—अक्रि० लाल होना। सक्रि० लाल करना।
अरुनारी—वि० लाल 'उड़इ अबीर मनहु अरुनारी।' रामा० १०८
अरुनोदय—पु० उपाकाल, भोर।
अरुरना—अक्रि० सिकुड़ना।
अरूझना—अक्रि० भिड़ना, झगड़ना 'रण राजकुमार अरूझहिंगे जू।' राम० २२५, 'लै लै नाम सुनावहु तुमहीं मोसों कहा अरूझति।' सूवे० १३९
अरूरना—अक्रि० व्यथित होना।
अरूलना—अक्रि० छिल जाना, चुभना।
अरे—अ० सम्बोधनसूचक शब्द।
अरेरना—अक्रि० रगड़ना।
अरोगना—सक्रि० खाना।
अरोच—पु० अरुचि, अनिच्छा।
अरोहना—अक्रि० आरूढ़ होना, सवार होना।
अरोही—पु० सवार।
अर्क—पु० सूर्य। बारहकी संख्या। इन्द्र, विष्णु। पंडित। आक (मंदार) (अर्कफल, रामा० ४८७)।
अर्गजा—पु० देखो 'अरगजा'।
अर्गल—पु० ब्योंड़ा, किवाड़। रंग-बिरंगे बादल। तरंग।
अर्गला—स्त्री० ब्योंड़ा, हाथी बाँधनेकी जंजीर। अवरोधक।
अर्घ—पु० सोलह उपचारोंमेंसे एक। जलदान। मूल्य। [भेंट।
अर्चमान—वि० पूजनीय।
अर्चिमान—वि० प्रकाशमान। पु० अग्नि। सूर्य।
अर्ज—पु० प्रार्थना।
अर्जमा—पु० 'अर्यमा', सूर्य।
अर्जी—स्त्री० प्रार्थनापत्र, प्रार्थना।
अर्जुन—पु० युधिष्ठिरके भाई। एक वृक्ष। मोर। सफेद रंगका कनैल। एक मात्र पुत्र। इन्द्र। वि० शुभ्र, उज्ज्वल।
अर्णव—पु० समुद्र, चारकी संख्या। इन्द्र। सूर्य।
अर्थ—पु०मतलब, अभिप्राय। धन। हेतु। इन्द्रियोंके विषय।
अर्थना—सक्रि० माँगना।
अर्थांतरन्यास—पु० एक काव्यालंकार।
अर्थाना—सक्रि० मतलब समझाना 'कबीर गुरुने गम कही भेद दिया अर्थाय।' साखी १०
अर्थापत्ति—पु० देखो 'काव्यार्थापत्ति'। एक तरहका प्रमाण।
अर्थी—वि० इच्छा या प्रयोजन रखनेवाला, याचक। धनी। स्त्री० 'अरथी।'
अर्दना—सक्रि० कष्ट पहुँचाना।
अर्द्धचंद्र—पु० आधा चन्द्रमा। मोरपंखकी आँख। एक तरहका त्रिपुण्ड। नखक्षत।
अर्द्धजल—पु० शवको स्नान कराना (अ० ४३)।
अर्द्धांग—पु० आधा अंग। शिव। लकवा।
अर्पना—सक्रि० भेंट करना, अर्पण करना (राम० २६)।
अर्बदर्ब—पु० धन-दौलत।
अर्बुद—पु० दस करोड़। एक असुर या पहाड़का नाम।
अर्भ—पु० बालक, शिष्य। शिशिर। साग-पात।
अर्भक—पु० बालक। वि० छोटा, नासमझ।
अर्हत—पु० बुद्ध देव, जिन देव, पूज्य या समर्थ व्यक्ति 'नमो नमो अर्हतको'—मुद्रा०
अर्हणा—स्त्री० पूजा।
अलंकार—पु० आभूषण। शब्दों और अर्थोंका ऐसा प्रयोग जिससे वर्णनमें कुछ चमत्कार आ जाय।
अलंकित,-कृत—वि० विभूषित, सजाया हुआ।
अलंग—पु० तरफ, दिशा '...लेन आयो कान्ह कोऊ मथुरा अलंगतें।' दास० ९९। स्त्री० बाजू, सेनाका पक्ष (प० २५८)।
अलंब पु० आलम्ब, आधार।
अल—पु० बिच्छूका डंक। विष।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अलक—स्त्री० लटकते हुए बाल। केश, लट। पु० महावर 'प्रथमहिं अलक तिलक लेब साजि।' विद्या० ८९

अलकतरा—पु० एक काला द्रव पदार्थ ('डामर'—मध्य प्रान्त)।

अलक लड़ैता, अलक सलोरा—वि० लाड़ला 'अब मेरे अलकलड़ैते लालन ह्वै हैं करत सँकोच।' भ्र० ६३

अलका—स्त्री० कुबेर नगरी। आठ-दस वर्षकी बालिका।

अलक्त, अलक्तक—पु० लाख या चपरा, महावर।

अलख—वि० अदृष्ट, अगोचर, गुप्त (जग० ६)। **अलख जगाना** = पुकार कर ईश्वरका स्मरण करना या कराना।

अलग—वि० जुदा। भिन्न, बेलाग। दूर।

अलगरजी—वि० लापरवाह। स्त्री० लापरवाही (रतन० ६)

अलगाना—सक्रि० पृथक् करना, हटाना। अक्रि० अलग होना।

अलच्छ—वि० अलक्ष्य।

अलज, अलज्ज—वि० लज्जा रहित।

अलप—वि० अल्प, थोड़ा, छोटा, ओछा 'तू अति चपल अलपको संगी।' भ्र० १०३

अलबेला—वि० बाँका, अनूठा। बेपरवाह। सुन्दर।

अललाना—अक्रि० गला फाड़ फाड़ कर बोलना, बकना।

अलसान, अलसानि—स्त्री० आलस्य।

अलसाना—अक्रि० सुस्ती करना, थकावट मालूम होना। आलस्य या निद्रायुक्त होना 'सयन करब अब उचित लाल इत मम आँखी अलसानी।' रघु० ६०

अलसेट—स्त्री० अड़चन। ढिलाई, टालमटूल।

अलसेटिया—वि० टालमटूल करनेवाला। बाधक।

अलसौंहाँ—वि० आलस्यपूर्ण, शिथिल।

अलाई—वि० आलसी, सुस्त।

अलात—पु० आग, अंगार (छत्र० ३०), (सुजा० ९५)।

अलान—पु० हाथी बाँधनेका खूँटा। बंधन, बेड़ी 'नव गयन्द रघुबीर मन, राज अलान समान।' रामा० २२३

अलाप—पु० आलाप, बातचीत। तान।

अलापी—वि० बातचीत करनेवाला। तान लगानेवाला।

अलाम—वि० बात गढ़नेवाला।

अलार—पु० अलाव, आगका पुंज। किवाड़।

अलाल—वि० आलसी, उद्यमहीन, निकम्मा।

अलाव—पु० आगका ढेर, भट्टी।

अलिंद—पु० भ्रमर, मधुप।

अलि—पु० भौंरा, कोयल, कौआ। वृश्चिक। स्त्री० सखी 'राधा माधव झूलिबो अलिको अलि प्रति बैन।' दीन० ४। पंक्ति।

अलिक—पु० ललाट 'लटकै अलिक अलक चीकनी।' के० २२६

अली—स्त्री० सखी। पंक्ति। पु० भौंरा।

अलीक—स्त्री० अमर्यादा 'कैसो नरलोक, परलोक वर लोकनिमें, लीन्हीं मैं अलीक, लोक-लीकनितें न्यारी हों।' भवा० (व्रज० ३०१)। वि० मिथ्या 'बचन तुम्हार न होइ अलीका।' रामा ११९। अप्रतिष्ठित।

अलीजा—वि० बहुतसा, प्रचुर।

अलीन—वि० अनुचित। पु० बाजू।

अलीपित—वि० अलिप्त 'रहत अलीपित तोय तें जैसे पंकज पात।' दीन० ८५

अलील—वि० बीमार, सुस्त।

अलीह—वि० अलीक, झूठ 'एक कहहिं यह बात अलीहा।' रामा० २२२

अलुझना—अक्रि० अरुझना। फँसना, भिड़ना।

अलुटना—अक्रि० लोटना, लड़खड़ाना।

अलूप—वि० लुप्त।

अलेख—वि० जिसका लेखा न लगाया जा सके, बेहिसाब, अज्ञेय।

अलेखा—वि० बेहिसाब, अगणित 'उपजावत ब्रह्माण्ड अलेखै।' छत्र० ५। निष्फल।

अलेखी—वि० अंधाधुंधी मचानेवाला, अन्यायी (विन० ३५९)।

अलोक—वि० पुण्य-रहित। निर्जन। पु० परलोक। कलंक, अपयश 'लोक लोकनमें अलोक न लीजिये रघुराय।' के० २८६

अलोकना—सक्रि० अवलोकन करना, देखना।

अलोना—वि० जिसमें नमक न डाला गया हो, फीका।

अलोप—वि० लुप्त, अदृश्य 'भा अलोप पुनि दिस्टि न आवा।' प० १८०

अलोल—वि० अचंचल, स्थिर।

अलोलिक—पु० स्थिरता।

अल्प—वि० थोड़ा। छोटा। एक अर्थालंकार।

अल्ल—पु० उपगोत्र, कुलनाम।

अल्लाना—अक्रि० जोरसे चिल्लाना। गला फाड़कर बोलना।

अल्हजा—पु० इधर उधरकी बात, गप्प।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अल्हड़—वि० उजड्ड, असावधान।

अव—अ० और।

अवकलना—सक्रि० समझमें आना, सूझना 'मोहि अवकलत उपाउ न एकू।' रामा० ३२०

अवकाश—पु० शून्यस्थान, अवसर। फुर्सत। दूरी। जगह 'कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावे।' रामा० ५८५

अवक्लन—पु० अवेक्षण, देखना।

अवगतना—सक्रि० सोचना, विचारना।

अवगति—स्त्री० बुद्धि, समझ। गति।

अवगाढ़—वि० गाढ़ा, घना। प्रविष्ट।

अवगारना—सक्रि० समझाना।

अवगाह—वि० अथाह 'तिमि रघुपति महिमा अवगाहा। तात कबहुं कोउ पाव कि थाहा।' रामा० ५८६। कठिन 'तोरेहु धनुष ब्याह अवगाहा। बिनु तोरे को कुअँरि बिबाहा।' रामा० १३४। पु० प्रवेश, जलप्रवेश। गहरी जगह, कष्ट।

अवगाहना—अक्रि० स्नान करना। जलमें घुसना, हिलाना, हलचल मचाना 'दिसि बिदिसन अवगाहिकै सुख ही केशवदास। बालमीकिके आश्रमहिं गयो तुरंग प्रकास।' के० ३२६। मथना, छानबीन करना। देखना (सूर पं० बा० २०)। विचारना।

अवगुन—पु० दोष, कुलक्षण, अपराध।

अवघट—वि० विकट, दुर्गम 'अवघट घाट बाट गिरि कन्दर। मायाबल कीन्हेसि सरपञ्जर।' रामा० ४९२

अवचट—क्रिवि० अचानक (रामा० १३५)।

अवछंग—पु० उछंग, गोद 'सो लीन्हों अवछंग यसोदा, अपने भरि भुजदण्ड।' सू० ७३

अवज्ञा—स्त्री० निरादर, अवहेलना, हार। एक अर्थालंकार।

अवटना—सक्रि० 'औंटना,' आगपर रखकर गाढ़ा करना 'धौरी धेनु दुहाइ छानि पय मधुर औंचमें अवटि सिरायो।' सूबे० १६२, (रामा० ६०६)। मथना। अवटि मरना = मारे मारे फिरना 'जो आचरण विचारहु मेरो कल्प कोटि लगि अवटि मरौं।' विन० ५३५ (ना० प्र० स०)

अवडेरना—सक्रि० बसने न देना, त्याग करना 'पंच कहे सिव सती बिबाही। पुनि अवडेरि मरायेन्हि ताही।' 'रामा० ४८। '... पोषि तोषि थापि आपने न अवडेरिए।' कविता० २६१

अवतंस—पु० भूषण, श्रेष्ठ। कर्णफूल। दूल्हा।

अवतरण, अवतरन—पु० उतार, अवतार, अनुकृति। सीढ़ी।

अवतरना—अक्रि० अवतार लेना, प्रकट होना 'धर्म हेतु अवतरेउ गुसाँई।' रामा० ३९९

अवतार—पु० शरीरधारण, जन्म-ग्रहण।

अवतारना—सक्रि० उत्पन्न करना, जन्म देना 'धन्य कोष जिन तुमको राख्यो धन्य घरी जेहि तू अवतारी।' सूबे० ८२

अवदात—वि० निर्मल, शुद्ध, शुभ्र।

अवध—वि० न मारने योग्य। स्त्री० अवधि, सीमा।

अवधान—पु० मनका लगाव, सावधानी।

अवधारना—सक्रि० धारण करना। मानना 'उपजै जहँ जिय दुष्टता सु असूया अवधारु।' भाव० १९

अवधि—स्त्री० सीमा, निर्दिष्टकाल, अन्तिम समय। अ० तक।

अवधूत—पु० संन्यासी, यती, योगी।

अवन—पु० रक्षण, प्रसन्न करनेका कार्य। स्त्री० अवनि, भूमि। मार्ग।

अवनति—स्त्री० हानि, झुकाव, अधःपतन।

अवना—अक्रि० आना।

अवनि, अवनी—स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

अवमान—पु० अपमान, तिरस्कार (रामा० २९९)।

अवर—वि० और, दूसरा। नीच। निर्बल।

अवरत—वि० विरत, अलग। पु० पानीका भँवर।

अवराधना—सक्रि० पूजा करना, सेवा करना 'ऊधो मन न भये दस बीस। एक हुतो सो गयो श्याम सँग को अवराधै ईस।' सूबे० ३७०

अवरेखना—सक्रि० लिखना, चित्रित करना 'चंपक पुहुप बरन तन सुंदर मनो-चित्र अवरेखी।' सूरा० २५, (रामा० १४३)। देखना 'अपनी दिसि प्राननाथ, प्यारे, अवरेखौं' हरि० (व्रज० ५४१)। अनुमान करना, विचारना, जानना।

अवरेव—पु० तिरछी चाल। झगड़ा। उलझन, (उदे० अनट) कठिनाई। 'कुलगुरु सचिव निपुन नेवनि अवरेव न समुझि सुधारी।' गीता० ३२६

अवरोध—पु० अड़चन, रुकावट। घेरा। अनुरोध। अन्तःपुर, रनिवास।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवरोधना—सक्रि० मना करना, रोकना।
अवरोहना—अक्रि० उतरना। आरोहण करना, चढ़ना 'तुलसी गलिन भीर दर्शन लगि लोग अटनि अवरोहैं।' गीता० ३०५ (पाठांतर)। सक्रि० रोकना। चित्रित करना।
अवर्ण्य—वि० अवर्णनीय। पु० अप्रस्तुत, उपमान।
अवर्त्त—पु० भँवर, चक्कर। नाँद।
अवलंघना—सक्रि० लाँघना (सू० ३५)।
अवलंबना—सक्रि० आश्रय लेना 'परम अनाथ देखियत तुम बिनु केहि अवलम्बिये प्रात।' सूवे० ३१२
अवलंबित—वि० आश्रित, किसीके आधारपर रखा हुआ।
अवलिप्त—वि० पोता हुआ। सना हुआ, लीन। घमण्डी।
अवली—स्त्री० पंक्ति, समूह। 'कबरीभारनि रचैं आनि अवली गुंजनकी।' दीन० २३८
अवलीक—वि० दोषरहित, शुद्ध, निष्कलंक।
अवलेखना—सक्रि० खुरचना, लकीर खींचना।
अवलेप—पु० उबटन। घमण्ड।
अवलोकना—सक्रि० देखना (के० २८)। जाँच करना।
अवलोकनि—स्त्री० चितवन, दृष्टि।
अवलोचना—सक्रि० दूर करना, हटाना। (जग० ४८)
अवशेष—वि० बचा हुआ। समाप्त। पु० शेष वस्तु। समाप्ति।
अवश्य—क्रिवि० जरूर, निश्चय ही।
अवस—क्रिवि० अवश्य। वि० लाचार।
अवसर—पु० समय, मौक़ा।
अवसाद—पु० विषाद, नाश, शिथिलता।
अवसान—पु० अन्त, सीमा। विराम। सायंकाल।
अवसि—क्रिवि० अवश्य।
अवसेख—वि० अवशेष, बचा हुआ 'यहि विधि अनुदिन जुरति जतन करि गनत गए अंगुरिन अवसेखा।' सूवे० ३१७
अवसेर—स्त्री० उलझन, देर 'गई रही दधि बेचन मथुरा तहाँ आजु अवसेर लगाई।' सूवे १९९। क्लेश 'गाइनके अवसेर मिटावहु, लेहु आपने ग्वाल।' सू० २६०। चिन्ता, व्याकुलता 'अबे बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीत भेंट प्रिय केरी।' रामा० २०२, (सूवे० १९१)
अवसेरना—सक्रि० कष्ट देना। परेशान करना।
अवस्था—स्त्री० दशा, उम्र, गति, काल।
अवहित्था—स्त्री० एक सञ्चारी भाव; दुःखादि छिपाना।
अवहेलना—स्त्री० तिरस्कार। सक्रि० तिरस्कार करना।
अवाँ, अवा—पु० भट्टी। आँवाँ 'तपइ अवाँ इव उर अधिकाई।' रामा० ३८
अवाई—स्त्री० आना। गहिरी जोताई।
अवाक्—वि० चुप, स्तब्ध, जड़ीभूत।
अवागी—वि० जो न बोले, चुप।
अवाज—पु० आवाज़। ध्वनि।
अवाय—वि० अनिवार्य। उद्धत। (सूवि० ४१)
अवारजा, अवारिजा—पु० जमाबंदी, बही, संक्षिप्त लेखा। 'करि अवारजा प्रेम प्रीतिको असल तहाँ खतियावे।' सू० ११
अवास—पु० वासस्थान, भवन (प० ७३)।
अविगत—वि० जो जाना न जाय। अनिर्वचनीय। जिसका नाश न हो।
अविचर—स्थिर, अटल 'देति असीस सकल व्रज युवती युग युग अविचर जोरी।' सूवे० २४६, (साखी १३३०)
अविचारी—वि० विचारहीन, नासमझ। अन्यायी।
अविछीन—वि० लगातार, अटूट 'अउरउ ग्यान भगतिका भेद सुनहु सुप्रवीन। जो सुनि होइ रामपद प्रीति सदा अविछीन।' रामा० ६०६
अविज्ञता—स्त्री० अज्ञान, अनभिज्ञता।
अविद्य—वि० अविद्यमान, नष्ट।
अविद्या—स्त्री० अज्ञान, मोह। माया।
अविनय—स्त्री० ढिठाई, धृष्टता 'स्वामिनि अविनय छमब हमारी।' रामा० २५४
अविनाशी, अविनासी—वि० जिसका नाश न हो, नित्य। पु० ईश्वर।
अविरत—वि० विराम-शून्य। लगा हुआ। क्रिवि० निरन्तर। हमेशा।
अविरथा—क्रि० वृथा, नाहक।
अविरल—वि० मिला हुआ। घना, गाढ़ा 'अविरल भगति माँगि वर, गीध गयेउ हरिधाम।' रामा० ३८३
अविरोध—पु० अनुकूलता, समानता। मेल।
अविलोकना—सक्रि० देखो 'अवलोकना'।
अविवेक—पु० अविचार। नासमझी (रामा० ७८)। अन्याय।
अविश्वास—पु० विश्वासका अभाव, अप्रतीति।
अविहड़—वि० अनश्वर। बीहड़, ऊँचा नीचा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अविहित—वि० विधिविरुद्ध, अनुचित। (रामा० ७०)
अवेज—पु० बदला।
अवेश—पु० आवेश, जोश। चैतन्यता। भूत लगना।
अव्यक्त—वि० जो स्पष्ट न हो। अज्ञान। पु० विष्णु, ब्रह्म, ईश्वर, शिव, कामदेव। प्रकृति।
अव्यय—वि० अनश्वर, अविकारी पु०। ईश्वर। लिंग वचनादिके कारण न बदलनेवाला शब्द।
अव्याहत—वि० बेरोक (रामा० ६००)।
अशंभु—पु० अमंगल, अहित।
अशकुन—पु० बुरा शकुन। अशुभ लक्षण।
अशन—पु० भोजन, खानेका कार्य। चित्रक, भिलावाँ।
अशिव—वि० अमंगलकारी, अशुभ। पु० अशुभ।
अशुन—पु० अश्विनी नक्षत्र।
अशुभ—वि० अमंगलकारी। पु० अमंगल। पाप।
अशेष—वि० शेषरहित। समूचा। कुल। समाप्त। अपार, बहुत, अनेक।
अशोक—वि० शोकहीन। पु० एक वृक्ष। सुख
अशौच—पु० अशुद्धता, मृत्युजन्मादिके कारण मानी जाने वाली छूत।
अश्म—पु० पत्थर। पहाड़। बादल।
अश्रु—पु० आँसू।
अश्व—पु० घोड़ा।
अश्वमेध—पु० एक यज्ञ जिसमें जयपत्र बाँधकर घोड़ा छोड़ा जाता था।
अश्विनी—स्त्री० एक नक्षत्र। घोड़ी।
अषाढ़—पु० आषाढ़ मास।
अष्टंगी—वि० आठ अंगवाला।
अष्टांग—पु० योगक्रियाके आठ भेद–यम, नियम, इ०। आयुर्वेदके आठ अंग–शल्य, शालाक्य इ०। वे आठ अंग जिनसे प्रणाम किया जाता है–जानु, पाँव, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि, बुद्धि। वि० आठ अवयववाला।
अष्टापद—पु० सोना। मकड़ी। धतूरा। कृमि। कैलाश। सिंह 'बर बिद्यासी आनन्ददानि। जुत अष्टापद शिवा मानि।' राम० ३३६
असंक—वि० अशंक, निडर।
असंका—स्त्री० कुशंका 'अस विचारि तुम्ह तजहु असंका।' रामा० ४५
असंख, असंख्य—वि० अनगिनत। बहुत अधिक।
असंग—वि० संगरहित, अकेला। न्यारा। मायारहित।
असंभव—वि० नामुमकिन। एक अर्थालंकार।
असंभार—वि० जो सँभाला न जा सके। विशाल।
असंभाष, असंभाष्य—वि० न कहे जाने योग्य। बुरा। पु० बुरी बात।
अस—वि० ऐसा। सदृश।
असक्त—वि० आसक्त, लीन 'विषय असक्त रहत निसि बासर…' सू० १०८
असगुन—पु० अशकुन।
असत्—वि० असाधु, बुरा, झूठ, सत्तारहित।
असन—पु० अशन, भोजन 'मुदित सु असन पाइ जिमि भूखा।' रामा० २५२। (देखो 'आरि')।
असनान—पु० स्नान। नहाना।
असमंजस—पु० दुविधा। कठिनाई 'जद्यपि अहै असमंजस भारी।' रामा० ५०
असमंत—पु० चूल्हा।
असम—वि० अतुल्य, विषम।
असमबाण, असमसर—पु० कामदेव।
असमय—पु० बुरा समय, विपत्तिकाल 'आपन अति असमय अनुमानी।' रामा० ८५। क्रिवि० समयके पहले।
असयाना—पु० सीधा सादा। मूर्ख। अज्ञान।
असर—पु० प्रभाव।
असरार—क्रिवि० बराबर, लगातार (सूबे० ३०७)।
असल—वि० सच्चा, शुद्ध। उच्च। पु० मूल। मूलधन।
असलेउ, असह—वि० असहनीय 'एक न चलै अब प्रान सूर प्रभु, असलेउ साल सले।' सू० १२७
असवार—पु० सवार।
असहन—वि० असहिष्णु। असह्य 'असहन निन्दा करन पराई, कबौं न मानी संका।' चाचा हित०। पु० वैरी।
असहयोग—पु० साथ न देनेकी क्रिया या भाव।
असहिष्णु—वि० न सहनेवाला, असहनशील।
असही—वि० किसीकी उन्नति न देख सकनेवाला 'असही दुसही मरहु मनहिं मन, बैरिन, बढ़हु बिषाद।' गीता० २७१
असाँच—वि० झूठा 'हँसेउ जान बिधि गिरा असाँचा।' [रामा० ४६५
असाढ़—पु० 'आषाढ़'।
असाध—वि० असाध्य, असहन, बुरा (उदं० असाध)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

असाध, असाध्य—वि० दुष्कर, कठिन 'देखो व्याधि असाधि नृप...'—रामा० २१५
असार—वि० निस्सार, शून्य, तुच्छ।
असावरी—स्त्री० एक रागिनी।
असि—स्त्री० तलवार।
असित—वि० सफेद नहीं, काला। दुष्ट, शनि।
असिद्ध—वि० अप्रमाणित। अपूर्ण, निष्फल। कच्चा।
असिव—वि० अशुभ, भयावह 'असिव वेष सिवधाम कृपाला।' रामा० ५५
असील—वि० असल।
असीस—स्त्री० आशीर्वाद 'सुन सिय सत्य असीस हमारी।' रामा० १२९
असीसना—सक्रि० आशीर्वाद देना।
असु—पु० प्राणवायु, प्राण 'सो असु दै वरु अश्व न दीजै।' के० ३४१। अश्व। चित्त। क्रिवि० शीघ्र। 'असु तियन भ्रमनि लखि सुमति धीर। भ्रमि सीखत है बहुधा समीर।' के० १८३
असुग—वि० शीघ्रगामी। पु० वायु, तीर।
असुचि—वि० अशुचि। अपवित्र। मैला।
असुविधा—स्त्री० अड़चन, तकलीफ, कष्ट।
असुभ—वि० देखो 'अशुभ'।
असुर—पु० राक्षस, नीच स्वभावका मनुष्य।
असुराई—स्त्री० नीच कर्म, खोटापन।
असुहाती—वि० स्त्री० अच्छी नहीं, बुरी 'नागरिदास बिसरिये नाहीं, यह गति अति असुहाती।' नागरीदास
असूझ—वि० अंधकारपूर्ण। अपार, विकट, कठिन।
असैला—वि० कुमार्गगामी। रीतिविरुद्ध, अनुचित 'मैं सुनी बातें असैली कही जे निश्चर नीच।' गीता० ३७९
असोक—पु० देखो 'अशोक'। सुख '...फूलै असोक कि सोक समूरो।' राम० १६३
असोक, असोकी—वि० शोक-रहित।
असोच—वि० शोचरहित। निश्चिन्त। अपवित्र, पापी (उदे० 'अकृत')।
असोज—पु० आश्विन मास।
असोस—वि० न सूखने वाला 'गोपिनके अँसुवनि भरी सदा असोस अपार।' वि० १२३
असौंध—पु० दुर्गंधि।
असौच—वि० अशुद्धता, अपवित्रता।
अस्त—वि० डूबा हुआ, अदृष्ट, तिरोहित।
अस्तन—पु० स्तन।
अस्ति अस्ति—अ० हाँ, वाह वाह 'देखि कुँवर वर कंचन जोगू।' 'अस्ति अस्ति' बोला सब लोगू।' प० १२९
अस्तुति—स्त्री० अप्रशंसा, निन्दा। स्तुति, प्रशंसा '...अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता।' रामा १०७
अस्त्र—पु० फेंककर चलाया जानेवाला हथियार, आयुध।
अस्थल—पु० स्थल
अस्थाई—वि० जो स्थायी न हो। स्थायी, टिकाऊ।
अस्थान—पु० स्थान।
अस्थि—स्त्री० हड्डी।
अस्थिर—वि० डाँवाडोल, चंचल। अनिश्चित। स्थिर। 'अस्थिर रहै न कतहूँ जाई।' कबीर० ३२२
अस्थूल—वि० सूक्ष्म। स्थूल 'सूच्छममें अस्थूल, बीज वृच्छ विस्तार ज्यों।' साखी १०६
अस्नान—पु० देखो 'स्नान'।
अस्र—पु० रुधिर, पानी, अश्रु। कोना।
अस्वस्थ—वि० रोगग्रस्त, बीमार।
अहंकार—पु० घमण्ड, ममता।
अहंपद—पु० गर्व 'जिय माँझ अहंपद जो दमिये।' के० ७०
अहंवाद—पु० डींग मारना।
अहक—पु० घमंड, लालसा, इच्छा।
अहटाना—अक्रि० आहट लगना, पता लगना। 'मरम गये उर फोरि पिछौहैं, पाछे पै अहटाने। अ० ११२, 'चलत न पग पैजनियाँ मग अहटाय। रहीम ३४। दुखना (सुजा० १५) 'तनिक किरकिटीके परे पल पलमें अहटाय।' रतन० ३७। सक्रि० पता लगाना।
अहथिर—वि० स्थिर 'जोपै नाहीं अहथिर दसा। जग उजार का कीजिय बसा।' प० ५५ (२२१ भी)
अहना—अक्रि० होना (अहहीं, अहैं, अहा इ०)।
अहनिसि—अ० दिनरात।
अहमिति—स्त्री० घमण्ड 'तब नारद गवने सिव पाँही। जिता काम अहमिति मनमाही।' रामा० ७४
अहमेव—पु० घमण्ड 'कहत धरेस सब धराधर सेस ऐसो और धराधरनको मेव्यो अहमेव है।' भू० २८
अहरन,-रनि—स्त्री० निहाई 'धीरा होइ धमक सहौं, ज्यों अहरन सिर घाव।' साखी १५२
अहलना—अक्रि० हिलना। दहलना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अहलाद—पु० आह्लाद, आनन्द।
अहवान—पु० आवाहन, बुलानेका कार्य।
अहसान—पु० भलाई, कृपा। कृतज्ञता।
अहह—अ० खेद, आश्चर्यादि सूचक शब्द।
अहा—अ० प्रशंसा या प्रसन्नता सूचक शब्द। स्त्री० प्रशंसा 'अदल जो कीन्ह उमरकै नाईं। भई अहा सगरी दुनिआई।' प० ६। क्रि० था 'खेलति अही सहेली सेंती।' प० १९४
अहान—स्त्री० बुलावा, पुकार, चिल्लाहट।
अहार—पु० आहार। भोजन, खाद्य वस्तु।
अहारना—सक्रि० आहार करना। चपकाना।
अहिंसा—स्त्री० प्राण न लेना, किसीको क्लेश न देना।
अहि—पु० साँप। राहु। खल।
अहित—पु० बुराई, हानि। वि० हानिकारी, शत्रु।
अहिनाथ—पु० शेषनाग।
अहिफेन—पु० सर्पके मुँहका फेन। अफीम।
अहिबेल—स्त्री० अहिवल्ली लता, नाग-बेलि, पान। (रामा० १५५)।
अहिवल्ली—स्त्री० नागबेलि, पान। 'अहिवल्ली रिपुकी सुता ताके पतिको हार। ता अरिपतिकी भामिनी सदा बसै तुव द्वार।'
अहिवात—पु० सौभाग्य 'सदा अचल यहिकर अहिवाता।' [रामा० ४२
अहीर—पु० ग्वाला।
अहुटना—अक्रि० दूर होना, हटना।
अहुटाना—सक्रि० हटाना, अलग करना।
अहुठ—वि० साढ़े तीन 'अहुठ हाथ तन जैस सुमेरू।' † [† प० ५४
अहेतु—वि० बिना कारणका। व्यर्थ।
अहेर—पु० शिकार 'जहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब।' रामा० २६४। शिकारका पशु। [एक रीति।
अहोरा बहोरा—क्रिवि० बार बार। पु० विवाहकी

आ

आँक—पु० अंक, निशान, संख्यासूचक चिह्न, (बि० १३७)। अक्षर 'आँक बिहूबीयौ सुचित, सुनैं बाँचत जाइ।' (पाती) वि० २१७। निश्चित मत। गोद। अंश 'आस नहिं एकहू आँक निरबानको।' विन० ४८३। एक आँक. क्रिवि० निश्चय ही 'जदपि लौंग ललितौ तऊ तू न पहिर इक आँक।' वि० २८२
आँकना—सक्रि० निशान लगाना। जाँचना, ठहराना, अंदाजा लगाना।
आँकर—वि० बहुत अधिक '...बिसारि वेद लोकलाज आँकरो अचेतु है।' कविता० २२२। महँगा।
आँकुस—पु० अंकुश (भू० २४)।
आँख—स्त्री० नेत्र, नयन, अम्बक, ईक्षण, चक्षु, लोचन, अक्षि। आँखकी तरहका छेद या चिह्न। मोरपंख। ध्यान। विचार, परख। कृपादृष्टि। दृष्टि।—आना,—उठना = आँख लाल होना और दर्द करना।—की पुतली = प्रिय व्यक्ति 'जो अभिषेक राम कहँ काली। करहुँ तोहि चखपूतरि आली।' रामा०।—खटकना = आँख किरकिराना।—खोलना = आँख ठीक करना, सतर्क होना, सावधान करना। आँखें चार होना = सामना होना, दर्शन होना।—तरेरना = क्रोधकी दृष्टिसे देखना 'सुनि लछिमन बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम' रामा० १५१।—दिखाना = क्रोध दिखलाना, धमकाना 'सुनि सरोष भृगुनायक आये। बहुत भाँति तिन आँखि दिखाये।' रामा० १५८ (५९१ भी)।—भर देखना=इच्छा भर देखना।—में गड़ना=मनमें बसना, पसन्द आना। बुरी लगना। आँखोंमें धूर डालना या देना=देखते देखते धोखा देना। आँखोंमें रखना=प्रेमपूर्वक रखना 'आँखिनमें सखि राखिबे जोग इन्हें कसिके बनवास दियो है।' कविता०।—लगना = नींद लगना। प्रेम होना 'आँखन आँख लगी रहै, आँखें लागत नाहिं। वि० ३२।—लगाना=प्रेम जोड़ना। नजर डालना 'देस देसके बर मोहि आवहिं। पिता हमार न आँख लगावहिं।' प० २४। आँखें होना = परख होना, पहिचान होना।
आँखमिचौनी,-मिचौली,-मीचली—स्त्री० एक खेल।
आँख मुचाई, आँख मुँदाई—स्त्री० आँख मिचौनी 'इहाँ हरि खेलत आँख मुचाई।' सूबे० ३८४
आँखा पु०—एक तरहकी चलनी। खुरजी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आँग—पु० अंग, शरीर 'लखि लखि अँखियनु अधखुलिनु, आँग मोर अँगराइ।' वि० २६०। स्तन।
आँगन—पु० चौक, अजिर।
आंगिक—वि० शरीर सम्बन्धी। पु० भावसूचक चेष्टा। कायिक अनुभाव।
आँगी—स्त्री० चोली, अँगिया।
आँगुर, आँगुल—पु० अँगुली '...काहू उठायो न आँगुर हू है।' राम० ६४
आँगुरिया, आँगुरी—स्त्री० अँगुली।
आँच—स्त्री० गरमी, ताव, आग। ज्वाला। प्रताप। चोट। विपत्ति। 'अबहूँ हृदय जरत तेहि आँचा।' रामा० २१४। काम-व्यथा।
आँचना—सक्रि० जलाना, गरम करना (कविता० २३१)।
आँचर, आँचल—पु० अञ्चल। साड़ी आदिका छोर (रवि० २८)।
आँजन—पु० अञ्जन।
आँजना—सक्रि० अञ्जन लगाना (सू० ७४)।
आँट—पु० अँगूठे और तर्जनीके बीचकी जगह। दाँव, गाँठ। लाग-डाँट, दुश्मनी। पूला।
आँटना—अक्रि० अँटना, समाना, पूरा पड़ना, 'छर कीजै बर जहाँ न आँटा।' प० २८६। पार पाना 'पुरुष तहाँ पर करै छर, जहँ बर किये न आँट।' प० ३१५। मिलना, पहुँचना। बराबरी कर सकना 'जिनके उपासी रिधि सिधि हूँको करैं दासी, निधि हैं कलासी, बिधि हू न तेहि आँटिहै।' दीन० १२३
आँटी—स्त्री० पूला, सूतका लच्छा, खेलनेकी गुल्ली। गाँठ 'विषके तंतू पसार उरझाई आँटी मार, सब नर वृच्छपर लपटेही लेखिए।' सुन्द० ५१
आँत—स्त्री० पेटके भीतरकी लम्बी नली।
आँदू—पु० बेड़ी, बंधन (रतन० ३३)।
आंदोलन—पु० धूम, हलचल ज़ोरोंका प्रयत्न।
आँध—स्त्री० अँधेरा, रतौंधी। क्लेश।
आँधना—अक्रि० ज़ोरसे झपटना या टूट पड़ना।
आँधरा—वि० अन्धा। पु० अंधा मनुष्य।
आँधारम्भ—पु० अंधेर, मनमाना कार्य।
आँधी, आँधै—पु० ज़ोरकी हवा, अंधड़।
आँब—पु० आम।
आँव—स्त्री० एक तरहका चिकना सफेद मल।
आँवड़ना—अक्रि० उमड़ना।
आँवड़ा—वि० गहरा 'भरे गुन भार सुकुमार सरसिज-सार सोभा रूप सागर अपार गुन अँवड़े।' रवि० १४
आँवल—स्त्री० गर्भस्थ शिशुके चारों ओरकी झिल्ली, खेंड़ी।
आँवला—पु० एक वृक्ष या उसका फल।
आंशिक—वि० अंश सम्बंधी। कुछ (आंशिक सफलता)।
आँस—स्त्री० आँसू, वेदना, कष्ट।
आँसी—स्त्री० वह मिष्टान्न जो मित्रादिकोंमें बाँटा जाता है, [वैना।
आँसू—पु० अश्रु, नेत्रजल।
आइ—स्त्री० आयु, जीवन 'सो जानइ जनु आइ खुटानी।' रामा १४६
आइस, आइसु—पु० आयसु, आदेश, आज्ञा।
आई—स्त्री० आयु, जीवन 'सत संवत मनुष्यकी आई।' सूबे० ३१
आईना—पु० दर्पण।
आउ, आऊ—स्त्री० आयु, जीवन 'एहि बन-रहत गई हम आऊ।' प० ३०, 'दादुर काकोदर दसन परे मसन मति ध्याउ। कहा लहैगो स्वादुको एक स्वासकी आउ।' दीन० २०९
आउज, आउझ—पु० ताशा नामका बाजा (गीता० २७१), (राम० १८५)।
आउबाउ—पु० आयँ बायँ, निरर्थक प्रलाप 'जीहहू न जाप्यो नाम बक्यो आउबाउ मैं।' विन० ५९२
आक—पु० मंदार (रामा० ६०४)।
आकबाक—पु० अण्ड बण्ड बात 'ताहि तें सुबचन बिबेक करि बोलिये जू यूँहि आकबाक बकि तोरिये न पौन कूँ।' सुन्द० ७५
आकर—पु० भाण्डार (रत्नाकर, कुसुमाकर), खानि। भेद 'आकर चारि लाख चौरासी।' रामा ८। वि० श्रेष्ठ, अधिक। गुणित। दक्ष।
आकरखना—सक्रि० आकर्षित करना, खींचना।
आकरी—स्त्री० आकली, व्याकुलता। खान खोदनेका काम (कविता० २१७)।
आकर्ष—पु० खींचने या बलपूर्वक हटानेका कार्य। चौपद। चुम्बक। बाण चलानेका अभ्यास। कसौटी।
आकर्षण, आकर्षन—पु० खिंचाव। एक तांत्रिक विधि।
आकर्षना—सक्रि० तानना, खींचना। [† जाँच।
आकलन—पु० संग्रह, ग्रहण (रामा० ५१६)। सम्पादन, †

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आकली—स्त्री० व्याकुलता, बेचैनी।
आकस्मात्—क्रिवि० अचानक।
आकांक्षा—स्त्री० इच्छा, वाञ्छा। अपेक्षा।
आकार—पु० रूप, आकृति, बनावट, डीलडौल। चिह्न।
आकारी—वि० बुलानेवाला।
आकाश—पु० गगन, व्योम, अन्तरिक्ष, शून्य स्थान।
आकुंचित—वि० सिकुड़ा हुआ, तिरछा, टेढ़ा।
आकुल, आकुलित—वि० व्याकुल, क्षुब्ध, व्याप्त।
आकूत—पु० आशय, मतलब।
आकृति - पु० आशय। शुभ आचरण। उत्साह।
आकृति—स्त्री० मूर्त्ति, बनावट। मुख या मुखका भाव।
आक्रमण—पु० हमला। आक्षेप।
आक्रोश—पु० कोसना, कटूक्ति।
आक्षेप—पु० आरोप, दोष लगाना, निन्दा। व्यंग्य।
आखत—पु० अक्षत (विन० ७५)। शुभ अवसरपर नेगियोंको दिया जानेवाला अन्न।
आखन—क्रिवि० प्रतिक्षण।
आखना—सक्रि० कहना 'जो अबके सतगुरु मिलैं सब दुख आखौं रोय।' साखी १०६। उल्लंघन करना। देखना। इच्छा करना (प० २५)। चलनीसे छानना।
आखर—पु० अक्षर, हरफ 'आखर मधुर मनोहर दोऊ।' रामा० १७
आखा—वि० 'अक्षत'। सारा 'लावा मेलि दये हैं तुमको वकत रहो दिन आखो।' भ्र० ३३
आखिर—क्रिवि० अन्तमें, अवश्य। खैर, अच्छा। वि० अन्तिम, पिछला। समाप्त। पु० अन्त।
आखु—पु० चूहा।
आखेट—पु० मृगया, शिकार।
आखोट—पु० अखरोट।
आख्या—स्त्री० यश, नाम। व्याख्या।
आख्यान—पु० कथा, वर्णन। एक तरहका उपन्यास।
आख्यायिका—स्त्री० कथा, कहानी।
आग—स्त्री० अग्नि, जलन, डाह। पु० ऊखका अगौरा। 'सूरदास प्रभु ऊख छाँड़िके चतुर चिचोरत आग।' भ्र० ४३।—देना = चितामें आग सुलगाना, फूँकना।—बबूला होना = अत्यधिक क्रुद्ध होना।—बरसना = बहुत गरमी पड़ना। गोला गोलियोंकी वर्षा होना।—लगना = प्रज्वलित होना, ईर्ष्या या क्रोध होना, नष्ट होना, महँगा होना।—लगाना = जलाना, ईर्ष्या या क्रोध उत्पन्न करना। झगड़ा उत्पन्न करना, भड़काना। पेटकी— = क्षुधा, भूख।
आगतपतिका—स्त्री० वह नायिका जिसका स्वामी विदेशसे वापस आया हो।
आगत-स्वागत—पु० आदर-सत्कार।
आगम—पु० आगमन 'रोमपाद मुनि दसरथ-आगम पायो परम हुलासा।' रघु० १०। होनहार, आनेवाला समय। संगम। आमदनी। वेद, शास्त्र। उत्पत्ति। उपक्रम '...बहुरि मिलनको आगम कीन्हों।' सूरा० ३५। वि० आगामी।
आगमन—पु० आना।
आगमसोची—वि० अग्रसोची।
आगमी—पु० दैवज्ञ, ज्योतिषी 'अवध आज आगमी एक आयो।' गीता० २८२
आगर—पु० आकर, खान, कोष। समूह। घर, स्थान 'पानिपके आगर सराहैं सब नागर...' दास १८१। पु० ब्योंड़ा। घर, छप्पर। वि० बढ़कर 'भलेहि पदमिनी रूप अनूपा। हमते कोउ न आगरि रूपा।' प० ५९। चतुर (उदे० मिहरी)। अधिक 'संवत् सत्रहसे लिखे आठ आगरे बीस।' छत्र० ८९
आगल—पु० ब्योंड़ा। वि० आगेका, अगला। क्रिवि० सामने।
आगला—वि० अगला।
आगवन—पु० आना (रामा० ३१५)।
आगा—पु० आगेका हिस्सा, छाती, सामना, आँचल। परिणाम। भविष्य।
आगान—पु० प्रसंग, हाल।
आगापीछा—पु० हिचकिचाहट, दुविधा। परिणाम।
आगार—पु० घर, धाम, स्थान। खजाना। (रामा०१६)
आगाह—वि० वाकिफ। पु० होनहार।
आगि—स्त्री० अग्नि।
आगिल,-ला—वि० आगेका, होनेवाला। 'कहि अस ब्रह्म-भवन मुनि गयऊ। आगिल चरित सुनहु जस भयऊ।' [रामा० ४४
आगिवर्ष—पु० मेघका एक भेद।
आगी—स्त्री० अग्नि।
आगू—क्रिवि० आगे (रघु० १६), 'बासर चौथे जाम, सतानन्द आगू दिये। दशरथ नृपके धाम, आये सकल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विदेह बनि।' राम० ११२। परिणाम 'तू रिसभरी न देखेसि आगू।' प० ४०, (२८०)

आगे—क्रिवि० सामने। भविष्यमें। और बढ़कर। बाद। पहिले। अतिरिक्त।

आगौन—पु० आगमन, आना।

आग्नेय—वि० अग्नि सम्बन्धी। जलानेवाला। पु० सुवर्ण। अग्निपुत्र कार्त्तिकेय। ब्राह्मण।

आग्रह—पु० हठ, तत्परता।

आघ, आघु—पु० मूल्य (वि० १६३)।

आघात—पु० चोट, ठोकर, प्रहार।

आघ्राण—पु० गंध लेना, तृप्त होना।

आचमन—पु० जल पीना, मुख धोना।

आचरज—पु० आश्चर्य, अचरज (रामा० ५)।

आचरण, आचरन—पु० व्यवहार, अनुष्ठान। लक्षण। शुद्धि। रथ।

आचरना—सक्रि० व्यवहार करना 'तुम्ह तउ देहु सरल सिख सोई। जो आचरत मोर भल होई।' रामा०२८३

आचान, आचानक—क्रिवि० अचानक।

आचार—पु० व्यवहार। रहनसहन। शील, चरित्र। शुद्धि।

आचारज, आचार्य—पु० पुरोहित।

आचारी—वि० चरित्रवान्। पु० आचार्य।

आचिंत्य—वि० जो चिंतनमें न आ सके, ईश्वर।

आच्छन्न—वि० छिपा हुआ।

आछत—क्रिवि० रहते हुए, विद्यमानतामें।

आछना—अक्रि० रहना, होना। 'दादुर बास न पावई भलहि जो आछै पास।' प० १०

आछा—वि० अच्छा (भू० १२५)।

आछी—वि० अच्छी। वि० खानेवाला।

आछे—क्रिवि० अच्छी तरह।

आछेप—पु० आक्षेप।

आज, आजु—क्रिवि० अद्य, वर्तमान दिनमें।

आजा—पु० पिताका पिता।

आजाद—वि० स्वतंत्र, निर्भय।

आजानु—वि० घुटनोंतक लम्बा।

आजार—पु० रोग, बीमारी, कष्ट।

आजि—पु० लड़ाई, समर (रामा० ३५)।

आज्ञा—स्त्री० हुक्म, आदेश, अनुमति।

आटना—सक्रि० दबाना, नीचे ढँकना।

आटा—पु० पिसान, चूर्ण।

आटोप—पु० फैलाव, आडम्बर।

आडंबर—पु० टीमटाम, बनावटी आयोजन। गंभीर ध्वनि। तम्बू।

आड़—स्त्री० परदा, ओट। रक्षा। रोक। लम्बी टिकली। एक भूषण। स्त्रियोंके माथे परका आड़ा तिलक 'गदराने तन गोरटी ऐपन आड़ लिलार।' वि० ५९८, (सू० ११०)

आड़ना—सक्रि० रोकना, बाँधना। गिरवी रखना।

आड़ा—वि० बाईं ओरसे दाहिनीको, या दाहिनीसे बाईं-को गया हुआ, बेंढ़ा। पु० शहतीर। एक धारीदार कपड़ा। आड़े आना = संकटमें काम आना। आड़ा पड़ना = विघ्न डालना। आड़ा होना = रुकावट डालना 'प्रीतम मुख अवलोक तन होत शु आड़े आन।' रतन० २९। बीच-बिचाव करना 'तुरत आनि आड़ा भयो हाड़ा श्री छत्रसाल।' छत्र० ४०

आड़ि—पु० हठ 'मन नाहीं छाड़े विषय, विषय न मनको छाड़ि। इनका यही सुभाव है पूरी लागी आड़ि।' साखी १६६

आड़ू—पु० एक फल।

आढ़—स्त्री० सहारा, ओट (विन० ९६)। अन्तर, नागा। आढ़ आढ़ करना = टालमटूल करना 'जारि मोहिनी आढ़ आढ़ कियो तब नखसिखतें रोयो।' सूवि० १८ वि० कुशल, होशियार। स्त्री० माथेका भूषण।

आढ़त—स्त्री० कमीशन लेकर बिक्री करानेका काम।

आढ्य—वि० सम्पन्न, युक्त।

आतंक—पु० भय, रोब। रोग।

आतताई, आततायी—पु० अत्याचारी, आग लगाने-वाला, लुटेरा।

आतप—पु० धूप, गरमी, ज्वर।

आतमा—स्त्री० आत्मा।

आतर, आतार—पु० उतराई।

आतश, आतिश—स्त्री० अग्नि।

आतिथ्य—पु० पहुनाई। अतिथिका आदर-सत्कार।

आतुर—वि० व्याकुल। अधीर। उत्सुक। रोगी, दुःखी। क्रिवि० शीघ्र 'मोर कहा तुम ताहि सुनावहु। तासु वचन सुनि आतुर आवहु।' राम० ३७२

आतुरताई—स्त्री० उतावलापन।

आतुराना—अक्रि० उतावला होना, उत्सुक होना 'रथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है विचित्र भाव चढ़ पाप पुण्य चाय हुंबीगन आतुराय ज्यों तुरंग धावो है।' दीन० १४२

आतुरी—स्त्री० घबड़ाहट, जल्दबाजी।

आत्मज,-जात—पु० पुत्र। कामदेव। रुधिर।

आत्महन्—वि० आत्मघात करनेवाला (रामा० ५६१)।

आत्मा—स्त्री० जीव, मन, चित्त, ब्रह्म, बुद्धि, अहंकार। देह।

आत्मीय—पु० बंधु, मित्र, सम्बन्धी। वि० अपना।

आथना—अक्रि० 'आछना', होना।

आथी—स्त्री० पूँजी 'औ व्रत हस्ति घोर औ आथी' प० २०४

आद—ऐसो 'आदि'। 'यों सब जीवनकी लखौ ब्रह्म सनातन आद।' रसम० ७

आदत—स्त्री० टेव, स्वभाव।

आदमी—पु० मनुष्य। पति। नौकर।

आदर—पु० सम्मान, प्रतिष्ठा।

आदरना—सक्रि० सम्मान करना 'तजि ऋतुपतिकी माधवी आयो इह सारंग। आक आदरै ताहि किन दुर्कम काको संग।' दीन० २१८

आदरस—पु० आदर्श 'गौर स्याम रूप आदरस है दरस जाको, गुपुत प्रगट भावना विलेखिबोई है।' श्रीआनन्द-घन। दर्पण (ललित २००)।

आदर्श—पु० नमूना। दर्पण।

आदि—पु० आरंभ, मूलकारण। वि० आरंभका, प्रथम।

आदिकवि—पु० वाल्मीकि या शुक्राचार्य।

आदित, आदित्य—पु० अदितिके पुत्र। देवता। सूर्य। इन्द्र या वामन। मदार।

आदिम—वि० पहिलेका।

आदिल—वि० न्यायी।

आदी—वि० अभ्यस्त। नितान्त, बिलकुल 'मातु न जानसि बालक आदी। हौं बादला सिंघ रनवादी। प० ३१। स्त्री० अदरक।

आदेश, आदेस—पु० आज्ञा। उपदेश। प्रणाम।

आद्य—वि० आरंभका। वि० खाने योग्य।

आद्रा—स्त्री० नक्षत्र विशेष।

आध, आधा—वि० अर्द्ध। समूचेके दो बराबर हिस्सोंमें से एक जितना हो उतना।

आधार—पु० अवलम्ब, सहारा। नींव, आश्रयदाता। आलबाल।

आधारी—वि० सहारेपर रहनेवाला। साधुओंकी टेकनेकी लकड़ी 'कानन मुद्रा पहिरि मेखली धरे जटा आधारी।' भ्र० २५

आधासीसी—स्त्री० आधे सिरका दर्द। जबकनाली।

आधि—स्त्री० मानसिक पीड़ा, चिन्ता। रेहन, बंधक।

आधिक—वि० आधा या आधेके लगभग। क्रिवि० लगभग आधा, किञ्चित्।

आधिदैविक—वि० दैवकृत, दैवप्रेरित।

आधिभौतिक—वि० सर्प, व्याघ्र, आदि जीवोंकृत।

आधीन—वि० अधीन, आश्रित। दीन।

आधुनिक—वि० आजकलका।

आधेक—वि० क्रिवि० आधिक, लगभग आधा, थोड़ा।

आधेय—पु० आधारपर स्थित वस्तु। वि० रखने योग्य।

आध्यात्मिक—वि० आत्मासम्बन्धी।

आनंद—पु० खुशी, आह्लाद, सुख।

आनंदना—अक्रि० आनंदित या प्रसन्न होना 'खरभर परी देव आनन्दे जीत्यो पहिली रारि।' सूर० ४०

आनंद सम्मोहिता—स्त्री० यह प्रौढ़ा नायिका जो रतिके!

आनंदी—वि० प्रसन्न, सुखी। [† आनंदमें मग्न हो।

आन—स्त्री० सौगन्ध, मर्यादा, घोषणा 'फिरी आन ऋतु बाजन बाजे।' प० ८६। बहुत थोड़ा समय। खान, दबाव, शर्म, भय, दुहाई 'दैहौं मिलाइ तुमैं हौं तिहारिये आन करौं वृषभानु लली सौं।' रवि० ९, 'सुन्दर कहत जब चेतन सकति गई उहै देह ताकी क्रोध मानत न आन है।' सुन्द० ३४। हठ। वि० दूसरा 'अगनित भुवन फिरेउ प्रभु राम न देखेउँ आन।' रामा० ५८१

आनक—पु० दुंदुभी, नगाड़ा। गड़गड़ाता हुआ बादल।

आनकदुंदुभी—पु० वसुदेव। बड़ा डंका। 'बालक आनक दुंदुभीके भयो दुंदुभी बाजत आनके द्वारे।'

आनतान—स्त्री० असम्बद्ध बात। स्त्री० देर। मर्यादा।

आनन—पु० मुख (रामा० ४९१)।

आनना—सक्रि० लाना 'आनहु चर्म कहति वैदेही।' रामा० ३७८, (के० २८१, रामा० ४२१)।

आनबान—स्त्री० सजधज, शान, ठसक।

आनयन—पु० लाना। उपनयन संस्कार।

आना—अक्रि० पहुँचना, (क्रोधादि) उत्पन्न होना, जिसमें निकलना, ठीक होना, समाना, दामपर मिलना। पु० रुपयेका सोलहवाँ भाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनाकानी—स्त्री० आगा पीछा, टालमटूल। कानाफूँसी या इशारेकी बात।
आनि—स्त्री० आन, सौगन्ध। मर्यादा।
आनी जानी—वि० स्त्री० आने जानेवाली, अस्थिर।
आनुषंगिक—वि० प्रासंगिक, किसीके साथ होनेवाला।
आप—पु० पानी। परमात्मा। सर्व० स्वयं। तुम, वे। —ही आप, क्रिवि० स्वगत, मनही मन।
आपगा—स्त्री० नदी (ललित ७०)।
आपत—स्त्री० आपत्ति, दुःख।
आपत्ति—स्त्री० दुःख, विघ्न। एतराज। दोष लगाना।
आपद,-दा—स्त्री० आपत्ति। दुःख।
आपन,-ना,-नो—सर्व० अपना 'पृहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज।' रामा० २८४
आपन—पु० आत्मा 'तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम सो आपन पहिचानै।' विन० २७६
आपनपो,-पौ—पु० अपनपो, आत्मभाव। सुध।
आपस—पु० सम्बन्ध, नाता। आपसमें = परस्पर।
आपा—पु० अपना अस्तित्व, सुधबुध। अहंकार 'आपा मेटै गुरु भजै, तब पावै करतार।' साखी० ३
आपात—पु० पतन, घटनाका होना। आरंभ। अंत।
आपाततः—क्रिवि० अकस्मात्। निदान, अन्ततः, संप्रति, काम चलानेके लिए।
आपी—पु० पूर्वाषाढ नक्षत्र।
आपु—सर्व० आप, खुद।
आपुन, आपुनो—सर्व० अपना।
आपुस—पु० आरस।
आपूरना—अक्रि० भरना।
आप्त—वि० प्राप्त। कुशल, विश्वसनीय।
आफत—स्त्री० आपत। ऊधम।
आफताब—पु० सूर्य (भू० १७९)।
आफू—स्त्री० अफीम।
आब—पु० पानी। स्त्री० चमक, आभा, शोभा (वि० १८०)। प्रतिष्ठा, उत्कर्ष।
आबताब—स्त्री० चमक दमक। शोभा।
आबरू—स्त्री० इज्जत, प्रतिष्ठा।
आबहवा—स्त्री० जलवायु।
आबादी—स्त्री० जनसंख्या। खेतीकी भूमि।
आबी—वि० पानी सम्बन्धी। फीका।
आभ—स्त्री० कान्ति, शोभा। पु० पानी। आकाश।
आभरण,-न—पु० भूषण। पालन-पोषण।
आभार—पु० बोझ। गृहस्थीका बोझ। अहसान।
आभास—पु० प्रतिबिम्ब, झलक। पता। झूठा ज्ञान।
आभीर—पु० ग्वाल, अहीर। एक छंद।
आभूषण, आभूषन—पु० गहना, अलंकार।
आभोग—पु० सुखादिका पूर्ण अनुभव। वरुणका छत्र, सर्पका फण 'धरापुत्र ज्यौं स्वर्णमाला प्रकासै। किधौं ज्योति सी तक्षकाभोग भासै।' राम० ५०६
आभ्यन्तर, आभ्यन्तरिक—वि० भीतरी।
आम—पु० रसाल, सहकार। वि० प्रसिद्ध। साधारण। कच्चा 'बिगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरो सो।' विन० ४०७
आमड़ा—पु० आमकी तरहका एक फल।
आमद—स्त्री० आगमन। आमदनी।
आमदनी—स्त्री० प्राप्ति, आय।
आमना—अक्रि० आना।
आमना सामना—पु० भेंट, मिलन।
आमय—पु० रोग, बीमारी (विन० २९६)।
आमरख—पु० क्रोध (दीन० २२५)।
आमरखना—अक्रि० क्रोध करना।
आमर्ष—पु० क्रोध। एक सञ्चारी भाव।
आमलक—पु० आँवला।
आमात्य—पु० अमात्य, मंत्री।
आमाशय—पु० पेटके भीतर भोजन पचनेका स्थान।
आमिख—पु० आमिष, मांस (साखी १७७)।
आमिर, आमिल—पु० काम करनेवाला, हाकिम 'नव नागरि तन मुलक लहि जोबन आमिल जोर। घटि बढ़िते बढ़ि घटि रकम करी औरकी ओर।' वि० ९२। ओझा, सिद्ध। वि० खट्टा।
आमिष—पु० मांस। लोभ। भोग्य वस्तु।
आमी—स्त्री० अंबिया, छोटा आम (सूबे० ३६५)।
आमुख—पु० प्रस्तावना।
आमेजना—सक्रि० मिलाना [भीजी अरगजेमें भई ना मरगजे सजी आमेजे सुगंध सेजै तजी शुभ्र शीतरे।' देव]
आमोद—पु० आनन्द, दिलबहलाव। सुगंधि 'कमल तजि तनु रचत नाहीं आकको आमोद।' सू० २५१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आम्र—पु० आमका पेड़ या फल।
आय—स्त्री० आमदनी। अक्रि० है, 'आहि'।
आयत—वि० लम्बा चौड़ा। विशाल 'पाथोदगात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।' रामा० ३८३। स्त्री० कानका वाक्य।
आयतन—पु० भवन, मन्दिर। ठहरनेका स्थान। लम्बाई-
आयस—पु० लोहा, लोहेका कवच। [चौड़ाई
आयसी—वि० लौह-निर्मित।
आयसु—स्त्री० आज्ञा।
आयात—वि० आया हुआ। पु० बाहरसे आया हुआ
आयास—पु० परिश्रम। [माल।
आयु—स्त्री० उम्र, जीवनकाल।
आयुध—पु० हथियार, शस्त्र।
आयुष्मान—वि० दीर्घायु। राजकुमारों इत्यादिका †
आयुष्य—पु० आयु। [† सम्बोधन।
आयोजन—पु० प्रबन्ध, उद्योग, तैयारी, नियुक्ति। सामान।
आरंभ—पु० शुरू। अनुष्ठान। उत्थान। शुरूका हिस्सा।
आरंभना—अक्रि० शुरू करना।
आर—पु० आरि, अड़, हठ 'अँखियाँ करति हैं अति आर।' सू० २००। स्त्री० सूआ, अनी, किनारा, या कोना। ढंक 'जा दिनते मोहन गये हैं तजि गोहनको ता दिनते गोकुलकी गली लगें आर है।' दीन० ५०। निकृष्ट लोहा। पीतल। घृणा।
आरज—वि० श्रेष्ठ, पूज्य 'टूटि गयो घरको सब बन्धन, छूटि गो आरज लाज बड़ाई।' रसखानि
आरजू—स्त्री० इच्छा। विनय।
आरण्य,-ण्यक—वि० जंगली।
आरत—वि० दुःखित, कातर, अस्वस्थ, दुःखपूर्ण 'सुनि कृपाल अति आरत बानी। एक नयन कर तजा भवानी।' रामा० ३५९
आरति—स्त्री० विरक्ति, दुःख 'मो समान आरत नहीं, आरतिहर तोसो।' विन० २२६। हठ 'साँझहि ते अति ही बिरझान्यो चन्दहि देखि करी अति आरति।' सूसु० ८३ (६४)
आरती—स्त्री० मंगलदीप। वह बर्त्तन जिसमें घी, कपूर इत्यादि रखकर आरती करते हैं। वह स्तोत्र जो आरती-के समय पढ़ा जाय। [प० ९०
आरन—पु० अरण्य, जंगल 'नै पिंगला गये कनरी आरन।'
आरबल, आरबला—पु० स्त्री० आयुर्बल, उम्र।
आरभटी—स्त्री० क्रोध इत्यादिकी चेष्टा। नाटककी एक वृत्ति जिसमें यमकका प्रचुर प्रयोग होता है। 'झूठो मन झूठी यह काया झूठी आरभटी।' सू० ५
आरव—पु० आवाज, आहट 'घुरघुरात हय आरव पाये।' रामा० ८८
आरषी—वि० ऋषियोंकी।
आरस—पु० आलस्य 'अति ही नींदर नैन उनींदे, आरस रंग भर्यो है।' अलबेली अलि (उदे० 'अर-साना', दास० ७९)। स्त्री० आईना।
आरसी—स्त्री० आईना। अँगूठेमें पहिननेका एक गहना।
आरा—पु० लकड़ी चीरनेका औजार। सूजा। पु० आला, ताक 'आरे मणिखचित खरे, बासन बहु बास भरे, राखित गृह गृह अनेक, मनहु मैन साजे।' के० १६५, 'जाइ लेहु आरेपर राखो काहि मोल ले राखो कोरी।' सूवे० ७५
आराति,-ती—पु० शत्रु 'करसि पान सोवसि दिनरातीं। सुधि नहिं तव सिरपर आराती।' रामा० ३०५
आराधना—स्त्री० पूजा। सक्रि० पूजा करना। संतुष्ट करना।
आराम—पु० बाग। सुख। स्वास्थ्य। सुविधा, विश्राम।
आरि—स्त्री० हठ, जिद्द 'कान्ह बलि जाऊँ ऐसी आरि न कीजै।' सूसु० ७७, 'त्रिदसपतिपति असनकों अति जननिसों करै आरि।' सू० ५७। मर्यादा 'उनइ आये साँवरे ते सजनी देखि रूपकी आरि।' सू० २०५
आरी—स्त्री० लकड़ी चीरनेका औजार। सूआ। किनारा, कोर। ओर। वि० हैरान।
आरूढ़—वि० चढ़ा हुआ। दृढ़।
आरेस—पु० ईर्ष्या 'कबहुँ न कियहु सवति आरेसू। प्रीति प्रतीति जान सब देसू।' रामा० २२२
आरो—पु० आरव, आवाज।
आरोग—वि० आरोग्य, स्वस्थ।
आरोगना—सक्रि० खाना।
आरोधना—सक्रि० रोकना।
आरोप,-पण—पु० लगाना, मढ़ना, एक वस्तुमें दूसरी वस्तुके धर्मकी कल्पना। भ्रम।
आरोपना—सक्रि० बैठाना, स्थापित करना, लगाना।
आरोह—पु० चढ़ाव, आक्रमण। आविर्भाव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आरोहण—पु० चढ़नेका कार्य, सीढ़ी। अंकुर निकालना।
आरोही—पु० सवार। वि० चढ़नेवाला, बढ़नेवाला।
आर्जव—पु० सरलता, सीधापन।
आर्त्त—वि० पीड़ित, दुःखी। अस्वस्थ।
आर्त्तव—वि० ऋतु सम्बंधी। पु० स्त्रियोंका मासिक रज।
आर्थिक—वि० धन सम्बन्धी।
आर्द्र—वि० गीला।
आर्द्रा—स्त्री० एक नक्षत्र। एक छन्द।
आर्य—पु० श्रेष्ठ, पूज्य। पु० श्रेष्ठ या पूज्य पुरुष।
आर्या—स्त्री० पार्वती। सास, श्रेष्ठ या पूज्य स्त्री। पितामही। एक छन्द।
आर्ष—वि० ऋषि सम्बन्धी। ऋषिकृत। वैदिक।
आलंब, आलंबन—पु० सहारा, अवलम्बन। जिसके सहारे रसकी उत्पत्ति होती है, वह। साधन।
आलंबित—वि० आश्रित।
आल—पु० झंझट। गीलापन। आँसू (?) 'सिसक्यो जल किन लेत दृग, भर पलकनमें आल।' रतन० ३३। हरताल। स्त्री० एक पौधा (भाव० ७)। 'आल मजीठ लाख सेंदुर कहुँ ऐसेहि बुधि अवरेखत।' सूबे० १३९। बेटीकी औलाद। वंश। एक कीड़ा। कद्दू।
आलकस—पु० आलस्य।
आलबाल—पु० थाला 'खल बढ़ई बल करि थके, कटै न कुबत कुठार। आलबाल उर झालरी, खरी प्रेम-तरु डार।' वि० १८२। मेघ 'चाह आलबाल और प्रवाहके कलपतरु, कीरति मयंक प्रेम-सागर अपार हैं।' आनंदघन
आलम—पु० दुनिया। जन-समूह। दशा। एक तरहका नाच।
आलय—पु० घर, स्थान।
आलवाल—पु० थाला।
आलस—पु० सुस्ती। वि० सुस्त।
आलसी—वि० सुस्त।
आला—पु० ताक, ताखा। हथियार। कुम्हारका आँवा। वि० श्रेष्ठ। गीला। हरा, ताजा।
आलात—पु० जलती हुई लकड़ी।
आलान—पु० हाथी बाँधनेका खूँटा। बन्धन, झंझट।
आलाप—पु० बातचीत, तान।
आलापिनी—स्त्री० बाँसुरी।
आलापी—वि० बोलनेवाला, गानेवाला।
आलिंगन—पु० अंक लगाने या भेंटनेकी क्रिया, परिरंभण।
आलिंगना—सक्रि० भेंटना, हृदयसे लगाना 'गुनवन्तिन आलिंगति नहीं।' के० ५२
आलि—स्त्री० सखी। पंक्ति या अवली। रेखा, बाँध। बिच्छू। भ्रमरी।
आलिम—वि० विद्वान्।
आली—स्त्री० सखी 'पुनि आउब एहि बिरियाँ काली। अस कहि मन बिहँसी एक आली।' रामा० १२८। पंक्ति 'बरनै दीनदयाल बैठि हंसनकी आली। मंद मंद पग देत अहो यह छलकी चाली।' दीन० २०२। वि० गीली। श्रेष्ठ।
आलेख—पु० लिखावट।
आलेख्य—पु० चित्र, तस्वीर। वि० लिखने योग्य।
आलेप—पु० लेप, पलस्तर।
आलोक—पु० प्रकाश। दर्शन।
आलोचन—पु० जाँच, दर्शन।
आलोड़ना—सक्रि० मथना। भली भाँति सोचना विचारना।
आल्हा—पु० 'वीर' छन्द जिसमें ३१ मात्राएँ होती है। महोबाके प्रसिद्ध वीरका नाम।
आव—पु० आयु, देखो 'आउ'।
आवज, आवझ—पु० एक बाजा, ताशा 'मंद मंद धुनि सों घन गाजैं। तूर तार जनु आवझ बाजैं।' राम० ३१८
आवटना—पु० उथल-पुथल। अस्थिरता। सक्रि० औटना, गरम करना।
आवन—पु०, आवनि—स्त्री० आगमन।
आवरण—पु० ढकन। परदा। अज्ञान।
आवर्त्त—पु० पानीका भँवर। चिन्ता। संसार। पानी न बरसानेवाला बादल।
आवर्तन—पु० फिराव, मथन। छायाका फिरना। तीसरा [पहर।
आवलि,-ली—स्त्री० पंक्ति, श्रेणी।
आवश्यकता—स्त्री० ज़रूरत। प्रयोजन।
आवागमन,-गवन,-गौन—पु० आमदरफ्त। जन्ममरण।
आवाज़—पु० शब्द, ध्वनि। बोली। शोर।
आवाजानी—स्त्री० जन्ममरण 'धर्मदास कबीर पिव पाये मिट गई आवाजानी।' धर्मदास
आवारजा—पु० अवारजा।
आवारा—वि० निकम्मा। बदमाश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आवाल—पु० थाला, आलवाल।
आवास—पु० देखो 'अवास', मकान।
आवाहन—पु० मंत्र द्वारा देवताको बुलाना।
आविर्भाव—पु० उत्पत्ति, जन्म, प्रकट होनेका कार्य 'ताके गृह क्रियो आविर्भाव।' सू०। आवेश। प्रकाश।
आविष्कार—पु० प्रकटीकरण, ईजाद।
आवृत—वि० छिपा हुआ। घिरा हुआ।
आवृत्ति—स्त्री० दुहराना. किसी बातका बार बार होना।
आवेग—पु० जोश। एक सञ्चारी भाव।
आवेश—पु० वेग, जोश, व्याप्ति, दौरा।
आशंका—स्त्री० डर, सन्देह।
आशय—पु० मतलब। इच्छा। आधार। गड्ढा।
आशर—पु० देखो 'आसर', राक्षस। अग्नि।
आशा—स्त्री० सफलताका थोड़ा बहुत निश्चय व तदुत्पन्न सन्तोष, उम्मीद। दिशा।
आशीर्वाद—पु० दुआ। स्वस्तिवचन।
आशीविष—पु० साँप 'आशीविष दोषनकी दरी। गुरु सतपुरुष न कारन घरी।' के० ५४
आशु—क्रिवि० शीघ्र। आशुतोष=जल्द प्रसन्न होनेवाला।
आशुग—पु० वायु।
आश्चर्य—पु० अचम्भा, विस्मय।
आश्रम—पु० तपोवन, कुटी। जीवनकी ब्रह्मचर्य आदि चार अवस्थाएँ। [वस्तु।
आश्रय—पु० सहारा, शरण। भरोसा। घर। आधार-
आश्रित—वि० सहारेपर स्थित। अधीन, शरणागत।
आश्लेष—पु० आलिंगन, भेंट, लगाव।
आश्वास,-सन—पु० सान्त्वना, दिलासा।
आश्विन—पु० क्वाँर मास।
आस—स्त्री० आसा 'प्रीसम भीखम सीसपै नहिं लाडीकी आस।' दीन० २१६। कामना 'होत उजागर बन बगर मधुप मलिन तव आस। तजि माधवी सुप्रीतिको, बिहरत पास पलास।' दीन० २०५। भरोसा, सहारा। दिशा 'आई बहुरि बसंत ऋतु बिमल भई दस आस।' रघु० २६। पु० धनुष।
आसकत—स्त्री० आलस्य।
आसक्ति—स्त्री० लगन, प्रेम, अनुरक्ति। [ॐ अ० ३
आसति—स्त्री० सत्य। आसत्ति, समीपता, मुक्ति 'सूर तुरत यह जाय कहौ तुम ब्रह्म बिना नहिं आसति।' ॐ

आसते—क्रिवि० धीरे धीरे।
आसतोष—वि० जल्द प्रसन्न होनेवाला।
आसथान—पु० आस्थान, बैठनेका स्थान, सभा।
आसन—पु० बैठनेकी विधि। स्थिति। बैठकी, पीढ़ा या बिछौना 'बानैं बनाइ बनाइ कहा कहै छोड़ि दे आसन बासनको।' राम० ७४। निवास।
आसना—अक्रि० होना 'कोटि मनोज लजावन हारे, सुमुखि कहहुको आहिं तुम्हारे।' रामा० २५४
आसन्न—वि० सन्निकट, आया हुआ। नजदीक।
आसपास—क्रिवि० इधर उधर, निकट।
आसमान—पु० आकाश, स्वर्गलोक। —ताकना = गर्वसे तनना। —टूट पड़ना = सहसा विपत्तिका आ पड़ना। —पर चढ़ना = इतराना। — सिरपर उठाना = हुल्लड़ मचाना, आंदोलन करना।
आसमुद्र—क्रिवि० समुद्र पर्यन्त।
आसय—पु० आशय। इच्छा। आधार।
आसर—पु० राक्षस 'काहू कहूँ सर आसर मारेउ। आरत शब्द अकाश पुकारेउ।' राम० ७९
आसरना—सक्रि० आश्रय लेना।
आसरा—पु० अवलम्ब, भरोसा, सहारा। शरण। प्रतीक्षा। आशा।
आसव—पु० मद्य 'प्रेम रसासव छकि छकि करत विलास विनोद।' ध्रुवदास। अर्क। ओषधिका भेद विशेष।
आसवी—वि० शराब पीनेवाला।
आसा—पु० देखो 'आशा'। सोने चाँदीका डंडा (सुजा०८)।
आसाढ़—पु० आषाढ़ मास।
आसान—वि० सरल, सहज।
आसार—पु० लक्षण। चौड़ाई। स्त्री० मूसलधार वृष्टि।
आसावरी—स्त्री० एक रागिनी। असावरी।
आसिख, आसिखा—स्त्री० आशीर्वाद।
आसिन—पु० कुआँर मास।
आसिरवचन—पु० आशीर्वादके शब्द। 'बंदि बंदि पद सिय सबहीके। आसिरवचन सुने प्रिय जीके।' रामा० ३१६
आसीन—वि० विराजमान, बैठा हुआ।
आसीस—पु० आशीर्वाद। पु० अंगीठी, तकिया।
आसु—क्रिवि० आशु, शीघ्र। सर्व० इसका।
आसुग—वि० वायु।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आसुतोष—पु० जल्द प्रसन्न होनेवाला।
आसुन—पु० आश्विन मास 'निधिमुनिवसु ससि सालमें आसुन मास प्रकास।' दीन० ९०
आसुर—वि० असुर सम्बन्धी। पु० असुर।
आसुरी—वि० राक्षसी। स्त्री० राक्षसकी स्त्री।
आसोज—पु० कुवाँर मास 'आसोजाका मेंह ज्यों बहुत † आसौं—क्रिवि० इस वर्ष। [† करै उपकार।' साखी १३२
आस्तिक—वि० ईश्वर, वेद, परलोक इ० को माननेवाला। पु० ईश्वर, वेद इत्यादिको माननेवाला पुरुष।
आस्पद—पु० स्थान, कार्य। प्रतिष्ठा। वंश।
आस्य—पु० मुख, चेहरा।
आस्रव—पु० उबलते हुए चावलका फेन। पनाला। †
आस्वाद—पु० स्वाद, मज़ा। [† इन्द्रियद्वार।
आह—अ० पीड़ा, ग्लानि इ० सूचक शब्द। पु० साहस, 'उलदत मद अनुमद ज्यों जलधि जल, बलहद भीमकद, काहुके न भाहके (हाथी)।' भू० १८२। क्रोध, ललकार 'भ्यो राहु, अति आहु करि, मनु ससि सूर-समेत।' वि० १४०। बल। स्त्री० वेदनासूचक शब्द, ठंढी साँस।
आहट—स्त्री० चलनेका शब्द। आवाज़। पता। टोह।
आहत—वि० घायल, गलित, जीर्ण। कंपित।
आहर—पु० समय, दिन।
आहव—पु० युद्ध। यज्ञ।
आहाँ—स्त्री० दुहाई। पुकार या बुलावा। अ० 'नहीं'।
आहा—स्त्री० 'धन्य धन्य' 'भै आहा पदमावति चली।'
आहार—पु० भोजन। खानेकी वस्तु। [प० ८६
आहार्य—पु० नायक-नायिकाका एक दूसरेका वेश ग्रहण करना। वि० खाने योग्य। ग्रहण किया हुआ। बनावटी।
आहुति,-ती—स्त्री० हवन। हवनमें छोड़नेकी सामग्री।
आह्लाद—पु० खुशी। आनन्द।
आह्वान—पु० बुलावा, पुकार। यज्ञमें देवताओंका बुलाना।

इ

इंग—पु० हिलना। चिह्न, संकेत। हाथी-दाँत।
इंगला—स्त्री० इड़ा नामकी नाड़ी।
इंगित—पु० संकेत। चेष्टा। वि० हिलता हुआ।
इंगुद—पु०, इंगुदी—स्त्री० हिंगोट वृक्ष।
इंगुर—पु० इंगुर।
इँचना—अक्रि० खिंचना।
इँडहर—पु० उर्दकी दालसे बना खाद्य-विशेष।
इँडुरी, इँडुवा—स्त्री० गेंडुरी, बिड़ई।
इंतकाल—मु० मृत्यु।
इंतज़ार—पु० रास्ता देखना, प्रतीक्षा।
इंद, इंदर—पु० इन्द्र। (इंद, सूसु० १८३)
इंदव—पु० छन्द (मत्तगयन्द)।
इँदारुन—पु० इन्द्रायन (विन० ४१३)।
इंदिरा—स्त्री० लक्ष्मी। शोभा, छवि।
इंदीवर—पु० नीला कमल। कमल।
इंदु—पु० चन्द्रमा। कपूर।
इंदुदह—पु० चन्द्रमाका कुण्ड 'चलित कुण्डल गण्ड-मण्डल, झलक ललित कपोल। सुधासर जनु मकर क्रीडत, इन्दुदह दह डोल।' सू० ८६
इंदुर—पु० चूहा 'कीन्हेसि लोवा इंदुर चाँटी।' प० २
इंद्र—पु० देवराज, पुरन्दर। सूर्य। राजा। स्वामी। ज्येष्ठा नक्षत्र। बिजली। चौदहकी संख्या (एक मन्वन्तरमें १४ इन्द्र होते हैं)। कुटज पेड़। रात्रि। जीव।
इंद्रजाल—पु० जादूगरी, माया।
इंद्रजित,-जीत—पु० मेघनाद।
इंद्रधनुष—पु० सात वर्णोंसे युक्त एक आकाशीय अर्द्ध वृत्त जो प्रायः वर्षाऋतुमें देख पड़ता है।
इंद्रप्रस्थ—पु० पाण्डवों द्वारा बसाया गया एक नगर।
इंद्रफल—पु० इंद्रजव।
इंद्रवंशा—पु० एक वृत्त।
इंद्रवज्रा—पु० एक वृत्त, 'स्यादिन्द्र वज्रा यदि तौ जगौ गः।'
इंद्राणी,-नी—स्त्री० इन्द्रकी स्त्री, शची। इन्द्रायन। बड़ी इलायची। दुर्गा। बामनेत्रकी पुतली।
इंद्रायन—पु० एक लता जिसका फल कड़ुआ तथा नारंगीके बराबर होता है।
इंद्रिय, इंद्री—स्त्री० वह शक्ति या वह अवयव जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है। पाँचकी संख्या।
इंधन—पु० जलानेकी लकड़ी।
इँनारुन—पु० इंद्रायन (विनय० ४१३)।
इकंक—क्रिवि० निश्चय ही 'बाल बरन सम है नहीं रंक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मयंक इकंक।' दास ८६ (५३)

इकंग—वि० एकतरफा। पु० शिवजी।

इकंत—वि० एकान्त। अकेला। नितान्त। पु० निर्जन स्थान।

इक—वि० एक।

इकइस—वि० इकीस।

इकजोर—क्रिवि० एक साथ।

इकट्ठा—वि० एकत्र किया हुआ। जमा।

इकतर—वि० एकत्र।

इकतरा—पु० अँतरिया बुखार (छत्र० ६३)।

इकता,-ताई—स्त्री० ऐक्य।

इकताना—वि० एक सदृश।

इकतार—वि० एक रस। समान। क्रिवि० लगातार।

इकतारा—पु० एक बाजा।

इकतीस—वि० तीस और एक। पु० इकतीसकी संख्या।

इकत्र—क्रिवि० एकत्र।

इकबारगी—क्रिवि० सहसा, एकदमसे।

इकरस—वि० एकरंग, बराबर।

इकलाई—स्त्री० अकेलापन। पाटका महीन डुपट्टा।

इकलौता—पु० अकेला पुत्र।

इकल्ला—वि० अकेला। एकहरा।

इकसठ—वि० साठसे एक अधिक।

इकसर—वि० अकेला (अकसर)।

इकसूत—वि० एक साथ। इकट्ठा।

इकहरा—वि० एक परतका।

इकहाई—क्रिवि० एक साथ, अचानक, तुरन्त।

इकांत—वि० एकान्त। अलग या अकेला, बिलकुल।

इकेला—वि० अकेला।

इकैठ—वि० इकट्ठा।

इकोतर—वि० एकोत्तर, एक अधिक।

इकौनी—वि० स्त्री० एक, बेजोड़ (?) 'छितकी सी छौनी रूप रासि सी इकौनी विधि चायसों रचौनी गोरी कुन्दनसे गातकी।' रवि० ६०

इकौसो—वि० बिलकुल अलग, एकान्त।

इक्का—पु० ताशका एक पत्ता। वह वीर जो अकेले ही युद्ध करे। एक घोड़ा वाली हलकी गाड़ी। वि० अकेला, अद्वितीय।

इक्कावन, इक्यावन—वि० पचास और एक।

इक्कासी, इक्यासी—वि० अस्सी और एक।

इक्कीस—वि० बीस और एक।

इक्षु—पु० ईख, गन्ना।

इक्ष्वाकु—पु० एक विख्यात सूर्यवंशी राजा। कद्दुई लौकी।

इखद—वि० ईषद्, थोड़ा, कम।

इखलास—पु० मित्रता, प्रेम, सम्बन्ध (सुजा० ५७)।

इखु—पु० बाण।

इगारह, इग्यारह—वि० दस और एक।

इच्छना—सक्रि० इच्छा करना।

इच्छा—स्त्री० अभिलाषा। लालसा, तृष्णा। रुचि।

इच्छु—पु० ईख। वि० चाहनेवाला।

इच्छुक—वि० अभिलाषी।

इजलास—पु० न्यायालय। बैठक।

इजाज़त—स्त्री० स्वीकृति, अनुमति।

इजाफा—पु० वृद्धि, तरक्की। (रतन० १३)

इजार—स्त्री० पायजामा।

इजारबन्द—पु० नारा, कमरबन्द।

इजारा—पु० किरायेपर देना, ठेका। अधिकार।

इज्ज़त—स्त्री० प्रतिष्ठा, मर्यादा, आदर।

इठलाना—अक्रि० घमण्ड करना, इतराना। नखरा करना। अनजान बनना या काममें विलम्ब करना।

इठलाहट—स्त्री० ऐंठ, ठसक।

इठाई—स्त्री० रुचि, प्रीति। प्रेम, मित्रता 'भूखे कौ सौ भोजन न भूलत सवाद कयौं नेकहूँ उमेठै गये नेहकी इठाई सी।' रवि० ४९

इड़ा—स्त्री० पृथिवी। गाय। वाणी। दुर्गा। अन्न। बाईं ओरकी एक नाड़ी।

इत—क्रिवि० यहाँ, इस तरफ।

इतकाद—पु० विश्वास (सुजा० १५)।

इतना, इतनो—वि० इस परिमाण या मात्राका। इतनेमें = इसी बीचमें।

इतमाम—पु० प्रबन्ध।

इतमीनान—पु० दिलजमई, विश्वास।

इतर—वि० दूसरा। नीच, साधारण। पु० इत्र, पुष्पसार।

इतराजी—स्त्री० एतराज़, विरोध, नाराज़ी।

इतराना—अक्रि० घमण्ड करना, इठलाना 'बात कहति न्वालिनि इतराति।' सूबे० १३३

इतराहट—स्त्री० घमण्ड (रवि० २२)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतरौहाँ—वि० जिससे इतराना सूचित हो।
इताअत, इताति—स्त्री० आज्ञा मानना, ताबेदारी।
इतेक—वि० इतना।
इतो, इत्तो—वि० इतना, इस मात्राका।
इत्थं—क्रिवि० ऐसा, इस प्रकारसे।
इत्यादि—अ० इसी प्रकार और।
इत्र—पु० इतर, पुष्पसार।
इधर—क्रिवि० इस ओर। इधर उधर = यहाँ वहाँ, आस पास। चारों ओर। इधर उधर करना = टालमटूल करना। उलट पुलट करना।
इनकार—पु० अस्वीकार। नामंजूरी।
इनसान—पु० मनुष्य।
इनाम—पु० पुरस्कार, बख्शीश।
इनायत—स्त्री० कृपा। एहसान।
इनारुन—पु० इन्द्रायणका फल जो कड़ुवा होता है 'अकुत लाइ अब देखि इनारुन, को मूरख जो भूलै। हरीचन्द्र ब्रजको कदलीबन, काटौ तौ फिर फूलै।' हरि०
इनेगिने—वि० कुछ, कई। गिने गिनाये।
इफरात—स्त्री० बहुतायत, अधिकता।
इबारत—स्त्री० लेख, लिखी हुई बात।
इभ—पु० हाथी।
इमली—स्त्री० एक बड़ा पेड़ या उसका फल।
इमाम—पु० अगुआ, पुरोहित।
इमारत—स्त्री० पक्का मकान।
इमि—क्रिवि० इस प्रकार।
इयत्ता—स्त्री० सीमा।
इरषा, इरिषा—स्त्री० डाह, जलन 'पर सम्पदा सकहु नहिं देखी। तुम्हरे इरिषा कपट विशेखी।' रामा ७८
इरषित—वि० जिससे डाह की गयी हो।
इरसी—स्त्री० चक्केकी धुरी।
इरा—स्त्री० कश्यपकी स्त्री। पृथ्वी, वाणी, जल या अन्न।
इरादा—पु० विचार, इच्छा, संकल्प।
इर्दगिर्द—क्रिवि० चारों ओर। आसपास।
इर्शाद—पु० हुक्म, आज्ञा।
इर्षना—स्त्री० एषणा, बलवती इच्छा।
इलज़ाम—पु० दोष। अभियोग।
इला—स्त्री० पृथ्वी, गौ, सरस्वती। पार्वती। बुद्धिमती स्त्री। इक्ष्वाकुकी पुत्री। वैवस्वत मनुकी कन्या।
इलाक़ा—पु० जमींदारी। राज्य। सम्बन्ध।
इलाज—पु० दवा, तदबीर। चिकित्सा।
इलाम—पु० ऐलान, सूचना, हुक्म। 'ठान्यो न सलाम मान्यो साहिको इलाम'—भू० ७७
इलायची—स्त्री० एक वृक्ष या उसका फल।
इलावर्त्त, इलावृत्त—पु० जम्बूद्वीपके एक खण्डका नाम।
इलाही—पु० ईश्वर, परमात्मा। वि० ईश्वरीय।
इल्म—पु० विद्या। हुनर, जानकारी।
इल्लत—स्त्री० रोग। दोष। बाधा।
इव—अ० समान, नाईं। उपमा-बोधक शब्द।
इशारा—पु० संकेत। सूक्ष्म आधार। संक्षिप्त कथन। गुप्त प्रेरणा।
इश्क़—पु० मुहब्बत, आसक्ति। लगन।
इश्तहार—पु० विज्ञापन, ऐलान। जाहिरात।
इषणा—स्त्री० कामना, प्रबल इच्छा।
इषीका, इशिका, इशीका—स्त्री० बाण।
इषु—पु० बाण।
इषुधी—पु० तूणीर, तरकस।
इषुमान्—वि० तीर चलानेवाला, तीरंदाज़।
इष्ट—वि० अभिप्रेत, वाञ्छित। पूजित। पु० अभिलषित वस्तु। शुभ कर्म। इष्टदेव। अधिकार। अनुग्रह ('उसे देवीजीका इष्ट है')। मित्र। ईंट।
इष्टता—स्त्री० मित्रता।
इष्टदेव—पु० पूज्य देवता। कुल-देवता।
इष्टि—स्त्री० यज्ञ। इच्छा।
इसपंज—पु० समुद्रमें एक तरहके छोटे कीड़ों द्वारा बनाया हुआ रूईके समान कोमल सजीव पिण्ड जिसमें बहुतसे छिद्र होते हैं।
इसरार—पु० हठ, अनुरोध।
इसलाम—पु० मुसलमानी धर्म।
इसाई—वि० ईसाको माननेवाला।
इस्तमरारी—वि० नित्य, स्थायी।
इस्तरी, इस्त्री—स्त्री० स्त्री 'घरमें साकट इस्तरी आप कहावै दास।' साखी १४१
इस्तीफा—पु० त्यागपत्र।
इहसान—पु० एहसान, कृतज्ञता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ई

ईंगुर—पु० लाल रंगका एक खनिज पदार्थ जिसकी बिन्दी आर्य ललनाएँ ललाटपर लगाती हैं।

ईंचना—सक्रि० खींचना, ऐंचना।

ईंट—स्त्री०, ईंटा—पु० पकाया हुआ मिट्टीका चौखूँटा लम्बा टुकड़ा जिसका प्रयोग दीवार आदि बनानेमें होता है। धातुका चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा।

ईंधन—पु० जलानेकी लकड़ी, जलावन (राम० ३९)।

ई—स्त्री० लक्ष्मी। सर्व० यह। अ० ही 'नितप्रति पूनो ई रहै आनन ओप उजास।' वि० ३६

ईक्षण—पु० देखना, दर्शन। आँख। जाँच।

ईख—स्त्री० इक्षु, ऊख, गन्ना।

ईखना—सक्रि० देखना। स्त्री० इच्छा "त्रिविध बयारि बार बार इहै ईखनाकी हालरैं चहूँघा लता लालसा [विशाल हैं।' दीन १५८

ईक्षना—सक्रि० इच्छा करना।

ईछा—स्त्री० इच्छा।

ईजति—स्त्री० इज्जत, मर्यादा (भू० १३२)।

ईजाद—पु० आविष्कार।

ईठ—पु० स्त्री० इष्ट, प्रियजन, सखा या सखी। वि० इष्ट, प्यारा 'भासन सो मन दूध सो जोबन है दधिते अधिकै उर ईठी।' देव (ब्रज० २८७)

ईठना—अक्रि० इच्छा करना 'लोने मुह डीठि न लगे, यों कहि दीनों ईठि। दूनी ह्वै लागन लगी दिये डिठौना डीठि।' वि० १७

ईठि—स्त्री० प्रीति, मित्रता 'बोलिये न झूठ, ईठि मूढ़ पै न कीजिए।' के० ३८५। मल, चाह।

ईठी—स्त्री० भाला। वि० स्त्री० प्यारी। देखो 'ईठ'।

ईड़ा—स्त्री० स्तुति।

ईढ़—स्त्री० हठ 'बोलिये न झूठ ईढ़ मूढ़पै न कीजिये।' के० ३८५ (पाठान्तर-ईठि)

ईतर—वि० इतरानेवाला, नीच।

ईति—स्त्री० कृषि बिगाड़नेवाले उपद्रव, विघ्न, इत्यादि। विघ्न, बाधा, दुःख।

ईप्सा—स्त्री० अभिलाषा, इच्छा।

ईबीसीबी—स्त्री० सिसकारीका शब्द।

ईमान—पु० विश्वास। सत्य। सद्वृत्ति।

ईरखा—स्त्री० ईर्षा। डाह, जलन।

ईरमद—पु० 'इरम्मद'। वज्राग्नि, बिजली।

ईर्षणा—स्त्री० ईर्षा, डाह।

ईर्षा, ईर्ष्या—स्त्री० डाह, जलन।

ईश—पु० स्वामी। ईश्वर। शिव। राजा। ग्यारहकी संख्या।

ईशता—स्त्री० स्वामित्व। [†कोण।

ईशान—पु० स्वामी। शिव। ग्यारहकी संख्या। पूर्वोत्तर†

ईशिता—स्त्री० एक सिद्धि जिसकी साधनासे सबपर प्रभुत्व किया जा सकता है।

ईश्वर—पु० स्वामी, भगवान्। महादेव।

ईषत्, ईषद—वि० थोड़ा, कम, कुछ (सू० १२७)।

ईषना—स्त्री० एषणा, बलवती इच्छा।

ईषु—पु० इषु; बाण 'बली विक्रमी धीर सोभा प्रकासी। नस्यौ हर्ष द्वौ ईषु वर्षैं विनासी'। के० ३१७

ईस—पु० 'ईश', स्वामी। महादेव।

ईसर—पु० महादेव 'पुनि आगेका देखैं राजा। ईसर केर घंट रन बाजा।' प० १२६

ईसवी—वि० ईसाका, ईसा सम्बंधी।

ईसान—पु० ईशान।

ईहा—स्त्री० इच्छा, चेष्टा। उद्योग। लोभ।

उ

उँगली—स्त्री० अंगुली। हथेलीसे जुड़े हुए फलियोंके सदृश पाँच अवयव।

उँचन—स्त्री० बड़वान, अदवान।

उँचाई—स्त्री० ऊँचापन। बड़प्पन।

उँचान—पु० ऊँचाई।

उँचाना—सक्रि० ऊँचा करना, ऊपर उठाना 'हौं बुधि बल छल करि पचि हारी लख्यो न सीस उँचाइ।'

उँचाव, उँचास—पु० ऊँचाई, ऊँचापन। [सूरा० ३२

उंचास—वि० एक कम पचास। [† उजेली।

उँजरिया—स्त्री० चाँदनी। रोशनी। वि० स्त्री० †

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उँजियार—पु० प्रकाश। वि० प्रकाशमान्, उज्ज्वल। 'लसि लौदसि जो दई सँवारा। ताहू चाहि रूप उँजियारा।' प० ७

उँजियारी, उँज्यारी—स्त्री० उजारी, चाँदनी, प्रकाश। 'उँजियारी मुख इन्दुकी परी उरोजनि आन।' ललित० ५०, (उँज्यारी, रस० ३७)। वि० प्रकाशयुक्त।

उँजेरा, उँजेला—पु० उजाला, प्रकाश।

उँदुर—पु० इंदुर, चूहा।

उ—पु० ब्रह्मा, मनुष्य। अ० भी 'अउरउ एक गुपुत मत सबहिं कहहुँ कर जोरि।' रामा० ५६१

उअना—अक्रि० उगना, उदय होना 'उआ सूक जस नखतन माँहा।' प० ९ [करना।

उआना—सक्रि० उगाना। मारनेको हथियार सन्नद्ध

उऋण—वि० ऋणमुक्त। देखो 'उरिन'।

उकचन—पु० मुचकुन्दका फूल।

उकचना—अक्रि० उखड़ना, उचड़ना। हट जाना, उठ जाना'...सिंह सों डराय याहू ठौर ते उकचि हौं।' भू० १२६ [† बारी।' प० ९३

उकठना—अक्रि० सूखकर ऐंठ जाना 'जिमि न नवै पुनि उकठि कुकाठू।' रामा० २०८, 'दीठि परी उकठी सब†

उकठा—वि० सूखकर ऐंठा हुआ। सूखा 'उकठे विटप लागे फूलन फरन।' विन० ५८३

उकत—स्त्री० उक्ति, कथन।

उकतान—अक्रि० ऊब जाना। जल्दी मचाना, अधीर

उकति—स्त्री० उक्ति, कथन। [होना।

उकलना—अक्रि० खुलजाना, उधड़ना, उचड़ना।

उकलाना—अक्रि० कै करना। अकुलाना 'बँधे प्रीतिगुन सों उठै पल पल में उकलाइ।' रतन० ५९

उकसना—अक्रि० ऊपरको उठना 'पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं।' रामा० ७८। उभड़ना, निकलना 'ला फनिकी फन-फाँसिनुपै फँदि जाय फँसै, उकसै न कहूँ छिन।' भाव० ६५

उकसनि—स्त्री० उभड़न। [❀ भू० १५१

उकसाना—सक्रि० ऊपरको उठाना। उभाड़ना, हटा देना। अक्रि० हट जाना 'हाथिनके हौदा उकसाने...' ❀

उकसौंहा—वि० उठता हुआ, उभड़ता हुआ 'आज काबलें देखियत उर उकसौंही भाँति।' वि० ७२

उकाखना—सक्रि० उखाड़ना, अलग करना।

उकासना—सक्रि० ऊपरको खींचना, उभाड़ना 'वृषभ शृंगसों धरनि उकासत बल मोहन तन हेरैं।' सूबे० २४३, (अ० १३६)

उकासी—स्त्री० खुल जाना (उदे० उलसना) उसासी, छुट्टी। उत्सव।

उकुति—स्त्री० देखो 'उकति'।

उकुति जुगुति—स्त्री० सलाह और उपाय।

उकुसना—सक्रि० उधेड़ना, उचाड़ना।

उकेलना—सक्रि० खोलना, उधेड़ना, उचाड़ना।

उक्ति—स्त्री० कथन, विलक्षण वचन।

उखड़ना—अक्रि० स्खलित हो जाना, च्युत हो जाना, स्थानसे हट जाना। चिन्ह पड़ जाना 'कोमल हृदय उखड़ गेलि हार'—विद्या ११०

उखमज—पु० ऊष्मज जीव।

उखर—पु० ऊख बोनेके बाद हलकी पूजा।

उखरना—अक्रि० देखो 'उखड़ना'।

उखली—स्त्री० पत्थर या लकड़ीका पात्र जिसमें अनाज रखकर मूसल इत्यादिसे उसकी भूसी निकालते हैं।

उखा—स्त्री० उषा, प्रभात। तड़का।

उखाड़ना, उखारना—सक्रि० 'उपारना', गड़ी या जमी हुई वस्तुको स्थानसे अलग करना। भड़काना, हटाना। नष्ट करना।

उखारी—स्त्री० ऊखका खेत।

उखेरना—सक्रि० उखाड़ना, अलग करना। (सूबु० १८२)

उखेलना—सक्रि० लिखना, (चित्र) खींचना।

उगटना—अक्रि० फिर फिर कहना, ताना मारना।

उगना—अक्रि० उदय होना। अंकुरित होना, उत्पन्न होना।

उगलना—सक्रि० वमन करना, थूकना, बाहर निकालना। (सूबे० ६२)

उगवना—सक्रि० उदय करना, उत्पन्न करना।

उगसाना—सक्रि० उकसाना। उभाड़ना।

उगसारना—सक्रि० कहना, प्रकट करना।

उगाना—सक्रि० जमाना, उत्पन्न करना। उदय करना। तानना।

उगार, उगाल—पु० कै, थूक। निचोड़ा हुआ पानी।

उगाहना—सक्रि० वसूल करना 'हाट बाट सब हमहिं उगाहत अपनो दान जगात।' सूबे० १३३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उगिलना—सक्रि० थूकना, खाई हुई वस्तुको मुखसे बाहर निकालना 'मगहुँ क्रोधवस उगिलत नाहीं।' रामा० ८८। बात प्रकट कर देना।

उगिलवाना, उगिलाना—सक्रि० मुँहसे बाहर निकलवाना। दोष स्वीकार कराना। पंजेसे छुड़ाना 'गिल्यो बुंदेलखंड उगिलायो।' छत्र० १५

उग्र—वि० प्रचंड, प्रबल, घोर। पु० महादेव। विष्णु। सूर्य। एक संकर जाति।

उग्रा—स्त्री० दुर्गा। कर्कशा स्त्री। अजवाइन। बच। धनिया।

उघटना—अक्रि० ताल देना 'उघटहिं छन्द प्रबन्ध गीत पद रागतान बन्धान।' गीता० २७१ (सूसु० २३५)। बीती बातको उठाना। भला-बुरा कहना।

उघरना—अक्रि० खुलना 'रवि बहु चढ़े रैनि सब निघटी उघरे सकल किवार।' सूबे० ७२। सच्ची बातका प्रकाशित होना। 'उघरि', 'उघर कर' = खुल्लम खुल्ला (सू० ९), (ललित ८०, ९८)

उघरारा—पु० खुली जगह। वि० खुला हुआ।

उघाड़ना, उघारना—सक्रि० खोलना 'सखी वचन सुनि सकुचि सिय दीन्ह्यो दृगनि उघारि।' रघु०। प्रकाशित करना 'नीके जाति उघारि आपनी युवतिन भले हँसावो।' सूबे० १३६

उघारा—वि० अनावृत, खुला हुआ (उदे० 'अटपटाना' या भू० १५४), (सू० ५८)

उघेलना—सक्रि० उघारना, खोलना 'को उजियार करै जग झाँपा चन्द उघेलि।' प० १९८

उचकना—अक्रि० एड़ी उठाकर खड़ा होना। ऊँची वस्तु लेनेके लिए एड़ी उठाकर ऊपरको उछलना, झपटना 'सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरिराज तुमको उबारयो।' सूबे० १२४, (रवि० ४०, ८८)। ऊपर उठना, स्थानसे हट जाना। सक्रि० उछल कर लेना।

उचका—क्रिवि० सहसा, एकाएक 'बाकीखाँ उचका पर्यो, उदभट कटक सकेल।' छत्र० २०

उचकाना—सक्रि० ऊपर उठाना 'केतिक लंक उपारि बाम कर लै आवै उचकाय।' सूरा० ३०

उचटना—अक्रि० भड़कना, अलग होना। 'तेरो जस काज आज सरजा निहारि कविमन मोज विक्रम कथाते उचटत है।' भू०७५। उखड़ना, छूटना या ऊपर उठना 'उचटत फिर अंगार गगन लौं, सुर निरखि ब्रज जन बेहाल।' सू० ८१,

उचटाना—सक्रि० उचाड़ना, भड़काना, अलग करना, विरक्त करना। 'जब ब्रजकी बातैं यहि कहियत तबहिं तबहिं उचटावत।' सू० २१३

उचड़ना—अक्रि० हट जाना, अलग होना।

उचना—अक्रि० ऊँचा होना, ऊपर उठना। सक्रि० ऊँचा करना 'भौंह उचै आँचर उलटि मोरि मोरि मुँह।' [† मोरि।' वि० १०१

उचनि—स्त्री० उठान, उभाड़।

उचरना—सक्रि० उच्चारण करना, बोलना 'चढ़ि गिरि शिखर शब्द इक उचरयो...' सूरा० ३०। अक्रि० आवाज़ होना।

उचाट—पु० विरक्ति, मनका हट जाना, उदासी। 'भये उचाटबस मन थिर नाहीं। छन बन रुचि छन सदन सुहाहीं।' रामा० ३४३

उचाटन—पु० किसीके चित्तको कहींसे हटाना। चित्तका न लगना, विरक्ति।

उचाटना—सक्रि० उचाटन करना, विरक्त करना 'लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसर पाइ।' रामा० ३५०

उचाटी—स्त्री० उदासीनता, विरक्ति।

उचाना—सक्रि० ऊपर उठाना, ऊँचा करना, उठाना। 'चौंकि उठ्यो चारि मुख चितवत चारों ओर चन्द्रचूड़ चेत्यो चित चखन उचाय कै।' रघु० १२१, 'बाँह उचाइ काजरी धौरी गैयन टेरि बुलावत।' सूबे० ११६

उचारना—सक्रि० उच्चारण करना, बोलना 'आँसु पोंछि मृदु वचन उचारे।' रामा० २७८। उखाड़ना 'बिरिछ उचारि डारि मुख मेलहिं।' प० १९

उचैंहा, उचौंहा—वि० उभड़ा हुआ।

उच्च—वि० ऊँचा, महान्, श्रेष्ठ।

उच्चरना, उच्चारना—सक्रि० उच्चारण करना 'राम नाम ही सदा उचरो।' सूबे० ३१

उच्चाटन—पु० देखो 'उचाटन'।

उच्छरना—अक्रि० नीचे ऊपर उठना, उछलना।

उच्छलना—अक्रि० ऊपर उठना और गिरना।

उच्छव—पु० उत्सव, धूमधाम, पर्व।

उच्छाव—पु० उत्साह। धूमधाम।

उच्छास—पु० उच्छ्वास, उसास, साँस।

उच्छाह—पु० उत्साह, हर्ष।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उच्छिन्न—वि० खंडित, ध्वस्त, निर्मूल।

उच्छिष्ट—वि० जुठारा हुआ, जूठा, खानेसे बचा हुआ।

उच्छृंखल—वि० निरंकुश, उद्दंड, मनमानी करनेवाला।

उच्छेद—पु० विध्वंस, नाश।

उछंग—पु० गोद 'लेइ उछंग कबहुँक हलरावइ।' रामा० १११, 'पीड़ सहे बिनु पदमिनी पूत न लेत उछंग।' साखी ४२

उछकना—अक्रि० चौंक पड़ना। होशमें आना।

उछरना—अक्रि० उछलना, कूदना 'जोन्हको हँसत जोति हीरामनि मन्दिरन, कन्दरनमें छवि कुहूकी उछरति है।' भू० २२, 'मृग उछरत आकाशको भूमि खनत वाराह।' रहीम। कै करना। उपटना, उभड़ना। उछराना।

उछलना—अक्रि० कूदना, नीचे ऊपर उठना, खुश होना। उपटना, चिह्न पड़ना। उतराना।

उछॉटना—सक्रि० छाँटना, चुनना।

उछार, उछाल—स्त्री० एकाएक ऊपर उठना। उँचाई। छींटाँ, ऊपर उठता हुआ बिन्दु या कण। कै।

उछारना, उछालना—सक्रि० ऊपरकी ओर फेंकना, 'मारग मानुष सोन उछारा।' प० ७। प्रकट करना।

उछाव—पु० उमंग 'सूर श्याम पद कमल परसिहौं मन अति भयो उछाव।' सूबे० २५५

उछाह—पु० उत्साह, आनन्द 'जा दिन जनम लीन्हों भूपर भुसिल भूप ताही दिन जीत्यो अरि उरके उछाहको।' भू० ५, 'भुवन चारिदस भयउ उछाहू। जनकसुता-रघुबीर बिबाहू।' रामा० १५९। उत्सव। उत्कण्ठा।

उछाही—वि० उत्साही। हर्ष मनानेवाला। 'तब सुकाल महिपाल राज्यमें ह्वैहै प्रजा उछाही।' रघु०

उछिन्न—वि० खण्डित, निर्मूल।

उछिष्ट—वि० खानेसे बचा हुआ, जूठा। दूसरेका बर्ता हुआ पु० भोजनावशिष्ट।

उछीनना—सक्रि० उच्छिन्न करना, नष्ट करना।

उछोर—पु० अवकाश, छिद्र, रिक्त स्थान।

उछेद—पु० उच्छेद। खण्डन, नाश (सूसु० १०)।

उजट—पु० पर्णकुटी, उटज।

उजड्ड—वि० गँवार, उच्छृंखल।

उजड़ना, उजरना—अक्रि० नष्ट होना, वीरान होना, बिखरना 'महि उजरी सायर सब सूखा।' प० २५१

उजर—वि० ऊजड़ 'सूरदास प्रभु सुखके दाता गोकुल चले उजर कै।' सूबे० २६८

उजरत—स्त्री० पारिश्रमिक, मजूरी, भाड़ा।

उजरा—वि० उजला, सफेद, स्वच्छ, दिव्य।

उजराई—स्त्री० सफेदी, उज्ज्वलता, कान्ति, स्वच्छता।

उजराना—सक्रि० उज्ज्वल कराना। साफ कराना।

उजलत—स्त्री० उतावली। वि० उज्ज्वलित, प्रकाशमय 'हँसन अबीर हीर दुति सुन्दर, उजलत परम उजोरी।' श्रीगुणमञ्जरीदास

उजागर—वि० दीप्तिमय, प्रकाशित, प्रसिद्ध। 'राम जनमि जग कीन्ह उजागर।' रामा० २९४, 'सूर धन्य यदुवंश उजागर, धन्य धन्य ध्वनि घुमरि रह्यो।' सू० १९४

उजाड़—वि० उजड़ा हुआ, वीरान। पु० उजड़ा हुआ या शून्य स्थान। जंगल।

उजाड़ना, उजारना—सक्रि० नष्ट करना, तितर बितर करना 'नारद कर मैं कहा बिगारा। भवन मोर जिन्ह बसत उजारा।' रामा० ५८

उजार—पु० शून्य स्थान। वि० उजड़ा हुआ, उजाड़ 'जौ पै नाहीं अहथिर दसा। जग उजार का कीजिए बसा।' प० ५५

उजारा—पु० प्रकाश 'कंचनके मंदिरन दीठि ठहरात नाहीं, सदा दीपमाल लाल मानिक उजारे सों।' रसखानि। वि० प्रकाशमान् 'जौं न होत अस पुरख उजारा। सूझि न परत पंथ अँधियारा।' प० ५, 'आरसीसे अम्बर मैं आभासी उजारी ठाढ़ी प्यारी राधिकाको प्रतिबिम्ब सो लगत चन्द।' रवि० ४१

उजारी—स्त्री० चाँदनी, प्रकाश। 'राख्यो अपने वृन्दावनमें जेहि ठौं रूप उजारी।' नागरी०

उजास—पु० चमक, उजाला 'कछु उजास भो प्रात समाना।' राम रसायन, (सुजा० २६), 'कौतुक देखा देंह बिनु रवि ससि बिना उजास।' साखी १२०

उजासना—अक्रि० प्रकाशित होना 'सूरके तेज तें सूरज दीसत चन्द्रके तेज तें चन्द्र उजासै।' सुन्द० १५९

उजियर—वि० उज्ज्वल, सफेद।

उजियरिया—स्त्री० चाँदनी, प्रकाश।

उजियाना—सक्रि० उत्पन्न करना, प्रकट करना 'पलटि चली मुसुकाय, दुति रहीम उजियाय अति। बाती सी उसकाय, मानो दीनो दीपकी।' रहीम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उजियार, उजियारा—पु० प्रकाश, उजेला । वि० उज्ज्वल, प्रकाशयुक्त । 'हीरा लेइ सो विद्रुम धारा। विहँसत जगत होइ उजियारा।' प० ४७

उजियारना—सक्रि० जलाना, प्रकाशित करना ।

उजियारी—स्त्री० चाँदनी 'रही छिटक पूनो उजियारी।' प्रकाश । कुल-कान्ति-वर्द्धक भाग्यशीला स्त्री 'सो पद्मावति तेहिकर बारी। जो सब दीपमाहिं उजियारी।' प० ४२। वि० प्रकाशयुक्त ।

उजीर—पु० वज़ीर, मंत्री 'सुनि सु उजीरन यों कह्यो सरजा सिव महराज ?' भू० ३६

उजुर—पु० उज्र, आपत्ति, विरोध 'चाकर हैं उजुर कियो न जाय नेक पै कछू दिन उबरते तो घने काज [करते।' भू० ७०

उजेर—पु० प्रकाश ।

उजेरा—पु० प्रकाश । वि० प्रकाशयुक्त ।

उज्जार, उज्जल—वि० उज्ज्वल, सफ़ेद ।

उज्यारा—पु० देखो 'उजियारा' ।

उज्यारी—स्त्री० देखो 'उजियारी' '...मोहिं वाकी स्यामताई लागति उज्यारी है।' आलम; 'रवि आगे खद्योत [उज्यारी।' सू० १००

उज्यास—पु० 'उजास' ।

उज्वालना—सक्रि० जलाना 'उज्वालि लाखन दीपिका निज नयन सब कहँ देखि।' रघु० १३७

उझकना—अक्रि० उछलना, ऊपर उठना (भ्र० १२७)। ताकनेके लिए सिर उठाना । चौंकना ।

उझपना—अक्रि० खुलना 'बरुनीमें फिरैं, न झपैं उझपैं पलमें न समाइबो जानती हैं। पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।' हरि० (ब्रज०)

उझरना—सक्रि० ऊपर उठाना ।

उझलना, उझिलना—अक्रि० उमड़ना 'मनु सावनकी सरिता उझली।' सुजा० ४६। सक्रि० ऊपरसे गिराना,† [† ढालना ।

उझाँकना—सक्रि० सिर उठाकर देखना, उझकना ।

उटकना—सक्रि० अंदाज़ लगाना ।

उटज—पु० कुटिया, झोपड़ी ।

उठना—अक्रि० खड़ा होना, हटना, जागना, उदय होना, कूदना, उभड़ना, जारी होना। खर्च हो जाना। दूकान इत्यादिका बन्द होना। दीवार आदिका तैयार होना। उठ जाना = मर जाना ।

उठान—पु० उठनेकी क्रिया, आरंभ, वृद्धिक्रम ।

उठाना—सक्रि० लेटे हुएको बैठाना, खड़ा करना। दूर करना। धारण करना, ऊपर लेना। निकालना। तैयार करना। भोगना। जगाना। स्वीकार करना।

उड़ना—अक्रि० पक्षियों इत्यादिका हवामें या आकाशमें एक स्थानसे दूसरेको जाना। फैलना, फहराना। तीव्र गतिसे चलना। पृथक् होना, दूर जा गिरना, लुप्त होना, खर्च होना। फीका पड़ना। उड़ खाना = अप्रिय लगना।

उड़पति, उड़राज—पु० चन्द्रमा ।

उड़सना—अक्रि० विनसना, भंग होना 'उड़सा नाच, नचनिया मारा।' प०२६२

उड़ाँक, उडाँकू—वि० उड़नेवाला। जो उड़ सकता हो।

उड़ाका—पु० उड़नेवाला, वायुयान इ० पर उड़नेवाला।

उड़ान—पु० उड़नेका काम। छलांग। कलाई।

उड़ाना—सक्रि० उड़नेमें प्रवृत्त करना। हवामें इधर उधर छितराना। पृथक् करना, ग़ायब करना, दूर करना। ख़र्च करना। भुलावा देना। वेगसे दौड़ाना। अक्रि० उड़ना, छितरा जाना 'ये मधुकर रुचि पंकज लोभी, ताहीते न उड़ाने। सू० १२१; 'जीव जन्तु जे गगन उड़ाहीं।' रामा० ४१५, (प० ७१)

उड़ायक—वि० उड़ानेवाला 'उड़ी जाउ कितहूं तऊ गुड़ी उड़ायक हाथ।' वि० ३० (बंग०)

उड़ास—स्त्री० रहनेकी जगह, महल ।

उड़ासना—सक्रि० दूर करना, उजाड़ना ।

उड़ियाना—पु० छन्द विशेष ।

उड़ी—स्त्री० उलाँट, कलाबाजी ।

उडु—पु० नक्षत्र, पक्षी ।—पति,-राज = चंद्रमा ।

उडुप—पु० चन्द्रमा, नृत्यका एक भेद, नौका ।

उडेरना, उड़ेलना—सक्रि० ढालना, उझिलना, गिराना ।

उड़ैनी—स्त्री० जुगनू 'कौंधत रहि जस भादौं रैनी। सान रैन जनु चलै उड़ैनी।' प० २३२

उड़ौहा—वि० उड़नेवाला ।

उढ़कना—अक्रि० अड़ना, उलझना, सहारा लेना ।

उढ़काना—सक्रि० सहारे खड़ा करना, भिड़ाना ।

उढ़ना—सक्रि० बाहर निकालना (?) 'अँचवत पै तातो जब लागो रोवत जीभ उढ़ै।' सूसु० ७५

उढरना—अक्रि० विवाही स्त्रीका परपुरुषके साथ भागना 'मुए चामसे चाम कटावै भुइँ सकरीमें छावै। घाघ कहै ये तीनों भकुआ उढरि जाय औ रोवै।' घाघ (ककौ० ५००)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उढ़ावनी, उढ़ौनी—स्त्री० ओढ़नी, चद्दर।
उतंक, उतंग—वि० उत्तुंग, ऊँचा। 'ताको तदगुन कहत हैं, भूषण बुद्धि उतंग।' भू० ११३
उतंत—त्रि० वयःप्राप्त, जवान।
उत—क्रिवि० उधर, वहाँ।
उतन—क्रिवि० उस ओर।
उतपात—पु० उपद्रव, अशान्ति, आफ़त।
उतपानना—सक्रि० उत्पन्न करना।
उतमंग—पु० उत्तमांग, सिर। [†दक्षिणके सामनेकी दिशा।
उतर—पु० उत्तर, जवाब, बदला। एक काव्यालंकार। †
उतरना—अक्रि० ऊपरसे नीचे आना। ढलना या समाप्त होनेको आना। फीका पड़ना, कम हो जाना। नीचे हो जाना, गिरना। ठहरना या डेरा डालना 'देखि देखि तरुबर अनुरागे। जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे।' रामा० ३३३। पार जाना 'जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भव सिन्धु अपारा।' रामा० २४७
उतराई—स्त्री० ऊपरसे नीचे आनेका काम। पार उतरनेका महसूल 'पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहउँ।' रामा० २४७
उतराना—अक्रि० पानीपर तैरना। उफान खाना। देख पड़ना, प्रकट होना।
उतरारी—वि० स्त्री० उत्तर दिशाकी (हवा)।
उतरावना—सक्रि० किसीके जरिये या किसीकी सहायतासे नीचे लाना।
उतराहा—क्रिवि० उत्तरकी ओर। वि० उत्तरका 'उठी वायु आंधी उतराही।' प० १९०
उतरिन—वि० उऋण, ऋणमुक्त।
उतलाना—अक्रि० उतावली करना।
उतवंग—पु० उत्तमांग, मस्तक।
उतसहकंठा—स्त्री० उत्कण्ठा। उत्कट इच्छा। लालसा।
उताइल, उतायल—वि० शीघ्रतायुक्त (रामा० ३११, दे० खेवा)
उताइली, उतायली—स्त्री० शीघ्रता।
उतान—वि० चित या सीधा।
उतार—पु० उतरनेकी क्रिया। ढाल। क्रमशः कम होना, घटाव। उतारन (निकृष्ट व्यक्ति)। न्योछावर।
उतारना—सक्रि० ऊँची जगहसे नीची जगहमें लाना। दूर करना, 'अवनि उतारन भारको हरि लीन्हो अवतार'। रघु०। काटना, तोड़ना 'आये इतै हम बन्धु समेत उतारैं प्रसून जो होइ न बारन।' रघु० ९५। पहिनी हुई वस्तुको अलग करना 'पिय हियकी सिय जाननि हारी। मनि मुँदरी मन मुदित उतारी।' रामा० २४८; 'उतारति है कंठनि ते हार।' सूबे ८०। न्योछावर करना। उत्पन्न करना। सांचे आदिपर चढ़ाकर तैयार करना। सक्रि० पार ले जाना 'वेगि आनु जल पाय पखारू। होत विलम्ब उतारहि पारू।' रामा० २४७, (भू० १५५)। राई नमक इ० चारो ओर घुमाकर आगमें डालना 'ताहि प्रेतबाधा वारन हित राई लोन उतारयो।' रघु० ३०
उतारा—पु० नदी इ० पार करने या डेरा डालनेका काम। उतरनेका स्थान। पु० पीड़ित व्यक्तिके शरीरके चारो ओर खाने पीने आदिकी सामग्री घुमा कर चौगड्डे इत्यादिपर रखना। उतारेकी वस्तु।
उतारू—वि० तैयार, उद्यत।
उताल—क्रिवि० शीघ्र 'बरनत दसरथ सुजस नृपाला। निज निज देशन चले उताला।' रघु० २०५, (दास १२)। स्त्री० शीघ्रता।
उताली—स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती। क्रिवि० जल्दीसे।
उतावल—क्रिवि० शीघ्रतासे 'कोउ गावत कोउ बेनु बजावत कोउ उतावल धावत।' सू०
उतावला—वि० जल्दबाज़, चंचल।
उतावली—स्त्री० शीघ्रता, जल्दबाज़ी, व्यग्रता। वि०स्त्री० जो शीघ्रतामें हो, जल्दबाज़।
उताहल, उताहिल—क्रिवि० शीघ्रतासे।
उतै—क्रिवि० वहाँ, उस ओर।
उतैला—क्रिवि० उतावला।
उत्कंठा—स्त्री० लालसा। एक सञ्चारी भाव।
उत्का—स्त्री० उत्कण्ठिता।
उत्कृष्ट—वि० श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।
उत्कोच—पु० घूँस।
उत्तंग, उत्तुंग—वि० ऊँचा (भू० ६)।
उत्तंस—पु० शवतंस, भूषण, मुकुट, श्रेष्ठ।
उत्त—पु० आश्चर्य, सन्देह। क्रिवि० वहाँ, उधर।
उत्तमता, उत्तमताई—स्त्री० भलाई, बड़प्पन।
उत्तर—पु० जवाब। बदला। दक्षिणके प्रतिकूल दिशा। वि० बादका। बढ़कर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तरीय—पु० दुपट्टा, उपरना।
उत्थवना—सक्रि० आरंभ करना।
उत्थानि—स्त्री० आरंभ 'कवित उभय उत्थानिके तेई अंकुर जानि।' दीन० ३
उत्पत्ति—स्त्री० जन्म, उद्भव, आरंभ।
उत्पात—पु० उपद्रव, दंगा, हलचल।
उत्सर्ग—पु० त्याग, दान।
उत्सव—पु० आनन्द, आनन्दका समय, धूमधाम, पर्व।
उत्साह—पु० उमंग, लहर, साहस।
उत्साहिल, उत्साही—वि० उत्साहपूर्ण 'जो उत्साहिल चित्तमें देत बढ़ाइ उछाह।' दास २४
उत्सुक—वि० उत्कंठित, लालसायुक्त।
उत्सेध—पु० उन्नति। ऊँचाई। वि० श्रेष्ठ, ऊँचा।
उथपना—सक्रि० उठाना, उखाड़ना।
उथलना—अक्रि० देखो 'उलथना'।
उथल पुथल—स्त्री० उलट पलट, हलचल।
उदंड—वि० उद्दण्ड, निडर, उद्धत।
उदंत—पु० वृत्तान्त 'तब उदंत छाला लिखि दीन्हा।' प० १०९। अदंत, जिसके दांत न जमे हों।
उदउ—पु० देखो 'उदय'।
उदक—पु० पानी।
उदकअद्रि—पु० हिमालय।
उदकना—अक्रि० कूदना, छटक कर अलग हो जाना।
उदगरना—अक्रि०निकलना, प्रकट होना। उभड़ना।
उदगार—पु० उद्गार, उबाल, वमन, आधिक्य, मनमें रखी हुई बातको एकाएक प्रकट करना।
उदगारना—सक्रि० बाहर निकालना, भड़काना। डकार लेना 'ज्यूं कछु भच्छ किये उदगारत, कैसहि राखि सकै न अघानौ।' सुन्द० १४५
उदगारी—वि० बाहर निकालनेवाला, वमन करनेवाला।
उदग्ग, उदग्र—वि० ऊँचा, उग्र, उद्धत।
उदघटना—अक्रि० प्रगट होना।
उदघाटना—सक्रि० प्रगट करना, खोलना।
उदथ—पु० उदय और अस्त होनेवाला, सूर्य 'निन अवलम्ब कलिकानि आसमानमें ह्वै होत बिसराम जहाँ इन्दु औ [उदथके।' भू० ११४
उदपान—पु० कूल, कुएँके पासका गड्ढा। कमण्डलु 'कर उदपान काँध बघछाला।' प० ५७
उदबर्त्तन—पु० किसी वस्तुको शरीरमें लगाना, व्यवहार। उबटन 'सखी हेत उदबर्त्तन लावैं, आनँद रसनों सबै जन्हावैं।' ध्रुवदास
उदबस—वि० सूना, उजाड़। स्थानसे निकाला हुआ 'चंचल निशि उदबस रहैं करत प्रात बसि राज। अरविन्दनमें इन्दिरा, सुन्दर नैननि लाज।' ललित० ७८
उदबेग—पु० घबड़ाहट, भय, क्लेश 'अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उदबेग न पावइ कोई।' रामा० २५९
उदभट—वि० प्रबल, श्रेष्ठ 'भूषन भनत भौंसिलाके भट उदभट जीति घर आये धाक फैली घर घरमें।' भू० ८९
उदभव—पु० उत्पत्ति। बढ़ती, उन्नति।
उदभौत—पु० आश्चर्यकी वस्तु, अद्भुत बात या घटना।
उदमदना—अक्रि० उन्मत्त होना, आपेको भूल जाना।
उदमाद—पु० पागलपन, उन्मत्तता।
उदमादी—वि० मतवाला, पागल।
उदमान—वि० मतवाला।
उदमानना—अक्रि० मतवाला होना।
उदयगढ़, उदयगिरि—पु० उदयाचल।
उदयना—अक्रि० उदय होना 'पाइ लगन बुध केतु तौ उदयो हू भो अस्त।' मुद्रा० ७३
उदरंभर—वि० अपना पेट भरनेवाला, पेटू।
उदर—पु० पेट।
उदरना—अक्रि० फटना, नष्ट होना। गिरना 'देखत उँचाई उदरत पाग, सूधी राह चोस हमें चढ़ैं ते जे साहस निकेत हैं।' भू० ४३
उदवना—अक्रि० उदय होना, निकलना।
उदवाह—पु० विवाह।
उदवेग—पु० घबड़ाहट, आवेश।
उदसना—अक्रि० उजड़ना, बेसिलसिले होना।
उदात्त—वि० दयालु, श्रेष्ठ, समर्थ, उदार। उच्च स्वरसे उच्चरित। एक अर्थालंकार।
उदाम—वि० बंधनरहित, महान्। पु० वरुण।
उदायन—पु० उद्यान, उपवन।
उदार—वि० दानशील, सरल, श्रेष्ठ, 'ऐसी मति कहौ धौं उदार कौनकी भई।' राम० ३। अनुकूल।
उदारना—सक्रि० फाड़ना। छिन्नभिन्न करना 'लाजनि ते कछू न जनावे काहू सखिन सों उरको उदारि अनुराग उमगतु है।' रस० २०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उदास—वि० रंजीदा, दुःखी, उदासीन, विरक्त।
उदालना—सक्रि० उजाड़ना, तोड़ना फोड़ना, समेटना।
उदासिल—वि० उदास, उदासीन।
उदासी—स्त्री० खिन्नता, दुःख। पु० त्यागी मनुष्य, वैरागी।
उदासीन—वि० निरपेक्ष, विरक्त।
उदाहरण—पु० मिसाल, दृष्टान्त।
उदियाना—अक्रि० परेशान होना, व्याकुल होना।
उदीची—स्त्री० उत्तर दिशा।
उदीपन—पु० उभाड़नेकी क्रिया, उत्तेजन।
उदेग—पु० उद्वेग, व्यग्रता।
उदै—पु० उदय, उन्नति। प्रगट होना।
उदो—पु० देखो 'उदौ' (सूवे० ४०७)।
उदोत—पु० प्रकाश, शोभा 'तिय ललाट बेंदी दये अगनित बढ़त उदोत।' बि० १३७। वृद्धि, बढ़ती 'जन राजवन्त जग जोगवन्त। तिनको उदोत केहि भाँति होत।' राम० ९३। वि० उदित, प्रकाशित, प्रकट 'होत उदोत प्रभाकर जो दिश पच्छिम तो कछु दोष नहीं है।' मोती राम, (भू० ३५)
उद्योतकर—वि० प्रकाश करनेवाला, चमकानेवाला।
उद्योती—वि० उदय करनेवाला, प्रकाश करनेवाला।
उदौ—पु० निकलना, प्रकट होना 'भौंसिलाके डरन डरानी रिपुरानी कहैं, पिय भजौ, देखि उदौ पावसके साजको।' भू० ३२, (रतन० ६९)
उद्गम—पु० उत्पत्ति, उदय। उत्पत्तिस्थान।
उद्दंड—वि० उद्धत, निडर।
उद्दाम—वि० स्वतंत्र, बंधनहीन, निरंकुश, प्रबल, बड़ा।†
उद्दित—वि० उदित, उद्धत। [† पु० वरुण।
उद्दिम—पु० उद्यम, प्रयत्न, पुरुषार्थ (छत्र० ८१)।
उद्दीपन—पु० जगाने या उत्तेजित करनेकी क्रिया। रस बढ़ानेवाले भाव।
उद्देश्य—पु० लक्ष्य, इरादा। जिसके विषयमें कुछ कहा जाय।
उद्दोत—पु० प्रकाश (दास २०), उदय। वि० प्रकाशित, उदित 'पुर पैठत श्रीरामके भयो रात्र उद्दोत।' राम० ८३
उद्दोतिताई—स्त्री० प्रकाश 'नील पट पीत फहरात अंगनि मिथुन तड़ितघन नील उद्दोतिताई।' अलबेली अलि
उद्ध—क्रिवि० ऊपर 'उद्ध अधमूल तूल-पटनि लपेटे चहूँ लपट सुगन्ध सेज सुखद सुहाती मैं।' रवि० ४३, 'कलियुग जलधि अपार उद्ध अधरम्म उर्मिमय।' भू० २३
उद्धत—वि० उजड्ड, निडर।
उद्धना—अक्रि० ऊपर उठना, फैल जाना।
उद्धरण—पु० उद्धार, ऊपर उठना, लेखादिका अवतरण। उन्मूलन।
उद्धरना—सक्रि० उद्धार करना। अलग करना, काटना 'तब कोपि राघव सत्रुको सिर बाण तीक्षण उद्धरयो।' राम० ४६८। अक्रि० मुक्त होना 'बूझियत बात वह कौन विधि उद्धरे।' दे० ८२
उद्धारना—सक्रि० मुक्त करना, उबारना।
उद्धृत—वि० ज्योंका त्यों लिया हुआ, उगला हुआ।
उद्भव—पु० उत्पत्ति, उन्नति।
उद्भिज्ज, उद्भिद—पु० वनस्पति।
उद्यम—पु० उद्योग, व्यापार, प्रयत्न।
उद्योग—पु० चेष्टा, प्रयत्न, धंधा।
उद्रेक—पु० आधिक्य, उन्नति।
उधड़ना—अक्रि० उखड़ना, अलग हो जाना, खुलना।
उधम—पु० ऊधम, उपद्रव।
उधर—क्रिवि० उस तरफ।
उधरना—अक्रि० उद्धार पाना 'सूरदास भगवन्त भजन करि सरन गहे उधरे।' सूवि० १६। उचड़ना, निकल जाना। सक्रि० उद्धार करना 'तुम अीन है बेदनको उधरो जू।' राम० ५०८ [† मचाना, उन्मत्त होना।
उधराना—अक्रि० छितरा जाना, बिखरना। ऊधम†
उधार—पु० उद्धार, मुक्ति (रहीम १८)। ऋण, मँगनी।
उधारक—वि० छुड़ानेवाला।
उधारन, उधारी—वि० उद्धार करनेवाला 'सूर पतित तुम पतित उधारन गहो विरदकी लाज।' सूवि० २६
उधारना—सक्रि० मुक्त करना, उद्धार करना 'अबके नाथ मोहिं उधारि।' सूवि० २४
उधेड़ना, उधेरना—सक्रि० अलग करना, छितराना, भंग करना 'जरासंधको जोर उधेर्‌यो, फारि कियो द्वै फाँको।' सूवि० ३६
उनंत—वि० झुका हुआ, अवनत 'भई उनंत प्रेम कै साखा।' प०२७, 'मै उनंत पदमावति बारी।' प० २४
उनइस—वि० एक कम बीस।
उनदा, उनदौंहा—वि० उनींदा, नींदका सताया हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उनमत—वि० मतवाला, पागल। पु० पागल मनुष्य।
उनमना—वि० उदास, अनमना, सुस्त।
उनमाथना—सक्रि० मथना।
उनमाथी—वि० मथनेवाला।
उनमाद—पु० पागलपन, चित्त-विभ्रम।
उनमान—पु० अटकल, अनुमान, विचार 'सुनि स्रवननि उनमान करति हौं, निगम नेति यह लखनि लखीरी।' सू० १६६। परिमाण, थाह 'लेन उनमान फते-अलीने पठायो दूत' सुजा० १५। सामर्थ्य, योग्यता। वि० समान, सदृश 'कमलदल नैननिकी उनमान।' रहीम ३२
उनमानना—सक्रि० अनुमान करना, ख़याल करना, विचारना 'कटि कछनी कर लकुट मनोहर, गोचारन चले मन उनमानि।' सू०, (के० २२६)
उनमुना—वि० मौन, चुप 'हँसै न बोलै उनमुनी चंचल मेला मार।' साखी ८
उनमुनी—स्त्री० हठयोगकी एक मुद्रा (साखी ११९)।
उनमूलना—सक्रि० उखाड़ना, नष्ट करना।
उनमेख—पु० आँख या फूल इत्यादिका खुलना, विकास। प्रकाश।
उनमेखना—अक्रि० खुलना, विकसित होना।
उनमेद—पु० साँझ, प्रथम वर्षासे उत्पन्न विषैला फेन 'अब उनमेद मीन ज्यों बपुरो पाव कुहारो मार्‌यो।' †
उनयना—देखो 'उनवना'। [† सूवि० ५१
उनरना—अक्रि० उमड़ना, उठना 'उनरत जोबन देखि नृपति मन भावइ हौ।' रामलला० । उछलना 'बचन-पाश बाँधे माधव-मृग, उनरत घालि लये।' भ्र० १३५
उनवना—अक्रि० झुकना। घिर आना। टूटना।
उनवर—वि० न्यून, क्षुद्र, तुच्छ।
उनवान—पु० अनुमान, ख़याल।
उनसठ, उनसठि—वि० एक कम साठ।
उनहत्तर, उनहत्तरि—वि० एक कम सत्तर।
उनहार—वि० समान, सदृश।
उनहारि—स्त्री० समानता, एकरूपता, रूप या शकल। 'चुनरी श्याम सतार नभ, मुख शशिकी उनहारि।' वि० १३६, (दास १५६) [मानना।
उनाना—सक्रि० झुकाना, प्रवृत्त करना। सुनना। आशा
उनारना—सक्रि० उकसाना, खसकाना, बढ़ाना 'ज्योति बढ़ावत दशा उनारि। मानहु स्यामल सींड पसारि।' †
उनासी—वि० एक कम अस्सी। [† डे० २२७
उनींद—स्त्री० अर्द्धनिद्रा, उँघाई 'लरिका ललित उनींदबस सयन करावहु जाइ।' रामा० १९३
उनींदा—वि० नींदसे भरा हुआ, अलसाया हुआ। 'नैन उनींदे भये रँग राते।' सू० १६९
उनइस—वि० एक कम बीस।
उन्माद—पु० पागलपन, विक्षिप्तता।
उन्मीलना—सक्रि० खोलना, विकसित करना।
उन्मूलन—पु० उखाड़ने या नष्ट करनेकी क्रिया।
उन्हानि—स्त्री० बराबरी, समता।
उन्हारि—स्त्री० रूप, शकल, प्रकार 'एकसे देखु, कछू न विसेखु, ज्यों एकै उन्हारि कुंभारके भांड़े।' देव (ब्रज०)। 'गोरीकी जुगुल जानु है उन्हारि केराकी।' रवि० २९
उपंग—पु० एक बाजा 'चंग उपंग नाद सुर तूरा।' प० २६०। उद्धवके पिता।
उपंत—वि० उत्पन्न।
उपकरना—सक्रि० उपकार करना।
उपखान—पु० पुरानी कथा, वृत्तान्त 'एक उपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आज उघारि।' सू० १०४
उपगारी—वि० उपकारी, भला करनेवाला (कबीर १९२)।
उपचार—पु० चिकित्सा, सेवा, व्यवहार।
उपचारना—सक्रि० काममें लाना। विधान करना।
उपज—पु० उत्पत्ति, पैदावार। सूझ। गढ़ी हुई बात।
उपजनो—अक्रि० उत्पन्न होना।
उपजाना—सक्रि० उत्पन्न करना।
उपटना—अक्रि० उखड़ना। चिह्न पड़ना, उछल आना 'वेई गड़ि गाड़ें परी उपट्यो हारु हियें न। आम्यो मोरि मतंग मनु मार गुरेरन मैन।' वि० ४५; 'बिनु गुन पिय उर हरवा, उपटेउ हेरि।' रहीम ४२
उपटाना—सक्रि० उबटन लगवाना, उबटन लगाना 'आई हुती अन्हवावन नाइनि, सोंधे लिये वह सूधे सुभायनि। कंचुकी छोरी उतै उपटैबेको ईंगुरसे अँगको सुखदायनि।' देव। उखड़वाना। उचाटना, हटाना।
उपटारना, उपठारना—सक्रि० उचाटन करना, हटाना। 'मधुबनतें उपटारि श्याम कहँ या ब्रज लै के धाय।' भ्र० १२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपड़ना—अक्रि० उपटना, अंकित होना, उखड़ना।

उपदेशना, उपदेसना—सक्रि० शिक्षा देना 'सुन्दर गौर सु विप्रवर अरु उपदेसेउ मोहिं।' रामा० ४५

उपदेस—पु० शिक्षा, सीख, नसीहत।

उपद्रव—पु० ऊधम, गड़बड़, उत्पात।

उपधरना—अक्रि० अंगीकार करना, सहारा देना।

उपधान—पु० तकिया। आधार-वस्तु।

उपनना—अक्रि० उत्पन्न होना 'आगि जो उपनी ओहि समुन्द्रा। लंका जरी ओहि इक बुन्दा।' प० ६९

उपनयन—पु० यज्ञोपवीत संस्कार।

उपनाना—सक्रि० पैदा करना 'अला एकै नूर उपनाया ताकी कैसी निंदा।' कबीर १०४

उपनिवेश—पु० दूसरे स्थानसे आये हुए लोगोंकी बस्ती।

उपबरहन—पु० 'उपबर्हण', तकिया 'भूप बचन सुनि सहज सुहाये। जटित कनकमनि पलँग डसाये। उपबरहन बर बरनि न जाहीं।' रामा० १९३

उपमा—स्त्री० सादृश्य, मिलान, एक काव्यालंकार।

उपमान—पु० वह वस्तु जिससे समता की जाय।

उपमाना—सक्रि० उपमा देना 'चारु कुण्डल सुभग स्रवनन्हि, को सकै उपमाइ।' सू० १२५

उपमेय—पु० वह वस्तु जिसकी तुलना की जाय।

उपयोग—पु० लाभ, आवश्यकता, प्रयोग।

उपरना—पु० ऊपरसे ओढ़नेका कपड़ा, दुपट्टा 'पहिरे राती कंचुकी सिर स्वेत उपरना सोहै।' सू०। अक्रि० उखड़ना।

उपरफट—वि० ऊपरी, व्यर्थका 'मेरी बाँह छाँड़ि दे राधा करत उपरफट बातैं।' सूबे० ७८

उपरहित—पु० पुरोहित।

उपराग—पु० वर्ण। विषय-वासना। सूर्य या चन्द्रका ग्रहण। राहु 'बिधु धर वह उपराग गह्यो। ना जानौं यह राहु उमापति कित है सोध लह्यो।' भ्र० १३१

उपराजना—सक्रि० उत्पन्न करना, बनाना (प० ५; इन्द्रा० ५६)। उपार्जन करना।

उपराना—अक्रि० ऊपर होना 'डोलहिं बोहित लहरैं खाहीं। खिन तर होहिं खिनहिं उपराहीं।' प० ६८

उपराला—पु० सहायता, बचाव 'उपराला करि सक्यो न कोई।' छत्र० १२८

उपरावटा—वि० अकड़ा हुआ, जिसका सिर ऊपर तना हुआ हो।

उपराही—क्रिवि० ऊपर 'बरनौं माँग सीस उपराहीं। सेंदुर अबहिं चढ़ा जेहि नाहीं।' प० ४४। वि० श्रेष्ठ, बढ़कर 'धावहिं बोहित मन उपराहीं।' प० ६६

उपरी-उपरा—पु० चढ़ा-ऊपरी, स्पर्द्धा।

उपरैना—पु० दुपट्टा 'कंचन बरन पीत उपरैना, सोभित साँवर अंग री।' सू० १८०, (सूसु० २६१)

उपरैनी—स्त्री० ओढ़नी।

उपरोहित—पु० पुरोहित।

उपरोहिती—स्त्री० पुरोहितका कार्य 'उपरोहिती कर्म अति मन्दा।' रामा० ५६३

उपरौना—पु० उपरना। दुपट्टा।

उपल—पु० पत्थर, रत्न, ओला।

उपली—स्त्री० कंडी, गोहरी।

उपल्ला—पु० ऊपरका पत्तं '...रायजूको रायजू रजाई दीन्हीं राजी ह्वैके सहरमें ठौर ठौर सोहरत भई है।... साँस लेत उड़िगो उपल्ला औ भितल्ला सबै, दिन ह्वैक बाती हेत रुई रह गई है।' बेनी

उपवन—पु० उद्यान, फुलवारी।

उपवना—अक्रि० उड़ जाना। उदय होना 'गोद-भरी गोद लिये लालति सुमित्रा देखि देव कहैं सबको सुकृत उपवियो है।' गीता० २७९

उपवास—पु० लंघन, अनशन।

उपशम—पु० शान्ति, निवारण। इन्द्रियदमन।

उपसर्ग—पु० उप, अनु आदि शब्द जो शब्दोंके पहले जोड़े जाते हैं। उत्पात।

उपस्थान—पु० पास आना, खड़े होकर आराधना करना।

उपस्थित—वि० हाज़िर, विद्यमान।

उपहार—पु० भेंट, नज़राना।

उपहास—पु० हँसी, बुराई, निन्दा 'होहुँ कहावत सब कहत राम सहत उपहास।' रामा० २२

उपहासी—स्त्री० हँसी, निन्दा।

उपही—पु० अपरिचित या बाहरी मनुष्य, परदेसी 'ये उपही कोउ कुँवर अहेरी।' गीता० ३४९

उपांत्य—वि० अन्तवालेके पासका।

उपाइ, उपाउ—पु० उपाय, तदबीर, साधन, युक्ति।

उपाटना, उपाड़ना—सक्रि० उखाड़ना 'योजन बिस्तार शिला पवनसुत उपाटी।' सूरा० ४४

उपादि, उपाधि—स्त्री० छल, कपट 'राम नाम जान्यो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं, जान्यो सदा उपादि।' रहीम। पदवी। विघ्न, बाधा, उपद्रव।

उपानह—पु० जूता, पदत्राण 'धोती फटी सी लटी दुपटी अरु पाँव उपानहकी नहिं सामा।' सुदामा० ७

उपाना—सक्रि० उत्पन्न करना 'हौं मनते बिधि पुत्र उपायो। जीव उधारन मंत्र बनायो।' के०८३,(सूबे० २६) 'अब लखहु करि छल-कलह नृपसों भेद-बुद्धि उपाइकै।' मुद्रा०। करना। रचना।

उपाय—पु० युक्ति, प्रयत्न, उपचार।

उपायन—पु० उपहार, भेंट।

उपारना—सक्रि० उखाड़ना 'खायेसि फल अरु बिटप उपारे।' रामा० ४२४

उपालंभ—पु० ताना, निन्दा, शिकायत 'सावहुँ मैं लबार भुज बीहा। जौ न उपारउँ तव दस जीहा।' रामा० ४६८

उपाव—पु० उपाय, युक्ति (भ्र० ९७)।

उपास—पु० लंघन, अनशन। पु० उपास्य, इष्टदेव 'नैन द्वै जलधार वह, छिन छिन लेत उसाँस। रैनि अँधेरी डोलिहौं, गावत जुगुल उपास।' नागरीदास

उपासना—सक्रि० पूजा करना, भजना 'सन्ध्याहि उपासत भूमिदेव। जनु वाकदेवकी करत सेव।' के० २२५। अक्रि० उपवास करना, भूखा रहना। स्त्री० पूजा

उपासी—स्त्री० उपासना, पूजा, स्तुति 'केशव विश्वामित्र-के रोपमयी दृग जानि। सन्ध्यासी तिहुँ लोकके किहिनि उपासी आनि।' राम० ९७। वि० उपासक, सेवक 'पंच पीरकी भगति छाँड़िकै ह्वै हरिचरन उपासी।'

उपेक्षा—स्त्री० अवहेलना, तिरस्कार, विरक्ति।

उपैना—वि० खुला हुआ, नग्न (सूसु० ४३)।

उपोद्घात—पु० भूमिका, प्रस्तावना।

उफड़ना—अक्रि० उबलना, उफनना।

उफनना—अक्रि० उबलना, आँचके कारण ऊपर उठना। उमड़ना 'उफनत तक्र चहूँ दिश चितवति चित लाग्यो नँदलालहिं।' सूबे० १७०

उफनाना—अक्रि० उबलना, फेन सहित ऊपर उठना। उमड़ना 'अंगनि चन्दन घनसार अंगरात सेत सारी छीर फेन कैसी आभा उफनात है।' रस० ३६

उफान—पु० उबाल।

उफाल—स्त्री० लम्बी डग 'हनुमन्त ये जिन मित्रता रवि-पुत्र सों हमसों करी। जलजाल काल कराल माल उफाल पार-धरा धरी।' के० २०

उबकाई—स्त्री० जी मचलाना, वमन।

उबट—पु० अटपट रास्ता। वि० ऊबड़ खाबड़।

उबटन—पु० सरसों, तिल, चिरौंजी आदिका लेप।

उबटना—अक्रि० उबटन लगाना 'उबटि नहाहु गुहौं चोटिया बलि देखि भलो वर करहिं बड़ाई।' कृष्ण गी० ३४१, 'जेहि मुख मृगमद मलयज उबटति'-भ्र० ५२

उबरना—अक्रि० उद्धार पाना, छूटना, बचना '...कछू दिन उबरते तो घने काज करते।' भू० ७०। बाकी बचना 'दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा। उबरा सो जनवासहिं आवा।' रामा० १७७

उबरा—वि० बचा हुआ 'उबरो धन देहु विदेशिनकों' के० ३

उबलना—अक्रि० उफनना, खौलना।

उबहना—सक्रि० हथियार खींचना, शस्त्र उठाना। पानी उलीचना। ऊपर उठाना। जोतना [दादू ऊसर उबहि करि कोठा भरै न कोय।' दादू] वि० बिना जूतोंका।

उबाँत—स्त्री० कै, उलटी।

उबाना—वि० नगे पैर। पु० कपड़ा बुननेमें जो सूत राछके बाहर रह जाता है, वह।

उबार—पु० उद्धार, रक्षा 'निज निज गृह सब करहिं बिचारा। नहिं निसिचर कुल केर उबारा।' रामा० ४३३, (दे० झरझराना)। ओहार, पर्दा।

उबारना—सक्रि० उद्धार करना, रक्षा करना 'लाखा-गृहतें जरत पाण्डुसुत बुधिबल नाथ उबारे।' सूबि० १०

उबाहना—सक्रि० उबहना, हथियार खींचना, उठाना।

उबिठना, उबीठना—सक्रि० अच्छा न लगना 'माथुर लोगनके सँगकी यह बैठक तोहिं अजौं न उबीठी।' कविप्रि०। अक्रि० तबीयतका ऊब उठना 'कामकी घात अघाति नहीं दिनराति नहीं रतिरंग उबीठे।' भवानी० २०

उबीधना—अक्रि० फँसना। विद्ध हो जाना। गड़ना।

उबीधा—वि० गड़ा हुआ, धँसा हुआ। गड़नेवाला, कष्टकमय।

उबेना—वि० बिना जूतेका। 'उबाना'। 'सब लौं उबेने पायँ फिरत पेंडे खलाय'—कविता० २३३

उबेरना—वि० उद्धार करना। बचाना (रतन० ३)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उमड़ना, उमरना—अक्रि० ऊपर उठना, उकसना, प्रकट होना, बढ़ना।

उमना—अक्रि० उठना 'खाँ देद्वान उमै निति बाहाँ।' प० ९

उमरौंहा—वि० ऊपर उठा हुआ।

उमा—स्त्री० चिंता 'सबहिं उमामें लगि रहा राव रंक सुलतान।' साखी ६३

उमाड़ना—सक्रि० ऊपर उठाना, उकसाना, उत्तेजित करना।

उमाना—अक्रि० सिर हिलाना, हाथ पाँव पटकना 'एक होय तौ उत्तर दीजै, सूर सु उठी उमानी।' सू० २६१

उमिटना—अक्रि० हिचकना, ठिठकना।

उमै—वि० दोनों।

उमंग, उमग, उमगन—स्त्री० जोश, लहर, आनन्द, उमाड़।

उमंगना, उमगना—अक्रि० उमड़ना, आवेशमें आना, उल्लासमें होना 'बन्धु समेत जनक तब आये। प्रेम उमँगि लोचन जल छाये।' रामा० १८४, 'औचक अगाध सिंधु स्याहीको उमगि आयो तामें तीनों लोक बूड़ि गये एक संगमें।' रवि० ४१, (५५,७१ भी)

उमगाना—सक्रि० उमाड़ना, उत्तेजित करना 'मीत कष्ट सों दुखित मोहि रनहित उमगावत।' मुद्रा०

उमचना—अक्रि० शरीरको झटकेके साथ ऊपर उठाकर नीचे गिराना। चौंक पड़ना, सावधान होना।

उमड़ना—अक्रि० पानी इत्यादिका ऊपर उठना। फैलना, छाना। आवेशमें आना।

उमदना—अक्रि० उमंगमें भरना, उमड़ना।

उमदाना—अक्रि० उन्मत्त होना। आवेशमें आना

उमरती—स्त्री० एक बाजा। [(वि० ७७)

उमरा—पु० 'अमीर' का बहुवचन। सरदार लोग।

उमराय, उमराव—पु० सरदार लोग, रईस (भू० ११,१४)।

उमहना—अक्रि० उमड़ना 'भूलि हुलास विलास गये दुलते भरिकै अँसुवा उमहै हैं।' रस० २६। छाना, उमंगमें आना, प्रसन्न होना।

उमहाना—सक्रि० उमड़ाना, उमाहना 'कथा गंग लगी मोहिं तेरी उहि रसासिंधु उमड़ायो।' सू० २६३

उमाखना—सक्रि० उन्मूलन करना, नष्ट करना।

उमाचना—सक्रि० उखाड़ना, निकालना। 'सुन्दरि मन्दिर हैं न कहीं बधू पैजनि सों नहिं लाज उमाची।' रवि० ७८

उमाद—पु० उन्माद, पागलपन।

उमाधो, उमापति—पु० शंकरजी।

उमाह—पु० उमंग, उत्साह, आनंद 'प्रगट करौ सब चातुरी, मनमें विपुल उमाह।' चाचाहि० (ललित० १३५)

उमाहना—अक्रि० उमहना, उमड़ना, मौज या आवेशमें आना (सुन्द० ९४)। सक्रि० उमड़ाना 'प्रलय करन त्रिपुरारि कुपित जनु गंग उमाहिय।' सुजा० ९३

उमाहल—वि० उत्साहपूर्ण, उमंगयुक्त।

उमेठना, उमेड़ना—सक्रि० मरोड़ना, ऐंठना (उदे० अठपाव, या रहीम १५)।

उमेलना—सक्रि० उन्मीलन करना, प्रकट करना। बयान करना।

उम्मत—स्त्री० जमाअत, साम्प्रदायिक दल।

उम्मीद, उम्मेद—स्त्री० आशा, भरोसा।

उम्र—स्त्री० आयु, अवस्था।

उरंग, उरंगम—पु० सर्प।

उर—पु० छाती, हृदय, मन (उदे० उरझाना)।

उरई—स्त्री० खस, उशीर।

उरकना—अक्रि० ठहरना।

उरगना—सक्रि० ग्रहण करना, अंगीकार करना।

उरगाय—पु० विष्णु 'दास तुलसी कहत मुनिगन 'जयति-जय उरगाय।' विन० ५०५। सूर्य। प्रशंसा। वि० प्रशंसित। फैला हुआ।

उरगिनी—स्त्री० सांपिनी, नागिन।

उरज, उरजात—पु० स्तन, कुच।

उरझना—अक्रि० फँसना, लिपटना, लिप्त होना। (रतन० ७१)

उरझाना—सक्रि० फँसाना, लिप्त रखना। अक्रि० फँसना 'बरणि न जाहीं। उर उरझाहीं।' राम० १८

उरझेर—पु० झकोरा 'पानीको सो घेर किधौं पौन उरझेर किधौं...' सुन्द० ६२

उरध—क्रिवि० ऊर्ध्व, ऊपर।

उरधारना—सक्रि० फैलाना, बिखराना।

उरबसी—स्त्री० एक अप्सरा (उर्वशी), एक भूषण 'तोपर वारौं उरबसी, सुन राधिके सुजान। तू मोहन-के उर बसी है उरबसी समान।' बि० १६

उरवी—स्त्री० धरती, पृथिवी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उरमना—अक्रि० लटकना 'गजमोतिनकी अवली अपार। तहँ कलसनपर उरमति सुढार।' राम० १२८

उरमाना—सक्रि० लटकाना।

उरमाल—पु० रूमाल।

उरमी—स्त्री० पीड़ा, दुःख 'तू तो पट उरमी रहित सदा एक रस' सुन्द० १११

उरला—वि० पिछला। विरला, निराला। (साखी १२३)

उरविज—पु० उर्वीपुत्र मंगल।

उरस—वि० नीरस, स्वादहीन। पु० छाती, हृदय।

उरसना—सक्रि० चलाना, उथल पुथल करना 'स्वास उदर उरसति यों मानो दुग्ध सिंधु छवि पावै।' सू० ५०

उरहन, उरहना—पु० शिकायत, उलाहना 'उरहन देन चली यशुमतिके मनमोहनके रूप रई।' सूबे० १०७

उरा—स्त्री० पृथिवी।

उराउ, उराऊ—पु० 'उराव', उमंग, चाह, उत्साह 'बरन्यो सकल महामुनि मंजुल बालचरित्र उराऊ।' रघु० २२। खुशी 'दूतन कही खबर तहँकी सब नृप-रनिवास उराऊ।' रघु० १३९

उराना, उराजाना—अक्रि० चुकना, खतम हो जाना।

उराय—पु० देखो 'उराव'।

उरारा—वि० बड़ा, विस्तृत।

उराव—पु० चाह, उमंग, हौसला 'तुलसी उराव होत राम-को सुभाव सुनि' कविता० २०५ (पाठांतर) (सू० १८८)

उराहना—पु० शिकायत।

उरिण, उरिन—वि० ऋण मुक्त 'सुन सुत तोहिं उरिन मैं नाहीं।' रामा० ४३१

उरु—पु० जाँघ।

उरुजना—अक्रि० 'उरझना', फँसना।

उरे—क्रिवि० आगे, उसपार, दूर।

उरेखना—सक्रि० देखो, 'अवरेखना'।

उरेह—पु० चित्रकारी (प० १)।

उरेहना—सक्रि० खींचना, चित्रित करना, 'पुनि धनि सिंच उरेहै लागे।' प० ७८। रँगना; लगाना।

उरोज—पु० कुच, स्तन।

उर्ध—वि० ऊँचा, खड़ा।

उर्मि—स्त्री० लहर।

उर्धरा—वि० स्त्री० उपजाऊ। स्त्री० उपजाऊ ज़मीन।

उर्विजा—स्त्री० सीता।

उर्वी—स्त्री० पृथ्वी।

उलंगना, उलंघना—सक्रि० उल्लंघन करना, नाँघना। उपेक्षा करना 'देहरि उलंघि सकत नहिं सो अब खेलत नंद दुआर।' सू० ७३, (के० १४५)

उलका—स्त्री० प्रकाश, अग्निपिंड। मसाल, दिया।

उलचना, उलछना—सक्रि० छितराना, फैलाना, निकाल कर फेंकना।

उलछारना—सक्रि० ऊपरकी तरफ फेंकना। प्रकट करना।

उलझन—पु० फँसाव, अटकाव। फेर, समस्या, चिन्ता। बाधा।

उलझना—अक्रि० देखो 'उरझना'।

उलझाना—सक्रि० देखो 'उरझाना'। अक्रि० फँसना।

उलझाव, उलझेड़ा—पु० अटकाव, चक्कर, झंझट।

उलझौहा—वि० फँसानेवाला, मुग्ध करनेवाला।

उलटना—अक्रि० पलटना, घूमना, लौटना। उमड़ना। विरुद्ध होना, अस्त व्यस्त होना, नष्ट होना। सक्रि० खोदकर फेंकना, नष्ट करना। बात दोहराना। लौटना। औरका और करना 'पचिहारी कछु काम न आई, उलटि सबै विधि दीनी।' हरि०। उड़ेलना।

उलटना पलटना—सक्रि० ऊपर नीचे करना, अस्त व्यस्त करना। अक्रि० इधर उधर आना जाना।

उलट-पलट, उलट पुलट—वि० अस्त व्यस्त, परिवर्त्तित पु० परिवर्त्तन, गड़बड़ी।

उलटफेर—पु० अदल बदल, परिवर्तन।

उलटा—वि० औंधा, जो ठीक हालतमें न हो। क्रम-विरुद्ध। विपरीत 'जदपि होत सुन्दर कमल उलटो तदपि सुभाव!' मुद्रा०। मनमाना। क्रिवि० विरुद्ध क्रमसे, जो उचित न हो ऐसे ढंगसे। पु० चीला।

उलटाना—सक्रि० लौटाना, फेरना 'जो शोकसों भई मान-गनकी दशा सो उलटायहौं।' मुद्रा०। औरका और करना।

उलटा पलटा, उलटा पुलटा—वि० क्रमविरुद्ध, बेसिर पैरका।

उलटी—स्त्री० कै, वमन। एक कसरत।

उलटे—क्रिवि० विपरीत क्रमसे, जैसा चाहिये उससे विरुद्ध ढँगसे।

उलठना—अक्रि० देखो 'उलटना'।

उलठ पलठ—देखो 'उलट पलट'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उलथना—अक्रि० नीचे ऊपर होना, उलटना। उछलना 'नैन बाँक सरि पूज न कोऊ। मानसरोदक उलथहिं दोऊ।' प० ४५; 'लहरैं उठीं समुद उलथाना'। प० १९०। सक्रि० उलट पुलट करना।

उलद—स्त्री० झड़ी, वर्षा।

उलदना—सक्रि० उड़ेलना, गिराना (उदे० 'आह') 'धाओ धाओ धरो' सुनि धाये जातुधान धारि, वारि-धारा उलदैं जलद ज्यों न सावनो।' कवित्त० १७५

उलमना—अक्रि० 'उरमना', लटकना, झुकना।

उलरना—अक्रि० कूदना, ऊपर नीचे होना, झपटना।

उललना—अक्रि० ढरकना, उलटना।

उलसना—अक्रि० शोभित होना 'राखी ना रहत जऊ हाँसी कसि राखी देव नैसुक उकासी मुख ससिसे उलसि उठैं।' देव

उलहना—पु० शिकायत। 'उलाहना'। अक्रि० उमड़ना, प्रस्फुटित होना, खिलना 'बालतन यौवन रसाल उलहत लखि सौतिनके साल भो निहाल नन्दलाल भो।' रस० ३, 'ऋतु बसन्त फूली द्रुमवली उलहे पात नये।' सू० २७५, (रवि० ३६)

उलाँघना—सक्रि० लाँघना। अवहेलना करना, न मानना।

उलार—वि० पीछेकी ओर झुका हुआ।

उलारना—सक्रि० उछालना।

उलाहना—पु० शिकायत। सक्रि० शिकायत करना। उलाहना देना। निन्दा करना।

उलिचना, उलीचना—सक्रि० पानी निकालना, खाली करना, 'कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीप कि जाहिं उलीचे।' रामा० ३३४

उलूखल—पु० ओखली, खरल।

उलेड़ना, उलेंड़ना—सक्रि० उड़ेलना। ढालना।

उलेल—स्त्री० बाढ़। उमंग, उछल-कूद। वि० लापरवाह, अनजान।

उल्का—स्त्री० देखो 'उलका'।

उल्था—पु० अनुवाद, तरजुमा।

उल्लंघना—सक्रि० लाँघना, अवहेलना करना, अतिक्रमण करना।

उल्लाल, उल्लाला—पु० एक मात्रिक छन्द।

उल्लास—पु० हर्ष, चमक। परिच्छेद। एक काव्यालंकार।

उल्लासना—सक्रि० प्रकट करना। हर्षित करना।

उल्लू—पु० एक पक्षी। वि० मूर्ख।

उल्लेख—पु० वर्णन, ज़िक्र, लेख। एक काव्यालंकार।

उवना—अक्रि० उदय होना, निकलना। (उदे० अथवना)।

उवनि—स्त्री० उदय, प्रकट होना।

उशीर—पु० खस।

उषा—स्त्री० तड़का, प्रातःकाल। बाणासुरकी कन्या।

उष्ण—वि० गरम।

उसकाना, उसकारना—सक्रि० उभाड़ना, चला देना (उदे० उजियाना), ऊपर उठाना, चढ़ाना 'इतनी कहि उसकारत बाँहें रोष सहित बल धायो।' सूबु० ११९

उसनना—सक्रि० पानीमें पकाना, उबालना।

उसनीस—पु० मुकुट, पगड़ी।

उसरना—अक्रि० हटना (सुजा० ३६), अलग होना। बीतना। बिसरना, भूल जाना।

उसलना—अक्रि० पानीमें उतराना। हटना, उखड़ जाना 'ऐल फैल खैल भैल खलकमें गैल गैल गजनकी ठैल पैल सैल उसलत है।' भू० १५०। बीतना।

उससना—सक्रि० साँस लेना। हटना, टलना।

उसाँस—पु० लम्बी साँस, दुःखकी साँस। साँस। 'सूर-दास स्वामीके बिछुरत भरि भरि लेत उसाँस।' सूबे० ३७

उसारना, उसालना—सक्रि० उखाड़ना, छिन्न भिन्न करना 'साहनके दल दौरि उसालौ।' छत्र० ९०। भगाना दूर करना 'कोट जामिनी तिमिर उसारै।' छत्र० १५८

उसारि—स्त्री० ओसारा 'कहा चुनावै मेढ़ियां लम्बी भीति उसारि।' साखी ६३

उसास—स्त्री० दुःखसूचक साँस, लम्बी साँस 'बहू दूबरी होत क्यों, यों बूझी जब सासु। उत्तर कह्यो न बाल मुख ऊँची लई उसासु।' रस० २१

उसासी—स्त्री० अवकाश, आराम लेनेका अवसर 'जानै को केशव केतिक बार मैं लेसके सीसन दीन्ह उसासी।' राम० ६०

उसीर—पु० 'उशीर', खस।

उसीला—पु० वसीला, सहायक, सही करनेवाला 'साहब कहूँ न रामसे तोसे न उसीले।' विन० ११८

उसीसा—पु० तकिया, सिरहाना।

उस्वास—पु० उसाँस 'माला स्वास उस्वासकी जामें गाँठ न मेर।' साखी ५८

उहवाँ, उहाँ—क्रिवि० वहाँ।

उहार—पु० परदा। पालकी इत्यादिपर पड़ा हुआ कपड़ा 'सिबिका सुभग उहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होंहिं सुखारी।' रामा० १८९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊ

ऊँख—पु० ऊख, गन्ना।
ऊँघ, ऊँघन—स्त्री० झपकी, हलकी नींद।
ऊँघना—अक्रि० झपकी लेना।
ऊँच, ऊँचा—वि० ऊपर उठा हुआ। श्रेष्ठ, कुलीन। तीव्र।
ऊँचाई—स्त्री० उठान, उच्चता। श्रेष्ठता।
ऊँचे—क्रिवि० ऊपरकी ओर। उच्च स्वरसे।
ऊँछ—पु० रागविशेष।
ऊँछना—सक्रि० बालोंमें कंघी करना।
ऊँट—पु० पशुविशेष, उष्ट्र।
ऊँड़ा—पु० वह पात्र जिसमें धन गाड़ा जाय। तहखाना।
ऊँदर—पु० चूहा।
ऊँहूँ—अ० नहीं, कदापि नहीं।
ऊ—अ० भी। सर्व० वह।
ऊअना—अक्रि० उदय होना, निकलना।
ऊबाबाई, ऊबाबाई—वि० असम्बद्ध, निरर्थक, अंडबंड। स्त्री० निरर्थक बात, घबराहट 'नतौ कछु उरझ्यो न सुरझ्यो कहौं सो कौन सुन्दर सकल यह ऊबाबाई जानिए।' सुन्द० ११६
ऊक—पु० तपन, आँच 'हृदय जरत है दावानल ज्यों कठिन विरहकी ऊक।' सू०। लुआठ। टूटता हुआ तारा। स्त्री० ग़लती।
ऊकना—अक्रि० ग़लती करना, चूकना। सक्रि० भूल जाना, छोड़ना। जलाना, तपाना।
ऊख—पु० गन्ना।
ऊखम—पु० गरमी।
ऊखल—पु० ओखली, एक तरहका पत्थर ई०का गहरा वर्तन (सु० ७०)।
ऊगना—अक्रि० उगना, उदय होना, निकलना।
ऊज—पु० अन्धेर, ऊधम, उत्पात।
ऊजड़—वि० उजाड़, वीरान।
ऊजर—वि० वीरान, उजाड़ 'सोई भुव ऊजर भई, एगन लखी नहिं जात।' मुद्रा०। उज्वल, सफेद।
ऊजरा—वि० उज्वल, कान्तियुक्त, सफेद या गोरे रंगका 'लसत गूजरी ऊजरी, बिलसत लाल हजार।' रस० १७
ऊटना—अक्रि० उमंगमें भरना, प्रोत्साहित होना (भू० १०९)। सोच विचार करना।
ऊटपटाँग—वि० बेढंगा, असम्बद्ध। निरर्थक।
ऊड़ो—स्त्री० पानीमें डुबकी लगानेवाली एक चिड़िया। निशाना 'वह भइ धानुक हौं भा ऊड़ी।' प० २३१। डुबकी, गोता।
ऊढ़ना—अक्रि० सोच विचार करना, अटकल लगाना।
ऊत—वि० देखो 'अऊत'। उजबक, मूर्ख। पु० वह निःसन्तान मनुष्य जो मृत्युके बाद प्रेतयोनि पाता है।
ऊतर—पु० उत्तर, जवाब (सुजा० १५)। बहाना।
ऊतला—वि० उतावला, चंचल, तेज़।
ऊतिम—वि० उत्तम, अच्छा।
ऊदबत्ती—स्त्री० एक तरहकी धूपबत्ती।
ऊदा—वि० बैंगनी।
ऊधम—पु० उपद्रव, हुल्लड़, अत्याचार।
ऊधव, ऊधो—पु० कृष्णके एक मित्र, उपंगसुत।
ऊन—वि० न्यून, कम। तुच्छ, क्षुद्र। पु० भेड़ आदिका रोम। दुःख, ग्लानि 'तातें मन मानौ मत ऊनौ।' छत्र० १४७, 'जनि मरु रोय दुलहिया करि मन ऊन।' रहीम
ऊना—वि० न्यून, कम, तुच्छ, छोटा, 'पूर्यो ईं को पूरन पै आन दिन ऊनो ऊनो (चन्द्र)' राम० २१३
ऊनी—वि० ऊनका बना। वि० स्त्री० कम, थोड़ी। स्त्री० दुःख, ग्लानि।
ऊपना—अक्रि० पैदा होना।
ऊपर—क्रिवि० ऊँची जगहपर, आकाशकी तरफ। सहारे-पर। अधिक। पहिले। बाहरी तौरसे, प्रकटमें। अतिरिक्त, प्रतिकूल। ऊपरकी दोनों = दोनों चर्मचक्षु 'ऊपरकी दोनों गईं हियकी गईं हिराय।' कबीर। ऊपरसे = देखनेमें, प्रत्यक्षमें।
ऊपरी—वि० ऊपरका, बाहरी, दिखाऊ।
ऊब—स्त्री० आकुलता, उद्विग्नता। उमंग, उत्साह।
ऊबट—वि० ऊँचा नीचा। पु० ऊबड़ खाबड़ मार्ग।
ऊबड़ खाबड़—वि० ऊँचा नीचा। अटपट।
ऊबना—अक्रि० उबियाना, उकताना, एक ही अवस्थामें रहनेसे व्याकुल होना।
ऊबरना—अक्रि० 'उबरना' 'कह तुलसिदास सो ऊबरै, जेहि राख राम राजिवनयन।' कविता० २११

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊभ—वि० उठा हुआ, ऊँचा। स्त्री० गरमी। आकुलता। उमंग। हौसला।

ऊभट—पु० देखो 'ऊबट', 'निगुरा तो ऊभट चलै जब तब करै कुदाव।' साखी १७

ऊमना—अक्रि० खड़ा होना, उठना (सूरा० ७६), बछरा था सो मरि गया, ऊमी चाम चटाय।' साखी ९१। अक्रि० ऊबना, एक ही अवस्थामें रहनेसे व्याकुल होना।

ऊमक—स्त्री० झोंक, झपेटा, वेग।

ऊमना—अक्रि० उमड़ना।

ऊमर, ऊमरि—पु० गूलर (के० १११)।

ऊमस—स्त्री० उमस, गरमी।

ऊर—पु० ओर, अन्त, सीमा 'समुद ऐसन निसि न पारिए ऊर।' विद्या० १२८-

ऊरध, उर्ध्व—वि० ऊपरका, ऊपरकी ओर, खड़ा।

ऊरु—पु० उरु, अंघा। [क्रिवि० ऊपर।

ऊर्ध्वरेता—वि० जितेन्द्रिय (विन० ११५)।

ऊर्मि, ऊर्मी—स्त्री० तरंग, लहर। पीड़ा।

ऊलना—अक्रि० उछलना, कूदना 'पग पग मग अगमन परत, चरन अरुन दुति झलि।' वि० २०२ (घंगवासी)

ऊसर—पु० अनुपजाऊ ज़मीन। वि० अनुपजाऊ

ऊह—पु० अन्दाज़ा, अनुमान। तर्क। अ० ओह, दुःख या आश्चर्यसूचक शब्द।

ऋ

ऋ—अदिति। निन्दा।

ऋक्ष, ऋच्छ—पु० भालु, तारा।

ऋजु—वि० सरल, सीधा। प्रसन्न।

ऋण, ऋन—पु० कर्ज़। देना।

ऋणी, ऋनिया, ऋनी—वि० देनदार, कर्ज़दार।

ऋतु—पु० मौसिम। रजोदर्शन। यज्ञ 'सो मम धाम आय ऋतु करहीं। होय वृष्टि तौ सब सुख भरहीं।' रसिक-विहारी।

ऋतुमती, ऋतुवती—वि० स्त्री० रजस्वला (स्त्री)।

ऋत्विज्—पु० यज्ञ करनेवाला।

ऋद्धि—स्त्री० समृद्धि, विभव।

ऋषि—पु० मंत्रद्रष्टा। तत्वदर्शी।

ए

ए—पु० विष्णु। अ० अय, अरे, हे। सर्व० यह, ये 'ए विचरहिं मग बिनु पदत्राना।' रामा० २५६

एकंगा, एकंगी—वि० एक तरफका, एकतरफा।

एकंत—वि० एकान्त, निराला।

एक—वि० तोका साधा। अकेला 'अस कहि सब मुकराय भटनको धँस्यो कीसदल एका।' रघु० २३६। अद्वितीय। कोई 'एक कहहिं भल भूपति कीन्हा।' रामा० २४१। पु० = ऐक = ऐक्य, साम्य 'कीन्ह बहुत स्रम एक न आये। तेहिं इरिषा बन आनि दुराये।' रामा० २५१। एक अंक, एक आँक—क्रिवि० देखो 'अंक'। एकटक—क्रिवि० अनिमेष, स्थिर दृष्टिसे। एकतार—वि० एकही तरहका, समान। क्रिवि० समभावसे। एकपास—क्रिवि० पास पास।

एकज—पु० शूद्र। राजा। वि० एकजात।

एकत—क्रिवि० एकत्र। एक स्थानपर 'कहलाने एकत रहत अहि मयूर मृग बाघ।' वि० २०२

एकतीस—वि० इकतीस। तीस और एक।

एकत्र—क्रिवि० एक स्थानमें।

एकबारगी—क्रिवि० एक ही बार, एक साथ। अकस्मात्।

एकबाल—पु० भाग्य। प्रताप। स्वीकृति। [बिलकुल

एकरदन—पु० गणेशजी।

एकरूप—वि० सदृश रूपवाला, एक समान। वैसाही।

एकल—वि० अकेला, बेजोड़।

एकला—वि० अकेला।

एकसर—वि० अकेला (उदे० 'अगुआना')। एक पर्तका। एक छोरसे दूसरे छोरतक, कुल।

एकांगी—वि० एकतरफा। हठी। [अकेला।

एकांत—पु० निर्जन स्थान। क्रि० बिलकुल। अलग,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एका—पु० एकता, मेल।
एकाएकी—क्रिवि० अचानक, सहसा। वि० अकेला।
एकावली—स्त्री० एक काव्यालंकार।
एकौसा—वि० अकेला।
एड़, एड़ी—स्त्री० पाँवकी गद्दीका निकला हुआ हिस्सा।
एण—पु० कृष्ण वर्णका मृग (राम० ११२)।
एतना, एता—क्रिवि० इतना।
एतिक—वि० स्त्री० इतनी।
एवं—क्रिवि० इसी प्रकार। अ० और।
एह—सर्व० यह 'एक जन्मकर कारण एहा।' रामा० ७२
एहसान—पु० निहोरा, उपकार, कृतज्ञता।

ऐ

ऐंचना—सक्रि० खींचना 'नारायणको धनु बाण लियो। ऐंच्यो हँसि देवन मोद कियो।' राम० १७६, (वि० ८७)
ऐंचाताना—वि० जिसकी आँखकी पुतली दूसरी ओरको फिरी रहे।
ऐंछना—सक्रि० झाड़ना, बाल ऊँछना। 'देह पोंछि पुनि ऐंछि श्याम कच चोटी सुभग बनावैं।' रघु० ४६
ऐंठ—पु० ऐंठन, अकड़, घमण्ड। द्वेष।
ऐंठन—स्त्री० मरोड़, लपेट, घुमाव। खिंचाव।
ऐंठना—सक्रि० मरोड़ना, घुमाव देना। दबाव डालकर या धोखा देकर लेना। अक्रि० खिंचना, बलखाना, अकड़ना। इतराना, टर्राना। मरना।
ऐंड़—पु० ऐंठ, शान, 'ऐंड़ बुंदेलखण्डकी राषी।' छत्र० ७७। घमण्ड। पानीका भँवर।
ऐंड़दार—वि० घमण्डी 'गाय वेद विप्रन प्रतिपालैं। घाउ ऐंददारिनपर घालैं।' लाल (कौ० ३७१)
ऐंड़ना—अक्रि० ऐंठना, अँगड़ाना, घमण्ड करना। सूख कर कड़ा हो जाना। सक्रि० ऐंठना, (बदन) तोड़ना।
ऐंड़बेंड़—वि० वक्र, तिरछा।
ऐंड़ा—वि० ऐंठा हुआ, टेढ़ा, ऐंठ या दर्प सहित 'सोहत एकै डार काक कछु बाक न बोलै। ऐंड़ो रहै निसंक लाखु हाँसी करि डोलै।' दीन० १९४
ऐंड़ाना—अक्रि० अँगड़ाई लेना 'भेहा मीच मूरति मनहु ऐंडानी जमुहाय।' रघु० ६४। ऐंठ दिखाना।
ऐंद्रजालिक—वि० इन्द्रजाल करनेवाला। पु० बाजीगर।
ऐगुन—पु० अवगुण।
ऐतिहासिक—वि० इतिहास सम्बंधी। इतिहास जाननेवाला।
ऐन—पु० 'अयन', घर (रामा० २८२)। एण, कस्तूरी मृग। वि० ठीक, अच्छा 'साहितनै सिवराजकी सहज टेव यह ऐन।' भू० ७१, 'कहा भयो है देव देहधरि, अरु ऊँचोपद पायो ऐनु।' सू० ७५। पूरा पूरा।
ऐपन—पु० एक मंगल वस्तु जो चावल व हल्दीको एक साथ पीसनेसे बनती है।
ऐब—पु० दोष, अवगुण, बुराई।
ऐबजोई—स्त्री० दोष ढूँढनेकी क्रिया।
ऐबी—वि० दोषयुक्त, बुरा। दुष्ट, उत्पाती। काना या अन्य रूपसे विकलांग।
ऐयार—पु० धूर्त्त व्यक्ति। छल करनेवाला।
ऐरागैरा—वि० इधर उधरका, अजनबी।
ऐरापति—पु० ऐरावत हाथी।
ऐरावत—पु० इंद्रका हाथी।
ऐल—पु० पुरुरवा। प्रचुरता, बाढ़, प्रबल प्रवाह 'भूपन भनत साहितनै सरजाके पास आइबेको चढ़ी उर हौंसनिकी ऐलहै।' भू० २५। समूह (उदे० 'उसलना')। खलबली (छत्र० ११०)।
ऐश, ऐस—पु० आराम, भोग-विलास 'ऐसमें रहत लैस कूर चढ़े बलपै।' ग्वाल
ऐश्वर्य—पु० विभव, सम्पत्ति, प्रभुत्व।
ऐसा—वि० इस तरहका।
ऐहिक—वि० सांसारिक, इहलौकिक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओ

ओं—अ० स्वीकृति सूचक या ब्रह्मसूचक शब्द।

ओंकना—अक्रि० कै करना। ऊबना, फिर जाना 'काँपि उठी कमला मन सोचति मोसों कहा हरिको मन ओंको।' सुदामा० ९

ओंगना—सक्रि० गाड़ीकी धुरीमें तेल देना।

ओंटना—सक्रि० देखो 'ओटना'।

ओंठ—पु० होंठ, लब।

ओंड़ा—वि० गहरा (देखो 'औंड़ा')। पु० गड्ढा।

ओक—पु० घर, स्थान (भू० २), आश्रम। नक्षत्रसमूह। अंजलि 'लैहौं री मा चंदा चहौंगो। कहा करौं जलपुट भीतरको बाहर ओकि गहौंगो।' सूबे० ५९। समूह। स्त्री० मतली।

ओकना—अक्रि० कै करना। भैंसकी सी आवाज़ करना।

ओकाई—स्त्री० वमन, कै। कै करनेकी इच्छा।

ओखद—पु० दवा। औषध।

ओखरी, ओखली—स्त्री० देखो 'उखली'।

ओखा—पु० बहाना। वि० 'धोखा' नहीं, खोटा। कठिन, टेढ़ा। रूखा सूखा। विरल या झीना।

ओग—पु० चन्दा, महसूल। 'सूर हमहिं मारग जिनि रोकहु घरते लीजे ओग।' सूबे० १५२। गोद (?) 'देखत नंद यशोदा रोहिणि अरु देखत ब्रजलोग। सूरश्याम गाइन सँग आवे नैया लीनो ओग।' सूबे० ८७ (३४० भी)

ओघ—पु० राशि, समूह, पुंज, प्रवाह।

ओछना—सक्रि० देखो 'ऊँछना'। 'कादत गुहत नहावत ओछत नागिन सी भ्वैं लोटी।' सूबे० ५८

ओछा—वि० क्षुद्र, नीच, खोटा। कम, छोटा। छिछला।

ओछाई—स्त्री० नीचता, छिछोरापन।

ओज—पु० तेज, कान्ति, प्रकाश।

ओझल—पु० आड़, ओट।

ओझा—पु० ब्राह्मणोंकी जातिविशेष। भूतप्रेत झाड़नेवाला।

ओट—स्त्री० रोक, आड़ 'बेगि करहु किन आँखिन ओटा।' रामा० १५२। शरण 'अजहूँ सोच विचारकै, गहि भक्तनि पद ओट।' ध्रुवदास

ओटना—सक्रि० रुई और बिनौलेको पृथक् करना। ओढ़ना, अपने ऊपर लेना।

ओटी—स्त्री० चरखी।

ओड़न—पु० प्रहार रोकनेकी वस्तु, ढाल।

ओड़ना—सक्रि० आड़ करना, रोकना, सहना 'होहिं कुठाय सुबन्ध सुहाये। ओड़ियहि हाथ असनिके घाये।' रामा० ३४५; 'ओड़ै सुभट सुभटकी घाई।' छत्र० ४५। फैलाना 'घर घर जाँचक भीख हित कर ओड़त कछु देहु।' पद्माभ० १५। ऊपर लेना, धारण करना 'सावधान ह्वै सोक निवारो ओढहु (मुँदरी) दक्षिण हाथ।' सूरा० ३८

ओढ़ना—सक्रि० कपड़े इत्यादिसे देह टँकना। अपने ऊपर लेना। पु० ओढ़नेका कपड़ा।

ओढ़नी—स्त्री० स्त्रियोंके ओढ़नेका कपड़ा। फरिया।

ओढर—पु० बहाना।

ओढ़ाना—सक्रि० कपड़े इत्यादिसे ढाँकना।

ओत—स्त्री० प्राप्ति, बचत, लाभ। आराम 'साहितनै सरजाके भय सों भगाने भूप मेरुमें लुकाने ते लहत जाय ओत हैं।' भू० ३५। आलस्य। पु० तानेका सूत। वि० बुना हुआ, गुथा हुआ।

ओता, ओंतो, ओत्ता—क्रिवि० उतना (विन० १८४), 'दुइजहि जोति कहाँ जग ओती।' प० ४५

ओद—वि० तर, भींगा हुआ 'अतिसय चपल सकल सुख-दायक निसिदिनि रहत केलिरस ओद।' सूसु० १८

ओदन—पु० भात।

ओदर—पु० उदर (प० २२)।

ओदरना—अक्रि० फटना। गिर पड़ना 'ओदरहि बुरुज जाहिं सब पीसा।' प० २५९

ओदा—वि० गीला, तर 'बिरहकी ओदी लाकरी सिलगि सिलगि उठि जागि।' साखी ४६

ओधना—अक्रि० बँधना, उलझना। काममें लगना। 'भारत होइ जूझ जौ ओधा।' प० १२२

ओनंत—वि० झुका हुआ 'मई ओनंत, फूल फरि साखा।'†

ओनचन—स्त्री० पैतानेकी रस्सी। [† प० १७०

ओनवना—अक्रि० झुकना, घिर आना, 'ओनई घटा परी जग छाहीं।' प० २७। टूटना।

ओना—पु० पानी निकलनेका रास्ता, निकास।

ओप—स्त्री० कान्ति, चमक, शोभा।

२५५८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओपना—सक्रि० साफ़ करना, चमकाना, प्रकाशित करना (राम० ९)। अक्रि० चमकना, देखो 'औपना'। 'ओपणी पियूष लेय नीकी भाँति ओपतो तो राधामुख चन्दकी समान चंद होवतो।' गुलाबकवि, (ललित २२४)

ओपनिवारी—स्त्री० चमकनेवाली 'हँसत सुआ पहँ आइ सो नारी। दीन्ह कसौटी ओपनिवारी।' प० ३७

ओपनी—स्त्री० पत्थर इत्यादिका टुकड़ा जिससे कोई वस्तु माँजी जाय। (उदे० 'ओपना')।

ओबरी—स्त्री० तंग कोठरी 'यह काजरकी ओबरी निकरो अंग बचाय।' दीन० २३९, (प० ३२५)

ओर—स्त्री० दिशा। पक्ष। पु० छोर, किनारा, अन्त 'पुनि होइ कठिन निवाहत ओरा।' प० ५४

ओरती—स्त्री० ओलती, ओरी 'नैन चुवहिं जस ओरति धारा।' प० २९२

ओरमना—अक्रि० लटकना 'फूलनके विविध हार, घोरिलन ओरमत उदार।' के० १६६

ओरा—पु० ओला, पत्थर 'गरहिं गात जिमि आतप ओरे।' रामा० २६९

ओरिया, ओरी—स्त्री० ओलती, छप्परका वह भाग जहाँसे पानी नीचे गिरता है। (रवि० ६६), 'मोरि दुइ नैन चुवैं जस ओरी।' प० १६७

ओलंदेजी—वि० हालैण्ड देशका।

ओलंबा, ओलंभा—पु० उपालम्भ, उलहना।

ओल—स्त्री० गोद। ओट, पर्दा। शरण। वह वस्तु या व्यक्ति जो जमानतमें रहे 'राजै चली छोड़ावै तहँ रानी होइ ओल।' प० ३१६। बहाना 'बैठी बहू गुरु लोगनिमें लखि लाल गये करि कै कछु ओल्यो।' माव० १२० 'देव इन्हें सुखसों सजिकै रससों रचिकै तजि लाजकै ओलै।' रति० १३ (सुजा० ७७)। वि० गीला

ओलती—स्त्री० देखो 'ओरी'।

ओलना—सक्रि० ओढ़ना, ऊपर लेना। परदा करना, रोकना। चुभाना।

ओला—पु० उपल, बिनौली। पर्दा, भेद।

ओलिक—पु० पर्दा, आड़।

ओली—स्त्री० गोद, अंचल। झोली।—**ओड़ना** = अंचल पसार कर कुछ याचना करना।

ओषधि, ओषधी—स्त्री० दवाकी जड़ी बूटी, दवा।

ओस—स्त्री० भाफ जो रातकी सरदीसे जमकर छोटे छोटे जलकणोंके रूपमें देख पड़ती है। शबनम।

ओसरी—स्त्री० पारी।

ओसाना—सक्रि० अनाजका भूसा उड़ाना।

ओसारा—पु० बरामदा, दालान। सायबान।

ओहट—स्त्री० ओट, आड़।

ओहार—पु० पालकी इत्यादिके ऊपर पड़ा हुआ कपड़ा, परदा। देखो 'उहार'। 'सुरंग ओहार मोति बहु लाये।' प० ३१५

औ।

औंगना—सक्रि० देखो 'ओंगना'।

औंघना, औंघाना—अक्रि० ऊँघना, अलसाना।

औंघाई—स्त्री० झपकी (प० २०५)।

औंजना—अक्रि० ऊबना, व्याकुल होना, घबराना (कविता० १७८)। उशिलना।

औंठ—पु० देखो 'ओंठ'। घड़े इत्यादिका उठा हुआ किनारा।

औंड़—पु० बेलदार। मिट्टी खोदनेवाला।

औंड़ा—वि० गहरा 'पहिले थाह दिखाइ करि औंड़े देखी आन।' साखी १३८। वि० उमड़ा हुआ।

औंदना—अक्रि० व्याकुल होना। उन्मत्त होना।

औंदाना—अक्रि० घबड़ाना, ऊबना।

औंधना—अक्रि० औंधा (उलटा) होना। सक्रि० उलटा देना।

औंधा—वि० उलटा (साखी १२१)। नीचा 'राजा रहा दृष्टि कै औंधी।' प० २२

औंधाना—सक्रि० उलटा करना। नीचा करना।

औ—अ० और।

औक़ात—स्त्री० हैसियत, सामर्थ्य। समय।

औगत—स्त्री० दुर्गति। वि० विदित, जाना हुआ।

औगाहना—अक्रि० देखो 'अवगाहना'।

औगुन—पु० अवगुण, दोष, ऐब।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

औगुनी—वि० दोषी। दुर्गुणी, निर्गुणी।
औघट—वि० अटपट, कठिन, दुर्गम। पु० दुर्गम मार्ग 'घाट छाँड़ि औघट धरयो' छत्र० १९
औघड़—पु० अघोरी। मनमौजी। वि० अटपट।
औघर—वि० अनगढ़, विचित्र।
औचक—क्रिवि० एकाएक, सहसा (सूबे० ७६, भाव० ४१) 'औचक दृष्टि परे रघुनायक।' के० २४२
औचट—स्त्री० कठिनाई, विकट स्थिति, संकट। क्रिवि० सहसा। भूलसे।
औचित—वि० निश्चिन्त।
औचिती—स्त्री० औचित्य।
औचित्य—पु० उपयुक्तता।
औज—स्त्री० ओज, तेज, बल, प्रकाश।
औजड़—वि० अनाड़ी, उजड्ड।
औझक—क्रिवि० औचक, अचानक।
औझड़, औझर—क्रिवि० लगातार।
औटन—स्त्री० उबाल, ताप।
औटना—सक्रि० आगपर रखकर गरम करना। खौलाना (प० १३८)। अक्रि० घूमना, भटकना। गरम होकर गाढ़ा होना, खौलना। पगना 'ना जेइ प्रेम औटि एक भयऊ।' प० १०७
औटाना—सक्रि० आँच देकर गाढ़ा करना, खौलाना।
औठपाय—पु० चालबाज़ी, शरारत।
औडर—वि० इच्छानुसार ढल पड़नेवाला, थोड़ेमें ही प्रसन्न होनेवाला (विन० ७२)।
औतरना—अक्रि०देखो 'अवतरना', 'पदमावति कन्या औतरी।' प० २२
औतार—पु० अवतार। उतरना, शरीर-ग्रहण। सृष्टि 'कीन्हेंसि बरन बरन औतारू।' प० १
औथरा—वि० कम गहरा, छिछला 'अति अगाध अति औथरो, नदी कूप सर बाय।' वि० १६९
औदसा—स्त्री० दुर्दशा, विपत्ति।
औध—पु० अवध, कोशल देश।
औध, औधि—स्त्री० सीमा, निर्धारित समय। अन्त [समय।
औधारना—सक्रि० देखो 'अवधारना', 'राखा छात, चँवर औधारा।' प० ३२५
औनि—स्त्री० अवनि, भूमि, धरती (भू० १२)।
औनिप—पु० राजा।
औपनी—स्त्री० देखो 'ओपनी'।
औम—स्त्री० अवम तिथि, वह तिथि जिसका क्षय हुआ हो।
और—अ० दो शब्दों या वाक्योंको मिलाने वाला शब्द। वि० दूसरा, भिन्न। अधिक। औरका और = कुछका कुछ, उलटा 'घटि बढ़िते बढ़ि घटि रकम की औरकी और।' वि० ९२
औरसना—अक्रि० विरस होना, रुष्ट होना।
औरासा—वि० विचित्र, विलक्षण, बेढंगा 'कहँ वियोग यह मिलनि कहाँ अब काल चाल औरासी।' सू० २७६, (भ्र० १३९)
औरेब—पु० टेढ़ी चाल। उलझन, पेंचकी बात।
औलना—अक्रि० गरमी पड़ना, तप्त होना, जलना।
औलिया—पु० सिद्ध पुरुष (साखी १२३)।
औशि—क्रिवि० अवश्य।
औषध—स्त्री० दवा।
औसर—पु० अवसर। समय, अवकाश, मौक़ा।
औसान—पु० अवसान, समाप्ति। नतीजा। पु० होश-हवास, चेत 'गै औसान सबन्ह कर देखि समुद कै बाढ़।' प० ७०
औसेर—स्त्री० देखो 'अवसेर' (भ्र० ८९)।
औहत—स्त्री० अपमृत्यु, दुर्गति।
औहाती—वि० स्त्री० सोहागिन, सौभाग्यवती।

क

कं—पु० सुख। जल। अग्नि। शिर। काम। कंचन।
कँउधा—पु० विद्युन्मभा।
कंक—पु० एक मांसाहारी पक्षी। सफेद चील 'काक कंक लेइ भुजा उड़ाहीं।' रामा० ५०४
कंकड़, कंकर—पु० एक खनिज पदार्थ। किसी चीज़का सख्त हिस्सा, रवा।
कंकण, कंकन—पु० कड़ा, ककना। दुलहा या दुलहिनके हाथमें बाँधा जानेवाला लोहेका छल्ला इत्यादि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कंकरीला—वि० जिसमें ककड़ोंकी अधिकता हो।
कंकाल—पु० अस्थिपंजर।
कंकाली—पु० नीच जाति-विशेष। वि० स्त्री० ककंशा।
कँखौरी—स्त्री० काँख। काँखकी फोड़िया।
कंगन, कँगना—पु० देखो 'कंकन'। 'राहू कंगन, टाढ़ सलोनी।' प० ४९
कँगनी—स्त्री० छोटा कंकन। दानेदार चक्कर। एक अन्न।
कंगला, कंगाल—वि० धनहीन, ग़रीब। अकालपीड़ित।
कँगहैरा, कँघेरा—पु० जातिविशेष (रवि० ३२, ३४)।
कँगुरिया—स्त्री० छिगुनी, सबसे छोटी उँगली।
कँगूरा—पु० शिखर, बुर्ज़।
कंघा—पु० बाल झाड़नेके लिए सींग इ० की बनी वस्तु।
कंघी—स्त्री० छोटा कंघा।
कंच—पु० काँच 'मनि गुन पुंज जु ब्रजपति छाँड़त हित-हरिवंस सुकर गहि कंचु।' हित०
कंचन—पु० सुवर्ण, सम्पत्ति।
कंचुक—पु० चोली। कवच। कँचुल।
कंचुकी—स्त्री० कँचली 'जैसे साँप कंचुकी कूँ लिये रहै कोउ दिन जीरन उतारि करि नूतन गहतु है।' सुन्द० १०५। सर्प। चोली। अन्तःपुरचारी वृद्ध ब्राह्मण।
कँचुरि, कँचुली—स्त्री० (साँपकी) कँचुल।
कँचुवा—पु० कंचुकी, चोली।
कंज—पु० कमल, ब्रह्मा, केश। [❀ एक जंगली पेड़।
कंजा—वि० गाढ़े खाकी रंगका। कंजे रंगकी आँखोंवाला। ❀
कंजूस—वि० कृपण। [† (अ० १३८)
कंट, कंटक—पु० काँटा, विघ्न, विघ्न डालनेवाला। †
कँटीला—वि० काँटेदार 'अब अलि रही गुलाबकी अपत कँटीली डार।' बि० १०७
कंठ—पु० गला। शब्द, स्वर। कण्ठा, हँसली। तोते इत्यादिके गलेकी रंगीन रेखाएँ।
कँठला—पु० देखो 'कठुला'।
कंठसिरी—स्त्री० गलेका एक गहना, कंठी 'कल हंसनि कण्ठनि कण्ठसिरी।' राम० २५२
कंठहरिया—स्त्री० कण्ठी।
कंठा—पु० गलेका भूषण-विशेष 'कुंजर-मनि-कंठा कलित उरन्ह तुलसिका माल।' रामा० १३३। तोते इत्यादिके गलेकी रेखाएँ 'हीरामन हौं तेहिक परेवा। कंठा फूट करत तेहि सेवा।' प० ४१
कंठी—स्त्री० छोटे दानोंका कंठा या माला।
कंडा—पु० गोहरी, उपली।
कंडाल—पु० तुरही नामक बाजा। एक तरहका ढोल।
कंडु—स्त्री० खुजली।
कंत—पु० कान्त, पति, ईश्वर।
कंथ—पु० कंत, स्वामी।
कंथा—स्त्री० गुदड़ी 'कंथा पहिरि दंड कर गहा।' प० ५७, (सूवे० ३२१)
कंद—पु० गूदेदार जड़। बादल।
कंदर—पु० गुफा 'अब बहु भये तकहु गिरि-कंदर।' रामा० ५१०। कन्द, मूल 'प्रकट्यो पूत्र सकल सुख-[कंदर।' सू० ४७
कंदरा—स्त्री० गुहा, गुफा।
कंदर्प—पु० कामदेव।
कंदा—पु० शकरकंद। घुइयाँ।
कंदुक—पु० गेंद। सुपारी। गेंडुआ।
कँदैला—वि० गंदला, मैला।
कंध—पु० कंधा, तनेका ऊपरी भाग जहाँसे बाहुएँ फूटती हैं।
कंधर—पु० गरदन 'केहरि कंधर चारु जनेऊ।' रामा० ८४। दशकंधर = दशग्रीव, रावण।
कंधा—पु० गर्दन और बाहुमूलके मध्यका भाग।
कंधार, कंधारी—पु० कर्णधार, मल्लाह (सू० ४५) 'जाकहँ ऐस होइ कंधारा। तुरत बेगि सो पावै पारा।' प० ८
कंधावर—पु० देखो 'कन्हावर'।
कँधेला—पु० साड़ीका छोर जो कंधेपर डाल लिया जाता है।
कंबर—पु० कंबल, ऊनका वस्त्रविशेष।
कंबु—पु० शंख।
कँवल—पु० कमल, पद्म 'भँवर आइ बनखंड सन लेइ कँवल कै बास।' प० १०, (साखी ३, १०४)
कंसताल—पु० झाँझ।
क—पु० ब्रह्मा, सूर्य, अग्नि, विष्णु इ०।
कई—वि० कतिपय, अनेक।
ककड़ी, ककरी—स्त्री० एक लम्बा फल।
ककनू—पु० एक तरहका पक्षी जिसके गायेसे घोंसलेमें आग लग जाती है और वह जल मरता है 'ककनू पंखि जैस सर साजा।' प० ६५
ककहरा—पु० 'क' से "ह" तकके अक्षर।
ककही—स्त्री० कंघी 'बैठे रसिक सँवारन बारन, क्रोमल कर ककही सों।' स्वामी हरिदास। कपासका एक भेद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ककोरना—सक्रि० खरोचना।

कगर—पु० बाट, मेंड, कुछ उठा हुआ किनारा। क्रिवि० किनारेपर। निकट। अलग।

कगरी—स्त्री०, **कगार**—पु० ऊँचा किनारा, करार। टीला। 'हंस-सुताकी सुंदरि कगरी अरु कुंजनकी छाहीं।' भ्र० ६८

कच—पु० केश, बाल। झुंड। पपड़ी।

कचनार—पु० एक वृक्ष।

कचपचिया, कचपची—स्त्री० कृत्तिका नक्षत्र। बहुतसे छोटे छोटे तारोंका समूह। 'पहिरे खुंभी सिंघलदीपी। जनौं भरी कचपचिआ सीपी।' प० ४८, 'औ सो चंद कचपची गरासा।' प० ७३। चमकीला बूँदा, सितारा।

कचबची—स्त्री० चमकदार बूँदा, सितारा।

कचरना—सक्रि० पाँवसे कुचलना, चूर करना, दबाना।

कचरी—स्त्री० एक बेल जिसमें छोटे छोटे अण्डोंकी तरह फल लगते हैं। पेहँटा। कचरीके सुखाये हुए टुकड़े। सुखाये हुए फल इत्यादि।

कचहरी—स्त्री० न्यायालय, दरबार।

कचाई—स्त्री० कचापन, अनुभवहीनता।

कचारना—सक्रि० दे मारना, पटकना, पटक कर धोना।

कचालू—पु० उबले हुए आलू, इ० के टुकड़े जिनमें नमक, मिर्च, मसाला पड़ा हो।

कचियाना—अक्रि० हिम्मत हारना, हिचकिचाना। झेंपना।

कचोची—स्त्री० 'कचपची', कृत्तिका नक्षत्र। जबड़ा।

कचुल्ला—पु० कटोरा, प्याला।

कचूमर—पु० भर्त्ता, गूदा, कुचली हुई वस्तु।

कचूर—पु० कचुल्ला, कटोरा 'नयन कचूर भरे जनु मोती।' पा० २०२। एक पौधा 'परहिं भूमिपर होइ कचूरू। परहिं कदलिपर होइ कपूरू।' प० १४८

कचोरा—पु० कटोरा 'नयन कचोर प्रेममद भरे।' प० ९०

कचौरी—स्त्री० कचौड़ी, एक तरहकी पूरी।

कच्चा—वि० बिना पका। कमज़ोर, कोमल, अपरिपुष्ट, अस्थायी, निःसार। (हिसाब इत्यादि) जो नियमानुकूल न हो। कच्ची मिट्टीका बना। अनभ्यस्त, अनुभवहीन, अपटु। ब्यौरेवार। पु० ढाँचा, मसविदा। जबड़ा।

कच्छु—पु० कच्छप, कछुआ।

कच्छप—पु० कछुआ। भगवान्‌का एक अवतार।

कछना—सक्रि० पहिनना, धारण करना 'स्याम रंग कछनी कछ लीन्ह।' छत्र० ३६

कछनी—स्त्री० छोटी धोती (सू० ८८), 'कटि कछनी पीताम्बर जोड़े हाथ लिये भौंरा चकडोरी।' सूबे० ७५। घुटनेतक रहनेवाला एक तरहका घाँघरा।

कछरा—पु० चौड़े मुँहवाला मिट्टीका बरतन।

कछार—पु० नदी-तटकी भूमि।

कछु, कछुक—वि० कुछ, थोड़ा।

कछुआ, कछुवा—पु० कच्छप।

कछोटा—पु० **कछोटी**—स्त्री० छोटी धोती। देखो 'काछनी'। 'खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजती, पीरी कछोटी।' रसखानि, (गीता० २९७)

कजरा—पु० काजल।

कजराई—स्त्री० कालापन।

कजरारा—वि० काजलवाला, अंजनयुक्त। काला 'भारे कजरारे तैसे दीरघ दँतारे मेघ मण्डल विहण्डैं जे वे शुण्डा दण्ड ताने ते।...पील खुलैं पीलखाने ते।' सुखदेव मिश्र।

कजरी—स्त्री० एक त्योहार। कालिख, स्याही। पु० एक तरहका धान 'बासमती, कजरी, रतनारी। मधुकर, ढेला, झीना सारी।' प० २७०। काली आँखोंवाली गाय।

कजरौटा, कजलौटा—पु० काजल रखनेकी डिबिया 'कजरौटा बरु होइ, लुकाठन औंजै नैना।' गिरधर

कजा—स्त्री० माँड़, काँजी। क़ज़ा = स्त्री० मृत्यु।

कज़ाक—पु० डाकू, बटमार 'जिहि मग दौरत निरदई, तेरे नैन कजाक।' रतन० २९

कजाकी—स्त्री० डाका, लूटमार। धोखा, छल, चालाकी 'तासौं कैसे चलै कजाकी।' छत्र० ३७

कट—स्त्री० नरकटकी चटाई, टट्टी। पु० गंडस्थल।

कटक—पु० सेना। साथरी। कंकण 'छोटे छोटे भुजन बिजायठ छोट कटक करमाहीं।' रघु० ४३

कटकई—स्त्री० सेना, कटक (रामा० ८७)।

कटकट—पु० दाँत पीसनेका शब्द।

कटकटना, कटकटाना—अक्रि० दाँत पीसना 'कटकटाहिं कोटिन्ह भट गरजहिं।' रामा० ४७३

कटकाई—स्त्री० कटक, सेना 'जो आवै मरकट कटकाई। जियहिं बिचारे निसिचर खाई।' रामा० ४३४

कटजीरा—पु० काला जीरा 'कूट काइफर सोंठि चिरैता कटजीरा कहुँ देखत।' सूबे० १३९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कटताल—पु० 'करताल' नामक काठका बना बाजा।

कटना—अक्रि० दो टुकड़े हो जाना, क्षत हो जाना। बीतना, दूर होना, नष्ट होना। आसक्त होना 'मनमोहन छबिपर कटी कहे कट्यानी देह।' बि० २८४

कटनास—पु० नीलकण्ठ।

कटनि—स्त्री० काट। प्रीति 'फिरत, जो अटकत कटनि बिन रसिक सुरस न खियाल।' बि० २१७

कटरा—पु० छोटा बाजार। भैंसका बाछा। कटार 'मोगरा द्विविद, तार कटरा, कुमुदनेजा, अंगद शिला, गवाक्ष विटप विदारे हैं।' राम० ४९६, 'कटरा काढ्यो पेटमे दये वाउपर घाउ।' छत्र० ६५

कटहर, कटहल—पु० एक पेड़ या उसका फल।

कटहा—वि० काट खानेवाला।

कटा—पु० मारकाट, हत्या, प्रहार, चोट 'बिज्जु छटासी अटापै चढ़ी सु कटाछनि घालि कटा करती हो।' जग० ९१

कटाऊ—पु० काट, काट-छाँट, बेलबूटा 'जावत कहिए चित्र कटाऊ। तावत पँवरिन्ह गने जड़ाऊ।' प० २७६

कटाक्ष, कटाच्छ—पु० आक्षेप। तिरछी चितवन।

कटार, कटारी—स्त्री० एक तरहकी छुरी या दुधारा हथियार।

कटि—स्त्री० कमर, लंक।

कटिजेब—स्त्री० करधनी 'अंगको कि अंगराग गेंडुआ कि गलसुई किधौं कटिजेब हीको उरको कि हारु है।' राम० २८९ (पाठा०)

कटियाना—अक्रि० कंटकित होना, रोमाञ्चित होना।

कटीला—वि० काँटेदार, नुकीला। तीक्ष्ण, तुरन्त प्रभाव डालनेवाला, मुग्ध करनेवाला।

कटु, कटुक—वि० कड़ुआ, तिक्त, अप्रिय 'कटुक कठोर कुवस्तु दुराई।' रामा० ३८४

कटैया—पु० काटनेवाला। स्त्री० भटकटैया।

कटोरा—पु० प्याला। **कटोरी**—स्त्री० प्याली।

कट्टर—वि० दृढ़। हठी। अंधविश्वासी। पक्का।

कट्याना—अक्रि० कंटकित होना, प्रेम या आनन्दसे रोमाञ्चित होना (उदे० 'कटना')।

कठकोला, कठफोड़वा—पु० एक पक्षी।

कठमल्लिया—पु० कंठी पहननेवाला। मिथ्या वेशधारी साधु।

कठला—पु० एक तरहकी माला।

कठवत, कठवता—पु० काठका बड़ा बरतन।

कठारा—पु० नदी इत्यादिका किनारा।

कठिन—वि० कड़ा, कठोर, दुष्कर। स्त्री० कठिनाई, संकट 'हमकौं कठिन परी गढ़माहीं।' छत्र० ६२

कठिनताई, कठिनाई—स्त्री० कड़ाई, कठोरता, असाध्यता, संकट।

कठुला—पु० एक तरहकी माला, हार (राम० १७८), 'उर बघनहा कंठ कठुला झहूले बार···' सू० ५५ (५७)

कठेठ, कठैठा—वि० कड़ा, दृढ़ 'वैर कियो सिव चाहत हो तब लौं अरि बाहौ कटार कठैठो।' भू० ९९

कठोरता, कठोरताई—स्त्री० कड़ाई, निर्दयता।

कठोरपन—पु० निष्ठुरता, निर्दयता।

कठौता—पु० काठका बड़ा बरतन 'छोटोसो कठौता भरि आनि पानी गंगाजूको···' कविता० १६६

कड़कड़ाना—अक्रि० 'कड़कड़' आवाज़ करना। सक्रि० खूब गरम करना (बी इ०)।

कड़वा—देखो 'कड़ुआ'।

कड़ा—वि० सख्त, दृढ़, रूखा, कठोर, प्रचंड, कठिन। पु० हाथ या पैरका चूरा। कुंडा।

कड़ाई—स्त्री० सख्ती, कठोरता, दृढ़ता।

कड़ाका—पु० टूटनेकी आवाज़। लंघन (दिन भरका सड़ाका)।

कड़ाही—स्त्री० लोहेका कुंडेदार छोटा गोल पात्र।

कड़िहार—पु० काढ़नेवाला, उद्धारक 'अस अवसर नहिं पाइहौ धरौ नाम कड़िहार।' साखी ९४

कड़ी—स्त्री० जंजीरका एक छल्ला, हुक।

कड़ुआ—वि० कटु, जिसका स्वाद नीम इत्यादिकी तरह अप्रिय हो। तीक्ष्ण स्वभावका, क्रोधी। अप्रिय।

कड़ुआना—अक्रि० कड़ुआ लगना। नाराज़ होना।

कड़ेरा—पु० खरादनेवाला।

कढ़ना—अक्रि० निकलना, उदय होना, बाहर आना (सू० १३९), 'पियत रहै अधरानिको रस अति मधुर अमोल। तातें मीठो कढ़त है बाल बदनते बोल।' रस० ४९। लाभ निकलना 'तुम तो सुघर स्यानी कहिये सबेई बात, चलिये जरूर बैठे कहौ का कढ़त है।' श्री हठी

कढ़नी—स्त्री० मथानी घुमानेकी रस्सी।

कढ़राना, कढ़लाना—सक्रि० घसीट कर बाहर करना 'सूर तबहुँ न द्वार छाँड़ै डारिहौ कढ़राइ।' सूवि० २८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कढ़वाना, कढ़ाना—सक्रि० निकलवाना, खिंचवाना 'पुनि जस कबहुँ कहसि घरफोरी। तौ धरि जीभ कढ़ावहुँ तोरी।' रामा० २०५

कढ़ी—स्त्री० एक तरहका सालन। बेसनसे बना हुआ एक तरहका द्रव व्यञ्जन।

कढ़ोरना—सक्रि० घसीटना।

कण—पु० बहुत छोटा टुकड़ा, रवा, एक दाना।

कत, कतक—क्रिवि० क्यों, किस लिये। 'बिन पूछे ही धर्म कतक कहिये दहिये हिय।' नन्ददास। किस तरह 'सिरिस सुमन कत बेधिय हीरा।' रामा० १४०

कतरना—सक्रि० कैंची इ० से काटना।

कतरब्यौंत—स्त्री० काट-छाँट। युक्ति, सोचविचार।

कतरा—पु० टुकड़ा। (क़तरा = बूंद)

कतलबाज—पु० बधिक, संहार करनेवाला।

कतवार—पु० कूड़ा करकट 'ज्ञानहिंकी बढ़नी मनो हाथ लै कायरता कतवार बुहारै।' गुरु गो०। कातनेवाला।

कतहुँ, कतहूँ—क्रिवि० कहीं, किसी जगह 'कतहुँ रहउ जौं जीवत होई।' रामा० ४०५

कता—स्त्री० आकार। काटछाँट। ढंग। श्रेणी, पंक्ति।

कतार—स्त्री० श्रेणी, पंक्ति। समूह।

कतारी—स्त्री० ढंग।

कति—वि० कितने, कितने ही, कौन।

कतिक—वि० 'कितेक', कितना। कैसे। थोड़ा। बहुत, अनेक।

कतेक—वि० कितने। थोड़ेसे, कुछ। अनेक।

कत्ता—पु० एक तरहकी छोटी तलवार, छुरी (उदे० 'अकह')।

कत्ती—स्त्री० एक तरहकी पगड़ी। दे० 'कत्ता'।

कत्थई—वि० कत्थेके रंगका।

कत्था—पु० खैर।

कथक—पु० कथा कहनेवाला।

कथना—सक्रि० कहना, बोलना 'ऊधो कहा कथत विपरीति।' भ्र० ५२

कथनी—स्त्री० बात, कथन 'जब लग अपना आप न जाणै तब लग कथनी काची।' दादू०। बकवाद 'जब लग कथनी हम कथी दूर रहा जगदीस।' साखी १८

कथरी—स्त्री० गुदड़ी।

कथा—स्त्री० आख्यान, कहानी, बात, हाल, झगड़ा।

कथोर, कथील—पु० राँगा 'काँच कथीर अभीर भर जतन करत है भंग। साधू कंचन ताइए चढ़ै सवाया रंग।' साखी ७९

कथोपकथन—पु० वाद-विवाद, बातचीत।

कदंब—पु० झुंड, समूह। एक पेड़।

कदध्व—पु० बुरा मार्ग, कुपथ।

कदन—पु० युद्ध, नाश, हत्या। छुरी 'बिरह कदन करि मारत लुंजे।' भ्र० ३६

कदम—पु० एक पेड़, कदम्ब वृक्ष (सू० १८१)। समूह 'सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदम टारे।' सूबे ६०; डग, चरण।

कदरई—स्त्री० कायरता। देखो 'कदराई'।

कदरज—पु० एक पापीका नाम। वि० कंजूस।

कदरमस—स्त्री० मारपीट, लड़ाई।

कदराई—स्त्री० कायरता, भीरुता 'रिपुपर छपा परम कदराई।' रामा० ३७२

कदराना—अक्रि० डरना, कचियाना, पीछे हटना 'तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू।' रामा० २८६

कदरो—स्त्री० मैनाके बराबर एक पक्षी।

कदर्थना—स्त्री० दुर्गति, विडम्बना, बुरी हालत।

कदली—पु० केला।

कदाच, कदाचि—क्रिवि० कदाचित्, शायद, कभी। 'जो कदाचि मोहि मारिहैं तौ पुनि होउँ सनाथ।' [रामा० ३९९

कदीम—वि० पुराना।

कधी—क्रिवि० कभी (साखी ५४)।

कनंक,—पु० सोना 'पुन्य कालन देत विप्रन तौलि तौलि कनंक।' के० १३५

कन—पु० अन्नका एक दाना, 'कूकसके कूटे कहूँ निकसत कन है।' सुन्द० १३। छोटा टुकड़ा, रेतका कण, बूँद, प्रसाद, भिक्षान्न 'कै पढ़िबो कै तपोधन है कन माँगत बाँभनै लाज नहीं।' सुदामा० २, 'राखत हैं जनकी परतिज्ञा हाथ पसारत कनको।' सू० २

कनउँड़ी—स्त्री० दासी 'मन लागेउ तेहि कमलके दंडी। भावै नाहीं एक कनउँड़ी।' प० २८०

कनउड़—वि० काना, या अपंग। निन्दित। लज्जित। एहसानमन्द, उपकृत 'हमैं आजु लग कनउड़ काहु न कीन्हेंउ। पारबती तप प्रेम मोल मोहिं लीन्हेंउ।' पार्वती मंगल।

कनक—पु० सोना, धतूरा (वि० ८२)। टेसू। स्त्री० आटा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कनककली—पु० कानका एक आभूषण, कौंग।

कनकना—वि० तनिकमें टूटनेवाला, ज़रामें चिढ़नेवाला। 'नेहिनके मन काँचसे अधिक कनकने आइ।' रतन० ७७

कनकानी—पु० घोड़ेकी एक जाति।

कनकौआ—पु० गुड्डी, पतंग।

कनखी—स्त्री० दूसरोंकी नज़र बचाकर देखनेकी क्रिया। आँखका इशारा।

कनखैया—स्त्री० 'कनखी'। तिरछी नज़र।

कनगुरिया—स्त्री० सबसे छोटी उँगली, छिंगुली 'अब जीवनकी है कपि आस न कोइ। कनगुरिया कै मुँदरी कंकन होइ।' बरवै रामा०

कनधार—पु० कर्णधार, केवट।

कनपटी—स्त्री० कान और आँखके मध्यका भाग।

कनफुँका, कनफुँकवा—वि० कान फूँकनेवाला, दीक्षा देनेवाला। जिसने कान फुँकाया हो। पु० कान फूँकनेवाला गुरु।

कनफूल—पु० कानका एक गहना। तरौना।

कनय—पु० कनक, सोना 'बिजुरी कनय कोट चहुँपासा।' प० ७३

कनहुई—स्त्री० आहट।—लेना = आहट लेना, भेद लेना। गोबरकी गौर फेंककर सगुन विचारना।

कनहार—पु० कर्णधार, केवट (रामा० १४१)।

कनाउड़ा, कनावड़ा—वि० देखो 'कनौड़ा'।

कनागत—पु० पितृपक्ष।

कनिआरी—स्त्री० कनक, चम्पावृक्ष (उदे० 'करना')।

कनिका—पुं० 'कनूका', किसी वस्तुका अति सूक्ष्म भाग।

कनिगर—पु० अपनी 'कानि' रखनेवाला।

कनियाँ—स्त्री० गोद, उछंग 'खसि खसि कान्ह परत कनियाँ ते। दै ससि कहत नन्द रनियाँ ते।' ब्रजवि० 'जेंवत श्याम नन्दकी कनियाँ।' सू० ६३

कनियार—पु० देखो 'कनिआरी'।

कनिहार—पु० मल्लाह 'ज्यूँ कनिहार न भेद करै कछु आइ चढ़ै तिहि नाव चढ़ावै।' सुन्द० १३८

कनी—स्त्री० हीरे, चावल आदिका छोटा टुकड़ा। बूँद 'अलकी भरिभाल कनी जलकी, पुट सूखि गये मधुराधर द्वै।' कविता० १६६, (सू० ९७)। मींगी 'कूकस कूटै कनि बिना, बिन करनीका ज्ञान।' साखी ८७

कनेर—पु० कनेर वृक्ष या उसका फूल (ललित० ९१)।

कनूका—पु० अनाजका दाना 'जीवै जग जाते जग जीवको कनूका मिलै मिलै भली बात यह काम मरदईको।' गोपालचन्द्र मिश्र, (भ्र० ४७)

कने—क्रिवि० निकट, पास

कनेखी—स्त्री० देखो 'कनखी'।

कनोई—पु० कानका मैल, खोंट 'कानन कनोई नाक चपटी चुवत रैंट कारे कारे दन्तनमें कीट लपटानो है।' बेनी

कनौड़ा—वि० काना या अपंग। बदनाम, तिरस्कृत, लज्जित। उपकृत, एहसानमंद (सू० ९३)। नीच, क्षुद्र 'ह्वै रही कनौड़ी मति, कौड़ी भई गोपी अति डौंड़ी फिरी लौंड़ीकी न लाज धारियतु है।' दीन० ५१

कनौती—स्त्री० पशुका कान या कानकी नोक 'चलत कनौती लई दबाई। चमर शिखाहू हलन न पाई।' लक्ष्मणसिंह। बाली। कान खड़ा करनेका ढंग।

कन्या—स्त्री० लड़की, पुत्री, सुता।

कन्हावर—पु० वह चद्दर जो कंधेपर डाला जाता है। जुएका वह हिस्सा जो बैलकी गर्दनपर रहता है।

कन्हैया—पु० श्रीकृष्ण। सुन्दर बालक। प्रिय व्यक्ति।

कपट—पु० छिपाव, छल।

कपटना—सक्रि० काटना। काटकर अलग निकालना।

कपड़ा, कपरा—पु० वस्त्र 'मन न रँगावे, रँगावे जोगी कपरा।' कबीर

कपरौटी—स्त्री० कपड़-मिट्टी। ओषधि इत्यादि फूँकते समय गीली मिट्टीके लेपके साथ संपुटपर कपड़ा लपेटनेकी क्रिया।

कपर्दिनी—स्त्री० दुर्गा, चंडिका।

कपाट—पु० किवाड़।

कपार, कपाल—पु० सिर, खोपड़ी 'फोरइ जोग कपारु अभागा।' रामा० २०६

कपालक—पु० शैव मतके साधु जो नर-कपाल लिये रहते हैं।

कपालिका—स्त्री० काली। खोपड़ी।

कपाली—पु० शिव, भैरव।

कपास—पु० रुईका पौधा।

कपि—पु० बन्दर। हाथी।

कपिकेतु, कपिध्वज—पु० अर्जुन।

कपिला—वि० स्त्री० सफेद या भूरे रंगवाली। बहुत सीधी। स्त्री० सफेद रंगवाली या सीधी गाय।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कपिश, कपिस—वि० मटमैला। पीलाभूरा।
कपिस—पु० रेशमी वस्त्र 'कनक कपिसपर शोभित सुभग साँवरे अंग।' हित हरि०
कपूत—पु० कुपुत्र। कुलका नाम डुबानेवाला लड़का।
कपूर—पु० एक सफेद सुगन्धित जमा हुआ पदार्थ जो धीरे धीरे हवामें उड़ जाता है।—खाना = विष खाना ['बूड़े जलजात कूर कदली कपूर खात दाड़िम दरकि अंग उपमा न तौलै री।' बेनी प्रवीन]
कपोत—पु० कबूतर।
कपोल—पु० गाल।
कप्पर—पु० कपड़ा।
कफ—पु० बलग़म, श्लेष्मा। शरीरके अन्दरकी एक धातु। पु० आस्तीनका अगला हिस्सा। लोहेका टुकड़ा जो चकमकसे आग निकालनेमें काम देता है 'काया कफ चित्त चकमकै झारौं बारम्बार।' कबीर
कफन खसोटी—स्त्री० कफन फाड़कर लिया जानेवाला डोमोंका कर। कंजूसी।
कबंध—पु० मुंडहीन धड़। केतु। एक राक्षस। पेट। मेघ।
कब—क्रिवि० किस समय। कबको, कबते = देरसे। कब कब = बहुत कम
कबरी—स्त्री० चोटी, वेणी 'कबरी-भारनि रचैं आनि अवली गुंजनकी।' दीन० २३८
कबाय—पु० एक तरहका ढीला कपड़ा।
कबार—पु० रोज़गार, व्यवसाय (रामा० २४७)। लेनदेन। यश-कीर्त्तन 'मागध सूत भाट नट याचक जहँ तहँ करहिं कबार।' गीता० २७२
कबाहट, कबाहत—स्त्री० बुराई, अड़चन, झंझट।
कबीला—स्त्री० स्त्री, परिवार 'भाई बन्धु अरु कुटुम्ब कबीला, सुमिरि सुमिरि पछतैहैं।' सू० २८१
कबुलाना—सक्रि० क़बूल कराना।
कबूतर—पु० एक पक्षी, कपोत।
कबूलना—सक्रि० स्वीकार करना।
क़ब्ज़ा—पु० अधिकार। मूँठ। लोहे या पीतलके जुड़े हुए टुकड़े जो किवाड़को थामे रहते हैं।
कभी, कभू—क्रिवि० किसी समय।
कमंडल—पु० साधुओंका जलपात्र।
कमंडली—वि० कमण्डल रखनेवाला, साधु। पाखण्डी। पु० ब्रह्मा।
कमंद—पु० रस्सीका फंदा। कबन्ध, मुण्डहीन धड़ 'माथा टूटै धर लरै कमँद कहावै सोय।' साखी २९
कमची—स्त्री० पतली छड़ी, तीली।
कमठी—स्त्री० कछुई। कमची।
कमना—अक्रि० कम होना, घटना 'कमै न कौनहु वस्तु समै महँ'—रघु० १४
कमनी—वि० 'कमनीय,' सुन्दर 'ऊँचो जामें बँगला, कमनी सरवर तीर।' चाचा हित वृंदा०
कमनैत—पु० तीरन्दाज 'ज्यों कमनैत दमानकमें फिरि तीरसों मारि लै जात निसानो।' रहीम ३१ (छत्र० १४५)
कमनैती—स्त्री० तीरन्दाजी, बाण चलानेकी विद्या 'टूक टूक कंचुकि करी करि कमनैती काम।' रस० ४१
कमर—स्त्री० कटि।
कमरिया—स्त्री० कमर, कटि। छोटा कम्बल 'काँधे कमरिया करन लकुटिया, विहरत वन बछ साथ।' सू० ७४
कमरी—स्त्री० छोटा कम्बल 'या कमरीके एक रोमपर वारौं चीर नील पाटंबर।' सूबे० १३५
कमल—पु० पंकज, पद्म, वारिज, अरविंद, अंबुज, वनज।
कमला—स्त्री० लक्ष्मी। सम्पत्ति। पु० ढोला नामक कीड़ा।
कमाइच—स्त्री० सारंगी बजानेकी कमानी 'बीना वेनु कमाइच गहे। बाजे अमृत तहँ गह गहे।' प० २६०
कमान—स्त्री० धनुष। तोप या बन्दूक 'कमान कैसो गोला हनुमान चल्यो लंकको' राम० ३१५। 'चलीं कमानैं जिन्ह मुख गोला।' प० २४९
कमाना—सक्रि० कोई उद्यम करके धन प्राप्त करना, अर्जन करना, कर्म करना। श्रमद्वारा उपयुक्त बनाना (चमड़ा इ०)। कम करना।
कमानियाँ—पु० कमनैत, तीरन्दाज़।
कमानी—स्त्री० लोहे इ० की लचीली तीली। कमानके ढँगकी तीली या लकड़ी।
कमाल—वि० परिपूर्ण, उत्तम 'ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोहबत हो बादमें गुसैंयाके हमेस बिरमा रहैं।' ग्वाल। बहुत अधिक। पु० निपुणता, कारीगरी। कोई विलक्षण काम।
कमीना—वि० क्षुद्र, ओछा।
कमुकंदर—पु० धनुष तोड़नेवाले श्रीरामचन्द्र।
कमोदन, कमोदिन, कमोदिनी—स्त्री० कुमुदनी, कोई 'जलमें बसे कमोदिनी चंदा बसै अकास।' साखी ५२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कमोदिक—पु० 'कामोद' राग गानेवाला व्यक्ति, गवैया।

कमोरी—स्त्री० दूध, दही इत्यादि रखनेके लिए मिट्टीका छोटा बरतन 'कहि धौं मधुप, वारि मथ माखन, कौनै भरी कमोरी।' भ्र० ४७, 'माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागे खान।' सूबे० ६२

कया—स्त्री० काया। शरीर 'कया दहत चंदनु जनु लावा।' प० ७३

करंक—पु० अस्थिपंजर 'कागा करँक ढँढोलिया, मुट्ठी इक लिया हाड़।' साखी ४२

कर—(प्रत्यय) का, 'नारदकर उपदेस सुनि कहहु बसेउ को गेह।' रामा० ४८। पु० हाथ। सूँड़। किरण। राजस्व।

करक—पु० अनार। पलास। कचनार। मौलसिरी या करील। कमण्डलु। ठठरी। स्त्री० 'कड़क', 'कसक', ठहर ठहरकर होनेवाली पीड़ा। रगड़ इत्यादिका चिह्न।

करकट—पु० घासपात, कूड़ा 'ज्यों जल खाँड समाइ, फिरै करकट उतरानो।' भगवत रसिक

करकना—अक्रि० कड़कके साथ टूटना। तड़कना, चिटकना, फूटना। गड़ना, कसकना 'नहिं जानत कान्ह तिहारे कटाछकी कोरै करेजनमें करके।' भाव० १०

करकरा—वि० खुरखुरा, स्पर्श करनेसे जिसके कण अंगुलियोंमें गड़ें।

करकस—वि० कर्कश, कड़ा, कठोर। प्रचण्ड, तीव्र। काँटेदार।

करखना—अक्रि० उत्तेजित होना, जोशमें आना 'ता दिन अखिल खलभलैं खल खलकमें जा दिन सिवाजी गाजी नेक करखत हैं।' भू० ७४

करखा—पु० बढ़ावा, ताव, जोश 'रात दिवस बरषत झर लाये दिन दूनी करखा सों।' सू० २५९। पु० करिखा, कालिख।

करगस—पु० तीर 'करगस सम दुर्जन बचन, रहै संतजन टारि। बिजली परै समुद्रमें कहा सकैगी जारि।' साखी १५१

करगह—पु० जुलाहोंके कारखानेकी नीची जगह जिसमें कपड़ा बुनते समय पाँव लटकाये जाते हैं। जुलाहोंका कारखाना, या वस्त्र-वयन यंत्र (कर्घा)।

करगी—स्त्री० बाद। चीनी खुरचनेका औज़ार।

करछुल—स्त्री० दाल इ० निकालनेका बड़ा चम्मच।

करज—पु० नख। अँगुली। 'कंजा' नामक पेड़।

करट—पु० कौआ (भ्र० ११०) 'वह तो सम्मुख मलिन सर करटनकी मिरियासि।' दीन० २०८

करतब—पु० करतूत, काम 'विधि करतब उलटे सब अहहीं।' रामा० २५६

करतरी, करतली—स्त्री० कैंची, छुरी। 'निसि बासर मग करतली, लिये काल कर वाहि। कागद सम भइ आयु तव, छिन छिन कतरत ताहि।' ध्रुवदास

करतव्य—पु० करने योग्य काम, धर्म। वि० करणीय।

करतार—पु० ईश्वर, ब्रह्मा (रामा० ४५८)। पु० झाँझ, मँजीरा 'नृत्यति नूपुर बाँधि कै गावत लै करतार।' ध्रुवदास

करतूत, करतूति—स्त्री० काम, करनी। गुण।

करद—वि० कर देनेवाला, अधीन। आश्रय देनेवाला। स्त्री० छुरी '...सुधिकी करद लगे क्यों न उर फाटि है'—दीन० ४९। 'काला मुँह कर करदका दिलसे दुई निवार।' साखी १७७

करदम—पु० कीचड़। पाप। मांस।

करधनी—स्त्री० कमरका एक आभूषण।

करधर—पु० मेघ, बादल।

करनधार—पु० कर्णधार, केवट, पतवार।

करनफूल—पु० कानका एक आभूषण (रवि० ६१)।

करनवेध—पु० 'कर्णछेदन' संस्कार।

करना—सक्रि० निबटाना, सम्पादित करना। पति या पत्नी रख लेना 'वह रावरे पितु करी पत्नी तजी विप्रन थूँकि कै।' राम० १२६। बनाना, पकाकर तैयार करना 'जो नरेस मैं करउँ रसोई।' रामा० ९४। किसी रूप-विशेषमें परिणत कर देना। पहुँचाना, रखना। पु० कर्म, करतूत। एक पौधा 'जाही जूही सेवती करना कनिआरी। बेलि चमेली मालती बूझति दुमडारी।' सूबे० २२०

करनाटकी—पु० करनाटदेशवाला। जादूगर। कलाबाज़।

करनाल—पु० एक तरहकी तोप (भू० १६४)। भोंपा। बड़ा ढोल।

करनी—स्त्री० कार्य, करतूत (रामा० १४९)। अन्त्येष्टि क्रिया।

करपर—स्त्री० खोपड़ी। वि० कृपण।

करपरी—स्त्री० पीठीकी पकौड़ी या बरी।

करबुर—पु० सोना। धतूरा। राक्षस। पाप। वि० चितकबरा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करम—पु० हाथी या ऊँटका बच्चा, हाथकी पीठ। कटि।
करम—पु० कर्म, कार्य। भाग्य।
करमट्टा—वि० कंजूस।
करमठ—वि० कर्मनिष्ठ।
करमात—पु० कर्म, भाग्य।
करमाली—पु० सूर्य।
करमी—वि० कर्म करनेवाला, कर्मनिष्ठ।
करमुखा, करमुहाँ—वि० काले मुखवाला, कलंकी। 'जनु बुँबची ओहि तिल करमुही।' प० ४८
करना, करराना—अक्रि० कर्णकटु शब्द करना। (छत्र० १३१)। चरमरा कर टूटना।
करान—स्त्री० धनुष चलानेकी आवाज़, टंकार।
करी—पु० ममरी, वनतुलसी।
करल—पु० कड़ाही।
करला—पु० 'कल्ला', कोमल पत्ता।
करली—स्त्री० कनखा, कोमल पत्ता।
करवट—पु० बाजूके बल लेटनेकी स्थिति। पु० करपत्र, आरा। —लेना = आरे व चक्रके नीचे पुण्य-लाभकी आशासे प्राण देना (अ० ४२)।
करवत—पु० आरा (उदे० 'करसी')।
करवर—स्त्री० घात। संकट 'करवर टरी आज सीताकी' राम रसायन, 'करवर टरी बड़ी मेरेको घर घर आनंद करत बधाई।' सुबे० ४८, (राम० १९४)। पु० तलवार 'तब पंचम नृप करवर काढ्यो। निज सिर देत भगति रस बाढ्यो।' छत्र० ६
करवा—पु० मिट्टीका टोंटीदार बरतन।
करवार, करवाल—पु० तलवार 'मतिराम कहै करवारके कसैया केते गाड़रसे मूँड़े जग हाँसीको प्रसंग भो।' ललित० २०, (अ० १२२)
करवाली—स्त्री० छोटी तलवार।
करवीर—पु० कनेर वृक्ष (भू० ८)। करील। खड्ग।
करवील—पु० करील वृक्ष 'केतकी करवील बेलठ विमल बहुविधि मंज।' सू० २०६, (अ० १२४)
करवैया—वि० करनेवाला।
करवोटी—पु० एक पक्षी।
करष—पु० खिंचाव, मनमुटाव, वैर 'कन्त करष हरिसन परिहरहु।' रामा० ४३३। क्रोध। जोश।
करषक—पु० कृषक, किसान।
करषना, करसना—सक्रि० खींचना, तानना 'निज मायाकै प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्ह।' रामा० ७९, 'यशुमति रिस करि करि रजु करषै।' सूबे० ६६, (सूरा० ४२)। बुलाना, बटोरना। सुखाना।
करसाहल, करसायर, करसायल—पु० कृष्णसार, ‡ कालामृग।
करसान—पु० किसान।
करसी—स्त्री० उपलोंका चूरा। कण्डा। कण्डेकी आग 'सिर करवत तन करसी बहुत सीझ तेहि आस।' † [†प० ५०
करह—पु० ऊँट। पु० पुष्पकलिका।
करहाट, करहाटक—पु० कमलकी जड़, मुरार। कमलके फूलके भीतरकी छतरी (दास १०६)।
कराँकुल—पु० जलके पास रहनेवाला एक पक्षी। क्रौंच।
करा—स्त्री० कला 'अस भा सूर पुरुष निरमरा। सूर चहि दस आगर करा।' प० ७
कराई—स्त्री० कालापन ['ऐ जमुना-जल-रंग रँगे हैं ते अजहूँ नहिं तजत कराई।' सू०]
करार—पु० नदीका ऊँचा किनारा '...माँगत नाव करार है ठाढ़े।' कविता० १६५, (मुद्रा० ७२)
करारना—अक्रि० काँ काँ करना, कर्कश शब्द निकालना 'बाणी मधुर जानि पिक बोलत कदम करारत काग।' सूबे० २२१
करारा—पु० टीला। नदीका ऊँचा किनारा 'लखन बीच पय उतर करारा।' रामा० २६२। कौआ। वि० कड़ा, तेज, उग्र, दृढ़, घोर, भयावना। 'धरणि अकास बराबर ज्वाला झपटत लपट करारी।' सूबे० ९४
कराल—वि० भीषण, भयावना (कराली वि० स्त्री० भयावनी)
कराह, कराहा—पु० कड़ाह।
कराहना—अक्रि० क्लेश सूचक शब्द मुखसे निकालना।
कराही—स्त्री० कड़ाही।
करिंद—पु० करीन्द्र, उत्तम हाथी। ऐरावत हाथी।
करिखई, करिखा—स्त्री० कालापन, कालिख (रहीम ११०)।
करिनी—स्त्री० हथिनी।
करिया—वि० काला 'करिया मुख करि जाहु अभागे।' रामा० ४७७। पु० पतवार। केवट, कर्णधार 'साधु परद्धन लेह, नाव करिया गहि बोरै।' नरहरि, 'उन बिनु ब्रजवासी यों सोहत ज्यों करिया बिनु नाव।' अ० १३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करियाई—स्त्री० कालापन। कारिख।

करियारी—स्त्री० लगाम, बाग।

करिल—वि० काला 'करिल केस बिसहर बिस भरे।' प० २७। स्त्री० कल्ला, कोंपल 'उठी करिल नइ कोंप सँवारी।' प० २०७

करिहाँ—स्त्री० कमर 'कै गई काटि करेजनिके कतरे कतरे पतरे करिहाँकी।'—पद्माकर, 'नलिन खंड दुइ तस करिहाँऊँ।' प० २०१

करी—पु० कली 'यों करवीर करी वन राजैं।' के० २४५, 'नवल बसन्त सँवारी करी।' प० २७। कड़ी, धरन 'सब चन्दनकी शुभ शुद्ध करी।' के० १७४। हाथी।

करीना—पु० केराना, मसाला। टाँकी। **क़रीना**—पु० [क्रम।

क़रीब—क्रिवि० लगभग। पास।

करीम—पु० परमेश्वर। वि० कृपालु।

करीर, करील—पु० एक पत्रहीन पेड़। टेटीका पेड़।

करीष—पु० सूखा और कड़ा गोबर, बनकण्डा।

करीस—पु० गजेन्द्र 'सोक-सरि बूड़त करीसहिं दई काहू न टेक।' विन० ४९९

करुआ—वि० कटु, अप्रिय 'रहिमन करुए मुखनकी चहिये यही सजाय।' रहीम

करुआई—स्त्री० कडुआपन।

करुआना, करुवाना—अक्रि० दुखना 'सूर तिन्हैं तुम रवि दरसावत, यह सुनि सुनि करुआति।' भ्र० ५२। सक्रि० कडुआ लगनेपर मुँह बनाना 'पटरसके परकार जहाँलगि लै लै अधर छुआवत। विश्वंभर जगदीश जगतगुरु परसत मुख करुवावत।' सूवे० ५४

करुखी—स्त्री० कनखी, तिरछी चितवन।

करुणा, करुना—स्त्री० दया।

करुर, करुवा, करू—वि० कडुआ।

करेजा—पु० हृदय, कलेजा।

करेणुका, करेनुका—स्त्री० हथिनी।

करेर—वि० कठोर, कड़ा 'सत्ताको सपूत राव संगरको सिंह सोहै जैतवार जगत करेरी किरवानको।' ललित० ४८, 'हौं न कबूलत बाँधि कै मोल करत करेरो।' विन० ३५६

करोंट—पु० करवट 'मैं बरजी कै बार तू, इत कित लेत करोंट।' बि० १०७

करोंटी—स्त्री० चोपड़ी। करवट।

करोदना, करोना—सक्रि० खुरचना।

करोर—वि० सौ लाख।

करोला—पु० गडुआ 'लसत अमोले कनक करोले।' [रघु० १६३

करौंछा—वि० काला।

करौंजी—स्त्री० 'कलौंजी', मँगरैल।

करौंट—पु० देखो 'करोंट'।

करौंदा—पु० एक कटीला पेड़ व उसके फल 'राइ करौंदा होत है कटहर होत न राइ।' रहीम। कानके पासकी†

करौनी—स्त्री० आरी। काँचका छोटा पात्र। [† गिलटी।

करौला—पु० शिकारी 'धाइ कै सिंह कहो समुझाय करौलनि आय अचेत उठाए।' भू० ३५

कर्क—पु० केंकड़ा, एक राशि। अग्नि।

कर्कट—पु० केंकड़ा, कर्क राशि। लौकी।

कर्कश—वि० कठोर। पु० ऊख। तलवार।

कर्ज़, कर्ज़ा—पु० ऋण।

कर्ण—पु० कान। कुन्तीका एक पुत्र।

कर्णधार—पु० केवट, नाविक। पतवार।

कर्त्तव—पु० काम, करतूत।

कर्त्तव्य—पु० करने योग्य काम, फर्ज़। वि० करणीय।

कर्त्ता—पु० करनेवाला, बनानेवाला, प्रभु।

कर्दम—पु० कीचड़। पाप। छाया।

कर्नेता—पु० घोड़ोंका एक भेद।

कर्पूर—पु० कपूर।

कर्बुर—वि० धूमला (भ्र० ९२)। देखो 'करबुर'।

कर्म—पु० 'करम', कार्य, कर्त्तव्य। भाग्य। अन्त्येष्टि क्रिया।

कर्राना—अक्रि० कड़ा होना।

कर्षना—सक्रि० खींचना 'कर्षति है दुहुँ करन मथानी सोभा रासि भुजा गहि गाढ़ी।' सू० ६६

कलँगी—स्त्री० पक्षीके पंख जो मुकुटमें लगाये जाते हैं। मोतियों या सुवर्णका बना हुआ शिरोभूषण।

कलंदर—पु० एक तरहका मुसलमान फकीर। बन्दर या रीछ नचानेवाला 'चित पितुको बन्दर कियो अहो कलन्दर लोभ।' दीन० २५२

कलंदरा—पु० एक तरहका रेशमी वस्त्र। [illegible] अँकुड़ा जो कपड़ेसे ढका रहता है।

कल—क्रिवि० आनेवाला दिन। बीता हुआ दिन। किसी और समय। स्त्री० चैन, सुख (सू० १३३)। नीरोगता। पुरजा, यंत्र। युक्ति 'बुधि बल छल कल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कैसेहू करि लै काटि भनत लैं दीजै।' सूप्रे० ४४। पु० मधुर ध्वनि। वि० सुन्दर, मधुर, कोमल।

कलई—स्त्री० राँगेका पतला लेप जो बरतनोंपर किया जाता है, मुलम्मा। अन्य कोई लेप जो चमक लानेके लिए लगाया जाता है। चूना। ऊपरी तड़क भड़क। —खुलना = असली बात प्रकट होना।

कलकना—अक्रि० चिल्लाना, चीत्कार करना, शब्द करना।

कलकल—स्त्री० झगड़ा, कलह। खुजली। पु० पानी गिरने या बहनेका मधुर शब्द। कोलाहल।

कलकान,-कानि—स्त्री० परेशानी, दुःख, कलह 'हरिचन्द जू बात ठनी सो ठनी, नितके कलकानितें छूटनो है।' हरि०, (रस ४६, मसु० २६)

कलगी—स्त्री० देखो 'कलँगी'।

कलत्र—स्त्री० पत्नी, सहधर्मिणी।

कलदार—पु० कल द्वारा बनाया गया रुपया। वि० पेंचदार।

कलधौत—पु० सुवर्ण, सोना। चाँदी। मधुर ध्वनि।

कलप—पु० 'कल्प, ब्रह्माका एक दिन। चार अरब ३२ करोड़ वर्ष। कलफ़। —करना = काट देना 'सो पै जानै बापुरा करै जो सीस कलप्प।' प० ५१

कलपना—अक्रि० बिलखना, तलफना। कल्पना करना। काटना 'कलपौं माथ बेगि निस्तरऊँ।' प० १९९। स्त्री० विलाप, दुःख। उद्भावना-शक्ति, अनुमान, भावना। रचना। अध्यारोप।

कलपाना—सक्रि० तरसाना, दुःखी करना।

कलबल—पु० दाँवपेंच। युक्ति। 'कलबलतें हरि हार परे।' सू० ५४। शोरगुल। वि० अस्पष्ट।

कलबूत—पु० ढाँचा 'पूत कलबूतसे रहेंगे सब ठाढ़े तब कछू न चलेगी जब दूत धरि पावैगो।' दीन १४१

कलभ—पु० हाथी (या ऊँट) का बच्चा, छोटा हाथी।

कलम—पु० स्त्री० लेखनी। पौधेकी टहनी।

कलमख—पु० पाप, कलंक, धब्बा।

कलमना—सक्रि० काटना।

कलमलना, कलमलाना—अक्रि० कुलबुलाना, इधर उधर हिलना यह तो कलमलात जलमाहीं, मेरे करमें आवत नाहीं।' ब्रजवि०. (रामा० १४२)। 'अस गयंद साजें सिंघली। मोटी कुरुम-पाठि कचमली।' प० २५३

कलमा—पु० वाक्य, बात। इस्लामके मूल मंत्रका वाक्य 'ला इलाह इल्लिल्लाह, महम्मद रसूलिल्लाह।'

कलरव—पु० मधुर ध्वनि, कूजन। कपोत, कायल।

कलवार—पु० जाति-विशेष, कलार।

कलश, कलस, कलसा—पु० गगरा। मंदिर आदिका शिखर या कँगूरा। श्रेष्ठ व्यक्ति, 'शिरोमणि'।

कलह—पु० झगड़ा, युद्ध। [वाली, झगड़ालू।

कलहनी, कलहारी—वि० स्त्री० कलहकारिणी, लड़ने

कला—स्त्री० चन्द्रका सोलहवाँ या सूर्यका बारहवाँ भाग। अंश। हुनर (इनके ६४ प्रकार माने गये हैं)। लेश। लगाव। महिमा। शिव। नौका। तेज, ज्योति, विभूति 'बरनै दीनदयाल सुगंध कला छिति छाई।' दीन० २१५। करतब, युक्ति 'केतो सोम कला करो करो सुधाको दान।' दीन० १९८। शोभा, प्रभा लीला, क्रीड़ा। छल, धोखा 'चाली हंसनकी चले चरन चोंच करि लाल। लखि परिहै बक तब कला झख मारत तत्काल।' दीन० २०९। मिस, बहाना।

कलाई—स्त्री० मणिबंध, पहुँचा।

कलाद—पु० सुनार।

कलादा—पु० कलावा, हाथीके मस्तकपर महावतके बैठनेकी जगह।

कलाधर—पु० चन्द्रमा। कला जाननेवाला।

कलाप—पु० झुण्ड, समूह। मोरपुच्छ। बाण। तूणीर। व्यापार। कल्पना, दुःख 'राम विलाप कलाप कह्यो पुनि गीधराज गति करना।' रघु० २४

कलापी—पु० मोर। कोयल।

कलाबाजी—स्त्री० सिरके बल उलट जाना, नटक्रिया।

कलाम—पु० वचन, बात। प्रतिज्ञा।

कलामुख—पु० चन्द्रमा (दास ८४)।

कलार, कलाल—पु० मद्य बेचनेवाला 'नाम रसायन प्रेम रस, पीवत बहुत रसाल। कबीर जीवन कठिन है, माँगे सीस कलाल।' साखी २९

कलिंदी—स्त्री० कालिन्दी, जमुना।

कलि—पु० 'कलि कलेश, कलि शूरमा, कलि निषंग, संग्राम। कलि कलियुग, यह और नहिं केवल केशव नाम।' नंददास। वि० काला।

कलिका—स्त्री० कली। मुहूर्त्त। मँगरैल। अंश।

कलिकान—वि० हैरान, परेशान 'तबही सलावत खान। मनमें भयौ कलिकान।' सुजा० ५७

कलित—वि० विदित। शोभित। युक्त। सुन्दर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कलिल—वि० घना, मिश्रित। पु० राशि। [१२५
कलींदा—पु० तरबूज 'का हिकी देवी कलींदे को खप्पर'—भू०
कली—स्त्री० कलिका। 'बोंड़ी'। कलई 'ऊपर कला लपेटि कै भीतर भरी भँगार।' साखी ५७
कलुख, कलुष—पु० पाप, मैल, दोष। वि० पापी, मलिन।
कलुखी—वि० कलंकी।
कलुषाई—स्त्री० दोष, अपवित्रता।
कलेऊ—पु० कलेवा 'करन कलेऊ हेतु पठावहु चारिहु राजदुलारे।' रामकलेवा
कलेजा—पु० हृदय, साहस।
कलेवर—पु० देह, चोला। आकार। [❀ पाथेय।
कलेवा—पु० जलपान। यात्राके लिए संगृहीत भोजन, ❀
कलेस—पु० क्लेश, दुःख। [†२३८
कलोर—स्त्री० वह गाय जो व्याई न हो। बछड़ा 'मानों हरे तृन चारु चरैं बगरे सुरधेनुके धौल कलोरे।' कविता० †
कलोल—पु० केलि, आमोद-प्रमोद। तरंग 'सूर यह सुख गोप गोपी, पियत अमृत कलोल।' सू० १८७
कलोलना—अक्रि० केलि करना, क्रीड़ा करना 'दिना चारकी औधमें लीजै नेक कलोलि।' दीन० २१८
कल्प—पु० ब्रह्माका एक दिन। एक वेदांग। कृत्य।
कल्पना—स्त्री० उद्भावना शक्ति, अनुमान। रचना।
कल्पवृक्ष,-शाखी,-साखी—पु० कल्पद्रुम 'सदा वृक्ष फूले फले तन्न सोहैं। जिन्हें अल्पधी कल्पसाखी विमोहैं।' के० १४०
कल्मष—पु० पाप। मवाद, मल।
कल्याण, कल्यान—पु० भलाई, शुभ। सुवर्ण।
कल्लर—पु० देखो 'कल्हर'।
कल्ला—पु० जबड़ा। अंकुर।
कल्लाना—अक्रि० चोट लगनेसे दर्द होना, असह्य होना।
कल्लोल—पु० तरंग क्रीड़ा, उमंग।
कल्हर—पु० नोनी मिट्टी। वि० बंजर।
कल्हरना—अक्रि० कड़ाहीमें भूना जाना।
कल्हार—पु० पुष्प विशेष 'अद्भुत सतदल विकसित कोमल, मुकुलित कुमुद कल्हार।' श्रीकृष्णदास
कल्हारना—अ० कराहना। सक्रि० कड़ाहीमें तलना।
कवन—सर्व० कौन।
कवरना—सक्रि० सेंकना, ज़रा ज़रा भूनना।
कवरी—स्त्री० जूड़ा, चोटी (देखो 'कबरी'), वनतुलसी।
कवल—पु० ग्रास, कौर। कौवा। एक मछली। पु० एक तरहका घोड़ा।
कविता, कविताई—स्त्री० पद्यमय सरस रचना, काव्य।
कवित्त—पु० इकतीस अक्षरोंका एक वृत्त। काव्य।
कविनासा—स्त्री० कर्मनासा नदी।
कविलास—पु० कैलास। स्वर्गलोक।
कशा—स्त्री० चाबुक। रस्सी।
कषाय—पु० कसैली वस्तु, क्वाथ। वि० गेरूके रंगका, रँगा हुआ। कसैला।
कष्ट—पु० क्लेश, आपत्ति।
कस—क्रिवि० क्यों, कैसे 'कस न दीनपर द्रवहु उमावर।' विन० ७३। पु० 'कष', जाँच, कसौटी। तलवारकी लचक (उदे० 'खटाना')। बल। रोक, इख्तियार, वश। सार, अर्क।
कसक—स्त्री० थोड़ा थोड़ा दर्द। पूर्व द्वेष। सहानुभूति। हौसला।
कसकना—अक्रि० पीड़ा करना, खटकना 'चतुरनके कसकत रहैं, चूक समयकी हूक।' रहीम २२
कसना—सक्रि० खींचना, बाँधना, 'निज दल विकल देखि कटि, कसि निषंग धनु हाथ। लछिमन चले सरोष तब नाइ राम-पद माथ।' रामा० ५००। जकड़ना। कसकर = जकड़कर, बलपूर्वक, पूरा पूरा, बेरहमीसे 'हौं कसि कसि कै रिस करौं, ये निसखे हँसि देत।' बि० २३५। 'आँखिनमें सखि राखिबे जोग, इन्हें कसिकै बनवास दियो है।' कविता० (पाठ०)। पीड़ा देना 'भरत भवन बसि तन तप कसहीं।' रामा० ३५५। कसौटीपर रखना, परखना 'सोना सज्जन कसनको विपनि कसौटी कीन।' तलना। अक्रि० खिंचना, तंग होना।
कसनि—स्त्री० कसनेकी क्रिया। रस्सी जिससे कोई वस्तु कसी गयी हो। क्लेश, पीड़ा।
कसनी—स्त्री० वह रस्सी या कपड़ा जिससे कोई वस्तु कसी जाय। कंचुकी 'फुँदिया और कसनिया राती।' प० १५८। कसौटी, परीक्षा 'कह कबीर कसनी सहै, कै हीरा कै हेम।' साखी ८०
कसब—पु० परिश्रम। व्यभिचार।
कसबिन, कसबी—स्त्री० वेश्या या व्यभिचारिणी स्त्री।
कसम—स्त्री० सौगंध, शपथ।
कसमस, कसमसी—स्त्री० कुलबुलाहट, घबड़ाहट,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उथल पुथल, धकम धक्का (सीताको देखनेके लिये) 'कसमस परयो कपिनको भारी।' रघु० २५६

कसमसाना—अक्रि० भीड़ या स्थानकी कमीके कारण परस्पर रगड़ खाना, कुलबुलाना। बेचैन होना। हिचकना

कसमसाहट—स्त्री० कुलबुलाहट, व्याकुलता।

कसर—स्त्री० त्रुटि, कमी, दोष। वैर। हानि।

कसरत—स्त्री० व्यायाम। आधिक्य, प्रचुरता।

कसाई—पु० वधिक, गोघातक। वि० निष्ठुर, निर्मोही।

कसाना—सक्रि० जकड़वाना, बँधवाना। अक्रि० † कसैला हो जाना।

कसार—पु० पँजीरी, 'चूरन'।

कसाला—पु० दुःख, कष्ट 'शिशिरके पालाको न व्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं।' —पद्माकर, (रघु० १२४)। मेहनत।

कसीटना—सक्रि० कसना, रोकना 'गुफाकूँ सँवारत हैं आसनहू मारि करि प्राणहीं कूँ धारि धारणा कसीटितु है।' सुन्द० १६७

कसीस—स्त्री० निर्दयता 'तुम्हैं निसिद्योस मन भावन असीसैं सजीवन हौ करो हमपै कसीसैं।' आनन्दघन। कोशिश 'भूषन असीसैं, तोहि करत कसीसैं'—भू० ४६। एक लोहजन्य पदार्थ।

कसूँभी—वि० कुसुमानी रंगका।

कसैया—पु० परखनेवाला। बाँधनेवाला।

कसैला—वि० जिसमें कसाव हो।

कसोरा—पु० मिट्टीका कटोरा। प्याला।

कसौंदा—पु० एक फल 'काहू हरफारेवरि कसौंदा।' प० ८८

कसौटी—स्त्री० काला पत्थर जिसपर सोना परखा जाता है। जाँच, परख।

कस्तूरी—स्त्री० एक सुगन्धित वस्तु, मृगमद।

कहँ—क्रिवि० कहाँ। प्रत्य० को, के लिए।

कहन—स्त्री० कथन, वचन। कविता। कहावत।

कहना—सक्रि० बोलना, प्रकट करना, खोलना, नाम रखना। पु० कथन। उपदेश। आज्ञा।

कहनाउत, कहनावत—स्त्री० कथन, चाल। कहावत।

कहनि—स्त्री० कथन, वचन, कहावत।

कहर—पु० आफत, क्लेश।—करना = अनोखा काम करना, अत्याचार करना। देखत ही मुख बिष लहरि सी आवै लगी जहरसों नैन करै कहर कहारकी।' रवि० २९। वि० कठिन, भीषण 'कहर जूझ है पहर भौ झर्‌यो सार सों सारु।' छत्र० ११२। अपार, अथाह 'रूप कहर दरियावमें तरिबो है न सलाह।' रतन० १९

कहरना, कहँरना—अक्रि० कराहना 'कहँरत भट घायल तट गिरे।' रामा ५०४, (दास ४२)

कहरी—वि० विपत्ति लानेवाला, आफत ढानेवाला।

कहल—पु० उमस, गर्मी, ताप, पीड़ा। '...दिनमाने ताप तन मेटत कहल है।'—नागरीदास, (व्रज० ३५७)

कहलना—अक्रि० अकुलाना, कसमसाना, व्याकुल होना।

कहलाना—अक्रि० देखो 'कहलना'। 'कहलाने एकत रहत अहि मयूर मृग बाघ।' बि० २०२ सक्रि० कहवाना।

कहवाँ, कहाँ—क्रिवि० किस स्थानपर। कहाँतक = किस जगहतक, कबतक। कहाँसे = व्यर्थ।

कहा—क्रिवि० किस तरह, कैसे। सर्व० क्या। वि० कौन। पु० कहना, उपदेश "मैं संकर कर कहा न माना।' रामा० ३६। स्त्री० कथा 'वचन परगट करन लागे प्रेम कहा चलाय।' अ० २

कहाउति, कहावत—स्त्री० कहनावत, मसल, लोकोक्ति। उक्ति, कथन 'जनक भरत संवाद सुनाई। भरत कहाउति कही सुहाई।' रामा ३४०

कहार—पु० पानी भरने व पालकी आदि उठानेवाली

कहारा—पु० दौरी या टोकरा। [जाति (रामा० २९१)।

कहाल—पु० एक बाजा।

कहासुनी—स्त्री० झगड़ा। विवाद।

कहिया—क्रिवि० कब।

कहीं, कहुँ, कहूँ—क्रिवि० किसी स्थानपर। यदि, संभवतः। कदापि नहीं। अत्यधिक।

काँई—अ० क्यों।

काँकर—पु० पत्थरका अत्यन्त छोटा टुकड़ा, कंकड़ 'कुस कंटक मग काँकर नाना।' रामा० २२८

काँकरी—स्त्री० छोटा कंकड़ 'डगर तजति पग गड़त काँकरी'—सूरदास मदनमोहन।

काँख—स्त्री० बगल।

काँखना—अक्रि० श्रमादिके कारण मुँहसे आवाज़ करना।

काँखासोती—स्त्री० बायें कन्धेके ऊपर व दाहिनी बगलके नीचेसे होते हुए दुपट्टा डालनेका ढँग 'पियर उपरना काँखासोती। दोउ आँचरन्ह लगे मनिमोती।' [रामा० १७८

काँगनी—स्त्री० देखो 'कँगनी'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काँगुरा—पु० कँगूरा 'जैसी विधि काँगुरेहु कोटपर देखियत तैसी विधि देखियत बुदबुदा नीरमें।' सुन्द० १२९

काँच—पु० एक पारदर्शक धातु, शीशा। '...यह जग काँचो काँचसों।' वि० ७८। काछ। लौंग।

काँचरी, काँचली—स्त्री० सर्पकी केंचुली (ऊपरी आवरण), कंचुली, कंचुरि। चोली, कंचुकी 'काँचलि खोलि आलिंगन देल।' विद्या० २२४

काँचा—वि० कच्चा, अदृढ़, क्षणभंगुर, अपरिपक्व (उदे० काँच, भ्र० ३४) 'हौं जानतिहौं अबही काँचा।' प० १०७

कांची—पु० करधनी, गोटा, घुँघची 'काँची पाट भरी धुनि रूई।' प० १३९

काँचुरी—स्त्री० साँपकी केंचुल 'ज्यों काँचुरी भुअंगम तजही, फिरि न तकै जु गये सु गयेरी।' सू० १४७

काँचुली—स्त्री० केंचुल 'सूर श्याम सँग जात भयो मन अहि काँचुली उतारी।' सूबे० ३७१

काँछना—सक्रि० काछना, सँवारना, पहनना।

काँछा—स्त्री० कांक्षा, अभिलाषा।

काँजी—स्त्री० एक तरहका खट्टा पदार्थ। मट्ठे या दहीका पानी 'दूध फटै कांजी परे, सो फिर दूध बनै न।'

काँट, काँटा—पु० कंटक। अँकुड़ा, कील। लौंग। तराजू। **काँटा बोना** = बुराई करना 'जो तोको काँटा बवै ताहि बोउ तैं फूल।' कबीर

काँठा—पु० कण्ठ, गला। तोतेके गलेकी लाल नीली रेखा, 'बाँधी कंठ परा जरि काँठा।' प० १०४। पार्श्व, किनारा 'भाइ विभीषन जाइ मिल्यो प्रभु आइ परे सुनी सायर काँठे।' कविता० १९३ [घटना

कांड—पु० तना, डंठल। सरकंडा। पोर। समूह। बाण।

काँड़ना—सक्रि० कुचलना, कूटना, पीटना 'बाटिका उजारि अच्छ रच्छकनि मारि भट भारी भारी रावरेके चाउरसे काँड़िगो।' कविता०। १९२

काँडी—स्त्री० वस्तुओंको ढकेलने आदिके लिए लकड़ीका डण्डा। छड़ (प० २६६)। उखलीका गड्ढा।

कांत—पु० पति। शिव, विष्णु। चन्द्रमा।

कांता—स्त्री० पत्नी, प्रिया।

कांतार—पु० घना जंगल, भयानक जगह। छिद्र। बाँस।

काँती—स्त्री० बिच्छूका डंक। तीव्र व्यथा। छूरी 'कत लिखि लिखि पठवत नँदनन्दन, कठिन विरहकी कांती।' सू० २१७। कैंची।

कांथरि—स्त्री० गुदड़ी, कथड़ी।

कांदना—अक्रि० रोना।

काँदव, काँदो—पु० कर्दम, कीचड़, कीच।

काँध, काँधा—पु० कन्धा (मु० ७४; उदे० 'काँधना')। कृष्ण। **काँध देना** = अंगीकार करना, सहायता देना।

काँधना—सक्रि० उठाना, सँभालना (रतन० ३५)। धारण करना 'रनहित आयुध काँधन काँधे।' रघु० १२३। अंगीकार करना, सहना 'हनुवँत सरिस भार जेइ काँधा।' प० २४३। युद्ध ठानना।

काँधर, काँन—पु० श्रीकृष्ण।

काँप—स्त्री०, **काँपा**—पु० बाँसकी पतली तीली (भ्र० ३१)

काँपना—अक्रि० भय इत्यादिसे थर्राना, हिलना, डरना।

काँवर, काँवरि—स्त्री० कंधेपर रखकर चीजें ढोनेके लिए बाँसका टुकड़ा जिसके दोनों छोरोंपर छींके लगे हों, बहँगी 'दधि चिउरा उपहार अपारा। भरि भरि काँवरि चले कहारा।' रामा० १६४, (प० १७५)

काँस—पु० एक लम्बी घास जो वर्षाके अन्तमें फूलती है।

काँसा—पु० ताँबे-जस्तेके योगसे बनी कसकुट धातु।

का—सम्बन्धकारककी विभक्ति। सर्व० क्या।

काइफर—पु० देखो 'कायफर' (उदे० 'कटजीरा')।

काई—स्त्री० महीन घासके समान वह हरी हरी या मैले रंगकी सूक्ष्म वस्तु जो पानी या सींड़के कारण पत्थर इत्यादिपर जम जाती है 'कागरकीर ज्यों भूषन चीर शरीर लस्यो तजि नीर ज्यों काई।' कविता० १६४। एक तरहका मोरचा या मैल 'मनु मोहि जारि भसम किय चाहत साजत मनु कलंक तनु काई।' सू० २०९

काऊ—क्रिवि० कभी 'तरिवर चलत न देखा काऊ।' प० ३०, (रामा० ५५५)। सर्व० कोई 'कहत राम विधुबदन रिसौंहे सपनेहु लखेउ न काऊ।' विन० २५८

काक—पु० कौआ।

काकतालीय—वि० दैवात् या संयोगसे होनेवाला।

काकपक्ष—पु० सिरके दोनों ओरके बड़े बड़े बाल, जुल्फ।

काकरी—स्त्री० ककड़ी।

काकिनी—स्त्री० 'काकिणी', घुँघची, कौड़ी।

काकु—पु० व्यंग। एक काव्यालंकार।

काग—पु० कौआ।

कागद—पु० कागज 'ए कागदके फूल सुगंध मरन्द न यामें।' दीन०, २०७ (भ्र० ४६)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कागर—पु० पंख (उदे० 'काई') कागद 'मसि खूँटी कागर जल भीजे...'भ्र० ३७। 'तुम्हरे देश कागर मसि खूटी।' सूवे० ४३८, (प० १९४)

कागरी—वि० तुच्छ। नगण्य।

कागाबासी—स्त्री० प्रातःकालकी भाँग।

कागौर—पु० कौवेके लिए निकाला गया कव्यका भाग।

काचरी—स्त्री० साँपकी केंचुल।

काचा—वि० कच्चा, कमज़ोर, डरपोंक (सूवि० २९)। अनित्य। जो पकाया न गया हो।

काछ—पु० धोतीका छोर जो पीछे खोंसा जाता है, लाँग। नटोंका वेश-विन्यास।

काछना—सक्रि० धोतीके छोरको जँघोंके बीचसे ले जाकर पीछे खोंसना, लाँग मारना। वेष बनाना, पहिनना 'आगे राम लषन बने पाछे। तापस वेष विराजत काछे।' रामा० २५७। 'नटवर भेष काछे स्याम।' सू०११३

काछनी—स्त्री० घुटनोंतक पहनी हुई धोती। एक तरह-का कटि-वस्त्र 'करमें कनकथार लीन्हे कटि कनक काछनी काछे।' रघु० १८ (सू० ७९)। देखो 'कछनी'।

काछी—पु० एक जाति।

काछू—पु० कछुआ 'जहँ जहँ मगर मच्छ औ काछू।' प० ६८

काछे—क्रिवि० पास, समीप।

काज—पु० काम, कृत्य 'अवसि काज मैं करिहौं तोरा।' रामा० ९४। प्रयोजन, अर्थ 'जो तनु धरि हरिपद साधहिं जन, सो बिन काज गँवावहीं।' विन०। ३४७ के काज = के लिए 'पसरे कर कुमुदिनि काज मनो।' [राम० ८५

काजर—पु० काजल।

काजरी—स्त्री० एक तरहकी गाय जिसकी आँखके चारों ओरका हिस्सा काला हो (सू सु० ७६)

काजल—पु० दीपककी कालिख।

काट—पु० काटनेकी क्रिया, कटाव, घावा स्त्री० मैल, मोरचा 'आप न देखत है अपनो मुख दर्पण काट लग्यो अति थूला।' सुन्द० १००

काटना—सक्रि० खंडित करना, कुछ अंश अलग करना। डसना, दाँत गड़ाना। मार डालना। मिटाना। व्यतीत करना। बिताना। अप्रिय लगना।

काटर—वि० कटर 'आना काटर एक तुहारू।' प० १२९

काठ—पु० लकड़ी। काठकी पुतली 'कतहुँ पखंडी काठ नचावा।' प० १७—की हाँड़ी = धोखा देनेवाली दिखाऊ चीज़।—में पाँव देना = जान बूझकर बन्धनमें पड़ना '[फूले फूले फिरत हैं होत हमारो ब्याव। तुलसी गाय बजायके देत काठमें पाँव।' तुलसी] —मारना = बेड़ी डालना, सजा देना (के० १२७)

काठी—स्त्री० घोड़े या ऊँटकी पीठपर रखनेकी गद्दी। इंधन; 'हाड़ जराइ दीन्ह जस काठी।' प० ७०। तलवारकी म्यान

काढ़ना—सक्रि० बाहर निकालना 'घरके कहँ बेगि ही काढ़ो, भूत भये कोउ खैहैं।' सू० २८१। निकालना 'काम काढ़ि चुप रहै, फेरि तिहि नहिं पहिचानै।' —गिरिधरराय। चित्रित करना 'राम वियोग विकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े।' रामा० २३९। 'पुतरी गढ़ि गढ़ि खंभन काढ़ी।' प० १३८। कर्ज़ लेना (रामा० १४९)।

कातना—सक्रि० रूईसे सूत निकालना।

कातर—वि० दुःखित, व्याकुल, अधीर। पु० जबड़ा। एक मछली।

काता—पु० तागा। छूरी, कटार '...हनहन कर तुअ काता।' विद्या० ४

कातिक—पु० कार्तिक, आश्विनके बादका महीना।

कातिल—वि० प्राणहारक, घातक।

काती—स्त्री० देखो 'कत्ता' छूरी, कैंची (भ्र० ९२)।

काथ—पु० कत्था 'जहँ बीरा तहँ चून है, पान सोपारी काथ।' प० २४८। स्त्री० गुदड़ी 'कोउक सेत कषायक ओढ़त कोउक काथ रँगे बहु अंबर।' सुन्द० ६७

काथरी—स्त्री० कथरी, गुदड़ी 'कैसे ओढ़व काथरि कंथा।' प० ५८

कादर—वि० भीरु, कायर 'बोल्यो वचन अरे कादर तू भयो बन्धु कस मोरा।' रघु० २२६। आकुल, अधीर।

कादिरी—स्त्री० एक तरहकी चोली।

कान—पु० श्रवण, कर्ण।—उठाना = आहट लेना, चौकन्ना होना 'घुरघुरात हय आरव पाये। चकित विलोकत कान उठाये।' रामा० ८८।—करना = ध्यान देना 'बालक वचन करिय नहिं काना।' रामा० १५१। स्त्री०। कानि, लोक-लज्जा, प्रतिष्ठा।

काना—वि० एक आँखका। तिरछा। पु० पासेकी एक बिन्दी (सूसु० ३०)।

कानि—स्त्री० लोक-लज्जा, प्रतिष्ठा (भदे० 'अत्ति')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(रामा० ४०) प्रतिष्ठाका ध्यान, लिहाज़ 'कोऊ न काहुकी कानि करै कछु चेटक सो जो कर्यो जदुरैया।'—रसखानि। दुःख 'सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिन कैसे घटत कठिन कानी।' सूवे० ३२५

कानी—स्त्री० देखो 'कानि'। वि० स्त्री० एक आँख वाली। सबसे छोटी (अँगुली)।

कानीन—वि० कन्यासे उत्पन्न 'अद्यापि आनी न। रे बंदि कानीन।' राम० ६६

कान्ह, कान्हर—पु० श्रीकृष्ण।

कापर—पु० कपड़ा 'कापर रँगे रंग नहिं होई।' प० [१४७

कापालिक—पु० देखो 'कपालक'।

काफी—वि० पर्याप्त, बस। स्त्री० एक पेड़का बीज।

काबर—वि० चितकबरा। पु० एक तरहकी ज़मीन (रतन० २०)।

काबा—पु० मक्के शहरकी एक जगह।

काम—पु० कार्य, क्रिया। प्रयोजन, उद्देश्य। उपयोग। मतलब, सरोकार। व्यवसाय, कारबार। कारीगरी, दस्तकारी। इच्छा। कामदेव। शिवजी। —का = उपयोगी, जिससे कोई मतलब निकले।

कामता—पु० चित्रकूटके समीपका एक गाँव। चित्रकूट।

कामधाम—पु० कामकाज, काम-धन्धा।

कामरि, कामरिया, कामरी—स्त्री० कम्बल 'या लकुटी अरु कामरियापर राज तिहूँपुरको तजि डारौं।' —रसखानि, (सू० १०३)।

कामरू, कामरूप—पु० आसाम प्रान्तका एक ज़िला जहाँ कामाख्या देवीका स्थान है। वि० इच्छानुसार रूप धर सकनेवाला (रामा० ४३७)।

कामलड़ी, कामली—स्त्री० देखो 'कामरी'। 'फाड़ि पटोली धुज करौं, कामलड़ी फहराय। जेहिं जेहिं भेषे पिय मिलै, सोइ सोइ भेष कराय।' साखी ४२

कामा—स्त्री० कामिनी स्त्री।

कामी, कामुक—वि० इच्छा करनेवाला। विषयी।

काय, कायक—स्त्री० शरीर 'सबको सब भाँति सदा सुखदायक। गुण गावत वेद मनोवच कायक।' के० २७१

कायफर, कायफल—पु० एक वृक्ष या उसका फल।

कायर—वि० भीरु, डरपोक।

कायरता—स्त्री० भीरुता।

कायली—स्त्री० लज्जा, ग्लानि। मथानी। सुस्ती।

काया—स्त्री० देह, शरीर।

कारखाना—पु० यंत्रादि द्वारा प्रचुर मात्रामें वस्तुएँ तैयार करनेकी जगह।

कारगर—वि० उपयोगी, प्रभावकारी।

कारज—पु० कार्य, काम। प्रयोजन। फल।

कारटा—पु० करट, कौआ।

कारण, कारन—पु० हेतु, सबब। आदि या मूल। विष्णु, शिव। साधन। करुण स्वर 'नागमती कारण कै रोई।' प० १७४

कारनी—पु० करानेवाला। भेद करानेवाला।

कारवाई—स्त्री० काम, उपाय, चाल।

कारा—वि० काला। कलुषित। पु० सर्प 'स्वाति बूँद सीपी मुकुत कदली भयो कपूर। कारेके मुख विष भयो, संगतिको फल सूर।'

कारिख—स्त्री० कालिमा, स्याही, काजल। कलंक। 'धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिय पुरान मंजु मसि सोई।' रामा० ८

कारी वि० गहरा, 'कारी घाव जाइ नहिं डोला।' प० ३२८

कारूनी—स्त्री० घोड़ोंकी जाति विशेष।

कारो—वि० काला। पु० सर्प।

कार्मना—पु० मंत्र तंत्रका प्रयोग। मंत्र तंत्र।

कार्य—पु० काम, परिणाम।

कार्यालय—पु० दफ्तर, आफिस।

काल—क्रिवि० कल 'काल करन्ते आज कर आज करन्ते अब्ब।' पु० समय। अन्तिम समय, मृत्यु, यमराज 'तुम तो काल हाँकि जनु लावा।' रामा० १४९। उपयुक्त समय, अवसर। नियत समय। तंगीका †

कालकूट—पु० एक तीक्ष्ण विष। [† समय, अकाल।

कालधर्म—पु० मृत्यु।

कालबूत—पु० कच्चा भराव जिसपर मेहराब बनायी जाती है। छैना, 'कालबूत दूती बिना जुरै न और उपाय।' वि० १६३

कालर—पु० 'देखो 'कल्लर'। 'हरिजन सेती रूसना, संसारी-से हेत। ते नर कबी न नीपजैं ज्यों कालरका खेत।' साखी ५७ [❀ रात। अत्यन्त अँधेरी रात।

कालरात्रि, कालरात्रि—स्त्री० प्रलय, मृत्यु या दिवालीकी ❀

काल-सर्प—पु० वह साँप जिसके डसनेसे कोई बचता नहीं (के० ३०८), 'काल सर्पिणी नन्दकुल कोप-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धूमसो जान। अजहूँ बाँधन देत नाँहि अहो शिखा मम कौन।' सुदा०

काला—वि० कृष्ण वर्णका। कलंकित, कलुषित।

कालिंग—वि० कलिंग देशका। पु० कलिंग देशका रहनेवाला या वहाँका राजा। साँप, हाथी, तरबूज इ०।

कालि, काल्हि—क्रिवि० कल। पिछला या अगला दिन। शीघ्र ही। 'पुनि आउब एहि बिरियाँ काली।' रामा० १२८

कालिका—स्त्री० काली दुर्गा। कालिमा, मेघ, इ०।

कालिख, कालिमा—स्त्री० देखो 'कारिख'।

कालीदह—पु० जमुनाके भीतरका वह कुण्ड जिसमें कालियनाग रहता था।

काल्ह, काल्हि—क्रिवि० कल।

काव्य—पु० रसात्मक वर्णन। शुक्राचार्य।

काश, कास—पु० एक तरहकी घास। काँस।

काह—क्रिवि० क्या, कौन बात (रामा० २२१)।

काहल—वि० गंदा, मैला 'बरनै दीनदयाल तोहि मयि करि हैं काहल।' दीन २०३

काहीं—अ० को, पास, द्वारा (रघु० १६), 'गये गलानि सानि मनमें हम भजन हेतु हरि काहीं।' रघु० ७, 'मुनिजन निरखि परसुधर काहीं। आपुसमें सिगरे बतराहीं।' रघु० १९१, (पृ० १६, ६२)

काहू—सर्व० किसी, (काहूकी, काहूसों इत्यादि)।

काहे—क्रिवि० क्यों, किस कारणसे, किस प्रयोजनसे।

किंकिणी, किंकिनि—स्त्री० करधनी 'कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि।' रामा० १२६, (सू० ५५)

किंगरी, किंगिरी—स्त्री० छोटी सारंगी 'किंगरी हाथ गहे बैरागी।' प० ६२, 'किंगरी गहे बजावै झूरै।' प० ७७

किंपुरुख, किंपुरुष—पु० किन्नर, वर्णसंकर।

कि—क्रिवि० क्या, कैसे। अथवा।

किचकिच—स्त्री० व्यर्थका झगड़ा। दाँतापीसी।

किछु—वि० कुछ।

किटकिटाना—अक्रि० दाँत पीसना।

कित—क्रिवि० कहाँ, किधर। तरफ 'पढ़त वेद वैदिक धरनीसुर जयधुनि चहुँ कित छाई।' रघु० ८३

कितक, कितिक—वि०, क्रिवि०, कितना। कहाँ, कितनी दूर 'तनु सम अधिक जनावहीं, कहै कितक तव धाम।' [चाचा हित वृन्दा०

किताब—स्त्री० पुस्तक।

कितेक—वि० कितना, असंख्य, अपरिमित।

कितेब—स्त्री० किताब, धर्मग्रन्थ, 'कुरान' 'कहुँ आपा, कहुँ आपदा तसबी कहूँ कितेब।' साखी ९

कितै—क्रिवि० कहाँ।

कितो—वि०, क्रिवि० कितना 'फौज केती इतै और बैरी किते।' सुजा० १६

कित्ति—स्त्री० कीर्त्ति, बड़ाई।

किधौं—अ० या तो, न जाने, अथवा 'पसरे कर कुमुदिनि काज मनो। किधौं पद्मिनिको सुख देन घनो।' राम० ८५

किन—क्रिवि० क्यों न 'बिगरी बात बनै नहीं लाख करौ किन कोय।'—रहीम। सर्व० 'किस' के बहुवचनका रूप। पु० चिह्न।

किनका, किनिका, किनुका—पु० छोटा दाना, 'कनूका', चावल इत्यादिका महीन टुकड़ा। बूंद 'घट घट झलकि कपोलनि किनुका, मानों मदहिं चुवावैं।' सू० ९७, (सूबे० १५९), 'विद्रुम हेम बज्रके किनुका नाहिन हमहिं सुनावति।' सूबे० १४६

किनार, किनारा—पु० कोर, तीर, तट, प्रान्त, हाशिया। किनारा करना = दूर होना, छोड़ देना।

किन्नरी—स्त्री० किन्नर जातिकी स्त्री। किंगरी, छोटा चिकारा 'कहूँ किन्नरी किन्नरी लै सुगावैं।' राम० ११२, 'ताल मुरज रबाब बीना किन्नरी रससार।' सूबे० २०७,

किबलानुमा—पु० पश्चिम दिशा-सूचक यंत्रविशेष 'वाही तन टहराति यह किबलनुमा लौं दीठि।' बि० १८

किमि—क्रिवि० किस तरह, कैसे।

किरका—पु० कंकड़, छोटा टुकड़ा।

किरकिटी, किरकिरी—स्त्री० कण या धूल जो आँखमें पड़ कर दुःख देती है (उदे० 'अहटाना')।

किरकिल—स्त्री० शरीरके भीतरकी वह वायु जिससे छींक आती है। पु० गिरगिट।

किरकिला—स्त्री० देखो 'किलकिला'।

किरच, किरचक—स्त्री० एक तरहकी तलवार। काँच आदिका नोकदार टुकड़ा, कनी, 'परिपूरन पूर पनारन ते जनु पीक कपूरनकी किरचैं।' राम० ३६, 'लोक लज्जा काँच किरचक, स्याम कंचन खानि।' सू०

किरण, किरन—पु० रश्मि। अंशु।

किरपा—स्त्री० कृपा, दया, अनुग्रह।

किरपान—स्त्री० कृपाण, तलवार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किरमाल—पु० तलवार।

किररानाना—अक्रि० दाँत पीसना। 'किर्र किर्र' शब्द करना 'देखि सुवा सारो किररानो।' छत्र० ३५

किरवान, किरवार—पु० तलवार 'काटि कटक किरवान बल बाँटि जंबुकनि देहु।' छत्र० १२४, (भू० ३३)

किरवारा—पु० अमिलतास।

किरात—पु० एक जंगली जाति। साईस।

किरान—क्रिवि० निकट, समीप।

किराना पु० नमक, मसाला इ० चीज़ें।

किराया—पु० किसी वस्तुके प्रयोग करनेका मुआवज़ा।

किरार—पु० एक नीच जाति (रवि० २५)।

किरिया—स्त्री० सौगन्ध। काम। अन्त्येष्टि क्रिया।

किरीट—पु० एक शिरोभूषण, मुकुट। सवैयाका एक भेद।

किरीटी—पु० अर्जुन या इन्द्र।

किरीरा—स्त्री० क्रीड़ा 'हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा।' [प० ७२

किर्च—स्त्री० देखो 'किरच'।

किर्तनिया—पु० कीर्तन करनेवाला (साखी ९०)।

किलकना—अक्रि० किलकारी मारना, किलकिल शब्द करके हर्ष प्रकट करना, 'किलकत हँसत दुरत प्रगटत मनु, घनमें विद्युत् छपाइ।' सू० (व्रज० १२९)

किलकारना—अक्रि० ज़ोरसे आवाज़ करना 'मुल्ला चढ़ि किलकारिया, अलख न बहिरा होय।' साखी १८१

किलकारी—स्त्री० किलकनेका शब्द। हर्षध्वनि।

किलकिल—स्त्री० किटकिट, झगड़ा।

किलकिला—स्त्री० मछली खानेवाला एक पक्षी। आनन्द-ध्वनि 'लांघि सिंधु यहि पारहिं आवा। शब्द किलकिला कपिन सुनावा।' रामा० ४२९। पु० एक समुद्र 'एहि किलकिला समुद्र गँभीरू।' प० ७०

किलकिलाना—अक्रि० किलकारी मारना, हर्षसूचक शब्द करना। विवाद करना। अस्पष्ट शब्द करना।

किलनी—स्त्री० एक छोटा कीड़ा, किल्ली।

किलवांक—पु० एक तरहका काबुली घोड़ा।

किलविष—पु० पाप। रोग। दोष।

किला—पु० गढ़, दुर्ग।

किलोल—पु० आमोद-प्रमोद, मौज, तरंग।

किल्ली—स्त्री० कुंजी। खूँटी, कील। सिटकिनी 'चितउर कै मोहि स्यो है किल्ली।' प० ३१६। एक छोटा कीड़ा।

किवाड़, किवार—पु० पट, कपाट (सू० १०)।

किशमिश—स्त्री० छोटी दाख।

किशलय—पु० कोंपल, कोमल पत्ता।

किशोर—वि० ११ से १५ वर्षकी उम्रका। पु० पुत्र।

किसनई—स्त्री० किसानी, खेती (उदे० 'कनूका')।

किसब—पु० कारीगरी (कविता० २१७)। व्यवसाय।

किसमी—पु० मज़दूर, श्रमजीवी।

किसलय—पु० किशलय, कोमल पत्ता, कोंपल।

किसान—पु० कृषक, खेतिहर।

किस्म—पु० भेद, प्रकार। चाल।

किस्मत—स्त्री० भाग्य, तक़दीर।

की—अ० वा, या फिर 'की तनु प्रान कि केवल प्राना विधि करतब कछु जाइ न जाना।' रामा० २२६। क्या

कीक—स्त्री० चीख, चिल्लाना, चीत्कार-ध्वनि।

कीका—पु० घोड़ा (सुजा०)।

कीच—स्त्री० कीचड़, पंक 'मीच है कवूल पै न कीच लखनऊ-की'—बेनी, 'अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी।' रामा० २८६

कीचड़, कीचर—पु० पंक, पानी मिली हुई धूल व मिट्टी। आँखका मैल 'बार बार लीखैं लगीं लाखन जुआके जोट आँखिन बरौनिनमें कीचर छपानो है।' बेनी

कीट—पु० कीड़ा। मैल। (उदे० 'कनोई')

कीड़ी—स्त्री० छोटा कीड़ा, चींटी 'साईंके सब जीव हैं कीड़ी कुंजर दोय।' साखी १५४

कीदहुँ—अ० किधौं, कौन जाने, शायद 'कीदहुँ रानि कौसिलहि परिगा भोर हो।' रामललानहछू

कीप—स्त्री० बोतल इ० में तैलादि डालनेकी चौंड़ी। चोंगी।

कीमिया—स्त्री० रसायन। रासायनिक क्रिया।

कीर—पु० सुआ। किरात, बहेलिया 'कड़िया खटकी जाल-की आइ पहूँचा कीर।' साखी ७४

कीरति, कीर्त्ति—स्त्री० प्रसिद्धि, ख्याति। राधाजीकी माता।

कीरी—स्त्री० कीड़ी, चींटी।

कील—स्त्री० कँटिया (सू० १७६)। खुँटिया। लौंग।

कीलना—सक्रि० कटिया इ० जड़ना। स्तंभित करना।†

कीश, कीस—पु० बन्दर। [† अधीन करना।

कुँअर, कुँअरेटा—पु० पुत्र, बालक। राजकुमार। 'कुँअर, कुँअरि कल भाँवरि देहीं।' रामा० १७५

कुँआरा—वि० अविवाहित 'नत कन्या बरु रहै कुँआरी। कंत उमा मम प्रान पियारी।' रामा० ४४

कुँई—स्त्री० कुमुदिनी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुंकुम—पु० रोली। केसर।
कुंचित—वि० घुँघरवाला, घूमा हुआ।
कुंची, कुँची—स्त्री० कुंजी, चाभी।
कुंज—पु० लता आदिसे आवृत स्थान।
कुंजक—पु० कंचुकी, अन्तःपुरका अनुचर।
कुंजकुटीर—स्त्री० लतागृह।
कुंजगली—स्त्री० लतावृत पथ। संकीर्ण मार्ग।
कुंजर—पु० हाथी। बाल। आठकी संख्या। कुंजरो वा नरो वा = हाथी वा मनुष्य, दुविधाकी बात।
कुंजल—पु० काँजी। कुञ्जर, हाथी।
कुंजा—पु० पुरवा, कुल्हड़।
कुंठित—वि० मन्द, जिसकी धार तेज़ न हो। गुठला।
कुंड—पु० छोटा तालाब। कुंडा। अग्निहोत्रादिके लिये गड्ढा या पात्र। लोहेका टोप (उदे० खड़ाका)। हौदा।
कुंडरा—पु० मिट्टीका बड़ा बरतन, कुंडा। [गड्ढा।
कुंडल—पु० बाला। मंडल, घेरा। नाभि 'कस्तूरी कुंडल बसै मृग ढूँढै बनमाहिं।' साखी ११६
कुंडलिनी—स्त्री० सुषुम्ना नाड़ीके मूलके पासकी एक कल्पित वस्तु। इमरती। [† देखो 'कुंडलिनी'।
कुंडली—पु० सर्प। मयूर। स्त्री० ग्रह-चक्र, जन्मपत्री। †
कुंडा—पु० नाद, बड़ा मटका। कोंडा।
कुंडी—स्त्री० छोटी पथरी। सिकड़ी। कड़ी।
कुंत—पु० भाला, बरछी 'महासमर या ठाँव चलै सर कुंत कृपानें।' दीन० २३२। जूँ। कौड़िल्ला।
कुंतल—पु० केश। प्याला। हल। जौ।
कुंता—स्त्री० कुंती।
कुंद—पु० एक पौधा या उसका सफेद फूल, कनेर। कमल। नौकी संख्या। खराद 'कुंदकी सी माई बातें' कविता० २१६ 'कुंदे फेरि जानु गिउ काढ़ी।' प०४९। वि० भोथरा।
कुंदन—पु० अच्छा और चोखा सोना।
कुंदरू—पु० एक बेल या उसका फल। बिंबा।
कुंदा—पु० कोंढ़ा। लक्कड़, मूठ।
कुंदेरना—सक्रि० खरादना, छीलना।
कुंदेरा—पु० खरादनेवाला, कुनेरा 'गीउ मयूर केर जस गढ़ी। कुंदे फेरि कुँदेरै काढ़ी।' प० २३८
कुंभ—पु० घड़ा। कुंभज, कुंभयोनि = अगस्त्यमुनि।
कुँभकार, कुंभार—पु० मिट्टीके बरतन बनानेवाला।
कुँमिलाना—अक्रि० मुरझाना (सू० १८१)।

कुंभी—स्त्री० छोटा घड़ा। एक वृक्ष। एक नरक। पु० हाथी। मगर।
कुंभीपुर—पु० हस्तिनापुर। प्राचीन दिल्ली नगर।
कुँवर, कुँवरेटा—पु० कुँअर। पुत्र। राजपुत्र। 'कानन कुंडल माल गरें सँग मंडित गोपिनके कुँवरेटा।' रवि १०
कुँवरि, कुँवरी—स्त्री० पुत्री, कुमारी। राजपुत्री।
कुँवारा—वि० अविवाहित।
कुँहकुँह—पु० कुंकुम, केशर। 'पेट परत जनु चंदन लावा। कुहँकुहँ केसर बरन सुहावा।' प० ५०
कु—स्त्री० पृथ्वी। उप० बुरा, नीच (कुचाल, कुजाति)।
कुआँ—पु० कुवाँ, कूप, इनारा।
कुआँर कुआर—पु० आश्विन मास।
कुइयाँ—स्त्री० छोटा कुआँ।
कुकड़ना, कुकरना—अक्रि० सिकुड़ जाना। सिमिटना।
कुकड़ी, ककुरी—स्त्री० कच्चे सूतका लच्छा। मुर्गी (कबीर [१०८)
कुकनू—पु० एक गानेवाला पक्षी।
कुकरी—स्त्री० कुक्कुट, मुर्गी।
कुकुही—स्त्री० वन-कुक्कुट।
कुक्कुट—पु० मुर्गा। लुक, चिनगारी, चिनगी।
कुक्कुर—पु० कुत्ता।
कुक्षि—स्त्री० कोख, पेट। गुफा।
कुखेत—पु० बुरी जगह, कुठाँव 'असगुन होंहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा।' रामा० २७४
कुगति—स्त्री० दुरवस्था, दुर्गति।
कुगहनि—स्त्री० बुरा हठ, अनुचित आग्रह।
कुघा—स्त्री० दिशा, तरफ।
कुघात—पु० बुरा दाँव, छल-कपट 'बड़ कुघात कर पातकिनि कहेसि कोपगृह जाहु।' रामा० २०९। कुअवसर।
कुच—पु० स्तन, उरोज। वि० कृपण, संकुचित।
कुचकुचा—वि० कोंचा गया, मसला हुआ, ध्वस्तविध्वस्त 'काची रोटी कुचकुची, परती माछी बार।' गिरिधर०
कुचक्र—पु० साजिश, गुप्त आयोजन।
कुचना—अक्रि० संकुचित होना।
कुचलना—सक्रि० मसलना, दबाना, पाँवसे रौंदना।
कुचाल—पु० अनुचित आचरण। खोटाई, दुष्टता 'लखी कुचाल कीन्हि कछु रानी।' रामा० २१७
कुचाली—वि० दुराचारी, दुष्ट 'एहि विधि बिलपहिं पुर नरनारी। देहिं कुचालिहिं कोटिक गारी।' रामा० २२१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्री० अनुचित आचरण '...दै गति बिना बिबेक एक या और कुचाली। अरपै कोऊ कोटि तिनैं लै करो कपाली।' दीन० २५८

कुचाह—स्त्री० अवाञ्छित संवाद, अमंगलसूचक बात।

कुचिल—वि० देखो 'कुचील', 'पतिबरना मैली भली, काली कुचिल कुरूप।' साखी ३०

कुची—स्त्री० कुञ्जी 'ज्ञान कपाट कुची जनु खोलत।' के० २४३, (उदे० 'तारा')। कूचा, ब्रश।

कुचील—वि० मैला कुचैला, मलिन, दुराचारी 'कामी कृपन कुचील कुदरसन कौन कृपा करि तार्‌यो।' सूवि० २५। गंदा (उदे० 'चिहुर', सू० २५९)।

कुचेल—वि० देखो 'कुचैल'। पु० मलिन वस्त्र।

कुचैन—स्त्री० दुःख, बेचैनी 'सोवत जागत सपन बस रस रिस चैन कुचैन।' वि० ९६ वि० व्याकुल।

कुचैला—वि० मलिन वेशधारी, मैला।

कुच्छित—वि० कुत्सित, अधम।

कुछ—वि० टुक, तनिक।—कुछ = ज़रा ज़रा, थोड़ा।—न कुछ = थोड़ा बहुत —का कुछ = उलटा।

कुजंत्र—पु० बुरा यंत्र, टोना 'कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू। गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू।' रामा०३००

कुज—पु० पेड़। मंगल ग्रह। नरकासुर। वि० लाल।

कुजा—स्त्री० धरणीसुता, जानकी।

कुजात, कुजाति—स्त्री० नीच जाति। पु० नीच जाति-का व्यक्ति। पतित मनुष्य।

कुजोग—पु० कुयोग, बुरा मेल, बुरा संयोग 'ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुजोग सुयोग।' रामा० ८

कुजोगी—वि० कुयोगी, असंयमी।

कुज्जा—पु० पुरवा, मिट्टीका पात्र (साखी ४२)।

कुटंत—स्त्री० कुटाई, मार, चोट।

कुट—पु० घर। पेड़। गढ़। घड़ा। स्त्री० एक झाड़ी।

कुटका—पु० किरका, छोटा टुकड़ा 'चन्दनकी कुटकी भली, ना बबूल बनराँव।' साखी १३५

कुटनई—स्त्री०, कुटनपन—पु० दूतीकर्म।

कुटनी—स्त्री० स्त्रियोंको फुसलाकर पर-पुरुषोंसे मिलाने वाली स्त्री। झगड़ा लगानेवाली स्त्री।

कुटिया—स्त्री० कुटी, छोटी सी झोपड़ी। मँड़ैया।

कुटिल—वि० दुष्ट, टेढ़ा, वक्र, छली। पु० खल।

कुटी, कुटीर—स्त्री० घास फूससे बना घर, झोपड़ी।

कुटुब कुटुम—पु० परिवार 'उग्रसेन सब कुटुम लै ता ठौर सिधायो।' सूबे० ४१६

कुटेक—स्त्री० बुरी टेक। अनुचित हठ।

कुटेव—स्त्री० बुरा अभ्यास।

कुठला—पु० अनाज रखनेका मिट्टीका बड़ा बरतन।

कुठाँउ, कुठाँव—पु० बुरी जगह, कुठौर।

कुठाट—पु० बुरा साज, बुरा आयोजन 'मोहि लगि यह कुठाट तेहि ठाटा।' रामा० ३००

कुठाय—पु० कुठाँव, कुठौर 'सिर धुनि लीन्ह उसास असि मारेसि मोहि कुठाय।' रामा० २१३

कुठार—पु० कुल्हाड़ा। भंडार, कुठला।

कुठारी—पु० भंडारी। स्त्री० कुल्हाड़ी, विनाश करने-वाली 'जनि दिनकर-कुल होसि कुठारी।' रामा० २१५

कुठाहर, कुठोर—पु० बुरा स्थान, कुठाँव। अनुपयुक्त अवसर 'सो सब मोर पाप परिनामू। भयेउ कुठाहर जेहि बिधि बामू।' रामा० २१६

कुठिया—स्त्री० अनाज रखनेका मिट्टीका गहरा बरतन।

कुड़कुड़ाना—अक्रि० भीतर ही भीतर चिढ़ना। सक्रि० पशु पक्षियोंको भगाना।

कुड़बुड़ाना—अक्रि० मनही मन चिढ़ना।

कुडमल—पु० कली 'कुलिस कुन्द कुडमल दामिनि द्युति दसनन देखि लजाई।' विन० १९५

कुडौल—वि० बेडौल, कुरूप।

कुढंग—पु० बुरी रीति, कुचाल। वि० भद्दा, बेढंगा।

कुढंगा—वि० बुरी तर्ज़का, भद्दा।

कुढंगी—वि० बुरी चाल चलनेवाला।

कुढ़ना—अक्रि० चिढ़ना, खार खाना, डाह करना।

कुतका—पु० अँगूठा। मोटा डण्डा, घोंटनेका डण्डा।

कुतरना—सक्रि० दाँतसे कुछ अंश काट लेना।

कुतर्क—पु० बे सिरपैरकी दलील, वितंडावाद।

कुतवार—पु० कोतवाल।

कुतवारी—स्त्री० कोतवालका काम या उसका दफ्तर।

कुतवाल, कुतवाली—देखो 'कुतवार' 'कुतवारी'।

कुतुब फरोश—पु० पुस्तक-विक्रेता।

कुतूहल—पु० तमाशा, खिलवाड़। अचंभा। उत्कंठा।

कुत्ता—पु० श्वान। लपटौवां घास।

कुत्सित—वि० निंदित, नीच। बुरा।

कुथ—पु० कथरी। ओहार, झूल। एक कीड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुदरत--स्त्री० प्रकृति, माया। महिमा। कारीगरी। शक्ति, सामर्थ्य।
कुदरा—पु० देखो 'कुदार'।
कुदलाना—अक्रि० उछलना, कूदना।
कुदाँव—पु० कुघात, धोखा। बुरी स्थिति, बुरा स्थान।
कुदाईं—वि० कुघात करनेवाला, धोखा देनेवाला।
कुदाउ—पु० देखो 'कुदाँव'। 'नृप सनेह लखि धुनेउ सिर पापिनि कीन्ह कुदाउ।' रामा० २३४
कुदाना—सक्रि० कूदनेके लिए प्रेरित करना, दौड़ाना।
कुदाम—पु० खोटा रुपया।
कुदाय—पु० देखो 'कुदाँव'।
कुदार, कुदारी, कुदाली—स्त्री० मिट्टी खोदनेका औज़ार (सू० २११), 'मरमी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान विराग नयन उरगारी।' रामा० ६०९
कुदिन—पु० बुरा दिन, विपत्तिकाल।
कुदिष्ट, कुदृष्टि—स्त्री० बुरी नज़र, पाप-दृष्टि 'इन्हहिं कुदिष्ट बिलोकै जोई।' रामा० ४००
कुदेव—पु० भूसुर, ब्राह्मण। राक्षस, दानव।
कुद्दव—पु० कोदो। पु० तलवार चलानेका एक प्रकार।
कुधर—पु० पहाड़। शेषनाग।
कुधातु—स्त्री० हलकी धातु, लोहा। 'पारस परसि कुधातु सोहाई।' रामा० ५
कुनकुना—वि० कुछ कुछ गरम।
कुनना—सक्रि० खरोंचना, खरादना।
कुनबा—पु० कुटुम्ब।
कुनह—पु० द्वेष, मनमोटाव, खुनस, वैमनस्य।
कुनित—वि० गुञ्जार करता हुआ, बजता हुआ, शब्दायमान 'नूपुर पद कुनित पीताम्बर कटि बाँधे, लाल उपरना सिर मोरनके चँदवा।' श्रीकृष्णदास
कुपंथ—पु० बुरा रास्ता। वर्जित मार्ग, कुत्सित सिद्धान्त, कुचाल (रामा० १२७)।
कुपथ—पु० कुमार्ग, कुचाल 'कुपथ निवारि सुपंथ चलावा।' रामा० ३९८। स्वास्थ्यके लिए हानिकारक भोजन 'कुपथ माँगु रुज ब्याकुल रोगी।' रामा० ७७
कुपना—अक्रि० कोप करना, नाराज़ होना।
कुपाठ—पु० बुरी सलाह 'कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू।' [रामा० २०८
कुपार—पु० सागर, समुद्र।
कुप्पा—पु० चमड़ेका बड़ा बरतन।
कुफुर—पु० मुसलमानी मतसे भिन्न और कोई मत।
कुबंड—पु० कोदण्ड, धनुष। वि० विकृतांग।
कुबड़ा—वि० झुका हुआ। पु० टेढ़ी पीठवाला।
कुबत—स्त्री० बुरी बात, कुचाल, निन्द्य आचरण 'कहति न देवरकी कुबत कुल तिय कलह डराति।' वि० ४०
कुबरी—स्त्री० कंसकी एक दासी, कुब्जा। मंथरा।
कुबाक—पु० अनुचित वाणी, शाप। 'तजी संक सकुचति नचति बोलति बाक कुबाक।' वि० ९३
कुबानि—स्त्री० बुरी टेव।
कुबोलनी—वि० स्त्री० कुभाषिणी।
कुमंठी—स्त्री० लचीली कमची या टहनी।
कुमकुम—पु० केशर। लाख-निर्मित लड्डू जिसमें अबीर भर कर मारते हैं।
कुमाच—पु० एक तरहका रेशमी वस्त्र 'काम जो आवै कामरी, का लै करै कुमाच।' दोहा० १५४
कुमार—पु० पुत्र, बालक। राजपुत्र। वि० अविवाहित।
कुमारग—पु० बुरा मार्ग।
कुमारी—वि० स्त्री० अविवाहिता। स्त्री० बारह वर्ष तककी या अविवाहित लड़की।
कुमुदिनी, कुमोदनी, कुमोदिनी—स्त्री० कुईं।
कुमोद—पु० कुमुदिनी, कुईं।
कुम्मैद—पु० कुम्मैत। कालापन लिये हुए लाल घोड़ा।
कुम्हड़ा, कुम्हाड़ा—पु० काशीफल (अ० १३)। कुम्हड़ बतिया = कुम्हड़ेका छोटा फल; निर्बल मनुष्य 'इहाँ कुम्हड़-बतिया कोउ नाहीं।' रामा० १४८
कुम्हलाना—अक्रि० मुरझाना, प्रसन्नतारहित या कान्तिहीन होना।
कुम्हार—पु० देखो 'कुंभार'।
कुम्ही—स्त्री० पानीपर फैलनेवाला एक पौधा।
कुरंग—पु० बुरा लक्षण। लाखकी तरहका रँग। इस रंगका घोड़ा। हिरन, मृग। वि० बदरंग, बुरे रंगका।
कुरंगसार—पु० कस्तूरी।
कुरंगिन—स्त्री० मृगी।
कुरकुट—पु० मुर्ग़ा, कुक्कुट 'ललितकिसोरी सुनि यहि बानी, कुरकुट बिसद पुकारे।' ललितकि०। छोटा टुकड़ा।
कुरकुटा—पु० टुकड़ा, रवा। कड़ा मोटा अन्न। रोटीका टुकड़ा। 'जूड़ कुरकुटा भीखहिं खाहा। जोगी सात भात कर काहा।' प० ६०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुरच—पु० क्रौंच, टिटिहरी।

कुरना—अक्रि० ढेर लगना, गिरना 'पारावार पूरन अपार परब्रह्म राशि, जहुदाकी कोरै एक बारही कुरै परी।' देव (ब्रज० २७३)। पक्षियोंका कलरव करना।

कुरबानी—स्त्री० बलि देनेकी क्रिया, बलि।

कुररा—पु० (स्त्री० कुररी) क्रौंच। टिटिहरी 'बिलपति अति कुररीकी नाईं।' रामा० ३८२

कुरलना—अक्रि० कलरव करना 'खूँदहिं कुरलहिं जनु सर हंसा।' प० १५२, (१६३)

कुरला—स्त्री० क्रीड़ा 'कुरला काम केरि मनुहारी।' प० १५२। कुल्ला।

कुरवारना—सक्रि० खोदना, खरोंचना 'सुख कुरवारि फरहरी खाना'। प० ३१, (अ० १४२)

कुरसी—स्त्री० एक तरहका ऊँचा आसन या चौकी। मकानका ऊँचा फर्श। चौकी या तावीज़।

कुराई—स्त्री० कुराह, देखो 'कुराय'। 'कुश कंटक काँकरी कुराई। कटुक कठोर कुवस्तु दुराई।' रामा० ३४८

कुराय, कुराह—स्त्री० कुमार्ग, ऊँची नीची जगह, गड्ढा।

कुराहर—पु० कोलाहल, शोर 'काग कुराहर करि सुख पावा।' प० २११, (८६)

कुराही—पु० दुराचारी, कुमार्गी 'कुटिल कुराही कुलदोषी सो कलंक भरो कुमति मते मैं अति महामद पूर है।'—रघुनाथ। स्त्री० कुमार्गगमन, दुराचार।

कुरिहार—पु० कोलाहल 'को नहिं करै केलि कुरिहारा।' प० २०९

कुरी—पु० कुल, 'अस्टौ कुरी नाग सब, अरुझ केसके बाँद।' प० ४४। समूह, राशि, 'तेइ सत बोहित कुरी चलाये।' प० ६८ (१२९, १८१ भी) टीला। स्त्री० टुकड़ा। कुरी कुरी होना = खण्ड खण्ड होना।

कुरुख—वि० वक्र दृष्टियुक्त, क्रोधित (भू० ११, ११७)।

कुरुखि—पु० वक्रदृष्टि, कटाक्ष 'बार बार अवलोकि कुरुखियन, कपट नेह मन हरत हमारे।' सू० १६९

कुरुखेत—पु० कुरुक्षेत्र।

कुरुवा—पु० कछवा।

कुरेदना—सक्रि० खरोंचना।

कुरेर—पु० कल्लोल, क्रीड़ा, आमोदप्रमोद।

कुरेलना—सक्रि० कुरेदना, खोदना। [पु० राशि, ढेर।

कुरैना—सक्रि० जलना, ढेर लगाना (उदे० 'कुरना')।

कुरौना—सक्रि० ढेर लगाना, डालना।

कुलंग—पु० लम्बी गरदनवाला एक जलपक्षी। मुर्गा।

कुल—पु० वंश, कुनबा, जाति, समूह। वि० सब।

कुलक्षणी, कुलच्छनी—स्त्री० बुरे लक्षणवाली या बदचलन स्त्री। वि० बुरे लक्षणवाला, दुराचारी।

कुलटा—वि० स्त्री० व्यभिचारिणी।

कुलफ—पु० ताला।

कुलवंत, कुलवान्—वि० अच्छे कुलवाला, कुलीन।

कुलह, कुलहा—स्त्री० टोपी। शिकारी पक्षियोंकी आँखोंपरका ढक्कन 'कुमति-विहंग-कुलह जनु खोली।' रामा० २१२

कुलही—स्त्री० कनटोप, बच्चोंकी टोपी (सू० ५१)।

कुलाँच, कुलाँट—स्त्री० छलाँग, चौकड़ी।

कुलाधि—स्त्री० पाप।

कुलाल—पु० कुम्हार (अ० ९२, सू० २३)।

कुलाहल—पु० कोलाहल, शोर-गुल 'जब गहि बाँह कुलाहल कीनो तब गहि चरण निहोरी।' सूबे० ६५

कुलिया—स्त्री० तंग गली।

कुलिश, कुलिस—पु० वज्र 'कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।' रामा० ५४८। हीरा। भगवान्‌के चरणोंका वज्राकार चिह्न।

कुलीन—वि० उच्च वंश-संभूत, शुद्ध।

कुलुफ—पु० ताला 'जुलफमें कुलुफ करी है मति मेरी छलि एरी अलि कहा करौं कल ना परति है।' दीन १०

कुल्लेल—स्त्री० कलोल, क्रीड़ा।

कुलेलना—अक्रि० आमोदप्रमोद करना। किलोल करना।

कुल्या—स्त्री० नाला, नहर। कुलवती स्त्री।

कुल्ला—पु० मुहँमें पानी लेकर इधर उधर करना और बाहर फेंकना।

कुल्ली—स्त्री० देखो 'कुला'। काकुल, जुल्फ।

कुल्हड़—पु० पुरवा।

कुल्हरा, कुल्हाड़ा—पु० पेड़ लकड़ी काटने या लकड़ी चीरनेका औज़ार, कुठार। (रघु० १९७)

कुल्हरी, कुल्हाड़ी—स्त्री० छोटा कुल्हरा, कुठार, 'ऐसे भारी वृक्षको कुल्हरी देत गिरत।' गिरिधर०

कुल्हिया—स्त्री० छोटा कुल्हड़, छोटा पुरवा 'खुलिहै खुले कपाटके तजि कुल्हियाको मोह।' दीन० २२३

कुवलय—पु० नीला कमल। सूर्यवंश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुवाँर, कुवार—पु० आश्विन मास।
कुबेर—पु० धनपति, अलकापति, राजराज।
कुश, कुस—पु० काँसकी तरहकी घास। दाभ, दर्भ। पानी। कुसिया। लवके बड़े भाई।
कुशल—वि०, स्त्री० देखो 'कुसल'।
कुशाग्र—वि० पैना, नुकीला, तीव्र।
कुशीलव—पु० नट, गायक। कवि।
कुशेश, कुशेशय—पु० कमल (कुशेश, भ्र० ९९)।
कुष्टी कुष्ठी—पु० कोढ़ी (साखी ९५)।
कुसगुन—पु० असगुन, अशुभ लक्षण।
कुसरात, कुसलात—स्त्री० कुशल, क्षेम 'दच्छ न पूछी कछु कुसलाता।' रामा० ४०, (कुसरात, सुजा० ६४)
कुसल—स्त्री० क्षेम, राज़ी-खुशी 'अब कहु कुसल बालि कहँ अहई।' रामा० ४६०। वि० चतुर, भला, अच्छा, पुण्यशील। (रामा० १५७)
कुसलई—स्त्री० चतुरता, दक्षता।
कुसलाई—स्त्री० चतुरता, निपुणता। राज़ीखुशी, कुशल-क्षेम (रामा० १६५)।
कुसाइत—स्त्री० अशुभ मुहूर्त, कुसमय।
कुसाखी—पु० बुरा पेड़।
कुसुंभ—पु० कुमकुम, केसर। बर्रें, कुसुम।
कुसुँभी—वि० कुसुमकी तरह लाल 'हरियर भूमि, कुसुंभी चोला। औ धनि पिउ संग रचा हिंडोला।' प० १६२
कुसुम—पु० फूल, प्रसून। एक नेत्ररोग। रजोदर्शन। एक पेड़ जिसके फूलोंसे लालरंग बनता है।
कुसुमबाण,-शर, कुसुमायुध—पु० कामदेव।
कुसुमाकर—पु० वसन्त। उद्यान।
कुसूत—पु० बुरा सूत, बुरी व्यवस्था।
कुसेस, कुसेसय—पु० कमल।
कुस्टी—पु० कोढ़ी। 'बाहन बैल,कुस्टि कर भेसू।' प० ९७
कुहँकुहँ, कुहकुह—पु० कुमकुम, केशर (प० १६) 'पेट परत जनु चन्दन लावा। कुहँकुहँ केसर बरन सुहावा।' प० ५०
कुहकना—अक्रि० दे० 'कुहुकना'।
कुहकुहाना—अक्रि० (कोयलका) कूकना (भ्र० ३८)।
कुहना—सक्रि० मारना 'पाहि हनुमान, करुणानिधान राम पाहि काशी कामधेनु कलि कुहत कसाई है।' कविता० २४९। पु० गान, प्रलाप।
कुहनी—स्त्री० देखो 'कोहनी'।
कुहप—पु० निशाचर, राक्षस।
कुहर—स्त्री० एक शिकारी पक्षी। छिद्र।
कुहर, कुहरा—पु० जमी हुई भाफके जलकण जो वायुमें मिले रहते हैं 'ज्यों रवि तेज पाइ दशहूँ दिशि दोष कुहरको फाट्यो।' सूबे० ३९
कुहराम—पु० शोरगुल, रोना चिल्लाना। खलबली।
कुहाड़ा, कुहारा—पु० कुल्हाड़ी (उदे० 'उनमेद') 'ज्ञानकुहाड़ा कर्मबन, काटि किया मैदान।' साखी २६
कुहाना—अक्रि० कुपित होना, रूठना 'जानेउँ मरम राउ हँसि कहई। तुम्हहिं कुहाव परम प्रिय अहई।' रामा० २१२
कुही—स्त्री० एक शिकारी पक्षी, 'कुहर'। 'कुही सम सुकुल मयूरसे तिवारी भारी, जुर्रा सम मिसिर नवैया नहीं माथके।'—हरिनाथ। पु० एक तरहका घोड़ा।
कुहु, कुहू—स्त्री० अमावस्या (सू० ११९)। कोयल इत्यादिकी कूक। अँधेरी रात (सू० १४४)।
कुहुकना—अक्रि० कोयल इ० पक्षियोंका मीठे स्वरमें बोलना 'कुहुकहिं मोर सोहावन लागा' प० १३
कुहुक बान—पु० एक तरहका बाण।
कूँख—स्त्री० कुक्षि, उदर, गर्भ। काँखनेका शब्द।
कूँखना—अक्रि० काँखना।
कूँचना—सक्रि० कुचलना।
कूँचा—पु० बढ़नी, झाड़ू।
कूँची—स्त्री० छोटा झाड़ू, ब्रश। कुञ्जी 'सहज कपाट उघरि गये ताला कूँची टूट।' सूबे० २९७
कूँजना—अक्रि० पक्षियोंका मधुर शब्द करना (सू० १९१)
कूँड—स्त्री० लोहेका ऊँची टोपी, शिरस्त्राण (उदे० 'अँगरी') रुण्ड मुण्ड अब टूटहिं स्यो बखतर औ कूड़।' प० ३१९ (३२२ भी)। मिट्टी या धातुका गहरा, चौड़ा बरतन।
कूँडा—पु० कुंडा, मिट्टीका चौड़ा बरतन। गमला।
कूँडी—स्त्री० कुंडी, पथरी। गेंडुरी।
कूँथना—अक्रि० कराहना। कबूतरोंका बोलना [प० ५०
कूँदना—सक्रि० खरादना 'कुंदन बेल साजि जनु कूँदे।'
कूई—स्त्री० कुमुदिनी 'अब कित दीठ कमल औ कूई।' प०२७
कूक—स्त्री० कोयल इ०की बोली; सुरीला स्वर, दीन २२६
कूकना—अक्रि० कोयल इत्यादिका बोलना, कुहकना। चिल्लाना, किलकारी मारना (छत्र० २०)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कूकर—पु० कुत्ता।

कूकरकौर—पु० कुत्तेके आगे डाला गया जूठा भोजन। तुच्छ वस्तु।

कूकस—पु० भूसी (उदे० 'कन', 'कनी')।

कूच—पु० प्रस्थान (रवि० २५)।

कूचा—पु० संकीर्ण पथ। झाड़ू (ललित० ३७)। क्रौंच पक्षी, करौंकुल 'बाएँ कुररी, दहिने कूचा।' प० ६१

कूजना—अक्रि० मधुर ध्वनि करना।

कूजा—पु० बेलेका फूल 'सुरँग गुलाल कदम औ कूजा।' प० १५। कुज्जा, कुल्हड़। कुजेकी मिसरी।

कूट—पु० गूढ़ अर्थवाला व्यंग्य। गुप्त भेद। कठिन अर्थवाली रचना। घड़ा। झूठ। धोखा। गिरिशिखर। अनाज इ०का ऊँचा ढेर। जाल। सींग। हथौड़ा। टूटे सींग वाला बैल 'हे रसाल अज कूट कपि कोल क्रमेलक अंध।' दीन० १५। निहाई। कालकूट 'का वह पंखि कूट मुँह कूटे। अस बड़बोल जीभ मुख छोटे।' प० ३९। वि० झूठा, छलिया। बनावटी, धर्म-च्युत। स्त्री० कुटी। कुट नामक औषध (उदे० 'कटजीरा')।

कूटना—सक्रि० कुचलना, मारना, पीटना।

कूड़ा—पु० कचड़ा, कतवार।

कूढ़—वि० मूर्ख, नासमझ (मुद्रा०४४)। हलका एक भाग।

कूतना—सक्रि० अनुमान करना।

कूदना—अक्रि० उछलना, पहुँच जाना। सक्रि० लाँघ जाना।

कूप—पु० कुआँ, कुंड।—मंडूक = कुएँका मेंढक, जिसको बाहरका ज्ञान न हो। अनुभवहीन व्यक्ति।

कूब, कूबड़, कूबा—पु० पीठपरका उठा हुआ भाग 'कूबरीको कूब काटि लाय दे सितावी हमैं टोपी करि ताकी तब गोपी जोगिनी बनैं।' ग्वाल

कूबरी—स्त्री० कुबरी (कंसकी दासी), कैकेयीकी दासी।

कूर—वि० दुष्ट, निर्दय, डरावना, निकम्मा, मूर्ख। मिथ्या (सुन्द० ८८)।

कूरता—स्त्री० कठोरता, कायरता, मूर्खता।

कूरम—पु० कछुआ। पृथिवी।

कूरा—पु० राशि, ढेर 'बिन जिउ पिंड छारकर कूरा।' प० ९१। भाग, अंश। वि० कुटिल, 'कबीर नाव है झाँझरी, कूरा खेवनहार।' साखी ७७

कूरी—स्त्री० टीला, धुस (प० ३१८)। छोटी राशि।

कूर्म—पु० कछवा। विष्णुका एक अवतार। पृथ्वी।

कूल—पु० तट, किनारा। निकट, पास 'रक्षिबेको यज्ञ कूल बैठि बीर सावधान।' राम० ३२

कूष्मांड—पु० कुम्हड़ा, पेठा।

कूह—स्त्री० चीख। चिग्घाड़।

कृच्छ्र—पु० दुःख, पाप। वि० कष्टयुक्त।

कृत—वि० किया हुआ, रचित। पु० सतयुग।

कृतकाम, कृतकृत्य—वि० कृतार्थ।

कृतघ्न, कृतघ्नी—वि० अकृतज्ञ, नमकहराम।

कृतघ्नताई—स्त्री० नमकहरामी, अकृतज्ञता।

कृतज्ञ—वि० उपकार माननेवाला।

कृतहीन—वि०कृतघ्न (उदे० 'पतीजना')।

कृतांत—पु० यमराज, मृत्यु।

कृतार्थ—वि० जिसका मनोरथ पूरा हो गया हो।

कृति—स्त्री० कार्य, रचना। क्षति। जादू। एक छंद।

कृतिवास, कृत्तिवास—पु० कृत्ति (चमड़ा) ही वस्त्र है जिनका ऐसे शिवजी।

कृत्य—पु० कर्तव्य, कर्म।

कृत्रिम—वि० बनावटी, नकली।

कृपण, कृपन—वि० कंजूस, अनुदार। नीच, पतित 'कृपा निधान सूरकी यह गति कासों कहै कृपन यहि काल।' [सूवि० ४०

कृपनाई—स्त्री० कंजूसी, क्षुद्रता।

कृपा—स्त्री० दया, अनुग्रह।

कृपाण, कृपान—पु० तलवार, कटार।

कृपालता, कृपालुता—स्त्री० दयाभाव, दयालुता।

कृपिण, कृपिन—वि० कंजूस। नीच (रामा० ४४४)।

कृपिणता, कृपिनता, कृपिनाई—स्त्री० देखो 'कृपनाई'।

कृमि—पु० छोटा कीड़ा।

कृश—वि० दुर्बल, क्षीण, सूक्ष्म।

कृशता, कृशताई—स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता, अल्पता।

कृशानु—पु० अग्नि। चित्रक।

कृषक—पु० किसान, काश्तकार।

कृषि, कृषी—स्त्री० खेती।

कृष्ण—वि० काला, साँवला, नीला। पु० वासुदेव, पिक, अर्जुन, कलि, इ०।

कँचुरि, कँचुल, कँचुली—स्त्री० सर्पादिकोंका ऊपरी आवरण 'तुलसी कँचुरि परिहरे होत साँपहू ढीठि।' दोहा० १११। 'ज्यों कँचुलि तजै भुजंग।' सू० १०८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के—सर्व० कौन।
केउ—सर्व० कोई।
केउर—पु० देखो 'केयूर'। 'कंबु कंठ भुज नैन बिसाला। कर कंचन केउर नग जाला।' सूर्व० ९७
केऊ—सर्व० कोई। कई, कितनेही (सुन्द० १४३)।
केकि, केकी—पु० मयूर।
केत—पु० निकेत, घर, स्थान। ध्वजा। केतकी 'भौंर न देख केत कर काँटा।' प० १०८
केतक—पु० केवड़ा। वि० कितने, बहुत।
केता, केतो—वि० कितना।
केतिक—वि० कितने (उदे० 'उसासी')। कितना।
केदली—पु० कदली वृक्ष।
केदार—पु० थाला, क्यारी (दीन० १९)।
केना—पु० छोटा मोटा सौदा, अन्न देकर खरीदी हुई वस्तु (अ० १२)। तरकारी।
केम—पु० कदम्ब 'अब तजि नाव उपावको आयो सावन मास। खेल न रहिबो खेमसों केम कुसुमकी वास।' [बि० २७६
केयूर—पु० बाजूबन्द, बिजायठ।
केर—पु० केला 'कह रहीम कैसे बने केर बेरको संग।' —रहीम। अ० का—के—की।
केरा, केला—पु० वृक्ष विशेष, रंभा, कदली। रंभाफल। केलि, क्रीड़ा, विहार 'भगवत भगवत कहैं, करैं नहिं हम बिन केला।'—भगवतरसिक।
केवट—पु० एक वर्णसंकर जाति।
केवड़ा, केवरा—पु० एक पौधा, उसका फूल या आसव। (रस० १२)
केवाँच—स्त्री० सेमकी तरहकी बेल या उसकी फली। कौंच। 'सेज केवाँच जानु कोइ लावा।' प० ७८
केवा—पु० कमल 'भौंर खोज जस पावै केवा। तुम्ह कारन मैं जिउपर छेवा।' प० १४६। पु० बहाना, संकोच।
केवाड़—पु० किवाड़।
केश, केस—पु० बाल। किरण। सूर्य। वरुण। विश्व।
केसरी—पु० सिंह, अश्व। नागकेसर इ०।
केसू—पु० टेसू, पलाशका फूल 'केसू फूले दिवस चारि संवर भये पचास।' कबीर २१
केहरी—पु० सिंह 'भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरज भागा।' रामा० २२८। घोड़ा।
केहा—पु० मोर। बटेरकी तरहका पक्षी।
केहूँ, केहू—क्रिवि० किसी प्रकार 'केहु न मानत महा हठीलो, कही तुम्हारी आख्यो।'—कृष्णदास। (राम० ७८)
कैंची—स्त्री० कतरनी। एक कसरत। एक पेंच।
कैंड़ा—पु० माप, पैमाना। ढंग, चाल। एक यंत्र।
कै—वि० कितना। अ० या, अथवा।
कैतव—पु० कपट, धोखा, बहाना। जुआ। धतूरा।
कैथ, कैथा—पु० एक पेड़ या उसका फल, कबीठ।
कैद—स्त्री० कारावास, बंधन, रुकावट।
कैधौं—अ० या, अथवा।
कैफ—पु०, स्त्री० नशा 'चढ़ी इश्ककी कैफ यह उतरै सिरके साथ।' नागरी०
कैफी—वि० नशेबाज़, मतवाला।
कैबर—स्त्री० तीरकी गाँसी 'कैबर सी कसकै हिये बाँकी चितवनि नारि।' रामसहायदास
कैबार—पु० किवाड़ 'एरे मन मेरे, तैं घनेरे दुख दीन्हे, अब ए कैबार देकै तोहिं मूँदि मारौं एकै बार।' रवि० १००
कैम, कैमा—पु० देखो 'केम'।
कैरा—पु० भूरा रंग। एक तरहका बैल। वि० भूरे रंगका। भूरी भूरी आँखोंवाला।
कैलास—पु० शिवगिरि। स्वर्ग।
कैवा—क्रिवि० कई बार 'कैवा आवत यह गली रहे चलाय चलै न।' बि० २९१
कैसा, कैसो—वि० किस तरहका। के सदृश।
कैसिक—क्रिवि० कैसे, किस भाँति 'कैसिक पीर उघारि दिखाऊँ, सो मेरो हियरोई जानै।' ललित किशोरी
कोंई—स्त्री० कुमुदिनी 'कवँल पास जनु बिगसीं कोंई।' प० २३
कोंचना—सक्रि० चुभाना, गड़ाना (उदे० 'अंतस')।
कोंछ—पु० स्त्रियोंके अंचलका एक भाग।
कोंछना, कोंछियाना—सक्रि० साड़ीका कुछ भाग चुनकर नाभिके समीप खोंसना। कोंछमें कुछ रखकर उसके दोनों छोरोंको कमरमें दहिनें बायें खोंसना।
कोंप, कोंपल—स्त्री० पेड़ोंका नया पत्ता, कला, अंकुर। 'उठी कोंप जस दारिवँ दाखा।' प० २७, 'अलया गज मस्तक चढ़ी निर्भय कोंपल खाय।' साखी ८१
कोंवर, कोंवरा—वि० कोमल, मुलायम 'कठिन भूमि, अति कोंवरे, जालक युत शुभ पाय।' के० २३७। कोंवर कुटिल केस नग कारे।' प० ४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोंहड़ा—पु० कुम्हड़ा।
कोंहड़ौरी—स्त्री० देखो 'कोहँड़ौरी'।
को—सर्व० कौन। सम्बन्ध, कर्म व सम्प्रदानकी विभक्ति।
कोआ—पु० रेशमके कीड़ेका घर। कटहलका पका हुआ बीज-कोश। आँखका डेला (गटा) या आँखका कोना। 'बरुनी बघम्बरमें गूदरी पलक दोऊ, कोए राते बसन भगोहे भेष रखियाँ।...जोगिन ह्वै बैठी हैं वियोगिनकी अँखियाँ।' देव (ब्रज० २९८)
कोइरी—पु० तरकारी बोनेवाला, काछी।
कोइलिया, कोइल—स्त्री० कोयल।
कोई—सर्व० न जाने कौन एक। अज्ञात या अविशेष व्यक्ति या वस्तु। वि० अनिश्चित एक, एक भी। क्रिवि० लगभग।
कोउ, कोऊ—सर्व०, वि० देखो 'कोई'।
कोउक—सर्व० कोई एक, कुछ लोग।
कोकाबेरी, कोकाबेली—स्त्री० नीली कोई 'तोहि असि नाहीं, कोकाबेरी।' प० २१४
कोकिल, कोकिला—स्त्री० कोयल, पिक।
कोको—स्त्री० कौआ। बच्चोंको भुलावा देनेका शब्द।
कोख—स्त्री० कुक्षि, उदर, गर्भाशय। (उदे० 'अचगरा')
कोचना—सक्रि० देखो 'कोंचना'।
कोट—पु० क़िला, राजप्रासाद। परकोटा, प्राचीर। एक पहनावा। समूह। वि० करोड़ 'लूटे सुख मोटे, करै मनुहार कोटै, बैठ्यो पायन पलोटै लाल राधा महारानीके।' श्रीहठी
कोटवार—पु० दुर्गरक्षक, चौकीदार, शान्तिरक्षक 'नौ पौरी तेहिं गढ़ मझियारा। औ तहँ फिरहिं पाँच कोटवारा।' प० १००
कोटि—स्त्री० वर्ग, दरजा। उच्चता, उत्तमता। धनुषका सिरा, नोक। समूह। वि० करोड़।
कोटिक—वि० करोड़, अगणित।
कोठरी—स्त्री० छोटा कमरा।
कोठा—पु० कोष्ठ, कमरा, अटारी, खण्ड। पेट।
कोठारी—पु० भंडारी।
कोठिला—पु० देखो 'कुठला'।
कोठी—स्त्री० बड़ा मकान। बड़ी दूकान, लेन देनकी दूकान।
कोठीवाला—पु० बड़ा व्यापारी, साहूकार।
कोड़ा—पु० चाबुक। गेंदबल्ला। एक पेंच।
कोढ़—पु० त्वचा सम्बन्धी एक रोग। कोढ़की खाज, कोढ़में खाज = विपत्तिपर विपत्ति लानेवाली वस्तु। 'एक तो कराल कलिकाल सूल मूल तामें कोढ़मेंकी खाजु सी सनीचरी है मीनकी।' विन० ५०२ (अन्य उदे० 'निनारा')
कोत—पु० ताक़त, शक्ति। दिशा, ओर।
कोतल—पु० जलूस इत्यादिके लिए सजाया गया घोड़ा। राजा या प्रधानके चढ़नेका घोड़ा 'गवने भरत पयादेहि पाये। कोतल संग जाहिं डोरिआये।' रामा० २९६
कोतवार—पु० देखो 'कोटवार'। 'पौरि पौरि कोतवार जो बैठा।' प० ११८
कोतवाल—पु० नगरपाल, शान्तिरक्षक।
कोता—वि० छोटा, अल्प।
कोति—स्त्री० दिशा, तरफ।
कोथली—स्त्री० कमरमें बाँधकर रुपये रखनेकी थैली, बटुआ।
कोद—स्त्री० दिशा, तरफ (वि० २२७), 'एक कोद रघुनाथ उदार। भरत दूसरी कोद विचारे।' के० १५५, (अ० १४६)
कोदव—पु० कोदो, एक तरहका कदन्न 'फरइ कि कोदव बालि सुसाली।' रामा० ३२४
कोध—पु० 'कोद', दिशा, तरफ 'नरनारी सब देखि चकित भे दावा लग्यो चहुँ कोध।' सूर० ९१
कोन—पु० कोना।
कोना—पु० एक बिन्दुपर मिलनेवाली दो रेखाओंके बीचका अन्तर। खूँट, नुकीला किनारा। एकान्त स्थान।
कोपना—अक्रि० क्रुद्ध होना (सू० १५), 'कोपेउ जबहिं बारिचर केतू।' रामा० ५०
कोपर—पु० बड़ा थाल 'दधि मधुगोर कनकके कोपर आपुन भरत भरे।' सू० ४५
कोपीन—पु० संन्यासियों आदिके पहननेकी लँगोटी, काँछा। पाप, अनुचित कार्य।
कोमल—वि० मृदु, नम्र, नाजुक, सुंदर (के० २५), कच्चा।
कोमलता, कोमलाई—स्त्री० मृदुता, नरमी, मधुरता। 'चरन लुनाई दग देखे बनि आई जिन कोमलाई औ ललाई पदुमनकी।' (कको० ५०७), (उर्दू० १०१)
कोय—सर्व० कोई।
कोयल—स्त्री० पिक, कोकिला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोया—पु० देखो 'कोआ'। 'जहँ सियराम लखन निसि सोये। कहत भरे जल लोचन कोये।' रामा० २९३

कोर—स्त्री० किनारा, सिरा (ललित० १०२)। कोना (अ० ५६)। 'वदन तनु चित चोरि चितवत झलक लोचन कोर।' सू० १७६। द्वेष। दोष। कतार। उँगली, कुहनी आदिकी सन्धि, गाँठ, पोर 'कोर कोर कटि गयो हटि कै न पग दयो लयो रन जीति किरवान करतूतीको।'—नेवाज। करोड़ 'रुकत न खंजन नैन ये जतन कीजियत कोर।' रतन० ४७

कोरक—स्त्री० कलिका। मृणाल। फूलकी कटोरी।

कोरना—सक्रि० खोदना 'भा कटाव सब अनभन भाँती। चित्र कोरि कै पाँतिहिं पाँती।' प० २०। कुरेदना, कुतरना 'जैसे काठ कोरि तामें पूतरी बनाय राखी सो विचार देखिये तो उहै एक दारु है।' सुन्द० १२८

कोरवा—पु० 'कोरा', गोद 'जब होरिला कोरवा रहै तौ हियरा हुलसात।' सुधाकर

कोरा—वि० जो व्यवहारमें न आया हो, नया, 'जाइ लेहु आरे पर राखो काल्हि मोल लै राखै कोरी।' सूबे० ७५। अछूता, साफ़, सादा, खाली। विद्या-विहीन, दोष-रहित, बेदाग़। 'दिन थोरी भोरी अति कोरी देखत ही जु स्याम भये चाड़ी।' सू० ६६। पु० एक जल-पक्षी। गोद, क्रोड़ (उदे० 'कुरना')।

कोरि—वि० कोटि, करोड़ 'कर जोरि पग परि तोरि उपवन कोरि किंकर मारियो।' राम० ३४५

कोरिया—स्त्री० झोपड़ी 'ढूँढि फिरे घर कोउ न बतावै स्वपच कोरिया लों।' सूबि० ५०

कोरी—पु० हिन्दू जुलाहा। स्त्री० बीस वस्तुओंका समूह।

कोल—पु० गोद। शूकर। एक जंगली जाति। एक तौल।

कोलिया—पु० लम्बा सा खेत। देखो 'कुलिया'।

कोली—स्त्री० अंक, गोद, अँकवार। पु० कोरी।

कोल्हू—पु० ऊख, तेल इ० पेरनेका यंत्र।

कोविद—वि० विद्वान्, पंडित।

कोश, कोष—पु० ख़ज़ाना, संचित धन। डब्बा। अंडा। सम्पुट, म्यान। समूह, शब्द-संग्रह। कोया। मद्यपात्र।

कोष्ठ—पु० कोठा, पेटका भीतरी हिस्सा। कोष।

कोस—पु० दो मीलकी दूरी। कोष, भंडार (विन० ४५७)।

कोसना—सक्रि० दुर्वाक्य कहकर किसीका अमंगल चाहना।

कोसिला—स्त्री० कौशल्या।

कोहँड़ौरी—पु० पीठी और कुम्हड़ेकी बरी (प० १३५)।

कोह—पु० पहाड़। क्रोध 'सूध दूध मुख करिय न कोहू।' रामा० १५०, (सू० ६८)

कोहनी—स्त्री० बाहुके बीचकी गाँठ।

कोहबर—पु० विवाहके समय कुल-देवताकी पूजाका स्थान (रामा० १७८)।

कोहार—पु० कुम्हार 'जैसे भँवै कोहारके चाका।' प० ७०

कोहान—पु० ऊँटकी पीठका कूबड़।

कोहाना—अक्रि० क्रोध करना, अप्रसन्न होना, रूठना 'कीरति कुसल भूति जय ऋधि सिधि तिन्हपर सबै कोहानी।' गीता० २७३ [रामा० १४७

कोही—वि० क्रोधी 'सुनि रिसाय बोले मुनि कोही।'

कौंकिर—स्त्री० हीरेकी कनी। काँचकी किरिच, काँचकी रेत।

कौंच—स्त्री० सेमके सदृश एक बेल या उसकी फली।

कौंध—स्त्री० बिजलीकी चमक, चमक। 'छोरि परी है सुकंचुकी न्हानको अंगन तेजमें ज्योतिके कौंधे।' पद्माकर

कौंधना—अक्रि० बिजलीकी चमकना 'कौंधत अह जस भादौं रैनी।' प० २३२

कौंधा—स्त्री० देखो 'कौंध'। 'मनि कुण्डल झलकैं अति लोने। जनु कौंधा लौकहि दुइ कोने।' प० ४८, 'हँसनमें दसन दुतिकी होत कौंधैं।' आनन्दघन

कौंल—पु० कमल (ललित १०९)।

कौंवरा—वि० कोमल 'कौंवरे अंग करेरे कुचावृत लाजलची गुन ऊँचे मनोरथ।' रवि० ४५

कौंहर—पु० इन्द्रायनकी तरहका फल जो पकने पर बहुत लाल होता है 'कौंहर सी एँड़ीनकी लाली देखि सुभाइ। पाय महावर देनको आप भई बेपाइ।' बि० २४

कौआ—पु० काक। बहुत चालाक मनुष्य। गलेके भीतर लटकता हुआ मांसका टुकड़ा।

कौड़ा—पु० बड़ी कौड़ी (बि० ९६)। गड्ढेमें जलायी हुई आग। अलाव।

कौड़िया, कौड़िल्ला—पु० मछली खानेवाला एक जल-पक्षी 'नैन कौड़िया होइ रहे...' प० ६४

कौड़ी—स्त्री० घोंघेकी तरह अस्थिकोशमें रहनेवाला एक कीड़ा। उक्त कीड़ेका अस्थिकोश जो द्रव्यके रूपमें व्यवहृत होता है, बराटिका। धन, रुपया-पैसा 'कौड़ी लागी लोभबस, करहिं विप्र गुरुघात।' रामा० ५९२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छातीके नीचेकी बीचवाली हड्डी। कटारकी नोक। जंघे, काँख इ० की गिलटी। कौड़ीका = जिसका कुछ मूल्य न हो 'कौड़ीके न कामके सु आये बिन दामके हैं निपट निकाम ये आम दयारामके।'–बेनी। कौड़ी—जोड़ना = थोड़ा थोड़ा करके धन एकत्र करना।

कौतिक, कौतिग—पु० देखो 'कौतुक'।

कौतुक—पु० विनोद, आश्चर्य, तमाशा (कबीर २३१)।

कौतुकिया—पु० कौतुक करनेवाला। विवाह ते करानेवाले पुरोहित इ० 'तौ कौतुकियन्ह आलस नाहीं।' रामा० ४९

कौतुकी—पु० देखो 'कौतुकिया' (रामा० ७७)।

कौतूह, कौतूहल—पु० कुतूहल, लीला, कौतुक 'कामकेलि कौतूह गाय आनँद नित साजे।' सहचरिशरण

कौथ—स्त्री० कौन तिथि। कौन सम्बन्ध।

कौपीन—पु० देखो 'कोपीन'। पाप।

कौमुदी—स्त्री० चाँदनी। कार्त्तिकी पूर्णिमा। कुमुदिनी।

कौर—पु० ग्रास, निवाला (राम० ४५१)।

कौरना—सक्रि० सेंकना, ज़रा ज़रा भूनना।

कौरा—पु० दरवाज़ेके दोनों ओरका वह भाग जिससे किवाड़ (खुलनेपर) सटे रहते हैं। किवाड़के पीछेकी दीवार। कौरे लगना = दरवाज़ेके पास छिपकर खड़ा रहना ! किसी घातमें छिपा रहना (सूबे० १९३)।

कौरी—स्त्री० गोद, अंक 'भेंटे रतनसाह भर कौरी।' छत्रं० ८९

कौल—पु० कमल, पद्म 'दृगहूते सरस विराजत विसाल दृग देखिये न अति दुति कौलहूके दलमें।'–गंग, (रवि० ३३)। ग्रास, निवाला। ऊँचे कुलका। वाममार्गी।

क़ौल—पु० वचन, प्रतिज्ञा 'जरत जाठरानल विषे कीन्यौ कौल अनेक।' दीन० ६७। उक्ति, वाक्य।

कौला—पु० देखो 'कौरा'।

कौशल, कौसल—पु० कुशलता, दक्षता। मंगल।

कौशल्या, कौसल्या—स्त्री० रामचन्द्रजीकी माता।

कौशिक, कौसिक—पु० इन्द्र। कुशिक राजाके पुत्र। गाधि। विश्वामित्र। नेवला। उल्लू।

क्यारी,-ली—स्त्री० बाग़ों व खेतोंमें थोड़ी थोड़ी दूरीपर मेड़ोंसे घिरी हुई ज़मीन जिसमें पौधे लगाये जाते हैं। (क्याली, दीन० ७०)

क्यों—क्रिवि० किस तरह, कैसे 'हरि सो प्रीतम क्यों बिसराहीं।' सू०। किस कारण, किस लिए 'बावरी जो पै कलंक लग्यो तौ निसङ्क ह्वै क्यों नहिं अंक लगावत।' रसखानि

क्रंदन—पु० रुदन, विलाप।

क्रतु—पु० यज्ञ। संकल्प। विवेक। चाह।

क्रम—पु० प्रणाली, सिलसिला। डग धरना। कर्म (सू० १०८), 'जे पद पदुम तात रिस त्रासित मन वच क्रम प्रह्लाद सँभारे।' सू० ९ क्रम क्रम करके = धीरे धीरे।

क्रमनासा—स्त्री० कर्मनाशा नदी।

क्रवान—पु० देखो 'किरवान' (सुजा० २२,३४)।

क्रांति—स्त्री० गमन, गति, फेरफार।

क्रिया—स्त्री० कार्य। अनुष्ठान। स्नानादि नित्य कर्म 'प्रात क्रिया करि मातुपद बन्दि गुरुहिं सिरनाइ।' रामा० २९६। अन्त्येष्टि क्रिया 'तेहिकी क्रिया यथोचित निज कर कीन्ही राम।' रामा० ३८३। उपाय, चिकित्सा। प्रायश्चित्त आदि कर्म।

क्रीट—पु० 'किरीट', शिरोभूषण-विशेष 'पारावार अपार धार सिर क्रीट करे हो।' दीन० १९८

क्रीड़ना—अक्रि० क्रीड़ा करना, खेल करना 'प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्ध सुर व्याकुल देखि कलेस।' रामा० ५१५

क्रीत—स्त्री० कीर्त्ति, 'हौं कहा कहौं सूरके प्रभुकी निगम करत जाकी क्रीत।' सू० (ककौ०)। वि० खरीदा हुआ।

क्रूर—वि० दुष्ट, निर्दय, कठिन, नीच। पु० भात, इ०।

क्रोड़—पु० गोद, वक्षःस्थल। शूकर।

क्रोधित—वि० क्रुद्ध, कुपित।

क्रौंच—पु० कराँकुल पक्षी। एक अस्त्र। एक द्वीप या पहाड़।

क्लीव—पु० नपुंसक, कायर।

क्लेश—पु० कष्ट, पीड़ा।

क्वचित्—क्रिवि० शायद ही कभी, शायद ही कोई, बहुत [कम।

क्वाँरा—वि० अविवाहित।

क्वाथ—पु० काढ़ा।

क्वान—पु० झनकार 'नेत करपत हरप वरपत वलय किंकिनि क्वान।' गदाधर भट्ट

क्वैला—पु० कोयला, अधजला अंश 'जरैं काम क्वैला मनौ मधु ऋतु-बात विलास।' के० २४५

क्षण—पु० समयका अति छोटा भाग, पल। मौक़ा। आनंद।

क्षणभंगु, क्षणभंगुर—वि० अनित्य 'रामकाज क्षण भंगु शरीरा।' रामा० २९०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षति—स्त्री० हानि, नाश ।
क्षत्रिय, क्षत्री—पु० देशकी रक्षा इ० करनेवाली जाति ।
क्षपा—स्त्री० रात्रि । क्षपाकर = चन्द्रमा ।
क्षमना—सक्रि० देखो 'छमना' ।
क्षमवाना, क्षमाना—सक्रि० क्षमा कराना 'यह सुनिके अकुलाइ चले हरि कृत अपराध क्षमाने ।' सूवे० २३१
क्षमापन—पु० माफ़ी । क्षमा करानेका काम ['सकल जाय ताके पद परहू । निज अपराध क्षमावन करहू ।' रघु०]
क्षमावना—सक्रि० क्षमा करांना ।
क्षमी—वि० क्षमाशील, शान्त स्वभाववाला 'सुर अति-क्षमी असुर अति कोही ।' सू०
क्षय—पु० ह्रास, नाश, अन्त, रोग । मकान ।
क्षिति—स्त्री० पृथ्वी, स्थान ।
क्षीर—पु० दूध, खीर, जल ।
क्षुद्र—वि० दरिद्र, नीच । छोटा, कंजूस, खोटा ।
क्षुद्रघंटिका—स्त्री० करधनी, घुँघरू ।
क्षोणि—स्त्री० पृथ्वी । क्षोणिप = राजा ।
क्षोभ—पु० घबड़ाहट, शोक, क्रोध ।
क्षोभना—अक्रि० व्याकुल होना । भयभीत या क्रुद्ध होना । चित्त चलायमान होना 'सोवत जागत नेक न क्षोभै । सो समता सब ही महँ शोभै ।' के० ८६
क्षोभित—वि० विचलित, क्रुद्ध, भयभीत, व्याकुल ।

ख

ख—पु० आकाश, रिक्त स्थान, छिद्र, शून्य । स्वर्ग ।
खंख, खंखी—वि० खाली, उजाड़ 'वैसहि देह परी पुनि दीसत, एक बिना सब लागत खंखी ।' सुन्द० ३३
खंखर—वि० वीरान, उजड़ा हुआ (उदे० 'केसू') ।
खंग—पु० खड्ग, तलवार । गैंडा । स्त्री० घाव 'कुंभकर्ण तनु खंग लग गई लंक बिभीषण पाई ।' सूरा० ३६
खँगना—अक्रि० कम होना ।
खँगारना, खँगालना—सक्रि० पानी डालकर यों ही साफ करना, खाली करना ।
खँगी—स्त्री० कमी, घटी ।
खँचना—अक्रि० निशान पड़ना ।
खँचाना—सक्रि० अंकित करना, खींचना 'रेख खँचाइ कहउँ बल भाखी । भामिनि भयउ दूबकै माखी ।' रामा० २०८ । शीघ्रतासे लिखना ।
खंज—पु० एक रोग । खञ्जन पक्षी । वि० लँगड़ा ।
खंजन, खंजरीट—पु० एक पक्षी 'मनहुँ मुदित मरकत मनि आँगन खेलत खंजरीट चटकारे ।' सू० १६९
खंड—पु० टुकड़ा, भाग । खाँड । दिशा । देश । गौकी संख्या । खाँडा । वि० खण्डित, छोटा ।
खंडना—सक्रि० खण्डन करना, निराकरण करना । टुकड़े टुकड़े करना (रामा० १४२), 'स्यंदन खंडि महारथ
खंडपरशु—पु० शिवजी (राम० ५६)। [खंडो।' सू० १४
खँडरना—सक्रि० खण्डित करना, खंड खंड करना 'आहि शिरपुष्प तिलतूल सम खण्डहैं ।' के० ३३०
खँडरा—पु० एक पकवान 'खँडरा, बचका औ हुमकौरी प० १३५
खँडवानी—स्त्री० खाँड मिला पानी, शर्बत । बरातियोंको शर्बत इत्यादि भेजनेका काम । 'पानि देहिं खंडवानी, कुवहिं खाँड बहु मेलि ।' प० १५
खँडहर—पु० भग्नावशेष ।
खँडौरा—पु० मिसरीका लड्डू । ओला ।
खंतरा—पु० कोना, दरार, छोटा गड्ढा ।
खंदा—पु० खननेवाला, खोदनेवाला ।
खँधवाना—सक्रि० खाली कराना ।
खंधार—पु० तंबू, छावनी 'वहाँ न लूटौं कटक-खँधारू ।' प० १६१
खंभ, खंभा—पु० स्तम्भ, सहारा 'तुम गोरा बादल खँभ दोऊ ।' प० ३०८
खँभार—पु० घबराहट, चिन्ता, डर, शोक 'सास ससुर गुरु प्रिय परिवारू । फिरहु त सबकर मिटई खँभारू ।' रामा० २४५, (दे० 'खभार'), (सूवे० १३३)
खँसना—अक्रि० गिरना, खसकना 'सुरपुरतें जनु खँसेउ जजाती ।' रामा० २६९
ख—पु० शून्य स्थान, आकाश, गड्ढा, इ० ।
खई—स्त्री० छायकारक काम । झगड़ा 'सुत सनेह तिय सकल कुटुम मिलि निसदिन होत खई ।' सू० १७
खकखा—पु० क़हक़हा । ज़ोरकी हँसी ।
खखार—पु० गाढ़ा, कफ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खखारना—अक्रि० कफ़ निकालना, खाँसना।

खखेटना—सक्रि० पीछा करना 'वेई पटनेटे सेल साँगन खखेटे भूरि...' सुजा० ९७। दबाना। छेदना, व्याकुल करना।

खखेटा, खखेट्यो—पु० छिद्र। शंका, खटका 'सोच भयो सुरनायकके कल्पद्रुमके हिय माँझ खखेट्यो।' सुदामा० ८

खग—पु० पक्षी, वायु, बादल, सूर्य, नारा इ०।

खगना—अक्रि० गड़ना, चुभना (भ्र० ८४)। चिह्नित होना, उपट आना। चित्तमें बैठना, प्रभाव पड़ना। क्षिप्त होना 'दृग नास न तौ तप जाल खगी, न सुगंध सनेहके ख्याल खगी।' दास (उदे० 'पुहुकर')। अटल हो जाना, अड़ रहना 'तेहि खेत खगिय सूरजबली जंग जित्ति जयपत्ति हिय।' सुजा० ९८

खगनाथ,-पति—पु० गरुड़।

खगहा—पु० गैंड़ा।

खगोल—पु० गगनमंडल, आकाशमंडल।

खग्ग—पु० खड्ग, तलवार (भू० १४१)।

खग्राख—पु० पूर्ण ग्रहण।

खचना—अक्रि० जड़ा जाना, उलझ जाना, अंकित होना।

खचाना—सक्रि० खींचना, अंकित करना, शीघ्रतापूर्वक लिखना। **अपनी खचाना** = अपनेही कथनपर ज़ोर‡

खज़—वि० खाने योग्य, भक्ष्य (उदे० 'अखज')। [‡देना।

खजला—पु० एक पकवान। खाजा।

खजहजा—पु० खाने योग्य अच्छे फल 'हुलसीं सरस खजहजा खाई।' प० २१८

ख़ज़ाना, ख़ज़ीना—पु० कोश, धनागार, भाण्डार 'पटा लिखाया गुरू पै खरा खजीना खाहिं।' साखी २९

खजुआ,-वा—पु० खजला, खाजा।

खजूर, खजूरी—पु० एक पेड़ या उसका फल।

खटकना—अक्रि० गड़ना, अप्रिय मालूम होना, खलना 'खटकत है जियमाँह कियो जो बिना विचारे।'—गिरिधर। उचटना, ठीक न जान पड़ना। खटखट शब्द होना, ठनना, झगड़ा होना।

खटका—पु० 'खटखट' शब्द। चिन्ता, शंका॥

खटकीरा,-कीड़ा—पु० खटमल।

खटपट—स्त्री० झगड़ा। दो चीज़ोंके टकरानेकी आवाज़।

खटपद—पु० भौंरा।

खटपाटी—स्त्री० खाटियाकी पाटी।—**लेना** = रूठना।

खटमल—पु० खटकीड़ा, उड़िस।

खटमुख—पु० षडानन, कार्त्तिकेय।

खटरस—पु० मीठा, कड़ुआ, कसैला इ० छः रस।

खटराग—पु० झंझट, व्यर्थका बखेड़ा। फ़ज़ूल चीज़ें।

खटवाट, खटवाटी—स्त्री० रूठना मैं तोहि लागि लेवँ खटवाटू।' प० १९६

खटाना—अक्रि० निभना, टिकना, ठहरना '...अब नहिं प्रान खटात।' भ्र० ९७। परखमें ठीक उतरना (विन० ४७४)। खट्टा होना (ब्रज० २०३)।

खटिया—स्त्री० चारपाई, खाट।

खटीक—पु० तरकारी बोने तथा बेचनेवाली जाति। क़साई 'कान पकरिके लै चला ज्यों अजयाहिं खटीक।' साखी ७८

खटोला—पु० छोटी चारपाई, पालकी। 'बाँस पुरान साज सब अटखट सरल तिकोन खटोलारे।' विन० ४७४

खड़ग—पु० तलवार।—**दान** = तलवार चलाना 'खड़ग-दान सरि पूज न कोऊ।' प० १९

खड़गी, खड़जी—पु० गैंडा 'खड़गी खजाने खरगोस खिलवतखाने खीसैं खोले खसखाने खाँसत खबीस हैं।' भू० १४३

खडबड़ाना—अक्रि० घबड़ाना, बेसिलसिले होना। सक्रि० घबड़ा देना, बेसिलसिले कर देना। 'खड़-बड़' शब्द करना।

खड़ा—वि० सीधा, दंडायमान, ऊपरको उठा हुआ,

खड़ाऊँ—स्त्री० पादुका। [निर्मित, उपस्थित।

खड़ाका—पु० खटका, 'खटखट' शब्द 'कुण्डनके ऊपर कड़ाके उठैं ठौर ठौर जीरनके ऊपर खड़ाके खड़गन [के।' भू० १२९

खड़ानन—पु० कार्त्तिकेय।

खड्ग—पु० एक अस्त्र, खाँड़ा, तलवार।

खड्डु, खड्डा—पु० गड़हा, गड्ढा।

खत—पु० क्षत, चोट 'तिय निय हिय मु लगी चलत पिय-नख-रेख-खरौंट। सूखन देत न सरसई खोंटि खोंटि खत-खौंट।' वि० १२५। **ख़त** = पु० चिट्ठी,

खतम—वि० समाप्त। [लिखावट। लकीर।

खतरेट—पु० खत्री।

खता—पु० अपराध, भूल-चूक। धोखा 'जाहु जनि आगे खता खाहु मति थारो...' भू० १३२। फोड़ा (बुंदेल०), घाव, दोष।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खात—स्त्री० नुक्सान, क्षति।
खतियाना—सक्रि० खातेमें चढ़ाना (सू० ११)।
खंदग, खदंगी—स्त्री० बाण 'लाखन मार बहादुर जंगी। अँबुर कमानैं तीर खंदगी।' प० २४६
खदबदाना—अक्रि० 'खदबद' शब्द करना, चुरना।
खदरा—वि० निरुपयोगी, रद्दी। पु० गड्ढा।
खदान—स्त्री० खान।
खदेड़ना, खदेरना—सक्रि० भगाना, हटाना।
खद्योत—पु० जुगनू, पटबीजना।
खन—पु० समय, क्षण 'खन भीतर खन बाहिर आवति' —सूबे० ८८। तुरंत। वृक्ष विशेष।
खनकना—अक्रि० खनखनाना, 'खनखन' आवाज़ करना।
खनखनाना—अक्रि० 'खनखन' आवाज़ होना। सक्रि० 'खनखन' शब्द उत्पन्न करना।
खननहारा—वि० खोदनेवाला।
खनना—सक्रि० खोदना।
खनवाना, खनाना—सक्रि० खुदवाना '...तजि नभ कूप खनावों।' विन० ३४७, (सू० १३)
खनिज—वि० खानसे निकला हुआ।
खनोना—सक्रि० खोदना, कुरेदना 'दुम शाखा अवलम्ब बेठ गहि नखसों भूमि खनोवति।' सूबे० २१५
खपड़ा, खपरा—पु० घर छानेके लिए मिट्टीका पकाया हुआ टुकड़ा। भिक्षा-पात्र, खप्पर (सुन्द० १३८)।
खपना—अक्रि० लगना, व्यय होना, नष्ट होना, निभना।
खपरैल—स्त्री० खपरोंसे छाया हुआ घर या छत।
खपाना—सक्रि० लगाना, प्रयोगमें लाना। निभाना। नष्ट करना 'खग खोलि ते सबै खपाये।' छत्र० १५७
खपुआ—पु० डरपोक।
खप्पर—पु० तसलेकी तरहका मिट्टीका पात्र, भिक्षुकका पात्र। कालिका देवीका पात्र (उदे 'कलींदा'), पात्र।
ख़फ़ा—वि० नाराज़, क्रुद्ध, अप्रसन्न। [† होश।
ख़बर—स्त्री० संवाद, वृत्तान्त। सूचना, संदेसा, खोज।†
ख़बरदार—वि० सावधान, चौकन्ना, होशियार।
खबरि, खबरिया—स्त्री० देखो 'खबर'।
खबीस—पु० क्रूर, शरारती व भयंकर मनुष्य (भू० १४२)
खब्त—स्त्री० सनक, पागलपन।
खभरना—सक्रि० मिश्रित करना। खलबली मचाना।
खभार—पु० चिन्ता, दुःख 'ल्याउब हम इन बारहिं बारा। किहहु न नेसुक मनहिं खभारा।' रघु० १८५। डर, व्याकुलता 'देखि निबिड़ तम दसहु दिसि कपि दल भयउ खभार।' रामा० २७६, 'मोहि अपने पिय केर खभारू।' प० २९६
खम—पु० वक्रता, झुकाव। गाते समय लयमें लचक लानेके अभिप्रायसे लिया गया विश्राम।—खाना = झुकना, पराजित होना 'मुरक्यो तुरक यहाँ खम खाई।' छत्र० ११३।—ठोकना = लड़नेके लिए ताल ठोकना।
खमकना—अक्रि० खम खम शब्द करना।
खय—स्त्री० क्षय, विध्वंस, प्रलय।
खया—पु० भुजभूल (गीता० २९८) 'अंचल उड़त मन होत गहगहो फरकत नैन खये।' सूबे० ४४२
खर—पु० गधा। कौआ। घास 'पशु खर खात सवाद सों गुर गुलियाये खाय।'—रहीम। वि० खरा, चोखा, असल 'गाँठी बाँध्यो दाम तो परख्यो न फेरि खरखोट।' विन० ४४४। तेज़। सख़्त। घना।
खरक—पु० गायोंके ठहरनेका घेरा हुआ स्थान, 'बाड़ा', 'ठाड़ा'। 'मन्दरतें ऊँचे कहा मन्दिर हैं द्वारकाके, ब्रजके खरक मेरे हिये खरकत हैं।'—रसखानि। बाँसका किवाड़। पशुओंके चरनेकी भूमि। खड़खड़ाहट। स्त्री० खटखट शब्द। डर, चिन्ता।
खरकना—अक्रि० खटकना, कसकना, चुभना (उदे० 'खरक') 'कौन पातसाहके न हिये खरकतु हैं।' भू० ९५। अक्रि० खरखराना 'बारहिं बार विलोकत द्वारहिं चौंकि परै तिनके खरके हूँ।' रस० २९
खरका—पु० देखो 'खरक'। पु० कड़ा तिनका।
खरखौकी—स्त्री० घास आदिकी खानेवाली अग्नि।
खरग—पु० खड्ग, तलवार।
खरच, खरचा—पु० खर्च, व्यय।
खरचना—सक्रि० खर्च करना, लगाना, बरतना।
खरतुआ—पु० एक निकम्मी घास 'खेत बिगार्यो खरतुआ, सभा बिगारी कूर।' साखी ३६
खरदूषण—पु० खर तथा दूषण नामके राक्षस-बन्धु। धतूरा। तृणोंको नष्ट करनेवाले (खर = तृण) सूर्य 'तृपके खरदूषण ज्यों खरदूषण।' राम० २५९
खरब—वि० देखो 'खर्व'।
खरबूजा—पु० एक बेल या उसका फल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खरभर—पु० शोर गुल, खलबली 'सुनि आगमन दसानन केरा। कपिदल खरभर भयेउ घनेरा।' रामा० ५१४। (स्त्रीलिंगमें भी, उदे० 'आनंदना', गीता० २८४)

खरभरना—अक्रि० क्षुब्ध होना, घबड़ाना 'तप जलधर खरभरो त्रास गहि जन्तु ढूंढे अकुलाई।' सूरा० ५७

खरभराना—अक्रि० शोर करना, खलबली मचाना, व्याकुल होना।

खरभरी—स्त्री० देखो 'खरभर', 'बीजापुर-विपति विडरि सुनि भाजे सब दिल्ली दरगाह बीच परी खरभरी है।' भू०

खरल—पु० पत्थर इ० की गहरी कुंडी, खल। [१६६

खरवाँस—पु० पौष या चैत्र मास।

खरसा—पु० एक पकवान (प० २७३)।

खरसान—स्त्री० धार तेज़ करनेका पत्थर 'मानहु सकल जगत जीतनको, काम बान खरसान सँवारे।' सू० १६९

खरहरी—स्त्री० एक तरहका मेवा, खारिक, छुहारा 'परी चिरौंजी औ खरहरी।' प० २७३

खरहा—पु० खरगोश, शश।

खरा—वि० चोखा। तेज़। कड़ा, करारा। सच्चा, साफ़, बढ़िया, असल, उच्च 'रामसो खरो है कौन, मो सों कौन खोटो।' विन० २१४। बहुत, ज़्यादा 'बीथी सब अलवारिन भरी। हय हाथिनसों सोहति खरी।' के० १५४, (वि० १०२)। नक़द (मजूरी इत्यादि)। **खरोई**—क्रिवि० सचमुच, वस्तुतः (उदे० 'अचगरा')

खराऊँ—स्त्री० खड़ाऊँ। पादुका।

खराद—पु० सतह चिकनानेका यंत्र। स्त्री० खरादनेका काम, खरादनेका भाव। गढ़न। **खरादपर चढ़ाना** = सुधारना, सँवारना।

खरादना—सक्रि० खरादपर चढ़ाकर चिकना और सुडौल करना।

खराब—वि० बुरा, हीन, पतित।

खराबी—स्त्री० बुराई, ऐब, दुर्दशा।

खरिक, खरिका—पु० देखो 'खरक'। 'गयो हुतो चारन गो ग्वारनके संग आज खरिकामें खेलत मो ऊरिका डरायोरी।' दीन० ७, 'अहो सुबल श्री दामा भैया ल्यावहु गाय खरिकके नेरे।' सूवे० ७३। तिनका।

खरिया—स्त्री० पतली रस्सीकी जाली 'कृशगात ललात जो रोटिनको घरवात घरे खुरपा खरिया।' कविता० २१२। खड़िया। वि० स्त्री० चोखी।

खरिहान—पु० ढेर। देखो 'खलियान' (प० ९०)।

खरी—स्त्री० खली, खड़िया। खाड़ी (सू० ९)।

खरीक—पु० तिनका 'भूषन भनत तेरे दान जल जलधिमें गुनिनको दारिद गयो बहि खरीकसो।' भू० १३४

खरीता—पु० जेब, थैली, बड़ा लिफ़ाफ़ा।

ख़रीदना—सक्रि० मोल लेना।

ख़रीफ़—स्त्री० वर्षा तथा शरद्कालकी फसल।

खरोंच—स्त्री० नखादिसे छिल जानेका चिह्न, खरोंट।

खरोंचना—सक्रि० खुरचना, छीलना।

खरोंट—स्त्री० छिल जानेका चिह्न, खरोंच, खराश।

खरौंट—स्त्री० देखो 'खरोंट'। (उदे० 'खत' या वि० १०७)

खरौंटना—सक्रि० खरोंचना, खुरचना।

खरौंहा—वि० कुछ खारा 'अँसुवन करति तरौंहको छिनक खरौंहो नीर।' वि० १२३

खर्ग—पु० खड्ग, तलवार (उदे० 'चिरचना')।

खर्च, खर्चा—पु० व्यय, लागत, सरफ़ा। खपत।

खर्चना—सक्रि० देखो 'खरचना'।

खर्चीला—वि० अधिक व्यय करनेवाला, उड़ाऊ।

खर्ब—पु० सौ अरब। वि० छोटा, तुच्छ (राला० १६९)।

खर्रा—पु० कच्चा चिट्ठा, हिसाब या न्यौरेका लंबा कागज़।

खल—पु० सूर्य, धतूरा, खरल, दुष्ट व्यक्ति, इ०। पत्थरका बड़ा टुकड़ा 'इते मान यह सूर महाशठ हरिगत बधलि महाखल आनत।' सूवि० ६३। **खल करना** = खलमें बारीक पीसना। **खल होना** = चूर चूर होना। वि० दुष्ट, नीच।

खलई—स्त्री० खलता, दुष्टता।

ख़लक़—पु० संसार, दुनिया 'खीजेते खलक माहिं खलबल डारत है' भू० ६४

खलना—अक्रि० अप्रिय मालूम होना, बुरा लगना। चूर्ण कर डालना, घोंटना 'रावण सो रसराज सुभटरस सहित लंक खल खलतो।' गीता० ३८२

खलबल—पु० शोर, हलचल, घबराहट। (उदे० 'खलक')।

खलबलना, खलबलाना, खलभलाना—अक्रि० घबड़ा उठना (उदे० 'करखाना'), 'सबै सैंदकी फौज यों खलभलानी।' सुजा० ४७ (१३६ भी)। कुलबुलाना, खौलना

खलबली—स्त्री० देखो 'खलबल'।

खलभल—पु० शोर, हलचल। उत्तेजित होना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खलल—पु० रुकावट, बाधा। धूम 'दौरि दौरि खोरि खोरि खलल मचायो है।' रघु० २२५

खलाई—स्त्री० दुष्टता, नीचता।

खलाना—सक्रि० खाली करना, गड्ढा करना या पचकाना, 'तौ कत द्वार द्वार कूकर ज्यों फिरते पेट खलाये।' विन० ३९८

खलास—वि० समाप्त, मुक्त।

खलित—वि० स्खलित, हिला हुआ, गिरा हुआ, डाँवाडोल 'खलित बचन अधखुलित दृग ललित स्वेदकन जोति।' वि० २६।

खलियान—पु० कटी हुई फसल रखनेकी जगह। ढेर।

खली—स्त्री० तेल निकालनेके बाद तेलहनका बचा हुआ अंश। वि० खलनेवाला।

खलु—वि० निःसन्देह, अवश्य।

खलेल—पु० खली आदिका वह भाग जो फुलेलमें रह जाता है और छान कर निकाला जाता है।

खल्वाट—वि० गंजा। पु० बाल झड़नेका रोग।

खवा—पु० कंधा।

खवाना—सक्रि० खिलाना, भोजन कराना।

खवारा—वि० खोटा 'कर्म खवारा पुट भरि लाई तातें बहुविधि भयो अचेत।' सुन्द० १५४

खवास—पु० नौकर, खिदमतगार 'कहि खवासको सैन दै सिरपाँव मंगायो।' सुबे० २५२। नाई (सू० १०)। मंत्री 'तुम तौ निपट निकटके बासी सुनियत हुते खवास्यो।' भ्र० १३६

खवासी—स्त्री० खवासका काम। खिदमतगारी, चाकरी।

खस—पु० एक क्षत्रिय जाति। 'खसिया'। स्त्री० गाड़र नामक घासकी जड़।

खसकना—अक्रि० अपने स्थानसे हट जाना, सरकना, चुपकेसे चले जाना।

खसकाना—सक्रि० सरकाना, हटाना।

खसखसा—वि० भुरभुरा। बहुत छोटा।

खसखाना—पु० खसकी टट्टियोंसे घिरा हुआ घर।

खसना—अक्रि० खसकना, स्थानसे हटना, गिरना 'सिरउ गिरे सन्तत सुभ जाही। मुकुट खसे कत असगुन ताही।' रामा० ४१६, (सू० २२)

खसम—पु० पति। स्वामी, प्रभु।

खसाना—सक्रि० गिराना, नीचेकी ओर फेंकना, त्यागना 'पायो नाम चारु चिन्तामनि उर करते न खसैहौं।' विन० २६७

खसिया—वि० बधिया, नपुंसक। पु० बकरा।

खसी—पु० बकरा। हिजड़ा 'नरनारीके स्वादको खसी नहीं पहिचान।' साखी ८४। वि० नपुंसक।

खसोटना—सक्रि० नोचना, उखाड़ना, ज़बरन ले लेना, लूट लेना।

खस्सी—वि० देखो 'खसी'।

खाँखर—वि० पोला। बहु छिद्रोंवाला, झीना।

खाँग—स्त्री० कमी (प० ६३), 'बरिस बीस लगि खाँग न होई।' प० २४९। त्रुटि। पु० काँटा, गैंडेके मुँहके ऊपरका सींग या बनैले सूअरका बाहर निकला हुआ दाँत।

खाँगना—अक्रि० कम होना, घटना 'कहहु सो पीर काह पुनि खाँगा।' प० ५३। छेदना 'सर सो प्रति बासर बासर लागै। तन घाव नहीं मन प्रानन खाँगै।' राम० ३६१

खाँगी—स्त्री० कमी, घटी, त्रुटि।

खाँचना—सक्रि० खींचना, अंकित करना, 'पूछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची।' रामा० २०९। खींच कर बनाना या जल्दी जल्दी लिखना।

खाँचा—पु० बड़ी खँचिया, टोकरा। पिंजड़ा।

खाँड़—स्त्री० कच्ची चीनी। गड्ढा 'खाँड़ खनै जो आनको ताको कूप तैयार।'

खाँड़ना—सक्रि० टुकड़े टुकड़े करना। चबाकर खाना।

खाँड़र—पु० कतला, टुकड़ा 'भाँति भाँति सब खाँडर तरे।' प० २७२

खाँड़ा—पु० खड्ग, चौड़ी तलवार (भू० १६१) 'कहो मधुप कैसे समायँगे, एक म्यान दो खाँडे।' भ्र० १३। भाग, टुकड़ा।

खाँधना—सक्रि० खाना 'नैन नासिका मुख नहीं चोरि दधि कौने खाँधो।' भ्र० ९

खाँभ—पु० खम्भा। लिफ़ाफ़ा।

खाँमना—सक्रि० लिफ़ाफ़ेमें रखना।

खाँवा—पु० खूब चौड़ी खाई। एक छोटा पौधा।

खाँसना—अक्रि० झटकेके साथ कंठसे हवा निकालना।

खाई—स्त्री० दुर्ग आदिके चारो तरफ खोदा गया गड्ढा।

खाऊ—वि० अधिक खानेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ख़ाक—स्त्री० धूल, राख। तुच्छ वस्तु। कुछ नहीं। ख़ाकसाही = काली भस्म, छार 'मारि करि पात-साही खाकसाही कीन्हीं जिन जेर कीन्ही जोर सों लै हद्द सब मारे की।' भू० १७२

खाख—स्त्री० ख़ाक, धूल, चूर्ण 'मृगमद मिलै कपूर कुम-कुमा, केसर मलया खाख।' सू० २५१

खागना—अक्रि० देखो 'खाँगना'। 'नासा तिलक प्रसून पदविपर चिबुक चारु चित खाग।' सूबे० १८०

खाज—स्त्री० खुजली। कोढ़की खाज, देखो 'कोढ़'।

खाजा—पु० एक मिठाई। खाद्य वस्तु।

खाट—स्त्री० पलंग। अरथी 'दुवौ सवति चढ़ि खाट बईठी।', 'अंत सबै बैठे पुनि खाटा।' प० ३३०

खाटा, खाटो—वि० खट्टा, अम्ल।

खाड़—पु० गड्ढा (उदे० 'खाँड')।

खात—पु० तालाब। कुआँ। गड्ढा 'जोउ गिर्‌यो जिस खातमें धँस गयो कान प्रयन्त।' गिरिधर०। शराब बनानेके लिए रखी हुई महुएकी राशि। खाद।

ख़ातमा—पु० समाप्ति, मृत्यु।

खाता—पु० हिसाबकी किताब। मद।

ख़ातिर—स्त्री० सम्मान, आदर। अ० लिए।

ख़ातिर जमा—पु० सन्तोष, विश्वास।

ख़ातिरी—स्त्री० आदर-सत्कार, आवभगत। भरोसा।

खादर—पु० नीची भूमि जहाँ पानी भरा रहता है। छार, तराई 'मेघ परस्पर यहै कहत हैं धोय करहु गिरि खादर।' सूबे० १२२। गोचरभूमि।

खादी—स्त्री० हाथका कता व हाथका बुना कपड़ा, गजी। वि० खानेवाला। नाशक।

खाद्य—पु० भोजन। वि० खाने योग्य।

खाध, खाधु, खाधुक—पु० खाद्य वस्तु, भोजन। 'सीस न देइ पतंग होइ तब लगि लहै न खाध।' प० ७०। वि० खानेवाला 'जौ न होहिं अस परमँस-खाधू। कित पंखिन्ह कहँ धरै बियाधू।' प० ३४

खान—पु० खाना, भोजन। सरदार। स्त्री० खानि, आकर, आधार-स्थान 'तन रोगोंकी खान है धन भोगोंकी खान।' कोष, धाम।

खानक—पु० खान खोदनेवाला, बेलदार। राज।

खानगी—वि० निजी, घरू, आपसका।

खानदान—पु० घराना, कुल।

खाना—सक्रि० भक्षण करना, हड़प जाना, उड़ाना, नष्ट करना। सहना। पु० विभाग, घर।

खानाजाद—पु० दास। वि० घरजाया, गृहपालित 'बर्ष रात कोइ जन कहे खानाजाद गुलाम।' साखी १०१

खानि—स्त्री० खान, खदान। उत्पत्ति-स्थान। कोष, धाम। तरफ़। प्रकार।

खानिक—स्त्री० खानि, खदान 'चमकैं ठौरहिं ठौर जगे हैं जे जेहि खानिक।' दीन० १०७

खाब—पु० ख्वाब, स्वप्न।

खाम—पु० चिट्ठी बन्द करनेका लिफाफा। जोड़। खंभा। वि० क्षीण। ख़ाम = कच्चा, अनुभवहीन। [†'खाँभना'।

खामना—सक्रि० मिट्टी आदिसे मुंह बन्द करना। देखो †

खामी—स्त्री० कचाई, कमी 'कविनके मामलेमें करैं जौन खामी तौन नमकहरामी मरे कफन न पावैंगे।' —करनेस। पु० खम्मा। वि० घटनेवाला।

ख़ामोश—वि० चुप, शान्त।

खार—पु० विशेष प्रकारकी राखका नमक। रेह, खोनी। सज्जी। क्षार, राख। छोटा तालाब, डबरा 'वई न जात खार उतराई चाहत चढ़न जहाज।', 'पुनि पाछे अघ-सिन्धु बढ़त है सूर खार किन पाटत।' सूवि० २९

ख़ार—पु० काँटा। द्वेष, जलन।

खारक—पु० छोहारा।

खारा—पु० आम तोड़नेका थैला। खाँचा। घास इ० बाँधने-की जाली। एक तरहका कपड़ा। वि० नमकीन। ‡ [‡ अप्रिय।

खारिक—पु० देखो 'खारक'।

खाल—स्त्री० शरीरका ऊपरी आवरण, चमड़ा। शरीर (ब्रज० २७६)। धौंकनी। मृत देह। नीची जगह, खाली जगह, निचाई। खाड़ी।

खाला—स्त्री० मौसी 'खाला केरी बेटी ब्याहैं'—कबीर

ख़ाली—वि० रीता, रिक्त, रहित। जो प्रयोगमें न आरहा हो। व्यर्थ। क्रिवि० सिर्फ़, केवल 'खाली धुनि सुनि परै नहीं जीवनकी आसा।' दीन० २१०

खाले—क्रिवि० नीचे।

ख़ाविंद—पु० पति, स्वामी।

खास—वि० विशेष, प्रधान। निजका। ठीक।

खासा—वि० अच्छा, सुन्दर। स्वस्थ। पूरा। पु० एक तरहका सफेद कपड़ा 'खासा मलमल बाफता, उमकर रातै मान।' गिरिधर०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खासियत—स्त्री० विशेषता, प्रकृति। गुण।

खिंचना—अक्रि० आकर्षित होना, किसी तरफको बढ़ना, चित्रित होना। निकल आना।

खिखिंद—पु० किष्किन्ध पहाड़ 'कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा।' प० ८

खिचड़ी—स्त्री० एकमें मिला हुआ या मिलाकर पकाया हुआ दाल-चावल। कई वस्तुओंकी मिलावट। मकर संक्रांति। विवाहकी एक रस्म।

खिजना, खिझना—अक्रि० झुंझला उठना, चिढ़ना, गुस्सा होना। 'जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बल भैया।' सूवे० ६१। हठ करना 'कहत जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ।' सू० ७७

खिजलाना—अक्रि० चिढ़ना, झुँझला उठना। सक्रि० तंग करना, चिढ़ाना।

खिझाना, खिझावना—सक्रि० तंग करना, चिढ़ाना 'ऐसेहि कहि सब मोहि खिझावत'—सूवे० ६१

खिड़कना—अक्रि० खिसक जाना, चुपकेसे चल देना।

खिड़काना—सक्रि० हटाना, अलग करना। बेच डालना।

खिड़की—स्त्री० झरोखा, गवाक्ष, जंगला।

खिदमतगार—पु० नौकर, टहलुवा।

खिन—पु० क्षण (वि० ५९)।

खिन्न—वि० नाराज़, उदास, दुःखी।

खिपना—अक्रि० खपना। मिल जाना, तल्लीन होना।

खियाना—सक्रि० खिलाना। अक्रि० घिस जाना।

खियाल—पु० ख़्याल, विचार। हँसी, खेल (वि० ११८)।

खिरका—पु० देखो 'खरक' राँभति गौ खिरकनमें बछरा हित धाई।' सू० ५८

खिरकी—स्त्री० खिड़की, झरोखा।

खिराज—पु० मालगुजारी, राजस्व।

खिरिरना—सक्रि० सींकके छाजमें रखकर अनाजको छानना। खुरचना।

खिरौरा—पु०, खिरौरी—स्त्री० केवड़ा देकर बाँधी हुई खैरकी टिकिया 'सोंधा सबै बैठ लै गाँधी। फूल कपूर खिरौरी बाँधी।' प० १६

खिलकौरी—स्त्री० क्रीड़ा, खेल।

खिलखिलाना—अक्रि० ज़ोरसे हँसना।

खिलत, खिलति, खिलवति—स्त्री० सम्मानसूचक वस्त्रादि 'खिलवति करी नवाब...' सुजा० ६४

खिलना—अक्रि० विकसित होना, फूलना, प्रसन्न होना, भला मालूम होना।

खिलवत खाना—पु० एकान्त जगह, गुप्त मंत्रणाका स्थान (उदे० 'खड़गी')।

खिलवार—स्त्री० खिलवाड़, खेल, दिलबहलाव। पु० खेलाड़ी (उदे० 'खेलवार')।

खिलाड़, खिलाड़ी—पु० खेलनेवाला। खेल करनेवाला।

खिलाना—सक्रि० भोजन कराना। विकसित करना। खेलमें लगाना।

खिल्ली—स्त्री० हँसी, दिल्लगी।

खिसकना—अक्रि० देखो 'खसकना'।

खिसना—अक्रि० खिसकना, गिरना, चला जाना 'तन मन धन जोवन खिसै, तऊ न मानै हार।' सू० २१

खिसाना, खिसिआना, खिसियाना—अक्रि० क्रुद्ध होना, कुढ़ जाना, रिसियाना, (उदे० 'अनैसा')। 'सुनि कपि बचन बहुत खिसियाना।' रामा० ४२७। लज्जित होना 'आवत नहीं लाजके मारे मानो कान्ह खिस्यानो।' भ्र० ३९

खिसी—स्त्री० लज्जा। धृष्टता (वि० १९९)।

खींचना—सक्रि० आकर्षित करना, तानना, ऐंचना निकालना, घसीटना। चित्रित करना।

खीज, खीझ—स्त्री० कुढ़न, झुँझलाहट, कोप 'जाकी खीज भूपति भिखारीसे निहारे होत, भूपसे भिखारी जाकी रीझ पै सराहकी।' ललित० ३७

खीजना, खीझना—अक्रि० झुँझलाना, क्रुद्ध होना 'निज सारथि सन खीझन लागा।' रामा० ५१३, (सूसु० ८१)

खीन—वि० क्षीण, दुर्बल, सूक्ष्म। 'देखि उमहिं तप खीन-शरीरा।' रामा० ४६, 'बसा लंक बरनै जग झीनी। तेहितें अधिक लंक वह खीनी।' प० ५१

खीनता, खीनताई—स्त्री० दुर्बलता, सूक्ष्मता, घटी।

खीप—पु० एक घना पेड़। लज्जालु।

खीर—पु० दूधमें पका चावल। दूध 'खीर खदाननको मद केशव सो पलमें करि पान लियोई।' राम० १६५

खीरा—पु० ककड़ीकी तरहका फल (रहीम १४)।

खीरी—स्त्री० खिरनी नामक फल 'कोइ दारिउँ कोइ दाख औ खीरी।' प० ८९। धनके ऊपरका मांस।

खील—स्त्री० काँटा, कील, लौंग। लावा।

खीला—पु० काँटा, कील।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खीवन, खीवनि—स्त्री० मस्ती।

खीस—वि० नष्ट, विध्वस्त 'सहसभुजहु दससीस खीस ह्वै गये सहित कुल।' दीन० १४०, (भ्र० ५५)। स्त्री० अप्रसन्नता, क्रोध। शरम। हानि 'अब सलाह इनसों करे, कछू न ह्वै है खीस।' छत्र० ५३.

खुंबी, खुंभी—स्त्री० कानमें पहिननेका एक गहना, लौंग, कील 'कानन कनक जड़ाऊ खुंभी।' प० १६, (४८भी)

खुआर—वि० नष्ट, दुर्दशाग्रस्त, खराब। प्रतिष्ठारहित।

खुआरी—स्त्री० नाश, बरबादी, खराबी। अप्रतिष्ठा।

खुक्ख—वि० खाली, छूछा।

खुजलाना, खुजाना—अक्रि० खुजली मालूम होना। सक्रि० खुजलीके कारण नख इ० से रगड़ना।

खुटक—स्त्री० सन्देह, चिन्ता।

खुटका—पु० देखो 'खुटक'।

खुटचाल—स्त्री० खोटा आचरण, दुष्टता, उपद्रव।

खुटचाली—वि० दुष्ट, लम्पट, दुराचारी, बदमाश।

खुटना—अक्रि० पूरा होना, खतम होना। अक्रि० खुलना 'विकट जटे, जौलगु निपट खुटैं न कपट-कपाट।' वि० १५०। अक्रि० अलग होना।

खुटपन—पु० खोटापन, दोष।

खुटाना—अक्रि० खुटना, पूरा होना (रामा० १४६)।

खुटिला—पु० नाकमें या कानमें पहिननेका एक गहना (सू० १६३, १७०)।

खुड्डी, खुड्ड़ी—स्त्री० शौचके लिए बैठनेके पायदान। पायखाना फिरनेका गड्ढा।

खुत्थी, खुथी—स्त्री० फसल कट जानेपर अरहर आदिके पेड़का ज़मीनमें बचा हुआ अंश। खूँटी। बसनी। धरोहर। सम्पत्ति।

खुद—अ० स्वयं, आप।

खुदाई—स्त्री० खोदनेकी क्रिया। खोदनेकी मजदूरी। ईश्वरत्व। ईश्वरकी रचना, दुनिया।

खुनखुना—पु० बच्चोंका एक खिलौना। घुनघुना।

खुनस—स्त्री० रिस, क्रोध 'मोपर कृपा सनेह विसेखी। खेलत खुनस न कबहूँ देखी।' रामा० ३२३

खुनसाना—अक्रि० रिसाना, क्रोध करना।

खुभना—अक्रि० चुभना, धँसना, गड़ना (उदे० 'खुभी')।

खुभराना—अक्रि० उत्पात करनेके लिए घूमना, इतराते हुए फिरना।

खुभाना—सक्रि० चुभाना, गड़ाना 'नन्दलला तिवके हियमें मतिराम तहाँ दृगबान खुभायो।' ललित० १८९

खुभिया, खुभी—स्त्री० कानमें पहननेका गहना, लौंग, कील 'मनमथ नेजा नोकसी खुभी खुभी जिय माँहिं' त्रि० ७, 'बूचिहि खुभी आँधरी काजर···' भ्र० १७। पीतल या चाँदी-सोनेका पोला जो हाथीके दाँतपर चढ़ाया जाता है "मोतिनहार जलाजल मानों, खुभी दन्त झलकावै।' सू० (व्रजमा० १६)

खुमान—वि० आयुष्मान्, (शिवाजीकी उपाधि, भू० ५२)। पु० शिवाजी 'ग्रीपमके भानु सो खुमानको प्रताप देखि तारे सम तारे गये मूँदि तुरकनके।' भू० १४

खुमारी, खुम्हारि—स्त्री० नशा। नशेकी थकावट, आलस्य 'राजत सुख सैन नैन मैनकी खुमारी।' —अलबेली अलि, 'कबहूँ इत कबहूँ उत डोलत लागी प्रीति खुम्हारि।' सूबे० ७८

खुभी—स्त्री० पोला जो हाथीके दाँतपर चढ़ा रहता है। दाँतमें जड़ी सोनेकी कील।

खुर—पु० चौपायोंके पाँवकी फटी टाप। सुम।

खुरक—स्त्री० अँदेशा, खटका। नृत्यका एक भेद। एक पेड़।

खुरखुरा—वि० गड़नेवाला, खरदरा।

खुरचना—सक्रि० खरोंचना, कुरेदना, छीलना।

खुरतार—स्त्री० खुरका आघात।

खुरपा—पु० घास छीलनेका एक छोटासा औज़ार (उदे० 'खरिया')।

खुर्द—वि० छोटा।—बीन, स्त्री० अणुवीक्षण यंत्र।

खुलना—अक्रि० आवरण हटना, प्रकट होना, बंधनका छूटना, छूटना, शोभित होना '...ते सब तजि अलि कहत मलिन मुख, उज्वल भस्म खुली।' सू०

खुवारी—स्त्री० बर्बादी, खराबी। अप्रतिष्ठा, अपमान। 'राजा करै न न्याय प्रजाकी होत खुवारी।' बैताल

खुश—वि० प्रसन्न। अच्छा, सुंदर, मधुर।

खुशबू, खुशबो—स्त्री० सुगन्धि।

खुशामद—स्त्री० चापलूसी, चाटुकारिता।

खुसाल, खुस्याल—वि० खुश, आनन्दित 'मार्‌यो फिरि फिरि मारिये, खूनी फिरत खुस्याल।' वि० १३६, 'आपकी प्रसंसा सुनि आपही खुसाल होइ' सुन्द० ११८

खुही—स्त्री० वर्षा इत्यादिसे बचनेके लिए खास तरहसे लपेटा गया कम्बल या कपड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खूँट—पु० कोना। ओर। कोनेमें लगा हुआ बड़ा पत्थर। भाग।—छुँड़ाना = पिंड छुड़ाना, छुटकारा पाना 'हा हा करति सबनि सों मैं ही कैसेहु खूट छँड़ावति।' सूबे० ११३। स्त्री० कानका एक भूषण, ढार 'कानन्ह कुंडल खूंट औ खूँटी।' प० १४२। रोक, पूछताछ।

खूँटना—सक्रि० छेड़छाड़ करना, टोकना, पूछताछ करना, रोकना। अक्रि० घट जाना (उदे० 'कागर')। टूटना 'परेसेल टूटे कहूँ खग खूँटे।' सुजा० २३

खूँटी—स्त्री० पौधों या बालोंकी जड़का अंश। कील।

खूँद—स्त्री० घोड़ेकी उछल-कूद 'तुलसी जौ मन खूँद सम कानन बसहु कि गेह।' दोहा० ११०

खूँदना—अक्रि० पैरोंके नीचे दबाना, कुचलना, पाँव उठा उठा कर जल्दी जल्दी ज़मीनपर पटकते रहना। (सू० ५) 'खूँदहिं कुरलहिं, जनु सर हंसा।' प०१५२

खूक, खूकू—पु० सूअर 'खूक मलहारी गजगदह विभूति-धारी गिदुआ मसान वास करयोई करत हैं।' गुरु गो०

खूटना—अक्रि० घटना (उदे० 'कागर')। बीत जाना, चुक जाना 'आयुर्बल खूट्यो धनुष डु टूट्यो, मैं तन-मन सुख पायो।' राम० १७४, (सू० २५९)। रुक जाना, बन्द हो जाना 'चारि मास बरषे जल खूटे' -सूबे० ४०६। सक्रि० टोकना, छेड़ना।

खून—पु० रुधिर, रक्त। हत्या।

खूनी—वि० हत्यारा, घातक। अत्याचारी।

खूब—क्रिवि० अच्छी तरह, पूर्णतः। वि० अच्छा। अ० वाह। ठीक।

खूबी—स्त्री० विशेषता, विलक्षणता, अच्छाई, गुण।

खूसट—पु० उल्लू (प० २१२)। वि० नीरसहृदय। बुड्ढा।

खूसर—पु० उल्लू '...सुमिरे कृपालुके मराल होत खूसरो।' कविता २०६। वि० मनहूस, बुड्ढा।

खेचर—पु० गगनचारी। विमान। पक्षी। ग्रह या तारा। मेघ।

खेटक—पु० आखेट, शिकार। गाँव। तारा। ढाल।

खेटकी—पु० शिकारी। भड़ेरिया, भड़ुर।

खेड़ा—पु० छोटा गाँव। खेड़ेकी दूब = बहुत दुर्बल।

खेत—पु० जोतने बोनेकी भूमि, क्षेत्र। रणभूमि 'तैसेहि भरतहिं सैन समेता। सानुज निदरि निपातउँ खेता।' रामा० ३०९। खेत आना = लड़ाईमें मारा जाना। खेत करना = युद्ध करना।

खेतिहर—पु० किसान, कृषक (सूबि० २९)।

खेती—स्त्री० किसानी, बोई हुई फसल।

खेद—पु० दुःख, ग्लानि (सुन्द० ७०)।

खेदना—सक्रि० भगाना, खदेड़ना दौड़ाना। शिकारके पीछे दौड़ना 'भुज भुजगेसकी वै संगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलनके।' भू० १७७

खेना—सक्रि० नाव चलाना। बिताना, काटना।

खेप—स्त्री० एक बारका बोझा, लदा माल। स्त्री० दोष।

खेपना—सक्रि० व्यतीत करना, काटना।

खेम—पु० क्षेम, कुशल, मंगल, मुक्ति 'मीठो अरु कठवति भरो रौताई अरु खेम।' दोहा० १०६, (उदे० 'केस')

खेमा—पु० डेरा, तम्बू।

खेरा—पु० खेड़ा, छोटा गाँव 'आप पापको नगर बसावत, सहि न सकत पर खेरो।' विन० ३५०, (अ० ७०)

खेरौरा—पु० एक तरहका लड्डू 'मोति लाडू औ खेरौरा बाँधे।' प० २९५

खेल—पु० क्रीड़ा, तमाशा, विनोद, उछलकूद, गलबहलाव, विहार। तुच्छ कार्य।

खेलक—पु० खेलनेवाला मनुष्य, खिलाड़ी।

खेलना—अक्रि० दौड़-धूप, उछल-कूद, तमाशा इ० में लगना। अभिनय क०। विचरना 'न जनौ कौन देस तें खेला।' प० १०१। चला जाना 'हंस लजाइ मानसर खेले।' प० २३९। खेलना खाना = चैनसे दिन बिताना।

खेलवाड़—पु० खेल, तमाशा, दिल्लगी।

खेलवार—पु० खेल करनेवाला 'संपति चकई भरत चक मुनि आयसु खेलवार।' रामा० ३२२। पु० खेल, तमाशा, दिल्लगी।

खेलाना—सक्रि० खेलमें लगाना, बहलाना।

खेलार—पु० खेलनेवाला, खेलाड़ी 'चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू।' रामा० ३१४

खेवक—पु० खेनेवाला, केवट 'अहिके नाव औ खेवक बेगि लागि सो तीर।' प० ८, (प० १६७)

खेवट, खेवटिया—पु० मल्लाह 'खेवटसे परिचय नहीं क्योंकर उतरै पार।', 'सागर उमड़ा प्रेमका खेवटिया कोइ एक।' साखी ५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खेवना—सक्रि० खेना, नाव चलाना।

खेवा—पु० नाव द्वारा पार करनेका काम। नाव खेनेका किराया। बोझसे लदी हुई नाव। नावका बोझ 'चढ़ै उतराइल जेहि कर खेवा।' प० ८

खेह, खेहर—स्त्री० धूल, विभूति, खाक, मिट्टी (प० ६), 'कह कबीर ता साधुकी हम चरननकी खेह।' साखी ११०, 'मोद न मन, तन पुलकि नैन जल, सो नर खेहर खाउ।' विन० २५८

खैंचना—सक्रि० खींचना, आकर्षित करना। 'लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े।' रामा० १४२

खैर भैर, खैल भैल—पु० हलचल, शोर-गुल 'खैरभैर चहुँ ओर मच्यो अति आनँद पुर न समाइ।' रघु० ११, (खैल भैल, देखो 'उसलना')

खैला—पु० मथानी (अखरा० ३५७)।

खोंच—स्त्री० काँटे आदिमें लगकर कपड़ेका फटना। नोकदार वस्तुसे छिलनेकी हलकी चोट। 'तुलसी चातक प्रेम-पट मरतहु लगी न खोंच।' दोहा० १२९। पु० खुही, खुहीगर अन्न।

खोंचा—पु० पक्षियोंको फँसानेका बाँस। देखो 'खोंच', पु०।

खोंचिया—पु० खोंची लेनेवाला। भिखारी।

खोंची—स्त्री० वह थोड़ा अन्न इ० जो बाजारमें दूकानदारोंकी ओरसे भिखमंगोंको दिया जाता है, भीख 'खाई खोंची माँगि मैं तेरो नाम लिया रे।' विन० १२१

खोंटना—सक्रि० ऊपरी हिस्सा तोड़ना। नोचना। उपाड़ना, उचाड़ना (उदे० 'खत')।

खोंडर—पु० पेड़ इ० का खोखला भाग, गड्ढा।

खोंतल—पु० घोंसला।

खोंता, खोंथा—पु० देखो 'खोंतल'।

खोंपा—पु० हलकी लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है। छाजनका कोना। चोटीका गुच्छा, चूड़ा 'सरवरतीर पद्मिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकलाई।' प० २७

खोंसना—सक्रि० अटकाना 'रघुवंसी सरदार रलकी खोंसे सीस कलंगी।' रघु० ३०

खोई—स्त्री० ऊखके रस निकाले हुए डंठल। खुही। लाई।

खोजला—वि० शून्य, पोला, थोथा। पु० बड़ा छिद्र।

खोज—पु० पता, अनुसन्धान, निशान 'रहा न कतहुँ तुःख कर खोजू।' प० ११३। पहियेकी लीक या पाँव आदिका चिह्न 'चलिय चलापट तुरत रथ, द्रुत उत खोज दुराइ।' रामा० २४०, (प० ५१)। खोज पड़ना = पीछे पड़ना 'सत्य कहहु पदमावति सखी पर्यी सब खोज।' प० १५५

खोजक, खोजी—वि० पता लगानेवाला, ढूँढनेवाला।

खोजना—सक्रि० अनुसन्धान करना, ढूँढना।

खोजा—पु० हिजड़ा (साखी १३६)। नौकर।

खोट—स्त्री० बुराई, पाप 'हरि कृपालु सब पाछिली, छमिहैं तेरी खोट।' ध्रुवदास। अंगूर, फोड़ेका देडल। निकृष्ट वस्तुकी मिलावट। मिलायी गयी वस्तु। वि० दुष्ट, ऐबी 'छोट कुमार खोट अति भारी।' रामा० १५१। खोट होना = दूषित होना, बिगड़ जाना (उदे० 'अगोट')

खोटता—स्त्री० खोटापन, बुराई।

खोटपन—पु० खोटापन, दुष्टता।

खोटा—वि० दूषणयुक्त, बुरा, दुष्ट।

खोटाई—स्त्री० दुष्टता, नीचता, बुराई। दोष। कपट।

खोटापन—पु० देखो 'खोटाई'।

खोदना—अक्रि० गड्ढा करना, खनना। छेदछाद करना। उसकाना। [† उसकी मजदूरी।

खोदाई—स्त्री० खोदने या चिह्नित करनेका काम या †

खोनचा—पु० फेरी देकर बेचनेवालोंका मिठाई रखनेका थाल।

खोना—सक्रि० नाहक जाने देना, गुम कर देना। खराब करना।

खोपड़ा, खोपरा—पु० गरी। सिरकी हड्डी। सिर।

खोपा—पु० देखो 'खोंपा'।

खोभरा—पु० चुभने वाली वस्तु, खूँटी (?) 'जैसे कोई पाँवनि पैजार कूँ चढ़ाइ लेत ताकूँ तौ न कोऊ काँटे खोभरेको दुख है।' सुन्द० १४७

खोम—पु० कौम, जाति, झुण्ड '...बसे खलनके खेरन खबीसनके खोम हैं।' भू० १२२

खोर—स्त्री० गली, कूचा (प्रज० १२०)।

खोरना—अक्रि० स्नान करना, नहाना 'आचमु संगते जो न डरौं सब मींजि सभासद खोनिव खोरौं।' कवित्त० १८९, (गीता० ३६८)। सक्रि० खोलना, 'ज्ञान दियो गुरुदेव कृपा करि मूँदि दियो भ्रम खोरि किवारो।' सुन्द० १५६

खोरा—वि० लँगड़ा, भंगभंग 'काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।' रामा० २०७। पु० कटोरा, गिलास 'रतन-जड़ाऊ खोरा खोरी।' प० १६२

Nepal Sanskrit University, Bálmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खोराक—स्त्री० भोजन या दवाकी मात्रा। आहार।

खोरि, खोरी—स्त्री० गली, संकीर्ण मार्ग (उदे० 'खलल') 'लरिका सहस एक संग लीने नाचत फिरत साँकरी खोरी।' सूवे० ६५। दोष 'हँसिवे जोग हँसे नहिं खोरी।' रामा० ९, 'झूठे सुतहिं लगावति खोरि।' सूवे० ११४। बुराई। चन्दनका आड़ा तिलक, 'गये श्याम रवितनयाके तट अंग लसत चंदनकी खोरी।' सूवे० ७६

खोरी—स्त्री० कटोरी 'काहू हाथ चंदनकै खोरी।' प० १३८

खोलना—सक्रि० आवरण या रुकावट हटाना। बंधन तोड़ना, मुक्त करना। रहस्य प्रकट करना।

खोली—स्त्री० गिलाफ़। झोपड़ी।

खोसना—सक्रि० लुचकना, छीनना '...दारा सुत वित्त तेरे खोसि खोसि खायँगे।' सुन्द० १३

खोही—स्त्री० धूल 'सूर सुवस्तुहिं छोड़ि अभागे, हमहिं बतावत खोहि।' सू० २२५। स्त्री० पत्र-छत्र। 'खुही', वर्षा इत्यादिसे बचनेके लिए खास तरहसे लपेटा गया कम्बल या कपड़ा (गीता० ३३८, सूवे० १०८)।

खौर—स्त्री० चन्दनका आड़ा व धनुषके आकारका तिलक। स्त्रियोंका एक गहना। 'हरिके केसन सों सटी लसत खौर इकतार।' व्यास

खौरना—सक्रि० चन्दनका तिलक लगाना।

खौरि—स्त्री० देखो 'खौर'। 'केसरि खौरि करी तियके तन प्रीतम और सुवासके संगनि।' रस०, (सू० १२३)

खौलना—सक्रि० उबलना, चुरना, जोश खाना।

ख्यात—वि० प्रसिद्ध, जाहिर।

ख़्याल—पु० ध्यान। विचार, मत आदर। पु० खेल, हँसी, लीला 'हाय दई! यह कालके ख्यालमें, फूलसे फूलि सबै कुंभिलाने।'—देव। 'सिला, गुह, गीध, कपि, भील, भालु रातिचर, ख्याल ही कृपालु कीन्हे तारन-तरन।' विन० ५६४

ख्याली—वि० कल्पित। सनकी। कौतुकिया, खेल करने वाला। (कविता० २४०)

ख्वार—वि० खराब, नष्ट, अनादृत।

ख्वारी—स्त्री० खराबी। तिरस्कार। वि० नष्ट 'रावन कुटुंब समेत मै ख्वारी।' सूवि० १४

ग

गंगाजल—पु० गंगाका पानी। एक तरहका सफेद चमकदार रेशमी कपड़ा 'गंगाजलकी पाग सिर सोहत श्री रघुनाथ।' राम० १३२

गंगोझ—पु० गंगाजल 'सुरसरि गत सोई सलिल, सुरासरिस गंगोझ।' दोहा० ११०

गंज—पु० बाल उड़नेका रोग, खल्वाट। बालखोरा। गल्लेका बाजार, हाट। ख़ज़ाना, राशि। समूह 'हरष विषाद न केसरिहि कुंजर गंज निहार।' दोहा० १३६

गंजन—वि० नष्ट करनेवाला 'पापतरु भंजन, विघनगढ़ गंजन, जगत मनरंजन, द्विरदमुख गाइये।' भू० १, (सू० ७७)। पु० नाश। तिरस्कार। दुःख, 'तेहि मिलि गंजनको लहै? बल बिनु मिले निचिंत।' प० १४९

गंजना—सक्रि० नष्ट करना, चूर करना 'तोहि समेत नृपबल-मद गंजा।' रामा० ४२५, 'कह कबीर वा दासको गंजि सकै नहिं कोय।' साखी १२४

गंजा—पु० बाल झड़नेका रोग। वि० जिसके बाल झड़ गये हों।

गंजाना—सक्रि० नाश करना, मारना 'मनसबदार चौकीदारन गँजाय महलनमें मचाय महाभारतके भारको।' भू० ७४

गँठजोड़ा—पु० गाँठ जोड़ना, विवाहकी एक रस्म।

गँडदार—पु० देखो 'गडदार'।

गंडस्थल—पु० गालके ऊपरकी जगह, कनपटी।

गंडूष—पु० कुल्ला। चुल्लू। 'मानहु भरि गंडूष कमलतें डारत अलि आनंदन।' सूवे० २२३

गंदला—वि० मैला, गन्दा।

गंदा—वि० मैला, घृणित।

गंध—स्त्री० महँक, बास, लेश।

गंधरव, गंधर्व—पु० एक देव जाति।

गंधर्वी—स्त्री० "गंधर्विन"। वि० गंधर्व सम्बन्धी।

गंधी—पु० अत्तार 'ए गंधी, मतिअन्ध तू अतर दिखावत काहि।' बि० उपस्क० ४०। एक घास। एक कीड़ा।

गंधीला—वि० गंदा, मैला 'बहता पानी निर्मला, बँधा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गँधीला होय।' साखी १३४

गंभीर—वि० गहरा, अथाह, शान्त, जटिल, भारी।

गँव—स्त्री० घात, अवसर 'देखि लागि मधु कुटिल किराती। जिमि गँव तकहि लेउँ केहि भाँती।' रामा० २०५। प्रयोजन। उपाय, युक्ति। गवँहीं, = युक्तिसे, चुपकेसे 'उठेउ गवँहिं जेहि जान न रानी।' रामा० ९६, (१३६)

गँवई—स्त्री० छोटा गाँव (वि० १८०)।

गँवाना—सक्रि० समय काटना। खोना।

गँवार—वि० ग्रामीण, देहाती, मूर्ख, नासमझ।

गँवारी—स्त्री० गँवारपन, मूर्खता। गँवार या मूर्ख स्त्री 'स्वामिनि अविनय छमबि हमारी। बिलगु न मानब जानि गँवारी।' रामा० २५४।वि० ग्रामीण सा, ग्राम्य। बेढंगा।

गँवेली—स्त्री० गवाँर स्त्री 'नागरि विविध बिलास तजि, बसी गँवेलिन माँहि।' वि० २०८

गंस—पु० गाँठ, कुटिलता (भ्र० १३४)। शत्रुता, हृदयमें गड़ जानेवाली बात, ताना। स्त्री० गाँसी, तीरकी नोक।

गँसना—सक्रि० जकड़ना, मजबूतीसे कसना। अक्रि० खूब भर जाना, सर्वत्र छा जाना।

गँसीला—वि० गँसा हुआ, ठसा हुआ। गफ़। नोकदार, चुभनेवाला।

गइंद—पु० गयन्द, गजेन्द्र, बड़ा हाथी।

गई करना—अक्रि० जाने देना, ख़्याल न करना।

गई बहोर—वि० गई हुई वस्तुको पुनः प्राप्त करानेवाला 'गई बहोर गरीब निवाजू।' रामा० १२

गऊ—स्त्री० गो, गाय।

गगन—पु० आकाश, नभ। शून्य स्थान।

गगरा—पु० कलसा, पीतल इ० का घड़ा।

गगरिया, गगरी—स्त्री० छोटा घड़ा, कलसी 'सिरते नीर ढराइ देत फोरि सब गगरी।' सूबे० १११

गच—पु० पक्का फर्श, पक्की छत, चूना, सुरखी आदिसे पिटी भूमि 'ज्यों गच-काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तनकी।' विन० २४१। चूना, सुरखी आदिसे युक्त मसाला।

गचकारी, गचगीरी—स्त्री० चूने सुरखीका काम।

गचगर—पु० चूने, सुरखी आदिका काम करनेवाला, गच पीटनेवाला।

गचना—सक्रि० खूब कसके भरना। गाँसना।

गच्छना, गछना—अक्रि० जाना 'दक्षिनकी पच्छिनी सी गच्छैं अंतरिक्ष मग, पच्छिमकी पक्षहीन पक्षी ज्यों उरत हैं।' के० १५८। सक्रि० निबाहना। अपने ऊपर लेना।

गजंद, गजंदा—पु० हाथी 'गाढ़र छड़े गजंद सों देखो उलटी रीति।' साखी २९, (२७ भी)

गज असन—पु० गजाशन, पीपलका पेड़।

गज़क—पु० मद्य पीनेके बाद खाई जानेवाली चटपटी वस्तु, चिखना, चाट। जलपान। (उदे० 'अछक')

गजगाह—पु० हाथीकी झूल, पाखर 'साजिकै सनाह गजगाह सउछाह दल महाबली धाए बीर जातुधान धीरके।' कविता० १९४, (प० २५२)

गजगौनी—वि० स्त्री० हाथीके समान मन्द चालसे चलनेवाली (स्त्री)।

गजगोद्दर—पु० गजमोती।

गजदंती—वि० हाथी दाँतका बना हुआ।

गजना—अक्रि० गर्जन करना 'तो बलसों गढ़ कोट गर्ज अरु तू गढ़ कोटनके बल गाजै।' भू० ८८, 'जगके घन तुम देत हौ गजिकै जीवनदान।' दोन० १०६

गजनाल—स्त्री० हाथियों द्वारा खींची जानेवाली तोप।

गजपति—पु० श्रेष्ठ हाथी। कलिंग देशके राजाकी उपाधि 'सुनहु गजपती उतर हमारा। हम तुम एकै, भाव निरारा।' प० ६३। बहुतसे हाथियोंवाला राजा।

गजमणि, गजमनि—स्त्री० गजमोती।

गजमोती—पु० गजमुक्ता।

गजर—पु० गजल। एक एक पहरपर घण्टा बजनेकी आवाज़ 'पहरहि पहर गजर नित होई।' प० १८ प्रातःकालका घण्टा। जगानेका घण्टा।

गजरा—पु० घनी गुँथी हुई माला, हार। कलाईका भूषण-विशेष। एक रेशमी वस्त्र।

गजवदन, गजानन—पु० गणेशजी।

गजवान—पु० महावत।

गजा—पु० नगाड़ा बजानेका डण्डा, नगाड़ेकी चोब 'बुर-दुंदुभि सीस गजा, सर रामको रावणके सिर सार्थहि लाग्यो।' राम० ४९७

गजी—स्त्री० हथिनी। एक तरहका मोटा देशी कपड़ा, गाढ़ा 'कह कबीर कोरी गज़ी कैसे लागे रंग।' साखी ३३। पु० हाथीका सवार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गज्जूह—पु० हाथियोंका झुण्ड 'केहरि कबहुँ न तृन चरै जो व्रत करै पचास। जो व्रत करै पचास, विपुल गज्जूह विदारै।' नरहरि

गटई, गटइया—स्त्री० गर्दन।

गटकना—सक्रि० निगलना 'गटकि गटकि करि विष फल खातु है।' सुन्द० ५५। हड़पना।

गटकीला—वि० गटक जानेवाला, खानेवाला 'ब्रजजुवतिनके प्रेम भोगमें घर घर माखन गटकीले।' नारायण स्वामी

गटना—अक्रि० बँधना, जकड़ जाना 'अपनी रुचि जितही तित खैंचति इन्द्रिय ग्राम गटी।' सू० ५

गटपट—स्त्री० मिलावट, परस्परका मेल। सहवास।

गटा—पु० गटरमाला 'रहै प्रेम मन अरुझा गटा।' प० ३०६

गटी—स्त्री० गाँठ। समूह 'राजपति समेत पुत्रनि विप्रलाप गटी रटी।' राम० २२१

गट्ठा—पु० कलाई। गाँठ। बीज।

गट्टर—पु० बड़ी गठरी।

गठना—अक्रि० मेल होना, पटना, जुड़ना, शामिल होना, संयोग होना, अच्छी तरह बनना।

गठबंधन—पु० विवाहमें एक रस्म। 'गँठजोड़ा'।

गठरी—स्त्री० पोटली, बोझ।

गठिबंध—पु० गठबंधन।

गठिया—पु० वातरोग। खुरजी, गठरी।

गठीला—वि० गाँठयुक्त। दृढ़, चुस्त।

गड़गड़ाना—अक्रि० गरजना। सक्रि० हुक्का पीना।

गड़गड़ी—स्त्री० हुक्की 'ढोल दमामा गड़गड़ी सहनाई अरु भेरि।' साखी ६३

गड़दार—पु० मतवाले हाथीके साथ चलनेवाला साँटेमार नौकर (दे० 'अड़दार')। महावत।

गड़ना—अक्रि० चुभना 'काँटे सी कसकति हिये गड़ी कटीली भौंह।' वि० १६६। पीड़ा देना, दर्द करना। समाना, प्रवेश करना 'दू मोहन मन गड़ि रही गाढ़ी गड़नि गुवालि।' वि० २५२। जमना, ठहरना, स्थिर होना। मिट्टी आदिके नीचे दबना।

गड़पना—सक्रि० हड़पना, खा जाना।

गड़बड़—स्त्री० अव्यवस्था, गोलमाल। उपद्रव। वि० अनियमित, बेसिलसिले। ऊबड़ खाबड़।

गड़हा—पु० गड्ढा।

गड़ही—स्त्री० छोटा गड्ढा 'निकट निरादर होत है ज्यों गड़हीको पानि।' रहीम २०

गड़ाना—सक्रि० धँसाना, चुभाना 'कवि मतिराम काम तीरहूतें तीक्षन कटाक्षनकी कोरैं छेदि छातीमें गड़ाई हैं।' ललित १०२। सक्रि० गाड़नेमें लगाना।

गड़ायत—वि० गड़नेवाला, चुभनेवाला।

गड़ारी—स्त्री० घिरनी। घेरा, वृत्त। आड़ी धारी।

गडुआ, गडुवा—पु० लोटा (प० १३४)।

गडुर, गडुल—पु० कुबड़ा मनुष्य। वि० कुबड़ा।

गडुरी—स्त्री० एक पक्षी।

गड़ेरदार—वि० घेरदार।

गड़ोना—सक्रि० धँसाना, चुभाना।

गड़ौना—पु० काँटा।

गड्ड—पु० गड्ढा। ढेरी, समूह।

गड्ढा—पु० गड्हा, गर्त।

गढ़—पु० क़िला, कोट। खाई।

गढ़त, गढ़न—स्त्री० बनावट, रचना, गठन।

गढ़ना—सक्रि० बनाना, रचना 'सुरप्रतिमा खम्भनि गढ़ि काढ़ी। मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़ी।' रामा० १५६। सुडौल करना, प्रस्तुत करना। बात गढ़ना = बात बनाना, झूठ मूठकी बात तैयार कर लेना 'सचि प्रतीति बहु बिधि गढ़ि छोली। अवध साढ़साती तब बोली।' रामा० २०७

गढपति, गढ़पाल—पु० क़िलादार, राजा।

गढ़वार, गढ़वाल—पु० गढ़वाला। एक प्रदेश।

गढ़ा—पु० गड्ढा, खात।

गढ़ाना—सक्रि० बनवाना। अक्रि० अखरना।

गढ़ी—स्त्री० छोटा क़िला।

गढ़ीश, गढ़ीस—पु० गढ़पति। गढ़का मालिक।

गढ़ैया—वि० गढ़नेवाला, रचनेवाला, बनानेवाला।

गढ़ोई—पु० गढ़पति, किलादार 'और गढ़ोई नदी नद सिव गढ़पाल दरयाव।' भू० ४४

गण—पु० श्रेणी, झुंड, संघ। तीन अक्षरोंका समूह। [दे० 'गन'।

गणक—पु० ज्योतिषी।

गणना—स्त्री० गिनती संख्या।

गणपति, गणाधिप, गणेश—पु० गजानन, विनायक।

गणिका—स्त्री० वेश्या। एक वृक्ष।

गणित—पु० संख्या, परिमाण इ० सम्बंधी शास्त्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गत—स्त्री० गति, दशा, अवस्था। रूप, रंग, वेष। उपयोग। दुर्दशा। मृत देहका क्रिया-कर्म। नाचनेमें शरीरका विशेष प्रकारसे हिलाना-डुलाना 'रसजुत लेत अनन्त गत पुतरी पातुर राय।' वि० ११९ (बंग०)। वि० बीता हुआ, पिछला। रहित, खाली।

गतका—पु० खेलनेका डंडा। घूंसा।

गति—स्त्री० गमन, चाल। दशा। पहुँच, पैठ। लीला, करनी। रीति, ढंग। शरण, अवलम्ब, अन्तिम उपाय। मोक्ष, मुक्ति (उदे० 'अगती')। रूपरंग, वेष। मृत्युके बादकी दशा। नृत्यादिमें विशेष रूपसे अंग-परिचालन। पैतरा, कुश्ती इ० लड़नेवालोंके पैरकी चाल।

गत्थ, गथ—पु० पूँजी, दाम, धन-सम्पति 'जो ओहि हाट सजग भा गथ ताकर पै बाँच।' प० १७, (अ० ४१)। माल 'तुम्हरो गथ लादो गयंदपर हींग मिरच पीपरि कहा गावति।' सुबे० १४०। झुण्ड।

गथना—सक्रि० एकको दूसरेसे जोड़ना या मिलाना।

गद—पु० व्याधि, रोग। विष। एक ऋषि। एक असुर।

गदकारा—वि० गुलगुला, मुलायम 'गोरी गदकारी परै, हँसत कपोलनु गाड़।' वि० २९३

गदगद—वि० खुशी या प्रेमकी अधिकताके कारण रुका हुआ या अस्पष्ट (कंठ, स्वर, इ०)। पुलकित।

गदना—सक्रि० कहना 'कहि सकल लोक काकों चहैं? चोर नामकों का गदत।' दीन० १६३

गदराना—अक्रि० पकनेपर होना। (अंगोंका) परिपुष्ट अवस्थाको प्राप्त होना। आँख आनेपर होना। वि० गदराया हुआ (उदे० 'आद')।

गदहरा—पु० गदहा, खर। गदेला, तोपक।

गदहा—पु० गर्दभ, खर, गधा। रोगहर्त्ता, वैद्य।

गदा—स्त्री० प्राचीन कालका एक अस्त्र। मुद्गरकी तरह

गदाई—वि० क्षुद्र, रद्दी, खराब। [भाँजनेका एक डंडा।

गदेरी, गदोरी—स्त्री० हथेली।

गदेला—पु० तोपक। बालक, बच्चा 'फिरे गुलकमें मोगल गदेले।' छत्र० २९

गद्दर—वि० अधपका। पु० मोटा गद्दा।

गद्दा—पु० तोपक, मोटा बिछौना जिसमें रूई इ० भरी हो।

गन—पु० झुण्ड, समूह (भू० ७२)। श्रेणी। दूत। किंकर। शिवजीके सेवक। अनुचरोंका समूह। अनुयायी, अनुगामी। योद्धा।

गनक—पु० ज्योतिषी।

गनती—स्त्री० गिनती। गणना। संख्या।

गनना—स्त्री० गणना। सक्रि० गिनना।

गननाना—अक्रि० गूँजना, सनसनाना (छत्र० १३१)।†

गननायक—पु० गणेशजी। शिवजी। [† बूमना।

गनप, गनपति, गनराय—पु० देखो 'गननायक'।

गनिका—स्त्री० वेश्या। वह नायिका जो धनके लोभसे नायकसे प्रीति करे।

गनी—वि० धनवान् 'निदरि गनी आदर गरीबपर, करत कृपा अधिकाई।' विन० ३९१

गनीम—पु० डाकू 'कबीर तोड़ा मानगढ़ मारे पाँच गनीम।' साखी २७। शत्रु 'महाराज सिवराज चढ़त तुरंग-पर ग्रीवा जात नै करि गनीम अति बलकी।' भू० ७८

ग़नीमत—स्त्री० संतोषकी बात, बड़ी बात। मुफ्ती माल।

गन्ना—पु० ऊख।

गप—स्त्री० झूठी खबर, झूठी बात। मन बहलावकी बात।

गपकना—सक्रि० झटपट खा लेना, हड़पना। गप्प उड़ाना, झूठ कहना 'कीन्हों है सगोत घात सो मैं नाहिं कहौं फेरि पील पै तोरायो चार चुगुलके गपके।' भू० १५६

गपना—सक्रि० गप मारना, बकवाद करना 'मारहि जनि जन्म जाय गाल-गूल गपत।' विन० ३०८

गपिया, गपिहा—वि० गप मारनेवाला, बकवादी।

गप्प—पु० देखो 'गप'।

गफ़—वि० ठस, घना।

गफलत, गफिलाई—स्त्री० असावधानी। भ्रान्ति, मोह।

गबड़ी, गबड्डी—स्त्री० कबड्डी खेल 'दिगपति बड़ीके गेबड़ीके खिलवारन लौं देत सै हजारन हजार बार चपटैं।' भू० १७८

ग़बन—पु० ख़यानत, किसीकी धरोहरको हड़प जाना।

गबरू—वि० नवयुवा। भोला भाला। पु० पति।

गब्बर—वि० अभिमानी, घमण्डी। बहुमूल्य। धनी। हठी।

गभुआर—वि० गर्भजात (केश), जन्मके समयका रखा हुआ 'चिकन कच कुंचित गभुआरे। बहु प्रकार रचि मातु सँवारे।' रामा० ११०। जिसके सिरके जन्मके बाल न कटे हों, छोटी अवस्थाका।

गम—पु० मार्ग, रास्ता (उदे० 'अगम')। गमन, सहवास। स्त्री० पहुँच, पैठ। गम खाना = खा लेना।

ग़म—पु० दुःख, शोक। चिन्ता, ध्यान।

गमक—स्त्री० सुगंध। पु० बतलानेवाला, जानेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गमकना—अक्रि० महँकना। उत्साहपूर्ण होना (भू० [१२०)

गमनना—अक्रि० जाना।

गमना—अक्रि० जाना, चलना। देखो 'गमिना'।

गमाना—सक्रि० खोना, गँवाना, जाने देना। 'जैसे कपि गुंजनको ढेर करि मानै आग आगे धरि तापै कछु सीत न गमायो है।' सुन्द० ९६, (ब्रज० ३३१)

गमार—वि० देहाती, गँवार।

गमिना—सक्रि० ग़म करना, ध्यान देना 'मेरे तौ न डरु रघुबीर सुनौ साँची कहौं, खल अनखैहैं, तुम्हें सज्जन न गमिहै।' कविता० २१९

ग़मी—स्त्री० शोक, शोककी अवस्था। मृत्यु।

गयंद—पु० गजेन्द्र, बड़ा हाथी (उदे० 'अरिंद', 'गद्य')।

गय—पु० घर। धन। प्राण। आकाश। पुत्र। हाथी 'तेहि पुर बसइ सीलनिधि राजा। अगनित हय गय सेन समाजा।' रामा० ७५

गयनाल—स्त्री० देखो 'गजनाल'। हथनाल (सुजा० १८)

गयल—स्त्री० गैल, गली, रास्ता।

गरंथ—पु० 'ग्रंथ' (प० ५)।

गर—पु० गरदन (सू० १२), 'लोभ पास जेहि गर न बँधाया।' रामा० ४०६। विष। एक मादक रस। गरे पड़ना = सिर पड़ना, सहनेके लिए मौजूद रहना।

गरक—वि० मग्न, डूबा हुआ '...सुन्दर कहत ज्ञानी ज्ञानमें गरक है।' सुन्द० १५०

गरकाव—पु० डूबनेका भाव। वि० डूबा हुआ, निमग्न। 'जिनकी गरज सुने दिग्गज बेआब होत मदहीके आब गरकाव होत गिरि हैं।' भू० १३३

गरगज—पु० क़िलेकी दीवारोंपरका बुर्ज़ 'गरगज चूर चूर होइ परहीं।' प० २६०, (२५९)। लड़ाईकी सामग्री रखनेका बनावटी टीला। टिकटी, नावके ऊपरकी छत।

गरगाब—वि० देखो 'गरकाव'।

गरज—स्त्री० गंभीर और ऊँची ध्वनि। ग़रज़ = मतलब, स्वार्थ, प्रयोजन। आवश्यकता। इच्छा।

गरजन—पु० गरज, गंभीर ऊँचा शब्द।

गरजना—अक्रि० ऊँचा और गंभीर शब्द करना 'कपि देखा दारुन भट आवा। कटकटाइ गरजा अरु धावा।' रामा० ४२४। तड़कना, चटकना।

ग़रज़ी, गरजू—वि० ग़रज़वाला। मतलबी। इच्छुक।

गरट्ट—पु० झुण्ड, समूह 'हैबर हरट्ट साजि गैबर गरट्ट सम पैदरके ठट्ट फौज जुरी तुरकानेकी।' भू० १७८

गरद—स्त्री० गर्द, धूल 'सौ भैया राजा दुर्योधन पलमें गरद समोयो।' सूवि० १८। पु० विष। वस्त्र-विशेष।

गरदन—स्त्री० ग्रीवा, गला।

गरदा—पु० धूल, मिट्टी।

गरना—अक्रि० गलना, नष्ट होना, 'राजा कौन बड़ो रावनतें गर्वहिं गर्व गरे।' सू० २, 'साहि तनै तव कोप कृसानु ते वैरि गरे सब पानिपवारे।' भू० ७१। निचुड़ना गिरना, टपकना 'जबते बिछुरे कमलनयन सखि, रहत न नयन नीरको गरिबो।' भ्र० ४०

गरनाल—स्त्री० चौड़े मुँहवाली तोप।

गरब—पु० गर्व, घमण्ड, अभिमान। -गहेली, वि० स्त्री० अभिमानिनी 'तू गजगामिनि गरबगहेली।' प० ११५

गरबई—स्त्री० गर्वीलापन, घमण्ड।

गरबना, गरबाना—अक्रि० घमण्ड करना (कबीर १९४) 'हँसे श्यामसुख हेरिके धोवत गरबानो।' सूबे० २७२

गरबाहीं—स्त्री० देखो 'गलबाहीं'।

गरबित—वि० अभिमानयुक्त, घमण्डी।

गरबीला, गरभी—वि० अभिमानी, घमण्डी।

गरम—वि० उष्ण, तप्त, उग्र, तीक्ष्ण। [युक्त विवाद।

गरमागरमी—स्त्री० उत्साह, जोश, तत्परता। उत्तेजना-

गरमाना—सक्रि० गरम करना। अक्रि० गरम होना। क्रोध करना। जोशमें आना।

गरमी—स्त्री० उष्णता, क्रोध, तेज़ी। उपदंश। ग्रीष्मऋतु।

गररा—पु० एक तरहका घोड़ा।

गरराना—अक्रि० गंभीर और ऊँचा शब्द करना, गरजना, गड़गड़ाना। मस्ती चढ़ना (बुंदेल०)।

गररी—स्त्री० एक चिड़िया। गलगलिया, सिरोही।

गरल—पु० विष।

गरवा—वि० भारी, विशाल। पु० गला।

गरह—पु० ग्रह, बाधा, अरिष्ट।

गरहन—पु० चन्द्र या सूर्य ग्रहण। पकड़नेका काम।

गराँव—पु० बैल इ० के गलेकी रस्सी।

गरा—पु० देखो 'गला'।

गराज—स्त्री० गरजन, गंभीर ध्वनि 'भूषन कुमिस गैर मिसिल खरे कियेको किये म्लेच्छ मुरछित करिकै गराजको।' भू० ११

गराड़ी—स्त्री० चरखी, घिरनी। गहरी लकीर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गराना—सक्रि० गलाना। गारना, निचोड़ना, बहाना

गरारा—वि० गर्वयुक्त, प्रचण्ड, बलवान्। पु० 'गरगर' शब्द करके कुल्ली करना।

गरास—पु० ग्रास, निवाला। पकड़, ग्रहण।

गरासना—सक्रि० निगलना, पकड़ना 'राहु गरासै ताहुको मानुष काहे भूल।' साखी ७३। कष्ट देना।

गरियार—वि० एक जगह अड़ जानेवाला, सुस्त, मट्ठर।

गरिष्ट—वि० जो जल्द न पचे। बहुत भारी।

ग़रीब—वि० दरिद्र, दीन, नम्र।

गरीबनिवाज—पु० दीनदयालु।

ग़रीबी—स्त्री० निर्धनता, दीनता, नम्रता।

गरु, गरुअ, गरुआ—वि० गुरु, भारी, वज़नदार 'न टरै पग मेरुहुतें गरु भो'—कविता० १८९, '...जस मोहि गरुअ एक परद्रोही।' रामा० १०२, 'हलुकनको उड़ि जान दे गरुए राखि बटोर।' रहीम

गरुआई—स्त्री० भारीपन 'हरिहउँ सकल भूमि गरुआई।' रामा० १०४। बड़प्पन, महत्व 'ऐसेहु पितुतें अधिक गीधपर ममता गुन गरुआई।' विन० २६८

गरुआना—अक्रि० भारी या वज़नदार होना (रामा० १३६)।

गरुड़—पु० विष्णुका वाहन, खगपति। एक पक्षी।

गरुता—स्त्री० गुरुत्ता, भारीपन, बड़प्पन।

गरुवाई—स्त्री० देखो 'गरुआई'।

गरू—वि० गुरु, बड़ा, 'रावरे आदरे लोक वेदहू आदरियत, जोग ग्यानहूतें गरू गनियत है।' विन० ४२७

गरूर—पु० घमण्ड, गर्व। वि० देखो 'गरूरा' (कविता० १६२)।

गरूरत, गरूरताई—स्त्री० घमण्ड, मस्ती, अहंकार 'सुनिए जू जदुराई गंगकी गरूरताई गरजी है जमराई अरजी लगाई है।' दीन० १३०

गरूरा, गरूरी—वि० अभिमानी, मतवाला 'ते सरजा खिवराज दिये कविराजनको गजराज गरूरे।' भू०११५

गरेरना—सक्रि० चारों ओरसे घेर लेना। रोकना 'सात पँवरि नाँघत नृपहिं लेहगा बाँधि गरेरि।' प० २८७

गरेरा—पु० घेरा (प० २५९)। वि० घुमावदार (प० १३)।

गरेरी—स्त्री० गराड़ी, घिरनी। वि० स्त्री० घुमावदार 'खँड खँड सीढ़ी भई गरेरी।' प० १३

गरैयाँ—स्त्री० गलेकी रस्सी, पगहा।

गरोह—पु० समूह, झुण्ड।

गर्जना—देखो 'गरजना'।

गर्त्त—पु० गड्ढा, दरार, तालाब।

गर्द, गर्दन—देखो 'गरद'; 'गरदन'।

गर्दभ—पु० गदहा। एक कीड़ा। सफेद कुमुद।

गर्भ—पु० हमल, कोख, भ्रूण।

गर्भित—वि० गर्भसहित। पूर्ण।

गर्रा—पु० गराड़ी, चरखी। पानीका आघात। लाखी रंगका घोड़ा; लाखी रंग। वि० लाखके रंगका।

गर्व—पु० घमण्ड, अभिमान।

गर्वाना—अक्रि० घमण्ड करना।

गर्विष्ठ, गर्वीला—वि० घमण्डी, अभिमानयुक्त।

गर्हित—वि० निन्दनीय, दूषित, बुरा।

गलकंबल—पु० गायके गलेमें लटकती हुई खाल। लहर। 'सेहय सहित सनेह देह भरि कामधेनु कलि कासी। ...गलकंबल बरुना बिभाति जनु लूम लसत सरिता सी।' [विन० ९७

गलका—पु० अँगुलीके सिरेपरका फोड़ा।

गलगंजना, गलगाजना—अक्रि० आनन्दध्वनि करना 'सारदूल दुहुँ दिसि गढ़ि काढ़े। गलगाजहिं जानहुँ ते ठाढ़े।' प० २७६। लम्बी चौड़ी बातें करना, अति प्रसन्न होना 'धाईं सब गलगाजि कै ऊधो देखे जाय।' ध्रु० ७

गलगल—पु० मैनाकी तरहकी एक चिड़िया। एक तरह-का बड़ा नीबू।

गलगला—वि० गीला, भींगा हुआ, तर 'राख्यो गहि गाढ़े गरौ मनो गलगली दीठ।' वि० १६७

गलझंप—पु० गलेपरकी लोहेकी झूल 'तैसे चँवर बनाए औ घाले गलझंप।' प० २५२

गलतान—वि० लुढ़कता हुआ, घूमता हुआ 'उनमुनि लागी सुन्नमें निसु दिन रहि गलतान।' साखी ११९

ग़लती—स्त्री० भूल, भ्रान्ति, धोखा।

गलथन, गलथना—पु० गलस्तन, किसी किसी बकरीके गलेके दोनों ओर लटकनेवाले 'थन'।

गलना—अक्रि० घुलना, पिघलना, ध्वस्त विध्वस्त होना, ठिठुरना, नष्ट होना।

गलबल—पु० कोलाहल, हलचल 'भई भीर गलबल मच्यो...' छत्र० १०८, (सूबे० १२२)

गलबाहीं—स्त्री० गलेमें बाँह डालना 'गलबाहीं दीन्हें दोउ प्रिया नवल नँदलाल।' नागरी०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गलमंदरी—स्त्री० शिवजीको प्रसन्न करनेके लिए गाल बजाना। निरर्थक बकवाद करना।

गलमुच्छा—पु० गालोंपर रखे हुए बाल।

गलसुई—स्त्री० गालके नीचे लगानेकी छोटी तकिया (उदे० 'कटिजेब')।

गला—पु० ग्रीवा, गर्दन, कण्ठ। आवाज़।

गलानि—स्त्री० दुःख, खेद, पश्चात्ताप, लज्जा। 'करउ राज परिहरहु गलानी।' रामा० २८२, (२७८)

गली—स्त्री० तंग रास्ता, खोरी

गलीचा—पु० बेल बूटेदार एक तरहका मोटा बिछावन।

गलीज़, गलीत--वि० मैला कुचैला। जीर्ण शीर्ण अवस्थाको प्राप्त 'मीत न नीति, गलीत है जो धरिये धन जोरि।' वि० १९८

गलौ--पु० चन्द्रमा, निशाकर।

गल्यारा—पु० संकीर्ण गली।

गल्ला—पु० हल्ला, शोर। दल, झुण्ड।

ग़ल्ला—पु० अनाज, फसल। मद। गोलक।

गवँ—स्त्री० देखो 'गँव'।

गवन—पु० गमन, जाना। गौना।

गवनना—अक्रि० जाना 'कहहिं गवाँहय छिनक स्रम, गवनब अबहिं कि प्रात।' रामा० २५३

गवाँना—सक्रि० खोना (उदे० 'गवनना')।

गवाक्ष, गवाख, गवाछ—पु० झरोखा।

गवास—पु० कसाई, हत्यारा 'कासी मगु सुरसरि क्रमनासा। मरु मालव महिदेव गवासा।' रामा० ७

गवीश—पु० गोस्वामी। साँड। विष्णु।

गवेजा—स्त्री० बातचीत 'केवट हँसे सो सुनत गवेजा। समुद न जानु कुवाँकर भेजा।' प० ६७

गवेल—वि० देहाती, गँवार 'गागरि विविध विलास तजि बसी गवेलिन माहिं।' वि० २०८

ग़वेषणा—स्त्री० खोज, छानबीन।

गवेसना—सक्रि० खोजना 'कहाँ सो गुरु पावौं उपदेशी, अगम पंथ जो कहै गवेसी।' प० १९७

गवैया—पु० गानेवाला।

ग़श—पु० मूर्छा, बेहोशी।

गश्त—पु० टहलना, चक्कर, दौरा।

गहकना—अक्रि० लालसायुक्त होना, लपकना, शीघ्रता करना 'गहकि गाँस औरै गहे रहे अधकहे बैन।' वि० ३३

गहगह—वि० प्रफुल्लित, उमंगयुक्त, आह्लादपूर्ण 'मदत गहगह कंठ भरि कलकंठ चित्रक मोर।' गदाधर भट्ट। क्रिवि० धूमके साथ।

गहगहा—वि० प्रफुल्ल, आनन्दपूर्ण (उदे० 'खया')। धमाधम 'बाजे नभ गहगहे निसाना।' रामा० १४२

गहगहाना—अक्रि० आनन्दमग्न होना, उमंगमें भरना 'गहगहात किलकिलात, अंधकार भागो।' सू० ३९। फसल आदिका उत्तम रूपसे तैयार होना।

गहगहे—क्रिवि० आनन्दपूर्वक, धूमधामके साथ, बहुत अच्छी तरहसे। 'सबै पंखि बोलत गहगहे।' प० २११

गहडोरना—सक्रि० गंदा करना, मथना।

गहन—पु० ग्रहण। कलंक। बन्धन। कष्ट, विपत्ति। स्त्री० पकड़। हठ। वि० घना, दुर्गम 'मिलइ न जल बन गहन भुलाने।' रामा० ४०८। कठिन, जटिल। गहरा, अथाह। पु० गहराई। जंगल इ० दुर्गम स्थान 'डरपहिं धीर गहन सुधि आये। मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये।' रामा० २२९। कुंज, वनमें कोई गुप्त स्थान। कठिन समय, विपत्ति।

गहना—पु० जेवर। बन्धक। सक्रि० पकड़ना, ग्रहण करना (विन० २५३)। देखो 'गाहना'।

गहनि—स्त्री० हठ, टेक।

गहने—क्रिवि० धरोहर या रेहनके तौरपर।

गहबर—वि० व्याकुल 'गहबरि हिय कह कौसिला मोहि भरतकर सोच।' रामा० ३३४, 'गहबर नैन आए भरि आँसू।' प० १८३। सघन, दुर्गम 'जहँ आवत तम कुंज पुंज गहबर तरु छाई।' नन्ददास। ध्यानमग्न, बेसुध, प्रेमपूर्ण 'सजल नयन गदगद गिरा गहबर मन पुलक सरीर।' विन० ४५०

गहबरना—अक्रि० घबड़ा उठना, व्याकुल होना 'ततखन रतनसेन गहबरा।' प० ९९

गहर—स्त्री० पु० देरी, विलम्ब 'कबहूँ नाहीं गहर कियो।' सूवि० ३७। वि० गहन, गूढ़, सघन 'जानि बूझि अधरात गहर बन महँ फिरि आई।' नन्ददास

गहरना—अक्रि० देरी करना। अक्रि० झगड़ना। भीतर ही भीतर क्रुद्ध होना

गहरा—वि० 'उथला' का उलटा, गंभीर, तेज़, घोर, बहुत ज़्यादा, दृढ़, कठिन, गाढ़ा।

गहरु—स्त्री० विलम्ब, देर 'हरिसन माँगउँ सुन्दरताई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होइहि जात गहरु अति भाई'। रामा० ७६। 'सखी कहेको गहरु लगावति।' सू० ४७

गहवर—वि० देखो 'गहबर'। 'गारी दै हँसि मिलत गहवरे, अंतर प्रेम सँजोग।' नागरी०

गहाई—स्त्री० पकड़, पकड़नेका भाव।

गहागह—क्रिवि० देखो 'गहगह'।

गहाना—सक्रि० पकड़ाना।

गहासना—सक्रि० देखो 'गरासना'। 'औ चाँदहिं पुनि राहु गहासा।' प० ४५

गहिरा, गहिरो—वि० देखो 'गहरा'।

गहिला—वि० पागल, उन्मत्त 'गहिली गरब न कीजिए समै सुहागहिं पाय।' बि० १३१

गहीर—वि० गंभीर, गहरा, घना 'सीरे नद नीर तरु सीतल गहीर छाँह, सोवैं परे पथिक पुकारैं पिकी करि जात।' देव (ब्रज० २८३)

गहीला—वि० घमण्डी, गर्वसंयुक्त 'सो बल गयो किधौं भये अब गर्वगहीले।' विन० ११९। मदोन्मत्त।

गहेजुआ—पु० छुछूंदर।

गहेलरा—वि० पागल। मूर्ख; गवाँर।

गहेला—वि० घमण्डी 'तू गजगामिनि गरब-गहेली।' प० ११५। इठी, बावला, पागल, मूर्ख।

गहैया—वि० ग्रहण करनेवाला, अंगीकार करनेवाला।

गह्वर—पु० गुहा, गुप्त स्थान, बिल, कुंज। वन। कठिन विषय। वि० 'गहवर', व्याकुल 'मन गह्वर मोहि उतर न आयो हौं पुनि सोचि रही।' सूबे० २६०। गुप्त। दुर्गम।

गाँजना—सक्रि० इकट्ठा करना, ढेर लगाना।

गाँठ, गाँठि—स्त्री० ग्रन्थि, गिरह। गटरी, गट्ठा। सन्धि, जोड़। पोर, पर्व 'जैसे साँठेकी कठिन गाँठैं भरी मिठास।' बि० १४०। चद्दर इ० के छोरमें रखकर लगायी हुई गाँठ, 'जहाँ गाँठि तहँ रस नहीं यह जानत सब कोय। मड़ये तरकी गाँठिमें गाँठि गाँठि रस होय।' रहीम। गाँठ छोड़ना = कठिनाई दूर करना। मनमें गाँठ पड़ना = मनमोटाव होना (वि० १५०)। गाँठका = पासका 'फौज पठाई हुती गढ़ लेनको गाँठिहुके गढ़ कोट गँवायो।' भू० ८६। (बात) गाँठमें बाँधना = स्मरण रखना।

गाँठना—सक्रि० गाँठ लगाना, जोड़ना, मिलाना। वशमें करना, रोब जमाना।

गाँठी—स्त्री० देखो 'गाँठ' (रामा० ७८)। [दूब।

गाँडर—स्त्री० मूँज जैसी एक घास। खस। एक तरहकी

गाँडा—पु० ईख इ० से काटा हुआ टुकड़ा, ईख (भ्र० १६)।

गांडीव—पु० अर्जुनका धनुष। —धर = अर्जुन।

गाँथना—सक्रि० गूँथना, एकत्र करना, मोटी सिलाई करना, जोड़ना। 'जटाजूट दृढ़ बाँधे माथे। सोहहिं सुमन बीच बिच गाँथे।' रामा० ५०२

गांधर्व—वि० गंधर्व सम्बंधी। गंधर्व देशका। पु० गंधर्व विद्या, संगीत शास्त्र। एक तरहका विवाह।

गांधी—स्त्री० एक कीड़ा। हींग। पु० गंधी (उदे० 'खिरौरा')।

गाँव—पु० ग्राम, खेड़ा। —मारना = डाका डालना।

गाँस—स्त्री० रोक टोक, रुकावट (उदे० 'गहकना')। भेदकी बात, रहस्य। गाँठ, बनावट। अनी, फाँस 'अमृत ऐसे वचनमें रहिमन रिसकी गाँस।'—रहीम। बैर, ईर्षा। तीर व बर्छीका फल। अधिकार, शासन, निगरानी।

गाँसना—सक्रि० गूँथना। चुभाना, छेदना। ठूसना, कसना। रोकना, निगरानीमें रखना, पकड़में करना।

गाँसी—स्त्री० तीर, बर्छी इ० का फल, हथियारकी नोक (मति० २२३)। गाँठ। पु० कपट, मनोमालिन्य। कपटकी बात, चुभनेवाली बात 'पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे! कहैगो गाँसी।' भ्र० २७

गाइ, गाई—स्त्री० देखो 'गाय'। गाइगोठ = गायगोठ।

गागर, गागरी—स्त्री० छोटा घड़ा, कलसा (सू० ७) 'जल हिलोरि गागरि भरि नागरि जबही शीस उठायो।' सूबे० ११०

गाज—स्त्री० शोर, गर्जन 'ब्रह्माका आसन डिगा, सुनी कालकी गाज।' साखी १७४। वज्र, बिजली 'अवधपुरीमें गाज परै। कै अब राज्य भरत्थ करै।' राम० १९६। बिजली गिरनेकी आवाज़। पु० झाग, फेन।

गाजना—अक्रि० गर्जन करना, चिल्लाना। 'हनूमान अंगद रन गाजे।' रामा० ४७६। 'धाए धुरवा न, छाये धूरिके पटल, मेघ गाजियो न बाजियो है दुन्दुभि दराज को।' भू० ३२। प्रसन्नतासूचक शब्द करना, प्रसन्न होना।

गाज़ी—पु० वह मुसलमान जो धर्मके लिए दूसरोंसे युद्ध करे। जीतनेवाला, वीर, 'काहे से सिवाजी गाजी तेरोई सुजस होत तोसों अरिबर सरिबरसी करत हैं।' भू० ६९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गाड़—स्त्री० गड्ढा (वि० १२) 'भाऊ नरिन्दके धाक धुके अरि जाय गिरे गिरि गाड़न हीमें।' ललित० ८३

गाड़ना—सक्रि० दफनाना, तोपना, छिपाना, धँसाना।

गाडर—स्त्री० भेड़, 'गाडर लड़ै गजंद सों देखो उलटी रीति।' साखी २९, (उदे० 'करवार')

गाड़ा—पु० बैलगाड़ी, छकड़ा। घातका स्थान, गड्ढा। अंध अंध टेक चलै क्यों न परे गाड़े।' सूवि० ३८

गाड़ी—स्त्री० छकड़ा, शकट, यान।

गाड़ीवान—पु० गाड़ी हाँकनेवाला।

गाढ़—पु० स्त्री० संकट, कठिनाई, दुःख 'उलटी गाढ़ परी दुर्बासा दहत सुदर्शन जाको।' सूवि० ३२, (सू० १८६), 'जहाँ गाढ़ ठाकुर कहँ होई। संग न छाँड़ै सेवक सोई।' प० ११२। वि० गाढ़ा, घना, अधिक दृढ़, कठिन 'सातौ खंड गाढ़ दुइ नाके।' प० २७५। दुर्गम, अथाह।

गाढ़ा—वि० घना। मोटा, गहरा, घनिष्ट, कठिन, घोर, तीव्र, अधिक। 'तिन्हहिं सराप दीन्ह अति गाढ़ा।' रामा० ७८, 'कह सीता धरि धीरज गाढ़ा।' रामा० ३७२। पु० एक मोटा कपड़ा। गाढ़े दिन = विपत्तिके दिन 'क्यों रहीम खोजत नहीं गाढ़े दिनको मित्त।' रहीम

गाढ़ा, गाढ़े—क्रिवि० खूब, अच्छी तरह, दृढ़तासे (उदे० 'लैंचना', विन० ५८९)। 'बिरहा मोसे यों कहै, गाढ़ा पकड़ो मोहिं।' साखी ४४

गात, गात्र—पु० शरीर।

गाता—पु० गवैया।

गाती—स्त्री० शरीरमें लपेटनेका वस्त्र ['सारी सुभग काछ सब दिये। पाटम्बर गाती सब दिये।' सू०]। विशेष ढँग-से लपेटा हुआ वस्त्र।

गाथक—पु० गानेवाला।

गाथना—सक्रि० देखो 'गाँथना 'माथे मुकुट मनिनके गाथे भाथे कंध सुहाई।' रघु० १४६

गाथा—स्त्री० कथा, कहानी, वृत्तान्त, स्तुति।

गादड़—पु० गरियाल बैल। मेढ़ा। सियार। वि० भीरु।

गादड़ी—स्त्री० गीदड़, सियार, [तहाँ भूर देखेउ अस सपना। पकरेउ पैर गादरी अपना।' निम्बल]

गादर—वि० कादर, डरपोक। मद्दर, सुस्त। गदराया हुआ। पु० मद्दर बैल 'ताका भैंसा गादर बैल।··· इनसे बचैं चतुर लोग··· ।'—बाघ। गीदड़।

गादुर—पु० चमगीदड़ 'गादुर मुख न सूरकर देखा।' प० ३२८

गाध—वि० 'अगाध' का उलटा, छिछला। थोड़ा। पु० थाह। स्थान। लोभ। नदीका बहाव।

गाना—सक्रि० लयके साथ ध्वनि निकालना, मीठी आवाज़में बोलना। वर्णन करना (रामा० ३५८), स्तुति करना 'गाइये गनपति जगवन्दन'। विन० ६५। पु० गीत।

गाभ, गाभा—पु० कोंपल, नया पत्ता। वृक्षके बीचका हीर। 'कदलि-गाभ कै जानौ जोरी।' प० ४९

गामी—वि० चलनेवाला।

गाय—स्त्री० गैया, धेनु। सीधा आदमी।

गायगोठ—स्त्री० गोशाला 'जे अब मातु पिता सुत मारे। गायगोठ महि-सुर-पुर जारे।' रामा० २७९

गायताल—पु० निकम्मा पशु। निकम्मी वस्तु। वि० निकम्मा। —लिखना = बट्टे खाते डालना।

गायब—वि० अन्तर्धान, लुप्त।

गार—स्त्री० गारि, गाली 'सुनहु ब्रज बसि स्रवनमें ब्रज-बासिनेनकी गार।' नागरी०। पु० गड्ढा, गुफा।

गारना—सक्रि० निचोड़ना। पानीके साथ रगड़ना, घिसना। त्यागना, अलग करना, निकालना 'जान जो गारै रकत पसेऊ।' प० १०४, 'जे पद परसि सुरसरी गारी।' सू० १०१। गलाना। नष्ट करना, बरबाद करना 'आछो गात अकारथ गारयो।' सूवि० २५, (छत्र १४२)। क्षीण करना (भ्र० १३८)।

गारा—पु० गीला किया हुआ चूना इ०, गिलावा।

गारी—स्त्री० गाली। कलंक 'सूर श्याम यहि बरजिकै मेटहु कुलगारी।' सूवि० २१। विवाहादि समयके विशेष गीत। -आना, -लगना, -पड़ना = कलंक लगना।

गारुड़ी—पु० साँपका विष उतारनेवाला 'जावत गुनी गारुड़ी आये।' प० ५३

गारो—पु० अभिमान, गर्व 'छुद्र पतित तुम तारि रमापति जिय जु करो जिन गारो।' सूवि० ४२, (भ्र० १२४), 'भूषण आय तहाँ सिवराज लयो हरि औरँगजेबको गारो।' भू० ७२। घर 'गोबरको गारो सुतौ मोहि लगै प्यारो नहिं भावैं ये महल जे जटित मरकत हैं।' —रसखानि। प्रतिष्ठा, इज्जत।

गाल—पु० कपोल। बकबक करनेकी आदत, 'तब कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चलहि अस गाल तुम्हारा।' रामा० ४६४।—करना = मुँहजोरी 'करना गालु करब केहिकर बल पाई।' रामा० २०५।—फुलाना = रिसाना 'दोउ एक संग न होई भुआला। हँसब ठठाइ फुलाउब गाला।' रामा० २१५।—बजाना = डींग हाँकना 'पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा।' रामा० ४६७।—मारना = बढ़धड़ कर बातें करना 'बालि न कबहुँ गाल अस मारा।' रामा० ४६८

गालगूल—पु० अंडबंड बात (उदे० 'गपना')।

गालमसूरी—स्त्री० एक पकवान।

गालिब—वि० जीतनेवाला, श्रेष्ठ।

गालिम—वि० दृढ़, प्रचण्ड।

गाली—स्त्री० गारी। दुर्वचन, अपशब्द। कलंकसूचक [वाक्य। कलंक।

गास—पु० संकट, आपत्ति

गासिया—पु० जीनपोश।

गाह—पु० अवगाहन करनेवाला मनुष्य। ग्राहक। ग्राह, मगर। पकड़, घात।

गाहक—वि० अवगाहन करनेवाला, लेनेवाला। पु० खरीदार, लेनेवाला। 'सबद अहै गाहक नहीं वस्तु सो गरुआ मोल।' साखी १०५। कदर करनेवाला, अभिलाषी 'इहाँ सबै प्रेमी बसैं, तुम्हरो गाहक नाहिं।' नन्ददास

गाहकताई—स्त्री० कदरदानी (रामा० ४६२)।

गाहना—सक्रि० अवगाहन करना, डुबकी लगाना। मथना, क्षुब्ध करना, 'गाहियो सिंधु सरोवर सो जेहि बालि बली बरसो बर पेरयो।' के० ३३३। ग्रहण करना, पकड़ना 'पछलत्त तुरीनके हैं सुगमैं नख नाहरको हठि गाहनो है।' दीन० २५६। डंडेसे उलट पुलट कर झाड़ना 'झारि झरि मन तौ हरि लै गये बहुरि पयारहि गाहत।' भ्र० १०६। पार करना 'फेरि भीमरा कृष्णा गाही।' छत्र० ८०

गाहा—स्त्री० गाथा, कथा, वार्त्ता, वृत्तान्त 'करन चहौं रघुपति गुनगाहा।' रामा० ९

गिंडुरी—स्त्री० गेंडुरी, बिड़ई।

गिंदौड़ा, गिंदौरा—पु० मोटी रोटीकी तरह जमायी [हुई चीनी।

गिआन—पु० ज्ञान।

गिउ—पु० गरदन, गला (उदे० 'कुंद', प० ११३)।

गिचपिच, गिचरपिचर—वि० सटा हुआ, बहुत नजदीक नजदीक, अस्पष्ट।

गिज़ा—स्त्री० खोराक, भोजन 'कहै पद्माकर त्यों गजक गिजा हैं सजी सेज हैं सुराही हैं सुरा है और प्याला हैं।' पद्माकर (ककौ० ४४६)

गिट्टी—स्त्री० पत्थरके छोटे टुकड़े। रील।

गिड़गिड़ाना—अक्रि० विनती करना, चिरौरी करना।

गिद्ध—पु० एक तीव्र दृष्टिवाला मांसाहारी पक्षी।

गिनती—स्त्री० गणना। संख्या। गिनतीमें आना = कुछ महत्त्वका समझा जाना।

गिनना—सक्रि० गणना करना, संख्या निश्चित करना। महत्व देना। दिन गिनना = धैर्यके साथ दुःख दूर होनेकी प्रतीक्षा करना।

गिय—पु० 'गिउ', गरदन।

गियाह—पु० एक तरहका घोड़ा।

गिरगिट—पु० गिरगिटान, गिरदौना।

गिरगिरी—स्त्री० बालकोंका एक खिलौना।

गिरजा—स्त्री० पार्वती। पु० एक वृक्ष। 'स्तुतिभवन'।

गिरद—अ० आसपास, इधर उधर।

गिरदा—पु० चक्कर। तकिया। ढाल।

गिरदान—पु० गिरगिट।

गिरधर, गिरधारन, गिरधारी—पु० पहाड़ उठानेवाला। श्रीकृष्ण। हनूमान।

गिरना—अक्रि० पतित होना, खसकना, टपकना। मंदा [पड़ना।

गिरवर—पु० बड़ा पहाड़।

गिरवान—पु० देवता। कुरतेका कालर। गरदन।

गिरह—स्त्री० गाँठ। जेब। सवा दो इञ्च। सन्धि। गाँठ। उलटी, कलैया 'ऊँचो चितै सराहियत गिरह कबूतर लेत।' वि० १५४

गिरही—पु० गृही, गृहस्थ (गिरहिनी-भ्र० ६४)।

गिरा—स्त्री० वाणी, सरस्वती। कविता। जीभ।

गिराना—सक्रि० पतन करना, टपकाना। प्राण ले लेना। अधःपतित करना, घटाना।

गिरानी—स्त्री० महँगी, अकाल, अभाव। पेट इ० का भारीपन (रतन० ५९)।

गिरापति, गिरापितु—पु० ब्रह्माजी।

गिरास—पु० पकड़, कौर, निवाला। ग्रहण लगना।

गिरासना—सक्रि० ज़ोरसे पकड़ना, सताना।

गिराह—पु० ग्राह या मगर।

गिरि—पु० पहाड़, पर्वत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गिरिजा—स्त्री० पार्वती । गंगा । मल्लिका ।
गिरिधर,-धरन,-धारन,-धारी—पु० श्रीकृष्ण ।
गिरिनाथ,-राज, गिरींद्र,० गिरीश—पु० शिवजी । बड़ा पहाड़ । हिमालय ।
गिरी—स्त्री० बादाम इ० का गूदा ।
गिरैयाँ—स्त्री० गलेका छोटा रस्सा या बन्धन (जग०) । वि० गिरनेवाला, पतनोन्मुख ।
गिरो—वि० बंधक, रेहन ।
गिर्द—अ० आसपास, इधर उधर । चारों तरफ ।
गिलगिल—पु० एक जलजंतु । वि० पिलपिला ।
गिलट—स्त्री० एक हलकी धातु ।
गिलटी—स्त्री० बगल इ० में उठी गाँठ या ग्रन्थि ।
गिलना—सक्रि० हड़पना, निगलना, ('उदे० उगिलाना') 'कुंजर कूँ कीरी गिलि बैठी'—सुन्द० ८७, (दीन० १७६) । मनमें ही रखना ।
गिलम—वि० मुलायम, कोमल । स्त्री० ऊनका नरम कालीन, मुलायम गद्दा 'गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं चाँदनी है चिक हैं चिरागनकी माला हैं ।' [पद्माकर
गिलमिल—पु० एक तरहका कपड़ा ।
गिलहरा—पु० पान रखनेका बाँसका उब्बा । एक वस्त्र ।
गिलहरी—स्त्री० एक छोटा जन्तु ।
गिला—पु० उलाहना, शिकायत ।
गिलान—स्त्री० ग्लानि, खेद । घृणा । 'निरबुद्धी धन-मानकों मानत सकल जहान । लखि दरिद्र विद्वान्को जगजन करैं गिलान ।' दीन० ७९
गिलाफ—पु० खोल । म्यान ।
गिलाव, गिलावा—पु० कीचड़ । ईंट जोड़नेका गारा । 'सतगुरु महल बनाइया प्रेम गिलावा दीन्ह ।' साखी ३, (प० १३८)
गिलिमि—स्त्री० देखो 'गिलम' (सुन्द० १२९) ।
गिलोला—पु० गुलेलसे फेंकनेकी मिट्टीकी गोली ।
गिलौरी—स्त्री० पानका बीड़ा ।
गिल्यान—स्त्री० देखो 'गिलान' ।
गिल्ली—स्त्री० दोनों ओर नुकीला बीचमें मोटा लकड़ीका छोटा टुकड़ा, गुल्ली ।
गींजना—सक्रि० किसी कोमल वस्तुको हाथसे मलकर खराब कर देना, मसल डालना ।
गींव—स्त्री० गरदन ।
गीड—पु० गरदन (उदे० 'गुंदेरा'), (प० ४९) ।
गीड़, गीड़र—पु० आँखका मैल 'थूक रुलार भर्‌यो मुख दीसत आँखिमें गीडर नाकमें सेंढ़ो ।' सुन्द० ५०
गीत—पु० गाना । यश ।
गीता—स्त्री० किसी विशेषज्ञसे प्राप्त ज्ञानोपदेश । कथा, हाल, वार्ता 'राम चले सुनि शुद्रकी गीता ।' के०२७६
गीदड़, गीदर—पु० सियार ।—भबकी = मिथ्या क्रोध या ऊपरी साहस दिखाना ।
गीध—पु० गृद्ध (रामा० ४११) ।
गीधना—अक्रि० लहटना, परचना 'गीधे गीध अमिख डली जानत अली सुगंध ।' दीन० २१०
गीर—स्त्री० गिरा, वाणी ।
गीरवाण,-वान—पु० देवता 'भगे विमान गीरवान लै विचारि अन्त ही ।' रघु० ११७
गीला—वि० आर्द्र, भींगा हुआ, तर ।
गीव, गीवा—पु० गरदन 'खड़ग देखि कै नावहिं गीवा ।' प० ११२
गुंग, गुंगा—वि० गूँगा ।
गुँगुआना—अक्रि० गूँगेकी तरह बोलना । धुआँ देना ।
गुंची—स्त्री० घुँघची, गुंजा ।
गुंज—स्त्री० एक आभूषण, मधुर ध्वनि, गुंजार । घुँघची ।
गुंजना—अक्रि० भनभनाना, गुनगुनाना, गुंजार करना ।
गुँजरना—अक्रि० भनभनाना (रवि० ५८), गुंजार, करना । गरजना ।
गुंजा—पु० घुंघची ।
गुंजाइश—स्त्री० सुबीता । जगह ।
गुंजान—वि० सघन, गाढ़ा, अविरल ।
गुंजायमान—वि० गूँजता हुआ, गुंजार करता हुआ ।
गुंजार—पु० भनभनाहट, भौंरेका गूँजना ।
गुंठा—पु० एक तरहका घोड़ा ।
गुंड—वि० पिसा हुआ । पु० मलार रागका एक प्रकार ।
गुंडा—वि० बदमाश, कुमार्गी, छैला ।
गुंधना—अक्रि० साना जाना । सक्रि० गुहना, गूँथना ।
गुंफ—पु० गुच्छा । गलमुच्छा । उलझन ।
गुंफन—पु० गूँथना, संग्रन्थन, उलझाव ।
गुंबज, गुंबद—पु० गोल छत ।
गुंभी—स्त्री० कोंपल, गाभ, अंकुर ।
गुआ—पु० चिकनी सुपारी । सुपारी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुआर—पु० ग्वाला।

गुआरि, गुआलिन—स्त्री० ग्वालिन 'हरिको टेरत फिरत गुआरि।' सूबे० ७३

गुइयाँ—पु०, स्त्री० सहचर या सहचरी, साथी।

गुग्गुर, गुग्गुल—पु० एक पेड़। एक सुगन्धित द्रव्य।

गुच्छ, गुच्छा—पु० झब्बा, फुँदना।

गुज़र—पु० निर्वाह। प्रवेश, गति। पहुँच।

गुज़रना—अक्रि० बीतना, निबहना, किसी स्थानसे जाना या निकलना। **गुज़र जाना** = मर जाना।

गुज़ारा—पु० निर्वाह। घाट उतारनेका महसूल।

गुझरोट,-रौट, गुझौट—पु० शिकन, कपड़ेकी सिकुड़न। 'कर उठाय घूँघट करत उसरत पट गुझरौट।' बि० १७३। औरतोंकी नाभिके इर्दगिर्दका भाग।

गुझिया—स्त्री० एक पकवान। एक मिठाई।

गुटकना—सक्रि० निगल जाना। अक्रि० गुटरगूँ करना।

गुटका—स्त्री० गोली, बटी। छोटी पुस्तक। लट्टू।

गुटरगूँ—स्त्री० कबूतरोंका बोलना।

गुट्ट—पु० समूह, यूथ।

गुठली—स्त्री० फलका बड़ा बीज।

गुड़ंबा—पु० उबाल कर शीरेमें डाला हुआ कच्चा आम।

गुड़—पु० ऊखका जमाया हुआ रस।

गुड़गुड़ाना—अक्रि० गुड़गुड़ करना। सक्रि० हुक्का पीना।

गुड़धनिया,-धानी—स्त्री० गुड़में पागकर बनाये गये गेहूँके लड्डू।

गुड़हर,-हल—पु० अड़हुल या जपाका पेड़ या फूल 'बिन मधु मधुकरके हिये गड़े न गुड़हर फूल।' बि० ११९

गुड़िया—स्त्री० कपड़ेकी पुतली। स्त्री० छोटे छोटे पाँव 'छोटी छोटी गुड़ियाँ अँगुरियाँ छोटी छबीली...' सू०५५

गुड़ी—स्त्री० गुड्डी, पतंग (वि० १५३)। गाँठ, द्वेष, मन-मोटाव। सिकुड़न।

गुड्डा—पु० बड़ी पतंग। कपड़ेका पुतला।

गुड्डी—स्त्री० पतंग।

गुढ़ना—अक्रि० छिपना।

गुण—पु० देखो 'गुन'।

गुणकारक,-कारी—वि० लाभदायक।

गुणवंत,-वान्—वि० गुणी, गुणोंवाला।

गुत्थी—स्त्री० उलझन, गाँठ। [परस्पर लिपट जाना।

गुथना—सक्रि० एक साथ पिरोया जाना, नाथा जाना।

गुदकार,-कारा—वि० गूदेदार, गुदगुदा, फूला हुआ 'चारु कपोल गोल गुदकारे अरु सुंदरसी ठोढ़ी।' सुजा० २२९

गुदगुदा—वि० गुलगुला, कोमल। गुदारा।

गुदगुदाना—सक्रि० छेड़ने या हँसानेके लिए काँख इ० को सुहराना। उत्तेजित करना, उमगाना।

गुदड़ी—स्त्री० पुराने कपड़ोंको सीकर बनाया हुआ बिछावन, कथरी, कंथा।

गुदना—अक्रि० गड़ना, चुभना। पु० गोदना।

गुदर—पु० राजदरबारमें हाजिरी 'अबहीं करहु गुदर मिस साजू।' प० १११

गुदरना—अक्रि० निवेदन करना, सूचित करना'...सो कथा सुनि, प्रभु सों गुदरि निबर्‌यो हौं।" विन० ६०३। अलग रहना, त्याग करना।

गुदराना—सक्रि० सूचित करना, निवेदन करना 'निकट विभीषण आय तुलाने। कपिपति सों तब ही गुदराने।' राम० ३८२। सामने रखना, भेंट देना।

गुदरी—स्त्री० देखो 'गुदड़ी'।

गुदरैन—स्त्री० परीक्षाके लिए पाठ सुनाना। परीक्षा।

गुदाना—सक्रि० चुभवाना। सूईसे चिह्नित कराना।

गुदारना—सक्रि० सुनाना, पढ़ना 'मुलना तहाँ निबाज गुदारैं।' छत्र० ८२

गुदारा—पु० नदी पार करना, उतारा 'भा भिनसार गुदारा लागा।' रामा० २९६। वि० गूदेदार।

गुद्दी—स्त्री० गूदा, मींगी।

गुन—पु० विशेषता, धर्म। सद्वृत्ति, शील। प्रवीणता। तीनकी संख्या। धनुषकी प्रत्यंचा। प्रभाव, फल। डोरा, रस्सी 'कबीर सबद सरीरमें बिन गुन बाजै ताँत।' साखी १०२

गुनकारी—वि० लाभदायक। [नारी।

गुनगौरि—स्त्री० गौरी जैसी सौभाग्यवती स्त्री। पतिव्रता

गुनना—अक्रि० विचार करना, सोचना 'राजकुमारि सिखावन सुनहू। आन भाँति नहिं जिय कछु गुनहू।' रामा० २२८

गुनहगार—वि० दोषी, पापी।

गुनाह—पु० अपराध, पाप।

गुनियाला—वि० गुणवाला 'प्रीति अढ़ी है तुझसे बहु गुनियाला कंत।' साखी ३१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुनी, गुनीला—वि० गुणवान् 'परम गुनीलो नन्दसुत मैं देख्यो टकटोय।' चाचाहित०। पु० चतुर मनुष्य, विशेषज्ञ 'जोरिय कोउ बड़ गुनी बोलाई।' रामा० १५०। झाड़ फूँक करनेवाला (उदे० 'गारुड़ी')।

गुपचुप—स्त्री० एक मिठाई। क्रिवि० चुपचाप।

गुपुत, गुप्त—वि० छिपा हुआ, गूढ़। रक्षित।

गुफ्तगू—स्त्री० बातचीत।

गुबार—पु० धूल। दिलमें दबाया हुआ क्रोध या द्वेष।

गुबिंद—पु० गोविंद।

गुम—वि० गुप्त। खोया हुआ।

गुमकना—अक्रि० भीतर ही भीतर गूँजना, बाहर प्रकट न होना 'धमकि मारयो घाउ गुमकि हृदय रह्यो झमकि गहि केश लै चले ऐसे।' सूबे० २९३

गुमर—पु० घमण्ड। गुबार। कानाफूसी।

गुमान—पु० घमण्ड। उपस्थिति। लोकनिन्दा। अनुमान।

गुरंब—पु० देखो 'गुड़ंबा'। 'औ अमृत गुरंब भरे मेटा।' [प० २७३

गुर—पु० गुड़। मूलमंत्र। गुरु।

गुरज, गुरुज—पु० गुर्ज, गदा 'तीसर खड़ग कूँड़पर लावा। काँधे गुरुज हुत घाव न आवा।' प० ३२२

गुरदा—पु० कलेजेके पासका एक अंग। हिम्मत।

गुरम्मर—पु० मीठे आमका पेड़।

गुरवी—वि० अभिमानी, घमण्डी।

गुरसी—स्त्री० अँगीठी, आग रखनेका बरतन (सू० २४२)।

गुराई—स्त्री० गोरापन, गोराई 'कुन्दनको रंग फीको लगै झलकै अति अंगन चारु गुराई।' रस० २

गुराब—पु० वह गाड़ी जिसपर तोप लादी जाती है (रघु० ३)

गुरिद—पु० गदा।

गुरिया—स्त्री० मनका, दाना। कटा हुआ छोटा टुकड़ा।

गुरीरा—पु० मीठा, उत्तम।

गुरु—पु० आचार्य, अध्यापक, पुरोहित। बृहस्पति। दीर्घ वर्ण। वि० बड़ा, वज़नी।

गुरुताई—स्त्री० गुरुता भारीपन, बड़प्पन। गुरुआई।

गुरुबिनी—वि० स्त्री० गर्भवती।

गुरू—पु० अध्यापक, आचार्य, पुरोहित।

गुरेरना—सक्रि० नेत्र फाड़ फाड़ कर देखना, घूरना।

गुरेरा—पु० देखो 'गुलेला'। 'आन्यो मोरि मतंग मनु मारि गुरेरन मैन।' वि० ४५। देखादेखी 'अंत कंत सौं भएउ गुरेरा।' प० १८७

गुर्ज—पु० गदाकी तरहका शस्त्र (छत्र० ६६)। **गुर्जबरदार** = गदाधारी सैनिक 'कैयक हजार जहाँ गुर्जबरदार ठाढ़े करिके हुस्यार नीति पकरि समाजकी।' भू० १५६

गुर्विणी—वि० स्त्री० गर्भवती।

गुर्वी—वि० स्त्री० गर्भवती, विशाल 'डिगति टर्वि अति गुर्वि सर्व पव्वै समुद्र सर।' कविता० १५९। स्त्री० श्रेष्ठ स्त्री।

गुल—पु० फूल। गुलाबका फूल। गालका गड्ढा। बत्ती या तमाखूका जला हुआ अंश। हलवाईका भट्ठा। कनपटी।—**करना** = बुझाना।—**खिलना** = उपद्रव होना, विचित्र बात होना।

गुल—पु० शोर, चिल्लाहट।

गुलगुला—वि० मुलायम (रवि० ४९, ६३)। पु० एक पकवान।

गुलचना—सक्रि० गुलचेका आघात करना।

गुलचा—पु० गालपर हाथकी अँगुलियोंका हलका आघात।

गुलचाना,-चियाना—सक्रि० गुलचा मारना।

गुल दुपहरिया—पु० एक पौधा या उसका फूल जो गहरे लाल रंगका होता है।

गुललाला—पु० एक पौधा या उसका लाल फूल।

गुलशन—पु० बाग़, उद्यान।

गुलाब—पु० एक कँटीला पौधा या उसका फूल।

गुलाब जामुन—पु० एक मिठाई। एक वृक्ष।

गुलाबा—पु० एक तरहका बरतन।

गुलाबी—वि० गुलाबके रंगका। गुलाबजलसे सुवासित।

गुलाम—पु० दास, सेवक। ताशका एक पत्ता।

गुलामी—स्त्री० दासता, सेवा, पराधीनता।

गुलाल—पु० एक लाल बुकनी।

गुलाला—पु० देखो 'गुललाला'।

गुलियाना—सक्रि० दवा इत्यादि बाँसके चोंगेमें भर कर पिलाना (उदे० 'खर')।

गुलूबंद—पु० ठंडसे बचनेके लिए गलेमें या सिरपर बाँधनेकी ऊनी या सूती पट्टी।

गुलेल—स्त्री० वह कमान जिससे पक्षियों आदिको मारनेके लिए मिट्टीकी गोलियाँ चलायी जाती हैं।

गुलेला—पु० मिट्टीकी गोलियाँ जो गुलेलसे चलायी जाती हैं। गुलेल।

गुल्ला—पु० देखो 'गुलेला'। गुलेल। शोर, ऊँची आवाज़। ऊखका टुकड़ा। एक पेड़।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुल्लाला—पु० एक लाल फूल 'फूले नैन ज्यों गुल्लाल।' सुजा० ११४

गुल्ली—स्त्री० लड़कोंके खेलनेका लकड़ीका छोटा टुकड़ा, 'गिल्ली'। गुठली। लम्बा सा छोटा टुकड़ा।

गुवार, गुवाल—पु० ग्वाल।

गुवालि—स्त्री० ग्वालिन, गोपी।

गुसलखाना, गुसुलखाना—पु० स्नानागार (भू० ३१)

गुसा—पु० क्रोध। गुस्सा।

गुसाईं—पु० जितेन्द्रिय। गौओंका स्वामी। विरक्त साधु। एक सम्प्रदाय। ईश्वर (छत्र० ८२), प्रभु, स्वामी।

गुसैयाँ—पु० स्वामी, ईश्वर 'ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोहबत हो यादमें गुसैयाँके हमेस विरमा रहै।' ग्वाल

गुस्ताख—वि० बेअदब, अशिष्ट, धृष्ट।

गुस्सैल—वि० क्रोधी, चिड़चिड़ा।

गुहना—सक्रि० एकमें पिरोना, गूँथना, गाँथना, 'रहौ, गुही बेनी, लखे गुहिबेके त्योनार।' वि० १९८

गुहराना—सक्रि० चिल्लाकर बुलाना, पुकारना 'हम अब कहाँ जाइ गुहरावैं मसत तुम्हारे गाउँ।' सूबे० १३४

गुहार, गुहारि—स्त्री० पुकार, दोहाई 'दीन गुहारि सुनैं जबनगि धरि गई बलय सुनि हरव जरौं।' सू० १०५

गूँगा—वि० जो बोल न सके, मूक। पु० मूक मनुष्य।

गूँजना—अक्रि० गुंजार करना, भनभनाना। प्रतिध्वनित होना, आवाज़ फैलना। गरजना 'देखत साहसिंहासन गूँजा।' प० २६१

गूँथना, गूँदना, गूँधना—सक्रि० सानना, मसलना। पिरोना, गुहना। बालोंको बटना (सू० १०३), 'जेहि सिर केस कुसुम भरि गूँदे, तेहि कैसे भसम चढ़ैये।' सू० २३६, (मति० १९१), 'बेनी गूँथत एककी नन्दलाल चित लोल।' रस० १०

गू—पु० मल, विष्ठा, बीट।—करना = गंदा करना।

गूजरी—स्त्री० गूजर जातीय स्त्री०, ग्वालिन। पाँवका एक गहना (उदे० 'ऊजरा')।

गूझा—वि० गुप्त 'मंजन सो जु मनोमलभंजन सज्जन सो जु कहै गति गूझै।' सुन्द० ७९। पु० बड़ी पिराक।

गूढ़—वि० गुप्त, जटिल, कठिन, गंभीर।

गूढ़गेह—पु० यज्ञगृह 'प्रौढ़ रुचिको समूद गूढ़गेहमें गयो।' राम० ४८१

गूथना—सक्रि० पिरोना, गुहना, टाँकना, सीना।

गूद—पु० गूदा। स्त्री० गड्ढा, चिह्न।

गूदड़, गूदर—पु० जीर्ण वस्त्र, चिथड़ा, 'पाटंबर अंबर तजि गूदर पहिराऊँ।' सू० ११

गूदा—पु० किसी फल, बीज आदिका सार भाग। मेवा, खोपड़ीका सार भाग।

गूनी—स्त्री० देखो 'गोनी' (कबीर १७४)।

गूमड़ा—पु० चोट लगनेसे फूला हुआ सिरका भाग।

गूलर—पु० एक पेड़ या उसका फल।

गूह—पु० देखो 'गू'।

गृद्ध—पु० गीध पक्षी।

गृह—पु० घर, रहनेकी जगह। वंश।

गृहप—पु० गृहपति। द्वाररक्षक, कुत्ता (विन० ३२२)।

गृहस्थ—पु० स्त्री-बच्चोंवाला आदमी, जिसके यहाँ खेती होती हो। खुशहाल व्यक्ति।

गृही—पु० गृहस्थ। गृहपाल।

गेंडली—स्त्री० घेरा, चक्कर, फँटा।

गेंडु, गेंडुक—पु० गेंद।

गेंडुआ, गेंडुवा—पु० छोटा तकिया, उसीसा 'चहुँदिसि गेंडुवा औ गलसूई।' प० १३९। बड़ा गेंद।

गेंडुरी, गेंडुली—स्त्री० घड़ा रखनेके लिए रस्सी इ० का बना मेंडरा, हुंडुरी, कुंडली 'गेंडुरि दई फटकारिकै हरि करत है लँगरी।' सूबे० १११

गेंद—पु० लड़कोंके खेलनेका कपड़े इ० का गोला, कंदुक।

गेंदवा—पु० उसीसा, तकिया।

गेंदा—पु० पीले फूलवाला एक पौधा। एक आभूषण।

गेंदुक—पु० कंदुक, गेंद।

गेंदुवा—पु० उसीसा, गेंदुआ, तकिया।

गेंदौरा—पु० एक तरहकी मिठाई। चीनीकी मोटी रोटी।

गेड़ना—सक्रि० रेखासे घेरना। अक्रि० देखो 'गेरना'।

गेरना—सक्रि० गिराना, उँडेलना। आरोप करना, डालना 'गेरि बाँह सुठि ग्रीवपर चूड़ी हरी रसाल।' नागरी०। अक्रि० चारो तरफ फिरना, परिक्रमा करना।

गेरवाँ, गेराँव—पु० देखो 'गरैयाँ।'

गेरुआ—वि० गेरूके रंगका। गेरूमें रँगा हुआ, जोगिया। पु० फसलका एक कीड़ा।

गेरुई—स्त्री० चैतकी फसलका एक रोग 'नीचे ओद ऊपर बदराई। कहैं घाघ अब गेरुई जाई।' घाघ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गेरू—स्त्री० एक तरहकी लाल खनिज मिट्टी।
गेह—पु० गृह, निवासस्थान, घर 'नारद कर उपदेस सुनि कहउ बसेउ को गेह।' रा०१० ४८
गेहनी—स्त्री० गृहिणी, स्त्री (सू० १९६)।
गेही—पु० गृहस्थ।
गेहुँआ—वि० गेहूँके रंगका।
गैंडा—पु० एक विशालकाय पशु।
गैंती—स्त्री० मिट्टी खोदनेका औज़ार, कुदारी।
गैन—पु० गैल, रास्ता। गमन 'सुख पावो तो विरमियो, नहिं करि जैयो गैन।' चाचाहित०। गगन (वि० २४४)।†
गैना—पु० नाटा बैल। [† गयन्द (ब्रज० ५३५)
गैनी—वि० स्त्री० गामिनी (ब्रज० ९७)।
गैबर—पु० एक चिड़िया। श्रेष्ठ हाथी (उदे० 'गरट')।
गैबी—वि० गुप्त। गूढ़, अज्ञात, 'हिंदू कहूँ तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहिं। पाँच तत्वका पूतला, गैबी खेलै माहिं।' साखी ८२
गैयर—पु० गैबर (गयवर), श्रेष्ठ हाथी।
गैया—स्त्री० गाय।
गैर—वि० अन्य। अपने परिवार या दलसे बाहरका।
गैर—स्त्री० अन्यायपूर्ण बर्त्ताव, अन्धेर। गैल (उदे० 'बददार')। निन्दा, अपयश।
गैरमिसिल—क्रिवि० बेतरतीबीसे, अनुचित जगहमें (उदे० 'गराज')।
गैरिक—पु० गेरू (ललित० ४४)। सुवर्ण।
गैल—स्त्री० मार्ग, रास्ता (सूबे० ११६), गली। गैल बताना = दग़ाबाजी करना 'नारायन महबूब साँवरे घायल करि फिर गैल बतावै।' नारायण स्वामी
गोंइँठा—पु० कंडा, गोहरा, उपला।
गोंइँड़, गोंइँड़ा—पु० गाँवकी तटवर्ती भूमि।
गोंठना—सक्रि० कोर मोड़ देना, गुठली करना। घेरना।
गोंड़ा—पु० बत्ती। आँगन, बाड़ा। परछन। गाँवके समीपकी भूमि 'निकसि ब्रजके गईं गोंड़े, हरष भईं सुकुमारि।' सूबे० १३१ [वृक्ष।
गोंद—पु० वृक्षोंके तनोंसे प्राप्त लसदार वस्तु। स्त्री० एक
गोंदी—स्त्री० मौलसिरीकी तरहका वृक्ष विशेष, इंगुदी।
गो—स्त्री० गाय। इन्द्रिय। किरण। वाणी। दृष्टि। नेत्र। पृथ्वी। दिशा। जीभ। माता। वृष राशि। सरस्वती। पु० सूर्य, बैल, इ०। अ० यद्यपि।
गोइँड़—देखो 'गोंइँड़'।
गोइँठा—देखो 'गोंइँठा।
गोइंदा—पु० गुप्तचर, जासूस, भेदिया।
गोइयाँ—पु० स्त्री० देखो 'गुइयाँ' (गीता० १९७)।
गोई—स्त्री० सखी, सहेली 'सुनि निसचै नैहरकै गोई। गरे लागि पदमावति रोई।' प० २९६
गोऊ—वि० छिपानेवाला, हरण करनेवाला।
गोकर—पु० सूर्य।
गोखग—पु० थलचारी जीव, पशु।
गोखा—पु० दीवारमें का छोटा छेद, झरोखा।
गोघातक, गोघाती—पु० गाय मारनेवाला, कसाई।
गोचर—वि० इन्द्रियग्राह्य। पु० चरागाह। प्रान्त।
गोजर—पु० कनखजूरा ('पटार' बुंदेल०)। बूढ़ा बैल।
गोझा—पु० गुझिया नामक पकवान, एक कँटीली घास। जेब। लकड़ीकी कील।
गोटा—पु० एक तरहका सुनहला या रुपहला फीता। गोला 'औ ज्यौं छुटहिं वज्र कर गोटा।' प० १०२। †
गोठ—स्त्री० गोशाला। देखो 'गायगोठ'। [† शुष्क मल।
गोठा—पु० सलाह 'सावधान करि लेहिं अपनपौ तब हमसों करि गोठो।' भ्र० १११
गोड़—पु० पाँव, चरण (सूबे० ४९)।
गोड़ना—सक्रि० मिट्टी खोदकर उलट पुलट देना। कोड़ना 'नाम जाको कल्पतरु देत फल चारि ताहि तुलसी बिहाइ कै बबूर रेंड़ गोड़िये।' कविता० २०९
गोड़ा—पु० पलंग आदिका पाया। घोड़िया। थाला।
गोड़िया—स्त्री० देखो 'गुड़िया'।
गोड़ी—स्त्री० प्राप्ति, लाभ। प्राप्तिका आयोजन। पाँव।
गोत—पु० वंश, कुल 'रहिमन अपने गोतको सबै चहत उत्साह।' रहीम २२। समूह '...ताहि कहत ललितोपमा सकल कविनके गोत।' भू० २१
गोता—पु० डूबनेकी क्रिया, डुबकी।
गोताखोर,-मार—पु० डुबकी लगानेवाला।
गोतिया, गोती—वि० अपने गोत्रका। पु० भाई-बन्धु।
गोत्र—पु० कुल। संतति। नाम। बंधु। क्षेत्र, इ०।
गोद—स्त्री० उत्संग, उछंग, कोरा। अञ्चल।
गोदना—सक्रि० नुकीली चीज़ चुभाना, गोड़ना। चुभनेवाली बात कहना। किसी कामके लिए बार बार उकसाना। पु० तिलकी तरहका एक कृत्रिम चिह्न।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोदाम—पु० माल रखनेका विस्तृत स्थान। वटन (बुंदेल०)।

गोधन—पु० गौ रूपी सम्पत्ति, गायोंका समूह 'जे गोधनके सँग धाये।' सू० ८०। गोवर्धन पहाड़ 'गिरि कीजै गोधन मयूर नव कुंजनको, पसु कीजै महाराज नन्दके बगरको।' श्री हठी। एक पक्षी।

गोधूलि—स्त्री० संध्या वेला।

गोन—पु० देखो 'गोनी'। सोलह मानीकी तौल।

गोना—सक्रि० छिपाना, गुप्त रखना 'रहिमन निज मनकी व्यथा मनही राखो गोय।' रहीम १८, '... याही डर गिरिजा गजाननको गोइ रही गिरि तें गरे तें निज गोद तें उतारै ना।' पद्माकर

गोनी—स्त्री० टाट इ० की बड़ी थैली।

गोपदी—वि० गायके खुरके सदृश छोटा।

गोपना—सक्रि० छिपाना 'है नहिं पास कछू कहिके तेहि गोपि घनी विधि काँखमें राखे।' सुदामा० (कर्की)

गोपा—स्त्री० ग्वालिन। श्यामा लता। बुद्ध-पत्नी।

गोपिका, गोपी—स्त्री० गोपकी स्त्री, ग्वालिन।

गोपीत—पु०, (स्त्री०) खंजन पक्षीका एक भेद 'अछरी छपीं, छपीं गोपीता।' प० ४५

गोपुर—पु० नगरका द्वार, दुर्गका द्वार, फाटक 'गोपुरलों पहुँचायके फिरे सकल दरबार।' सुदामा० १२। गोलोक, स्वर्ग।

गोफा—स्त्री० तहखाना, गुफा 'गोफन माँही पौढ़ते परिमल अंग लगाय।' साखी ६८। पु० गाभ।

गोबर—पु० गौकी विष्ठा।

गोबरी—स्त्री० गोहरी, कंडा। गोबरसे लीपना।

गोभ—पु० पौधोंका एक रोग। स्त्री० लहर 'रसिकन हिये बढ़ावनी नवल प्रेमकी गोभ।' चाचाहित०

गोभा—स्त्री० लहर 'जाहि देखत उठति सखि आनन्दकी गोभा।' गदाधरभट

गोभी—स्त्री० एक तरकारी। पौधोंका एक रोग।

गोभ—स्त्री० घोड़ोंकी एक भँवरी। पु० स्थान 'ऐडायल गजगन गैंडा गररात गनि गेहनमें गोहन गरूर गहे गोम हैं।' भू० १४२

गोमय—पु० गोबर। कंडा (मुद्रा०)।

गोमर—पु० गाय मारनेवाला, कसाई 'कामधेनु धरनी कलि-गोमर, बिबस बिकल जामति न बाई है।'

गोमाय, गोमायु—पु० गीदड़, सियार। [बिभ० ३३९

गोमुख—पु० गायका मुँह। गोमुखकी तरहकी थैली, गोमुखी। नरसिंहा नामक बाजा। एक तरहका शंख।

गोमुख नाहर = देखनेमें सीधा, वास्तवमें क्रूर।

गोमुखी—स्त्री० गोमुखकी तरहकी थैली।

गोय—पु० गेंद (प० ३१७, साखी १०९)।

गोर—वि० देखो 'गोरा'। स्त्री० कब्र 'जाका बासा गोरमें सो क्यों सोवै सुक्ख।' साखी १७४

गोरखधंधा—पु० एक तरहका कड़ियों इ० का खिलौना। उलझन। उलझनका काम।

गोरटा—वि० गोरा, गौर वर्णका। **गोरटी** = स्त्री० गोरे रंगकी स्त्री '...छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीरकी।' बेनी

गोरस—पु० दूध, दही। इन्द्रिय-सुख (वि० ५६)

गोरसी—वि० देखो 'गुरसी'।

गोरा—वि० श्वेत और उज्वल वर्णवाला।

गोराई—स्त्री० गोरापन, सुन्दरता।

गोरी—स्त्री० गौर वर्णवाली स्त्री। सुन्दर रूपवाली स्त्री।

गोरू—पु० चौपाया, सींगवाला पशु।

गोल—वि० वृत्ताकार, अंडाकार। पु० वृत्त। गोला। 'गोलनकी विनती सुनि ईश।' के० १५९। झुण्ड, समूह, दल 'कढ़ि सिरदार गोल तें गाजे।' छत्र० १३३। गोलमाल, गड़बड़, हलचल। **गोल पारना** = हलचल मचाना 'ल्यायो हरि कुवलय धन्य तुम घर घर पार्‌यो गोल।' भ्र० ५०

गोलक—पु० गोल वस्तु, आँखका गटा, आँखकी पुतली। गुंबद। गोलोक। आमदनीकी पेटी या थैली। रुक्म।

गोला—पु० लोहे इ० का गोल पिण्ड 'गोला चाके आगे जाय। सोई ताहि चलै अपनाय।' के० १५६। बारूद, गंज।

गोवना—सक्रि० देखो 'गोना'। छिपाना।

गोशा, गोसा—पु० कोना। किनारा (मति० १८२)। दिशा, ओर। एकान्त स्थान। कमानका सिरा।

गोष्ठी—स्त्री० मण्डली, सभा। बातचीत।

गोसमावल—पु० 'गोशमायल,' पगड़ीमें लटकनेवाला ‡

गोसाईं—पु० देखो 'गुसाईं'। [‡ अंतिमोंका गुच्छा।

गोह—स्त्री० मोटे चमड़ेवाला एक बड़ा जानवर।

गोहन—पु० साथ 'सजि दीनदयाल बिसाल प्रभा तजि बाल सखा सब गोहनके।' दीन० १५। साथमें रहनेवाला, 'एक जो भँवर भयो बिराही। अब दूसर है गोहन जाही।' प० ३३१, 'भए बरात गोहनमें सब राजा।' प० १६१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोहराना—सक्रि० आवाज़ देना, पुकारना 'दहिउ लेहु' ग्वालिनि गोहराई ।' प० ६०

गोहार, गोहारि, गोहारी—स्त्री० रक्षाके लिए चिल्लाना, पुकार । शोरगुल । (उदे० 'अंधबाई')

गोही—स्त्री० छिपाव, गुप्त बात 'कहा दुरावति हौ गो आगे सब जानत तुव गोही ।' सूबे० १४०

गोहेरा—पु० एक विषैला जन्तु ।

गौं—स्त्री० घात, सुयोग, सुभीता (गीता० ३६८), प्रयोजन, उद्देश 'दोऊ अधिकाई भरे एकै गौं गहराय ।' बि० २३१ । चाल '...चलत मस्त गजगौं हैं ।' गीता० ३०५, (भ्र० ३४)

गौ—स्त्री० गाय ।

गौख—स्त्री० दरवाज़े परका बरामदा । देखो 'गोखा' ।

गौखा—पु० देखो 'गोखा' । गोचर्म ।

गौण—वि० कम महत्वका, अप्रधान, सहायक ।

गौन—पु० गमन 'भरतहिं बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गौन ।' रामा० २७५ । वि० चंचल (सुन्द० ११०) ।

गौनहाई—वि० स्त्री० जो हालमें ही गौने आयी हो ।

गौनहारिन—स्त्री० गाने-बजानेका पेशा करनेवाली स्त्री ।

गौना—पु० द्विरागमन ।

गौमुखी—स्त्री० गोमुखकी तरहकी थैली ।

गौर—वि० गोरा, उज्वल । स्त्री० 'गौरा' (रामा० १७४) ।

गौर—पु० सोच विचार, ध्यान ।

गौरा—स्त्री० गोरे रंगकी स्त्री, पार्वतीजी । गोरोचन 'पोते नगर मेद औ गौरा ।' प० १५

गौरी—स्त्री० देखो 'गौरा' । चमेली 'कोइ मौलसिरि पुहुप बकौरी । कोई रूप-मंजरी गौरी ।' प० ८८ । एक रागिनी 'दमकत दशन कनक कुंडल मुख मुरली गावत गौरी ।' सूबे० ११७

ग्यान—पु० ज्ञान ।

ग्याति—स्त्री० जाति (विन० ३६९) ।

ग्यारस—स्त्री० एकादशी तिथि (के० २८५) ।

ग्रंथ—पु० पुस्तक ।

ग्रंथना—सक्रि० गुहना 'जा सिर फूल, फुलेल मेलि कै, हरि कर ग्रन्थैं मोरी ।' भ्र० ५९

ग्रंथि—स्त्री० गाँठ, बधन ।

ग्रंस—पु० छलछिद्र 'वे अक्रूर ए ऊधौ सजनी जानत नीके ग्रंस ।' सूबे० ३६०

ग्रसना—सक्रि० ज़ोरसे पकड़ना 'वक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू ।' रामा० १५२

ग्रसित, ग्रस्त—वि० खाया हुआ, पकड़ा हुआ । पीड़ित ।

ग्रह—पु० बुध, मंगल आदि तारे । नौ की संख्या । गृह (विन० ३८९) । ग्रहण । कृपा ।

ग्रहण—पु० स्वीकार । चन्द्र या सूर्यपर पृथ्वीकी छायाका [पड़ना ।

ग्रहीता—वि० पु० ग्रहण करनेवाला ।

ग्राम—पु० गाँव । समूह ।

ग्रामसिंह—पु० कुत्ता 'ग्रामसिंह श्रवननि फटकाये ।' सुजा० ४९

ग्राम्य—वि० ग्रामीण, गँवारू, मूर्ख । छल-छिद्रहीन ।

ग्राव—पु० पत्थर । ओला । पहाड़ । 'अमृतको तजि ग्राव हनत को तुमैं निवारै ।' दीन० २०१

ग्रासना—सक्रि० पकड़ना, निगलना । सताना ।

ग्राह—पु० मगर । ग्राहक ।

ग्राहक—पु० पकड़नेवाला । खरीदनेवाला, चाहनेवाला ।

ग्राह्य—वि० ग्रहण करने योग्य, मान्य ।

ग्रीखम, ग्रीषम—स्त्री० ग्रीष्म, गर्मीका मौसिम ।

ग्रीवा—स्त्री० गरदन ।

ग्रेह—पु० देखो 'गेह' (कबीर १९६) ।

ग्रेही—वि० संसारी 'जाका गुरु ग्रेही अहै, चेला ग्रेही होय ।' साखी १५

ग्लानि—स्त्री० चित्तकी शिथिलता या खिन्नता ।

ग्वार—पु० ग्वाल 'मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं मिलि गोकुल गाँवके ग्वारन ।' रसखानि

ग्वारिन, ग्वारी—स्त्री० ग्वालिन ।

ग्वाल, ग्वाला—पु० अहीर ।

ग्वालिन—स्त्री० ग्वाला जातिकी स्त्री । स्त्री० घिनौरी नामक बरसाती कीड़ा । एक तरकारी ।

ग्वैंठना—सक्रि० ऐंठना, टेढ़ा करना, मरोड़ना ।

ग्वैंड़ा—पु० गाँवका सामीप्य, गाँवका तट (बि० ६४) ।

ग्वैंड़े—क्रिवि० पास, समीप ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घ

घँघरा—पु० लहँगा। स्त्रियोंका एक घेरदार पहनावा।

घँघोरना, घँघोलना—सक्रि० हिलाकर घोलना।

घंट—पु० घंटा। प्रेतात्माको जल देनेके लिए मिट्टीका पात्र। अँगूठा, ठेंगा।

घंटा—पु० अढ़ाई घड़ीका समय। एक लंगरदार बाजा जो मंदिरोंमें लटकता रहता है। घंटे घंटेपर बजाया जानेवाला घड़ियाल। ठेंगा।

घंटिका—स्त्री० घुँघरू। रहँटके छोटे छोटे घड़े।

घंटी—स्त्री० छोटा घंटा या उसके बजनेका शब्द। घुंघरू। छोटी लोटिया। (गलेका) कौआ।

घई—स्त्री० पानीका भँवर, प्रवाह 'थके वचन पैरत सनेह सरि पर्‌यो मानो घोर घई है।' गीता० ३६३। वि० बहुत गहरा, अथाह।

घघरा—पु० लहँगा। [छोटा।

घट—पु० घड़ा। शरीर। हृदय। वि० घटा हुआ, थोड़ा,

घटक—पु० मध्यस्थ, विवाह ठीक करानेवाला। घड़ा।

घटकार—पु० कुम्हार।

घटती—स्त्री० कमी, न्यूनता, अवनति। मानहानि, अप्रतिष्ठ 'घटती होइ जाहिते अपनी ताको कीजे त्याग।' सूबे० १६६

घटना—अक्रि० होना। लगना, आरोप होना 'सपने नृप कहँ घटै बिप्रबध, बिकल फिरै अघ लागे।' विन० २९६। काम आना 'काय वचन मन सपनेहु घटत न काज पराये।' विन० ४६५। कम होना, क्षीण होना। स्त्री० वारदात, बात।

घटबढ़—स्त्री० कमी-बेशी। वि० कम ज़्यादा।

घटयोनि—पु० अगस्त्य मुनि।

घटवाई—वि० घाटवाला। रोकनेवाला 'आवन जान न पावत कोऊ तुम मगमें घटवाई।' सूबे० १५१

घटवार, घटवालिया—पु० घाटिया, केवट।

घटा—स्त्री० मेघमाला। झुण्ड।

घटाई—स्त्री० मानहानि, अप्रतिष्ठा।

घटाटोप—पु० बादलोंका जमाव। ओहार।

घटाना, घटावना—सक्रि० कम करना। अप्रतिष्ठा करना।

घटिका—स्त्री० घड़ी। गगरी।

घटिताई—स्त्री० कमी, त्रुटि 'इनहूँमें घटिताई कीन्ही। रसना श्रवण नैनके होते की रसनाही को नहिं (?) दीन्हीं।' सूबे० १८५

घटिया—वि० कम दामका, निम्न श्रेणीका। क्षुद्र।

घटिहा—वि० नीच, दुष्ट, चालाक। अपना मौक़ा ढूँढ़नेवाला।

घटी—स्त्री० कमी, घाटा, हानि। घड़ी। छोटा घड़ा। प्रपंच 'लोक घटीते हठीको बचाउ कृपा करि श्री वृषभानु दुलारी।' हठी

घटूका—पु० भीमसेनका पुत्र घटोत्कच।

घट्टा—पु० घटी, घाटा, कमी। छिद्र या दरार, रगड़का चिह्न। घटा 'प्रलय कालके जनु घनघट्टा।' रामा० ५०३

घड़ा—पु० कलसा, जलपात्र।

घड़ियाल—पु० एक बड़ा जलजन्तु, मगर। घण्टा।

घड़ी—स्त्री० चौबीस मिनटका समय। समयसूचक यंत्र। समय।

घन—वि० घना, निबिड़। दृढ़, ठोस, बहुत अधिक। पु० बादल (घन समय = वर्षा ऋतु) 'घन सम मानहु घुमरि करि घन घनपटल गलगाजहीं।' भू० ६। समूह 'पियत मधुर मकरन्द करत झंकार भृंग घन।' भू० ९। बड़ा हथौड़ा 'सुनि सुनि टर लागे बन कैसी घमकैं'—भू० १७८। कपूर।

घनक—स्त्री० गड़गड़ाहट, गर्जन 'घनकी घनक घन घंटा घनकत आली।' दीन० ३९। चोट, प्रहार 'दरकत नहीं वियोगमें लगे घनक घनघोर।' मति० २२७

घनकना—अक्रि० गर्जन करना, आवाज़ करना। (उद्दे० 'घनक')

घनकारा—वि० गर्जन करनेवाला, बुलन्द आवाज़ करनेवाला 'द्वारे द्वारे बजत नगारे घनकारे घहरारे।' रघु० २९

घनघनाना—अक्रि०, सक्रि० घनघन शब्द करना।

घनघोर—वि० बहुत घना, भीषण। पु० घनघनाहट, [भीषण ध्वनि।

घनचक्कर—पु० मूर्ख।

घनतार—पु० झाँझ 'नंत बिनंत सुभर घनतारा।' प० २६०

घनबान—पु० एक तरहका बाण 'नले चंदबान, घनबान, औ कुहूकबान...' भू० १७५

घनबेल—वि० बेलोंसे युक्त, जिसमें बेल बूटे बने हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घनबेली—स्त्री० एक तरहका फूल 'बहुत फूल फूली घन-[बेली।' प० १५

घनसार—पु० कपूर।

घना—वि० बहुत अधिक (संख्या या परिमाण) 'मंगनको भुवपाल घने पै निहाल करै सिवराज रिझाए।' मू० ५५। दृढ़ '...काल चाल हेरि होति हिये घनी घिन।' विन० ५५, (उदे० 'गोपना')। सघन, घनिष्ट, गाढ़ा।

घनेरा—वि० बहुत, अधिक 'सुनि आगमन दसानन केरा। कपिदल खरभर भयेउ घनेरा।' रामा० ५१४, (रामा० ५११, ५१२), 'साधत साधु लोक परलोकहिं मुनि गुनि जतन घनेरे।' विन० ५१५

घपला—पु० गोलमाल, गड़बड़।

घपुआ, घप्पू—वि० भकुआ, मूर्ख, भोंदू।

घबड़ाना, घबराना—अक्रि० व्याकुल होना, जल्दी मचाना। सक्रि० हड़बड़ा देना। उचाट करना।

घमंका—पु० मुक्का, घूंसा।

घमंड—पु० गर्व, अभिमान। भरोसा, बल।

घमक—स्त्री०, **घमका**—पु० घूँसा, गदा इत्यादिके प्रहार-का शब्द। चोट (उदे० 'घन')।

घमकना—अक्रि० गरजना, गंभीर शब्द करना। सक्रि० घूँसा मारना।

घमर—पु० गंभीर शब्द, नगाड़े इ० की आवाज (सूदे० ६६)।

घमस—स्त्री०, **घमसा**—पु० ऊमस, तेज़ गर्मी। आधिक्य।

घमसान—पु० घोर युद्ध, संग्राम 'बोल्यो रजनीचरनसों करहु घोर घमसान।' रघु० २४५, मू० ४९

घमाका—पु० देखो 'घमका'।

घमासान—पु० देखो 'घमसान'। वि० घोर, भीषण।

घमोई—स्त्री० बाँसका रोग विशेष 'बेनुबंस सुत भयेउ घमोई।' रामा० ४५३

घर—पु० निवासस्थान। कुल, वंश। जन्मभूमि। कोठा, खाना। केन्द्र, भाण्डार। (कविता० २२६)। घरका = अपना, अपने कुटुम्बका, आपसका; पति। घर घरके होना = बेठिकाने होना, मारे मारे फिरना। घर घलना = घर बिगड़ना, कुलमें कलंक लगाना।

घरघराना—अक्रि० 'घर घर' आवाज़ करना।

घरघाल—वि० घर बिगाड़नेवाला, कुलमें कलंक लगानेवाला।

घरजावा—पु० गुलाम, दास 'तुलसी तिहारो घरजायउ है घरकी।' कवित्त० २१२

घरद्वार—पु० ठिकाना। गृहस्थी।

घरनाल—स्त्री० एक तरहकी तोप 'तिमि घरनाल और करनालैं सुतुरनाल जंजालैं।' रघु० ३

घरनी—स्त्री० गृहिणी, स्त्री (सू० ३४)।

घरफोरी—स्त्री० घरमें फूट करानेवाली (रामा० २०५)।

घरबसा—पु० प्रेमी, उपपति।

घरबसी—स्त्री० रखी हुई स्त्री। वि० घर बसानेवाली। घर उजाड़नेवाली (व्यंग्यमें)।

घरबार—पु० देखो 'घरद्वार', जिसके घर द्वार हो।

घरबारी—पु० गृहस्थ।

घरमकर—पु० सूर्य।

घरवात—पु० घरका सामान, गृहस्थी (उदे० 'खरिया')।

घरसा—पु० रगड़ा, पीछा।

घरहाई—वि० स्त्री० चुगुलखोर। कलंककी बात फैलाने-वाली 'ए घरहाई लोगाई सबै निसि घोस नेवाज हमें दहती हैं।' नेवाज। स्त्री० घरमें फूट करानेवाली या लांछन लगानेवाली स्त्री।

घराऊ—वि० घरू, आपसका।

घराती—पु० लड़कीवालेकी तरफके लोग।

घराना—पु० कुल, वंश।

घरिआर, घरियार—पु० घड़ियाल, घण्टा (सू० १९०) 'नीर चुरावत सम्पुटी मारु सहत घरियार।' रहीम २०। एक हिंसक जल-जन्तु, मगर।

घरियारी—पु० घंटा बजानेवाला (प० १८)।

घरी—स्त्री० तह, लपेट 'इह निर्गुन निर्मोलकी गठरी, अब किन करत घरी।' सू० २३५। घड़ा' नैन रहे होइ रहँटक घरी।' प० २११। घड़ी। चौबीस मिनटके बराबरका एक मान। समय, अवसर। घरी घरी = बार बार, थोड़ी थोड़ी देरके बाद 'घरी घरी घरियार पुकारा।' प० १८। घरी गिनना = बड़ी उत्सुकतासे प्रतीक्षा करना। मृत्युकी इन्तज़ारी करना।

घरीक—क्रिवि० घड़ीभर, क्षणभर।

घरू—वि० घरका, निजी।

घरेलू—वि० घरका, पालतू।

घरैया—वि० घरका। पु० घरका आदमी, निकट सम्बन्धी।

घरो—पु० घड़ा।

घरौंदा, घरौंधा—पु० बच्चोंका बनाया मिट्टी आदिका [छोटा घर।

घरौना—पु० 'घरौंदा'। घर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर्म—पु० धूप ।—बिंदु = प्रस्वेद, पसीना ।
घर्मांशु—पु० सूर्य ।
घर्षण—पु० रगड़ । घिसनेका कार्य ।
घलना—अक्रि० फेंका जाना, चल जाना । मारपीट हो जाना ।
घलाघल, घलाघली—स्त्री० मारपीट ।
घलुआ—पु० देखो 'घाल' ।
घवद—स्त्री० घौद, फलोंका गुच्छा ।
घवरि—स्त्री० फलों इत्यादिका गुच्छा ।
घसना—सक्रि० घिसना, रगड़ना ।
घसियारा—पु० घास बेचनेवाला ।
घसीटना—सक्रि० कढ़ोरना, खींच लाना (रामा० २७७)। जल्दीमें लिखना ।
घहनाना—अक्रि० (घण्टे आदिकी) आवाज़ होना । घहराना ।
घहरना, घहराना—अक्रि० गड़गड़ाना, गरजना, घोर शब्द करना । 'एहि अंतर अंधवाइ उठी इक गरजत गगन सहित घहरे ।' सूवे० ५२, 'घहरात जिमि पविपात गरजत जनु प्रलयके बादले ।' रामा० ४७८, (सूवे० ७९)
घहरानि—स्त्री० गरज, गंभीर शब्द (सूवे० ५१) ।
घहरारा—वि० गंभीर ध्वनि करनेवाला । पु० गरज ।
घहरारी—स्त्री० घोर शब्द, गरज ।
घाँ—स्त्री० दिशा, तरफ 'त्यों त्यों चिबुक गहि आपवाँ करी ।' सू० मदन०
घाँघरा, घाँघरो—पु० लहँगा ।
घाँटी—स्त्री० गलेका कौआ, गला ।
घाँह, घाँही—स्त्री० ओर ।
घा—स्त्री० देखो 'घाँ' (चहूँघा = चारों तरफ़) ।
घाइ—पु० घाव, जख़्म, चोट 'इक देत सीसपर खग्ग घाइ'
घाइल—वि० घायल, आहत, जख़्मी । [—सुजा० २४
घाईं—स्त्री० तरफ 'मित्र दुखदाई बात चलैं चहुँ घाईं घोर किधौं यह ग्रीषम कै भीषम बुढ़ाई है ।' दीन० १३६ । बार, दफा, बीचकी जगह, सन्धि, पानीका भँवर ।
घाई—स्त्री० अँगुलियोंके बीचकी जगह । स्त्री० घाव, चोट (उदे० छत्र० १५ या 'ओढ़ना') । छल । चालबाज़ी ।
घाउ—पु० घाव, जख़्म, चोट (रामा० १६८) ।
घाग, घाघ—पु० एक चतुर और अनुभवी कविका नाम । अत्यन्त अनुभवी या चतुर मनुष्य ।
घाघरा—पु० लहँगा । एक पौधा । स्त्री० सरयू नदी ।
घाट—पु० स्नानादिके लिए नदी इ० का पक्का बँधा हुआ किनारा । नाव द्वारा या पानीमें घुसकर पार करनेकी जगह । संकीर्ण पहाड़ी रास्ता । पहाड़ । घाट बाट = जहाँ तहाँ 'तेरेही अधीन अधिकार तीन लोकको सुदीन भयो क्यों फिरै मलीन बाटबाट हैं ।' देव । वि० कम, न्यून । थोड़ा 'बादहिं सूद्र द्विजन्द्र सन हम तुम्हतें कछु घाट ।' रामा० ५९१
घाटवाल—पु० घाटिया ।
घाटा—पु० घटी, हानि (मुद्रा० ११९) ।
घाटारोह—पु० घाटका रोकना 'हयवासहु बोरहु तरनि कीजिय घाटारोह ।' रामा० २८९
घाटि—वि० 'घाट', न्यून, कम 'केहि आचरन घाटि हौं तिनतें, रघुकुल-भूषण भूप ।' विन० ३५२ । स्त्री० नीच कर्म, बुराई 'मानव-दानव-देव-सतावन रावन घाटि रच्यो जगमाहीं ।' कविता० २३५
घाटिया—पु० घाटका पंडा ।
घाटी—स्त्री० पहाड़ोंके बीचकी भूमि, दर्रा । ऊँचा नीचा पहाड़ी रास्ता ।
घात—पु० चोट, प्रहार, वध । स्त्री० सुअवसर, ताक । दाँव 'सूरश्याम नागर नागरिसों करत प्रेमकी घातैं ।' सूवे० ७८ । चालबाजी 'लीजिये दान हौं दीजिये जान तिहारी सबै हम जानती घातैं ।' ललित० २०१, (सुजा० १३१) ।—लगना = सुयोग मिलना । —लगाना = उपाय ढूँढ़ना 'केलिकै राति अघाने नहीं दिनहीमें लला पुनि घात लगाई ।' रस० ५ । —में बैठना = आक्रमण आदिके निमित्त गुप्त रूपसे तैयार रहना ।
घातक, घाती—पु० मारनेवाला । शत्रु ।
घान—पु० उतनी वस्तु जितनी एक बार चक्की, कड़ाही आदिमें डाली जाय । आघात ।
घाना—सक्रि० मारना, नाश करना । पु० प्रहार, युद्ध (सुजा० २२) ।
घानी—स्त्री० देखो 'घान' । कोल्हू (छत्तीसगढ़) (कविता० १९१) । समूह ।
घाम—पु० धूप (रामा० २२८), पसीना 'घाम तिलक बहि गेला ।' विद्या० १२५ । घामनिधि = सूर्य (छत्र १०५) ।
घामड़—वि० धूपका सताया हुआ (पशु) । मूर्ख ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घाय—पु० घाव, चोट, प्रहार 'लोह कुटिलके संगरें सहै अनि घन घाय।' दीन० ७४

घायल वि० आहत, ज़ख़्मी।

घाल, घाला, (घालि)—पु० घलुआ उचित तौल या गिनतीके ऊपर दी हुई वस्तु। —**न गिनना**= कुछ न समझना 'वीर-करि-केसरी कुठारपानि मानी हारि, तेरी कहा चली बिट, तो सो गनै घालि को।' कविता० १८८, (प० २२९)

घालक—वि० मारनेवाला, विनाशक।

घालकता—स्त्री० विनाश करनेका काम 'अति कोमल केशव बालकता। बहु दुस्कर राकस घालकता।' राम० ४२

घालना—सक्रि० प्राण लेना। प्रहार करना 'कोप तेहि कलिकाल कायर मुएहि घालत घाय।' विन० ५०४। बिगाड़ना, नष्ट करना 'श्री सरजा सलहेरिके युद्ध घने उमरावनके घर घाले।' भू० ११५। रखना, डालना 'कबहुँ पालने घालि झुलावइ।' रामा० १११। छोड़ना, चलाना 'घालति छुरी प्रेमकी बानी सूरदास को सकै संभारि।' सू० १०५। कर डालना। नीचे करना 'पाँयन्ह परी घालि गिउ नारी।' प०२०३

घालिका, घालिनी—वि० स्त्री० नाश करनेवाली।

घाव—पु० चोट 'दुंद-घाव भा इन्द्र सकाना।' प० २४४। क्षत, ज़ख़्म, व्रण।

घावरिया—पु० घावोंकी दवा करनेवाला।

घास—स्त्री० चारा, तृण।

घाह—पु० 'घाई', अंगुलियोंके बीचकी जगह, गावा।

घिअ, घिउ—पु० घी।

घिग्घो—स्त्री० हिचकी।

घिघियाना—अक्रि० बड़ी दीनतासे विनती करना।

घिचपिच—वि० गिचपिच, अस्पष्ट। स्त्री० स्थल-संकोच।

घिन—स्त्री०अरुचि, चित्तका खिन्नभाव, घृणा (उदे०घना)

घिनाना—अक्रि० घिन करना, घृणा करना (विन० ४९९)

घिनावना, घिनौना—वि० अरुचि उत्पन्न करनेवाला, घृणित, गंदा (उदे० 'घूस')।

घिय, घिरत—पु० घी 'घेवर अति घिरत चभोरे। लै खाँड उपर तर बोरे।' सू०

घिया—पु० लौकी। कद्दू।

घिरना—अक्रि० घेरेमें आना, आवेष्टित होना। चारों ओर फैल जाना।

घिरनी, घिरिनी—स्त्री० चरखी, गिरहबाज़ कबूतर, कौड़िल्ला पक्षी 'आइ परे होइ घिरनी परेवा।' प० ७८, (प० १७०, २२८)

घिरवाना, घिरावना—सक्रि० आवेष्टित कराना, इकट्ठा कराना 'सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाइ पिराइ।' सू० ७८

घिरित, घिव, घी—पु० घृत। **घीके दीए बलना**= इच्छा पूरी होना, आनन्द मंगल होना।

घिरौरा—पु० घूसका बिल।

घिसघिस—स्त्री० व्यर्थकी देरी, गड़बड़ी।

घिसना—अक्रि० रगड़ खाना। सक्रि० रगड़ना।

घिस्सा—पु० धक्का, रगड़ा।

घींच—स्त्री० गरदन (सूसु० २७१)।

घीउ, घीऊ, घीय—पु० देखो 'घृत'। [बीज, गुंजा।

घुँगची, घुँघची—स्त्री० एक बेल, या उसके लाल लाल

घुँघरारे, घुँघराले—वि० घूँघरवाले, छल्लेदार।

घुँघरू—पु० चाँदी इ० का पोला दाना। छम छम बजनेवाला एक आभूषण।

घुँघुवारा—वि० घूँघरवाला 'घुँघुवारी अलकैं लटकि, हलकैं छलक कपोल।' रघु० ८८

घुंडी—स्त्री० कपड़ेका बटन, कड़े इ० की गोल गाँठ।

घुआ—पु० देखो 'घूआ'।

घुग्घू, घुघुआ—पु० उल्लू।

घुटकना—सक्रि० एक एक घूँट करके पी जाना। गुटकना, निगल जाना।

घुटना—अक्रि०(साँस) रुकना, फँसना। कड़ा होना 'फिरहिं दुऔ सतफेर घुटै कै। सातहु फेर गांठि सो एकै।' प० १३७। पीसा जाना। पु० पाँवके बीचका जोड़।

घुटी—स्त्री० बच्चोंकी एक दवा। घूँट 'चतुर सिरोमनि सूर नन्दसुत लीन्हीं अधर घुटी।' सू० मदन०

घुटुरुन, घुटुरुवन—क्रिवि० घुटनोंके बल (सू० ५२), 'घुटुरुवन चलत श्याम मणि-आँगन मात पिता दोउ देखत री।' सू० (ककौ० १६८)

घुटुरू—पु० घुटना 'कबहुँ उकटि चलैं धामको घुटुरुन करि धावत।' सू०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घुड़कना—सक्रि० डाँटना, डपटना।

घुड़की—स्त्री० डाँट, फटकार।

घुड़ला—पु० छोटा घोड़ा। चीनी इ० का 'घोड़ा'।

घुड़सार,-साल—स्त्री० घोड़े बाँधनेकी जगह, अस्तबल।

घुन—पु० एक छोटा कीड़ा।—लगना = भीतर ही भीतर नष्ट या क्षीण होना (रामा० ५७५)।

घुनघुना—पु० एक खिलौना 'कोउ मुठुकी घुनघुना डुलावै कोउ करताल बजावै।' रघु० ३७

घुनना—अक्रि० घुन लगनेसे खोखला हो जाना।

घुमंडना, घुमड़ना—अक्रि० घने बादलोंका इधर उधरसे आकर एकत्र होना। छा जाना (सूबे० १२१)।

घुमक्कड़—वि० बहुत अधिक घूमनेवाला।

घुमटा—पु० सिरका चक्कर।

घुमड़ाना—अक्रि० देखो 'घुमड़ना'।

घुमरना, घुमराना—अक्रि० घुमड़ना, बादलोंका इकट्ठा होना। ऊँचा शब्द करना या ज़ोरसे बजना (उदे० 'उजागर')। घूमना।

घुमरी—स्त्री० सिरमें चक्कर आनेका रोग 'घर अँगना मोहि नाहिं सुहावै, बैठत ही घुमरी सी आवै।' हरि०। पानीका भँवर।

घुमाना—सक्रि० ऐंठना, फिराना, सैर कराना।

घुमाव—पु० घूमनेका भाव, मोड़, चक्कर।

घुम्मरना—अक्रि० देखो 'घुमरना' (रामा० १६२)।

घुरकना—अक्रि० डाँटना, डपटकर बोलना।

घुरघुराना—अक्रि० घुरघुर शब्द करना (उदे० 'आरव')।

घुरना—अक्रि० घुलना, द्रव पदार्थमें हिलमिल जाना। शब्द करना या बजना (सुजा० ३२), 'घुरत निसान मृदंग संख धुनि भेरि झाँझ सहनाई।' सू० ३

घुरबिनिया—स्त्री० घूरे इत्यादिसे टूटी फूटी वस्तुएँ एकत्र करनेका काम 'तुलसी मन परिहरत नहिं घुरबिनि-याकी बानि।' दोहा० १०६

घुरमना—अक्रि० घूमना, चक्कर खाना 'घुरमि घुरमि घायल महि परहीं।' रामा० ४८९

घुराना—अक्रि० भर आना 'बढ़ि बढ़ि अँखियन नींद घुरानी।' अलबेली अलि

घुर्मित—वि० चक्कर खाता हुआ (रामा० ४८९)।

घुलना—अक्रि० द्रव पदार्थमें हिलमिल जाना। गलना, क्षीण होना।

घुसना—अक्रि० प्रवेश करना, पैठना, धँसना।

घूँघट—पु० साड़ी इ० का वह भाग जो लज्जा, आदिके कारण मुखपर खींच लिया जाता है। अवगुंठन।

घूँघरवारे,-वाले—वि० घुँघरारे, कुंचित।

घूँघरी—स्त्री० घूँघरू—पु० घुँघरू, नेपुर।

घूँट—पु० उतना पानी, या दूध इ०, जितना एक बारमें गलेके नीचे उतारा जाय।

घूँटा—पु० टाँगके बीचका जोड़।

घूँटी—स्त्री० बच्चोंकी एक दवा।

घूँसा—पु० मुक्का।

घूआ—पु० काँस इत्यादिका रुई जैसा फूल। किवाड़की चूल अटकानेका छेद।

घूघ—स्त्री० शिरस्त्राण, लोहेकी टोपी।

घूघू—पु० उल्लू 'बीर बिजैपुरके उजीर निसिचर गोलकुण्डा बारे घूघू ते उड़ाए हैं जहान सों।' भू० २७

घूटना—सक्रि० पीना 'मत्त भयो मन संग फिरै, रस-खानि सुरूप सुधारस घूट्यो।'—रसखानि। दबाना, साँस रोकना।

घूम—स्त्री० मोड़, घुमाव, घेरा 'राची कर महँदी महाव-रिसों राजै पग घावरेकी घूम मति घूमति घनेरिनिकी।' रवि० ३२

घूम घुमारा—वि० मतवाला 'प्यारी तेरे नैननको ब्यौहार। ...सहज अरुन अति घूम घुमारे, खूनी खून खुमार।' अलबेली अलि। उनींदा '(नयन) कृष्ण रसामृत पान अलस कछु घूम घुमारे।' नन्ददास। बड़े घेरेवाला।

घूमना—अक्रि० चक्कर खाना, मुड़ना, भ्रमण करना, मँडराना, टहलना। मतवाला होना।

घूर, घूरा—पु० कूड़ा-करकट फेंकनेकी जगह 'ठाढ़े हूजत घूरपर जब घर लागति आग।' रहीम १५

घूरना—अक्रि० क्रोधसे या आँख गड़ाकर देखना।

घूस—स्त्री० रिश्वत। एक तरहका बड़ा चूहा 'कोने घुसी कहै घूसि बिनौनी बिलारि औ ब्याल बिले महँ [बैसो।' के० ७७

घृणा—स्त्री० नफ़रत।

घृत—पु० खौलाया हुआ मक्खन।

घेणौंची, घेनौची—स्त्री० पानीसे भरे घड़े रखनेका ऊँचा स्थान।

घेर, घेरा—पु० चारों तरफका फैलाव, परिधि, मंडल। देखो 'घैर' 'घैरा', (मति० १९१)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घेरना—सक्रि० आवेष्टित करना, रूँधना, छेंकना, ग्रसना 'धर्म सनेह उभय मति घेरी।' रामा० २२५। चराना।

घैया—स्त्री० थनसे निकलती हुई दूधकी धार 'तुलसी दुहि पीवत सुख जीवत पय सप्रेम घनी घैया।' गीता० २८३, (देखो 'अघार')। ताजे दूधके ऊपरका मक्खन 'कबहूँ प्रात न कियो कलेवा साँझ न पीन्ही घैया।' भ्र० ४। ताजे दूधके ऊपरके मक्खनको काढ़ कर एकत्र करनेका काम। घाव, प्रहार। ओर, दिशा।

घैर, घैरा—पु० अपकीर्त्ति, लाञ्छन, पीठ पीछेकी निन्दा 'तो कारन गृह सुख तजे, सह्यो जगत्को घैर।' नागरी०, (रस० ३२)

घोंघा—पु० एक कीड़ा। वि० खोखला, सत्वहीन, मूर्ख।

घोंचुआ—पु० देखो 'घोंसला'।

घोंटना—सक्रि० देखो 'घूटना'। रगड़ कर मिलाना। पीसना, दवा देना। रटना, खूब पढ़ना।

घोंसला, घोंसुआ—पु० नीड़, खोंता 'बचै न गढ़ा सबीलहू चील घोंसुआ माँस।' वि० २६९

घोखना—सक्रि० रटना, बार बार पढ़कर याद करना।

घोटाला—पु० गड़बड़।

घोड़ा—पु० अश्व, तुरंग। बंदूकका खटका। खूँटी। शतरंजका एक मोहरा।

घोर—पु० घोड़ा। मट्ठा 'कउड़ि पठाओले पाव नहिं घोर।' विद्या० १४२। स्त्री० गर्जन, आवाज 'केका सुनि व्याल ज्यों बिलात जात घनश्याम, घननकी घोरन जवासो ज्यों तपत है।' राम० ३४१, 'करि करि निसानकी घोर घोर।' खुआ० ११०। वि० भयंकर, गाढ़ा, गहरा। घना, दुर्गम। अत्यधिक, बहुत भारी (भू० १५३)। पु० ज़ोर 'काल हीको डर खुनि भाग्यो मूसा पैगंबर जहाँ जहाँ जाइ तहाँ तहाँ घाको घोर है।' खुन्द० ३०

घोरना—सक्रि० घोलना, पानी इ० में हिलाकर मिलाना (विन० ३७९)। गर्जन करना 'सोहत श्याम जलद मृदु घोरत धातु रँगमगे श्रृंगनि।' गीता० ३५५

घोरा—पु० घोड़ा। खूँटा (रामा० ४९८)।

घोरिला—पु० मिट्टीका बना बालकोंके खेलनेका घोड़ा। घोड़ेकी तरह मुँहवाला खूँटा (उदे० 'ओरमना')।

घोरी—स्त्री० घोड़ी। अघोरी।

घोलना—सक्रि० पानी इत्यादिमें मिलाना।

घोष—पु० अहीरोंकी बस्ती (सू० १५०)। गोशाला। गरजनेका शब्द, गर्जना 'वचन मधुर गंभीर घोष बरषत प्रमोद बर।' ललित० १३। डिंगारा। शब्द।

घोषणा—स्त्री० सूचना, मुनादी।

घोसना—सक्रि० घोषित करना, उच्चारण करना 'संभु सिखवन रसनहूं नित राम नामहिं घोसु।' विन० ३८१। स्त्री० सूचना, डुग्गी इत्यादि। गर्जना, आवाज़।

घोसी—पु० ग्वाला, अहीर।

घौर, घौंरा, घौद, घौर,—पु०, **घौरी**—स्त्री० फलोंका गुच्छा 'काहु गहो केरा कै घौरी।' प० ८८

घ्राण—स्त्री० नाक, बास, बू। सूँघनेकी शक्ति।

च

चंक—वि० कुल, सारा 'चक्रवती-चकता-चतुरंगिनि चारिउ चापि लई दिसि चंका।' भू० ५२

चंग—स्त्री० गुड़ी (रामा० ३१४)। एक तरहका बाजा (उदे० 'उपंग')।—**उमहना,—चढ़ना** = खूब ज़ोर होना। वि० स्वस्थ, (रतन० ६८) सुंदर। निपुण।

चँगना—सक्रि० खींचना, कसना।

चंगा—वि० स्वस्थ, विकाररहित, अच्छा, पुष्ट 'नेति नेति बर बोल लोल दृग, भई प्रीति अति चंगी।' अलबेली अलि

चंगु—पु० चंगुल, पकड़, वश। 'चरन चंगुगत चातकहिं नेम प्रेमकी पीर।' दोहा० १२९

चंगुल—पु० पंजा, पकड़, बकोटा।

चँगेर, चंगेरो, चंगेली—स्त्री० बाँसकी चौड़ी टोकरी। बच्चोंका झूला। फूल रखनेकी डलिया, फूल रखनेका जालीदार चाँदीका बर्त्तन 'चन्दनकी चौकी चारु चाँदीके चँगेरे हैं।' पदमा०। मशक।

चंच—पु० चंचु, चोंच 'पपिहाका पन देखि करि धीरज रहै न रंच। मरते दम जलमें पड़ा तऊ न बोरी चंच।' साखी ३०। पाँच अंगुलके बराबर नाप।

चंचरी—स्त्री० देखो 'चाँचरि'। भ्रमरी। एक छन्द।

चंचरीक—पु० भौंरा, मधुप।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चंचल—वि० अस्थिर, चपल, अधीर, चुलबुला।
चंचलता, चंचलताई, चंचलाई—स्त्री० अस्थिरता, चपलता 'अति मदवारे जहाँ दुरदै निहारियत तुरगनही में चंचलाई परकीति है।' भू० ९७
चंचला—स्त्री० बिजली। लक्ष्मी।
चंचु—स्त्री० चोंच। पु० एक शाक। मृग। रेंड़।
चँचोरना—सक्रि० दाँतोंसे दबाकर चूसना।
चंट—वि० चालाक, छटा हुआ, धूर्त्त।
चंड—वि० तीक्ष्ण, कठोर, उग्र, भयंकर।
चंडकर, चंडांशु—पु० सूर्य।
चँडाई—स्त्री० शीघ्रता, उतावली। ज़बरदस्ती।
चंडाल—पु० चांडाल, डोम। वि० नीच।
चंडी—स्त्री० दुर्गा, कर्कशा स्त्री।
चंडीपति, चंडीश—पु० शंकर जी।
चंडू—पु० अफीमसे बनी एक मादक वस्तु।
चंडूल—पु० एक छोटी चिड़िया।
चंडोल—पु० पालकी 'पदमावति चंडोल बईठी।' २०७
चंद—पु० चन्द्रमा। वि० कुछ।
चंदक—पु० चंद्रमा। चाँदनी। एक गहना। एक मछली।
चंदन—पु० एक वृक्ष या उसकी लकड़ी।
चंदना—पु० चन्द्रमा 'रसिक चकोरन हेतु सु प्रगट्यो चंदना।' अलबेली अलि
चंदनी—स्त्री० चाँदनी।
चंदनौता—पु० एक तरहका लहँगा। ['घनवान')।
चंदबान—पु० अर्द्ध चन्द्राकार फलवाला बाण (उदे०
चंदला—वि० जिसकी 'चाँद' पर बाल न हों, गंजा।
चँदवा—पु० चँदोवा, वितान। मोरके पंखकी चन्द्रिका (उदे० 'कुनित')। गोल चकती।
चंदा—पु० चन्द्रमा। बेहरी, उगाही।
चंदिनि, चंदिनी—स्त्री० चाँदनी, चन्द्रमाका प्रकाश। वि० स्त्री० चाँदनीयुक्त, उजेली 'चोरहिं चंदिनि रात न भावा।' रामा० २०४
चँदिया—स्त्री० पीछेकी छोटी रोटी। सिरका मध्य भाग।
चंदिर—पु० चन्द्रमा।
चँदोया, चंदोवा—पु० देखो 'चँदवा', 'रतन दीप सुठि चारु चँदोवा। कहत न बनइ जान जेइ जोवा।' [रामा० १९६
चंद्र—पु० चन्द्रमा। एककी संख्या।
चंद्रक—पु० चंद्रमा। चंद्रिका। एक मछली। नख।
चंद्रकला—स्त्री० एक गहना।
चंद्रकांत, चंद्रमणि—पु० एक मणि।
चंद्रचूड, भाल,-भूषण—पु० शिवजी (राम० १०१)।
चंद्रवधू,-वधूटी—स्त्री० देखो 'चंद्रवधू'।
चंद्रवाण—पु० देखो 'चंदबान'।
चंद्रमा—पु० निशाकर, इन्दु, हिमांशु, रजनीश, विधु इ०।
चंद्रमाललाट,-ललाम—पु० शिवजी।
चंद्रमौलि,-शेखर—पु० शिवजी।
चंद्रवधू,-वधूटी—स्त्री० बीरबहूटी नामक लाल रंगका कीड़ा 'दुतिवंतनको विपदा बहु कीन्ही। धरती कहँ चन्द्रवधू धरि दीन्ही।' राम० ३००
चंद्रशाला—स्त्री० चाँदनी। सबसे ऊपरकी कोठरी।
चंद्रहार—पु० सोनेका बना एक तरहका हार।
चंद्रहास—पु० तलवार (रामा० ४१९)।
चंद्रायण—पु० 'चांद्रायण', व्रतविशेष।
चंद्रिका—स्त्री० मयूर-पुच्छकी आँख। चाँदनी।
चंपक—पु० एक पेड़ या उसका फूल (उदे० 'अवरेखना')
चंपत—वि० अन्तर्द्धान, ग़ायब।
चँपना—अक्रि० पीड़ा, दब्बा, आदिसे दबना। व्याकुल होना '...चकवा ज्यों चन्द्र चितै, चौगुनो चँपत है।' राम० ३४१। सक्रि० दबाना 'धर बैठेहि दशन अधरन धरि चँपे श्वास भरै।' सूबे० २४७
चंपा—पु० एक हलके पीले रंगके फूलवाला वृक्ष। घोड़ेका एक भेद। एक तरहका केला।—कली = एक गहना।
चंपू—पु० गद्य-पद्यमय काव्य।
चँवर—पु० सुरा गायकी पूँछके बालोंका गुच्छा। एक तरहकी कलगी।
चँवरी—स्त्री० घोड़ेकी पूँछके बालोंका बना चँवर।
च—पु० चंद्रमा। कछुवा। चोर।
चउतरा, चऊतरा—पु० देखो 'चबूतरा'।
चउर—पु० देखो 'चँवर'।
चक—पु० 'चकई' (चक्री) नामका खिलौना। भूमिका टुकड़ा। खेड़ा। अधिकार। एक गहना। चक्का, पहिया। चकवा (उदे० 'खेलवार')। एक अस्त्र 'खरग, धनुक, चक, बान दुइ जगमारन तिन्ह नाँव।' प० ४५। वि० चपकाया हुआ, भौचक्का। अधिक।
चकई—स्त्री० मादा चकवा, चक्री। एक छोटा खिलौना 'चारु चकई लै घुनघुना लटू कंचनको'—दीन० ८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चकचकाना—अक्रि० पानी इ० का छोटे छोटे कणोंके रूपमें निकलना। भींग जाना।

चकवाना—अक्रि० चकाचौंध लगना।

चकचाल—पु० फेरा, चक्कर।

चकचाव—पु० चकाचौंध।

चकचून, चकचूर—वि० पिसा हुआ, चकनाचूर, 'नैसक नाहके नेह विना चकचूर ह्वै जैहै सबै चिकनाई।' रवि० १५, 'टूटहिं परबत मेरु पहारा। होइ चकचून उड़हिं तेहि झारा।' प० २५१

चकचौंधना—अक्रि० तेज़ रोशनीके सामने आँखका न ठहर सकना, आँख तिलमिलाना। सक्रि० आँखोंमें तिलमिलाहट उत्पन्न करना 'चपला चमकि चमकि चकचौंधति करति शब्द आघात।' सूबे० १२५

चकचौंह—स्त्री० चकाचौंध। आँखोंकी तिलमिलाहट।

चकडोर—स्त्री० चकई नामक खिलौनेकी डोरी 'हाथ लिये भौंरा चकडोरी।' सूबे० ७५

चकता, चकत्ता—पु० चगताई खाँ, चगताईके वंशका कोई व्यक्ति (उदे० 'अकह'; भू० ११,३६)। धब्बा, [चिह्न।

चकती—स्त्री० गोल छोटा टुकड़ा।

चकना—अक्रि० विस्मित होना, चकित होना। सशंक होना 'चकी जकी सी ह्वै रही, बूझे बोलत नीठि।' वि०२६२

चकनाचूर—वि० चूर चूर। बिलकुल थका हुआ।

चकपक, चकबक—वि० चकित, स्तंभित 'चकबक ताकती इतै उतै विलोकि काहू मुरि मुसुकाय ललचाय जोरि नैनको।' रणधीरसिंह

चकपकाना—अक्रि० चकित होना, चौंकना।

चकमक—पु० एक पत्थर जिसपर चोट पड़नेसे जल्द आग निकलती है (साखी ९५)।

चकमा—पु० धोखा, भुलावा। एक खेल। हानि।

चकर—पु० चक्कर, फेरा। गोल वस्तु। चकवा पक्षी।

चकरा—वि० फैला हुआ, चौड़ा 'सौ जोजन विस्तार कनकपुरि चकरी जोजन बीस।' सूरा० ३१

चकराना—अक्रि० चकित होना, घबड़ाना। चक्कर खाना।

चकरी—स्त्री० चकई नामका खिलौना। चक्कीका पाट।

चकला—पु० गोल पाटा, होरसा। दुराचारिणी स्त्रियोंका केन्द्र। चक्की। वि० चौड़ा।

चकवा—पु० चक्रवाक पक्षी।

चकवाना—अक्रि० चकपकाना।

चकवारि—पु० कछुवा 'उर निरखि चकवारि चियके, कटि निरखि बनराज।' सू० १११

चकवाह—पु० चकवा।

चकवी—स्त्री० चकई, मादा चकवा।

चकहा—पु० चक्का, पहिया 'महल उलंग अनि जोतिनके संग आनि कैयो रंग चकहा गहत रविरथके।' भू० ११४

चका—पु० चक्का, पहिया 'चका कुँवर कर शोभित कैसे। हरि कर चक्र सुदर्शन जैसे।' सबल०। चक्रवाक। वि० चकित (उदे० 'चकना')।

चकाचौंध,-चौंधी—स्त्री० तिलमिलाहट।

चकाना—अक्रि० चकराना, घबड़ाना (रवि० ३१)।

चकाव्यूह—पु० चक्रव्यूह 'चकाव्यूह अभिमनु ज्यों जूझा।' प० १४०

चकार—पु० समवेदना-सूचक शब्द।

चकासना—अक्रि० चमकना 'आपने भाव तें तारे अनन्त जु आपने भाव तें बीज चकासै।' सुन्द० १२१

चकित, चकितवंत—वि० विस्मित, सशंक, क्षुब्ध। 'अब अति चकितवंत मन मेरो।' सूबे० ६९०

चकिताई—स्त्री० आश्चर्य (रघु० ८२)।

चकुला—पु० चिड़ियाका बच्चा।

चकृत—वि० चकित, विस्मित, चौकन्ना (सू० ९८)।

चकोटना—अक्रि० बकोटना, मांस नोचना, चिमटी लेना।

चकोर—पु० तीतरकी तरहका एक पक्षी।

चकौंध—स्त्री० चकाचौंध।

चक्क—पु० दिशा (भू० ५)। चकवा 'नीलकण्ठ कलकण्ठ सुक, चातक, चक्क, चकोर।' रामा० २६४। कुम्हारका चाक। पीढ़ा।

चक्कर—पु० गोल घूमना। गोल वस्तु। मण्डल, घेरा।

चक्कवइ—वि० चक्रवर्ती, सार्वभौम।

चक्कवर्त—पु०, चक्रवर्ती राजा।

चक्कवै—वि० चक्रवर्ती (राजा इ०) 'चहूँ खंड हौं चक्कवै जस रवि तपै अकास।' प० २२८

चक्का—पु० पहिया, चक्र।

चक्काव्यूह—पु० चक्रव्यूह 'यह जग चक्काव्यूह किय कज्जल कलित अगाध।' के० ८५

चक्की—स्त्री० जाँता, आटा पीसनेका यन्त्र।

चक्र—पु० पहिया, गोल वस्तु। झुण्ड, पानीका भँवर। फेरा, घेरा। दिशा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चक्रपाणि, चक्रपानि—पु० हाथमें चक्र धारण करनेवाले, विष्णु भगवान् ।

चक्रवर्ती,-वती—वि० समुद्र पर्यन्त भूमिपर राज्य करनेवाला (उदे० 'चक्र') । पु० समुद्र पर्यन्त भूमिका राजा ।

चक्रवाक—पु० चकवा पक्षी ।

चक्रव्यूह—पु० सेनाकी मंडलाकार स्थिति ।

चक्रित—वि० देखो 'चकृत' ।

चक्री—पु० चक्रधर, विष्णु । कुँभार । सर्प । चक्रवाक ।

चक्षु, चख—पु० नेत्र, नयन । **चखपूनरि** = प्रिय व्यक्ति †

चखचौंध—स्त्री० देखो 'चकाचौंध' । [† (उदे० 'आँख')

चखना—सक्रि० स्वाद लेना, स्वादके साथ खाना, रसास्वादन करना ।

चखा—वि० चखनेवाला, रसिक 'पीतरेख तव कटि बसत, उत पीताम्बर चारु ।...जुगुल रसके चखा ।' सत्यनारायण

चखाचखी—स्त्री० विरोध, शत्रुता, लाग-डाँट ।

चखाना—सक्रि० रसास्वादन कराना ।

चखोड़ा—पु० ढिठौना ।

चगताई—पु० चगताई खाँका वंश ।

चचींड़ा, चचेड़ा—पु० एक बेल या उसका फल ।

चचोरना—सक्रि० रस चूसना 'आप गयो तहीं जहँ प्रभु रहे पालने कर गहे चरण अंगुठ चचोरहि ।' सूवे० ५१

चच्छु—पु० चक्षु, नेत्र, नयन 'चकित चच्छु निज छवि अवलोकित'—श्रीभट्ट

चट—पु० धब्बा, लाञ्छन, कलंक । कड़ी वस्तुके टूटने या उँगली फूटनेकी आवाज़ 'अति सुख पाइ असीस देत सोइ करि अंगुरिन चट अलियाँ ।' हरि० । क्रिवि० तुरन्त ।

चटक—स्त्री० चटकीलापन, उज्वलता 'चटक न छाँड़त घटतहू सज्जन नेह गँभीर ।' वि० १७४ । गौरैया चिड़िया । वि० चमकदार, चटकीला । शीघ्रता करनेवाला, फुरतीला । चटपटा, चरपरा । स्त्री० शीघ्रता, फुरती । क्रिवि० तुरन्त, शीघ्रतासे 'पानि पकर निज नागपै कीन्ह्यो चटक चढ़ाव ।' रघु० १६०

चटकदार—वि० चटकीला, चमकदार ।

चटकना—अक्रि० 'चट' करके टूटना, कलियोंका प्रस्फुटित होना 'तुव जस सीतल पौन परसि, चटकीं गुलाबकी कलियाँ ।' हरि० । झुँझलाना । दरकना, फटना । बिगाड़ होना । पु० तमाचा ।

चटकनी—स्त्री० किवाड़ बंद करनेकी कुंडी, सिटकिनी ।

चटका—पु० शीघ्रता, फुरती । धब्बा, चकत्ता ।

चटकाना—सक्रि० 'चट' शब्द उत्पन्न करना, बजाना 'रहिमन धागा प्रेमको मत तोरो चटकाय ।' रहीम, 'कबहूँ चटकोरा चटकावति झुँझना झुझुन फूलना झूलै ।' सू० मदन० । अँगुलियाँ फोड़ना, तोड़ना । दूर करना ।

चटकारा—वि० चपल (उदे० 'खंजरीट') । चटकीला ।

चटकारी—स्त्री० चुटकी 'मदन महीपजूको बालक बसंत ताहि प्रात हिये लावत गुलाब चटकारी दै ।' देव (क्कौ०)

चटकाली—स्त्री० गौरैया नामक चिड़ियोंका समूह, चिड़ियोंका झुण्ड 'नभलाली चाली निसा चटकाली धुनि कीन ।' वि० ५२

चटकीला—वि० चमकीला, भड़कीला (सू० ९६), 'ज्यों पटमें अति ही चटकीलो चढ़ै रंग तीसरी बारके बोरैं ।' रस० ४१ । चटपटा, मज़ेदार ।

चटकोरा—पु० बच्चोंका एक खिलौना (उदे० 'चटकाना') ।

चटखना; चटखनी—देखो 'चटकना'; 'चटकनी' ।

चटचटाना—अक्रि० फूटते, टूटते या जलते समय 'चटचट' शब्द करना ।

चटचेटक—पु० जादू, इन्द्रजाल 'मोहन, बसीकरन चटचेटक मंत्र जंत्र सब जानै हो ।' गदाधर भट्ट

चटनी—स्त्री० चाटनेकी वस्तु । खूब पिसी हुई गीली वस्तु ।

चटपट—क्रिवि० तुरन्त, तत्काल । [एक खिलौना ।

चटपटाना—अक्रि० घटपटाना (उदे० 'पंजर') ।

चटपटी—स्त्री० उतावली, व्यग्रता, उत्सुकता, छटपटी 'रसिक कहावैं कोई जिनके जुगल मिलनकी चटपटी ।' चाचा हित०

चटसार,-साल—स्त्री० पाठशाला (सू० १९६), 'पढ़े एक चटसार, कही तुम कैयो बार···' सुदामा० ४ । रंगभूमि 'जुगुल सिसु सौदामिनी जनु नचत नट चटसार ।'

चटाई—स्त्री० तृणादिका बिछावन । [गदाधर भट्ट

चटाक, चटाख—स्त्री० अँगुली चटकाने इ० की आवाज़ ।

चटाना—सक्रि० चटवाना, चिखाना, खिलाना ।

चटावन—पु० अन्नप्राशन संस्कार ।

चटिक—क्रिवि० चटपट, तत्काल ।

चटी—स्त्री० चटसार, पाठशाला । एक तरहका जूता ।

चटुल—वि० सुन्दर, चंचल (भू० ९) ।

चटोरा—वि० स्वादलोलुप । लालची ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चट्टान—स्त्री० बृहत् शिला, बड़ा पत्थर।
चट्टी—स्त्री० पड़ाव, टिकान। घाटा। एक तरहका जूता।
चड्डी—स्त्री० एक तरहका लँगोट।
चढ़ना—अक्रि० नीचेसे ऊपर जाना। तेज़ हो जाना। सवार होना। उन्नति करना। चढ़ाई करना। महीने आदिका आरंभ होना। दर्ज होना। हाथ— = हाथमें आना 'दच्छिनके नाथ सिवराज तेरे हाथ चढ़ैं धनुषके साथ गढ़ कोट दुरजनके।' भू० ४६। रंग— = रंगका किसी कपड़े इ० पर आना 'सूरदास सब करी कामरि चढ़त न दूजो रंग।' सू० २३। चढ़ बजना = मनोरथ सफल होना, खूब आनन्द होना।
चढ़ाई—स्त्री० चढ़नेकी क्रिया। बराबर ऊँची होती जानेवाली भूमि। आक्रमण। देवताकी भेंट, चढ़ावा।
चढ़ा ऊपरी, चढ़ाचढ़ी—स्त्री० प्रतिस्पर्द्धा, होड़ा-होड़ी।
चढ़ाना—सक्रि० चढ़नेमें लगाना। ऊपर ले जाना। सवारी कराना। ऊँचा करना। तीव्र करना। अर्पित करना।
चढ़ावा—पु० वधूके लिए वर-पक्ष द्वारा लाया गया गहना। देवार्पित वस्तु।
चतुरंगिनी—स्त्री० हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल सैनिकोंसे युक्त सेना।
चतुर—वि० दक्ष, प्रवीण, चालाक।
चतुरई, चतुरता—स्त्री० चतुराई, होशियारी 'सूर श्याम रचि कपट चतुरई युवतिनके मन यह भरमायो।' सूबे० १९७। चतुरई छोलना, चतुरई तौलना = होशियारी करना, धोखा देना ['जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हो।' सू०]
चतुराई—स्त्री०, **चतुरापन**—पु० देखो 'चतुरई'।
चतुर्—वि० चार (चतुर्भुज, चतुर्मुख, चतुष्कोण इ०)।
चद्दर—स्त्री० धातुका बड़ा चौखूँटा पत्तर। लंबा चौड़ा कपड़ा, पिछौरी।
चनक—पु० चना 'प्यासेहू न पावे वारि, भूखे न चनक चारि...' कविता० २३९
चनकना, चनखना—अक्रि० चटकना, तड़कना।
चनन—पु० चंदन। [नाराज़ होना।
चपकन—स्त्री० एक लम्बा पहनावा।
चपकना—अक्रि० देखो 'चिपकना'।
चपटी—स्त्री० ताली, चुटकी 'मुख कंज मनोजपै भृङ्गिनिसी लपटी चपटीन उड़ावहि को।' लक्षितक्रि०। एक कीड़ा।
चपड़ा—पु० एक लाल कीड़ा। साफ की हुई लाख।
चपत—स्त्री० तमाचा। घाटा, चपेट।
चपना—अक्रि० दबना, कुचल जाना (रघु० २४४)। लज्जित होना 'निज करुना करतूति भक्तपर, चपत चलत चरचाट।' विन० २५९
चपरना—सक्रि० चुपड़ना या फैलाकर लगाना। सानना, मिलाना। भाग जाना।
चपरास—स्त्री० पीतल आदिकी पट्टी, बिल्ला।
चपरासी—पु० अरदली, नौकर।
चपरि—क्रिवि० तेज़ीसे, एकबारगी, ज़ोरसे 'चपरि चपेटे देत नित केस गेह कर मीच।' दोहा० १२५ '...हठि न पिनाक काहू चपरि चढ़ायो है।' कविता० १५९
चपल—वि० चंचल, उतावला। चालाक। पु० पारा इ०।
चपलता, चपलाई—स्त्री० चंचलता। धृष्टता।
चपला—स्त्री० बिजली। लक्ष्मी। दुराचारिणी स्त्री। जीभ।
चपलाना—अक्रि० हिलना, चलना। सक्रि० चलाना।
चपाकसे—क्रिवि० अचानक 'करत करत धंध कछुहि न जानै अंध आवत निकट दिन आगलै चपाक दैं।' सुन्द० ६७
चपाती—स्त्री० पतली रोटी।
चपाना—सक्रि० दबवाना। दबाना। लज्जित करना।
चपेट—स्त्री० धक्का, थप्पड़। हानि।
चपेटना, चपेरना—सक्रि० दबाना।
चबाई—पु० देखो 'चवाई' (सू० ५९)।
चबाना—सक्रि० दाँतोंसे दबाना या कुचलना।
चबारा—पु० मकानके ऊपरका कोठा, चौबारा।
चबाव, चबावन—पु० 'चवाव'। बदनामी, लोकापवाद 'होत चबाव बचावों सो क्यों करि क्यों अलि भेंटिये प्रान पियारो।' रसखानि, (सू० १०)
चबूतरा—ज़मीनसे कुछ ऊँची बनायी हुई चौरस जगह।
चबेना—पु० चबाकर खानेके लिए भूना हुआ दाना।
चभोरना—सक्रि० डुबोना, भिगोना, तर करना।
चमंकना, चमकना—अक्रि० जगमगाना 'बहु कृपान तरवारि चमंकहिं। जनु दस दिसि दामिनी दमंकहिं।' रामा० ५०३। फुरतीसे निकल जाना। भड़कना, चौंकना।
चमक—स्त्री० कान्ति, प्रकाश, झलक। लचक, तड़क।
चमकताई—स्त्री० चमकीलापन, चमक, आभा (सू० १२५)।
चमकदार—वि० चटकदार, चमकीला।
चमकारी—स्त्री० चमक, ज्योति। वि०स्त्री० चमकीली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चमकीला—वि० चमकनेवाला, भड़कदार।
चमचमाना—अक्रि० चमकना, दमकना, प्रकाशयुक्त होना (सूबे० १२२, १२४)।
चमचा—पु० बड़ा चम्मच। करछुल।
चमजुई, चमजोई—स्त्री० एक छोटी किलनी, चिचड़ी। जल्द न छोड़नेवाली वस्तु।
चमड़ा—पु० त्वचा, खाल। छिलका।
चमत्कार—पु० आश्चर्य, विलक्षण बात, अद्भुत घटना, करामात। विचित्रता, अनोखापन।
चमत्कृत—वि० विस्मित, चकित।
चमर—पु० देखो 'चँवर'। सुरा गाय।
चमरख—स्त्री० चरखेकी गुड़ियोंमें लगानेकी चमड़े या मूँजकी चकती (कबीर० १६५)।
चमरशिखा—स्त्री० घोड़ेकी कलगी।
चमरी—स्त्री० एक तरहकी गाय 'चौंर करै चमरी चय मोर चकोर मृगी मृग चाकर भारी।' रवि० ३०
चमाऊ—पु० चमर, चँवर '...रहे अटल चकत्ताको चमाऊ भरि डरिकै।' भू० ५३
चमाक—स्त्री० चमक, कान्ति, प्रकाश 'चन्दते दुचन्द मुखचंदकी चमाकैं रुचि चंद्रमौलि चित्त ह्वै चकोर रह्यो फँसि कै।' दीन० ३१
चमारी—स्त्री० चमारका काम। चमारकी स्त्री।
चमू—स्त्री० सेना।
चमोटा—पु० छुरा तेज़ करनेका चमड़ा।
चमोटी—स्त्री० कोड़ा, चाबुक, कमची। चमड़ेका टुकड़ा।
चम्मच—पु० छोटा चमचा, छोटी करछुल।
चय—पु० राशि। कोट। गढ़। चौकी।
चयन—पु० चुनाव, संग्रह, चुननेका काम। चैन, आराम, 'जूझहिमें कलह कलहप्रिय नारदै, कुरूप है कुबेरै, लोभ सबके चयनको।' के० १४९
चर—वि० चलनेवाला, अस्थिर। जंगम। पु० दूत।
चरक—स्त्री० एक तरहकी मछली। पु० कृष्णका दाग़। दूत। पथिक। भिक्षुक।
चरख—पु० पहियेके आकारका गोल चक्कर। खराद। तोप रखनेकी गाड़ी। एक शिकारी पक्षी।
चरखा—पु० चरख, चरखी, रहँट।
चरखी—स्त्री० गड़ारी। पहिये जैसी वस्तु। छोटा चरखा।
चंरग—पु० चरख नामक शिकारी पक्षी (दोहा० १२९)।
चरचना—साक्र० ताड़ लना, भापना सनान चराच लइ गौननि थकित भई नैननिमें चाह करै बैगनिमें नहियाँ।' रस० ६४। लेपना। पूजना 'सूरदास मुनि चरन चरचि करि सुरलोकनि रुचि मानी।' सू० २७६
चरचराना—अक्रि० 'चर चर' शब्दके साथ टूटना या जलना। चर्राना, खिंचावके कारण दर्द करना।
चरचा—स्त्री० जिक्र, वर्णन, बातचीत, विवाद 'सेवा कीन्हे फल मिलै चरचा उपज विषाद।' चाचा हित०
चरचारी—पु० चरचा चलानेवाला। निंदा करनेवाला।
चरचित—वि० पोता हुआ, लेप लगाया हुआ।
चरज—पु० 'चरख' नामक पक्षी।
चरजना—सक्रि० बहकाना। अक्रि० अन्दाज़ लगाना।
चरण, चरन—पु० पैर, पाँव। बड़ोंका संग। चतुर्थांश।
चरना—अक्रि० चलना, व्यवहार करना 'जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल।' रामा० १५०। चलना-फिरना, विचरना (विन० ४६८)। ढाँपना, दबाना 'काके हैं द्वै सीस ईसके जो हठि जनकी सीव चरै।' विन० ३३५। सक्रि० खेतोंमें फैलकर चारा आदि खाना।
चरनायुध—पु० अरुणशिखा, मुर्ग़ा (मति० २३०)।
चरनि—स्त्री० गति, चाल।
चरनी—स्त्री० चरी। चारा। चरनेकी क्रिया 'गौवन छाँड़ी तृनकी चरनी।' सूबे० ३७९ [बंदमाल।
चरपट—पु० चपत। दूसरेकी चीज़ उड़ाकर भागनेवाला,
चरपर, चरपरा—वि० तीता (साखी १७६), तेज़।
चरफराना—अक्रि० तड़फड़ाना, व्याकुल होना।
चरब—वि० तीक्ष्ण, तीखा।
चरबाँक, चरवाक—वि० चतुर। निडर। चंचल।
चरम—वि० अन्तिम, सबसे ऊँचा या बड़ा।
चरमराना—सक्रि० 'चरमर' शब्द उत्पन्न करना। अक्रि० 'चरमर' शब्द होना।
चरवाहा—पु० पशु चरानेवाला।
चरस—पु० एक मादक वस्तु। चमड़ेका थैला, मोट 'चिबुक कूप रसरी अलक तिल सु चरस दृग बैल।' मुबारक
चरसा—पु० बैल इ० का चमड़ा। चमड़ेका थैला, मोट।
चराना,-चना—सक्रि० पशुओंको चरनेके लिए ले जाना।
चरित, चरित्र—पु० स्वभाव, कार्य, आचरण, जीवनी।
चरी—स्त्री० पशुओंके चरनेके लिए दी गयी भूमि।
चरु—पु० चरी। हविष्यान्न।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चरुआ—पु० जलके लिए जल पकानेका पात्र।
चरुखता—पु० चरखा।
चरू—पु० देखो 'चरु'। 'प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे।'
चरेरा—वि० सख्त, रूखा। [रामा० १०५
चरेरू—पु० पक्षी।
चरोखर—स्त्री० देखो 'चरी'।
चर्चा—स्त्री० देखो 'चरचा'।
चर्चित; चर्परा—देखो 'चरचित'; 'चरपरा'।
चर्म—पु० चमड़ा, ढाल।
चर्या—स्त्री० आचरण, जीविका, कामकाज।
चर्राना—अक्रि० तनावके साथ मामूली पीड़ा होना। 'चर चर' शब्द करना।
चल—वि० चंचल, अस्थिर। पु० पारा, शिव, छल इ०।
चलकना—अक्रि० चिलकना, चमकना।
चलचूक—पु० छल, धोखा।
चलतू—वि० चलता हुआ, जो जारी हो। आबाद।
चलदल—पु० पीपलका पेड़।
चलन—पु० प्रचार, व्यवहार, चाल।
चलना—अक्रि० गमन करना, गतिमें होना, छिड़ना, शुरू होना '...अली चली क्यों बात।' वि० ९२। प्रचलित होना 'रघुकुल रीति सदा चलि आई।' रामा० २१२। निर्वाह होना। साफ किया जाना (पिसान इ०)। प्रयुक्त होना। वश चलना। अपने चलते = यथाशक्ति 'अपने चलत न आजु लगि, अनभल काहुक कीन्ह।' रामा० २०८
चलनि—स्त्री० गति, चाल। रीति, रिवाज़। प्रयोग, व्यवहार।
चलनी—स्त्री० आटा इ० छाननेका बरतन, छलनी (उदे० 'अंतस')।
चलवंत—पु० प्यादा, पैदल सैनिक।
चल विचल—स्त्री० व्यतिक्रम। वि० स्थान-च्युत, अव्यवस्थित। बे-ठिकाने।
चलाक—वि० चालाक, चतुर, चंचल 'सबते चलाक चित तेऊ कुलि आलमके रहैं उर अन्तरमें धीर न धरत हैं।' भू० १४६
चलाका—स्त्री० बिजली। [
चलाचल—वि० चंचल। स्त्री० चाल। देखो 'चलाचली'।
चलाचली—स्त्री० चलनेकी धूमधाम, चलनेका समय, हलचल 'हय चले हाथी चले संग छांड़ि साथी चले ऐसी चलाचलीमें अचल हाड़ा ह्वै रहो।' भू० १७६
चलान—पु० भेजनेकी क्रिया, न्यायालयमें भेजा जाना। रवन्ना।
चलाना, चलावना—सक्रि० चलनेके लिए प्रेरित करना, गति देना। शुरू करना। प्रचलित करना, व्यवहृत करना।
चलायमान—वि० विचलित। चंचल।
चलाव—पु० गौना। यात्रा। पयान।
चवना—अक्रि० देखो 'चुअना', 'चन्द चवइ बरु अनलकन, सुधा होइ विष तूल।' रामा० २२२
चवा—स्त्री० चारों तरफसे बहनेवाली हवा।
चवाई—पु० बदनामी फैलानेवाला, निन्दा करनेवाला 'घातक कुटिल चवाई कपटी महाक्रूर संतापी।' सूवि० ४५। चुगलखोर, मिथ्याभाषी 'सुनहु कान्ह बलभद्र चवाई, जनमत ही को धूत।' सू० ५५
चवाउ, चवाव—पु० बदनामी, निन्दा, चुगलखोरी 'अनाचार सेवकसों मिलिके करत चवावन काम।' [सू० १०
चशम, चश्म—स्त्री० आँख, नेत्र।
चशमा, चसमा—पु० ऐनक। सोता।
चष—पु० चख, चक्षु, नेत्र 'अस मानस मानस-चष चाही। भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही।' रामा० २९
चषक—पु० शराब पीनेका बर्तन। शराब।
चषचोल—पु० आँखका ढक्कन। आँखकी पलक।
चसक—पु० शराब पीनेका बर्तन। स्त्री० कसक, दर्द।
चसकना—अक्रि० कसकना, हलका दर्द होना। चसका।
चसका—पु० लत, चाट। [† लगना।
चसना—अक्रि० एकमें सट जाना, चपकना। मरना।
चसम—स्त्री० देखो 'चशम' (रतन० ६९)।
चह—स्त्री० गड़हा। लकड़ीका चबूतरा।
चहकना—अक्रि० कलरव करना। जलना 'विरह आगिनि चहक कै प्रान करत प्रस्थान।' सत्यनारायण। सक्रि० पीड़ा देना (?) 'फाँसीसे फूलेल लागे गाँसीसे गुलाब आब गाज ऐसे अरगजा चोआ लागे चहकन।' रवि० ९९
चहचहा—पु० पक्षियोंका कलरव। हँसी-मज़ाक। वि० आनन्द उत्पन्न करनेवाला।
चहना—सक्रि० चाहना, इच्छा करना। देखना 'काहूके कहे सुनेते जाही ओर चाहैं ताही ओर इकटक घरी चारिक चहत हैं।' भू० १२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चहनि—स्त्री० चाह, इच्छा।

चहर—स्त्री० आनन्दोत्सव (सूबे० १११)। शोरगुल, हलचल, उपद्रव। 'नेकहूँ नहिं सुनति श्रवणनि करत है हम चहर।' सूबे० १११। —पहर = चहल पहल 'चहर पहर चहुँकित सुनि चायन जग्यो राम लघु भ्राता।' रघु० ९३। वि० उत्तम। तेज़।

चहरना—अक्रि० आनन्दित होना।

चहराना—अक्रि० आनन्दित होना। फटना, दरकना।

चहल—स्त्री० कीचड़ 'माखन महल सी पराग के चहल सी गुलाब के पहल सी नरम मखमल सी।'—श्रीपति, 'ग्वाल कवि चन्दन चहलमें कपूर चूरं चंदन अतर तर बसन खरयो करै।' ग्वाल

चहल पहल—देखो 'चहर पहर'।

चहला—पु० कीचड़, दलदल 'चहले परि निकसै नहीं, मनो दूबरी गाय।' व्यासजी, 'इक भीजे चहले परे, बूड़े बहे हजार।' वि० १९१

चहुँ, चहूँ—वि० चार।

चहुँघा, चहूँघा—क्रिवि० चारों तरफ (राम० २९), 'उपवन बन्यो चहूँघा पुरके अति ही मोको भावत।' सूबे० २७७

चहुटना—सक्रि० चोट लगाना 'वित चकमक चहुटै नहीं धूवाँ ह्वै ह्वै जाय।' साखी ४४

चहूँटना—अक्रि० सटना, मिलना।

चहेटना—सक्रि० निचोड़ना, गारना, सार निकालना।

चहेता—वि० प्यारा, भावता।

चहोड़ना,-रना—अक्रि० आरोपित करना, लगाना, बैठाना। सँभालना 'काटी कूटी माछली छींके धरी चहोड़ि।' कबीर० ३०

चाँई—वि० चालाक, धूर्त। गंजा।

चाँकना—सक्रि० चकांकित करना, चिह्न लगाना, हद बाँधना 'वितवनि चारु भृकुटि वर बाँकी। तिलक रेख सोभा जनु चाँकी।' रामा० १२१

चाँचर, चाँचरि—स्त्री० फाग इत्यादिके गीत (विन० ४६९, गीता० ३५३), 'खिनहिं चलहिं खिन चाँचरि होई। नाच कूद भूला सब कोई।' प० ८८। स्त्री० परती छोड़ी हुई भूमि।

चाँचु—पु० चोंच।

चाँटा—पु० चिउँटा। तमाचा।

चाँटी—स्त्री० चिउँटी (उदे० 'इंदुर')।

चाँड—वि० प्रचण्ड, उग्र, बलवान्, श्रेष्ठ 'तीख तुखार चाँड औ चाँड़े। सँचरहि पैरि ताज बिनु हाँड़े।' प० १९। अघाया हुआ, सन्तुष्ट। स्त्री० बड़ी ज़रूरत या लालसा। बढ़ती। श्रेष्ठ, खंभा। —सरना = लालसा पूर्ण होना 'तोरे धनुष चाँड नहिं सरई।' रामा० १४४

चाँडना—सक्रि० खोद डालना, नष्ट करना।

चाँडिला—वि० प्रबल, उद्धत। बहुत अधिक चढ़ा हुआ 'मखतूल गुहे घुँघरू पहिराय, छला छिंगुनी चित चाँड़िलीके।' हठी

चाँडी—स्त्री० चोंगी, कीप।

चाँद—पु० चन्द्रमा। एक गहना। स्त्री० खोपड़ी।

चाँदना—पु० प्रकाश, चाँदनी 'अपने मुख चाँदने चलत सुन्दर बनमाईं।'-नन्ददास, 'उनमुनिसे मन लागिया, गगनहिं पहुँचा जाय। चाँद बिहूना चाँदना, अलख निरंजन राय।' साखी० ११९ (१८३ भी)

चाँदनी—स्त्री० चन्द्रमाका प्रकाश, ज्योत्स्ना।

चाँदमारी—स्त्री० निशाना लगानेका अभ्यास।

चाँदी—स्त्री० रजत, रौप्य। अच्छी आमदनी।

चाँप—स्त्री० दबाव, धक्का 'कोई काहू न सँभारै होत आव तस चाँप।' प० २४९। पु० धनुष। चम्पाका फूल।

चाँपना—सक्रि० दबाना 'मुनिवर सयन कीन्ह तब जाईं। लगे चरन चाँपन दोउ भाईं।' रामा० १२४, 'अतिही कोमल भुजा तुम्हारी चाँपति यशुमति माय।' सूबे० १२७, 'चलत हस्ति जग काँपा चाँपा सेष पतार।' प० २४६, (सू० १०२)

चाँवरी—स्त्री० चावल 'तिल चाँवरी बतासे मेवा दिये कुँवरिकी गोद।' सूबे० ८२

चाउ—पु० चाव, प्रबल इच्छा, प्रेम, उत्साह 'इनके क्रोध भस्म ह्वै जैहो, करहु न सीता चाउ।' सू० ३४, 'बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ। सुनि धुनि होहि भटन्ह मन चाऊ।' रामा० ४७३

चाउर—पु० चावल।

चाक—पु० पहिया। चिरनी, गराड़ी।

चाकचक—वि० सुदृढ़, सुरक्षित।

चाकना—सक्रि० देखो 'चाँकना'।

चाकर—पु० नौकर (उदे० 'उजुर')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाकरी—स्त्री० नौकरी, सेवा।
चाकी—स्त्री० वस्त्र। फटेकी चोट। चक्की।
चाकू—पु० फल इ० काटनेकी छुरी।
चाख—पु० 'चाष', नीलकण्ठ।
चाखना—सक्रि० चखना, स्वाद लेना, रस लेना (सू० ८३), 'अबहि अछूत न काहू चाखे।' प० ४७
चाचर, चाचरि—स्त्री० होलीके गीत, होलीका हुल्लड़। हलचल।
चाचरी—स्त्री० एक योगमुद्रा।
चाचा—पु० पिताका भाई, काका।
चाट—स्त्री० चसका, लालसा, लत। चटपटी वस्तु। पु० ठग, धूर्त मनुष्य।
चाटना—सक्रि० जीभसे चखना, जीभ बढ़ा कर या अँगुलीसे जीभपर लगाकर खाना। पोंछकर खा जाना।
चाटु—पु० मिथ्या प्रशंसा।
चाड़—स्त्री० प्रबल इच्छा, प्रेम।
चाढ़ा—पु० प्रिय व्यक्ति, प्रेमी। वि० मोहित 'दिन थोरी भोरी अति कोरी, देखत ही गु स्याम भये चाढ़ी।' [सू० ६६
चातक—पु० पपीहा।
चातुरई, चातुरी—स्त्री० चतुरता, चालाकी। 'सुनहु राम स्वामी सकल चल न चातुरी मोर।' रामा० ४००
चातुर्य—पु० चतुरता, दक्षता, कुशलता।
चात्रिक,-ग—पु० चातक, पपीहा 'चात्रिक सुतहिं पढ़ावही आन नीर मत लेय।' साखी १८५, (रतन० ९)
चादर—स्त्री० पीतल इ०का लम्बा चौड़ा टुकड़ा। ओढ़नेका लम्बा कपड़ा, पिछौरी। **लाजकी चादर रहना** = इज़्ज़त बनी रहना।
चान—पु० चन्द्र (विद्या० २८७)।
चानक—क्रिवि० अचानक, अकस्मात्।
चानन—पु० चंदन (विद्या० १५३)।
चाप—स्त्री० दबाव। पु० धनुष (उदे० 'अंस')।
चापट, चापड़—स्त्री० भूसी, चोकर। वि० चिपटा, दबा हुआ। चौपट। समतल।
चापना—सक्रि० दबाना 'धरनि परेउ दोउ खण्ड बढ़ाई। चापि भालु मर्कट समुदाई।' रामा० ५१६
चापल—वि० चपल, चंचल। पु० चपलता।
चापलता—स्त्री० चंचलता।
चापलूस—वि० चाटुकार।
चापल्य—पु० चंचलता।
चाबना—सक्रि० दाँतोंसे कुचलकर खाना 'चंडी है घुमंडि अरि चंड मुंड चाबि करि पीवत रुधिर कछु लावत न बारको।' भू० ३३
चाबी, चाभी—स्त्री० कुंजी।
चाबुक—पु० कोड़ा। उत्तेजना देनेवाली वस्तु।
चाम—पु० खाल, चमड़ा। **—के दाम चलाना** = अन्धेर करना ['सिर पै सौति हमारे कुबजा चामके दाम चलावे।' सू०]
चामर—पु० चँवर, मोरछल। चावल 'खोलके पोट अछोट मुठी गिरिधारन चामर चाव सों चाख्यो।' सुदामा०, [(कक्षौ० १९४)
चामरी—स्त्री० सुरा गाय।
चामीकर—पु० सुवर्ण। धतूरा।
चाय—पु० एक पौधा। देखो 'चाव', 'ब्रह्म मैं ढूँढ्यो पुरानन गानन, वेद रिचा सुनि चौगुने चायन।' रसखानि, (उदे० 'इकौनी')
चायक—पु० प्रेमी। चयन करनेवाला, चुननेवाला।
चार—वि० पाँचसे एक कम। कुछ, कई। **चारों फूटना** = चारों आखें (चर्म चक्षु तथा ज्ञान चक्षु) फूटना 'फूटि न गई तिहारी चारों कैसे मारग सूझै।' सू० १९५। पु० दूत, चर 'चार चले तिरहूति।' रामा० ३२९। नौकर, दास 'स्वामी सर्वग्यसों चलै न चोरी चारकी'—विन० २१२। आचार, रस्म 'बारोठेको चार करि कहि केशव अनुरूप।' राम० १०९। चाल, गति।
चारखाना—पु० एक तरहका कपड़ा।
चारजामा—पु० पलान, ज़ीन।
चारण, चारन—पु० बंदीजन, भाट।
चारदीवारी—स्त्री० प्राचीर, परकोटा, घेरा।
चारना—सक्रि० चराना (सूवे० १३७) 'गोप वेष गोकुल गो चारत, हैं प्रभु असुर निकन्दन।' सू० ७२
चारपाई—स्त्री० खटिया।
चारा—पु० घास इ० पशुओंका भोजन। मछलियों, चिड़ियों आदिके खानेकी वस्तु (दीन० ११४), 'सो रावण रघुनाथ छिनकमें कियो गिद्धको चारो।' सूरा० ७६। मछलियोंको लुभानेके लिए बंसीमें लगाया हुआ आटा इ० 'कृपा-डोरि बनसी पद-अंकुस, परम प्रेम-मृदु चारो।' विन० २६२। वश, तदबीर, उपाय 'बिन अपराध तजी हम दासी कहा हमारो चारो।' प्रागनि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चारि, चारो—वि० आचरण करनेवाला, चलनेवाला। चार। पु० संदेश 'पठवहु चारि चारके हाथा।' रघु० १२६। दौत्य 'चुप करि ये चारी करति सारी परी खलोट।' बि० २५१

चारितु—पु० चारा, घास 'चारितु चरति करम कुकरम करि मरत जीव गन घाली।' विन० ९७

चारु—वि० सुन्दर।

चाल—स्त्री० चलनेकी क्रिया या ढंग, गति। आचरण, व्यवहार। चालाकी। रीति। रस्म। चलनेकी साइत। हलचल।

चालक—पु० चाल चलनेवाला, छलिया। संचालक।

चालचलन—पु० आचरण, चरित्र।

चालना—सक्रि० परिचालित करना, कार्यका सञ्चालन करना, छानना। हिलाना, डिगाना 'नइ करौं विधि सृष्टि ईश आसनते चालौं।' राम० १७१। अक्रि० चलना 'सूरदास प्रभु पथिक न चालहिं, कासौं कहौं सँदेसनि।' सू० २०५। (वधूका) चलाव या विदा होकर आना।

चालनी—स्त्री० आटा इ० चालनेकी चलनी 'गुन तजि अवगुन जाल, गहत नित्य प्रति चालनी।' के० १५१

चालबाज़—वि० चालाक, धूर्त्त।

चाला—पु० प्रस्थान। वधूका पहिले पहल ससुराल जाना 'चालेकी बातें चलीं सुनत सखिनके टोल। गोयेहू लोचन हँसति बिगसत जात कपोल।' बि० ६०। चलनेकी साइत।

चालाक—वि० चतुर, होशियार, धूर्त्त।

चालान—पु० बीजक। माल, रुपया इ० का ब्यौरा।

चाली—वि० चालाक, उपद्रवी, नटखट। स्त्री० चाल, चलनेका ढँग (उदे० 'आली')।

चालह, चालहा—स्त्री० एक मछली, चेल्हवा 'यह तो चालह न लागे कोहू। का कहिहौ जब देखिहौ रोहू।' प० ६७, 'ततखन चालहा एक देखावा।' प० ६१

चाव—पु० लालसा, उत्कंठा, प्रेम, दुलार, चाह (उदे० 'चामर') हिम्मत, उत्साह 'भूषन भनत सिव सरजाकी धाक ते यै काँपत रहत चित गहत न चाव हैं।' भू० ३७। लोकनिन्दा 'ब्रज बसि कै सब लाज गँवाई बर घर चाव चलायो।' हरि०

चाहना—सक्रि० चाहना (सू० २४१)।

चावर, चावल—पु० तंडुल।

चाशनी—स्त्री० पानीमें चीनी इ० घोलकर चुराया हुआ गाढ़ा रस, सीरा। चसका, चाट।

चाष—पु० चक्षु, नेत्र। नीलकण्ठ 'बाएँ दिसा चापु चरि डीला।' प० ६१। चाहा पक्षी।

चास—स्त्री० खेती, जोताई।

चाह—स्त्री० इच्छा, प्रेम, आवश्यकता, क़दर। चाव। गुप्त भेद, खबर, संवाद 'पुनि सासुर लेइ राखहि तहाँ। नैहर चाह न पाउब जहाँ।' प० २६, 'हौं सखि नई चाह एक पाई।' सूदे० ४६

चाहक—पु० चाहनेवाला, प्रेमी।

चाहना—सक्रि० चाहसे देखना, निहारना 'सोच चकित चित रामहिं चाहा। भये मोह बस सब नरनाहा।' रामा० १३५। खोजना, ढूँढ़ना 'दीनेहूँ चसमा चखनु चाहै लहै न मीचु।' बि० ६२। इच्छा करना, प्रेम करना, समझना 'भूषन सब भूषननिमें उपमहिं उत्तम चाहि।' भू० १०। स्त्री० चाह, आवश्यकता '...जाकी इहाँ चाहना है ताकी वहाँ चाहना।' ग्वाल

चाहि—अ० से बढ़कर, की अपेक्षा 'कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा।' रामा० १४०, (उदे० 'डँजियार')

चाहे—अ० इच्छा हो तो। या तो।

चिआँ, चियाँ—पु० इमलीका बीज।

चिउँटा—पु० एक छोटा कीड़ा।

चिगना—पु० मुर्ग़ी इ० का बच्चा। छोटा बच्चा।

चिंघाड़ना—अक्रि० चीखना। हाथीका चिल्लाना।

चिंचिनी—स्त्री० इमली (विन० १२०)।

चिंची—स्त्री० घुँघची।

चिंजा—पु० चिरंजीव, लड़का, बेटा 'गिरत गब्भ कोटै गरब्भ चिंजी चिंजा उर।' भू० १६४

चित, चिंता—स्त्री० फ़िक्र, ध्यान।

चिंतक—वि० चिंतन करनेवाला, विचार करनेवाला।

चिंतन, चिंतवन—पु० ध्यान, विचार।

चिंतना—सक्रि० चिंतन करना, ध्यान करना, सोचना, समझना 'रुचै सु कीजै चित्तमें चिन्तहु मित्र अमित्र।' राम० ४३१। स्त्री० चिन्ता, ध्यान।

चिंतनीय—वि० विचारणीय, शोचनीय।

चिंतामणि—स्त्री० इच्छा-पूरक एक कल्पित मणि।

चिंतित—वि० चिंतायुक्त।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिंदी—स्त्री० टुकड़ा। धज्जी।

चिउड़ा, चिउरा—पु० धानको उबालकर व कूट कर बनाया हुआ चर्वण (रामा० १६४)।

चिक—स्त्री० तीलियोंका बना पर्दा। क़साई। लचक, चिलक।

चिकट—वि० जिसपर मैल लपटा हो। गंदा। पु० एक रेशमी कपड़ा। देखो 'चीकट'।

चिकटना—अक्रि० मैलसे ढँक जाना, चिपचिपा हो जाना।

चिकन—पु० बूटी काढ़ा हुआ महीन वस्त्र।

चिकना—वि० साफ और बराबर। स्निग्ध। स्नेही, अनुरागी। मीठी मीठी बातें करनेवाला।

चिकनाना—सक्रि० चिकना करना। साफ करना। स्निग्ध करना। अक्रि० चिकना होना, स्निग्ध होना। अनुरक्त होना 'ज्यों ज्यों रुख रूखो करति त्यों त्यों चित चिकनाय।' वि० १५१

चिकनियाँ—वि० बना ठना, सुन्दर, छैला 'चोर चोर, चित चोर चिकनियाँ, चातुर नवल किसोर।' नागरी०, (सू० १०८)

चिकवा—पु० एक रेशमी कपड़ा 'चिकवा चीर मघौना छोने।' प० १५८। मांस बेचनेवाला, बूचड़।

चिकार—पु० चीत्कार, चिल्लानेकी आवाज़ 'तब धावा करि घोर चिकारा।' रामा० २९५

चिकारना—अक्रि० चीत्कार करना, गरजना 'सागरको मद झारि चिकारि त्रिकूटकी देह विहारि गयो जू।' राम० ४०४

चिकारा—पु० सारंगीके सदृश एक बाजा। एक बनैला पशु 'चतुर चिकारे चुणि चुणि मारे'—कबीर १५१

चिकित्सा—स्त्री० रोगका प्रतिकार, दवा, इलाज।

चिकुटी—स्त्री० चिमटी, चिकोटी।

चिकुर, चिकूर—पु० केश। साँप आदि सरीसृप। पहाड़।

चिकोटी—स्त्री० देखो 'चिकुटी'।

चिक्कण, चिक्कन—वि० चिकना।

चिक्करना—अक्रि० चीत्कार करना, चीखना 'लागत बान वीर चिक्करहीं।' रामा० ५०३

चिक्कार—पु० चिकार, चीत्कार।

चिखना—पु० मद्यपानके बाद खानेकी चटपटी वस्तु, चाट।

चिचड़ा—पु० लटजीरा या अपामार्गका पेड़। किसी

चिचान—पु० बाज़ पक्षी। [न कक कीड़ा।

चिचाना, चिचावना, चिचियाना—अक्रि० चिल्लाना 'काल चिचावत है खड़ा, जागु पियारे मिंत।' साखी ७७

चिचोड़ना, चिचोरना—देखो 'चचोरना' (उदे० 'आग', [सुन्द० ६०)।

चिजारा—पु० कारीगर।

चिट—स्त्री० रुक्का। कागज़ या कपड़ेका टुकड़ा।

चिटकना—अक्रि० 'चिटचिट' शब्द करना, दरकना, फटना। खीजना। [† इ० की तरह बाँटा जाय।

चिट्ठा—पु० लेखा, फर्द, सूची। वह रुपया जो मजदूरी †

चिट्ठी—स्त्री० पत्री, पुरजा।

चिड़चिड़ा—वि० तनिकमें चिढ़नेवाला।

चिड़चिड़ाना—अक्रि० दरकना, 'चिड़चिड़' करना। चिढ़ना, झुंझलाना।

चिड़ा—पु० चिरवा, गौरैयाका नर।

चिड़िया—स्त्री० पक्षी।

चिड़िहार, चिड़ीमार—पु० बहेलिया।

चिढ़ना—अक्रि० नाराज़ होना, बुराई मानना।

चिढ़ाना—सक्रि० खिजाना, मुँह बनाना 'बिराना'।

चित—पु० चित्त, मन।—चढ़ना = ध्यानमें आना, समक्ष पड़ना 'तब चित चढ़ेउ जो शंकर कहेऊ।' रामा० ४०। —चुराना = मोहित करना। —देना,—धरना = ध्यान देना, मनमें लाना। —में बैठना = मनमें दृढ़ होना।—होना,—में होना = जी चाहना 'यह चित होत जाउँ मैं अबहीं यहाँ नहीं मन लागत।' सू०। —से उतारना = भूल जाना। —से न टलना = न भूलना। पु० चितवन, नजर। वि० इकट्ठा किया हुआ। ढका हुआ। पीठके बल पड़ा हुआ।

चितउन, चितवन—स्त्री० दृष्टि, कटाक्ष 'चित उनकी मूरति बसी, चितउन माहिं लखाय।' बि० २६०

चितकबरा—वि० रंगबिरंगा।

चितचीता, चितचेता—वि० देखो 'चीता'।

चितरना—सक्रि० चित्र बनाना, बेल-बूटे बनाना।

चितरोख—स्त्री० चितरवा नामक चिड़िया।

चितला—वि० चितकबरा।

चितवना—सक्रि० देखना, हेरना 'चकृत अवन चहुँदिसि चितवत हैं और सखनको देन।' सू० ६५, (के० ५६)

चितवाना—सक्रि० दिखाना। [† जाता है। मरघट।

चिता—स्त्री० लकड़ियोंका ढेर जिसपर मृत [illegible]

चिताना—सक्रि० याद दिलाना, सूचित करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिति—स्त्री० चिता। चुनाई। राशि। देखो 'चित्ती'।
चितेर, चितेरा—पु० चित्रकार 'सून शीतिपर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे।' विन० २७६, 'सबै चितेर चित्र कै हारे।' प० २३२
चितौन—स्त्री० देखो 'चितवन'।
चितौना—सक्रि० देखो 'चितवना'। 'सीनो धक धकत पसीनो आयो देह सब हीनो भयो रूप न चितौत
चित्—स्त्री० चेतना। [बाएँ दाहिने।' भू० १३७
चित्त—पु० देखो 'चित'।
चित्तर-सारी—स्त्री० चित्रशाला 'जहँ सोने कर चित्तर-सारी। लेइ बरात सब तहाँ उतारी।' प० १३३
चित्ती—स्त्री० चितरी पीठवाली कौड़ी। मुनिया चिड़िया।
चित्र—पु० तसवीर। तिलक। वि० विचित्र। [बुँदकी।
चित्रना—सक्रि० चित्रित करना (के० १६९)।
चित्रल—वि० देखो 'चितला'।
चित्रिणी—स्त्री० स्त्रियोंका भेद-विशेष।
चिथड़ा—पु० पुराना फटा कपड़ा, लत्ता।
चिनक, चिनग—पु० चुनचुनाहट, जलन।
चिनगटा—पु० चिथड़ा, 'घूरनमेंके बीनि चिनगटा रच्छा कीजै सीतन।' व्यास जी
चिनगारी, चिनगी—स्त्री० जलती आगका छोटा कण, स्फुलिंग 'विरहके चिनगी सो पुनि जरा।' प० ८०
चिनाना—सक्रि० चुनवाना, दीवार उठवाना।
चिनिया—वि० चीन देशका। श्वेत।
चिन्हार—वि० परिचित।
चिन्हारि, चिन्हारी—स्त्री० परिचय, जान-पहिचान 'जिन आँखिन रूप चिन्हारि भई, तिनको नितही दहि जागनि है।' आनन्दघन
चिपकना, चिपटना, चिमटना—अक्रि० सटना, गोंद इ० से जुड़ जाना।
चिपटा—वि० धँसा हुआ। दबा हुआ।
चिबु, चिबुक—स्त्री० ठोढ़ी 'कर जोरौं चिबु परसि चरन छी मारौ हाथ ऐसि ही करि हौं।' ललित कि०
चिमटा—पु० वस्तुएँ पकड़नेके लिए लोहे इ० का बना हुआ एक औज़ार।
चिमड़ा—वि० देखो 'चीमड़'।
चिर—क्रिवि० बहुत दिनोंतक। वि० दीर्घ कालीन।
चिरकुट—पु० चिथड़ा, गुदड़। [बहुत दिनोंका।
चिरचना—अक्रि० चिड़चिड़ाना, क्रुद्ध होना, 'तेहि बार न बार भई बहु बारन स्वर्ग हने न गिनैं चिरचैं।'
चिरचिटा—पु० अपामार्ग, चिड़चिड़ा।
चिरचिरा—वि० देखो 'चिड़चिड़ा'। पु० चिचड़ा [कि० ३४४
चिरना—अक्रि० बीचमेंसे फट जाना, सीधा कट जाना। 'मकु गोहूँ बर हिया चिराना।' प० १८४
चिरमि, चिरमिटी—स्त्री० घुँघची, गुञ्जा 'राखत प्रान कपूर ज्यों बहै चिरमिटी माल।' वि० ४२ (बंग०), 'पाइ तरुनि कुच उन्नपद चिरनि ठयो सब गाँड।' वि० ९९
चिरहँटा—पु० बहेलिया, चिड़ीमार (प० १७)।
चिराक—स्त्री०, **चिराग**—पु० दीपक, 'जेती और राजनिके राजनिमें सम्पति है तेती रोज रावके चिराकैं जोति जागती।' ललित० १९६
चिरातन—वि० चिरन्तन, पुराना, जीर्ण।
चिराना—वि० पुराना 'भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीत रुचि चारु चिराना।' रामा० २७। सक्रि० फड़वाना।
चिरायँध—पु० चरबी इ० जलनेकी दुर्गंध।
चिरारी—स्त्री० चिरौंजी।
चिरिया—स्त्री० चिड़िया, पक्षी।
चिरिहार—पु० बहेलिया, चिड़ीमार 'सुनि बाम्हन बिनवा चिरिहारू। करि पंखिन्ह कहँ मया न मारू।' प० ३४
चिरीखाना—पु० चिड़ियाघर '...देस देसमें बखाने चिरीखाने हरिनाथकैं'—हरिनाथ
चिरेता—पु० एक औषधि (उर्दू० 'काइफर')।
चिरैया—स्त्री० चिड़िया 'सूर श्यामके यशुदा बोधति गगन चिरैयाँ उड़त लखावत।' सूबे० ५८
चिरौंजी—स्त्री० अचार नामक फलकी गिरी।
चिलक—स्त्री० चमक, कान्ति 'चिलक चिकनई चटक सों लफति सटक लौं आग।' वि० ८४। ठहर ठहर कर उठनेवाली पीड़ा।
चिलकना—अक्रि० चमकना 'चिलकै दुति सूछम सोभति बारू।' राम० ५११। रुक रुक कर पीड़ा होना।
चिलगोजा—पु० एक फल।
चिलड़ा—पु० देखो 'चीला'।
चिलबिला,-बिल्ला—वि० चंचल, नटखट।
चिलम—स्त्री० तम्बाकू इ० पीनेका चौड़ीके सदृश मिट्टीका पात्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिलमची—स्त्री० खूब चोंड़े ओठवाला हाथ मुँह धानेका पात्र।

चिलमन—स्त्री० चिक, परदा।

चिलवाँस—पु० चिड़िया फँसानेका फंदा 'वैरिनि सवति दीन्ह चिलवाँसू।' प० १७२

चिल्लड़—पु० जूँके सदृश एक सफेद कीड़ा जो गन्दे कपड़ोंमें पड़ जाता है।

चिल्ल पों—स्त्री० हल्ला गुल्ला।

चिल्ला—पु० प्रत्यंचा। चीला। एक पेड़। चालीस दिनों-का काल (रतन० ११)।

चिल्लाना—अक्रि० उच्च स्वरसे बोलना, ज़ोरसे शब्द निकालना। बकना।

चिल्ली—स्त्री० वज्र, बिजुली। झिल्ली नामका कीड़ा।

चिल्ही—स्त्री० चील पक्षी।

चिहुँकना—अक्रि० चौंकना, भड़कना।

चिहुँटना—सक्रि० चिमटी लेना। चिपटना। चित्त चिहुँटना = चित्तमें पीड़ा उत्पन्न करना।

चिहुँटनी, चिहुटिनी—स्त्री० घुँघची (वि० ४२)।

चिहुँटी—स्त्री० चिकोटी, चिमटी।

चिहुर—पु० केश, बाल 'बसन कुचील चिहुर लपटाने, देह पीताम्बर बरनी।' सू० ३४, (भ्र० ४१, प० २९)

चिह्न—पु० निशान, घट्वा, लक्षण। ध्वजा।

चींटवा, चीटा—पु० चिँउँटा।

चींतना—सक्रि० चित्रित करना। लिखना 'कौरेन सँचिया चींतति नवनिधि'—सू० ४८

चीक—स्त्री० चीखनेकी आवाज़।

चीकट—पु० एक रेशमी वस्त्र। बहिनकी सन्तानके विवाहमें बहिनको दिया गया कपड़ा इ०। वि० गंदा

चीकना—अक्रि० चीख मारना, चिल्लाना 'चीकें चौंकि चौंकि अति रोव नाहिं सोवैं रंच।'—राम रसायन। वि० देखो 'चिकना' (उदे० 'अलिक')।

चीखना—सक्रि० चखना, स्वाद लेना, थोड़ी मात्रामें खाना 'निज कर नयन काढ़ि चह दीखा। डारि सुधा बिष चाहत चीखा।' रामा० २२१। चीख मारना, [चिल्लाना।

चीखर, चीखल—पु० कीचड़।

चीखुर—पु० गिलहरी।

चीज़—स्त्री० वस्तु।

चीठ—स्त्री० मैल, कीचड़ (साखी ४१)।

चीठा—पु० लेखा, सूची।

चीठी—स्त्री० चिट्ठी, पत्री।

चीत—पु० चित्रा नक्षत्र। चित्त, मन 'संग रहत सिर मेलि ठगौरी हरत अचानक चीत।' सूबे० ३१८

चीतकार—पु० चिल्लानेकी आवाज़, चिकार, शोर। चित्रकार।

चीतना—सक्रि० चिन्तन करना, सोचना, चेत होना, स्मरण आना। देखो 'चींतना'।

चीता—पु० चित्त, मन। एक मांसाहारी पशु। स्त्री० चिन्ता 'मंदोदरी हृदय करि चीता।' रामा० ४३४। सुधबुध। वि० विचारा हुआ, चाहा हुआ। चित चीता = मनचाहा 'वा चकईको भयो चितचीतो, चितौति चहूँदिसि चायसों नाची।'—देव, 'ढोलत ग्वाल मनो रन जीते। भये सबहिंके मनके चीते।' सू० ४८

चीथड़ा, चीथरा—पु० फटा कपड़ा 'तेलमूँ भिजोइ करि चीथरा लपेटि राखै...' सुन्द० १३१

चीथना—सक्रि० नोंचना, टुकड़े टुकड़े करना।

चीनना—सक्रि० चीन्हना, पहिचानना 'लोक लाज कुलकानि तजी सब जामें तुव रुचि चीनी।' लक्षित कि०

चीना—पु० चीनी कपूर 'कीन्हेसि भीमसेन औ भीमा।' प० २। चिन्ह 'छिनमें बरषि प्रलय जल पाटौं खोजु रहै नहिं चीनो।' सूबे० १२०

चीनी—स्त्री० खाँड़, शक्कर।

चीन्हना—सक्रि० पहचानना (रामा० १५७)।

चीन्हा—पु० चिन्ह, निशानी।

चीमड़, चीमर—वि० जो खींचने आदिसे न फटे।

चीर—पु० वस्त्र। घाव 'तोहि बिनु अंग लाग सर-चीरू।' प० १६९

चीरना—सक्रि० फाड़ना।

चीरा—पु० पगड़ी बनानेका एक तरहका लहरियादार कपड़ा 'कुटिल अलक सोहै सीस चीरा लसो है।' दीन० ३। चीर कर बनाया हुआ घाव।

चीरी—स्त्री० चिड़िया। झींगुर।

चील, चील्ह—स्त्री० गिद्धकी तरहका एक पक्षी।

चीलड़, चीलर—पु० देखो 'चिलड़'।

चीला—पु० उलटा नामक पकवान।

चील्ही—स्त्री० एक तरहका टोटका '...चील्ही करवाय राई लोन उतरायो है'—रघु० ५५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चुँगना—सक्रि० देखो 'चुगना'।
चुंगल—पु० पक्षियों या पशुओंका पञ्जा। बकोटा, चंगुल।
चुंगी—स्त्री० बाहरसे आयी वस्तुओंपर लगनेवाला महसूल। चुटकीभर वस्तु।
चुंडित—वि० चुंडीवाला, चोटीवाला।
चुंडी—स्त्री० चोटी, शिखा।
चुँदरी—स्त्री० देखो 'चुनरी'।
चुंदी—स्त्री० देखो 'चुंडी'। कुटनी।
चुँधलाना, चुँधियाना—अक्रि० देखो 'चौंधियाना'।
चुंबक—पु० एक धातु जो लोहेको खींचती है। कामुक।
चुंबना—सक्रि० चुम्बन करना, स्पर्श करना।
चुँभना—अक्रि० चुभना, गड़ना, हृदयमें खटकना।
चुअना—अक्रि० चूना, टपकना।
चुआन—स्त्री० नहर, खाई।
चुआना—सक्रि० टपकाना। चुपड़ना, रसयुक्त बनाना।
चुकचुकाना—अक्रि० पसीजना, कणोंके रूपमें निकलना।
चुकट, चुकटा—पु० चुटकी। चुटकीभर वस्तु 'जगमें भक्त कहावई चुकट चून नहिं देय।' साखी १४५
चुकता—वि० बेबाक।
चुकना—अक्रि० समाप्त होना, बाकी न रहना 'समय चुके पुनि का पछिताने।' रामा० १४२। तै होना। खाली जाना, व्यर्थ होना, चूकना, त्रुटि करना।
चुकरैंड—पु० दो मुँहोंवाला साँप।
चुकाना—सक्रि० तै करना, अदा करना। अक्रि० चूकना, भूल करना 'तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं। देखु विचारि मातु मन माहीं।' रामा० २१९
चुकड़—पु० मद्यादि पीनेका पात्र। पुरवा, कुल्हड़।
चुखाना—सक्रि० गाय दुहनेके पहिले बछड़ेको पिलाना। चखाना।
चुगद—पु० मूर्ख व्यक्ति। उल्लू।
चुगना—सक्रि० चोंचसे उठाकर दाना खाना, दाना बीनना।
चुगल, चुगलखोर—पु० पीठ पीछे निन्दा करनेवाला।
चुगली—स्त्री० पीठ पीछेकी निन्दा, झूठी शिकायत।
चुगाना—सक्रि० चिड़ियोंको दाना इ० खिलाना, 'कागहिं कहा कपूर चुगाये स्वान न्हवाये गंग।' सू० २३
चुगुल, चुगुलखोर—पु० देखो 'चुगल', 'चुगलखोर'।

चुचकारना, चुचुकारना—सक्रि० पुचकारना, दुलारना 'मनहुँ सरोज विधु बैर विरधि कर, करत नाद बाहन चुचुकारे।' सू० १२० [(सू० १८०)।
चुचाना, चुचुआना—अक्रि० टपकना, निचुड़ना, चूना
चुचुक—पु० स्तनका अग्रभाग। एक देश।
चुचुकना—अक्रि० पचक जाना, सूखना।
चुटकना—सक्रि० चाबुक मारना 'करे चाह सों चुटकि कै खरे उड़ौंहैं मैन। लाज नवाये तरफरत करत खूँद सी नैन।' वि० २२४। सक्रि० चुटकीसे तोड़ना।
चुटकी—स्त्री० बीचकी अँगुली और अँगूठेके मेलसे बनी स्थिति। चुटकी बजानेकी आवाज़। पाँवकी अँगुलीका एक आभूषण। चुटकीभर आटा। —जोड़ना = खुशामद करना 'बारबार तैं जोरि चुटकियाँ, जिन नैननके गुनन बखानै।' ललित कि०। —लेना = हँसी उड़ाना, चुभती बात कहना। चुटकीसे दबाना।
चुटकुला—पु० विलक्षण उक्ति। लटका।
चुटला—पु० वेणी। चोटीपरका एक आभूषण।
चुटिया—स्त्री० बालोंकी चोटी, शिखा 'चुटिया सुरझाइ बीच सुमन हौं गुथाऊँ।' सू० मदन०
चुटियाना, चुटीलना—सक्रि० जख़मी करना।
चुटीला—वि० अनियारा, चोट पहुँचानेवाला 'भौंहैं गोल गरूर हैं याके नयन चुटीले भारी।' चरचा हित०। चोट खाया हुआ। पु० छोटी चुटिया।
चुटुकी—देखो 'चुटकी', 'चुटुकी दै दै हँसत ग्वाल सब सिखै देत बलबीर।' सू० ५९
चुड़िहारा—पु० चूड़ी बेचनेवाला।
चुड़ैल—स्त्री० डायन, कर्कशा स्त्री।
चुत—वि० च्युत, गिरा हुआ 'ज्यों अनिच्छ तजतें परै चुत पद महिके माहिं।' दीन० ८७ [० भोजन।
चुन—पु० चूर्ण। आटा। चुननेकी वस्तु, तुष इ० काञ्च
चुनचुनाना—अक्रि० जलन पैदा करना, चुनना।
चुनट, चुनन—स्त्री० शिकन, परत।
चुनना—सक्रि० बीनना, छाँट लेना, निर्वाचित करना। जोड़ाई करना। (फूल) तोड़ना। सिकुड़न या चुनन डालना 'आयुहि देत अयकना, मूँदत कान। चुनि पहिराय चुनरिया, प्रान अकान।' रहीम ३७
चुनरी—स्त्री० रंगीन ओढ़नीकी साड़ी (देखो 'चुनरि')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चुनवाना, चुनाना—सक्रि० विनवाना, चुनन डलवाना। दीवारकी जोड़ाई कराना 'काँकर पाथर जोरिके मसजिद लई चुनाय।' साखी १८१

चुनाव—पु० चुननेका कार्य, निर्वाचन।

चुनावट—स्त्री० चुनन।

चुनिंदा—वि० वढ़िया, चुना हुआ।

चुनी—स्त्री० चुन्नी, मानिक इत्यादिका छोटा टुकड़ा। 'लाल लाल चमकत चुनी चौका चिह्न समान।' वि० ३९ (बंग०), 'कनक चुनिन सों लसित नहरनी लिये कर हो।' रामलला०, 'चीकने कपोल चौका चमकै चुनीसे दन्त...' रवि० २१

चुनौटिया—पु० कालापन लिये हुए लाल रंग 'पहिरे चीर चुनौटिया, चटक चौगुनी होति।' वि० २५८

चुनौटी—स्त्री० गीला चूना रखनेका बरतन। चूनादानी।

चुनौती—स्त्री० ललकार, वढ़ावा, उत्तेजना (सूबे १८०, साखी १३३)।

चुन्नन—स्त्री० देखो 'चुनन'।

चुन्नी—स्त्री० देखो 'चुनी'। ओढ़नी। चमकी या सितारा 'तिलक सँवारि जो चुन्नी रची।' प० २३४

चुप—वि० मौन। स्त्री० खामोशी।

चुपकी, चुप्पी—स्त्री० खामोशी।

चुपड़ना, चुपरना—सक्रि० पोतना, लेप करना, ढाँकना, छिपाना। 'चुपरि उबटि अन्हवाइ कै नयन आँजे।' गीता० २७९, 'दुरत न कुच बिच कंचुकी चुपरी सारी सेत।' वि० ८०

चुपाना—अक्रि० खामोश होना, चुप हो रहना।

चुबलाना, चुभलाना—सक्रि० मुँहमें रखकर धीरे धीरे आस्वाद लेना।

चुभकाना—सक्रि० पानीमें बारबार डुबाना।

चुभकी—स्त्री० गोता, डुबकी।

चुभना—अक्रि० गड़ना, खटकना, हृदयपर असर करना, लीन होना।

चुभाना, चुभोना—सक्रि० गड़ाना, धँसाना।

चुमकारना—सक्रि० पुचकारना, पुचकारना।

चुर—पु० बैठक। मोंद। वि० प्रचुर, बहुत।

चुरकुट—वि० चूर्णित, चकनाचूर, टुकड़े टुकड़ेके रूपमें 'उरज तजी कंचुकि चुरकुट भई, कटितट ग्रन्थि हटी।' सू० मदन०, (सूबे० २९१)

चुरकुस—पु० चूर्ण, पुकनी।

चुरना—अक्रि० पानीके साथ पकना, सीझना, गरम होना, दग्ध होना 'ता दिनते पीर दीनयाल किमि धरों धीर बिरहागि दहे अंग रहे चुरि चुरि कै।' हीन० ९

चुरमुर—वि० कुरकुर 'परवर कुँवरू भूँजे ठाढ़े। पहुतै बिउ महँ चुरमुर काढ़े।' प० २७३। पु० कुरकुरी चीज़ोंके टूटनेकी आवाज़।

चुरमुरना—सक्रि० चुरमुर शब्द करके तोड़ना। अक्रि० चुरमुर शब्द करके टूटना।

चुरस—स्त्री० सिकुड़न, शिकन।

चुरा—पु० चूर्ण, बुरादा।

चुराना—सक्रि० चोरी करना। छिपाना। पकाना। खौलाना।

चुरिहार—पु० चूड़ीवाला।

चुरी—स्त्री० चूड़ी 'सराजा समत्थ बीर तेरे बैर बीजापुर बैरी बैयरनि कर चीन्ह न चुरीनके।' भू० ६७

चुरू—पु० देखो 'चुल्लू'।

चुरैल—स्त्री० चुड़ैल।

चुल—स्त्री० खुजलाहट, तीव्र इच्छा।

चुलबुला, चुलबुलिया—वि० चंचल, शरारती।

चुलाना—सक्रि० चुवाना।

चुलुक—पु० विकट दलदल। चुल्लू 'जयति जयति योगीन्द्र मुनि कुंभज महा अनूप। देखे ताके चुलुकमें कच्छप मत्स्य सरूप।' गुलाब

चुल्ला, चुल्ली—वि० नटखट।

चुल्लू—स्त्री० अँगुलियों और हथेलीसे बना गड्ढा।

चुल्हौना—पु० चूल्हा।

चुवना—अक्रि० चूना, टपकना। सक्रि० चुगना, चोंचसे दाना उठाकर खाना 'मुक्ता मनों चुवत खग खञ्जन चोंचि पुटी न समात।' सू० ७० टपकाना 'कहै मतिराम कवि लोगनिकौं रीझि करि दीने ते दुरद जे चुवत मदधार हैं।' ललित० ४७।

चुवा—पु० चौवा, चतुष्पद (गाय, बैल, मृग आदि) 'चारु चुवा चहुँ ओर चलैं लपटैं झपटैं सो तमीचर तौंकी।' कविता० २३८। मज्जा, हड्डीके भीतरका मांस।

चुवाना—सक्रि० टपकाना (उदे० 'किनुका')।

चुसना—अक्रि० चूसा जाना। शक्ति, धन, रस इ० खींच लिया जाना।

चुसनी—स्त्री० एक खिलौना। दूध पिलानेकी शीशी।

चुस्त—वि० कसा हुआ, सुदृढ़, गठीला।

चुहँटी, चुहटी—स्त्री० चुटकी 'ज्यों कर त्यों चुहटी चलति ज्यों चुहटी त्यों मारि।' वि० २१६ (बंग०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चुहचुहा—वि० चुहचुहाता हुआ, रसयुक्त, चटकीला।
चुहचुहाना—अक्रि० रस चुआना। चहचहाना, कलरव करना।
चुहचुही—स्त्री० एक छोटी चिड़िया (प० १२)।
चुहटना—सक्रि० कुचलना, पाँवसे दबाना।
चुहड़ा, चुहरा—पु० देखो 'चूहड़ा', 'चूहरा'।
चुहल—स्त्री० हँसी, विनोद।
चुहुकना—सक्रि० चूसना।
चुहुटना—अक्रि० चिपकना।
चुहुटनी—स्त्री० घुँघची।
चूँकि—क्रिवि० क्योंकि।
चूँच—स्त्री० चोंच 'बींध्यो कनक पासि सुक सुन्दर चुनै बीज गहि चूँच।' सू० १५५
चूँदरी—स्त्री० चुनरी।
चूँनी—स्त्री० अन्नकण। चुन्नी 'चूनरी सुरंग अंग इंगुरके रंग देव बैठी परचूँनीकी दुकानपर चूँनी सी।' रवि० २०
चूकना—अक्रि० भूल करना, मौक़ा खोना।
चूचुक—पु० स्तनका अग्र भाग। [मुखिया।
चूड़ा—पु० चूरा, कड़ा। चिउड़ा। चोटी, जूड़ा। माथा,
चून—पु० चूना 'ज्यों हरदी जरदी तजी, तजी सफेदी चून।' रहीम २०। देखो 'चुन' 'सुन्दर तू मत खोष करै कछु चोंच दई जिन चूनहि दैहै।' सुन्द० ४६
चूनर, चूनरी—स्त्री० चुनरी (उदे० 'चूँनी')।
चूना—पु० कंकड़, पत्थर आदिकी भस्म (सू० ९९)। अक्रि० टपकना, बूँद बूँद गिरना, स्खलित होना।
चूपड़ी—वि० स्त्री० चुपड़ी हुई 'देखि बिरानी चूपड़ी मत ललचावै जीव।' साखी १७९
चूमा—पु० चुम्बन (सुन्द० १२९)।
चूर—पु० चूर्ण, किसी चीज़के बहुत बारीक टुकड़े। बुरादा। वि० निमग्न, तल्लीन।
चूरन—पु० देखो 'चूर'। बारीक पीसी हुई औषधियोंकी बुकनी। चूर्ण करनेवाला (सू० १०१)।
चूरना—सक्रि० टुकड़े टुकड़े करना, तोड़ना 'बाज छत्र छत्र चाह चौंर चारु चूरियो।' राम० ४८१, 'बादशाह गढ़ चूरा चितउर आ इसलाम।' प० १३१
चूरमा—पु० घी चीनी मिश्रित पूरीका चूर।
चूरा—पु० कड़ा 'तन इँगुली सिर लाल चौतनी कर चूरा हुई बाहु।' कबी० ५५ । चिउड़ा।
चूरामनि—पु० चूड़ामणि, सिरमें पहिननेका एक गहना।
चूर्ण—पु० बुकनी।
चूल्हा—पु० एक तरहकी भट्ठी जिसपर भोजन पकाते हैं।
चूसना—सक्रि० जीभ और ओंठ द्वारा रस खींचना। शक्ति धन इ० ले लेना।
चूहड़ा, चूहरा—पु० चांडाल, भंगी 'साधू आवत देखिके मनमें करै मरोर। सो तो होसी चूहरा बसै गाँवकी छोर।' साखी १३१, (१६९ भी)
चूहरी—स्त्री० भंगिन (रवि० २२)। चूड़ी बेचनेवाली।
चूहा—पु० मूसा, इंदुर।
चूहादंती—स्त्री० एक आभूषण।
चेंचें—स्त्री० चिड़ियोंकी आवाज़। व्यर्थकी बकवाद।
चेंटुआ—पु० चिड़ियाका बच्चा (दोहा० १३०)।
चेचक—स्त्री० 'माता' की बीमारी।
चेजा—पु० छिद्र, छेद।
चेटक—पु० नौकर, दूत। शीघ्रता। चाट। जादू (उदे० 'कानि', प० २२१)। तमाशा।
चेटका—स्त्री० मृत देह जलानेका स्थान, श्मशान, चिता।
चेटकी—पु० जादूगर (कविता० २२५)। तमाशा करनेवाला, कौतुकी।
चेटिका, चेटिकी, चेटी—स्त्री० दासी 'तेरी जग मीचु कहावति चेटी।' के० ३७७
चेटिया—पु० शिष्य, छात्र 'सब चेटियन ऐसी मन आई। रहे सबै हरिपद चित लाई।' सूवे० ३२
चेटुवा—पु० देखो 'चेंटुआ'।
चेत—पु० चेतना, होश, ज्ञान, ख्याल 'नृप हरषेउ पहिचान गुरु भ्रम बस रहा न चेत।' रामा० ९६। चित्त 'और कछू माँगौ सुमुखि रुचै जु तुम्हरे चेत।' के० २७७
चेतना—अक्रि० होशमें आना, सँभलना, सावधान होना 'अब चित चेति चित्रकूटहि चलु।' विन० १०२, (सू० २७)। स्त्री० बुद्धि, होश, स्मृति।
चेतवनि—स्त्री० चितवन। चितावनी।
चेतिका—स्त्री० देखो 'चेटका'।
चेप—पु० गाढ़ा चिपकनेवाला रस, लासा 'दृग खंजन गहि लै गयो, चितवनि चेप लगाय।' वि० ६५ (बंग०)। उत्साह
चेर, चेरा—पु० दास, नौकर 'ब्रह्म तू हौं जीव, तू ठाकुर हौं चेरो।' विन० ७२। चेला, शिष्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चेराई—स्त्री० शिष्यता, सेवा, दासता 'जोपै चेराई रामकी करतो न लजातो।' विन० ३६६

चेरि, चेरी—स्त्री० दासी (रामा० २०६)।

चेल—पु० चैल, वस्त्र।

चेलकाई, चेलहाई—स्त्री० चेलोंका समूह।

चेला—पु० शिष्य, शागिर्द।

चेल्हवा—स्त्री० एक छोटी मछली।

चेष्टा—स्त्री० अंग-परिचालन, प्रयत्न, इच्छा।

चेहरा—पु० मुखड़ा।

चै—पु० चय, ढेर, समूह।

चैत—पु० चैत्र मास।

चैतो—स्त्री० एक प्रकारका गाना। रब्बीकी फसल। वि० चैत्र मास सम्बन्धी।

चैत्य—पु० मंदिर, गृह, यज्ञ-भूमि। बुद्ध, बुद्ध-मूर्त्ति। बौद्ध विहार। बौद्ध भिक्षु। अश्वत्थ वृक्ष।

चैत्र—पु० फागुनके बादका महीना। देखो 'चैत्य'।

चैन—पु० आराम, आनन्द।

चैपला—पु० एक पक्षी।

चैयाँ—स्त्री० बाहु।

चैल—पु० वस्त्र चीर। (रामा० १९२)।

चैला—पु० लकड़ीका छिलका या छोटा टुकड़ा।

चोंक—स्त्री० चुम्बनका चिह्न। [नली।

चोंगा—पु० एक तरफ बन्द मुँहवाली बाँस इ० की

चोंघना—सक्रि० चुगना, चोंचसे दाना बीनना।

चोंच—स्त्री० पक्षियोंके मुहँका अग्र भाग, चंचु।

चोंटना—सक्रि० सोंटना, तोड़ना।

चोंड़ा—पु० सिर। झोंटा। छोटा कचा कुआ।

चोंप—पु० चोप, कोई चिपकनेवाली वस्तु, लासा। देखो

चोआ—पु० देखो 'चोवा'। ['चोप'।

चोई—स्त्री० दालका छिलका जो धोनेसे निकलता है।

चोकर—पु० भूसी। आटे इ० का चालन।

चोख—स्त्री० शीघ्रता, फुरती। वि० शुद्ध। सच्चा। तेज़।

चोखना—सक्रि० चूसकर पीना। थनसे मुँह लगाकर दूध पीना।

चोखनि—स्त्री० चोखनेकी क्रिया 'नियरावनि चोखनि मगहीमें मुकि बढ़िवान छबीली।' छलित ७०

चोखा—वि० खरा, शुद्ध, सच्चा, श्रेष्ठ। पु० भरता।

चोग़ा—पु० ढीलाढाला लम्बा पहनावा, लबादा।

चोचला—पु० नखरा, हाव-भाव।

चोज—पु० चमत्कारपूर्ण उक्ति, व्यंग्यपूर्ण हँसी। 'यह रस रसिक विलास है, जामें अति ही चोज।' चाचा हित०

चोट—स्त्री० प्रहार, आघात। सदमा, संताप।

चोटार—वि० चोट पहुँचानेवाला। चोट खाया हुआ।

चोटारना—अक्रि० चोट करना, प्रहार करना।

चोटिया—स्त्री० चोटी, बालोंकी लट।

चोटियाना—सक्रि० चोटी पकड़ना। चोट मारना।

चोटी—स्त्री० शिखर, चुंदी, शिखा,। गूँथे हुए बालोंकी लट। जूड़ेका एक गहना।

चोटी पोटी—वि० स्त्री० चिकनी चुपड़ी। बनावटी (बात) 'हम सों सदा दुरावति सो यह बात कहै मुख चोटी पोटी।' सूसु० २०७

चोट्टा—पु० चोरी करनेवाला, चोर।

चोप—पु० उमंग, रुचि, चाव, इच्छा। 'पावा नवल वसन्त पुनि बहु आरति बहु चोप।' प० ९४, (अ० १७)। उत्तेजना।

चोपदार, चोबदार—पु० सोने या चाँदीसे मढ़ा हुआ डंडा लेकर चलनेवाला नौकर।

चोपना—अक्रि० मुग्ध होना, आसक्त होना।

चोपी—वि० उत्साही। इच्छुक।

चोब—पु० सोंटा, नगाड़ा बजानेका डंडा, चाँदी या सोनेसे मढ़ा डंडा।

चोर—पु० चोरी करनेवाला, तस्कर।

चोरटी—स्त्री० स्त्री चोर (उ३० 'गोरटी')।

चोरना, चोराना,—सक्रि० चुराना, चोरी करना (छीन० २३८), 'देखु सखी मोहन मन चोरत।' सू० १२३, (सूवे० ६४, ३९१)

चोर मिहीचनी—स्त्री० आँख मिचौअलका खेल 'दोऊ चोर मिहीचनी खेल न खेल अघाय।' वि० २१९

चोराचोरी—क्रिवि० चोरीसे, चुपके चुपके (रवि०५०)।

चोल, चोली—स्त्री० स्त्रियोंका एक पहनावा 'पास वस्त्र ढाँकै नहीं क्या करै बपुरी चोल।' साखी ११

चोलना—पु० साधुओंका लम्बा कुरता, जामा 'काम क्रोधको पहिरि चोलना कंठ विषयकी माल।' सू० ११

चोला—पु० देखो 'चोली', 'चोलना', हरियर भूमि कुसुंभी चोला।' प० १६२। देह, शरीर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चोला—पु० देखो 'चोला'।

चोवा—पु० चोवा, एक सुगन्धित द्रव्य 'अतर गुलाब रस चोवा घनसार सब सहज सुवासकी सुरति बिसराती हैं।' मू० १५४

चोषना—सक्रि० देखो 'चोखना', दूध पीना 'केशोदास मृगज-बछेरू चोपैं बाघिनीन, चाटत सुरभि बाघ बालक बदन है।' राम० ५१८

चौंकना—अक्रि० भड़कना, झिझकना, चकित होना, सावधान होना (मुद्रा० ११५)। वि० भड़कनेवाला 'बैल चौंकना जोतमें औ चमकीली नार। ये बैरी हैं जानके कुसल करैं करतार।' घाघ

चौंटना—सक्रि० चुटकीसे तोड़ना 'मनु लुटि गो लौटनु चढ़त, चौंटत ऊँचे फूल।' बि० २८८

चौंध, चौंधी—स्त्री० तिलमिली, तेज़ रोशनीके सामने नज़रका न ठहरना 'चितवत मोहिं लगी चौंधीसी···' गीता० ३४६

चौंधना—अक्रि० चकाचौंध उत्पन्न करना, ज़ोरसे चमकना 'की दामिनि चौंधति चहुँदिसि की सुभग पीत पट फेरनि।' सू० १३५। चौंधिया जाना 'उठा चौंधि राघव चितहरी।' प० २२२

चौंधियाना—अक्रि० चकाचौंध होना, चमक इ० के कारण दिखाई न पड़ना।

चौंप—पु० देखो 'चोप', 'कबीर सोया क्या करै, जागनकी करु चौंप।' साखी १७४

चौंर—पु० चँवर 'भर्त भये प्रभु सारथि सोभन। चौंर धरे रवि-पुत्र बिभीषन।' के० २७। झुमका, फूँदना 'तापै चहूँ दिसि चन्द छपासे सुसोभित चौंर घने लटकाइये।' मुद्रा०

चौंराना—सक्रि० चँवर करना। झाड़ू देना।

चौंरी—स्त्री० बेणी बाँधनेकी डोरी। मक्खियाँ उड़ानेके लिए घोड़ेके बालोंका गुच्छा।

चौआई—स्त्री० चारों तरफसे बहनेवाली हवा। अफवाह।

चौआना—अक्रि० चकित होना, सकपका जाना।

चौक—पु० चौकोर जगह, आँगन 'चौकमें चौकी जराय जरी तेहि पै खरी बार बगारत सौंधे।' पदमा०। आटे, अबीर आदिकी लकीरोंसे बनाया गया चौखूँटा चित्र। 'बीथी सकल सुगंध सिंचाई। गजमनि रचि बहु चौक पुराई।' रामा० ५४०। सामनेके चार दाँत 'चमकहिं चारु किरीट जी नारी।' प० २१६। चौसर खेलनेका कपड़ा। चौकड़ी। चार वस्तुएँ।

चौकड़ी, चौकरी—स्त्री० छलाँग, कुलाँच। चतुर्थुनी, चारका समूह। चार घोड़ोंकी गाड़ी।

चौकन्ना—वि० होशियार, सतर्क।

चौकस—वि० पूरा, ठीक। होशियार, सचेत।

चौकसाई, चौकसी—स्त्री० होशियारी, सावधानी, निगरानी।

चौका—पु० सामनेके चार दाँतोंकी पंक्ति 'लाल लाल चमकत चुनी चौका बिह्न समान।' वि० ३९। लीपी हुई जगह। सीसफूल। चार बिन्दीवाला पत्ता। आटे आदिकी लकीरोंसे बना चौखूँटा चित्र 'चौके भाँति अनेक पुराई। सिंधुर मनिमय सहज सुहाई।' रामा० १५६।—लगाना = चौपट करना।

चौकी—स्त्री० पत्थर या लकड़ीका चौखूँटा आसन (उदे० 'चौक')। पहरा। जादू। एक तरहका जड़ाऊ तावीज 'चौकीकी चमकनपर डारूँ स्वेत दामिनी वारि।' चाचा हित०, 'सुभग हमेश कनक अँगिया नग नगन जरितकी चौकी।' सूवे० १४३

चौकीदार—पु० पहरेदार।

चौकोन—वि० चौखूँटा, चार कोनेवाला।

चौकोर—वि० चौकोना, चौखूँटा।

चौखट—स्त्री० द्वारमें लगी चार लकड़ियोंका ढाँचा, देहरी।

चौखानि—स्त्री० चार प्रकारकी सृष्टि (उद्भिज्ज, अंडज, स्वेदज, पिंडज) 'जाके उदर लोकत्रय जल थल, पंचतत्व चौखानि।' सू० ७३

चौखूँटा—वि० चौकोना।

चौगड्डा—पु० जहाँ चार गाँवोंकी सीमा या चार रास्ते मिलते हों।

चौगान—पु० एक तरहका गेंदका खेल (साखी ३७), 'एक काल अति रूपनिधान। खेलनको निकरे चौगान।' के० १५३। गेंद खेलनेका मैदान 'यहि विधि गये राम चौगान। सावकाश सब भूमि समान।' के० १४५। चौगान खेलनेकी लकड़ी (गीता० २९८), 'बाजु खड़ग चौगान गहि करौं सीस-रिपु गोइ।' प० ३१८

चौगुन, चौगुना, चौगून—वि० चतुर्गुण।

चौघड़ा, चौघरा—पु० चार खानोंवाला पात्र।

चौघर—वि० सरपट, घोड़ोंकी एक चाल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चौघोड़ी—स्त्री० चार घोड़ोंकी गाड़ी।
चौचंद—पु० चवाव, निन्दा, बदनामी।
चौचंदहाई—वि० स्त्री० निन्दा करनेवाली।
चौड़ा—वि० फैला हुआ, चकला। [❀ प० १६०
चौडोल—पु० एक बाजा 'आस पास बाजत चौडोला।' ❀
चौतनियाँ—स्त्री० चौबन्दी, चोली। बच्चोंकी टोपी।
चौतनी—स्त्री० चौगोशी टोपी (रामा० १३३, सूबे० ५४), 'लाल झँगा शिर चौतनी चारु लसैं कटिमें पटपीत सु काछे।' राम रसायन
चौतरा—पु० चबूतरा 'आई बुलाय कै चौतरा ऊपर ठाढ़ी भई सुख सौरभ सानी।' रघुनाथ
चौथ—स्त्री० मराठोंका एक कर। चतुर्थी, पखवारेका चौथा दिन। —का चाँद = भाद्र शुक्ल चतुर्थीका चन्द्रमा। इसके देखनेसे झूठा कलंक लगता है, ऐसा लोगोंका विश्वास है। 'तौ परनारि लिलार गुसाँई।' तजहु चौथ चन्दाकी नाईं।' रामा० ४३४
चौथपन, चौथापन—पु० चौथी अवस्था, वृद्धावस्था 'पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथेपन जेहि अजसु न होई।' रामा० २१९
चौथिया—पु० चौथे दिन आनेवाला ज्वर। एक नाप।
चौथी—स्त्री० विवाह हो चुकने पर चौथे दिनकी एक रीति।
चौदंता—वि० चार दाँतवाला, उद्दंड। पु० चार दाँतवाला हाथी (स्यामका) 'दूबौ आइ भिरे चौंदता।' [प० २१८
चौदस—स्त्री० चतुर्दशी।
चौदाँत—पु० दो हाथियोंकी लड़ाई।
चौधरी—पु० जाति या समाजका मुखिया।
चौप—पु० देखो 'चोप'। 'जब लगि मन मिल्यो नहीं तब नयी चौपके नावरी।' सूबे० ११७
चौपट—वि० नष्ट-भ्रष्ट, तबाह 'तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तब गाउँ।' रामा० ४६६। चारों ओरसे खुला हुआ।
चौपटहा, चौपटा—वि० नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला।
चौपड़—स्त्री० एक खेल।
चौपताना—सक्रि० तह लगाना।
चौपद—पु० चौपाया।
चौपहल, चौपहला, चौपहलू—वि० चार बाजुओंवाला।
चौपाया—पु० चार पाँवोंवाला पशु।
चौपार, चौपाल—स्त्री० बैठक। दालान 'बिसकर्मै सो हाथ सँवारा। सात खंड सातहि चौपारा।' प० १३८। एक तरहकी पालकी।
चौपुरा—पु० वह कुआँ जिसमें एक साथ चार मोट चल सकें।
चौबंदी—स्त्री० एक तरहकी कुरती।
चौबाई—स्त्री० चारों तरफसे बहनेवाली हवा। उड़ती खबर।
चौबारा—पु० कोठेके ऊपरका बँगला। खुली बैठक 'मनिमय रचित चारु चौबारे।' रामा० २४२
चौभड़—पु० खानेकी वस्तु चबानेका चौड़ा दाँत।
चौमार्ग—पु० चौराहा, चौरस्ता।
चौमासा—पु० वर्षाके चार मास, चातुर्मास।
चौमुख—क्रिवि० चारों तरफ। वि० चार मुखोंवाला।
चौमुहानी—स्त्री० चौराहा।
चौरस—वि० बराबर, समथल।
चौरस्ता, चौरहा, चौराहा—पु० चौमुहानी।
चौरा—पु० चबूतरा, वेदी। खुली बैठक। थोड़ा।
चौराई—स्त्री० देखो 'चौलाई'।
चौरासी—वि० अस्सी और चार। पु० चौरासी लाख योनि 'भ्रमत चौरासी यह जीव अविनासी...' दीन० १५५। एक तरहका घुँघरू 'चँवर लाग चौरासी बाँधे।'
चौरी—स्त्री० वेदी, छोटा चौरा (सूबे० ४२६)। [प० २५३
चौरेठा—पु० भिगोकर पीसा हुआ चावल।
चौलाई—स्त्री० एक तरहका साग।
चौवा—पु० चार बूटियों वाला पत्ता। चार अंगुलियों का समूह। चार अंगुल। पशु।
चौसई—स्त्री० गजी 'जाके खासा मलमल साफनके ढेर परे ताके आगे आनि करि चौसई रखाइये।' सुन्द० ७४
चौसर—पु० चौपड़का खेल। पु० चार लड़ोंका हार। 'चौसर चमेली चारु पहिरैं सिंगारहार लची कुचभार जीति लीनी है फलनियाँ।' रवि० २६
चौहट, चौहट्ट—पु० वह जगह जहाँ चारों तरफ दूकानें हों, चौक। चौराहा 'चौहट सुन्दर गली सुहाई। सन्तत रहहिं सुगन्ध सिंचाई।' रामा० ११८
चौहरा—वि० चार तहोंवाला, चौगुना 'दुहरे तिहरे चौहरे भूषन जाने जात।' बि० २८०
चौहैं—क्रिवि० चारों तरफ।
च्युत—वि० चुआ हुआ, भ्रष्ट, विमुख।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छ

छंग—पु० गोद, उछंग (सू० २३)।

छंगा, छंगू—वि० छः अँगुलियोंवाला।

छँगुनिया, छँगुली—स्त्री० कनिष्ठिका, सबसे छोटी [अँगुली।

छँछोरी—स्त्री० एक पकवान।

छँटना—अक्रि० छिन्न होना, अलग होना, चुना जाना।

छंडना—सक्रि० छाँटना। छोड़ना 'जानि सबै गुण दोष-न छंडै।' के० ९०

छँड़ाना—सक्रि० छुड़ाना, मुक्त कराना 'ऋषि हैं नहीं, कुश है नहीं लव लेइ कौन छँड़ाय।' के० ३३३, (सू० ७७)

छंद—पु० वर्ण, मात्रादिकी गणनाके अनुसार रचित वाक्य। वेद-वाक्योंका भेद। स्वेच्छाचार। इच्छा। समूह। छल, कपट। चेष्टा, व्यवहार 'घाट धर्‌यो तुम इहै जानि कै करत ठगनके छंद।' सूवे० १४४। चालबाज़ी, युक्ति। छलछंद = धोखेबाज़ी।

छंदबंद—पु० धोखा, कपट।

छ—वि० चार और दो। चंचल। स्वच्छ। पु० काटना। काटा हुआ अंश, खंड। गृह। ढकना।

छई—स्त्री० क्षय रोग। वि० नष्ट होनेवाला।

छक—स्त्री० नशा, लालसा (?) 'मेरे छक है गुननकी सुनो खोलि कै कान।' चाचा हित० (व्रज० ३९०)

छकड़ा—पु० बैलगाड़ी।

छकना—अक्रि० तृप्त होना, अघाना। मतवाला होना 'भैंस्ती मोहि भटू केहि कारन कौन की धौं छविसों छकती हो।' देव। अक्रि० हैरान होना, चकराना।

छकाछक—वि० परितृप्त, परिपूर्ण। नशेमें चूर।

छकीला—वि० छका हुआ, मस्त 'छबीले छकीले अरुनी-लेसे नसीले आली, नैना नँदलालके नचीले औ नुकीले हैं।' ललित कि० [जुआ। होश।

छक्का—पु० छः बिन्दियोंवाला पत्ता, जुएका एक दाँव,

छग, छगड़ा—स्त्री० बकरा।

छगन—पु० नन्हा सा प्यारा बच्चा। वि० छोटे बच्चेके लिए प्रेमका शब्द।—मगन = बच्चोंके लिए प्यारका शब्द। हँसता खेलता बच्चा 'कहा काज मेरो छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलायो।' सू० १८८

छगल—पु० बकरा। एक पेड़।

छगुनी—स्त्री० देखो 'छँगुनिया'।

छछिआ, छछिया—स्त्री० छाँछ। छाँछ पीनेका छोटा बर्तन 'ताहि अहीरकी छोहरियाँ छछिया भर छाँछ पै नाच नचावैं।' रसखानि

छछूँदर—पु० चूहेकी तरहका एक जन्तु। साँप छछूँदर-की गति = ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर हानि या रुकावट हो 'धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छछूँदर केरी।' रामा० २२५

छजना—अक्रि० सोहना, अच्छा लगना। ठीक जँचना।

छज्जा—पु० दीवारके बाहर निकला हुआ कोठेका भाग। ओलती, दीवारके बाहर निकला हुआ छतका भाग। 'छज्जे महलन देखिके मन हरष बढ़ावत।' सूवे० २७७

छटकना—अक्रि० सटकना, दूर होना, उछलना।

छटकाना—सक्रि० छटक जाने देना, छुड़ाना, बलपूर्वक खींच लेना।

छटपटाना—अक्रि० व्याकुल होना, तड़फना।

छटाँक, छटाक—स्त्री० पावका चतुर्थ भाग।

छटा—स्त्री० शोभा, छवि, प्रकाश। बिजली। लड़ी, सर 'मोतिनकी बिथुरीं शुभ छटैं। हैं उरझी उरजातन लटैं।' के० २६५

छट्ठी, छठी—स्त्री० जन्मसे छठवाँ दिन 'छठी छत्रपतिनको जीत्यो भाग अनायास जीत्यो नामकरनमें करन प्रवाहको' भू० २। छठीमें न पड़ना = प्रकृतिमें न होना, भाग्यमें न होना 'पढ़िबो पर्‌यो न छठी छमत रिगु जजुर अथर्वन सामको।' विन० ३७४

छठ—स्त्री० पाखकी छठी तिथि।

छड़—स्त्री० सीधा, पतला डंडा।

छड़ना—सक्रि० छोड़ना 'बाँह तुम्हारी नेकु न छड़िहौं महरि खीझिहैं हमकों।' सूवे० ७८

छड़ा—पु० पैरका एक गहना, लच्छा। [❀ सुदामा० ६

छड़िया, छड़ीदार—पु० द्वारपाल, डेवढ़ीदार 'द्वार खड़े प्रभुके छड़िया तहँ भूपति जान न पावत नेरे।' ❀

छड़ी—स्त्री० हाथमें लेनेकी पतली लकड़ी। झंडी।

छत—क्रिवि० रहते हुए, होते हुए 'गनती गनिबेतें रहे छतहू अछत समान।' वि० ११६। पु० क्षत, घाव। स्त्री० पाटन, दीवारोंके ऊपर पाटा हुआ फर्श।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छतना—पु० पत्तोंका बना छाता, (मधुमक्खी आदिका) छत्ता 'अक्ष वामर नेदि तत्क्षण छत्रधा छतना करे।' राम० ४८९

छतनार—वि० (छाते इ० की तरह) फैला हुआ।

छतरी, छतुरी—स्त्री० पत्तोंका बना छाता। छाता। चँदोवा 'मंडप कंचनको एक सोहै। सेत तहाँ छतुरी मन मोहै।' के० १७०, दे० छत्री।

छता—पु० छाता। [ललित० ७४

छति—स्त्री० हानि, नुक्सान।

छतिया—स्त्री० छाती।

छतीसा—वि० चालबाज़, चतुर। धूर्त्त।

छत्ता—पु० छतरी। मधुमक्खी आदिके रहनेका घर। कमलका बीज-कोष। छत्रसाल।

छत्र—पु० राजाओंका छाता। छतरी। कुकुरमुत्ता।

छत्रक—पु० कुकुरमुत्ता (रामा० १३८, व्रज० ९१)।

छत्रधर,-धारी—पु० छत्र धारण करनेवाला, राजा। राजाके ऊपर छाता लगानेवाला नौकर।

छत्रपति—पु० राजा।

छत्री—पु० क्षत्रिय। महलकी बुर्जी, छतरी 'लसैं पीत छत्री मढ़ी ज्वाल मानो।' राम० ३५१। वि० छत्र धारण करनेवाला।

छदंब, छदम—पु० बहाना, छल, गोपन 'लगत न लाज लजावत संतन करतहिं दंभ छदंब विहानी।' [ललित कि०

छद—पु० आवरण, पंख।

छदाम—पु० पैसेका चतुर्थांश।

छद्म—पु० छल। छिपाव। बहाना, मिस।

छन—पु० क्षण। समय। अवसर। उत्सव, आनन्द।

छनक—पु० एक क्षण, थोड़ी देर। स्त्री० झनक, झनझनाहट। भड़क। फुर्ती।

छनकना—अक्रि० पानी आदिका जल जाना, उड़ जाना 'अब नहिं बचै क्रोध नृप कीन्हों जैहै छनक तवा ज्यों पानी।' सूबे० २५०। झनझनाना। बिचकना, भड़कना।

छनछनाना—अक्रि० 'छन छन' शब्द होना।

छनछवि—स्त्री० बिजली।

छनदा—स्त्री० रात्रि 'दिन छनदा छाकी रहत, छुटत न छिन छवि छाक।' बि० ९२। बिजली (रस० मति० ८१)

छनना—अक्रि० छोटे छोटे छिद्रोंसे होकर निकलना, साफ हो जाना। छिद जाना। घीमें पकना। पु० छाननेका कपड़ा।

छनभंगु—वि० क्षणभरमें नष्ट होनेवाला, नाशवान् 'राम काज छनभंगु शरीरा।' रामा० २९०

छनिक—पु० एक क्षण। क्रिवि० क्षणभर। वि० अनित्य, एक क्षण रहनेवाला।

छपका—पु० छींटा। छापा। कबूतर फँसानेका जाल।

छपद—पु० षट्पद, भौंरा 'जीते जोर जंग अति अतुल उतंग तन दूनी श्याम रंग छवि छपदनि छायेलें।' [ललित० ७४

छपन—पु० संहार, नाश।

छपना—अक्रि० छिपना 'ग्वाल कवि कहै मृगमदके धुकाये धूम ओढ़ि ओढ़ि धार भार आगहू छपीसी जाइ।' -ग्वाल। छापा जाना।

छपर छपर—वि० तराबोर 'बरसै मेह चुवहिं नैनाहा। छपर छपर होइ रहि बिनु नाहा।' प० १७२

छपरी—स्त्री० झोपड़ी।

छपवैया—पु० छापने या छपवानेवाला।

छपा—स्त्री० रात्रि।

छपाकर, छपानाथ—पु० क्षपाकर, चन्द्रमा।

छपाना—सक्रि० छिपाना 'जहाँ जुगुतिसों आनको कहिए आन छपाय।' भू० ३२। सक्रि० चिह्नित कराना, मुद्रित कराना।

छपाव—पु० छिपाव, दुराव।

छप्पर—पु० छाजन।

छप्परबंद—वि० जिसने घर बना लिया हो। बसा हुआ। पु० एक जाति, छप्पर छानेवाला।

छब, छबि—स्त्री० शोभा।

छबीला—वि० सुन्दर, शोभायुक्त।

छम—वि० योग्य, समर्थ। पु० शक्ति, बल। स्त्री० पानी बरसने वा घुँघरू इत्यादि बजनेकी आवाज़।

छमकना—अक्रि० छमछम करना। ठमकना।

छमछम—स्त्री० देखो 'छम' स्त्री०। क्रिवि० 'छमछम' करते हुए।

छमना—सक्रि० क्षमा करना 'छमहु चूक अनजानत केरी।' रामा० १५२

छमा—स्त्री० क्षमा, माफी। [छमाई।' रघु०

छमाई—स्त्री० क्षमा करनेका काम 'करहु नाथ अपराध

छमाना, छमवाना—सक्रि० क्षमा कराना 'सूर श्याम युवतिनसों कहि कहि सब अपराध छमाहीं।' सूबे० २०२

छमापन—पु० क्षमा करनेकी क्रिया।

छमावान—वि० क्षमा करनेवाला, सहनशील।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छमुख—पु० कार्त्तिकेय।
छय—पु० क्षय, विनाश।
छर—पु० छल, धोखा 'बीच पाइ नीच बीच ही छरनि छरयो हौं।' विन० ६०३, (उद्दे० 'आँटना', प० १११)। वि० क्षर, नाशवान्।
छरकना—अक्रि० छलकना। बिखरना। उछलते हुए भागना। बिचकना।
छरछंद—पु० छलछन्द, चालबाज़ी।
छरछंदी—वि० धूर्त्त, कपटी 'भूषन भनत छरछंदी मतिमन्द महा सौ सौ चूहे खायकै बिलारी बैठी तपके।' भू० १५६
छरछर—पु० कणों इ० के गिरनेका शब्द। छड़ी इ० के लगनेकी हलकी आवाज़।
छरछराना—सक्रि० छरछर करके गिराना। अक्रि० चुनचुनाना, घावपर नमक लगनेकी सी पीड़ा होना।
छरना—अक्रि० झरना, टपकना, बहना, दूर होना 'खग मोहे मृगयूथ भुलाने, निरखि मदन छवि छरत।' सू०। सक्रि० साफ करना। छलना, धोखा देना। मोहित करना 'योगी कौन बड़ो शंकरतें ताको काम छरे।' सू० ३
छरभार—पु० कामकी जिम्मेदारी, झंझट (विन० २६५)।
छरहरा—वि० हलका, पतला। चुस्त, फुरतीला।
छरा—पु० रस्सी। इज़ारबन्द, नारा। लड़ी। पाँवका एक गहना 'रेसमके गुन छीजि छरा करि छोरति ऐंचि सनेह रचावै।' रवि० १८
छरिया—पु० देखो 'छड़िया'।
छरी—स्त्री० छड़ी। साँटी। पतली लकड़ी। वि० छली, कपटी, धूर्त्त।
छरीदा—वि० अकेला, जिसके पास बोझ-इ० न हो।
छरीदार—पु० पहरेवाला, रक्षक 'आये दरबार बिलखाने छरीदार देखि जापता करनहारे नेकहू न मनके।'
छरोरा—पु० खरोंच। [भू० १४, (उदे० 'छिरकना').
छर्दि—स्त्री० कै। वमनका रोग।
छर्रा—पु० लोहे इ० के छोटे कणोंका समूह।
छल—पु० बहाना, धोखा।
छलकना—अक्रि० उछल कर बाहर गिरना, उमड़ना। 'नीर भरी अलकैं निचुरैं छुटिकै छलकैं मनौ माँगके मोती।' रवि० २३, '...सरजाके दृगन उछाह छलकत हैं—भू० १२८। चमकना, शोभित होना 'भाल बिसाल तिलक छलकाहीं। कच बिलोकि अलि-अवलि लजाहीं।' रामा० १३३
छलछंद—पु० चालाकी, धोखेबाज़ी। [(आँख)।
छलछलाना—अक्रि० 'छल छल' शब्द करना। भर आना
छलछाया—स्त्री० कपटजाल, माया 'पालु बिबुध-कुल करि छलछाया।' रामा० ३४०
छलछिद्र—पु० कपटमय बर्त्ताव, चालबाज़ी।
छलना—सक्रि० धोखा देना। स्त्री० धोखा।
छलनी—स्त्री० आटा इ० छाननेका बरतन, चलनी।
छलांग—स्त्री० उछाल, कुदान, चौकड़ी।
छला—पु० अँगुलीमें पहननेका आभूषण। एक तरहकी सादी अँगूठी (उदे० 'छिगुनी')। झलक, दीप्ति।
छलाई—स्त्री० छलयुक्तता, धूर्त्तता।
छलाना—सक्रि० धोखा दिलाना।
छलावा—पु० तुरंत अंतर्हित हो जानेवाली भूतादिकी छाया, अगिया बैताल।
छलित—वि० वंचित, जो ठगा गया हो।
छलिया—वि० छल करनेवाला, धोखा देनेवाला।
छली, छलीक—वि० छलिया, धोखा देनेवाला 'किन किनकी मति नहिं छली तू मरुकूप छलीक।' दीन० २१०
छल्ला—पु० देखो 'छला'। कड़ी, रिंग।
छल्लेदार—वि० छल्लायुक्त, जिसमें घेरे हों। घुँघराले।
छवना—पु० देखो 'छौना'।
छवा—पु० किसी चौपायेका बच्चा। पु० एड़ी 'छूटे छवानि लौं केस बिराजत तार बड़े तम तार हनेसे।' रवि० ८४
छवाई—स्त्री० छानेकी मज़दूरी। छानेका कार्य।
छहरना—अक्रि० बिखरना, इधर उधर फैल जाना।
छहराना—अक्रि० इधर उधर फैलना, छितराना 'लसत कपोल अमोल गोल अति तनक गलक छहराही।' रघु० ४३। सक्रि० फैलाना 'यों सिर पै छहरावत छार हैं जाते उठे असमान बगूरे।' सू० ११५। भस्म करना।
छहियाँ—स्त्री० छाया (दूबे० ७४)।
छाँ—स्त्री० छाया।
छाँक—पु० टुकड़ा। देखो 'छाक'। 'एक ग्वालि मंडली करि बैठति, छाँक बाँटिकै देति।' सू० २६२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छाँगुर—वि० देखो 'छंगा'।

छाँछ—पु० मट्ठा, मही (उदे० 'छछिया')।

छाँट—स्त्री० कै। कतरन। भूसी। काटनेकी क्रिया।

छाँटना—सक्रि० चुनना, अलग करना, काटना।

छाँड़ना—सक्रि० छोड़ना 'तातें ऋषिराज सबै तुम छाँड़ौ। भूदेव सनाढ्यनके पद माँड़ौ।' के० ७ (उदे० 'अंबा')

छाँदना—सक्रि० कसना, जकड़ना।

छाँदा—पु० पकवान। हिस्सा। [(रवि० १४)।

छाँवड़ा—पु० छौना, पशुका छोटा बच्चा। छोटा बालक

छाँह, छाँहीं—स्त्री० छाया 'देखि दुपहरी जेठकी छाँहौ चाहत छाँह।' वि० २८। छायी हुई जगह। प्रतिबिम्ब। बचावका स्थान, शरण।

छाँहगीर—पु० छत्र। आईना।

छाक—स्त्री० कलेवा, वह भोजन जो चरवाहे, इत्यादि दोपहरको कामसे छुट्टी पाकर करते हैं 'दही भातकी छाक मँगावत ग्वालन सँग मिलि खाते।' सूवे० १४४। नशा, मद (उदे० 'छनदा')। इच्छापूर्त्ति 'कबीर हम गुरु रस पिया बाकी रही न छाक।' साखी ५०

छाकना—अक्रि० छकना, अघाना, मतवाला होना। 'कै कलि काल कराल न सूझत मोह मार मद छाके।' विन० ५१५, (सुन्द० ६४)

छाग—पु० बकरा।

छागल—स्त्री० पाँवका एक गहना। छोटी मशक। पु० बकरा।

छाछ, छाछि—स्त्री० देखो 'छाँछ'।

छाज—पु० छप्पर, सूप।

छाजन—स्त्री० छप्पर। कपड़ा 'छाजन भोजन प्रीतिसों दीजै साधु बुलाय।' साखी १३०। अपरस नामक रोग।

छाजना—अक्रि० सुशोभित होना 'तेज-निधाननिमें रबि ज्यों छबिवंतनमें बिधु ज्यों छबि छाजै।' भू० ६। शोभा देना, अच्छा लगना 'तो करसों छिति छाजत दान है दानहूसों अति तो कर छाजै।' भू० ८८

छाजा—पु० देखो 'छज्जा'।

छात—पु० छतरी, राजछत्र (प० ६)। आधार। वि० दुर्बल। छिन्न।

छाता—पु० छत्ता, छतरी, छातीका घेरा।

छाती—स्त्री० सीना, वक्षःस्थल, हृदय, मन। —**जलना**, —**दहना** = दुःखसे या क्रोधसे हृदय पीड़ित होना 'सोइ करै बिबध उपाय जातें अधिक तुव छाती जरै।' विन० ३२१, 'बहइ न हाथ दहइ रिस छाती।' रामा० १५१। —**जुड़ाना** = हृदय संतुष्ट करना। —**भर आना** = प्रेमकी प्रबलता या करुणाके आवेगसे गद्गद् होना। दूध उतरना।

छात्र—पु० विद्यार्थी।

छात्रवृत्ति—स्त्री० किसी छात्रको विद्याध्ययनार्थ नियमित रूपसे मिलनेवाला धन। [† आवरण।

छादन—पु० ढँकने या छिपानेका कार्य। छिपाव।

छान—स्त्री० देखो 'छानि'। पशुओंके पाँव बाँधनेकी रस्सी।

छानना—सक्रि० पानी इत्यादिको महीन कपड़े या चलनीके पार निकालना। छेदकर पार करना। नशा पीना 'प्रेम बारुनी छानि के बरुन भये जलधीस।'—रससखानि। अलग करना, बिलगाना। जाँचना, खोज करना। धीमें पकाना (पुड़ी इ०)। रस्सीसे बाँधना, कसना।

छानबीन—स्त्री० बारीक जाँच, पूर्ण समीक्षा या अनुसन्धान।

छाना—सक्रि० ऊपर ढाँकना या आच्छादित करना 'पुनि पापिनिहि बूझि का परेऊ। छाइ भवनपर पावक धरेऊ।' रामा० २२१। शरणमें लेना, फैलाना, बिछाना। अक्रि० फैलना, बिछ जाना, भर जाना, बसना, टिकना 'चित्रकूट रघुनन्दन छाये। समाचार सुनि सुनि मुनि आये।' रामा० २६३

छानि, छानी—स्त्री० घास फूसकी छाजन, छप्पर 'कलिमें नामा प्रगटियो ताकी छानि छवावै।' मू वि० ७

छाप—स्त्री० ठप्पे, मुहर आदिका चिह्न, मुद्रा। 'आनुहि दान पहरि ह्याँ आये कहाँ दिखावहु छाप।' सूवे० १३३, 'दै छवि छापैं करै मन छाप सु छीपनि बाल छिपै न छिपाई।' रवि० १८। एक तरहकी ठप्पादार अँगूठी। वैष्णवोंके शरीरपर अंकित किये गये चिह्न।

छापना—सक्रि० ठप्पे इ० से अंकित करना, मुद्रित करना।

छापा—पु० ठप्पे इत्यादिसे अंकित चिह्न। ठप्पा, मुहर, मुद्रणयंत्र। वैष्णवोंके शरीरपर अंकित शंख चक्रादिके चिह्न 'जप माला छापा तिलक सरै न एकौ काम।' वि० ६३। आकस्मिक आक्रमण।

छाम—वि० दुबला, क्षीण 'नेक न जानी परत यों परयो विरह तन छाम।' वि० ५२

छामोदरी—वि० स्त्री० कृशोदरी, जिसका पेट छोटा हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छायल—पु० औरतोंका एक तरहका पहरावा (प० १५८)।
छाया—स्त्री० देखो 'छाँह'।
छार—स्त्री० राख, भस्म 'भानु कमल कुल पोषनिहारा। बिनु जर जारि करइ सोइ छारा।' रामा० २०७। धूल (विन० ६२३)। क्षार, नमक।
छाल—स्त्री० वृक्षका ऊपरी आच्छादन, वल्कल। एक तरहकी मिठाई।
छालटी—स्त्री० छाल या पाटका बना कपड़ा।
छालना—सक्रि० छानना, साफ करना। छेद करना। धोना।
छाला—पु० फफोला, झलका। छाल, चर्म (रामा० ३७८)। पत्र 'तब उदंत छाला लिखि दीन्हा।' प० १०९
छालित—वि० प्रक्षालित, धोया हुआ 'रघुपति-भक्ति-बारि छालित चित, बिन प्रयास ही सूझै।' विन० २९९
छावना—सक्रि० देखो 'छाना' (सू० २०७)।
छावनी—स्त्री० सेनाका पड़ाव, डेरा। छप्पर।
छावरा—पु० छौना, पशुका बच्चा (भू० १०४)।
छाह—स्त्री० छाछ, मही।
छिंगुनिया, छिंगुनी, छिंगुलिया, छिंगुली—स्त्री० सबसे छोटी अँगुली 'मखतूल गुहे घुँघरू पहिराय, छला छिंगुनी चित चाड़िलीके।' हठी
छिछ, छिछि—स्त्री० धार, छींटा, बूँद 'सोनित छिछ उछरि आकासहिं, गज बाजिन सर लागी।' सू० ४२
छिड़ाना—सक्रि० छुड़ा लेना, छीनना।
छि—अ० घृणा, अरुचि इ० का सूचक शब्द।
छिउँकी—स्त्री० एक तरहकी चींटी।
छिगुनिया, छिगुनी, छिगुली—स्त्री० देखो 'छिंगुनी'।
छिच्छ—स्त्री० देखो 'छिछ'।
छिछला—वि० उथला।
छिछोरपन—पु० क्षुद्रता, नीचता।
छिछोरा—वि० क्षुद्र प्रकृतिका, ओछा।
छिटकना—अक्रि० चारों ओर फैल जाना, छितराना 'छिटकि रहीं चहुँदिशि जु लटुरियाँ लटकन लटकत भालकी।' सूबे० ५६, 'चहूँ खंड छिटकी वह आगी।' प० १७७।
छिड़कना—सक्रि० सींचना, छींटे डालना, भुरकना।
छिड़काव—पु० सिंचाई।
छिड़ना—अक्रि० शुरू होना।
छिण—पु० क्षण, थोड़ा समय।
छितनी—स्त्री० छिछली टोकरी।
छितराना—सक्रि० फैलाना, बिखराना। अक्रि० बिखरना।
छिति—स्त्री० धरती, पृथिवी 'छिति जल पावक गगन समीरा।' रामा० ४०१। एककी संख्या।
छितिकंत,-नाथ,-पाल—पु० राजा, भूपाल।
छितिरुह—पु० पेड़।
छितीस—पु० राजा।
छिदना—अक्रि० चुभना, विधना।
छिद्र—पु० छेद, विवर। त्रुटि। अवकाश, मौक़ा।
छिद्रान्वेषी—वि० दूसरेके दोष ढूँढ़नेवाला, त्रुटि निकालनेवाला (विन० ५७६)।
छिन—पु० देखो 'छन'।
छिनक—क्रिवि० थोड़ी देर, क्षणभर (उदे० 'गवनना')।
छिनकना—सक्रि० (नाक) साफ करना।
छिनछवि, छिनौछवि—स्त्री० बिजली 'जोति जवाहिरकी मतिराम नहीं सुरचाप छिनौछवि छाजैं।' ललित० ५७
छिनदा—स्त्री० रात्रि।
छिनभंग—वि० क्षण भरमें नष्ट होनेवाला, नाशवान् 'यह तन अति छिनभंग धुँवेको धौलहर।' नागरी०
छिनरा—पु० व्यभिचारी पुरुष, लंपट।
छिनाना—सक्रि० छुड़ाना, अपहरण करना। छीननेका काम कराना। छेनीसे कटवाना।
छिनार, छिनाल—वि० स्त्री० दुराचारिणी, कुलटा। स्त्री० पर-पुरुष-गामिनी स्त्री।
छिन्न—वि० कटा हुआ, खंडित।
छिन्न भिन्न—वि० टूटा-फूटा, अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त।
छिपकली—स्त्री० बिसतुइया, पल्ली। एक कर्णाभूषण।
छिपना—अक्रि० आड़में होना, लुकना। अदृश्य होना।
छिपाना—सक्रि० गोपन करना, आड़में करना, गुप्त रखना, प्रकट न करना।
छिपी—पु० देखो 'छीपी'। दर्जी (बुंदेलखंड) 'जूझ्यो नंदन छिपी सभागौ। ब्यौतन लग्यो इन्द्र कौ बागौ।' छत्र० ११२ [राम० ४१९
छिप्र—क्रिवि० शीघ्र 'तपी जपी विप्रन छिप्र ही हरौं।'
छिमा—स्त्री० देखो 'छमा'। 'छिमा बड़ेनको चाहिये छोटेनको उत्पात।' रहीम २०
छिया—स्त्री० घृणित वस्तु, मल। देखो 'छी-पु०'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(रवि० २७) । स्त्री० लड़की । वि० घृणित, मलिन, तुच्छ 'भूपन भनत जाकी साहिबी सभाके देखे लागैं सब और छितिपाल छितिमें छिया ।' भू० ४ । छिया छरद करना = छी छी करना, घृणा करना 'जन्मते इकटक लागि आशा रही विषय विष खात नहिं तृप्त मानी । जो छिया छरद करि सकल संतन तजी तासु मतिमूढ़ रस प्रीति ठानी ।' सूवि० ३०

छिरकना, छिलकना—सक्रि० छिड़कना (सू० १५४), 'धसि केसरि स्यों बहु विविधि नीर । छिति छिरके चर थावर सरीर ।' के० ११०, 'नहिं बरस्यो नहिं छिरक्यो काहू कहुँ धौ गयो बिलाय ।' सूवे० ९४ । डाँटना, दपटना 'छरीदार बैगार विनोदी, छिरकि वाहिये कीने ।' सू० ३

छिलका—पु० बकला, भूसी, बाह्य आवरण ।

छिलछिला—वि० छिछला, उथला 'सदा प्रफुलित रहैं जल विनु निमिष नहिं कुम्हिलाहिं । देखि नीर जो छिलछिलो अति, समुझि कछु मन माहिं ।' सू० १९

छिलना—अक्रि० रगड़ खाना, खरोंच जाना ।

छींक—स्त्री० नाक और मुखसे, आवाज़के साथ, वायुका सवेग निकलना (रामा० २९०)

छींकना—अक्रि० छींक लेना ।

छींट—स्त्री० पानी इ० की बूँद । एक बूटीदार कपड़ा 'आनन रहीं ललित पय छींटैं छाजत छवि तृन तोरे ।' सू० ९४

छींटना—सक्रि० छिटकाना, छितराना (मुद्रा० ४३) ।

छींटा—पु० देखो 'छींट' । छिछला टोकरा । छिपा हुआ आक्षेप ।

छी—अ० अरुचि, घृणा इ० प्रकट करनेका शब्द । पु० कपड़ा कचारते समय धोबियोंके मुखसे निकलनेवाला शब्द ।

छीका—पु० सिकहर, सीका 'मैं बालक बहियनको छोटो छीको किस विधि पायो ।' सू०, 'सुभग ढकनियाँ ढाँपि बाँधि पट जतन राखि छीके समदायो ।' सूवे० १६२

छीछड़ा—पु० मांसका बेकाम टुकड़ा ।

छीछालेदर—स्त्री० दुर्गति, दुर्दशा ।

छीज—स्त्री० कमी, ह्रास (प० १५४) ।

छीजना—अक्रि० कम होना, क्षीण होना 'मर्कट मनुज अहार हमारे लखत बिचारे छीजैं ।' रघु० २२७, 'मज्जन करिय समर स्रम छीजइ ।' रामा० ५२७ । बिगड़ना, हानि होना 'लंकापति तिय कहति पिया सों, यामें कछू न छीजै ।' सू० ३७

छीटा—पु० खाँचा । बाँसका बना तवा जैसा पात्र ।

छीतना—सक्रि० डंक मारना । प्रहार करना ।

छीति—स्त्री० घटी, हानि ।

छीदा—वि० विरल, बहु छिद्रोंवाला ।

छीन—वि० क्षीण, दुर्बल 'कनक छरीसी कामिनी काहेको कटि छीन ।' आलम । मलिन । नष्ट 'तन तिनको मृत्यु न करति छीन ।' राम० ९२

छीनता—स्त्री० क्षीणता, कृशता, मलिनता ।

छीनना—सक्रि० अपहरण करना । छिन्न करना, काट डालना 'काटत ही पुनि भये नवीने । राम बहोरि भुजा सिर छीने ।' रामा० ५०७

छीना—सक्रि० छूना 'कौन सहाय करैगो वा छिन, पानी पात न जब छीवौंगी ।' ललित कि०, 'स्वान प्रसादहिं छी गयो, कौवा गयो बिटारि ।' व्यास जी, (रवि० ६६)

छीनाखसोटी—देखो 'छीना झपटी' ।

छीना छीनी, छीना झपटी—स्त्री० ज़बरन या लड़भिड़ कर लेनेकी क्रिया, लेवालेई ।

छीप—स्त्री० छाप, धब्बा । एक चर्म रोग । सीप । वह लकड़ी जिससे मछली फँसानेकी कटिया लटकायी जाती है । वि० वेगवान्, तेज़ ।

छीपी—पु० छींट छापनेवाला (उदे० 'छाप') ।

छीबर—स्त्री० बेल बूटेदार कपड़ा ।

छीमी—स्त्री० मटर इ० की फली ।

छीर—पु० दूध, खीर (उदे० 'बछरा') । छोर ।

छीरज—पु० दही ।

छीरधि—पु० क्षीरसागर 'छीरधिमें पंक कलानिधिमें कलंक, याते रूप एक टंक पु लहैं न तव जसको ।'† [† भू० १८

छीरप—पु० बच्चा ।

छीरसमुद्र,-सागर,-सिंधु,—पु० क्षीरसागर, दूधका समुद्र ।

छीलक—पु० छिलका 'भीतर तो कछु सार नहीं पुनि ऊपर छीलक अंबरदंभा ।' सुन्द० १८

छीलना—सक्रि० खरोंचना, छिलका अलग करना ।

छीलर—पु० छिछला गड्ढा, झील (सूरा० ११), 'वे दोउ हंस मानसरोवरके छीलरे क्षुद्र मलीन कैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'न्हातरी।' सूवे० २६२। वि० छिछला 'जैसे छीलर ताल जल घटत घटत घटि जाय।' वृंद सतसई

छुँगली—स्त्री० घुँघरूदार अँगूठी।

छुआछूत—स्त्री० छूतछातका विचार। अछूतको छूना।

छुआना—सक्रि० स्पर्श कराना।

छुईमुई—स्त्री० लजवन्ती या लज्जालु नामक पौधा।

छुगुनू—पु० घुँघरू।

छुच्छी—स्त्री० नाककी कील। चाँदी। छोटी नली।

छुट—अ० छोड़कर, सिवाय।

छुटकाना—सक्रि० छुड़ाना। त्यागना, छोड़ना, अलग [करना।

छुटकारा—पु० मुक्ति, रक्षा, त्राण।

छुटना—अक्रि० देखो 'छूटना' (रामा० ५१३)।

छुटपन—पु० लड़कपन। छोटाई।

छुटाना—सक्रि० मुक्त करना, छुड़ाना।

छुट्टा—वि० अकेला, बंधनरहित।

छुट्टी—स्त्री० अवकाश, तातील। मुक्ति, रिहाई। विदा।

छुड़ाना—सक्रि० मुक्त करना, अलग करना, छीनना।

छुत्—स्त्री० क्षुधा, भूख।

छुद्र—वि० नीच, कृपण, छोटा 'छुद्र नदी भरि चली तोराई।' रामा० ४०२

छुद्रघंट—पु०, छुद्रघंटिका—स्त्री० घुँघरूदार करधनी 'राखा छात चँवर औधारा। राखा छुद्रघंट झनकारा।' प० ३२५

छुद्रावलि—स्त्री० करधनी 'पीताम्बर कटिमें छुद्रावलि बाजत परम रसाल।' सू० ११२

छुधा—स्त्री० क्षुधा, भूख।

छुधित—वि० भूखा 'छुधित बहुत अघात नाहीं निगम द्रुम दल खाइ।' सूवि० २१

छुपना; छुपाना—देखो 'छिपना'; 'छिपाना'।

छुभित—वि० क्षुब्ध, घबराया हुआ, विचलित।

छुभिराना—अक्रि० क्षुब्ध होना, विचलित होना।

छुरधार—स्त्री० छुरेकी धार। तीक्ष्ण धार 'देव विकटतर वक्र छुरधार प्रमदा तीव्र दर्प कंदर्प खरखड्ग धारा।' विन० १८८

छुरा—पु० बड़ी छुरी, उस्तरा।

छुरी—स्त्री० तरकारी इ० काटनेका औज़ार, चाकू।

छुलाना—सक्रि० छुवाना, स्पर्श कराना।

छुवना—सक्रि० स्पर्श करना।

छुवाना—सक्रि० स्पर्श कराना (वि० १५९)।

छुहना—अक्रि० छू जाना। रँगा जाना, पुतना, चित्रित होना 'छुहे पुरट घट सहज सुहाये। मदन सकुच जनु नीड़ बनाये।' रामा० १८८

छुहाना—सक्रि० दया करना, प्रेम करना।

छुहारा—पु० एक तरहका खजूर। खजूरका फल।

छुही—स्त्री० पोतनेकी सफेद मिट्टी।

छूँछा—वि० रिक्त, निस्सार, निष्फल 'मैं सब कीन्ह तोहि बिन पूछे। तेहिते परेउ मनोरथ छूँछे।' रामा० २१४

छूट—स्त्री० मुक्ति, छुटकारा। किसी कामका भूलसे न किया जाना। ऋण इत्यादिका छोड़ देना। स्वतंत्रता। फुरसत।

छूटना—अक्रि० अलग होना, दूर होना 'कपट न छूटे हरि गुन गावत।'—व्यासजी। खुल जाना, मुक्त होना, टूटना, बन्द हो जाना। चल पड़ना, वेगके साथ निकलना। बाकी बच रहना। भूलसे रह जाना।

छूत—स्त्री० स्पर्श। अपवित्र वस्तुके छूनेका दोष।

छूना—सक्रि० स्पर्श करना, बहुत कम प्रयोगमें लाना। पोतना। अक्रि० स्पृष्ट होना।

छूरा—देखो 'छुरा'।

छेंकना—सक्रि० घेरना 'सुना साहि गढ़ छेंका आई।' प० १०। रोकना 'प्रभु करुनामय परम विवेकी। तनु तजि रहत छाँह किमि छेंकी।' रामा० २४५। जगह लेना, स्थान घेरना। लकीरसे काटकर ठीक करना, मिटाना।

छेक—पु० छेद, कटाव (साखी ७)।

छेटा—स्त्री० रुकावट, विघ्न। [काँचना।

छेड़ना—सक्रि० शुरू करना। उठाना, रोकना, तंग करना,

छेत्र—पु० क्षेत्र, खेत, स्थान 'राजा हुतो प्रबल दुष्ट अनेक हारी। वाराणसी विमल छेत्र निवासकारी।' के० ३०५

छेद—पु० छिद्र, सूराख, विवर, बिल। दोष। नाश। खंड।

छेदनहार—वि० छेदनेवाला, काटनेवाला (रामा० १४८)।

छेदना—सक्रि० भेदना, बेधना, चुभाना, काटना, घाव करना।

छेना—पु० पानी निचोड़ा हुआ फटा दूध। कंडा। अक्रि० क्षीण होना। सक्रि० छिन्न करना, काटना।

छेनी—स्त्री० टाँकी नामक औज़ार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छेम—पु० क्षेम, कुशल, कल्याण। सुख 'रच्यो परस्पर प्रेम छेम बाढ़्यो अति भारी।' श्रीभट्ट

छेमकरी—स्त्री० सफेद चील 'एरी छेमकरी कहा महा गगन भरमाय।' दीन० ५६

छेरी, छेली—स्त्री० बकरी (सू० १३)।

छेव—पु० आघात, चोट, घाव, 'कवि कहैं करन करन जीत कमनैत, अरिनके उर माहिं कीन्ह्यो इमि छेव है।' भू० २८। छिद्र 'भूषन भनत वह चहूँ चक्क चाहि कियो पातसाहि चकताकी छाती माहिं छेवा है।' भू० ३१। (छलछेव = छलछिद्र)। होने वाला अनिष्ट। अंत 'पर उपकारी सब जीवनके सारे काज कबहूँ न आवै जाके गुननिको छेव सो।' सुन्द० ७।

छेवना—सक्रि० काटना, चिह्न लगाना। सक्रि० मिलाना। **जीवपर छेवना** = जीपर खेलना 'जो अस कोई जिउ पर छेवा।' प० १३०, (उदे० 'केवा')

छेवा—पु० आघात, घात, छेद। (उदे० 'छेव')

छेह—पु० नाश, अन्त 'छीजत जाय घटै दिन ही दिन दीसत है घटको नित छेहा।' सुन्द० २५। आघात, चोट। दाँव (खेलका) 'गोपिन सँग निसि सरदकी रमत रसिक रसरास। लियो छेह अति गतिनको सबनु लखे सब पास।' वि० १२२। वि० खण्डित, न्यून। स्त्री० खेह, धूल, राख।

छै—स्त्री० क्षय, ह्रास, विनाश। वि० छः, पाँच और एक।

छैना—अक्रि० क्षीण होना, नष्ट होना।

छैया—पु० छोटा बच्चा 'कहति मल्हाइ लाइ उर छिन छिन छगन छबीले छोटे छैया।' गीता० २८३

छैल, छैला—पु० बना ठना आदमी, रँगीला, 'गयो अचानक आँगुरी छाती छैल छुवाय।' वि० १५९

छैलचिकनिया, छबीला—पु० छैला, बाँका।

छोंड़ा—पु० मथानी। लड़का।

छोंड़ि—स्त्री० मथानी। लड़की (कविता० २०७)। बड़ा सा बर्तन।

छोई—स्त्री० ईखकी पत्तियाँ, नीरस गँडेरी, तुच्छ या निस्सार वस्तु 'श्रीभट अटकि रहे स्वामीपन आन वृत्ते मानै सब छोई।' श्रीभट्ट

छोकड़ा, छोकरा—पु० बालक, कम उम्रवाला।

छोट, छोटा—वि० आकार, अवस्था आदिमें कम। क्षुद्र, लघु।

छोड़छुट्टी—स्त्री० सम्बंध न रहना, नाता टूटना।

छोड़ना—सक्रि० मुक्त करना, त्यागना, चलाना, माफ करना। डालना, बचाना, खोलना।

छोत—स्त्री० छूत (साखी ७४, १२१)।

छोनिप—पु० क्षोणिप, राजा।

छोनी—स्त्री० धरणी, पृथिवी 'सहज छमा बरु छाँड़इ छोनी।' रामा० ३१०

छोप—पु० मोटा लेप। छिपाव। आघात, प्रहार।

छोपना—सक्रि० थोपना, मोटा लेप चढ़ाना, ढकना, ग्रसना।

छोभ—पु० घबराहट, खलबली, विकलता 'संकर उर अति छोभु सती न जानइ मरम सोइ।' रामा० ३३

छोभना—अक्रि० चित्त डोलना, मन चंचल होना, क्षुब्ध होना 'लछिमन देखु विपिन कै सोभा। देखत केहि कर मन नहिं छोभा।' रामा० ३८६। मुग्ध होना। डरना 'सनीर जीमूत-निकास सोभहीं। बिलोकि जाको सुर सिद्ध छोभहीं।' राम० ४३५

छोम—वि० चिकना। मृदु, मुलायम।

छोर—पु० किनारा, नोक, अन्त, विस्तारकी सीमा।

छोरटी—स्त्री० लड़की (उदे० 'गोरटी')।

छोरना—सक्रि० देखो 'छोड़ना'। अपहरण करना, छुड़ाना 'चोरि सकै नहिं चोरक छोरि सकै नहिं भूप।' दीन० ८१

छोरा—पु० लड़का, पुत्र 'भो जमदग्नि तासु पुनि छोरा।' रघु० १२९, 'देखोरी, यह नन्दका छोरा बरछी मारे जाता है।' ललित कि०

छोरा छोरी—स्त्री० छीना झपटी, बखेड़ा।

छोरी—स्त्री० लड़की।

छोलदारी—स्त्री० छोटा तम्बू।

छोलना—सक्रि० छीलना, खुरचना 'सजि प्रतीति बहु विधि गढ़ि छोली। अवध साढ़साती तब बोली।' रामा० २०७

छोह—पु० अनुग्रह, कृपा (विन० ६१८)। 'मोसे वंचकको कृपालु छल छाँड़ि कै छोह कियो है।' विन० ४०३। प्रेम, ममता 'रहिमन मछरी नीरको तऊ न छाँड़त छोह।' रहीम [प्रेम करना।

छोहना—अक्रि० क्षुब्ध होना, विचलित होना। दया या

छोहरा—पु० छोरा, लड़का '...काहे मुनि मेरे छोटे छोहरा पै दयावान ना भये।' रघु० ५७, (सूबे० २८३)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छुहारा 'ऊधो मनमानेकी बात। दाखि छोहरा छाँड़ि अमृतफल, विषकीरा विष खात।' सू० २५६
छोहरिया, छोहरी—स्त्री० लड़की 'नौआ केरि छोहरिया मोहि सँग कूर।' रहीम ३६
छोहाना—अक्रि० अनुग्रह करना, प्रेम दिखाना 'पै सो पिता न हिये छोहाना।' प० १८४
छोहारा—पु० फल-विशेष।
छोहिनी—स्त्री० अक्षौहिणी। सेनाकी एक निश्चित संख्या।
छोही—वि० प्रेमी। स्त्री० गँडेरीकी सीठी 'रसहि छाड़ि छोही गहै कोल्हू परतछ देख।' साखी ८७
छौंक—स्त्री० बघार।
छौंकना—सक्रि० बघारना, तड़का देना।
छौंड़ा—पु० अनाज रखनेका गड्ढा। गड़हा।
छौना—पु० किसी पशुका बच्चा (उदे० 'इकौनी')।
छौर—पु० हजामत।
छ्वाना—सक्रि० स्पर्श कराना।

ज

जंग—स्त्री० युद्ध, समर। पु० (लोहेका) मोरचा।
जंगम—वि० चलने फिरनेवाला।
जंगरैत—वि० परिश्रमी, हाथ पाँव चलानेवाला
जंगल—पु० अरण्य, वन।
जँगला—पु० छड़दार खिड़की, कटहरा।
जंगली—वि० जंगलमें प्राप्य, जंगलमें रहनेवाला, बनैला।
जंगार—पु० एक रंग। ताँबेका कसाव।
जंगी—वि० फौजी, लड़ाऊ। विशाल।
जंघा—स्त्री० जाँघ, पिंडली।
जंघाल—पु० दूत, पायक, धावन। [होना।
जँचना—अक्रि० जाँचा जाना। ठीक या भला मालूम
जंजर, जंजल—वि० पुराना, टूटा फूटा, बेकाम।
जंजार, जंजाल—पु० बन्धन, उलझन, बखेड़ा। 'सेवाहू में दूर किय, विधि निषेध जंजार।'—ध्रुवदास, 'गृह कारज नाना जंजाला। रामा० २८। एक तरहकी बन्दूक या तोप (उदे० 'घरनाल')। पानीका भँवर।
जंजालिया—वि० झंझटिया, उपद्रवी, प्रपंची।
जंजीर—स्त्री० सिकड़ी, साँकल।
जंजीरा—पु० लहरिया।
जंतर—पु० यंत्र, तावीज। जंतर मंतर = टोना टोटका।
जंतरी—स्त्री० पत्रा। पु० बाजा बजानेवाला, जादूगर।
जंता—वि० यंत्रणा देनेवाला, शासन करनेवाला। पु० तार खींचनेका औज़ार।
जंतु—पु० प्राणी, जीव।
जंत्र—पु० यंत्र। तावीज। ताला।
जंत्रना—सक्रि० ताला लगाना, जकड़ना 'भरत भगति सबकै मति जंत्री।' रामा० ३४४। स्त्री० यंत्रणा, क्लेश।†
जंत्रित—वि० यंत्रित, जकड़ा हुआ, बन्द। [† शासन।
जंत्री—वि० यंत्रित करनेवाला। पु० बाजा बजानेवाला, बाजंत्री : बाजा। '...बिना तार तंत्री जीभ जंत्री सी बजत है।' रवि० ४८। स्त्री० पत्रा।
जंदरा—पु० जाँता। यंत्र।
जंपना—सक्रि० कहना 'यों कवि भूपन जम्पत है लखि सम्पतिको अलकापति लाजै।' भू० ६
जंबु—पु० जामुन।
जंबुक—पु० सियार। जामुन।
जंबुर, जंबूर—पु० एक तरहकी तोप (उदे० 'बदंगी')। तोपकी चर्ख।
जंबू—पु० काश्मीरका एक नगर। जामुन (ललित० ८७)।
जंबूरा—पु० एक औज़ार। तोपकी चर्ख।
जंभ—पु० जबड़ा या दाढ़। जँभाई। महिषासुरका पिता, जिसे इन्द्रने मारा था। जंभरिपु = इन्द्र।
जंभा—स्त्री० जँभाई।
जँभाई—स्त्री० आलस्यादिवश मुहँ खुलनेकी क्रिया।
जँभाना—अक्रि० जँभाई लेना।
जंभी, जंभीर—पु० एक तरहका नीबू।
ज—पु० मृत्युंजय। जन्म। जनक। विष्णु इ०। प्रत्य० उत्पन्न (जलज, मनोज)।
जई—स्त्री० जौकी तरहका एक अन्न। जौका अंकुर। अंकुर। फलोंकी बतिया 'परसि परम अनुराग सींचि सुख लगी प्रमोद जई।' सू० ११५
जईफ—वि० वयोवृद्ध।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जउवन—पु० यावन (विद्या० १२२)।

जऊ—क्रिवि० यद्यपि 'खेल तऊ न तजै जड़ जीव जऊ बड़वानल क्रोध डढ़ोई।' कृ० ७५

जकंद—स्त्री० उछाल, छलांग।

जकंदना—अक्रि० कूदना, झपटना, टूट पड़ना।

जक—स्त्री० हठ, जिद, धुन, रटना 'ज्यों त्रिदोष उपजे जक लागत बोरत वचन न सूझो।' सू० (ककौ० १७४)। डर। हानि, हार। पु० यक्ष, कृपण मनुष्य।

जकड़ना—सक्रि० कसना, बाँधना।

जकना—अक्रि० आश्चर्य करना, भौचक्का होना, निश्चेष्ट सा हो जाना, स्तंभित होना। 'ना यह नन्दको मंदिर है, वृषभानको भौन, कहा जकती हो।' देव, 'चकी जकी सी ह्वै रही बूझे बोलत नीठि।' वि० २६२, (सूबे० ७०)

जकरना—बाँधना 'पग जोहारि जंजीरनि जकरयो यह उपमा कछु पावै।' सूबे० ११६, (सू० २६)

जकित—वि० चकित, स्तंभित।

जक्त—पु० जगत्, संसार 'हैं घर घर ह्वै रह्यो खिलौना जक्त कहत जाको अविनासी।' नागरी०

जक्ष—पु० यक्ष।

जखनी—स्त्री० यक्षिणी।

जखम, जख़्म—पु० घाव। सदमा।

ज़र्खारा—पु० राशि, संग्रह, कोष (रतन० ९५)।

जग—पु० जगत्, संसार। दुनियाके लोग।

जगजगाना—अक्रि० जगमगाना, चमचमाना।

जगत—पु० जगत्, संसार। स्त्री० कुएँका चबूतरा।

जगती—स्त्री० पृथ्वी, संसार।

जगना—अक्रि० जागना, नींदसे उठना। सावधान होना। उभड़ना, उत्तेजित होना। जलना, चमकना 'जलहू थलहू परिपूरन श्री निमिके कुल अद्भुत जोति जगै।' राम० ५

जगप्रान—पु० वायु, हवा 'आवत ही हेमन्त तो कंपन लगो जहान। कोक कोकनद मैं दुखी अहित भये जगप्रान।' दीन० १९५

जगमग, जगमगा—वि० प्रकाशित (दीन० १२९), प्रकाशयुक्त, चमकदार।

जगमगना, जगमगाना—अक्रि० चमचमाना, दमकना (सू० ४८), 'राम सीय सुन्दर पग्छाहीं। जगमगति मनि-खंभन माहीं।' रामा० १७६

जगर—पु० कवच।

जगरमगर—वि० प्रकाशित, झलमल 'लसति रसोईकैं बगर जगरमगर दुति होति।' वि० १९७

जगह—स्त्री० स्थान। पद, ओहदा।

जगात—पु० दान, कर (उदे० 'उगाहना')।

जगाती—पु० दानी, कर उगाहनेवाला 'सूर श्याम अब भए जगाती वै दिन सब बिसराए।' सूबे० १३३, 'बाट जगाती धरमराय सबका झारा लेहि।' साखी ७८

जगाना—सक्रि० नींद छुड़ाना, चैतन्य करना, उद्दीपित करना 'अधर सुधारस मदन जगावत'—सू० ९२। यंत्र मंत्र, सिद्धि आदिका साधना।

जगार—स्त्री० जागृति। जागरण।

जगीर—स्त्री० जागीर 'सोइ जगीरैं खाय'—रहीम।

जगोला—वि० जागते रहनेके कारण सुस्तीसे भरा हुआ।

जग्य—पु० यज्ञ। [उनींदा।

जघन—पु० पेडू। नितम्ब (रवि० ३०)।

जघन चपला—स्त्री० दुराचारिणी या कामुकी स्त्री, वेश्या।

जघन्य—वि० निन्द्य, गर्हित, नीच।

जच्चा—स्त्री० वह स्त्री जिसने प्रसव किया हो।

जच्छ—पु० यक्ष (राम० २५४, भू० ६)।

जजना—सक्रि० पूजना, आदर करना, मानना 'कलि पूजैं पाखण्डको जजैं न श्रुति आचार।' दीन० ७६

जजमान, ज़जिमान—पु० यजमान, पूजा करनेवाला।

जटना—सक्रि० जड़ना, जकड़ना विकट जटे जौ लगि निपट कटे न कपट-कपाट।' वि० १५०, 'दिन दिन हीन छीन भई काया दुख जंजाल जटी।' सू० ५। ठगना।

जटा—स्त्री० सिरके जटे हुए लम्बे बाल। उलझे हुए लंबे रेशे। शाखा।

जटाधारी,-माली—पु० शिवजी।

जटित—वि० जड़ा हुआ। जकड़ा हुआ।

जटिल—वि० जटावाला 'जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेख।' रामा० ४२। दुर्बोध। दुष्ट।

जटिला—स्त्री० जटामासी, वच, पिप्पल। ब्रह्मचारिणी। राधाकी सास।

जटी—वि० जटाधारी 'अनाथै सुन्यो मैं अनाथानुसारी। बसैं चित्त दण्डी जटी मुंडधारी।' राम० ३२५

जठर—पु० पेट। वि० वृद्ध।

जठेरा—वि० ज्येष्ठ, बड़ा, 'विप्रवधू कुल मान्य जठेरी।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रामा० २२२। पु० लड़का '...छलसों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो।' सू० ६५

जड़—स्त्री० वृक्षोंका वह भाग जो ज़मीनके नीचे रहता है। नींव, आधार, कारण। —उखाड़ना, —खोदना = हानि पहुँचा कर नष्ट करना 'जर तुम्हारि यह सवति उखारी।' रामा० २०७। वि० अचेतन, मूर्ख, स्तब्ध।

जड़ता, जड़ताई—स्त्री० अचेतनता, मूर्खता, स्तब्धता। 'और आस विस्वास भरोसो, हरौ जीव-जड़ताई।' विन० २६४

जड़ना—सक्रि० जटना। एक चीज़को दूसरीपर ठोंक कर या पच्ची कर बैठाना।

जड़हन—पु० धानका एक भेद।

जड़ाऊ—वि० जिसपर रत्नादि जड़े हों।

जड़ाव—पु० जड़नेका काम।

जड़ावर—पु० जाड़ेमें पहिननेके कपड़े।

जड़ित—वि० जड़ा हुआ। जो किसीमें जड़ा हो। जड़ाऊ।

जड़िया—पु० नग जड़नेवाला, कुंदनसाज।

जड़ी—स्त्री० वह वनस्पति जिसकी जड़ दवाका काम दे।

जत—वि० जितना।

जतन—पु० यत्न, उपाय 'चलै कि जल बिन नाव कोटि जतन पचि पचि मरिय!' रामा० ५८५

जताना—सक्रि० बताना, सूचित करना।

जति, जती—पु० यती, संन्यासी।

जतुक—पु० लाख। देहपर का एक चिह्न, 'लच्छन' या ❀

जतेक—वि० जितना। 'जत'। [❀ 'लालुन'।

जत्था—पु० मंडली, समूह।

जथा—क्रिवि० यथा, ज्यों, जैसे। स्त्री० पूँजी। पु० जत्था।

जथारथ—वि० यथार्थ। उचित। ज्योंका त्यों।

जद—अ० यदि। क्रिवि० जब।

जदपि—क्रिवि० यद्यपि।

जदुनाथ,-पति,-पाल—पु० यदुपति, श्रीकृष्ण।

जदुपुर—पु० मथुरा।

जदुराइ, जदुवीर—पु० श्रीकृष्ण।

जद्द—वि० ज़्यादा। प्रबल। पु० दादा।

जद्दपि—क्रिवि० यद्यपि।

जन—पु० अनुचर, सेवक। लोग। [† वंशियोंकी उपाधि।

जनक—पु० पिता, जन्मदाता। मिथिलाके निमि- †

जनकौर—पु० जनकपुर। जनकके वंशवाले।

जनखा—पु० हिजड़ा, स्त्रियों जैसी चेष्टा करनेवाला।

जनता—स्त्री० सर्वसाधारण।

जनना—सक्रि० प्रसव करना, जन्म देना (विन० ४२०)। सक्रि० जानना 'इहाँ कोऊ हितू मेरो न तेरो जो यह पीर जनै।' स्वामी हरिदास

जननि, जननी—स्त्री० माता। जन्म देनेवाली 'जननी तू जननी भई, विधि सन कछु न बसाइ।' रामा० २७६

जनम—पु० जन्म। जीवन, आयु।

जनमना—सक्रि० उत्पन्न करना, जन्म देना 'सुन्दर सुत जनमत भईं ओऊ।' रामा० १०८। अक्रि० जन्म लेना, उत्पन्न होना 'जनमत काहे न मारेसि मोही।' रामा० २७६

जनमसँगाती,-सँघाती—पु० वह जो जन्मसे ही साथ हो। सदा साथ रहनेवाला 'काल व्यालको कष्ट निवारन भजि हरि जनमसँगाती।' नागरी०

जनवास, जनवासा—पु० बरातियोंको टिकानेकी जगह।

जनश्रुति—स्त्री० उड़ती खबर, अफवाह।

जनाउ, जनाव—पु० इत्तिला, खबर, सूचना 'अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाउ।' रामा० १८२

जनाना—सक्रि० पैदा कराना। जनना। पु० अन्तःपुर। वि० स्त्री सम्बन्धी, नपुंसक।

जनावर—पु० जानवर, पशु 'कहि हरिदास बिजराके जनावर लौं तरफराइ रह्यो उड़िबेको हिलोर करि।' स्वामी हरिदास

जनि—अ० नहीं, मत (उदे० 'जलपना')।

जनियाँ—स्त्री० प्रिया, वल्लभा।

जनु—क्रिवि० मानो।

जनेत—स्त्री० बरात 'जनक नगरमें अवधपति राजे सहित जनेत।' राम रसायन, 'पछिताय भूत पिसाच प्रेत जनेत ऐहैं साजिके।' पा० मं०

जनैया—वि० जाननेवाला।

जन्म; जन्मना—देखो 'जनम'; 'जनमना'।

जन्य—वि० जो उत्पन्न हुआ हो। जन सम्बंधी। जातीय।

जपतप—पु० पूजा-पाठ।

जपना—सक्रि० किसी शब्द या वाक्यादिको लगातार दोहराना (रामा० ३०३)। यज्ञ करना।

जपा—पु० अड़हुल पुष्प (सू० १२१)। देखो 'जपा'।

जपिया, जपी—पु० जप करनेवाला 'धीर धीर साधुसों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बली जे विक्रमी क्षमी। साधु सर्वदा सुधी तपी जपी जे संजमी।' के० २३, 'जपिया तपिया बहुत हैं, सीलवन्त कोइ एक।' साखी १५०

जफीर, जफील—स्त्री० सीटी। सीटीका शब्द।

जब—क्रिवि० जिस समय।

जबड़ा—पु० वह हड्डी जिसमें डाढ़ें रहती हैं।

ज़बरदस्ती—स्त्री० सीनाजोरी, अन्याय। क्रिवि० [बलपूर्वक।

ज़बरन्—क्रिवि० बलपूर्वक। बलात्।

जबरा—वि० जबरदस्त, बलवान्।

ज़बान—स्त्री० जीभ, वाणी, बोल। भाषा। वादा।

जब्र—पु० ज़्यादती, सख़्ती।

जम—पु० धर्मराज, कृतान्त। निग्रह, विष्णु, शनि।

जमकात, जमकातर—स्त्री० एक तरहका खाँड़ा, यमका खाँड़ा। 'बिजुरी चक्र फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात फिरै जमकेरी।' प० ७३, 'होइ हनुवँत जमकातर ढाहौं।' प० ३१९। पु० भँवर।

जमघंट—पु० यमघंट। एक अशुभ योग। कार्त्तिक

जमघट—पु० जमात, भीड़। [मुदी १।

जमज—पु० एक साथ उत्पन्न होनेवाले बच्चोंका जोड़ा। अश्विनी कुमार।

जमधर—पु० तलवार 'चंचल मनुवाँ चेत रे, सोवै कहा अजान। जमधर जम ले जायगा, पड़ा रहैगा म्यान।' साखी १६२

जमना—अक्रि० अच्छी तरह स्थित होना, जमा होना ठंड इ० से द्रव पदार्थका ठोस हो जाना। उगना। स्त्री० यमुना।

जमनिका—स्त्री० जवनिका, परदा, टट्टी 'मानकी जमनिकाके कंज मुख मूँदिबेको सीता जूको उत्तरीय सब सुख सारु है।' राम० २८९। काई।

जमराज—पु० मृत्युके देवता।

जमा—स्त्री० पूँजी, धन। वि० इकट्ठा, एकत्र।

जमाई—पु० दामाद 'देखत संत भयानक लागत भावते ससुर जमाई।' व्यासजी

जमात—स्त्री० समूह, मण्डली (उदे० 'जिनिस')।

जमाना—सक्रि० द्रव पदार्थको गाढ़ा करना या ठोस बनाना, अच्छी तरह बैठाना या आरोपित करना 'गाइ गो तान जमाइ गो नेह, रिझाइ गो प्रान चराइ गो गैया।' रसखानि। पु० समय।

जमींदार—पु० ज़मीनका अधिकारी।

जमी—वि० यमी, संयमी, इन्द्रिय-निग्रह करनेवाला 'असन पान सुचि अमित अमी से। देखि लोग सकुचात जमी से।' रामा० ३०२

जमुकना—अक्रि० बिलकुल पास होना।

जमुहाना—अक्रि० जँभाई लेना 'राम राम कहि जे जमुहाहीं।' रामा० २९१

जमूरक, जमूरा—पु० एक तरहकी छोटी तोप।

जम्हाना—अक्रि० देखो 'जमुहाना'।

जयंती—स्त्री० पताका। किसी महापुरुषकी वर्षगाँठका

जय—स्त्री० जीत। लाभ। एक पेड़। [उत्सव।

जयजीव—पु० एक प्राचीन अभिवादन 'कहि जयजीव बैठ सिर नाई।' रामा० २१७

जयना—सक्रि० जय पाना, जीतना 'इन्हमें न एकौ भयो बूझि न जूझ्यो न जयो।' विन० ५७४

जयमाल—स्त्री० वह माला जो विजयीको, या स्वयंवरमें वरे हुए पुरुषको, पहनायी जाय।

जया—स्त्री० दुर्गा। पार्वती। ध्वजा। हरी दूर्वा। अड़हुल।

जर—स्त्री० देखो 'जड़' (सू० ११५)। पु० जल 'भानु कमल कुल पोषनिहारा। बिनु जर जारि करइ सोइ छारा।' रामा० २०७। ज्वर 'जरहिं दुसह जर पुर नरनारी।' रामा० ३२४। जरा, बुढापा। औकात 'मसका कहत मेरी सरवर कौन उड़े, मेरे आगे गरुड़की केती एक जर है।' सुन्द० १४३। ज़र = सोना, धन।

जरकटी—पु० एक शिकारी चिड़िया।

जरकस, जरकसी—वि० ज़रीदार, जिसपर सोनेके तार लगे हों 'ललित राजपथमें जहाँ जरकस बसन बिकात।' ललित० १४, 'सरस कृपान तरकसरु कमान बान जरकसी चीरा हीरा जहाँ जाइ लाइये।' गोपालचन्द्र मिश्र

जरजर—वि० बहुत पुराना, बेकाम, ध्वस्त-विध्वस्त। वृद्ध।

जरतार—पु० सोने चाँदी इत्यादिका तार 'सारी जरतारीकी झलक झलकति तैसो केसरिको अंगराग कीन्हों सब तनमें।' ललित० १७८

जरद—वि० पीला।

जरन—स्त्री० जलन, दाह, ईर्ष्या।

जरना—अक्रि० जलना, बलना, संतप्त होना, ईर्ष्या करना। सक्रि० नग इत्यादि जड़ना (उदे० 'जराय')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जरनि—स्त्री० जलन, दाह, पीड़ा 'हृदयकी कबहुँ न जरनि घटी।' सू० ५

जरब—स्त्री० चोट, प्रहार 'जोवन जरब महारूपके गरब गति मदनके मद मद मोकल मतंगकी।' ललित० १५२

जरबीला—वि० भड़कीला, चमकदार।

जरवारा—वि० सम्पत्तिवाला, धनवान्।

जरा—स्त्री० बुढ़ापा। ज़रा = थोड़ा।

जराउ—वि० देखो 'जड़ाऊ'। 'गोरे भाल बिंद सेंदुरपर टीका धरयो जराउ।' सूबे० १३० [† करना।

जराना—सक्रि० जलाना, प्रज्वलित करना, ईर्ष्या पैदा †

जराय, जराव—पु० पच्चीकारी, नग इत्यादि जड़नेका काम 'नीको लसत ललाटपर टीको जटित जराय।' वि० ४९, (उदे० 'चौक'।) वि० जड़ाऊ, रत्न इत्यादिसे जटित।

जरिया—पु० नग जड़नेवाला। कुन्दनसाज (देखो 'जरना') ज़रिया = द्वार, सम्बंध, हेतु।

जरी—स्त्री० सोनेके तारोंका बना काम। जड़ी-बूटी।

ज़रूर—क्रिवि० अवश्य, निश्चयही।

ज़रूरत—स्त्री० आवश्यकता।

जरौट—वि० जड़ाऊ ['कोउ कजरौट जरौट लिये कर कोउ मुरछल कोउ छाता।' रघु०]

जर्जर—वि० जीर्ण, ध्वस्त-विध्वस्त।

जर्राह—पु० चीर-फाड़ करनेवाला।

जल—पु० पानी। खस।

जलचर—पु० मछली, मगर इ० जल-जन्तु।

जलचारी,-जंतु—देखो 'जलचर'।

जलज, जलजात—पु० कमल, मोती।

जलतरंग—पु० एक बाजा।

जलद, जलधर—पु० बादल।

जलधि—पु० समुद्र।

जलना—अक्रि० झुलसना, बलना, दग्ध होना, कुढ़ना।

जलनिधि—पु० समुद्र।

जलपति—पु० समुद्र। वरुण।

जलपना—अक्रि० लम्बी चौड़ी बातें करना 'यहि बिधि जलपत भयेउ बिहाना।' रामा० ४९१। सक्रि० डींग मारकर कहना 'जिन्हके अगुन न सगुन विवेका। जलपहिं कलपित बचन अनेका।' रामा० ६८। स्त्री० डींग, व्यर्थकी बकवाद 'जनि जलपना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा।' रामा० ५०६

जलपाटल—पु० काजल।

जलपान—पु० नाश्ता, कलेवा।

जलप्लावन—पु० बाढ़के कारण जलमग्न होना।

जलफल—पु० सिंघाड़ा।

जलभृत्—पु० बादल। कपूरका एक भेद।

जलसा—पु० सभा, उत्सव।

जलसुत—पु० कमल, मोती।

जलहर—पु० जलाशय 'वे जलहर हम मीन बापुरी...' सूबे० ४३९, 'जीवजन्तु जलहर बसे गये विवेक जु भूल।' साखी १५८। वि० जलपूर्ण।

जलांजलि—स्त्री० प्रेतादिके लिए अंजुलीमें भरकर जल देना।

जलाक—स्त्री० उदर-ज्वाला। लू 'कहै पद्माकर त्यों जेठकी जलाकैं तहाँ पावैं क्यों प्रवेस वेस बेलिनकी बाटी है।' पद्मा०

जलाजल—पु० गोटे इत्यादिकी झालर (उदे० 'खुभी')। वि० जलमय, जलाहल 'वे नद चाहत सिंधु भये अब सिंधु ते ह्वैहैं जलाजल सारे।' तोप

जलाद, जल्लाद—पु० घातक।

जलापा—पु० ईर्ष्यासे उत्पन्न जलन।

जलावन—पु० ईंधन। अग्निमें जलाने इ० से नष्ट हुआ

जलावर्त्त—पु० पानीका भँवर। [अंश।

जलाशय—पु० जलपूर्ण स्थान, तालाब, नदी इ०।

जलाहल—वि० जलमय।

जलेबी—स्त्री० कुंडलीके आकारकी एक मिठाई।

जल्दी—स्त्री० शीघ्रता। क्रिवि० शीघ्र।

जल्पना—अक्रि० देखो 'जलपना'।

जव—पु० जौ, एक तौल। वेग।

जवन—पु० यवन। घोड़ा, वेग। वि० वेगवान्।

जवनिका—स्त्री० नाटकका परदा। पट, परदा, कनात।

जवादि—पु० बनविलावसे प्राप्त एक सुगन्धित वस्तु, सुगन्धित उबटन 'कुंकुम मेदो जवादि, मृगमद करपूर आदि, बीरा बनितन बनाय, भाजन भरि राखे।' के० १६६

जवान—पु० युवक, वीर पुरुष, सिपाही। वि० तरुण।

जवाब—पु० उत्तर।

जवाबदेही—स्त्री० जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व।

जवार—पु० देखो 'जवाल'। 'स्वारथ अगम परमारथकी कहा चली पेटकी कठिन जगजीवको जवारु है।' कविता० २१७। जुआर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जवारा—पु० जौका अंकुर (सूवे० २४५)।

जवाल—पु० अवनति। जंजाल, बखेड़ा 'छाँड़ि कै जवाल जाल, गहि तू गोपाल लाल तातें कहि दीनद्याल फन्द क्यों फँसातु है।' दीन० १७०, (भू० २८)

जवास, जवासा—पु० एक कँटीला पौधा जो वर्षामें जलकर सूख जाता है 'सहमि सूखि सुनि सीतल बानी। जिमि जवास परे पावस पानी।' रामा० २२४

जवाहर, जवाहिर—पु० रत्न।

जस—पु० यश, कीर्ति। क्रिवि० जैसा।

जहँ—क्रिवि० जहाँ, जिस जगह।—तहँ = इधर उधर, चारों ओर।

जहँड़ना—अक्रि० हानि उठाना, धोखेमें पड़ना। 'संसय छूटै गुरु कृपा तासु विमुख जहँड़ायं।' साखी १९०

जहँड़ाना—अक्रि० देखो 'जहँड़ना'।

जहतिया—पु० लगान वसूल करनेवाला 'मन्मथ करै कैद अपनीमें ज्ञान जहतिया लावै।' सू० ११

जहदना—अक्रि० कीचड़ होना। थक जाना।

जहदा—पु० कीचड़, दलदल।

जहद्दम, जहन्नुम—पु० नरक, कष्टमय स्थान।

जहना—सक्रि० त्यागना। नष्ट करना।

जहमत—स्त्री० आफत, कष्ट, संकट।

जहर—पु० विष। जौहर व्रत।

जहाँ—क्रिवि० जिस जगह। देखो 'जहँ'।

जहाँपनाह—पु० संसारका रक्षक।

जहाज़—पु० जलयान, समुद्रपोत।

जहान—पु० दुनिया, संसार।

जहिआ, जहिया—क्रिवि० जिस समय, जब 'भुजबल विश्व जितब तुम जहिया।' रामा० ८०

जहीं—क्रिवि० जिस स्थानपर। ज्योंहीं 'जहाँ वारुनीकी करी रंचक रुचि द्विजराज।' राम० ८७

जहेज—पु० देखो 'दहेज'।

जह्नुतनया—स्त्री० गंगा।

जाँग—स्त्री० जाँघ। पु० घोड़ोंका एक भेद।

जाँगड़ा—पु० भाट, राजाओंकी कीर्त्ति गानेवाला।

जाँगर—पु० शरीर, हाथ-पाँव। अन्न निकाला हुआ डण्ठल 'तुलसी त्रिलोककी समृद्धि सौज संपदा, सकेलि चाकि राखी रासि, जाँगर जहान भो।' कविता० १८३

जाँघ—स्त्री० जंघा, उरु।

जाँघिया—पु० एक तरहका लँगोट, काछा।

जाँचक—पु० याचक, भिक्षुक।

जाँचकता—स्त्री० याचकता, माँगनेका काम।

जाँचना—सक्रि० माँगना, प्रार्थना करना (सू० २०), 'को जाँचिये शंभु तजि आन।' विन० ६८। अनुसन्धान करना, निरीक्षण करना।

जाँजरा—वि० जर्जर।

जाँझ—पु० आँधी-पानी।

जाँत, जाँता—पु० आटा पीसनेकी पत्थरकी चक्की।

जाँपना—सक्रि० चाँपना, दबाना 'चोवन जाँपि चहूँ दिसि डोलत चारु-चकोर अँगारन भोरे।' के० २०

जाँब, जाँबव, जाँबु—पु० जामुन 'काहू जाँबु विरह अति झारा।' प० ८७

जाँवत—क्रिवि० जितना।

जाँवर—पु० प्रस्थान, गमन।

जा—सर्व० जो, जिस 'जा तनकी झाँई परे श्याम हरित दुति होइ।' वि० १। यह (बुंदे०)। वि० उचित।

जाइ—वि० व्यर्थ। [स्त्री० माता, देवरानी।

जाइफर,-फल—पु० जायफल।

जाई—स्त्री० कन्या (रवि० २१)।

जाउँनि—स्त्री० जामुन। [प० १३५

जाउर—स्त्री० खीर 'पुनि जाउरि पछियाउरि आई।'

जाक—पु० यक्ष।

जाकड़—पु० लौटा सकनेकी शर्तपर लाना। [†प० २२०

जाखिनी—स्त्री० यक्षिणी 'राघव करै जाखिनी पूजा।'†

जाग—पु० यज्ञ 'आगम-विधि जग जाग करत नर सरत न काज खरो सो।' विन० ४०७, 'श्री रघुराज हमूँ चलिहैं सुख पैहैं विदेहकी जागहिं जोई।' रघु० ८६। स्त्री० जागरण। जगह, स्थान।

जागना—अक्रि० सोकर उठना, सावधान होना, निद्रारहित रहना। शोभित होना, प्रकाशित होना, प्रसिद्ध होना 'जागत हौ तुम जगतमें भावसिंह दीवान। जागत गिरिवर कन्दरनि अरिवर तज अभिमान।' ललित० ७८। चमक उठना, समृद्ध होना, समुत्थित होना।

जागर—पु० जागनेकी क्रिया। कवच।

जागरण, जागरन—पु० जागनेकी क्रिया, निद्राका न रहना।

जागरित—वि० जो जागता हो। सचेत। पु० जागरण।

जागरूक—वि० जाग्रत, चैतन्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जागा—स्त्री० जगह 'माँछी माछर माँगनं मूसे बाँदर चोर। काँटे दीमक जीवको जागा दस दुख घोर।' भगवत रसिक

जागी—पु० बन्दी, भाट।

जागीर—स्त्री० तअल्लुका, राजा इ० से दानमें मिली भूमि।

जागीरी—स्त्री० रईसी।

जाग्रत—वि० जो जागता हो। सजग, सचेत।

जाचक; जाचकता—देखो 'जाँचक'; 'जाँचकता'।

जाचना—सक्रि० माँगना, प्रार्थना करना।

जाजम—देखो 'जाजिम'।

जाजरा—वि० जर्जर।

जाजिम—स्त्री० छपी हुई चादर, गलीचा।

जाज्वल्यमान—वि० प्रकाशमय, दीप्तिमान्।

जाठर—पु० पेट। भूख। जठराग्नि। वि० पेट सम्बन्धी।

जाड़, जाड़ा—पु० जाड़ा, शीत 'जड़ता जाड़ विषम उर लागा। गवेहु न मज्जन पाव अभागा।' रामा० २८। शीतऋतु।

जात—स्त्री० जाति, बिरादरी। पु० पुत्र। वि० उत्पन्न।

जातक—पु० पुत्र, बच्चा।

जातकर्म—पु० शिशु-जन्मके समयका संस्कार।

जातना—स्त्री० यातना, कष्ट (विन० ३२१)।

जातनाई—स्त्री० देखो 'जातना'। 'काँजे मोको जम-जातनाई।' विन० ४०३

जातरूप—पु० सोना, धतूरा।

जातवेद—पु० अग्नि, सूर्य इ०।

जाति, जाती—स्त्री० जाति। चमेली 'हे मालति, हे जाति, जूथकं, सुनि हित दे चित।' नन्द० १३

जाती—वि० निजी, व्यक्तिगत।

जातीय—वि० जाति सम्बंधी, जातिका।

जातुधान—पु० यातुधान, राक्षस।

जात्रा—स्त्री० यात्रा, सफर।

जाथका—स्त्री० राशि, पुञ्ज।

जादव—पु० यादव।

जादसपति—पु० वरुण।

जादा—वि० अधिक।

जादू—स्त्री० इन्द्रजाल। टोना। ठगोरी, मोहनी।

जादूगर—पु० जादू करनेवाला। ऐन्द्रजालिक।

जादौ—पु० यादव, यदुवंशी।

जान—स्त्री० समझ 'मर जान अजहुँ जानकी दीजै।' सू० ३७। जानकारी। —पहिचान = परिचय (विन० ४५०)। वि० सुजान, ज्ञानवान्, बुद्धिमान्। पु० यान, वाहन, विमान 'विष्णु विरंचि महेस विहाई। चले सकल सुर जान बनाई।' रामा० ३९। जानु, घुटना। स्त्री० दम, प्राण, सामर्थ्य।

जानकीजान,-जानि—पु० (जानकी जिनकी स्त्री हैं ऐसे) रामचन्द्र जो 'जग जाँचिये कोऊ न, जाँचिये जौ जिय जाँचिये जानकिजानिहि रे।' कविता० २१०

जानकीजीवन,-नाथ,-रमण—पु० श्रीराम।

जानदार—वि० जिसमें जीव हो, जिसमें कुछ दम हो।

जाननहार—पु० जाननेवाला।

जानना—सक्रि० ज्ञान प्राप्त करना, परिचित होना। समझना, सोचना।

जानपना—पु०, जानपनी—स्त्री० जानकारी, चतुराई।

जानमनि—पु० (जानों) बुद्धिमानोंका शिरोमणि। अत्यन्त ज्ञानी व्यक्ति।

जानवर—पु० पशु। जीवधारी।

जानहार—वि० जानेवाला, नष्ट होनेवाला।

जानहु—अ० मानो।

जाना—अक्रि० गमन करना, अग्रसर होना। कहींसे हट जाना, गायब होना, खोना। व्यतीत होना, नष्ट होना, अलग होना। सक्रि० पैदा करना 'दुइ सुत सुन्दर सीता जाये।' रामा० ४८३। अक्रि० पैदा होना '...किधौं ब्रह्म-जीव जग जाये।' गीता० ३०६

जानि—वि० ज्ञानी, जानकार 'यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जानि-सिरोमनि कोसलराऊ।' रामा० ४८३ स्त्री० पत्नी

जानी—स्त्री० प्राणेश्वरी। वि० जान लेनेवाला। दिली।

जानु—अ० जानो। पु० घुटना। जाँघ।

जानुपानि—क्रिवि० घुटनों और हाथोंके बल।

जाफ़रान—पु० केसर।

जाम—पु० याम, पहर।

जामन—पु० वह खटी चीज़ जिससे दूध जमाया जाता है 'जामन दयो सो धर्यो धर्योई खटायगो'—रसखानि

जामना—अक्रि० जमना, आरोपित होना (सू० ११५), 'देव न बरषहिं धरनिपर बये न जामहिं धान।' [रामा० ५९३

जामाता, जामातु—पु० दामाद।

जामिक—पु० यामिक, पहरा देनेवाला, रक्षक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जामिन—पु० जमानत करनेवाला। प्रांतभू।
जामिनी—स्त्री० यामिनी, रात्रि। [पेड़।
जामुन—पु० एक तरहका मीठा कसैला फल या उसका
जाय—अ० व्यर्थ, निष्फल 'तात कुतरक करहु जनि जाये।' रामा० ३२५। वि० व्यर्थ, वृथा 'जाय कहब करतूति बिन जाय जोग बिन छेम।' दोहा० ११३
ज़ायचा—पु० जन्मपत्री।
जायज़—वि० उचित, वाजिब।
जायदाद—स्त्री० सम्पत्ति।
जाया—स्त्री० पत्नी, स्त्री (जिसके सन्तान हो चुकी हो) वि० उत्पन्न (उदे० 'अचगरा')।
जार—पु० जाल 'ऐसे अनुक्रम करि सिष्य सूँ कहत गुरु सुन्दर सकल यह मिथ्या भ्रमजार है।' सुन्द०, ११० 'मीनको ज्यों जार।' सू० २८४। पर स्त्रीसे प्रेम करनेवाला, यार (साखी० ३३)। वि० नाशक।
जारज—पु० जारसे उत्पन्न सन्तति।
जारना—सक्रि० जलाना, नष्ट करना, पीड़ा देना (के० ६१)।
जारी—वि० प्रवाहित, प्रचलित।
जाल—पु० सूत, इ० का दूर दूर बुना हुआ पट, फंदा। झरोखा। समूह। युक्ति। इन्द्रजाल। घमण्ड। एक तरहकी तोप। धोखा, फरेब। मकड़ीका जाला।
जालना—सक्रि० जलाना (कबीर ७३)।
जाललाज—वि० जाल रचनेवाला।
ज़ालिम—वि० अत्याचारी, अन्यायी।
जालिया—वि० धोखा देनेवाला।
जाली—वि० बनावटी, झूठा। स्त्री० बहु छिद्रयुक्त कपड़ा या लोहे आदिकी चद्दर।
जावक—पु० महावर (उदे० 'कोंवरा')।
जावत—क्रिवि० जहाँतक 'जावत जगत हस्ति औ चाँटा।' प० २
जावन—पु० देखो 'जामन'। 'गुरुजन जावन मिल्यो न भयो दह दधि, मथ्यो न विवेक रई देव जो बनावगो।' देव (ब्रज० २८६)
जावित्री—स्त्री० जायफलका छिलका।
जायनी—स्त्री० यक्षिणी।
जासूस—पु० भेदिया, गुप्तचर।
जाहर, जाहिर—वि० प्रसिद्ध, प्रकट।
जाहिल—वि० अशिक्षित, अनाड़ी।
जाह्नवी—स्त्री० जह्नुसुता, गंगा।
जिंदगानी, जिंदगी—स्त्री० जीवन। आयु।
जिंदा—वि० जीता हुआ।
जिंस—पु० सामान, गल्ला, वस्तु, प्रकार।
जिआना—सक्रि० जिलाना। पालना 'नाना खग बालकन्हि जिआये। बोलत मधुर उड़ात सुहाये।' [रामा० ५५३
जिउ—पु० जीव, प्राण।
जिक्र—पु० चर्चा, उल्लेख।
जिगर—पु० कलेजा, साहस, चित्त।
जिगीषा—स्त्री० जीतनेकी इच्छा।
जिज्ञासा—स्त्री० जाननेकी इच्छा।
जित—क्रिवि० जिस तरफ, जिधर। वि० जो जीता गया हो।
जितना—क्रिवि० जिस परिमाण या अंशमें। वि० जिस मात्राका।
जितवना—सक्रि० जताना, सूचित करना। जितवाना, जीतने देना 'समरथ बड़ो सुजान सुसाहब सुकृत सैन हारत जितई है।' विन० ३३९
जितवाना, जिताना, जितावना—सक्रि० जीतनेमें समर्थ करना 'हारेउ खेल जितावहिं मोही।' रामा० ३२४
जितवार—वि० जीतनेवाला, मात करनेवाला 'शिवहूकी जितवार तिय...'
जिते—वि० जितने।
जितै—क्रिवि० जिधर।
जितैया—वि० जीतनेवाला (भू०२८)।
जितो—वि० जितना।
जिद—स्त्री० हठ, टेक, दुराग्रह।
जिधर—क्रिवि० जिस तरफ, जहाँ।
जिनिस—स्त्री० वस्तु, सामग्री। प्रकार, भांति 'बहु जिनिस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै।' रामा० ५६
जिब्भा, जिभ्या—स्त्री० जीभ, जिह्वा 'माला जपों न कर जपों जिभ्या कहों न राम।' मलूकदास
जिमाना—सक्रि० भोजन कराना, खिलाना (सूवे० ११९)।
जिमि—क्रिवि० जैसे, जिस प्रकारसे।
जिम्मादार, जिम्मेदार, जिम्मेवार—वि० उत्तरदायी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिय—पु० जी, मन ।
जियन—पु० जीवन ।
जियरा—पु० जी, जीव ।
जियान—पु० हानि, घाटा (देखो 'ज्यान') ।
जियाना—सक्रि० देखो 'जिआना' । 'तेहि काल लक्ष्मणको जियाय जियाइयो हम जानिकै ।' के० २१
जियारी—स्त्री० जीवन, साहस । जीवन-निर्वाहका साधन ।
जिरह—पु० उलटे बाँधे प्रदन, वहन । ज़िरह = कवच ।
जिलाना—देखो 'जिआना' ।
जिलाह—पु० अन्यायी, अनाचार करनेवाला ।
जिल्द—स्त्री० पुस्तकके ऊपर लगायी गयी दफ्ती इ० । ऊपरी चमड़ा ।
जिव—पु० जीव, प्राणी, प्राण ।
जिवाना—सक्रि० जिलाना ।
जिष्णु—वि० जीतनेवाला ।
जिस्म—पु० शरीर ।
जिह—स्त्री० ज्या, प्रत्यञ्चा, रोदा ।
जिहाज—पु० 'जहाज' । 'तहँ विभावना औरऊ बरनत बुद्धि जिहाज।' ललित० ७१
जिहाद—पु० धार्मिक लड़ाई ।
जिह्वा—स्त्री० जीभ ।
जींगन—पु० जुगनू 'जहाँ तहाँ जींगनकी ज्योति जगैं ज्वाल जैसी जमकी जमाति सी जनाति जाति जामिनी ।' दीन० ४२
जी—पु० दिल, चित्त, हृदय । इच्छा, विचार । साहस, तबियत । प्राण । जीमें खुभना, जीमें गड़ना = चित्तमें दृढ़ स्थान कर लेना, हृदयमें अंकित हो जाना । जीमें धरना = मनमें लाना, ख्याल करना, क्रोध करना ।
जीअ, जीअन, जीउ—पु० देखो 'जीवन' ।
जींगन—पु० देखो 'जींगन' ।
जीजी—स्त्री० बड़ी बहिन, जेठानी ।
जीत—स्त्री० विजय, सफलता ।
जीतना—सक्रि० विजय या सफलता प्राप्त करना ।
जीन—पु० घोड़ेकी पीठपर कसनेकी गद्दी, काठी 'रुचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे । बरन बरन बर बाजि बिराजे ।' रामा० १६० । एक मोटा कपड़ा । वि० जीर्ण, फटा-पुराना । वृद्ध ।
जीना—अक्रि० जिन्दा रहना, सजीव रहना, जीवन-यापन करना ।
ज़ीना—पु० सीढ़ियोंका समूह । [† न बोलना ।
जीभ—स्त्री० जिह्वा, रसना ।—थोड़ी करना = अधिक †
जीभी—स्त्री० जीभ साफ करनेकी तांबे इ० की पट्टी ।
जीमना—सक्रि० भोजन करना (सुन्द० ८६) ।
जीमूत—पु० मेघ, इन्द्र । पहाड़ । सूर्य इ० ।
जीय—पु० देखो 'जी' ।
जीयट—पु० जीवट ।
जीयति—स्त्री० जिन्दगी, जीवन ।
जीर—पु० जीरा, केसर । तलवार । कवच । (उदे० 'खड़ाका') । वि० जीर्ण, जर्जर ।
जीरण, जीरन, जीर्ण—वि० पुराना, जर्जर (मुद्रा० ११४, उदे० 'कंचुकी') ।
जीरना—अक्रि० जीर्ण होना, मुरझाना, फटना 'मारी मरै कुसंगकी ज्यों केला ढिग बेरि । वह हाले वह जीरई साकट संग निबेरि ।' साखी ५७
जील—स्त्री० मध्यम या धीमा स्वर । तबलेका बायाँ ।
जीला—वि० झीना, महीन ।
जीव—पु० प्राणी । जीवन, प्राण, आत्मा । बृहस्पति
जीवट—पु० साहस । [(राम० ४००) ।
जीवति—पु० जीविका 'जीवति सों सब राज तिहारी । निर्भय है भुवलोक निहारी ।' के० ३११
जीवधन—पु० प्राणप्रिय । धन जो पशुओंके रूपमें हो ।
जीवधारी—पु० प्राणी ।
जीवन—पु० प्राण धारण, जिन्दगी । प्राणाधार, प्राण । पानी 'उदित भयो है जलद तू जगको जीवन दानि । मेरो जीवन लेत है कौन वैर मन आनि ।' ललित० १२१
जीवना—अक्रि० जीना ।
जीवनि—स्त्री० जिलानेवाली वस्तु, अत्यन्त प्यारी वस्तु ।
जीवनी—स्त्री० जीवन-वृत्तान्त ।
जीवप्रभा—स्त्री० आत्मा 'बालक वृद्ध कहौ तुम काको । देहनिको किधौं जीवप्रभा को ।' के० ३६०
जीवबंद, जीवबंधु—पु० गुल दुपहरिया 'ओंठनकी लाली जिमि लाली जीव बंदकी'—ठठी, 'ओंठ जीवबंधु वारौं, हाँसी सुधाकंद वारौं, कोटि कोटि चंद वारौं राधे मुखचंद पै ।' हठी
जीवरा—पु० जीव ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीवरि—स्त्री० जीवन धारण करनेकी शक्ति ।

जीवाजून—पु० जीव-जन्तु 'पौ फाटी पगरा हुआ जागे जीवा जून ।' साखी ८०

जीविका—स्त्री० जीवन-निर्वाहका साधन, वृत्ति ।

जीवितेश—पु० प्राणेश्वर, प्रिय व्यक्ति ।

जीह, जीहा, जीही—स्त्री० जीभ, जिह्वा 'जो न उपारउँ तव दस जीहा ।' रामा० ४६८, 'पापी पपीहा न जीहा थकै तुअ पीपी पुकार बकै उठि भोरै ।' दास ३९, (उदे० 'आउबाट')

जुअती—स्त्री० युवती 'जौं पटतरिय तीय महँ सीया । जग अस जुअति कहाँ कमनीया ।' रामा० १३५

जुआ, जुआँ—पु० जूँ (उदे० 'कीचर') ।

जुआ—पु० देखो 'जुवा' ।

जुआर, जुआरी—पु० जुआ खेलनेवाला 'बाढ़े खल बहु चोर जुआरा ।' रामा० १०२

जुई—स्त्री० छोटा जुआँ । सेम इ० में लगनेवाला कीड़ा ।

जुकाम—पु० ठंड लगनेसे हुई बीमारी जिसमें नाकसे पानी या कफ निकलता है ।

जुग—पु० युग । जोड़ा, दल, गुट । जुगजुग = चिरकाल

जुगजुगाना—अक्रि० टिमटिमाना । [तक ।

जुगजुगी—स्त्री० 'शकरखोरा' नामक पक्षी ।

जुगत—स्त्री० युक्ति, उपाय । चतुराई । वि० युक्त, संभव

जुगनू—पु० खद्योत । एक आभूषण । [(उदे० 'अजुगत') ।

जुगम—वि० युग्म, दोनों 'समुझि नजहि भ्रम भजहि पद जुगम, सेवत सुगम गुन गहन गँभीर ।' विन० ४५५

जुगवना, जुगाना—सक्रि० जोड़ जोड़ कर रखना । हिफाजतसे रखना 'सिद्धि, सची, सारद पूजहिं मन जुगवत रहति रमासी ।' विन० ९७, (रामा० ३७५)

जुगाली—स्त्री० पागुर ।

जुगुत, जुगुति—स्त्री० युक्ति, उपाय 'नाना वेष बनाय दिवस निसि, पर वित जेहि तेहि जुगुति हरौं ।' विन० ३४४

जुगुप्सा—स्त्री० निन्दा, घृणा ।

जुगुल—वि० जोड़ा, युग्म (उदे० 'उन्हारि') ।

जुझ—स्त्री० युद्ध, संग्राम ।

जुझवाना—सक्रि० युद्धार्थ प्रोत्साहित करना । युद्धमें प्रवृत्त कर लड़वा डालना ।

जुझाऊ—वि० युद्ध सम्बन्धी । युद्धार्थ उत्तेजित करनेवाला ।

जुझार—वि० युद्धप्रिय, वीर 'सेन संग चतुरंग अपारा । अमित सुभट सब समर जुझारा ।' रामा० ८७ । पु० युद्ध 'का जानसि कस होइ जुझारा ।' प० ३११

जुटना—अक्रि० जुड़ना, सम्बद्ध होना, सटना । लिपटना, गुथना । किसी काममें जी-जानसे लगना 'पुत्रवधू अरु पुत्र राखि घर और काज महँ जूटो ।' रघु० १७९, (छत्र० १३३)

जुटली—वि० बालोंकी लम्बी लम्बी लटोंवाला ।

जुटाना—सक्रि० जोड़ना, सटाना । एकत्र करना ।

जुठारना—सक्रि० चखकर छोड़ देना, जूठा करना । 'सब उपमा कवि रहे जुठारी ।' रामा० १२६

जुठिहारा—पु० उच्छिष्ट खानेवाला ।

जुड़ना—अक्रि० सम्बद्ध होना । देखो 'जुरना' ।

जुड़वाँ—वि० यमल, जुड़े हुए ।

जुड़ाना—अक्रि० ठंडा होना, तृप्त होना 'राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने ।' रामा० १५० । सक्रि० दे० 'जुड़ावना ।'

जुड़ावना—सक्रि० ठंडा करना, शान्त करना, तृप्त करना 'रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती ।' रामा० ४४३

जुत—वि० युक्त ।

जुतना—अक्रि० नधना, लग जाना, जोता जाना ।

जुतियाना—सक्रि० जूता मारना ।

जुत्थ—पु० यूथ, समूह ।

जुदा—वि० भिन्न, अलग ।

जुदाई—स्त्री० वियोग, विरह ।

जुद्ध—पु० युद्ध, लड़ाई ।

जुन्हाई, जुन्हैया—स्त्री० चाँदनी 'तरनि तनया-पुलिन विमल सरद निसि जुन्हाई री ।' कृष्णदास । चन्द्रमा 'बैयाँ बैयाँ डोलत कन्हैयाकी बलैयाँ जाउँ मैया मैया बोलत जुन्हैयाको लखावै री ।' दीन० ७, (रतन० ७३)

जुबराज—पु० युवराज । वह राजपुत्र जो राज्यका उत्तराधिकारी हो (उदे० 'गाल') ।

जुमा—पु० शुक्रवार ।

जुर—पु० ज्वर, ताप (रवि० १२) ।

जुरना—अक्रि० प्राप्त होना, उपलब्ध होना 'चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी ।' रामा० ९, (रतन० ८२)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्बद्ध होना, संयुक्त होना 'टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने।' रामा० १५०। एकत्र होना 'फटिक सिलानके महल महरानी बैठी, सुरनकी रानी जुरि आईं मन भावती।'—हठी, 'बरजत हू जाचक जुरैं दानवंतके ठौर।'—दास ७३। युद्धमें भिड़ना "लव सों न जुरो लवणासुर भोरे।' के० ३२९

जुरबाना, जुरमाना—पु० अर्थदण्ड।

जुरा—स्त्री० जरा, बुढ़ापा (कबीर ७६)।

जुराना, जुरावना—सक्रि० एकत्र करना 'घर घर गोपन सों कह्यो करभार जुरावहु।' सूबे० २६४, देखो 'जुड़ाना'

जुराफा—पु० आफ्रिकानिवासी एक पशु जिसका जोड़ा बिछुड़ते ही नर-मादा दोनोंकी मृत्यु हो जाती है। 'मिलि बिहरत बिछुरत मरत दम्पति अति रसलीन। नूतन बिधि हेमन्त सब जगत जुराफा कीन।' वि० २०५

जुर्म—पु० अपराध, दोष।

जुर्रा—पु० नर बाज़ (उदे० 'कुही')।

जुलफ, जुलुफ—बालोंकी लट (उदे० 'कुलुफ')।

जुलहा, जुलाहा—पु० वस्त्र बुननेवाला, तंतुकार। एक

जुलुम, जुल्म—पु० अत्याचार, अंधेर। [कीड़ा।

जुलोक—पु० द्युलोक, सुरलोक, वैकुण्ठ 'ब्रह्मरंध्र फोरि जीव यौं मिल्यो जुलोक जाय।' राम० २०६

जुवराज—पु० देखो 'जुबराज'।

जुवा—पु० द्यूत (के० १४५)। गाड़ी इत्यादिकी वह लकड़ी जो बैलोंके कंधोंपर रहती है 'जुवा बनावत चन्द्रमा चपल होत सारंग।' सू० १६२

जुहाना, जुहावना—सक्रि० संचित करना, इकट्ठा करना। अक्रि० एकत्र होना 'महा भीर भूपतिके द्वारे लाखन विप्र जुहाने।' रघु० ८१

जुहार, जुहारि—स्त्री० अभिवादन 'सब कोऊ सब सों करै राम जुहार सलाम।' रहीम, (सू०-२८)

जुहारना—सक्रि० प्रणाम करना (सूबे० २६१)।

जूँ—स्त्री० बालोंका कीड़ा। कानपर जूँ रेंगना = खबर होना, होश होना।

जूँठ, जूठा—वि० किसीका चखा हुआ, उच्छिष्ट 'बेर जूँठे दियो शबरी भक्षियो सुख पाय।' के० १३४

जूँठन, जूठनि—स्त्री० उच्छिष्ट भोजन (विन० ४०१)।

जूझा—देखो 'जुवा'।

जूझ—पु० युद्ध, लड़ाई (उदे० 'कहर'), 'भा धावा, भा जूझ असूझा। बादल आय पँवरि पर जूझा।' प० ३३१ [(उदे० 'जूझ')।

जूझना—अक्रि० युद्ध करना। युद्धमें प्राण देना

जूटि—स्त्री० जोड़ी 'सोहत ललित ललाटपै उभै भौंह-की जूटि।' नागरी० (ब्रज० ३४७)

जूठन—स्त्री० देखो 'जूँठन'।

जूठा—वि० देखो 'जूँठा।' झूठा (कबीर ३१५)।

जूड़—वि० शीतल, प्रसन्न 'भली भाँति पहिचाने जाने साहिब जहाँ लौं जग जूड़े होत थोरे ही थोरे ही गरम।' दिन० ५६५। पु० जूड़ा।

जूड़ा—पु० सिरके बालोंकी गाँठ। चोटी। गेंडुरी।

जूड़ी—स्त्री० जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर (विन० २६१)।

जूता—पु०, जूती—स्त्री० पदत्राण, पनही।

जूताखोर—वि० जूता खानेवाला, बेहया, निर्लज्ज।

जूथ—पु० यूथ, झुण्ड, समूह।

जूथका, जूथिका—स्त्री० एक तरहका फूल 'हे मालति, हे जाति, जूथके, सुनि हित दे चित।' नन्द० १३

जून—वि० जीर्ण, पुराना 'का छति लाभ जून धनु तोरे।' रामा० १४७। पु० समय, बेला 'रामहिं जात जानि तिहि जूना।' रघु० १७२

जूप—पु० जुआ। वर वधूका जुआ खेलना। यूप, खम्भा 'प्रति प्रति गृह तोरन ध्वजा धूप। सब सजे कलस अरु कदलि जूप।' सू० ४४

जूमना—अक्रि० जुटना, एकत्र होना 'द्विज हरखावैं पद पावैं चहुँ ओरन तें अम्बर सुहावैं सिखि आवैं जूमि जूमि हैं।' दीन० ४५

जूर—पु० संचय, राशि। [† (सू० १६८)।

जूरना—सक्रि० जोड़ना। अक्रि० इकट्ठा होना †

जूरा—पु० जूड़ा, सिरके बालोंकी गाँठ, चोटी 'काहे मन बाँधै न यह जूरा बाँधनहारि।' वि० २८४

जूस—पु० दालका पानी, रसा।

जूह—पु० समूह (रामा० ४८८), 'पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा।' रामा० ४०५

जूही—स्त्री० चमेलीकी तरह फूलवाला एक पौधा।

जृंभा—स्त्री० जँभाई, सुस्ती।

जेंगना—पु० जुगनू 'जेंगनाकी जोति क्या रजनी बिलात है।' सुन्द० ६६

जेंवना—सक्रि० भोजन करना 'नारिवृन्द सुर जेंवत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाना। लगीं देन गारीं मृदु बानी।' रामा० ६०। पु० भोजन।

जेंवनार—स्त्री० भोज, रसोई।

जेंवाना—सक्रि० भोजन कराना (विन० ५०२)।

जे—सर्व० 'जो' का बहुवचन।

जेइ, जेउ—सर्व० जो।

जेठ—वि० ज्येष्ठ, बड़ा। पु० ज्येष्ठ मास। भसुर।

जेठा—वि० ज्येष्ठ, बड़ा। श्रेष्ठ।

जेठानी—स्त्री० जेठकी स्त्री।

जेठी—वि० जेठका। स्त्री० जेठानी 'जेठी पठाई गई दुलही हँसि हेरे हरैं मतिराम बुलाई।' रस० ५

जेता—वि० जितना 'तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर।' पु० जीतनेवाला।

जेतिक—वि० जितना।

जेते—वि० जितने 'जगमहुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महँ तेते।' रामा० ४३७

जेना—अक्रि० देखो 'जेंवना', 'जपि जेईं पिय संग भवानी।' रामा० १७

जेब—पु० खीसा, खलीता, पाकेट (साखी ९), 'ठगिया तेरे नैन ये छलबल भरे कितेब। कतरत पल मकराज सों नेही मनकी जेब।' रतन० ३४

जेबकट—पु० जेब काटकर रुपया उड़ानेवाला, गिरहकट।

जेर—वि० परास्त, पीड़ित।

जेरना—सक्रि० पीड़ित करना, तंग करना 'नाम-ओट अब लगि बच्यो मलजुग जग जेरो।' विन० ३५६

जेरिया, जेरी—स्त्री० चरवाहोंके हाथकी लाठी।

जेल—पु० जंजाल, बंधन 'जोबन मैं अँखियाँ सखी, परी लाजके जेल।' मति० १९३

जेवड़ी, जेवरी—स्त्री० रस्सी 'सो हरि प्रेम जेवरी बाँध्यो जननि साँट लै डाँटै।' सूवे० ६८, (कबीर २०,१४७)

जेवनार—स्त्री० देखो 'जेंवनार'।

जेवर—पु० अलंकार, गहना।

जेवरा—पु० रस्सा, फंदा 'चहुँदिसि पसरयो है जम जेवरा।' कबीर ३१४

जेष्ठ—देखो 'ज्येष्ठ'।

जेह—स्त्री० ज्याका मध्य स्थान, चिल्ला। 'तिय कत कमनैती पढ़ी, बिन जेह भौंह कमान।' बि० १४८। दीवारमें नीचेकी ओरका कुछ मोटा व उभड़ा हुआ पलस्तर।

जेहर, जेहरि, जेहरी—स्त्री० पायजेब 'जुगल जंघ जेहरि जरावकी राजति परम उदार।' सू० १६०, 'जागैं जगमगी जाकी जेहरी जराय जरी···' दीन० १६६

जैं—अ० मत, जनि 'यत्र तत्र जाहु पै पत्याहु जैं अमित्रको।' के० ३८५

जै—स्त्री० जय, जीत। वि० जितने।

जैकार—स्त्री० जयकार।

जैत—स्त्री० जीत, विजय। पु० एक पेड़।

जैतपत्र—पु० जीतका पत्र।

जैतवार—पु० जीतनेवाला (उदे० 'करेर'), 'जैतवार यह मार सों अकस करो जिन चेत।' मति० १८२

जैतून—पु० एक पेड़।

जैन—पु० सम्प्रदायविशेष। जैनी।

जैनु—पु० भोजन।

जैबो—अक्रि० जाना।

जैमाल, जैमाला—स्त्री० देखो 'जयमाल'।

जैसा—वि० जिस प्रकारका। जितना। समान। क्रिवि० [जितना।

जैसे—क्रिवि० जिस तरहसे।

जों—क्रिवि० ज्यों, जैसे।—तों = ज्यों त्यों।

जोंक—स्त्री० पानीमें रहनेवाला एक कीड़ा।

जोंदरी, जोंधरी—स्त्री० छोटी ज्वार।

जोंधैया—स्त्री० जुन्हैया, चाँदनी।

जो—सर्व० संबन्ध बतलानेवाला एक सर्वनाम। अ० यदि।

जोअना—सक्रि० जोवना, जोहना, देखना, रास्ता देखना। तलाश करना (मुद्रा० ११३)।

जोइ—स्त्री० स्त्री, पत्नी 'तुलसी बिना उपासना बिन दूलहकी जोइ।' ककौ० २३७ (सू० १५०, प० २९४, कबीर २११)

जोइसी—पु० ज्योतिषी 'फिरि हुलस्यो जिय जोइसी समुझे जारज योग।' वि० २३९ (यंग०)

जोखना—सक्रि० जाँचना, विचार करना। तौलना।

जोखम, जोखिउँ, जोखिम—पु० अनिष्टकी आशंका, खतरा 'जोखिउँ एत सहहु केहि काजा।' प० ६३

जोखिता—स्त्री० पत्नी, स्त्री। योगीपन (रहीम २०)।

जोखों—स्त्री० जोखिम।

जोग—पु० योग, मेल, शुभ अवसर, सुभीता। तप और ध्यान। जोड़। चित्त-वृत्तिका नियंत्रण। ध्यान।

जोगड़ा—पु० नकली योगी। [वि० योग्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जोगता—स्त्री० योग्यता।

जोगन—स्त्री० जोगीकी स्त्री, विरक्त स्त्री। एक रण-देवी।

जोगवना—सक्रि० सावधानीसे रक्षा करना 'पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती। जोगवहिं जननि सकल दिन राती।' रामा० २९५। जोड़ जोड़ कर रखना, पूरा करना। ध्यान न देना।

जोगिंद—पु० योगीन्द्र, योगिश्रेष्ठ। शिवजी।

जोगिन—स्त्री० देखो 'जोगन'। '...जोगिन ह्वै बैठीं वा वियोगिनकी अँखियाँ।' देव

जोगिनी—स्त्री० देखो 'जोगन'। तपस्विनी। रण-चण्डिका।

जोगिया—वि० जोगीका। गेरूमें रँगा हुआ। पु० जोगी।

जोगींद्र—पु० योगिश्रेष्ठ, शिवजी।

जोगी—पु० योगी, एक प्रकारके गेरुआ-वस्त्रधारी भिक्षुक।

जोगीड़ा—पु० एक तरहका गाना। जोगीड़ा गानेवालोंका [समाज।

जोगोटा—पु० जोगी।

जोग्य—वि० योग्य। लायक़। समर्थ। उचित।

जोजन—पु० योजन। चार कोसकी दूरी। संयोग, मेल।

जोट—पु० जोड़ा 'दीन्ह असीस देखि भल जोटा।' रामा० १४६। साथी। झुण्ड (उदे० 'कीचर'), 'भोंसिलाके हाथ गढ़ कोट हैं चढ़त अरि जोट ह्वै चढ़त एक मेरु गिरि श्रृंगमें।' भू० ५०

जोटा—पु० जोड़ा (गीता० ३०५, उदे० 'जोट')।

जोटी—स्त्री० जोड़ी। बराबरीका साथी, गोइयाँ 'सूर महरिसों विनवति भली श्यामकी जोटी।' सूबे० ८१, 'सूरदास प्रभु जीवहु युग युग हरि हलधरकी जोटी।' सूबे० ८७

जोड़—पु० योग, मेल, गाँठ, जुड़नेकी जगह, जोड़ा।

जोड़ना—सक्रि० योग करना, इकट्ठा करना, साटना, मिलाना। देखो 'जोरना'।

जोड़वाँ—पु० यमज। [की मजदूरी।

जोड़वाई—स्त्री० जोड़वानेकी क्रिया या भाव। जोड़वाने-

जोड़वाना—सक्रि० किसीको जोड़नेके काममें लगाना।

जोड़ा—पु० एक सी दो वस्तुएँ। जूता।

जोड़ी—स्त्री० जोड़ा, बराबरीका साथी।

जोड़ू—स्त्री० 'जोरू', स्त्री।

जोत—स्त्री० ज्योति (रतन० ८२)। जोतनेको मिली भूमि। बैल इ० के गलेकी रस्सी, तराजूकी रस्सी। भूमि जोतनेकी क्रिया (उदे० 'चौंकना')।

जोतना—सक्रि० रथ, गाड़ी इ० में घोड़े या बैलको नाधना। हल चलाना। किसीको बलात् किसी काममें लगाना। [हल जोतनेवाला।

जोता—पु० जुएमें बँधी बैलोंके गलेमें फँसानेकी रस्सी।

जोति—स्त्री० घीका दीपक। ज्योति (उदे० 'उछरना'), जोतने योग्य भूमि। —**जागना** = प्रकाश फैलना।

जोतिक, जोतिखी—पु० ज्योतिषी 'बार बार जोतिक सों घरी बूझि आवै।' सूवे० २५२

जोतिष, जोतिस—पु० ज्योतिष, ग्रहादि सम्बंधी विद्या।

जोत्स्ना—स्त्री० ज्योत्स्ना, चाँदनी।

जोध, जोधा—पु० योद्धा, वीर।

जोन, जोनि—स्त्री० योनि।

जोना—सक्रि० देखना 'बोलै गूँग पंगु गिरि लंघै अरु आवै अंधा जग जोई।' सूवि० २३

जोन्ह, जोन्हाई—स्त्री० चाँदनी। चन्द्रमा 'ऐसी गई मिलि जोन्हकी जोतिमें रूपकी रासि न जाति बखानी।' रघुनाथ, (उदे० 'उछरना')

जोप—पु० यूप (उदे० 'अंग')।

जोपै—अ० यदि। यद्यपि।

जोवन—पु० यौवन। रूप। कुच। वि० युवा 'सूर श्याम लरिकाई भूली जोवन भये मुरारी।' सूबे० १४०

जोवना—पु० यौवन 'जरा जोवना बैर, बैर मूरुख अरु ज्ञानी।' नरहरि। कुच। सक्रि० देखो 'जोवना'।

जोम—पु० जोश, उत्साह, उमंग 'करिहौं महि विन बानरी, बादी मन यह जोम।' रघु० २४८। अभिमान।

जोय—सर्व० जो, जिस। स्त्री० जोइ, स्त्री।

जोयना—सक्रि० जलाना। जोहना, आसरा देखना। देखना 'इतनो बचन स्रवण सुनि सुनि कै सबनि पुहुमि तन जोयो।' सू० ४१

जोयसी—पु० ज्योतिषी।

ज़ोर—पु० शक्ति, बल। काबू, अधिकार। आवेश, वेग, प्रबलता 'रोरके जोरते सोर धरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठाढ्यो।' सूवि० ८। परिश्रम, तनाव। सहारा, साथ 'अनुचित उचित रहीम लघु करहिं बड़नके जोर।' रहीम १६। वि० प्रबल, जबरदस्त (उदे० आमिल)। पु० 'जोड़'। योग, संधि, मेल। जोड़ा, बराबरी 'तीनि लोक तिहुँ काल न देखत सुहृद रावरे जोरको हौं।' विन० ५२५। जुल्म (कबीर १७६)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज़ोरदार—वि० जिसमें बहुत ज़ोर हो, प्रभावशाली।

जोरना—सक्रि० दो चीजोंको मिलाकर या और किसी उपायसे एक करना, इकट्ठा करना, संग्रह करना 'जोरति छाक प्रेम सों मैया।' सूबे० ७२, 'खाये खरचे जो जुरै तो जोरिये करोर।' वि० १९८। सम्बद्ध करना 'पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाय।' रामा० ३९६। मिलाना 'यों मनिराम भयो हियमें सुख बालके बालम सों दृग जोरें।' ललित० २९, (सूबे० ११२)। टूटी फूटी वस्तुको दुरुस्त करना (उदे० 'गुनी')

जोराजोरी—स्त्री० जबरदस्ती। क्रिवि० जबरदस्तीसे, 'अलकैं अबै डारि गर फाँसी, लिये जात मन जोराजोरी।' ललितकि० (ब्रज० ४८५)

जोरावर—वि० बलवान्।

जोरी—स्त्री० जोड़ी, दो समान वस्तुएँ (उदे० 'अविचर')। बराबरीका व्यक्ति (सू० ३२, सूबे० ८१)। स्त्री० जबरदस्ती 'जोरी करि जिबहै करैं कहते हैं ज हलाल।' कबीर ४२

जोल—पु० समूह, झुण्ड 'कहा करौं बारिज मुख ऊपर बिथके षट्पद जोल।' सू० ११५, (सूबि० ४५)

जोलहा, जोलाहा—पु० देखो 'जुलाहा'।

जोलाहल—स्त्री० अग्नि, ज्वाला।

जोली—स्त्री० जोड़, बराबरीका व्यक्ति।

जोलो—पु० अन्तर 'कैधौं तुम पावन प्रभु नाहीं कै कछु मोपै जोलो।' सूबि० ४५

जोवना—सक्रि० देखना (उदे० 'चंदोवा'), जोहना 'हौं मारग जोवौं धरि साँसा।' प० ७६। आसरा देखना 'खानदानवारे पानदान लिये दौरत हैं तान गानवारे बैठे जोवत महल पै।' ग्वाल। तलाश करना। गिनना, ख्याल करना 'भूख न प्यास न नींद न जोवैं। खेलनको बहु भांतिन रोवैं।' के० ६०। पु० यौवन।

जोश—पु० उबाल, उमंग, आवेश।

जोशन—पु० बाँहपर पहननेका एक आभूषण।

जोशीला—वि० जोशसे भरा हुआ।

जोष—स्त्री० जोख, तौल। प्रीति। सेवा। आराम।

जोषिता—स्त्री० पत्नी, स्त्री।

जोषी—पु० ज्योतिषी।

जोह—स्त्री० प्रतीक्षा। तलाश, खोज। कृपादृष्टि।

जोहन—स्त्री० जोहनेका काम। प्रतीक्षा। खोज।

जोहना—सक्रि० रास्ता देखना। देखना 'रूप न जाइ बखानि जान जोइ जोहइ।' पा० मं, (सूबे० ८३, प० ८९)। खोजना।

जोहार—पु० नमस्कार, अभिवादन 'पुरजन करि जोहारु घर आये। रघुबर संध्या करन सिधाये।' रामा० २४१, (प० २१)

जोहारना—सक्रि० अभिवादन करना 'देहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुनगन गाथ।' रामा० १९१

जौं—अ० यदि। क्रिवि० ज्यों।

जौंरे—क्रिवि० आसपास, निकट।

जौ—अ० यदि, जब। पु० यव।

जौख—पु० झुण्ड, समूह।

जौजा—स्त्री० पत्नी।

जौतुक—पु० यौतुक।

जौन—सर्व० जो। वि० जो। पु० यवन।

जौंह—स्त्री० जोन्ह, चन्द्रिका।

जौपै—देखो 'जोपै'।

जौबति—स्त्री० युवती 'भनइ विद्यापति सुन वर जौबति इह रस केओ पए जाने।' विद्या० २३

जौवन—पु० यौवन।

जौशन—पु० देखो 'जोशन'।

जौहर—पु० मूल्यवान् पत्थर। सारांश। विशेषता, खूबी। युद्धके समय राजपूतोंके सामूहिक प्राण-त्याग-की प्रथा। प्राणत्याग 'जोगसे तो जौहर भला घड़ी एकका काम।' साखी २८। राजपूत स्त्रियोंके लिए सामूहिक रूपसे जलनेके हेतु बनायी गयी चिता 'जौहर कहँ साजा रनिवासू।' प० २९३

जौहरी—पु० रत्न-विक्रेता, पारखी, गुण-ग्राहक 'इतै न कोऊ जौहरी ह्याँ सब बसैं अजान।' दीन० १०७

ज्ञात—वि० विदित।

ज्ञाति—पु० भाई-बन्धु।

ज्ञान—पु० जानकारी, बोध, समझ।

ज्या—स्त्री० धनुषकी रस्सी।

ज़्यादती—स्त्री० अधिकता।

ज़्यादा—वि० बहुत, अधिक।

ज्यान—पु० हानि 'सुनो जोगको का लै कीजे जहाँ ज्यान है जोको।' भ्र० १२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्याना, ज्यारना, ज्यावना—सक्रि० जीवित करना, जिलाना 'दोहाई कहे ते कवि लोग ज्याइयतु और दोहाई कहेते अरि लोग ज्याइयतु है।' भू० ५१। पालना 'सुक सारिका जानकी ज्याये।' रामा० १८३

ज्याफत—स्त्री० भोज, दावत।

ज्यूँ, ज्यों—क्रिवि० जैसे, जिस रूपसे। जिस क्षण। ज्यों ज्यों = जैसे जैसे, जिस भावसे 'जमुना ज्यों ज्यों लागी धावन।' विन० ९६। ज्यों त्यों = जैसे तैसे, किसी न किसी प्रकार।

ज्येष्ठ—पु० जेठ मास। वि० जेठा, बड़ा।

ज्यो—पु० जीव, प्राण (राम० १५९, दास १४७)।

ज्योति—स्त्री० प्रकाश, लौ, अग्नि, दृष्टि।

ज्योतिष, ज्योतिषी—पु० गणक, आगमी, दैवज्ञ।

ज्योत्स्ना—स्त्री० चाँदनी, कौमुदी। उजेली रात।

ज्योनार, ज्यौनार—स्त्री० भोज, रसोई।

ज्योहत—पु० प्राण-त्याग, जौहर।

ज्यौ—अ० जो, यदि।

ज्वर—पु० बुखार।

ज्वरा—पु० मृत्यु।

ज्वर्रा—पु० देखो 'जुर्रा'।

ज्वलंत—वि० प्रकाशमान्, सुस्पष्ट।

ज्वलन—पु० दाह। आग। ज्वाला।

ज्वानी—स्त्री० जवानी, युवावस्था (भू० ५)।

ज्वार—स्त्री० बजड़ी। लहरका चढ़ाव।

ज्वारभाटा—पु० लहरोंका चढ़ना-उतरना।

ज्वारी—पु० जुआरी।

ज्वाल,-ला—स्त्री० लपट, (उदे० 'छत्री') आँच, ताप

ज्वालमुखी—स्त्री० देवी, सुरांगना 'प्रतिबिम्बित दीदिपैं जलमाहीं। जनु ज्वालमुखीनके जाल नहाहीं। राम० ५११

झ

झंकना, झंखना—अक्रि० झीखना, बहुत दुखी होकर पछताना। डरना 'तीन लोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न झंखे।' सूरा० ५०, (विद्या० २५३)

झंकाड़, झंखाड़, झंखाड़—पु० काँटेदार सघन पौधा, पत्तोंसे रहित पेड़।

झंकार—स्त्री० धातुके पात्र या गहनेसे उत्पन्न शब्द। स्त्रियोंके बोलनेका शब्द (उदे० 'बन')।

झंगा—पु० झगा, बच्चोंका ढीला कुरता (उदे० 'चौतनी')।

झँगुला, झँगूला—पु० ढीला कुरता 'डार द्रुम पालन बिछौना नव पल्लवके सुमन झँगूला सोहै तन छबि भारी दै।' देव (ककौ० ३७७)

झँगुलिया, झँगुली, झँगूली—स्त्री० देखो 'झँगुला' (उदे० 'चूरा'), 'पहिरि लेउ झँगुली, फेंटा बाँधि लेहु मेवा।' सू० मदन०, (गीता० २९१)

झंझ—पु० झाँझ। मँजीरेकी तरहके दो बड़े गोलाकार

झंझट—पु०, स्त्री० बखेड़ा, टंटा। [डुकड़ोंका बाजा।

झंझनाना—अक्रि० 'झनझन' आवाज़ होना।

झंझर—पु० जल रखनेका मिट्टीका छोटा पात्र।

झँझरा—वि० बहुतसे छेदोंवाला।

झँझरी—स्त्री० जाली। लोहे इत्यादिकी जालीदार चद्दर। जालीदार खिड़की 'पौनके झकझोर से झँझरी झरोखन आजहीं।' राम० ३५०। पिसान चालनेकी चलनी।

झंझा—पु० आँधी-पानी, अंधड़। छोटी बूँदोंकी वर्षा। झाँझ। वि० तेज, प्रबल 'महापुरुष सों जाकी प्रीति। हरति सो झंझा मारुति रीति।' के० ४७

झंझार—पु० आगकी ज्वाला, लपट 'अति अगिनि झार भार धुंधार करि, उचटि अंगार झंझार छायो।' सू० ८१

झँझोड़ना—सक्रि० झकझोरना, झटकेसे हिलाना।

झंडा—पु० ध्वजा, पताका।

झंडी—स्त्री० छोटा झंडा।

झँडूला—वि० गर्भके बालोंयुक्त (बालक), गर्भका (केशजाल) 'उर बघनहा कंठ कठुला, झँडूले केस, सेवी लटकनि मति बिंदु मुनि-मन-हर।' गीता० २९२, (सू० ५५)। सघन। पु० गर्भके बालोंसे युक्त बालक। गर्भके बाल। घने पत्तोंवाला पेड़।

झंप—पु० घोड़ोंके गलेका एक आभूषण। छलांग, उछाल।

झँपकना—देखो 'झपकना'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झँपना—अक्रि० लपकना, वेगसहित आगे बढ़ना (सू० १८७)। उछलना, अचानक आ पड़ना। छिपना। लज्जित होना। झपकी लेना। [वस्त्र।

झँपरिया, झँपरी—स्त्री० ओहार, पालकीपर फैलानेका

झंपान—पु० एक तरहकी खटोलीदार सवारी।

झंपित—वि० छिपा हुआ, आच्छादित।

झँपोला—पु० झाबा, पिटारी।

झंब—पु० गुच्छा 'बिच बिच अम्ब कदम्ब झम्ब झुकि पाइन आई।' नागरी० (ब्रज० ३५९)

झँवकारा—वि० झाबरा 'गेंड़ गयंद जरे भये कारे। औ बनमिरिग रोझ झँवकारे।' प० २५०

झँवा—पु० झाँबा, पैर धोनेका कंकड़।

झँवाना—अक्रि० झाँवेकी तरह कुछ काला पड़ जाना, कुम्हलाना, कम हो जाना। झाँवेसे रगड़ा जाना।

झँवावना—सक्रि० झाँवेसे रगड़वाना 'हँठि करि पाँव झँवावती तिन्ह सों तिय मगरूरि।' दास १०५। कुछ काला कर देना, कुम्हला देना, कम कर देना। झाँवेसे रगड़ना या रगड़वाना 'झझकत हिये गुलाबके झँवा झँवावति पाँय।' वि० १९९

झइँ, झईं—स्त्री० छाया, अँधेरा, आँखोंके सामने अँधेरा छाना, तिरमिराहट (सू० २०१), 'भरतहिं देखि मातु उठि धाई। मुरछित अवनि परी झइँ आई।' रामा० २७७

झक—स्त्री० सनक, धुन 'द्वारका जाहु जू द्वारका जाहु जू आठहु याम यही झक तेरे।' सुदामा०। झीखनेका भाव, झख। आँच (?) 'मायाके झक जग जरै कनक कामिनी लागि।' साखी १६८। वि० चमकदार, साफ़।

झककेतु—पु० झखकेतु, कामदेव।

झकझक—स्त्री० व्यर्थकी बकवाद, हुज्जत।

झकझका—वि० चमकीला।

झकझोर—पु० झटका, धक्का। वि० तेज, झोंकेदार।

झकझोरना, झकझोलना—सक्रि० झटका देना, पकड़ कर ज़ोरसे हिलाना (सूबे० ७९, साखी ८०)।

झकझोरा—पु० देखो 'झकझोर'।

झकना—अक्रि० बकवाद करना, झगड़ा करना, 'माखन माँगत बात न मानत झकत यसोदा जननी तीर।' सू० ५६। कुपित होकर बड़बड़ाना 'इमि सोचत सोचत झकत, आये निजपुर तीर।' सुदामा०।

झका—वि० चमकदार, साफ।

झकाझक—वि० चमकता हुआ, उज्वल।

झकोर—पु० झोंका, धक्का। हवाका झोंका (दे० 'झकोल')।

झकोरना—अक्रि० हवाका झोंका मारना।

झकोरा, झकोल—पु० देखो 'झकोर', 'नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोल।' सू० १५३

झक्क—देखो 'झक'

झक्की—वि० सनकी, बकबकिया।

झक्खना, झखना—अक्रि० दुखी होना और पछताना, दुखड़ा रोना।

झख—स्त्री० झीखनेकी क्रिया या भाव। पु० मछली, (उदे० 'पान्यो'), 'मकर नक्र झख नाना व्याला। सत-जोजन-तन परम बिसाला।' रामा० ४५०

झखकेतु—पु० कामदेव।

झखराज—पु० मकर।

झखी—स्त्री० मछली।

झगड़ना, झगरना—अक्रि० झगड़ा करना, विवाद करना (सू० १४८, सूबे० १४२)।

झगड़ा, झगरा—पु० लड़ाई, बखेड़ा (सूबे० १४५)।

झगड़ी, झगरी—स्त्री० नेगके लिए झगड़नेवाली। झगड़ा 'सूरश्याम ऐसे ही सदा हमसों करै झगरी।' [सूबे० १११

झगर—पु० एक तरहकी चिड़िया।

झगराऊ—वि० झगड़ा करनेवाला।

झगला, झगा—पु० ढीला कुरता, जामा 'झीन झगामें झलमलै श्याम गात नख रेख।' वि० ८०

झगुलिया, झगुली—स्त्री० देखो 'झँगुली', 'पीत झगुलिया तनु पहिराई। जानु-पानि-विचरनि मोहि भाई।' रामा० ११०

झझर—पु० देखो 'झंझर'। [† भड़क।

झझक, झझकन—स्त्री० झझकनेका भाव या क्रिया।†

झझकना—अक्रि० भड़कना, चमकना, डर इत्यादिसे ठिठकना, चौंकना (उदे० 'झँवावना')। झुंझलाना।

झझकाना—सक्रि० भड़काना। चौंका देना। अक्रि० झझकना 'महाराज क्यों आजुही सपने झझकाने।' सूबे० २५०

झझकारना—सक्रि० दुरदुराना, उपेक्षा करना।

झट—क्रिवि० चटपट, तुरन्त, तत्काल।

झटकना, झटकाना—सक्रि० झटकेसे छीनना, झटका देना 'बाह लालच अँकवारि भरत हौं हार तोरि चोली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झटकाई ।' सूबे० १४८, 'प्यारो पीताम्बर उर झटक्यो ।' सूबे १४०

झटका—पु० झोंका । धक्का, आघात ।

झटपट—अ० जल्दीसे, तुरन्त ।

झटिति—क्रिवि० तुरन्त ।

झड़—स्त्री० देखो 'झड़ी' ।

झड़झड़ाना—सक्रि० झटकना, हिलाना । धिगड़कर बोलना ।

झड़ना—अक्रि० टपकना, गिरना, साफ होना ।

झड़प—स्त्री० आवेश, । लपट । परस्पर भिड़ना । झटका ।

झड़पना—अक्रि० उलझना, झटकेसे कुछ छीन लेना, हमला करना ।

झड़पाना—सक्रि० पक्षियोंको आपसमें लड़ाना ।

झड़बेरी,-बैरी—स्त्री० जंगली बेर या उसका पेड़ ।

झड़ाझड़—क्रिवि० बराबर, धड़ाधड़ । जल्द जल्द ।

झड़ी—स्त्री० लगातार वर्षा । ताँता ।

झड़ूला—वि० देखो 'झँडूला' (उदे० 'कठुला') ।

झनक—स्त्री० झनझनाहट, झनकार, आवाज़ 'कबहुँक दीनदयालके झनक परेगी कान ।'

झनकना—अक्रि० झनझन शब्द करना । क्रोधमें आकर बड़बड़ाना या हाथ-पाँव पटकना ।

झनकार—स्त्री० देखो 'झंकार' ।

झनकारना—सक्रि० झनझनकी आवाज़ पैदा करना । अक्रि० झनझन आवाज़ होना ।

झनझनाना—सक्रि० 'झनझन' शब्द करना । अक्रि० 'झनझन' शब्द होना ।

झनाझन—स्त्री० 'झनझन' शब्द या झनकार ।

झनिया—वि० झीना, बिलकुल महीन ।

झन्नाहट—स्त्री० झनझनाहट ।

झप—क्रिवि० झट, शीघ्र ही ।

झपकना—अक्रि० देखो 'झँपना' ।

झपकी—स्त्री० हलकी नींद । धोखा ।

झपकौंहा—वि० नींदसे या नशेसे मस्त ।

झपट—स्त्री० आक्रमण, लपक 'देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने ।' रामा० १४५, (उदे० 'अगवना')

झपटना—अक्रि० तेज़ीसे किसीकी ओर बढ़ना । लपकना, आक्रमण करना ।

झपट्टा—पु० देखो 'झपट' ।

झपना—अक्रि० (आँखोंका) बन्द होना, (पलकोंका) गिरना । लज्जित होना । झुकना । (दीन० १६)

झपाका—पु० शीघ्रता । क्रिवि० शीघ्रतासे ।

झपित—वि० झपा हुआ, निद्रायुक्त । लज्जित ।

झपिया—स्त्री० झाँपी, पिटारी । एक आभूषण ।

झपेटना—सक्रि० चपेटना, झपट कर दबा लेना ।

झपेटा—पु० धक्का, आक्रमण । प्रेत-बाधा ।

झपोला—पु० देखो 'झँपोला' ।

झबरा—वि० जिसके शरीरपर लम्बे तथा बिखरे हुए बाल हों ।

झबरीला, झबरैरा—वि० चारों तरफ बिखरा हुआ (केशजाल) ।

झबा—पु० रेशम इ० के बहुतसे तारोंका गुच्छा, गुच्छा ।

झबार—स्त्री० देखो 'झबारि' ।

झबिया—स्त्री० छोटा फुँदना । बाजूबंद इत्यादिका कटोरीनुमा लटकन ।

झबूकना—अक्रि० झपकना, चौंकना ।

झब्बा—पु० देखो 'झबा' ।

झमक, झमकन—स्त्री० चमक, प्रकाश । झमझम शब्द ।

झमकना—अक्रि० झमझम करते हुए चलना-फिरना 'चढ़ी सिंघासन झमकति चली ।' प० ३१० । सहसा सामने आना 'पावक झरसी झमकि कै गयी झरोखे झाँखि ।' वि० २६५ । झमझम शब्द होना या करना, बज उठना 'पगके धरत कल किंकिनी नेवर बजैं बिछिया झमक उठैं एक ही झमकते ।' रस० ३१ । छाना, फैलना '(सिसिरमें) सेनापति होति सीतलता है सहसगुनी रजनीकी झाँई बासरमें झमकति है ।' —सेनापति । प्रज्वलित होना, प्रकाशित होना । तेजी दिखाना, अकड़ दिखाना 'धमकि मार्‌यो घाउ गुमकि हृदय रह्‌यो झमकि गहि केश लै चले ऐसे ।' सूबे० २९३

झमकाना—सक्रि० चमकाना, मटकाना 'ठगिनी क्या नैना झमकावै, कबिरा तेरे हाथ न आवै ।' कबीर । चलनेमें जेवर आदि बजाना 'जात नचावत कन्दुक चलावत पुनि झमकावत बाजी ।' रघु० १५९

झमकारा—वि० झमझम शब्द करने [illegible]वाला ।

झमकीला—वि० चंचल 'ललित किसोरा झमकीले गर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाल मानो, अंत ही रसाल चमकीले औ रँगीले हैं। (नैना नँदलालके)।' ललित कि०

झमझम—स्त्री० घुँघरू इत्यादिका शब्द। पानी बरसनेका शब्द।

झमना—अक्रि० दबना, विनम्र होना।

झमा—पु० देखो 'झँवा।

झमाझम—क्रिवि० 'झमझम' शब्दके साथ। चमकके [साथ।

झमाना—अक्रि० छाना, घेरना, झँपना। देखो 'झँवाना'।

झमेला—पु० झंझट, झगड़ा। भीड़भाड़।

झर—स्त्री० झड़ी, लगातार वर्षा 'सरसै बरसै नीरहू झरहू मिटै न झार।' वि० २२, 'पीतमको गौन सुखदेव न सुहात मौन दारुन बहत पौन लाग्यो मेघ झरु है।' सुखदेव। झरना, सोता। पानी गिरनेकी जगह। झुण्ड, समूह। झार, ज्वाला, तपन, (उदे० 'झमकना', सूबे० २०६)।

झरक—स्त्री० झलक, चमक, प्रतिबिम्ब।

झरकना—अक्रि० चमकना। डपट कर या तिरस्कार-पूर्वक कोई बात कहना।

झरझर—पु० जल, हवा इत्यादिके बहनेका शब्द।

झरझराना—सक्रि० झरझर शब्द करते हुए गिराना। अक्रि० 'झरझर' शब्द करते हुए जलना 'झरझरात झहरात लपट अति देखिअत नहीं उबार।' सूबे० ९२

झरना—अक्रि० बूँद या छोटे छोटे कणोंके रूपमें गिरना, ऊँचे स्थानसे गिरना, टपकना 'जु चन्दाते झरैं दैया अँगारे। चकोरनकी कहौ गति कौन प्यारे।' आनंद-घन, (सूबे० २०२, २८१)। बजना (नौबत) 'नौबत झरत चली नागन महँ रव करनाल अपारे।' रघु० १३४। पु० सोता, चश्मा। वि० झरनेवाला।

झरप—स्त्री० झोंका। लकड़ी इत्यादिका सहारा। वेग। परदा, चिक (रवि० १९)।

झरपना—अक्रि० झोंका देना। झगड़ना। हमला करना।

झरफ—स्त्री० देखो 'झरिफ' (रघु० ८८)।

झरसना—अक्रि० झौंसना, झुलसना, कुम्हलाना। सक्रि० झुलसाना, मुरझा देना।

झरहरना—अक्रि० 'झरझर' आवाज़ करना।

झरहरा—वि० जालीदार, छिद्रयुक्त।

झरहराना—अक्रि० वायु चलनेसे पत्तोंका शब्द करते हुए गिरना, खड़खड़ाना 'झरहरात बनपात गिरत तरु धरनि तरकि तड़ाकि सुनाइ।' मू० ८१। सक्रि० पत्ते इत्यादिको शब्द उत्पन्न करते हुए गिराना। झटकना।

झराझर—क्रिवि० वेगके साथ, लगातार, 'झरझर' आवाज़ [के साथ।

झरि—स्त्री० लगातार वर्षा, झड़ी।

झरिफ—स्त्री० परदा, चिक।

झरी—स्त्री० झड़ी, लगातार वर्षा 'कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी।' सूबे० ४०५। पानीका सोता।

झरोखा—पु० झँझरीदार छोटी खिड़की, गवाक्ष।

झल—पु० आँच, जलन 'जारि अँगारा क्रोध झल निन्दा भूआँ होय। इन तीनौको परिहरै साध कहावै सोय।' साखी १४४, (कबीर ३५), 'साहब मिलै न झल बुझै रही बुझाय बुझाय।' साखी ४६। प्रबल इच्छा, काम वासना। समूह। [('झलकना')।

झलक—स्त्री० चमक, प्रकाश, प्रतिबिम्ब, छाया (उदे० +

झलकना—अक्रि० चमकना, 'रीझ भार अखियाँ थकीं झलके श्रमजल बिन्दु।' ललित० ६५, (उदे० 'गुराई') थोड़ा, थोड़ा प्रस्फुटित होना, 'छुटी न शिशुताकी झलक झलक्यो जोबन अंग।' वि० ३४

झलकनि—स्त्री० देखो 'झलक'।

झलका—पु० छाला (रामा० २९६)।

झलकाना—सक्रि० चमकाना, दरसाना।

झलझल, झलझलाहट—स्त्री० चमक, कान्ति।

झलझलाना—अक्रि० चमकना, झलमलाना। सक्रि० चमकाना।

झलना—सक्रि० (पंखा इ०) हिलाना, 'भीजे खस बीजन झलेहू ना सुखात स्वेद गात ना सुहात बात दावासी डरापिनी।' ग्वाल। ढकेलना।

झलमला—वि० चमचमाता हुआ, चमकीला।

झलमलाना—अक्रि० ठहर ठहर कर चमकना, चमचमाना, निकलते हुए प्रकाशका हिलना डुलना 'मनहु कलानिधि झलमलै कालिन्दीके नीर।' वि० २२३

झला—पु० क्षणिक वर्षा, हलकी वृष्टि 'बरसि सिरावै पहुम उर रूप झलान झकोर।' रतन० २५। पंखा।

झलाझल—वि० चमचमाता हुआ। [†झालर, बंदनवार।

झलाझली—वि० झलाझल, चमकीला।

झलाबोर—वि० जिसमें चमक-दमक हो। पु० चमक। कारचोबी, कामदार अंचल। झाड़ी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झलामल—स्त्री० चमक-दमक, चमचमाहट।
झल्ल—पु० ज्वाला। भाँड़। एक बाजा।
झल्ला—वि० जो गाढ़ा न हो। पु० टोकरा। बौछार।
झल्लाना—अक्रि० झुँझलाना, चिढ़ना। सक्रि० किसीको चिढ़ानेके लिए कुछ करना।
झवर, झवारि—स्त्री० झगड़ा 'बड़े घरकी बहू बेटी करत वृथा झवारि।' सूबे० १४९. (दीन० ८७)। वि० चमकीला
झष, झषना—देखो 'झख', 'झखना'।
झषकेतु—पु० कामदेव।
झहनना—अक्रि० झनाना, झनझनाना। (रोएँ इत्यादि का) खड़ा होना।
झहनागा—सक्रि० झनकारना, बजाना 'गति गयंद कुच कुंभ किंकिनी मनहुँ घंट झहनावैं।' सू० ९६
झहरना—अक्रि० गिरने या झड़नेका सा शब्द करना। शिथिल पड़ना। सक्रि० डाँटना, गुस्सा होना 'सूर प्रभुको कहा सिखयौ रिसनि युवती झहरि।' सूबे० १२२
झहराना—अक्रि० लड़खड़ा कर या शिथिल होकर गिरना (उदे० 'अरराना'), 'भहरात झहरात दावानल आयो।' सू० ८१। खिजलाना, झक्लाना 'तुम आवत अति ही झहरानी कहा करी चतुराई।' सूबे० २२६। तिरस्कृत होना 'भटकत फिरत निलज बरजत ही छकर ज्यों झहराये।' व्यास जी। सक्रि० हिलाना। 'कीन्हों झुकि झहराय सकल तारका कुसुम बिन।' राम० ८७
झाँई—स्त्री० परछाईं, छाया, झलक 'जातनकी झाँई परे श्याम हरित दुति होइ।' बि० १, (सूबे० २७७)। अँधेरा (उदे० 'झमकना')। प्रतिध्वनि।
झाँकना—अक्रि० आड़मेंसे ताकना।
झाँकनी—स्त्री० झाँकी।
झाँकर—पु० देखो 'झंकाड़'।
झाँका—पु० जालीदार खाँचा। झरोखा। अन्तर 'सभा माँझ द्रुपदी पति राखी पानिय गुन है जाको। बसन ओट करि कोटे विश्वंभर परन न पायो झाँको।' सूबि० ३३
झाँकी—स्त्री० दर्शन, दृश्य। जिसमेंसे झाँककर देखा जाय।
झाँख—पु० एक तरहका बनैला मृग (रवि० ३३)।
झाँखना—अक्रि० खीजना 'हाथ मरोरि धुनै सिर झाँखी।' प० १००। दुखड़ा रोना, पछताना और कुढ़ना (रामा० २१३)।
झाँखर—पु० काँटेदार और घनी झाड़ियोंका समूह। अरहर इत्यादिके डँठल। 'यह संसार झाड़ और झाँखर, आग लगे बरि जाना है।' कबीर (ककौ० १५३)
झाँगला—वि० ढीला (वस्त्र)।
झाँगा—पु० बच्चोंका ढीला कुरता।
झाँझ—स्त्री० एक तरहके बड़े आकारके मंजीरे 'झाँझि, भेरि डिंडिमी सुहाई। सरस राग बाजहिं सहनाई।' रामा० १८७। शैतानी, ऊधम। क्रोध। पाँवका एक जेवर।
झाँझड़ी—स्त्री० 'झाँझ'। पाँवका एक गहना।
झाँझन—स्त्री० झाँझर, एक तरहका पैरका कड़ा जो भीतरसे पोला होता है और जिसमें, बजनेके लिए, धातु इ० के दाने भरे रहते हैं।
झाँझर, झाँझरि—स्त्री० पाँवका एक जेवर, पैंजनी। छलनी। वि० जर्जर, पुराना। छिद्रयुक्त (उदे० 'छूरा'), 'तिन बातन्ह झाँझर भा हीया।' प० २३५
झाँझरी—स्त्री० झाँझ। पाँवका एक जेवर, पैंजनी।
झाँझा—पु० झंझट। झाँझ। सेव निकालनेका पौना। एक कीड़ा।
झाँझिया—पु० झाँझ बजाने वाला। [उछल कूद।
झाँप—स्त्री० परदा, ढक्कन, आवरण,। झपकी। पु०
झाँपना—सक्रि० आवरण डालना, छिपाना, ढाँपना (उदे० 'उघेलना', सू० १२४), 'ज्यों उझकति झाँपति बदन बिहँसत अति सतराइ।' वि० २०७। झेंपना, लज्जित होना।
झाँपी—स्त्री० झपकी। बाँस या सूँजकी पिटारी।
झाँवना—सक्रि० झाँवेसे घिस घिस कर धोना (नति० २२८, दास ४१)।
झाँवर—स्त्री० डाबर। वि० झाँवेके सदृश कुछ काले रंगका। कुम्हलाया हुआ, शिथिल 'भीखन ग्रीषम तापसे भयो झाँवरो छीन। है यह चातक डाबरो अनुग रावरो दीन।' दीन० २००। '.. चितवत मग भई दृष्टि झाँवरी।' सूबे० ३९०
झाँवली—स्त्री० आँखका संकेत। झाँई।
झाँवाँ—पु० जली हुई ईंट।
झाँसना—सक्रि० बहकाना, धोखा देना।
झाँसा—पु० धोखा, बहकावा।
झाईं—स्त्री० देखो 'झाँई'। (विन० ३६२)।
झाऊ—पु० एक पेड़ (सू० ६१)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झाग—पु० फेन, गाज (कबीर ३२३)।
झागड़—पु० झगड़ा, बखेड़ा।
झाड़—पु० पेड़। झाड़की तरहका लैम्प।
झाड़खंड—पु० जंगल।
झाड़न—स्त्री० झाड़नेका कपड़ा। झाड़नेसे निकला हुआमैल।
झाड़ना—सक्रि० बुहारना, फटकारना, धूल साफ करना। झाड़-फूँक करना 'निरजन सोइ मंत्र जब झाड़िए तब इह होएव भाल।' विद्या० २१३
झाड़बुहार—स्त्री० सफाई।
झाड़ा—पु० झाड़-फूँक। मल।—**फिरना** = मल-त्याग करना 'दहिने स्वर झाड़े फिरै बायें लघुशंकाय। युक्ती ऐसी साधिये तीनों भेद बताय।' चरनदास
झाड़ी—स्त्री० छोटे छोटे पौधोंका समूह। छोटा पौधा।
झाड़ू—स्त्री० बोहारी, बढ़नी। पुच्छल तारा।
झापड़—स्त्री० थप्पड़, तमाचा।
झाबर—पु० दलदल भूमि। पु० झावा, खाँचा।
झावा—पु० झब्बा। झोआ, बड़ी टोकरी।
झाम—पु० गुच्छा। छल, धोखा। डाँट-डपट। बड़ी कुदाल।
झामर—वि० मलिन 'सामरि है झामरि तोर देहा।' विद्या० १२३, (२६७)। पु० एक गहना। सिल्ली।
झामी—पु० छलिया, धोखा देनेवाला।
झायँ झायँ—स्त्री० (सुनसान स्थानकी) झनझनाहट।
झार—स्त्री० ज्वाला, लपट, आग, आँच 'धरती सरग जरै तेहि झारा।' प० ६९, (उदे० 'अधिकाना।')। ईर्ष्या, जलन। पु० झाड़, पेड़ 'बिकट पहार झार बने सिंह स्यार निरबाह नहीं होत रथ बहलको जामें है।' गोपालचन्द्र मिश्र। पौना, झरना। समूह। वि० समूचा, समस्त। एक मात्र।
झारखंड—पु० देखो 'झाड़खंड'। एक पर्वत।
झारना—सक्रि० झटकारना 'राधेको बनाय विधि धोयो हाथ जाम्यो रंग ताको भयो चन्द्र कर झारे भये तारे हैं।' बेनी। झटका देकर गिराना, अलग करना 'दुश्मन दावागीर होय तिनहूँको झारै (लाठी)।' गिरिधर। बालोंमें कंघी करना 'झारहु केस मकुट सिर देहू।' प० १३१। चलाना 'तमकि तेग तुरकरन पर झारी।' छत्र० ९०
झारा—पु० तलाशी (साखी ७८)। सूप। पौना जिसमें छेद हों (बुंदेल०)।
झारि—स्त्री० लपट, ज्वाला, जलन। वि० एक मात्र। कुल 'जाके बल लवलेस ते जितेहु चराचर झारि।' रामा० ४२६। 'गढ़पर बसहिं झारि गढ़पती।' प०१८
झारी—स्त्री० लुटियाकी तरहका एक टोंटीदार पात्र 'फूटी एक थारी बिन टोंटनीकी झारी हुती, बाँसकी पिटारी औ कँधारी हुती टाटकी।' सुदामा० १५। वि० कुल, समस्त 'धेनु रूप धरि हृदय बिचारी। गई तहाँ जहँ सुरमुनि झारी।' रामा० १०२। स्त्री० झाड़ी। एक खट्टी पेय वस्तु 'पुनि झारि सो द्वै विधि स्वाद घने। बिधि दोइ पछावरि सात पने।' के० २०४
झाल—स्त्री० वर्षाकी झड़ी। झार, लपट 'एक कनक अरु कामनी दोउ अगिनकी झाल।' साखी १७३। तीक्ष्णता, तीतापन, लहर। पु० झाँझ। वि० देखो 'झार'।
झालड़,-र—स्त्री० लटकता हुआ हाशिया। घड़ियाल। झाँझ। एक पकवान 'झालर माँडे आये पोई।' प० १३४
झालरना—अक्रि० फैल कर छा जाना 'नैंक न झुरसी बिरह झर नेहलता कुँभिलाति। नित नित होति हरी हरी खरी झालरति जाति।' वि० ४५
झालि—स्त्री० एक खट्टी पेय वस्तु (झारी)। वर्षाकी झड़ी (झाल)।
झावँझावँ—स्त्री० हुज्जत, बकवाद।
झिंगवा—पु० एक मछली।
झिंगुली—स्त्री० झँगुलिया, बच्चोंका ढीला कुरता।
झिंझिया—स्त्री० बहुतसे छेदोंवाला घट 'जालरंध्र मग ह्वै कढ़े तियतन दीपति-पुंज। झिंझिया कैसो घट भयो दिनहीमें बनकुञ्ज।' रस० २
झिंझी—स्त्री० झिल्ली।
झिगरना—अक्रि० झगड़ना 'एक गरे धरे बाँह नाँहसो झिगरि रही एक पद पाँह परी बिनवति दासी है।' [दीन० ३१
झिझक—देखो 'झझक'।
झिझकना—अक्रि० हिचकिचाना, रुकना।
झिझकारना—सक्रि० उपेक्षा करना, दुत्कारना, झटकना।
झिड़कना—सक्रि० घुड़कना, अवज्ञापूर्वक कहना। झटकना।
झिड़की—स्त्री० घुड़की, डाँट, फटकार।
झिनवा—वि० झीना। पु० धानका एक भेद।
झिपना—अक्रि० झँपना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झिपाना—सक्रि० लज्जित करना।

झिरकना—सक्रि० डपट कर या अनादरके साथ बात कहना। अलग फेंक देना।

झिरझिरा—वि० झीना, बारीक।

झिरहर—वि० झँझरा, जिसमें बहुत छेद हों 'छिनहर घर औ झिनहर टाटी, घन गरजत कंपै मेरी छाती।' कबीर १८१

झिलना—अक्रि० घुसना 'संकलप नीर भई सरिता गँभीर बहु जिनके प्रवाहना पयोधि पै झिलत हैं।' राम रसायन। मग्न होना, तृप्त होना। झेला जाना, सहा जाना।

झिलम—स्त्री० एक तरहका शिरस्त्राण (रतन० ३६)।

झिलमिल—स्त्री० काँपता हुआ प्रकाश 'जहँ ललित बागनि द्रुमलतनि मिलि रहै झिलमिलि झूमि है'। भू० ८। ज्योतिकी अस्थिरता। एक महीन वस्त्र। लोहेका कवच। वि० चमचमाता हुआ।

झिलमिला—वि० महीन चमकता हुआ 'झिलमिली ओढ़नी किनारीदार चीरकी।' रवि० ६३

झिलमिलाना—अक्रि० रोशनीका हिलना। ठहर ठहर कर चमकना, जुगजुगाना 'अगम अगोचर गम नहीं जहाँ झिलमिलै जोत।' साखी १२१

झिलमिली—स्त्री० एक तरहका परदा, चिक (रतन० ३४)। कानका एक गहना।

झिल्ली—स्त्री० झींगुर (दास २७)। बारीक चमड़ा। पतली तह, आँखका जाला।

झींक, झींका—पु० छीका, सिकहर। जितना अन्न एक बार चक्कीके मुखमें डाला जाय।

झींखना—अक्रि० मनमें पछताना और कुढ़ना, मनमें गुस्सा होना, खीजना। दुखड़ा रोना।

झींगवा—स्त्री० एक तरहकी छोटी मछली।

झींगुर—पु० एक छोटा कीड़ा।

झींवर—पु० देखो 'झीवर' (कबीर २००)।

झींसी—स्त्री० वर्षाकी छोटी छोटी बूँदें।

झीठ—वि० झूठ 'भारी कहूँ तो बहु डरूँ हलुका कहूँ तो झीठ।' साखी १२४

झीना—वि० पतला, अति सूक्ष्म (देखो 'खीन'), (रतन० ५६)। दुर्बल, मन्द। बहु-छिद्र-युक्त 'झीनी झीनी बीनी चदरिया।' कबीर (कबी० १५३)

झीमर, झीवर—पु० धीवर, मछुआ, मल्लाह।

झील—स्त्री० प्रकृतिनिर्मित बड़ा तालाब।

झुँगना—पु० जुगनू 'चतुर प्रवीण आगे मूरख उचार करै सूरजके आगे जैसे झुँगना दिखाइये।' सुन्द० ७४

झुँझना—पु० एक तरहका खिलौना, झुनझुना, घुनघुना। 'कबहूँ चटकोरा चटकावति झुँझना झुझुन झूलना झूलैं।' सू० मदन० (ब्रज० १२२)

झुँझलाना—अक्रि० चिढ़ना, खीजना।

झुंड—पु० समुदाय, समूह, गरोह।

झुकना—अक्रि० प्रवृत्त होना। निहुरना, नवना (उदे० 'झूँक')। नम्र होना। कुपित होना (उदे० 'अरगाना'), 'भैयन सों प्रभु झुकत हैं क्यों न कहौ समुझाइ।' राम० ४५६, (सूदे० ३४१, मति० १८०)

झुकराना—अक्रि० झोंका खाना।

झुकाना—सक्रि० नवाना, टेढ़ा करना।

झुकामुखी—स्त्री० अँधेरेका समय।

झुकाव—पु० प्रवृत्ति, रुख, ढाल।

झुफकावना—सक्रि० रेलना, आक्रमणके लिए प्रेरित करना 'मो तनपर झुफकावहीं गज मतवारे नैन।' रतन० २८

झुटुंग—वि० झोंटेवाला, जटाधारी 'योगिनी झुटुंग झुंड झुंड बनी तापसी सी तीर तीर बैठी हैं समर सरि खोरि कै।' कविता० १९९

झुठकाना—सक्रि० झूठा विश्वास कराना, धोखा देना 'त्यों गुलाल झूठी मुठी, झुठकावत प्यो जाय।' वि० २०७ (वंग)। झूठा बनाना।

झुठलाना, झुठाना, झुठालना—सक्रि० झूठा साबित करना।

झुठाई—स्त्री० असत्यता, झूठापन।

झुनक—पु० नूपुर बजनेका शब्द।

झुनझारा—वि० झीना, बारीक।

झुनझुना—पु० देखो 'झुँझना'।

झुनझुनियाँ—स्त्री० झुनझुन आवाज़ करनेवाला गहना। बेड़ी। सनईका पौधा।

झुनझुनी—स्त्री० एक प्रकारकी सनसनाहट जो हाथ या पैरमें दबे रहनेके कारण उत्पन्न होती है।

झुपझुपी, झुबझुबी—स्त्री० कानका एक गहना।

झुपरी—स्त्री० झोंपड़ी।

झुमका—पु० कानका एक आभूषण।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झुरना—अक्रि० सूखना। चिन्ता आदिके कारण दुबला होना।

झुरमुट—पु० पेड़ों आदिका समूह। मनुष्योंका समूह 'खिन इक महँ झुरमुट होइ बीता।' प० १२६

झुरसना—अक्रि० कुम्हलाना, झौंसना, ऊपरी भागका अंशतः जल जाना 'तर झुरसी ऊपर गई कज्जल जल सिरकाय।' बि० १३७ (वंग०)

झुराना—सक्रि० सुखाना 'भंजन कै नित न्हायके अंग अँगोछि कै बार झुरावन लागी।' ललित० ६२। अक्रि० सूख जाना, दुःखसे क्षीण होना 'ते तित सुधि अति ही करत सब तन रहीं झुराय।' सत्यना० (सूबे० ८८), 'सींचे लाग झुरानी बेली।' प० २११

झुरावन—स्त्री० सुखानेके कारण नष्ट हुआ अंश।

झुलना—स्त्री० झूला। ढीला कुरता।

झुलनी—स्त्री० नथ इ० में लटकता हुआ मोतियोंका झुमका।

झुलमुला—वि० चमचमाता हुआ, झिलमिला।

झुलवा, झुलुवा—पु० झूला।

झुलसना—अक्रि० ऊपरी भागका कुछ कुछ जल जाना, झुरझा जाना।

झुलाना, झुलावना—सक्रि० झूलेमें बैठाकर हिलाना, बारबार धक्का देकर हिलाना (उदे० 'घालना')।

झुलौआ, झुलौवा—पु० कुरता।

झुहिरना—अक्रि० लादा जाना।

झूँक—पु० झोंका, झकोरा 'रँगराती, हरी हहराती लता झुकि जाती समीरके झूँकनि सों।' देव (ब्रज० २९९)

झूँखना—अक्रि० देखो 'झींखना', (सूबे० ३५९)।

झूझना—अक्रि० जूझना, युद्ध करना, युद्धमें प्राण देना (कबीर ६८, ६९)।

झूठ—वि० जो सच न हो, असत्य।

झूठन—स्त्री० जूठन।

झूठमूठ—क्रिवि० झूठे ही, व्यर्थ ही।

झूठा—वि० असत्य। मिथ्यावादी। नकली, बनावटी। जूठा, उच्छिष्ट 'झूठे जानि न संग्रहे मनु मुँह निकसे बैन। याही ते मानो किये बासनको विधि नैन।' बि० १४३

झूना—वि० देखा 'झीना'।

झूमक—पु० एक तरहका गीत जिसे स्त्रियाँ झुण्ड बाँध कर गाती हैं, झूमर 'सखि झूमक गावैं अँग मोरी।' प० १६८, 'झूमि झूमि झूमक सब गावति बोलति मधुरी बानी।' सूबे० २४५

झूमका—पु० झुमका, गुच्छा 'वर्ण वर्ण जहाँ तहाँ बहुधा तने सुवितान। झालरैं मुकुतानिकी अरु झूमके बिन मान।' के० १७६

झूमड़झामड़—पु० व्यर्थकी बात, डकोसला।

झूमना—अक्रि० बारबार इधर उधर हिलना, बारबार झोंके खाना।

झूमर—पु० कानमें पहिननेका गहना, झुमका। सिरमें पहिननेका गहना। एक तरहका गीत, झूमक। †

झूमरि—स्त्री० देखो 'झूमर'। [† जमाव, जमघट।

झूर—वि० जूठा। सूखा। खाली। व्यर्थ। स्त्री० जलन, पीड़ा।

झूरना—अक्रि० सूखना 'तन तिनउर भा झूरौं खरी।' प० १७१, (३० ४)

झूरा—पु० सूखी जगह। वर्षाका अभाव, सूखा। कमी, घटी। वि० सूखा हुआ 'काठहु चाहि अधिक सो झूरा।' प० ६५। खाली।

झूरै—क्रिवि० व्यर्थ ही 'किँगरी गहे बजावै झूरै।' प० ७७, (१७७)। वि० सूखा, व्यर्थ, खाली 'झूरै ठाढ़ हौं, काहेक आवा। बनिज न मिला रहा पछितावा।' प० ३३

झूल—स्त्री० हाथी, घोड़े इत्यादिकी पीठपरका चौकोर कपड़ा (ललित ७१)। झूला।

झूलन—पु० एक तरहका गाना। कृष्ण आदिकी मूर्तियोंके झुलानेका उत्सव। झूलनेकी क्रिया।

झूलना—अक्रि० नीचेकी ओर लटक कर आगे पीछे हिलना। झूलेपर बैठ कर आगे पीछे जाना। पु० झूला, हिंडोला। आँखोंमें झूलना = हमेशा आँखोंके सामने रहना।

झूलरि—स्त्री० लटकता हुआ झुमका।

झूला—पु० छत या पेड़की डाल इत्यादिसे लटकायी हुई रस्सी या तार जिसपर पटरी डाल कर या यों ही झूलते हैं। दोला, हिंडोला।

झेंपना—अक्रि० लज्जित होना।

झेर—स्त्री० देर, विलम्ब (सूबे० १५२), 'दधि बेचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति।' सूबे० १६७। झगड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झेरना—सक्रि० झेलना, बरदाश्त करना, उठाना। सक्रि० शुरू करना।

झेरा—पु० झगड़ा, झंझट (सू० ६५), 'सूरदास प्रभुकी तुहि जीवनि कतहि करत त्रिय झेरे री।' सूबे० २२९

झेल—स्त्री० हिलोरा, धक्का। पु० देर, विलम्ब 'चली बरात जाय सरजू तट रहिहै, अब नहिं झेला।' रघु० १३३

झेलना—सक्रि० सहना, ऊपर लेना 'ठेलि हलधर दियो, झेलि तब हरि लियो'—सूबे० २९३। ग्रहण करना। पानीमें हिलना, हाथ पाँवसे पानी हटाना (सू० ४९)। ढकेलना, आगे चलाना, दूर करना 'पर्वत पुंज जिते उन मेले। फूलके तूल लै बानन झेले।' के० ३६९

झोंक, झोक—स्त्री० झोंका, झटका, आघात 'नेही दृग तन क्यों सकैं इनकी झोकैं ओड़।' रतन० २७। वेग, भार। प्रवृत्ति, ठाट, चाल। पानीका धक्का।

झोंकना—सक्रि० झोंकेके साथ फेंकना। ढकेलना, धक्का देना। भाड़ झोंकना = भाड़में सूखे पत्ते आदि डालना, तुच्छ काम करना 'जाके सिर अस भार, सो कस झोंकत भार अस।' रहीम

झोंका—पु० धक्का, झटका, वायु इत्यादिका आघात। झकोरा। पानीका हिलोरा। मुट्ठी 'शोक भयो सुरनाथकके जब दूसरी बार लियो भरि झोंको।' सुदामा० ९। ठाट, चाल 'कटि लहँगा लोलो बन्यो झोंको जो देखि मन मोहै।' सूबि० २०

झोंट, झोंटा—पु० लम्बे केशोंका समूह (कबीर ३१३)। झूला झुलानेको दिया गया धक्का, झोंका (सू० १७५), 'हिंडोरौ झूलत हैं पिय प्यारी। श्री रँग देवी सुदेवी विसाखा झोटा देत ललितारी।' श्रीभट्ट (ब्रज० १४२)।

झोंटी—स्त्री० बालोंका समूह, झोंटा 'सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोंटी।' रामा० २७७। झोंका।

झोंपड़ा—पु० घास-फूससे छाया हुआ छोटा मकान या [रहनेका स्थान।

झोंपड़ी—स्त्री० पर्ण-कुटी, मढ़ी।

झोंपा—पु० गुच्छा 'झूलहिं रतन पाटके झोंपा।' प० ५२

झोटा—देखो 'झोंटा'।

झोटिंग—वि० बड़े बड़े बालोंवाला, जटाधारी (रामा०

झोपड़ा, झोपड़ी—देखो 'झोंपड़ा', 'झोंपड़ी'। [५०७)।

झोरई—वि० जिसमें रसा हो, रसेदार। स्त्री० रसेदार तरकारी।

झोरना—सक्रि० झोंका देकर हिलाना। झकझोरना।

झोरि, झोरी—स्त्री० झोली 'रही उजराई है न घटपट सूझै नहिं लै गुलाल मोहमई झोरी झकझोरी है।' दीन० १६०। एक तरहकी रोटी। पेट।

झोल—पु० कपड़ेका झूलता हुआ अंश। कपड़ेके झूलने या लटकनेका भाव। अंचल, छोर। आड़। तरकारी आदिका रसा। माँड़। गर्भ। भस्म, राख 'तेहि पर विरह तराइ कै चहै उड़ावा झोल।' प० १६९। जलन। वि० खराब, बेकाम, व्यर्थ, तुच्छ 'थके मुख कछु कहि न आवै, सकल मख कृत झोल।' सू० १८७

झोलना—सक्रि० झुलसाना, जलाना।

झोला—पु० साधुओंका ढीला-ढाला कुरता। बड़ी झोली। झोंका, धक्का 'कोई खाहिं पौन कर झोला।' प० ७१, (२२३ भी)। इशारा।

झोली—स्त्री० एक तरहकी थैली। स्त्री० भस्म राख।

झौंझट—देखो 'झंझट'।

झौंद—पु० पेट।

झौंर—पु० जोरसे बहनेवाला पानी 'फिर फिर चित उतही रहत टुटी लाजकी लाव। अंग अंग छवि झौंरमें, भयो भौंरकी नाव।' बि० ९। एक तरहका गहना, 'झब्बा'। कुंज, पेड़ोंका घना समूह। समूह।

झौंरना—अक्रि० गूँजना (वि० २०४)। दौड़कर पकड़ना।

झौंराना—अक्रि० डोलना, झूमना 'साँठिहि रंक चलै झौंराई।' प० २०५। काला पड़ जाना, कुम्हलाना।

झौंसना—अक्रि० ऊपरी भागका अंशतः जल जाना, कुम्हलाना, मुरझाना।

झौर—पु० झगड़ा, रार। डाँट-डपट। 'झपट', झगड़ 'फैलि चल्यो अगनित घटा सुनत सिंह घहरानि। परै झौर चहुँ ओर तें होत तरुनिकी हानि।' दास ४५

झौरना—सक्रि० दौड़कर पकड़ना, दबा लेना।

झौरे—क्रिवि० घेरे, निकट, पास। साथ।

झौवा—पु० छोटी टोकरी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ट

टंक—पु० चार माशेकी तौल, कुदाल, कुल्हाड़ी, टाँकी।

टँकना—अक्रि० सिया जाना, टाँका लगाकर जोड़ा जाना, कुटना (सिल इ०), लिखा जाना।

टंका—पु० एक पुराना सिक्का। एक पुरानी तौल। स्त्री० जाँघ।

टंकार—स्त्री० रोदा खींचनेका शब्द। ख्याति। झनकार।

टंकारना—सक्रि० धनुषकी प्रत्यञ्चा तानकर आवाज़ करना।

टंकिका—स्त्री० छेनी, टाँकी।

टंकी—स्त्री० कंडाल, हौज।

टंकोर—पु० धनुषकी कसी हुई रस्सी तानकर छोड़नेका शब्द, टंकार (रामा० २७२)।

टँगड़ी, टँगरी—स्त्री० टाँग।

टँगना—अक्रि० लटकना, ऊँचे आधारपर अटकाया जाना।

टंच—वि० कृपण। नीच, दुष्ट 'पायो जानि जगतमें सब जन कपटी कुटिल कलिजुगी टंचु।' हित हरिवंश

टंट घंट—पु० आडम्बर, ढकोसला।

टंटा—पु० बखेड़ा, झगड़ा, फसाद।

टंडल, टंडैल—पु० मजदूरोंका मुखिया।

टंडिया—स्त्री० 'बहूँटा' नामक आभूषण।

टई—स्त्री० युक्ति, प्रयोजन सिद्ध करनेका मौक़ा। काम 'कलि करनी बरनिये, कहाँलों, करत फिरत बिन टहल टई है।' विन० ३३९

टक—स्त्री० बिना पलक गिराये, स्थिर दृष्टिसे देखना।

टकटका—पु० टकटकी, निर्निमेष दृष्टि।

टकटकाना—सक्रि० टकटकी लगाकर ताकना।

टकटकी—स्त्री० देखो 'टक'।

टकटोना, टकटोरना—सक्रि० टटोलना, अनुसन्धान करना (उदे० 'गुनीला'), खोजना 'पायो नहिं आनन्द लेस मैं सबै देस टकटोये।' नागरी०, 'नहिं सगुन पायेउ रहे मिसु करि एक धनु देखन गये। टकटोरि कपि ज्यों नारियरु सिर नाइ सब बैठत भये।' जा० मं०, (उदे० 'रटना')

टकटोलना, टकटोहना—सक्रि० देखो 'टकटोरना'।

टकराना—अक्रि० ठोकर खाना, ज़ोरसे भिड़ना। मारा मारा फिरना, इधर उधर घूमना।

टकसार, टकसाल—स्त्री० सिक्के ढालनेकी जगह।

टकसाली—वि० खरा, चलनेवाला। प्रामाणिक। टकसाल सम्बन्धी।

टका—पु० चाँदीका सिक्का, रुपया। धन। अधला।

टकुआ—पु० चरखेका तकुआ। तराज़ूके पलड़ोंकी रस्सी।

टकैत—वि० मालदार।

टकोर—स्त्री० देखो 'टंकोर', 'प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टकोरा। रिपु दल बधिर भयेउ सुनि सोरा।' रामा० ४८८। डंकेकी चोट। हलका आघात। तीखापन।

टकोरी—स्त्री० टक्कर। आघात, चोट 'बाजत हैं काम कोह ढफ और मृदंग दोऊ लागी उदवेगकी उमंग सो टकोरी है।' दीन० १६०

टकौरी—स्त्री० सोना इ० तौलनेके लिए छोटा काँटा।

टक्कर—स्त्री० मुठभेड़, ठोकर, हानि।

टखना—पु० पाँवका गट्टा, गुल्फ।

टगर—पु० क्रीड़ा। सुहागा। एक पेड़। ऊँची मेंड़, टीला।

टघरना—अक्रि० देखो 'टिघलना'।

टचटच—क्रिवि० धायँ धायँ करके [टचटच तुम बिनु आगि मोहि लागी।' प०]

टटका—वि० ताज़ा, हालका (दीन० १८)।

टटल बटल—वि० अंड बंड।

टटिया—स्त्री० बाँस, अरहर आदिका परदा या छाजन।

टटीबा—पु० चक्कर।

टटुआ—पु० टट्टू।

टटोरना, टटोलना—सक्रि० खोजने या पता लगानेके लिए इधर उधर हाथ फेरना। जाँच करना, थाह लेना 'प्रीतमको देख्यो कहूँ, इन लीन्ही गति चोरि। परम चातुरी सींवगुन, आये लेत टटोरि।' चाचा हित०। (उदे० 'बिलखाना')

टटोहना—सक्रि० टटोलना, हाथसे स्पर्श करना 'दै गलबाहीं रहे परस्पर चिबुक टटोहैं।' भगवत रसिक

टट्टर, टट्टा—पु० देखो 'टटिया'।

टट्टी—स्त्री० देखो 'टटिया'। पाखाना।

टनकना—अक्रि० रह रहकर पीड़ा होना। 'टन टन' शब्द होना। [† घंटा इ० बजाना।

टनटनाना—अक्रि० 'टन टन' शब्द होना। सक्रि० †

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टनमना—वि० चंगा, स्फूर्तिमय।
टनाका—वि० तेज़ (धूप)। पु० घंटेकी आवाज़।
टप—स्त्री० बूँद इत्यादि गिरनेका शब्द।
टपकना—अक्रि० बूँद बूँद होकर गिरना, चूना। ऊपरसे एक बारगी गिरना, टूट पड़ना।
टपका—पु० बूँद बूँद टपकनेकी क्रिया, रुक रुक कर होनेवाली पीड़ा। ठोकर 'यह तन काँचा कुंभ है लिए फिरै था साथ। टपका लागा फूटिया कछु नहिं आया हाथ।' साखी ६५
टप्पा—पु० निश्चित दूरी। कूद, छलांग। उछल कर भूमि स्पर्श करनेकी क्रिया। बीच, अन्तर।
टमटी—स्त्री० एक तरहका बरतन।
टरकना—अक्रि० खिसक जाना, हट जाना। टर्र टर्र शब्द करना।
टरना—अक्रि० हटना, खिसकना, दूर होना 'लगे उटावन टरहि न टारा।' रामा० १३६, 'तुलसिदास प्रभु तव प्रकास बिन संसय टरत न टारी।' विन० २८०। एक जगहसे दूसरी जगह चले जाना। ठीक न ठहरना, अन्यथा होना 'चन्द टरै सूरज टरै, टरै जगत् व्यवहार। पै दृढ़ श्री हरिचन्दको टरै न सत्य विचार।' हरि०। स्थगित होना। बीतना। उल्लंघित होना, भंग होना, खंडित होना 'सुनि धुनि सिद्ध समाधि टरी।' सू० ८४
टराना—अक्रि० देखो 'टरना'। 'सकल सखा अरु नन्द यशोदा वे चितते न टराहीं।' सू० (कलौ० १८१)
टर्राना—अक्रि० गर्वपूर्वक बात करना, सीधे न बोलना।
टलना—देखो 'टरना' (कबीर २३४)।
टलाटली—स्त्री० टालमटोल, बहानेबाज़ी 'करिके सबै टलाटली अली चलीं सुख पाय।' वि० १६०
टसकना—अक्रि० अपने स्थानसे हटना, खसकना। प्रभावित होना।
टसर—पु० एक मोटा रेशम।
टहकना—अक्रि० टिघलना, रुक रुक कर पीड़ा करना।
टहना—पु० टहनी-, स्त्री० पतली शाखा।
टहल—स्त्री० परिचर्या, सेवा। काम-काज।
टहलुई—स्त्री० नौकरानी, दासी।
टाँक—स्त्री० चार माशेकी तौल। जाँच। कठोरा 'बहिने माछ रूपके टाँका।' प० ६०, (२७२)। स्त्री० लिखावट 'छतो नेह कागद हिये भई लखाय न टाँक।' वि० १८८। लेखनीकी नोक।
टाँकना—सक्रि० सीना, जोड़ना। बहीपर चढ़ाना। (सिल इ०) कूटना।
टाँका—पु० सियन का एक एक अंश, सियन, जोड़।
टाँकी—स्त्री० पत्थर तोड़नेका औज़ार, छेनी। (दीन० १), 'टाँकी लागी सबदकी निकसी कंचन खानि।'
टाँच—स्त्री० टाँका, सियन। थिगली। [साखी १६१
टाँचना—सक्रि० सीना, टाँकना (कबीर १५५)। काटना, छाँटना।
टाँठ—वि० कड़ा, कठिन। बलवान्, दृढ़।
टाँड—स्त्री० एक आभूषण, (उदे० 'कंगन'), राशि, पंक्ति। एक तरहकी लकड़ीकी पाटन।
टाँडा—पु० व्यापारकी वस्तुएँ जो बैलों आदिपर लादी गयी हों। व्यापारकी वस्तुओंसे लदे हुए बैलोंका समूह। व्यापारियोंका झुण्ड 'बहुत भरोसो जानि तिहारो अब कीन्हों भरि भाँडो। लीजे देगि निबेरि सूर प्रभु यह पतितनको टाँडो।' सूवि० ५०, (कबीर १७४, ३०१), 'मन राजा नायक भया, टाँड़ा लादा जाय।' साखी १११
टाँड़ी—स्त्री० टिड्डी नामका कीड़ा।
टाट—पु० सनका बना मोटा कपड़ा 'सिभनि सोहावनि टाट पटोरे।' रामा० १३। बिछावन।
टाटर—पु० टट्टर। खोपड़ी।
टाटिका, टाटी—स्त्री० देखो 'टटिया' (कबीर ९३)।
टाड़—स्त्री० बाँहपर पहिननेका आभूषण-विशेष, बहूँटा। 'बाहू कंगन टाड़ सलोनी।' प० ४९, रवि० ९५
टान—स्त्री० खींच; खिंचाव। पु० टाँड।
टाप—स्त्री० घोड़ोंका पादतल, सुम।
टापा—पु० शौवा। मैदान। फलाँग, उछाल। टापा देना = छलाँग मारना (साखी ६५)।
टापू—पु० द्वीप।
टामक—पु० डुग्गी, डिमडिमी 'एक जाम जब निसि रहै सुनि टामकको सद।' सुजा० १३२
टामन—पु० टोटका, जंत्रतंत्र।
टारना, टालना—सक्रि० अलग करना। दूर करना, सरकाना, हटाना (उदे०'टरना')। औरका और करना। उल्लंघन करना। स्थगित करना। बिताना।
टालटूल, टालमटाल, टालमटूल—स्त्री० टरकानेकी क्रिया, बहाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टाली—स्त्री० बैल इत्यादिके गलेकी घण्टी। कूदफाँद करनेवाली बछिया या गाय।
टाहली—पु० टहल करनेवाला, नौकर।
टिकटिकी—स्त्री० स्थिर दृष्टि। टिकटी।
टिकठी—स्त्री० तिपाई। अरथी 'गढ़ सौंपा बादल कहँ गए टिकठि बसि देव।' प० ३२९
टिकड़ा—पु० गोल मोटी रोटी। चांदी इ० का गोल चिपटा टुकड़ा।
टिकना—अक्रि० कुछ दिन चलना या काम देना। ठहरना, विश्राम करना। तलीमें बैठ जाना।
टिकली—स्त्री० छोटी बिन्दी या सितारा। छोटी टिकिया।
टिकाऊ—वि० चलनेवाला।
टिकाना—सक्रि० ठहराना, रोकना, सहारा देना, सहारे रखना।
टिकिया—स्त्री० एक पकवान। गोल चिपटा टुकड़ा।
टिघलना—अक्रि० द्रवना, पिघलना। [बिन्दी।
टिटिह, टिटिहा—पु० नर टिटिहिरी, नर टिट्टिभ।
टिटिहरी, टिट्टिभ—स्त्री० पानीके समीप रहनेवाली एक चिड़िया। कुररी।
टिड्डी—स्त्री० एक उड़नेवाला कीड़ा।
टिपका—पु० बिन्दु।
टिपारा—पु० ऊँची दीवारकी टोपी (गीता० २९७, ३१२)।
टिप्पणी, टिप्पनी—स्त्री० व्याख्या, टीका।
टिमटिमाना—अक्रि० मन्द मन्द प्रकाश देना।
टिमुक—स्त्री० चमक, झमक, चौंकनेका भाव।
टिमुनी—स्त्री० कोहनी।
टींडी—स्त्री० टिड्डी।
टीकना—सक्रि० टीका या चिह्न लगाना।
टीका—पु० मस्तकपर चन्दन इत्यादिका चिह्न, तिलक। '...सिर केसरिको टीको'—सू० ११०। विवाहके पूर्वकी एक रस्म, तिलक। श्रेष्ठ व्यक्ति, शिरोमणि। कलंक, लाञ्छन, चिह्न। भेंट, नजराना 'रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर। देश देश ते टीका आयो रतन कनक मनि हीर।' सूबे० ३४। माथेका एक गहना 'गोरे भाल बिन्दु सेंदुरपर टीका धरेउ जराऊ।' सू० १०३ स्त्री० व्याख्या।
टीपना—स्त्री० जन्मपत्री। सक्रि० दबाना, हलका प्रहार करना।
टीबा—पु० टीला, ऊँची ज़मीन 'ऊँचे टीबे मछ बसत है, सत्ता बसै जल माहीं।' कबीर १४७
टीमटाम—स्त्री० तड़क-भड़क।
टीसना—अक्रि० रुक रुक कर पीड़ा करना
टुक—क्रिवि० तनिक, थोड़ा।
टुकड़ा—पु० टूटा भाग, खंड, हिस्सा।
टुकड़ी—स्त्री० खंड, दल, गोल।
टुनगी—स्त्री० फुनगी।
टुनिहाई—स्त्री० टोना करनेवाली, डायन।
टूक—पु० टुकड़ा, खंड 'कुँवर हाथको खम्भ तब काटि कियो दो टूक।' सबल सिंह, (राम० ६६)
टूट—वि० टूटा हुआ, खण्डित, 'टूट चाप नहिं जुरहिं रिसाने।' रामा० १५०। स्त्री० त्रुटि, चूक। 'टूट सँवारहु मेरवहु सजा।' प० १०
टूटना—अक्रि० भग्न होना, खंडित होना, प्रवाह रुक जाना, जारी न रहना। अनायास प्राप्त होना। झपटना।
टूठना—अक्रि० प्रसन्न होना। सन्तुष्ट होना।
टेंगना—स्त्री० एक तरहकी मछली, 'टेंगरा' मछली।
टेंट—स्त्री० करील। कपासकी ढोंढ़। धोतीकी मुर्री।
टेंटी—स्त्री० करीलका फल, करील।
टेक—स्त्री० टिकनेकी वस्तु, सहारा, आश्रय (उदे० 'करीस'), 'मोको और ठौर न, सुटेक एक तेरिये।' विन० ४२४, 'भइ बिनु टेक करै को ठाढ़ी।' प० १७५। हठ, दृढ़ संकल्प। आदत, टेव। सहारा देनेवाली वस्तु, थाम, थूनी। ऊँचा टीला।
टेकन—पु०, टेकनी—स्त्री० गिरने या लुढ़कनेवाली वस्तुको रोकनेके लिए लगायी जानेवाली वस्तु।
टेकना—सक्रि० सहारा लेना, सहारेके लिए हाथ या अन्य कोई वस्तु थाँभना 'वाम कर जु टेक्यो ब्रजराज।' सूबे० १२४, (उदे० 'पनार')। जिद करना, दृढ़ संकल्प करना 'सुफल लागि पग टेकेउँ तोरा।' प०९४। सहना 'टेकु पियास, बाँधु मन धीसी।' प०१६६
टेकरा—पु०, टेकरी—स्त्री० टीला।
टेकला—स्त्री० धुन, रटना।
टेकुरी—स्त्री० चमारोंका सूआ, सूत कातनेकी तकली।
टेढ़—वि० वक्र, कुटिल, कठिन। स्त्री० टेढ़ापन, ऐंठ।
टेढ़ा—वि० वक्र, कुटिल, असाधु, जटिल। अभद्र, उद्धत।
टेना—सक्रि० धार तेज करनेके लिए पत्थर आदिपर घिसना (रामा० २०६)।
टेर—स्त्री० बुलानेकी आवाज़, पुकार। तान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टेरना—सक्रि० उच्च स्वरसे पुकारना, बुलाना (रामा० ५६७, उदे० 'गुआरि')। ऊँची आवाज़से गाना 'नचत रचत रुचिर एक, याचक गुनगण अनेक, चारण मागध अगाध,बिरद बंदि टेरे।' के० ७९८

टेव—स्त्री० आदत, स्वभाव (विन० ४५५), 'कोऊ करै कितेकहू तजौ न टेव गोपाल।' रस० २३

टेवैया—पु० टेनेवाला, धार तेज़ करनेवाला।

टेसुआ, टेसू—पु० पलाशका पेड़ या फूल। बालकोंका एक खेल।

टोंचना—सक्रि० गड़ाना, गोदना। पु० ताना, उपालंभ।

टोंट—स्त्री० चोंच।

टोंटा—पु० पानी गिरानेकी नली, घोड़ियाँ।

टोंटी—स्त्री० पानी गिरानेकी नली, लम्बा मुँह।

टोइयाँ—स्त्री० तोती, सुग्गी।

टोकना—सक्रि० बीचमें बोल उठना, कुछ कहकर कार्य-में बाधा डालना। पु० झौवा, टोकरा।

टोकनी—स्त्री० देगची। छोटा टोकरा, डलिया।

टोकरा—पु० बड़ी खँचिया, झौवा।

टोकरी—स्त्री० खँचिया।

टोटक, टोटका—पु० मंत्रतंत्र, टोना-टनमन 'स्वारथके साथिन तज्यो, तिजराको सो टोटक औचट उलटि न हेरो।' विन० ६१५ [कमी।

टोटा—पु० कारतूस। हानि, क्षति। बाँस इ० का टुकड़ा।

टोनहा, टोनहाया—वि० टोना करनेवाला।

टोनहाई—स्त्री० जादूगरनी। जंत्र मंत्र करनेवाली।

टोना—पु० मंत्रतंत्र, टोटका, जादू (उदे० 'बजोरना', सूबे० १५७) एक शिकारी पक्षी। सक्रि० देखो 'टटोहना'।

टोप—पु० बड़ी टोपी, सिरपर पहननेकी लोहेकी टोपी।

टोपा—पु० बड़ी टोपी। शिरस्त्राण 'सजे सनाहा पहुँची टोपा।' प० २५२

टोपी—स्त्री० शिरश्छद, टोपी जैसी अन्य वस्तु।

टोम—पु० टाँड़ा।

टोर—स्त्री० कटारी।

टोरना—सक्रि० तोड़ना, भग्न करना। नेत्र टोरना = आँख मोड़ना, नज़र छिपाना।

टोल—स्त्री० मण्डली (उदे० 'अदोखिल'), समूह, 'कुंचित केस सुगंध सुबसु मनु उड़ि आये मधुपनके टोल।' सू० ११९। पाठशाला।

टोला—पु० मुहल्ला, पुरा।

टोली—स्त्री० मुहल्ला। मंडली, झुण्ड। खिल।

टोह—स्त्री० पता, खोज।

टोहना—सक्रि० तलाश करना, खोजना 'आयो कहाँ अबहीं कहि को हौं। ज्यों अपनो पद पाऊँ सो टोहौं।' के० ८५। टटोलना, छूकर मालूम करना।

टोहाटाई—स्त्री० खोज, छानबीन, जाँच-पड़ताल।

ठ

ठंठ—वि० ठूँठा, स्थाणु।

ठंठार—वि० रिक्त, शून्य, छूँछा (प० १५६)।

ठंठी—वि० स्त्री० ठाँठ। बच्चा और दूध न देनेवाली (गाय या भैंस)।

ठंड, ठंडक—स्त्री० सरदी, जाड़ा।

ठंडा—वि० शीतल। शान्त, शिथिल, तृप्त।

ठंढ, ठंढक, ठंढा - दे० ठंड, ठंडक, ठंडा। [† मसाला।

ठंढाई—स्त्री० ठंढक लानेके लिए तैयार किया गया†

ठक—स्त्री० हठ, जिद 'छाँदि सबै झक तोहि लगी बक आठहुँ याम यही ठक ठानी।' सुदामा०। ठोंकनेका शब्द। वि० भौचक्का, स्तब्ध।

ठकठक—स्त्री० 'ठकठक' शब्द, झंझट, बखेड़ा 'उठि ठकठक एती कहा पावसके अभिसार।' वि० २९१

ठकठकिया—वि० बकवादी, झंझट पैदा करनेवाला, हुज्जत करनेवाला।

ठकुरई—देखो 'ठकुराई'।

ठकुरसुहाती—स्त्री० स्वामीको प्रसन्न करनेवाली बात, मुँहदेखी बात 'कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती।' रामा० ४५३

ठकुराइत—स्त्री० प्रभुत्व, आधिपत्य 'नृप रावणकी भगिनी गनि मोकहँ। जिहिकी ठकुराइत तीनहु लोकहँ।' राम० २५६। ठाकुरके अधीन प्रदेश।

ठकुराइन—स्त्री० मालकिन, ठाकुरकी स्त्री। नाइन।

ठकुराई—स्त्री० ठाकुरका अधिकार, प्रभुत्व, बड़प्पन। महत्ता, अधीन प्रदेश, राज्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ठकुरानी—स्त्री० ठाकुरकी स्त्री, क्षत्राणी, स्वामिनी।
ठकुराव—पु० क्षत्रियोंका एक भेद।
ठकुरायत—स्त्री० देखो 'ठकुराइत'।
ठकोरी—स्त्री० सहारा लेनेकी लकड़ी, 'जोगिनी'।
ठग—पु० धोखा देकर लूटनेवाला। छलिया।
ठगई—स्त्री० ठगी, धोखेबाज़ी, छल।
ठगना—सक्रि० धोखा देकर लूटना। धोखा देना, भुलावेमें डालना (उदे० 'चिरमि')। **ठगासा** = धोखा खाया हुआ, चकित। अक्रि० ठगा जाना। धोखा खाना। चकित होना, दंग होना।
ठगनी—स्त्री० देखो 'ठगिनी'।
ठगमूरी—स्त्री० वह जड़ी जिसे खिलाकर ठग राहगीरोंको बेसुध करते थे (सुन्द० ९४)। **ठगमूरी खाना** = सुध बुध न रहना 'बूझति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं ठगमूरी खाई।' सू०
ठगमोदक, ठगलाडू—पु० ठगोंका लड्डू (प० २१८)। **ठगमोदक या ठगलाडू खाना** = मतवाला होना, बेहोश होना।
ठगवाइ—पु० ठग 'लगैं चोर ठगवाइ, पेट चलै पानी लगै। कीजै कबहुँ न जाइ, पूरबके परदेसको।' गोपालचन्द्र
ठगहाई, ठगाई, ठगाही—स्त्री० ठगपना।
ठगाठगी—स्त्री० धोखेबाज़ी।
ठगाना—अक्रि० ठगा जाना, छला जाना।
ठगिन, ठगिनी—स्त्री० ठगनेवाली या धोखा देनेवाली स्त्री 'भ्रमो न ठगिनी मारिहै तुमैं ठगोरी डारि।' दीन०
ठगिया—पु० धूर्त्त मनुष्य, ठग। [२४३
ठगी—स्त्री० धोखेबाज़ी, ठगनेका काम।
ठगोरी—स्त्री० धोखेमें डालनेवाली, या मोहित करनेवाली शक्ति। मोहिनी, जादू। 'सुधि बुधि सब मुरली हरी प्रेम-ठगोरी लाय।' प्रागनि कवि, (सूबे० ११०, ७५, उदे० 'चीत')
ठट—पु० पंक्ति, झुण्ड, भीड़, ठाट, रचना।
ठटकीला—वि० भड़कीला, शानदार।
ठटना—सक्रि० भड़कीला बनाना, सजाना, तैयार करना, 'राज करत बिन काज ही, ठटहिं जे कूर कुठाट।' दोहा० ३९। स्थिर करना, ठहराना। छेड़ना। अक्रि० सजना, तैयार होना। ठहरना, खड़ा रहना।
ठटनि—स्त्री० सजावट, बनाव।
ठटरी—स्त्री० शरीरका ढाँचा, अरथी।
ठटु—पु० ठाट, सजावट, रचना।
ठट्ट—पु० देखो 'ठट'। 'कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा। मर्दहु भाल कपिनके ठट्टा।' रामा० ४९७
ठट्ठी—स्त्री० (हड्डीका) ढाँचा, ठठरी 'रक्त माँस जरि जाय रहै पाँजरकी ठट्ठी।' गिरिधर
ठट्ठई—स्त्री० देखो 'ठठई'।
ठठई—स्त्री० ठट्ठा, हँसी।
ठठकना—अक्रि० ठिठकना, सहसा रुक जाना या ठहर जाना। क्रियाशून्य हो जाना 'छिनकु चलत ठठकत छिनकु भुज पीतमगल डारि।' बि० १५८
ठठरी—स्त्री० देखो 'ठटरी'।
ठठाना—सक्रि० जोरसे पीटना, ठोंकना। अक्रि० ज़ोरसे हँसना, खिलखिलाना (उदे० 'गाल')।
ठठेरा—पु० कसेरा, पीतल इ० के बरतन बनानेवाला।
ठठोल—पु० दिल्लगी। दिल्लगीबाज़।
ठठोली—स्त्री० हँसी, मज़ाक
ठड़ा, ठढ़ा—वि० ठाढ़ा, खड़ा।
ठनक—स्त्री० मृदंग इत्यादिकी आवाज़। चसक, ठहर ठहर कर उठनेवाला दर्द।
ठनकना—अक्रि० ठहर ठहर कर पीड़ा होना। तबला, इ० का बजना।
ठनकाना—सक्रि० तबला इ० बजाना।
ठनगन—पु० नेगके लिए अड़नेका काम, हठ, जिद।
ठनठन गोपाल—पु० वह जिसके पास कुछ न हो, 'दरिद्रनारायण'। निःसार वस्तु।
ठनना—अक्रि० दृढ़ताके साथ आरंभ होना, छिड़ना। ठहरना, प्रयुक्त होना, लगना। स्थिर होना, पक्का होना (उदे० 'कलकानि')। तैयार होना।
ठनाका—पु० 'ठनठन' आवाज़।
ठपका—पु० थपका, हाथकी ठोंकर, आघात, (उदे० ['टपका')
ठप्पा—पु० साँचा, छापा।
ठमक—स्त्री० लचक, चलते समय रुकनेकी क्रिया।
ठमकना—अक्रि० सहसा ठहर जाना, ठिठकना। लटकके साथ चलना 'चंदेलिनि ठमकहिं पगु धारा।' प० ८७
ठमकाना—सक्रि० बजाना 'कहा भयौ बिछुवा ठमकायें।' कबीर १३२। ठहरना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ठयना, ठवना—सक्रि० ठानना, दृढ़तापूर्वक आरंभ करना। मनमें निश्चित करना, ठान रखना, 'एहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ।' रामा० ७७, (विन० ३३९)। कर चुकना, तैयार करना, बनाना 'तब रघुनाथ बाण कै हयो। निज निरवाण पंथ को ठयो।' राम० २३८, 'सोरह जोजन मुख तेहि ठ्येऊ।' रामा० ४१५। स्थापित करना, प्रयुक्त करना, लगाना। अक्रि० ठनना, मनमें जम जाना, निश्चित होना 'ठानी हुती और कछु मनमें औरै आनि ठई।' सू० १७। स्थापित होना, जमना। प्रयुक्त होना।

ठरना—अक्रि० ठिठुरना। तेज़ जाड़ा पड़ना।

ठवनि—स्त्री० खड़े होने या बैठनेका ढंग, अंग-सञ्चालन-विधि, स्थिति, मुद्रा 'सिंह ठवनि इत उत चितव धीर वीर बलपुंज।' रामा० ४५८

ठस—वि० कड़ा, ठोस। आलसी, कंजूस। हठी, स्थिर।

ठसक—स्त्री० गर्वयुक्त आचरण, घमण्ड, ऐंठ, शान 'छिनहिं बादसा बंसकी ठसक छाँड़ि रसखान।' ❀

ठसकदार—वि० अभिमानी, शानवाला। [❀ रसखानि

ठसका—पु०, ठसकी—स्त्री० सूखी खाँसी। मिर्चें इ० की गंधसे उठी खाँसी, फँदा, ठोकर।

ठसाठस—क्रिवि० कसकर (भरा हुआ)। खचाखच।

ठहना—अक्रि० घण्टे इत्यादिका बजना, हिनहिनाना, सोच समझ कर करना, सँवारना या बनाना।

ठहर—पु० स्थान 'तौ हौं बार बार प्रभुहिं पुकारि कै खिजावतो न जो पै मोको होतो कहूँ ठाकुर ठहरु।' विन० ५६८। लीपी हुई जगह, चौका।

ठहरना—अक्रि० थमना, रुकना, स्थित रहना, क़ायम रहना, बना रहना, टिकना, स्थिर भावसे रहना, प्रतीक्षा करना। स्थिर होना, पक्का होना।

ठहराउ, ठहराव—पु० स्थिरता, निश्चय, ठहरौनी।

ठहराऊ—वि० ठहरनेवाला, सुदृढ़, टिकाऊ।

ठहराना—सक्रि० रोकना, स्थिर करना। अक्रि० ठहरना (उदे० 'उजारा')।

ठहरौनी—स्त्री० दहेज इ० लेने देनेकी प्रतिज्ञा।

ठहाका—पु० ज़ोरकी हँसीका शब्द।

ठहियाँ—स्त्री० स्थान, जगह। [† पास, निकट।

ठाँ, ठाँइँ—स्त्री० जगह (उदे० 'उजारी')। प्रति, तईं। †

ठाँउँ—पु० ठौर, जगह, रहनेका स्थान। मौक़ा, अवसर (दे० 'ठाँव')। पास 'चारि भीत जो मुहमद ठाँऊँ।' प० ५

ठाँठ—वि० दूध न देनेवाली (गाय इ०)। सूखा हुआ, नीरस।

ठाँठर—पु० ठठरी 'ठाँठर टूट, फूट सिर तासू।' प० ३२३

ठाँयँ—पु० स्थान। पास।

ठाँव—पु० देखो 'ठाँउँ'। मौक़ा 'हहै ठाँव हौं बारति रही।' प० ९१

ठाँहीं—स्त्री० देखो 'ठाँइँ'।

ठाउँ—पु० देखो 'ठाँउँ', 'जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहिं देखावहुँ ठाउँ।' रामा० २६०

ठाकुर—पु० देव, ईश्वर, स्वामी (उदे० 'चेरा')। पूज्य व्यक्ति, अधिपति, नायक (उदे० 'ठहर')।

ठाकुरी—स्त्री० ठकुराई, शासन।

ठाट—पु० ढाँचा, रचना, सजावट, शृंगार (उदे० 'मिहरी') धूमधाम। उपाय, युक्ति। तैयारी, प्रबन्ध 'ठाटहु सकल मरइके ठाटा।' रामा० २८९, 'करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू।' रामा० २६२। झुण्ड, समूह 'जेहि बाट गमनत राजसुत तहँ तहँ लगत जन ठाट हैं।' रघु० ९१, 'ऐसी गति संसारकी ज्यों गाडर की ठाट।' साखी ९०। अधिकता।

ठाटना—सक्रि० बनाना, ठानना, करना, आयोजन करना (उदे० 'ठाट', 'कुठाट')। सजाना, सँवारना।

ठाटबाट—पु० तड़क भड़क, सजावट।

ठाटर—पु० ठाँठर, बाँसकी फट्टियोंका ढाँचा, ठाट। †

ठाटी—स्त्री० समूह, झुण्ड। [† ठठरी। सजावट।

ठाढ़, ठाढ़ा—वि० खड़ा 'रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही।' रामा० ३८०, (उदे० 'करार'), 'गाढ़े ठाढ़े कुचनु ठिलि को पिय हिय ठहराय।' बि० १९१। साबित, समूचा। प्रकट, उत्पन्न। सुदृढ़, सबल। ठाढ़ा देना = ठहराना, टिकाना।

ठादर—पु० झगड़ा 'देव आपनो नहीं सँभारत करत इन्द्रसों ठादर।' सूबे० १२२

ठान—स्त्री० कामका शुरू किया जाना, आयोजन, दृढ़ संकल्प। आरब्ध कार्य।

ठानना—सक्रि० दृढ़तापूर्वक आरंभ करना, छेड़ना 'ठानी कथा प्रबोध बोलि सब गुरू समोल्यो।' भ्र० ८। दृढ़ संकल्प करना, निश्चित करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ठाना—सक्रि० ठानना, छेड़ना, पक्का निश्चय करना, स्थापित करना, सत्य कर दिखलाना, धरना 'साँचो एक नाम हरि लीन्हें सब दुःख हरि, और नाम परिहरि नरइरि ठायो हो।' राम० ३६६

ठाम—पु० देखो 'ठाँउँ'। मुद्रा, ठवनि।

ठायँ—पु० देखो 'ठाँउँ'। [† बैठा हुआ।

ठाला—पु० द्रव्याभाव, बेकारी। बैठा ठाला = बेकार †

ठाली—वि० निठल्ला, बेकार 'जामहिं कर्म बिकर्म किये सब है यह देह परी अब ठाली।' सुन्द० ३३। स्त्री० धीरज, सान्त्वना 'कहा कहौं आली खाली देत सब ठाली हाय, मेरे बनमालीको न काहीते छुड़ावहीं।' रसखानि

ठावँ—पु० देखो 'ठाँउँ'।

ठाहर, ठाहरु—पु० जगह, ठहरनेका स्थान। ठिकाना 'अगम पंथको पग धरैं डिगैं तो ठाहर नाहिं।' साखी २१, 'जीभ नाहिं पै सब किछु बोला। तन नाहीं, सब ठाहर डोला।' प० ४, (उदे० 'ठाट', रामा० २११)

ठिंगना, ठिंगुना, ठिगना—वि० नाटा, कम ऊँचा।

ठिकठैन—पु० ठीकठाक, व्यवस्था 'आज कछू और भये ठये नये ठिकठैन।' बि० २१५

ठिकाना—पु० जगह, रहने या ठहरनेकी जगह, अवलम्ब। नियत या उपयुक्त स्थान। निश्चित अस्तित्व, भरोसा। †

ठिठकना—अक्रि० देखो 'ठठकना'। [† हद, प्रबन्ध।

ठिठरना, ठिठुरना—अक्रि० अधिक ठंडसे सिकुड़ जाना।

ठिलना—अक्रि० ठेला जाना (उदे० 'ठाढ़'), बलपूर्वक बढ़ाया जाना। आगे धँसना। जमना।

ठिलाठिल—क्रिवि० एकपर एक गिरते हुए, कसमसी-

ठिलिया, ठिल्ली—स्त्री० मिट्टीका छोटा घड़ा। [के साथ।

ठिलुआ—वि० बेकार, निठल्ला।

ठिहारी—स्त्री० निश्चय, समझौता, ठहराव।

ठीक—वि० दुरुस्त, यथार्थ, प्रामाणिक, शुद्ध, सीधा, निश्चित। पु० पक्की बात, निश्चय, तैयारी, निश्चित प्रबन्ध।

ठीकठाक—पु० निश्चय, प्रबन्ध, आयोजन।

ठीकड़ा,-रा—पु० मिट्टीके बरतन या खपरेका टुकड़ा।

ठीकरी—स्त्री० निकम्मी चीज़। देखो 'ठीकरा'।

ठीका—पु० निश्चित समयमें कोई काम करानेका भार। कर इत्यादि वसूल करनेका जिम्मा।

ठीकुरी—स्त्री० पत्थर, परदा 'निज आँखिन पै धरैं ठीकुरी कितने और रहौगे।' सत्यना०

ठीलना—सक्रि० ठेलना, जबरन भेजना 'आज्ञाभंग होय क्यों मोपै गयउ तुम्हारे ठीले।' सूबे० ४१०

ठीवन—पु० थूक, कफ।

ठीहँ—स्त्री० हिनहिनानेकी आवाज़।

ठीहा—पु० गद्दी। लकड़ीका कुंदा जिसपर कोई चीज़ रख-कर बढ़ई इत्यादि पीटते या गढ़ते हैं।

ठुंट—पु० शाखारहित या सूखा वृक्ष। कटा हुआ हाथ।

ठुकना—अक्रि० पीटा जाना, ठोका जाना, हानि होना।

ठुकराना—सक्रि० ठोकर मारना, तिरस्कार करना।

ठुड्डी—स्त्री० चिबुक।

ठुमक ठुमक—क्रिवि० फुदकते हुए (चलना)।

ठुमकना—अक्रि० फुदकते हुए चलना।

ठुमका—वि० नाटा, छोटे कदका।

ठुमकी—स्त्री० थपकी, उँगलीका झटका। ठिठक।

ठुसना—अक्रि० ज़बरन या कठिनाईसे जाना। ठेल कर भरा जाना।

ठूँठा, ठूठा—वि० जिसका हाथ कट गया हो। शाखा-पत्र-

ठूँठी—स्त्री० अरहर इ० की खूँटी। [हीन।

ठूँसना, ठूसना—सक्रि० ज़बरन भरना, कसकर भरना।

ठेंगना—देखो 'ठिगना'।

ठेंसा—पु० अँगूठा। अँगूठेका आघात, मुक्का।

ठेंगा—पु० अँगूठा। लट्ठ, दण्डा।

ठेंगुर—पु० पशुके गलेमें बाँधी गयी लकड़ी।

ठेक—स्त्री० सहारा, टेक, पेंदा।

ठेकना—सक्रि० आश्रय लेना, टेकना। ठहरना।

ठेका—पु० निश्चित शर्तोंपर किसी कामको पूरा करनेका ठहराव। अड्डा। टेक। ठोक।

ठेकाना—पु० स्थान, निवास-स्थान 'तुलसिदास सीतल नित यहि बल, बड़े ठेकाना ठौरको हौं।' विन० ५२५

ठेगना—सक्रि० देखो 'ठेकना'। मना करना, रोकना।

ठेगनी, ठेघनी—स्त्री० टेकनी, सहारा। टेकनेकी लकड़ी।

ठेघना—अक्रि० ठहरना, रुकना 'गगन साम भा धुआँ जो ठेघा।' प० २५१। सक्रि० ठहराना, रोकना 'औ तिन गगन पीठि जनु ठेघा।' प० १९

ठेघा—पु० टेक, सहारेकी लकड़ी।

ठेठ—वि० निपट, शुद्ध, निर्लिप्त। ठेठसे = बिलकुल आरंभसे।

ठेपी—स्त्री० काग, डाट।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ठेलना—सक्रि० धक्का देकर आगे बढ़ाना, उकसाना, प्रवृत्त कराना 'जो जननी न हिदू हरिसे तो मैं काहेको द्वारका ठेल पठौती।' सुदामा० (ककौ० १९४)
ठेला—पु० ठेलकर चलायी जानेवाली गाड़ी (या नाव), 'सग्गड़'। धक्का। घनी भीड़।
ठेलाठेल—स्त्री० घनी भीड़, धक्कम धक्का।
ठेस—स्त्री० ठोकर, चोट।
ठैन—स्त्री० ठाँव, स्थान।
ठैयाँ—स्त्री० स्थान 'आयो हुतो नियरे रसखानि कहा कहूँ तू न गई वह ठैयाँ।' रसखानि
ठैल—स्त्री० दबाव, चोट (उदे० 'उसलना')।
ठोकना, ठोकना—सक्रि० पीटना, प्रहार करना। धँसाना। थपथपाना। ठोकना बजाना = जाँचना, परखना 'नन्द ब्रज लीजे ठोकि बजाय।' सूबे० ३११
ठोकर—स्त्री० चोट, पादप्रहार, धक्का, रास्तेका उभरा हुआ पत्थर।
ठोट—वि० मूर्ख, सत्वहीन।
ठोटरा—वि० पोपला, खाली।
ठोड़ी, ठोढ़ी—स्त्री० चिबुक, ठुड्डी।
ठोर—पु० एक पकवान। चोंच 'तेइ ओढ़ि मच्छ ठोर भरि लेहीं।' प० ६७
ठोली—स्त्री० ठठोली (साखी ६६)।
ठोस—वि० खोखला या पोला नहीं, दृढ़, ठस (विन० ३८१)। पु० ईर्ष्या, डाह।
ठोसा—पु० ठेंगा, अँगूठा।
ठोहना—सक्रि० खोजना।
ठौनि—स्त्री० देखो 'ठवनि'।
ठौर—पु० स्थान, ठिकाना। घात, मौका।—न आना = पास न आना।

ड

डंक—पु० बिच्छू इत्यादिका ज़हरीला काँटा। डंका 'बोलन लगे नकीब डंक अब सो तिहुँ बाजे।' दीन० २३६
डंकना—अक्रि० गरजना।
डंका—पु० युद्धके समयका एक बाजा।
डंकिनी—स्त्री० चुड़ैल। एक पिशाची।
डंगर—पु० चौपाया।
डँगरा—पु० 'खरबूजा' नामक फल।
डंगरी—स्त्री० डायन, चुड़ैल,। लम्बी ककड़ी।
डँटैया—पु० डाँटनेवाला, घुड़कनेवाला।
डंठल—पु० पौधेका धड़।
डंड—पु० डंडा। दंड, हानि। घड़ी (प० ७७)। एक कसरत। स्त्री० जुगली (बुंदेल०)।
डंडक—पु० देखो 'दंडक'।
डंडवत्—पु० दंडवत्, साष्टांग प्रणाम।
डँडवी—पु० दण्ड देनेवाला, कर देनेवाला।
डंडा—पु० छोटी लाठी, सोंटा।
डंडाकरन—पु० दण्डकारण्य।
डंडाल—पु० नगाड़ा। [वाला।
डँड़िया—स्त्री० लम्बी रेखाओंवाली साड़ी। कर लेने-
डंडी—स्त्री० डाँड़ी। पतली लकड़ी। मुठिया। नाल। वि० जुगलखोर।
डँड़ोच, डँडीर—स्त्री० सीधी लकीर।
डँडोरना—सक्रि० हिलोर कर या उलट पलट कर खोजना।
डंबर—पु० विस्तार, चँदोवा (दास १३२, १७९) आडंबर।
डँवरुआ—पु० एक तरहका वातरोग, गठिया 'अहंकार अति दुखद डँवरुआ।' रामा० ६११
डँवाडोल—वि० घबड़ाया हुआ, चंचल।
डंस—पु० एक तरहका बड़ा मच्छर।
डँसना—सक्रि० देखो 'डसना'।
डक—पु० एक तरहका कोड़ा। खेलनेका थान, थचा 'डक कुडगति सीछै चली टुकचित चली निहारि।' वि० ६२ (वंग०)
डकरना—अक्रि० डकार लेना, खाकर तृप्त होना 'गाड़ि कै सुसंडा आड़ कीन्ही बादशाह तातें डकरी चमुंडा गोलकुण्डाकी लड़ाईमें।' कालिदास त्रिवेदी
डकार—स्त्री० आवाज़के साथ मुखसे निकली वायु।
डकारना—अक्रि० डकार लेना। किसीका माल पचा ❀ जाना।
डकैत—पु० डाकू, लुटेरा। [
डग—पु० कदम, फाल। चलनेमें दोनों पाँवोंके बीचका अन्तर, पैंड।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डगडगाना, डगडोलना—अक्रि० डगमगाना, काँपना।

डगडौर—वि० चंचल, डाँवाडोल (सू० १३१)।

डगना—अक्रि० हिलना, स्थानसे हटना, भूल करना। 'चलत कटकु दिगसिंधुर डगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं।' रामा० ४९७

डगमग—क्रिवि० थरथराहटके साथ।

डगमगना, डगमगाना—अक्रि० इधर उधर हिलना, काँपना, विचलित होना (उदे० 'डगना')।

डगर—स्त्री० रास्ता, मार्ग 'जित तित ह्वै मग रोकत टोकत डगर तजति पग गड़त काँकरी।' सू० मदन०

डगरना—अक्रि० चलना, धीरे धीरे चलना।

डगरा—पु० डगर, रास्ता। [१४५),

डगरिया, डगरी—स्त्री० डगर, मार्ग (सूबे० १११,

डगा—पु० चोब, डागा, डुग्गी बजानेकी लकड़ी 'कछु कहि चला तबल देइ डगा।' प० १०

डगाना—सक्रि० हिलाना, खसकाना।

डटना—अक्रि० अड़ना, स्थिर होकर खड़ा रहना। डटा रहना = मुख न मोड़ना, जगहसे न हटना 'कबकी इकटक डटि रही टटिया अँगुरिन फारि।' वि० २६१। शोभा देना (वि० ७१)।

डटाना—सक्रि० सामने रखना, भिड़ाना, जमाना।

डड्ढार—वि० बड़ी डाढ़ीवाला। साहसी।

डढ़न—स्त्री० जलन, संताप।

डढ़ना—अक्रि० दग्ध होना, जलना (उदे० 'जऊ')।

डढ़ियल, डढ्योरा—वि० डाढ़ीवाला।

डपटना—सक्रि० घुड़कना, डाँटना।

डपोरसंख—पु० बड़ बड़ कर बातें करनेवाला। जड़ मनुष्य।

डफ, डफला—पु० एक तरहका बाजा।

डफली—स्त्री० खँजरी।

डफार—स्त्री० चिल्लाने या ज़ोरसे रोनेकी आवाज़।

डफारना—अक्रि० चिग्घाड़ना, ढाढ़ मारना (प० १७६), 'सूर हँसै ससि रोइ डफारा।' प० २११

डफोरना—अक्रि० चिल्लाना, गरजना 'वचन विनीत कहि सीताको प्रबोध करि तुलसी त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरि कै।' कविता० १४२

डबकौंहा—वि० डबडबाया हुआ, अश्रुपूर्ण 'बिलखी डबकौंहैं चखन तिय लखि गमन बराय।' वि० ७३

डबडबाना—अक्रि० अश्रुयुक्त होना।

डबरा—पु० पोखरा, जलयुक्त लम्बा गड्ढा।

डबल—पु० पैसा। वि० दुगुना, दुहरा।

डबला—स्त्री० मिट्टीका छोटा कलसा, मटिया।

डबिया, डबी—स्त्री० ढक्कनयुक्त छोटा गहरा पात्र।

डबुलिया—स्त्री० छोटा डबला, कुल्हिया।

डबोना—सक्रि० डुबाना, चौपट करना।

डब्बा—पु० रेलगाड़ीका वह भाग जो पृथक् हो सके। ढक्कनदार बरतन। [नैना।' प० ९८

डभकना—अक्रि० डबडबाना 'बदन पियर जल उभकहिं

डभकौरी—स्त्री० उड़दकी पीठीकी बरी।

डमरुआ—पु० देखो 'डँवरुआ'।

डमरू—पु० एक बाजा।

डमरूमध्य—पु० दो बड़े स्थल-भागोंको मिलानेवाला [पतला स्थलभाग।

डयन—पु० उड़ान।

डर—पु० भय, त्रास।

डरना—अक्रि० भयभीत होना।

डरपना—अक्रि० भयग्रस्त होना, डरना 'जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा।' रामा० १०४, 'डरपे गीध बचन सुनि काना।' रामा० ९१०

डरपाना—सक्रि० डरवाना, भयभीत करना 'बिन डर बन डरपाइकै लियो मोहि उर लाइ।' मति० १८३

डरपोक—वि० कायर, भीरु।

डरा—पु० डला, ढोका (सुन्द० १२८)।

डराडरी—स्त्री० भय, डर।

डराना—सक्रि० भयभीत करना। अक्रि० डरना (उदे० 'अपभय')।

डरावना—वि० भयप्रद, डर पैदा करनेवाला।

डरिया—स्त्री० डाल, शाखा।

डरी—स्त्री० डली, छोटा टुकड़ा 'छिनकु छाय छवि गुर डरी छले छबीले छैल।' वि० ३७ (वंग)

डरीला—वि० डालयुक्त, शाखाओंवाला।

डल, डला—पु० टुकड़ा।

डलिया—स्त्री० टोकरी।

डली—स्त्री० देखो 'डरी'। 'गीधे गीध अमिख डली जानत अली सुगंध।' दीन० ९७

डसना—सक्रि० साँप इत्यादिका काटना, डंक मारना 'काम-भुजंग डसत जब जाही। विषय नींब कटु लगत न ताही।' विन० ३०४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डसाना—सक्रि० सर्प इत्यादिसे कटवाना। बिछाना 'गुद सवाँरि साथरी डसाई।' रामा० २४१, (उदे० 'उपबरहन')

डहकना—सक्रि० धोखा देना, छलना, ठगना 'इहि विधि इन डहके सबै जल थल जिय जेते।' सूवि० २०। कोई चीज़ दिखाकर न देना। अक्रि० बिलखना। दहाड़ मारना। चिग्घाड़ना। फैलना, छितरा जाना।

डहकाना—अक्रि० धोखेमें आना, छला जाना 'इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अनारी।' सूवे० ३८०, 'सुन्दर राम बिना सबही भ्रम देखहु या जग यूँ डहकायो।' सुन्द० ७१। सक्रि० धोखा देना, ठगना। खोना, नष्ट करना 'बाद विवाद यज्ञ व्रत साधै कतहूँ जाइ जन्म डहकावै।' सूवे० १७

डहडहा—वि० लहलहाता हुआ, हराभरा, प्रसन्न, आह्लादपूर्ण 'डहडहे इनके नैन अबहिं कहुँ देखे हैं हरि।' नन्द०

डहडहाट—स्त्री० हरापन, प्रसन्नता।

डहडहाना—अक्रि० हराभरा होना, प्रसन्न होना।

डहन—पु० पर, डैना 'राते डहन लिखा सब पाठा।' प० ३५, (१९२)। स्त्री० डाह, जलन।

डहना—पु० पर, डैना। सक्रि० जलाना, पीड़ा पहुँचाना। अक्रि० जलना, चिढ़ना, द्वेष करना।

डहर, डहरि—स्त्री० 'डगर', रास्ता 'सखा लिये जमुना तट बैठो निबहत नहिं सब लोग डहरको।' सूवे० ११५, 'जल भरन कोउ नहीं पावति रोकि राखत डहरि।' सूवे० ११२

डहरना—अक्रि० चलना, टहलना।

डहराना—सक्रि० चलाना, फिराना।

डाँक—पु० डंका 'दान डाँक बाजे दरबारा। कीरति गई समुन्दर पारा।' प० ५०७। चाँदी आदिका पत्तर, टिकली। डंक, बिच्छू इत्यादिका जहरीला काँटा 'लगे तिरीछी दीठि अब ह्वै बीछीके डाँक।' वि० २५४

डाँकना—सक्रि० लाँघना (उदे० 'अगोट')। कै करना।

डाँग—स्त्री० डंका 'दान डाँग सब ही जग सुनी।' प० २०९। पु० घना जंगल 'चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डोंगर डाँग।' गीता० ३५३

डाँगर—पु० देखो 'डंगर'। वि० मूर्ख, क्षीणकाय।

डाँट—स्त्री० डपट, फटकार। दबाव। नियंत्रण।

डाँटना—सक्रि० डपटना, कड़क कर बोलना, 'डाँटेहिं पै नव नीच।' रामा० ४४५

डाँड़—पु० डण्डा 'परा जो डाँड़ जगत सब डाँडा।' प० १८। ऊँची उठी हुई मेंढ़ या टीला। सीमा। दण्ड, अर्थदण्ड 'नीकी लगै ससुरारिकी गारि औ डाँड भलो जो गया भरियें जू।' केशव (ककौ० २८८)

डाँड़ना—सक्रि० अर्थदण्ड देना, दण्ड देना (उदे० डाँड़)

डाँड़ा—पु० डण्डा, खड्ग 'वज्रक सांग, वज्रके डाँडा।' प० ३२२। मेंड़, सीमा। तराजूकी डंडी (रतन० २०)।

डाँड़ी—स्त्री० डण्डी, लम्बी पतली लकड़ी या लम्बा हत्था (सू० १७४)। डोरी 'साँस डाँड़ि मन मथनी गाढ़ी।' प० ६९। टहनी, डण्ठल, नाल। हिंडोलेकी पटरीको थामनेवाली चार सीधी लकड़ियाँ या रस्सियाँ। पालकी 'औ सोनहार सोनकै डाँड़ी। सारदूल रूपे के कांड़ी।' प० २६६

डाँवरा—पु० देखो 'डावरा'।

डाँवरी—स्त्री० लड़की 'रसखानि बिलोकत ही सिगरी भई बावरियाँ ब्रज डाँवरियाँ।' रसखानि

डाँवाडोल—वि० चंचल, अस्थिर।

डाँस—पु० एक तरहकी बड़ी मक्खी या बड़ा मच्छर। 'हनूमन्त सुग्रीव सोमैं रभागे। डसैं डाँससे अंग मातंग लागे।' राम० ५६४

डाइन—स्त्री० चुड़ैल, भयावनी स्त्री।

डाक—स्त्री० यात्रा या पत्रादि पहुँचानेके लिए स्थान स्थान-पर सवारी इ० का प्रबन्ध। नीलामकी बोली। पत्रादि पहुँचानेकी व्यवस्था।

डाका—पु० डाकुओंका धावा।

डाकिनी—स्त्री० देखो 'डंकिनी'।

डाकू—पु० लुटेरा।

डाख—पु० पलाश।

डागा—पु० चोब, नगाड़ा पीटनेकी लकड़ी।

डागुर—पु० जाटोंका एक भेद।

डाट—स्त्री० काग, चाँड, टेक। फटकार।

डाटना—सक्रि० चाँड़ लगाना, टेकना। कसकस कर भरना, डट कर खाना। डटाना, मिलाना। फटकारना।

डाढ़—स्त्री० दाढ़, भोजन कूचनेके चौड़े दाँत। वट इत्यादिकी जटाएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डाढ़ना—सक्रि० जलाना, संतप्त करना 'लाल चके सुनि कै घरको तिय अंग अनंगकी आगिसों डाढ़े।' रस० ७७, 'पांछि पसेउ बयारि करौं अरु पाँय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।' कविता० १६७ (सूबे० २७०)

डाढ़ा—स्त्री० दावानल। अग्नि। ताप, जलन।

डाढ़ी—स्त्री० चिबुक, ठोड़ी। ठोड़ीपरके बाल।

डाबर—पु० गड़हा, छोटा पोखरा, 'डाबर जोग कि हंस कुमारी।' रामा० २२७। गंदा पानी।

डाभ—पु० दर्भ, कुशकी तरहकी एक घास, कुश 'डाभ बचाये पग धरो, थोड़ो पट अति घाम।' दास २१९। आमकी मंजरी 'जउ लहि अंबहि डाभ न होई।' प० ९

डामर—पु० अलकतरा। रार। एक तंत्र हलचल।

डामल—स्त्री० देशनिर्वासन या आजीवन कारावासका [दंड।

डामाडोल—देखो 'डाँवाडोल'।

डायन—देखो 'डाइन'।

डार—स्त्री० डाल, शाखा 'मोतिनहीको कियो गहनो सब फूलि रही जनु कुन्दकी डार है।' सुखदेव मिश्र, (उदे० 'कँटीला')। फूल इत्यादि रखनेकी डलिया। थाली 'पुनि लेइ रूप डार मुख धोई।' प० २९६। जम्बूह, झुंड 'मार्‌यो सिंह ब्याघ्र पुनि मार्‌यो मारी बहुत मृगनकी डार।' सुन्द० १९२

डारना, डालना—सक्रि० छोड़ना, गिराना, प्रविष्ट कराना, मिलाना। फैला रखना।

डाल—स्त्री० शाखा।

डाली—स्त्री० शाखा। चँगेरी। सम्मानार्थ भेजी गयी फल

डावड़ी—स्त्री० डावरी, लड़की। [इ० वस्तुएँ।

डावरा—पु० लड़का, बच्चा 'है यह चातक डावरो अनुग रावरो दीन।' दीन० २००

डावरी—स्त्री० लड़की, कन्या।

डासन—पु० बिछावन 'डासन छाँड़िके कासन ऊपर आसन मारि पै आस न मारी।' सुन्द० ६७

डासना—सक्रि० बिछाना, फैलाना 'ए महि परहिं डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत विधाता।' रामा० २५६, 'पखुरी कादहिं फूलन सेंती। सोई डासहिं सौंर सपेती। प० २४०। डाँसना, साँप इत्यादिका काटना 'भूलि न उठत यशोदा जननी मनो भुअंगम डासनो—स्त्री० चारपाई, खाट। [डासी।' सूबे० ३९३

डाह—स्त्री० ईर्ष्या, जलन।

डाहना—सक्रि० जलाना 'अब इह करत वियोग देहद्रुम सुनत नाम दव डाहत।' सूबे० ३८२। तंग करना।

डाहुक—पु० एक पक्षी (विद्या० २६१)।

डिंगर—पु० पशुओंके गलेकी लकड़ी। मोटा मनुष्य। ठग।

डिंगल—स्त्री० राजपूतानेके चारणोंकी भाषा। वि० खराब।

डिंडिम—पु०, डिंडिमी—स्त्री० डुगडुगी (उदे० 'झाँझ')।

डिंब—पु० अंडा, शोरगुल, दंगा-फसाद।

डिंभ—पु० छोटा बालक, बच्चा। आडम्बर 'प्रेम बिना जो भक्ति है सो निज डिंभ विचार।' साखी ३६

डिंभक—पु० छोटा बच्चा।

डिगंबर—देखो 'दिगंबर' (कबीर १५१)।

डिगना—अक्रि० हिलना, सरकना, हटना, 'डिगै न शंभु सरासन कैसे।' रामा० १३६, (उदे० 'गाज')। प्रतिज्ञा तोड़ना, संकल्पसे विचलित होना।

डिगाना—सक्रि० हिलाना, हटाना, खसकाना। विचलित करना।

डिगुलाना—अक्रि० हिलना, डगमगाना।

डिठिआरा,-यारा—वि० आँखवाला, दृष्टियुक्त 'अंध न रहहु होहु डिठिआरा।' अखरावट

डिठौना—पु० काजलका निशान जो नज़र न लगनेके लिए लगाया जाता है 'दूनी ह्वै लागन लगी दिये डिठौना डीठि।' वि० १७, (सूबे० १३०)

डिढ़—वि० दृढ़ 'जो निरास डिढ़ आसन मौना।' प० ३५

डिढ़ाना—सक्रि० दृढ़ाना, मजबूत करना, मनमें पक्का निश्चय करना।

डिबिया—स्त्री० छोटा डिब्बा।

डिब्बा—देखो 'डब्बा'।

डिभगना—सक्रि० डहकना, मुग्ध करना।

डिमडिमी—स्त्री० देखो 'डिंडिमी'।

डिहरी—स्त्री० अनाज रखनेके लिए कच्ची मिट्टीका बरतन।

डींग—स्त्री० शेखी, लम्बी-चौड़ी बात।

डीठ—स्त्री० देखो 'डीठि।'

डीठना—अक्रि० देख पड़ना। सक्रि०। देखना '... सो खुसरो मैं आँखों डीठा।', 'वंचक विषय विविध तनु धरि अनुभवे सुने अरु डीठे।' विन० ३९९

डीठि—स्त्री० दृष्टि, नज़र, 'डीठि हि डीठि लगी दई देह दूबरी होति।' वि० २०६ (वंग०, उदे० 'डिठौना')

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डीठिमूठि—स्त्री० नज़र, जादू।
डीवुआ—पु० पैसा।
डीमडाम—पु० टीमटाम, अहंकार, ठाठ, ठसक।
डील—पु० शरीर, शरीरकी ऊँचाई इत्यादि। इयत्ति।
डुंग, डुँगवा—पु० पुञ्ज, ढेर, डूँगर, टीला। 'आठौ वज्र जुरे सब एक डुंगवे लागि।' प० २६०
डुंड—पु० डँठुआ, ठूँठ।
डुगडुगी—स्त्री० डुग्गी।
डुग्गी—स्त्री० चमड़ेसे मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा।
डुपटना—सक्रि० तह करना, चुनियाना।
डुबकी—स्त्री० गोता। [करना।
डुबाना, डुबोना—सक्रि० गोता देना, मग्न करना। नष्ट
डुभकौरी—स्त्री० देखो 'डुबकौरी', (उदे० 'मंडरा')।
डुलना, डूलना—अक्रि० हिलना, चलना (उदे० 'अरस')।
डुलाना—सक्रि० हिलाना, चलाना, हटाना। 'कहि न सकत मुख सीस डुलावत।' सू० ९२। (पंखा) झलना।
डूँगर, डूँगा—पु० टीला या छोटी पहाड़ी 'तहाँ एक परबत अह डूँगा।' प० १९७
डूँडा—वि० एक सींगवाला। पु० एक सींगवाला बैल।
डूबना—अक्रि० पानी इत्यादिके भीतर चला जाना, बूड़ना। नष्ट होना, अस्त होना। तन्मय होना।
डेंड़सी—स्त्री० एक तरकारी।
डेग—पु० भोजन बनानेका बड़ा बरतन, देग।
डेढ़—वि० एक और आधा।
डेबरी—स्त्री० शीशे इ० का चिराग़, डिब्बी।
डेरा—पु० पड़ाव, निवास 'राम करहु तेहिके डर डेरा।' रामा० २६२। घर, तम्बू, खेमा। ठहरनेके लिए फैलायी हुई वस्तुएँ—बिछावन, तम्बू इ० 'मातु नहानीं जानि सब डेरा चले लेवाइ।' रामा० २९३
डेराना—अक्रि० डरना 'मुनिगति देखि सुरेस डेराना।' रामा० ७३
डेल—पु० देखो 'डेलो', रोड़ा, ढेला। पु० उल्लू पक्षी।
डेलटा—पु० नदीके मुहानेपर धाराके बीच बनी हुई तिकोनी भूमि।
डेला—पु० आँखका कोया। डेला। ठेंगुर।
डेली—स्त्री० डलिया, झौआ (प० ३०)।
डेवढ़, डेवढ़ा—वि० डेढ़ गुना।
डेवढ़ी—स्त्री० देखो 'ड्योढ़ी'।
डेहरी—स्त्री० दहलीज, देहरी। देखो 'डिहरी'।
डैन, डैना—पु० पर, पंख 'डोल समुद्र डैन जब डोला।' प० ६७
डोंगर—पु० देखो 'डूँगर', (उदे० 'डाँग'), 'बन डोंगरे ढूँढ़त फिरी घरमारग तजि गाउँ।' सूदे० २१८
डोंगी—स्त्री० छोटी नाव।
डोंड़ा—पु० कारतूस, बड़ी इलायची। फल "आँवलकी हौस कैसे आक-डोंड़े जात है।' सुन्द० ६६
डोकरा—पु० बूढ़ा या अशक्त मनुष्य।
डोका—पु० तेल इत्यादि रखनेका काठका छोटा पात्र।
डोबना—सक्रि० डुबाना 'इत माया अगाध सागर तुम डोबहु भारत नैया।' सत्यना०
डोबा—स्त्री० डुबकी, गोता।
डोम—पु० एक नीच जाति। एक कौआ (प० १७९)।
डोमनी, डोमिन—स्त्री० डोम जातिकी स्त्री। गाने-बजानेका काम करनेवाली स्त्री।
डोर—स्त्री० डोरा, सूत, रस्सी। बंधन, लगाव।
डोरा—पु० धागा, सूत, अनुसंधानसूत्र। लकीर, प्रेम-बंधन।
डोरियाना—सक्रि० डोरी पकड़ कर ले चलना (उदे० 'कोतल')।
डोरी—स्त्री० रस्सी। बंधन, पाश 'जिन बाँधे सुर असुर नाग नर प्रबल करमकी डोरी।' विन० २५४। लगाव, सम्बन्ध, लगन 'डोरी लागी सुनतकी कहि गोरी मुसकात।' वि० २१५ (वंग०)
डोरे—क्रिवि० साथ साथ (रवि० ६)।
डोल—पु० झूला, हिंडोला 'श्री नँदनन्दन झूलत डोल।' सू० १८७, 'झूलत डोल दुलहिनी दूलहु।' स्वामी हरिदास। डोली, पालकी। एक तरहका लोहेका बरतन। हलचल 'बादसाह कहँ ऐस न बोलू। चढ़ै तो परै जगत महँ डोलू।' प० २४२। वि० जो डोलता हो।
डोलची—स्त्री० छोटा डोल।
डोलना—सक्रि० हिलना, हटना, चलना, फिरना (उदे० 'उपास')। 'अद्भुत बधू लिये सँग डोलत।' सू० ३२। डिगना 'हरि प्रेरित लछमन मन डोला।' रामा० ३७९
डोलाना—सक्रि० हिलाना, चलाना, घुमाना (विन० [५३०)।
डोली—स्त्री० पालकी, शिबिका।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डोही—स्त्री० लकड़ीकी डंडीवाली बड़ी करछी।
डौंड़ी—स्त्री० डुगडुगी, ढिंढोरा। घोषणा (उदे० 'कनौड़ा')।
डौरू, डौरु—पु० डमरू, एक तरहका बाजा 'डौरु ज्याल त्यों संग्रहो तजि मुरली बनमाल।' दास ११८
डौआ—पु० देखो 'डोही'।
डौर—पु० तागा (सूबे० ३३५, ३८२)।
डौल—पु० ढाँचा, प्रकार, आयोजन, तैयारी, लक्षण।
डौलदार—वि० सुलक्षण-सम्पन्न, सुंदर।
ड्योढ़ा—पु० देखो 'डेढ़ा'। [फाटक।
ड्योढ़ी—स्त्री० पौर, द्वारके समीपकी जगह, चौखट,

ढ

ढंकन—पु० ढक्कन।
ढँकना—सक्रि० ढाँकना, छिपाना। अक्रि० दिखाई न देना, दृष्टिसे छिपना। पु० ढक्कन।
ढंख—पु० ढाँख, पलाश।
ढग—पु० रीति, रचना, गढ़ना, प्रकार, युक्ति, बहाना, दशा, स्थिति, आसार, लक्षण।
ढंगी—वि० धूर्त्त, चालाक।
ढँढोर—पु० ज्वाला, लपट। लंगूर।
ढँढोरना, ढँढोलना—सक्रि० ढूँढ़ डालना 'तहँ लगि हेरै समुद ढँढोरी। जहँ लगि रतन पदारथ जोरी।' प० ६७। छान डालना, मथना, टटोल कर खोजना 'सायर माहिं ढंढोलता हीरै पड़ि गया हथ्थ।' कबीर १५, 'लोलुपतातें गोपिनके तुम सूने भवन ढँढोरे हो।' गदाधर भट्ट, (साखी ९०)
ढँढोरा—पु० डुगडुगी, मुनादी।
ढँढोरिया—पु० मुनादी करनेवाला, डुगी पीटनेवाला।
ढँपना—अक्रि० दृष्टिसे छिप जाना। पु० ढक्कन।
ढकना—देखो 'ढँकना।'
ढकनियाँ, ढकनी—स्त्री० ढक्कन 'सुभग ढकनियाँ ढाँपि बाँधि पट जतन राखि छीके समदायो।' सूबे० १६२
ढका—पु० धक्का, आघात, प्रहार 'बासर ढासनिके ढका रजनी चहुँ दिसि चोर।' दोहा० १२४। पु० एक तरहका ढोल।
ढकिल—स्त्री० आक्रमण, चढ़ाई।
ढकेलना—सक्रि० धक्का देकर गिराना 'ढकनि ढकेलि पेलि सचिव चले लै ठेलि, नाथ न चलैगो बल अनल भयावनो।' कविता० १७५
ढकेला-ढकेली—स्त्री० धक्का-धुक्की, ठेलाठेल।
ढकोसना—सक्रि० ज़्यादा पी जाना।
ढकोसला—पु० व्यर्थकी बात, आडंबर, दंभ।
ढक्कन—पु० ढाँकनेकी वस्तु, ढकना।
ढचर—पु० सामान, तैयारी, ढकोसला। बखेड़ा।
ढट्टी—स्त्री० ढाढी बाँधनेका वस्त्र। काग।
ढढोरना—सक्रि० देखो 'ढँढोरना', 'देखि मनोहर चारिउ जोरी। सारद उपमा सकल ढढोरी।' रामा० १९०
ढनमनना—अक्रि० लुढ़कना, गिर पड़ना 'रुधिर वमत धरनी ढनमनी।' रामा० ४१६
ढप, ढफ—पु० चमड़ेसे मढ़ा हुआ एक बाजा 'कंकन ताल किंकिनी ढपरव बाजत हैं सुरसों री।' गुणमंजरी दास
ढपना—सक्रि० ढाँकना, छिपा देना। अक्रि० ढँका [होना।
ढपला—पु० डफला नामक बाजा।
ढब—पु० तरह, तर्ज, रीति, ढंग। आदत, उपाय। गढ़न।
ढयना—अक्रि० गिर कर नष्ट होना, मकान आदिका गिरना।
ढरकना—अक्रि० नीचेकी ओर खसकना या जाना, ढलना, गिरकर बह जाना।
ढरकाना—सक्रि० लुढ़काना, नीचे गिराना (सू० १६१), 'दधि ढरकायो भाजन फोरी।', सूबे० ४९
ढरना—अक्रि० रीझना, द्रवना 'जापर दीनानाथ ढरे।' सू० २। लुढ़कना, ढरकना 'नैनन्ह ढरहिं मोति औ मूँगा।' प० ५५। व्यतीत होना, निकल जाना। ढाला जाना 'सोन ढरै जेहिके टकसारा।' प० २२५
ढरनि—स्त्री० गिरने या रीझनेकी क्रिया। रीझनेका स्वभाव, दयाशीलता। झुकाव, गति।
ढरहरना—अक्रि० ढरकना, ढलना, झुकना, सरकना।
ढरहरा—वि० ढालू, ढरारा।
ढरहरी—स्त्री० पकौड़ी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ढराना—सक्रि० ढलाना, पानी इत्यादिको उदिलवाना। उड़ेलना (उदे० 'गगरी')। साँचेमें ढालकर बनवाना। गिराना, बहाना 'हा हा करि दसननि तृन धरि धरि लोचनि जलनि ढराऊँ री।' सू० २७९

ढरारा—वि० गिरकर बह जानेवाला, ढरकनेवाला, झुक पड़नेवाला, प्रभावित होनेवाला। ढालू।

ढर्रा—पु० ढंग, मार्ग, आदत, उपाय।

ढलकना, ढलना—अक्रि० देखो 'ढरना'।

ढलवाँ, ढलुवाँ—वि० साँचेमें ढाला हुआ।

ढलाई—स्त्री० ढालनेकी क्रिया या उसकी मज़दूरी।

ढवरी—स्त्री० लगन, धुन।

ढहना—अक्रि० गिर पड़ना, नष्ट होना।

ढहराना—सक्रि० लुढ़काना, गिराकर अलग करना।

ढहरी—स्त्री० देहरी। मटका 'डगर चलन न देत काहुहिं फोरि डारत ढहरि।' सूवे० १११

ढहाना—सक्रि० घर इत्यादि गिराना, नष्ट करना। 'निसिचर सिखर समूह ढहावहिं। कूद धरहिं कपि फेरि चलावहिं।' रामा० ४७३

ढाँकना—सक्रि० देखो 'ढाँपना'।

ढाँख—पु० 'ढाक' या पलाशका पेड़ 'जिउ लै उड़ा ताकि बन-ढाँखा।' प० २९

ढाँचा—पु० किसी वस्तुकी बनावटका स्थूल रूप। प्रकार। ढंग। गढ़न।

ढाँपना—सक्रि० ढाँकना, किसी वस्तुके ऊपर कोई दूसरी वस्तु रखकर या फैलाकर उसे छिपाना या ओटमें करना 'परम दिव्य पायस सो पूरित रजत पात्र ते ढाँपी।' रघु० १८

ढाँसना—अक्रि० खाँसना।

ढाई—वि० दो और आधा।

ढाक—पु० पलाश, छेवला। एक तरहका बड़ा ढोल।

ढाटा—पु० ढाढी इ० बाँधनेकी पट्टी।

ढाड़, ढाढ़—स्त्री० चीत्कार, चीख। दहाड़, चिग्घाड़। 'ढाढ़ मारिकै राजा रोवा।' प० १९७

ढाढ़ना—सक्रि० ढाढ़ना, जलाना, संतप्त करना।

ढाढ़स, ढारस—पु० तसल्ली, धैर्य, साहस।

ढाढ़ी—पु० जन्मोत्सवके समय गाने बजानेवाली एक जाति 'हौं तो तेरो घरको ढाढ़ी सूरदास मो नाउँ।' सू० मदन०, 'आंगे ठाढ़ बजावहिं ढाढ़ी।' प० २४८

ढाना—सक्रि० देखो 'ढहाना'।

ढावर—वि० गंदा, मटमैला 'भूमि परत भा ढाबर पानी।' रामा० ४०२

ढाबा—पु० हलका छप्पर या पाटन। भोजनकी दूकान।‡

ढामक—पु० नगाड़े इत्यादिका शब्द। [‡ ओलती।

ढार, ढाल—पु० उतार। ढाँचा, बनावट, प्रकार। मार्ग। स्त्री० फलक 'नेजा भाला तीर कोउ, कहत अनोखी ढार।' रसखानि। ढालकी तरहका कानका एक भूषण।

ढारना, ढालना—सक्रि० गिराना, बहाना 'सुनि वशिष्ठ पुलकित तन नैननि ढारत आनँदधारा।' रघु० ३३। नीचे गिराना, उड़ेलना। ढालना, ठेलना 'यह जिय जानि नंदनंदन तुम, इहाँ पठाये ढारि।' सू० २३१। साँचेमें ढालकर तैयार करना। हिलाना, झलना 'ताहि लिये रविपुत्र सदारत। चौंर विभीषण अंगद ढारत।' के० ११४

ढालवाँ, ढालुआँ, ढालू—वि० जो नीचेकी तरफ बराबर नीचा होता गया हो।

ढास—पु० डाकू, लुटेरा (उदे० 'ढका')।

ढासना—पु० तकिया, सहारा, आधारकी वस्तु।

ढाहना—सक्रि० देखो 'ढहाना', 'भवन बनावत दिन लगै ढाहत लगत न बार।' वृन्द ·

ढिँढोरना—सक्रि० देखो 'ढँढोरना'।

ढिँढोरा—पु० डुगडुगी. घोषणा।

ढिग—क्रिवि० निकट, पास 'होय न जाकी छाँह ढिग, फल रहीम अति दूर।' रहीम १८। स्त्री० निकटता। किनारा, कोर।

ढिठाई—स्त्री० धृष्टता, अनुचित साहस।

ढिबरी—स्त्री० मिट्टी, काँच इत्यादिका चिराग़।

ढिमका—वि० अमुक।

ढिलाई—स्त्री० सुस्ती, शिथिलता, ढील।

ढिलाना—सक्रि० ढीला कराना। ढीला करना, बंधन इत्यादिसे मुक्त करना।

ढिसरना—अक्रि० फिसल पड़ना, झुकना।

ढींगर—पु० दीर्घकाय मनुष्य। जार, उपपति।

ढींगे—क्रिवि० ढिग, समीप।

ढीच—स्त्री० कूबड़ 'सीस हलै कटि ढीच नयी जू।' [सुन्द० १६

ढीट—स्त्री० लकीर, रेखा।

ढीठ—वि० बेअदब, धृष्ट (विन० ५८४)। निडर, साहसी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ढीठता, ढीठ्यो, ढीठो—स्त्री० धृष्टता, ढिठाई 'राधा बोलि उठी बाबा कछु तुम सों ढीठ्यो कीनी।' सूबे० ८२, 'प्रभुसों मैं ढीठ्यो बहुत करी है।' गीता० ३६३, 'ढीठो करन श्याम तुम लागे जाइ गही कटि फेट।' सूबे० १४०

ढीम, ढीमा—पु० पत्थरका टुकड़ा, ढोंका (सुन्द० ७६)।

ढील—स्त्री० डोरी इत्यादिको ढीला करनेका भाव 'ढील देत महि गिर परत खैंचत चढ़त अकास।' सुस्ती, व्यर्थकी देरी 'साँची विरुदावली न बदि कहि गई है। सील सिन्धु, ढील तुलसीकी बार भई है।' विन० ४२८। फुरसत, छुट्टी 'उतते इत इतते उत होइ। नेकौ ढील न पावै सोइ।' के० १५६

ढीलना—सक्रि० ढीला करना। बंधन खोलना।

ढीला—वि० जिसमें झोल हो, जो खूब तना या चुस्त न हो। ज़्यादा गीला, मुलायम। सुगम 'काठहि काह गाढ़ का ढीला।' प० ७१। सुस्त, शान्त, धीमा, मन्द। ढीली आँख = अधखुली आँख, मदपूर्ण दृष्टि 'ढोली अँखियन ही इतै गई कनखियन चाहि।' वि० १९३ (वंग०)

ढीह—पु० अटंबर, ऊँचा टीला। [

ढुंढ—पु० लुटेरा।

ढुंढुपाणि,-पानि—पु० दण्डपाणि भैरव।

ढुकना—अक्रि० घातमें छिपना, देखने या सुननेके लिए ओटमें छिपना ('उदे० चिड़िहार')।

ढुकास—स्त्री० तेज़ प्यास।

ढुटौना—पु० लड़का, छोटा 'तुम जानति मोहिं नन्द-ढुटौना नन्द कहाँ तें आये।' सूबे० १०४

ढुरकना—अक्रि० फिसलना, ढरकना। झुकना।

ढुरना—अक्रि० ढरकना, टपकना 'ढुरि ढुरि बूँद परत कंचुकिपर, मिलि काजर सों कारे।' सू० २००। इधर उधर डोलना, हिलना 'ग्रीवा ढुरनि मुरनि कल कटिकी भृकुटी नैन नचावै।' अलबेली अलि। फिसलना, लुढ़कना। प्रवृत्त होना। प्रसन्न होना, कृपा करना।

ढुरहुरी—स्त्री० लुढ़कनेकी क्रिया। तंग रास्ता।

ढुराना, ढुरावना—सक्रि० लुढ़काना। टपकाना, ढरकाना। हिलाना 'आनँद मगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्री ब्रजराज।' सू० १९४, 'बीजनौं ढुरावती सखीजन त्यौं सीतहूँ मैं सौतिके सराप तन तापनि तरफराति।' रवि० ६९। प्रसन्न करना, प्रवृत्त कराना।

ढुलना—अक्रि० देखो 'ढुरना'। ढोया जाना।

ढुलवाना—सक्रि० ढोने या ढुलानेका काम कराना।

ढुलाई—स्त्री० ढोनेकी क्रिया या ढोनेकी मज़दूरी।

ढुलाना—सक्रि० देखो 'ढुराना'। ढोनेका काम कराना। पोतना।

ढूँकना—अक्रि० ओटमें छिपना, घातमें छिपना। झाँकना। छिपकर देखना (राम० १२६)।

ढूँका—पु० गुप्त कथा सुनने या आड़में छिप कर देखनेका काम 'लगी रहति ढूँका दिये कानन कानन कान।' वि० २४५ (वंग०)

ढूँढ़ना—सक्रि० खोज करना। पता लगाना।

ढूका—पु० घासके दस पूलोंके बराबरका मान।

ढूह—पु० टीला। पुञ्ज, ढेर।

ढेंक—स्त्री० एक जल-पक्षी 'कूजत पिक मानहुँ गजमाते। ढेंक महोख ऊँट बिसराते।' रामा० ३८७

ढेंकली, ढेंकुली—स्त्री० धान कूटने या पानी खींचनेका लकड़ीका यंत्र।

ढेंकी—स्त्री० धान इत्यादि कूटनेका यंत्र।

ढेंढ़, ढेढ़—पु० कौआ। एक अधम जाति 'ऐसे सरीरमें बास कियो तब एकसे दीसत ब्राह्मण ढेढ़ो।' सुन्द० ५०, (५८ भी)। जड़, मूर्ख। देखो 'ढेंढ़ी'।

ढेंढ़र—पु० आँखका एक रोग या विकार।

ढेंढ़ी—स्त्री० कपास, सेमर इत्यादिका डोडा 'सेमर सुवना सेइया दुइ ढेंढ़ीकी आस।' साखी ७२

ढेउआ—पु० देखो 'ढेबुआ'।

ढेबरी—स्त्री० काँच, मिट्टी इ० का चिराग़।

ढेबुआ, ढेबुक—पु० पैसा।

ढेर—पु० राशि। टाल, पुंज। वि० बहुत।

ढेरा—पु० सुतरी बटनेकी फिरकी या चक्कर 'चिन्ता कैसो घेरा मन ढेरा सो भ्रमत फिरै, हदै नहिं ढेरा, सुधि खानकी न पानकी।' हठी

ढेरी—स्त्री० राशि, ढेर।

ढेल, ढेला—पु० पत्थर, मिट्टी इत्यादिका टुकड़ा 'भीजत ही गली जात माटीको सो ढेल है।' सुन्द० १५। टुकड़ा। एक तरहका धान (उदे० 'कजरी')।

ढेलबाँस—पु० ढेला फेंकनेका रस्सीका फंदा।

ढोंका—पु० पत्थर इ० का टुकड़ा जो गढ़ा न गया हो।

ढोंग—पु० बहाना, पाखंड।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ढोंगी—वि० धूर्त्त, छलिया, पाखंडी ।
ढोंटा, ढोटा—लड़का, पुत्र 'यसुमत ढोटा ब्रजकी [सोभा ।' सू० ४७
ढोंढ—पु० कली, ढेंढी ।
ढोक—स्त्री० राशि, ढेर । एक मछली ।
ढोका—पु० देखो 'ढोंका' ।
ढोटा, ढोटौना—पु० लड़का । **ढोटी** = लड़की ।
ढोना—सक्रि० उठाकर या लादकर ले जाना ।
ढोर, ढोरा—पु० पशु, चौपाया 'ऊपर ऊपर हर फिरै ढोर चरैंगे घास ।' साखी ६१ । ढंग, छटा, अदा 'कोमल चरन कौंल नटवर ढोर मोर पोर पोर छोरै छवि कोटिन अनंगकी ।' हरि०
ढोरना—सक्रि० ढालना, गिराना, ढरकाना 'चितै बदन लोचन जल ढोरैं ।' सूबे० ६७ । झलना, हिलाना 'छवि ठाढ़ी कर जोरे, गुन कछा चौंरैं ढोरें, दुति सेवै तन गोरे रति बलि जाति है ।' ध्रुवदास
ढोरी—स्त्री० धुन, लगन 'हरि दरसनकी ढोरी लागी ।' सू० । ढरकानेकी क्रिया ।
ढोल—पु०, **ढोलक**—स्त्री० एक तरहका बाजा ।
ढोलना—पु० एक तरहका तावीज । पालना, झूला । सक्रि० देखो 'ढोरना', 'ज्यूँ हरियाइ गऊ नहिं मानत दूध दुह्यो कछु सो पुनि ढोलै ।' सुन्द० ४०
ढोलनी—स्त्री० बच्चोंका झूला ।
ढोला—पु० शरीर, पति, प्रियतम । मूर्ख व्यक्ति । एक कीड़ा ।
ढोलिनी—स्त्री० ढोल बजानेवाली स्त्री ।
ढोलिया—पु० वह मनुष्य जो ढोल बजाता है ।
ढोली—स्त्री० ठठोली, हँसी । दो सौ पानोंकी गड्डी ।
ढोव—पु० डाली, भेंट 'लै लै ढोव प्रजा प्रमुदित चले भाँति भाँति भरि भार ।' गीता० २७१
ढोवा—पु० लूट 'सूतहि सूत सँवरि गद रोवा । कस होइहि जौ होइहि ढोवा ।' प० २६५
ढोहना—सक्रि० खोजना 'सूर सुवैद वेगि ढोहो किन, भये मरनके योग ।' सू० २३२
ढौंसना—अक्रि० हर्ष-ध्वनि करना ।
ढौरी—स्त्री० धुन, लगन (रवि० ८०, कबीर २१९) ।

त

तंग—वि० संकीर्ण, छोटा, परेशान । पु० घोड़ेपर जीन [कसनेकी पट्टी ।
तंगदस्त—वि० ग़रीब । कंजूस ।
तंगी—स्त्री० कमी, क्लेश, दरिद्रता । संकीर्णता ।
तंजेब—स्त्री० महीन मलमलका एक भेद ।
तंड—पु० नाच ।
तंडव—पु० एक तरहका नाच ।
तंडुल—पु० चावल । एक तौल ।
तंत—पु० तंत्र, सितार इत्यादिकी तरहका बाजा (उदे० 'धनतार') । तंत्रशास्त्र (प० ९०) । प्रयोग, क्रिया । अधीनता । इच्छा । तत्व । ताँत, सारंगी इत्यादिके तार । स्त्री० उतावली, आतुरता ।
तंतमंत—पु० तंत्रमंत्र, टोना-टनमन ।
तंतरी, तंत्री—पु० सितार आदि बजानेवाला मनुष्य । गवैया । बाजेका तार, तारवाला बाजा (दीन० २३९) ।
तंतु—पु० डोरा, रेशा, ताँत, सारंगी इ० के तार । सन्तान ।
तंत्र—पु० उपासना विषयक तथा मारण, उच्चाटन इत्यादि मंत्रोंका एक शास्त्र । झाड़-फूँक । ताँत, डोरा, वस्त्र । अधीनता, राज्य । अधिकार ।
तंदरा—स्त्री० उँघाई, अर्द्ध निद्राकी अवस्था ।
तंदुरुस्त—वि० स्वस्थ, रोगरहित ।
तंदुल—पु० चावल । आठ सरसोंके बराबर तौल ।
तंदूर—पु० चूल्हेकी तरहका मिट्टीका पात्र जिसे गरम करके रोटियाँ पकाते हैं ।
तंदेही—स्त्री० ताकीद, कोशिश, मेहनत ।
तंद्रा—स्त्री० देखो 'तंदरा' ।
तंबा—पु० एक तरहका पायजामा । गाय ।
तंबिया—पु० ताँबेका छोटा तसला ।
तंबू—पु० खेमा, शामियाना ।
तंबूर—पु० एक तरहका ढोल ।
तंबूरा—पु० सितारकी तरहका एक बाजा ।
तंबूल—पु० पान ।
तंबोल, तमीर—पु० ताम्बूल, पान, पानका बीड़ा ।
तंभ, तंभन—पु० स्तंभ नामक सात्विक भाव ।
तअज्जुब—पु० अचंभा, आश्चर्य ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तइसा—वि० तैसा, उस प्रकारका।
तइँ—प्रत्य० को, प्रति, से। अ० लिए।
तउ—अ० तब, त्यों।
तऊ—अ० तो भी, तथापि।
तक—अ० पर्यन्त, लौं। स्त्री० टक। तराजू। पु० तक्र, मही 'पुनि खीरस्यों चौबिध भात बन्यो, तक तीन प्रकारनि शोभ सन्यो।' के० २०३
तकदीर—स्त्री० भाग्य, नसीब। अंदाजा।
तकना—अक्रि० देखना 'देख री नंदनन्दन ओर। त्रास-तें तनु तृपित भो हरि, तकत आनन तोर।' सू० ६९। शरणमें जाना, आश्रय लेना (उदे० 'कंदर')।
तकरार—स्त्री० झगड़ा, विवाद।
तकला—पु० वह सलाई जिसपर सूत लिपटता है,
तकलीफ—स्त्री० कष्ट, दुःख। [तकुआ।
तकल्लुफ—पु० शिष्टाचार।
तकसीम—स्त्री० बाँटनेका काम, वितरण। भाग।
तकसीर—स्त्री० कसूर, भूल, ग़लती।
तक़ाज़ा—पु० वादा पूरा करनेका अनुरोध, प्रेरणा, तगादा।
तकाना—सक्रि० ताकनेका काम दूसरेसे कराना।
तकिया—पु० सिरहाना, उसीसा, गेंडुआ। आश्रय-स्थान 'जाहिर जहान भयो साहिजी खुमान वीर साहिनको सरन सिपाहिनको तकिया।' भू० ४। सहारा, भरोसा, आश्रय 'रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारिये।' कविता० २५०
तकियाकलाम—पु० मुँहसे बार बार निकलनेवाला शब्द।
तकुआ—पु० ताकनेवाला। देखो 'तकला'।
तक्र—पु० छाँछ, मही।
तखत, तख्त—पु० सिंहासन, राजगद्दी, (उदे० 'अरकना')।
तख़मीना—पु० अनुमान, अनुमानपत्र। [चौकी।
तख्ता—पु० लकड़ीका चौकोर पतला टुकड़ा। ताव।
तख्ती—स्त्री० लिखनेकी पटिया, छोटी पटरी।
तगड़ा—वि० हृष्ट-पुष्ट, बलवान्।
तगना—अक्रि० तागा जाना।
तगमा—पु० पदक।
तगा—पु० तागा, डोरा, सूत (उदे० 'अपरस')।
तगाई—स्त्री० तागनेका काम या मज़दूरी।
तगाना—सक्रि० दूर दूरपर मोटी सिलाई कराना। तागा डाल कर फँसानेका काम कराना।
तगीर—पु० परिवर्तन, तबदीली (रतन० ३६)।
तगीरी—स्त्री० देखो 'तगीर'।
तचना—अक्रि० तपना 'बिरह तचे तिय कुचनिलों अँसुवा सकत न आइ।' बि० २३९। जलना, दुःखी होना 'तच्यो आँच अति बिरहकी रह्यो प्रेम-रस भीजि।' बि० १५५, (ललित० ८१), 'जाकै प्रताप त्रिलोक तचै···' भाव० ७०
तचा—स्त्री० त्वचा, चमड़ा।
तचाना—सक्रि० जलाना, तप्त करना (रवि० २१)।
तच्छक—पु० एक सर्पका नाम। सर्प। नागवायु।
तच्छिन—क्रिवि० उसी क्षण, तुरन्त ही।
तजना—सक्रि० छोड़ना, त्याग देना 'जय कै आस तजहु अब भाई।' रामा० ५१०
तजरबा—पु० अनुभव।
तजवीज—स्त्री० निर्णय, राय, उपाय, प्रबंध।
तज्ञ—वि० जानकार, तत्त्वविद्।
तटंक—पु० ताटंक, कनफूल नामक आभूषण।
तट—पु० किनारा। क्षेत्र। वि० पास, समीप 'एक समैं श्री राधिका कृष्ण कान्ति परगास। आन त्रिया तट जानि कै मान कियो रसरास।' श्रीभट, (सुजा० ३९)
तटका—वि० टटका, तुरन्तका, ताज़ा।
तटनी—स्त्री० तटिनी, नदी।
तटस्थ—वि० किनारे रहनेवाला, उदासीन।
तटिनी—स्त्री० नदी।
तटी—स्त्री० नदी। किनारा। समाधि '...जतीनकी छूटी तटी'—राम० २४३
तड़क—स्त्री० छप्परके नीचे लगायी जानेवाली एक लकड़ी। तड़कनेकी क्रिया।
तड़कना—अक्रि० आवाज़के साथ टूटना, चटकना। क्रुद्ध होना। ज़ोरसे कूदना। ज़ोरसे आवाज़ करना।
तड़का—पु० सवेरा। बघार।
तड़काना—सक्रि० 'तड़' शब्दके साथ तोड़ना। क्रोधित† [† करना।
तड़का—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्र ही।
तड़तड़ाना—सक्रि० तड़तड़ शब्द करना। अक्रि० तड़-तड़ शब्द होना।
तड़पना—अक्रि० वेदनासे छटपटाना, तलफना। कूदना-फाँदना, गरजना, ज़ोरकी आवाज़ करना 'लगो तोप टड़पन तेहि अवसर पर्‌यो निसानन घाऊ।' रघु० १३४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तड़पाना—सक्रि० कष्ट पहुँचा कर व्याकुल करना।

तड़ाक—पु० तड़ाकेकी आवाज़। तड़ाग, सरोवर। क्रिवि० तुरन्त, चटपट।

तड़ाग—पु० सरोवर।

तड़ागना—अक्रि० कूद-फाँद करना, डींग मारना 'पहुँचेंगे तब कहँगे वही देसकी सीच। अबही कहा तड़ागिये बेड़ी पायन बीच।' साखी ६१

तड़ातड़—क्रिवि० तड़तड़ शब्दके साथ। लगातार।

तड़ित, तड़िता—स्त्री० बिजली।

तड़िपाना—अक्रि० देखो 'तड़पना', 'जैसे छोटे पिंजरामें कोउ पंछी परि तड़िपात।' हरि०

तड़ी—स्त्री० चपत।

तड़ीत—स्त्री० देखो 'तड़ित'। 'गिरी अचेत ह्वै मनो घने बनै तड़ीतसी।' के० २९०

तत—वि० उतना। तत, गरम। पु० तत्त्व। यथार्थ बात, सार वस्तु 'ततदरसी जो होय सो सत सार बिचारई।' साखी १३

ततकार, ततकाल—क्रिवि० तुरन्त (छत्र० ११९)।

ततखन, ततछन—क्रिवि० उसी समय, तुरन्त।

ततवाउ—पु० वस्त्र बुननेवाला। मकड़ी।

ततबीर—स्त्री० तदबीर, उपाय, युक्ति।

ततसार—स्त्री० तपानेकी जगह।

ततार्ई—स्त्री० गरमी 'बरनि बताई छिति ब्योमकी ततार्ई जेठ आयो आततार्ई पुटपाक सो करतु है।' सेनापति

ततारना—सक्रि० उष्ण जलसे, या धार देकर धोना।

ततुवाऊ—पु० देखो 'ततवाउ'।

ततैया—स्त्री० भिड़ या बर्र नामक कीड़ा।

तत्काल—क्रिवि० तत्क्षण, उसी समय तुरन्त।

तत्तण—क्रिवि० तत्काल, तुरन्त।

तत्त—पु० तत्त्व। सारवस्तु। परमात्मा। यथार्थ बात।

तत्ता—वि० उष्ण, गरम।

तत्त्वज्ञ, तत्त्वदर्शी, तत्त्ववेत्ता—पु० जिसे ब्रह्म और आत्माका ज्ञान हो, दार्शनिक।

तत्पर—वि० उद्यत, तैयार, चतुर।

तत्पुरुष—पु० एक समास। ईश्वर।

तत्सम—पु० संस्कृतका वह शब्द जो अविकृत रूपमें प्रयुक्त होता हो।

तथा—अ० और, इसी प्रकार।

तथागत—पु० बुद्ध भगवान्।

तथापि, तदपि, तद्यपि—अ० तो भी।

तदबीर—स्त्री० उपाय, युक्ति। [ठ होते हैं।

तद्भव—पु० संस्कृतके विकृत शब्द जो भाषामें प्रयुक्त

तन—पु० तनु, देह, शरीर। क्रिवि० तरफ, ओर (उदे० 'जोयना', सूबे० ७६, ३८, रामा० २५५)

तनक—वि० थोड़ा, अल्प, छोटा (अ० १, सूबे० ११४, १२७), 'तनक तनक पाँइ चलिहौ कैसे आवत हैहै राति।' सूबे० ८५

तनख़ाह, तनख़्वाह—स्त्री० वेतन, निश्चित समयके बाद मिलनेवाला पारिश्रमिक।

तनगना—अक्रि० तिनकना चिढ़ना, नाराज़ होना।

तनज्जुल—पु० अवनति।

तनतनाना—अक्रि० शान या क्रोध दिखलाना।

तनत्राण,-त्रान—पु० कवच (राम० १४५)।

तनना—अक्रि० खूब खिंचा रहना, फैलना 'फूलनको सुवितान तन्यो घर। कंचनको पलिका मढ़ता तर।' के० १५१। अकड़के साथ सीधा खड़ा होना, अकड़ना, ऐंठना। किसी ओर खिंचना या प्रवृत्त होना।

तनपात—पु० शरीरपात, मृत्यु।

तनमय—वि० लगा हुआ, मग्न, दत्तचित्त।

तनय—पु० पुत्र। **तनया**—स्त्री० पुत्री।

तनरुह—पु० देखो 'तनूरुह' रोआँ, लोम। पुत्र। पंख।

तनसुख—पु० एक तरहका फूलदार कपड़ा 'छुद्रघंटिका कटि लहँगा रँग तन तनसुखकी सारी।' सू०, [(अ० २५)

तनहा—वि० अकेला।

तना—पु० वृक्षका धड़। क्रिवि० तन, तरफ।

तनाउ, तनाऊ—पु० तनाव। खिंचाव (मति० २४०)।

तनाकु—क्रिवि० तनिक, ज़रा। [फैलाव।

तनाना—सक्रि० तानेनेका काम कराना।

तनाय, तनाव—पु० तननेकी क्रिया या भाव। रस्सी। 'मानो गगन तम्बू तन्यो ताके सपेद तनाय हैं।' सू० ७

तनि, तनिक—क्रिवि० ज़रा। वि० थोड़ा, अल्प, छोटा। 'इहाँ हुती मेरी तनिक मइँया को नृप आइ छर्‌यो।' सूबे० ४३४

तनियाँ, या—स्त्री० लँगोटी, जाँघिया। चोली। तगीदार कुरता 'दिना चारते पहिरन सीखे पट पीताम्बर तनियाँ।' अ० ६३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तनी—क्रिवि० देखो 'तनि'। वि० तनिक। स्त्री० डोरे-की तरहका बन्द, बंधन।

तनु—पु० शरीर। चमड़ा। वि० दुबला। थोड़ा। बारीक 'अति तनु धनु रेखा नेक नाकी न जाकी।' राम० ३२९

तनुक—वि०, क्रिवि० देखो 'तनिक'। पु० शरीर।

तनुज, तनूज—पु० लड़का, पुत्र।

तनुता—स्त्री० कृशता, छोटाई।

तनुरुह, तनूरुह—पु० देखो 'तनरुह'।

तनूजा—स्त्री० पुत्री, लड़की।

तनेना—वि० खिंचा हुआ, वक्र (रवि० २६)।

तनै—पु० तनय, पुत्र (उदे० 'ऐल')।

तनैया—स्त्री० तनया, पुत्री 'बाजत ताल रवाब और बहु तरनि-तनैया कूलहु।' स्वामी हरिदास

तनोज—पु० रोआँ। पुत्र।

तनोरुह—पु० देखो 'तनरुह'। 'बिलोकि सिरोरुह सेतु समेत तनोरुह कोबिद यों गुण गायो।' के० ६७

तन्मय—वि० तल्लीन, लगा हुआ।

तन्वी—स्त्री० कृश और कोमल अंगोंवाली।

तप—पु० तपस्या। नियम। अग्नि। गरमी, ज्वर।

तपकना—अक्रि० धड़कना।

तपन—पु० सूर्य। स्त्री० गरमी, जलन, धूप।

तपना—अक्रि० गरम होना। संतप्त होना, जलना, दुःख सहना 'तौलौं तू कहूँ ही जाय तिहूँ ताप तपिहै।' विन० २०७, (उदे० 'अवाँ')। तेजी या प्रताप दिखाना 'इहाँ इन्द्र अस राजा तपा।' प० १०१, 'सेरसाहि देहली सुलतानू। चारिउ खंड तपै जस भानू।' प० ५। तपस्या करना। सक्रि० पकाना 'सूरज जेहि कै तपै रसोई।' प० १२३

तपनि—स्त्री० जलन, ताप 'कोटि जतन कीजै तऊ तनकी तपनि न जाय।' वि० २७४, (उदे० 'अरदास')

तपस्या—स्त्री० तपस्या 'लघु, दीरघ तपसा अरु सेवा, स्वामिधर्म सब जगहिं सिखाये।' सू० ४५

तपस्वाली—पु० तपस्वी।

तपस्वी—पु० तपस्वी।

तपस्या—स्त्री० तप, व्रतचर्या। [एक मछली।

तपस्वी—पु० तपस्या करनेवाला। सीधा, दयाका पात्र।

तपा—वि० तपस्यामें मग्न। पु० तपस्वी 'काहुहि लागि भयेउ है तपा।' प० १२०, (५५,७६, भी)

तपाक—पु० जोश।

तपानल—पु० तपोजनित तेज।

तपाना—सक्रि० गरम करना, जलाना, दुःख देना। तरसाना 'दासन कहँ न तपावहु राजा।' प० १५९

तपावंत—पु० तपस्वी।

तपित—वि० तप्त, उष्ण।

तपिया, तपी—पु० तपस्वी, तप करनेवाला 'जपिया तपिया बहुत हैं सीलवंत कोइ एक।' साखी १५०।

तपिश—स्त्री० गरमी, आँच। [एक वृक्ष।

तपोधन,-धर्म,-निधि—पु० तपस्वी।

तपोभूमि-स्त्री०; तपोवन—पु० तपस्या करनेके लिए उपयुक्त स्थान या वन।

तप्त—वि० गरम, जलता हुआ, दुःखी।

तप्प—पु० तप, तपस्या।

तफरीह—स्त्री० हँसी, दिल्लगी। खुशी। ताज़गी।

तफसील—स्त्री० फेहरिस्त, ब्योरा (प० ३८)।

तब—क्रिवि० उस समय। इस कारण, इसीसे।

तबदीली—स्त्री० बदली, परिवर्तन।

तबल—पु० डंका, नगाड़ा 'किछु कहि चला तबल देइ डगा।' प० १०

तबलची—पु० तबला बजानेवाला।

तबला—पु० एक बाजा।

तबाही—स्त्री० बरबादी, नाश।

तबीअत, तबीयत—स्त्री० मन, जी, हृदय, समझ।

तबेला—पु० घुड़साल '...रारि सी मची है त्रिपुरारिके तबेलामें'—भूधर। एक पात्र 'करवा, कौंपर पानदान, चौघरा तबेला।' सुजा० १७२

तब्बर—पु० पुत्र (भू० १५९)।

तमंचा—पु० पिस्तौल।

तमक—पु० उमंग, आवेश 'कवि मतिराम लोने लोचन लपट लाज अरुन कपोल काम तेजकी तमक तें।' रस० ३१। क्रोध 'तमक नई यह बैसकी तज फिरनो सब धाम।' चाचा हित०। तीक्ष्णता, तीव्रता।

तमकना—अक्रि० क्रोधके आवेशमें आकर कूद-फाँद करना, कुपित होना, क्रोधकी अधिकता दिखाना 'तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं।' रामा० १३६, 'कट-कटान कपि कुंजर भारी। दुहुँ भुजदंड तमकि महि मारी।' रामा० ४६६

तमग़ा—पु० पदक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तमचर—पु० निशाचर, उल्लू ।

तमचुर,-चूर,-चोर—पु० मुर्ग़ा, (उदे० 'रौर'), 'भोर भये बोले पुर तमचुर मुकुलित विपुल विहंग ।' प्रागनि कवि । 'घिरिनि परेवा गीठ उठावा । चहै बोल तमचूर सुनावा ।' प० २३८

तमतमाना—अक्रि० चमकना, चेहरा लाल होना ।

तमयी—स्त्री० रात्रि 'केशनि ओरनि सीकर रमैं । ऋक्षनिको तमयी जनु चमैं ।' के० २६५

तमस—पु० अँधेरा, अज्ञान, पाप । तमसा नदी ।

तमस्सुक—पु० दस्तावेज़ ।

तमा—स्त्री० रात्रि । तमअ, लालच, इच्छा 'खानेको हमा रहै न काहूकी तमा रहै जो गाँठमें जमा रहै तो खातिरजमा रहै ।' ग्वाल कवि

तमाकू, तमाखू—पु० एक पौधा या उसकी पत्ती, सुरती ।

तमाचा—पु० थप्पड़, कराघात ।

तमादी—स्त्री० अवधिका समाप्त होना ।

तमाम—वि० कुल, सारा । समाप्त ।

तमारि—स्त्री० तँवार, घुमटा, चक्कर । पु० सूर्य ।

तमाल—पु० एक पेड़ ।

तमाशबीन—पु० तमाशा देखनेवाला ।

तमाशा—पु० मनोरंजक दृश्य, कौतुक, खेल ।

तमिस्रा—स्त्री० अँधेरी रात ।

तमी—स्त्री० रात्रि ।

तमीचर—पु० निशाचर ।

तमीज़—स्त्री० भलाबुरा समझनेकी शक्ति, बुद्धि, अदब ।

तमोर—पु० ताम्बूल, पान 'सुन्दर सुधर कपोल हो, रहे तमोर भरिपूर ।' सू० १६३

तमोरी—पु० तंबोली ।

तमोल—पु० देखो 'तमोर' । पानका बीड़ा 'तज्यो तेल तमोल भूषन, अंग बसन मलीन ।' सू०, (ब्रज० २७) 'पुनि राता मुख खाइ तमोला ।' प० १४२

तय—वि० निश्चित, निर्णीत, समाप्त ।

तयना—अक्रि० गरम होना, तपना, पीड़ित होना, दुःख, क्रोध, इ० से जलना 'त्राहि तुलसीस, त्राहि तिहूँ ताप तयो हौं ।' विन० ४२४

तयार—वि० तैयार, उद्यत, प्रस्तुत, दुरुस्त ।

तरंग—स्त्री० लहर, उमंग, मौज ।

तरंगित—वि० लहरें लेता हुआ । लहराता हुआ ।

तरंगी—वि० तरंगयुक्त, लहरी, मनमौजी 'नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ।' रामा० ५६

तर—क्रिवि० नीचे (उदे० 'उपराना') 'बरतर कह हरिकथा प्रसंगा ।' रामा० ५६७ । पास, किनारे, 'मन यह करत विचार गोमती तर गये ।' सू० २६७ । पु० तरु, पेड़ 'तरतर सुफर न होत, नारि पतिबता न घरघर ।' नरहरि । गति । आग । वि० आर्द्र, हराभरा, ठंडा 'तर छुरसी ऊपर गरी कज्जल जल छिरकाइ । पिय पाती बिनही लिखी बाँची विरह-बलाइ ।' बि० १३०

तरई—स्त्री० तारा, नक्षत्र 'जनहुँ चाँद सँग तरई ऊई ।' प० १६० (२७ भी)

तरक—स्त्री० तड़क, तड़कनेकी क्रिया । पु० तर्क, उक्ति, (अ० ६८) चमत्कारपूर्ण कथन । विचार 'मनमहु तरक करइ कपि लागा ।' रामा० ४१७

तरकना—अक्रि० तर्क करना, अनुमान करना, विचार करना 'चरित रामके सगुन भवानी । तरकि न जाहिं बुद्धि बल बानी ।' रामा० ४९२ । कूदना, लपकना, उछलना, (सू० १४९) 'समर बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल ।' रामा० ४७४ । देखो 'तड़कना', (उदे० 'झरहराना') । तरक जाना = फूटना, दरक जाना (दास १००)

तरकश,-कस—पु० तूणीर, तीर रखनेका धरुआ ।

तरकसी—स्त्री० छोटा तरकस ।

तरकारी—स्त्री० सब्जी, शाक ।

तरकी—स्त्री० कानका एक गहना ।

तरकीब—स्त्री० उपाय, युक्ति, तरीक़ा । मेल । रचना ।

तरकुली—स्त्री० कानमें पहिननेका फूलके ढंगका गहना, तरकी, ताटंक 'नील निचोल, तरकुली कानन, सिर सिँदूर, मुख पान ।' हरि०

तरक़ी—स्त्री० उन्नति ।

तरखा—पु० प्रबलप्रवाह, तीव्र धारा ।

तरछाना—अक्रि० आँखसे संकेत करना ।

तरजना—अक्रि० डाँट-डपट बताना, क्रोध-भाव दिखाना 'भिरे उभौ बाली अति तरजा । मुठिका मारि महाधुनि गरजा ।' रामा० ३९९

तरजनी—स्त्री० अँगूठेके बादवाली उँगली (रामा० १४८) ।

तरजुमा—टहथा, अनुवाद । [डर ।

तरणि—पु० सूर्य, आक । स्त्री० नौका ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तरणिजा, तरणितनूजा—स्त्री० यमुना।
तरणितनय,-सुत—पु० शनि। यम।
तरतराना—अक्रि० तोड़ने जैसा शब्द करना (सूवे० १२०)। तड़तड़ाना (सुजा० १८)।
तरतीब—स्त्री० सिलसिला।
तरद्दुद—पु० चिंता, फिक्र।
तरन—पु० तरनेकी क्रिया, उद्धार। तरकी, तरौना।
तरनतारन—पु० उद्धार करनेवाला। उद्धार।
तरना—सक्रि० उद्धार पाना (सू० १५०)। तलना (उदे० 'खाँड़र')। पार करना, 'मोरे मन अस होत बिचारा। तरत गोमती सैन्य अपारा।' रघु० २६७। अक्रि० पार होना, मुक्ति पाना। तैरना, उतराना। 'श्री रघुबीर प्रताप तें सिंधु तरे पाषान।' रामा० ४५०, 'पाहन तरै, काठ जो बूड़ै तौ हम मानै नीति।' भ्र० ५२
तरनि, तरन्नि—पु० सूर्य 'शिव प्रताप तव तरनि सम, अरि पानिप हर मूल।' भू० १७। नौका 'तरनि, जगत जलनिधि तरनि, जै जै आनँद ओक।' भू० २
तरनिजा, तरनितनूजा—स्त्री० यमुना नदी 'बसत त्रिविक्रमपुर सदा, तरनितनूजा तीर।' भू० १०
तरनी—स्त्री० नौका। खोंचा इ० रखनेका आसन।
तरपत—पु० सुभीता, आराम।
तरपन—पु० पितरों इत्यादिको तृप्त करनेके लिए पानी देनेकी क्रिया। सन्तुष्ट करनेका काम।
तरपना—अक्रि० देखो 'तड़पना'।
तरपर—क्रिवि० एकके बाद दूसरा, ऊपर-नीचे।
तरफ़—स्त्री० ओर, पक्ष, बाजू।
तरफ़दार—वि० समर्थक, पृष्ठ-पोषक, पक्षपाती।
तरफराना—अक्रि० छटपटाना (उदे० 'चुटकना'), पीड़ा इत्यादिसे व्याकुल होना।
तरबूज़—पु० एक बेल या उसका फल।
तरभर—स्त्री० (देखो 'तराभर') तड़ातड़ आवाज़, खलबली 'बजी बंदूखैं तरभर माची।' छत्र० १४४
तरमीम—स्त्री० सुधार, संशोधन।
तरराना—सक्रि० ऐंठना, मरोड़ना 'मूछन सहित पखा तरराने।' छत्र० १३४
तरल—वि० चंचल, क्षिप्रगामी 'पठयो अवध तुरत हलकारे तरल तुरंग चढ़ाई।' रघु० १०। क्षणभंगुर। कान्तिमान्। द्रव, बहनेवाला, पोला। पु० हार। हारका मध्यमणि। घोड़ा। पेंदा।
तरलाई—स्त्री० द्रवत्व। चञ्चलता।
तरवन—पु० तरकी या कर्णफूल।
तरवर—पु० बड़ा वृक्ष 'तरवर ते इक तिरिया उतरी, उसने खूब रिझाया।' खुसरो
तरवरिया तरवरिहा—पु० तलवार चलानेवाला।
तरवार—पु० तलवार, खड्ग।
तरवारि—स्त्री० तलवार (रामा० २१३)।
तरस—पु० दया, रहम।
तरसना—अक्रि० किसी वस्तुको न पानेसे व्याकुल होना, उत्कंठित होना 'त्यों रघुपति-पद-पदुम-परसको तनु पातकी न तरस्यो।' विन० ४०१। सक्रि० तराशना, काटना 'तिनही तिनही लखि लोभ डसै। पटतंतुन उंदुर ज्यों तरसै।' के० ७०
तरसाना—सक्रि० किसी वस्तुके लिए व्याकुल करना, ललचाना।
तरह—स्त्री० भाँति, प्रकार, ढंग, बनावट, उपाय। **तरह देना** = जाने देना, ध्यान न देना।
तरहटी—स्त्री० नीची जगह, तराई 'मनो मेरुकी तरहटी भयो सितासित संग।' रस० ५७
तरहर—क्रिवि० नीचे, 'सिर तें पावन पादुका लै करि भरत विचित्र। चरण कमल तरहरि धरी हँसि पहिरी जग-मित्र।' के० २६। वि० नीचा, निम्न श्रेणीका।
तरहारि—क्रिवि० नीचे, 'पाँच चौक मध्यहि रचे, सात लोक तरहारि।' के० १६९
तरहुँड—वि० नीचा 'दृष्टि तरहुँडी हेर न आगे।' प० २२९
तरहेल—वि० हारा हुआ, अधीन 'पुहुप-बास औ पवन अधारी कवँल मोर तरहेल।' प० २१७
तराई—स्त्री० पहाड़के नीचेकी जगह, घाटी। तारा 'अनबट बिछिया नखत तराईं।' प० ५२ (१८,१४५)
तराजू—पु० तुला, तौलनेका यंत्र।
तराटक—पु० त्राटक, योग शास्त्रकी एक मुद्रा, 'त्रिकुटी सँग भ्रूभंग तराटक, नैन नैन लगि लागै।' भ्र० ३३
तराप—स्त्री० तड़प, गर्ज, तड़ाका, बन्दूक इत्यादिकी आवाज़ 'सैद अफगन सेन सगरसुतन लागी कपिल सराप लौं तराप तोपखानेकी।' भू० १७८
तरापा—पु० रोना-पीटना, हाहाकार।
तराबोर—वि० अच्छी तरह भीगा हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तराभर—स्त्री० तड़ातड़ आवाज़ 'दुहुँ दिसि तुपक तराभर माची।' छत्र० ९४

तरायला—वि० तरल, तेज़, चपल 'आगे आगे तरुन तरायले चलत चले तिनके अमोद मन्द मन्द मोद सकसै।' भू० १२९

तरारा—पु० निरंतर गिरनेवाली जलधारा। छलांग।

तरावट—स्त्री० शीतलता, नमी।

तराशना—सक्रि० काटना, छीलना, कतरना।

तरासना—सक्रि० त्रस्त करना, डरवाना।

तराहीं—क्रिवि० नीचे 'आम जो फरि कै नवै तराहीं।' [प० १८४

तरिको—पु० तरौना, ताटंक, तरकी।

तरिता—स्त्री० विद्युत्, तड़ित्, बिजली।

तरिवन—पु० देखो 'तरवन'। 'आभा तरिवन लालकी परी कपोलनि आन।' ललित० ५०

तरिवर—पु० देखो 'तरवर' (उदे० 'काऊ')।

तरिहँत—क्रिवि० नीचे।

तरी—स्त्री० कर्णफूल, तरौना। जूतेका तला, जूती 'जनु पहिरी तनत्राणको माणिक तरी बनाय।' के० २३७। ठंडक, गीलापन। तरहटी, कछार। नाव।

तरीका—पु० प्रकार, ढंग, रीति, युक्ति।

तरु—पु० वृक्ष, पेड़।

तरुण—वि० युवा, नया।

तरुणाई—स्त्री० देखो 'तरुनाई'।

तरुणी, तरुनी—स्त्री० युवती।

तरुन—वि० युवा, नूतन।

तरुनई, तरुनाई—स्त्री० युवावस्था 'विधवा होइ पाइ तरुनाई।' रामा० ३६१

तरुनापन, तरुनापा—पु० तरुणावस्था, जवानी 'बालापन खेलत ही खोयो तरुनापन अलसात।' सू० २५ (प० ४) 'मिला न तरुनापा जग ढूँढ़ा।' प० ४

तरुवाँही—स्त्री० वृक्षकी भुजा, शाखा।

तरेंदा—पु० पानीमें उतराता हुआ काठ या अन्य वस्तु जिसके सहारे कोई पार हो सके।

तरेटी—स्त्री० घाटी, तराई, तलहटी।

तरेरना—सक्रि० नेत्रोंका इस तरह सञ्चालन करना जिससे अप्रसन्नता या असम्मति प्रकट हो 'सुनि कठोर बानी कपि केरी। कहत दशानन नयन तरेरी।' रामा० ४६०

तरैया—स्त्री० नक्षत्र, तारा, 'कहा बापुरो भानु है तप्यो तरैयन खोय।' रहीम (ककौ० २७५)

तरोई—स्त्री० एक लम्बा फल जिसकी तरकारी बनती है।

तरोवर—पु० देखो 'तरवर' (सुवे० २३९)।

तरौंटा—पु० चक्कीका नीचेवाला पत्थर।

तरौंस—पु० किनारा, तीर (उदे० 'खरौंहा')

तरौना—पु० कानका भूषण-विशेष, ताटंक, तरकी। 'प्रभा तरौना लालकी परी कपोलन आनि।' रस० ५४

तर्क—पु० युक्ति, दलील। व्यंग्य, चतुरतापूर्ण बात।

तर्कणा—स्त्री० दलील, विचार। [रवि० ३७

तर्कना—स्त्री० विचार, युक्ति। अक्रि० तर्क करना।

तर्कवितर्क—पु० सोच-विचार, बहस।

तर्कश—पु० देखो 'तरकस'।

तर्कसो—स्त्री० तूणीर, तरकस 'कटि मूल श्रोननि तर्कसी भृगुलात सी दरसै हिये।' राम० १५२

तर्ज़—पु० ढंग, शैली, प्रकार।

तर्जना—सक्रि० डपटना, डाँटना, 'नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु विधि एक एकन्ह तर्जहीं।' रामा० ४१६ अक्रि० क्रोध प्रकट करना, क्रोधसे तड़पना या उछल कूद करना 'आवत देखि विटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महा धुनि गर्जा।' रामा० ४२४

तर्पण—पु० देखो 'तरपन'।

तर्योना—पु० देखो 'तरौना'।

तल—पु० तला, पेंदा, पाँवका तलवा, सतह, हथेली,...।

तलघरा—पु० ज़मीनके नीचेकी कोठरी।

तलछट—स्त्री० पानी इ० के नीचे जमा हुआ मैल।

तलना—सक्रि० घी अथवा तेलमें भूनना या पकाना।

तलप—पु० शय्या। अटारी।

तलपना, तलफना—अक्रि० दुःखसे व्याकुल होना, छटपटाना, 'जैसे जल बिन मीन तलपै...' कबीर १६४

तलब—स्त्री० बुलाहट, (कबीर१७०) माँग, चाह। वेतन।

तलबेली—स्त्री० प्रबल उत्कंठा, आतुरता, छटपटाहट, बेचैनी, 'संग ना सहेली, बैस नवल अकेली, तन परी तलबेली महा लायो मैन सरु है।' सुखदेव मिश्र।

तलमलाना—अक्रि० व्याकुल होना, छटपटाना।

तलवा—पु० पाँवके नीचेका भाग।

तलवार—स्त्री० कृपाण, खड्ग।

तलहटी—स्त्री० पहाड़के नीचेकी ज़मीन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तला—पु० नीचेका हिस्सा, पेंदा।
तलाई—स्त्री० देखो 'तलैया'।
तलाब—पु० तालाब, पोखरा।
तलाबेली—स्त्री० देखो 'तलबेली' 'कहा कहौं लाल तलाबेली की तलफ पर्‌यो बाल अलबेलीको वियोगी मन लाजको।' ललित० ९१
तलामली—स्त्री० देखो 'तलबेली' 'तलामली परिजात चट निरखत स्याम विकास।' ललित कि० (ब्रज० ५११)
तलाश—स्त्री० खोज, पता, अनुसन्धान, चाह।
तलाशना—सक्रि० खोजना।
तली—स्त्री० पेंदी।
तलेंटी—स्त्री० पेंदी। देखो 'तलहटी'।
तले—क्रिवि० नीचे।
तलैया—स्त्री० छोटा तालाब।
तलौंछ—स्त्री० तलछट।
तल्प—पु० शय्या। अटारी।
तल्ला—पु० भितल्ला, अस्तर, जूतेके नीचेका हिस्सा। पास, [निकटता।
तवज्जह—पु० ध्यान।
तवना—अक्रि० देखो 'तयना' (विन० ३३९)
तवनी—स्त्री० छोटा तवा।
तवा—पु० रोटी इ० पकानेके लिए लोहेका गोल डिछला
तवाज़ा—पु० दावत, आदर-सत्कार। [पात्र।
तवारा—पु० ताप, जलन।
तवारीख—स्त्री० इतिहास।
तवालत—स्त्री० लम्बाई। झंझट। अधिकता।
तस—वि० तैसा। क्रिवि० तैसा, वैसा।
तसकर—पु० तस्कर; चोर (सू० २५)।
तसदीह—स्त्री० दुःख, तकलीफ़।
तसबी, तसबीह—स्त्री० माला, सुमिरनी, 'हाथ तसबीह लिये प्रात उठै बन्दगीको आपही कपट रूप कपट सु जपके।' भू० १५६। (उदे० 'कितेब')
तसला—पु० कड़ाहीके सदृश बरतन।
तसल्ली—स्त्री० सान्त्वना, धैर्य।
तसवीर—स्त्री० चित्र।
तस्कर—पु० चोर।
तहँ, तहँवाँ, तहाँ—क्रिवि० वहाँ। उस जगह।
तह—स्त्री० परत। तली।
तहक़ीकात—स्त्री० जाँच, अनुसन्धान।
तहना—अक्रि० दहना, क्रुद्ध होना।
तहरी—स्त्री० हरी मटरके दानोंकी खिचड़ी 'तहरी पाकि, लौंग औ,गरी। परी चिरौंजी औ खरहरी।' प० २७३
तहरीर—स्त्री० लिखाई, लिखावट, लिखित बात।
तहसनहस—वि० ध्वस्त-विध्वस्त।
तहिआ, तहियाँ—क्रिवि० उस समय, तब। 'धरिहहिं विष्णु मनुज तनु तहिआ।' रामा० ८०
ताईं—क्रिवि० तक। लिए, निमित्त, 'दूरि गयो दरसनके ताईं व्यापक प्रभुता सब बिसरी।' सू० ३३। पास, निकट। किसीके प्रति।
तांडव—पु० शिवजीका नाच। पुरुष-नृत्य।
ताँत—स्त्री० चमड़े या नसोंसे बनी डोरी, डोरी, प्रत्यञ्चा। सारंगी इत्यादिका तार 'सो मैं कुमति कहउँ केहि भाँती। बाज सुराग कि गाँडर ताँती।' रामा० ३१४ 'हाड़ भए सब किंगरी नसैं भई सब ताँति।' प० १७४
ताँता—पु० सिलसिला, कतार, श्रेणी।
ताँति—स्त्री० देखो 'ताँत'। पंक्ति, ताँता।
तांबूल—पु० पान या पानका बीड़ा।
ताँवरो—स्त्री०, ताँवरो—पु० जूड़ी, बुखार (भ्र० ६३, ६७) ज्वर। मूर्च्छा, चक्कर।
ता—सर्व०, वि० उस। अ० तक।
ताईं—अ० देखो 'तांईं'।
ताई—स्त्री० ताप, ज्वर, आग 'फूलनि सेज, सुगंध दुकूलनि, सूल उठै तनु तूल ज्यों ताई।' देव। ताऊकी स्त्री।
ताउ—पु० तपाने या पकानेके निमित्त पहुँचाई गयी गरमी। क्रोध, आवेश 'भवधनु भंजि निदरि भूपति भृगुनाथ खाइ गये ताउ।' विन० २५९
ताऊ—पु० पिताका बड़ा भाई।
ताक—पु० ताकनेकी क्रिया, घात, तलाश। आला।
ताकना—सक्रि० स्थिर दृष्टिसे निहारना, बारीकीसे देखना 'तमकि ताकि तकि शिवधनु धरहीं।' रामा० १३६। सोच विचार कर स्थिर करना, निश्चय करना 'उभय भाँति देखा निज मरना। तब ताकेसि रघुनायक सरना।' रामा० ३७७। नज़र रखना सोचना, चाहना। ताड़ लेना, समझ लेना।
ताकीत—स्त्री० चेतावनी कहनेका कार्य।
ताग—पु० तागा, सूत। 'सब कह ममता ताग बटोरी। मम पद मनहिं बाँध बर डोरी।' रामा० ४३९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तागना—सक्रि० रजाई इ० में दूर दूर पर सिलाई करना।
तागा—पु० धागा, सूत।
ताज—पु० राजमुकुट।
ताज़गी—स्त्री० नयापन, हरापन।
ताजन, ताजना—पु० चाबुक, कोड़ा 'चलि बैकुंठ तोहि लै तारौं, थकहिस प्रेम ताजनैं मारूँ।' कबीर ९६। 'चित चेतन ताजी करै लवकी करै लगाम। सबद गुरूका ताजना पहुँचै संत सुठाम।' साखी २३। उत्तेजक, या प्रेरक वस्तु। 'बंधन हमारो काम केलिको, कि ताड़िबे को ताजनो विचारको, कै व्यजन बिचारु है।' राम० २८९
ताज़ा—वि० टटका, नया, हराभरा, प्रसन्न।
ताज़ीम—पु० आदर-सम्मान 'पुनि दीन्हीं ताजीम अरु ग्राम दूसरो दीन्ह।' ललित० १०
ताड़ना—सक्रि० ताड़ना देना, सज़ा देना, मारना, कष्ट देना 'मारत ताड़त परुप कहन्ता। पूजनीय द्विज गाइहिं सन्ता।' रामा०। डपटना, कुवचन कहना, पीटना। 'मंदोदरी रुदन कर भारी। उर ताड़त बहु भाँति पुकारी।' रामा० ४९५। लखना, समझ लेना, जान लेना। स्त्री० दण्ड, प्रहार, डाँट-डपट, कष्ट।
तात—वि० गरम, तप्त (उदे० 'कुकुटा')। पु० पूज्य व्यक्ति, पिता, गुरु, बड़ा भाई। छोटा भाई। मित्र, पुत्र, इत्यादि।
ताता—वि० गरम, तप्त 'सब जग तेहि अनलहुतें ताता।' रामा० ३५८ (उदे० 'उढ़ना' भ्र० ५२)
ताताथेइ, ताधा—स्त्री० नाचनेमें पाद-सञ्चालनका शब्द। नाचनेमें एक तरहका बोल।
तातील—स्त्री० छुट्टी।
तात्पर्य—पु० मतलब, अभिप्राय।
तादाद—स्त्री० संख्या।
तान—स्त्री० तानने की क्रिया, फैलाव, आलाप 'करहिं गान बहु तान तरंगा।' रामा० ७८। ताना, रस्सी 'आसने बिछावने बितान तान तूरिया।' राम० ४८१
तानना—सक्रि० खींचना, खींचकर फैलाना, ऊपर फैलाकर बाँधना 'जिन रघुनाथ पिनाकहिं तान्यो तोरयो निमिष महीं।' सू०३५
तानबान—पु० तानाबाना। लंबाई और चौड़ाईके बल बुने गये सूत।
ताना—पु० आक्षेप, व्यंग। लम्बाईके बलवाला सूत। सक्रि० ढक्कन चिपकाकर बर्तनका मुँह बन्द करना। मूँदना, बन्द कर रखना, 'तिन स्रवनन परदोष निरन्तर सुनि सुनि भरि भरि तावों।' विन० ३४६ तपाना (उदे० 'कबीर')। परीक्षा करना। पिघलाना।
तानी—स्त्री० तनी या बन्द 'कंचुकि चूर, चूर भइ तानी।' [प० १५३
ताप—पु० गरमी, आँच, ज्वर।
तापना—अक्रि० आगसे शरीर गरमाना (साखी ९६)।
तापस—पु० तपस्वी (रामा० १९)।
ताफ्ता—पु० धूपछाँ रेशमी कपड़ा, 'दीपति देह दुहूनि मिलि, दिपति ताफतारंग।' बि० ३.४
ताब—स्त्री० ताप (सूबे० ३९०)। सामर्थ्य, धैर्य।
ताम—पु० व्याकुलता, उद्वेग। 'कहँ रस रास बीच अन्तर सुख कहाँ नारि तनु ताम।' सू० (ब्रज ३३) दुःख, ग्लानि। विकार, दोष। अँधेरा (सूरा० ७१) क्रोध। 'कंसको निर्वंश ह्वैहै करत इनपर ताम।' सूबे० २७९। वि० भयोत्पादक, भीषण 'वे हैं रोहनी सुत राम। गौर अंग सुरंग लोचन, प्रलय कैसे ताम।' सू० १९२। व्याकुल, परेशान। 'कुंज गृहते निकसि धाये काम कीन्हों ताम।' सूबे० २३३
तावड़तोड़—क्रिवि० लगातार।
तावूत—पु० मुर्दा ले जानेका सन्दूक।
तावे—वि० काबूमें, अधीन।
तावेदार—पु० नौकर। वि० आज्ञावर्ती।
तामरस—पु० कमल, ताँबा, सुवर्ण इ०।
तामस—पु० क्रोध, अँधेरा, मोह। वि० तमोगुणप्रधान 'सहज पापप्रिय तामस देहा।' रामा० ४३८
ताम्रपत्र—पु० ताँबेकी चद्दरका टुकड़ा जिसपर दान इ० की बात उत्कीर्ण हो।
तायँ—अ० से 'कोउ आयो उततायँ जितै नँदसुवन सिधारे।' भ्र० ७। ताईं, तक।
ताप—पु० ताप, दाह, जलन, धूप,। सर्व० उसको।
तायना—सक्रि० तपाना, जलाना, संताप पहुँचाना। 'सहित समाज भरत जनु आये। नाय वियोग ताप तनताये।' रामा० ३०७
तायनि—स्त्री० तपन, जलन, पीड़ा। 'बीजनौ दुरावती सखी जन त्यों सीतहूमें सौतिके सराप तन तायनि तरफराति।' देव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तार—पु० सोना इत्यादि धातुओंका सूत, तागा, सूत्र 'रहत निरन्तर जगत कौ वाहीके कर तार।' रतन० ३। युक्ति, उपाय 'जंत्रमंत्र औ वेद तंत्रमें सबै तारको तार।' व्यासजी। मोती। तारा (कबीर १२६), नक्षत्र। सुभीता। कनीनिका, आँखकी पुतली। ताद, 'बादेहु सो बिन काजही जैसे तार खजूर।' रहीम १८। कानका गहना, तरौना। मंजीरा, करताल। (उदे० 'आवक्ष') गाने इ० में कालका परिमाण। 'कहुँ गावै नाचै कहूँ कहूँ देत है तार।' रतन ८

तारक—पु० तारा, आँखकी पुतली। एक असुर।

तारतम्य—पु०सिलसिला, न्यूनाधिक्य।

तारतोड़—पु० कारचोबीका काम।

तारन-तरन—वि० तारनेवालोंको भी तारनेवाला। 'सकृत उर आनत जिनहिं जन होत तारनतरन।' विन०। (उदे० 'ख्याल')

तारना—सक्रि० पार करना, उद्धार करना, मुक्ति देना। तैराना 'सुगमै वरु वारिधि पैरिबो है पय ऊपर तारिबो पाहनो है।' दीन० २५८। ताड़ना, देखना 'केशोदास है उदास कमलाकरसों कर शोषक प्रदोष ताप तमोगुण तारिये।' के० २१३

तारा—पु० ताला 'धर्म धीर कुलकानि कुची करि, तेहि तारो दै दृरि धरयोगी।' सू० १३२। नक्षत्र, भाग्य, आँखकी पुतरी (सू० १२०)। ताली 'रहसे तुरुक बजाइकै तारा।' प० २६२

ताराधिप-नाथ,-पति—पु० चन्द्रमा। बालि, सुग्रीव। बृहस्पति। [प० ८६

तारामंडल—पु० एक वस्त्र 'तारामंडल पहिरिभल चोला।'

तारिका—स्त्री० नक्षत्र, सितारा। आँखकी पुतरी।

तारी—स्त्री० हथेलियोंका परस्पर आघात, करतलध्वनि 'बाजहिं ढोल देहिं सब तारी।' रामा० ४२३।' स्त्री० ताली, कुंजी। टकटकी, ध्यान 'सूनि समाधि लागि गई तारी।' प० १०८

तारीक—वि० काला, अंधेरा।

तारीख—स्त्री० तिथि।

तारीफ़—स्त्री० प्रशंसा, लक्षण।

तारु, तारू—पु० ताल, मुखके भीतर ऊपरके दाँतों और कौवेके बीचका गड्ढा 'अतिहि सुकंठ दाहु प्रीतमको, तारु जीभ मन लावत।' सू० २०८

तारेश, तारेस—पु० चन्द्रमा (मति० २२९)

ताल—पु० तालाब 'वेइ एहि ताल चतुर रखवारे।' रामा० २८। ताड़का पेड़ 'दुंदुभि अस्थि ताल देखराये। विनु प्रयास रघुनाथ ढहाये।' रामा० ३९८। हथेली। करतल-ध्वनि 'उड़त अघविहँग सुनि ताल करतालिका।' 'विन० १५१। झाँझ, मँजीरा। गाने इत्यादिमें काल व क्रियाका परिमाण (उदे 'अनाघात') तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दे ताल।' सू० जंघा या बाहु ठोकनेका शब्द।

तालक—पु० तभल्लुक, सम्बन्ध। ताला। हरताल।

ताला—पु० संदूक इ० बन्द करनेका यन्त्र, कुलफ।

तालाबेली—स्त्री० व्याकुलता 'बिरहा पीव पठाइया कहि साधू परमोधि। जा घट तालाबेलिया ताको लावो सोधि।' साखी ४० (४३ में भी)

तालिब—पु० तलाश करनेवाला शिष्य 'कबीरा तालिब तोरा तहाँ गोपत हरी गुर मोरा।' कबीर ९८

ताली—स्त्री० छोटा तालाब। देखो 'तारी'।

तालु, तालू—पु० देखो 'तारु'।

ताव—पु० देखो 'ताउ'। मूछों पर— देना = विजय, या बल आदिके घमण्डमें मूछें ऐंठना '...साहितनै सरजा सिवा दियो मुच्छपर ताव।' भू० १२२

तावना—सक्रि० देखो 'तायना' निरखि पतंग ध्यान नहिं छाँड़त जदपि ज्योति तन तावत।' सू० २८०; 'प्रीतम तन तावति तरुनि लाइ लगनिकी लाइ।' मति० २०८

तावर, तावरी—स्त्री० ताप, जलन, ज्वर, धूप।†

तावरा, तावरो—पु० देखो 'तावर'। [† मूर्च्छा, गश।

तावीज—पु० धातुका यंत्र जिसमें मंत्र रख कर पहनते हैं।

ताश—स्त्री० खेलनेका पत्ता।

ताशा, तासा—पु० एक बाजा।

तासीर—स्त्री० प्रभाव, गुण 'फरजी मीर न हो सके टेढ़ेकी तासीर।' रहीम १५

ताहम—पु० फिर भी, तिसपर भी।

ति—स्त्री० तिया, स्त्री 'पुंश्चली ति तेहि काल, एकै कीरति जानिये।' के० १५१। सर्व० वे 'सुत मानसिक तिन-केति। भुव देव प्रगटे ति।' के० २७३ वह 'ति न नगरी, ति न नागरी प्रति पद हंसक हीन।' राम० ८८

तिश्रा—स्त्री० तिया, स्त्री।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिउहार—पु० त्यौहार।

तिकोन, तिकोना, तिकोनिया—वि० जिसमें तीन कोने हों (उदे० 'खटोला')। पु० समोसा नामक पकवान।

तिक्ख—वि० तीक्ष्ण, तीखा, तेज़।

तिक्त—वि० कड़ुआ

तिक्ष—वि० तीक्ष्ण, तीव्र, चोखा। 'खल सर खर धारा क्यों सहै तिक्ष ताकी।' राम० ३२९

तिक्षता—स्त्री० तीक्ष्णता, तेज़ी (राम० ८६)।

तिखटी—स्त्री० तिपाई काठका बना तीन पाँवोंवाला [आसन।

तिखाई—स्त्री० तेज़ी।

तिगुना—पु० तीन गुना।

तिच्छ, तिच्छन—वि० तीक्ष्ण, तेज 'ऐंच्यो जहीं तबहीं कियो संयुत तिच्छ कटाक्ष नराच नवीनो।' राम० १०४

तिजरा—पु० तिजारी, स्त्री० तीसरे रोज चढ़नेवाला बुखार (उदे० 'टोटक')

तिजारत—स्त्री० व्यापार, वाणिज्य।

तित—क्रिवि० वहाँ, उधर।

तितना, तितेक, तितो—वि० उतना (उदे० 'अनुमानना')।

तितली—स्त्री० फूलोंपर उड़कर बैठनेवाला एक फतिंगा।

तितारा—पु० तीन तारवाला एक बाजा।

तितिंबा—पु० आडम्बर, ढकोसला। परिशिष्ट।

तितिक्षा—स्त्री० सहनशीलता, क्षमा।

तिथि—स्त्री० मिति या तारीख।

तिन—पु० तृण, तिनका (प० ३), 'एक अचम्भव होत बड़ो तिन ओंठ गहे अरि जात न मारे।' भू० ७१

तिनउर—पु० तृणराशि।

तिनकना, तिनगना—अक्रि० चिढ़ना।

तिनका—पु० देखो 'तिनूका'। तिनका तोर = नाल तोड़ (ख० ८१)

तिनगरी—स्त्री० एक तरहका पकवान।

तिनुका, तिनूका—पु० तृण, तृणका टुकड़ा। 'होनहार है रहै मोहमद सबको छूटे। होय तिनूका वज्र वज्र तिनुका है टूटे।' राम० १५५

तिन्ना—पु० एक तरहके धानका पौधा।

तिन्नी—स्त्री० नीवी। नारा। धानका एक भेद।

तिपति—स्त्री० तृप्ति, सन्तोष।

तिपाई—स्त्री० तीन पाँवोंकी चौकी।

तिपाड़—पु० वह जो तीन पाट जोड़ कर बनाया गया हो; जिसमें तीन पल्ले हों।

तिबारा—क्रिवि० तीसरी बार। तीन द्वारवाला कोठा।

तिमिंगल—पु० एक तरहका बड़ा मच्छ 'जलजाल काल कराल माल तिमिंगलादिक सों बसै।' राम० १४

तिमि—अ० उसी प्रकार। पु० समुद्रकी एक मछली।

तिमिर—पु० अंधेरा, धुंधलापन।

तिमिरारि—पु० सूर्य।

तिमिरारी—स्त्री० अंधकारका समूह, अंधकार। पु० सूर्य।

तिमुहानी—स्त्री० तीन रास्तों या तीन नदियोंके मिलनेकी जगह (रामा० २९)।

तिय, तिया—स्त्री० पत्नी, स्त्री।

तियाग—पु० त्याग, उत्सर्ग, विरक्ति।

तिरखा—स्त्री० तृषा, प्यास, इच्छा, लालच।

तिरखित—वि० तृषित, प्यासा, इच्छुक।

तिरछा—वि० न बिलकुल खड़ा, न बिलकुल पड़ा हुआ, [बाँका।

तिरछौहाँ—वि० कुछ कुछ तिरछा।

तिरछौहैं—क्रिवि० वक्रताके साथ।

तिरना—अक्रि० तैरना, तैर कर पार होना 'महाराज सिवराज तव वैरी तजि रस रुद्र। बचिवेको सागर तिरे, बूड़े सोक समुद्र।' भू० ८६। मुक्त होना 'दादू तनका आपा जारै तौ, तिरत न लागै बारा।' दादू। पानीकी सतहपर उतराना।

तिरनी—स्त्री० नीवी, फुफुंदी, 'रोमावली सूँड़ि तिरनी लों नाभि सरोवर आवै।' सू० ९६

तिरप—स्त्री० नाचमें एक तरहका ताल।

तिरपित—वि० तृप्त, प्रसन्न, सन्तुष्ट।

तिरबेनी—स्त्री० त्रिवेणी। तीन नदियोंकी मिली हुई धारा। गंगा, यमुना और सरस्वतीका संगम-स्थान।

तिरछिरा—पु० चकाचौंध, तीक्ष्ण प्रकाशमें दृष्टिका न ठहरना।

तिरमिराना—अक्रि० चौंधियाना, आँखोंका झपना।

तिरसूल—पु० त्रिशूल, शिवजीका अस्त्र, दैविक, दैहिक, तथा भौतिक दुःख (साखी १०८)।

तिरस्कार—पु० अनादर, उपेक्षा।

तिराना—सक्रि० पानीके ऊपर तैराना। तारना, उद्धार करना। पार करना (सू० ६७)।

तिरास—पु० त्रास, भय, क्लेश, दुःख।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिरासना—सक्रि० डराना, दुःख देना, तंग करना।
तिरिन—पु० तृण, तिनका।
तिरिया—स्त्री० स्त्री, औरत।
तिरीछा—वि० तिरछा 'खंजन मंजु तिरीछे नैननि। निज पति कहेउ तिन्हहिं सिय सैननि।' रामा० २५५
तिरोभूत,-हित—वि० अदृष्ट, छिपा हुआ।
तिरौंछा—वि० देखो 'तिरछा'।
तिर्यक—वि० तिरछा। पु० पशु।
तिलंगा—पु० अंग्रेजी सेनाके देशी सैनिक।
तिल—पु० एक पौधा तथा उसके बीज। शरीर परका छोटा काला बिन्दु या गोदना। क्षण 'सेही पिरीत अनुराग बखानइत तिले तिले नूतन होइ' विद्या०। तिलभर = थोड़ासा, क्षणभर।
तिलक—पु० टीका, गद्दी। एक आभूषण, विवाह स्थिर करनेकी एक रीति। श्रेष्ठ व्यक्ति।
तिलचटा—पु० एक तरहका झींगुर।
तिलमिलाना—अक्रि० देखो 'तिरमिराना'।
तिलरी—स्त्री० तीन लड़ोंकी माला।
तिलस्म—पु० इन्द्रजाल, जादू।
तिलहन—पु० वे पौधे जिनके बीजसे तेल निकलता है।
तिलांजलि—स्त्री० मृतक संस्कारके समय तिल डालकर अंजलिसे जल देनेकी विधि।
तिलोक—पु० त्रिलोक।
तिलोचन—पु० शिव।
तिलोरी—स्त्री० तेलिया मैना। एक तरहकी बरी जिसमें तिल भी मिला हो।
तिलौंछा—वि० तेलकेसे स्वाद या रंगवाला, चिकना, स्नेहयुक्त 'जकित चकित ह्वै तकि रहे तकित तिलौंछे नैन।' बि० १३२
तिल्ली—स्त्री० एक तेलहन। बरबट, प्लीहा।
तिवास—पु० तीन वासर, तीन दिन।
तिवासा, तिवासी—वि० तीन दिनका।
तिष्ट—वि० रचित 'कोउ कहै यह काल उपावत कोउ कहै यह ईसुर तिष्टी।' सुन्द० १५९
तिष्ठना—अक्रि० खड़ा होना, ठहरना, स्थिर रहना।
तिष्ण—वि० तीक्ष्ण।
तिसना—स्त्री० तृष्णा, प्यास, लोभ, तीव्र इच्छा।
तिसरा—पु० तटस्थ, तीसरा व्यक्ति।
तिसाना—अक्रि० तृषित होना।
तिहरा—वि० तीन तहोंका, एक साथ तीन (उदे० 'चौहरा')।
तिहाई—स्त्री० तीसरा भाग। फसल।
तिहाउ, तिहाव—पु० क्रोध, बिगाड़।
ती—स्त्री० पत्नी, स्त्री 'पीतमको पहिलो अपराध निहारि न ती कटु बात कही।' ललित० ११७
तीक्षन, तीक्ष्ण—वि० तेज, प्रचण्ड, नुकीला, अप्रिय।
तीख, तीखा—वि० तीक्ष्ण, तेज। चरपरा, अप्रिय। चोखा। उग्र स्वभाववाला (उदे० 'चाँड')।
तीखन, तीछन—वि० देखो 'तीक्षन'।...ये तेरे सबतें विषम ईछन तीछन बान।' बि० १४५
तीछा—वि० देखो 'तीक्ष्न'। 'नगर व्यापि गई बात सुतीछी।' रामा० २११
तीज—स्त्री० तृतीया, भाद्र शुक्ल तृतीया।
तीजा—वि० तीसरा। स्त्री० तीज।
तीत, तीता—वि० तिक्त, चरपरा, तीखा, कड़ुआ। गीला।
तीतुर, तीतुल—पु० एक पक्षी।
तीतुरी—स्त्री० तितली नामक उड़नेवाला कीड़ा।
तीन—वि० दोसे एक अधिक। पु० तीनकी संख्या। —तेरह करना = तितर बितर करना, छिन्नभिन्न करना।
तीय, तीया—स्त्री० औरत, स्त्री।
तीरंदाज—पु० तीर चलानेवाला।
तीर—पु० बाण। किनारा, तट। पास 'पूछति चली खबरिया, मितवा तीर।' रहीम
तीरथ, तीर्थ—पु० पवित्र स्थान।
तीर्थराज—पु० प्रयाग।
तीली—स्त्री० सलाई, सींक।
तीवई—स्त्री० स्त्री 'तीवइ कवँल सुगंध सरीरू।' प० ५२
तीव्र—वि० तेज, प्रचंड, कठोर, कटु।
तीसर, तीसरा—वि० तृतीय।
तीसी—स्त्री० अलसी।
तुंग—वि० ऊँचा।
तुंड—पु० मुख, चोंच। तलवारका अगला भाग 'तुट्टंत कट्टूँ तरवारिन तुंड।' सुजान ८७ 'करता दीखै कीरतन ऊँचा करिकै तुंड।' साखी १८८
तुंद—पु० पेट। नाभि।
तुंदिया, तुंदी—स्त्री० नाभि।
तुंबर, तुंबुरु—पु० धनिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुंबरी, तुंबी—स्त्री० तूँबी, कद्दुआ गोल कद्दू 'ते सिर कटु तुंबरि सम तूला। जे न नमत हरि-गुरु-पद मूला।' रामा० ६७

तुंबा—पु० कड़ुआ कद्दू या उसका बना पात्र।

तुअ—सर्व० तुम्हारा।

तुअना—अक्रि० टपकना, गिर पड़ना। गर्भपात होना।

तुअर—स्त्री० अरहर।

तुक—स्त्री० अन्त्यानुप्रास, पद्यकी कड़ी।

तुकबंदी—स्त्री० तुक जोड़नेकी क्रिया। भद्दी कविता।

तुका—पु० बिना गाँसीका तीर।

तुकारना—सक्रि० 'तू' 'तू' कहकर सम्बोधन करना।

तुकड़—पु० भद्दी पद्यरचना करनेवाला।

तुख—पु० तुष, अन्नके ऊपरका छिलका, भूसा (कबीर २५२)। अंडेका ऊपरी भाग।

तुखार—पु० एक प्राचीन देश या वहाँका निवासी। तुखार देशका घोड़ा (उदे० 'काटर', 'चाँड'), 'स्यामकरन अरु बाँक तुखारा।' प० ११, 'अस तुखार सब देखे जनु मनके रथवाह।' प० २०

तुचा—स्त्री० त्वचा, चमड़ा 'रही जो मुइ नागिनि जसि तुचा।' प० २०७

तुच्छ—वि० क्षुद्र, छोटा, अल्प, निःसार।

तुजुक—पु० अदब, शान 'भूपन भनत तहाँ सरजा शिवाजी गाजी तिनको तुजुक देखि नेकहू न लरजा।' [भू० ४, (७७)

तुट—वि० तनिक, ज़रासा।

तुटुना—अक्रि० सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना। सक्रि० प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना।

तुतरा—वि० तोतला, अस्पष्ट बोलनेवाला। अस्पष्ट 'कब हूँ दंत दूधके देखौं कब तुतरे मुख बैन झरे।' सूबे० ५२

तुतराना—अक्रि० अस्पष्ट उच्चारण करना।

तुतरौहाँ—वि० तोतला।

तुतलाना—अक्रि० साफ़ उच्चारण न होना।

तुदन—पु० तकलीफ़, पीड़ा

तुनीर—पु० तरकश।

तुपक—स्त्री० छोटी तोप, बन्दूक 'कहा करै लगि तोयमें तुपक तीर तरवारि।' ललित० ८२, (साखी २७)

तुभना—अक्रि० स्तब्ध होना, अचल या स्थिर होकर रह जाना।

तुमड़ी, तुमरी—स्त्री० देखो 'तुंबा'।

तुमल, तुमुल—वि० प्रचण्ड, तीव्र, भीषण। पु० युद्ध या सेनाका कोलाहल।

तुरंग, तुरंगम—पु० घोड़ा। वि० तेज़ चलनेवाला।

तुरंज—पु० बिजौरा नीबू 'गलगल तुरंज सदाफर फरे।'

तुरंत, तुरत—क्रिवि० तत्क्षण, शीघ्र ही। [प० १४

तुरई—स्त्री० एक तरकारी।

तुरग—पु० घोड़ा।

तुरय—पु० घोड़ा 'फेरा तुरय, छतीसौ कुरी।' प० १२९

तुरसीला—वि० घायल करनेवाला, पैना, तीखा 'फूल-छरीसी नरम करम करधनी शब्द हैं तुरसीले।' [नारायण स्वामी

तुरही—स्त्री० एक बाजा।

तुरा—स्त्री० शीघ्रता।

तुराइ, तुराय—क्रिवि० शीघ्रतापूर्वक, आतुरतासे 'गये गाधिसुत निकट तुराई।' रघु० ७२, 'बालक बतावन ब्याज प्रभुकर करत परस तुराय।' रघु० ९२

तुराई—स्त्री० तोषक, रुईभरा बिछावन 'कुस किसलय साथरी सुहाई। प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई।' रामा० २३०। क्रिवि० तुरंत, शीघ्र (दे० 'तुराना')।

तुराना—अक्रि० घबराना, जल्दी करना।

तुरावती—वि० स्त्री० वेगसे बहनेवाली।

तुरास—पु० वेग 'रोष भरे जस बाउर पवन तुरास उड़ाहिं।' प० २४५

तुरिया—स्त्री० मृतकवत्सा गाय या भैंस। जुलाहोंका एक औज़ार।

तुरी—स्त्री० एक बाजा जो फूँककर बजाया जाता है, तुरही। पु० घोड़ा 'श्रीपति सुकवि महावेग बिन तुरी फीको...'—श्रीपति, 'हैं ये चारों चंचल भले राजा पंडित गज तुरी।' बैताल, (प० ७९)। सवार। स्त्री० घोड़ी। लगाम। जुलाहोंका एक औज़ार। तुरीयावस्था (अ. ६०)।

तुरीय—वि० चौथा। तुरीयावस्था = मोक्ष (रामा० ६०७)।

तुरुपना—सक्रि० मोड़कर सीना। [प० १४

तुरुष्क—पु० तुर्किस्तान। तुर्किस्तानका निवासी।

तुर्रा—पु० कलगी, गुच्छा, शिखा। कोड़ा, हाथिया।

तुलना—अक्रि० तौलमें बराबर होना। बराबर होना 'तुले न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत-संग।' रामा० ४१७। तैयार होना, सधना, नियमित होना। सक्रि० बढ़ाना (विद्या० २१५)। शक्रि०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पहुँचना 'चेलाको न चलावं तुलें गुरू जेहि भेव।' प० ५६। स्त्री० मिलान, उपमा। गिनती, तौल।

तुला—स्त्री० तराजू (उदे० 'अंग')। तौल, नाप, तुलना। एक राशि।

तुलाई—स्त्री० दुलाई, रुईभरा ओढ़ना 'तपन तेज तपता तपन तूल तुलाई माह।' वि० १४२ (वंग०)। तौलनेकी मजदूरी।

तुलाना—अक्रि० पूरा उतरना। पहुँचना (उदे० 'गुदराना')। आ पहुँचना 'थोहु विस्व भा जब व्याध तुलाना।' प० ३१। जाता रहना 'बोहित भवँहिं भँवे सब पानी। नाचहिं राकस आस तुलानी।' प० १९२

तुषार—पु० पाला, हिम। देखो 'तुखार' (प० २०)।

तुष्टना—अक्रि० सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना।

तुष्टि—स्त्री० प्रसन्नता, तृप्ति।

तुस—पु० देखो 'तुख'।

तुसार—पु० पाला, हिम।

तुसी—स्त्री० देखो 'तुख'।

तुहिन—पु० पाला, हिम, टंढक।

तूँबी—स्त्री० देखो 'तुंबरी'।

तू—सर्व० मध्यम पुरुष,—एकवचन।

तूख—पु० खरका, तिनकेका पतला टुकड़ा।

तूटना—अक्रि० टूटना 'तूटै बँधै बँधै पुनि तूटै जब तब होइ बिनासा।' कबीर ९९

तूठना—अक्रि० सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना 'कौन गरीब निवाजिबो कित तूठ्यो रतिराज।' वि० ३०

तूण, तूणी, तूणीर—पु० तरकश।

तूत—पु० वृक्ष-विशेष।

तूतिया—पु० नीला थोथा।

तूती—स्त्री० छोटा जातिका तोता। एक बाजा। एक चिड़िया।

तून, तूनीर—पु० तूणीर, तरकश।

तूना—अक्रि० टपकना, गिरना। गर्भ स्खलित होना।

तूफान—पु० अंधड़, उपद्रव, झगड़ा, आपत्ति।

तूमड़ी—स्त्री० देखो 'तुंबरी'।

तूमना—सक्रि० रुईके रेशोंको पृथक् करना (रवि० २८)। उधेड़ना, भेद खोलना।

तूमरी—स्त्री० तूमड़ी, तूँबी।

तूर—पु० नगाड़ा, तुरही (उदे० 'तार', 'उपंग'), 'मादर तूर झाँझ चहुँ फेरी।' प० ८८

तूरज—पु० तुरही नामक बाजा 'इत सूरज तूरज को बजाइ।' सुजा० ९९

तूरण, तूरन—क्रिवि० तूर्ण, तुरन्त, शीघ्र 'इनही के तपतेज तेज बढ़िहै तन तूरण।' राम० ४५

तूरना—सक्रि० तोड़ना (दीन० १०, प० १८४), '...पूजिये काज प्रसूननि तूरति।' दास १३५ ॐ

तूर्ण—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्र। [ॐ पु० तुरही।

तूल—वि० तुल्य, सदृश (उदे० 'चवना', के० १६)। पु० सेमर, कपास इत्यादिका घूआ, रुई 'तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करइ सुगाढ़ि।' रामा० ६०७। शङ्खतूत। एक लाल रंगका कपड़ा। गहरा लाल रंग। विस्तार। —**देना** = बहुत बढ़ाना। —**पकड़ना** = बहुत बढ़ जाना।

तूलना—अक्रि० बराबरी करना, बराबर होना 'तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।' रामा० ४।७, 'रंग न तेरो है कछू सुबरन संग न तूल।' दीन० २११। धुरीमें तेल देना।

तूवर, तूवरक—पु० अरहर। डूँडाबेल। दाढ़ी मोछ रहित आदमी।

तूष्णी—स्त्री० चुप्पी, मौन। वि० चुप।

तूस—पु० देखो 'तुस'। पु० तूल, गहरे लाल रंगका कपड़ा। पतसीना।

तूसना—सक्रि० सन्तुष्ट करना, खुश करना। अक्रि० प्रसन्न होना।

तृखा—स्त्री० प्यास, इच्छा।

तृजग—वि० तिरछा, टेढ़ा। पशु सम्बन्धी।

तृण, तृन—पु० तिनका, घास। —**गहाना** = नम्र बनाना, वशीभूत करना। —**टूटना** = बलिहारी जाना, नज़र लगनेसे बचानेका उपाय किया जाना 'आजु तृन टूटत है री ललित त्रिभंगीपर।' स्वामी हरिदास। —**समान** = अत्यन्त तुच्छ। —**तोड़ना** = सम्बन्ध तोड़ना '...देह गेह सब सन तृन तोरे।' रामा० २३२। बलैयाँ लेना (उदे० 'छींट')। नजर लगनेसे बचानेका उपाय करना।

तृतीय—वि० तीसरा।

तृपति, तृप्ति—स्त्री० सन्तोष 'तृपित दृगनकी तृपति जौ ध्यान धरै ते होय।' रतन० ३८, (सूरा० १५)

तृपित, तृप्त—वि० सन्तुष्ट, प्रसन्न।

तृपिता—स्त्री० तृप्ति, सन्तोष 'अँचवत आदर लोचन पुट दोउ, मनु नहिं तृपिता पावै।' सू० १८६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तृसाना—अक्रि० तृस होना 'लोचन अँजि श्यामशशि दरसन तर्षी ये तृसाति।' भ्र० ५२
तृषा—स्त्री० प्यास, लालच, लालसा।
तृषित—वि० प्यासा, उत्सुक, इच्छुक (उदे० 'तृपति')।
तृष्णा, तृस्ना—स्त्री० प्यास। लालच।
तें—प्रत्य० से, द्वारा।
तेंदुआ—पु० चीतेसे कुछ छोटा हिंसक पशु।
ते—सर्व० वे।
तेखना—अक्रि० नाराज़ होना।
तेग—स्त्री० तलवार।
तेगा—पु० तलवार, खाँडा।
तेज—पु० पराक्रम, प्रताप। चमक, ताप। वीर्य। प्रचण्डता, वेग।
तेज़—वि० पैना, तीक्ष्ण, प्रचंड। वेगवान्, शीघ्रगामी। महँगा।
तेजना—सक्रि० तजना, छोड़ना 'तेजि अहं गुरु चरन गहु जमसे बाचै जीव।' साखी ५, (उदे० 'अगुसारना')
तेजसी, तेजस्वी—वि० प्रतापी, कान्तिमान्, शक्तिशाली 'रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु करि गनिय न ताहु।' रामा० ९५
तेता, तेतिक—वि० उतना, उसी परिमाण या संख्याका 'जेती सम्पति कृपनकी तेती सुमति जोर।' वि० ५१, 'जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते।' रामा० ४३४
तेरहीं—स्त्री० मृत्युके बादका तेरहवाँ दिन।
तेरुस—पु० पिछला (या अगला) तीसरा वर्ष। स्त्री० [तेरस, तेरहवीं तिथि।
तेरे—अ० से।
तेल—पु० बीजों इ० से प्राप्त चिकना द्रव पदार्थ। विवाहकी एक रस्म।
तेलिया—वि० तेलके सदृश चिकना और चमकदार, तेलके समान रंगवाला। पु० काला चमकीला रंग। काले और चमकीले रंगका घोड़ा। एक विष 'तेलिया मारि डार पुनि तेही।' प० २०७
तेलिया पखान—पु० एक चिकना पत्थर 'नहीं चन्द्रमनि जो द्रवै यह तेलिया पखान।' दीन० १९८
तेवन—पु० प्रमोदवन, क्रीडोद्यान, नज़रबाग। क्रीड़ा।
तेवर—पु० कोप भरी हुई दृष्टि।
तेवरी—स्त्री० देखो 'त्योरी'।
तेवहार—पु० देखो 'त्योहार'।
तेवान—पु० चिन्ता 'मन तेवान कै राघव दूरा।' प० २२०
तेवाना—अक्रि० चिन्ता करना, विचारमें लीन होना।
तेह—पु० तेहा, घमण्ड, क्रोध। तेजी। 'तेह तेरेरो त्योर करि कत करियत दृग लोल।' वि० ५२
तेहरा—वि० जिसके तीन परत या तीन प्रतिबिम्ब हों। 'दोहरे तेहरे चौहरे भूषण जाने जात।' वि० २८०
तैं—सर्व० तू। विभक्ति 'से'।
तैना—सक्रि० देखो 'तवना'। '...कहाँ लों हियो विरहागिमें तैये।' दास २९
तैयार—वि० प्रस्तुत, उद्यत, दुरुस्त, हृष्टपुष्ट।
तैरना—अक्रि० पैरना, उतराना।
तैराक—पु० जो तैरनेमें होशियार हो, तैरनेवाला।
तैल—पु० देखो 'तेल'।
तों—क्रिवि० त्यों। उस प्रकार। उस समय।
तोंअर—पु० एक अस्त्र जो भालेकी तरहका होता है।
तोंद—स्त्री० आगे बढ़ा हुआ पेट।
तोंदी—स्त्री० नाभि।
तो—अ० ऐसी हालतमें, तब। सर्व० तेरा। तुम (तोमें इ०)।
तोइ—पु० तोय, पानी।
तोख—पु० तोष, सन्तोष, प्रसन्नता।
तोखार—पु० देखो 'तुखार'।
तोटका—पु० टोटका, टोना, जादू।
तोटना—अक्रि० टूटना (मति० २३३)।
तोड़—पु० नदीका तेज प्रवाह। तोड़नेकी क्रिया।
तोड़ना—सक्रि० भंग करना, खंडित करना, चूर्ण करना। बेकाम करना।
तोड़र—पु० तोड़ा, पैरका एक गहना 'नौ गिरही तोड़र पहिरावौं।' प० १९१
तोण—पु० तूणीर, तरकश।
तोत—पु० राशि, ढेर 'घर घर उनहींके बुरे बदनामीके तोत।' रतन० ७३
तोतर, तोतरा, तोतला—वि० जो स्पष्ट उच्चारण न करता हो। जिसका उच्चारण साफ न हो 'जो बालक कह तोतरि बाता।' रामा० ८
तोतराना, तोतलाना—अक्रि० देखो 'तुतराना'। 'तनक मुखकी तनक बतियाँ माँगत हैं तोतराइ।' सूवे० ५१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तोता—पु० सुग्गा। शुक। बन्दूकका घोड़ा।

तोप—स्त्री० एक बड़ा अस्त्र जिससे गोले चलाये जाते हैं।

तोपना—सक्रि० ढाँकना, छिपाना 'बरषि बान रघुपति-रथ तोपेउ।' रामा० ५०८

तोबड़ा—पु० घोड़ेको दाना खिलानेका थैला।

तोम—पु० राशि, समूह 'तीतर-तोम तमीचर-सेन समीरको सूनु बड़ो बहरी है।' कविता० १९४, (भू० १६)

तोमर—पु० एक छन्द। एक अस्त्र। एक राजपूत वंश।

तोमरी—स्त्री० तूँबड़ी, कड़ुआ कद्दू।

तोय—पु० पानी।

तोयधि,-निधि—पु० समुद्र।

तोर—सर्व० तेरा। पु० दाँव, पेंच। जलका तीव्र प्रवाह।†

तोरई—स्त्री० एक तरकारी। [† दहीका पानी।

तोरण, तोरन—पु० बन्दनवार। घर या नगरका बाहरी द्वार। गला।

तोरना—सक्रि० खंडित करना, भग्न करना, नष्ट करना 'एहि बिधि सकल बल तोरि। तेहि कीन्ह कपट बहोरि।' रामा० ५१४। दूर करना।

तोराई—पु० देखो 'तुराई', (उदे० 'छुद')।

तोराना—सक्रि० तुड़ाना, भग्न कराना, नष्ट कराना, बंधन छुड़ाना, अलग कराना।

तोरावान्—वि० तेज, वेगवाला।

तोलना—सक्रि० तराजूपर रखकर वजन करना, जाँचना। तुलना करके विचार करना। पहियेमें तेल देना। धनुष इत्यादिको उचित रीतिसे साधना, सँभालना, उठाना।

तोशक—पु० देखो 'तोसक'।

तोशाखाना—पु० देखो 'तोसाखाना'।

तोषना—सक्रि० संतुष्ट करना, प्रसन्न करना (उदे० 'अवडेरना')। अक्रि० संतुष्ट होना, प्रसन्न होना। 'प्रभु तोषेउ सुनि शंकर बचना।' रामा० ४७

तोस—पु० सन्तोष, प्रसन्नता।

तोसक—पु० रुईदार बिछौना, मुलायम गद्दा।

तोसल—पु० मूसल। एक असुरका नाम।

तोसा—पु० यात्राके लिए रखी गयी खाद्य वस्तु।

तोसाखाना,-गार—पु० राजाओं इ० के कीमती कपड़े व आभूषण रखनेका कमरा।

तोहफा—वि० बढ़िया। पु० उपहार, भेंट।

तोहमत—स्त्री० मिथ्या दोषारोप।

तौंकना—अक्रि० आँचसे तपना (उदे० 'चुवा')।

तौंस—स्त्री० धूप खानेके कारण उत्पन्न विकट प्यास।

तौंसना—अक्रि० तप जाना, गरमीके कारण झुलस जाना '…तात तात! तौंसियत शौंसियत झारहीं।' कविता० [१७८

तौंसा—पु० भयंकर गरमी।

तौ—क्रिवि० तो। अक्रि० हतो, था।

तौक—पु०, **तौकी**—स्त्री० गलेका एक गहना, हँसुली। 'बाहु टाड़ कर कंकन बाजूबंद येते पर तौकी।' सूवे० १४३

तौरि—स्त्री० चक्कर, घुमरी।

तौलना—सक्रि० देखो 'तोलना'।

तौलिया—स्त्री रीर पोछनेका मोटा गमछा।

तौसना—अक्रि० देखो 'तौंसना'। सक्रि० गर्मीसे व्याकुल करना।

तौहीन—स्त्री० अपमान, बेइज्जती।

त्यागना—सक्रि० त्याग करना, छोड़ना।

त्यागपत्र—पु० इस्तीफा।

त्यागी—वि० छोड़नेवाला, विरक्त।

त्यार—वि० तैयार, उद्यत, प्रस्तुत।

त्यों—क्रिवि० उस तरह। स्त्री० तरफ (उदे० 'अदोखिल', कविता० १६९)।

त्योनार—पु० देखो 'त्यौनार', (उदे० 'गुहना')।

त्योर, त्योरी—स्त्री० चितवन, दृष्टि। त्योर ठानना, त्योरी चढ़ाना, त्योरी बदलना = क्रोधसे भौंहें चढ़ाना 'आवत गुसुलखाने ऐसे कछु त्योर ठाने जाने अवरंगजेबके प्राननको लेवा है।' भू० ३१

त्योहार—पु० पर्वदिन, उत्सवका दिन।

त्योहारी—स्त्री० त्यौहारके उपलक्षमें नौकर इ० को दी [गयी रकम।

त्यौनार—पु० तरीका, ढंग।

त्यौर—पु०, **त्यौरी**—स्त्री० देखो 'त्योर'। 'दबै नहीं धित चढ़ि रह्यौ अबै चढ़ाये त्यौर।' बि० २४७

त्यौराना—अक्रि० सर घूमना।

त्रपा—स्त्री० लज्जा। वि० लज्जित।

त्रय—वि० तीन।

त्रष्टा—पु० तष्टा, ताँबेकी तश्तरी।

त्रसना—अक्रि० भयभीत होना 'करम-कपीस-बालि-बली त्रास-त्रस्यो हौं।' विन० ४२४

त्रसाना—सक्रि० भय दिखाना, डराना।

त्रसित, त्रस्त, त्रासित—वि० भयग्रस्त, पीड़ित।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्राण—पु० रक्षा। जिससे रक्षा हो, कवच।
त्राता, त्रातार—पु० रक्षक।
त्रास—पु० डर, भय।
त्रासक—पु० त्रास देनेवाला। नष्ट करनेवाला।
त्रासना—सक्रि० देखो 'त्रसाना'। 'कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहिं बहुविधि त्रासहु जाई।'
त्राहि—अ० रक्षा करो, बचाओ। [रामा० ४१९
त्रिकालज्ञ,-दर्शी—पु० तीनों कालोंकी बात जाननेवाला।
त्रिकुटी—स्त्री० भौंहोंके बीचकी जगह (उदे० 'तराटक')।
त्रिखा—स्त्री० देखो 'तृषा'।
त्रिजग—पु० तिर्यक्, पशु, क्रीड़ा इ० 'त्रिजग देव नर असुर अपर जग जोनि सकल भ्रमि आयो।' विन० ४६१
त्रिजामा—स्त्री० रात, निशा।
त्रिण—पु० तिनका।
त्रिदस—पु० देवता (देखो 'आरि')।
त्रिदोष—पु० वात, पित्त, कफसे उत्पन्न व्याधि, सन्निपात।
त्रिदोषना—अक्रि० वात, पित्त, कफके फन्देमें पड़ना। काम क्रोध तथा लोभके वश होना।
त्रिधारा—स्त्री० (आकाश, पाताल, मृत्युलोकमें बहनेवाली) गंगा। सेंहुड़।
त्रिन—पु० तिनका।
त्रिपथगा—स्त्री० गंगा।
त्रिपिताना—अक्रि० तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। सक्रि० सन्तुष्ट करना। [† तिलक।
त्रिपुंड, त्रिपुंड्र—पु० शैवोंका तीन आड़ी लकीरोंवाला †
त्रिपुटी—स्त्री० तीन पदार्थोंका समूह। छोटी इलायची।
त्रिबली—स्त्री० पेटके ऊपरकी तीन रेखाएँ।
त्रिवेनी—स्त्री० देखो 'त्रिवेणी'।
त्रिभंग—पु० टेढ़े खड़े होनेका ढंग। वि० तीन स्थानोंसे टेढ़ा 'चलत अंग त्रिभंग करिकै, भौंह भाव चलाइ।' सू० १२६
त्रिभंगी—वि० तीन जगहोंसे टेढ़ा, जो इस प्रकारसे खड़ा हो (कृष्ण)।
त्रिय, त्रिया—स्त्री० स्त्री, पत्नी 'तन्दुल त्रिय दीने हुते, आगे धरियो जाय।' सुदामा०
त्रियामा—स्त्री० देखो 'त्रिजामा'।
त्रिवेणी, त्रिवेनी—स्त्री० तीन नदियोंका संगम, गंगा-यमुना, सरस्वतीके मिलनेकी जगह।
त्रिशूल—पु० दैहिक, भौतिक, दैविक दुःख। शिवजीका अस्त्रविशेष।
त्रिषा—स्त्री० प्यास (कबीर १६२)।
त्रिसित—वि० तृषित, प्यासा, लालायित।
त्रिस्रोता—पु० गंगाजी।
त्रुटि—स्त्री० चूक, कमी, दोष।
त्रुटित—वि० टूटा हुआ (रामा० ३२)।
त्रै—वि० त्रय, तीन।
त्रवार्षिक—वि० तीन वर्षोंका, जो तीन-वर्षोंमें हो।
त्रोण, त्रोन—पु० तूणीर, तरकश।
त्र्यंबक—पु० शिव।
त्वचकना—अक्रि० भीतरकी ओर धस जाना या दब जाना, पचकना, जीर्ण होना 'पदली दशा पलटि लीन्ही है त्वचा त्वचकि तनु पिलकी।' सू० २०१
त्वचा, त्वच्—स्त्री० चर्म, छिलका।
त्वरा—स्त्री० शीघ्रता।
त्वरित—क्रि०वि० तुरन्त, शीघ्रतासे।

थ

थंडिल—पु० यज्ञादिकी वेदी।
थंब, थंभ—पु० खंभ 'प्रभु थंभ ते निकसे कै विस्तार कबीर ३०७। थाम, सहारा 'अति अद्भुत थंभनकी दुगई। गजदन्त सुकंचन चित्रनई।' के० १७५
थंभन—पु० ठहराव। थामनेवाला 'दिछि दलन दक्खिन दिशि थंभन, ऐंड धरन सिवराज बिराजै।' भू० ५४
थँभना—अक्रि० सँभलना 'बिना आपुके आवने मोसों थंभै न रार।' सुजा० १४
थंभित—वि० ठहरा हुआ। अचल।
थक—पु० समूह, राशि।
थकना—अक्रि० क्लान्त होना, अधिक परिश्रमके कारण शिथिल होना। तंग आना, मुग्ध होना, चुक रहना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(सु० ८८) 'थके नारिनर प्रेम पियासे।' रामा० २५४। धीमा पड़ जाना।

थकान—स्त्री० शिथिलता, थकावट।

थकाना—सक्रि० शिथिल करना, क्लान्त करना।

थकित—वि० श्रान्त, थका हुआ, विमुग्ध।

थकौंहाँ—वि० कुछ कुछ थका हुआ, शिथिल।

थगित—वि० रुका हुआ, शिथिल।

थति—स्त्री० थाती, धरोहर। रक्षित पूँजी।

थन—पु० गाय, भैंस इत्यादिका स्तन।

थपकना—सक्रि० हलके हाथसे ठोंकना।

थपका—पु० जमी हुई वस्तु, जमा हुआ कतरा।

थपकी, थपथपी—स्त्री० हाथका हलका आघात। मुँगरा।

थपड़ी—स्त्री० कर ताली।

थपन—पु० स्थापन, स्थापित करनेकी क्रिया।

थपना—सक्रि० स्थापित करना, जमाना, प्रतिष्ठित करना 'मारिकै मार थप्यो जगमें जाकी प्रथम रेख भट माहीं।' विन० ६९ (उदे० 'माइ')। अक्रि० स्थापित होना, [प्रतिष्ठित होना।

थपुआ—पु० घर छानेका मिट्टीका खपड़ा।

थपेड़ा—पु० चपत, धक्का।

थपोड़ी—स्त्री० ताली, थपड़ी।

थम—पु० स्तंभ, खंभा। केलेकी पेड़ी।

थमकारी—वि० थामनेवाला। रोकनेवाला।

थमना—अक्रि० ठहरना, स्थित रहना, रुका रहना 'जिनके जप तपसे थमैं, सात द्वीप नवखण्ड।' चाचा हित०। धैर्य रखना। रुक जाना, बन्द हो जाना।

थर—पु० थल, सूखी ज़मीन, ज़मीन। जगह 'जेहि थर आनहिं भाँति की बरनत बात कछूक।' भू० ४५। स्त्री० शेरकी माँद।

थरकना—अक्रि० भयसे काँपना।

थरकौंहाँ—वि० काँपता हुआ, इधर उधर डोलता हुआ, चंचल। स्थिर 'दृग थरकौंहैं अधखुले देह थकौंहैं डार।' वि० २८६

थरथराना—अक्रि० भयसे काँपना। हिलना, काँपना।

थरथरी, थरहर, थरहरी—स्त्री० कम्प, कँपकपी 'दीप-सिखासी थरहरी लगें बयारि झकोर।' मति० १९८, 'कोउ लाल यों सखि लखै लागे थरहर देह।' वि० २१३ (बंग०), साधुनके सतसंगतें थरहर काँपै देह।' साखी '५४

थरि—स्त्री० सिंह इत्यादिके रहनेकी जगह, माँद 'सिंह-नकी सुथरी गज खेले।' छत्र० २९

थरिया—स्त्री० थाली।

थरु—पु० थल।

थर्राना—अक्रि० काँप उठना, भयसे चौंक उठना।

थल—पु० देखो 'थर'—पु०।

थलकना—अक्रि० डिगना, काँपना 'थलकत भूमि हल-कत भूमिधर ...'—दास १०५

थलथलाना—अक्रि० मोटे मनुष्यके शरीरके मांसका हिलना।

थलरुह—वि० थलपर पैदा होनेवाले (वृक्ष इत्यादि)।

थवई—पु० मकान बनानेवाला, राजगीर (प० २६०)।

थहना—सक्रि० थाह लेना। किसीकी गहराई या आन्तरिक उद्देश्य इत्यादि मालूम करना।

थहरना—अक्रि० काँपना, हिलना 'चंचल लोचन चारु विराजत पास लुरी अलकैं थहरैं।' दास ८०, 'जरीदार पगरी उदार, उर मुक्तमाल थहरति है।' सहचरिशरण

थहराना—अक्रि० भय इ० से काँपना, हिलना (भू० १९)।

थहरि—स्त्री० थली, भूमि 'इहै लालच गाइ दस लिये बसति है ब्रज थहरि।' सूवे० १११

थहाना—सक्रि० देखो 'थहना'। 'गोपद बूड़िबे जोग करम करों बातनि जलधि थहावों।' विन० ५३०

थाँम—पु० खम्भा 'थाँम नाहिं उठि सकै न थूनी।' प० १७२

थाँभना—सक्रि० देखो 'थामना', (सुजा० २८)।

थाँवला—पु० देखो 'थाला'।

थाई—वि० स्थायी, स्थिर रहनेवाला। स्त्री० जगह, (बदले) 'उगल्यो गरल दूधकी थाई।' छत्र० ३५

थाक—पु० ग्रामसीमा, हद्द। राशि।

थाकना—अक्रि० देखो 'थकना'। 'रथ समेत रवि थाकेउ निशा कवन विधि होय।', रामा १०९। ठहर जाना।

थात—वि० स्थित, ठहरा हुआ।

थाति—स्त्री० देखो 'थाती'। स्थिति, ठहरने या रहनेकी क्रिया 'भजे विकल विलोकि कलि अघ अवगुननकी थाति।' विन० ५०८

थाती—स्त्री० अमानत, धरोहर, रक्षित धन या अन्य वस्तु (रामा० २०९), 'ये मम देस विलायत है गज ये मम मन्दिर ये मम थाती।' सुन्द० २४

थान—पु० स्थान 'जन्मथान जिय जानि कै ताते सुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पावत ।' सूबे० २७७ । रहनेकी जगह । पशुओंके बाँधे जानेकी जगह 'बड़ो डील लखि पीलको सबन तज्यो बन थान ।' भू० ६२

थाना—पु० केन्द्र, निवासस्थान 'रघुकुल राघव कृष्ण सदा हीं गोकुल कीन्हो थानो ।' सूबि० ११

थानैत—पु० ग्रामदेवता । अधिपति ।

थाप—स्त्री० थपकी, थप्पड़, आघात 'लागत थाप मृदंग मुख शब्द रहत भरिपूरि ।' के० १८८ । दानका चिह्न, छाप । धाक, प्रतिष्ठा ।

थापन—पु० स्थापित करनेका कार्य (साखी ५) । स्थापित करनेवाला, जमानेवाला (विन० ४२२), 'रघुकुलतिलक सदा तुम्ह उथपन थापन ।' जा० मं०

थापना—सक्रि० स्थापित करना, प्रतिष्ठित करना 'असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज स्रुतिसेतु ।' रामा० ७१, (उदे० 'अवडेरना') । स्त्री० स्थापना, प्रतिष्ठा ।

थापर—स्त्री० थप्पड़, तमाचा 'हनुमन्त बली तेहि थापर मारी ।' राम० ३१८

थापा—पु० छापा । पंजेकी छाप 'थापे देत बरनके द्वारे गावति मंगल भारि सुहाई ।' सूबे० ११८ । राशि, पुंज ।

थापी—स्त्री० गच या कच्चा घड़ा पीटनेका औज़ार ।

थामना—सक्रि० सँभालना, सहारा देना, भार लेना, ग्रहण करना । रोकना ।

थायी—वि० देखो 'थाई' । [

थार, थारा—पु० बड़ी थाली 'गजमोतिनयुत शोभिजैं मरकत मणिके थार ।' के० १०९ ।'...थारापर पारा पारावार यों हलत है'—भू० १५०

थाल—पु० पीतल इ० का गोल छिछला बरतन जिसमें खाने इ० के लिए भोजन या अन्य वस्तु रखते हैं ।

थाला—पु० पौधा लगानेका घेरा या गड्ढा ।

थावर—वि० स्थावर, जड़ (सू० ९२, उदे० 'छिरकना') ।

थाह—स्त्री० तालाब इत्यादिकी तली, गहराईकी सीमा । सीमा, पार । परिमाण इत्यादिका अन्दाज़, टोह 'जिमि पिपीलिका सागर थाहा । महा मन्दमति पावन चाहा ।' रामा० ३५८, (उदे० 'अवगाह')

थाहना—सक्रि० थाह लेना, पता लगाना 'मन उलटा दरिया मिला लागा मलि मलि न्हान । थाहत थाह न आवई सो पूरा रहमान ।' साखी ३८

थाहरा—वि० उथला, छिछला ।

थिगली—स्त्री० पैबंद ।

थित—वि० स्थापित, स्थित, ठहरा हुआ ।

थिति—स्त्री० स्थिति, ठहराव, ठहरनेकी जगह । दशा, स्थिरता, शांति । 'लोक वेद हूँ, विदित बात सुनि समुझि, मोह-मोहित विकल मति थिति न लहति ।' विन० ५५८ । कायम रहनेका भाव 'जाते जगको होत है उत्पति थिति अरु नाश ।' के० ८८

थिर—वि० स्थिर, शांत (उदे० 'उचाट'), जो चंचल न हो 'कमला थिर न रहीम कहि यह जानत सब कोय ।' रहीम १४ । दृढ़, स्थायी ।

थिरकना—अक्रि० ठमक ठमक कर नाचना, आगे पीछे डोलना '...पाँखुरी पदुमपै भँवर थिरकत हैं'—आलम, 'बेसर थिरकि रही अधरनपै मोती थिरकत जात ।' राय ईश्वरीप्रताप नारायण

थिरकौंहा—वि० थिरकनेवाला । स्थिर ।

थिरजीह—पु० मछली ।

थिरता, थिरताई—स्त्री० स्थिरता, स्थायित्व । शान्ति ।

थिरथानी—पु० स्थिर स्थानवाला ।

थिरना—अक्रि० स्थिर होना, ठहरना 'दोउनको रूप गुन दोऊ बरनत फिरै घर न थिरात रीति नेहकी नई नई ।' देव । तलमें या नीचे बैठ जाना ।

थिरा—स्त्री० अचला, पृथिवी ।

थिराना—अक्रि० स्थिर होना (उदे० 'चिराना') ।

थीता—पु०, **थीती**—स्त्री० स्थिरता, धैर्य, शान्ति, चैन । 'टेकु पियास, बाँधु मन थीती ।' प० १६६

थीर—वि० 'थिर', स्थिर 'निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा ।' रामा० ५८६

थुकाना—सक्रि० थूकनेको प्रेरित करना, उगलवाना, बदनाम कराना ।

थुनी—स्त्री० देखो, 'थूनी' ।

थुरना—सक्रि० देखो 'थूरना' ।

थुरहथा—वि० जिसके हाथमें थोड़ी ही वस्तु आ सके 'कन देवो सोंप्यो ससुर बहू थुरहथी जानि ।' वि० १२४

थूकना—अक्रि० थूक बाहर निकालना । सक्रि० उगलना, निन्दा करना ।

थूथन, थूथरा—पु० घोड़े इ० के सदृश लम्बा मुँह ।

थून, थूनी—स्त्री० खंभा, चाँड़ (उदे० 'थाँम') ।

थूरना—पु० पीटना, कुचलना, चूर्ण करना 'थूरि मंद, कंटकको दूरि करि यातें भूरि इंद्रिय-कुसन खलि बाहिर निसारे हैं ।' दीन० ५ । ठूँस ठूँस कर भरना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थूल, थूला—वि० स्थूल, मोटा (उद० 'काट')।
थूली—स्त्री० दलिया, सूजी।
थूहड़, थूहर—पु० एक काँटेदार पेड़, सेंहुड़।
थूहा—पु० टीला।
थेंथर—वि० हैरान, थका हुआ।
थेईथेई—स्त्री० नाचनेका एक ढंग और ताल।
थैला—पु० बड़ी थैली।
थैली—स्त्री० कपड़े इत्यादिको सीकर बनाया हुआ पात्र, बटुआ। वह थैली जिसमें रुपये भरे हों 'तुरत देव मैं थैली खोली।' रामा० १४९
थोक—पु० इकट्ठी वस्तु, राशि, समूह, 'कहुँ ललित अगर गुलाब पाटल पटल बेला थोक हैं।' भू० ८
थोड़ा, थोरा—वि० न्यून, अल्प, छोटा 'कछु बात बड़ी न कहै मुख थोरे।' के० ३२९
थोथरा—वि० सारहीन, खोखला, बेकाम 'जप तप दीखे थोथरा तीरथ व्रत विस्वास। सूआ सेंमल सेइकै फिर उड़ि चला निरास।' साखी १८१
थोथा—वि० कुंठित, निःसार, बेकाम (साखी ७२)।
थोपना—सक्रि० थापना, छोपना, मत्थे मढ़ना।
थोवड़ा—पु० थूथन।
थोरिक—वि० जरासा, तनिकसा।
थौंद—स्त्री० तोंद 'किहूँ दै कटारीन सौं थौंदि फारी।' सुजा० २३
थ्यावस—पु० स्थिरता, दृढ़ता, धैर्य।

द

दंग—वि० स्तब्ध, चकित। पु० शंका, डर।
दंगल—पु० कुश्ती। समूह, दल। मोटा गद्दा।
दंगा—पु० झगड़ा, उपद्रव। हुल्लड़।
दंड—पु० सजा, शासन, डंडा (उदे० 'कंथा'), डाँड़ी, घड़ी।
दंडधर—पु० शासक। संन्यासी। यमराज।
दंडना—सक्रि० दंड देना, सज़ा देना।
दंडनायक—पु० सेनापति, हाकिम।
दंडवत्—पु० प्रणाम।
दंडायमान—वि० सीधा खड़ा।
दंतकथा—स्त्री० जनश्रुति।
दंतच्छद—पु० ओंठ।
दंतछत,-छद—पु० दाँतोंसे काटनेका घाव 'कहा छपावति चतुरतिय कंत दंतछद जानि।' मति० १८९(दे० ललित० ५०, 'रदछद')
दंतबीज—पु० अनार।
दंतायुध—पु० सूअर।
दंतार, दंतारा—वि० बड़े दाँतोंवाला। पु० हाथी (उदे० 'कजरारा')।
दंताल, दंतावल—पु० हाथी।
दंति, दंती—पु० हाथी।
दँतियाँ—स्त्री० दँतुरियाँ, बच्चोंके छोटे छोटे दाँत 'चलैं किलकारैं चूड़ चूड़ परैं लोल लारैं लोग हू निहारैं भई दूइ दूइ दँतियाँ।' दीन० १३५
दँतुरियाँ—स्त्री० छोटे छोटे दाँत (सू० ५५, रघु० ५३)।
दँतुला—वि० जिसके दाँत निकले हों।
दंद—पु० उपद्रव, हुल्लड़। गरमी। युद्ध (विद्या० ८)। जुल्म (विद्या० १३८)
दंदन—पु० दमन करनेवाला 'हे चन्दन, दुख-दन्दन सबकी जरन जुड़ावहु।' नन्द०
दंदारू—पु० फफोला।
दंपा—स्त्री० विद्युत्, बिजली।
दंभ, दंभान—पु० पाखंड, अहंकार 'हौं जु कहत ले चलो जानकी छाँड़ि सबै दंभान।' सूरा० ६४
दंभोलि—पु० वज्र।
दँवरी—स्त्री० देखो 'दाँयँ'।
दँवारि—स्त्री० दवाग्नि 'ग्रीषम रितुमें देखि कै वनमें लगी दँवारि।' मति० १९६
दंश—पु० दाँत। दाँतसे काटनेका घाव। दाँतसे काटनेकी क्रिया। द्वेष। आक्षेप, व्यंग्य। बिच्छू इत्यादिका डंक। मच्छड़, डाँस 'कछु राति गये करि दंश दशासी। पुर माँझ चले वनराजि-विलासी।' राम० ३१७
दंशना—सक्रि० दाँतसे काटना (के० १३५)।
दंष्ट्रा—पु० बड़ा दाँत, दाढ़।
दंस—पु० देखो 'दंश'।
दइत—पु० दैत्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दई—पु० दैव, विधाता। प्रारब्ध। दईमारा = हतभाग्य।
दक्खिन—पु० दक्षिण दिशा। क्रिवि० दक्षिणकी ओर।
दक्ष—वि० चतुर, कुशल। दाहिना 'रामचन्द्र प्रदक्षिणा करि दक्ष ह्वै जबहीं चढ़े।' राम० ४८९
दक्षिण, दखिन—पु० दक्षिण दिशा। वि० दाहिना, अनुकूल। दक्ष।
दक्षिणा—स्त्री० देखो 'दच्छिना'।
दख़ल—पु० कब्ज़ा, अधिकार।
दगदगाना—अक्रि० धकधक करना, चमकना। सक्रि० चमक पैदा करना।
दगध्यना—सक्रि० जलाना, पीड़ा देना। दगना (?) 'छापा तिलक बनाइ करि दगध्या लोक अनेक।' कबीर ४६। अक्रि० जलना 'सुलुगि सुलुगि दगधै होइ छारा।' प० १६८। पीड़ित होना।
दगना—अक्रि० दग्ध होना। दागा जाना, चिह्नयुक्त होना। तोप इत्यादिका छूटना। प्रसिद्ध होना। सक्रि० दग्ध करना, दागना।
दगरा—पु० विलम्ब। मार्ग, रास्ता।
दगल, दगला—पु०, **दगली**—स्त्री० लम्बा भारी पहनावा, लबादा 'पहिरहु राजा दगल सुहावा।' प० १३१
दगवाना—सक्रि० जलवाना, तोप इत्यादि छुड़वाना।
दगहा—वि० दागदार, जो दागा हुआ हो। मृतक-संस्कार करनेवाला।
दगा—स्त्री० धोखा, छल 'इन पलकन ही दगा दई'—सू० १८९
दगादार—वि० धोखा देनेवाला, छलिया 'करयो बार बार दगादार तें पुकार मैं तो छाँडि संग अधम-उधार नाम गायो है।' दीन० १२८
दगाबाज़—वि० धोखेबाज़, छली।
दगैल—वि० दगाबाज़ (छत्र० ६४)। दागी।
दग्ध—वि० जला हुआ, संतप्त।
दग्धाक्षर—पु० झ, ह, र, भ, प—ये पाँच वर्ण जो छन्दारंभमें निषिद्ध हैं।
दचक—स्त्री० दबाव, धक्का (उदे० 'दचकना')।
दचकना—अक्रि० दबना, धक्का खाना, हिल उठना, 'उचकि चलत कपि दचकनि दचकत मंच ऐसे मचकत भूतलके धक धक।' राम० ३७०। सक्रि० दबाना, धक्का लगाना।
दचना—अक्रि० गिरना।
दच्छ—वि० कुशल। दाहिना (विन० १९१)। पु० दक्ष प्रजापति।
दच्छकुमारी,-सुता—स्त्री० सती।
दच्छना, दच्छिना—स्त्री० दक्षिणा पूजन इत्यादिके पीछे ब्राह्मणोंको दिया गया द्रव्य। भेंट।
दच्छिन—वि० उत्तरके विपरीत। दाहिना। दक्ष। अनुकूल 'दच्छिन पिय ह्वै बाम बस बिसराई तिय आन।' वि० १०८
दढ़ना—अक्रि० जलना 'भई देह जों खेह करमबस ज्यों तट गंगा अनल दढ़ी।' सू० ३१
दढ़ियल—वि० जिसके दाढ़ी हो।
दतवन—स्त्री० देखो 'दातौन'।
दतारा—वि० दाँतवाला, बड़े दाँतवाला 'छूट्यो बैरीसाल दतारौ' (हाथी)—छत्र० १४१
दतुअन, दतुवन, दतून, दतौन—स्त्री० देखो 'दातौन'।
दत्त—वि० दिया हुआ। पु० दान 'दत्त न रहै, सत्त होइ दूगी।' प० १८८। दत्तक।
दत्तक—पु० गोद लिया हुआ पुत्र।
दत्तचित्त—वि० जिसने कार्यमें मन लगाया हो, कार्यलीन।
ददा—पु० दादा, पितामह, पिता, बड़ा भाई।
ददियाल,-हाल—पु० दादाका घर।
ददोड़ा, ददोरा—पु० कीटादिकोंके काटनेसे सूजा हुआ स्थान, चकत्ता।
दद्दु, दद्रू—पु० दादका रोग।
दध, दधि—पु० दही। समुद्र।
दधसार—पु० मक्खन।
दधिकाँदो—पु० एक उत्सव जिसमें लोग हलदीमिश्रित दही एक दूसरेपर फेंकते हैं।
दधिजात—पु० चन्द्रमा। मक्खन।
दधिसार—पु० मक्खन।
दधिसुत—पु० चन्द्रमा, मोती, कमल, विष, जालंधर नामका राक्षस, मक्खन 'गिरि गिरि परत बदनके ऊपर, ह्वै दधिसुतके बिन्दु।' सू० ६५
दधिसुता—स्त्री० सीप।
दनादन—क्रिवि० 'दनदन' शब्दके साथ।
दनुज—पु० राक्षस, असुर।
दपटना—सक्रि० डाँटना।
दपु—पु० दर्प, घमण्ड, गर्व।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दफन—पु० मुर्दा ज़मीनमें गाड़ना।
दफनाना—पु० मुर्देका दफन करना।
दबंग—वि० रोबीला, प्रभाववाला।
दबकना—सक्रि० डपटना, डाँटना 'दबकि दबोरे एक, बारिधिमें बोरे एक, मगन महीमें एक गगन उड़ात हैं।' कवित्त० १९६। अक्रि० दब कर रह जाना। भयसे [छिप जाना।
दबदबा—पु० रोबदाब।
दबना—अक्रि० भार या दाबके नीचे पड़ना, लाचार होना, अधिक न बढ़ सकना, धीमा पड़ना।
दबाना—सक्रि० भार या दाबके नीचे लाना, लाचार करना, दमन करना, दफन करना।
दबाव—पु० दबानेकी क्रिया या भाव।
दबीज—वि० मोटे दलका।
दबैल—वि० दबनेवाला।
दबोरना—सक्रि० दबाना (उदे० 'दबकना')।
दमंकना—अक्रि० चमकना (उदे० 'चमंकना')।
दम—पु० साँस, दंड। इंद्रिय-दमन। पल। ज्ञान। धोखा।
दमक—स्त्री० चमक, कान्ति (रस० ३१)। पु० दमन [करनेवाला।
दमकना—अक्रि० चमकना।
दमड़ी—स्त्री० देखो 'दमरी'।
दमन, दमना—स्त्री० द्रोण पुष्पकी लता 'दमन लता सम तनु सुकुमार।' विद्या० १२३, 'दमना माँझ उगल जनि चंद्रा।' विद्या० २७
दमन—पु० दबानेकी क्रिया।
दमना—सक्रि० दमन करना, दबाना, दूर करना 'जिय माँझ अहंपद जो दमिये।' के० ७०
दमनी—स्त्री० शर्म, संकोच।
दमरी—स्त्री० छदामका आधा, पैसेका आठवाँ हिस्सा। 'सहसनको हय बाँधियत लै दमरीकी मेख।' रहीम
दमाद—पु० जामाता।
दमादम—क्रिवि० लगातार।
दमानक—स्त्री० तोपोंकी बाढ़ (उदे० 'कमनैत')।
दमामा—पु० नगाड़ा (सुन्द० १५)।
दमारि—पु० दावानल।
दमावति—स्त्री० दमयन्ती 'भा बिछोह जस नलहिं दमावति।' प० ९३
दमैया—वि० दमन करनेवाला।
दमोदर—पु० दामोदर, श्रीकृष्ण।
दया—स्त्री० करुणा, कृपा।
दयानत—स्त्री० ईमान।
दयाना—अक्रि० दया करना, कृपालु होना।
दयार, दयाल, दयालु—वि० दयावान् (साखी १७४)।
दयावना—वि० जिसपर दूसरोंको दया आवे, दयनीय, दयापात्र।
दयित—वि० प्रिय। पु० पति।
दयिता—स्त्री० प्रेयसी, पत्नी।
दर—पु० दल, सेना 'साजा राजा बाजन बाजे। मदन सहाय दुवौ दर गाजे।' प० १३१। पक्ष। द्वार, (प० २०), 'ये रहीम दर दर फिरैं माँगि मधुकरी खाहिं।' रहीम। गुफा, गड्ढा। शंख 'कुन्द-इंदु-दर-गौर सरीरा।' रामा० ६४। डर 'दीनबन्धु, दीनता-दरिद्र-दाह-दोष-दुख-दारुन-दुसह-दर-दरप-हरन।' विन० ५९३। स्त्री० भाव। मूल्य, क़दर। महत्त्व। ऊख।
दरकना—अक्रि० विदीर्ण होना, फटना 'जलचर जरे औ सेवार जरि छार भयो जल जरि गयो पंक सूख्यो भूमि दरकी।' गंगकवि, (सूबे० १०७)। फूटना (अ० ३५)।
दरका—पु० दरार। ऐसी चोट जिससे शरीर इत्यादि फट जाय।
दरकाना—सक्रि० विदीर्ण करना। अक्रि० विदीर्ण होना (उदे० 'धनक')।
दरकार—वि० आवश्यक।
दरकिनार—क्रिवि० दूर, पृथक्।
दरकूच—क्रिवि० लगातार चलते हुए।
दरखत—पु० दरख्त, पेड़।
दरखास्त—स्त्री० प्रार्थनापत्र, प्रार्थना।
दरगह, दरगाह—स्त्री० मकबरा। देहरी। दरबार 'घणीं सहैगा सासना जमकी दरगह माहिं।' कबीर २९, (उदे० 'खरभरी')
दरज—स्त्री० दरार, छिद्र 'होत करेजनिकी दरजैं दरजी-की बहू बरजी नहिं मानै।' रवि० २१
दरजी—पु० देखो 'दर्जी'।
दरद—पु० दर्द, पीड़ा। दया, तर्स।
दरदर—क्रिवि० द्वार द्वार।
दरदरा—वि० मोटा पीसा हुआ। जिसमें मोटे रवे हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दरदवंत—वि० पीड़ित, दुःखित । दयालु ।
दरदवंद—वि० जिसके पीड़ा हो, दुःखित ।
दरद—पु० देखो 'दरद' ।
दरन—वि० दलनेवाला, नाश करनेवाला 'विप्रतिय, नृग, वधिकके दुख-दोष-दारुन-दरन ।' विन० ५०१
दरना—सक्रि० दलना, कुचलना, नष्ट करना 'मुरली लकुटव रे चन्द्रिका मुकुटवारे, दुरित हमारे दरौ राधिका-रमन जू ।' हरि० । पीसना 'दशकंधर सुनि दरत अधर रद बोल्यो बैन रिसाय ।' रघु० २३५, 'सुनि दससिर दंतनि दरत किंकर असी हजार ।' रघु० २२३,
दरप—पु० दर्प, घमण्ड, गर्व । उद्दण्डता ।
दरपक—पु० घमण्डी मनुष्य । कामदेव ।
दरपन—पु० दर्पण, आईना, शीशा (उदे० 'अजूबा') ।
दरपना—अक्रि० गर्व करना, क्रोध करना ।
दरपेश—क्रिवि० सामने, आगे ।
दरब—पु० द्रव्य, धन 'कीन्हेसि दरब गरब जेहि होई ।' प० २ । किनारदार मोटी चादर ।
दरबा—पु० कबूतरों इ० के लिए खानेदार सन्दूक ।
दरबान—पु० द्वारपाल ।
दरबार—पु० राजसभा, कचहरी । द्वार(उदे० 'गोपुर') ।
दरभ—पु० दर्भ, कुश, डाभ । कुश-निर्मित आसन । कीश,
दरमाहा—पु० तनख्वाह । [बन्दर ।
दरमियान—पु० मध्य । क्रिवि० मध्यमें ।
दररना—सक्रि० धक्का देना, रगड़ना । दलित करना, नष्ट करना ।
दरराना—अक्रि० निर्विघ्न रूपसे चला आना, वेगसे आ पहुँचना 'घटा घन घोर घहरात अररात दरात सरात ब्रज लोग डरपे ।' सूबें० १२१
दरवेश—पु० फकीर ।
दरशन—पु० साक्षात्कार, मिलन, भेंट । तत्वज्ञानका बोध करानेवाली विद्या । धर्म । नयन । बुद्धि । स्वप्न ।
दरशाना—सक्रि० दे० 'दरसाना' । अक्रि० दे० 'दरसना' ।
दरस—पु० भेंट, मिलन (उदे० 'आदरस') । सुन्दरता ।
दरसन—पु० देखो 'दरशन' ।
दरसना—सक्रि० देखना (राम० ८२) । अक्रि० देख पड़ना, नज़र आना (उदे० 'तर्कसी') ।
दरसनी—स्त्री० दर्पण ।
दरसनीय—वि० दर्शनीय, देखने योग्य ।
दरसाना, दरसावना—सक्रि० दिखलाना । बतलाना, समझाना । अक्रि० देख पड़ना, नज़र आना 'जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अन्धेको सब कछु दरसाई ।' सू० १
दराज—स्त्री० दरार । वि० दीर्घ, बड़ा, विशाल 'सखिन समाज देख्यो विभव दराज आज.....' रघु० १०६ (उदे० 'गाजना') । क्रिवि० बहुत ।
दरार—स्त्री० फटने या सूखनेसे लकीरकी तरह पड़ी खाली जगह 'दुर्जन कुम्भ कुम्हारका एकै धक्का दरार ।' [साखी ४९
दरारना—अक्रि० विदीर्ण होना ।
दरारा—पु० देखो 'दरेरा', धक्का ।
दरिंदा—पु० हिंस्र जन्तु ।
दरिद, दरिद्र—पु० निर्धन मनुष्य । निर्धनता, गरीबी 'हरि बिन कौन दरिद्र हरै ।' सू० (ककौ० १८०), 'दै दै दान दरिद्र बिदारे ।' छत्र० १४ वि० निर्धन
दरिया, दरियाउ,-याव—पु० नदी, समुद्र 'आप दरियाव पास नदियों के जाना नहीं दरियाव पास नदी होवेगी सो धावेगी ।' रघुनाथ, (उदे० 'कहर'), 'मोहू पर कीजै मया, कान्ह दया दरियाउ ।' मति० २२६
दरियाई—वि० समुद्री, नदी सम्बन्धी ।
दरियाफ्त—वि० ज्ञात ।
दरी—स्त्री० गुफा (उदे० 'आशीविष') । शतरंजी ।
दरीखाना—पु० बहुतसे द्वारोंवाला घर ।
दरीची—स्त्री० खिड़की ।
दरीबा—पु० पानका बाजार, बाज़ार ।
दरेग—पु० त्रुटि, कमी ।
दरेरना—सक्रि० धक्का देना, रगड़ना ।
दरेरा—पु० रगड़, चोट, धक्का, धावा 'साँझहू सबेरे ये अनेरे मदनादि मूढ़ देत हैं दरेरे मोहि खेरे घालिकै कई ।' दोन० १२८, (विन० ३५०), 'रात कटक पर दिये दरेरे ।' छत्र० १३९
दरैया—पु० दलनेवाला, नष्ट करनेवाला ।
दरोग़—वि० मिथ्या, झूठ ।
दर्जन—पु० बारह वस्तुओंका समूह ।
दर्जा—पु० श्रेणी, पद, खंड ।
दर्जी—पु० कपड़ा सीनेवाला ।
दर्द, दर्प, दर्पण—दे०, 'दरद,' 'दरप', 'दरपन' ।
दर्दुर—पु० मेंढक ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दब—पु० द्रव्य।
दर्बान, दर्बार—दे० 'दरबान', 'दरबार'।
दर्भ—पु० देखो 'दरभ'।
दर्रा—पु० पहाड़ी मार्ग। मोटो दरार। कँकरीली मिट्टी। मोटा आटा।
दर्राना—दे० 'दररानाना'।
दर्वी—स्त्री० चमचा, करछुल। फणा, फन।
दर्शक—पु० देखने या निगरानी करनेवाला। बतलानेवाला।
दर्शन—पु० भेंट, अवलोकन, तत्वज्ञान सम्बन्धी शास्त्र।
दर्शाना—सक्रि० दिखलाना।
दल—पु० सेना। पक्ष। समूह, मण्डली। चने आदिके दो सम भागोंमेंसे एक। पत्ता, पँखुड़ी। धन। स्थान, कोष। मोटाई।
दलक—स्त्री० गुदड़ी। टीस, चमक। धमक, कम्प।
दलकना—अक्रि० चौंक उठना, काँपना 'दलकि उठेउ सुनि बचन कठोरू।' रामा० २१२। विदीर्ण होना, 'तुलसी कुलिसहुकी कठोरता तेहि दिन दलकि दली।' गीता० ३३'१। सक्रि० भयभीत करना, दहला देना।
दलदल—पु०, स्त्री० कीचड़, फसफसी जमीन।
दलदला—वि० दलदलवाला।
दलदार—वि० मोटे दलका।
दलन—पु० विनाश, दमन। नाश करनेवाला (उदे० 'अरमक')।
दलना—सक्रि० कुचलना, पीस डालना, कूटना 'करनाट हबस फिरङ्गहू बिलायत बलख रूम अरितिय छतियाँ दलति हैं।' भू० ४७। टुकड़े टुकड़े करना, जीतना, नष्ट करना (उदे० 'अमान')।
दलबल—पु० सेना इ०।
दलबादल—पु० बड़ी सेना। बादलोंका समूह।
दलमलना—सक्रि० कुचलना, मसलना, नष्ट करना। 'रनमत्त रावन सकल सुभट प्रचण्ड भुजबल दलमले।' [रामा० ५१०
दलवाल—पु० सेनानायक।
दलवैया—पु० दलनेवाला, जीतनेवाला, कुचलनेवाला।
दलहन—पु० चना. इ० दालके अन्न।
दलाल—पु० जो सौदा खरीदने या बेचनेमें मदद करे, मध्यस्थ।
दलाली—स्त्री० दलालको मिलनेवाला द्रव्य।
दली—वि० दलवाला, पत्तोंवाला। पु० वृक्ष 'पीछे तोहि न दली भली कोउ आदर करिहैं।' दीन ९८
दलील—स्त्री० बहस, तर्क, युक्ति।
दव—पु० जंगल। जंगलकी आग, दावा। आग 'सकल गिरिन दव लाइये, रवि बिनु राति न जाय।' रामा० ५७९
दवन—पु० दमन, विनाश। नाश करनेवाला 'रघुपति बिपति-दवन।' विन० ४८९। एक पौधा।
दवना—सक्रि० जलाना। पु० एक पौधा।
दवा—स्त्री० जंगलकी आग। अग्नि 'बिरह-दवा को जरत सिरावा।' प० ९३, (१०७)। ओषधि, उपचार।
दवागि, दवागिन, दवाग्नि—स्त्री० दावानल, जंगल-की आग।
दवात—स्त्री० मस्याधार, मसिपात्र। [
दवान—पु० शस्त्र विशेष (?) 'गज्जे सुभट्ट लै लै दवान।' सुजा० १८, 'तोप बान अरु रहकला, चौकस करौ दवान।' सुजा० ७
दवामी—वि० स्थायी।
दवार, दवारि—स्त्री० दावानल (उदे० 'भराम')।
दश, दस—वि० आठ और दो। पु० दसकी संख्या।
दशकंठजहा—पु० दशकण्ठको मारनेवाले, श्रीराम।
दशकंधर, दशमौलि, दशशीश—पु० रावण।
दशन—पु० दाँत।
दशबल,-भूमिग,-भूमीश—पु० बुद्धदेव।
दशा—स्त्री० अवस्था। किसी ग्रहका भोग्य समय। चित्त। दीयेकी बत्ती (उदे० 'उनारना', राम० ३४४)।
दशास्य—पु० रावण।
दसगात—पु० शरीरके दस अवयव। मृतक-कर्म-विशेष।
दसन—पु० दाँत, कवच (उदे० 'बरही')।
दसना—अक्रि० फैलाया जाना, फैलना। सक्रि० डसाना, बिछाना। साँप आदिका काटना। पु० बिछौना।
दसमाथ, दसमौलि—पु० रावण।
दसा—स्त्री० देखो 'दशा'।
दसाना—सक्रि० बिछाना '...योग कथा ओढ़ैं कि दसावैं'—भ्र० ७४
दसी—स्त्री० कपड़ेका छोर, कपड़ेके किनारेका सूत। चिह्न, पता।
दसौंधी—पु० चारणोंकी एक जाति, भाट।
दस्तंदाजी—स्त्री० हस्तक्षेप।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दस्त—पु० हाथ। पतला मल।
दस्तक—स्त्री० देना वसूल करनेका आज्ञापत्र। महसूल, राजस्व 'सूरदासको यह मुहासबा दस्तक कीजे माफ।' सूवि० ४७। खटखटानेका काम।
दस्तकारी—स्त्री० हाथकी कारीगरी।
दस्तखत—पु० हस्ताक्षर।
दस्तगीर—पु० सहायक, आश्रयदाता।
दस्ता—पु० बेंट, मूठ। चपरास, दल, गुच्छा, चौबीस
दस्ताना—पु० हाथका मोजा। [कागज।
दस्तावर—वि० दस्त लानेवाला।
दस्तावेज़—स्त्री० तमस्सुक इ०। प्रतिज्ञापत्र।
दस्ती—वि० हाथका। स्त्री० छोटा बेंट, मशाल।
दस्तूर—पु० प्रथा, रस्म, विधि, नेग।
दस्यु—पु० तस्कर, डाकू, असुर।
दह—पु० नदीके भीतरका गहरा स्थान, कुण्ड 'कंज सकोच गढ़े रहे कीचमें मीनन बोरि दियो दह नीरन।' दास, 'आजु कहा ब्रज शोर मचायो तब जान्यो दह गिर्‌यो कन्हाई।' सूवे ९०। लपट, ज्वाला। वि० दग्ध (कबीर १४०)।
दहकना—अक्रि० तपना, गरम होना, जलना, धधकना।
दहकाना—सक्रि० जलाना, प्रज्वलित या उत्तेजित करना।
दहन—पु० जलने या जलानेकी क्रिया, जलानेवाला, अग्नि।
दहना—सक्रि० जलाना, 'ते बेली कैसे दहियतु है जे अपने रसभेय।' सू० पीड़ित करना, चिढ़ाना, उत्तेजित करना (उदे० 'घरहाई')। अक्रि० भस्म होना, जलना, संतप्त होना 'एहि दुख दाह दहइ नित छाती।' रामा० ३००। वि० दाहिना, बायाँका उलटा।
दहपट—वि० कुचला हुआ, चौपट किया हुआ, विध्वस्त 'सूरदास प्रभु रघुपति आये दहपट होइ लंका'—सूरा० ५४
दहपटना—सक्रि० कुचलना, ध्वस्त करना।
दहर—पु० देखो 'दह'। भाई। छोटा चूहा। छछूँदर। नरक। बालक। वि० छोटा, दुर्बोध।
दहरना, दहलना—अक्रि० एकाएक डर जाना, कलेजा धकसे हो जाना (सुबे० ४६)। सक्रि० डराना, भयसे कँपाना।
दहला—पु० आलबाल, थाला। दस बुन्दियोंवाला पत्ता।
दहलाना—सक्रि० डरवा देना, कँपा देना।
दहलीज—स्त्री० देहरी।
दहशत—स्त्री० डर। खौफ।
दहाड़—स्त्री० रोनेकी आवाज़। हिंसक जन्तुका शब्द।
दहाड़ना, दहारना—अक्रि० गरजना। ज़ोर ज़ोरसे रोना। ज़ोरसे चिल्लाना 'सोइ रखो कहा गाफिल ह्वै करि तो सिर ऊपर काल दहारै।' सुन्द० २६
दहिना—वि० बायाँका उलटा, अनुकूल।
दहिने—क्रिवि० दाहिनी तरफ।
दही—पु० जामन डालकर जमाया हुआ दूध, दधि।
दहुँ—अ० शायद, 'मकु'। अथवा, या।
दहेंड़ी—स्त्री० दही रखनेकी मटकी 'अहिरिनि हा दहेंड़ि सगुन लेइ आवउ हो।' रामलला नहछू
दहेज—पु० दायजा, यौतुक।
दहेला—वि० जला हुआ, पीड़ित, संतप्त 'कहाँ गये मनमोहन तजि कै काहे विरह दहेली है।' सूबे० २१६। भीगा हुआ।
दह्यो—पु० दही 'घर घर गोपी दह्यो बिलोवहिं कर कंकन झनकार।' सू० ७१
दाँ—पु० बार, दफा, मरातिब।
दाँकना—अक्रि० दहाड़ना। भयंकर शब्द करना, गरजना।
दाँग—पु० डंका। छोटी पहाड़ी।
दाँज—स्त्री० तुलना, समता।
दाँडना—सक्रि० दंड देना।
दाँत—पु० दन्त, दशन, रद। —चबाना = दाँत पीसकर क्रोध प्रकट करना। —तोड़ना = हराना, दण्ड देना। —तले उँगली दबाना = आश्चर्य या दुःख प्रकट करना।
दाँतली—स्त्री० काग, डाट।
दाँती—स्त्री० दात्री, हँसिया। दन्त-पंक्ति।
दांपत्य—वि० दम्पती संबंधी। पु० दंपतीका पारस्परिक
दांभिक—वि० घमंडी, पाखंडी। [प्रेम।
दाँयँ—स्त्री० अनाजको बैलों हाथादिसे रौंदवानेका काम, दँवरी 'अरु हाथिनकी दाँयँ कराई। छीछ मह गिलिचर को आई।' रामा० (क्षेपक)
दाँवँ—पु० धाव, मौक़ा, पारी। उपाय, युक्ति, छल। बार, मर्तबा। जीतका पाँसा 'राजा कहँ जो न्याय। पाँसा परै सो दाँवँ।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दाँवना—सक्रि० देखो 'दावँना'।
दाँवरी—स्त्री० रस्सी, जेवरी, डोरी (उदे० 'रंच')।
दाइ—पु० देखो 'दाँवँ'।
दाइज, दाइजा—पु० दहेज (छत्र० १५६)।
दाइँ—वि० स्त्री० दाहिनी। स्त्री० बारी।
दाई—स्त्री० प्रसव करानेवाली स्त्री। दूसरेके बच्चेको दूध पिलानेवाली, धाय।
दाउँ—पु० घात 'यहि अंतर वृषभासुर आयो।... गयो समाइ धेनुपति ह्वैके मनमें दाउँ विचारे।' सूबे० २४३। मौका, बार। युक्ति। जीतका पाँसा 'हैं घर घर सब भरे सुसाहिब, सूझत सबनि आपनो दाउँ।' विन० ३७२
दाउ—स्त्री० दवाग्नि 'दहकि पलास जरै तेहि दाऊ।'
दाऊ—पु० बलराम। बड़ा भाई। [प० १७९
दाक्षिण्य—पु० प्रसन्नता, अनुकूलता, सरलता।
दाख, दाखि—स्त्री० मुनक्का। अंगूर।
दाखिल—वि० प्रविष्ट, पहुँचा हुआ, शरीक।
दाखिला—पु० प्रवेश। प्रवेशका ब्योरा रखनेकी बही।
दाग—पु० दाह-क्रिया, दाह। जलन। जलनेका चिह्न, चिन्ह 'वाम विधि भाल हू न कर्म दाग दागिहै।' विन० २११। धब्बा, कलंक (दीन० २१५)। चिह्न।
दागना—सक्रि० जलाना, तपे लोहे आदिसे देहपर चिह्न बनाना (उदे० 'दाग')। अंकित करना (अ० ४१)। बन्दूक आदि चलाना।
दागी—वि० दागदार, कलुषित। दंडित।
दाघ—पु० तपन, गरमी, जलन 'जगत तपोवनसो कियो दीरघ दाघ निदाघ।' वि० २०२
दाजना, दाझना—अक्रि० जलना (कबीर १२)। डाह करना। सक्रि० जलाना 'ते नर ऐसा सूखसी ज्यों दाड़िम—पु० अनार। [बन दाझ्या रूख।' साखी १५
दाढ़—स्त्री० दहाड़, गर्जन। जबड़ेके भीतरके बड़े दाँत।
दाढ़ना—सक्रि० दग्ध करना, जलाना, संतप्त करना।
दाढ़ा—पु० जंगलकी आग। अग्नि। जलन।
दाढ़िका, दाढ़ी—स्त्री० ठुड्डीपरके बाल, ठुड्डी।
दाढ़ीजार—पु० वह मनुष्य जिसकी दाढ़ी जल गयी हो। स्त्रियोंकी एक गाली 'तुलसी मँदोवे रोइ रोइ कै बिगोवै आयु, बार बार कहो मैं पुकार दाढ़ीजारसों।' कवित्त० १७६

दात—पु० दान। देनेवाला 'दात धनी याचै नहीं सेव करै दिन रात। कहै कबीर ता सेवकहिं काल करै नहिं
दाता, दातार—पु० देनेवाला। [बात।' साखी २१
दाती—स्त्री० देनेवाली (सूबे० १३)।
दातुन, दातून—दे० 'दातौन'।
दातौन, दात्योनि—स्त्री० दंतधावन, दाँत साफ करनेके लिए नीमादिकी गीली लकड़ी। मुखारी। 'दात्योनि करत हैं, मननि हरत हैं, ओर बोरि घनसार।' के० २००
दात्री—स्त्री० देनेवाली। दाँती, हँसिया।
दाद—स्त्री० एक चर्मरोग, दद्रु। देखो 'दादि'।
दादनी—स्त्री० पेशगी दी गयी रकम, देय धन।
दादा—पु० पितामह, पिता, बड़ा भाई, या कोई पूज्य व्यक्ति।
दादि—स्त्री० न्याय 'दीजे दादि देखि नातो बलि, गही मोद-मंगल रितई है।' विन० ३३२, (३५४)। फर्याद (?) 'सुनहु हमारी दादि गुसाईं...' कबीर १९१
दादी—स्त्री० आजी, पितामही। पु० न्याय चाहनेवाला।
दादुर—पु० मेंढक।
दाध—स्त्री० जलन, ताप 'सहि न जाय जोवन कै दाधा।' प० ८०
दाधना—सक्रि० दग्ध करना, जलाना, संतप्त करना 'मैं तो दाधी विरहकी रे काहेकूँ ओषद देय।' मीराबाई, 'प्रेम जो दाधा धनि वह जीऊ।' प० ६८
दान—पु० देनेका कार्य, उत्सर्ग, त्याग। बदलेमें कुछ न लेकर दी गयी वस्तु। कुछ देकर शत्रुपक्षवालोंको अपनी ओर मिलानेकी नीति। गजमद। मधु-विशेष। शुद्धि। महसूल, कर 'ग्वारिनि यह भली नहीं करति। दूध दधि घृत नितहिं बेचति दान देते डरति।' सूबे० १३२, ('उदे० छाप')
दानव—पु० दनुज, राक्षस।
दानवी—वि० दानव संबन्धी। स्त्री० राक्षसी।
दाना—पु० अन्नका बीज, अन्न, चबेना। कोई छोटी गोल वस्तु, गुरिया, मनका। वह अन्न जो घोड़े आदिको प्रतिदिन दिया जाता है। वि० बुद्धिमान्। दानाई = [बुद्धिमानी।
दानापानी—पु० अन्न-जल।
दानी—वि० देनेवाला, दानशील। पु० दान करनेवाला व्यक्ति। महसूल लेनेवाला 'तुम दानी हौ आये हमपर यह हमको नहिं भावत।' सूबे० १३४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दानेदार—वि० रवादार ।
दानो—पु० दानव, असुर 'प्रगट खंभतें दई दिखाई यद्यपि कुलको दानो !' सूवि० ११
दाप—पु० दर्प, घमण्ड । शक्ति, प्रताप, आतंक । उत्साह, ताप, दुःख 'देहु भगति रघुपति अति पावनि । त्रिविध ताप भवदाप-नसावनि ।' रामा० ५५६ । रोष ।
दीपक—पु० दबानेवाला ।
दापना—सक्रि० दबाना, रोकना ।
दाब—स्त्री० दबनेका भाव, चाँप, बोझ । रोब, शासन ।
दाबदार—वि० रोबवाला, प्रतापी ।
दावना—सक्रि० देखो 'दबाना' ।
दाबा—पु० कलमके लिए टहनी जमीनमें गाड़नेका काम ।
दाभ—पु० दर्भ, एक तरहका कुश ।
दाम—पु० मूल्य । रुपया-पैसा, मुद्रा 'सुख निधि मथुरा तजि वृन्दावन दामनिको अकुलात ।' व्यास जी । दमड़ीका तृतीयांश 'बंक बिकारी देत ज्यों दाम रुपैया होत ।' वि० १८१ । कुछ देकर शत्रुको वश करनेकी नीति । समूह । माला (भ्र० ६) । रस्सी 'धूरि मेरु सम जनक जम ताहि व्याल सम दाम ।' रामा० ९७ । फन्दा ।
दामन—पु० अंचल, छोर (रतन० ३२) ।
दामनगीर—वि० पल्ले पड़नेवाला, पीछा न छोड़नेवाला, दावेदार 'बापुरो एदिलसाहि कहाँ कहँ दिल्लीको दामनगीर सिवाजी ।' भू० ८१
दामनी—स्त्री० रस्सी ।
दामरि, दामरी—स्त्री० दाँवरी, रस्सी ।
दामा—स्त्री० दावा, जंगलकी आग ।
दामाद—पु० जामाता ।
दामिनी—स्त्री० बिजली । सिरका एक गहना, बेंदी ।
दायँ—स्त्री० देखो 'दाँयँ' । देखो 'दाँवँ' ।
दाय—पु० देय धन, पैतृक धन । दान, दहेज । दावा-
दायज, दायजा—पु० दहेज । [नल । आग ।
दायभाग—पु० पैतृक सम्पत्तिका बँटवारा ।
दायर—वि० चलता हुआ ।—करना = पेश करना ।
दायरा—पु० मंडल, वृत्त, (गोल) घेरा ।
दायाँ—वि० दाहिना ।
दाया—स्त्री० दया, अनुग्रह । [पुत्र ।
दायाद—पु० पैतृक धनमें हिस्सा पानेवाला, कुटुंबी,
दायित्व—पु० जवाबदेही ।
दायें—क्रिवि० दाहिनी तरफ ।
दार—स्त्री० दारा, स्त्री । लकड़ी । दाल ।
दारक—पु० पुत्र, लड़का । वि० फाड़नेवाला ।
दारचीनी—स्त्री० एक पेड़ ।
दारन—वि० देखो 'दारुण' । 'माधो दारन दुख सह्यो न जाय···' कबीर २१५ । नष्ट करनेवाला ।
दारना—सक्रि० विदीर्ण करना, पीस डालना, नष्ट करना '···दीरघ दुसह दुख दीननको दारिये ।' [के० १२७
दारमदार—पु० कार्यभार ।
दारा—स्त्री० पत्नी ।
दारि—स्त्री० दाल ।
दारिउँ, दारिवँ—पु० दाड़िम, अनार (उदे० 'कोंप') 'किसमिस सेव फरे नव पाता । दारिउँ दाख देखि मन राता ।' प० १४, (४६)
दारिका—स्त्री० लड़की, कन्या ।
दारिद, दारिद्र, दारिद्र्य—पु० दरिद्रता, गरीबी (उदे० 'खरीक') ।
दारिम—पु० दाड़िम, अनार (सू० ८५) ।
दारी—स्त्री० दासी । व्यभिचारिणी स्त्री 'अपनो पति छाँड़ि औरनि सों रति, ज्यों दारनिमें दारी ।' स्वामी हरिदास । बेवाई ।
दारु—पु० लकड़ी, काष्ठ, कारीगर ।
दारुका, दारुजोषित—स्त्री० कठपुतली ।
दारुण, दारुन—वि० विदीर्ण करनेवाला, असह्य, भीषण । पु० शिव । भयानक रस । चित्रक वृक्ष । एक नरकका नाम ।
दारू—पु० शराब । बारूद 'सौ सौ मन वे पीवहिं दारू ।' प० २५० । दवा 'औरै दारू सब करी पै सुभावकी नाहिं । सो दारू सतगुरु करी रहै सबदके माहिं ।' साखी १०३
दारो, दारयो—पु० दारिउँ, अनार (दास ६६) ।
दारोगा—पु० थानेका अफसर ।
दाल—स्त्री० दली हुई उड़द इ० ।
दालना—दे० दलना 'पय पीवत पूतना दाली ।' सूवे० २८५
दालान—पु० ओसारा, बरामदा ।
दालिम—पु० दाड़िम ।
दावँ—पु० देखो 'दाँवँ' ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दावँना—सक्रि० माँड़कर या दैलोंसे रौंदवा कर डंठलसे दाने अलग करना।

दावँरी—स्त्री० देखो 'दावरी'।

दाव—स्त्री० जंगलकी आग। वन। अग्नि। ताप।

दावत—स्त्री० निमंत्रण. भोज।

दावन—पु० दामन, अंगे इत्यादिका निचला हिस्सा (रतन० ६५)। दमन। हँसिया। नाश करनेवाला 'त्रिविध दोष दुख दारिद दावन।' रामा० २६

दावना—सक्रि० दाँयँ करना। दमन करना।

दावनी—स्त्री० माथे परका एक गहना, बेंदी। वि० स्त्री० नष्ट करनेवाली।

दावरी—स्त्री० रस्सी '...सोइ सगुन होइ नन्दकी दावरी बँधावै।' सूवि० ६

दावा—स्त्री० देखो 'दाव'। अधिकार प्रकट करनेकी क्रिया, अधिकार, स्वत्व। अभियोग। दृढ़ता।

दावागीर,-दार—पु० अधिकार प्रकट करनेवाला, 'दुश्मन दावागीर होयँ तिनहूको झारै।' गिरिधरराय

दावात—स्त्री० देखो 'दवात'।

दास—पु० सेवक, भक्त, शूद्र। बिछौना।

दासा—पु० दीवारका पुश्ता। दरवाजेके ऊपरकी लकड़ी या पत्थर।

दासी—स्त्री० सेविका, टहलनी।

दास्तान्—पु० कथा, बयान।

दाह—पु० जलानेका काम, ताप, जलन, डाह, संताप 'उर उपजा अति दारुन दाहा।' रामा० ३६

दाहक—पु० अग्नि, चीता, चित्रक वृक्ष। वि० जलानेवाला (रामा० २२९)।

दाहन—पु० जलाने या जलवानेका कार्य।

दाहना—सक्रि० जलाना, दुःख पहुँचाना, नष्ट करना 'चन्दन तजि अँग भस्म बतावत विरह अनल अति दाहीं।' सू०, 'जब जहँ तुमहिं पुकारत आरत तब तिनके दुख दाहे।' विन० ३५४। वि० बायाँका उलटा, दक्षिण।

दाहा—पु० ताजिया। मुहर्रमके प्रथम दस दिन।

दाहिन, दाहिना—वि० दक्षिण, अनुकूल 'जे बिन काजु दाहिनेहु बायें।' रामा० ६। दाहिनी देना या दाहिनी लाना = प्रदक्षिणा करना।

दाहिने—क्रिवि० दाहिनी तरफ।

दाही—वि० जो दाह कर्म करे। जलानेवाला।

दिंड—पु० एक प्रकारका नृत्य।

दिअरी, दिअली—स्त्री० छोटा दीया।

दिआ—पु० दीया।

दिआना—सक्रि० दिलाना।

दिक्—स्त्री० दिशा।

दिखना—अक्रि० देख पड़ना।

दिखराना, दिखरावना—सक्रि० देखो 'दिखलाना'।

दिखलाना—सक्रि० दिखाना, बताना, मालूम कराना।

दिखहार—पु० देखनेवाला, दर्शक।

दिखाऊ, दिखौआ—वि० जो केवल देखने योग्य हो, ऊपरी, बनावटी।

दिखैया—पु० देखनेवाला। दिखानेवाला।

दिगंत—पु० दिशाका अन्त, क्षितिज। दसों दिशाएँ। पु० आँखका कोना।

दिगदंति, दिग्गज—पु० दिशाओंके हाथी।

दिगपाल, दिग्पाल—पु० दिशाओंके रक्षक।

दिग्ध—वि० दीर्घ, बड़ा, लम्बा (ललित० १३०)। विषाक्त।

दिग्विजय—पु० ख्याति स्थापित करनेको दृष्टिसे चारों दिशाओंके देशोंको जीतनेका कार्य।

दिच्छित, दिछित—वि० जो यत्नमें प्रवृत्त हो, जिसने मंत्र लिया हो 'गज धौं कहाँको दिछित जाके कुमिरत, लै सुनाम बाहन तजि धाये।' विन० ५४६

दिठादिठी—स्त्री० देखादेखी।

दिठाना—अक्रि० नज़र लगना। सक्रि० नज़र लगाना।

दिठौना—दे० 'डिठौना' (रघु० ४३)।

दिढ़—वि० दृढ़, मजबूत, पक्का, प्रगाढ़, निडर, बलिष्ठ।

दिढ़ता, दिढ़ाई—स्त्री० दृढ़ता, मजबूती, साहस, धैर्य।

दिढ़ाना—सक्रि० मजबूत करना, पक्का करना, निश्चित करना।

दिन—पु० दिवस। समय। —धराना = शुभ दिनका निश्चय कराना, मुहूर्त्त दिखवाना। क्रिवि० अनुदिन, प्रतिदिन, हमेशा 'ह्वाँ सुनियत नृपवेश, यहाँ दिन देखियत बेनु लये।' भ्र० १४४

दिनअर—पु० दिनकर, सूर्य 'कीन्हेसि दिन, दिनअर, ससि, राती।' प० १

दिनकंत, दिनकर—पु० सूर्य।

दिनचर्य्या—स्त्री० दिनभरका काम।

दिनदानी—पु० प्रतिदिन दान देनेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिनपति, दिनमणि—पु० सूर्य ।
दिनराइ, दिनराउ, दिनराज—पु० सूर्य ।
दिनाई—स्त्री० प्राणघातक, विषैली वस्तु 'ऊधो, दीनी प्रीति दिनाई ।' भ्र० ८४, (सूवे० ५७)
दिनार—पु० प्राचीन सुवर्णमुद्रा 'बारह बानी चलै दिनारा ।' प० २२५ । सोनेका गहना ।
दिनियर—पु० दिनकर, सूर्य ।
दिनी—वि० प्राचीन, पुराना ।
दिनेर—पु० दिनकर, सूर्य ।
दिनेश, दिनेस—पु० सूर्य ।
दिनौंधी—स्त्री० दिनमें न दिखाई देनेका रोग ।
दिपति—स्त्री० प्रकाश, कान्ति, शोभा ।
दिपना—अक्रि० प्रकाश देना, चमकना, दीप्त होना । 'दीपति देह दुहूनि मिलि दिपति ताफता रंग ।' वि० ३४, 'देह दीप दीपति दिपै, वदन चंदकी ज्योति ।' मति० २१७, 'रवि ससि नखत दिपहि ओहि जोती ।' प० ४६, (२०२ भी)
दिपाना—अक्रि० चमकना 'सहस किरिन जो सुरुज दिपाई ।' प० ४५
दिब—पु० अपनी निर्दोषता दिखानेको दी गयी परीक्षा ।
दिमाकदार—वि० अच्छे मस्तिष्कवाला । घमण्डी ।
दिमाग़—पु० मस्तिष्क ।
दिमाग़चट—वि० बहुत बकवाद करनेवाला ।
दिमाग़दार—वि० देखो 'दिमाकदार' ।
दिमात—पु० वह जिसके दो माताएँ हों । वि० दो माताओंवाला । दो मात्राओंवाला ।
दिमाना—वि० विक्षिप्त, पागल ।
दियट—स्त्री० दीयट, चिराग़दान ।
दियना—पु० दीया, चिराग़ ।
दियरा, दियला—पु० दीया, दीपक । एक पकवान ।
दिया—पु० दीया, दीपक । [† लु० ।
दियाबत्ती—स्त्री० सायंकालमें दीप जलानेका कार्य ।
दियारा—पु० नदीका पानी हट जानेपर निकली हुई भूमि कछार । लुक, मृगतृष्णा 'मुरुछि परै जोई मुख जोहै । जानहु मिरिग दियारहि मोहै ।' प० ८९ । प्रान्त ।
दियासा—पु० मृगतृष्णा 'थके नारि नर प्रेम पियासे । मनहुँ मृगीमृग देखि दियासे ।' रामा० २५४
दिरद—पु० द्विरद, हाथी ।
दिरमानी—पु० चिकित्सक, वैद्य 'जस आमय भेषज न कीन्ह तस दोष कहा दिरमानी ।' वि० २९६
दिरानी—स्त्री० देवरानी (कबीर २०२) ।
दिरिस—पु० दृश्य, देखनेकी वस्तु ।
दिल—पु० हृदय, चित्त, कलेजा, साहस, इच्छा ।
दिलचला—वि० दानी, बहादुर ।
दिलचस्प—वि० मनोहर ।
दिलजमई, दिलजोई—स्त्री० सन्तोष, तसल्ली 'दिलजोईके वचन सुनाये ।' छत्र० ८१
दिलजला—वि० दुखी ।
दिलदार—वि० उदार, प्रिय, प्रेमी । रसिक ।
दिलाना—सक्रि० दूसरेको देनेमें प्रवृत्त करना ।
दिलासा—पु० ढाढ़स, प्रबोध, आश्वासन ।
दिलेर—वि० वीर, साहसी, उत्साही ।
दिल्लगी—स्त्री० मसखरी, हँसी ।
दिवराज—पु० इन्द्र ।
दिवला—पु० दीया 'यहि तनका दिवला करौं बाती मेलौं जीव ।' साखी ४०
दिवस—पु० दिन, वासर ।
दिवस अंध, दिवांध—पु० जिसे दिनमें कुछ न देख पड़े ।
दिवसकर,—नाथ,—मणि—पु० सूर्य ।
दिवा—पु० दीया, चिराग़ । दिन ।
दिवाकर—पु० दिनकर, सूर्य ।
दिवान—पु० दीवान, मंत्री 'गुरुमुख गुरु चितवत रहै जैसे साह दिवान ।' साखी १५ । राजाका छोटा भाई 'अमान मान सों दिवान कुंभकर्ण आइयो ।'—राम० ४५१ । राजसभा 'घटही माहिं चतुरता घटही माहिं दिवान ।' साखी ६ । दरबार (के० १९०), 'केहि दिवान दिन दीनको आदर अनुराग बिसेखि ।' विन० ४४४ । समूह 'चढ़ि व्योम दीह विमान देव दिवान आनि जिहारहीं ।' के० १९
दिवाना—वि० दीवाना, पागल । सक्रि० दिलाना ।
दिवारी, दिवाली—स्त्री० दीपावली 'फागुहि निलज लोग देखिये । जुवा दिवारीको लेखिये ।' के० १४५
दिवालिया—वि० कर्ज़ अदा करनेको जिसके पास कुछ न हो ।
दिव्य—वि० प्रकाशवान्, स्वर्गीय, अलौकिक । पु० देखो 'दिव' ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिशा, दिस—स्त्री० तरफ। दसकी संख्या।
दिशाशूल,-सूल—पु० देखो 'दिसासूल'।
दिष्टि—स्त्री० दृष्टि (उदे० 'अलोप')।
दिसना—अक्रि० दिखना, दिखाई पड़ना।
दिसा—स्त्री० दिशा। दशा। मलत्याग, शौच।
दिसावरी—वि० बाहरसे आया हुआ। बाहरी।
दिसासूल—पु० निर्दिष्ट दिनोंमें किसी विशेष दिशाकी यात्राको निषेध।
दिसि—स्त्री० दिशा। ओर (उदे० 'अवरेखना')।
दिसिप—पु० दिक्पाल।
दिसैया—पु० देखनेवाला। दिखानेवाला।
दिस्टि—पु० दृष्टि, नज़र।
दिहात, दिहाती—दे० देहात, देहाती।
दीअट, दीआ—दे० दीयट, दीया।
दीक्षणा—स्त्री० उपदेश (सुन्द० ८४)।
दीक्षा, दीच्छा—स्त्री० मंत्रोपदेश, यजन, पूजन। गुरुमंत्र।
दीखना—अक्रि० देख पड़ना, दिखाई देना।
दीठ, दीठि—स्त्री० दृष्टि, (उदे० 'उजारा')। देखनेकी शक्ति, ध्यान, कृपादृष्टि, कुदृष्टि, नज़र 'कहूँ दीठि लागी, लगी है काहूकी दीठि।' वि० २६२, (रवि० ५)
दीठना—सक्रि० देखना 'निरखत आइ लच्छिमी दीठी।' [प० २०२
दीदार—पु० दर्शन, भेंट (साखी ९)।
दीदी—स्त्री० बड़ी बहिन या बड़ी ननद।
दीधिति—स्त्री० किरण, रश्मि। अँगुली।
दीन—वि० ग़रीब, दुःखी, उदास, नम्र, हीन दशा-सूचक। पु० मज़हब।
दीनता, दीनताई—स्त्री० दरिद्रता, उदासी, दुःखपूर्ण अवस्था।
दीनदार—वि० धार्मिक।
दीनार—पु० सोनेका एक सिक्का। सोनेका गहना।
दीप—पु० दीया।
दीपक—पु० दीया। एक राग। एक काव्यालंकार। केसर। वि० बढ़ानेवाला, उत्तेजक, प्रकाश करनेवाला।
दीपत, दीपति—स्त्री० चमक, कान्ति (उदे० 'दिपना')। शोभा। कीर्त्ति, प्रताप।
दीपना—अक्रि० चमकना, प्रकाशित होना। सक्रि० प्रकाशित करना।
दीपमालिका, दीपमाली—स्त्री० दीपावली।
दीपशिखा—स्त्री० दीयेकी लौ। दीयेका काजल।
दीपावली—स्त्री० दीवाली।
दीपोत्सव—पु० दीपावली।
दीप्ति—दे० 'दीपति'।
दीप्तिमान्—वि० कान्तियुक्त द्युतिमान्, प्रकाशित।
दीमक—स्त्री० एक तरहकी चींटी जो कागज़ लकड़ी इ० खा जाती है
दीयट—स्त्री० दीया रखनेकी आधार-वस्तु, चिराग़दान।
दीया—पु० चिराग़, दीपक।
दीरघ, दीर्घ—वि० बड़ा, लम्बा।
दीवट—स्त्री० देखो 'दीयट'।
दीवा—पु० दीया, चिराग़ (साखी १७)।
दीवान—पु० मंत्री। राजसभा, दरबार। देखो 'दिवान'।
दीवाना—वि० पागल।
दीवानी—स्त्री० दीवानका कार्य या पद। सम्पत्ति इ० के झगड़ोंका फैसला करनेवाला न्यायालय।
दीवार, दीवाल—स्त्री० भीत, मिट्टी, या ईंट आदिका परदा।
दीवाली—स्त्री० वह उत्सव जो कार्त्तिकी अमावास्याको पड़ता है।
दीसना—अक्रि० देख पड़ना, दिखाई देना 'बीथी विमल, सुगंध, समान। दुहुँ दिशि दीसत दीप अमान।' के० १६१ (उदे० 'अडंबर')
दीह—वि० दीर्घ, बड़ा, लम्बा 'दीह दीह दिग्गजनके केसव मनहुँ कुमार।' राम० १६, (उदे० 'खेदना')
दुंद—पु० जोड़ा। दो आदमियोंकी लड़ाई, युद्ध 'औ किछु दुंद होइ दल गाहीं।' प० २१९। उत्पात, दुंदुभी, नगाड़ा 'दुंद घाव भा इंद्र सकाना।' प० २४४। क्रिवि० ठक ठक 'भरे ते भारी होइ रहे, छूँछे बाजहिं दुंद।' प० २७४
दुंदुभी—स्त्री० नगाड़ा (उदे० 'आनकदुंदुभी')।
दुंदुह—पु० जलमें रहनेवाला साँप।
दुःख—पु० क्लेश, पीड़ा, शोक, विपत्ति।
दुःखद,-दायी,-प्रद—वि० कष्ट देनेवाला।
दुःशील—वि० दुष्ट स्वभाववाला।
दुःसाध्य—वि० जिसका साधन कठिन हो, जो कठिनतासे किया जा सके, जो कठिनाईसे अच्छा हो।
दुआ—स्त्री० आशीर्वाद, प्रार्थना।
दुआदस—वि० द्वादश, बारह। बारहवाँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुआर—पु० द्वार, दरवाजा (उदे० 'उलँघना')।
दुआरी—स्त्री० छोटा द्वार।
दुइ—वि० दो।
दुइज—स्त्री० द्वितीया, पक्षकी दूसरी तिथि। पु० द्वितीयाका चन्द्र (उदे० 'ओता')।
दुकड़हा—वि० छदामका। क्षुद्र, नीच, अधम।
दुकड़ा—पु० पैसेका चतुर्थांश, छदाम। जोड़ा।
दुकना—अक्रि० छिपना, ओटमें बैठना 'जाके डर भाग्यो चाहत है ऊपर दुक्यो सचान।' सूवि० २३
दुकान—स्त्री० माल बेचनेका स्थान।
दुकाल—पु० दुष्काल, दुर्भिक्ष 'यहि निसिचर दुकाल सम अहई। कपिकुल देस परन अब चहई।' [रामा० ४८९
दुकूल—पु० क्षौम वस्त्र। कपड़ा।
दुखंत—पु० दुष्यंत।
दुख—पु० कष्ट, सन्ताप। व्यथा, संकट।
दुखड़ा—पु० दुःखकी कथा। विपत्ति।
दुखद, दुखदाई—वि० दुःख देनेवाला, क्लेशकर।
दुखना—अक्रि० दर्द करना।
दुखरा—पु० देखो 'दुखड़ा'
दुखवना, दुखाना—सक्रि० दुःख देना, पीड़ित करना 'कनककसिपु विरंचिको जन, करम मन अरु बात। सुतहिं दुखवत विधि न बरज्यो, कालके घर जात।' विन० ४९७
दुखारा, दुखारी—वि० व्यथित, पीड़ित (के० ८४)।
दुखित, दुखी—वि० जो दुःखमें हो, पीड़ित, व्यथित, रोगी।
दुखिया—वि० जो दुःखी हो, जो किसी कष्टमें हो।
दुखोहाँ—वि० दुःख देनेवाला।
दुगई—स्त्री० बरामदा (उदे० 'थंभ')।
दुगदुगी—स्त्री० देखो 'धुकधुकी'।
दुगना—वि० द्विगुणित, दूना।
दुगासरा—पु० छिपनेका स्थान 'गाँव गढ़ी कौ दढ़ दुगासरौ।' छत्र० ९४
दुगुन, दुगुना—वि० दूना।
दुग्ग—पु० दुर्ग, क़िला।
दुग्ध—पु० दूध। वि० दुहा हुआ।
दुघरी—स्त्री० दुघड़िया मुहूर्त।
दुचंद—वि० दूना, 'कन्दर्तैं दुचन्द नंदनन्दनकी मीठी बात करति अनन्द गात मुद दानि जनकी'। दीन० २१, (उदे० 'चमाक')
दुचित—वि० जिसका मन दुविधामें पड़ा हो, संशययुक्त, चिन्तित 'मिलतहिं कुरुख चकत्ताको निरखि कीन्हो सरजा सुरेस ज्यों दुचित ब्रजराजको।' भू० ११
दुचितई—स्त्री० दुविधा, चित्तकी अस्थिरता, सन्देह। 'भेजत बनत न, रोकत बनत न भै दुचितई महानी।' रघु० २०८
दुचिताई—स्त्री० देखो 'दुचितई'। 'जारति चित्त चिता दुचिताई। दीह स्वधा अहि कोप चबाई।' के० ६१, (राम० ८१)। चिंता (छत्र० ५)।
दुज—पु० ब्राह्मण। चन्द्रमा। दाँत। पक्षी।
दुजन्मा—पु० ब्राह्मण। द्विज।
दुजराज—पु० चन्द्रमा। ब्राह्मण। गरुड़।
दुजाति—पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य। द्विज।
दुजीह—पु० साँप।
दुड़बड़ी—स्त्री० एक बाजा (कबीर २०)।
दुतकारना—सक्रि० अपमान करना, तिरस्कारपूर्वक दूर भगाना।
दुति—स्त्री० द्युति, चमक, कान्ति। शोभा।
दुतिमान—वि० प्रकाशवान्, शोभायुक्त, सुन्दर।
दुतिय, दुतिया—वि० द्वितीय, दूसरा (कबीर २८६)।
दुतिवंत—वि० देखो 'दुतिमान'।
दुतीया—स्त्री० द्वितीया, दूज।
दुदल—वि० दो बराबर बराबर खण्डोंवाला। पु० दाल।
दुदलाना—सक्रि० दुतकारना, तिरस्कार करना।
दुदिला—वि० देखो 'दुचित'।
दुद्धी—स्त्री० एक तरहकी घास। थूहरके सदृश एक पौधा। खरिया मिट्टी।
दुधमुख, दुधमुहाँ—वि० जो अभीतक माका दूध पीता हो, निरा बालक।
दुधहँड़ी, दुधाँड़ी—स्त्री० दूध औटनेकी हंडी।
दुधार—वि० जो दूध देती हो। जिसमें दोनों ओर धार हो।
दुधारी, दुधारू—पु० देखो 'दुधार'।
दुधैल—वि० ज़्यादा दूध देनेवाली।
दुनवना—अक्रि० नवना, लचकर दोहरा हो जाना 'लंक नवलाकी कुचभारनि दुनोने लगी..'—दास २१। सक्रि० नवाना, झुकाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुनियाँ,-या—स्त्री० संसार, संसारके लोग।
दुनियाई—स्त्री० संसार (उदे० 'अदल')।
दुनियादार—वि० संसार-सम्बन्धी, सांसारिक।
दुनो—स्त्री० दुनिया, संसार।
दुनोना—दे० 'दुनवना'। [† चादर।
•**दुपटा, दुपट्टा**—पु० दो पाटोंका बना ओढ़नेका कपड़ा, †
दुपटी—स्त्री० देखो 'दुपटा', (उदे० 'उपानह')।
दुपद—पु० दो पाँवोंवाला जीव। मनुष्य। वि० जिसके [दो पाँव हों।
दुपहर—स्त्री० मध्याह्न।
दुपहरिया—स्त्री० मध्याह्न। एक पौधा या उसका लाल फूल।
दुपहरी- स्त्री० मध्याह्न 'जेठ मास की दुपहरी, चली बाल पिय-मौन।' मति० २००, (उदे० 'छाँह')। एक फूल (उदे० 'फूलना')।
दुबधा—स्त्री० संदिग्ध अवस्था, संशय, चिन्ता,
दुबरा, दुबला—वि० दुर्बल, कमज़ोर। [असमंजस।
दुबराई—स्त्री० दुर्बलता, कमज़ोरी।
दुबराना—अक्रि० दुर्बल या क्षीण होना।
दुबिधा—पु० देखो 'दुबधा'।
दुभाखी—पु० दो भाषाएँ जाननेवाला, आशय समझानेवाला, मध्यस्थ 'अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी।' रामा० १८
दुम—स्त्री० पूँछ। पछलगा।
दुमची—स्त्री० घोड़ेके साजका दुमकी तरफवाला हिस्सा। पुट्ठोंके मध्यकी हड्डी।
दुमन—वि० खिन्न।
दुमात, दुमाता—स्त्री० दूसरी मा, विमाता।
दुरंगा—वि० दो रंगोंवाला, दो चाल चलनेवाला, दो तरहका।
दुरंत—वि० बहुत बड़ा, प्रचण्ड, कठिन, भीषण, अशुभ। 'धरे शृंखला दुःख दाहैं दुरंतै।' राम० ५१९
दुरंधा—वि० दो रंध्रोंवाला। जिसमें दो छिद्र हों।
दुर—पु० मोती। छोटी सी बाली। अ० देखो 'दुर्'।
दुरजन—पु० बुरा आदमी, दुष्ट मनुष्य।
दुरतिक्रम—वि० जिसका उल्लंघन न किया जा सके जिसका कोई पार न पा सके।
दुरथल—पु० बुरी या गन्दी जगह 'दुरदिन परे रहीम कहि दुरथल जैपत भागि।' रहीम
दुरद—पु० हाथी (उदे० 'चंचलाई', 'छुवना')।
दुरदाम—वि० प्रबल, प्रचण्ड, दुस्साध्य।
दुरदाल—पु० हाथी।
दुरदिन—पु० बुरा दिन, वह दिन जब आकाश मेघाच्छन्न हो। संकटका समय (उदे० 'दुरथल')।
दुरदुराना—सक्रि० अपमानपूर्वक अलग करना।
दुरना—अक्रि० छिपना, आड़में होना 'प्रगटत दुरत करत छल भूरी।' रामा० ३७८, (उदे० 'किलकना')।
दुरबल—वि० दुर्बल, कमज़ोर, अशक्त।
दुरवार—वि० अटल 'प्रेमक गति दुरवार'—विद्या० १५८
दुरवेस—पु० फकीर (साखी ५०)।
दुरभिसंधि—स्त्री० कुमंत्रणा, कुचक्र।
दुरभेव—पु० मनोमालिन्य।
दुरलभ—वि० अलभ्य, अद्वितीय, अनोखा।
दुरस—वि० दुरुस्त, सही, ठीक (कबीर २०७)।
दुराउ—पु० छिपाव, कपट, छल 'सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ।' रामा० ३६
दुराचार—पु० अनाचर, बुरी चाल, अनुचित आचरण।
दुराज—पु० बुरा राज्य। दो राजाओंका राज्य (सूबे० ३७५)।
दुराजी—वि० जिसमें दो राजा हों 'याहि दुराजी राजमें सुखी न देखा कोय।' साखी ८२
दुरादुरी—स्त्री० दुराव, छिपाव।-करके = गुप्त रीतिसे।
दुराधर्ष—वि० दुर्दमनीय, प्रबल, भयंकर।
दुराना—सक्रि० छिपाना, 'बैर प्रीति नहिं दुरइ दुराये।' रामा० २९१, दूर करना, त्यागना (उदे० 'एक', 'बुराई')। अक्रि० छिपना, दूर होना 'नाम लेत नियरात सुख दुख दुरात दरशात।' रसिकबिहारी
दुराराध्य—वि० जिसे प्रसन्न करना कठिन हो।
दुराव—पु० छिराव, छल, कपट 'होइ न बिमल बिवेक उर गुरु सन किये दुराव।' रामा० ३२
दुरासा—स्त्री० झूठी आशा।
दुरित—पु० पाप। वि० पाप करनेवाला, पातकी।
दुरियाना—सक्रि० दुतकारना, दूर हटाना।
दुरुखा—वि० जिसके दोनों ओर मुँह (या अन्य चिन्ह) हो।
दुरुपयोग—पु० अनुचित उपयोग, दुर्व्यवहार।
दुरुस्त—वि० ठीक, मुनासिब, सही।
दुरूह—वि० समझनेमें कठिन, गूढ़।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुरेफ—पु० भौंरा, मधुप।
दुर्—उप० बुरा, कठिन (दुर्दिन, दुर्लभ)।
दुर्ग—पु० क़िला, गढ़। वि० दुर्गम, कठिन 'दुर्ग प्रहार कृष्ण पर कीन्हों।' सूबे० २९०
दुर्गति—स्त्री० दुर्दशा, दुर्गमता (राम० ३१)।
दुर्गम—वि० जहाँ जाना कठिन हो, बीहड़। दुर्ज्ञेय।
दुर्भिक्ष, दुर्भिच्छ—पु० अकाल। [कठिन।
दुर्मद—वि० घमण्डमें या नशेमें चूर, उन्मत्त।
दुर्लभ—वि० दुष्प्राप्य, अलभ्य, अद्वितीय।
दुर्वाद—पु० निन्दा, कुवाक्य। अनुचित विवाद।
दुर्विपाक—पु० दुष्परिणाम, बुरा संयोग।
दुलकी—स्त्री० घोड़ेका उछल उछल कर चलनेका ढंग।
दुलत्ती—स्त्री० पिछली टाँगोंसे प्रहार करना।
दुलभ—वि० दुर्लभ, दुष्प्राप्य 'नाम रसायन अधिक रस पीवत अधिक रसाल। कबीर पावन दुलभ है माँगे सीस कलाल।' साखी ५०
दुलराना—सक्रि० दुलार करना, प्यार करना, 'हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै।' सूबे० ४७, 'अंक उठावत अति दुलरावत निज कहँ धनि जग लेखी।' रघु० ४०,। अक्रि० दुलारे बच्चोंकी तरह व्यवहार करना।
दुलरी—स्त्री० दो लड़ोंकी माला (राम० १३८)।
दुलहन,-हिन—स्त्री० नयी बहू।
दुलहा—पु० वह मनुष्य जिसका विवाह अभी हुआ हो, हो रहा हो या शीघ्र होने ला हो, वर। पति।
दुलहिया, दुलही—स्त्री० नई बहू (उदे० 'ऊन')।
दुलहेटा—पु० दुलारा लड़का।
दुलाई—स्त्री० रुईदार ओढ़नेका कपड़ा।
दुलाना—सक्रि० देखो 'डुलाना', 'सीस दुलाइ बुंद वह [देख्यो।' छत्र० ७
दुलार—पु० प्यार, लाड़।
दुलारना—सक्रि० प्यार करना, लाड़ करना 'मातु दुलारहिं कहि प्रिय ललना।' रामा० ११०
दुलारा—वि० लाड़ला, प्यारा। पु० लाड़ला पुत्र।
दुलारी—वि० स्त्री० लाड़ली। स्त्री० प्यारी बेटी। दुलाई 'प्रीति दुलारी खुलत है लहि कै मगजी लाल।' रसनिधि
दुलीचा, दुलैचा—पु० गलीचा 'हस्ती चढ़िये ज्ञानकी सहज दुलीचा डारि।' साखी १०९, (सुन्द० १२९)
दुल्लभ—वि० दुर्लभ, दुष्प्राप्य।
दुवन—पु० शत्रु 'गुर्ज मेरु मंदर सम मंडित जेहि लखि दुवन निरासा।' रघु० ३, (भू० ४३)। दुर्जन, राक्षस।
दुवाज—पु० एक तरहका घोड़ा।
दुवादस—वि० बारह। दुवादस बानी = कान्तियुक्त,
दुवार—पु० द्वार, दरवाजा। [चोखा।
दुविधा—स्त्री० संशय, चिन्ता, असमंजस।
दुशमन, दुश्मन—पु० वैरी, शत्रु।
दुशवार—वि० मुश्किल, कठिन।
दुशाला—स्त्री० पशमीनेकी दोहरी चद्दर।
दुष्कर्म—पु० कुकर्म, बुरा काम।
दुष्कीर्त्ति—स्त्री० अयश, अपकीर्त्ति, बदनामी।
दुष्ट—वि० अधम, क्रूर, खोटा, दूषित।
दुसराना—सक्रि० दुबारा करना या देना, दुहराना।
दुसरिहा—वि० जोड़का, प्रतिद्वन्द्वी। साथी।
दुसह—वि० असह्य, कठिन, घोर (उदे० 'जर')।
दुसही—वि० कठिनाईसे सहनेवाला (उदे० 'असही')। डाही।
दुसाखा—पु० दो कनखोंवाला शमादान।
दुसार—पु० वह छिद्र जो आरपार हो। वि० आरपार।
दुसाल—पु० देखो 'दुसार'।
दुसाला—पु० देखो 'दुशाला'।
दुसेजा—पु० बड़ी चारपाई।
दुस्तर—वि० जिसे पार करना दुस्साध्य हो। कठिन।
दुहता—पु० नाती।
दुहना—सक्रि० दूध निकालना। निचोड़ना।
दुहनी—स्त्री० देखो 'दोहनी'।
दुहरा—वि० देखो 'दोहरा', (उदे० 'चौहरा')।
दुहराना—सक्रि० दुबारा कहना या करना। तह करना। अक्रि० दूना होना (उदे० 'अपध')।
दुहाई—स्त्री० घोषणा। बचावके लिए पुकार। सौगंध। दुहनेकी क्रिया या मजदूरी।
दुहाग—पु० दुर्भाग्य, वैधव्य।
दुहागनि, दुहागिन—स्त्री० विधवा 'जो हँसेंही हरि मिलै तौ नहीं दुहागनि कोइ।' कबीर ९
दुहागिल—वि० हतभाग्य। सूना।
दुहाना—सक्रि० दूध निकलवाना।
दुहावनी—स्त्री० दूध दुहनेकी मजूरी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुहिन—पु० ब्रह्मा।
दुहेल—पु० संकट, क्लेश 'पदमावति जग रूपमनि कहँ लगि कहौं दुहेल।' प० २७०
दुहेला—वि० कठिन, दुःसाध्य 'भक्ति दुहेली नामकी जस खाँड़ेकी धार।' साखी ३४। दुःखित 'जस बिछोह जल मीन दुहेला।' प० ९२, 'कहेसि कस न तुम्ह होहु दुहेली। अरुझी प्रेम जो पीतम बेली।' प० ११७
दुहोतरा—वि० दो अधिक। पु० दौहित्र, नाती।
दूँद—पु०, दूँदि—स्त्री० ऊधम, अंधेर 'बेदन मूँदि करी इन दूँदि, सु सूद अपावन, पावन पाँडे।' देव। झगड़ा 'तौ काहेको दूँद उठावैं।' छत्र० १२४
दूइज—स्त्री० पक्षकी दूसरी तिथि।
दूक—वि० दो एक, कुछ।
दूकान—स्त्री० देखो 'दुकान'।
दूखन—पु० दूषण, दोष।
दूखना—सक्रि० दोष देना 'कलप कलप भरि एक एक नरका। परहिं जे दूखहिं सुति करि तरका।' रामा० ५९२। अक्रि० दुखना, दुःखित होना 'हुत जो अपार बिरह दुख दूखा। जनहुँ अगस्त उदय जस सूखा।' प० १५६
दूखित—वि० दुःखित। दूषित, बुरा।
दूज—स्त्री० देखो 'दूइज'।
दूजा—वि० दूसरा, अन्य (उदे० 'अदूजा', 'चढ़ना')।
दूत—पु० संदेशा पहुँचानेवाला, बसीठ, चर।
दूतर—वि० दुस्तर, कठिन।
दूध—पु० दुग्ध, पय।—की मक्खी = तिरस्कृत वस्तु, (उदे० 'खँचाना')। दूधपूत = धन और सन्तति।
दूधमुँहा, दूधमुख—वि० जो अभीतक माका दूध पीता हो, बालक, अल्पवयस्क (उदे० 'कोह')।
दूधिया—पु० खरिया मिट्टी, एक सफेद पत्थर, एक सफेद घास। वि० दूधके रंगका। जिसमें दूधका अंश हो।
दून, दूना—वि० दुगुना। दोहरा 'लै अपार रार ऊन दून सूतसों कसी।' राम० ३४९
दूनर—वि० जो नवकर या लचक कर दुहरा हो गया हो।
दूनौ—वि० दोनों।
दूब—स्त्री० एक तरहकी घास (सूबे० ३९)।
दूबर, दूबरा—वि० दुर्बल, पतला (उदे० 'उसास')। दीन 'छोटे बड़े, खोटे खरे मोटेऊ दूबरे...' बिन० ५५८, (उदे० 'चहला')।
दूबा—स्त्री० देखो 'दूब'।
दूभर—वि० दुःसाध्य, कठिन, भारी। 'दूभर रैनि, जाइ किमि गाढ़ी।' प० १६८, (१६७ भी)
दूमना—अक्रि० हिलना।
दूरंदेश—वि० दूरदर्शी, अग्रसोची।
दूर—क्रिवि० फासलेपर, अलग। वि० जो फासलेपर हो।
दूरबा—स्त्री० दूब।
दूरबीन—स्त्री० एक यंत्र जिसके द्वारा दूरकी वस्तुएँ पास और साफ दिखाई देती हैं।
दूरि—वि० दूर 'यहि विधि प्रभुहि गयउ लै दूरी।' रामा० ३७८
दूरी—स्त्री० फासला, बीच, अन्तर।
दूलह—पु० देखो 'दुलहा'।
दूषन—पु० दोष, अवगुण। एक राक्षसका नाम। संहारक।
दूषना, दूसना—सक्रि० दोष लगाना।
दूसर, दूसरा—वि० अन्य, अपर। पहिलेके बादका, द्वितीय।
दूहना—सक्रि० दुहना।
दूहनी—स्त्री० दूध दुहनेका पात्र।
दूहा—पु० दोहा नामक छन्द।
दृगंचल—पु० पलक (राम० २१७)।
दृग—पु० नेत्र, लोचन। दृष्टि। दृगमिचाव = आँखमिचौनीका खेल।
दृढ—वि० पक्का, ठोस, स्थायी, हृष्टपुष्ट, प्रगाढ़, निर्भीक।
दृढ़ाई—स्त्री० दृढ़ता, स्थिरता, मजबूती।
दृढ़ाना—सक्रि० पक्का करना, पुष्ट करना (उदे० 'जोरना')। अक्रि० पक्का होना, स्थिर होना।
दृश्य—पु० देखनेकी वस्तु, नाटक, नाटकका अंश। वि० दर्शनीय, सुन्दर, जो देखा जा सके।
दृष्टकूट—पु० देखो 'दृष्टिकूट'
दृष्टमान—वि० व्यक्त।
दृष्टव्य—वि० दर्शनीय, देखने योग्य।
दृष्टांत—पु० उदाहरण, एक अलंकार।
दृष्टि—स्त्री० देखनेकी शक्ति। नज़र। नेत्र। अनुमान। बुद्धि, समझ। परख।—पड़ना = दिखाई देना—पसारना = नज़र दौड़ाना 'दसहु दिशा तन दृष्टि पसारी।' सूबे० २१४।—बिछाना = उत्कंठाके साथ राह देखना।—भर देखना = जी भर कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखना।—लगाना = स्थिर होकर देखना।—लाना = टकटकी बाँधना।

दृष्टिकूट—पु० पहेली, कूट अर्थवाली कविता।

दृष्टिबंध—पु० इन्द्रजाल, जादू। हाथकी सफाई।

दे, देई—स्त्री० देवी।

देउर—पु० देवर, पतिका छोटा भाई।

देखनहारा—पु० देखनेवाला।

देखना—सक्रि० अवलोकन करना। परखना, जाँचना। खोजना। समझना।

देखराना, देखाना—सक्रि० दृष्टिगोचर कराना, बताना, समझाना।

देख-रेख, देख-भाल—स्त्री० निरीक्षण, निगरानी।

देखादेखी—स्त्री० साक्षात्कार। अनुकरण।

देग—पु० भोजन बनानेका बड़ा बरतन।

देगची—स्त्री० छोटा देग।

देन—स्त्री० दी हुई वस्तु। देनेकी क्रिया। ऋण।

देनदार—पु० ऋणी।

देनहार—वि० देनेवाला।

देना—सक्रि० अर्पण करना, प्रदान करना, रखना, लगाना। उत्पन्न करना। मारना। पु० ऋण।

देमान—पु० दीवान, मंत्री।

देयासिनि—स्त्री० झाड़-फूँक करनेवाली (विद्या० २१२)।

देर, देरी—स्त्री० विलम्ब। समय।

देरानी—स्त्री० देवरानी 'नंदनंदन राजा राधिका देरानी।' सूबे० २१२

देव—पु० देवता, आदरणीय व्यक्ति। बादल। देवर 'तात मातु जन सोदर जानौ। देव जेठ सब संगिहु मानौ।' राम० १९६। दानव 'राजहिं देखि हँसा मन देवा।' [प० १९०

देवढ़ी—स्त्री० पौरी, द्वार, चौखट।

देवता—पु० देव, अमर।

देवदार, देवदारु—पु० एक ऊँचा पेड़ तथा उसकी लकड़ी।

देवदासी—स्त्री० मंदिरोंमें नृत्य करनेवाला दासी, वेश्या।

देवधुनी—स्त्री० गंगा नदी।

देवनागरी—स्त्री० वह लिपि जिसमें संस्कृत या हिन्दी लिखी जाती है।

देवर—पु० पतिका छोटा भाई (उदे० 'कुबत')।

देवरा—पु० छोटा देवता।

देवरानी—स्त्री० देवरकी स्त्री। इन्द्राणी।

देवराय—पु० देवराज, इन्द्र (सूबे० २९४)।

देवल—पु० देवालय। पुजारी। देवर।

देववाणी—स्त्री० संस्कृत भाषा। आकाश वाणी।

देवान—पु० दीवान, मंत्री। दरबार, राजसभा।

देवाना—वि० पागल (सूबे० १९०)।

देवारी, देवाली—स्त्री० दीपावली।

देवाला—पु० देवालय। दिवाला।

देवी—स्त्री० देव-पत्नी। दुर्गा, भवानी। राजमहिषी। शीलवती महिलाओंके लिए आदरसूचक शब्द।

देवै—स्त्री० देवकी (कबीर २४२)।

देवोत्तर—पु० देवताके निमित्त अलग किया हुआ धन।

देश, देस—पु० मुल्क, जनपद, राष्ट्र। स्थान।

देशांतर—पु० अन्य देश। किसी मानी हुई मध्य रेखासे पूर्व या पश्चिमकी दूरी।

देशी, देसी—वि० देश सम्बन्धी, स्वदेशमें उत्पन्न या बना हुआ।

देसवाल—वि० अपने देशका (मनुष्य)।

देसावर—पु० अपर देश, विदेश।

देह—स्त्री० शरीर। जीवन।—छोड़ना = मरना।

देहकान—पु० कृषक। देहाती, गँवार।

देहरा—पु० देह, मन्दिर, देवालय 'कबीर दुनिया देहरे सीस नवावन जाय।' साखी १८१, 'दस द्वारेका देहरा तामें जोति पिछान।' साखी १८१

देहरि, देहरी, देहली—स्त्री० द्वारके चौखटकी नीचेवाली लकड़ी (उदे० 'उलंघना')।

देहवंत, देहवान्—वि० जिसके देह हो। पु० शरीरधारी व्यक्ति, प्राणी।

देहात—स्त्री० गाँव, गँवई।

देहाती—पु० देहातका रहनेवाला। ग्रामीण। वि० देहात सम्बन्धी।

देही—स्त्री० शरीर। पु० प्राणी, जीवात्मा।

दैउ—पु० देखो 'दैव' 'जानौ दैउ तड़पि बन गाजा।' प० २४२ दैउ दैउ करके = किसी प्रकार 'दैउ दैउकै सो ऋतु गँवाई।' प० ८६

दैत्य—पु० असुर, अनाचारी।

दैन—पु० दैन्य, दीनता। स्त्री० देनेकी क्रिया, दी हुई वस्तु। वि० देनेवाला, यथा—सुखदैन।

दैनिक—वि० प्रतिदिनका, रोज़ाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैन्य—पु० दीनता, नम्रता, कातरता।

दैयत—पु० दैत्य, राक्षस 'है राकस दसशीशको दैयत बाहु हजार।' राम० ६५

दैया—पु० दैव। आश्चर्य या दुःखसूचक शब्द 'जु चंदाते झरैं दैया अँगारे। चकोरनकी कहौ गति कौन प्यारे।' आनंदघन। स्त्री० दाई।

दैव—पु० भाग्य, सञ्चित शुभाशुभ कर्म। विधाता, ईश्वर, भवितव्यता। आकाश। वि० देवसम्बंधी। दैववादी = आलसी, भाग्यका भरोसा करनेवाला।

दैवज्ञ—पु० ज्योतिषी।

दैवयोग—पु० इत्तिफाक, संयोग।

दैवात्—क्रिवि० दैवयोगसे, अकस्मात्।

दैविक—वि० देव सम्बन्धी, देवोंका किया हुआ।

दैवी—वि० देव सम्बन्धी, ईश्वरीय। आकस्मिक।

दैहिक—वि० शारीरिक।

दौंचना—सक्रि० दबाना, दबावमें डालना।

दो, दोइ—वि० तीनसे एक कम, दुइ।

दोआब, दोआबा—पु० दो नदियोंके बीचका स्थल।

दोख—पु० दोष, ऐब, कलंक, दुर्गुण, अपराध। द्वेष, [अनुना।

दोखना—सक्रि० दोष लगाना।

दोखी—पु० वह जो दोषयुक्त हो, अपराधी, ऐबी।

दोगला—वि० जारसे उत्पन्न, वर्णसंकर।

दोगुना, दोचंद—वि० दूना।

दोच, दोचन—स्त्री० दबाव। दुःख। असमंजस।

दोचना—सक्रि० देखो 'दौंचना'।

दोचित्ता—वि० जिसका चित्त ठिकाने न हो।

दोज—स्त्री० दूइज, द्वितीया।

दोजख, दोजग—पु० नरक (कबीर १०५)।

दोजानू—क्रिवि० घुटनोंके बल।

दोतल्ला—वि० दो खंडोंवाला (मकान)।

दोदिला—दे० 'दोचित्ता'।

दोन—पु० दो नदियों या दो पहाड़ोंके बीचका स्थान। दो नदियोंके मेलकी जगह। दो वस्तुओंका मेल या संधि। 'तिथ तिथि तरुन किसोर वय पुन्न काल सम दोनु'। वि० ११५

दोना—पु० कटोरेके आकारका पत्तोंका पात्र।

दोनिया, दोनी—स्त्री० छोटा दोना।

दोनों—वि० एक और दूसरा, उभय।

दोपट्टा—दे० 'दुपट्टा'।

दोपहर—पु० मध्याह्न।

दोपहरिया, दोपहरी—स्त्री० मध्याह्न।

दोषल—पु० अपराध, दोष 'दोषल देत सबै मोहीको उन पठयौं मैं आयो।' सूवे० १५८

दोमंजिला—वि० दो खंडोंवाला (मकान)।

दोय—वि० दो, दोनों।

दोल, दोला—पु० झूला, हिंडोला। डोली।

दोष—पु० देखो 'दोख'।

दोषन—पु० दूषण, अपराध, दोष।

दोषना—सक्रि० दोष लगाना।

दोषा, दोसा—स्त्री० रात्रि।

दोस—पु० देखो 'दोख'।

दोसत, दोस्त—पु० मित्र (कबीर २९)।

दोस्ताना—वि० मित्रता संबंधी। पु० मित्रता।

दोह—पु० द्रोह, द्वेष, वैर।

दोहगा—स्त्री० रखी हुई स्त्री, उपपत्नी।

दोहद—स्त्री० गर्भिणीकी इच्छा। गर्भिणीकी मतली इत्यादि। गर्भ।

दोहन—पु० दुहनेका पात्र, या कार्य।

दोहनी, दोहिनी—स्त्री० दूध दुहनेकी हाँडी, दुग्धपात्र। 'धरयो गिरिवर दोहनी कर धरत बाँह पिराइ।' सू० ७७

दोहर—स्त्री० दो परतोंवाली ओढ़नेकी चादर।

दोहरना—सक्रि० दुहराना, दोहरा करना। अक्रि० दोहरा होना।

दोहरा—वि० दो तहोंवाला। द्विगुणित। पु० दोहा, 'सतसैयाके दोहरे जनु नावकके तीर'। वि० ४१,

दोहराना—सक्रि० देखो 'दुहराना'। [(उपस्करण)

दोहाई—स्त्री० देखो 'दुहाई'। कविता। (भू० ५१)

दोहाग—पु० दुर्भाग्य।

दौं—अ० कौन जाने। तो। या, अथवा। स्त्री० देखो 'दौ', 'उभय अग्र दौं दुरकीट ज्यों शीतलताहि चहै'।

दौंकना—अक्रि० दमकना चमकना। [सूवे० ४०४

दौंचना—सक्रि० दबा कर लेना, दृढ़ ठान कर लेना।

दौ—स्त्री० दव, वनकी आग, आग, संताप 'जूसत सुभट जरत ज्यों दौ द्रुम विनुसाखा विनुपान'। सू० ४२

दौड़—स्त्री० शीघ्र गमन, धावा, चढ़ाई। द्रुतगति। पहुँच, प्रयत्नकी सीमा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दौड़धूप, दौड़ादौड़ी—स्त्री० बार बार आना जाना, प्रयत्न, हड़बड़ी।

दौड़ना—अक्रि० वेगसे चलना, धावना। फैलना।

दौड़ाना—सक्रि० द्रुत वेगसे चलाना, शीघ्रतापूर्वक यहाँसे वहाँ ले जाना। फैलाना।

दौत्य—पु० दूतका कार्य।

दौन—पु० दमन, विनाश। वि० दमन करनेवाला (अ० ६२)।

दौना—पु० कटोरेकी तरहका पत्तोंका बना पात्र। एक पौधा। द्रोणगिरि (सूरा० ७१)। सक्रि० दमन करना, दबाना।

दौर—स्त्री० द्रुतगमन। भ्रमण। प्रभाव।

दौरना—अक्रि० देखो 'दौड़ना'।

दौरा—पु० भ्रमण, फेरा।

दौरादौरी—स्त्री० देखो 'दौड़ादौड़ी'।

दौरान—पु० दौरा, पारी। सिलसिला। समय-परिवर्त्तन।

दौराना—सक्रि० देखो 'दौड़ाना'।

दौर्बल्य—पु० कमज़ोरी, क्षीणता।

दौलत—पु० संपत्ति, धन।

दौलतखाना—पु० घर।

दौलतमंद—वि० धनवान्, श्रीमान्, धनाढ्य।

दौवारिक—पु० द्वारपाल।

दौहित्र—पु० दुहिता-पुत्र, नाती।

द्यान, द्यावना—सक्रि० दिलाना।

द्युति, द्युतिमा—स्त्री० कान्ति, प्रभा, शोभा, तेज।

द्युतिमान्—वि० जो चमकता हो, प्रकाशवान्।

द्युलोक—पु० स्वर्गलोक।

द्यूत—पु० जुआ।

द्योतक—वि० सूचक, प्रकाशक।

द्योति—स्त्री० कान्ति, प्रभा, छवि '...दामिनी की लसनि, दसनही की द्योति है'—ध्रुवदास

द्योस, द्यौस—पु० दिवस, दिन 'खेलन चोर-मिहीचनी आजु गई हुती पाछिले द्योसकी नाईं।' रस० ३

द्रग—पु० दृग, नेत्र 'जब दिनमनि श्रीकृष्ण द्रगनतें दूरि भये दुरि।' नन्द०

द्रव—वि० तरल, गीला, पिघला हुआ। पु० तरल वस्तु, रस, आसव, बहाव, दौड़, वेग।

द्रवना—अक्रि० बहना, पिघलना, डरना, दयार्द्र होना। 'कस न दीनपर द्रवहु उमावर।' विन० ७३

द्रव्य—पु० धन। सामग्री। पदार्थ।

द्रष्टा—पु० देखनेवाला, दर्शक।

द्राक्षा—स्त्री० दाख, अंगूर।

द्राव—पु० बहने या पिघलनेकी क्रिया।

द्रुत—वि० त्वरायुक्त, शीघ्रगामी। पिघला हुआ। **द्रुतै**= शीघ्रतापूर्वक 'चल्यो सीय खोजन द्रुतै अति लघु रूप बनाय।' रघु० २२२

द्रुम—पु० वृक्ष, पेड़। पारिजात वृक्ष।

द्रोण, द्रोन—पु० दोना। नौका। सोमरस रखनेका काष्ठ-पात्र। एक प्राचीन माप। कौआ। वृक्ष। द्रोणाचार्य।

द्रोणी—स्त्री० छोटा दोना, डोंगी, कठवत। एक माप। [घाटी।

द्रोह—पु० वैर, दूसरेकी बुराई चाहना।

द्रोही—वि० द्रोह करनेवाला। पु० दुश्मन।

द्वंद, द्वंद्व—पु० जोड़ा। प्रतिद्वन्द्वी। झगड़ा। उलझन, कष्ट। डर। रहस्य। स्त्री० दुंदुभी। **द्वंदयुद्ध** = कुश्ती।

द्वंदर—वि० उलझनेवाला, झगड़ा करनेवाला। पु० संसार? 'कामहु क्रोधहु लोभहु मोहहु लूटत है दसहू दिसि [द्वंदर।' सुन्द १७

द्वय—वि० दो।

द्वादश—वि० बारह, बारहवाँ।

द्वार—पु० दरवाजा, मुख, छिद्र। साधन।

द्वारप, द्वारपाल—पु० प्रतिहार, दरबान।

द्वारा—अ० जरियेसे, कारणसे।

द्वारी—स्त्री० छोटा दरवाजा।

द्विज—पु० जिसका दो बार जन्म हुआ हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य। पक्षी। दाँत। चन्द्रमा।

द्विजराज—पु० देखो 'द्विजराज'।

द्विजिह्व—पु० साँप। वि० दो जीभोंवाला। चुगलखोर, दुष्ट।

द्वितीय—वि० दूसरा।

द्विरद—पु० हाथी।

द्विविधा—स्त्री० देखो 'दुविधा'।

द्वीप—पु० टापू।

द्वेष—पु० चिढ़, शत्रुता।

द्वै—वि० दोनों, दो।

द्वैज—स्त्री० दूज (मति० २०८)।

द्वैत—पु० दोका भाव, भेदभाव, मोह, अज्ञान, भ्रम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध

धंध—पु० धंधा, झंझट (वि० ९६)।

धंधरकधोरी—पु० वह जो दिनरात काममें लगा रहे. 'तिनमहँ प्रथम रेख जग मोरी। धिक धरमध्वज धंधरकधोरी।' रामा० ११

धँधला—पु० ढकोसला, ढोंग।

धंधा—पु० कामकाज, व्यवसाय।

धँधार—स्त्री० ज्वाला, झंडाल 'बिरह-धँधार जरत न बुझाई।' प० ७७। एक औज़ार।

धंधारि, धंधारी—स्त्री० गोरखधंधा 'संगीसबद, धँधारी करा। जरे सो ठाँव पाँव जहँ धरा।' प० ३०३। ज्वाला।

धंधोर—पु० होली, आग, ज्वाला।

धँवना—सक्रि० धौंकना 'बिरहा पून लोहारका धँवै हमारी देह।' साखी ४६

धँसना—अक्रि० गड़ना, पैठना (उदे० 'एक')। नीचे खसकना। नष्ट होना।

धँसान-स्त्री०, धँसाव—पु० धँसनेकी क्रिया, दलदल।

धउरहर—पु० देखो 'धौरहर'।

धक—स्त्री० दिल धड़कनेका शब्द। उमंग। क्रिवि० एकाएक, सहसा।

धकधकना, धकधकाना—अक्रि० भय इत्यादिसे हृदयका धकधक करना (उदे० 'बिनौना')। 'सकसकात तन धकधकात उर अकबकात सब ठाढ़े।' सूबे० ३५०

धकधकी—स्त्री० हृदयकी धड़कन। गलेके नीचेका गड्ढा, धुकधुकी।

धकपक—स्त्री० हृदयकी धड़कन।

धकपकाना—अक्रि० जी धड़कना, हृदय दहलना, डरना।

धकपेल—स्त्री० धक्काधक्की।

धक्का—पु० धक्का, टक्कर, झोंका, आघात (बिन० ६०५)।

धकाना—सक्रि० जलाना, सुलगाना।

धकेलना—सक्रि० धक्का देना।

धकैत—वि० धक्का देनेवाला।

धक्का—पु० देखो 'धक्का'।

धगड़ी—स्त्री० कुलटा 'नित प्रति ऐसेई ढँग करै हमसों कहै धगरी।' सूबे० १११

धगधागना—अक्रि० धड़कना, धकधक करना।

धगरी—स्त्री० पत्तीकी मुँहलगी या व्यभिचारिणी स्त्री।

धगा—पु० सूत्र, डोरा। [(उदे० 'धगड़ी')

धचका—पु० धक्का, झोंका।

धज—स्त्री० सजावट, शोभा, सुंदर चाल-ढाल।

धजा—स्त्री० पताका (प० १६१)। देखो 'धज'।

धज्जी—स्त्री० कपड़े इ० का लंबा पतला टुकड़ा।

धड़ंग—वि० नंगा।

धड़—पु० कमरके ऊपर शरीरका स्थूल भाग, पेड़का तना।

धड़कन—स्त्री० धकधकी, स्पन्दन।

धड़कना—अक्रि० हृदयका धकधक करना, दिलका उछलना।

धड़का—पु० धड़कन, धड़ाका। खटका। चिड़ियोंको भगानेका पुतला।

धड़धड़ाना—अक्रि० धड़धड़ आवाज़ करना।

धड़ल्ला—पु० धड़ाका, वेगके साथ गिरनेकी आवाज। धड़ल्लेसे, धड़ल्लेके साथ = बेरोकटोक, बेधड़क।

धड़ा—पु० बटखरा, बाट।

धड़ाका—पु० गिरने, चलने आदिका प्रबल शब्द। धमाका।

धड़ाम—पु० कूदने या गिरनेका ऊँचा शब्द।

धत—स्त्री० बुरी आदत।

धतकारना—सक्रि० दुतकारना।

धता—वि० हटा हुआ, भगा हुआ। —बताना = चलता करना।

धतूर—पु० धतू, तुरही। धतूरा नामका पौधा।

धतूरा—पु० एक पौधा।

धधकना—अक्रि० लपटके साथ जलना। भड़कना।

धनंजय—पु० अग्नि। अर्जुन। चित्रक वृक्ष, इ०।

धन—पु० दौलत, सम्पत्ति। प्रेमपात्र। स्त्री० स्त्री 'सूरदास सोना क्यों पावै पिय बिहीन धन मटके।'

धनक—पु० धनुष। धनेच्छा (कबीर ८९)। [सू० १७

धनकि—पु० धनुष (कबीर १४२)।

धनकुबेर—पु० कुबेरके सदृश धनवान् मनुष्य।

धनधाम—पु० मालमत्ता। घर और सम्पत्ति।

धनधारी,-पति—पु० धनेश, कुबेर।

धनमान—वि० धनवान् (उदे० 'गिलान')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धनवंत,-वान्—वि० श्रीमान्, धनी, धनाढ्य।
धनि—स्त्री० युवती स्त्री (उदे० 'धनुक'), स्त्री। वि० धन्य।
धनिया—पु० एक पौधा, या उसके फल। स्त्री० स्त्री, युवती।
धनी—वि० दौलतमन्द, धनाढ्य। पु० धनवान् मनुष्य। अधिपति, पति। स्त्री० स्त्री, युवती।
धनु, धनुक—पु० धनुष, चाप। एक राशिका नाम। 'भौंहैं स्याम धनुक जनु ताना।' प० ४५, 'भौंह धनुक, धनि धानुक, दूसर सरि न कराइ।' प० ४५
धनुआ—पु० रुई धुननेका औज़ार। धनुष।
धनुकार—पु० धनुष चलानेवाला 'भलपति बैठे भाल लेइ औ बैठे धनुकार।' प० २५३
धनुष, धनुस—पु० चाप या कमान (उदे० 'चक')।
धनुहाई—स्त्री० धनुष द्वारा युद्ध।
धनुहियाँ, धनुही—स्त्री० छोटा धनुष (सू० ३०), 'यह धनुही कैसी हुती मोहि बतावो राम।' रामरसायन
धन्ना—पु० धरना देना, किसी बातके लिए किसीके यहाँ अड़कर बैठना।
धन्य—वि० प्रशस्य, भाग्यवान्, पुण्यवान्।
धन्य धन्य—अ० साधु साधु।
धन्वी—वि० धनुर्धर, चतुर। पु० अर्जुन, शिव इ०।
धप—पु० किसी भारी चीज़के गिरनेकी आवाज़। चपत।
धपना—अक्रि० दौड़ना, झपटना।
धपाना—सक्रि० दौड़ाना, घुमाना।
धब्बा—पु० निशान, दाग, कलंक।
धमक—स्त्री० किसी भारी वस्तुके गिरनेका शब्द। दहल। आघात 'धीरा होइ धमक सहो ज्यों अहरन सिर घाव।' साखी १५२
धमकना—अक्रि० 'धम' से गिरना। ठहर ठहर कर पीड़ा देना। प्रहार करना, धावा करना (छत्र० ३१)। झपटना (उदे० 'गुमकना')।
धमकाना—सक्रि० भय दिखाना, डरवाना, घुड़कना।
धमगजर—पु० युद्ध, उपद्रव।
धमधूसर—वि० भद्दा, बेढौल (आदमी)।
धमना—सक्रि० धौंकना, हवा करना 'लकरी बढ़ई कूँ गहि छीलै खाल सु बैठी धमै लुहार।' सुन्द० ८९
धमनी—स्त्री० रक्तवाहिनी नाड़ी।
धमसा—पु० नगाड़ा।
धमाका—पु० ज़ोरसे गिरनेका शब्द, धक्का। आघात, घूँसा।
धमाचौकड़ी—स्त्री० कूद-फाँद। उपद्रव।
धमार—स्त्री० उपद्रव, उछलकूद। क़लाबाजी। पु० होलीमें गाया जानेवाला एक गीत।
धमारी—वि० उपद्रवी। स्त्री० होलीकी क्रीड़ा 'फर फूलन सब करहिं धमारी।' प० ८७, (१६१, १७० भी)
धयना—अक्रि० दौड़ना, धावा मारना 'ए सुजानके संग धए धरि धीर हैं।' सुजा० १३३
धरंता—वि० पकड़नेवाला।
धर—पु० पहाड़। कूर्मराज। श्रीकृष्ण। धड़ (उदे० 'कमंद')। स्त्री० धरा, पृथिवी 'धर अंबर दिसि विदिसि बढ़े अति सायक किरन समान।' सू० ४१, (४ भी)
धरक—स्त्री०, धरका—पु० धड़का, दिलकी धड़कन। खटका, शंका (राम० ४२०)।
धरकना—अक्रि० देखो 'धड़कना', (उदे० 'धुकधुकी')।
धरणि, धरणी—स्त्री० पृथिवी।
धरता—पु० धारण करनेवाला। कर्ज़दार।
धरती—स्त्री० पृथिवी।
धरधर—पु० शेषनाग, पहाड़। विष्णु।
धरधरा—पु० धड़का, धकधकाहट 'करु धरि देखौ धरधरा उर कौ अजौं न जात।' वि० २६७, (छत्र० ३१)
धरधराना—अक्रि० धड़ धड़ शब्द करना।
धरन—स्त्री० पाटन आदिका भार सँभालनेवाली लकड़ी, कड़ी। टेक। गर्भाशय। एक नस। धरती।
धरना—सक्रि० पकड़ना, रखना, थामना (उदे० 'दोहनी')। किसी स्त्रीको रखना 'ब्याहौ लाख, धरौ दस कुवरी अन्तहि कान्ह हमारो।' भ्र० ३९। ग्रहण करना।
धरनी—स्त्री० पृथिवी। धरन, कड़ी। टेक '...हिये धरु चातक की धरनी'—कविता० २१०, (भ्र० २९)
धरनेत—पु० धक्का देनेवाला।
धरम—पु० धर्म, मजहब, नीति। न्यायबुद्धि। कर्तव्य। सत्कर्म, पुण्य। स्वभाव। नित्य नियम। धर्मराज।
धरमसार—स्त्री० धर्मशाला, सदावर्त्त 'रानी धरमसार पुनि साजा।' प० ३०३
धरपना—सक्रि० चूर्ण करना, मर्दन करना, दबाना।
धरसना—सक्रि० डाँटना, दबाना। अक्रि० सहम जाना, डर जाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धरहर—स्त्री० बीच-बिचाव, रक्षा, धर-पकड़। धैर्य।
धरहरना—अक्रि० 'धड़ धड़' शब्द करना।
धरहरा—पु० मीनार, धौरहर।
धरहरिया—पु० बीच-बिचाव करानेवाला 'परै बीच धरहरिया प्रेम-राज को टेक।' प० १६१। रक्षक (प० २१८)।
धरा—स्त्री० धरती। संसार। गर्भाशय। बटखरा। एक तौल।
धराऊ—वि० जो विशेष समयपर काममें लानेके विचारसे हिफाजतसे रखा जाय, क़ीमती।
धराक, धराका—पु० धमाकेकी आवाज़।
धरातल—पु० पृथ्वीका पृष्ठभाग, पृथ्वीकी सतह।
धराधर—पु० शेषनाग। पहाड़। विष्णु।
धराना—सक्रि० पकड़ाना, रखाना, निश्चित कराना।
धराहर—पु० देखो 'धरहरा'।
धरित्री—स्त्री० धरती, पृथ्वी।
धरेली—स्त्री० रखी हुई स्त्री।
धरोहर—स्त्री० अमानत, थाती।
धर्त्ता—पु० धारण करनेवाला, ऊपर लेनेवाला।
धर्म—पु० देखो 'धरम'।
धर्मघड़ी—स्त्री० सबके देखनेयोग्य स्थानपर लगायी [गयी घड़ी।
धर्मज्ञ—वि० धर्मको जाननेवाला।
धर्मध्वज, धर्मध्वजी—पु० धर्मका ढोंग रचनेवाला।
धर्मपत्नी—स्त्री० विवाहिता स्त्री।
धर्मराज,-राय—पु० यमराज, युधिष्ठिर।
धर्मशाला—स्त्री० यात्रियोंके मुफ्त ठहरनेकी जगह। सत्र।
धर्मशीलता—स्त्री० धर्माचरणका स्वभाव।
धर्मसभा—स्त्री० न्यायसभा, न्यायालय।
धर्मसारी—स्त्री० धर्मशाला (सू० २८)।
धर्मात्मा—वि० धर्मशील। पु० धर्मशील व्यक्ति।
धर्माधिकारी—पु० धर्माधर्मका निर्णय करनेवाला, न्यायाधीश।
धव—पु० एक जंगली वृक्ष। पति। पुरुष।
धवनी—स्त्री० भाथी, धौंकनी।
धवर, धवरा—वि० धवल, सफेद।
धवरहर, धवराहर—पु० मीनार, धौराहर।
धवरी—दे० 'धौरी'।
धवल—वि० सफेद, उज्ज्वल। पु० धवर पक्षी। धव वृक्ष।
धवलना—सक्रि० उज्ज्वल बनाना। प्रकाशयुक्त करना।
धवलाई—स्त्री० धवलता, सफेदी, उज्ज्वलता (मुद्रा०५२)।
धवली—स्त्री० सफेद गाय। बालोंका एक रोग।
धवा—पु० देखो 'धव'।
धवाना—सक्रि० दौड़ाना 'यहि विधि देखत कहत चारते जात तुरंग धवाये।' रघु० १२९, (२५५ भी)
धस—पु० पानी इत्यादिमें घुसना, गोता।
धसकना—अक्रि० नीचेको खसकना, दब जाना। दहल उठना 'उठा धसकि जिउ औ सिर धुना।' प० १८३। ईर्ष्या करना।
धसना—अक्रि० घुसना, पैठना। नीचेको खसकना। नष्ट होना।
धसमसाना—अक्रि० धँस जाना, ज़मीनमें गड़ जाना। 'ऊपर जाइ गगन सिर धँसा। औ धरती तर महँ धसमसा।' प० २४६
धाँधना—सक्रि० कोठरी आदिमें बन्द करना। ठूँस कर [खाना।
धाँधली—स्त्री० उपद्रव। धोखा। जल्दबाज़ी।
धाँसना—अक्रि० घोड़े इ० का खाँसना।
धाइ, धाई—स्त्री० धात्री, दाई (राम० २४७)।
धाऊ—पु० संवादवाहक, हरकारा। 'धव' नामक वृक्ष।
धाक—स्त्री० आतंक (उदे० 'उदभट'), दबदबा (ललित० ८३), भय। प्रसिद्धि। पु० खंभा, आधार। भोजन। बैल। पलास।
धाकना—अक्रि० धाक जमाना।
धागा—पु० सूत, डोरा।
धाड़—स्त्री० चिग्घाड़, ज़ोरसे रोना। झुंड।
धाड़स—स्त्री० ढाढ़स, तसल्ली।
धात, धातु—स्त्री० सोना, चाँदी आदि द्रव्य (सूबे० १८६, २२५)। शुक्र। नाड़ी 'केओ केओ कर धरि धातु विचारि।' विद्या० ७५। पु० तत्त्व। ईश्वर।
धाता—पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव। रक्षक।
धातुराग—पु० ईंगुर इत्यादि रंग जो धातुओंसे निकलते हैं।
धातुवाद—पु० ताँबेसे सोना बनाने या रसायन बनानेका काम। कीमियागिरी।
धात्री—स्त्री० धाई, माँ।
धाधि—स्त्री० ज्वाला 'चानन देह चौगुन हो धाधि।' विद्या० २७९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धान—पु० धान्य, शालि (बुंदेलखंडमें स्त्रीलिंग 'सत्तू मगमगत जब घोरे तब खाये, धान बिचारी कूटी खाई')।
धानक—पु० धानुक, कमनैत। धुनिया। धनिया।
धानपान—पु० विवाह संबंधी एक रस्म।
धाना—अक्रि० दौड़ना 'दावानल मज जन पर धायो।' सूबे० ९१, (उदे० 'अंब')। स्त्री० दाना, धनिया, धान। सत्तू।
धानी—स्त्री० धान्य। स्थान। धनिया। हलका हरा रंग। वि० हलके हरे रंगका।
धानुक—पु० धनुष चलानेवाला, कमनैत (उदे० 'धनि', 'ऊढो')। एक नीच जाति।
धान्य—पु० धान, धनिया, अन्न। चार तिलके बराबर तौल।
धाप—पु० उतनी दूरी जितनी कोई दौड़कर एक साँसमें तै कर सके। सन्तोष।
धापना—अक्रि० दौड़ना, धावना। अघाना, सन्तुष्ट होना, पूर्ण होना 'भच्छ अभच्छ अपेय पान करि कबहुँ न मनसा धापी।' सूबि० ४५, 'बातोंके पकवानसे धापा नाहीं कोय।' साखी ८६, (सुन्द० ५६)। सक्रि० तृप्त करना।
धाम—पु० घर, स्थान, प्रभा, देवस्थान, स्वर्ग।
धामस धूमस—स्त्री० धूमधाम (?), जंजाल (सुन्द० २६)
धाय—स्त्री० दाई, धात्री।
धायना—अक्रि० दौड़ना 'चरन कमल बंदों जगदीस जे गोधन सँग धाये।' सू० ८०
धार—स्त्री० धारा, अखण्ड प्रवाह। झरना। हथियारका तेज किनारा। आक्रमण। तरफ, ओर 'महरि पैठत सदन भीतर छींक बाईं धार।' सू०। पु० प्रबल वर्षा। ऋण। लेना 'परी मुल्कपर धार अचीती।' छत्र० १४२। झुंड, राशि 'धूर धार नभमंडल मंड्यो।' छत्र० १३०
धारना—सक्रि० धारण करना (सू० १०३)। ग्रहण करना, रखना। उधार लेना।
धारस—दे० 'धाड़स'।
धारा—स्त्री० देखो 'धार'। सेनाका अगला भाग, सेना। झुण्ड। उन्नति। कीर्त्ति। लकीर। सन्तान।
धाराधर—पु० बादल (ललित० ७४)। तलवार।
धारावाही—वि० धाराके रूपमें चलनेवाला, लगातार चलनेवाला।
धारि—स्त्री० देखो 'धार'। झुण्ड, सेना (उदे० 'उलदना'), 'वाटिका उजारि, अच्छ-धारि मारि, जारि गढ़, भानु-कुल-भानुको प्रतापभानु भानु सो।' कविता० २२०
धारिणी—स्त्री० पृथिवी। सेमर। शची इ० चौदह देवस्त्रियाँ।
धारी—वि० धारण करनेवाला। ऋणी। स्त्री० समूह, सेना। लकीर।
धारीदार—वि० जिसमें धारियाँ या लकीरें हों।
धारोष्ण—वि० तुरंतका दुहा हुआ (दूध)।
धार्मिक—वि० धर्म सम्बन्धी। धर्मशील, पुण्यात्मा।
धावक—पु० हरकारा, धोबी।
धावन—पु० धावने या दौड़नेकी क्रिया। धोनेकी क्रिया। वह जिससे कोई चीज धोई जाय। हरकारा, दूत 'धावन तहाँ पठावहु, देहिं लाख दस रोक।' प० ५३, 'सुतो हमारे कटकमें ओछो धावन एक।' दास १३
धावना—अक्रि० देखो 'धाना'।
धावनि—स्त्री० दौड़। आक्रमण।
धावरी—स्त्री० देखो 'धौरी'। वि० सफेद।
धावा—पु० आक्रमण, दौड़।
धाह—स्त्री० चीख, उत्क्रन्दन, धाड़ (सूबे० ८८)।
धाही—स्त्री० धात्री, धाय।
धिंग, धिंगाई—स्त्री० उपद्रव, शरारत।
धिआ—स्त्री० लड़की, कन्या।
धिआन—पु० ध्यान, चिन्तन, विचार।
धिक—अ० घृणा, निन्दा आदि सूचक शब्द। लानत।
धिकना—अक्रि० तप्त होना, गरम होना 'ओही आँच धिकै संसारा।' प० १४७
धिकाना—सक्रि० गरम करना।
धिक्कार—स्त्री० घृणादि सूचक शब्द, लानत।
धिक्कारना—सक्रि० भला बुरा कहना, फटकारना।
धिग—अ० देखो 'धिक'।
धिय, धिया—स्त्री० लड़की, बेटी (विद्या० ३०२)।
धिरयना, धिरवना—सक्रि० डराना, धमकाना, डाँटना 'सूर नन्द बलरामहिं धिरयो सुनि मन हरष कन्हैया।' सूबे० ६१
धिराना—सक्रि० डराना, बुझाना (सूबे० ११३)। अक्रि० धीमा पड़ जाना। स्थिर होना।
धींग—वि० हृष्टपुष्ट, दुष्ट, पाजी। पु० हृष्टपुष्ट व्यक्ति।
धींगड़ा, धींगरा—पु० हृष्टपुष्ट मनुष्य, गुंडा, बदमाश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धींगरी—स्त्री० दुष्ट स्त्री, उपद्रव करनेवाली स्त्री।
धींगा—वि० दुष्ट, पाजी।
धींगाधींगी—स्त्री० उपद्रव, शरारत, बलप्रयोग।
धींवर—पु० एक जाति, मल्लाह। सेवक।
धी—स्त्री० बुद्धि। मन। लड़की (सुन्द० ५६)।
धीजना—सक्रि० सन्तुष्ट होना। अंगीकार करना। धैर्य धरना। विश्वास करना (उदे० 'धूरे', साखी ८७, ११८), 'सुन्दर कहत ताहि धीजिए सुकौन भाँति मनको स्वभाव कछु कह्यो न परतु है।' सुन्द० ५६
धीम—वि० मन्द, हलका, नीचा, तुच्छ, निर्बल।
धीमर—पु० देखो 'धींवर'। 'मछरी दह छोड़ौ नहीं धीमर तेरो काल।' साखी ७४।
धीमा—वि० देखो 'धीम'।
धीय, धीया—स्त्री० बेटी, पुत्री 'धीयको न माय, बाप पूत न सँभारहीं।' कविता० १७७
धीर—वि० धैर्यवान्। बलवान्। गंभीर। विनीत। सुन्दर। धीमा। पु० धैर्य। सन्तोष।
धीरक, धीरज—पु० धैर्य, चित्तकी स्थिरता 'राजरवनि गाई व्याकुल ह्वै दै दै सुतको धीरक।' सूवि० ३२
धीरे—क्रिवि० मन्दगतिसे, मन्दस्वरसे, चुपकेसे।
धीर्य—पु० धैर्य, धीरज।
धोवर—पु० देखो 'धींवर'।
धुँआँ—पु० देखो 'धुआँ'।
धुंई—स्त्री० धूनी।
धुंकार—पु० गरजन। ज़ोरसे गरजनेकी आवाज़।
धुंगार—पु० छौंक, बघार।
धुंगारना—सक्रि० छौंकना।
धुंज—वि० अस्पष्ट, धुंधला। जिसकी नज़र कमज़ोर हो गयी हो।
धुंद, धुंध, धुंधि—स्त्री० नज़रकी कमज़ोरी। अँधेरा (प० १७७), 'धुरवा धुंधि बढ़ी दसहूँ दिसि'।
धुँधका—पु० धुँआ निकलनेका छिद्र। [सूवे० ३२८
धुंधकार—पु० अंधेरा। धुंकार, गरजन।
धुंधर, धुंधरि, धुंधुरि—स्त्री० धुएँ, धूल आदिके कारण छाया हुआ अंधकार 'दिसा धूरि धुंधरि सों ढाँकी।' छत्र० १०९
धुँधराना,-लाना—अक्रि० कुछ कुछ काला या अन्धकारयुक्त होना।
धुँधला—वि० धुएँके रंगकी तरह, कुछ कुछ अंधकारयुक्त। [अस्पष्ट।
धुँधलाई—स्त्री० धुँधलापन।
धुँधली—स्त्री० अंधेरा, नज़रकी कमज़ोरी।
धुंधार—वि० धूमिल, धुआँधार (उदे० 'झंझार')।
धुंधुकार—पु० धुँधुलापन, अँधेरा। गरजन, धुंकार।
धुंधुरित—वि० जो कुछ धुँधला हो गया हो। धुँधली दृष्टिवाला।
धुँधुवाना—अक्रि० धुआँ देना, 'प्रगट धुआँ नहिं देखिये उर अन्तर धुँधुवाय।' गिरिधर
धुँधेरी—स्त्री० देखो 'धुंधुरि'।
धुअ—पु० ध्रुव। एक तारा। राजा उत्तानपादके पुत्र। पर्वत। आकाश। विष्णु। वि० अचल, दृढ़, नित्य।
धुआँ—पु० धूम्र, धूम। धज्जी, विनाश 'धुआँ देखि खरदूषन केरा।' रामा० ३७४
धुआँकश—पु० अग्निबोट।
धुआँधार—वि० धूममय। घोर, काला। क्रिवि० वेगके साथ।
धुआँना—अक्रि० धुएँके कारण स्वाद इ०का खराब होना।
धुकड़पुकड़—स्त्री० घबड़ाहट, हिचकिचाहट, आगापीछा।
धुकधुकी—स्त्री० एक आभूषण, पदिक। हृदय, कलेजा 'मिलनि बिलोकि भरत रघुवरकी। सुरगन सभय धुकधुकी धरकी।' रामा० ३१४। डर। धड़कन। '...झमकति धुकधुकी जैसे दुरुह बराती मैं।' रवि० २४
धुकना—अक्रि० गिर पड़ना (उदे० 'गाड़', सुजा० १५०) नवना, झुकना 'तुलसी जिन्हें धाये धुके धरनी धर, धौर धकानिसो मेरु हले हैं।' कविता० १९५। टूट पड़ना, झपटना।
धुकान—स्त्री० धुंकार, गरजन। गड़गड़ाहट।
धुकाना—सक्रि० गिराना। झुकाना। पटकना। धुवाँ देकर गर्मी पहुँचाना (उदे० 'छपना')।
धुकार—स्त्री० नगाड़े इ० के पीटे जानेकी आवाज़ 'होत धुकार दुंदुभिनके अरु बजत संख सहनाई।' रघु० ११
धुक्कारना—सक्रि० देखो 'धुकाना'।
धुज—पु०, धुजा—स्त्री० ध्वजा, झंडा।
धुजिनी—स्त्री० सेना।
धुतकारना—सक्रि० देखो 'दुतकारना'।
धुताई—स्त्री० धूर्त्तता, चालबाज़ी।
धुधुकार—पु०,-कारी—स्त्री० गरजन, घोर शब्द।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धुन—स्त्री० लगकर काम करनेकी इच्छा, लगन। मनकी लहर, विचार। शब्द, आवाज़। गानेकी तर्ज़।

धुनकना—सक्रि० रुई धुनना।

धुनकी—स्त्री० रुई धुननेका औज़ार।

धुनना—सक्रि०धुनकना, रुई साफ करना। लगातार कहते या करते जाना। मारना या पीटना 'पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना।' रामा० ४८१, (उदे० 'कुदाउ')

धुनि, धुनी—स्त्री० ध्वनि, आवाज़ (उदे० 'टरना')। नदी 'बहु गुन तोमें हैं धुनी अति पुनीत तो नीर।' दीन० २०३। धूनी।

धुनियाँ—पु० रुई धुननेवाला।

धुपना—अक्रि० धुलना।

धुपाना—सक्रि० धूप दिखाना। धूपके धुएँसे सुवासित करना (मुद्रा० ४३)।

धुपेली—स्त्री० अम्हौरी, गरमीके दिनोंमें निकलनेवाली फुंसी।

धुमारा—वि० धूमिल, धुएँ जैसा। मटमैला।

धुरंधर—वि० भार उठानेवाला, श्रेष्ठ, प्रचण्ड। पु० वह जो भार उठाता हो।

धुर—पु० गाड़ीका धुरा। भार। गाड़ीका जूआ। मूल, आरंभ (भ्र० १२)। अ० ठीक, सीधे। बहुत दूर।

धुरजटी—पु० महादेवजी।

धुरना—सक्रि० पीटना, बजाना। भूसेके लिए फिरसे दाँयें करना।

धुरवा—पु० बादल (उदे० 'गाजना')।

धुरा—पु० धुर, अक्ष। भार।

धुरियाना—सक्रि० धूलसे लपेटना, युक्तिसे ऐब छिपाना।

धुरी—स्त्री० गाड़ीकी कील, धुरा।

धुरीण, धुरीन—वि० धुरन्धर, भार उठानेवाला। प्रधान, श्रेष्ठ।

धुरेंडी, धुलेंडी—स्त्री० चैत कृष्ण प्रतिपदाको मनाया जानेवाला हिन्दुओंका एक त्यौहार, मदनोत्सव।

धुरेटना—सक्रि० धूलसे ढँकना, धूलसे लपेटना 'छैल जू सैल बिहारी सुने तिहि गैलकी धूरिनि नैन धुरेटति।' दास १५८

धुर्रा—पु० कण, जर्रा।

धुलना—अक्रि० धोया जाना, साफ होना, मिट जाना।

धुव—पु० देखो 'धुअ'। 'धुवतें ऊँचे पेम-धुव ऊआ।' प० ५४

धुवाँ—पु० देखो 'धुआँ।'

धुस्स—पु० बाँध, टीला।

धूंध—स्त्री० अँधेरा, धुंध 'तीन ताप सीतल करत सघन तरुन की धूंध।' नागरी०

धूँधर, धूँधुर—स्त्री० अँधेरा, उड़ती हुई धूलिराशि। (दीन० १३२)। वि० धुँधला।

धू—पु० ध्रुवजी (कबीर १९०)। ध्रुव तारा। वि० स्थिर।

धूई—स्त्री० धूनी।

धूजट—पु० महादेवजी।

धूत—वि० धूर्त्त, चालबाज़, छलिया (उदे० 'चमाई')। वि० जो धमकाया गया हो। भर्राना हुआ। त्यक्त।

धूतना—सक्रि० चालबाज़ी करना, छल करना, ठगना 'तुलसी रघुवर सेवकहिं सकै न कलियुग धूति।' दोहा० ११२, 'कोई फिरै नाँगे पायँ गुदरी बनाय करि देहकी दसा दिखाइ आइ लोक धूत्यो है।' सुन्द० ६६

धूताई—स्त्री० धूर्त्तता (भ्र० १३८)।

धूनना—सक्रि० रुई साफ करना, पीटना। धूनी देना, जलाना।

धूना—पु० एक पेड़ या उसका गोंद।

धूनी—स्त्री० गुग्गुल आदिका धुआँ। साधुओंके तापनेकी आग।

धूप—स्त्री० आतप, घाम। पु० सुगन्धित द्रव्य जिसे पूजा इत्यादिके समय जलाते हैं (प० ४२)।

धूपना—अक्रि० सुगन्धित द्रव्य जलाना। सक्रि० धूपका धुआँ पहुँचाना।

धूम—स्त्री० समारोह, उपद्रव, हलचल, शोर, चर्चा, प्रसिद्धि। पु० धूम्र, धुआँ। धूमकेतु।

धूमकेतु—पु० अग्नि, पुच्छल तारा, केतु।

धूमधाम—स्त्री० चहलपहल, ठाटबाट।

धूमयोनि—पु० बादल।

धूमर, धूमरा, धूमल—वि० धुएँके सदृश काला, मटमैला, धुँधला (सूवे० १२१)।

धूमिल—वि० देखो 'धूमर'।

धूम्र—पु० धुआँ, एक गन्ध द्रव्य। वि० धुएँके रंगका।

धूर—स्त्री० धूल, रज। अ० ऊपर (भ्र० १४२)।

धूरजटी—पु० महादेवजी।

धूरत—वि० धूर्त, चालबाज़।

धूरधान—पु० धूलका ढेर।

धूरधानी—स्त्री० धूलका ढेर। विनाश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धूरा—स्त्री० धूल, रज, चूर्ण।
धूरि—स्त्री० धूल।
धूरे—क्रिवि० पास 'उजल देखि न धीजिये बग ज्यों भौंड़े ध्यान। धूरे बैठि चपेटही, यों ले बूड़ै ज्ञान।' साखी : ३८
धूर्त्त—वि० चालाक, धोखेबाज।
धूल, धूलि—स्त्री० गर्द, रेणु।
धूवाँ—पु० देखो 'धुआँ'।
धूसर, धूसरा, धूसला—वि० मटमैला, धूलके रंगका। धूल लगा हुआ।
धूसरित—वि० धूलसे मलिनीकृत, धूलसे भरा हुआ।
धूहा—पु० टीला, ढूह।
धृक, धृग—अ० धिक (सू० १०६)
धृति—स्त्री० धैर्य, दृढ़ता।
धृष्ट—वि० ढीठ, निर्लज्ज।
धेन, धेनु—स्त्री० गाय।
धैना—स्त्री० काम-धन्धा। स्वभाव, आदत 'कह गिरिधर कविराय फुहरके यारो धैना। कजरौटा बरु होइ लुकाइन आँजै नैना।' गिरिधर
धैर्य—पु० धीरता, दृढ़ता।
धौंकना—सक्रि० प्रज्वलित करनेके लिए हवा करना। ऊपर डालना। अक्रि० काँपना 'ऋद्धि कँपी नवनिद्धि कँपी सबसिद्धि कँपी ब्रह्मनायक धौंके।' सुदामा० [(कवि०)
धौंई—पु० राजगीर।
धोकड़ा—वि० मोटा ताजा।
धोका, धोखा—पु० छल, दगा, भ्रम, भूल 'तुलसी जाके बदनते धोखेउ निकसत राम।' वैराग्य संदीपिनी। वह वस्तु जिससे धोखा या भ्रम हो। अन्यथा या अनिष्ट होनेकी संभावना। चिड़ियोंको डरानेके लिए खेतमें रखा गया पुतला। धोखा लगाना = त्रुटि करना, कसर करना 'भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहि।' रामा० २९०
धोटा—पु० बालक, लड़का, ढोटा।
धोती—स्त्री० कमरसे घुटनोंके नीचे तक पहिननेका वस्त्र। योगकी एक क्रिया।
धोना—सक्रि० साफ करना, प्रक्षालित करना, मिटाना।
धोप—स्त्री० तलवार 'सनमुख पिले धोप कर काढ़े।' छत्र० १३३, (भू० १२०)
धोबी—पु० कपड़ा धोनेवाला, रजक।
धोम—पु० धूम्र, धूआँ 'इक धोम घोटि तन हूँहि श्याम।' कबीर २१६
धोर—स्त्री० निकटता। धार, किनारा।
धोरी—पु० बैल। भार उठानेवाला। मुखिया, श्रेष्ठ व्यक्ति।
धोरे—क्रिवि० समीप, पास।
धोवती—स्त्री० धोती 'टटकी धोई धोवती, चटकीली मुखजोति।' बि० १९७
धोवन, धोवा—पु० वह पानी जिससे कोई वस्तु धोयी गयी हो। जल।
धोवना—सक्रि० धोना, साफ करना।
धोवाना—सक्रि० धुलाना, साफ कराना। अक्रि० साफ होना।
धौं—अ० या, कि। मालूम नहीं, कौन जाने। भला, कहो तो, तो। 'अति किधौं रुचिर प्रताप पावक प्रगट सुरपुरको चली।' राम० २३
धौंकना—सक्रि० आग दहकानेके लिए हवाका झोंका देना।
धौंकनी, धौंकी—स्त्री० भाथी। आग तेज़ करनेके लिए सुनारोंकी बाँस इ० की नली।
धौंज—स्त्री० व्याकुलता, घबराहट। दौड़-धूप 'एक करै धौंज, एक कहै काढ़ो सौंज...' कवित्त० १७८
धौंजना—अक्रि० घाबना, दौड़-धूप करना। सक्रि० पाँवसे रौंदना, कुचलना।
धौंस—स्त्री० घुड़की, धमकी, भभकी, भुलावा। धाक।
धौंसना—सक्रि० डपटना, घुड़की देना (मुवे० १५७)। पीटना, दशना, दण्ड देना।
धौंसा—पु० डंका, नगाड़ा 'प्रगट जुद्धके धौंसा बाजे।' छत्र० ४३। सामर्थ्य।
धौत—वि० धोया हुआ, नहाया हुआ, साफ।
धौर—वि० सफेद (साखी ७७)। पु० एक पक्षी। सफेद कबूतर। धौर धका = आघात (उदे० 'धुकना')।
धौरहर—पु० बुर्ज, धरहरा, ऊँची अटारी 'सरद-वारिधर से लसत अमल धौरहर धौल।' ललित० १४
धौरा—वि० सफेद (उदे० 'अवटना')। उजला। पु० सफेद बैल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धौराहर—पु० देखो 'धौरहर'। 'सात खण्ड धौराहर साजा।' प० २०
धौरिय—पु० बैल।
धौरी—स्त्री० सफेद गाय 'धौरीकौं पय पान न करिहौं बेनी सिर न गुथैहौं।' सू० (ककौ० १७०)
धौरे—क्रिवि० देखो 'धोरे'।
धौल—वि० सफेद (उदे० 'धौरहर')। पु० धौराहर। एक पेड़। स्त्री० तमाचा, चपत। हानि।
धौलहर, धौलहरा—पु० देखो 'धौरहर' (साखी ३६, [उदे० 'छिनभंग')
धौला—दे० धौरा।
धौलाई—स्त्री० सफेदी, उज्वलता।
ध्यान—पु० मनमें लानेकी क्रिया। मनन, ख्याल, चेत, बुद्धि, समझ। स्मृति, धारणा। चित्तकी एकाग्रता।
ध्यानना, ध्याना—सक्रि० ध्यान करना, चिन्तन करना, (उदे० 'आउ')। स्मरण करना।
ध्येय—वि० ध्यान करने योग्य। पु० लक्ष्य, अभीष्ट।
ध्रुव—पु०, वि० देखो 'ध्रुव'।
ध्वंस—पु० नाश, हानि।
ध्वज—पु० झण्डा, निशान, चिह्न, घमण्ड।
ध्वजा—स्त्री० झण्डा।
ध्वनि—स्त्री० आवाज़, शब्द। लय।
ध्वांत—पु० अंधकार, नरकविशेष।

न

नंग—वि० नंगा, लुच्चा। पु० नंगापन, ओछापन।
नंगधड़ंग—वि० बिलकुल नंगा।
नंगा—वि० वस्त्ररहित, खुला हुआ। लुच्चा, बदमाश।
नंगाझोली—स्त्री० जामातलाशी।
नंगाबूचा—पु० कंगाल।
नँगियाना—सक्रि० नंगा करना।
नंद—पु० आनन्द। पुत्र। विष्णु। एक तरहका मृदंग। स्त्री० संवद 'निसिदिन निंदति नंद है, छिन-छिन साधु रिसाति।' मति० १८७
नंदकिशोर,-कुमार—पु० श्रीकृष्ण।
नंदन—वि० आनन्द देनेवाला। पु० पुत्र। इन्द्रकानन। विष्णु। शिव। चंदन। मेघ। अस्त्रविशेष।
नंदना—अक्रि० आनन्दित होना 'सुकै नन्दै, बुध भये नाचै।' प० १८७
नंदित—वि० प्रसन्न, आनंदित, हर्षित। बजता हुआ।
नंदिन, नंदिनी—स्त्री० बेटी, पुत्री। गंगा। उमा। ननद।
नंदीमुख—पु० देखो 'नांदीमुख'। 'नंदीमुख सराध करि जात करम सब कीन्ह। रामा० १०८
नंदेऊ, नंदोई, नंदोसी—पु० ननदका पति।
नंस—वि० नष्ट।
न—अ० नहीं, मत। या नहीं ?
नइहर—पु० मायका, पीहर।
नई—स्त्री० नदी। वि० नीतिवान्, नयी।
नउँजी—स्त्री० लीची फल।
नउ—वि० नया। आठ और एक।
नउआ—पु० नाई (सू० १७९)।
नउका—स्त्री० नौका, नाव।
नउत—वि० नत, नवा हुआ, नीचेकी तरफ झुका हुआ।
नउलि—वि० नया, ताज़ा।
नउढ़ि—स्त्री० नवविवाहिता स्त्री, युवती स्त्री।
नकटा—वि० जिसकी नाक कटी हो, बेशर्म। पु० वह जिसकी नाक कटी हो।
नकड़ा—पु० नाकका एक रोग।
नकद—पु० कलदार रुपया, सिक्केके रूपमें धन। वि० प्रस्तुत। अ० तुरंत रुपया-पैसा देकर।
नकना—सक्रि० लाँघना, चलना, छोड़ना। नाकमें दम करना। अक्रि० नाकों दम आना।
नकफूल—पु० नाककी कील।
नकली—वि० झूठा, बनावटी।
नकवानी—स्त्री० नाकमें दम, परेशानी 'तिन रंकनको नाक सँवारत हौं आयो नकवानी।' तिन० ७१
नकाना—सक्रि० नाकों दम करना। लँघवाना (छत्र० १४५)। अक्रि० नाकमें दम आना, तंग होना।
नकाब—पु० मुखका आवरण।
नकार—पु० इनकार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नकारना—अक्रि० इनकार करना।
नकारा—पु० नगाड़ा, डंका।
नकाशना, नकासना—सक्रि० बेल-बूटे खोद कर बनाना।
नकियाना—सक्रि० नाकों दम करना। अक्रि० नाकों-दम होना। नाकसे बोलना।
नकीब—पु० एक तरहका चारण। यश बखाननेवाला (सू० ३०)।
नकुल—पु० नेवला, अर्जुनके एक भाईका नाम।
नकेल—स्त्री० ऊँट या भालूकी नाकमें पहनायी हुई रस्सी। बाग।
नक्कारा—पु० नगाड़ा, डुगडुगी।
नक्काल—पु० भांड़, नकल करनेवाला।
नक्कू—वि० बड़ी नाकवाला, शानवाला। सर्वसाधारणसे उलटा काम करनेवाला।
नक्शा—पु० चित्र, आकृति।
नक्षत्र—पु० तारोंका समूह।
नख—पु० नाखून, नह। स्त्री० एक तरहका सूत।
नखक्षत, नखच्छत—पु० नाखून गड़नेका चिह्न।
नखछोलिया—पु० नखक्षत।
नखत,नखतर—पु० तारोंका समूह (उदे० 'अंधर', 'उअना')।
नखतराज, नखतराय—पु० चन्द्रमा।
नखतेस—पु० चन्द्रमा 'लसत सरस सिंधुरवदन भालथली नखतेस।' रतन० १
नखना—अक्रि० लाँघा जाना। सक्रि० लाँघना। ध्वस्त करना 'मउ फरक्कावाद खोदिकै नखिहौं'—सुजा० ६५
नखरा—पु० हावभाव, चोचला।
नखरौट—स्त्री० नखक्षत।
नखशिख—पु० नखसे शिख तकके अंग, सर्वांग। सर्वांग-वर्णन।
नखायुध—पु० शेर, चीता, इ०। नृसिंह (मति० २३०)।
नखास—पु० पशुओंका बाज़ार।
नखियाना—सक्रि० नखसे खरोंचना।
नखेद—पु० देखो 'निषेध' (कबीर १९६)।
नखोटना—सक्रि० देखो 'नखियाना'।
नग—पु० नगीना, शीशे आदिका टुकड़ा। संख्या। पहाड़। पेड़। सूर्य। सर्प। वि० न चलनेवाला, अचल।
नगण्य—वि० जो गिनने योग्य न हो, तुच्छ, उपेक्षणीय।
नगद—दे० 'नकद'।
नगधर, नगधरन—पु० गिरिधारी, श्रीकृष्ण।
नगन—वि० नंगा (भू० १५३)।
नगनी—स्त्री० कम उमरकी लड़की जो शरीरका ऊपरी भाग खुला रख सकती हो। पुत्री। वस्त्रहीन स्त्री।
नगपति—पु० हिमालय, सुमेरु। शिव। चन्द्रमा।
नगर—पु० पुर, शहर।
नगराई—स्त्री० नागरिकता, चतुराई।
नगरी—स्त्री० नगर। पु० नागरिक।
नगवासी—स्त्री० नागपाश 'रोवँ रोवँ परे, फद नगवासी।' प० ४३
नगाड़ा, नगारा—पु० डुगडुगी, डंका।
नगी—स्त्री० नगीना, रत्न। पहाड़ी स्त्री। पर्वत-कन्या, पार्वती।
नगीच—क्रिवि० निकट, नजदीक (रघु० २१८)।
नगीना—पु० शीशे, पत्थर आदिका टुकड़ा, रत्न।
नगेसरि—पु० एक पेड़, नागकेशर।
नग्न—वि० नंगा, वस्त्रहीन।
नग्र—पु० नगर, पुर (सुजा० ११)।
नग्रोध—पु० वटका पेड़।
नघना—सक्रि० नाँघना, पार करना।
नवाना—सक्रि० पार कराना।
नचना—अक्रि० नृत्य करना। इधर उधर घूमना (उदे० 'कुबाक')।
नचनि—स्त्री० नाच।
नचनिया, नचवैया—पु० नाचनेवाला (उदे० 'उड़सना')।
नचाना—सक्रि० नृत्य कराना, इधर उधर घुमाना या दौड़ाना, हैरान करना।
नचीला—वि० चंचल (उदे० 'छकीला')।
नचौहा—वि० नाचनेमें प्रवृत्त, चंचल 'भिहँसौंहे से बदनमें लसत नचैहें नैन।' मति० १७४
नछत्र—पु० तारोंका समूह।
नछत्री—वि० भाग्यवान्।
नज़दीक—क्रिवि० पास, समीप।
नज़र—स्त्री० दृष्टि, चितवन। ख़याल, कृपादृष्टि। कुदृष्टि, दृष्टिका कुप्रभाव। उपहार।
नज़रना—सक्रि० देखना। नज़र लगाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नज़रबंद—वि० पहरे या निगरानीमें रखा हुआ। पु० इन्द्रजाल।

नज़रबंदी—स्त्री० कड़ी निगरानीमें रखे जानेकी सजा। इन्द्रजाल, जादूगरी।

नज़रानना—सक्रि० नज़र लगाना। नज़र करना, भेंटमें देना।

नज़राना—पु० उपहार। सक्रि० नज़र लगाना। अक्रि० [नज़र लगना।

नज़ाकत—स्त्री० सुकुमारता।

नज़ारा—पु० दृश्य, दृष्टि।

नजिकाना—अक्रि० नजदीक पहुँचना 'जान्यो भूप मीच नजिकानी।' रघु० १९१

नजीक—क्रिवि० नजदीक, पास (सुन्द० ८६)।

नज़ीर—स्त्री० मिसाल, उदाहरण।

नट—पु० अभिनेता, नाट्यकलामें चतुर व्यक्ति। एक जातिके लोग जो कसरतें, तमाशे आदि करके निर्वाह करते हैं 'इतहिं उतहिं चित दुहुँनके नटलों आवत जात।' वि० ८२

नटखट—वि० उपद्रवी, चंचल, चालाक।

नटना—अक्रि० नाट्य करना, नृत्य करना 'कूजत विहग नटत कल मोरा।' रामा० १२५। पहिले स्वीकार करना, फिर नाहीं करना 'सौंह करैं भौंहन हँसै, दैन कहै नटि जाय।' वि० १९५। सक्रि० नष्ट करना।

नटनि—स्त्री० नाच। अस्वीकृति। नटकी स्त्री।

नटवना—सक्रि० अभिनय करना, नाट्य करना 'एक ग्वालि नटवति बहु लीला ..'—सू० २६२

नटवा—पु० नाटा बैल।

नटसार, नटसारा—स्त्री० नाट्यशाला, अभिनय करनेका स्थान।

नटसारी—स्त्री० नटबाजी 'जिनि नटवै नटसारी साजी' —कबीर २२७

नटसाल—स्त्री० फाँस या काँटेका वह भाग जो टूटकर शरीरके भीतर रह जाय। तीरकी गाँसी। पीड़ा, रह रह कर होनेवाली व्यथा 'उठै सदा नटसाल लौं सौतिनके उर साल।' वि० २५२

नठना—सक्रि० नष्ट करना। अक्रि० नष्ट होना।

नढ़ना—सक्रि० गूँथना। कसना।

नत, नतु—क्रिवि० नहीं तो 'नतु मारे जैहैं सब राजा।' रामा० १४७, (उदे० 'कुँआरा')

नतपाल—पु० प्रणतपाल, शरणागत-रक्षक 'प्रीतिरीति समुझाइबी नतपाल, कृपालुहिं परमिति पराधीनकी।' विन० ६२७

नतर, नतरक, नतरु—क्रिवि० नहीं तो 'नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी।' रामा० २३४

नति—स्त्री० प्रणाम (रामा० २४४, रघु० २०९)।†

नतीजा—पु० परिणाम। [† विनय, नम्रता। झुकाव।

नतैत—पु० नातेदार, सम्बन्धी।

नत्थी—स्त्री० एक साथ नाथने या बाँधनेकी क्रिया।

नथ—स्त्री० नाकका एक भूषण (रवि० ३७)।

नथना—अक्रि० नाथा जाना। पु० नाकका छेद, बैल इ० की नाक।

नथनी, नथिया, नथुनी—स्त्री० छोटी नथ, बुलाक (मति० १८२)।

नद—पु० बड़ी नदी। पुल्लिंग नामवाली नदी।

नदना—अक्रि० नाद करना (उदे० 'गहगह')। रँभाना। आवाज़ करना, बजना।

नदान—वि० नादान, नासमझ, अल्पवयस्क।

नदारद—वि० गायब।

नदिया, नदी—स्त्री० दरिया, जल इत्यादिका प्रवाह।

नद्दना—दे० 'नदना'।

नधना—अक्रि० जुतना, जुड़ना, सम्बद्ध होना।

ननंद, ननद—स्त्री० पतिकी बहिन।

ननकारना—अक्रि० अस्वीकार करना।

ननदोई—पु० ननदका पति।

ननसार—स्त्री० ननिहाल।

ननिअउरा, ननिआउर—पु० ननिहाल (रामा० २०७)।

ननिहाल—पु० नानाका घर।

नन्हा—वि० छोटा।

नन्हाई—स्त्री० छोटापन, बदनामी।

नपाक—वि० अपवित्र।

नपुंसक—पु० क्लीव, कायर। नामर्द

नपुत्री—वि० निपुत्री, निःसन्तान।

नफर—पु० सेवक (साखी १०७)।

नफरत—स्त्री० घृणा।

नफा—पु० लाभ।

नफीरी—स्त्री० तुरही 'बाजहिं भेरि नफीरि अपारा।' रामा० ४७३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवेड़ना, नवेरना—सक्रि० तै करना 'झगरा एक नवेरौ राम…' कबीर ९७। निपटाना। चुनना।

नवेरा—पु० निपटारा, निर्णय 'अवधू सो जोगी गुर मेरा, जो या पदका करै नवेरा।' कबीर १४३

नवेला—वि० जवान, नया 'कटितट बिच मेला पीत सेला नवेला।' रहीम ३०

नव्ज—स्त्री० नाड़ी।

नभ—पु० आकाश। शून्य। आश्रय। भाद्रपदया श्रावण। शिव। बादल। वर्षा। जल।

नभग—पु० पक्षी, बादल, हवा, देवता, ग्रहादि। वि० अभागा। नभगनाथ = गरुड़।

नभचर—पु० देखो 'नभग'।

नभधुज—पु० बादल।

नमक—पु० लवण, नोन।

नमकहराम—पु० कृतघ्न।

नमकहलाल—पु० स्वामिभक्त।

नमकीन—वि० नमकके से स्वादवाला, जिसमें नमक मिला हो। सलोना, सुन्दर।

नमना—अक्रि० प्रणाम करना, झुकना।

नमनि—स्त्री० प्रणाम, झुकाव, नम्रता।

नमनीय—वि० प्रणाम करने योग्य। जो झुक सके।

नमसकारना—सक्रि० अभिवादन करना '…एक निराधार हृदय नमसकारूँ।' कबीर २०२

नमस्कार—पु० प्रणाम।

नमाज़—स्त्री० मुसलमानोंकी ईश्वर-स्तुति।

नमाना—सक्रि० नवाना, झुकाना, वशमें करना।

नमी—स्त्री० तरी, गीलापन।

नमूना—पु० बानगी, आदर्श।

नम्र—वि० विनीत।

नय—पु० नीति, नम्रता। निर्णय। स्त्री० नदी 'केते औगुन जग करत नय वय चढ़ती बार।' बि० १९५

नयकारी—पु० नर्त्तकोंका मुखिया, नर्त्तक। [(वंग०)

नयन—पु० नेत्र। नयनपट = नेत्रकी पलक।

नयना—अक्रि० नवना, झुकना 'सो न नयो तिल सीस नये सब।' राम० ६३। नम्र-होना। प्रणाम करना 'रघुबीर-बन्धु प्रतापपुंज बहोरि प्रभु-चरननन्हि नयो।' [रामा० ५०१

नयनागर—वि० नीति-निपुण।

नयनू—पु० नैनू, मक्खन। वस्त्रविशेष।

नया—वि० नूतन, हलका, ताज़ा।

नर—पु० मनुष्य, पुरुष। अर्जुन। नल 'नरकी अरु नर नीरकी एकै गति करि जोइ।' बि० १३५। वि० पुरुष वर्गका, मादाका उलटा।

नरकंत—पु० राजा।

नरक—पु० पापियोंके दण्ड भोगनेकी जगह, दोजख। कष्टमय या गन्दा स्थान।

नरकट,-कुल—पु० एक पौधा जिसकी चटाइयाँ बनती हैं।

नरकेसरी, नरकेहरी—पु० नृसिंह।

नरतात—पु० नरेश, राजा।

नरद—स्त्री० चौसरकी गोटी 'फूटेतें नरद उठि जात बाजी चौसरकी आपुसके फूटे कहु कौनको भलो भयो।' [गंग कवि

नरदन—स्त्री० गरजना।

नरदा—पु० मैले पानीकी मोरी।

नरदारा—पु० जनाना, नपुंसक, डरपोक।

नरदेव,-नाथ,-नायक—पु० राजा।

नरनारि—स्त्री० नर (अर्जुन) की स्त्री, द्रौपदी [(विन० ४९९)।

नरनाह—पु० नरेश, राजा।

नरम—वि० कोमल, मुलायम।

नरमाई—स्त्री० नरमी, कोमलता।

नरमाना—सक्रि० मुलायम करना, शान्त करना। अक्रि० नरम हो जाना।

नरमी—स्त्री० कोमलता।

नरवाई—स्त्री० एक तरहकी घास। गेहूँकी बाल या घासका डंठल।

नरवाह, नरवाहन—पु० पालकी 'जालिमसिंह बैठि नरवाहन जब गढ़ बाहर आयो।' सुजा० १२६

नराच—पु० बाण, तीर।

नराजना—सक्रि० नाराज़ करना (प० ६६)। अक्रि० नाराज़ होना।

नराट, नराधिप—पु० नरेश, राजा।

नरिंद—पु० राजा।

नरि—स्त्री० नदी 'खरि नरि बेग भासलि नाइ।' विद्या० १७०

नरिअर, नरियर—पु० नारियल।

नरियाना—अक्रि० ज़ोर ज़ोरसे चिल्लाना।

नरी—स्त्री० नली, स्त्री (रवि० ५८)। एक घास। बकरेका चमड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नरेश, नरेस—पु० राजा।
नर्क—पु० नरक, दोजख।
नर्तना—अक्रि० नाचना।
नर्द—दे० 'नरद'
नर्म—पु० हँसी, उट्ठा। हँसी करनेवाला मित्र। देखो 'नरम'।
नर्मी—स्त्री० देखो 'नरमी'।
नल—पु० राजा नल। नरकट। कमल। पोली, लम्बी वस्तु; नली।
नलनी—स्त्री० नलिनी।
नलिका—स्त्री० नली। अस्त्रविशेष। एक यंत्र। तरकश।
नलिन—पु० कमल। जल। नील। सारस पक्षी।
नलिनी—स्त्री० कमलिनी। वह कमल जो रात्रिको खिलता है। नदी।
नली—स्त्री० देखो 'नलिका'।
नव—पु० नौकी संख्या। स्तुति। वि० आठसे एक ज्यादा। नूतन, नया।
नवका—स्त्री० नाव 'नवका नाहीं हौं लै जाऊँ।' सूवे० ३५
नवछावरि—स्त्री० न्येवछावर, उतारा, इनाम।
नवतन—वि० नया, ताज़ा।
नवन—पु०, नवनि—स्त्री० नम्रता, झुकनेकी क्रिया (रामा० ३७६)।
नवना—अक्रि० नमन करना, झुकना। नम्र होना।
नवनी—स्त्री०, नवनीत—पु० मक्खन।
नवमालिनी—स्त्री० नवमल्लिका, चमेली।
नवरंग—वि० शोभावान्, रँगीला। नवेला।
नवरंगी—वि० नये नये आनन्द करनेवाला। प्रसन्न-चित्त। स्त्री० नारंगीका फल।
नवरत्न—पु० हीरा, मोती, पन्ना, गोमेद, लहसुनिया, नीलम, मूँगा, माणिक्य, पुखराज। विक्रमादित्यकी सभाके नौ विद्वान्—कालिदास, शंकु, अमरसिंह, धन्वंतरि, वराहमिहिर, वैताल भट्ट, घटखर्पर, क्षपणक, वररुचि।
नवरस—पु० काव्यके नौ रस—शृंगार, करुण, इ०।
नवरा—पु० नेवला।
नवरात, नवरात्र—स्त्री० चैत्रसुदी १ तथा कुआँर सुदी १ से नवमी तक।
नवल—वि० नया। युवा। सुन्दर। स्वच्छ।
नवला—स्त्री० युवती।
नवसत, नवसत - वि० नौ और सात अर्थात् सोलह। पु० सोलह शृंगार 'सखी नवसत साजि लीन्हें कहत मधुरे बोल।' सू० १८७, (कबीर ४७)
नवसर—वि० नयी उमरका (सूवे ८०)। पु० नौलरा हार।
नवससि—पु० दूजका चाँद।
नवसिखा—वि० नौसिखुआ।
नवाई—वि० नवीन। स्त्री० विनय, नम्रता।
नवाजना—सक्रि० दया दिखलाना, अनुग्रह करना।
नवाना—सक्रि० नम्र करना, झुकाना।
नवाब—पु० बादशाहका प्रतिनिधि। एक उपाधि। अमीरी ठाठबाटसे रहनेवाला।
नवाह—पु० वर्षका नया दिन। नौ दिनमें समाप्त होनेवाला रामायणका पाठ।
नवीन—वि० नया, हालका। विचित्र।
नवेद—पु० निमंत्रणपत्र, न्यौता।
नवेला—वि० तरुण। नया (उदे० 'अनु')।
नवेली—स्त्री० युवती स्त्री। वि० स्त्री० तरुणावस्थावाली, नयी।
नवोढ़ा—स्त्री० नवविवाहिता वधू। युवती स्त्री।
नशना—अक्रि० देखो 'नसना'।
नशा—पु० उन्मादकी दशा, मद, गर्व। मादक वस्तु।
नशाना—सक्रि० देखो 'नसाना'।
नशीला—वि० मादक, नशा पैदा करनेवाला।
नशोहर—वि० नाशक।
नश्वर—वि० नाशवान्, भंगुर।
नष—पु० नख, नाखून।
नषत—पु० नखत, नक्षत्र।
नषशिष—पु० देखो 'नखशिख'।
नष्ट—वि० ध्वस्त, बिगड़ा हुआ। जो अदृश्य हो। धनहीन। नीच। व्यर्थ 'नगर नष्ट सरिता बिना, ग्राम नष्ट बिन कूप।'
नसंक—वि० निःशंक, निर्भय।
नस—स्त्री० रुधिरवाहिनी नलिका, शरीरतन्तु।
नसतरंग—पु० एक तरहका बाजा।
नसना—अक्रि० नष्ट होना। बिगड़ जाना। दौड़ना।
नसल—स्त्री० वंश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नसाना, नसावना—सक्रि० नष्ट करना, बिगाड़ना। अक्रि० नष्ट होना, बिगड़ जाना 'अबहीं नसानी, अब न नसैहौं।' विन० २६७

नसीनी, नसेनी—स्त्री० सीढ़ी।

नसीब—पु० भाग्य, क़िस्मत।

नसीला—वि० नशेसे भरा हुआ, मदपूर्ण (उदे० 'छबीला')।

नसीहत—स्त्री० सिखावन, उपदेश, सलाह।

नस्वर—वि० नश्वर, नाशवान्।

नहँ—पु० नख, नाखून।

नहछू—पु० विवाहकी एक रीति जिसमें वरके नाखून आदि काटे जाते हैं।

नहना—सक्रि० जोतना, काममें लगाना 'नतु और सबै विष बीज बये हर-हाटक काम-दुहा नहि कै।' कवित्त० २११, (सूदे० ३३३)

नहनि—स्त्री० पुरवट खींचनेका रस्सा।

नहर—स्त्री० कृत्रिम जलमार्ग।

नहरनी—स्त्री० नख काटनेका औज़ार (उदे० 'चुनी')।

नहरुआ, नहरुवा, नहरू—पु० एक रोग जिसमें घावमेंसे सूतकी तरह कोई चीज़ निकलती है।

नहलाना, नहवाना—सक्रि० स्नान कराना।

नहसुत—पु० नखचिह्न, नख-रेखा।

नहान—पु० स्नान, स्नानपर्व।

नहाना—अक्रि० स्नान करना, बिलकुल तर हो जाना।

नहारी—स्त्री० कलेवा, जलपान।

नहिं, नहिंन—अ० नहीं।

नहिअन—पु० बिछियाके सदृश एक आभूषण।

नहीं—अ० एक निषेध-सूचक अव्यय।

नाँउँ—पु० नाम।

नाँगा—वि० नंगा, वस्त्रहीन।

नाँघना—सक्रि० लाँघना, फाँदना 'वारिधि लाँघि एक कपि आवा।' रामा० ४।३, (उदे० 'गरेरना')

नाँडना—अक्रि० बिगड़ जाना, नष्ट भ्रष्ट होना, विपरीत होना।

नाँद—स्त्री० मिट्टीका बड़ा पात्र, हौदा। पु० गर्जन।

नाँदना—अक्रि० नाद करना, गरजना। प्रसन्न होना 'उठति दिया लौं नाँदि हरि लिये तुम्हारो नाम।' वि० ५२

नांदीमुख—पु० पुत्रजन्म, विवाह आदिके समयका श्राद्ध विशेष।

नाँयँ—पु० नाम। अ० नहीं।

नाँवँ—पु० नाम।

ना—अ० नहीं।

नाइ—स्त्री० नाव (उदे० 'नरि')।

नाइक—पु० नायक, मुखिया।

नाइन—स्त्री० नाई जातिकी स्त्री।

नाइब—पु० नायब, मुख्तार, सहायक।

नाईं—क्रिवि० सदृश, तरह। स्त्री० समान दशा।

नाई—पु० नाऊ, नापित।

नाउँ, नाऊँ—पु० नाम।

नाउ—स्त्री० नाव, नौका 'इन नैननके नीर सखीरी सेज भई घरनाउ।' सू० २०२

नाऊ—पु० हज्जाम।

नाकंद—वि० गाड़ीमें फाँदकर न निकाला हुआ, अशिक्षित (बैल इ०)।

नाक—पु० स्वर्ग, आकाश। स्त्री० घ्राणेन्द्रिय, नासिका। प्रतिष्ठा। प्रतिष्ठाकी वस्तु। गर्व।—**कटना** = अप्रतिष्ठा होना।—**का बाल** = अधिक प्रिय, घनिष्ठ मित्र।—**चढ़ना** = क्रोध होना।—**भौं सिकोड़ना** = घिनाना, अप्रसन्नता जताना।—**में दम करना** = बहुत सताना।—**रगड़ना** = विनय करना, खुशामद करना। **नाकों आना** = बहुत तंग होना। **नाकों चने चबवाना** = तंग करना।

नाकड़ा—पु० देखो 'नकड़ा'।

नाकना—सक्रि० नाँघना, पार करना। मात कर देना। '(लक्ष्मी) सूरनि नाकति ज्यों अहि देखि।' के० ५२

नाकबुद्धि—वि० जो नाकसे सूँघ कर भक्ष्याभक्ष्यका निर्णय करे, बुद्धिसे काम न ले। ओछी बुद्धिका।

नाका—पु० प्रवेश-द्वार, फाटक (सूरा० १४)। रास्तेका आरंभ स्थान। चौकी (उदे० 'गाद')। (सुईका) छेद 'गुरप्रसाद सूईके नाकै हस्ती आवै जाहीं।' कबीर ९१

नाकाबन्दी—स्त्री० फाटक आदिका छेंका जाना, घिराव। पु० चौकीदार, सिपाही।

नाकेदार—पु० नाकेका सिपाही या अन्य कर्मचारी।

नाकेबंदी—स्त्री० पु० देखो 'नाकाबंदी'।

नाखना—सक्रि० नाँघना (सुजा० १३८)। उल्लंघन करना 'हाथ चाप बाण ले गये गिरीश नाखिके।' राम० २६४। बिगाड़ना, नष्ट करना 'उन उर दोष धर्‌यो,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुन नाख्यो।' छत्र० ३४। दूर करना, फेंकना, डालना 'तृन ऊपर मृतिका नाखी, तब ऊपर हथिनी राखी।' सुन्द० (कर्कौ० ३२२), (भ्र० ३२)

नाखून—पु० नख।

नाग—पु० सर्प। हाथी। जाति विशेष। एक पहाड़। पान। आठकी संख्या।

नागझाग—पु० अफीम, अहिफेन।

नागफनी—स्त्री० एक पौधा। कानका एक भूषण।

नागफेन—पु० अफीम।

नागबेल—स्त्री० नागवल्ली। पानकी बेल।

नागर—वि० नगर सम्बन्धी। चतुर। सुन्दर (राम०३८८)। पु० नगरमें रहनेवाला व्यक्ति। चतुर या शिष्ट मनुष्य।

नागरता—स्त्री० नागरिकता। नगर जैसी रहन-सहन, शिष्टता, चतुरता।

नागरबेल—स्त्री० पानकी लता।

नागरिक—पु० नगरनिवासी। वि० नगर सम्बन्धी। चतुर।

नागरी—स्त्री० नगरमें रहनेवाली स्त्री, चतुर स्त्री। वह लिपि जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी लिखी जाती है।

नागवार—वि० अप्रिय।

नागा—पु० साधु विशेष। बीच, अंतर (दीन० १३७); वि० खाली, नंगा (कबीर २४)।

नागेसर—पु० एक पेड़।

नाच—पु० नृत्य (उदे० 'चौप'), क्रीड़ा, खेल। कृत्य, प्रयत्न। —काछना = नृत्यकी तैयारी करना।— नचाना = जैसा चाहे वैसा कराना, तंग करना। नाचरंग = आमोदप्रमोद।

नाचना—अक्रि० नृत्य करना, खुशीके मारे उछलना कूदना। भ्रमण करना, भटकना, स्थिर न रहना, काँपना। सिरपर नाचना = ग्रसना, घेरना 'तियमिस मीचु सीसपर नाची।' रामा० २१५

नाचार—वि० लाचार, असहाय। व्यर्थ। क्रिवि० [लाचार होकर।

नाज—पु० अनाज, खाद्य वस्तु।

नाज़—पु० हाव-भाव। नाजनी = सुंदरी स्त्री।

नाजुक—वि० सुकुमार, सूक्ष्म, पतला।

नाट—पु० नाट्य, स्वांग, नृत्य।

नाटक—पु० पात्रों द्वारा विशेष रूप, हाव-भाव, वचन आदिकी सहायतासे घटनाओंका प्रदर्शन, अभिनय। दृश्य काव्य।

नाटकी—पु० नाटक करनेवाला, नाटक करके जीवन-निर्वाह करनेवाला।

नाटना—अक्रि० कही हुई बातसे फिर जाना, प्रतिज्ञा भंग करना। सक्रि० इनकार करना।

नाटा—वि० छोटे कदवाला। पु० छोटे डीलवाला, बैल इ०।

नाट्यकार—पु० नाटक करनेवाला, नट, अभिनेता।

नाठ—पु० नाश, प्रभाव।

नाठना—सक्रि० नष्ट करना, बिगाड़ना। अक्रि० नष्ट होना (कबीर १९१), 'साँठि नाठि किछु गाँठि न रहा।' प० २०५। हटना, भाग जाना।

नाठा—पु० वह व्यक्ति जिसका कोई वारिस न हो।

नाड़ा—पु० नीवी, इजारबन्द।

नाड़ी—स्त्री० रुधिरवाहिनी नलिका, धमनी।

नात—पु० नाता 'हमहिं नृपति सों नात है तातें हम माँगे।' सूर्व० २८३। नातेदार, रिश्तेदार।

नातर, नातरि, नातरु—अ० नतरु, नहीं तो 'भली भई जो गुरु मिले नातर होती हानि।' साखी ५, 'आध पैंड दे वसुधा राजा नातरि चल सति हारी।' सू० २९, (प० १३७)

नातवाँ—वि० निर्बल, हीन।

नाता—पु० रिश्ता, सम्बन्ध 'तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जु भावै।' विन० २२६

नाती—पु० बेटीका बेटा (बेटेका बेटा)।

नाते—क्रिवि० सम्बन्धसे। वास्ते, लिए ['दूध दहीके नाते बनवत बातें बहुत गुपाल।' सू०]

नातेदार—वि० सम्बन्धी। सगा।

नाथ—पु० स्वामी, पति। बैलों इत्यादिकी नाकमें डाली गयी रस्सी। स्त्री० नथ।

नाथना—सक्रि० नाक छेदना, नकेल डालना, वशमें करना 'पैठि पताल व्याल गहि नाथ्यो···' सू० ६१

नाद—पु० ध्वनि, शब्द, संगीत।

नादना—अक्रि० बजना, गरजना, आवाज़ करना। आनन्दित होना, लहलहाना। देखो 'नाँदना'। सक्रि० [बजाना।

नादान—वि० मूर्ख, नासमझ।

नादिया—पु० नन्दी बैल।

नाधना—सक्रि० जोतना, जोड़ना, लगाना, बाँधना, गुहना, आरम्भ करना '···करिहै उजियारी ब्रज ऐसी रीति नाधी है।' रस० ३३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाना—पु० माताका पिता। वि० विविध, अनेक। सक्रि० नवाना, झुकाना, डालना 'मैं अज्ञान अकुलाइ अधिक लै जरन माँझ पुत नायो।' सूवि० ५२, 'महामूढ़ सो मूल तजि शाखा जल नावै।' सूवे० २१

नानिहाल—पु० ननिहाल, नानाका घर।

नान्ह--वि० नन्हा, क्षुद्र, मलीन, छोटा 'संतेश मोको कछु देहु शिक्षा। नान्हीं बड़ी ईश जु होय इच्छा।' राम० ४२८, (सूवे० २५२)। नान्ह कातना = सूक्ष्म या कठिन काम करना।

नान्हरिया—वि० नन्हा, छोटा (सूवे० ५१)।

नान्हा—वि० देखो 'नान्ह'। पु० छोटा बालक।

नाप—स्त्री० माप, परिमाण।

नापना—सक्रि० लम्बाई, चौड़ाई इ० निश्चित करना।

नापाक—वि० अपवित्र, अशुद्ध।

नापित—पु० नाई, हज्जाम।

नाबदान—पु० पनाला।

नाभि, नाभी—स्त्री० पेटके बीचका छोटा गड्ढा, तुंदी, ढोंढी। चक्रमध्य। कस्तूरी। पु० प्रधान व्यक्ति।

नाम—पु० संज्ञा, अभिधान, आख्या। ख्याति, प्रसिद्धि। —उठना = वंशका नाश होना, कोई निशान न रह जाना। —के लिए = ज़रासा। —धरना = नाम स्थिर करना, दोष लगाना। —धराना = नाम स्थिर कराना, निन्दा करना।

नामदार, नामवर—वि० विख्यात।

नामधराई—स्त्री० अपकीर्त्ति, अप्रतिष्ठा।

नामनिशान—पु० चिन्ह।

नामलेवा—पु० नाम लेनेवाला, सन्तति, वारिस।

नामी—वि० नामवाला। प्रसिद्ध।

नायँ—पु० नाम। अ० नहीं।

नायक—पु० नेता, मुखिया। राजा। स्वामी (साखी९१)। काव्य आदिका प्रधान पात्र, हारके बीचकी मणि।

नायका—स्त्री० नायिका, रूप-रस-युक्त नारी। कुटनी।

नायन—स्त्री० देखो 'नाइन'।

नायब—वि० सहायक। मुनीब।

नायिका—स्त्री० रूपवती, गुणवती स्त्री। काव्यादिका प्रधान स्त्री पात्र।

नारंगी—स्त्री० एक पेड़ तथा उसका फल। वि० नारंगीके रंगका।

नार—स्त्री० नारी, स्त्री। गरदन, गला। पु० नरसमूह। सोंठ। जल। नाल, नारा, इजारबन्द, मोटा रस्सा।

नारकी—वि० नरक भोगनेवाला, पापी 'पाव नारकी हरि पद जैसे।' रामा० १८३

नारना—सक्रि० पता लगाना, थाह लेना 'ये मन ही मन मोको नारति।' सूवे० १७८

नार वेवार—पु० जन्मे हुए बच्चेकी नाल इ०।

नारा—पु० इज़ारबन्द। देवपूजनमें प्रयुक्त होनेवाला लाल सूत। नाला 'चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा।' रामा० २६२

नाराइन—पु० भगवान्। विष्णु।

नाराच—पु० लोहेका बाण।

नाराज़—वि० क्रुद्ध, अप्रसन्न।

नाराज़गी, नाराज़ी—स्त्री० अप्रसन्नता।

नारायण, नारायन—पु० विष्णु, ईश्वर।

नारि—स्त्री० नारी, स्त्री।

नारिकेल, नारियल—पु० एक पेड़ या उसका फल।

नारी—स्त्री० स्त्री। एक चिड़िया। वह रस्सी जिससे हल जुएमें बाँधा जाता है। देखो 'नाड़ी' तथा 'नाली'।

नाल—स्त्री० कमल आदिकी डाँड़ी, डण्ठल, नली। नवजात शिशुकी नाभिमें लगी हुई चमड़ेकी डोरी। पानी बहनेका स्थान। गोलाकार भारी पत्थर 'देखे जिन्हें ठाढ़े ह्वै अखाड़े बीच देत ताल नालको उठावै है उताल चूमि चूमिकै।' दीन० १४४

नालकी—स्त्री० इधर उधरसे खुली पालकी।

नाला—पु० जल बहनेका मार्ग, छोटी नदी। नारा, रंगीन गंडेदार सूत।

नाली—स्त्री० जल बहनेका मार्ग, मोरी। नाड़ी।

नावँ—पु० नाम।

नाव—स्त्री० नौका, किश्ती।

नावक—पु० एक तरहका छोटा बाण 'सतसैयाके दोहरे ज्यों नावकके तीर।' वि० उपस्क० ४१। मधुमक्खीका डंक। नाविक, केवट।

नावना—सक्रि० नवाना, डालना 'जूठो लेत सबनके मुखको अपने मुख लै नावत।' सूवे० ७७, (उदे० 'आम')। प्रविष्ट कराना।

नावर, नावरि—स्त्री० नौका। नावकी क्रीड़ा-विशेष। नावका एक खेल 'जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं।' रामा० ५०४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाश—पु० ध्वंस, लोप, अदर्शन।
नाशक—वि० नाश करनेवाला, मिटानेवाला, दूर करनेवाला।
नाशकारी—वि० नाश करनेवाला, संहारक।
नाशपाती—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल।
नाशवान्, नाशुक—वि० जो नष्ट होनेवाला हो, नश्वर।
नाश्ता—पु० जलपान, कलेवा।
नास—स्त्री० सुँघनी। देखो 'नाश'।
नासना—सक्रि० नष्ट करना (उदे० 'जलपना'), मार डालना। अक्रि० नष्ट होना, दूर होना 'संसृति सन्निपात दारुन दुख बिनु हरि कृपा न नासै।' विन० २२८
नासमझ—वि० निर्बुद्धि, मूर्ख, नादान।
नासा—स्त्री० नासिका। नाकका छेद।
नासिक, नासिका—स्त्री० नाक 'नासिक देखि लजानेउ सुआ।' प० ४६
नासूर—पु० भीतर दूर तक फैला हुआ घाव, नाड़ी-व्रण।
नास्तिक—पु० ईश्वरको न माननेवाला।
नाह—पु० स्वामी, प्रभु, पति 'दुसह सौति-सालैं सुहिय गनति न नाह-बेयाह।' वि० २४८। पु० बंधन। [पहियेका छेद।
नाहक—क्रिवि० व्यर्थ, बेमतलब।
नाहर—पु० व्याघ्र, सिंह 'नाह गरजि नाहर-गरज बोल सुनायो टेरि।' वि० ९१, (उदे० 'नाहना')
नाहरू—पु० नहरुवा नामका रोग। नाहर, सिंह 'मारसि गाइ नाहरू लागी।' रामा० २१६
नाहिन, नाहीं—अ० नहीं।
नित—क्रिवि० नित्य, हमेशा।
निंदना—सक्रि० निन्दा करना, भला बुरा कहना (उदे० 'नंद'), 'निन्दहिं आपु सराहहिं मीना।' रामा० २४०
निंदरना—सक्रि० निन्दा करना, निरादर करना 'नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी।' रामा० ४१६
निंदरिया—स्त्री० निद्रा (सूबे० ४७)।
निंदा—स्त्री० बुराईका वर्णन। अपयश।
निंदिया—स्त्री० निद्रा।
निंब—स्त्री० नीमका पेड़।
निंबकौरी—स्त्री० नीमका फल 'काहु गही केराकै बौरी। काहु हाथ परी निंबकौरी।' प० ८८

निःकपट; निःकाम—दे० 'निष्कपट', 'निष्काम'।
निःकारण—वि० देखो 'निष्कारण'।
निःछल; निःपाप—दे० 'निश्छल', 'निष्पाप'।
निःफल; निःशंक—दे० 'निष्फल', 'निश्शंक'।
निःशेष; निःसंकोच—दे० 'निश्शेष', 'निस्संकोच'।
निःसंतान; निःसंदेह—दे० 'निस्संतान', 'निस्संदेह'।
निअर—क्रवि० पास, समीप। वि० समान।
निअराना—अक्रि० पास आना, निकट होना। सक्रि० पास पहुँचना।
निआउ—पु० न्याय 'नीक सगुन बिबरिहि सगर होइहि धरम निआउ।' रामाज्ञा०
निआन—पु० निदान, परिणाम 'जो निआन तन होइहि छारा। माटिहि पोखि मरै को भारा?' प० ५५।
निआमत—स्त्री० बहुमूल्य वस्तु। [अ० अंतर्में।
निआरा—वि० न्यारा, पृथक्। निराला।
निकंटक—वि० निष्कंटक, निर्विघ्न।
निकंदना—सक्रि० नाश करना 'तीरथ ब्रत बिष बेलरी सब जग राखा छाय। कबीर मूल निकंदिया कौन हलाहल खाय।' साखी १८१
निकट—क्रिवि० समीप, पास। वि० समीपका।
निकम्मा—वि० जो कोई काम न करे, जो किसी काममें न आवे, निरुपयोगी।
निकर—पु० राशि, समूह। देय धन। निकलना, उदय 'जासु बचन रबिकर निकर।' रामा० ३
निकरना—अक्रि० प्रकट होना, उदय होना। देखो 'निकलना' (उदे० 'ओबरी', 'चौगान')।
निकलंक—वि० निष्कलंक, दोषरहित।
निकलंकी—वि० कलंकहीन। पु० विष्णुका कल्कि अवतार।
निकलना—अक्रि० प्रकट होना, उदय होना, बाहर होना, दूर होना, अलग होना, व्यतीत होना, आरंभ होना या जारी होना, उत्पन्न होना, पार होना, जिस्से ठहरना, प्रमाणित होना, सरना, सपना, मिलना।
निकष, निकषण—पु० कसौटी।
निकसना—अक्रि० देखो 'निकलना' (अ० ५१)।
निकाई—स्त्री० उत्तमता, भलाई। सुन्दरता। 'राम निकाई रावरी है सबहीको नीक।' रामा० २२। पु० सुख।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निकाज—वि० निकम्मा।
निकाम—वि० बेकाम, निरुपयोगी, बुरा, निकम्मा (उदे० 'कौड़ी')।
निकाय—पु० राशि, समूह। वासस्थान।
निकार—पु० निष्कासन। निकास, निकलनेका द्वार। अपमान, पराभव।
निकारना, निकालना—सक्रि० बाहर लाना, पृथक् करना, दूर करना, प्रकट करना, उत्पन्न करना, जारी करना, बचाना, काढ़ना।
निकास—पु० निकलनेकी क्रिया या भाव। द्वार, मैदान, उद्गम स्थान। बचावका मार्ग। निर्वाहका ढंग, आमदनी। वि० तुल्य, सदृश 'सनोर जीमूत निकास सोभहीं।' राम० ४३५
निकासना—सक्रि० देखो 'निकालना'।
निकिष्ट—वि० अधम, तुच्छ।
निकुंज—पु० लतामंडप।
निकृष्ट—वि० क्षुद्र, तुच्छ, अधम।
निकेत, निकेतन—पु० घर, वासस्थान।
निकोसना—सक्रि० दाँत पीसना, दाँत निकालना।
निकौनी—स्त्री० निरानेका कार्य या मजदूरी।
निक्षिप्त—वि० फेंका हुआ, धरोहर रखा हुआ, त्यक्त।
निखंग—पु० निषंग, तरकश, तूणीर (सू० २३)।
निखट्टर—वि० निष्ठुर हृदयवाला, निर्दय।
निखट्टू—वि० सब जगह झगड़ा-फसाद करनेवाला, अवारा, निकम्मा।
निखरना—अक्रि० मैल छँट जाना, साफ होना।
निखरी—स्त्री० पत्ती (रसोई), सब्जीका उलटा।
निखर्व—वि० दस सहस्र कोटि।
निखवल—वि० सब, बिलकुल।
निखाद—पु० विषाद।
निखार—पु० स्वच्छता, सजावट।
निखारना—सक्रि० साफ करना, पवित्र करना।
निखिल—वि० सम्पूर्ण।
निखुटना, निखूटना—अक्रि० घट जाना, समाप्त होना 'बाती खूटी तेल निखूटा···' कबीर ३०९, (२६६)
निखेध—पु० निषेध, मनाही, रुकावट।
निखेधना—सक्रि० निषेध करना, मना करना।
निखोट, निखोटि—वि० दोषरहित, स्वच्छ, स्पष्ट। क्रिवि० साफ साफ, खुल्लम खुल्ला 'बड़ी अटारी बाम वह कियो प्रणाम निखोट।' रस० ११, (मति० २२९)
निखोरना—सक्रि० नखसे नोचना।
निगंध—वि० निर्गन्ध, वासरहित।
निगड़—स्त्री० हाथी बाँधनेकी जंजीर, बेड़ी।
निगम—पु० वेद। मार्ग। बाज़ार।
निगर—वि० सब। पु० समूह, झुण्ड। भोजन।
निगरानी—स्त्री० देखरेख।
निगरु—वि० गुरुका उलटा, हलका, भारी नहीं।
निगलना—सक्रि० खा जाना, हड़प जाना, पचा जाना।
निगाली—स्त्री० हुक्केकी नलीका वह अंश जो धुआँ खींचते समय मुँहमें रहता है।
निगाह—स्त्री० दृष्टि, नज़र, कृपादृष्टि। परख। समझ।
निगिभ—वि० परम गोपनीय, परम प्रिय।
निगुण, निगुन—वि० सत्व, रज, तमसे परे। बुरा।
निगुनी—वि० गुणरहित।
निगुरा—वि० विना गुरुका 'जो निगुरा सुमिरन करै दिनमें सौ सौ बार।' साखी १६, (उदे० 'ऊमट')। अदीक्षित, विना धर्मकर्मका।
निगूढ़—वि० बहुत गुप्त, रहस्यमय।
निगोड़ा—वि० अभागा, अनाथ, असहाय, दुष्ट, नीच 'चाप निगोड़ो अबै जरि जाउ चढ़ै तो कहा न चढ़ै तो कहा है।'
निग्रहना—सक्रि० पकड़ना, सज़ा देना, रोकना।
निघटना—अक्रि० घटना, कम होना, बीतना 'नगर नारि नर व्याकुल कैसे। निघटत नीर मीनगन जैसे।' रामा० २९६। (उदे० 'उघरना', सू० ६२)। सक्रि० नष्ट करना।
निघरघट—वि० जिसका कहीं ठौर ठिकाना न हो, निर्लज्ज।—देना = निर्लज्ज होकर बहाना बनाना।
निघरा—वि० घरबारसे हीन। निगोड़ा, दुष्ट।
निचय—पु० समूह, राशि। निश्चय।
निचल—वि० निश्चल, अटल।
निचला—वि० नीचेवाला, नीचेका। स्थिर, अचल।
निचाई—स्त्री० नीचापन, ओछापन।
निचान—पु० निचाई, ढालुआँपन।
निचिंत—वि० बेफिक्र (उदे० 'गंजन', सुन्द० ४६)।
निचुड़ना, निचुरना—अक्रि० पानी आदिका टपक कर निकल जाना (उदे० 'छलकना')। सारहीन होना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निचै—पु० समूह, राशि 'ज्यों चकोर बस चन्दके चाभत निचै अँगार।' दीन० ८७

निचोड़, निचोर—पु० निचोड़नेसे निकला रस इत्यादि। सार वस्तु, सारांश।

निचोड़ना, निचोरना—सक्रि० दबाकर रस आदि निकालना। रस टपकाना, सार भाग निकाल लेना 'बरनहुँ रघुबर बिशद जस श्रुति सिद्धान्त निचोरि।' रामा० ६६

निचोना—सक्रि० देखो 'निचोड़ना'। 'कोइ मुख अमृत आनि निचोवा।' प० ११५, (सूवे० २१५)

निचोल—पु० ऊपर ओढ़नेका वस्त्र, ओढ़नी। घाघरा। कपड़ा (के० ६१)।

निचोलक—पु० चोल, लंगा। सनाह।

निचोवना—सक्रि० देखो 'निचोना'।

निचौंहा—वि० नीचेकी ओर किया हुआ।

निचौंहैं—क्रिवि० नीचेकी ओर।

निछक्का—वि० एकान्त, निराला।

निछत्र—वि० छत्ररहित, राज्यरहित, क्षत्रियरहित।

निछनियाँ—क्रिवि० पूर्णतः, बिलकुल 'आजु गयो मेरो गाय चरावन हौं बलि गई निछनियाँ।' सूवे० ८७। वि० शुद्ध, खालिस, एक मात्र।

निछल—वि० निश्छल, कपटहीन।

निछान—वि० जिसमें मिलावट न हो, शुद्ध। बिलकुल, एक मात्र। क्रिवि० बिलकुल, पूर्णतः।

निछावर,-रि—स्त्री० शरीरपर घुमाकर दिया हुआ द्रव्य आदि, उतारा। इनाम।

निछोह,-ही—वि० प्रेमरहित, निर्मोही, क्रूर 'का पूछहु तुम बात निछोही।' प० १४०

निज—वि० अपना। यथार्थ, सच्चा। खास (अ० ४४)। अ० यथार्थमें, निश्चयपूर्वक, विशेष करके 'निजु शूद्रन-की तपस्या जिनु घालक।' के० २७५, (राम० ३३७)। बिलकुल 'आई उघरि कनक कठई ज्यों दै निज गये दगाई।' अ० ६४

निजकाना—सक्रि० नजदीक आना।

निजी—वि० अपना, खास।

निजु—वि०, क्रिवि० देखो 'निज' (विन० ४६३), 'निजु ये अधिकारी, सब सुखकारी···' राम० १७४

निजोर—वि० शक्तिहीन।

निजरना—अक्रि० भली भाँति छन जाना, समाप्त होना, सार वस्तुसे रहित होना 'मुंब पर एक बूँद महिं पहुँची निझरि गये सब मेह।' सूवे० १२५। सफाई देना

निटोल—पु० टोला, मुहल्ला, पल्ली 'किंकिरिनि की लाज धरि ब्रज सुबस करहु निटोल।' सूवे० ४१२

निट्ठि—क्रिवि० नीठि, ज्यों त्यों करके, कठिनतासे।

निठल्ला—वि० बेकार, निकम्मा।

निठुर—वि० निर्दय, कठोर।

निठुरई, निठुरता, निठुराई—स्त्री० कठोरता।

निठौर—पु० बुरा स्थान, बुरी दशा 'जिनको पिय परदेस सिधारो सो तिय परी निठौर।' सूवे० ३६०

निडर—वि० निर्भय, ढीठ, साहसी।

निड़ै—क्रिवि० निकट 'कबीर चंदनके निड़ै नींब भि चंदन होइ।' कबीर ८४

नितंत—क्रिवि० निपट, बहुत ज्यादा।

नितंब—पु० कमरके पीछेका भाग, चूतड़।

नितंबिनी—स्त्री० सुन्दर नितम्बोंवाली स्त्री।

नित—अ० नित्य, हमेशा, प्रतिदिन।

नितराम्—अ० सर्वदा।

नितांत—वि० अतिशय। बिलकुल, निपट।

नित्य—अ० सर्वदा, प्रतिदिन। वि० जो सर्वदा रहे अविनाशी, प्रतिदिनका।

नित्यप्रति—अ० प्रतिदिन।

नित्यशः—क्रिवि० प्रतिदिन, सर्वदा।

निथंभ—पु० खंभा।

निथरना—अक्रि० मैल नीचे बैठ जानेसे साफ होना, छन जाना।

निथारना, निथालना—सक्रि० पानी आदिको स्थिर कर साफ करना, पानी छान कर अलग करना।

निदई—वि० निर्दयी, निष्ठुर।

निदरना—सक्रि० निरादर करना, तिरस्कार करना, नाश करना (उदे० 'खेत'), 'निदरै कोटि कुलिस पटि छाती।' रामा० २९४, (सु० १०५)

निदर्शन—पु० दिखानेका ज्ञान, प्रदर्शन, दृष्टांत।

निदलन—पु० नाश, खंडन।

निदहना—सक्रि० दग्ध करना, जलाना।

निदाघ—पु० ग्रीष्म काल, गरमी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निदान—पु० कारण, आदि कारण, रोग-निर्णय (रामा० २२५)। अन्त। वि० निकृष्ट, निम्न श्रेणीका। अ० अन्तमें।
निदारुण—वि० कठिन, निर्दय। असहनीय।
निदाह—पु० निदाघ, गरमी (दास १०२)।
निदेश, निदेस—पु० आज्ञा, शासन, कथन (विन० [२४९)।
निदोष—वि० दोषरहित।
निद्र—पु० एक अस्त्र।
निद्रा—स्त्री० नींद।
निद्रालु—वि० सोनेवाला।
निद्रित—वि० सोया हुआ, सुप्त।
निधड़क—क्रिवि० बेखटके, निस्संकोच रूपसे।
निधन—वि० धनहीन। पु० मृत्यु, नाश।
निधनी—वि० धनहीन, दरिद्र।
निधरक—क्रिवि० देखो 'निधड़क'।
निधान—पु० आश्रय, घर, खजाना।
निधि—स्त्री० खजाना, सम्पत्ति। घर। समुद्र।
निधिप,-पति,-पाल—पु० कुबेर, धनपति।
निनरा—वि० न्यारा, दूर।
निनाद—पु० ध्वनि, आवाज़।
निनान—पु० विदान, अन्त। अ० अन्तमें। वि० निकृष्ट। घोर, बिलकुल।
निनार, निनारा—वि० न्यारा, जुदा, दूर (उदे० 'अंदेस'), 'वे हरिबल हम मीन बापुरी कैसे जिवहिं निनारे।' सू० २७३। निराला, अनोखा, चोखा 'ऐसेमें कोउकी लाज ज्यों केशव मारत कामहु बाण निनारे।' के० ६३
निनारी—पु० जीभ पर छोटे छोटे लाल दानोंका पड़ जाना।
निनौना—सक्रि० नवाना, झुकाना।
निनौरा—पु० ननिहाल।
निन्यारा—वि० न्यारा, जुदा।
निपंग—वि० हाथ-पाँवसे हीन, निकम्मा (साखी १२८)।
निपजना—अक्रि० उत्पन्न होना, बढ़ना, बनना 'ऊसर में बोये कहा निपजत अन है।' सुन्द० १३
निपजी—स्त्री० उत्पत्ति, उपज। लाभ।
निपट—अ० बिलकुल, निरा (उदे० 'कौड़ी')।
निपटना—दे० 'निबटना'।
निपटाना—सक्रि० पूरा करना, चुकाना, निर्णीत करना।
निपटारा निपटेरा—पु० समाप्ति, निर्णय, छुट्टी।
निपत्र—वि० पत्रविहीन।
निपाँगुर—वि० अपाहिज।
निपात—पु० पतन, नाश, मृत्यु। वि० पत्रहीन।
निपातना—सक्रि० गिराना 'करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता।' रामा० २१५। मारना (उदे० 'छेत')। काटकर गिराना 'केहि तव नासा कान निपाता।' रामा० ३७५, (३६३ भी)
निपाती—वि० गिरानेवाला। पत्रहीन।
निपीड़क—वि० पीड़ित करनेवाला, पेरनेवाला।
निपीड़ना—सक्रि० पीड़ित करना, दबाना, मलना।
निपुणाई—स्त्री० चतुरता, कुशलता।
निपुत्री—वि० निस्सन्तान।
निपुन—वि० चतुर, होशियार।
निपुनई,-नता,-नाई—स्त्री० चतुरता, दक्षता।
निपूत, निपूता—वि० निस्सन्तान।
निपोड़ना—सक्रि० (दाँत) निकालना, खोलना।
निफन—वि० पूर्ण। क्रिवि० पूर्ण रूपसे।
निफरना—अक्रि० धँसकर आरपार निकलना। स्पष्ट होना, प्रकट होना।
निफल—वि० निष्फल, व्यर्थ।
निफारना—सक्रि० छेदना, आरपार करना।
निफोट—वि० साफ साफ।
निबंध—पु० बंधन। लेख।
निबंधन—पु० बंधन, कर्तव्य। कारण।
निबकौरी—स्त्री० देखो 'निंबकौरी'।
निबटना—अक्रि० छुट्टी पाना, समाप्त होना, निवृत्त होना, निर्णीत होना।
निबटाना—सक्रि० देखो 'निपटाना'।
निबटाव, निबटेरा—पु० निर्णय, छुट्टी, समाप्ति।
निबड़—वि० देखो 'निबिड़'।
निबड़ना—अक्रि० देखो 'निबटना'।
निबर—वि० देखो 'निबल', (कबीर २१३)।
निबरना—अक्रि० छूटना, फन्देसे निकलना, मुक्त होना। फ़ुरसत पाना (उदे० 'गुबरना')। अलग होना, सुलझना। चुकना, न रह जाना 'जूझि कुँवर सब निबरे, गोरा रहा अकेल।' प० ३२०। सफलता, पूरा होना।
निबल—वि० निर्बल, अशक्त। [निर्णय होना।
निबह—पु० समूह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निबहना—अक्रि० निर्वाह होना (उदे० 'अंधधुंध'), पालन होना, सपरना, पूरा होना, समाप्त होना 'सब निबहै तहँ आपनि साँठी।' प० ५८, (अ० १६१), 'सखा धर्म निबहइ केहि भाँती।' रामा० ४३८, 'तौ कलि कठिन करम-मारग जड़ हम केहि भाँति निबहते।' विन० २५३। निपटना, छुट्टी पाना।

निबहुर—वि० जहाँसे कोई न लौटे (बहुरना = लौटना), 'सो दिल्ली बस निबहुर देसू। कोइ न बहुरा कहै संदेसू।' प० २९१

निबाह—पु० निर्वाह (उदे० 'अंत')। पालन, गुजारा, बचनेका रास्ता। परम्परा या सम्बन्धकी रक्षा।

निबाहना—सक्रि० निर्वाह करना, बनाये रखना (उदे० 'ओर'), पालन करना, पूरा करना, मुक्त करना, निकालना 'बाजु बयरु सब केहँ निबाही। जौं रन भूप भाजि नहिं जाही।' रामा० ५०५, (मति० १८९)

निबिड़—वि० घोर, घना, गहरा।

निबुआ—पु० नीबू।

निबुकना—अक्रि० बंधनसे मुक्त होना, बंधनका खुल जाना 'सुग्रीवहुँ कै मुरछा बीती। निबुक गयेउ तेहि सृंखल प्रतीती।' रामा० ४८७

निबेड़ना, निबेरना—सक्रि० निबटाना, पूरा करना, वसूल करना 'सूर गूर अक्रूर गये लै ब्याज निबेरत ऊधो।' अ०२६। निर्णय करना। मुक्त करना, बचाना (उदे० 'टाँड़ा'), सुलझाना, अलग करना '...नाम मिट्यो सलिलै भई सब-कौन निबेरै बारी।' सू० १०८। दूर करना 'लखन राम सिय जानहु फेरी। संसय सकल सँकोच निबेरी।' रामा० २४४। त्यागना (उदे० 'जीरना')। चुनना।

निबेड़ा, निबेरा—पु० निबटारा, फैसला। मुक्ति, निलगाव।

निबेहना—सक्रि० देखो 'निबेड़ना'।

निबौरी, निबौली—स्त्री० नीमका फल 'जीभ निबौरी क्यों लगै बौरी चाखि अँगूर।' वि० ८४

निभ—पु० चमक-दमक। वि० समान।

निभना—अक्रि० निबहना, गुजारा होना, पार पाना, पूरा होना, पालन होना 'कहु रहीम कैसे निभै केर बेरको संग।' रहीम १४

निभरम—वि० भ्रमरहित। क्रिवि० बेखटके (विन०५६५)

निभरोस, निभरोसी—वि० निराश, निराधार 'कीन्हेसि कोइ निभरोसी कीन्हेसि कोइ बरियार।' प०-२

निभाना—सक्रि० देखो 'निबाहना'।

निभृत—वि० धरा हुआ, गुप्त, एकांत। शान्त, नम्र। अचल।

निर्भ्रांत—वि० भ्रान्तिरहित, यथार्थ ज्ञानी, सन्देहरहित।

निमंत्रण—पु० किसी कार्यमें सम्मिलित होनेका अनुरोध, बुलावा, न्योता।

निमंत्रना—सक्रि० निमंत्रण देना।

निमग्न—वि० डूबा हुआ, तल्लीन।

निमज्जना—अक्रि० डूबना।

निमटना; निमटेरा—दे० 'निबटना', 'निबटेरा'।

निमता—वि० जो मतवाला न हो।

निमाज—स्त्री० देखो 'निवाज'—स्त्री।

निमान—पु० नीची जगह, सरोवर।

निमाना—वि० नीचा, नीचेकी ओर प्रवृत्त, विनीत।

निमि—पु० राजा जनकके वंशके प्रवर्त्तक। निमेष, आँखकी पलक।

निमिख—पु० पलकोंका गिरना, पलकोंके गिरनेमें जितना समय लगता है उतना।

निमित्त—पु० कारण। शकुन, चिह्न।

निमिष—पु० देखो 'निमिख'।

निमीलन—पु० पलक मारनेकी क्रिया। निमेष, क्षण।

निमेख, निमेष—पु० पलकका गिरना, पलक गिरने भरका समय।

निमेट—वि० न मिटनेवाला, स्थायी (प० ८४)।

निमोना—पु० हरी मटरके दानोंकी तरकारी।

निम्न—वि० नीचा।

निम्नगा—स्त्री० नदी।

नियंता—पु० नियंत्रण या शासन करनेवाला, विधायक, विधायक।

नियंत्रित—वि० नियमबद्ध, प्रतिबद्ध।

निय—वि० निज (उदे० 'सत')।

नियत—वि० निश्चित, मुकर्रर, परिमित, स्थापित। स्त्री० नीयत, इच्छा।

नियति—स्त्री० नियत होनेकी क्रिया, स्थिरता। भाग्य।

नियम—पु० विधि, क़ानून। व्रत। शासन, नियंत्रण। परम्परा।

नियमन—पु० नियंत्रण, शासन, व्यवस्था।

नियमित—वि० व्यवस्थित, क़ानूनसार, नियमानुसार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नियराई—स्त्री० निकटता।
नियराना—अक्रि० पास पहुँचना 'बरसहिं जलद भूमि नियराये। यथा नवहिं बुध विद्या पाये।' रामा० ४०२, (४१० मी)
नियरे—क्रिवि० समीप, पास (उदे० 'ठैयाँ')।
नियाई—वि० न्यायी 'जो जस करि है सो तस पइहै, राजा राम नियाई।' कबीर १५६
नियान—पु० निदान, परिणाम। अ० अन्तमें।
नियारना—सक्रि० अलग करना, हटाना 'गुप्त प्रीति परगट करौं कुडकी कान नियारि री।' सूबे० ११०
नियारा—वि० न्यारा, अलग (सूबे० ३४४, भ्र० १)।
नियाव—पु० नीति, न्याय, इंसाफ 'जाइ सरग पर होइहि एहि कर मोर नियाव।' प० २०१
नियुक्त—वि० लगाया हुआ, मुकर्रर।
नियोग—पु० नियुक्ति, प्रेरणा। आज्ञा। सन्तान उत्पन्न करानेकी एक प्रथा।
निरंकार—वि० निराकार 'अक्षर अच्युत निर्विकार है निरंकार है जोई।' सूबे० २२४
निरंकुश—वि० प्रतिबन्धरहित, मनमानी करनेवाला।
निरंजन—वि० अंजनविहीन, मायारहित।
निरंतर—क्रिवि० हमेशा, बराबर। वि० अविच्छिन्न, लगातार, घना। स्थायी। जिसमें फर्क न हो।
निरंध—वि० बिलकुल अंधा (साखी १३), महामूर्ख। निबिड़ अंधकारयुक्त।
निरंभ—वि० निर्जल। जो पानी बिना रह जाय।
निरकार—वि० निराकार (कबीर १७२)।
निरखन—पु० निरीक्षण, देखरेख।
निरक्षर—वि० जो अक्षर भी न पढ़ा हो, अपढ़।
निरखना—सक्रि० ताकना, देखना।
निरगुन—वि० निर्गुण; सत्व, रज, तमसे परे। गुणहीन,
निरगुनिया, निरगुनी—वि० गुणरहित। [बुरा।
निरच्छ—वि० चक्षुविहीन।
निरजर—वि० जो कभी जीर्ण न हो 'बरनै दीनदयाल पखो निरजर सर पाहीं। जहाँ जलजको खानि सदा सुख है दुख नाहीं।' दीन० २०९। पु० देवता।
निरजोस—पु० निचोड़। निश्चय, निर्णय 'राम तुम्हहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं। एह निरजोस दोसु बिधि बामहिं।' रामा० २९५
निरजोसी—पु० निर्णयकर्ता (रवि० ४२)।
निरझर—पु० झरना, पानीका सोता।
निरत—पु० नृत्य 'पंगू करै निरत अहलाद।' सुन्द० ८७। वि० लीन, लगा हुआ।
निरतना—अक्रि० नृत्य करना 'चलत कुंडल गंड-मंडल, मनो निरतत मैन।' सू० २०, (कबीर० १५०)
निरति—स्त्री० लीन होनेका भाव (कबीर १४)। अधिक प्रीति।
निरदई, निरदय—वि० कठोर, निष्ठुर (उदे० 'कजाक')।
निरधन—वि० धनहीन, दरिद्र।
निरधातु—वि० वीर्यहीन, अशक्त।
निरधार—पु० ठहरानेका काम, ठहराव, निश्चय। वि० आधाररहित 'निस्प्रेही निरधारका, गाहक दीनानाथ।' साखी १४०। क्रिवि० निश्चयपूर्वक 'ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार।' छत्र० ७९, (वि० ७८)
निरधारना—सक्रि० ठहराना। समझना 'नीति निरधारौ नहिं मारौ नाथ दूतै'—रघु० २२४
निरनै—पु० निर्णय, निश्चय, फैसला।
निरपना—वि० अपना नहीं, बिराना (कविता० २२१)।
निरपराध,-राधी—वि० निर्दोष।
निरफल—वि० निष्फल, व्यर्थ 'निरफल जैहैं सकल कला पैहै कछु नाहीं।' दीन० २२३
निरबंध—वि० बंधनहीन। पु० परमात्मा 'कर सेवा निरबंधकी पलमें लेत छुड़ाय।' साखी १४
निरबर्त्ती—वि० त्यागी, वैरागी।
निरबल—वि० बलहीन, अशक्त।
निरबहना—अक्रि० निबहना, निर्वाह होना 'तुलसी प्रभु जबतब जेहि तेहि विधि राम निबाहे निरबहौं।' विन० ५१०
निरबान—पु० शान्ति, मोक्ष (विन० ४४८, उदे० 'आँक', 'ठयना')। गमन, समाप्ति।
निरबाह—पु० देखो 'निर्वाह', (उदे० 'क्षार')।
निरबाहना—सक्रि० निर्वाह करना, बनाये रखना, पूरा करना 'मज्जन हेत गये नदतटपर प्रात कृत्य निरबाही।' रघु० ७४
निरबेद—पु० वैराग्य (मति० २११)। ताप, अनुताप।
निरभय—वि० निडर, निःशंक।
निरभिमान—वि० अभिमानरहित।
निरभ्र—वि० मेघरहित।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निरमना—सक्रि० निर्माण करना 'बंदउ मुनि पद कंजु रामायन जेहि निरमयेउ।' रामा० १४

निरमर, निरमल—वि० शुद्ध, स्वच्छ, पापरहित, उज्ज्वल 'कीन्हेसि बहुतै नग निरमरे।' प० १

निरमाना—सक्रि० देखो 'निरमना'।

निरमायल—पु० देवार्पित वस्तु।

निरमूलना—सक्रि० उखाड़ना, नष्ट करना।

निरमोल, निरमोलिक, निरमोलिका—वि० जिसका मूल्य न लग सके, अनमोल 'राम नाम हिरदै धरि निरमोलिक हीरा।' कबीर १९७, (१४८)

निरमोही—वि० स्नेहहीन, ममतारहित, निर्दय।

निरय—पु० नरक (सू० २८२)।

निरर्थक—वि० अर्थहीन, व्यर्थ, निष्फल।

निरवद्य—वि० दोषरहित, अनिन्द्य।

निरवधि—वि० असीम। लगातार, सतत।

निरवार—पु० निबटारा, छुटकारा। सुलझानेका काम।

निरवारना—सक्रि० निवारण करना, दूर करना, त्यागना 'तरिवँन स्रवन फाँसि गर डारति, कैसेहुँ नहीं सकत निरवारि।' सू० १०५। बंधन खोलना, सुलझाना 'बड़े बार श्रीवंत शीशके प्रेम सहित लै लै निरवारति।' सूबे० ८२, (१५८, १८२ भी)। निबटाना।

निरवाह—पु० देखो 'निबाह'।

निरवाहना—सक्रि० देखो 'निरबाहना', 'प्रात कृत्य निरवाहिकै करि मज्जन तत्काल।' रघु० १३०, (रामा० ४७)

निरशन—पु० अनशन, लंघन।

निरसंक—वि० निःशंक, भयरहित, निर्भीक (रामा० २७), 'तेरी मुख समता करी, साहस करि निरसंक।' मति० १७४, (·१८९)

निरस—वि० रसहीन, फीका, रूखा, निःस्तत्व। विरक्त।

निरसन—पु० हटाना, निराकरण, नाश। अनशन।

निरस्त—वि० फेंका हुआ, निकाला हुआ, वर्जित।

निरस्त्र—वि० जिसके पास कोई अस्त्र न हो।

निरहेतु—वि० कारणरहित।

निरा—वि० बिलकुल, नितान्त, विशुद्ध।

निराकरण—पु० दूरीकरण, निवारण, शमन।

निराकार—वि० जिसका कोई आकार न हो। पु० ईश्वर।

निराकुल—वि० अक्षुब्ध, व्याकुल नहीं। अत्यन्त व्याकुल, परेशान 'व्याकुल बाहु निराकुल बुद्धि थक्यो बल विक्रम लंकपतीको।' रामा० ७७

निराखर—वि० बिना अक्षरका। अपढ़। मौन।

निराट—वि० अकेला, निपट, बिलकुल 'कोउक अंग विभूति लगावत, कोउक होत निराट दिगंबर।' सुन्द० ६७

निरादर—पु० अपमान, तिरस्कार।

निराधार—वि० आश्रयहीन। मिथ्या, बेबुनियाद। अन्न-जलके बिना।

निराना—सक्रि० खेतसे घासपात दूर करना, नींदना।

निरापद—वि० सुरक्षित, जहाँ किसी तरहकी विपत्तिकी आशंका न हो।

निरापन,-पुन—वि० पराया 'बिनु जिय सबइ निरा-पुन होई।' प०

निरामय—वि० नीरोग, स्वस्थ।

निरामिष,-मिख—वि० मांसरहित। जो मांसाहारी न हो।

निरार, निरारा, निराला—वि० न्यारा, अलग। 'सारस पँख नहिं जिये निरारे। हौं तुम बिन का जियौं पियारे।' प० ३३०। (उदे० 'गजपति'), '...कहै कबीर वै राम निराल।' कबीर ९९, (२७४)

निरालंब—वि० अवलंबरहित, आश्रयहीन।

निराला—वि० निर्जन। अनोखा, अद्भुत, बढ़िया। पु० एकान्त स्थान।

निरावना—सक्रि० देखो 'निराना'। 'कृषी निरावहिं चतुर किसाना।' रामा० ४०३

निराशा,-सा—स्त्री० नाउम्मेदी।

निराशी,-सी—वि० नाउम्मेद। उदास, विरक्त।

निराश्रय—वि० निराधार, असहाय।

निराहार—वि० आहाररहित, बिना भोजनके।

निरिच्छना—सक्रि० निरीक्षण करना, देखना।

निरीक्षण—पु० देखनेका काम, निगरानी, जाँच।

निरीश,-स—वि० स्वामिविहीन। नास्तिक।

निरीश्वरवादी—पु० ईश्वरका अस्तित्व न माननेवाला।

निरीह—वि० इच्छारहित, चेष्टारहित, उदासीन।

निरुआरना—सक्रि० देखो 'निरुवारना'।

निरुज—वि० नीरुज, नीरोग, विकाररहित।

निरुत्तर—वि० जिसका कोई उत्तर न हो। उत्तर न दे सकनेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निरुत्साह—वि० उत्साह-रहित।
निरुद्ध—वि० रोका हुआ।
निरुद्यम—वि० उद्यमहीन, बेकार।
निरुद्योग, निरुद्योगी—वि० जो उद्योगहीन हो, बेकार।
निरुपधि—वि० उपाधिरहित, मायारहित। जो उपद्रव न करे (रामा० १४, २४)।
निरुपम—वि० अनुपम, अद्वितीय।
निरुपयोगी—वि० व्यर्थ, निकम्मा।
निरुपाधि—वि० देखो 'निरुपधि'।
निरुबरना—अक्रि० सुलझना, छुटकारा पाना।
निरुवार—पु० सुलझाने या छुड़ानेका काम, निर्णय।
निरुवारना—सक्रि० छुड़ाना, निबटाना। सुलझाना, 'निज कर जटा राम निरुवारे।' रामा० ५४२
निरूप—वि० रूपरहित। कुरूप।
निरूपना—सक्रि० निश्चित करना, ठहराना।
निरेखना—सक्रि० देखना।
निरै—पु० निरय, नरक 'जग कोउ न भूलिहु जाय निरै मग। मिटिगे सब पापन पुन्यनके नग।' के० २७२
निरोग—वि० नीरोग, स्वस्थ।
निरोध—पु० रुकावट। नाश। घेरा 'यहि भाँति भयो लंका निरोधु।' राम० ४२१
निर्ख—पु० भाव, दर।
निर्गमना—अक्रि० बाहर निकलना 'इक प्रविसहिं इक निर्गमहिं भीर भूप दरबार।' रामा० २१०
निर्गुन—वि० देखो 'निरगुन'।
निर्घात—पु० हवाका शब्द, बिजलीकी कड़कड़ाहट (राम० २९९)।
निर्घृण—वि० जिसे घृणा न हो, निर्लज्ज, नीच, निर्दय।
निर्घोष—वि० शब्दरहित। पु० आवाज़।
निर्छल—वि० निष्कपट।
निर्जर—वि० देखो 'निरजर'।
निर्जित—वि० जो जीत लिया गया हो, वशीकृत।
निर्झर—पु० देखो 'निरझर'।
निर्णय—पु० फैसला, निश्चय।
निर्त—पु० नृत्य, नाच (सू० ८०)।
निर्तक—पु० नाचनेवाला। भाँड़।
निर्तना—अक्रि० नाचना 'सूर स्याम काली पर निर्तत नाचत ब्रजकी बोल।' सू० ७९
निर्दई—वि० कठोर, निष्ठुर।
निर्दहना—सक्रि० दग्ध करना, जला देना।
निर्दिष्ट—वि० जिसका निर्देश या निश्चय हो चुका हो, ठहराया हुआ।
निर्दूषण—वि० दोषरहित।
निर्दोष—वि० निरपराध, दोषरहित, बेऐब।
निर्दोषी, -सो—वि० जिसका कोई अपराध न हो।
निर्धार—पु० देखो 'निरधार'।
निर्धारना—सक्रि० देखो 'निरधारना'।
निर्धूत—वि० धोया हुआ। टूटा हुआ, परित्यक्त।
निर्निमेष—वि० जिसमें पलक न गिरे। क्रिवि० एकटक।
निर्पक्ष—वि० निष्पक्ष, पक्षपातरहित।
निर्फल—वि० व्यर्थ 'जबलगि भगति सकामना तबलगि निर्फल सेव।' कबीर १९
निर्बल—वि० अशक्त, असहाय, कमज़ोर।
निर्बहना—अक्रि० निभना, पार होना, दूर होना।
निर्भय—वि० निडर, भयरहित।
निर्भर—वि० अवलम्बित। भरा हुआ, पूर्ण, युक्त।
निर्भ्रम—वि० शंकारहित। क्रिवि० बेखटके, आनंदपूर्वक 'स्यामा स्याम सुभग यमुना जल निर्भ्रम करत विहार।' सू० १५४
निर्मना—सक्रि० बनाना, उत्पन्न करना 'जिन यह वेदन निर्मई भला करेगा सोय।' साखी ४७
निर्मल—वि० स्वच्छ, शुद्ध, पापरहित।
निर्मान—वि० मानरहित, अगणित, अपार।
निर्माना—सक्रि० देखो 'निर्मना'।
निर्मायल, निर्मालय—पु० देवार्पित वस्तु 'ये दस सीस ईस निर्मायल कैसे चरन छुआऊँ।' सू० ३८
निर्मित—वि० रचित, कृत, बनाया हुआ।
निर्मोल—वि० बहुमूल्य, अमूल्य (उदे० 'घरी')।
निर्मोही—वि० निर्दय, निष्ठुर।
निर्यात—पु० रफ्तनी, विदेश भेजा गया माल।
निर्लज्ज—वि० लज्जारहित, बेशर्म।
निर्लिप्त—वि० जो लिप्त न हो, विषय-भोगादिसे मुक्त।
निर्वहना—सक्रि० देखो 'निबहना'।
निर्वाचक—पु० मत देनेवाला, चुननेवाला।
निर्वाण—पु० शान्ति, समाप्ति। ठंडा होना। मोक्ष। वि० बुझा हुआ, मृत हुआ, शान्त। मृत। वासनारहित।
निर्वासन—पु० बाहर निकालनेकी क्रिया, देशनिकाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निर्वाह—पु० पालन, निबाह, जारी रह सकना।
निर्वाहना—सक्रि० निर्वाह करना, पालन करना।
निर्बीज—वि० बीजरहित, कारणरहित।
निर्ब्रह्मीक—वि० छलहीन?
निलज—वि० बेशर्म, बेहया (के० १४१, उदे० 'झहराना')।
निलजई, निलजता—स्त्री० बेहयाई, निर्लज्जता।
निलय, निलै—पु० भवन, स्थान 'पाइकै सूनौ निलै मिलि दूनौ बढ़ै सुख दूनो दुहूँ उर लावै।' दास १३७
निवछावर—स्त्री० देखो 'निछावर'।
निवना—अक्रि० नवना, झुकना 'जेहि जेहि डारी पग धरे, सो सो निव निव जाय।' साखी ८६
निवसना—अक्रि० निवास करना 'दंपति उर धरि भगति कृपाला। तेहि आस्रम निवसे कछु काला।' रामा० ८६
निवह—पु० समूह, वृन्द।
निवाई—वि० नया, नूतन, निराला, विलक्षण।
निवाज—पु० दया दिखानेवाला, अनुग्रह करनेवाला। स्त्री० नमाज़ (उदे० 'गुदारना')।
निवाजना—सक्रि० कृपा करना, परवरिश करना 'सत गुरु मोहि निवाजिया, दीन्हा अम्मर बोल।' साखी १०, 'कौन गरीब निवाजियो किंतु तूल्यो रतिरासु।' वि० ३०
निवान—दे० 'निमान'। पानीयुक्त नीची जगह, सरोवर 'रूपरति आननतें चातुरी सुजाननतें नीर लै निवाननतें कौतुक निवेरो है।' ठाकुर
निवार—स्त्री० मोटे सूतकी बुनी हुई पट्टी, निवाड़। पु० एक तरहका धान, पसही।
निवारन—पु० रोक। बचाव। दूर करनेवाला (उदे० 'जनमसंगाती')।
निवारनो—सक्रि० दूर करना 'नीर की पीर निवारबे कारन, छीर धरी हौं धरी उफनातु है।' दास १०९, (उदे० 'ओढ़ना')। रोकना, मना करना (उदे० 'ग्राव')। 'सैनहिं लखनहिं राम निवारे।' रामा० १५०। बचाना 'घोर जमालय जात निवारयो सुतहित सुमिरत नाम।' विन० ३५२। चुकाना 'पिछलो देहु निवारि थाजु सब, पुनि दीजो जब जानो कालि।' सूबे० १६०
निवाला—पु० कौर, ग्रास।
निवास—पु० रहनेकी क्रिया। रहनेकी जगह, घर।
निविड़—वि० घोर, घना, गहरा। घपटी नाकवाला
निवृत्ति—स्त्री० पीछे हटना, विरक्ति, मुक्ति।

निवेद—पु० नैवेद्य, देव-प्रसाद।
निवेदक—पु० निवेदन करनेवाला, प्रार्थी।
निवेदना—सक्रि० निवेदन करना, प्रार्थना करना। अर्पित करना।
निवेरना—सक्रि० देखो 'निवेरना'। हिसाब करना, वसूल करना।
निवेरा—वि० चुना हुआ। नया।
निवेश—पु० डेरा, शिविर, घर। विवाह। प्रवेश।
निशंक—वि० निडर।
निश, निशा—स्त्री० रात्रि।
निशाकर, निशानाथ, निशापति—पु० चन्द्रमा।
निशाचर—पु० राक्षस। उल्लू। भूत। सियार। चोर।
निशान—पु० चिह्न, लक्षण। देखो 'निसान'।
निशाना—पु० लक्ष्य।
निशानी—स्त्री० स्मृतिचिह्न, निशान, लक्षण।
निशामुख—पु० सन्ध्याका समय। गोधूलिवेला।
निशि—स्त्री० रात्रि।
निशिकर, निशिनाथ, निशिपति—पु० चन्द्रमा।
निशित—वि० तेज, पैना, धारदार।
निशीथ—स्त्री० रात्रि, मध्यरात्रि।
निशीथिनी—स्त्री० रात्रि।
निश्चय—पु० निर्णय, दृढ़ संकल्प, विश्वास।
निश्चल—वि० अटल, स्थिर।
निश्चिंतई—स्त्री० बेफिक्री, चिन्ताका अभाव।
निश्चित—वि० तै किया हुआ, पक्का।
निश्चेष्ट—वि० चेष्टारहित, बेसुध। स्थिर।
निश्चै—पु० देखो 'निश्चय'।
निश्छल—वि० निष्कपट, सीधा।
निश्वास—पु० बाहर निकलनेवाला श्वास।
निश्शंक—वि० शंकारहित, निडर।
निश्शेष—वि० जिसका कुछ भी न बचा हो। समाप्त।
निषंग—पु० तूणीर, तरकश।
निषिद्ध—वि० मना किया हुआ। अकरणीय, दूषित।
निषेध—पु० निवारण, मनाही, रुकावट।
निष्कंटक—वि० कण्टकहीन, बाधाहीन।
निष्कपट—वि० छलरहित, सरल स्वभाववाला।
निष्कर्म—वि० कर्महीन, जो कर्मोंमें लीन न हो।
निष्कर्ष—पु० सार, तत्त्व, निश्चय।
निष्कलंक—वि० कलंकहीन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निष्काम—वि० कामनाहीन, निस्स्वार्थ।
निष्कारण—वि० कारणरहित, व्यर्थ।
निष्क्रय—पु० दाम। विनिमय। वेतन, पुरस्कार (रघु० १०)। सामर्थ्य।
निष्क्रिय—वि० क्रियाहीन, चेष्टाहीन।
निष्ठा—स्त्री० स्थिति। विश्वास, श्रद्धा-भक्ति। समाप्ति। तत्परता।
निष्ठुर—वि० निठुर निर्दय।
निष्ण, निष्णात—वि० निपुण, दक्ष।
निष्पक्ष—वि० पक्षपातरहित। उदासीन।
निष्पत्ति—स्त्री० अन्त, सिद्धि, निश्चय, मीमांसा।
निष्पन्न—वि० जो पूरा हो चुका हो, सम्पादित।
निष्पाप—वि० जो पापी न हो, पापरहित।
निष्प्रयोजन—वि० प्रयोजनरहित, निरर्थक। क्रिवि० व्यर्थ ही।
निष्प्रेही—वि० जिसे किसी बातकी इच्छा न हो।
निष्फल—वि० असफल, व्यर्थ। अंडकोशहीन।
निसंक—वि० निःशंक, शंकारहित, निर्भय (उदे० 'एँड़ा')।
निसँठ—वि० धनहीन 'साँठिहि जागि नींद निसि जाई। निसँठहि काह होइ औंघाई।' प० २०५
निसंस—वि० नृशंस, दुष्ट। साँस-रहित, मृतप्राय।
निसंसना—अक्रि० ज़ोरसे साँस लेना, हाँफना।
निस—स्त्री० निशि, रात्रि।
निसक—वि० निःशक्त, दुर्बल 'तीन दबावत निसक हीं पातक राजा रोग।' बि० १७६
निसकर—पु० चन्द्रमा।
निसचय, निसचै—पु० दृढ़ संकल्प। निर्णय। विश्वास, संदेहरहित ज्ञान (उदे० 'गोईं')।
निसत—वि० असत्य।
निसतरना—अक्रि० उद्धार या छुटकारा पाना।
निसतारना—सक्रि० उद्धार करना, छुड़ाना।
निसद्योस—क्रिवि० रातदिन, हमेशा।
निसबत—स्त्री० सम्बन्ध। क्रिवि० सम्बन्धमें, बारेमें।
निसरना—अक्रि० बाहर आना, निकलना 'मुख नासा स्रवनन्हिकी बाटा। निसरि पराहिं भालु-कपि ठाटा।' रामा० ४०८
निसर्ग—पु० स्वभाव, रूप। सृष्टि।
निसवादला—वि० निःस्वाद, स्वादरहित।
निसवासर—क्रिवि० रात-दिन, हमेशा।
निसस—वि० निश्वास, बेसुध।
निसहाय—वि० देखो 'निस्सहाय'।
निसाँक—वि० निर्भय, निश्चिन्त। क्रिवि० बेखटके 'मनो अली चंपक कली बसि रस लेत निसाँक।' बि० ६४
निसाँस—पु० लम्बी साँस, दुःखकी साँस। वि० मृतप्राय।
निसा—स्त्री० रात्रि। तृषि। मनका विचार, इच्छा 'निसा ज्यौं होइ त्यौंही तोप कीजै।' सुजा० १३०। पु० नशा, मादकता।
निसाकर—पु० चन्द्रमा।
निसाचर—पु० राक्षस।
निसाद—पु० एक नीच जाति। भंगी।
निसान—पु० चिह्न, लक्षण (उदे० 'अकनना', 'तड़पना')। झंडा। नगाड़ा (रामा० ६२), 'बाजत निसाने फहराने हैं निसाने कैयौं ..'—सुजा० १४, (उदे० 'अटकना')
निसानन—पु० संध्याकाल।
निसाना—पु० लक्ष्य। देखो 'निसान'।
निसानाथ,-पति—पु० चन्द्रमा।
निसानी—स्त्री० स्मृतिचिह्न, पहचान।
निसाफ—पु० इनसाफ, निर्णय।
निसार—वि० निस्सार, सारहीन। पु० एक सिक्का। न्योछावर।
निसारना—सक्रि० निकालना (ललित ३०), 'मारहु नाहिं, निसारहु देसू।' प० २२१
निसास—पु० देखो 'निसाँस'।
निसासी—वि० श्वासहीन, मृतप्राय।
निसि—स्त्री० रात्रि।
निसिअर,-यर—पु० चन्द्रमा 'अनु धनि तू निसियर निसि माहाँ।' प० १४६
निसिकर—पु० चन्द्रमा।
निसिखा—वि० न सीखा हुआ (उदे० 'कसना')।
निसिचर,-चारी—पु० राक्षस।
निसित—वि० तीव्र, तेज (रामा० ४१९)।
निसिदिन—क्रिवि० रातदिन, हमेशा।
निसिनाथ,-नाह,-पति,-पाल,-मनि—पु० चन्द्रमा।
निसिनिसि—स्त्री० आधी रात।
निसिमुख—पु० संध्याकाल।
निसिवासर—क्रिवि० रात-दिन, बराबर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निसीठी—वि० तत्वहीन, नीरस।
निसीथ—पु० रात्रि, मध्य रात्रि।
निसु—स्त्री० रात्रि।
निसृत—वि० निकला हुआ।
निसेनी, निसैनी—स्त्री० सोपान, सीढ़ी (मति० २२४)।
निसेस—पु० चन्द्रमा।
निसोग, निसोच—वि० शोकरहित, निश्चिन्त 'सब विधि सानुकूल लखि सीता। भे निसोच उर अपटर बीता।' रामा० ३१५
निसोत—वि० खालिस, बेमेलका, शुद्ध 'रीझत राम सनेह निसोते।' रामा० २१
निसोधु—स्त्री० सुध, समाचार, सँदेशा।
निस्केवल—वि० निर्मल, विशुद्ध।
निस्तब्ध—वि० भौंचक, निश्चेष्ट।
निस्तर—पु० निस्तार, उद्धार 'निस्तर पाइ जाउँ एक बारा।' प० ९७
निस्तरना—पु० देखो 'निसतरना'। 'हौं तो पतित सात पीढ़िन को, पतितै ह्वै निस्तरि हौं।' सू० ९
निस्तार, निस्तारा—पु० उद्धार, छुटकारा, बचत।
निस्तारना—सक्रि० देखो 'निसतारना,' 'जय अनन्त जय जगदाधारा, तुम प्रभु सब देवन्ह निस्तारा।' रामा० ४९५, (सू० २६७)
निस्तेज—वि० मलिन, प्रभाहीन.
निस्पृह—वि० जिसे लालच इ० न हो। वासनारहित।
निस्प्रेही—वि० देखो 'निष्प्रेही', (उदे० 'निरधार')।
निस्फ—वि० आधा।
निस्बत—स्त्री० देखो 'निसबत'।
निस्व—पु० गरीब। निर्धन।
निस्वास—पु० ठंढी साँस, लंबी साँस।
निस्संकोच—वि० जिसमें संकोच न हो, संकोचरहित।
निस्संतान—वि० संतानहीन।
निस्संदेह—क्रिवि० बेशक, अवश्य, सचमुच।
निस्सहाय—वि० असहाय, आश्रयहीन।
निस्सार—पु० सारहीन।
निस्सीम—वि० सीमारहित, असीम, अत्यधिक।
निस्स्वार्थ—वि० स्वार्थरहित, जो खुदगरज न हो।
निहंग, निहंगम—वि० अकेला। निर्लज्ज। नंगा।
निहंता—वि० मारनेवाला, विनाशक।
निहकर्मा,-कर्मी—वि० जो कर्मोंमें लीन न हो (सुन्द० १०८)।
निहकलंक—वि० निर्दोष, कालिमारहित। [
निहकाम—वि० कामनाहीन, निःस्वार्थ 'वचन करम मन मोरि गति भजन करहिं निहकाम।' रामा० ३७०
निहचय, निहचै—पु० देखो 'निसचय'। 'मो मनमें निहचै सजनी यह तातहु ते पन मोर महा है।' क्रिवि० अवश्य ही '.. इनकूँ ले सुमिरन करे, निहचै पावे मोख।' चरनदास
निहचल—वि० निश्चल, अचल, स्थिर।
निहचिंत—वि० निश्चिंत, बेफिक्र 'कहा रहे निहचिंत ह्वै, लखौ लाल चलि आप।' मति० २२७
निहत—वि० मारा हुआ, विनष्ट। फेंका हुआ।
निहत्था—वि० खाली हाथ, शस्त्ररहित, निर्धन।
निहनना—सक्रि० मारना।
निहपाप—वि० पापरहित।
निहफल—वि० फलरहित, व्यर्थ।
निहाई—स्त्री० लोहेकी गद्दी जिसपर हथौड़ा मारा [जाता है।
निहाउ—दे० 'निहाई'।
निहाय—दे० 'निहाई'।
निहायत—अ० बहुत ज़्यादा।
निहार—पु० पाला, ओस, हिम 'मोह-निहार-दिवाकर संकर सरन सोक-भय-हारी।' विन० ७५। वि० निहाल, लट्टू 'पीत कमल इंदीवर पर मनु भोरहिं भये निहार।' सू० १५४
निहारना—सक्रि० देखना, ताकना 'मन मोहो ऋषि-राजको अद्भुत नगर निहारि।' राम० ३२
निहाल—वि० पूर्णकाम, सन्तुष्ट (उदे० 'धना')। प्रसन्न (उदे० 'उलहना')।
निहाली—स्त्री० तोशक, रजाई 'जैसे नर सीतकाल सोवत निहाली ओढ़...।' सुन्द० ९८। निहाई।
निहिचय—पु० देखो 'निसचय'।
निहिंचित—वि० चिन्तारहित, बेफिक्र।
निहित—वि० रखा हुआ, स्थापित।
निहुकना, निहुरना—अक्रि० नवना, झुकना (भ्र० १२५)।
निहुराना—सक्रि० झुकाना।
निहोरना—सक्रि० विनती करना, खुशामद करना, (उदे० 'कुलाहल'), मनाना। कृतज्ञ होना। 'देखहुँ बेगि सो जतन करु सखा निहोरहुँ तोहि।' रामा० ५२०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निहोरा—पु० बिनती। कृतज्ञता, एहसान। भरोसा। 'पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोर न ओही।' रामा० ४०९, 'राम काज अस मोर निहोरा। बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा।' रामा० ४०७। क्रिवि० के निमित्त, के कारण, द्वारा। 'तुम सारिखे सन्त प्रिय मोरे। धरउँ देह नहिं आन निहोरे।' रामा० ४३९

नींदड़ो, नींदरी, नींदु—स्त्री० निद्रा।

नींदना—सक्रि० खेतसे घास आदि दूर करना। निन्दा करना 'तबही टरि कितहूँ गई, नींदौ नींदन जोग।' [वि० ५३

नींदर—स्त्री० निद्रा (उदे० 'आरस')।

नींब—स्त्री० देखो 'नीम', (उदे० 'उसना')।

नीक—वि० अच्छा, मनोहर। पु० उत्तमता।

नीके—क्रिवि० अच्छी तरह, कुशलपूर्वक। 'अक्षकुमारहि मारिके लंकहि जारिकै नीकेहि जात भयो जू।' राम० ४०४

नीगने—वि० अगणित, बेशुमार 'मृगराज ज्यों बनराजनों गजराज मारत नीगने।' के० १९

नीच—वि० अधम, क्षुद्र, छोटा, बुरा। पु० क्षुद्र व्यक्ति '...डाँटेहि पै नव नीच।' रामा० ४४५

नीचा—वि० निम्न, गहरा, कम ऊँचा, धीमा, क्षुद्र, झुका हुआ, जमीनकी तरफ लटका हुआ।

नीचे—क्रिवि० नीचेकी तरफ। अधीनतामें। घटकर।

नीजन—वि० निर्जन, सुनसान 'घोर तरु नीजन विपिन तरुनीजन है, निकसी निसंक अति आतुर अतंकमें।' देव। पु० निर्जन स्थान।

नीझर—पु० निर्झर, झरना 'नीझर झरै अमीरस निकसै...'

नीठ—क्रिवि० कठिनाईसे। [कबीर १३९

नीठा—वि० अनिष्ट, अच्छा न लगनेवाला।

नीठि—स्त्री० अनिच्छा। क्रिवि० कठिनाईसे, ज्यों त्यों करके (उदे० 'चकना'), 'लागे नीर चुवान ये नीठि सुखावे बार।' वि० १९८। नीठि नीठि, नीठि नीठि करके = मुश्किलसे, ज्यों त्यों करके '...नीठि नीठि भीतर गई दीठि दीठि सों जोरि।' वि० १०१

नीड़—पु० घोंसला, ठहरनेकी जगह (उदे० 'छुहना')।

नीड़क, नीड़ज—पु० पक्षी।

नीत—वि० छाया हुआ, स्थापित, गृहीत।

नीति—स्त्री० उचित आचार, नय, न्याय, व्यवहारका ढँग, युक्ति।

नीदना—सक्रि० निंदा करना।

नीधना—वि० निर्धन, दरिद्र।

नीप—पु० कदम्ब (सू० ११३)। दुपहरिया (पुष्प)।

नीपजना—अक्रि० उत्पन्न होना 'प्रेम न खेतौं नीपजै प्रेम न हाट बिकाय।' कबीर ७०। बढ़ना, उन्नति करना (उदे० 'कालर')।

नीब; नीबर—दे० 'नीम', 'निर्बल'।

नीबी—स्त्री० नारा, इजारबंद।

नीबू—पु० एक फल।

नीम—स्त्री० एक वृक्ष। वि० आधा।

नीमन—वि० अच्छा, स्वस्थ, दुरुस्त, ठीक।

नीमस्तीन—स्त्री० अधबहियाँ।

नीमा—पु० एक तरहका पहराव, दुल्हेका जामा।

नीयत—स्त्री० भाव, मंशा।

नीयर—क्रिवि० निकट 'काहू पाई नीयरे, कोउ गये किछु दूरि।' प० ८८ [

नीर—पु० जल।

नीरज—पु० कमल। मोती।

नीरद—पु० बादल। वि० दंतहीन।

नीरधि, नीरनिधि—पु० समुद्र।

नीरस—वि० रसहीन, स्वादहीन, शुष्क।

नीरा—अ० पास, निकट 'दूरि बतावत पाया नीरा।' कबीर ३०४

नीराजना—अक्रि० आरती करना। शस्त्र साफ करना।

नीरुज, नीरोग—वि० स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

नील—पु० एक पौधा। नीला रंग। विष। कलंक। वि० नीले रंगका।

नीलकंठ—पु० चाषु पक्षी। महादेव। मयूर।

नीलम—पु० रत्न विशेष।

नीला—वि० गहरे आसमानी रंगका।

नीलाम—पु० बोली बोलकर बेचना।

नीवँ, नीव—स्त्री० जड़, आधार, मूल भित्ति, दीवार उठानेके लिए खोदी गयी जगह।

नीवार—पु० एक तरहका धान, पसही।

नीवि, नीवी—स्त्री० देखो 'नीबी'।

नीवीं—स्त्री० नींव 'नीबी नीवीं मदनकी परी लाइके हाथ।' [मति० २३२

नीसक—वि० निःशक्त, कमज़ोर।

नीसान—पु० देखो 'निसान'।

नीहार—पु० पाला, कुहरा (सुजा० ९४)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नुकता—पु० बिन्दु। दोष।
नुकताचीनी—स्त्री० ऐबजोई। दोष ढूँढ़ना।
नुकना—अक्रि० छिपना। नुकाना—अक्रि० छिपना 'कतए नुकाएब चाँदक चोर।' विद्या० १३७। सक्रि० छिपाना।
नुकसान—पु० घाटा, हानि, कमी।
नुकीला—वि० नोकदार, सुन्दर, तीखा (उदे० 'छबीला')।
नुकड़—पु० छोर, अंत, नोक।
नुक्स—पु० ख़राबी, दोष।
नुचना—अक्रि० उखड़ना, झटकेसे अलग हो जाना, नोंचा जाना।
नुचवाना—सक्रि० खरोंचवाना।
नुत्फा—पु० वीर्य।
नुनना—सक्रि० लुनना।
नुनाई—स्त्री० लुनाई। लावण्य, सुन्दरता।
नुनेरा—पु० लोनिया।
नुमाइश—स्त्री० प्रदर्शनी, दिखावा। सजधज।
नुसखा—पु० वह पुरजा जिसपर रोगीके लिए दवा इ० लिखी रहती है। [† १८०, राम० १६)
नूत, नूतन—वि० नया, ताज़ा, अद्भुत, अपूर्व (मति० †
नून—पु० नमक। लताविशेष। वि० न्यून, कम।
नूनताई—स्त्री० न्यूनता, कमी।
नूनेरी—स्त्री० लोनिया जातिकी स्त्री (रवि० २७, २९)।
नूपुर—पु० घुँघरू, पैजनी।
नूर—पु० कान्ति, शोभा, प्रकाश (उदे० 'उपनाना')।
नूरा—वि० प्रकाशमय, तेजस्वी।
नृतक—पु० नर्त्तक, नाचनेवाला।
नृतना, नृत्तना—अक्रि० नाचना 'नृतत काली नाग फन प्रति सुहथ ताल बजाइ।' सू० ७७
नृत्य—पु० नाच।
नृत्यकी—स्त्री० नाचनेवाली स्त्री।
नृपति, नृदेव, नृप—पु० राजा।
नृशंस—वि० क्रूर, निर्दय, अपकारी।
नेइँ, नेई—स्त्री० नीव 'अवध उजारि कीन्हि कैकेई। दीन्हेसि अचल बिपति कै नेई।' रामा० २१३
नेउछावरि—स्त्री० देखो 'निछावर'।
नेउतना—सक्रि० निमंत्रित करना।
नेउतहरि—पु० निमंत्रित व्यक्ति (रघु २०५)।
नेउला—पु० देखो 'नेवला'।
नेक, नेकु—वि० थोड़ा, कुछ। भला, अच्छा। क्रिवि० तनिक, जरा 'सूधेहू पियके कहे नेक न मानत बाम।'
नेकचलन—वि० सदाचारी। [भाषाभूषण
नेकनाम—वि० जिसका अच्छा नाम हो।
नेकनीयत—वि० अच्छी नीयतवाला। ऊँचे विचारवाला।
नेकी—स्त्री० भलाई, उपकार।
नेग—पु० विवाहादिके समय ब्राह्मणादिको मिलनेवाला द्रव्य। दस्तूर 'नेग माँग मुनिनायक लीन्हा।' रामा० १९२। पुरस्कार।
नेगटी—पु० नेग पालनेवाला।
नेगी—पु० नेग पानेका अधिकारी 'लछिमन होहु धरमके नेगी।' रामा० ५२१, (उदे० 'अरकान')। सम्पत्तिका प्रबन्धकर्त्ता 'बिप्र न नेगी कीजिए···' कविप्रि० तृ०
नेछावर—स्त्री० देखो 'निछावर'।
नेजा, नेजाल—पु० भाला (उदे० 'खुभी')।
नेठना—अक्रि० देखो 'नाटना'।
नेत—पु० निश्चय, ठहराव। आयोजन। एक गहना (सूदे० ४०६)। स्त्री० रेशमी चद्दर 'पुनि गजमंत चढ़ावा, नेत बिछाई खाट।' प० ३२५। मथानीकी रस्सी (उदे० 'क्वान', सू० १९१)।
नेतक (बसन)—पु० चुनरी (विद्या० ६०)।
नेता—पु० नायक, अगुआ, स्वामी।
नेति—अ० ईश्वरकी अनन्तनासूचक शब्द।
नेती—स्त्री० मथानीकी रस्सी।
नेत्र—पु० आँख। नेती। रथ। नाड़ी। दोकी संख्या।
नेनुआ, नेनुवा—पु० एक तरकारी, बिरवा।
नेपथ्य—पु० रंगभूमिके पीछेकी भूमि जहाँ वेश-रचना की जाती है। वेश, सजावट।
नेपुर—पु० नूपुर, घुँघरू, पैजनी 'महामोहको नेपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल।' सूबि० ५१
नेब—पु० सहायक, मंत्री (अ० १३५), 'भरत बन्दि ग्रह सेहहिं लखनु रामके नेब।' रामा० २०८
नेबुआ, नेबू—पु० नीबू।
नेम—पु० नियम, योग (अ० ९), बराबर होनेवाली बात, रीति। प्रतिज्ञा (राम० ७९)। समय। टुकड़ा, आधा टुकड़ा। प्राकार। गड्ढा। मूल।
नेमि—स्त्री० पहियेका घेरा। किनारेका हिस्सा। पृथ्वी जगत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नेमी—स्त्री० देखो 'नेमि'। वि० नियमानुयायी, नियमपूर्वक धर्मानुष्ठान करनेवाला।

नेरा, नेरे, नेरी, नेरै—क्रिवि० पास, नजदीक 'पुनि कहु खबर बिभीषण केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी।' रामा० ४४१, 'कबहुँक हौं संगति प्रभाव तें जाउँ सुमारग नेरो।' विन० ३५०, (उदे० 'खरिका', रघु० ७७)

नेराना—अक्रि० पास पहुँचना।

नेव—पु० देखो 'नेव'। स्त्री० देखो 'नींव', (उदे० 'अवरेव')।

नेवग—पु० नेग, दस्तूर।

नेवछावर—स्त्री० देखो 'निछावर'।

नेवज—पु० देवार्पित वस्तु, नैवेद्य।

नेवत, नेवता—पु० न्योता, निमंत्रण।

नेवतना—सक्रि० न्योता देना, निमंत्रित करना 'नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग।' रामा० ३९

नेवतहरी—पु० निमंत्रणमें आया हुआ व्यक्ति।

नेवर, नेवल—पु० नूपुर (उदे० 'झमकना')।

नेवरना—अक्रि० छूटना, दूर होना 'सुनि जोगी कै अमर जो करनी। नेवरी बिथा बिरह कै मरनी।' प० ११९

नेवला—पु० गिलहरीके सदृश एक जन्तु।

नेवाजना—सक्रि० देखो 'निवाजना'। 'रामकृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिय जस राजा।' रामा० ३१९

नेवारना—सक्रि० निवारण करना, दूर करना।

नेवारी—स्त्री० फूलवाला पौधा विशेष।

नेसुक—वि० तनिक। क्रिवि० तनिक, थोड़ा 'नाइ सीस नेसुक बिहँसि राम कही मृदु बानि।' रघु० ६३, (उदे० 'खभार')

नेह—पु० स्नेह, प्रेम। तेल।

नेही—वि० प्रेम करनेवाला, हितैषी (उदे० 'कनकना')।

नै—स्त्री० नीति 'नैनन मैं नै नाहियै यातै नैना नाम।' रतन० ८६। नदी 'डगर डगर नै ह्वै रही बगर बगर कै बार।' वि० १२३

नैऋत,-त्य—पु० मूलनक्षत्र। निशाचर 'नैऋत्यनको कपि लोगनको। राखौ गिज धामन भोगनको।' के० ३८। पश्चिम-दक्षिणका कोना।

नैकु—दे० 'नेक'।

नैचा—पु० हुक्केके ऊपरवाली दोहरी नली।

नैचाबंद—पु० नैचा बनानेवाला।

नैतिक—वि० नीति सम्बन्धी।

नैन—पु० नेत्र लोचन।

नैनसुख—पु० एक तरहका कपड़ा।

नैनू—पु० मक्खन 'नैनू चाहि अधिक वै कोंवरी।' प० २७०

नैया—स्त्री० नाव (उदे० 'डोवना')।

नैर—पु० नगर (भू० १११), जनपद, ग्राम।

नैवेद्य—पु० देवताका प्रसाद। भोग।

नैसा—वि० बुरा, अनैसा, कुरूप (सूदे० १७८)।

नैसिक, नैसुक—वि० तनिक, थोड़ा 'नैन जोरि मुख जोरि हँसि नैसिक नेह जनाइ।' रस० ४७, 'नैसुक नाहके नेह बिना चकचूर ह्वै जैहै सबै चिकनाई।' रवि० १५। क्रिवि० किञ्चित्, थोड़ा (उदे० 'अबार')।

नैहर—पु० मायका, स्त्रीके पिताका घर (उदे० 'गोई')।

नोई—स्त्री० दूध दुहते समय गायके पिछले पाँव बाँधनेकी रस्सी 'काँसेकी दोहनी श्याम पाटकी ललित नोई, घटनसों पूजि पूजि पाँयन परतु हैं।' के० २०२

नोक—स्त्री० अनी, छोर, पतला अग्रभाग।

नोकझोंक—स्त्री० चढ़ा-उपरी, छेड़छाड़। सजावट, ठाटबाट। दबदबा, दर्प। ताना, व्यंग।

नोकदार—वि० नुकीला, चुभनेवाला। शानदार।

नोकना—अक्रि० ललचना, आकृष्ट होना।

नोखा—वि० देखो 'अनोखा'। 'कैसी बुद्धि रची है नोखी देखी सुनी न होई।' सू० (हि० नव०)

नोच-खसोट—स्त्री० छीना-झपटी।

नोचना—सक्रि० उखाड़ना। नख, दाँत आदि गड़ाकर खींच लेना, खरोंचना 'ताही समै फैल गये कोटि कोटि कपिन ये नोचैं तन खैंचैं चीर भयो यों बिहाल हो।' प्रियादास

नोचानाची—स्त्री० छीना-झपटी।

नोचू—पु० नोच-खसोट करनेवाला। बार बार तकाजा करनेवाला।

नोट—पु० लिखनेकी क्रिया। टिप्पणी। कागजी बिल। सूचना।

नोटिस—स्त्री० इत्तिला, विज्ञापन, सूचना।

नोदन—पु० प्रेरणा। बैलोंको चलनेके निमित्त प्रेरित करनेवाली छड़ी या कोड़ा।

नोन—पु० नमक।

नोनखा—पु० गमकमें डाली गयी आमकी कलियाँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नोनहरामी—वि० कृतघ्न (सू० २७९)।

नोना—वि० लोना, नमक मिला हुआ। अच्छा, सुन्दर। सक्रि० देखो 'नोवना', 'कपट हेतुकी प्रीति निरन्तर नोइ चोखाई गाय।' भ्र० १४७। पु० दीवार इ० के ऊपर लगनेवाला नमकका अंश।

नोर—पु० आँसू (विद्या० ६७, ७८, १०६)।

नोर, नोल—वि० नवल, नया।

नोवना—सक्रि० दूध दुहते समय गायके पाँव रस्सीसे बाँधना।

नोहर—वि० अद्भुत, विलक्षण। दुर्लभ।

नौ—वि० आठ और एक। पु० जहाज।

नौकर—पु० सेवक, भृत्य।

नौकरी—स्त्री० चाकरी, टहल, सेवा।

नौका—स्त्री० नाव।

नौगरें, नौगिरिहो—स्त्री० हाथमें पहननेका एक गहना 'नौगिरिही तोड़र पहिराऊँ।' प० १९१

नौछावर—स्त्री० देखो 'निछावर'।

नौज—अ० न सही। ईश्वर न करे 'नौज होय घर पुरुष विहूना।' प० १७८

नौजा—पु० बादाम। चिलगोजा।

नौजी—स्त्री० लीची। देखो 'न्योजी'।

नौतन—वि० नूतन, नया। 'मनहु नौतन घन घटामें तड़ित तरल अकार।' सू० १७७

नौतम—वि० बिलकुल नया 'तुम्ह सतगुर मैं नौतम चेला...।' कबीर १२६। पु० नम्रता।

नौधा—वि० नवधा, नौ तरहकी (भक्ति)।

नौन—पु० नमक (रवि० २९)।

नौनगा—पु० बाँहपर पहननेका एक गहना।

नौना—अक्रि० नवना, झुकना। वि० अच्छा, सुन्दर।

नौबढ़—वि० हालमें ही बढ़ा हुआ।

नौबत—स्त्री० पारी। दशा, संयोग। उत्सव या मंगल-सूचक बाजा 'नौबत बजे पै फेर मेर बजनो कहा।' ग्वाल, (सू० १०)

नौमि—सक्रि० 'मैं प्रणाम करता हूँ', 'नौमि राम भंजन महि-भारं।' रामा० ३६६

नौमी—स्त्री० किसी पाखकी नवीं तिथि।

नौरंग—पु० औरंगजेब। एक पक्षी।

नौरोज—पु० (पारसियोंका) वर्षका पहला दिन। त्योहारका दिन।

नौल—वि० नवल 'सिव सरजाकी जगतमें राजत कीरति नौल।' भू० ११७, (मति० १९१)।

नौलखा—वि० नौ लाखका, बहुमूल्य।

नौशा—पु० दुलहा।

नौसत—पु० सोलहो शृंगार 'नौसत साजे चली गोपिका गिरिवर पूजा हेत।' सू०। वि० सोलह।

नौसरा—पु० नौ लड़ोंका हार।

नौसिखिया, नौसिखुवा—वि० जिसने हालमें ही कोई बात सीखी हो, अनाड़ी।

न्याइ, न्याउ—पु० न्याय, इन्साफ, नीति। निर्णय।

न्याति—स्त्री० जाति 'मधुकर कहा कारेकी न्याति।' सूवे० ३७१

न्याय—पु० इंसाफ, नीति, यथार्थ बात। युक्ति। तर्क। तर्कशास्त्र। वि० ठीक, उचित 'उपमा न्याय कही अंगनकी।' भ्र० १२६ (४३ भी)। के समान 'इत देखौं तौ आगे मधुकर मत्त न्याय सतरात।' भ्र० १३८

न्यार, न्यारा—वि० पृथक्। विलक्षण, निराला। दूर।

न्यारे—क्रिवि० दूर, अलग।

न्याव—पु० न्याय 'राजा करे सो न्याव।' फैसला, उचित बात, नीति।

न्यून—वि० कम। नीच।

न्योछावर—स्त्री० देखो 'निछावर'।

न्योजी—स्त्री० लीची, नौजी। 'फरे तूत कमरख औ न्योजी। राय करौंदा बेर चिरौंजी।' प० १५, (८७)

न्योतना—सक्रि० निमंत्रित करना 'द्विजराजनि जुत न्योतिए, लाल बदन दुजराज।' मति० २२२

न्योतहरी—पु० नेवतेमें आया हुआ व्यक्ति। 'नेउनहरि'।

न्योता—पु० निमंत्रण, बुलावा, नेवता।

न्योला—पु० नेवला नामक जन्तुविशेष।

न्हवाना—सक्रि० नहलाना, स्नान कराना (उदे० 'चुगाना')।

न्हाना—अक्रि० नहाना, स्नान करना (उदे० 'ओन्हाना')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प

पंक—पु० कीचड़ । लेप (के० १६३) ।
पंकज—पु० कमल । **पंकजयोनि** = ब्रह्मा ।
पंकजराग—पु० पद्मराग नामक मणि ।
पंक्ति—स्त्री० कतार, पाँत, श्रेणी । दसकी संख्या ।
पंख—पु० पक्ष, पर ।
पँखड़ी—स्त्री० देखो 'पँखुड़ी' ।
पंखा—पु० पेना, बिजना ।
पँखिया—स्त्री० भूसीके सूक्ष्म टुकड़े । पखड़ी । ओंठ पर 'बेगिही बूढ़ि गई पँखियाँ अँखियाँ मधुकी मखियाँ भई मेरी ।' देव
पंखी—पु० पक्षी (प० ४१, उदे० 'कस्नू') । पँखड़ी । स्त्री० छोटा बिजना ।
पँखुड़ी, पँखुरी—स्त्री० फूलकी पत्ती, पखड़ी पँखुरी लगैं गुलाबकी परिहै गात खरौट ।' वि० १०७
पँखेरू—पु० पक्षी ।
पंग, पंगला—वि० पंगु, लँगड़ा (रतन० ४६), बेकाम, कुण्ठित, शक्तिहीन '...भई पवनगति पंग'—सू० ४१, '.. भई गिरागति पंग'—सू० ९०
पंगत, पंगति—स्त्री० पंक्ति, श्रेणी, भोजन करनेवालोंकी कतार । मण्डली 'मनो हंस बिसाल पंगति नारि ।
पंगा—वि० देखो 'पंग' । [† बालक संग ।' सू० ८७
पंगु, पंगुल, पँगुला—वि० लँगड़ा 'पाँयनसे पँगुला हुआ सतगुरु मारा बान ।' साखी ९
पंच—पु० पाँच या अधिक मनुष्योंका समूह, सर्व साधारण 'पंच कहैं शिव सती बिवाही ।' रामा० ४८ । न्याय करनेवाली सभा, पंचायत । पंचायतका सदस्य । मध्यस्थ । पाँचकी संख्या । वि० पाँच ।
पंचक—पु० पाँचका समूह । धनिष्ठा आदि अशुभ नक्षत्र ।
पंचकवल—पु० भोजनके पाँच ग्रास जो शुरूमें अलग निकाल दिये जाते हैं ।
पंचकोस—पु० पाँच कोस लम्बी चौड़ी नगरी, काशी ।
पंचतोरिया,-लिया—पु० एक महीन वस्त्र ।
पंचत्व—पु० मृत्यु ।
पंचमुख—पु० शिवजी ।
पँचमेल—वि० जिसमें पाँच या कई प्रकारकी वस्तुएँ मिली हों ।
पँचरँग, पँचरंगा—वि० पाँच या अनेक रंगोंका ।
पँचलड़ी,-लरी—स्त्री० पाँच लड़ोंकी माला ।
पंचवक्त्र—पु० शिवजी ।
पंचबाण—पु० कामदेव ।
पंचसरा—पु० कामदेव (अ० १३६ ।
पंचायत—स्त्री० पंचोंकी सभा ।
पंचाल—पु० देश विशेष, वहाँके रहनेवाले या वहाँका राजा ।
पंचालिका—स्त्री० गुड़िया, नर्तकी 'नचति मंच पंचालिका कर संकलित अपार ।' राम० ५८
पंचाली—स्त्री० गुड़िया । द्रौपदी ।
पंछा—पु० छालेदु० के भीतरसे निकला हुआ पानी ।
पंछाला—पु० छाला, फफोला ।
पंछी—पु० पक्षी 'अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम ।' मलूकदास
पंजर—पु० कंकाल, ठठरी । देह । पिंजड़ा 'चटपटात छूटत न ज्यों पंजर पर्‌यो पतंग ।' मति २०१
पँजरना—अक्रि० जलना ।
पँजरी—स्त्री० अर्थी ।
पंजा—पु० हथेली या तलवे सहित पाँचों अँगुलियाँ । चंगुल । छक्कापंजा = चालबाजी ।
पंजीरी—स्त्री० चीनी मिश्रित धनिया आदिका भूना हुआ चूर्ण ।
पंडल—वि० पीला । पु० पिण्ड, देह ।
पंडा—स्त्री० बुद्धि, विवेक ।
पंडाल—पु० बड़ा मण्डप ।
पंडित—वि० जिसमें पंडा हो, प्रवीण पु० पुजारी ।
पंडिताई—स्त्री० विद्वत्ता ।
पंडिताऊ—वि० पण्डितोंके तरीकेका ।
पंडुक—पु० कबूतरकी तरहकी एक चिड़िया ।
पंडुर—पु० एक तरहका साँप ।
पंथ—पु० मार्ग 'हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहि नहिं पंथ ।' रामा० ४०३ । रीति । धर्म, सम्प्रदाय ।
पंथान—पु० रास्ता, मार्ग ।
पंथिक, पंथी—पु० पथिक । किसी मतका माननेवाला ।
पंद—स्त्री० उपदेश ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंपाल—वि० पापी, बड़ा (?) 'बुरो पेट पंपाल है बुरो बुरसे भागनो। गंग कहे अकबर सुनो सबसे बुरो है माँगनो।' गंग

पँवर—स्त्री० 'पँवरि', ड्योढ़ी। सामान।

पँवरना—अक्रि० तैरना, पता लगाना, थाह लेना।

पँवरि—स्त्री० ड्योढ़ी (उदे० 'अरकान', 'कटाऊ'), प्रवेशद्वार 'आतुर जाइ पँवरि भयो ठाढ़ो कहो पँवरिआ जाइ।' सूबे० २४८

पँवरिआ,-रिया—पु० ड्योढ़ीदार, द्वाररक्षक (उदे० 'पँवरि')।

पँवरी—स्त्री० ड्योढ़ी। खडाऊँ 'पाँव न पँवरी, भूभुर जरई।' प० ३०३

पँवाड़ा, पँवारा—पु० विस्तृत आख्यान, कीर्त्ति-कथा '...अजहूँ जग जागत जासु पँवारो।' कविता० १९६

पँवार—पु० प्रवाल, मूँगा (विद्या० १२३, १२८)। राजपूतोंका एक भेद।

पँवारना—सक्रि० हटाना, फेंकना।

पंसारी—पु० मसाले तथा दवा इ० की चीजें बेचनेवाला।

पंसासार—पु० पाँसेका खेल, चौपड़।

पँसुरी, पँसुली—स्त्री० पसली

पंसेरी—स्त्री० पाँच सेरकी तौल।

पइग—पु० देखो 'पैग'।

पइठना—अक्रि० पैठना।

पइसार—पु० प्रवेश 'अति लघु रूप धरौं निसि नगर करउँ पइसार।' रामा० ४१६

पउँरि—स्त्री० पौंरि, ड्योढ़ी।

पउनार—स्त्री० पद्मनाल, कमलका डंठल।

पउनी—दे० 'पौनी'। 'चलीं पउनि सब गोहने फूल डार लेइ हाथ।' प० ८७

पकड़ना—सक्रि० गहना, थामना, रोकना, ठहराना, धारण करना, कब्जेमें करना, पता लगाना।

पकना—अक्रि० पक्व होना, सीझना, गलना, मवादसे भरना। गोटियोंका पुनः अपने घरमें आ जाना।

पकरना—सक्रि० देखो 'पकड़ना'।

पकवान—पु० कचौरी आदि तली हुई वस्तुएँ।

पका—वि० देखो 'पक्का'।

पकाना—सक्रि० आँचमें तैयार करना, सिझाना। फल आदिको रसयुक्त करना। फोड़ेमें मवाद पैदा कराना।

पकावन—पु० पकवान 'दूनी बहुत पकावन साधे।' प० २९५

पकौड़ा, पकौड़ी—स्त्री० घी या तेलमें पकायी हुई बेसनकी बड़ी।

पक्का—वि० आँच दिखाया हुआ या गलाया हुआ। सिद्ध किया हुआ, जो कच्चा न हो। दृढ़, टिकाऊ। प्रौढ़। चतुर। प्रामाणिक, स्थिर।

पक्खर—वि० पक्का, दृढ़। स्त्री० पाखर, लोहेकी झूल।

पक्व—वि० पक्का, पका हुआ। प्रौढ़, दृढ़।

पक्ष—पु० पार्श्व, दल, मण्डली। पहलू। अनुकूल मत। सहायक। सेना। पंख, पर। पाख। घर। पक्षी।

पक्षपात—पु० तरफदारी।

पक्षाघात—पु० अर्द्धांग या लकवेकी बीमारी।

पक्षिणी—स्त्री० चिड़िया। पूर्णमासी।

पदम—पु० आँखकी बरौनी।

पखंड—पु० वेदनिंदा। ढोंग, छल।

पखंडी—वि० वेद-निंदक। छली, मक्कार। कठपुतली नचानेवाला (उदे० 'काठ')।

पख—स्त्री० अड़ंगा, शर्त्त। नुक्स। झगड़ा। पक्ष। पाख।

पखड़ी—स्त्री० फूलकी पत्ती, पुष्पदल।

पखरना—सक्रि० पखारना 'करिहौं सेव, पखरिहौं पाया।' प० ५९, (के० १९३)

पखराना—सक्रि० धुलवाना 'पद पंकज पखराय कै कह केशव सुखपाय।' के० १९३

पखरी—स्त्री० फूलकी पत्ती। लोहेकी झूल।

पखरैत—पु० लोहेकी झूलयुक्त हाथी, घोड़ा या बैल (भू० १२१)।

पखवाड़ा,-वारा—पु० दो सप्ताह, अर्द्धमास।

पखा—पु० देखो 'पंखा', (उदे० 'तरराना')।

पखाउज—पु० एक बाजा।

पखान—पु० पाषाण, पत्थर (मति० २२७)।

पखाना—पु० कहावत, कथा। शौचस्थान। मैला।

पखारना—सक्रि० प्रक्षालित करना, धोना (उदे० 'डाढ़ना', 'उतारना'), 'मम पूजन हित भूमि पखारी।' रघु० १११

पखाल—पु० मशक (मति० २२८)। मुख धोनेका बर्त्तन 'त्रिय चरित्र मयमत्त न समुझत उठि पखाल मुख धोवत।' सूरा० ९। धौंकनी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पखावज—पु० एक बाजा (सू० १५६)।
पखिया—वि० झगड़ा करनेवाला। पक्षेपिण।
पखी, पखीरी—पु० पक्षी।
पखुड़ी, पखुरी—स्त्री० पुष्पदल।
पखुवा—पु० पार्श्व, बगल।
पखेरू—पु० पक्षी।
पखौआ—पु० पंख 'कीट मुकुट सिर छाँड़ि पखौआ मोरन को क्यों धार्‌यो।' हरि०
पखौटा—पु० पर, डैना।
पग—पु० डग। पाँव (उदे० 'पगतरी')।
पगडंडी—स्त्री० लोगोंके चलनेसे बना छोटा मार्ग।
पगड़ी—स्त्री० पगिया, साफा, पाग।
पगतरी—स्त्री० जूता 'तुलसी जाके बदन ते धोखेउ निकसत राम। ताके पगकी पगतरी मेरे तनुको चाम।' वैराग्य संदीपनी
पगदासी—स्त्री० जूता या खड़ाऊँ।
पगना—अक्रि० रसमें डूबना, सनना, लिप्त होना 'पगीं प्रेम नँदलालके हमैं न भावत जोग।' ललित० ८३
पगनियाँ—स्त्री० जूता।
पगरा—पु० सफर शुरू करनेका समय, सवेरा (उदे० 'जीवनमूल')। पग, डग।
पगरी—स्त्री० पगड़ी, पगिया।
पगला—वि० बावला, बासमझ।
पगहा—पु० बैल आदि बाँधनेकी रस्सी 'आगे नाथ न पाछे पगहा। किस कारण वह नाचै गदहा।'
पगा—पु० दुपट्टा 'तृण दशनन लै मिल दसकंधर कंठहि मेलि पगा।' सूरा० ५४। पगड़ी 'सीस पगा न झँगा तनमें...' सुदामा० ७। देखो 'पगरा'। देखो 'पगहा'।
पगाना—सक्रि० रसलीन करना, अनुरक्त करना।
पगार—स्त्री० चहारदीवारी 'अति उच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिन्तामनि नारि।' राम० २८। पु० वेतन। पाँवसे कुचली हुई मिट्टी। पैदल पार करने योग्य नदी या जलाशय।
पगाह—स्त्री० देखो 'पगरा'।
पगियाना,-याना—सक्रि० देखो 'पगाना'।
पगिया—स्त्री० पाग, पगड़ी, साफा।
पगुराना—अक्रि० जुगाली करना। हड़प कर जाना।
पगुहा—पु० गिरवाँ। बैलों इ० के गलेकी रस्सी।
पचकना—अक्रि० पटकना, दबना, सूखना।
पचखा—पु० धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र, पंचक।
पचगुना—वि० पाँचगुना।
पचड़ा,-रा—पु० बखेड़ा, झंझट।
पचतोरिया,-लिया—पु० एक तरहका कपड़ा।
पचना—अक्रि० हजम होना। अधिक मेहनतसे गलना या क्षीण होना, थकना 'पचि रही मन ज्ञान करि करि लहनि नाहिंन तीर।' सू० १२५। प्रयत्न करना 'चलहु कि जल बिन नाव कोटि जतन पचि पचि मरिय।' रामा० ५८५
पचमेल—वि० देखो 'पँचमेल'।
पचवना, पचाना—सक्रि० हजम करना, हड़प जाना, पकाना, अधिक परिश्रमसे क्षीण करना।
पचारना—सक्रि० प्रचारना, ललकारना।
पचित—वि० बैठाया हुआ, जड़ा हुआ।
पचौर, पचौली—पु० गाँवका मुखिया। सरदार 'चले पचौर विदा ह्वै ज्योंही।' छत्र० १२६
पचौवर—वि० पाँच तह किया हुआ।
पच्चड़,-र—स्त्री० लकड़ी इ० के ढीले जोड़में कसनेके लिए लगायी गयी फट्टी इ०।
पच्ची—स्त्री० जुड़ाई, खुदाई, जड़ाव।
पच्चीकारी—स्त्री० पच्ची करनेकी कला या क्रिया।
पच्छ—पु० देखो 'पक्ष'।
पच्छघात—पु० देखो 'पक्षाघात'।
पच्छिउँ, पच्छिम, पच्छिवँ—पु० पश्चिम दिशा।
पच्छिनी—स्त्री० चिड़िया (उदे० 'गच्छना')।
पच्छी—पु० पक्षी। सहायक।
पछड़ना—अक्रि० गिर पड़ना। पीछे रह जाना, पीछे हटना।
पछताना, पछतावना—अक्रि० पश्चात्ताप करना, पीछे खेद प्रकट करना।
पछतानि—स्त्री० देखो 'पछतावा'।
पछताव, पछतावा—पु० पश्चात्ताप, अनुताप।
पछमन—क्रिवि० पीछे, 'अगमन' का उलटा 'धरि न सकत पग पछमनो सब अगमुख उर लाग।' सू० २०
पछरा—पु० पछाड़ 'कहु न उपाय चलत अति व्याकुल, मुरि मुरि पछरा खात।' हरि०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पछलगा,-लागा—पु० अनुयायी 'हौं पंडितन केर पछलगा।' प० १०, 'अगुआ केर होहु पछलागू।' प० ६१

पछलत्त—पु० पिछली टाँगों द्वारा प्रहार (उदे० 'गाहना')।

पछाँह—पु० पश्चिमका प्रदेश।

पछाड़—स्त्री० अचेत होकर गिरना।

पछाड़ना—सक्रि० लड़ाईमें पटकना, गिराना। पटक कर [धोना।

पछानना—सक्रि० पहिचानना।

पछारना—सक्रि० देखो 'पछाड़ना'।

पछावरि—स्त्री० एक पकवान। एक पेय पदार्थ या विधि सुदामाजीको अच्छकै जिमाय फिरि पाछेकै पछावरि परोसी आनि कंदकी।' सुदामा० ११, (उदे० 'क्षारी')

पछिआना,-याना—सक्रि० पीछे लगना।

पछिताना—अक्रि० पश्चात्ताप करना 'सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछिताती।' रामा० २०४, (उदे० 'चुकना')

पछितानि; पछिताव—दे० 'पछतानि', 'पछताव'।

पछियाउर—स्त्री० देखो 'पछ्यावर'।

पछिवाँ, पछुवाँ—वि० पश्चिमी (हवा)। स्त्री० पश्चिमी हवा।

पछीत—स्त्री० मकानका पिछवाड़ा।

पछुआ—पु० पैरका एक गहना।

पछेला—पु० हाथमें पहननेका एक तरहका कड़ा।

पछेवड़ा—पु० पिछौरा, चद्दर 'दिल मंदिरमें पैसि करि तजि पछेवड़ा सोइ।' कबीर ५८

पछोड़ना, पछोरना—सक्रि० सूपसे साफ करना, फटकना 'रहिमन यह तनु सूप है, लीजे जगत् पछोर।' रहीम, (भ० ४७)

पछ्यावर—स्त्री० एक पेय पदार्थ जो भोजनान्तमें परसा जाता है।

पजरना—अक्रि० जलना 'पजरै नीर गुलाबकै, बिथकी बात बुझाइ।' वि० २६

पजारना—सक्रि० जलाना 'नगर फेरि पुनि पूँछि पजारी।' रामा० ४२७

पजावा—पु० ईंट पकानेका भट्टा।

पजोखा—पु० मातमपुरसी।

पटंबर—पु० रेशमी वस्त्र।

पट—पु० वस्त्र। लकड़ी, धातु, कागज आदिका टुकड़ा जिसपर चित्रादि अंकित हों। परदा, किवाड़, पट्ट, सिंहासन। पल्ला 'धरती सरग जाँत पट दोऊ।' प० ६८। वि० पेटके बल, औंधा।

पटइन, पटइनि—स्त्री० पटवा जातिकी स्त्री।

पटकन—स्त्री० पटकनेकी क्रिया, पछाड़। उपद्रव।

पटकना—सक्रि० गिराना, उठाकर दे मारना 'भागत भट पटकहिं धरि धरनी।' रामा० ४७६। अक्रि० पचकना, आवाजके साथ फटना '...पटकत बाँस काँस कुसताल।' सू० ८१

पटकनिया, पटकनी—स्त्री० पछाड़। पटकने या पटके जानेकी क्रिया।

पटका—पु० कमर बाँधनेका रूमाल या दुपट्टा। पचका।

पटकान—स्त्री० देखो 'पटकनिया'।

पटतर—पु० समता, उपमा 'वैदेही मुख-पटतर दीन्हे। होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे।' रामा० १३०। वि० चौरस, समतल।

पटतरना—सक्रि० तुल्य ठहराना, उपमा देना 'केहि पटतरउँ विदेहकुमारी।' रामा० ११६, (उदे० 'सुमरनी')।

पटतारना—सक्रि० शस्त्र सँभालना 'धरि धरि मुच्छनु हथ्थ सेलु साँगन पटतारत।' सुजा० ३३। चौरस करना।

पटधारी—पु० तोशाखानेका कर्मचारी। वि० जो वस्त्र धारण किये हो।

पटन—पु० देखो 'पट्टन', (साखी ९१)।

पटना—अक्रि० भर जाना, परिपूर्ण होना। ढँक जाना। मेल खाना, मन मिलना। साँचा जाना। तैयार हो जाना।

पटपटाना—सक्रि० 'पटपट' शब्द करना। अक्रि० भूख, वर्षा, आतप इ० से तकलीफ उठाना।

पटपर—पु० उजाड़ जगह, मैदान 'कत पटपर गोता मारत हौ निरे भूँडके खेत।' भ० १२

पटबास—पु० कपड़े सुवासित करनेकी सुगंधित वस्तु, 'जल थल फल फूल भूरि अंबर पटबास भूरि, स्वच्छ यक्षकर्दम हिय, देवन अभिलाषे।' के० १६६। तम्बू।

पटबीजना—पु० खद्योत, जुगनू।

पटरा—पु० तख्ता। पाटा, हेंगा।

पटरानी—स्त्री० वह रानी जो राजाके साथ सिंहासन-पर बैठ सकती हो, प्रधान रानी।

पटरी—स्त्री० पटिया, तख्ती। लकीर। फीता। सड़कके किनारेका ऊँचा भाग।—पैठना = मेल होना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पटल—पु० आवरण। तख्ता। समूह। तिलक। तह। छप्पर। आँखका पर्दा।

पटली—स्त्री० पंक्ति 'नवपल्लव कुसुमित तरु नाना। चंचरीक पटली कर गाना।' रामा० ३८८। तख्त। पटुली (सू० १७४)। छप्पर।

पटवा—पु० गहना गुहनेवाला।

पटवाना—सक्रि० ढँकवाना। भरवा देना। चुकता कराना। सिंचवाना। शान्त कराना।

पटवारी—स्त्री० वस्त्र पहिरानेवाली दासी। पु० जमीन इत्यादिका लेखा रखनेवाला कर्मचारी।

पटवास—पु० देखो 'पटवास'। तम्बू। शिविर।

पटह—पु० नगाड़ा, डंका (सुजा० १३)।

पटहार—पु० पटवा।

पटा—पु० पीढ़ा, चौकी। पट्टा, सनद (उदे० 'खजीना')। सौदा। किर्चके आकारका लोहेका एक हथियार। —बाँधना = पटरानी बनाना।

पटाका, पटाखा—पु० 'पटाक' शब्द। एक तरहकी आतशबाजी। तमाचा।

पटाना—सक्रि० ढँकवाना। भरकर या पीटकर बराबर कराना। सौदा तै करना। सींचना (विद्या० १९२,२५६)। अदा करना। अक्रि० शांत होना, चुपचाप बैठना।

पटार—स्त्री० पेटी, पिटारी। गोजर (बुंदेल०)।

पटाव—पु० पाटनेकी क्रिया। पाटन। द्वारके ऊपरका तख्ता।

पटिआ, पटिया—स्त्री० छोटा तख्ता। लिखनेकी पट्टी। सिरके सँवारे हुए बाल 'वै मारे सिर पटिया पारे, कंथा काहि उढ़ाऊँ।' मृ० २६१। हेंगा।

पटी—स्त्री० कपड़ेकी पट्टी (लम्बा टुकड़ा) (सू० ५)। परदा। कमरबन्द।

पटीर—पु० मेघ। चन्दन 'सोर समीर उसीर गुलाबके नीर पटीरहूँ ते सरसाती।' दास १३७। पपीहा। कन्या। वटवृक्ष। कामदेव।

पटीलना—अक्रि० मारना पीटना। उलटी सीधी बातें कहकर समझाना। परास्त करना। पूरा करना।

पटु—वि० निपुण, चालाक। तीक्ष्ण, निष्ठुर। सुन्दर। पु० परवल। नमक। करेला।

पटुका—पु० कपड़ेका लम्बा टुकड़ा। चादर।

पटुली—स्त्री० झूलेकी काठकी तख्ती, चौकी 'कनक खम्भ जराव पटुली, लागे रतन अमोल'। सू० १८७

पटुवा—पु० देखो 'पटवा'। एक तरहका सन।

पट्टका—पु० पटका, कमरबन्द।

पटेबाज—पु० पटा खेलनेवाला, पटैत।

पटेरा—पु० देखो 'पटेला'।

पटेल—पु० गाँवका मुखिया 'सूखी सुता पटेलकी सूखी ऊखनि पेखि।' मति० १७८

पटेला—पु० वह नाव जिसका बिचला हिस्सा पटा हो। एक घास। कुश्तीका एक पेंच। सिल। हेंगा। एक तरहके चिपटे कड़े (बुंदेल०)।

पटेली—स्त्री० छोटा पटेला।

पटैत—पु० पटेबाज।

पटैला—पु० द्वार बन्द करनेका डंडा, ब्योंड़ा। 'देखो 'पटेला'।

पटोर—पु० रेशमी वस्त्र 'कंबल बसन विचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहुमोल न थोरे।' रामा० १७७, (उदे० 'टाट')

पटोरी—स्त्री० रेशमी साड़ी 'नखसिख सुंदर चिह्न सुरतके अरु मरगजी पटोरी।' सू० १६५

पटोल—पु० रेशमी वस्त्र 'जाके मीत नन्द-नन्दनसे ढकि लइ पीत पटोलै।' सू० १३। परवल।

पटोली—स्त्री० एक तरहकी तरोई। चादर (उदे० 'कामलड़ी')।

पट्टौनी—पु० मल्लाह।

पट्ट—पु० तख्ती, पटिया। पट्टा। दुपट्टा। सिंहासन। नगर। रेशम। एक तरहका सन। चौराहा। वि० मुख्य। औंधा।

पट्टन—पु० बड़ा नगर (साखी १७)।

पट्टमहिषी,-राज्ञी—स्त्री० पटरानी, मुख्य रानी।

पट्टा—पु० भूमि आदिके उपयोगका अधिकारपत्र, सनद। पीढ़ा, पट्टी। सिरके बाल।

पट्टिश, पट्टिस—पु० एक तरहका खाँड़ा या पटा 'सूरज मुसल, नील पट्टिश, परिघ नल, जामवन्त असि, हनू तोमर संहारे हैं।' राम० ४९६

पट्टी—स्त्री० पाटी, तख्ती। पाठ, शिक्षा। भुलावा। कपड़ेका लम्बा पतला टुकड़ा। जमींदारी आदिका भाग। सँवारे हुए बाल। एक तरहका अतिरिक्त कर।

पट्टीदार—पु० हिस्सेदार, बराबरका अधिकारी।

पट्टू—पु० एक ऊनी वस्त्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पट्ठा—पु० तरुण पुरुष। घोड़े इ० का यौवनोन्मुख बच्चा।

पठनेटा—पु० पठान जातिमें उत्पन्न व्यक्ति 'परे रुधिर लपेटे पठनेटे फरकत हैं'—भू० १६२, (उदे० 'खखेटना')

पठवाना, पठाना—सक्रि० भिजवाना।

पठावनि, पठावनी—स्त्री० किसीको कहीं भेजना। भेजनेकी मजदूरी 'तेई पायँ पाइकै चढाइ नाव धोए बिनु खैहौं न पठावनी कै हैहौं न हँसाइकै।' कविता० १६६

पठौना—सक्रि० भेजना (उदे० 'ठेलना')।

पठौनी—स्त्री० देखो 'पठावनी'।

पड़त, पड़ता—पु० सर्फा, लागत। औसत।

पड़ताल—स्त्री० छानबीन, अनुसन्धान। खेतों इत्यादि-की जाँच।

पड़ती—स्त्री० भूमि जो कुछ समयसे जोती न गयी हो।

पड़ना—अक्रि० अनिष्ट होना, घटित होना। बीचमें आना। बेटना, आराम करना। गिरना। ठहरना, डेरा डालना। उत्पन्न होना। चिन्ता या इच्छा होना। मार्गमें मिलना, मिलना, पड़ता खाना, औसत होना। हो जाना।

पड़पड़ाना—अक्रि० जीभपर जलन मालूम होना। पीटना।

पड़ाव—पु० डेरा डालनेकी क्रिया। ठहरनेकी जगह।

पड़िया—स्त्री० भैंसका मादा बच्चा।

पड़िवा—स्त्री० प्रतिपदा, प्रथमा।

पड़ोरा—पु० परवल नामक तरकारी।

पड़ोसी, पड़ौसी—पु० घरके समीप रहनेवाला, पास रहनेवाला, प्रतिवेशी।

पढ़ना—सक्रि० बाँचना, पाठ करना, जपना, रटना। मंत्र फूँकना।

पढ़वाना—सक्रि० बँचवाना।

पढ़ाई—स्त्री० अध्ययन, अध्यापन। पढ़ानेका तरीका। पढ़ानेका पारिश्रमिक।

पढ़ाना—सक्रि० सिखाना, शिक्षा देना। तोते आदिको बोलना सिखाना 'कनक पींजरा राखि पढ़ाये।' रामा० १८४

पढ़ैया—पु० पढ़नेवाला।

पण—पु० प्रतिज्ञा। मूल्य, शुल्क। धन। जूआ। व्यापार। सौदा। एक प्राचीन नाप। प्रशंसा।

पणव—पु० छोटा नगाड़ा। ढोल।

पणाशी—वि० नाश करनेवाला, विनाशक 'हौं जबही जब पूजन जात पितापद पावन पाप पणासी।' राम० ६९

पण्य—पु० बाजार, दूकान। बेचनेकी वस्तु। वि० बेचने या खरीदने योग्य।

पण्यशाला—स्त्री० दूकान।

पतंग—पु० सूर्य 'कौतुक देखि पतंग भुलाना।' रामा० १०८। फतिंगा, पक्षी (उदे० 'पंजर'), 'दीप सिखासम युवतितन मन जनि होसि पतंग।' रामा० ३९२ (४४३ भी), 'सुबहिंको पूछ पतंग मँडारे।' प० १०८। चिनगारी। चंग, गुड्डी।

पतंगा—पु० फतिंगा, कोई उड़नेवाला कीड़ा। चिनगारी।

पत—स्त्री० प्रतिष्ठा। आबरू, लज्जा 'जनकी और कौन पत राखे।' सूवि० १२। पति, स्वामी।

पतझड़, पतझर, पतझाड़—स्त्री० वह ऋतु जिसमें पेड़ोंके पत्ते झड़ते हैं, शिशिर ऋतु।

पतत्र—पु० पंख, पर। पतत्री = पक्षी।

पतन—पु० गिरना, अधोगति, नाश। उड़ान।

पतपानी—पु० इज्जत, प्रतिष्ठा।

पतर—पु० पत्ता। पनवारा। वि० पतला।

पतरा—वि० पतला, महीन, झीना। कृश, निर्बल।

पतरिंग,-रेंगा—पु० एक छोटी चिड़िया।

पतरी—स्त्री० पत्तल।

पतला—वि० महीन, झीना, निर्बल, गाढ़ा नहीं।

पतली—स्त्री० सरकंडा।

पतवर—क्रिवि० पंक्तिके सिलसिलेसे। बराबर बराबर।

पतवार—स्त्री० नावके पीछेकी ओरका वह अंग जिसके घुमानेसे वह घूम जाती है।

पतवारी, पतवाल—स्त्री० पतवार। ऊखका खेत।

पतस—पु० चिड़िया, फनगा।

पता—पु० ठिकाना, टोह, चिह्न, खोज, खबर, भेद।

पताई—स्त्री० सूखी हुई पत्तियाँ या पत्तियोंकी राशि।

पताका—स्त्री० झंडा, ध्वजा, जयन्ती। पताका-दंड।

पतार—पु० पाताल (उदे० 'चाँपना')। जंगल।

पताल—पु० पाताल।

पतावर—पु० सूखे पत्ते।

पति—पु० स्वामी, कांत। साख। लज्जा, प्रतिष्ठा 'सूर सबै तुम कत भईं बौरी याकी पति जो राखत।' भ्र० १८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पतिआना—सक्रि० एतबार करना, मानना ।
पतिआर,-आरा—पु० विश्वास, प्रतीति 'कहा परदेसी को पतिआरो ।' सूबे० ३१९
पतित—वि० गिरा हुआ । नीतिभ्रष्ट, पापी । नीच ।
पतिदेवता—वि० पति ही जिसका देवता हो, पतिव्रता ।
पतिनी—स्त्री० पत्नी, स्त्री ।
पतिया—स्त्री० चिट्ठी (सू० १९८) ।
पतियाना—सक्रि० देखो 'पतिआना', (साखी ११७) ।
पतियार—वि० विश्वसनीय ।
पतियारा—पु० विश्वास, प्रतीति (कबीर ३२४) ।
पतिवर्त्त, पतिव्रत—पु० पतिके प्रति स्त्रीका अविचल प्रेम तथा भक्ति 'कह कबीर पतिवर्त्त बिन क्यों रीझै भरतार ।' साखी ३४
पतिवर्त्ता, पतिव्रता—वि० सती, सच्चरित्रा ।
पतीजना—अक्रि० पतियाना, विश्वास करना 'तिनहिं न पतीजै ही ये कुबही न माने ।' सूबे० ३०८
पतीनना—अक्रि० सच मानना, विश्वास करना 'मन कबीर अबहूँ न पतीना ।' कबीर २१०
पतीरी—स्त्री० एक तरहकी पटाई ।
पतीली—स्त्री० पटलोईके आकारका एक प्रकारका पीतल [हु० का पात्र ।
पतुकी—स्त्री० हाँडी ।
पतुरिया—स्त्री० गणिका, वेश्या ।
पतूख, पतूखी—स्त्री० छोटा दोना 'भारक वह मुख आनि दिखावहु दुहि पै पिवत पतूखी सूबे० ३५९
पतोखा—पु० दोना ।
पतोखी—स्त्री० छोटा दोना 'छीरसमुद्र सयन संतत जेहि, माँगत दूध पतोखी दै भरि ।' सू० ७१
पतोह, पतोहू—स्त्री० पुत्रवधू ।
पतौआ,-वा—पु० पत्ता 'जाने, बिनु जाने, कै रिसाने, केहि कबहुँक, सिवहिं चढ़ाये हैहैं बेलके पतौवा हैं ।' [कविता० २४३
पत्त—पु० पत्र, पत्ता ।
पत्तन—पु० शहर । मृदंग ।
पत्तर, पत्तल—पु० धातुका चिपटा लम्बा टुकड़ा । थाली-का काम देनेवाला पत्तोंका पात्र ।
पत्ता—पु० पत्र, पर्ण, धातुकी चादर, कागजका मोटा टुकड़ा ।
पत्ती—स्त्री० छोटा पत्ता । फूलकी पँखड़ी । भाँग ।†
पत्थ—पु० रोगीके उपयुक्त हलका आहार । [† हिस्सा ।
पत्थर—पु० पाषाण, उपल । ओला । रत्न । खाक (तुम क्या पत्थर खाओगे ?) । —का हृदय = दयार्द्र न होनेवाला हृदय । —की लकीर = अमिट या स्थायी वस्तु । —से सिर मारना = व्यर्थ श्रम करना ।
पत्नी—स्त्री० भार्या, गृहिणी ।
पत्याना—सक्रि० विश्वास करना 'जो न पत्याहि पूछ बलदाउहिं अपनी सौंह दिवाइ ।' सू० ७९, (उदे० 'ऐं')
पत्यारा—पु० विश्वास, भरोसा ।
पत्यारी—स्त्री० पंक्ति ।
पत्र—पु० चिट्ठी । पत्ता । पंख । पृष्ठ । लेखाधार ।
पत्र पुष्प—पु० मामूली भेंट । सत्कारकी सामान्य वस्तुएँ ।
पत्रव्यवहार—पु० खत-किताबत, लिखा-पढ़ी ।
पत्रा—पु० पंचांग 'पत्राही तिथि पाइये वा घरके चहुँ पास ।' वि० ३६
पत्रिका—स्त्री० चिट्ठी । संवादपत्र, रिसाला । कोई छोटा लेख ।
पत्री—पु० बाण । पक्षी । पर्वत । पेड़ । श्येन । स्त्री० चिट्ठी । छोटा लेख । वि० पत्रयुक्त ।
पथ—पु० देखो 'पत्थ' । मार्ग । विधान ।
पथरकला—पु० एक तरहकी बन्दूक ।
पथरना—सक्रि० (जौजार हु०) पत्थरपर घिस कर तेज करना ।
पथराना—अक्रि० शिथिल पड़ना । सूखकर पत्थरकी तरह कड़ा हो जाना । स्तब्ध हो जाना ।
पथरी—स्त्री० चकमक पत्थर । पत्थरका बर्त्तन, कुण्डी । सिल्ली । एक रोग । एक मछली (प० २६९) ।
पथरीला—वि० पत्थरोंसे युक्त, जिसमें खूब पत्थर हों ।
पथरौटा—पु०, पथरौटी—स्त्री० पथरी, कुण्डी ।
पथिक, पथी—पु० यात्री, मुसाफिर ।
पथ्य—पु० उपयुक्त हलका भोजन, रोगीके लिए हितकर वस्तु । हित । वि० लाभकारी, श्रेयस्कर 'पूत पथ्य गुरु आयसु अहई ।' रामा० २८३
पद—पु० पाँव । स्थान । चिह्न । प्रदेश । शब्द । दर्जा । उपाधि । भजन । रक्षा । व्यवसाय ।
पदक—पु० तमगा । गलेका एक गहना, चौकी 'उर बनमाल पदक अति सोभित बिप्र चरन चितकहँ करपै ।' विन० १९८
पदचर—पु० प्यादा ।
पदत्राण,-त्रान—पु० जूता (उदे० 'ए') ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पदम—पु० पद्म, कमल। गलेका एक गहना।
पदमिनी—दे० 'पदुमिनी', (उदे० 'उछंग')।
पदमैत्री—स्त्री० वर्णसाम्य, अनुप्रास।
पदरिपु—पु० काँटा।
पदवी—स्त्री० उपाधि, प्रतिष्ठा। रास्ता, परिपाटी। पद।
पदात, पदाति—पु० पैदल सिपाही, प्यादा। सेवक।
पदातिक—पु० जो पैदल चलता हो, पदाति।
पदाना—सक्रि० हैरान करना, छकाना, दौड़ाना।
पदार—पु० पाँवकी रज।
पदारथ, पदार्थ—पु० वस्तु, शब्दका विषय।
पदिक—पु० गलेका एक गहना 'कंठशिरी उर पदिक विराजत गजमोतिनको हार।' सूवे० २३४। जुगनू नामका गहना। तमगा। पैदल सेना। हीरा।
पदी—पु० प्यादा।
पदु—पु० देखो 'पद'। उचित अधिकार। बदला 'आठहु आठ दिसा बलि दै, अपनो पदु लै, पितु जालगि मारे।' राम० ४११
पदुम—पु० पद्म, कमल (उदे० 'कोमलाई')। घोड़ोंका एक चिह्न। सौ नीलकी संख्या। एक गहना।
पदुमिनी—स्त्री० स्त्रियोंका एक भेद। कमलिनी। कमलयुक्त जलाशय।
पद्धति—स्त्री० रीति, विधि। मार्ग।
पद्म—पु० कमल। सौ नील। एक गहना। पाँवका एक [चिह्न।
पद्मज—पु० ब्रह्मा।
पद्मनाभ,-नाभि—पु० विष्णु।
पद्मा—स्त्री० लक्ष्मी।
पद्मासन—पु० एक आसन। ब्रह्मा। शिव।
पद्मिनी—स्त्री० स्त्रियोंका एक भेद। कमलिनी। लक्ष्मी। कमलोंसे युक्त तालाब।
पद्य—पु० छन्दोबद्ध रचना चार चरणोंवाला छन्द। वि० जिसमें छन्द हों। पैर सम्बंधी।
पधराना—सक्रि० प्रतिष्ठित करना, आदरसे लेजाना या बैठाना।
पधारना—अक्रि० पग धारना, गमन करना। आना। सक्रि० स्थापित करना, प्रतिष्ठित करना, ['...हम घर परे हमको पधारिये निकासकै।' रघु०]
पन—पु० प्रण, पण, प्रतिज्ञा 'निसिचरहीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह।' रामा० ३६४। जीवनकी कोई अवस्था 'पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथे पन जेहि अजसु न होई।' रामा० २१९
पनकपड़ा—पु० गीला कपड़ा जिसे चोट इत्यादिपर बाँधते हैं।
पनकाल—पु० अति वर्षाके कारण पड़ा हुआ दुर्भिक्ष।
पनगनि—स्त्री० पन्नगी, सर्पिणी (सू० ११०)।
पनघट—पु० पानी भरनेका स्थान।
पनच—पु० धनुषकी डोरी, चिल्ला 'कायर पनच, बरनि विष-बाना।' प० २३४, 'नदी पनच सर सम दम दाना।' रामा० २६२
पनपना—अक्रि० पुष्ट होना, हराभरा होना, पल्लवित होना।
पनबट्टा—पु० पानके बीड़े रखनेका डब्बा।
पनव—पु० प्रणव, ओंकार। एक बाजा, ढोल 'संख निसान पनव बहु बाजे।' रामा० १६८
पनवार, पनवारा—पु० पत्तल, पत्तल भर भोजन। 'कोइ आगे पनवार बिछावहिं।' प० २८०, 'सादर लगे परन पनवारे।' रामा० १८०
पनस—पु० कटहलका वृक्ष या फल (रामा० ३६५,५०६)।
पनसाखा—पु० पाँच बत्तियोंवाला मसाल।
पनसारी—पु० मसाले, जड़ी-बूटी बेचनेवाला बनिया।
पनसाल—पु० पौसरा।
पनसुइया, पनसोई—स्त्री० छोटी नाव।
पनह—स्त्री० शरण (कबीर १९७)।
पनहा—पु० चोरी पकड़नेवाला। वह दण्ड या पुरस्कार जो चोरीकी वस्तु लौटा देनेके बदले दिया जाय। कपड़े आदिको चौड़ाई।
पनहारिन,-हारी—स्त्री० पानी भरनेवाली स्त्री।
पनहियाँ, पनहीं—स्त्री० पदत्राण, जूता (९० ३०), 'जिन पाँवन पनहीं नहीं तिनहिं देव यमराय।'
पना—पु० एक तरहका शरबत (के० २०७)।
पनाती—पु० नातीका लड़का।
पनार, पनारा, पनाला—पु० नाला 'जैसे जँघरे टेढ़ ढोलत गनत न खाइ पनार।' प्यास स्त्री। प्रवाह 'कंचुकि नहिं सुखत सुनु सजनी! उर बिच बहत पनारे।' भ्र० १२०
पनारी, पनाली—स्त्री० प्रणाली, नाली, मोरी 'सुन्दर उदर उदार रोमावलि राजति भाती। हिय सरवर रसभरी चली मनों उमँगि पनारी।' सन्द०। छाता,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बहाव (अ० ११३)। एक भोज्य वस्तु 'पन्नी पूप पटकरी पापर पाक पिराक पनारी जी।' रघुनाथ

पनाह—स्त्री० बचाव, रक्षा, शरण।

पनिघट—पु० पानी भरनेका घाट।

पनिया—वि० पानीका, पानीमें उत्पन्न। पु० पानी।

पनियाना—सक्रि० पानी देना, सींचना।

पनिहा—वि० देखो 'पनिया'। पु० जासूस।

पनी—पु० प्रण करनेवाला। स्त्री० पन्नी, सुनहला या रुपहला कागज।

पनोर—पु० छेना। पानी निचोड़ा हुआ दही।

पनोला—वि० पानी मिला हुआ, फीका।

पनेरी—पु० तमोली।

पनौटी—स्त्री० पान रखनेके लिए बाँसका बना हुआ [डब्बा।

पन्नग—पु० साँप। पन्ना नामक रत्न।

पन्नगारि—पु० गरुड़।

पन्ना—पु० हरे रङ्गका एक रत्न, मरकत।

पन्नी—स्त्री० सुनहला या रुपहला कागज। चाँदी आदिका पतला पत्तर। एक भोज्य वस्तु (उदे० 'पनारी')। एक तौल।

पपड़ा—पु० ऊपरका हिस्सा, छिलका। रोटीका छिलका।

पपड़ियाना—अक्रि० सूखना, सूखकर पपड़ी पड़ना।

पपड़ी, पपरी—स्त्री० ऊपरका छिलका, देवली। सोहन-पपड़ी आदि मिठाई।

पपनी—स्त्री० बरौनी।

पपिहा, पपीहरा, पपीहा—पु० चातक।

पपीता—पु० एक पेड़ या उसका फल।

पपीलि—स्त्री० चींटी (साखी ५९)।

पपोटा—पु० खंचल।

पपोरना—सक्रि० भुजाएँ ऐंठना और उनकी ओर निहारना 'कंत लाज भय गर्वजुत चल्यो पपोरत बाँह।' ज्वाल

पबारना—सक्रि० गुस्सेमें फेंकना 'तीस तीर रघुबीर [पबारे।' रामा० ५०७

पवि—पु० वज्र।

पब्बय—पु० पर्वत। पत्थर।

पय—पु० दूध। पानी।

पयद—पु० बादल।

पयधि, पयनिधि—पु० समुद्र।

पयना—वि० पैना, तेज, नुकीला।

पयस्विनी—स्त्री० दूध देनेवाली गाय, बकरी। नदी।

पयहारी—पु० दूध पीकर रहनेवाला।

पयादा—पु० पैदल चलनेवाला सैनिक। वि० पैदल (रामा० ५२०)।

पयान—पु० प्रयाण, कूच, प्रस्थान।

पयार, पयाल—पु० सूखी घास, धान आदिके सूखे डण्ठल (उदे० 'गाहना')।

पयोद—पु० बादल।

पयोधर—पु० स्तन। मेघ। पर्वत। जलाशय।

पयोधि, पयोनिधि—पु० जलधि, समुद्र।

परंदा—पु० पक्षी।

परंपरा—स्त्री० अनुक्रम, क्रमागत सिलसिला। परिपाटी, प्राचीन समयकी रीति। सन्तति।

पर—पु० शत्रु। शिव या ब्रह्मा। पंख। वि० दूसरा। पराया। श्रेष्ठ। दूर। अ० किंतु, तो भी।

परकना—अक्रि० परच जाना, अभ्यासी होना, हिलमिल जाना।

परकसना—अक्रि० प्रकाशित होना, प्रकट होना।

परकाजी—वि० परोपकारी 'भरत कहेउ तुम साँचि कहति हौ हम साधू परकाजी।' रामकलेवा

परकाना—सक्रि० चसका लगाना, अभ्यास करना।

परकार—पु० भाँति, प्रकार (उदे० 'करुआना')। परकाल, वृत्त खींचनेका साधन।

परकाला—पु० चौखट। सीढ़ी। टुकड़ा, चिनगारी।

परकास—पु० प्रकाश, उजाला, दीप्ति (सू० ८९)।

परकासना—सक्रि० प्रकाशित करना।

परकिति, परकीति, परकीती—स्त्री० देखो 'प्रकृति'। 'हम बालक अज्ञान अहैं प्रभु अति चंचल परकीती।' प्र० ना० मिश्र, (उदे० 'चंचलाई')।

परकीय—वि० दूसरेका, पराया।

परकीया—स्त्री० अन्य पुरुषसे प्रीति करनेवाली नायिका।

परकीरति, परकृति—स्त्री० देखो 'प्रकृति', (अ० २९)।

परकोटा—पु० किले इत्यादिकी दीवार। बाँध।

परख—स्त्री० जाँच, परीक्षा, पहचान।

परखना—सक्रि० जाँच करना, भला बुरा पहचानना 'धीरज धरम मित्र अरु नारी। आपद काल परखि-यहि चारी।' रामा० ३६१। देखो 'परिखना'।

परखवाना, परखाना—सक्रि० जाँच कराना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परखवैया, परखैया—पु० परखनेवाला।
परगट—वि० प्रकट, स्पष्ट, जाहिर (प० २)।
परगटना—सक्रि० प्रकट करना। अक्रि० प्रकट होना (प० २२,९९)।
परगन, परगना—पु० वह भूभाग जिसमें कई गाँव हों।
परगसना—अक्रि० प्रकाशित होना, प्रकट होना (प०४४)
परगाढ़—वि० प्रगाढ़, कठिन, गहरा।
परगास—पु० प्रकाश, चमक, विकास (प० २२)।
परगासना—सक्रि० प्रकाशित करना। अक्रि० प्रकाशित [होना।
परघट—वि० प्रकट, स्पष्ट।
परचंड—वि० प्रचंड, तीव्र।
परचइ—पु० परिचय, जानकारी।
परचत—स्त्री० पहिचान, परिचय
परचना—अक्रि० हिलना मिलना, अभ्यस्त होना, चसका लगना, गीधना। परच पड़ना = पहिचाना जाना 'परचि परै नहिं अरुण रँग, अमल अधर दल माँझ।' ललित० ५१
परचा—पु० पुर्जा कागज़का टुकड़ा। प्रश्नपत्र। परिचय 'कह कबीर परचा भया गुरु दिखाई बाट।' कबीर १३, (२९ फु०)। परीक्षा 'अबके जो परचो करि पाऊँ अरु देखौं भरि आँखैं। सूरदास सोनेके पानी मढ़िहौं चोंचरु पाँखैं।' सू० ४३
परचाना—सक्रि० हिलाना मिलाना, चसका लगाना। प्रदीप्त करना 'विरही दहन काम क्वैला परचाये हैं।' सेनापति
परचारना—सक्रि० प्रचार करना। ललकारना 'उठा आपु कपिके परचारे।' रामा० ४६९
परचूँनी, परचूनी—पु० आटा चावल इ० बेचनेवाला (उदे० 'चूँनी')। स्त्री० परचूँनीका काम।
परचून—पु० आटा, चावल आदि भोजनकी वस्तुएं।
परचै—पु० परिचय, जानकारी।
परछन—स्त्री० वरकी आरती उतारने आदिकी रीति।
परछना—सक्रि० वरकी आरती आदि करना।
परछाईं—स्त्री० प्रतिछाया, प्रतिबिम्ब।
परजंक—पु० पलंग, शय्या।
परजन—पु० आश्रित जनसमूह। अनुचरवर्ग।
परजन्य—पु० पर्जन्य, मेघ, इन्द्र।
परजरना—अक्रि० जलना 'अस परजरा बिरह कर गठा। मेघ साम भये धूम जो उठा।' प० १७९। कुढ़ना, ईर्ष्या करना।
परजा—स्त्री० प्रजा, असामी, आश्रित जन।
परजात—वि० दूसरी जातिका। दूसरेसे उत्पन्न।
परजाता—पु० हरसिंगार नामक फूल या उसका पौधा।
परजाय—पु० समानार्थक शब्द। परम्परा। प्रकार।
परजारना—सक्रि० जलाना (कविता० २५९, छत्र० १२८)।
परज्वलना—सक्रि० प्रज्वलित करना। अक्रि० प्रज्वलित होना 'देखतही तें परज्वलै, परसि करै पैमाल।' साखी १७३
परणना—सक्रि० परिणय करना, विवाह करना।
परतंचा, परतिंचा—स्त्री० प्रत्यंचा, चिल्ला।
परतंत्र—वि० पराधीन।
परत—स्त्री० तह, पुट।
परतच्छ,-तछ—वि० प्रत्यक्ष (उदे० 'छोही', साखी० [१९६)।
परता—पु० देखो 'पड़ता'।
परताप—पु० प्रताप, वीरता, प्रभाव, गर्मी, तेज, [ऐश्वर्य।
परताल—दे० 'पड़ताल'।
परतिग्या, परतिज्ञा—स्त्री० प्रतिज्ञा, वचन, वादा (उदे० 'कन')।
परती—स्त्री० वह भूमि जो कुछ समयसे जोती न गयी हो।
परतीत,-तीति—स्त्री० विश्वास, भरोसा (सू० १४६, १८९)।
परतेजना—सक्रि० परित्यक्त करना, त्यागना।
परथन—पु० देखो 'पलेथन'।
परद—पु० परदा (भ्र० ८८)।
परदच्छिना—स्त्री० देवता आदिकी परिक्रमा करना।
परदनी—स्त्री० धोती, बखशीश (?) 'गुरुआ छे घर घर फिरै, दीच्छा हमरी लेहु। कै नूवो कै ऊजलौ टका परदनी देहु।' साखी १५
परदा—पु० आड़ करनेवाला कपड़ा इत्यादि, आड़, व्यवधान, छिपाव। परत, तह। —डालना = छिपाना। —फटना = इज्जत आबरू न बचना 'सेवकको परदा फटे तू समरथ सीझे।' विन० ११९। —रखना = लाज रखना, आबरू बचाना, छिपाव [रखना।
परदादा—पु० प्रपितामह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परदार—स्त्री० परायी स्त्री।
परदेशी—वि० विदेशी, दूसरे देशमें रहनेवाला।
परदोष—पु० संध्या काल। भारी दोष।
परधान—पु० परिधान, आच्छादन, कपड़ा। मंत्री, नायक। माया, बुद्धि। वि० मुख्य, श्रेष्ठ।
परधाम—पु० वैकुण्ठ। परमात्मा।
परन—पु० प्रण, प्रतिज्ञा। पत्ता। स्त्री० टेव, बान।
परनगृह—पु० झोपड़ी (रामा० ३६८)।
परना—अक्रि० देखो 'पड़ना', (उदे० 'डासना')।
परनाम—पु० प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन (सू० ३६)। नतीजा।
परनाला—पु०, परनाली—स्त्री० मोरी, नाबदान।
परनि—स्त्री० शादत, बान।
परनौत—पु० प्रणाम, दण्डवत।
परपंच—पु० प्रपंच, बखेड़ा, चाल।
परपंचक,-पंची—वि० चालबाज, बखेड़िया।
परपट—पु० चौरस मैदान।
परपटी—स्त्री० पपड़ी।
परपराना—अक्रि० तीक्ष्ण लगना, जलना।
परपाजा—पु० पितामहका पिता।
परपीड़क—पु० दूसरेको दुःख देनेवाला। शत्रुको दण्ड देनेवाला, परन्तप।
परपुरुष—पु० दूसरेका पति, पतिको छोड़ और कोई पुरुष। विष्णु।
परपूठा—वि० परिपुष्ट, पक्का, दृढ़।
परपोता—पु० पोतेका लड़का।
परफुल्ल—वि० प्रफुल्ल, प्रसन्न, विकसित।
परबंध—पु० व्यवस्था, आयोजन। सम्बद्ध वाक्यरचना। प्रकृष्ट बन्धन।
परब—पु० पुण्यकाल। उत्सव। पूर्णिमा। दिन। अंश, भाग। ग्रहण।
परबत—पु० पर्वत, पहाड़।
परबल—वि० प्रबल, पराक्रमी, उग्र (सूरा० ७०)। पु० एक तरकारी।
परबस—वि० दूसरेके अधीन। परतंत्र।
परबसतादै—स्त्री० परतंत्रता।
परबाल—पु० प्रवाल, मूँगा। कोंपल।
परबीन—वि० प्रवीण, चतुर।
परबेस—पु० पेठ, गांत, विषयका जानकारी।
परबोधना—सक्रि० समझाना, दिलासा देना। सजग करना 'पिता मात गुरुजन परबोधत नीके बचन बाण सम लागत।' सूबे०, १६८, (उदे० 'अपद', सू० १८८)
परब्रह्म—पु० परमब्रह्म, निर्गुण ब्रह्म।
परभा—स्त्री० प्रकाश, दीप्ति।
परभाइ—पु० प्रभाव, शक्ति, महिमा। असर।
परभात—पु० प्रभात, सबेरा।
परभाती—स्त्री० एक तरहका गीत जो सबेरे गाया जाता है।
परभृत—स्त्री० कोयल (राम० २९४)।
परम—वि० उत्कृष्ट। मुख्य, भारी।
परमगति—स्त्री०, परमपद—पु० मुक्ति।
परमल—पु० परिमल, सुगंधि। एक तरहका चबेना।
परमा—स्त्री० छवि, सौन्दर्य 'होत पंकते पदुम है पावन परमागेह !' दीन० ७५
परमाणु—पु० अति सूक्ष्म कण, पल।
परमात्मा—पु० ईश्वर, परब्रह्म।
परमान—पु० सबूत। सीमा। सच बात। विश्वास 'भौंरा रे, रसके लोभी, तेरोकः परमान।' हरि०
परमानना—सक्रि० प्रमाण मानना। विश्वास करना। स्वीकार करना।
परमारथ, परमार्थ—पु० श्रेष्ठ वस्तु, मुक्ति। उत्तम कार्य।
परमार्थी—वि० मुमुक्षु, तत्त्व-जिज्ञासु।
परमिति—स्त्री० चरम सीमा, मर्यादा (सूबे० २४६)।
परमुख—वि० पराङ्मुख, प्रतिकूल।
परमेश्वर, परमेसर, परमेसुर—पु० परमात्मा, ईश्वर, विष्णु।
परमोद—पु० प्रमोद, हर्ष, प्रसन्नता।
परमोधना—सक्रि० देखो 'परबोधना'। 'बात बनाई जग ठगा, मन परमोधा नाहिं।' साखी १४, (उदे० 'ताखावेली', राम० ४२३)
परयंक—पु० पलंग।
परलउ, परलय, परलै—पु० प्रलय, कल्पान्त (प० [२६०)।
परला—वि० दूसरी तरफका।
परलोक—पु० दूसरा लोक, स्वर्ग।
परवर, परवल—पु० एक तरकारी।
परवरदिगार—पु० पालनकर्त्ता, ईश्वर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परवरिश, परवरती—स्त्री० पालन-पोषण।
परवश—वि० पराधीन।
परवा—स्त्री० परिवा, पक्षकी प्रथम तिथि। परवाह, चिन्ता, ध्यान।
परवाई—स्त्री० परवाह, चिन्ता।
परवान—पु० देखो 'परमाल', (प० ५, कबीर ९७)।
परवानगी—स्त्री० अनुमति, इजाज़त।
परवानना—अक्रि० प्रमाण मानना।
परवाना—पु० आज्ञापत्र। फतिंगा।
परवाल—पु० प्रवाल, मूँगा।
परवाह—स्त्री० देखो 'परवा'।
परवीन—वि० प्रवीण, चतुर।
परवेख—पु० परिवेष, चन्द्रमाके चारों तरफका घेरा।
परवेश—पु० प्रवेश, पैठ, गति।
परशु—पु० फरसा, अस्त्र-विशेष।
परसंग—पु० देखो 'प्रसंग', (साखी ३, विद्या० १११)।
परसंसा—स्त्री० बड़ाई, स्तुति।
परस—पु० स्पर्श, छूना (उदे० 'कृधातु')।
परसन—वि० प्रसन्न 'हँसत हरि मनहिं मन तकत गिरिराज तन, देव परसन भये करो काजा।' सूवे० ११९, (सू० २७१)। पु० स्पर्श।
परसना—सक्रि० भोजन प्रस्तुत करना, परोसना। छूना (उदे० 'जई')। छुलाना 'परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही।' रामा० ११६, (उदे० 'गारना')
परसन्न—वि० आनंदित, सन्तुष्ट।
परस पखान—पु० पारस पत्थर।
परसा—पु० देखो 'परोसा'। फरसा, कुल्हाड़ा।
परसाद—पु० देखो 'प्रसाद'।
परसाना—सक्रि० स्पर्श कराना (सू० ११८)। भोजन सामने रखवाना। फैलाना 'मनहु पवगिनि उतरि गगनते दलपर फन परसावति।' सू० १२२
पर साल—अ० गत वर्ष। अगले साल।
परसेद—पु० प्रस्वेद, पसीना।
परसों—अ० अतीत कलसे एक दिन पूर्व या आगामी कलसे एक दिन बाद।
परसोत्तम—पु० पुरुषश्रेष्ठ। ईश्वर, विष्णु
परस्पर—क्रिवि० आपसमें।
परहरना—सक्रि० देखो 'परिहरना'।
परहेज—पु० रोगमें नुकसान पहुँचानेवाली चीजोंका त्याग। बुरी बातोंसे बचना।
परहेलना—सक्रि० उपेक्षा करना, तुच्छ समझना 'कै कछु ममता राम सों कै ममता परहेलु।' दोहा० १११
परहोंक—पु० (?) बोहनी (विद्या० ९०)।
पराँठा—पु० एक तरहकी चपाती। पोतला।
पराइ,-ई—वि० स्त्री० दूसरेकी 'देखि न सकहिं पराइ विभूती।' रामा० २०४
पराकाष्ठा—स्त्री० चरम सीमा।
पराक्रम—पु० शक्ति, साहस, पुरुषार्थ।
पराग—पु० पुष्प-धूलि। रज। चन्दन।
परागना—सक्रि० स्नेहबद्ध होना।
पराङ्मुख—वि० विमुख, प्रतिकूल।
पराजय—स्त्री० हार, तिरस्कार।
परात—स्त्री० थाल, कोपर 'पानी परातको हाथ छुयो नहिं नैननके जलसों पग धोये।' सुदामा० ८
पराधीन—वि० दूसरेके वशमें।
परान—पु० प्राण (प० ३९,७७)।
पराना—अक्रि० पलायन करना, भागना 'बालक सब लइ जीव पराने।' रामा० ५७, (अ० ९४)
पराभव—पु० हार, तिरस्कार।
पराभूत—वि० परास्त, हारा हुआ, नष्ट।
परामर्श—पु० विचार। अनुमान। फैसला। मंत्रणा। †
परायण—वि० गत। तत्पर, प्रवृत्त। [† खींचना।
पराया, परार—वि० दूसरेका, बिराना, विदेशी (उदे० 'असहन', 'घटना')।
परार—पु० पयाल 'धानको खेत परार तें जानौ।' सुन्द०
परारब्ध, परालब्ध—पु० भाग्य। [१४५
परावन—पु० पलायन, भगदड़। पर्वकाल 'पूरे पूरब पुन्यतें परयो परावन आज।' सति० १७६
पराया—वि० दूसरेका 'धन पराव विषतें विष भारी।' रामा० २६१, (प० २६३)
परास—पु० पलाश, टेसू (रामा० ३८८, प० ६२)।
परास्त—वि० हारा हुआ।
परिकर—पु० समूह, परिवार। पलंग। समारंभ। कौड़ा बाँधकर। पटुका 'सुग विलोकि कटि परिकर बाँधा।' रामा० ३७८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिकरमा,-क्रमा—स्त्री० चक्कर, प्रदक्षिणा।
परिखना—सक्रि० प्रतीक्षा करना 'तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई।' रामा० ४१४। परीक्षा करना, जाँचना।
परिखा—स्त्री० खाई।
परिगह—पु० आश्रित व्यक्ति, कुटुम्बी (प० ५८)।
परिगहना—सक्रि० ग्रहण करना, अङ्गीकार करना 'तेरे मुँह फेरे मोसे कायर कपूत कूर लटे लटपटेनिको कौन परिगहैगो।' विन० ५८७
परिग्रह—पु० अंगीकार। पाणिग्रहण, विवाह। भार्या। शाप। सौगंध। परिवार। अनुग्रह। सूर्यग्रहण। सेनाका पश्चाद् भाग।
परिघ—पु० लोहेका डंडा, गँड़ासा, गदा। घर। फाटक।
परिघोष—पु० मेघगर्जन, कटु शब्द।
परिचना—अक्रि० देखो 'परचना'। परीक्षा लेना 'छहँकि छहँकि परिचेहु सब काहू।' रामा० ७९
परिचय—पु० जानकारी, पहिचान। प्रमाण।
परिचर—पु० सेवा करनेवाला (रघु० १३)। सेनापति।
परिचरजा,-चर्या—स्त्री० सेवा (राम० ५५१)।
परिचारना—सक्रि० सेवा करना।
परिचारिका—स्त्री० दासी।
परिचित—वि० जाना हुआ, मुलाकाती।
परिचो—पु० परिचय, जानकारी।
परिच्छद—पु० वस्त्र, भूषण। आच्छादन। परिजन।
परिच्छा—स्त्री० परीक्षा (रामा० ३५)।
परिच्छेद—पु० सीमा, विभाजन। अध्याय।
परिछन—पु० देखो 'परछन'।
परिछाहीं—स्त्री० प्रतिबिम्ब, छाया।
परिजंक—पु० पलंग।
परिजटन—पु० पर्यटन, भ्रमण।
परिजन—पु० आश्रित जन, अनुचर-समूह।
परिणत—वि० परिपक्व। रूपान्तरित। प्रौढ़। झुका हुआ।
परिणय—पु० विवाह।
परिणाम—पु० नतीजा। विकार। अवसान। वृद्ध होना।
परिणाय—पु० विवाह। गोट इ० को चढ़ाना।
परिणीत—वि० विवाहित। समाप्त।
परितच्छ—वि० प्रत्यक्ष, जो देखा जा सके। क्रिवि० आँखोंके सामने।
परिताप—पु० दुःख, शोक, जलन, उद्वेग, भय।
परितोष,-तोस—पु० सन्तोष, हर्ष।
परित्यागना—सक्रि० त्यागना, छोड़ना 'पाप पुण्य दोऊ परित्यागे अब जो होई सु होई।' सूबे० २०५
परित्राता—पु० रक्षक।
परिदाह—पु० शोक। भारी मानसिक कष्ट।
परिदेवन—पु० विलाप, अनुताप (राम० ४४३)।
परिध—पु० परिधि।
परिधन्न—पु० परिधान, पहननेका वस्त्र।
परिधान—पु० कपड़ा पहनना। पहनावा, कपड़ा।
परिधि—स्त्री० मण्डल, घेरा। वस्त्र। कक्षा।
परिधेय—पु० पहनने योग्य कपड़ा। वि० पहनने योग्य।
परिनय—पु० विवाह।
परिपंच—पु० देखो 'परपंच', (साखी १०६)।
परिपक्व—वि० खूब पका हुआ। प्रवीण, प्रौढ़।
परिपाक—पु० प्रौढ़ता, पकनेकी क्रिया या भाव।
परिपाटि, परिपाटी—स्त्री० रीति, प्रणाली। अनुक्रम।
परिपालन—पु० रक्षण, पोषण।
परिपूरन, परिपूर्ण—वि० संपूर्ण, खूब भरा हुआ।
परिभव, परिभाव—पु० तिरस्कार।
परिभाषा—स्त्री० व्याख्या, लक्षण। स्पष्ट कथन। निन्दा।
परिभूत—वि० तिरस्कृत, पराजित।
परिभ्रमण—पु० पर्यटन, घूमना।
परिभ्रर—पु० हवा।
परिमल—पु० कुमकुम आदिकी गंध। सुवास। मलनेका कार्य। सुगन्धित द्रव्य (उदे० 'गोफा')।
परिमाण, परिमान—पु० विस्तार, नाप, तौल। घेरा।
परिमार्जन—पु० माँजनेका काम, संशोधन।
परिमित—वि० जिसकी सीमा, संख्या, इ० निश्चित हो, नपा तुला हुआ। थोड़ा। अ० पर्यन्त 'मनुज मृग पशु पच्छि परिमित औ अमित जे नाम।' अ० १२५
परिमिति—स्त्री० सीमा, नाप, अवधि, मर्यादा।
परियंक—पु० पर्यंक, पलंग।
परियंत—अ० पर्यन्त, तक।
परिरंभ, परिरंभण—पु० आलिंगन (सूबे० ३३)।
परिरंभना—सक्रि० आलिंगन करना।
परिलेखना—सक्रि० ख्याल करना, समझना।
परिवर्त्तन—पु० फेरफार, रूपान्तर। विनिमय। चक्कर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिवा—स्त्री० पक्षकी प्रथम तिथि।
परिवादिनि—स्त्री० वीणा (विद्या० २१५)।
परिवादी—वि० निंदा करनेवाला।
परिवार—पु० कुटुम्ब। आश्रित जन। परिजन। समूह। †
परिवृत—वि० घिरा हुआ, आवृत। [† आवरण।
परिवेदन—पु० महद्दुःख। पूर्ण ज्ञान। विद्यमानता। विवाद। प्राप्ति।
परिवेष—पु० घेरा, मण्डल, परकोटा। परोसना।
परिव्राजक—पु० संन्यासी।
परिशिष्ट—वि० बचा हुआ। पु० किसी पुस्तक आदिका वह भाग जो बादमें जोड़ा गया हो।
परिशोध—पु० ऋणशुद्धि, पूरी सफाई।
परिश्रम—पु० मेहनत, थकावट।
परिश्रांत—वि० थका हुआ।
परिषद्—स्त्री० सभा, समाज, समूह।
परिष्कार—पु० संस्कार, सफाई। शोभा, सजावट।
परिस्तान—पु० परियोंके रहनेका स्थान।
परिहँस—स्त्री० ईर्ष्या, डाह 'परिहँस पियर भये तेहि बसा।' प० ५१
परिहत—वि० मरा हुआ। नष्ट।
परिहरना—सक्रि० त्याग करना, छोड़ना 'जनक सुता परिहरेउ अकेली।' रामा० ३१८, (उदे० 'आपन', 'केंचुरि')।
परिहस—पु० परिहास, हँसी। दुःख (अ० ६७)।
परिहार—पु० त्याग। निराकरण 'केतक कमल गुलाबके कंटकमय परिहार।' मति० २३७। खंडन। लगानकी माफी। विजित द्रव्य। तिरस्कार।
परिहारना—सक्रि० प्रहार करना, मारना 'अभिमनु धाइ खड्ग परिहारे।' सबलसिंह
परिहास—पु० हँसी, ठट्ठा, खेल (रामा० ३७५)।
परी—स्त्री० अप्सरा, देवांगना। परम रूपवती स्त्री। घी आदि निकालनेकी कलछी।
परीक्षा—स्त्री० जाँच, समीक्षा, परख।
परीखना—सक्रि० परीक्षा लेना, जाँचना 'रतन छपाये ना छपै, पारिख होइ सो परीख।' प० १२७
परीछना—सक्रि० परीक्षा लेना (मुद्रा० १०४)।
परीछा—स्त्री० परीक्षा, जाँच।
परीजाद—वि० बहुत ही सुन्दर। पु० अत्यंत सुंदर पुरुष।
परीताप—पु० परिताप, दुःख, शोक।
परीदाह—पु० देखो 'परिदाह'।
परीबंद—पु० कलाईपर पहना जानेवाला एक गहना।
परीरंभ—पु० आलिंगन।
परीशान—वि० हैरान।
परीहास—पु० दिल्लगी, मज़ाक।
परुख, परुष—वि० कठोर, तीक्ष्ण, रूक्ष, अप्रिय। पु० तीक्ष्ण वचन, कोई अप्रिय बात। तीर।
परुखाई, परुषता—स्त्री० कठोरता, निष्ठुरता।
परुसना—सक्रि० देखो 'परसना'। 'मटुकिनते लै लै परुसति हैं हर्ष भरी ब्रज नारि।' सूवे० १६१
परे—अ० उस पार, बाहर, ऊपर, बाद।
परेई—स्त्री० कबूतरी। पंडुकी, ढौकी।
परेखना—सक्रि० देखो 'परीखना'। बाट देखना।
परेखा—पु० परीक्षा। पश्चात्ताप। विश्वास 'परेखो कौन बोलको कीजे।' सूवे० ३१८
परेत—पु० प्रेत, भूत। वि० मुर्दा।
परेता—पु० बाँसका बना हुआ बेलनके आकारका सूत लपेटनेका औज़ार।
परेर—पु० आकाश।
परेवा—पु० कबूतर या अन्य तेज उड़नेवाला पक्षी (उदे० 'कंठा'। 'हरकारा')।
परेश, परेस—पु० परमेश्वर।
परेशान—वि० उद्विग्न, व्याकुल।
परों—क्रिवि० परसों, कलके बादवाले दिन, गत दिवसके पहलेवाले दिन।
परोक्ष—पु० अनुपस्थिति। वि० अप्रत्यक्ष, गुप्त।
परोजन—पु० प्रयोजन, मतलब।
परोना—सक्रि० पिरोना (प० ३६)।
परोस—पु० पड़ोस, सान्निध्य, प्रतिवेश।
परोसना—सक्रि० परसना, थाली या पत्तलमें भोजन रखना।
परोसा—पु० थाली या पत्तलमें सजाया हुआ भोजन जो कहीं भेजा जाय।
परोसी—पु० प्रतिवेशी, अपने घरके समीप रहनेवाला।
परोहा—पु० चरस, मोट।
पर्चा—दे० 'परचा'। [† प्रदीप्त करना।
पर्चाना—सक्रि० परिचित करना, हिलाना मिलाना। †

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर्चून—पु० देखो 'परचून'।
पर्जंक—पु० पलंग।
पर्जन्य—पु० मेघ, इन्द्र, विष्णु।
पर्ण—पु० पत्र, पत्ता।
पर्णकुटी—स्त्री० पत्तोंकी बनी झोपड़ी।
पर्णी—पु० वृक्ष। पलाश वृक्ष। तेजपत्ता।
पर्त—स्त्री० परत, तह।
पर्दनी—दे० 'परदनी' (पर्दनिया = धोती, बुंदेल०)।
पर्दा—पु० देखो 'परदा'।
पर्परी—स्त्री० पपड़ी।
पर्ब—पु० देखो 'परब'।
पर्बत—पु० पहाड़।
पर्यंक—पु० पलंग।
पर्यंत—अ० तक। पु० समीप, अन्तिम सीमा।
पर्यटन—पु० भ्रमण।
पर्यवसान—पु० समाप्ति, अन्तर्भाव। क्रोध।
पर्याप्त—वि० यथेष्ट, परा। समर्थ। प्राप्त।
पर्याय—पु० समानार्थक शब्द। प्रकार। अनुक्रम, क्षिलसिला। अवसर। निर्माण।
पर्यालोचन—पु० समीक्षा, पूरी जाँच।
पर्व—पु० देखो 'परब'।
पर्वत—पु० पहाड़। पर्वतप्रभा = दैत्य।
पर्वतारि—पु० इन्द्र।
पर्वती, पर्वतीय—वि० पहाड़ी, पहाड़पर पैदा होनेवाला या रहनेवाला।
पर्वा—स्त्री० देखो 'परवा'।
पलंका—स्त्री० बहुत दूरकी जगह 'लंका छाँड़ि पलंका परा।' प० ९६
पलंग—पु० पर्यंक, बड़ी चारपाई (उदे० 'उपबरहन')।
पलँगड़ी—स्त्री० चारपाई।
पलंगिया—स्त्री० छोटा पलंग।
पल—पु० घड़ीका साठवाँ भाग। दगबल। निमेष, क्षण। एक तौल।
पलक—स्त्री० नेत्रच्छद। पल, क्षण। क्रिवि० क्षणभर, 'पलक बसगकाला मँह कसे।' राम० १०२
पलका—पु० पलंग, मञ्चा।
पलखर—पु० एक छोटा देवता।
पलटन—स्त्री० सेनाका एक भाग, सेना, दल।
पलटनां—अक्रि० लौटना 'कहो सुमंत कहाँते पलटे...' सूरा० १२, (उदे० 'उलियाना'), फिरना, उलट जाना। सक्रि० कई बार उलटना, फेरना। उलटना। बदलना। बदलेमें लेना। मुकर जाना। वापस करना।
पलटा—पु० बदला, परिवर्त्तन। कुश्तीका एक पेंच। पीतल इ० की बड़ी सुरचनी।
पलटाना—सक्रि० फिराना, फेरना, लौटाना। बदलना।
पलटावना—सक्रि० पलटाना। दबवाना 'आपुन पौंढ़ि अधर सेज्यापर कर पल्लव सग पद पलटावति।' सू० ९३
पलड़ा, पलरा—पु० तराजूका पल्ला।
पलथी—स्त्री० दोनों पाँवोंको मोड़कर और एकको दूसरेपर रखकर बैठनेकी स्थिति।
पलना—अक्रि० पोषित होना, पाला जाना। पु० बच्चोंका खटोला।
पलनाना—सक्रि० कसकर या ओसकर तैयार करना, 'तुरतहि रथ पलनाइके अक्रूरहि दीन्हों।' सूबे० २५२
पलल—पु० मांस। शव। शाखल। पत्थर। मैल। कीचड़। तिलका चूर्ण।
पलवल—पु० परबल।
पलवा—पु० एक घास। ऊखके ऊपरका भाग। अंगुलि (रतन० ३८)। पल्ला।
पलवार—पु० एक तरहकी बड़ी नाव।
पलवारी—पु० माँझी, मल्लाह।
पलस्तर—पु० दीवारपरकी चूने आदिकी पर्त।
पलहना—अक्रि० देखो 'पल्लहना'।
पलहा—पु० पल्लव, कोंपल।
पला—पु० तराजूका पल्ला 'बरनी जोती पलपला डांड़ी भौंह अनूप। मन पसंग तौले सुदग हरबो गरबो रूप।' रतन० २०। अंचल 'साईंके दरबारमें पला न पकड़ै कोय।' साखी १५६। किनारा (अख० ३४०)। पल। बड़ी परी। डिबियाके दोनों भाग 'कंचन संपुट है पला मानहुँ भरे सिंदूर।' सू० १२३
पलान—पु० जीन या चारजामा।
पलानना—सक्रि० जीन कसना। आक्रमणके लिए तैयार होना, सजना (प० २४५)।
पलाना—अक्रि० भागना (सू० २०१)। जल्दीसे जाना 'मन मान बज मैं तुम्हें पठावत ब्रजको तुरत पलानो।' प्र० ३। पिन्हाना (गाय इ० का)। सक्रि० भगाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पलानि, पलानी—स्त्री० छप्पर । एक गहना । जीन, पलान 'वरषा गये, अगस्त जौ दीठिहि। परिहि पलानि तुरंगम पीठिहि ।' प० ३०८

पलायन—पु० भागना ।

पलाल—पु० अन्न निकाला हुआ धान इ० का डंठल ।

पलाश, पलास—पु० किंशुक, टेसू ।

पलिका—पु० पलका, पलंग (उदे० 'तनना'), 'बैठे जराय जरे पलिका पर राम सिया सबको मन मोहैं ।' राम० १३१, (अ० ११३), 'नवल बाल पलिका परी पलक न लागत नैन ।' मति० १९८

पलित—वि० वृद्ध । सफेद (बाल) । पु० बालोंका पकना । गरमी । कीचड़ ।

पली—स्त्री० परी, लोहेकी चमची ।

पलीत—वि० दुष्ट । मैला । धूर्त । पु० भूत, प्रेत ।

पलीता—पु०, **पलीती**—स्त्री० वह बत्ती जिससे तोप आदिके रंजकमें आग लगायी जाती है (प० २४, छत्र० १४४) । बत्ती । वि० शीघ्रगामी । अति क्रुद्ध ।

पलीद—वि० गंदा, अपवित्र, नीच ।

पलुआ,-वां—वि० पोसा हुआ, पालतू ।

पलुहना—अक्रि० पल्लवित होना, पनपना, लहलहाना 'तपनि मृगसिरा जे सहैं, ते अद्रा पलुहंत ।' प० १६६

पलुहाना—सक्रि० पल्लवित करना 'जरी जो बेलि सींचि पलुहाई ।' प० २१०

पलेड़ना—सक्रि० धक्का देना ।

पलेथन—पु० सूखा आटा जो रोटी बेलते समय लगता है ।

पलोटना—सक्रि० (पैर) दबाना (उदे० 'कोट') । अक्रि० लोटना पोटना, छटपटाना ।

पलोवना—सक्रि० (पैर) दबाना । सेवा करना ।

पलोसना—सक्रि० प्रक्षालित करना, धोना ।

पल्टा—पु० बदला, परिवर्तन ।

पल्लव—पु० नया पत्ता, कोंपल । पत्तोंका समूह । विस्तार । कंकण । चंचलता ।

पल्लवना—अक्रि० पल्लवित या अंकुरित होना ।

पल्लवित—वि० पत्तायुक्त । रोमांचयुक्त ।

पल्ला—पु० पटल, वि बाड़ । कपड़ेका छोर, अंचल । पलड़ा । दूरी । पाल । अन्न बाँधनेका वस्त्र । [झोपड़ी ।

पल्ली—स्त्री० छिपकिली, बिल्लुरुपा । छोटा गाँव ।

पल्लेदार—पु० गल्ला ले जानेवाला मजदूर । अनाज तौलनेवाला व्यक्ति ।

पल्लौ—पु० पल्लव, कोमल पत्ता (प० ४) । पल्ला, अंचल

पल्वल—पु० पोखरा, छोटा तालाब । [बाँधनेका वस्त्र ।

पवँरि—स्त्री० ड्योढ़ी ।

पवँरिया—पु० ड्योढ़ीदार, चौकीदार 'लाखन बैठ पवँरिया जिन्हतैं नवहिं करोर ।' प० २७५

पवन—पु० वायु । प्राणवायु, श्वास । वि० पावन, शुद्ध करनेवाला 'परम कृपालु प्रनत-प्रतिपालक पतित-पवन ।' विन० ४८९

पवन-कुमार, पवनज,-तनय—पु० हनुमान, भारत-सुत । भीमसेन ।

पवनी—स्त्री० नाऊ, धोबी, चमार इ० जातियोंकी प्रजा ।

पवमान—पु० पवन । चन्द्रमा ।

पवर—वि० प्रवर (मति० २२३) ।

पवरिया—पु० पौरिया ।

पवाँरना, पवारना—सक्रि० देखो 'पवारना' । 'कैकन एक कर काटि पवारा ।' प० २२२

पवाना—सक्रि० भोजन कराना ।

पवि—पु० वज्र, बिजली । वाक्य ।

पविताई—स्त्री० पवित्रता ।

पवित्र—वि० शुद्ध, पुनीत, स्वच्छ । पु० कुशा, वर्षा, इ० ।

पवित्री—स्त्री० कुशका एक तरहका छल्ला ।

पशम, पश्म, पस्तम—पु० एक तरहका मुलायम ऊन । तुच्छ वस्तु 'ग्वाल कवि कहैं देखो आनँदी रसम जानैं धर्मको पसम आनैं पातक शरीरके ।' शृंग

पशमीना, पश्मीना—पु० एक तरहका ऊन या ऊनी कपड़ा ।

पशु—पु० चौपाया, प्राणी ।

पशुपति—पु० शिवजी । चरवाहा (सूरा० ८३) ।

पशुराज—पु० सिंह ।

पश्चात्—अ० बाद, पीछेसे ।

पश्चात्ताप—पु० पछतावा, अनुताप ।

पश्चिम—पु० पच्छिम, पूर्वके सामनेकी दिशा । वि० अन्तका, बादमें उत्पन्न ।

पश्यतोहर—पु० आँखोंके सामने चुरा लेनेवाला व्यक्ति (जुआरी आदि) 'वह शब्द संकेत जानि : अलि पश्यतोहर मानि ।' के० १५३, 'देखत ही चुपचाप हीरा हरि लेत पश्यतोहर मनोहर ये लोचन तिहारे हैं ।' दास ९३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पष—पु० पख, पक्ष, अर्द्धमास ।
पषा—पु० पखा, डाढ़ी ।
पषाण, पषान—पु० पत्थर ।
पषारना, पषालना—सक्रि० पखारना, धोना (कबीर १८३) ।
पसंग, पसँगा—दे० 'पासंग' (उदे०, 'पला') ।
पसंद—वि० इच्छानुकूल, अच्छा लगनेवाला । स्त्री० † अभिरुचि ।
पस—अ० इस कारण, इसलिए ।
पसनी—स्त्री० अन्नप्राशन, चटावन ।
पसमीना—पु० देखो 'पशमीना' । 'फेर पसमीनके चौहरे गलीचन पै सेज मखमली सौरि सोऊ सरदी सी जाइ ।' ग्वाल
पसर—पु० अर्द्धाञ्जलि । स्त्री० पैठ, आक्रमण 'पहिली पसर रनेही टूट्यो ।' छत्र० १०५
पसरना—अक्रि० पैर फैलाकर बैठना या सोना । फैलना (उदे० 'किधौं') ।
पसराना—सक्रि० फैलवाना । विस्तार कराना ।
पसरौंहा—वि० फैलनेवाला ।
पसली—स्त्री० पञ्जरकी हड्डी ।
पसही—पु० एक तरहका चावल ।
पसा—पु० अंजलि ।
पसाउ, पसाव—पु० प्रसाद, अनुग्रह, प्रसन्नता 'सपनेहु साँचहुँ मोहिपर जो हरगौरि पसाउ ।' रामा० १५, (कबीर १०५)
पसाना—सक्रि० माँड निकालना, पसेव गिराना । अक्रि० प्रसन्न होना ।
पसार—पु० फैलाव ।
पसारना—सक्रि० फैलाना, बढ़ाना 'जोजन भर तेहि बदन पसारा ।' रामा० ४१५, (उदे० 'कल', 'जेता') ।
पसारी—पु० पंसारी, बनिया, पसवन ।
पसावन—पु० वह पदार्थ जो पसानेपर निकले, माँड़ इ० ।
पसाहनि—स्त्री० अंगराग (विद्या० ५५) ।
पसित—वि० बँधा हुआ ।
पसीजना—अक्रि० प्रस्वेद निकलना, दयार्द्र होना । 'नैननके मग जल बहै हियो पसीजि पसीजि ।' बि० १५५, 'गोरा बादल दोउ पसीजे ।' प० ३०८
पसीना—पु० श्रमादिके समय शरीरसे निकलनेवाला द्रव पदार्थ, प्रस्वेद (उदे० 'चितौना') ।
पसु—पु० पशु, चौपाया ।
पसुरी, पसुली—स्त्री० देखो 'पसली' ।
पसूजना—सक्रि० सीना ।
पसेउ, पसेव—पु० प्रस्वेद, पसीना 'कहे देत यह प्रगट ही प्रगट्यो पूस पसेउ ।' वि० २०९, (उदे० 'गारना') ।
पसेरी—स्त्री० देखो 'पंसेरी' ।
पसोपेश—पु० दुविधा, हिचक । हानिलाभ, हिताहित ।
पस्त—वि० थका हुआ, हारा हुआ ।
पहँ—अ० पास, से ।
पहँसुल—स्त्री० तरकारी काटनेका हँसियाकी तरहका † औजार ।
पह—स्त्री० पौ, किरण ।
पहचान—स्त्री० परिचय निशानी, भेद करनेकी क्रिया, विवेक ।
पहचानना—सक्रि० चीन्हना, विवेक करना, भेद करना, भेद समझना, गुण-दोषादि जानना ।
पहटना—सक्रि० धार तेज़ करना । पीछा करना ।
पहन—पु० पाहन, पत्थर 'जरहिं पहाड़ पहन सब फूटे ।' प० ९५
पहनना—सक्रि० शरीरपर धारण करना ।
पहनाना—सक्रि० वस्त्रादि धारण कराना ।
पहनाव, पहनावा—पु० पोशाक, वेशभूषा ।
पहपट—पु० निन्दा । शोरगुल । धोखा । एक गीत ।
पहर—पु० तीन घण्टेका समय, याम ।
पहरना—सक्रि० धारण करना ।
पहरा—पु० चौकी, रक्षाका प्रबन्ध, रखवाली । जमाना, युग ।
पहराइत—पु० पहरा देनेवाला 'पहराइत घर मुसो साहको रच्छा करने लागो चोर ।' सुन्द० ९१
पहराना—सक्रि० दूसरेके शरीरपर धारण कराना । वस्त्र धारण कराना 'अपने कर बीरा मोहिं दीन्हों तुरत मोहिं पहिरायो ।' सू०
पहरावनी—स्त्री० वह पोशाक जो दानमें या खिलअतके तौरपर दी जाय ।
पहरावा—पु० पोशाक । वेशभूषा ।
पहरी—पु० पहरेदार ।
पहरुआ, पहरू—पु० पहरेदार, चौकीदार, रक्षक 'झरे ताला पहरु पौंढ़े, खुले वज्र केवार ।' सू० ४६
पहल—पु० परत, तह । पहेला, पुरानी रुई । बाजू, बगल । दल, पटल (उदे० 'बहल') ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पहलवान—पु० मल्ल, कुश्ती लड़नेवाला।
पहला—वि० प्रथम, आरंभका। पु० पुरानी रुई।
पहलू—पु० पार्श्व। बाजू। करवट, दिशा। किसी विषयका कोई अंग, पक्ष।
पहले—अ० आरंभमें। प्राचीन समयमें। आगे।
पहलौंठा, पहलौठा—वि० प्रथम गर्भसे उत्पन्न, ज्येष्ठ।
पहलौठी—स्त्री० प्रथम प्रसव।
पहाड़, पहार—पु० पर्वत। बड़ी राशि या समूह। कठिन कार्य।
पहाड़ी—स्त्री० छोटा पहाड़। वि० पहाड़ सम्बंधी। पहाड़पर होने या रहनेवाला।
पहारू—दे० 'पाहरू'।
पहिचानना—सक्रि० देखो पहचानना'. (उदे० 'आपन')।
पहित, पहिनी—स्त्री० पकायी हुई दाल।
पहिनना, पहिनावा—दे० 'पहनना', 'पहनावा'।
पहियाँ—अ० पहँ, पास 'ये सुख तीन लोकमें नाहीं जो पाये प्रभु पहियाँ।' मू० ३०
पहिया—पु० चक्का, चक्कर।
पहिरना, पहिराना, पहिरावनी—दे० 'पहरना', 'पहराना' (राम० १०९), 'पहरावनी'।
पहिला, पहिले—दे० 'पहला,' 'पहले'।
पहिलौठा, पहिलौठी—दे० 'पहलौंठा', पहलौठी'।
पहीति—स्त्री० पकी हुई दाल।
पहुँच—स्त्री० समझनेकी सामर्थ्य। शक्ति। पैठ। प्राप्ति। जानकारी, प्रवेश।
पहुँचना—अक्रि० चलकर उपस्थित होना। कहींतक बढ़ना या विस्तृत होना। प्रविष्ट होना, समझना। बराबरीका होना। प्राप्त होना।
पहुँचा—पु० मणिबंध, कलाई।
पहुँचाना—सक्रि० ले जाना। साथमें जाना। भेजना। बराबरीका कर देना। प्रविष्ट कराना।
पहुँची—स्त्री० पहुँचेमें पहननेका भूषण, कंगना। कलाई बचानेका आवरण (उदे० 'टोपा')।
पहुनई, पहुनाई—स्त्री० आतिथ्य, अतिथिसत्कार (प० २०४)।
पहुप—पु० पुहुप, पुष्प, फूल।
पहुम, पहुमि—स्त्री० पुहुमी, पृथ्वी (उदे० 'झला')।
पहेरी, पहेली—स्त्री० बुझौवल, गूढ़ प्रश्न।
पाँ, पाँइ—पु० पाँव, चरण (उदे० 'पिराना')।
पाँइता—पु० पाँयता, खटियाका वह भाग जिधर पैर किये जाते हैं।
पाँउ—पु० पाँव, चरण।
पाँक—पु० पंक, कीचड़।
पाँख, पाँखड़ा—पु० पंख (उदे० 'परचा')।
पाँखड़ी, पाँखुरी—स्त्री० पखुरी, पुष्पदल।
पाँखी—पु० पक्षी। पतिंगा।
पाँगुर—वि० लँगड़ा। पु० लँगड़ा मनुष्य 'पाँगुरको हाथ पाँय, आँधेको आँखि है।' विन० २०९। पैरकी अँगुली (विद्या० १०८)।
पाँच—वि० चार और एक। पु० पाँचकी संख्या, सर्व साधारण 'जो पांचहि मन लागहि नीका।' राम० २०१
पांचालिका, पांचाली—स्त्री० द्रौपदी। गुड़िया।
पाँचो—स्त्री० एक तरहकी घास। पची 'जग्रत सयन रहत ऊपर मनि, ज्यों कंचन सँग पाँची।' हित हरिवंश
पाँचैं—स्त्री० पंचमी।
पाँजर—पु० पञ्जर, ठठरी (उदे० 'ठट्टी'). 'मांसु गिरा पाँजर होइ परी।' प० १७९। पार्श्व। पसली।
पाँजो—स्त्री० नदीका सूख जाना जिससे पार करनेमें सुविधा हो।
पांडक, पांडुक—पु० पंडुक।
पाँडर—पु० कुन्द 'पाँडर पिंजर मन भँवर अरथ अनूपम बास। एक नाम सीचा अमी फल लागा बिस्वास।' साखी ८१। सफेद रंग। कोई सफेद वस्तु।
पांडित्य—पु० पंडिताई। विद्वत्ता।
पांडु—पु० लाली लिए पीला रंग। पांडु वर्णवाला व्यक्ति। सफेद रंग।
पाँडुर—वि० पीला या सफेद। पु० वह जो पीला या सफेद हो।
पांडुलिपि—स्त्री० लेखादिका पहला रूप, हस्तलिपि।
पांडुलेख—पु० देखो 'पांडुलिपि'।
पांडे—पु० ब्राह्मणोंकी एक शाखा। रसोइया। अध्यापक 'जब पांडे इत उत कहिं गये। बालक सब इकठौरे भये।' मूबे० ३१
पाँति—स्त्री० पंक्ति, कतार 'कीन्हेसि नखत तराइन पाँती।' प० १। स्वजन-समूह।
पांथ—पु० विरहा। पथिक।
पाँयँता—पु० देखो 'पाँइता'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाँय—पु० पाँव ।—**लगना** = चरण छूना, प्रणाम करना।

पाँव—पु० पैर, चरण ।

पाँवड़ा—पु० पाँव रखनेके लिए प्रस्तारित वस्त्र 'पट पाँवदे परहिं विधि नाना ।' रामा० १७१

पाँवड़ी—स्त्री० खड़ाऊँ, जूता ।

पाँवर—वि० पामर, नीच, पापी 'छत्रिय तनु धरि समर सकाना । कुल कलंक तेहि पाँवर जाना ।' रामा० १५३

पाँवरि, पाँवरी—स्त्री० खड़ाऊँ, जूता (सू० ३२, प० ३०४) । सीढ़ी । पौरी, ड्योढ़ी 'साजी बैठक और पाँवरी ।' प० १३

पांशु—स्त्री० धूलि, रज । गोबरकी खाद ।

पांशुला—स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री । रजस्वला ।

पाँस—स्त्री० खाद ।

पाँसा—पु० चौपड़ खेलनेके हड्डी आदिके बने चोपहल टुकड़े (उदे० 'दाँव') ।

पांसु, पांसुरी—स्त्री० पसुरी, पसली । '...मसककी पाँसुरी पयोधि पाटियतु है ।' कविता० २२६

पांसुला—स्त्री० देखो 'पांशुला' ।

पाँहीं—क्रिवि० पास, निकट ।

पा, पाइ—पु० पाँव, चरण 'मारतहू पा परिय तुम्हारे ।' रामा० १४८, (उदे० 'अटपटा'), '...बारबार बंदौं तेहि पाई ।' सू० १

पाइक—पु० पायक, दूत । अनुचर । पैदल सैनिक (सुजा० ६०) । मल्ल, पटेबाज (सू० १०) ।

पाइतरी—स्त्री० देखो 'पाँइता' ।

पाइमाल—वि० 'पायमाल', विनष्ट 'पानीको ललात, बिललात, जरे गात जात, परे पाइमाल जात, भ्रात तू बिबाहिरे ।' कविता० १७८

पाइल—स्त्री० पायल, पायजेब (वि० १८१) । नूपुर ।

पाउँ—पु० पाँव ।

पाउ—पु० चौथाई '...राम, रावरे बनाये बने पल पाउ-में ।' विन० १७८

पाक—पु० पकानेकी क्रिया । पचना । पिंडदानकी खीर । एक दैत्य । पकवान । वि० पका हुआ 'जनु छुइ गयो पाक बरतोरा ।' रामा० २१२ । पवित्र, साफ, निष्पाप ।

पाकदामन—वि० पतिव्रता ।

पाकना—अक्रि० पकना (प० २७०) ।

पाकर, पाकरी—पु० वृक्ष-विशेष 'तिन्ह पर एक एक बिटप बिसाला । बट पीपर पाकरी रसाला ।' रामा० ५६७

पाकरिपु,-शासन,-सासन—पु० इन्द्र ।

पाका—पु० फोड़ा । जखम । वि० पक्व ।

पाखंड—पु० छल 'जब कीन्ह तेहि पाखण्ड, भये प्रगट जन्तु प्रचण्ड ।' रामा० ५१४ । दिखाऊ भक्ति, मिथ्या धर्म । पामर ।

पाखंडी—वि० छली, कपटाचारी, ठग ।

पाखर—स्त्री० लोहेकी झूल 'गजराजन ऊपर पाखर सोहैं ।' राम० २२३

पाखरी—स्त्री० वह टाट जिसे गाड़ीमें बिछाकर अनाज भरते हैं ।

पाखा—पु० कोना । पक्ष, पाख । पंख । कमरेकी लम्बी दीवारोंके बीचकी, चौड़ाईवाली दीवार ।

पाखान—पु० पाषाण, पत्थर ।

पाखाना—पु० मल । मलत्यागका स्थान ।

पाग—स्त्री० चाशनीमें मिलाकर बनी औषधि । चाशनी । पगड़ी (उदे० 'उदरना', 'गंगाजल') ।

पागना—सक्रि० चाशनीमें डुबाना । तन्मय करना, डुबाना 'भरत वचन सब कहँ प्रिय लागे । राम सनेह सुधा जनु पागे ।' रामा० २८७ । अक्रि० तन्मय होना, डूबना '...ता सुखमें दोउ पागे ।' सू० ७५

पागल—वि० बावला, उन्मत्त, मूर्ख ।

पागुर—पु० जुगाली ।

पाचक—पु० पचानेवाला, अग्नि । रसोइया ।

पाचना—सक्रि० परिपक्व करना । पकाना । अक्रि० मरना 'और सुमन सों बँधि पाचत हौ, फाटि न जात हिये ।' सू० २५६

पाछु—क्रिवि० पीछे । पु० पिछला भाग ।

पाछना—सक्रि० टीका लगाना, चीरना ।

पाछल, पाछिल—वि० पिछला 'तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा ।' रामा० ९५

पाछी, पाछू, पाछे—क्रिवि० पीछे ।

पाछु—पु० पीछा 'आशा लुबधल न तेजएरे कृपनक पाछु भिखारि ।' विद्या० ४६

पाज—पु० पाँजर, पार्श्व ।

पाजामा—पु० सुथना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाजी—वि० दुष्ट, बदमाश। पु० प्यारा। रक्षक 'सहस सदस तहँ बइठे पाजी।' प० १७
पाजेब—स्त्री० पैरका एक गहना।
पाटंबर—पु० रेशमी कपड़ा।
पाट—पु० रेशम। वस्त्र। पत्थर। चक्कीका पत्थर। पीढ़ा, तख्ता (प० १९३)। चौड़ाई। सिंहासन (प० ६)। बालोंकी पटियाँ 'भोरहि सोभा सिर सिन्दूर। जुगल पाट घन घटा बीच मनु उदय कियो नव सूर।' सू० १६८
पाटन—स्त्री० पटाव, छत। एक सर्प-मंत्र।
पाटना—सक्रि० ढँकना, छाना, गड्ढे आदिको भर देना (उदे० 'चीना')। ढेर लगा देना।
पाट महादेई—स्त्री० पट्ट महादेवी, पटरानी (प० १६६)।
पाटमहिषी, पाटरानी—स्त्री० पटरानी, प्रधान रानी।
पाटल—पु० एक प्रकारका फूलवाला पौधा।
पाटला—पु० पटल, पल्ला 'सगुन अगुन दुइ पाटला, तामें जीव पिसात।' साखी ७२
पाटलि, पाटली—स्त्री० पाटल।
पाटवी—वि० रेशमी। पटरानीसे पैदा हुआ।
पाटा—पु० पीढ़ा। पट्टा 'जैसो अजामेलको दोनो सो पाटो लिख पाऊँ।' सुवि० ४८
पांटी—स्त्री० पंक्ति। रीति। तख्ती। पाठ। —पढ़ना = शिक्षा पाना, सीखना 'मन हरिबेकी ज्यों पढ़े पाटी स्याम सुजान।' रतन० ९६। खाटकी लकड़ी। बालोंकी पटियाँ 'कै पत्रावलि पाटी पारी।' प० २३४, (भ्र० १७)
पाटीर—पु० चन्दन-विशेष (राम० ३०७)।
पाठ—पु० सबक, अध्ययन, अध्याय।
पाठक—पु० शिक्षक, वाचक।
पाठना—सक्रि० पढ़ाना।
पाठा—पु० मोटा ताज़ा आदमी। वि० पंडित।
पाठिका—स्त्री० अध्यापिका। पढ़नेवाली।
पाठीन—पु० गूगल वृक्ष। एक मछली 'मीन पीन पाठीन पुराने।' रामा० २९१
पाड़—पु० कोर, किनारा। बाँध। मचान।
पाड़इ—स्त्री० पाटल नामका पेड़।
पाड़ा—पु० एक मछली। मुहल्ला। भैंसका बच्चा।
पाढ़त—पु० जो कुछ पढ़ा जाय। मंत्र।
पाढ़ा—पु० चित्रमृग।
पाण—पु० हाथ। व्यापार। बाजी।
पाणि, पाणी—पु० हाथ।
पाणिग्रहण—पु० विवाह।
पात—पु० पतन। पत्ता। कानका एक गहना।
पातक—पु० पाप।
पातकी—वि० पापी (उदे० 'तरसना')।
पातन—पु० गिरानेवाला (सू० १००)। गिरानेकी क्रिया।
पातर,-ल—स्त्री० पातुर, वेश्या। पत्तल। वि० पतला, 'सखी पातरी हू तऊ लगै भरी सी देह।' बि० २८६
पातरि,-री—स्त्री० पत्तल।
पातशाह—पु० सम्राट्।
पाता—पु० पत्ता। वि० पीनेवाला। रक्षक।
पाताखत—पु० पत्र और अक्षत, छोटी मोटी भेंट।
पाताबा—पु० मोजा।
पातार, पाताल—पु० पृथ्वीके नीचे सातवाँ लोक। गुफा।
पाति, पाती—स्त्री० पत्ती। चिट्ठी 'रावन कर दीजहु यह पाती।' रामा० ४४१। पत, आबरू।
पातिग—पु० पातक (कबीर २४३)।
पातिव्रत,-व्रत्य—पु० पतिव्रता होनेका भाव।
पातुर, पातुरनी, पातुरि—स्त्री० वेश्या।
पात्र—पु० बर्तन। अधिकारी, भाजन। नट, नाटकमें भाग लेनेवाले व्यक्ति। पत्ता।
पात्रता—स्त्री०, पात्रत्व—पु० पात्र होनेका भाव, योग्यता।
पाथ—पु० मार्ग, जल 'छइबे एक छतरिया बरसत पाथ।' रहीम ४३। आकाश, सूर्य, वायु।
पाथना—सक्रि० थोपना, बनाना, ठोकना।
पाथर—पु० पत्थर (उदे० 'चुनाना', साखी १३)।
पाथेय—पु० रास्तेका कलेवा, सम्बल।
पाथोज—पु० कमल।
पाथोद, पाथोधर—पु० मेघ।
पाथोधि—पु० समुद्र।
पाद—पु० चरण। चौथा भाग। किरण।
पादप—पु० पेड़।
पादरी—स्त्री० ईसाई धर्मका पुरोहित।
पादशाह—पु० बादशाह, सम्राट्।
पादाति, पादातिक—पु० पैदल सिपाही।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पादारघ—पु० पाँव धुलानेका पानी। भेंट।
पादुका—स्त्री० खड़ाऊँ।
पाद्य—पु० पाँव धोनेका जल।
पाद्यार्घ्य—पु० देखो 'पादारघ'।
पाधा—पु० पुरोहित, पंडित।
पान—पु० ताम्बूल। पत्ता (उदे० 'दौ')। पानकी तरह-का तावीज। प्राग। पीनेकी क्रिया। पीनेकी वस्तु, मद्य, इ०। पानी 'तरुवर फल नहिं खात हैं सरवर पियहिं न पान।' रहीम। पौसरा। कटोरा। रक्षण। हाथ 'रहत पसारे लोभिया निसबासर पल पान।' रतन० ३०। पान देना = प्रतिज्ञाबद्ध करना। पान लेना = प्रतिज्ञा करना।
पानदान—पु० पनडब्बा, गिलौरीदान।
पानरा—पु० पनारा।
पानही—स्त्री० पनही, जूता 'स्वपचभक्तकी पानहीं, तुलैं न तिनके सीस।' व्यासजी
पाना—सक्रि० प्राप्त करना, भोगना। उपलब्ध करना। समझना, निकट पहुँचना, भोजन करना, खाना। वि० पावना, प्राप्य।
पानि—पु० पाणि, हाथ। पानो 'दूध पानि सब करै निरारा।' प० ७। चमक, आब 'मोतिहिं मलिन जो होइ गइ कला। पुनि सो पानि कहाँ निरमला।' प० २५
पानिप—पु० आब, कान्ति, तेज 'सकल जगत पानिप रह्यो बूँदीमें ठहराय।' ललित० १६। जल 'अब तेरो बसियो यहाँ नाहिंन उचित मराल। सकल सूखि पानिप गयो, भयो पङ्कमय ताल।' मति० १८७
पानिय—पु० पानी 'प्यासी तजौं तनु रूप-सुधा बिनु पानिय पीको पपीहै पिआओ।' हरि०। वि० रक्षणीय, रक्षा करनेका (उदे० 'झाँका')।
पानी—पु० जल, अंबु। वर्षा। रस। आब, चमक। प्रतिष्ठा, लज्जा। स्वाभिमान, हिम्मत। जलवायु। पाणि, हाथ 'सौंपेसि मोहि तुम्हहिं गहि पानी।' रामा० ४८५। —करना = शान्त करना। —की तरह बहाना = मन माना खर्च करना। —के मोल = बहुत सस्ता। —होना = अत्यन्त लज्जित होना। —पी पीकर कोसना = लगातार कोसना। —फेर देना = व्यर्थ या चौपट कर देना। —लगना = जलवायुसे स्वास्थ्य बिगड़ना 'लागत अति पहार कर पानी।' रामा० २२९
पानीदेवा—पु० तर्पण करनेवाला, पुत्र, स्ववंशीय व्यक्ति।
पानीय—दे० 'पानिय'।
पानौरा—पु० पानके पत्तेकी बनी पकौड़ी।
पान्यो—पु० पानी 'सूर ऊधो सों मिलत भयो सुख ज्यों झख पायो पान्यो।' भ्र० ७
पाप—पु० पातक, अपराध, दोष, बुराई, छल, कष्ट, संकट। अशुभ ग्रह। वि० पापी, नीच।
पापड़, पापर—पु० मूँग आदिके आटेकी बनी पतली रोटीके सदृश वस्तु (के० १५८)
पापात्मा—वि० दुष्टात्मा, पापी।
पापिष्ठ—वि० महापातकी।
पापी—वि० पातकी, दुष्ट। पु० दुराचारी।
पापोश—पु० जूता।
पावंद—वि० बाध्य, विवश, बँधा हुआ।
पावंदी—स्त्री० लाचारी, मजबूरी, बाध्यता।
पामड़ा, पामरा—पु० देखो 'पावँड़ा'। 'पामरनि पामरे परे हैं पुर पौरि लग··· ।' देव
पामर—वि० नीच, दुष्ट, मूर्ख।
पामरी—स्त्री० पाँवड़ी। उपरना।
पामाल—वि० तबाह, बरबाद। पददलित।
पायँ, पाय—पु० पाँव, चरण (उदे० 'कोंवरा')।
पायँजेहरि—स्त्री० पायजेब।
पायँता—पु०, पायँती—स्त्री० देखो 'पाँइता'।
पायंदाज—पु० पाँव पोंछनेकी चटाई या बिछावन।
पायक—पु० दूत। पैदल सैनिक। मल्ल, पटेबाज। 'लरत कहूँ पायक सुभट कहुँ नर्तत नटराज।' राम० ३५। नौकर '···पायक मलेच्छनके काहेको कहाइये'—सेनापति, (सू० ९८)। पताका (?) 'घंट-घंटि-धुनि बरनि न जाहीं। सरव करहिं पायक फहराहीं।' रामा० १६२
पायखाना—दे० 'पाखाना'।
पायजामा—दे० 'पाजामा'
पायजेब—स्त्री० पाँवका एक गहना।
पायड़ा, पायरा—पु० रकाब 'हर घोड़ा ब्रह्मा कढ़ी बिस्नु पीठ पलान। चंद सूर दोय पायड़ा, चढ़सी सन्त सुजान।' साखी २४
पायतन—पु० पैताना (साखी ४२)।
पायताबा—दे० 'पाताबा'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पायदार—वि० सुदृढ़, टिकाऊ।
पायमाल—वि० पद-दलित, विनष्ट (दे० 'पाइमाल')।
पायमाली—स्त्री० दुर्गति, नाश, खराबी।
पायल—स्त्री० पाँवका एक गहना 'किप घायल चित चाय लगि, बजि पायल सुख पाँव।' वि० ८९ (बंग०)
पायस—स्त्री० खीर (उदे० 'ढाँरना')।
पायसा—पु० पड़ोस, प्रतिवेश।
पाया—पु० गोड़ा, खंभा।
पायिक—पु० देखो 'पायक'।
पारंगत—वि० सुनिष्णात, पूर्ण पंडित।
पार—पु० तट, दूसरा किनारा (उदे० 'उतारना'), ओर, छोर, अन्त। अ० परे, दूर 'निज इच्छा निर्मित तनु माया-गुन-गो-पार।' —उतारना,—करना = दूसरे किनारे पहुँचाना, उद्धार करना। --पाना = अन्त पाना, जीतना। —बसाना = पार पड़ना, वश चलना 'झूठ बात नहिं बोलिए जब लगि पार बसाय।' [साखी १५६
पारई—स्त्री० बड़ा कसोरा।
पारख—स्त्री० परख, जाँच। पु० परखैया।
पारखद—पु० पार्षद, अनुचर।
पारखी—पु० जाँचनेवाला, परीक्षक 'सोइ पंडित सोइ पारखी···' वैराग्य सं०
पारजात—पु० पारिजात नामक देवतरु।
पारण—पु० व्रतके दूसरे दिनका भोजन। समाप्ति।
पारतंत्र्य—पु० पराधीनता।
पारथिव—पु० राजा। मिट्टीका शिवलिङ्ग 'तब मज्जन करि रघुकुलनाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा।' रामा० २४८
पारद—पु० पारा 'क्यों धौं चंचल प्रान ए पारद लौं न उड़ात।' मति० २३२
पारदर्शक—वि० जिससे आरपार दिखाई दे।
पारदर्शी—वि० उसपार तक देखनेवाला, दूरदर्शी, अनुभवी।
पारधि, पारधी—पु० धनुष चलानेवाला, शिकारी 'हम अनाथ बैठे हुमडरिया पारधि साधे बान।' सूवि० २२
पारधिपति—पु० धनुष चलानेवालोंमें श्रेष्ठ, कामदेव।
पारन—पु० देखो 'पारण'।
पारना—सक्रि० लेटाना, गिराना 'एकहिं एक मरदि महि पारहिं।' रामा० ४९८। साँचेमें डालकर बनाना। पइनना। पोषण करना, पालन करना 'तौ न होउँ चरननको चेरो जो न प्रतिज्ञा पारौं।' सू० ३८। अक्रि० सकना 'नासा तिलकको बरनइ पारे।' रामा० ११०
पारषद—पु० समीप रहनेवाला अनुचर।
पारस—पु० लोहेको सोना बनानेवाला पत्थर, स्पर्शमणि। पत्तलपर लगाया हुआ भोजन। क्रिवि० समीप, पास।
पारसव—पु० दूसरेकी स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र। लोहा।
पारस्परिक—वि० आपसका, परस्परमें होनेवाला।
पारा—पु० धातुविशेष।
पारायण—पु० निश्चित समयमें पूरा करना, समाप्ति।
पारावत—पु० कबूतर। पंडुक। पर्वत। बन्दर।
पारावार—पु० सीमा, अन्त। दोनों किनारे। सागर।
पारि—स्त्री० दिशा, तरफ, तट, मेंढ़, सीमा।
पारिख—स्त्री० परख, जाँच। पु० परीक्षा करनेवाला (उदे० 'परीखना',)।
पारिजात—पु० एक देवतरु।
पारितोषिक—पु० भेंट, पुरस्कार।
पारिपार्श्विक—पु० पास रहनेवाला नौकर, अरदली।
पारिषद—पु० सभासद, पंच। गण।
पारी—स्त्री० बारी, अवसर, प्याला।
पारीछत—पु० राजा परीक्षित। परीक्षितका पुत्र†
पार्थ—पु० अर्जुन। [† जनमेजय।
पार्थिव—पु० राजा। मिट्टीका पात्र। मिट्टीका शिवलिङ्ग। वि० पृथिवी सम्बन्धी, मिट्टीसे उत्पन्न।
पार्श्व—पु० बगल, बाजू। पसली। पास, समीपता।
पार्षद—पु० समीपी अनुचर, गण। मंत्री।
पाल—पु० पार, मेंढ़, ऊँचा किनारा 'टूट पाल सरवर बहि लागे।' प० २९ (१३,२६ भी)। तंबू, नावके मस्तूलसे टाँगा गया कपड़ा। फल पकानेकी रीति (रतन० ४१)। पालक, रक्षक। पीकदान।
पालउ—पु० पल्लव 'पेड़ काटि तैं पालउ सींचा।' रामा० २७६
पालक—पु० रक्षक। साईस। पलंग 'जा दिन केशव कोउ न आवै। ता दिन पालक ते न उठावै।' राम० ३०१, (प० १३९)
पालकी—स्त्री० शिबिका, डोली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पालतू—वि० पाला हुआ। जो पाला जाय।
पालथी—स्त्री० देखो 'पलथी'।
पालन—पु० भरण-पोषण, उल्लंघन न करना। हिंडोला (उदे० 'झँगूला')।
पालना—पु० बच्चोंका खटोला। सक्रि० पोषण करना, रक्षा करना (उदे० 'छलछाया')। निबाहना।
पालव—पु० पल्लव, पत्ता 'पालव बैठि पेड़ एहि काटा।' रामा० २२१
पाला—पु० तुषार, हिम। मेंड़। केन्द्र, अखाड़ा। —पड़ना = काम पड़ना (साखी १६०)।
पालागन—स्त्री० प्रणाम।
पालि—स्त्री० पंक्ति, सेना (छत्र० ११०)। मेंड़ (कबीर १७०), किनारा, सीमा। गोद। कानकी लौ।
पालू—वि० पाल्तू।
पाले—क्रिवि० वशमें, चंगुलमें 'परेहु कठिन रावनके पाले।' रामा० ५०६
पावँ—पु० पैर, चरण।—धरना = पधारना, किसी मार्गपर चलना।—पकड़ना,—पड़ना = प्रणाम करना, दीनतापूर्वक विनती करना।—पलोटना = चरण दाबना।—पसारना = आरामसे सोना, आडम्बरमें खर्च करना।—बढ़ाना = सीमासे आगे बढ़ना, जल्दी जल्दी चलना।—भारी होना = गर्भ रहना।
पावँड़ा; पावँड़ी; पावँर; पावँरी—दे० 'पाँवड़ा', पाँवड़ी, पाँवर, पाँवरी।'
पाव—पु० चौथाई। चार छटाक।
पावक—पु० अग्नि। वि० पवित्र करनेवाला।
पावदान—पु० पावँ रखनेके लिए बनी हुई चीज़ या स्थान।
पावन—वि० पवित्र। शुद्ध करनेवाला। पु० अग्नि, शुद्धि।
पावना—दे० 'पाना'।
पावली—स्त्री० चौथाई सिक्का, चुअन्नी।
पावस—पु० वर्षा ऋतु।
पावा—पु० गोड़ा, खंभा।
पाश—पु० फाँस, जाल, बन्धन।
पाशुपत—पु० शिव सम्बन्धी। शैव।
पाश्चात्य—वि० पश्चिमका, पश्चिममें रहनेवाला। पीछेका।
पाषंड, पाषंडी—दे० 'पाखंड,' 'पाखंडी'।
पाषाण, पाषान—पु० पत्थर।
पासँग—पु० तराजूके पलड़ोंकी कसर या उसे दूर करनेको रखे गये पत्थरके रोड़े आदि।
पास—पु० समीपता। अधिकार। पार्श्व, तरफ 'नगर सँवारहु चारहुँ पासा।' रामा० १५५। पाँसा। फाँस, बंधन 'देन लगत है पास जब बिरह अहेरी आय। प्रीतम रूप मवास बिच बचत नैन मृग जाय।' रतन० ३३। क्रिवि० समीप, अधिकारमें।
पासनी—स्त्री० अन्नप्राशन, चटावन (छत्र० २४)।
पासमान, पासवान—पु० साथ रहनेवाला सेवक (सुजा० ६४)।
पासा—पु० चौपड़ खेलनेके हड्डी आदिके चौपहल टुकड़े।
पासासार—पु० पासेका खेल (प० २७६)।
पासि, पासिक—पु० फंदा, बन्धन (उदे० 'चूँच')।
पासिका—स्त्री० देखो 'पासिक'।
पासी—स्त्री० फाँसी, फंदा 'लोक वेद कुलकी मरजादा इहै गलैमें पासी।' कबीर १२९, (१३४)। पिछाड़ी। पु० जाल बिछा कर पक्षी पकड़नेवाला।
पासुरी—स्त्री० देखो 'पसुरी'।
पाहँ—दे० 'पाहि'। [† रामा० २४६
पाहन—पु० पत्थर 'पाहनतें न काठ कठिनाई।' †
पाहरू—पु० पहरेदार, रक्षक (रामा० ४३०)।
पाहिं, पाहीं—अ० पास, के प्रति (रामा० ३५८)।
पाहुँच—स्त्री० पहुँच, पैठ, जानकारी, शक्ति।
पाहुना—पु० अतिथि। दामाद।
पाहुनी—स्त्री० पहुनाई, आतिथ्य। स्त्री अतिथि।
पिंगल—वि० पीला, भूरापन लिए हुए लाल या पीला। पु० बंदर। अग्नि। एक मुनि। एक पक्षी 'पिंगल है पिउ पिउ करे ताको काल न खाय।' साखी १६०
पिंगला—स्त्री० नाड़ी-विशेष। पक्षीविशेष (उदे० 'आरन')। एक वेश्या।
पिंजड़ा, पिंजरा—पु० लोहे आदिकी तीलियोंका बना घर जिसमें पक्षी रखे जाते हैं।
पिंजन—पु० धुनकी, रुई धुननेकी कमान।
पिंजर—पु० अस्थिपंजर। पिंजड़ा। हरताल।
पिंजरापोल—पु० गोशाला, पशुशाला।
पिंजल—वि० व्याकुल। पु० हरताल, कुशपत्र।
पिंड—पु० गोला, लौंदा, ढेर। खीर आदिका लौंदा। शरीर। भोजन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिंडरी, पिंडली—स्त्री० घुटनेके नीचेका टाँगका पिछला भाग।
पिंडवाही—स्त्री० वस्त्र-विशेष।
पिंडा—पु० गोला, खीर आदिका लौंदा।
पिंडी—स्त्री० गीली वस्तुका छोटा टुकड़ा, लोंदा। लौकी। बलिदानकी वेदी।
पिंडुरी, पिंडुली—स्त्री० देखो 'पिंडली' (सू० १८०)।
पिंडूक—पु० कपोतकी तरहका पक्षी (मुद्रा० ९९)। उल्लू।
पिंडोल—पु० पोतनी मिट्टी।
पिअ—वि० प्यारा, सुन्दर। पु० स्वामी, पति।
पिअर—वि० पीला।
पिअरवा—पु० पति, स्वामी। वि० प्यारा।
पिअराई—स्त्री० पीलापन।
पिआज—पु० प्याज, मूलविशेष।
पिआना—सक्रि० पिलाना।
पिआर—पु० प्यार, स्नेह।
पिआस—स्त्री० प्यास, तृषा (रामा० ३०)।
पिउ—पु० प्रिय, पति।
पिक—स्त्री० कोयल।
पिघरना, पिघलना—अक्रि० द्रवीभूत होना, गलना, दयार्द्र होना।
पिचक—स्त्री० पानी आदि खींचकर फेंकनेका यंत्र।
पिचकना—अक्रि० दबना, बैठ जाना, सिकुड़ना।
पिचकाना—सक्रि० उभरे हुए भागको भीतरकी ओर दबाना।
पिचकारी—स्त्री० देखो 'पिचक'।
पिचकी—स्त्री० पिचकारी 'छिरके नाह नवोढ़ दृग कर पिचकी जल जोर।' वि० ६८
पिचपिचा—वि० चिपकता-हुआसा, चिपचिपा।
पिचपिचाना—अक्रि० चिपचिपा होना, पानीसा निकलना।
पिचलना—सक्रि० कुचलना, दबाना।
पिचास—पु० पिशाच 'हरि बिच ढारै अंतरा माया बड़ी पिचास।' साखी १६
पिचुक्का, पिचूका—पु० पिचकारी। एक पकवान, गोलगप्पा।
पिच्चित, पिच्ची—वि० पिचला हुआ, कुचला हुआ।
पिच्छ—पु० लांगूल, पूँछ। मयूर-पुच्छ।
पिच्छल—वि० पैर फिसलानेवाला, चिकना। पिछला। पु० आकाशवही। शीशम।
पिछड़ना—अक्रि० पीछे रह जाना।
पिछलगा,-लगू—पु० अनुयायी, सेवक, आश्रित।
पिछलना—अक्रि० पीछेकी ओर या उलटा चलना।
पिछला—वि० पीछेका, बादका, विगत, अन्तकी तरफका।
पिछवाड़ा,-वारा—पु० घरके पीछेका भाग।
पिछाड़ी, पिछारी—स्त्री० पृष्ठ भाग। घोड़ेके पिछले पाँव बाँधनेकी रस्सी।
पिछानना—सक्रि० देखो 'पहचानना'। 'जिन जिन शब्द पिछानिया सरिया तिनका काज।' साखी १०२
पिछोरना—दे० 'पछोरना', (साखी १६०)।
पिछौंहें—क्रिवि० पीछेकी ओर।
पिछौरा—पु० चादर 'दिल मन्दिरमें पैठि करि तानि पिछौरा सोय।' साखी १८८
पिछौरी—स्त्री० ओढ़नी, चादर 'मन्मथ कोटि कोटि गहि वारों ओढ़े पीत पिछोरी।' सूबे० ११७
पिटक—पु० पिटारा, ग्रन्थखण्ड। फुंसी।
पिटना—अक्रि० ठोंका या बजाया जाना, मार खाना।
पिटाई—स्त्री० मार, प्रहार। पीटनेकी क्रिया या मजदूरी।
पिटारा—पु० बाँस आदिकी पेटी।
पिटारी—स्त्री० छोटा पिटारा (उदे० 'झारी')।
पिट्ठी, पिठी—स्त्री० भिगो कर पीसी हुई दाल।
पिट्ठू—पु० पृष्ठपोषक, समर्थक। पिछलगा।
पिठौरी—स्त्री० पीठीकी बनी बरी आदि।
पिड़क—पु०, पिड़की—स्त्री० फुंसिया, फुंसी।
पिड़किया—स्त्री० गुझिया नामक पकवान। फुंसी।
पितर—पु० पूर्वपुरुष, पुरखे।
पितराई—स्त्री० पीतलका कसाव।
पिता—पु० बाप, वालिद।
पितामह—पु० दादा। ब्रह्मा, शिव।
पितिया—पु० चाचा (पितिया ससुर, पितिया साल)।
पितु, पितृ—पु० पिता, बाप।
पितृकर्म,-क्रिया—पु० श्राद्धादिकर्म।
पितृपक्ष—पु० आश्विन कृष्णपक्ष।
पितृव्य—पु० काका, चाचा।
पित्त—पु० यकृतमें बननेवाला एक तरल पदार्थ।
पित्ता—पु० पित्ताशय।
पिदारा, पिद्दा—पु० एक पक्षी (प० २६९)।
पिधान—पु० ढकना, आवरण, किवाड़।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिधानक—पु० कोष, घर, म्यान।
पिनकना—अक्रि० अफीमके नशेमें झूमना, ऊँघना।
पिनच—दे० 'पनच' (कबीर १६०)।
पिनपिनाना—अक्रि० पिन पिन करना, रुक रुक कर रोना।
पिनोक—पु० शिवजीका धनुष। धनुष।
पिनाकी—पु० शिवजी।
पिन्हाना—सक्रि० दे० 'पहराना'। अक्रि० दे० 'पेन्हाना'।
पिपास, पिपासा—स्त्री० प्यास, तृषा, लालच।
पिपासु—वि० प्यासा, लालची।
पिपीलिका—स्त्री० चींटी।
पिप्पल—पु० पीपलका वृक्ष। एक पक्षी।
पिय—पु० स्वामी, पति। वि० प्यारा।
पियर—वि० पीला (उदे० 'काँखासोती', 'दभकना')।
पियरई, पियराई—स्त्री० पीलापन (ललित १०८)।
पियरवा—पु० प्यारा। पति।
पियराना—अक्रि० पीला पड़ना।
पियरी—स्त्री० पीलापन। पीली रँगी हुई धोती।
पियल्ला—पु० दूधपीता बच्चा।
पिया—पु० प्रिय, स्वामी।
पियाज—स्त्री० मूल-विशेष।
पियादा—पु० पैदल सिपाही।
पियाबाँसा—पु० कटसरैया।
पियार—पु० स्नेह, प्रेम। कोदों आदिका सूखा डण्ठल। वि० प्रिय, प्यारा।
पियारा—वि० प्रिय (उदे० 'कुँआरा', 'चिचावना')।
पियाल—पु० चिरोंजीका पेड़। देखो 'पियार'।
पियाला—पु० प्याला, कटोरा।
पियास—स्त्री० प्यास, तृषा (प० १३, उदे० 'टेकना')।
पियासी—स्त्री० एक मछली (प० २६९)।
पियूख, पियूष—पु० पीयूष, अमृत।
पिरकी—स्त्री० फुंसी, फुड़िया।
पिरथी—स्त्री० पृथ्वी, धरती।
पिराई—स्त्री० पीलापन।
पिराक—स्त्री० गोझियाकी तरहका एक पकवान 'माठ पिराकैं और बुँदौरी।' प० २७४
पिराना—अक्रि० दुखना (उदे० 'चिरावना')। दुःख समझना। दुखी होना (सू० ७७)।
पिरीतम—पु० प्रियतम (प० ७४)।
पिरीता—वि० प्यारा 'मिले आज मोहि राम पिरीते।' [रामा० ५३५
पिरीति—स्त्री० प्रीति (प० ५४)।
पिरोजन—पु० कर्णवेध संस्कार।
पिरोजा—पु० एक नीला पत्थर।
पिरोना, पिरोहना—सक्रि० पोहना, सूत डालना, गूथना।
पिलकना—सक्रि० गिराना 'पहली दसा पलटि लीनी है, त्वचा त्वचकि तनु पिलकी।' सू० २०१
पिलकिया—स्त्री० एक पीलीसी चिड़िया।
पिलना—अक्रि० सहसा प्रवृत्त होना, झुक पड़ना, जोरसे झपटना (छत्र० २१)। पेरा जाना।
पिलपिला वि० बहुत नरम, पिचपिचा।
पिलपिलाना—सक्रि० रस निकालनेके लिए दबाना।
पिलाना—सक्रि० पान कराना। भीतर भरना।
पिल्ला—पु० कुत्तेका बच्चा।
पिल्लू—पु० एक सफेद छोटा कीड़ा, ढोला।
पिव—पु० पिय, पति।
पिवाना—सक्रि० पिलाना।
पिशाच—पु० भूत, दुष्ट मनुष्य।
पिशित—पु० मांस, आमिष।
पिशुन—पु० चुगलखोर, निन्दक, दुर्जन, नीच।
पिष्टपेषण—पु० पिसी हुई वस्तुको पुनः पीसना। वही बात फिर फिर कहना।
पिसनहारी—स्त्री० आटा पीसनेवाली स्त्री।
पिसना—अक्रि० चूर्ण होना, दब जाना। थक जाना, कष्ट उठाना।
पिसाई—स्त्री० पीसनेका कार्य या उसकी मजदूरी। सख्त मिहनत।
पिसाच—पु० भूत (उदे० 'अंतावरी')। क्रूर मनुष्य।
पिसान—पु० आटा, चूर्ण।
पिसाना—अक्रि० पिसना (उदे० 'पाटला')। सक्रि० पिसवाना।
पिसुन—पु० देखो 'पिशुन', (रामा० २७९, मति० २०५)।
पिसौनी—दे० 'पिसाई'।
पिस्सू—पु० एक छोटा कीड़ा।
पिहकना—अक्रि० कोयल इ० का बोलना, कुहकना।
पिहित—वि० छिपा हुआ। पु० एक काव्यालंकार।
पींजना—सक्रि० रुई धुनना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पींजर, पींजरा—पु० अस्थिपंजर, ठठरी। पिंजड़ा।
पींड—पु० किसी गीली वस्तुका गोला। पिंड, देह। पेड़का धड़। पिंडखजूर। एक आभूषण।
पींडुरी—स्त्री० देखो 'पिंडरी', (रवि० १५)।
पी—पु० पिय, पति। पपीहेका बोल।
पीक—स्त्री० पानके रससे युक्त थूक। थूक (सू०७५)।
पीकदान—पु० देखो 'पीकदानी'।
पीकदानी—स्त्री० थूकनेका पात्र, उगालदान।
पीकना—अक्रि० कोयल या पपीहेका बोलना, कुहकना।
पीका—पु० कोंपल, नया पत्ता।
पीच—पु० माँड़।
पीछा—पु० पिछला भाग। अनुसरण, खदेड़।
पीछू, पीछे—क्रिवि० बादमें, उपरान्त। अन्तमें। पीठकी तरफ, किसीकी अनुपस्थितिमें। के लिए, के कारण।
पीटना—सक्रि० कूटना, चूर करना, मारना।
पीठ, पीठि—स्त्री० पृष्ठ (उदे० 'ठेघना'), पृष्ठ भाग। पु० चौकी, आसन, आधार, केन्द्र, प्रान्त।
पीठा—पु० पीढ़ा, चौकी। एक पकवान।
पीठी—स्त्री० भिगो कर पीसी हुई दाल।
पीड़—स्त्री० सिरका एक आभूषण (सू० १३५)। देखो 'पीर', (उदे० 'उछंग')।
पीड़क—पु० पीड़ा पहुँचानेवाला।
पीड़ा—स्त्री० दुःख, रोग। सिरमें लपेटी हुई माला।
पीडुरी—स्त्री० देखो 'पिंडरी'।
पीढ़ा—पु० लकड़ी आदिका आसन, पाटा 'जथा जोग पीढ़न बैठारे।' रामा० १७९
पीढ़ी—स्त्री० किसी वंश-परम्परामें किसी व्यक्तिका, गणना-क्रमसे, निर्धारित स्थान।
पीत—वि० पिया हुआ। पीले रंगका। पु० पीला रंग। हरताल। एक पेड़।
पीतधातु—पु० गोपी चन्दन।
पीतम—पु० प्रियतम, स्वामी (उदे० 'झर')। वि० अत्यन्त प्यारा।
पीतमणि,-रत्न—पु० पुखराज।
पीतर, पीतल—पु० एक मिश्रित धातु।
पीतांबर—पु० पीला रेशमी कपड़ा। श्रीकृष्ण।
पीन—वि० पुष्ट, मोटा।
पीनक—स्त्री० अफीमके नशेमें ऊँघनेकी क्रिया।
पीनस—स्त्री० पालकी। पु० घ्राण-शक्ति-नाशक रोग।
पीना—सक्रि० पान करना। क्रोधादिको दबाना। सोखना। धूम्र पान करना।
पीप—स्त्री० देखो 'पीब'।
पीपर, पीपल—पु० एक पेड़, चलदल। शहतूतके आकारकी एक ओषधि।
पीपरामूल, पीपलामूल—पु० एक ओषधि।
पीपा—पु० एक तरहका बड़ा बरतन।
पीब—स्त्री० मवाद, घावसे निकलनेवाली सफेद लसदार वस्तु।
पीय, पीया—पु० पिय, स्वामी, पति।
पीयर—वि० पीला।
पीयूख, पीयूष—पु० अमृत, सुधा।
पीर—स्त्री० पीड़ा, व्यथा 'ऐसेउ पीर बिहँसि तेइ गोई।' रामा० २१२। प्रसव-वेदना, करुणा। पु० धर्मगुरु, पूज्य व्यक्ति, सिद्ध (भू० ५०)।
पीरना—सक्रि० पेरना 'तेली है तन कोल्हू करिहौं पाप पुनि दोउ पीरौं।' कबीर २१७
पीरा—दे० 'पीड़ा' तथा 'पीला' (उदे० 'कछोटी')।
पील—पु० हाथी '...उतै पाखर समेत पील खुलैं पील खानेते'—सुखदेवमिश्र
पीलखाना—पु० हथिसार (उदे० 'पील')।
पीलपाँव—पु० पाँव फूल जानेका रोग।
पीलपाल, पीलवान—पु० महावत, हाथीवान।
पीलसोज—पु० चिरागदान, दीयट।
पीला—वि० पीत वर्णका। फीका, कान्तिहीन।
पीलिया—पु० आँखें, मुख इ० पीला पड़नेका रोग।
पीलु—पु० एक पेड़। हाथी। बाण। फूल। परमाणु। अस्थिखंड। चनेका साग। हथेली।
पीव—पु० पिउ, पिया, स्वामी 'चरनदास कहु आपको तो मैं तेरा पीव।' चरनदास। वि० मोटा, पीन।
पीवना—सक्रि० देखो 'पीना'।
पीवर—वि० भारी, मोटा 'तनु बिलाव पीवर जनिजाई।' रामा० ८८
पीसना—सक्रि० चूर चूर करना (उदे० 'ओदरना'), बारीक करना, कुचलना। (दाँत) कटकटाना।
पीहर—पु० नैहर, मायका।
पीहू—पु० एक क्रीड़ा, पिस्सू।
पुंख—पु० तीरका वह अंश जिसमें पर खोंसे जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुंखित—वि० पक्षयुक्त (बाण)।
पुंगव—पु० बैल। श्रेष्ठार्थवाची शब्द ('नरपुंगव')।
पुंगीफल—पु० सुपारी।
पुँछार—पु० मोर।
पुँछाला—पु० पुछल्ला, बराबर साथमें लगी रहनेवाली वस्तु।
पुंज—पु० ढेर, राशि, समूह।
पुंजि, पुँजी—स्त्री० पूँजी, धन।
पुंड—पु० टीका, तिलक।
पुंडरीक—पु० सफेद कमल। रेशमका कीड़ा। तिलक। कमंडल। एक दिग्गज। चीनी। ऊख (पुंड्र)।
पुंश्चली—वि० स्त्री० व्यभिचारिणी। स्त्री० कुलटा स्त्री।
पुंस—पु० पुरुष।
पुंसवन—पु० गर्भके तीसरे मासका एक संस्कार। दूध।
पुंस्त्व—पु० पुरुषत्व, वीर्य।
पुआ—पु० मीठी पुड़ी।
पुआल—पु० पयाल। एक पेड़।
पुकार—स्त्री० उच्च स्वरसे सम्बोधन करनेकी क्रिया, टेर, गुहार, दुहाई।
पुकारना—सक्रि० टेरना, ज़ोरसे बुलाना, चिल्लाना, रटना।
पुख—पु० एक नक्षत्र। पुष्टि। पौष मास।
पुखर, पुखरा—पु० पोखरा।
पुखराज—पु० एक रत्न, पद्मराग।
पुख्ता—वि० पक्का, सुदृढ़, मजबूत।
पुगाना—सक्रि० पुजाना। पूरा करना।
पुचकारना—सक्रि० प्रेम जनाने या सान्त्वना देनेके लिए, चूमने जैसा शब्द करना 'लात खाय पुचकारिये होय दुधारू धेन।' गिरधर राय
पुचकारी—स्त्री० पुचकारनेका शब्द, चुमकार।
पुचारना—सक्रि० पोतना, पुचारा देना।
पुचारा—पु० पोंछनेकी क्रिया, हलका लेप। चापलूसी।
पुच्छ—स्त्री० पूँछ, दुम। [बढ़ावा।
पुच्छल, पुच्छी—वि० पूँछवाला, दुमदार।
पुछल्ला—पु० लम्बी पूँछ। साथमें जुड़ी हुई वस्तु। पछलगा।
पुछार—पु० पूछनेवाला। मोर 'जान पुछार जो भा बनबासी।' प० ४३
पुजना—अक्रि० पूजा जाना। पूरा होना (मुद्रा० ११९)।
पुजवना—सक्रि० पूरा करना। सफल करना 'पुजवो परमेश्वर मो मन इच्छा।' के० ९५
पुजवाना—सक्रि० पूजा कराना, सेवा कराना।
पुजाई—स्त्री० पूजनेकी क्रिया। पूजा '...कौन देवकी करत पुजाई' सूबे० ११८। पूरा करनेकी क्रिया।
पुजाना—सक्रि० देखो 'पुजवाना'। पूरा करना।
पुजापा—पु० पूजाकी सामग्री।
पुजारी, पुजेरी—पु० पूजा करनेवाला।
पुजैया—स्त्री० पूजा। पु० पूजा करनेवाला।
पुट—पु० मिलाव, बोर, हलका छिड़काव। दोना, दोनेके आकारकी वस्तु। आच्छादन (ओंठ, पलक इ०)। †
पुटकी, पुटरिया—स्त्री० पोटली, गठरी। [†अँतरौटा।
पुटपाक—पु० मुहँबंद पात्रमें रखकर या मिट्टी लपेट कर ओषधि पकानेकी क्रिया (उदे० 'तताई')।
पुटी—स्त्री० छोटा दोना, रिक्त स्थान, गड्ढा (उदे० 'चुबना')। लँगोटी।
पुठवार—क्रिवि० पीछे, पीछेकी ओर (सुजा० ३३, ५०)।
पुड़िया—स्त्री० लपेटा हुआ पत्ता या कागज जिसमें दवा आदि रखी जाय। स्थान, घर ('आफतकी पुड़िया')।
पुड़ी—स्त्री० पुड़िया 'कबीर धूल सकेलिके पुड़ी जो बाँधी येह।' साखी ६४। देखो 'पूरी'।
पुण्य—पु० धर्मकार्य, शुभकर्म, शुभकर्मका फल। वि० शुभ, पवित्र।
पुण्यवान्, पुण्यात्मा—वि० धर्मात्मा।
पुण्याई—स्त्री० सुकृतका फल, धार्मिकता।
पुतरा—पु० पुतला। लकड़ी आदिकी प्रतिमा।
पुतरिका, पुतरिया, पुतरी—स्त्री० गुड़िया, पुतली (उदे० 'काढ़ना')। आँखका तारा (रामा० २२०)।
पुतला, पुतली—दे० 'पुतरा', 'पुतरी'।
पुताई—स्त्री० पोतनेका काम या उसकी मजदूरी।
पुतारा—पु० गीले कपड़ेसे पोंछनेका कार्य।
पुत्त, पुत्र—पु० सुत, बेटा, लड़का।
पुत्रवती—वि० स्त्री० पुत्रवाली।
पुत्रवधू—स्त्री० पतोहू, बहू।
पुत्रिका—स्त्री० बेटी, लड़की। पुतली। स्त्रीकी तसवीर।
पुत्री—स्त्री० बेटी।
पुदीना—पु० एक सुगन्धित पौधा।
पुनः—अ० फिरसे, बादमें, फिर। पुनः पुनः = बार [बार।
पुनरपि—क्रिवि० फिर भी।
पुनरावृत्ति—स्त्री० फिर करना या फिर पड़ना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनरुक्ति—स्त्री० फिर कहना।
पुनर्जन्म—पु० मृत्युके बाद पुनः जन्म लेना, नवजीवन।
पुनर्भू—स्त्री० पतिके मरने पर अन्यसे विवाहित स्त्री।
पुनि—क्रिवि० फिरसे 'पुनि आउब एहि बिरियाँ काली।'
पुनिम—स्त्री० पूर्णिमा (कबीर २३७)। [रामा० १२८
पुन्नी—स्त्री० पूर्णिमा। पु० पुण्यात्मा।
पुनीत—वि० पवित्र।
पुन्न—पु० पुण्य, धर्मकृत्य 'जुग अनेक जो पुन्न करि, नहीं नावँ बिनु ठावँ।' साखी ९४
पुन्नाग—पु० एक पेड़। पुरुष श्रेष्ठ। सफेद कमल (मति०
पुन्य—दे० 'पुण्य'। [२२३)।
पुमान्—पु० पुरुष, नर।
पुरंदर—पु० पुर तोड़नेवाला, इन्द्र, चोर।
पुरंध्री—स्त्री० पति पुत्रादिसे सुखी स्त्री। स्त्री।
पुरः—अ० आगे, सामने, पहले।
पुर—पु० नगर, ग्राम। घर। शरीर। दुर्ग। मोट।
पुरइन—स्त्री० कमल-पत्र। नलिनी, कमल।
पुरइया—पु० तकुआ ? (कबीर १६५)।
पुरखा—पु० पूर्व पुरुष। अनुभवी वृद्ध मनुष्य।
पुरचक—स्त्री० पुचकार, समर्थन, प्रोत्साहन, प्रेरणा।
पुरजा—पु० टुकड़ा, अंश, भाग, कतरन।
पुरट—पु० सोना, सुवर्ण (उदे० 'छुहना')।
पुरतः—अ० आगे, सामने।
पुरत्राण—पु० परकोटा, प्राकार।
पुरपाल—पु० कोतवाल, नगर-रक्षक। जीव।
पुरबला, पुरबिला—वि० पहलेका, पूर्वजन्मका 'मेटि न जाइ लिखा पुरबिला।' प० ९२
पुरवा—स्त्री० पूरबकी हवा। एक रोग।
पुरवट—पु० मोट, चरसा।
पुरवना—सक्रि० पूरा करना, भरना 'सतगुरु पुरवै आस जो निरास आसा करै।' साखी ९६। अक्रि० पूरा होना।
पुरवा—स्त्री० पूर्वी हवा। पु० पुरा, छोटा गाँव।†
पुरवाई,-वैया—स्त्री० पूरबकी हवा। [†कुल्हड़।
पुरश्चरण—पु० कार्यसिद्धिके लिए नियत कालतक मंत्रादिका पाठ, प्रयोग।
पुरषा—पु० पूर्व पुरुष। [
पुरसा—पु० हाथ ऊपर किये पुरुषकी ऊँचाईके बराबर माप।
पुरस्कार—पु० इनाम, पूजा, भेंट।
पुरस्कृत—वि० जिसे इनाम दिया गया हो। आगे किया हुआ, पूजित।
पुरहूत—पु० पुरहूत, इन्द्र '...पुरहूत कैसो पुहुमीमें प्रगट प्रभाव है'—ललित ३०
पुरा—पु० गाँव, मुहल्ला। स्त्री० पूर्व दिशा। अ० पूर्वकालमें।
पुराण, पुरान—पु० प्राचीन आख्यान, हिन्दुओंके धर्म-तत्व विषयक अठारह ऐतिहासिक ग्रन्थ। वि० पुराना, पुरातन।
पुरातत्व—पु० प्राचीन बातोंके सम्बन्धकी विद्या।
पुरातन—वि० पुराना।
पुराना—वि० बहुत दिनोंका, जीर्ण। अतीत, पूर्वकालका। परिपक्व। सक्रि० पूरा कराना, पालन कराना। पूरा करना 'तौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो, अपनी साध पुराऊँ।' सू० १३२
पुरारि—पु० शिवजी। [
पुराल—पु० देखो 'पयाल'।
पुरावृत्त—पु० पुराना हाल, इतिहास।
पुरिखा, पुरिषा—पु० पूर्व पुरुष 'जिनके पुरिषा भुव गंगहि लाये।' राम० ११६। पति 'तू मेरौ पुरिषा हौं तेरी नारी।' कबीर २१९, (२००)
पुरिया—स्त्री० देखो 'पुड़िया'।
पुरिष, पुरीष—पु० विष्ठा 'पुरुष सोई जो पुरिष सम छाँड़ि भजै संसार।' ध्रुवदास
पुरी—स्त्री० नगरी।
पुरुख, पुरुष—पु० मनुष्य, नर। पति। आत्मा। पूर्वज। जीव। सूर्य। पारा।
पुरुखा, पुरुषा—पु० पूर्व पुरुष।
पुरुषारथ, पुरुषार्थ—पु० पौरुष, पराक्रम, वीरता,
पुरुहूत—पु० इन्द्र। [शक्ति।
पुरैन, पुरैनि—स्त्री० कमलका पत्ता।
पुरोडास—पु० हवि, खीर। सोमरस। होमकी सामग्री।
पुरोध, पुरोधा—पु० पुरोहित (रामा० ३३२)।
पुरोहित—पु० कुलगुरु, कर्मकाण्ड करानेवाला।
पुरौ—पु० पुरवट 'पलक पुरौ नहिं होइ दृग निसि नारीके साथ। रूपकूप तैं कौन बिधि रस जागत है हाथ।' [रतन० १९
पुर्जा—पु० देखो 'पुरजा'।
पुल—पु० सेतु, बाँध। रोमांच। वि० प्रचुर, विपुल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुलक—पु० रोमांच।
पुलकना—अक्रि० प्रेमादिसे रोमांच होना, गद्गद् होना।
पुलकालि, पुलकावलि—स्त्री० हर्षजनित रोमांच।
पुलकित—वि० रोमांचयुक्त, गद्गद्।
पुलटिस—स्त्री० तीसी इ० का मोटा लेप।
पुलपुला—वि० पिलपिला, भीतरसे नरम और ढीला।
पुलपुलाना—सक्रि० दबाना, दबाकर चूसना।
पुलाव—पु० मांस मिलाकर पकाया हुआ चावल।
पुलिंदा—पु० गट्ठा, गठरी, बण्डल।
पुलिन—पु० किनारा। पानीसे निकली हुई हालकी भूमि।
पुलिहोरा—पु० पकवान-विशेष।
पुली—स्त्री० एक चिड़िया।
पुलोमजा—स्त्री० पुलोमकी कन्या, शची, इन्द्राणी।
पुवा—पु० मीठी पुड़ी।
पुवार—पु० पयाल, सूखी घास। धान आदिके सूखे [डण्ठल।
पुश्त—स्त्री० पीढ़ी। पीठ।
पुश्तैनी—वि० जो कई पुश्तोंसे चला आता हो।
पुष्कर—पु० तालाब। जल। पद्म। ध्यान, आकाश। गज-शुण्डाग्र। बाण। युद्ध, नशा।
पुष्करिणी—स्त्री० पोखरी।
पुष्कल—पु० चार ग्रासकी भिक्षा। एक ढोल। एक नाप। शिव। वि० उत्तम। पवित्र। प्रचुर।
पुष्ट—वि० पोसा हुआ। मोटा ताज़ा, दृढ़।
पुष्टई—स्त्री० पुष्टता, ताक़त। पुष्टिकारक ओषधि।
पुष्टि—स्त्री० पोषण, दृढ़ता, समर्थन।
पुष्प—पु० फूल। विकाश। रज। पुष्पक विमान।
पुष्पक—पु० कुबेरका विमान। फूल। कंगन। एक सर्प।
पुष्पचाप,-धन्वा,-ध्वज—पु० कामदेव।
पुष्पवती—वि० स्त्री० फूलोंसे युक्त। रजस्वला 'जग यदपि दिगंबर पुष्पवती नर निरखि निरखि मन मोहै।' [राम० १९
पुष्य—पु० एक नक्षत्र। पौष मास।
पुसाना—अक्रि० पूरा पड़ना। अच्छा या उचित मालूम होना।
पुस्त—स्त्री० पीढ़ी। पीठ। सामान। कारीगरी।
पुस्तक—पु० पोथी, ग्रंथ।
पुहकर, पुहुकर—पु० तालाब इ० (देखो 'पुष्कर')—'पुहुकर पुंडरीक पूरन मनु खंजन केलि खगे।' सू० १५३
पुहना—अक्रि० पोहा जाना, गुथा जाना 'वह मोती मत जानियो, पुहै पोतके साथ।' साखी १०४
पुहमी—दे० 'पुहुमी', (छत्र० ५)।
पुहुप—पु० पुष्प, फूल (उदे० 'अवरेखना', प० २७१)।
पुहुपराग—पु० पुखराज (भू० ७)।
पुहुपरेनु—पु० पुष्परेणु, पराग।
पुहुमि, पुहुमी—स्त्री० पृथिवी 'सुखी परेवा पुहुमिमें एकै तुही विहंग।' वि० २५६, (उदे० 'जोयना')
पुहुवी—स्त्री० पृथिवी।
पूँगफल—पु० सुपारी।
पूँगी—स्त्री० एक तरहकी बाँसुरी।
पूँछ—स्त्री० दुम, पुच्छ। पछलगा।
पूँछताछ—स्त्री० देखो 'पूछताछ'।
पूँछना—सक्रि० पूछना, जिज्ञासा करना। पोंछना, झाड़ना।
पूँजी—स्त्री० मूलधन। सम्पत्ति। पुंज, राशि, समूह।
पूँठ—स्त्री० पीठ।
पूआ—पु० देखो 'पुआ'।
पूग—पु० सुपारीका वृक्ष या फल। कटहल। समूह।
पूगना—अक्रि० पूजना, पूरा होना 'साँई संगि साध नहिं पूगी'—कबीर १६४ (२३३ भी)।
पूगीफल—पु० सुपारी।
पूछ—स्त्री० खोज। जिज्ञासा। आदर।
पूछताछ, पूछपाछ—स्त्री० जिज्ञासा, प्रश्न, जाँच-पड़ताल।
पूछना—सक्रि० जिज्ञासा करना, मालूम करनेके लिए प्रश्न करना। खबर लेना। सम्मान करना।
पूछरी—स्त्री० पूँछ, दुम।
पूजक—पु० पूजा करनेवाला, उपासक।
पूजना—सक्रि० पूजा करना, सेवा करना। सम्मान करना। अक्रि० पूरा होना 'सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मनकामना तुम्हारी।' रामा० १२९। भर जाना, बराबर होना 'सेरसाहि सरि पूज न कोऊ।' प० ७, 'सुर असुर न पूँजै राम रूप।' राम० ३३४, (उदे० 'उलथना', भ० ४६)।
पूजनीय, पूजमान—पु० पूजने योग्य, सम्मान योग्य।
पूजा—स्त्री० आराधना, अर्चा।
पूजेला—पु० पुजेरी 'आपै पूजै आप पूजेला।' कबीर २४३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूज्य—वि० पूजने योग्य, आदरणीय ।
पूठि—स्त्री० पीठ ।
पूत—पु० पुत्र । वि० पवित्र ।
पूतड़ा—पु० छोटे बच्चेका बिछावन ।
पूतरा, पूतला—पु० पुत्र । पुतला 'कागज कोसो पूतरा, सहजहिमें घुल जाय ।' रहीम १८, (उद्दे० 'गैरी')
पूतरी—स्त्री० पुतली 'सूर आजलौं सुनी न देखी, पोत पूतरी पोहत ।' सू० २३६, (उद्दे० 'कोरना')
पूनव - स्त्री० पूनो, पूर्णमासी ।
पूनिउँ, पूनो, पून्यो—स्त्री० पूर्णिमा (उद्दे० 'इं') ।
पूनीं--स्त्री० देखो 'प्यूनी', (कबीर ९८) ।
पूप—पु० पुआ, मीठी पुड़ी ।
पूय—स्त्री० मवाद ।
पूर—पु० बाढ़, जल-समूह, धारा 'निरापूरमें है पयोदेवतासी ।' राम० ५०२ । घाव भरना । पूला । पकवानके भीतर भरनेकी वस्तु । वि० पूरा 'सज्जन सुकृत सिंधु-सम कोई । देखि पूर विधु बाढ़इ जोई ।' रामा० ९
पूरक—पु० पूर्ति करनेवाला, पूरा करनेवाला ।
पूरण, पूरन—वि० सम्पूर्ण, परिपूर्ण 'पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण बतावैं न बतावैं और उक्तिको ।' राम० ४, 'एकै कहैं पूरण अनादि जो अनन्त कोऊ...' राम० ५१५, (उद्दे० 'ऊना') । पु० भरनेकी क्रिया । वृष्टि । समुद्र । सेतु ।
पूरनकाम—वि० जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो ।
पूरनपरव—पु०, पूरनमासी—स्त्री०, पूर्णमासी ।
पूरना—सक्रि० (चौक) बनाना 'चौकै चारु सुमित्रा पूरी ।' रामा २०२ । पूरा करना, भरना 'सीस सबन्हके सेंदुर पूरा ।' प० १६०, (सू० १८५) । सफल करना । पुजाना 'बसन पूरि, अरिदर्प दूर करि, भूरि कृपा दनुजारी ।' विन० २४६ । ढाँकना । बजाना 'निकसा राजा सिंगी पूरी ।' प० ६० । बटना (सेंवई इ०) । अक्रि० व्याप्त होना, भरजाना 'पूरति है भूरि धूरि रोदसीके आस पास'-राम० ३६९
पूरव—पु० पूर्व दिशा । वि० पहिलेका, प्राचीन । अतीत ।
पूरवल—पु० पूर्वकाल, पूर्वजन्म ।
पूरवला—वि० पूर्वकालका, पूर्वजन्मका ।
पूरवी—वि० पूरबका । [† सफल, तुष्ट ।
पूरा—वि० परिपूर्ण, सब, समूचा, काफी, समाप्त, पक्का, †
पूरी स्त्री० पुड़ी, सुहारी ।
पूरुख, पूरुष—पु० पुरुष, मनुष्य । आत्मा ।
पूर्ण—वि० पूरा । तुष्ट । सिद्ध । समूचा । पर्याप्त ।
पूर्णतया—क्रिवि० पूरी तरह ।
पूर्णमा,-मासी, पूर्णिमा—स्त्री० शुक्लपक्षकी अन्तिम तिथि ।
पूर्णायु—वि० पूरी आयुवाला । स्त्री० पूरी आयु, सौ वर्षकी आयु ।
पूर्णाहुति—स्त्री० अन्तिम आहुति । समाप्ति ।
पूर्त्ति—स्त्री० पूरापन, समाप्ति, पालन । गुणन ।
पूर्व—वि० प्राचीन, पहलेका, अतीत । पु० प्राची दिशा । क्रिवि० पहले ।
पूर्वज—पु० पुरखा, ज्येष्ठ भ्राता ।
पूर्वानुराग—पु० मिलनके पूर्वका प्रेम ।
पूलक, पूला—पु० घासका बँधा हुआ छोटा गट्ठा ।
पूष—पु० पौषका महीना । शहतूत ।
पूषण, पूषन—पु० सूर्य ।
पूस—पु० माघके पहिलेका महीना ।
पृच्छक—पु० पूछनेवाला । जिज्ञासु ।
पृतना—स्त्री० सेना, सेनाका एक भाग जिसमें २७३ हाथी, इतने ही रथ, तिगुने घुड़सवार, पँचगुने पैदल सैनिक होते हैं ।
पृथक्—वि० अलग, भिन्न ।
पृथक्करण—पु० पृथक् करनेकी क्रिया । विच्छेद ।
पृथवी, पृथिवी, पृथ्वी—स्त्री० भूमि ।
पृथिवीपति,—भुज, पृथिवीश—पु० राजा ।
पृथु—वि० बड़ा, विस्तृत, अगणित ।
पृथुल—वि० बड़ा, मोटा । अधिक ।
पृष्ठ—पु० पीठ, ऊपरी तल, पीछेका हिस्सा ।
पेंग—स्त्री० झूला हिलाना, झूलेका आगे पीछे जाना । पु० एक पक्षी ।
पेंच—पु० घुमाव, चक्कर, मरोड़ । चालाकी । उलझन । यंत्र या यंत्रकी कोई कील, गड़ारीदार कील । युक्ति, घात । पगड़ीकी लपेट 'मोर मुकुट सिरपाग पेंच कसि राखहु अलक सँवारी ।' हरि०
पेंठ—स्त्री० बाजार, दूकान । बाजारका दिन ।
पेंडुकी—स्त्री० कपोत जैसी चिड़िया । गुझिया ।
पेंडुली—स्त्री० देखो 'पिंडली' ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पेंदी—स्त्री० तली, निचला हिस्सा।
पेउश, पेउसरो, पेउसी—स्त्री० ब्याई हुई गाय या भैंसका प्रथम सात दिनका दूध। ('तेली'—बुंदेल०)।
पेखक—पु० प्रेक्षक, देखनेवाला।
पेखना—सक्रि० देखना 'जलहू थलहू रघुनायक पेखौं।' राम० १९०, (सू० ९०)
पेच—पु० देखो 'पेंच'।
पेचक—पु० उल्लू पक्षी। चारपाई। मेघ। स्त्री० सूतकी गुच्छी।
पेचकश—पु० पेच कसनेका औज़ार।
पेचदार—वि० पेचवाला, पेचीदा, उलझनवाला।
पेचिश—स्त्री० पेटकी ऐंठन, मरोड़।
पेचीदा, पेचीला—वि० पेचदार, उलझनवाला।
पेट—पु० उदर, जठर, गर्भ। जीविका।—की आग = क्षुधा।—खलाना = दीनता प्रकट करना।—देना = अपना भेद बताना।
पेटक—पु० पेटिका, टोकरा, मंजूषा (जा० म०)।
पेटा—पु० घेरा। मध्यांश। नदीकी चौड़ाई। ब्योरा।
पेटाग्नि—स्त्री० पेटकी ज्वाला, क्षुधा, भूख।
पेटार, पेटारा—पु० बाँसकी पेटी, टोकरा।
पेटारी—स्त्री० छोटी पेटी, मंजूषा।
पेटार्थी, पेटार्थू—वि० पेटू। खाऊ।
पेटिका, पेटी—स्त्री० मंजूषा, सन्दूकची।
पेटू—वि० खाऊ, भुक्खड़।
पेठा—पु० सफेद कुम्हड़ा 'छेरीके मुँहमें दियौ ज्यों पेठा न समात।' वृन्द
पेड़—पु० वृक्ष, तरु।
पेड़ा—पु० एक मिठाई।
पेड़ी—स्त्री० पेड़का या मनुष्यका धड़ 'बिरिछ उचारि पेड़ि सों लेहीं।' प० २४९। पानका पुराना पौधा, या उसका पान (प० १४७)।
पेडू—पु० नाभिके नीचेका भाग।
पेन्हाना—अक्रि० थनमें दूध उतरना। सक्रि० पहिराना।
पेम—पु० प्रेम, स्नेह 'परम पेम तजि जाइ नहिं, किये पेम बड़ पाप।' रामा० ३७
पेय—वि० पीने योग्य। पु० पीनेकी वस्तु।
पेरना—अक्रि० दबा कर तेल या रस निकालना, दुःख देना (उदे० 'गाहना', के० ३३३)। प्रेरित करना।
पेलना—सक्रि० धक्का देना, बलप्रयोग करना, हटाना। सामने बढ़ाना। ठेलना '...पंक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुपको।' राम० १, 'हौं आवत नाहीं हुतौ बामहि पठयो पेलि।' सुदामा०। टालना 'आयउ सात बचन मम पेली।' रामा० ३८१
पेला—पु० उपद्रव, झगड़ा, अपराध। धावा (छत्र० १०४)।
पेवँ—पु० प्रेम (पा० मं ४१)।
पेवस—पु० देखो 'पेउश'।
पेश—क्रिवि० सामने, आगे।
पेशकश—पु० भेंट, सौगात।
पेशगी—वि० अग्रिम, अगाऊ। स्त्री० पहलेसे दी हुई रक़म।
पेशराज—पु० पत्थर इ० ढोनेवाला मजदूर।
पेशल—वि० सुन्दर, चतुर।
पेशवाई—स्त्री० पेशवाका पद, या शासन। अगवानी।
पेशा—पु० व्यवसाय, उद्यम।
पेशानी—स्त्री० माथा, ललाट। भाग्य।
पेशी—स्त्री० मांसकी गाँठ। जटामासी। वज्र। म्यान। मुक़दमेकी सुनवाई।
पेषना—सक्रि० पेखना, देखना। पीसना 'तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस...'—कविता० २६४
पेस—वि० देखो 'पेश'।
पेसकस—पु० देखो 'पेशकश', (स्त्री० भू० ९५, १०३)।
पेंग—स्त्री० देखो 'पेंग'।
पेंजना—पु०, **पेंजनी**—स्त्री० एक तरहका पैरका कड़ा।
पेंठ—स्त्री० देखो 'पेंठ', (साखी ६७, भ्र० ४५)।
पेंठौर—पु० दूकान।
पेंड़—पु० रास्ता। डग, कदम 'पैंड पैंडपर ठठकिके ऐंड़मरी ऐड़ाति।' बि० १,१०, 'तीन पैंड वसुधा हौं चाहौं परनकुटीको छावन।' सू० २८, (उदे० 'नातर')
पेंड़ा—पु० मार्ग, रीति 'न्यारो पैंड़ो प्रेमको सहसा धरौ न पाँव।' रसनिधि। घुड़सार। **पेंड़े परना** = पीछे पड़ना 'अब नृप पर्यौ तुम्हारे पैंड़े।' छत्र० ३७
पेंत—स्त्री० पाँसा, दाँव, घात 'काँचै बारह परा जो पाँसा। पाके पैंत परी तनु रासा।' प० १४८
पेंतरी—स्त्री० जूती 'ताके पगकी पैंतरी मेरे तनको चाम।'
पेंती—स्त्री० कुशकी बनी अँगूठी।
पेंयाँ—स्त्री० पाँव (देखो 'पैयाँ')।
पै—अ० परन्तु। पीछे। अवश्य। पास। तरफ़। जो पै = यदि। प्रत्य० पर, से 'सूर प्रभु नँदसुअनकी छबि बरनि का पै जाइ।' सू० १२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पैकरमा—स्त्री० परिक्रमा, चक्कर।
पैकरी—स्त्री० पैरी, बेड़ी।
पैका—पु० पैसा 'पैका पैका जोड़तौं जुड़िसी लाप करोड़ि।' कबीर ५७
पैकार—पु० घूमकर बेचनेवाला। छोटा रोज़गारी।
पैगंबर—पु० ईश्वरका दूत, नबी, धर्मप्रवर्त्तक।
पैग—पु० पग, क़दम 'तीन पैग वसुधा करी तऊ बावने नाम।' रहीम
पैग़ाम—पु० सँदेसा।
पैज—स्त्री० होड़। प्रतिज्ञा 'रही पैज कीनी जु मैं दीनी तुमहिं मिलाय।' वि० २२५
पैजनी—स्त्री० देखो 'पैंजनी', (उदे० 'कछोटा')।
पैजार—पु० जूता (उदे० 'खोभरा', साखी १५४)।
पैठना—सक्रि० प्रवेश करना 'पैठा नगर सुमिरि भगवाना।' रामा० ४१७, (उदे० 'उद्दोत')। चुभना।
पैठार—पु० प्रवेशस्थान। प्रवेश 'असगुन होहिं नगर-पैठारा।' रामा० २७४
पैड़ी—स्त्री० सीढ़ी। चरखा खींचनेवाले बैलोंका रास्ता।
पैतरा—पु० वार करनेकी रीति, लड़नेकी एक चाल।
पैतला, पैथला—वि० छिछला। [पदचिह्न।
पैताना—पु० देखो 'पाँइता'।
पैतृक—वि० पितृसंबन्धी, पितासे प्राप्त। पुश्तैनी।
पैदर, पैदल—वि० पाँव पाँव चलनेवाला। पु० पैदल यात्रा। पैदल सैनिक (उदे० 'गरट')। क्रिवि० [पाँव पाँव।
पैदा—वि० उत्पन्न, प्रकट, अर्जित।
पैदाइश—स्त्री० जन्म, उत्पत्ति।
पैदावार,-वारी—स्त्री० उपज।
पैना—वि० धारदार, तेज 'खाँड़ै चाहि पैनि बहुताई। वार चाहि ताकर पतराई।' प० ७१। पु० अंकुश।
पैनाना—सक्रि० धार करना, टेना।
पैमाइश—स्त्री० मापनेका कार्य।
पैमाल—वि० 'पामाल', (उदे० 'परज्वलना')। पाँवसे कुचला हुआ, बरबाद।
पैयाँ—स्त्री० पाँव 'दोउ परैं पैयाँ दोउ लेत हैं बलैयाँ...'
पैया—पु० खोखला दाना। पहिया। [रसखानि
पैर—पु० पाँव।
पैरना—अक्रि० तैरना 'लरिकाईको पैरिबो तुलसी बिसरि न जाइ।' दोहा० ११६, (उदे० 'घई', 'तारना')
पैरवी—स्त्री० खुशामद, पक्ष-समर्थन, कोशिश, अनुसरण।
पैरा—पु० एक तरहका कड़ा। चढ़नेका मार्ग (रतन० ३८)। देखो 'पौरा'।
पैराउ, पैराव पु० इतना पानी जो तैर कर पार किया जा सके 'ग्रीषम हूँ रितुमें भरी दुहूँ कूल पैराउ।' मति० १७७
पैराक—पु० तैरनेवाला।
पैरी—स्त्री० पैरका एक गहना। दायँनेकी क्रिया। सीढ़ी।
पैरेखना—सक्रि० देखो 'परेखना'।
पैरोकार—पु० पैरवी करनेवाला।
पैला—पु० अन्न नापनेका पात्र। दूध-दही ढाँकनेका पात्र। वि० पहला, दूसरा (कबीर १६०)।
पैली—स्त्री० छोटा पैला।
पैवंद—पु० जोड़, चकती। इष्टमित्र।
पैशाचिक—वि० पिशाच सम्बंधी, पिशाच जैसा, राक्षसी,
पैसना—सक्रि० प्रवेश करना। [घोर, दुर्दांत।
पैसरा—पु० झगड़ा। व्यापार।
पैसा—पु० ताँबेका छोटा सिक्का। धन, दौलत।
पैसार—पु० प्रवेश 'भीतर मँडप कीन्ह पैसारा।' प०८९
पैहारी—वि० केवल दूधके आधारपर रहनेवाला।
पों—स्त्री० भोंपा, भोंपेकी आवाज।
पोंकना—अक्रि० पतला दस्त होना। डरना।
पोंगा—पु० चोंगा, बाँसकी नली। वि० मूर्ख।
पोंगी—स्त्री० छोटी नली, तुमड़ी 'जैसे पोंगी बाजल अखंड स्वर होत पुनि'—सुन्द ३०
पोंछना—सक्रि० झाड़ना, रगड़ कर साफ करना।
पोआना—सक्रि० रोटी बेल बेल कर देना।
पोइया—स्त्री० घोड़ेकी सरपट चाल।
पोइस—स्त्री० दौड़, दौड़धूप 'पोइस धक्का धूलितें आयो प्राण बचाई।' पद्माभ० ३७
पोख—पु० पोसनेका सम्बन्ध (प० १३६, साखी ८०)।
पोखना—सक्रि० पोसना, पालना (उदे० 'निधान')।
पोखर, पोखरा—पु० तालाब।
पोच—वि० अशक्त। नीच, क्षुद्र 'मास दिवस बीते मोहि मारिहि निसिचर पोच।' रामा० ४२०
पोची—स्त्री० नीचता, बुराई।
पोट—स्त्री० पोटली, गठरी (उदे० 'चामर'), 'सब प्रपंचकी पोट बाँधि करि, अपने सीस धरी।' सू० २८१। ढेर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पोटना—सक्रि० समेटना, पंजेमें करना।
पोटरी, पोटली—स्त्री० गठरी।
पोटा—पु० आँखकी पलक। कलेजा। पेटकी थैली। अँगुलीका छोर। चिड़ियाका छोटा बच्चा।
पोढ़, पोढ़ा—पु० दृढ़, पुष्ट, कठिन 'मान न करसि, पोढ़ करु लाडू।' प० १४४, (प० २१०)
पोढ़ाना—सक्रि० दृढ़ करना। अक्रि० दृढ़ होना।
पोत—पु० नाव। पशु-पक्षीका छोटा बच्चा (विन० ३८४)। बुनावट। ढँग। पारी। मालगुजारी 'लैहै हाकिम पोत कहा तब ताको दैहै।' दीन० २३६। स्त्री० काँचकी गुरिया (उदे० पूतरी', 'पुहनी')।
पोतड़ा—पु० बच्चेका बिछौना।
पोतदार—पु० लगानका रुपया रखनेवाला। पारखी।
पोतना—सक्रि० लीपना, लेप करना, चुपड़ना (उदे० 'नौरा')। पोतनेका कपड़ा।
पोतला—पु० पराठा।
पोता—पु० बेटेका बेटा। पोतनेका कपड़ा, मिट्टीका लेप, 'नैन नीर सों पोता किया।' प० ७। मालगुजारी (सू० ११)। कलेजा।
पोती—स्त्री० पौत्री। मिट्टीका लेप। गुरिया (प० २९२)।
पोथी—स्त्री० पुस्तक।
पोना—सक्रि० रोटी बनाना, पकाना (उदे० 'झालर')। पोहना, पिरोना 'कंचनको कँठुला मन मोहत तिन बचनहा बिच पोई।' सू०
पोपला—वि० पचका हुआ, बिना दाँतका।
पोया—पु० साँपका बच्चा। नरम पौधा। छोटा बच्चा।
पोयावोई—स्त्री० छल-कपटकी बातें (सुन्द० २०)।
पोर—स्त्री० गाँठ, जोड़। दो गाँठोंके बीचकी जगह (उदे० 'डोर')। पीठ।
पोल—स्त्री० खोखलापन, भंडा। खाली जगह। फाटक।
पोला—वि० खोखला, निस्सार।
पोशाक—स्त्री० पहनावा, वस्त्र।
पोशीदा—वि० छिपा हुआ।
पोष—पुं० पोषण, वृद्धि, सन्तोष।
पोषना, पोसना—सक्रि० पालना (उदे० 'अंक')। रक्षा करना, शान्त करना 'जागि उठो तबहीं सुरदोषी। छुदछुधा बहु भक्षण पोषी।' राम० ४५१
पोष्यपुत्र—पु० पुत्रवत् पालित बालक।
पोसनी—पु० अफीमची (सुन्द० ९३)।
पोस्त—पु० छिलका। पोस्ता।
पोस्ता—पु० अफीमका पौधा।
पोहना—स्त्री० पिरोना, छेदना, धँसाना (उदे० 'पूतरी')।
पोहमी—स्त्री० पृथुमी, पृथ्वी। [पीसना।
पोंडा—पु० मोटा गन्ना, ईख।
पोंड़ी, पोंरी—स्त्री० देखो 'पौरी'। पाँवड़ी 'पायन पहिरि लेहु सब पोंरी। काँट धसें न गड़ै अँकरोरी।' प० ६१
पोंनार—स्त्री० देखो 'पौनार'। 'भुज उपमा पोंनार नहिं खीन भयेउ तेहि चिन्त।' प० ४९
पोंरना—दे० 'पौरना' (प० १४)।
पौ—स्त्री० प्रकाशकी रेखा, किरण (उदे० 'जीवाजून')। पाँसेका एक दाँव (प० १४९)। पौसला। पाँव।
पौआ—पु० सेरका चतुर्थांश।
पौगंड—पु० किशोरावस्था (विद्या० २३४)।
पौड़ना—अक्रि० देखो 'पौढ़ना', (कबीर २६९)।
पौढ़ना—अक्रि० सोना (उदे० 'गोफा')। लेटना 'भूतल के इन्द्र भूमि पौढ़े हुते रामचन्द्र...' राम० ४७६। झूलना।
पौढ़ाना—सक्रि० लेटाना, सुलाना 'करि सिंगार पलना पौढ़ाये।' रामा० १११। झुलाना।
पौत्र—पु० पोता, बेटेका बेटा।
पौद—स्त्री० छोटा पौधा। पाँवड़ा।
पौदा, पौधा—पु० छोटा पेड़।
पौधि—स्त्री० देखो 'पौद'।
पौन—स्त्री० वायु। प्राण, जीव। प्रेत। वि० तीन-
पौना—पु० लोहे या काठकी करछी। [चौथाई।
पौनार पौनारि—स्त्री० कमलकी नाल।
पौनी—स्त्री० नाई, धोबी आदि जिन्हें विवाहादिके समय इनाम दिया जाता है (उदे० 'पउनी')।
पौमान—पु० पवन। चन्द्रमा। सरोवर।
पौर—स्त्री० पौरि, ड्योढ़ी। वि० नगर सम्बन्धी। फाटक (रतन० ४९)। पेटू।
पौरना—अक्रि० तैरना।
पौराणिक—वि० पुराण सम्बन्धी। प्राचीन समयका।
पौरि, पौरी—स्त्री० ड्योढ़ी (उदे० 'कोटवार'), 'फेरि कछू करि पौरितें फिर चितई मुसकाय।' बि० १८२। फाटक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पौरिया—पु० ड्योढ़ीवान, द्वारपाल 'द्वार द्वार छरी लिये द्वार पौरिया हैं खड़े, बोलत मरोर बरजोर त्यों झिलनको।' सुदामा० १४

पौरुख, पौरुष—पु० पुरुषत्व, उद्योग, पराक्रम।

पौल—स्त्री० रास्ता 'बाँका गढ़ बाँका मता बाँकी गढ़की पौल।' साखी २६

पौला—पु० बिना खूँटीकी खड़ाऊँ।

पौली—स्त्री० ड्योढ़ी '.....घरमराइ पौली प्रतिहार।' कबीर २०३। पैरका वह भाग जिसमें खड़ाऊँ आदि पहिनते हैं।

पौवा—पु० देखो 'पौआ'।

पौष—पु० माघके पहिलेका महीना।

पौष्टिक—वि० पुष्टि करनेवाला।

पौसर, पौसरा, पौसला—पु० पानी पिलानेकी जगह (दीन० १५४)।

प्याऊ—पु० पानी पिलानेकी जगह, पौसरा।

प्याज—पु० मूल-विशेष।

प्यादा—पु० पैदल सिपाही। दूत।

प्याना—सक्रि० पिलाना।

प्यार—पु० स्नेह, प्रेम।

प्यारा—पु० प्रेमपात्र वि० प्रिय। सुहावना, जो छोड़ा न जा सके। मँहगा 'इतनी दूरि जाहु चलि काशी जहाँ बिकति है प्यारी।' भ्र० २८

प्याला—पु० कटोरा। खप्पर।

प्यावना—सक्रि० पिलाना (सू० ९२)।

प्यास—स्त्री० पिपासा, तृषा। प्रबल इच्छा।

प्यूनी—स्त्री० सूत कातनेके लिए बनायी गयी रुईकी बत्ती (सुन्द० ९०)।

प्यो—पु० प्रिय, पति (उदे० 'झुठकाना')।

प्योसर—पु० देखो 'पेउसर'।

प्योसार—पु० नैहर, मायका 'पिय बिछुरनको दुसह दुख हरष जात प्योसार।' बि० ११

प्यौर—पु० प्रियतम, पति।

प्रकंपन—वि० कँपानेवाला। पु० कँपकँपी। वायु।

प्रकट—वि० जाहिर, स्पष्ट, व्यक्त। [एक राक्षस।

प्रकरण—पु० प्रस्तावना, वृत्तान्त, अध्याय।

प्रकांड—वि० विशाल, बहुत बड़ा। पु० वृक्षका तना, शाखा। पेड़।

प्रकार—पु० भेद, भाँति, रीति। स्त्री० प्राकार, परकोटा।

प्रकाश, प्रकास—पु० उजाला, दीप्ति, तेज (उदे० 'टरना')। विकास, विस्तार। प्रसिद्धि, प्रकट होना, स्पष्ट होना। हँसी। वि० दीप्त, विकसित, प्रकट, स्पष्ट।

प्रकाशित—वि० दीप्त, उदित, प्रकटित, व्यक्त।

प्रकासना—अक्रि० प्रकाशित होना (उदे० 'आभोग')।

प्रकीर्ण—वि० बिखरा हुआ। मिश्रित। विस्तृत।

प्रकृत—वि० सच्चा, यथार्थ। रचा हुआ। अपरिवर्तित।

प्रकृति—स्त्री० स्वभाव, चरित्र, तासीर। संसारका मूल [बीज, कुदरत।

प्रकृष्ट—वि० उत्तम, प्रमुख। आकृष्ट।

प्रकोप—पु० अधिक क्रोध। रोगादिकी प्रबलता।

प्रक्रिया—स्त्री० युक्ति। क्रिया। प्रकरण।

प्रक्षालन—पु० धोना, साफ करना।

प्रक्षिप्त—वि० फेंका हुआ, बादमें मिलाया हुआ।

प्रक्षेप—पु० फेंकना, बढ़ाना।

प्रखर—पु० घोड़ेकी पाखर या जीन। वि० तीक्ष्ण, [धारदार, पैना।

प्रख्यात—वि० प्रसिद्ध।

प्रगट—वि० देखो 'प्रकट'।

प्रगटना—अक्रि० प्रकट होना (उदे० 'किलकना'), प्रकाशित होना, जन्म लेना (उदे० 'टीका')।

प्रगटाना—सक्रि० प्रकट करना।

प्रगर्भ, प्रगल्भ—वि० चतुर। तीक्ष्णबुद्धि। निर्भय 'बोल्यो प्रगर्भ बानी कठोर।' रघु० ६९। हाजिरजवाब, उत्साही। धृष्ट। घमण्डी।

प्रगल्भता—स्त्री० चातुर्य, बुद्धिमानी, प्रतिभा। निर्भयता, धृष्टता।

प्रगसना—अक्रि० प्रकाशित होना, व्यक्त होना।

प्रगाढ़—वि० बहुत गाढ़ा, घना। बहुत ज़्यादा।

प्रघटना—अक्रि० देखो 'प्रगटना'।

प्रघट्टक—वि० प्रकट करनेवाला, प्रकाश करनेवाला। पु० सिद्धान्त।

प्रचंड—वि० तीव्र, प्रबल, प्रखर, कठिन, भयंकर, बड़ा,

प्रचरना—अक्रि० प्रचारित होना, चलना। [धुरंधर।

प्रचरित, प्रचलित—वि० चलता हुआ, जारी।

प्रचलन—पु० चलन, प्रचार।

प्रचार—पु० चलन, प्रसिद्धि, व्यापकता।

प्रचारना—सक्रि० प्रचार करना, फैलाना। ललकारना, चुनौती देना 'जो रन हमहिं प्रचारइ कोऊ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ।' रामा० १५३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रचुर—वि० बहुत, यथेष्ट। पु० चोर।
प्रच्छन्न—वि० छिपा हुआ, गुप्त।
प्रच्छालना, प्रछालन—सक्रि० धोना 'साध नदी, जल प्रेमरस, तहाँ प्रछालो अंग।' साखी १३०
प्रजंक—पु० पलंग (दास ३६)।
प्रजंत—क्रिवि० पर्यन्त, तक।
प्रजनन—पु० जननेका कार्य, जन्म। जनक।
प्रजरना—अक्रि० जलना।
प्रजा—स्त्री० रैयत, सन्तान।
प्रजापति—पु० सृष्टिका रचयिता। राजा। अग्नि। पिता।
प्रजारना—सक्रि० मलीभाँति जलाना 'बिनु आज्ञा मैं भवन प्रजारे...'—सूरा० ४६। उद्दीपित करना 'मानहु बुझी मदनकी ज्वाला, बहुर प्रजारन लागे।' सू० ७५
प्रजुरना—अक्रि० प्रज्वलित होना, प्रकाशित होना 'प्राची दिसिते प्रजुरति आवति अगनि उठी जनु।' नागरी०
प्रजुरित, प्रजुलित—वि० प्रज्वलित।
प्रज्ञ—वि० विद्वान्, दक्ष।
प्रज्ञप्ति—स्त्री० जतानेकी क्रिया, संकेत, सूचना।
प्रज्ञा—स्त्री० बुद्धि, एकाग्रता।
प्रज्वलित—वि० धधकता हुआ, सुस्पष्ट।
प्रण—पु० प्रतिज्ञा। वि० पुरातन।
प्रणत—पु० प्रणाम करनेवाला, भक्त, सेवक। वि० अधिक झुका हुआ, विनम्र।
प्रणतपाल—पु० भक्त-रक्षक, दीनबन्धु।
प्रणति—स्त्री० प्रणाम, विनती, नम्रता।
प्रणय—पु० प्रणाम, दंडवत। प्रेम। मोक्ष। प्रसव।
प्रणयन—पु० निर्माण, रचना।
प्रणयी—पु० प्रेमी, पति।
प्रणव—पु० ओंकार, परमात्मा, त्रिदेव।
प्रणवना—सक्रि० प्रणाम करना।
प्रणाली—स्त्री० रीति, पद्धति। जलमार्ग, नाली।
प्रणाशी—वि० नाश करनेवाला।
प्रणिधान—पु० समाधि। रखा जाना। अर्पण। भक्ति।
प्रणीत—वि० रचित, प्रस्तुत, संशोधित। जिसका मंत्र द्वारा संस्कार किया गया हो। पु० मंत्रपूत जल।
प्रणेता—पु० कर्त्ता, रचयिता।
प्रतंचा—स्त्री० रोदा, धनुषकी डोरी, ज्या।
प्रतच्छ, प्रतच्छु—वि० जो नेत्रके सम्मुख हो, जो गोचर हो।
प्रतनु—वि० अति सूक्ष्म, क्षीण।
प्रतप्त—वि० बहुत तपाया हुआ।
प्रताप—पु० वीरता, प्रभाव। तेज। यश।
प्रतापवान्, प्रतापी—वि० तेजस्वी, यशस्वी।
प्रतारणा—स्त्री० वंचना, ठगी।
प्रतारित—वि० जो ठगा गया हो।
प्रतिंचा—स्त्री० देखो 'प्रत्यंचा'।
प्रति—अ० विरुद्ध। जोड़का। एक एक। समान। सामने। बदलेमें। ओर। स्त्री० नकल। अदद।
प्रतिकार—पु० बदला, उपाय, इलाज।
प्रतिकूल—वि० उलटा, विपरीत।
प्रतिकृति—स्त्री० चित्र, प्रतिमा, प्रतिबिम्ब, प्रतिकार।
प्रतिक्रिया—स्त्री० बदला। परिणामभूत क्रिया।
प्रतिगृहीत—वि० जो ग्रहण कर लिया गया हो।
प्रतिग्या—स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण।
प्रतिघात—पु० आघातके बदले आघात। बाधा।
प्रतिच्छा—स्त्री० प्रतीक्षा, आसरा।
प्रतिछाँई,-छाहँ,-छाया—स्त्री० चित्र, मूर्त्ति, प्रतिबिम्ब।
प्रतिज्ञा—स्त्री० प्रण, शपथ।
प्रतिदान—पु० बदला, विनिमय। लौटाना।
प्रतिद्वंद्वी—वि० प्रतिस्पर्धी, शत्रु।
प्रतिध्वनि—स्त्री० प्रतिशब्द, गूँज।
प्रतिनायक—पु० वह पात्र जो नायकका प्रतिद्वन्द्वी हो।
प्रतिनिधि—पु० एवज़दार, स्थानापन्न व्यक्ति, प्रतिभू। प्रतिमा।
प्रतिपक्षी,-पच्छी—पु० विरोधी, शत्रु (रामा० २४९)।
प्रतिपत्ति—स्त्री० प्रतिपादन, निरूपण। अनुमान, ज्ञान। प्राप्ति। मानना। दृढ़ विचार। प्रतिष्ठा। गौरव।
प्रतिपदा—स्त्री० परिवा।
प्रतिपादन—पु० निरूपण, सम्पादन। प्रमाण। पुरस्कार।
प्रतिपार,-पाल—पु० पालन करनेवाला, रक्षक। रक्षा, पालन 'तीन लोक जाके हहि भार। सो काहे न करै प्रतिपार।' कबीर २८९
प्रतिपारना,-पालना—सक्रि० पालन करना, रक्षा करना 'श्रीनृसिंह वपु धर्‌यो असुरहित भक्त बचन प्रतिपार्‌यो।' सूवि० १३, (उदे० 'एँड़दार')।
प्रतिपोषक—पु० समर्थक, सहायक।
प्रतिफल—पु० परिणाम, प्रतिबिम्ब।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिबंध—पु० रुकावट। प्रबन्ध।
प्रतिबंधक—पु० रोकनेवाला, विघ्न डालनेवाला।
प्रतिबिंब—पु० परछाईं। चित्र। प्रतिमा। मूर्त्ति। दर्पण।
प्रतिबिंबना—अक्रि० प्रतिबिम्बित होना, झलकना 'कर-मूँदरकी आरसी प्रतिबिंब्यो प्यो आय।' बि० २५३, (उदे० 'अनरसना')
प्रतिभट—पु० विपक्षी, बराबरका योद्धा।
प्रतिभा—स्त्री० बुद्धि। विलक्षण बुद्धि-बल।
प्रतिभावान्,-शाली—वि० प्रतिभावाला।
प्रतिभू—पु० जामिन, जमानतदार।
प्रतिमा—स्त्री० प्रतिमूर्ति, मूर्त्ति, प्रतिबिम्ब।
प्रतिमान—पु० प्रतिबिम्ब। समानता, उदाहरण।
प्रतियोगिता—स्त्री० चढ़ा-ऊपरी, विरोध।
प्रतियोगी—वि० प्रतिद्वन्द्वी, बराबरीका। पु० शत्रु, हिस्सेदार। सहायक।
प्रतियोद्धा—पु० बराबरका योद्धा, शत्रु।
प्रतिरोध—पु० विरोध, रुकावट, दमन।
प्रतिरोधक—पु० बाधा डालनेवाला। चोर, डाकू।
प्रतिलिपि—स्त्री० नक़ल।
प्रतिलोम—वि० उलटा, प्रतिकूल। नीच। पु० नीच व्यक्ति। —विवाह = नीची जातिके पुरुषके साथ ऊँची जातिकी स्त्रीका विवाह।
प्रतिवर्त्तन—पु० लौट आना।
प्रतिवाद—पु० खण्डन, विरोध। जवाब। बहस।
प्रतिवादी—पु० खण्डन करनेवाला, प्रतिपक्षी। मुद्दालेह।
प्रतिवेशी—पु० पड़ोसी।
प्रतिशब्द—पु० प्रतिध्वनि।
प्रतिशोध—पु० बदला, बदलेका कार्य।
प्रतिश्रुत—वि० स्वीकृत किया हुआ।
प्रतिषिद्ध—वि० जिसके लिए मनाही की गयी हो, † [† निषिद्ध।
प्रतिषेध—पु० मनाही, खण्डन।
प्रतिष्ठा—स्त्री० स्थापना। मर्यादा, यश। स्थान, स्थिति। व्रतका उद्यापन।
प्रतिष्ठान—पु० स्थापना, रखनेकी क्रिया। मूल। स्थान। व्रतोद्यापन।
प्रतिष्ठित—वि० आदरणीय, मान्य, इज्जतवाला। स्थापित।
प्रतिस्पर्द्धा—स्त्री० चढ़ा-ऊपरी, ईर्ष्या, झगड़ा।
प्रतिहत—वि० रुका हुआ, गिरा हुआ, हटाया हुआ।
प्रतिहार—पु० ड्योढ़ी। ड्योढ़ीवान। मायावी।
प्रतिहारी—पु० द्वारपाल।
प्रतिहिंसा—स्त्री० बदलेमें की गयी हिंसा।
प्रतीकार—पु० प्रतिकार, बदला। इलाज।
प्रतीक्षा—स्त्री० इंतज़ार। प्रतिपालन।
प्रतीघात—पु० आघातके उत्तरमें होनेवाला आघात। टक्कर। बाधा।
प्रतीच्य—वि० 'प्राच्य' का उलटा, पश्चिमका।
प्रतीत—वि० विदित, ज्ञात। विख्यात।
प्रतीति—स्त्री० विश्वास। ज्ञान। प्रसिद्धि।
प्रतिवेशी—पु० देखो 'प्रतिवेशी'।
प्रतीहारी—पु० प्रतिहारी, द्वाररक्षक।
प्रतोषना—सक्रि० संतुष्ट करना, समझाना 'राम प्रतोषी मातु सब कहि विनीत बर बैन।' रामा० १९४
प्रत्नतत्त्वविद्—पु० पुरातत्त्वज्ञ।
प्रत्यंचा—स्त्री० रोदा, धनुषकी डोरी।
प्रत्यक्ष—क्रिवि० नेत्रोंके सामने। वि० जो सामने हो, इंद्रियग्राह्य।
प्रत्यपकार—पु० अपकारके बदले किया गया अपकार।
प्रत्यय—पु० विश्वास। कारण, प्रमाण, ज्ञान। प्रसिद्धि। सम्मति, व्याख्या। वे शब्दांश जिनकी सहायतासे तद्धित, कृदन्त आदि शब्द बनते हैं।
प्रत्यर्पण—पु० दानमें मिली वस्तुको पुनः दे डालना।
प्रत्यवाय—पु० शास्त्रोक्त नित्यकर्म न करनेका पातक। बड़ा परिवर्त्तन।
प्रत्यागत—वि० जो वापस आया हो। पु० लड़ाईका एक ढँग, एक पेंच।
प्रत्युत—अ० इसके विरुद्ध, बल्कि। पु० विपरीतता।
प्रत्युत्तर—पु० उत्तरका उत्तर।
प्रत्युपकार—पु० उपकारके बदले किया गया उपकार।
प्रत्यूष—पु० सवेरा, प्रभात। सूर्य।
प्रत्यूह—पु० विघ्न।
प्रत्येक—वि० हर एक, एक एक।
प्रथम—वि० पहला, प्रधान, श्रेष्ठ। —पुरुष = उत्तम पुरुष।
प्रथमतः—क्रिवि० पहलेसे, प्रथम बार, सबसे पहले।
प्रथमा—स्त्री० कर्त्ता कारक। शराब।
प्रथमी—स्त्री० पृथ्वी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रथा—स्त्री० रीति, रस्म। प्रसिद्धि।
प्रथित—त्रि० विदित, प्रसिद्ध।
प्रथु—वि० बड़ा, मोटा, पीन (उदे० 'अराल')।
प्रदक्षिण, प्रदच्छिन—स्त्री० परिक्रमा 'कुस साथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रनाम प्रदच्छिन जाई।' रामा० २९४
प्रदक्षिणा—स्त्री० देखो 'परदच्छिणा'।
प्रदत्त—वि० दिया हुआ।
प्रदर्शक—पु० दिखलानेवाला। देखनेवाला।
प्रदर्शन—पु० दिखलानेका कार्य।
प्रदर्शनी—स्त्री० नुमाइश।
प्रदान—पु० दान। विवाह।
प्रदायक, प्रदायी—पु० देनेवाला।
प्रदाह—पु० जलन, दाह।
प्रदिशा—स्त्री० विदिशा, कोना।
प्रदीप—पु० दीपक, चिराग़। प्रकाश।
प्रदीपति—स्त्री० प्रकाश, चमक।
प्रदीप्त—वि० जलता हुआ, चमकता हुआ, प्रकाशित।
प्रदेय—त्रि० दान करने योग्य। विवाह योग्य। पु० भेंट।
प्रदेश—पु० प्रान्त, स्थान। एक नाप।
प्रदोष—पु० संध्याकाल। बड़ा अपराध। त्रयोदशीका व्रत।
प्रधान—वि० मुख्य, श्रेष्ठ। पु० नायक, मंत्री। माया। ईश्वर। सेनापति।
प्रधानी—स्त्री० प्रधान या मंत्रीका पद।
प्रध्वंस—पु० विनाश। वस्तुकी अतीत अवस्था।
प्रन; प्रनति—दे० 'प्रण', 'प्रणति'।
प्रनमना, प्रनवना—दे० 'प्रणवना'।
प्रनय; प्रनव—दे० 'प्रणय', 'प्रणव'।
प्रनामी—पु० प्रणाम करनेवाला। स्त्री० प्रणाम करते समयकी दक्षिणा।
प्रनाली—दे० 'प्रणाली'।
प्रपंच—पु० धोखा, ढोंग। झंझट। भवजाल। सृष्टि 'तप बल रचइ प्रपंच विधाता।' रामा० ४५
प्रपंची—वि० छलिया, ढोंगी। झगड़ालू।
प्रपत्ति—स्त्री० अनन्य भक्ति।
प्रपन्न—वि० शरणागत। पहुँचा हुआ।
प्रपात—पु० ऊँचाईसे गिरनेवाली जलराशि, झरना। पर्वतका खड़ा किनारा।
प्रपितामह—पु० परदादा।
प्रपुंज—पु० बड़ा झुण्ड।
प्रपौत्र—पु० पोतेका पुत्र।
प्रफुलना—अक्रि० खिलना, फूलना।
प्रफुला—स्त्री० कुमुदिनी, कमलिनी।
प्रफुलित, प्रफुल्ल—वि० प्रस्फुटित, खिला हुआ।
प्रबंध—पु० बंधन। निबंध। योजना, व्यवस्था।
प्रबल—वि० प्रचण्ड, उग्र। महान्।
प्रबाल—पु० प्रवाल, मूँगा।
प्रबास; प्रबाह—दे० 'प्रवास', 'प्रवाह'।
प्रबीन—वि० प्रवीण, चतुर।
प्रबुद्ध—वि० जागा हुआ, सज्ञान। पंडित। प्रफुल्ल।
प्रबोध—पु० ज्ञान, चेतना, जागना, सान्त्वना।
प्रबोधना—सक्रि० जगाना, तसल्ली देना, सचेत करना। सिखाना 'चाहो जितनी बात प्रबोधौ, ह्याँ को जो पतियावै।' हरि०
प्रबोधनी—स्त्री० देवोत्थान एकादशी।
प्रभंजन—पु० वायु, आँधी। नाश।
प्रभव—पु० उत्पत्ति, उत्पत्तिहेतु। पराक्रम। संसार।
प्रभा—स्त्री० प्रकाश, चमक। रवि-बिम्ब।
प्रभाउ—पु० प्रभाव, असर। शक्ति। उद्भव।
प्रभाकर—पु० सूर्य, चन्द्र, अग्नि, समुद्र।
प्रभात—पु० सवेरा।
प्रभाती—स्त्री० सबेरेका गीत-विशेष।
प्रभाव—पु० असर, प्रताप, उद्भव।
प्रभासना—अक्रि० भासित होना, प्रकाशित होना।
प्रभु—पु० स्वामी, अधिपति, ईश्वर। शब्द।
प्रभुता, प्रभुताई—स्त्री० आधिपत्य, ऐश्वर्य, बड़ाई।
प्रभू—दे० 'प्रभु'।
प्रभूत—वि० प्रचुर, उन्नत। उत्पन्न। पु० तत्व।
प्रभूति—स्त्री० प्रभव, उत्पत्ति। उन्नति, प्रचुरता। शक्ति।
प्रभृति—अ० इत्यादि।
प्रभेद, प्रभेव—पु० भेद, रूपान्तर (के० ९७)।
प्रमत्त—वि० मतवाला, विक्षिप्त।
प्रमथन—पु० मथनेका क्लेश देनेकी क्रिया। वध।
प्रमथनाथ—पु० शिवजी।
प्रमदा—स्त्री० युवती स्त्री।
प्रमाण—पु० सबूत, उदाहरण। मान, सीमा, मर्यादा। सचाई, सत्य बात। धारणा, विश्वास। प्रमाणपत्र। वि० प्रमाणित, सत्य, मानने योग्य। तुल्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रमाणना—सक्रि० प्रमाणित करना, सत्य मानना, ठहराना (ऐ० २)।
प्रमाणपत्र—पु० वह पत्र जो किसी बातका प्रमाण हो, [सर्टीफिकेट।
प्रमाणित—वि० निश्चित, साबित।
प्रमाथी—वि० मथनेवाला, क्षुब्ध करनेवाला। पीड़क।
प्रमाद—पु० भ्रम, भूल।
प्रमान; प्रमानना—दे० 'प्रमाण', 'प्रमाणना'।
प्रमानी—वि० मानने योग्य।
प्रमुख—पु० आदि। समूह। मुखिया। अ० इत्यादि। वि० प्रधान, मान्य। क्रिवि० सम्मुख। तत्क्षण।
प्रमुदित—वि० हर्षित।
प्रमेय—वि० जो प्रमाणसे सिद्ध हो सके। जिसका मान [बताया जा सके।
प्रमेह—पु० एक रोग।
प्रमोद—पु० आनंद, हर्ष।
प्रयंक—पु० पर्यंक, पलंग।
प्रयंत—अ० पर्यन्त, तक 'कीट ब्रह्म प्रयन्त जलथल इनहिं ते यह मण्ड।' सू० १०६, (उदे० 'खात')
प्रयत्न—पु० उद्योग, चेष्टा।
प्रयत्नवान्—वि० प्रयत्नमें लगा हुआ, उद्योगरत।
प्रयाण, प्रयान—पु० प्रस्थान, यात्रा, चढ़ाई।
प्रयास—पु० प्रयत्न, परिश्रम।
प्रयुक्त—वि० जिसका प्रयोग किया गया हो। सम्मिलित।
प्रयोक्ता—पु० प्रयोग करनेवाला, काममें लगानेवाला, प्रेरक। महाजन। सूत्रधार।
प्रयोग—पु० काममें लगना, अनुष्ठान, व्यवहार। दृष्टान्त।
प्रयोजन—पु० मतलब, अर्थ, हेतु। [अभिनय।
प्ररोह—पु० अंकुर, उत्पत्ति, उगनेका कार्य। चढ़ाव।
प्रलयंकर, प्रलयकारी—वि० प्रलय करनेवाला, सर्वनाशकारी।
प्रलय—पु० विलीन होना, तिरोभाव, कल्पान्त।
प्रलाप—पु० अंडबंड बकना।
प्रलेहन—पु० चाटनेकी क्रिया।
प्रलोभन—पु० लोभ दिखानेका काम। लुभानेवाली वस्तु।
प्रवंचना—स्त्री० धूर्त्तता, ठगपना।
प्रवचन—पु० व्याख्या, अर्थका स्पष्टीकरण।
प्रवर—वि० श्रेष्ठ, मुख्य। पु० सन्तति। गोत्र-प्रवर्त्तक मुनि।
प्रवर्त्तक—पु० संचालक, प्रेरक, पंच।
प्रवर्षण—पु० वर्षा। एक पर्वतका नाम।
प्रवाद—पु० कथोपकथन, किंवदन्ती, झूठा कलंक।
प्रवान—पु० देखो 'प्रमाण', (रामा० ७२, ८५)।
प्रवाल—पु० मूँगा, कोमल पत्ता। सितारकी लकड़ी।
प्रवास—पु० परदेशमें रहना, परदेश।
प्रवासित—वि० निर्वासित, देशसे निकाला हुआ। हत।
प्रवासी—वि० विदेशमें रहनेवाला।
प्रवाह—पु० बहाव, धारा, झुकाव, क्रम।
प्रविसना—अक्रि० प्रवेश करना, पैठना (उदे० 'निर्गमना')।
प्रवीण, प्रवीन—वि० चतुर। कुशल।
प्रवृत्त—वि० झुका हुआ, लगा हुआ, नियुक्त, सन्नद्ध।
प्रवृत्ति—स्त्री० झुकाव, रुचि, बहाव। वृत्तान्त।
प्रवेश—पु० पैठ, पैसार।
प्रवेशना—अक्रि० प्रवेश करना। सक्रि० प्रवेश कराना।
प्रव्रज्या—स्त्री० संन्यास।
प्रशंस, प्रशंसा—स्त्री० बड़ाई, स्तुति।
प्रशंसक—वि० प्रशंसा करनेवाला।
प्रशंसना—सक्रि० बड़ाई करना, सराहना '...मुनि रघुवरहिं प्रशंस।' रामा० १५३
प्रशस्त—वि० प्रशस्य, श्लाघ्य, सुन्दर, भव्य, चौड़ा।
प्रशस्ति—स्त्री० प्रशंसा, पत्रारंभका प्रशंसासूचक वाक्य। प्राचीन राजाओंके आज्ञापत्र।
प्रशस्य—वि० प्रशंसनीय, श्लाघ्य। उत्तम।
प्रशांत—वि० शांत, स्थिर।
प्रश्न—पु० सवाल, जिज्ञासा, समस्या।
प्रश्रय—पु० सहारा, आश्रयस्थान। विनय।
प्रसंग—पु० विषयका सम्बन्ध, मेल, वार्त्ता 'जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा।' रामा० ५६७। विस्तार। अवसर 'भूप सोच कर कवन प्रसंगू।' रामा० ३००। संयोग।
प्रसंसना—सक्रि० बड़ाई करना 'कहउँ सुभाव न कुलहिं प्रसंसी।' रामा० १५३
प्रसन्न, प्रसन्नित—वि० हर्षित, सन्तुष्ट। निर्मल।
प्रसव—पु० उत्पन्न करना। फल या फूल।
प्रसाद—पु० अनुग्रह, प्रसन्नता। स्वच्छता। देवार्पित वस्तु। प्रासाद, महल।
प्रसादना—सक्रि० प्रसन्न करना।
प्रसादी—स्त्री० प्रसाद, नैवेद्य। वि० प्रसन्न करनेवाला
प्रसार—पु० विस्तार, गमन, संचार। [कृपालु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रसारित—वि० पसारा हुआ।
प्रसिद्ध—वि० विख्यात, प्रचलित। भूषित।
प्रसिद्धता, प्रसिद्धि—स्त्री० ख्याति।
प्रसूत—वि० उत्पन्न। पु० फूल। प्रसवके बादका एक रोग।
प्रसूता, प्रसूतिका—स्त्री० बच्चा जननेवाली स्त्री, जच्चा।
प्रसून—पु० फूल। फल।
प्रसेद—पु० प्रस्वेद, पसीना 'रहि रहि लेत उससवा, बहत प्रसेद।' रहीम ३७, (मति० २०४)
प्रस्तर—पु० पत्थर। सम तल। बिछावन।
प्रस्तार—पु० विस्तार, अधिकता, तह। सीढ़ी।
प्रस्ताव—पु० प्रसंग, अवसर, चर्चा, मन्तव्य।
प्रस्तावना—स्त्री० भूमिका, आरंभ।
प्रस्तावित—वि० जिसके लिए प्रस्ताव किया गया हो।
प्रस्तुत—वि० कथित, तैयार, उद्यत, संपादित।
प्रस्थान—पु० प्रयाण, यात्रा, यात्राके मुहूर्तपर वस्त्रादिका घरके बाहर रखा जाना।
प्रस्थापित—वि० भली भाँति स्थापित। भेजा हुआ।
प्रश्न—पु० सवाल, जिज्ञासा।
प्रस्फोटन—पु० भड़कने या फूट पड़नेकी क्रिया। खिलना।
प्रस्राव—पु० क्षरण, बहाव। पेशाब। [पीटना।
प्रस्वेद—पु० पसीना।
प्रहर—पु० पहर, याम।
प्रहरखना—अक्रि० हर्षित होना 'पेखि प्रहरखे मुनि समुदाई।' रामा० ५४२
प्रहरी—पु० चौकीदार, पहरुआ।
प्रहर्षण—पु० आनन्द। एक काव्यालंकार।
प्रहसन—पु० हँसी। एक तरहका दृश्य काव्य।
प्रहाण, प्रहान—पु० परित्याग। ध्वान।
प्रहाणि, प्रहानि—स्त्री० हानि। परित्याग।
प्रहारना—सक्रि० फेंकना, मारना 'दुस्सासन-सुत गदा प्रहारे। अभिमनुके शिर ऊपर मारे।' सबलसिंह
प्रहारी—वि० प्रहार करनेवाला, नष्ट करनेवाला। लेनेवाला 'दानिनके शील, पर दानके प्रहारी...'—राम० ९८
प्रहृष्ट— वि० अति प्रसन्न।
प्रहेलिका—स्त्री० पहेली।
प्रांगण, प्रांगन—पु० आँगन, सहन।
प्रांत—पु० प्रदेश। सीमा। किनारा। तरफ।
प्रांतर—पु० छायाशून्य पथ। वन। कोटर। दो प्रदेशोंके बीचकी खाली जगह।
प्रांतीय, प्रांतिक—वि० प्रान्त सम्बन्धी।
प्राकार—पु० चहारदीवारी, कोट।
प्राकृत—वि० स्वाभाविक, लौकिक, मामूली। स्त्री० बोलचालकी भाषा। एक प्राचीन भाषा।
प्राकृतिक—वि० प्रकृति सम्बन्धी। प्रकृतिसे उत्पन्न। नैसर्गिक, स्वाभाविक। लौकिक।
प्रागल्भ्य—पु० प्रगल्भता, साहस, प्रबलता, चातुर्य।
प्राङ्मुख—वि० पूर्वाभिमुख।
प्राची—स्त्री० पूर्व दिशा।
प्राचीन—वि० पुराना, पूर्वका, वृद्ध।
प्राचीर—पु० चहारदीवारी, परकोटा।
प्राचुर्य—पु० प्रचुरता, आधिक्य, बाहुल्य।
प्राच्य—वि० पूर्वीय, पूर्वमें उत्पन्न। प्राचीन।
प्राजापत्य—वि० प्रजापति सम्बन्धी। पु० विवाहका [एक प्रकार।
प्राज्ञ—वि० विद्वान्, चतुर।
प्राड्विवाक—पु० न्यायाधीश।
प्राण—पु० जीव, साँस, वायु, शक्ति, परम प्रिय। प्राणों पर आ पड़ना = प्राण संकटमें पड़ना। प्राणोंपर खेलना = जान जोखिममें डालना।
प्राण-आधार,-जीवन,-धन—पु० अत्यन्त प्रिय व्यक्ति।
प्राणदान—पु० प्राण देना। किसीको मृत्युसे बचाना। प्राण-रक्षा। [† व्यक्ति, पति।
प्राणनाथ,-पति,-प्यारा,-वल्लभ—पु० अत्यन्त प्रिय †
प्राणप्रतिष्ठा—स्त्री० प्राण धारण कराना, मूर्तिमें मंत्र द्वारा प्राण-संस्थापन।
प्राणायाम—पु० श्वासको रोकना, योगका एक अंग।
प्राणी—पु० जीव, मनुष्य।
प्राणेश, प्राणेश्वर—पु० स्वामी, पति, परम प्रिय व्यक्ति।
प्रातः, प्रात—पु० सबेरा। क्रिवि० सबेरे।
प्रातःकर्म—पु० शौच, स्नानादि कार्य।
प्रातःकाल—पु० प्रभातका समय।
प्रातःस्मरणीय—वि० सबेरे स्मरण करनेके योग्य। श्रेष्ठ।
प्रातनाथ—पु० सूर्य।
प्राथमिक—वि० प्रारंभिक, पहलेका।
प्रादुर्भाव—पु० आविर्भाव, उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत—वि० प्रकटित। वकसित।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रादेशिक—वि० प्रदेशका, प्रदेश सम्बन्धी। विषयानुसार। पु० प्रदेशाधिपति, सामन्त।
प्राधान्य—पु० प्रधानता, मुख्यता।
प्रान—पु० देखो 'प्राण'।
प्रापना—सक्रि० प्राप्त होना, पाना, मिलना।
प्राप्ति—स्त्री० लाभ, वृद्धि। अर्जन, आमदनी। प्रवेश, मेल।
प्राप्य—वि० पाने योग्य। जो पाना हो, जो मिल सके।
प्राबल्य—पु० प्रबलता, ज़ोर, प्रधानता।
प्रामाणिक—वि० प्रमाणसिद्ध, ठीक, सत्य, मानने योग्य।
प्रायः—क्रिवि० लगभग, बहुधा।
प्रायश्चित्त—पु० पाप-निवृत्तिके हेतु किया गया काम।
प्रायिक—वि० प्रायः होनेवाला।
प्रारंभ—पु० आरंभ, आदि।
प्रारंभिक—वि० शुरूका, प्राथमिक।
प्रारब्ध—पु० भाग्य, संयोग। वि० प्रारंभ किया हुआ।
प्रार्थना—स्त्री० निवेदन, वाञ्छा, याचना। सक्रि० प्रार्थना करना।
प्रार्थी—वि० निवेदक, याचक, इच्छुक।
प्रालब्ध—पु० प्रारब्ध, भाग्य।
प्राविट, प्रावृट,-वृष,-वृषा—स्त्री० वर्षाऋतु, बरसात।
प्रासाद—पु० राजभवन, बड़ा मकान, मंदिर।
प्रिथिमी—स्त्री० पृथ्वी (प० ४३,८४)।
प्रियंवद—वि० प्रियभाषी। पु० एक गंधर्व। पक्षी।
प्रिय—वि० प्यारा, चित्ताकर्षक, मधुर। पु० स्वामी। भलाई। चितकबरा मृग। दामाद।
प्रियकांक्षी—वि० हितेच्छु, मंगलाभिलाषी।
प्रियतम—वि० सबसे प्यारा। पु० स्वामी, पति।
प्रियदर्शन—वि० जो देखनेमें अच्छा लगे, सुन्दर।
प्रियभाषी, प्रियवादी—पु० प्रिय वचन कहनेवाला।
प्रिया—स्त्री० स्त्री, पत्नी, प्रियतमा।
प्रीतम—पु० स्वामी, प्रेमी (उदे० 'आढ़ा')। वि० अत्यन्त प्रिय।
प्रीति—स्त्री० प्रसन्नता, सन्तुष्टि। प्रेम।
प्रीतिकर—वि० प्रसन्नता या प्रेम उत्पन्न करनेवाला।
प्रीतिपात्र—पु० प्रेम-भाजन, जिसे प्यार किया जाय।
प्रेक्षक—पु० देखनेवाला, दर्शक।
प्रेक्षणीय—वि० दर्शनीय।
प्रेत—पु० मृत व्यक्ति, भूत, मृतदेह '....जरत प्रेतके संग' —सू० २०। वि० मृत।
प्रेतकर्म,-कृत्य—पु० अन्त्येष्टि क्रिया।
प्रेतगृह, प्रेतगेह—पु० श्मशान, मरघट।
प्रेतपुर—पु० यमपुरी।
प्रेतराज—पु० यमराज, शिवजी।
प्रेती—पु० प्रेतोपासक।
प्रेम—पु० प्यार, स्नेह, अनुराग।
प्रेमजल,-वारि—पु० प्रेमाश्रु।
प्रेमालाप—पु० प्रेमपूर्ण बातचीत।
प्रेमिक, प्रेमी—पु० प्यार करनेवाला, स्नेही, प्रियतम।
प्रेयसी—स्त्री० प्रियतमा, प्रेमिका।
प्रेरक—पु० प्रेरणा करनेवाला, प्रवृत्त करनेवाला।
प्रेरणा—स्त्री० कार्यमें प्रवृत्त करनेकी क्रिया, दबाव।
प्रेरना—सक्रि० प्रवृत्त करना, उत्साहित करना, भेजना 'ए किरीट दसकंधर केरे। आवत बालितनयके प्रेरे।' रामा० ४६७
प्रेरित—वि० जिसको प्रेरणा की गयी हो। प्रचालित।
प्रेषक—पु० भेजनेवाला। प्रवृत्त करानेवाला।
प्रेषना—सक्रि० भेजना 'लोचन पियत पियूष है प्रेषि प्रान पिय पौरि।' मति० १८६
प्रेषित—वि० भेजा हुआ। प्रेरित।
प्रोत्साहन—पु० उत्तेजित करना, उत्साह बढ़ाना।
प्रोषित—वि० जो विदेशमें हो, प्रवासी।
प्रोहित—पु० पुरोहित, कुलगुरु 'पुनि प्रोहित द्विजवृन्द समेता। वंदन किये सुबुद्धि निकेता।' राम रसायन
प्रौढ़—वि० पूर्ण युवा। दृढ़। निपुण। गंभीर।
प्रौढ़ा—स्त्री० पूर्ण युवती, अधिक वयवाली स्त्री।
प्लवंग, प्लवंगम—पु० बन्दर। मृग।
प्लावन—पु० बाढ़, अच्छी तरह धोना। तैरना।
प्लीहा—स्त्री० बरवट, तिल्ली।
प्लुत—पु० तीन मात्राओंका स्वर। घोड़ेकी चाल-विशेष। वि० जलमग्न। तराबोर।
प्लुष्ट—वि० जला हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फ

फंक—स्त्री० फाँक, चीरा हुआ टुकड़ा (कबीर ३१२)।

फंका—पु०, **फंकी**—स्त्री० उतनी चीज़ जितनी एक बारमें फाँकी जा सके। फाँक, टुकड़ा।

फंग—पु० बंधन, जाल 'मति कोई प्रीतिके फंग परै।' सू० २०३। अधीनता, अनुराग।

फंद—पु० बंधन, जाल, फंदा। कष्ट। धोखा '...हरीचन्द तेरे फंद न भूलूँ, बात परी पहिचानि।' हरि०, (रघु० ५०)

फँदना—अक्रि० फँसना, मुग्ध होना (उदे० 'उकसना'), 'खंजन नैन फँदे पिंजरा छवि, नाहिं रहैं थिर कैसेहु माई।' रसखानि। सक्रि० फाँदना, लाँघना।

फंदवार—वि० फंदा लगानेवाला 'अस फँदवार केस वै परा सीस गिउ फाँद।' प० ४४

फंदा—पु० देखो 'फंद', (राम० ८५)।

फँदाना—सक्रि० फँसाना। कुदाना।

फँफाना—अक्रि० बोलनेमें हकलाना।

फँसना—अक्रि० उलझना, बंधन या जालमें पड़ना।

फँसाना—सक्रि० जालमें लाना, वशमें करना, उलझाना।

फँसिहारा—पु० फँसानेवाला, ठग 'ब्रजवनिता फँसिहारी जो सब महतारी काहे न गनायो।' सूवे० १'७

फँसौरि—स्त्री० जाल, फंदा।

फक—वि० सफेद, साफ।

फकड़ी—स्त्री० दुर्दशा।

फकत—वि० केवल, पर्याप्त।

फकीर—पु० साधु, भिक्षुक, निर्धन व्यक्ति।

फखर—पु० गर्व, घमण्ड।

फग—पु० जाल, बन्धन।

फगुआ—पु० होली, होलीके अवसरका आमोद-प्रमोद। फागके उपलक्षमें दी गयी वस्तु 'त्यों त्यों निपट उदार है फगुआ देत बनै न।' वि० १४६

फगुहरा, फगुहारा—पु० फाग खेलनेवाला।

फजर, फजिर—स्त्री० सबेरा 'डंका दै असवार होहुँगा बड़ी फजर समसेर बहै।' सुजा० १६

फजीहत, फजीहती—स्त्री० दुर्गति (रहीम १९)।

फजूल—वि० व्यर्थ।

फजूलखर्च—वि० व्यर्थ खर्च करनेवाला, उड़ाऊ, अपव्ययी।

फट—स्त्री० गिरनेकी आवाज़, फटफट। चटाई।

फटक—पु० स्फटिक पत्थर (कबीर ९७)। क्रिवि० तुरन्त 'गयो फटक ही टूटि चोंच दाड़िमके धोखे।' गिरिधर

फटकना—सक्रि० फटफटाना, सूपपर हिलाकर साफ करना (उदे० 'पिछोरना')। पटकना, फेंकना 'कण्ठ चापि बहु बार फिरायो गहि फटक्यो नृप पास पर्‌यो।' सूवे० ५०। अक्रि० पहुँचना। हाथ पाँव हिलाना। दूर होना, पृथक् होना।

फटकरना—सक्रि० फटकना, फेंकना 'खोट रतन सोई फटकरै।' प० २२१

फटकाना—सक्रि० फेंकना, पृथक् करना। फटकवाना। फटफटाना (उदे० 'ग्रामसिंह')।

फटकार—स्त्री० दुत्कार, झिड़की।

फटकारना—सक्रि० झटका मारना (उदे० 'गेंडुरी')। चलाना, फेंकना, अलग करना। प्राप्त करना। खरी खरी सुनाना।

फटकी—स्त्री० एक तरहका पिंजड़ा या जाल।

फटना—अक्रि० विदीर्ण होना, तड़कना, खंडित होना, छिन्न भिन्न होना 'जिमि रवि उये जाहि तम फाटी।' रामा० ५१०

फटफटाना—सक्रि० फड़फड़ाना, छटपटाना, प्रयास करना। बक बक करना।

फटा—स्त्री० फण, गर्व, छल। पु० छिद्र।

फटिक—पु० स्फटिक या बिल्लौर नामक पत्थर 'बैठे फटिक सिलापर सुन्दर।' रामा० ३५८, (उदे० 'जुरना')

फट्टा—पु० टाट। चीरी हुई बाँसकी छड़।

फड़—स्त्री० जुवा-घर, दाँव। दल।

फड़कना—अक्रि० फड़फड़ाना, धड़कना, उछलना, हिलना, चंचल होना, स्फुरण होना।

फड़फड़ाना—सक्रि० फटफटाना, हिलाना। अक्रि० छटपटाना।

फण—पु० साँपका फैलाया हुआ मस्तक।

फणधर, फणिक—पु० सर्प।

फणींद्र, फणीश—पु० शेषनाग, सर्पराज। वासुकि।

फणी—पु० सर्प। केतु। सीसा।

फतवा—पु० मुसलमानी धर्मग्रन्थके अनुसार व्यवस्था।

फतह—स्त्री० विजय, सफलता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फतिंगा—पु० पतिंगा।
फतूर—पु० विकार। विघ्न, हानि। उत्पात।
फतूह—स्त्री० विजय। लूटका धन।
फतूही—स्त्री० बिना आस्तीनकी कुरती। लूटका धन।
फते, फतेह—स्त्री० फतह, विजय 'बाहुबली जयशाह जू फते तिहारे हाथ।' वि० २९४
फदकना—अक्रि० खदबद करना, खुरना। खुशीसे उछलना।
फन—पु० साँपका सिर। विद्या, गुण, चालाकी।
फनफनाना—अक्रि० फनफन आवाज़ करना।
फनगना—अक्रि० पनपना, नये अंकुरका निकलना।
फनस—पु० पनस, कटहल।
फनिंग—पु० सर्प, नाग।
फनिंद—पु० फणीन्द्र, सर्पराज, शेषनाग।
फनि—पु० देखो 'फणी'।
फनिक, फनिग—पु० सर्प। फतिंगा 'अब करि फनिग फनिधर, फनिप—पु० सर्प। [भृंग कै करा।' प० ५६
फनी—पु० सर्प। स्त्री० सर्पका मस्तक।
फनूस—पु० पिंजड़ेकी सूरतका चिरागदान।
फफ़दना, फमदना—अक्रि० फैलना, बढ़ना।
फफूँदी—स्त्री० बरसातमें फलादिपर जमनेवाली सफेद
फफोला—पु० झलका, छाला। [सी तह। नीवी।
फबती—स्त्री० शोभा। देशकालानुकूल बात। व्यंग्य।
फबना—अक्रि० भला मालूम होना, शोभा देना 'राव शत्रुशालको सपूत पूत भावसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबति है।' ललित० २५
फबाना—सक्रि० ठीक स्थानपर लगाना।
फबि—स्त्री० शोभा, छवि।
फबीला—वि० छवियुक्त, सुन्दर।
फर—पु० फल, बाण आदिका अगला भाग 'बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा।' रामा० ३७७। सामना। विछावन। दाँव, पक्ष। युद्धक्षेत्र 'फर में फतै तुंबेलनि पाई।' छत्र० १४२
फरक—स्त्री० फड़कनेकी क्रिया, स्फुरण, चंचलता। पु० अंतर, पार्थक्य। दुराव।
फरकन—स्त्री० फड़कनेकी क्रिया, स्फुरण।
फरकना—अक्रि० फड़कना, काँपना (उदे० 'पलकेटा')। स्फुरित होना 'फरकत अधर कंप मन माहीं।' रामा० ७८। उड़ना।
फरका—पु० एक तरहकी छाजन, टट्टर 'ताके पूत कहावत हौ जी चोरी करत उघारत फरको।' सूदे० ६६
फरकाना—सक्रि० फड़फड़ाना, हिलाना।
फरचा—वि० जो जूठा न हो। साफ।
फरचाना—सक्रि० साफ करना, शुद्ध करना। आदेश देना।
फरजंद,-जिंद—पु० बेटा, लड़का।
फरजी—वि० जाली, नकली। पु० शतरंजका एक मोहरा (उदे० 'तासीर')।
फरद—स्त्री० एक पल्ला। सूची। वि० बेजोड़।
फरना—अक्रि० फलना (उदे० 'उकठा,' 'सराहीं'), 'नरियर फरे फरी फरहरी।' प० १२
फरफंद—पु० दाँवपेंच, छल, नखरा।
फरफराना—अक्रि० फड़फड़ाना।
फरफुंदा—पु० फतिंगा।
फरमाँबरदार—वि० हुक्म बजानेवाला, आज्ञाकारी।
फरमाइश—स्त्री० कोई वस्तु तैयार करने या कहींसे लाने इ० की आज्ञा।
फरमान—पु० राजकीय आज्ञापत्र, राजाज्ञा।
फरमाना—सक्रि० आज्ञा देना।
फरश, फरस—पु० समतल भूमि, गच। बिछावन।
फरशबंद—पु० वह ऊँची जगह जहाँ गच बना हो (रवि० ४३)।
फरशी—स्त्री० फूल इ० का वह पात्र जिसमें नैचा लगा कर हुक्केका काम लेते हैं। उक्त पात्रवाला हुक्का।
फरसा—पु० फावड़ा, कुल्हाड़ी, परशु।
फरहरना, फरहराना—अक्रि० फड़फड़ाना, हिलना, फहराना, फड़क उठना 'छप्पन कोटि जसोदा गृह सब सजा परबत फरहरा।' प० १३३
फरहरा—पु० झंडा। वि० छिटका हुआ, खिला हुआ, अलग अलग। शुद्ध।
फरहरी—स्त्री० जंगली फल (उदे० 'फरना')।
फराक—पु० लंबी चौड़ी खुली जगह। वि० विस्तृत 'दूरि फराक रुचिर सो घाटा।' रामा० ५५६
फराकत—वि० विस्तृत। स्त्री० छुट्टी, शौचादिसे निवृत्त होना।
फरागत—स्त्री० शौचादिसे, या अन्य कार्यसे, निवृत्त होना, निश्चिन्तता।
फरार—वि० भागा हुआ, गायब। देखो 'फलार'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फरास—पु० देखो 'फर्राश', 'रुप चाँदनीकी गढ़ी स्वच्छ राखिवे हेत। दग फरास हाजिर खड़े बरुनि बहारू देत।' रतन० १७, (साखी १४७)

फरासीसी—पु० फ्रांस देशका निवासी। वि० फ्रांसका।

फरिया—स्त्री० ओढ़नी, एक तरहका लहँगा 'सारी चीर नई फरिया लै अपने हाथ बनाइ।' सूबे० ८२। पु० मिट्टीकी नाँद।

फरियाद—स्त्री० नालिश, प्रार्थना।

फरियाना—सक्रि० साफ करना, अलग करना, तै करना। अक्रि० साफ होना, तै होना।

फरिश्ता—पु० दिव्य दूत।

फरी—स्त्री० ढाल 'लैके खड्ग फरी गहि हाथा। काट्यो बहु छत्रिनको माथा।' सबलसिंह। गाड़ीका हरसा। फाल (ककौ० ५२७)।

फरुई, फरुही—स्त्री० छोटा फावड़ा, मथानी। भूना हुआ चावल, मुरमुरा।

फरुहरी—स्त्री० फड़कनेकी क्रिया, कँपकँपी, फुरेरी।

फरेब—पु० जाल, धोखा।

फरेरी—स्त्री० जंगली मेवा।

फरोख्त—स्त्री० बेचनेकी क्रिया, बिक्री।

फर्क; फर्जंद—दे० 'फरक', 'फरजंद'।

फर्ज़—पु० कर्त्तव्य। धार्मिक कृत्य। कल्पना।

फर्ज़ी—वि० कल्पित, बनावटी।

फर्द—स्त्री० देखो 'फरद'।

फर्माना; फर्याद—दे० 'फरमाना', 'फरियाद'।

फर्राटा—पु० क्षिप्रता, तेज़ी।

फर्राश—पु० सफाई इ० करनेवाला नौकर, सेवक।

फर्श—पु० देखो 'फरश'।

फलंक—पु० फलांग, उछाल 'कूदि गयो कपि एक फलंका लंकाके दरवाजा।' रघु० २३०। आकाश।

फल—पु० मेवा। परिणाम, लाभ, प्रभाव। बदला। ढाल। बाणादिका अग्रिम भाग। प्रयोजन। लब्धि।

फलक—पु० तख्ता। पृष्ठ, पत्र। हथेली। ढाल। आकाश, स्वर्ग।

फलकना—अक्रि० छलकना। फरकना।

फलका—पु० छाला, छलका।

फलतः—अ० परिणाम स्वरूप, इसलिए।

फलद—वि० फल देनेवाला।

फलदान—पु० विवाह पक्का करनेकी एक रस्म। 'बरच्छा'।

फलना—अक्रि० फल लगना, परिणाम निकलना, सफल होना।

फलवान्—वि० फलयुक्त, सफल।

फलश्रेष्ठ—पु० आम।

फलहरी—स्त्री० देखो 'फरहरी'।

फलहरी,-हारी—वि० जिसमें अन्न न पड़ा हो।

फलाँ—वि० अमुक। फलाना।

फलाँग—स्त्री० छलांग, उछाल, चौकड़ी। कलाबाज़ी।

फलाँगना—अक्रि० छलांग मारना, कूदना।

फलागम—पु० फल लगनेकी ऋतु, शरद्ऋतु।

फलाना—वि० अमुक (सुन्द० १६५)। सक्रि० फलनेमें प्रवृत्त करना।

फलार, फलाहार—पु० फल-भोजन, वह भोजन जिसमें अन्न न पड़ा हो।

फलालैन—पु० एक तरहका ऊनी कपड़ा।

फलाशन, फलाशी—पु० फल खानेवाला।

फलाहारी—वि० जिसमें अन्न न मिला हो। पु० फल खानेवाला।

फलित—वि० फला हुआ। पूर्ण।—ज्योतिष = ग्रहोंके शुभाशुभ फलका विचार करनेवाला ज्योतिष।

फली—स्त्री० लम्बे चिपटे फल जिनमें दाने भरे रहते हैं, छीमी इ०। पु० फलयुक्त वृक्ष।

फलीता—पु० पलीता, बत्ती।

फलोदय—पु० लाभ, आनन्द।

फल्गु—वि० क्षुद्र, निस्सार। स्त्री० एक नदी।

फसकड़ा—पु० पलथी।

फसकना—अक्रि० दरकना, दब जाना, बैठना। वि० जो शीघ्र दब जाय या फट जाय।

फसल—स्त्री० उपज। ऋतु, समय।

फसली—वि० मौसमी। पु० एक संवत्। स्त्री० हैजा।

फसाद—पु० झगड़ा, उपद्रव, विद्रोह।

फहम—स्त्री० ज्ञान, विवेक।

फहरना—अक्रि० उड़ना, फड़फड़ाना (उदे० 'अटकना')।

फहरान,-नि—स्त्री० फहरानेकी क्रिया।

फहराना—अक्रि० हवामें उड़ना (उदे० 'उद्दोतिताई', 'निसान')। सक्रि० हवामें उड़ाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फाँक—स्त्री० गोल वस्तुका चीरा हुआ टुकड़ा, टुकड़ा।
फाँकना—सक्रि० चूर्णादिको दूरसे मुखमें डालना।
फाँका—पु० फाँक, टुकड़ा (उदे० 'उधेरना')। फंका।
फाँकी—स्त्री० फाँक, टुकड़ा। चूर्णादि जो एक बार मुखमें डाला जाय।
फाँग, फाँगी—स्त्री० एक तरहका साग।
फाँटना—सक्रि० कई टुकड़ोंमें विभक्त करना। काढ़ा बनाना।
फाँड़ा—पु० कमरमें लपटा हुआ दुपट्टे आदिका हिस्सा। फेंटा।
फाँद—स्त्री० फंदा, जाल (प० ४३)। छलांग, उछाल।
फाँदना—अक्रि० उछलना। सक्रि० कूदकर पार करना, नाकना। फँसाना (दास ९३, सू० १२८)।
फाँदा—पु० फंदा, जाल।
फाँफी—स्त्री० पतली झिल्ली, मलाईकी हलकी तह।
फाँस—स्त्री० फंदा, बन्धन। बाँस आदिका कड़ा तंतु (प० १४०)। पतली तीली।
फाँसना—सक्रि० फँसाना, बाँधना, धोखा देकर वशमें करना।
फाँसी—स्त्री० फंदा (उदे० 'निरवारना')। गलेमें रस्सी डाल कर प्राण लेनेकी सज़ा।
फाका—पु० उपवास।
फाग—पु० रंग या अबीर डालनेका उत्सव, होली। होली-का गीत।
फागुन—पु० माघके बादका महीना।
फाज़िल—वि० आवश्यकतासे अधिक। विद्वान्, पंडित।
फाटक—पु० दरवाजा। फटकन 'फाटक दै कर हाटक माँगत भोर निपट सु धारी।' अ० १२
फाटना—अक्रि० फटना 'वे रस डोलत आपने इनके फाटत अंग।' रहीम १४, (वि० ११०, मति० १७८)
फाड़खाऊ—वि० कटहा, क्रोधी।
फाड़ना—सक्रि० विदीर्ण करना, खंड खंड करना, जुड़ी या मिली वस्तुओंको अलग करना।
फातिहा—पु० विनती, प्रार्थना।
फानूस—पु० एक तरहका चिरागदान 'रूप दीप जेतौ धरौ मन फानूस दुराइ।' रतन० १७
फाब—स्त्री० फबि, छवि, शोभा।
फाबना—अक्रि० फबना, शोभा देना 'कुमतिहि कसि कुबेसता फाबी।' रामा० २११
फायदा—पु० लाभ, अच्छा प्रभाव।
फायदेमंद—वि० लाभकारी, मुफीद, गुणकारी।
फाया—पु० देखो 'फाहा'।
फार—पु० फाल, टुकड़ा (प० २०४)।
फारना—सक्रि० देखो 'फाड़ना', (उदे० 'बाँद')।
फारा—पु० देखो 'फार', (प० २५६)।
फाल—स्त्री० लोहेकी कील जिससे हल चलानेपर जमीन खुदती है। तीरका फल 'हुलसी पीठि कढ़ावौं फालू।' प० ३१२। टुकड़ा। पु० फावड़ा। शिवजी। एक दैवी परीक्षा। फलांग, डग (दास ३२)।
फालतू—वि० ज़रूरतसे ज़्यादा, बचती, निकम्मा।
फालसा—पु० एक फल।
फाल्गुन—पु० माघके बादका महीना।
फावड़ा—पु० मिट्टी खोदनेका औज़ार, फरसा।
फासला—पु० अंतर, दूरी।
फाहा—पु० रुई, तेल आदिमें डुबाया हुआ रुई या कपड़े-का टुकड़ा।
फाहिशा—वि० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।
फिकर, फिकिर, फिक्र—स्त्री० चिन्ता, खटका, सोच। उपाय।
फिटकरी—स्त्री० एक खनिज पदार्थ।
फिटकार—पु० फटकार, धिक्कार। शाप। त्रास।
फिटकिरी—स्त्री० देखो 'फिटकरी'।
फिटकी—स्त्री० देखो 'फिटकरी'। छींटा।
फिटाना—सक्रि० हटा देना, भगाना (सुन्द० १३४)।
फिट्टा, फिट्टा—वि० लज्जित, अपमानित।
फितूर—पु० देखो 'फतूर'। कमी, घाटा।
फिदवी—पु० दास। वि० आज्ञानुवर्त्ती।
फिनिया—स्त्री० कानका एक आभूषण।
फिफरी—स्त्री० पपड़ी 'उड़िगै बदनकी लालिमा फिफरी परी अधरानि।' रघु० १२२
फिरंग—पु० यूरोप। स्त्री० विलायती तलवार 'चमकती चपला न, फेरत फिरंगैं भट…'—भू० ३२
फिरंगी—वि० फिरंग देश (यूरोप) में उत्पन्न। पु० फिरंग देशवासी। स्त्री० देखो 'फिरंग'-स्त्री०।
फिर—क्रिवि० किसी दूसरे समय, बादमें। पुनः। इसके सिवाय।
फिरकना—अक्रि० थिरकना, नाचना, चक्कर खाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिरका—पु० सम्प्रदाय, जाति।

फिरकी—स्त्री० चकई नामका खिलौना '...खिरकी खिरकीनि फिरै फिरकीसी।' रवि० ८९। एक कसरत।

फिरकैयाँ—स्त्री० चक्कर 'फिरकैयाँ लै निर्त अलापन, बिच बिच तान रसीली।' ललित कि०

फिरता—वि० वापस। पु० लौटाने या अस्वीकार करनेकी क्रिया।

फिरना—अक्रि० घूमना, भ्रमण करना, चक्कर लगाना 'अगनित भवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन।' रामा० ५८१। बदल जाना। वापस होना। हटना 'बन्धु वचन सुनि फिरा विभीषन।' रामा० ४८७। घोषित होना 'जब प्रताप रवि भयउ नृप फिरी दोहाई देस।' रामा० ८७

फिरनी—दे० 'फीरनी'।

फिराक—पु० चिंता, खोज, वियोग।

फ़िराद, फिरादि—दे० 'फिरियादि', 'कूकर एक फिरादहिं आयो।' के० २९४

फिराना—सक्रि० घुमाना, सैर कराना, लौटाना, मरोड़ना, बदल देना, फेरना 'वृषभ गंजन मथन केसी, हने पूँछ फिराइ।' सू० ७७, (उदे० 'आगमन')। अक्रि० देखो 'फिरना', 'पदुम गंध तिन अंग बसाहीं। भँवर लागि तिन्ह संग फिराहीं।' प० १४, (प० १८५)

फिरारी—वि० भागनेवाला।

फिरि; फिरिकी—दे० 'फिर', 'फिरकी'।

फिरियादि—स्त्री० पुकार, नालिश।

फिसड्डी—वि० जिससे कुछ काम न हो, जो काममें पीछे रहे।

फिसलना—अक्रि० खिसलना, रपटना, गिरना।

फींचना—सक्रि० कचारना, धोना, पछारना।

फी—अ० प्रत्येक।

फीका—वि० स्वादहीन, अरुचिकर। कान्तिहीन, व्यर्थ 'नीकी पै फीकी लगै बिन अवसरकी बात।' वृन्द

फीता—पु० कपड़े आदिकी पट्टी, पतला किनारा।

फीफरी—स्त्री० पपड़ी। फिफरी, फेफरी।

फीरनी—स्त्री० चावलके आटेकी खीर।

फीरोज़ा—पु० एक बहुमूल्य पत्थर।

फीरोजी—वि० हरापन लिये नीला।

फील—पु० पील, हाथी (सुजा० ४७)।

फीलखाना—पु० हस्तिशाला, हथिसार।

फीलपा—पु० हाथीपाँव नामक रोग।

फीलवान—पु० महावत।

फीली—स्त्री० पिंडली 'रोवाँ बहुत जाँघ अरु फीली।' [प० २२९

फुँकना—अक्रि० जलना, नष्ट होना।

फुँकनी—स्त्री० आग प्रज्वलित करनेकी नली, भाथी।

फुँकरना—अक्रि० फुफकार मारना। फूँ फूँ शब्द करना 'तब चले बान कराल। फुंकरत जनु बहु ब्याल।' रामा० ३७३

फुँकाना—सक्रि० फूँकनेका काम कराना। जलवाना।

फुंकार—पु० फूत्कार, फुफकार, नाक या मुँहसे वेगपूर्वक वायुके निकलनेका शब्द।

फुँकैया—पु० फूँकनेवाला (अ० १३६)।

फुँदना—पु० झब्बा, फुलरा, गुच्छा।

फुँदिया—स्त्री० गाँठ, फुन्दरा, (नीवीका) झब्बा (उदे० 'कसनी')।

फुँदी—स्त्री० गाँठ। बिन्दी 'सारी लटकति पाटकी बिलसति फुँदी लिलार।' मति० १८०

फुंसी—स्त्री० छोटी फुड़िया।

फुगना—सक्रि० खोलना 'कंचुकि फुगइत पहु भेल भोर।' विद्या० २२१

फुचड़ा—पु० बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

फुटकर, फुटकल—वि० अलग अलग, कई तरहका, थोड़ा थोड़ा, एकाकी।

फुटका—पु० लावा। छाला।

फुटकी—स्त्री० छोटा लच्छा, कण, धब्बा।

फुटेहरा—पु० अच्छा भूना हुआ चना या मटर।

फुटैल, फुट्टैल—वि० हतभाग्य। अकेला।

फुदकना—अक्रि० उछलना, कूदना।

फुनँग, फुनगी—स्त्री० कोमल पत्ती, शाखाका अग्रभाग।

फुन फुनी—अ० पुनः पुनः, बारम्बार 'हरि भगति बिना दुख फुनफुनी।' कबीर ९७

फुफँदी—स्त्री० इजारबन्दका झब्बा, नीवी।

फुफकाना, फुफकारना—अक्रि० मुँहसे वेगपूर्वक हवा निकालना।

फुफी, फुफ्फू—स्त्री० बूआ।

फुफेरा—वि० फूफासे उत्पन्न।

फुर—वि० सच्चा 'तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ।' रामा० १५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फुरकना—सक्रि० मुखद्वारा कड़ी हू० ज़ोरसे सुरकना । †
फुरती—स्त्री० शीघ्रता । [† ज़ोरसे थूकना ।
फुरतीला—वि० जो सुस्त न हो, शीघ्रतासे करनेवाला ।
फुरना—अक्रि० स्फुटित होना, निकलना 'फुरत न बचन कछू कहिबेको रहे प्रीति सों झरि ।' भ्र० ८६, (सू० ६६) । प्रकाशित होना । ठीक निकलना, सच्चा प्रमाणित होना 'जासों सब नातो फुरै तासों न करी पहिचानि ।' विन० ४४२ । सफल होना 'फुरै समर में सदा कृपानी ।' छत्र० ७ । असर करना 'एक न फुरत बिरह ज्वर तें कछु, लागति नाहिं भली ।' सू० १९८ । फरकना ।
फुरफुराना—अक्रि० 'फुरफुर' शब्द करना । सक्रि० पंख फड़फड़ाना ।
फुरफुरी—स्त्री० पंख फड़फड़ानेकी क्रिया ।
फुरमान—पु० राजाज्ञा, आज्ञा ।
फुरमाना—सक्रि० हुक्म देना (सुजा० १७) ।
फुरसत—स्त्री० अवकाश, समय ।
फुरहरना—अक्रि० स्फुरित होना, प्रकट होना । हिलना, फड़क उठना । (दे० 'फरहरना') ।
फुरहरी—स्त्री० फड़फड़ाहट, फरफराहट, रोमांचयुक्त होकर काँपना (रवि० ९२), कँपकँपी 'परसि फुरहरी लै फिरति बिहँसति धँसति न नीर ।' बि० २६५
फुराना—सक्रि० सत्य ठहराना, साबित करना । अक्रि० देखो 'फुरना' ।
फुरेरी—स्त्री० रोमांच सहित कँपकँपी । हलकी रुई-
फुर्ती, फुर्सत—दे० 'फुरती', 'फुरसत' । [युक्त सींक ।
फुलका—पु० पतली हलकी रोटी । झलका ।
फुलचुही—स्त्री० फूलोंका रस चूसनेवाली एक चिड़िया (प० १५६) ।
फुलझड़ी, फुलझरी—स्त्री० एक आतशबाजी । विवाद खड़ा करनेवाली बात ।
फुलरा—पु० गुच्छा, फुँदना ।
फुलवर—पु० एक तरहका कपड़ा ।
फुलवाई, फुलवारी—स्त्री० पुष्पवाटिका, बागीचा 'पूजन गौरि सखी लेइ आई । करत प्रकास फिरइ फुलवाई ।' रामा० १२७
फुलवार—वि० प्रसन्न, प्रफुल्ल 'होइ फुलवार रहस हिय भरा ।' प० १२७
फुलसुँघी—स्त्री० फुलचुही चिड़िया ।
फुलहारा—पु० माली ।
फुलाना—सक्रि० बाहरकी ओर फैलाना, आनंदित या गर्वित करना । फूलयुक्त करना ।
फुलायल—पु० फुलेल 'छोरहु जटा, फुलायल लेहू ।'
फुलिंग—पु० स्फुलिंग, चिनगारी । [प० १६१
फुलेरा—पु० फूलोंका छत्र ।
फुलेल—पु० फूलोंकी सुगंधियुक्त तेल (उदे० 'ग्रंथना') ।
फुलेहरा—पु० फूलोंका छत्र । गुच्छेदार बंदनवार ।
फुलौरी—स्त्री० बेसनकी पकौड़ी (प० २७३) ।
फुल्ल—वि० खिला हुआ, प्रसन्न ।
फुल्लकारना—अक्रि० फुफकारना ।
फुसफुसा—वि० जो छूने या दबानेसे चूर चूर हो जाय । अशक्त ।
फुसफुसाना—सक्रि० कानमें धीरे धीरे कहना ।
फुसलाना—सक्रि० बहलाना, बहकाना, भुलावा देना, मनाना ।
फुहर—वि० देखो 'फूहर', (उदे० 'घैना') ।
फुहार, फुहारा—पु० जलका महीन छींटा । जलका छींटा देनेवाला यंत्र ।
फुही—स्त्री० जलकण, झींसी ।
फूँक—स्त्री० फुफकार, साँस । मंत्र पढ़कर मुखसे निकाली हुई हवा ।
फूँकना—सक्रि० मुखसे वेगपूर्वक हवा निकालना । मुखसे हवा निकाल कर बजाना या दहकाना । भस्म करना, जलाना, नष्ट करना, उड़ाना ।
फूँका—पु० ओषधि भर कर बाँसकी नली गायके स्तनमें लगानेकी क्रिया । फूँका मारनेकी नली । फोड़ा ।
फूँद, फूँदा—स्त्री० झब्बा, फुँदना ।
फूँदफुँदारा—वि० झब्बेदार '...जूती चढ़ी पग फूँद-फुँदारी ।' रवि० ३३
फूट—स्त्री० वैमनस्य, अनबन, कलह । एक फल ।
फूटना—अक्रि० टूटना, दरकना (उदे० 'टपका') । नष्ट होना । प्रस्फुटित होना, निकलना । पृथक् होना । व्यक्त होना । बिखरना ।
फूटा—वि० टूटा हुआ ।
फूत्कार—पु० फुफकार, फुसकार ।
फूफा—पु० पिताका बहिनोई ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फूर, फूल—पु० पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून। सार। एक धातु। फूलके ढंगका गहना (सू० १४१)। स्त्री० आनन्द 'फूलि फूलि तरु फूल बढ़ावत।' राम० १८। उमंग (छत्र० ४३)।

फूरना, फूलना—अक्रि० कुसुमित होना 'पान अधार फूल अस फूरी।' प० २३९। खिलना (उदे० 'गुलाला')। सूजना। गर्व या आनन्दमें मग्न होना (कबीर १९४), 'राख्यो भले शरणागत लक्ष्मण फूलि कै फूल सी ओढ़ि लई है।' राम० ४४०, 'निरखि छवि फूलत हैं ब्रजराज।' सू० ५१। सुनहले प्रकाशयुक्त होना 'कैधौं फूली दुपहरी कैधौं फूली साँझ।' ललित० ५१

फूलझरी—स्त्री० एक आतशबाजी (सू० २०२)।

फूला—पु० लावा। नेत्ररोग।

फूली—स्त्री० आँखकी पुतली परका सफेद दाग।

फूस—पु० सूखी लम्बी घास, सूखा तृण।

फूहड़, फूहर—वि० बेढंगा, जिसे कुछ करनेका शऊर [न हो, भद्दा।

फूही—स्त्री० देखो 'फुही'।

फेंकना—सक्रि० दूर गिराना, त्यागना, खोना, अपव्यय करना। उछालना।

फेंकरना—अक्रि० गीदड़का बोलना, चिल्लाकर रोना 'कटु कुठायँ करटा रटहिं फेंकरहिं फेरु कुभाँति।' रामाज्ञा०। (सिर) नंगा होना 'फेंकरे मूँड़ चँवर जनु लाए।' प० १९०

फेंट—स्त्री० कमरका घेरा, कमरबन्द, पटुका (दास १४)। लपेट। टेंट 'चेटक लाइ हरहिं मन जब लहि होइ गथ फेंट।' प० १६।—कसना = तैयार होना। —गहना,-धरना,-पकड़ना, = रोकना 'चलत न फेंट गही मोहनकी अब ठाढ़ी पछितात।' सूबे० २७२

फेंटना—सक्रि० हाथसे मथना, खूब मिलाना।

फेंटा—पु० देखो 'फेंट'।

फेकरना—अक्रि० देखो 'फेंकरना'।

फेकारना—सक्रि० (सिर) खोलना, (सिर) उघारना।

फेड—स्त्री० देखो 'फेंट', (उदे० 'ढीठो')।

फेद—पु० फेंटा '....जऊवन बाँधक फेद।' विद्या० १२२

फेन, फैन—पु० बुद्बुद-राशि। झाग। मक्खन 'सूर स्याम जिनके सँग डोलत, हँसि बोलत मयि पियत हैं फैनु।' सू० ७५

फेनल, फेनिल—वि० फेनयुक्त।

फेनी—स्त्री० एक तरहकी मिठाई 'माठ पिराकैं फेनी [पापर।' प० २९५

फेफड़ा—पु० साँस लेनेकी थैली।

फेफड़ी, फेफरी—स्त्री० देखो 'फिफरी', (सूबे० २७९)।

फेर—पु० चक्कर। परिवर्त्तन। उलझन। धोखा, धूर्त्तता। अंतर। उपाय। हानि। तरफ, दिशा। अ० फिर, पुनः।

फेरना—सक्रि० घुमाना (उदे० 'कुंद')। लौटाना 'नतरु फेरियहिं बन्धु दोउ नाथ चलउँ मैं साथ।' रामा० ३२७। वापस लेना। पोतना। बदलना। घोषित करना। यहाँसे वहाँतक स्पर्श कराना या ले जाना 'आना काटर एक तुखारू। कहा सो फेरौ, भा असवारू।' प० १२९

फेरफार—पु० परिवर्त्तन। चक्कर। अन्तर।

फेरा—पु० घेरा, मंडल, लपेट 'तुलसीके अवलम्ब नामको, एक गाँठि कई फेरे।' विन० ५१९। परिक्रमण, इधर उधरसे आना। लौटकर आना (कबीर १६९), 'पिय जो गये पुनि कीन्ह न फेरा।' प० १६५

फेरि—अ० पुनः, फिर।

फेरी—स्त्री० परिक्रमा, चक्कर।

फेरु—पु० गीदड़ (उदे० 'फेंकरना')।

फैल—पु० खेल, मकर, ढोंग। कार्य (दास ६५)। विस्तार, राशि 'जेते हैं पहार भुव पारावार माहिं तिन सुनके अपार कृपा गहे सुख फैल है।' भू० २५

फैलना—अक्रि० छितराना। विस्तृत होना, एक जगहसे दूसरी जगहतक बना रहना। व्याप्त होना, भरना। बढ़ जाना, दूरतक पहुँचना।

फैलाना—सक्रि० छितराना। विस्तृत करना, पसारना। व्यापक करना। बढ़ाना, दूरतक पहुँचाना।

फैलाव—पु० विस्तार, प्रचार, प्रसार।

फैसला—पु० निबटेरा, निर्णय।

फोंक—पु० बाणका नुकीला भाग (प० २५९)।

फोंदा—पु० झब्बा, फुँदना (सूबे० २३६)।

फोंफर—वि० खोखला, निस्सार।

फोंफी—स्त्री० पोली नली, छूँछी।

फोक—पु० सारहीन अंश, भूसी।

फोकट—वि० निस्सार, तुच्छ, जिसका कोई मूल्य न हो 'अलि चलि और ठौर दिखावहु अपने फोकट ज्ञान।' सूबे० ३६८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फोका—पु० बुद्बुद (विद्या० ४)।
फोट—पु० स्फोट (भ्र० १०८)।
फोटा—पु० बूँद, बिन्दी, टीका 'ललाट पावक नहिं, सिन्दुरक फोटा।' विद्या० ६०
फोड़ना—सक्रि० तोड़ना, भेदन करना, नष्टभ्रष्ट करना। साथ छुड़ाना, फूट डालना।
फोड़ा—पु० घाव, व्रण।
फोड़िया—स्त्री० छोटा व्रण, फुंसी। [अंडकोश।
फोता—पु० पगड़ी। पटुका। कोष, थैली। लगान।
फारना—सक्रि० देखो 'फोड़ना'।
फोहा—पु० देखो 'फाहा'।
फौज—स्त्री० सेना। झुण्ड।
फ़ौजदार—पु० सेनापति, टुकड़ीका नायक।
फ़ौजदारी—स्त्री० मारपीट, झगड़ा।
फ़ौजी—वि० सेना सम्बन्धी, सैनिक।
फ़ौरन—क्रिवि० उसी क्षण, तुरन्त।
फौलाद—पु० पक्का लोहा।
फौवारा—पु० देखो 'फुहारा'।

ब

बंक, बंकट—वि० वक्र, टेढ़ा, कुटिल 'बंक हिये न प्रभा सँरसीसी। कर्दम काम कछू परसीसी।' के० ६२, 'बंकट भौंह चपल अति लोचन बेसरि रस मुकुताहल छायो।' सू० १६१, (भ्र० ५१)
बंका—पु० बाँका, टेढ़ा, वीर, बढ़िया 'तिन्हतें अधिक रम्य अति बंका। जग विख्यात नाम तेहि लंका।' रामा० ९९
बंकाई, बंकुरता—स्त्री० टेढ़ापन '...बंकुरता अँखियानि छई है।' दास ११ (वि० १३३)
बँकैअन—क्रिवि० घुटनोंके बल (दास ३०)।
बंग—पु० बंगदेश, बंगाल। एक पौष्टिक ओषधि 'साधुत वैरागी जड़ बंग।' सू० (ब्रज० १५६)। देखो 'बाँग', (कबीर १०७)।
बँगला—पु० छोटा हवादार चारों ओर खुला मकान (उदे० 'कमनी')। बंगालका पान। स्त्री० बंगालकी भाषा।
बंगली—स्त्री० देखो 'बंगुरी'।
बंगा—वि० वक्र, उद्दण्ड, अज्ञानी 'राम मनुज कस रे सठ बंगा। धन्वी कामु नदी पुनि गंगा।' रामा० ४६३
बंगुरी—स्त्री० हाथका एक गहना।
बंचक—पु० छलिया, पाखण्डी 'बंचक भगत कहाइ रामके।' रामा० ११
बंचकता, बंचकताई, बंचनता—स्त्री० ठगी, धूर्त्तता।
बंचना—स्त्री० छल, धूर्त्तता। सक्रि० ठगना।
बँचवाना—सक्रि० पढ़वाना।
बंछना—अक्रि० वाञ्छा करना, चाहना 'सुन्दर तोहि विषय सुख बंछत घोड़े गये पै बगै न गई जू।' सुन्द० १६
बंछनीय—वि० वांछनीय, अभिलषणीय।
बंजर—पु० अनुपजाऊ भूमि, ऊसर। वि० अनुपजाऊ।
बंजारा—पु० व्यापारी 'सूरश्याम अंचल गहि झरकी जैहो कहाँ बँजारिन।' सूवे० १४५
बंजुल, बंजुलक—पु० अशोक वृक्ष (राम० ४९)। बेंत।
बंझा—वि० स्त्री० बाँझ (स्त्री), सन्तानहीन। स्त्री० बाँझ स्त्री।
बँटना—अक्रि० विभक्त होना, अलग अलग दिया जाना।
बँटवाना—सक्रि० वितरण कराना। पिसवाना।
बँटवारा—पु० बाँटनेका काम, विभाग।
बंटा—वि० बौना, छोटे आकारका। पु० उबिया।
बँटाई—स्त्री० बाँटनेकी क्रिया, बाँटनेकी मजदूरी।
बँटाना—सक्रि० हिस्सा कराना। (दुःखादिमें) सम्मिलित होना।
बँटावन—पु० भाग करानेवाला। साथमें भोगनेवाला।
बंडल—पु० पुलिन्दा।
बंडा—पु० एक कंद। अनाज भरनेकी जगह।
बंडी—स्त्री० कुरती, फतूही।
बँडेरी—स्त्री० मँगरे परकी लकड़ी।
बंद—पु० बंधन, तनी, बाँध, कैद 'फँसी फौजमें बंद बिच हँसी सबन तनु हेरि।' वि० ९१। वि० घिरा हुआ, गतिहीन, स्थगित, जो खुला न हो, जो कैदमें हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बंदगी—स्त्री० सेवा, पूजा (उदे० 'तसबीह'), सलाम।
बंदन—पु० प्रणाम। इंगुर, सिंदूर 'मुंडन भुरके देखिय बंदन।' राम० १६। रोली। बंदनवार 'घर घर बंदन रचे दुवारा।' प० १३१
बँदनता—स्त्री० बंदनीयता, पूजित या आदृत किये जाने की योग्यता।
बंदनवार—पु० पत्तों आदिकी झालर जो उत्सवादिमें द्वारपर लगायी जाती है, तोरण।
बंदना—सक्रि० प्रणाम करना 'बंदउँ गुरु-पद-पदुम-परागा।' रामा० ४, स्त्री० प्रणाम, स्तुति।
बंदनी—स्त्री० सिरबंदी नामक गहना। वि० वंदनीय।
बंदनीमाल—स्त्री० पैरोंतक लटकनेवाली माला।
बंदर—पु० कपि, मर्कट। बंदरगाह।
बंदरगाह—पु० जहाज ठहरनेकी जगह।
बंदवान—पु० बंदीगृहका रक्षक, दारोगा 'हवसी बँदवाना जिउ-बधा। तेहि सौंपा राजा अगिदधा।' प० २८९
बंदा—पु० सेवक। 'मैं'-सूचक शब्द। कैदी।
बंदारु—वि० आदरणीय, वंदनीय।
बंदि—स्त्री० कैद, बंधन। पु० बंदी, कैदी। चारण (उदे० 'टेरना')।
बंदिछोर—दे० 'बंदीछोर', (प० ३०९)।
बँदिया—स्त्री० सिरपर पहननेका एक गहना (ब्रज० ५८३)।
बंदिश—स्त्री० योजना, प्रबन्ध।
बंदी—पु० कैदी। चारण, भाट। स्त्री० बाँदी, दासी। देखो 'बँदिया'।
बंदीखाना,-घर—पु० कैदखाना।
बंदीछोर—पु० बंधनसे छुड़ानेवाला (साखी १२)।
बंदीवान—पु० कैदी।
बंदूक, बंदूख—पु० अस्त्र विशेष (उदे० 'तरभर')।
बंदूकची—पु० वह जो बन्दूक चलाता हो।
बंदेरी—स्त्री० दासी (प० ३१५)।
बंदोबस्त—पु० व्यवस्था, प्रबन्ध।
बंध—पु० बंधन, बाँध, कैद (दीन० ८१)। गाँठ। लगाव। निबंध, रचना।
बंधक—पु० बाँधनेवाला। गिरवी, रेहन। विनिमय।
बंधन—पु० बाँधनेकी क्रिया। कैद, रुकावट। हिंसा, वध। रस्सी।
बँधना—अक्रि० बद्ध होना, कैद होना, फँसना। क्रम निश्चित होना।
बंधनि—स्त्री० बंधन, रोकने या उलझानेवाली वस्तु।
बंधव—पु० देखो 'बांधव'।
बँधवाना—सक्रि० देखो 'बँधाना'।
बंधान—पु० नियत परिपाटी। बाँध। तालका सम (उदे० 'उघटना')।
बँधाना—सक्रि० बाँधनेमें प्रवृत्त करना, धारण कराना, कैद कराना 'प्रभु कारज लगि कपिहि बँधावा।' रामा० ४२५
बंधिय—पु० सम्बन्धी (कबीर २७१)।
बंधी—स्त्री० निश्चित प्रबन्ध, बँधा हुआ क्रम।
बंधु—पु० भाई, मित्र, आत्मीय। गुलदुपहरिया।
बँधुआ—पु० बंदी, कैदी।
बंधुक, बंधुजीव—पु० दुपहरियाका फूल।
बंधुर—पु० मुकुट। दुपहरियाका फूल। हंस। बगला। बहरा मनुष्य। वि० सुन्दर।
बंधूक, बंधूप—पु० दुपहरियाका फूल 'किधौं सुभग बंधूप कुसुम पर, झलकत जलकन कांति।' सू० १२९, (बंधूक-सू० १३०, बंधूप-१११)
बंधेज—पु० नियत समयपर देनेकी क्रिया, रोकनेकी युक्ति। रुकावट।
बंध्या—वि० स्त्री० बाँझ।
बंध्यापुत्र - पु० कोई असंभव बात।
बंब—पु० बं बं शब्द। डंका। रणनाद।
बंबा—पु० पानीका नल। पम्पा।
बँभनाई—स्त्री० ब्राह्मणत्व। हठ।
बंस—पु० वंश, कुल। बाँस।
बंसकार—पु० बाँसुरी।
बँसरी, बंसी—स्त्री० नलीका बना एक बाजा, मुरली। मछली पकड़नेका औज़ार।
बंसीधर—पु० मुरलीधर, श्रीकृष्ण।
बँहगी—स्त्री० भार ढोनेका एक साधन। काँवर।
बइठना—दे० 'बैठना'।
बइर—पु० वैर, शत्रुता, द्वेष। वि० बहिरा, बधिर 'स्वामि धरम स्वारथहिं विरोधू। बइर-अंध प्रेमहिं न प्रबोधू।' रामा० ३३९
बउर—पु० बौर, आमकी मंजरी।
बउरा—वि० बाउर, बावला, पागल।
बउराना—अक्रि० बौराना, पागल होना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बक—पु० बगला। एक राक्षस। बकवाद (उदे० 'ठक')। वि० बगला जैसा सफेद।
बकतर—पु० एक तरहका कवच।
बकता—पु० वक्ता, बोलनेवाला।
बकध्यानी—वि० देखनेमें सीधा, किन्तु वस्तुतः कपटी।
बकना—अक्रि० अनाप शनाप बात कहना, बड़बड़ाना (उदे० 'आउबाउ')।
बकमौन—वि० चुपचाप काम पूरा करनेवाला।
बकर-कसाब—पु० बकरोंके मांसका विक्रेता।
बकरना—अक्रि० अपने आप बकना, स्वीकार करना।
बकरा—पु० छाग, अज।
बकलस—पु० बकसुआ, बकिल।
बकला—पु० छिलका, छाल, वल्कल 'पहिरे बकला सुजटा धरि कै। निज पायन पंथ चले अरि कै।' राम० २२२
बकवाद—स्त्री० निरर्थक बात।
बकवास—स्त्री० निरर्थक बातचीत। बकबक करनेकी आदत।
बकशीश, बकसीस—स्त्री० दान, इनाम (सूवे० २४९, मति० २३४)।
बकस—पु० सन्दूक, पेटी, डिब्बा।
बकसना—सक्रि० देना 'भाऊ दिवान उदार अपार सजीव पहार करी बकसे हैं।' ललित० ४४। क्षमा करना 'ढीठो बहुत कियो हम तुमसों सो बकसो हरि चूक हमारी।' सूवे० १६५, (भ्र० ५५)
बकसाना—सक्रि० क्षमा कराना।
बकसुआ,-सुवा—पु० किसी बंधनके दो टुकड़ोंको कसनेका पीतल इ० का एक चौकोर टुकड़ा।
बकाउ—स्त्री० बकावली 'बकुचन बिनवौं रोस न मोही। सुनु, बकाउ तजि चाहु न जूही।' प० १८२
बकाना—सक्रि० बक बक कराना, रटाना (दीन० १७)।
बकायन—पु० नीमकी तरहका एक पेड़ (दीन० २०७)।
बकाया—वि० बाक़ी, शेष, बचत। पु० बाक़ी रक़म।
बकावरी,-वली—स्त्री० एक पेड़ या उसका फूल (उदे० 'बकुचा')।
बकिनव—पु० बकायन, पुष्प विशेष (मति० २३८)।
बकी—स्त्री० बकासुरकी बहिन, पूतना।
बकुचना—अक्रि० संकुचित होना।
बकुचा—पु० छोटी सी गठरी, ढेर, गुच्छा 'कोइ सो बकावार-बकुचन आँती।' प० २६। जुड़ा हुआ हाथ (उदे० 'बकाउ')।
बकुची—स्त्री० छोटी गठरी। एक छोटा पेड़।
बकुचौंहा—वि० बकुचेकी तरह।
बकुल—पु० मौलसिरी, शिवजी।
बकैयाँ—स्त्री० घुटनोंके बल चलना 'धावत बकैयाँ है चिरैया गहिबे को कबौं'—रामरसायन
बकोटना—सक्रि० खसोटना, नोंचना।
बकारी, बकौरी—स्त्री० बकावली 'सुरँग गुलाल कदम औ कूजा। सुगँध बकौरी गंधव पूजा।' प० १५, (उदे० 'गौरी')
बकौंड़ा—पु० पलाशकी कूटी हुई जड़।
बक्कल—पु० छाल, बकला।
बक्काल—पु० आटा, दाल, चावल इ० बेचनेवाला, बनिया।
बक्की—वि० बकबक करनेवाला।
बक्कुर—पु० वाक्य, वचन, बोल।
बक्षोज—पु० वक्षोज, उरज, कुच 'ढके ओढ़नी लंक बक्षोज जानो।' राम० ३५१
बखत—पु० समय (उदे० 'अटोक')। भाग्य 'वंश सम बखत, बखत सम ऊँचो मन...' ललित० ३४
बखतर—पु० कवच (उदे० 'फूँद')।
बखरा—पु० भाग, हिस्सा।
बखरी—स्त्री० पक्का सुढौल मकान।
बखरैत—वि० हिस्सेदार।
बखसीस—स्त्री० देखो 'बख़्सीस'।
बखसीसना—सक्रि० देना।
बखान—पु० वर्णन, बड़ाई (दीन० १९६)।
बखानना—सक्रि० वर्णन करना, बड़ाई करना। गाली देना।
बखार—पु० अन्न रखनेका घिरा हुआ स्थान।
बखिया—स्त्री० एक तरहकी सिलाई।
बखियाना—सक्रि० बखिया करना।
बखीर—स्त्री० चीनी या ईखके रसमें पकाया हुआ चावल।
बखूबी—क्रिवि० पूर्णतया, भलीभाँति।
बखेड़ा—पु० झगड़ा, झंझट। आडम्बर।
बखेरना—सक्रि० छितराना, बिखराना।
बखोरना—सक्रि० छेड़छाड़ करना, टोकना।
बख्त—पु० समय। भाग्य।
बख्तर—पु० कवच।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बख्शना—सक्रि० देना। क्षमा करना, छोड़ना।
बख्शिश, बख्शीश—स्त्री० दान। उदारता। क्षमा।
बग—पु० बगुला 'जदपि पुराने बग तऊ सरवर निपट कुचाल'। बि० (उपस्क० ४०)
बगई—स्त्री० कुकुरमाछी।
बगदना-अक्रि० गिर पड़ना। बिगड़ना, बहकना।
बगदर—पु० मच्छड़।
बगदहा—वि० बहकनेवाला, बिगड़ैल।
बगदाना-सक्रि० गिराना, च्युत कराना, ढकेलना, बिगाड़ना।
बगना—अक्रि० टहलना, घूमना फिरना।
बगनी—स्त्री० एक घास।
बगमेल—पु० बाग मिलाकर चलना, पंक्तिबद्ध सवारोंका धावा (उदे० 'बिरहना'), 'भइ बगमेल, सेल घनघोरा।' प० ३२०। बराबरी। क्रिवि० बाग मिलाये हुए, साथ साथ 'आइ गये बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट।' रामा० ३७२
बगर—पु० महल, बड़ा घर 'नन्द महरके बगर तन अब मेरै को जाइ।' रतन० २४। कोठरी (उदे० 'जगर मगर')। बाँगन। गायें बाँधनेकी जगह, गोशाला (उदे० 'गोधन')। स्त्री० बगल, बाजू।
बगरना—अक्रि० बिखरना, फैलना (उदे० 'कलोर'), '...बनदमें, बागनमें, बगरो बसंत है।' पद्माकर
बगराना—सक्रि० फैलाना, छिटकाना (सू० ५२), 'उपमागन उपजाय हरि बगराये संसार।' के० २४१। अक्रि० फैलना, बिखरना 'बेनी छूटि लटैं बगरानी मुकुट लटकि लटकानो।' सूबे० २०७
बगरी—स्त्री० बखरी, मकान। पु० एक तरहका धान।
बगरूरा—पु० बवंडर (राम० २६८)।
बगल—स्त्री० काँख, बाजू, पासकी जगह।
बगला—पु० एक पक्षी, बक।
बगलियाना—अक्रि० बगलसे निकल जाना, अलग हटकर जाना।
बगली—स्त्री० दर्जीकी थैली। कुरते आदिमें कंधेके नीचेका टुकड़ा।
बगलेदी—स्त्री० एक चिड़िया (प० १४)।
बगसना—दे० 'बकसना', (छत्र० १६३)।
बगा—पु० बागा, जामा। बगुला 'बगा ढंढोरै माछरी हंसा मोती खाहिं।' साखी ९०
बगाना—सक्रि० घुमाना, सैर कराना 'कोमल कमल छूते चरन बगायो बन...' रघु० ८४। अक्रि० भागना।
बगार—पु० गायोंको बाँधनेकी जगह।
बगारना—सक्रि० बिखराना, फैलाना 'कुंभकर्ण उठि बैठि सेजपर मुख बगारि जमुहाना।' रघु० २३९, (छत्र० ४, [उदे० 'चौक')
बगावत—स्त्री० विद्रोह, बलवा।
बगिया—स्त्री० फुलवाड़ी, बागीचा।
बगीचा—पु० बाग, उपवन।
बगुदा—पु० एक शस्त्र (छत्र० ३६)।
बगुला—पु० बक पक्षी।
बगुलाभगत—पु० धर्मका आडंबर रचनेवाला, पाषंडी, †
बगूरा—दे० 'बगूला', (उदे० 'छइशना')। [† कपटी।
बगूला—पु० बवंडर, तूफान 'आया बगूला प्रेमका तिनका उड़ा अकास।' साखी ४८
बगेरी—स्त्री० एक चिड़िया (प० २६९)।
बगैर—अ० बिना।
बग्गी, बग्घी—स्त्री० एक तरहकी घोड़ागाड़ी।
बघंबर—पु० व्याघ्रका चमड़ा।
बघछाला—स्त्री० बाघका चमड़ा (उदे० 'उदपान')।
बघनहाँ—पु० व्याघ्रके पंजेकी तरहका एक हथियार। एक गहना (उदे० 'कठुला')।
बघनहियाँ—स्त्री०, बघना—पु० एक गहना, बघनहाँ, (सू० ५३)।
बघबार—पु० बाघकी मूँछके बाल (भ्र० ८४)।
बघरूरा—पु० देखो 'बगूला'।
बघार—पु० छौंक, तड़का 'करुए तेल कीन्ह बसवारू। मेथी कर तब दीन्ह बघारू।' प० २७२
बघारना—सक्रि० छौंकना (उदे० 'अरदावा')। अपनी योग्यता आदिकी ज़्यादा चर्चा करना।
बघूरा—पु० बवंडर 'ठौर ठौर जनु उठे बघूरे।' छत्र० ११८, (सुन्द० ४७)
बच—पु० वचन, बात। स्त्री० एक औषध।
बचका—पु० एक पकवान (उदे० 'खंडरा')।
बचकाना—वि० बच्चोंके योग्य। छोटी उम्रका।
बचत—स्त्री० बचा हुआ अंश, लाभ। रक्षा।
बचन—पु० बात, वाक्य, प्रतिज्ञा।
बचना—अक्रि० शेष रहना। अलग रहना। रक्षित रहना। सक्रि० कहना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बचपन—पु० लड़कपन।
बचवैया—पु० रक्षक।
बचा—पु० बच्चा, बालक।
बचाना—सक्रि० शेष रहने देना। छिपाना। अलग रखना। रक्षा करना।
बचाव—पु० रक्षा, छुटकारा।
बच्चा—पु० बालक, शिशु। वि० अज्ञान।
बच्चादान—पु०, बच्चादानी—स्त्री० गर्भाशय।
बच्छ—पु० वत्स, बच्चा, बछड़ा 'निरखि बच्छ जिमि धेनु लवाई।' रामा० ५३९। ढाल 'सनमुख धाउ बच्छपर ओढ़ौ।' छत्र० १३३, (९८ भी)
बच्छल—वि० वत्सल, स्नेह या अनुग्रह करनेवाला।
बच्छस—पु० वक्षस्थल।
बच्छा, बछ—पु० बछड़ा (उदे० 'कमरिया')।
बछड़ा—पु० गायका बच्चा।
बछरा, बछरुवा, बछरू—पु० बछड़ा 'माखन खाइ जगाइ बालकन्ह बनचर सहित बछरुवा छोरी।' सूबे० ६५, 'बछरा न पीवैं छीर...'—सू० ८४
बछल—वि० देखो 'बच्छल'।
बछवा, बछा—पु० बछड़ा 'जमुनाजल थकित भयो बछा न पीवें छीर।' सूर० मदन०
बछेड़ा—पु० घोड़ीका बच्चा।
बछेरू—पु० बछड़ा, बच्चा 'केशोदास मृगज-बछेरू चोपैं बाघिनीन, चाटत सुरभि बाघबालक बदन है।' राम० ५१८
बजंत्री—पु० बाजा बजानेवाला 'अहे बजंत्री हरिन-भ्रम कहा बजावै बीन।' दीन० २३९
बजका—पु० एक तरहकी बड़ी पकौड़ी।
बजट—पु० आय-व्ययका अनुमान-पत्र।
बजड़ा—पु० एक तरहकी पटी हुई नाव। बाजरा।
बजना—अक्रि० शब्द निकलना। आघात पड़ना। हठ करना। जाहिर होना, प्रसिद्ध होना 'नाहीं कछु फलफूल तो बज्यो नाम मंदार।' दीन० ९९
बजनियाँ, बजनिहाँ—पु० बाजा बजानेवाला।
बजबजाना—अक्रि० सड़ने इ० के कारण झागका उठना।
बजमारा—वि० वज्राहत, जिसपर वज्र पड़ा हो। दुष्ट 'नास होइ अक्रूर क्रूर तेरो बजमारे।' सत्यना०
बजरंग—वि० वज्रके समान शरीरवाला। पु० महावीरजी।
बजर—पु० वज्र।
बजरबट्टू—पु० एक फल।
बजरा—पु० देखो 'बजड़ा'।
बजरी—स्त्री० छोटा कँगूरा। कंकड़ी। ओला।
बजरागि—स्त्री० वज्राग्नि, बिजली।
बजवैया—वि० बजानेवाला।
बजा—वि० उचित। बजा लाना = पालन करना।
बजागि, बजागिन—स्त्री० वज्राग्नि, बिजली 'तेहिके जरत जो उठै बजागी। तीनिउँ लोक जरैं तेहि लागी।' प० ५५, (प० १७०)
बजाज—पु० कपड़ेका व्यापारी।
बजाजा—पु० वह जगह जहाँ बजाजोंकी दूकानें हों।
बजाना—सक्रि० चोट पहुँचा कर शब्द उत्पन्न करना, चोट पहुँचाना। पूरा करना। बजाकर = डंका पीटकर, [प्रकट रूपसे।
बजाय—अ० बदलेमें, स्थानपर।
बजार—पु० हाट।
बजारी, बजारू—वि० हाट सम्बंधी। मामूली।
बज्जर, बज्र—पु० वज्र।
बझना—अक्रि० फँसना, बँधना, टेक करना।
बझाउ—पु० अटकाव, उलझन (विन० ४३८)।
बझाना, बझावना—सक्रि० फँसाना।
बझाव—पु०, बझावट—स्त्री० देखो 'बझाउ'।
बट—पु० वट वृक्ष। बटा, गोल वस्तु। रस्सीकी ऐंठन। बड़ा नामका पकवान। बटखरा। बाट, मार्ग। बाँट, हिस्सा '...मृदु मुसकनि मेरे बट आई।' नारायण स्वामी
बटई—स्त्री० बटेर।
बटखरा—पु० लोहे इ० का बना तौलनेका टुकड़ा, बाँट।
बटन—पु० सीप इ० की बनी घुंडी। स्त्री० ऐंठन।
बटना—सक्रि० ऐंठना, ऐंठन देकर मिलाना। अक्रि० पिसना 'बटै कुटै न तजै तऊ केसर रंग सुवास।' रतन० ११। पु० उबटन।
बटपरा, बटपार, बटमार—पु० लुटेरा, डाकू 'तौ ग्राम लोक सबै जग जातो जु काम बड़ो बटपार न हो तो।' के० ६५, (बटपार, प० २२३), 'मन धन लूटत सहज मैं लाल बटपरा नैन।' रतन० ३०
बटपारी—स्त्री० लूट, डकैती (प० २२३, सुन्द० १९)।
बटला—पु० बटलोई, देगची।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बटली, बटलोई—स्त्री० बटुई, पतीली, देगची।
बटवार—पु० रास्तेपर चौकसी करनेवाला, रास्तेका कर लेनेवाला।
बटा—पु० गेंद, गोला 'सोहत है अध ऊरध ऐसे। होत बटा नटको नभ जैसे।' के० ३७०, (दास १६६)। ढेला। बटाऊ, पथिक।
बटाऊ—पु० बटोही, पथिक 'सहज बटाऊ बाटके मिलि मिलि बिछुरत जाहिं।' सहजोबाई
बटाक—वि० बड़ा।
बटाना—अक्रि० रुक जाना, पटा जाना 'सात दिवस जल बरसि बटान्यो···'—सू०
बटिया—स्त्री० छोटा गोला, लोदिया। रास्ता 'जाकी जिभ्या बंद नहिं हिरदे नाहीं साँच। ताके सँग ना लागिए, घालै बटिया काच।' साखी ११२
बटी—स्त्री० गोली। बाटिका। एक पकवान, 'बरी'।
बटुआ—पु० गोल थैली। बटलोई।
बटुक—पु० ब्रह्मचारी, विद्यार्थी। लवंग।
बटुरना—अक्रि० संचित होना, इकट्ठा होना, सिमटना।
बटुवा—दे० 'बटुआ'। एक तरहका मांस (प० २७१)।
बटेर—स्त्री० लवाकी तरहकी एक चिड़िया।
बटोर—पु० जमाव, समूह।
बटोरना—सक्रि० एकत्र करना, समेटना (उदे० 'साग')।
बटोहिया, बटोही—पु० पथिक (सू० ३२)।
बट्ट—पु० गेंद, बटा। ऐंठन, शिकन। बटखरा।
बट्टा—पु० दस्तूरी (सू० ११)। घाटा, कमी। पत्थरका टुकड़ा, लोढ़ा।
बट्टा खाता—पु० डूबी हुई रकमकी मद।
बट्टी—स्त्री० कूटने इ० का छोटा पत्थर। बड़ी टिकिया।
बट्टू—पु० धारीदार चारखाना। बजरबट्टू। बटा, गोला 'नागरिया जगमें वे उछरत, जेहि विधि नटके बट्टू।' नागरी०
बड़—पु० वट वृक्ष। बकवाद। वि० बड़ा।
बड़क—क्रिवि० बढ़कर 'कायर बहुत पमावही, बड़क न बोलै सूर।' साखी २४
बड़का—वि० बड़ा।
बड़प्पन—पु० महत्ता, श्रेष्ठत्व, बड़ाई।
बड़ बड़—स्त्री० प्रलाप, बक बक।
बड़बड़ाना—अक्रि० बक बक करना।
बड़बेरी—स्त्री० जंगली बेर।
बड़बोल—वि० ज्यादा बातें करनेवाला, डींग हाँकनेवाला (उदे० 'कूट')।
बड़भागी—वि० भाग्यवान्।
बड़रा—वि० बड़ा 'ज्यों बदरी अँखियाँ निरखि आँखिनको सुख होत।' रहीम १५
बड़वागि, बड़वाग्नि, बड़वानल—पु० समुद्रके भीतरकी अग्नि।
बड़वार—वि० बड़ा।
बड़वारी—स्त्री० बड़प्पन, बड़ाई। 'भनत परस्पर वचन सकल ऋषि नृप बिदेह बड़वारी।' रघु० ८२
बड़हन—पु० धानका एक भेद (प० २७१)।
बड़हर, बड़हल—पु० एक फल।
बड़हार—पु० पाणिग्रहणके दूसरे दिनका भोज।
बड़ा—पु० उर्दकी पीठीका बना एक पकवान। वि० विशाल, दीर्घ। वय, गुण, परिमाण, पद आदिमें अधिक या श्रेष्ठ। महत्त्वका, बढ़कर।
बड़ाई—स्त्री० बड़प्पन, उन्नता, प्रशंसा।
बड़ी—स्त्री० बरी, कुम्हड़ौरी।
बड़ेरर—पु० बवंडर, अंधड़।
बड़ेरा—वि० बड़ा, (उदे० 'अनेरा'), प्रधान। पु० छाजनके बीचकी लकड़ी।
बड़ौना—पु० प्रशंसा, बड़ाई (प० १४०)।
बढ़—स्त्री० बढ़ती। वि० बढ़ा हुआ।
बढ़ई—पु० लकड़ीका काम करनेवाला।
बढ़ती—स्त्री० वृद्धि। अधिकता।
बढ़ना—अक्रि० परिमाण आदिमें अधिक होना, उन्नति करना, अग्रसर होना। दूकान आदिका बन्द किया जाना। (दीपक) बुझना 'बारे उजियारो लगै, बढ़े अँधेरो होय।' रहीम १६
बढ़नी—स्त्री० पेशगी अन्न या रुपया। झाड़ू (उदे० 'कतवार')।
बढ़ाना—सक्रि० वृद्धि करना, फैलाना, आगे ले जाना, परिमाण आदिमें अधिक करना। बंद करना, बुझाना। अक्रि० चुक जाना, खतम हो जाना।
बढ़ावा—पु० प्रोत्साहन।
बढ़िया—वि० उत्तम, सुन्दर, बहुमूल्य। पु० बाद 'जिनहिं छाँड़ि बढ़िया महँ आये, ते बिकल भये जदुराय।' [ब्र० १४५
बढ़ेला—पु० जंगली सुअर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बढ़ैया—पु० बढ़ई। वि० बढ़ानेवाला।
बढ़ोतरी—स्त्री० उन्नति, बढ़ती।
बणिक, बणिज—पु० बनिया, व्यापारी।
बतक, बतख—स्त्री० एक जल-पक्षी।
बतकहाव—पु० कहा-सुनी, बातचीत।
बतकही—स्त्री० बातचीत, चर्चा 'एहि विधि होत बतकही, आये बानर यूथ।' रामा० ४०६
बतचल—वि० बढ़ी बढ़ी बातें कहनेवाला, बकवादी (भ्र० ५०)।
बतबढ़ाव—पु० बात बढ़ाना, झगड़ा बढ़ाना।
बतर—वि० बदतर, खराब '...एक नर ऊसर काँकरतें बतर हैं।' दीन० १५६
बतरस—पु० बात कहने सुननेका शौक 'बतरस लालच लालकी मुरली धरी लुकाय।' बि० १९५
बतराना—अक्रि० बातचीत करना 'हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतराति।' सूबे० १३३, (उदे० 'काहीं')। सक्रि० बतलाना 'सो बतराय देहु ऊधो हमें, तुम हू तौ अति निपट सयाने।' भ्र० १२९
बतरौंहा—वि० बातचीतके लिए इच्छुक।
बतलाना, बताना—सक्रि० समझाना, दिखाना, जताना। अक्रि० देखो 'बतराना'।
बतास—स्त्री० वात रोग। वायु 'ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा। बुद्धि बिकल भई बिषय बतासा।' रामा० ६०८
बताखा—पु० एक मिठाई (उदे० 'चौंवरी')। बुलबुला 'कछु दिन भोजन वारि बतासा।' रामा० ४६
बतिया—पु० छोटा नरम फल (उदे० 'कुम्हड़ा')।
बतियाना—अक्रि० बतराना, बात करना।
बतियार—स्त्री० वार्त्तालाप।
बतीसी—स्त्री० बत्तीसो दाँत 'जस भादौं-निसि दामिनि दीसी। चमकि उठै तस बनी बतीसी।' प० ४७
बतौर—क्रिवि० समान। तरहपर।
बतौरी—स्त्री० सूजन, ददौरा 'उर पर कुच नीके लगैं अनत बतौरी आहि।' रहीम १५
बत्ती—स्त्री० रुई, कपड़े आदिका पतला लम्बा टुकड़ा, बर्ति। चिराग़।
बत्तीसी—स्त्री० देखो 'बतीसी'।
बथुआ—पु० एक साग।
बद—वि० बुरा। स्त्री० गिलटी। बदला।
बदन—पु० मुख। कथन। शरीर।
बदनसीब—वि० भाग्यहीन, बदक़िस्मत।
बदना—सक्रि० कहना 'विप्र बदत बहु बदि बदि बाता।' रघु० १९४। मान लेना, ठहराना, महत्व देना, समझना, गिनना 'माई री मुरली अति गर्व काहू बदति नाहीं आजु।' सू० ९२, 'प्रेम बदौं प्रहलादहिको जिन पाइनतें परमेश्वर काढ़े।' कवित्ता० २३४। होड़ लगाना 'नैनन होड़ बदी बरषा सों।' सू० २५९। निश्चित करना 'जो मधुपुरी गमन तुम पहिलेहि, बदि राखी मनमाहीं।' हरि०
बदनामी—स्त्री० अपयश, कलंक (उदे० 'तोत')।
बदनीयत—वि० जिसकी नीयत खराब हो। धोखेबाज़।
बदबूदार, बदबोयदार—वि० दुर्गंधयुक्त।
बदमाश—वि० दुराचारी, नीच, दुष्ट।
बदरंग—वि० बुरे रंगवाला, विवर्ण, भद्दा। पु० जिस रंगका (ताशका) पत्ता चलना चाहिये उससे भिन्न।
बदर—पु० कपास। बेरका वृक्ष या फल 'बिल्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा।' रामा० २५९
बदराई—स्त्री० बदली (उदे० 'गेरुई')।
बदरा—पु० बादल, मेघ (सू० ४, उदे० 'बदराह')।
बदराह—वि० कुमार्गी, दुष्ट 'बदाबदी जिय लेत हैं ये बदरा बदराह।' वि० ३२
बदरी—स्त्री० बेरका वृक्ष या फल। बदली, बादल 'ससि मनु बदरी ओटते दुरि दरसत यहि भाँति।' चाचा हित०
बदरौंह—वि० कुमार्गगामी।
बदलना—सक्रि० परिवर्त्तन करना, उलटा करना, विनिमय करना। अक्रि० परिवर्त्तित होना।
बदला—पु० पलटा, प्रतिकार, प्रतिफल, विनिमय।
बदली—स्त्री० मेघमाला। तबदीली।
बदशकल,-सूरत—वि० बेडौल, कुरूप, बेडंगा।
बदस्तूर—क्रिवि० ज्योंका त्यों, मामूली तौरपर।
बदहजमी—स्त्री० अजीर्ण, कुपच।
बदहवास—वि० बेहोश, त्रस्त, व्याकुल।
बदाबदी—स्त्री० होड़ाहोड़ी (उदे० 'बदराह', पृष्ठ ११९)।
बदि—स्त्री० बदला। अ० बदलेमें, वास्ते, 'हम [नरेश सबकी बदि आये।' रघु०]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बदी—स्त्री० बुराई। कृष्णपक्ष।
बदूख—स्त्री० बंदूक।
बदौलत—क्रिवि० कारणसे, कृपासे।
बद्दर, बद्दल—पु० बादल, मेघ।
बद्ध—वि० बँधा हुआ, निर्दिष्ट।
बद्धी—स्त्री० एक गहना। रस्सी।
बध—पु० हत्या, हिंसा।
बधना—सक्रि० मार डालना 'उतरु देत मोहि बधब अभागे।' रामा० ३७७, (सूरा० ३८)। पु० टोंटीदार लोटा।
बधाई—स्त्री० हर्ष-सूचक वचन या संदेशा। मंगलाचार, पुत्र-जन्मादिके समयका उत्सव। शुभ अवसरका उपहार। आनन्दोत्सव।
बधाना—सक्रि० वध कराना (सु० २२९)।
बधाया—पु० देखो 'बधावा'।
बधावना, बधावा—पु० पुत्र-जन्मादिके समय आनेवाला उपहार। मंगलाचार। बधाई।
बधिक—पु० व्याधा, हत्यारा।
बधिया—वि० नपुंसक किया हुआ (पशु)।
बधियाना—सक्रि० बधिया बनाना।
बधिर—वि० बहरा, श्रवणशक्तिहीन।
बधू—स्त्री० बहू, पतोहू। पत्नी।
बधूक—पु० बंधूक, गुलदुपहरिया।
बधूटी—स्त्री० पतोहू। सुहागिन स्त्री।
बधूरा—पु० बवण्डर, अंधड़ (सुन्द० ५९)।
बधैया—स्त्री० देखो 'बधाई'। मंगल वाद्य 'कोशलपुर बाजै बधैया।' रघु० २७
बन—पु० जंगल, बाग। पानी। कपासका पेड़।
बनउर—पु० बिनौला। ओला।
बनकंडा—पु० जंगलमें गोबरके आपसे आप सूख जानेसे बना हुआ कंडा।
बनक—स्त्री० बाना, वेष। बनावट। 'कासों जाय बरनी बनक नाऊ-बेसरिकी ललित विलोकनि पै विविध विलास है।' ललित० १५५
बनखंड—पु० बनका कोई भाग, जंगली स्थान।
बनगरी—स्त्री० एक मछली (प० २६९)।
बनचर—पु० बनमें रहनेवाला पशु या आदमी। जलचर।
बनज—पु० वाणिज्य। कमल।
बनजना—सक्रि० व्यापार करना 'जब हम बनजी लौंग सुपारी...' कबीर १८७
बनजात—पु० कमल।
बनजारा—पु० बैलोंपर अन्न लादकर बेचनेवाला, व्यापारी (अ० १३)।
बनजी—पु० व्यापारी। व्यापार 'कोइ खेती कोइ बनजी लागै, कोई आस हथ्यार की।' सुन्द० (कबी० ३२१)
बनत—स्त्री० बनावट। मेल, सामंजस्य। एक तरहकी बेल।
बनताई—स्त्री० बनकी भयंकरता।
बनतुलसी—स्त्री० बर्बरी या बबई नामका पौधा।
बनद—पु० जलद, बादल।
बनधातु—स्त्री० गेरू, रंगीन मिट्टी (सूबे० २४३)।
बनना—अक्रि० निर्मित होना, रचा जाना, दुरुस्त होना, हो सकना 'वह सोभा सु समाज सुख कहत न बनइ खगेस।' रामा० ५४३। निभना, पटना। स्वांग रचना, सजना 'प्रात भये सब भूप, बनि बनि मंडपमें [गये।' राम० १२७
बननि—स्त्री० बनावट, सिंगार।
बननिधि—पु० जलधि, समुद्र।
बननी—स्त्री० देखो 'बनीनी'।
बनपट—पु० छालका बना कपड़ा।
बनपती—पु० वनस्पति।
बनबारी—स्त्री० बनकन्या, पुष्पवाटिका (राम० १९)।
बनबासी—पु० बनमें रहनेवाला।
बनबाहन—पु० नौका।
बनबिलाव—पु० बिल्लीकी तरहका एक वन्य पशु।
बनमानुस—पु० मनुष्य जैसी आकृतिवाला एक प्राणी।
बनमाला—स्त्री० तुलसी, मंदार, पारिजात, कुंद तथा कमलकी बनी हुई माला।
बनमाली—पु० कृष्ण, विष्णु। बादल। बनोंकी मालासे †
बनर—पु० एक हथियार। [† युक्त प्रदेश।
बनरखा—पु० बनकी रखवाली करनेवाला। एक जंगली जाति।
बनराँव—पु० बड़ा जंगल, बड़ा वृक्ष (उदे० 'कुटका')।
बनरा—पु० दूल्हा। विवाह-समयका गीत। बंदर 'सिंधु तरयो उनको बनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।' राम० ४०८
बनराज, बनराय—पु० सिंह। बड़ा वृक्ष।
बनरी—स्त्री० दुलहिन, नववधू। बँदरिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बनरुह—पु० कमल । जंगली वृक्ष ।
बनवना—सक्रि० देखो 'बनाना' ।
बनबसन—पु० छालका बना कपड़ा ।
बनवारी—पु० श्रीकृष्ण ।
बनसी—स्त्री० मुरली । मछली फँसानेका काँटा (उदे० 'चारा', रामा० ५०४) ।
बना—पु० दूल्हा ।
बनाइ, बनाय—क्रिवि० भलीभाँति 'गिद्ध ताको देखि धायो लख्यो सूर बनाइ ।' सूरा० २३ । बिलकुल ।
बनाउ—पु० बनाव, सजावट (उदे० 'अछवाई') । उपाय ।
बनाउरि—स्त्री० बाणावली, तीरोंकी पंक्ति या निरन्तर वर्षा ।
बनात—स्त्री० एक ऊनी कपड़ा ।
बनाना—सक्रि० रचना, तैयार करना, पूरा करना, सुधारना, सजाना ।
बनाबंत, बनाबनत—पु० जन्मपत्रियोंका मिलान ।
बनाम—अ० नामसे, नामपर ।
बनाय—क्रिवि० भलीभाँति, पूर्णतया ।
बनाव—पु० युक्ति । बनावट, सजावट, तैयारी 'देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बरातिन्ह हने निसाना ।' रामा० १६४, '...कहा चलै कर करहु बनावा ।' [रामा० ४३२
बनावट—स्त्री० रचना, आडम्बर ।
बनावटी—वि० नकली, मिथ्या ।
बनावरि—स्त्री० देखो 'बनाउरि', (प० ४६) ।
बनासपाती—स्त्री० वनस्पति, फलफूलपत्रादि '...नासपाती खाती ते बनासपाती खाती हैं ।' भू० १५५
बनि—स्त्री० पारिश्रमिक, मजूरी 'आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ।' रामा० २४८
बनिज—पु० व्यापार 'बनिज करति हम सौं झगरति हौ कहा कहैं हम बहुत सही ।' सूबे० १४२ । सौदा (उदे० 'झूरै') ।
बनिजना—सक्रि० व्यापार करना, मोल लेना 'गातन ही दिखराइ बटोहिनि बातनिही बनिजै बनिजारी ।' रवि० ३३
बनिजारा—पु० देखो 'बनजारा', (प० ३३) ।
बनित—स्त्री० वेश, सजावट ।
बनिता—स्त्री० स्त्री । पत्नी ।
बनिया—पु० वणिक्, व्यापारी ।
बनिहार—पु० खेत जोतने, फसल रखाने इ० के लिए नियुक्त मजूर ।
बनी—स्त्री० वनस्थली, वाटिका 'अति चंचल जहँ चलदलै बिधवा बनी न नारि ।' राम० ३२ । मजूरी । दुलहिन, नायिका (छत्र० ७१) । पु० बनिया ।
बनीनी—स्त्री० बनियेकी स्त्री ।
बनीर—पु० बेंत ।
बनूक—स्त्री० बन्दूक (विद्या० २६१) ।
बनैला—वि० जंगली ।
बनोवास—पु० बनवास (प० ८२) ।
बनौटी—वि० कपासी 'दुति लपटनि पट सेतहू करति बनौटी रंग ।' वि० १३८
बनौरी—स्त्री० ओला । [बनौटी रंग ।' वि० १३८
बनौवा—वि० बनावटी, झूठा ।
बप—पु० बाप (भू० १५१) ।
बपना—सक्रि० बपन करना, बोना ।
बपमार, बपुमार—वि० बापको मारनेवाला 'अंगद संग ले मेरो सबै दल आजुहिं क्यों न हतै बपुमारे ।' राम० ४११
बपु, बपुख—पु० अवतार । शरीर (राम० १) ।
बपुरा—वि० बेचारा (उदे० 'उनमेद', 'अनाथ'), 'मनसा करि सुमिरेउ गज बपुरो ग्राह परम गति पावै ।' सूबे० १३, 'कहा कीट बपुरे नरनारी ।' रामा०
बपौती—स्त्री० बापसे मिली हुई सम्पत्ति ।
बफारा—पु० भाफ 'न्यारो न होत बफारो ज्यों घूमतें...' दास १६६ । भाफसे शरीर सेकनेकी क्रिया ।
बबकना—अक्रि० उत्तेजित होकर बोलना, उछलना 'जानि रिपु हानि तजि कानि यदुराजकी, बबकि उठि फूलि बसुदेव रैया ।' सू० १९४
बबर—पु० सिंह, बड़ी जातिका शेर ।
बबा—पु० बाबा, पिता, दादा ।
बबुआ—पु० बेटे या दामाद आदिका संबोधन ।
बबुर, बबूल—पु० एक काँटेदार पेड़ ।
बबूला—पु० तूफान । बुलबुला ।
बमकना—अक्रि० कूदना-फाँदना, शेखी मारना ।
बमना—सक्रि० बमन करना (उदे० 'ढनमनना') ।
बमीठा—पु० बाँबी ।
बय—पु० वय, उम्र ।
बयन—पु० बैन, वचन, वाणी ।
बयना—सक्रि० बोना 'ऊसर बीज बये फल जथा ।' रामा० ४४५ । बहना, चलना 'विषय बिकार दवानल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपजी, मोह बयार बई।' सू० १७। वर्णन करना 'गावत चलीं भीर भइ बीथिन्ह बंदिन्ह बाँकुरे बिरद बये।' गीता० २७२। अक्रि० आरोपित होना, लगना 'ऊधो, जोग की गति सुनत मेरे अंग आगि बई।' भ्र० ८६। पु० वह पकवान आदि जो संबंधियों तथा मित्रोंके यहाँ भेजा जाय।

बयर—पु० वैर, शत्रुता 'हमरे बयर तुम्हउ बिसराई।' रामा० ४०, (उदे० 'निबाहना', 'पाछिल')

बयस—स्त्री० उम्र। बयसवाला = युवक।

बयस सिरोमनि—पु० यौवन।

बया—पु० एक पक्षी। अनाज तौलनेवाला 'प्रेम नगर मै दग बया नोखे प्रगटे आइ। दो मनकौं कर एक मन भाव दियो ठहराय।' रतन० ५१, (प० १७३)

बयान—पु० वर्णन, हाल, कथन। मुख, बदन (विद्या० ३६)।

बयाना—पु० सौदा आदि पक्का करनेके लिए दी हुई रकम।

बयार, बयारि—स्त्री० हवा, बतास (उदे० 'डाढ़ना')।

बयारी—स्त्री० रात्रिका भोजन। हवा।

बयाला—पु० दीवारमेंका छेद, ताख।

बरंगा—पु० छत पाटनेकी पटिया (के० १७४)।

बर—पु० बल, शक्ति 'देख्यो मैं राजकुमारनको बर।' राम०६३, (उदे० 'आँटना')। बड़, बटवृक्ष (उदे० 'तर'), 'तन तौ तिबाको बर माँवरे भरत मन साँवरे बदन पर भाँवरे भरत है।' ललित० ८०। वर, दूल्हा। वरदान, आशीर्वाद। वि० श्रेष्ठ। पूर्ण। अ० बल्कि, चाहे 'फीको परै न बर फटै रंग्यो लोह रँग चीर।' बि०२७४, बंग०

बरई—पु० तमोली।

बरकत—स्त्री० बहुतायत, लाभ, कृपा, अन्त।

बरकना—अक्रि० बचना, हटना।

बरकाज—पु० विवाह।

बरकाना—अक्रि० बचाना, रोकना। पिंड छुड़ाना।

बरख—पु० वर्ष, साल।

बरखना—अक्रि० वृष्टि होना, बरसना। सक्रि० वर्षा करना 'कुसुमाञ्जलि बरखत सुर ऊपर सूरदास बलि जाई।' सू० ८५

बरखा—स्त्री० वृष्टि, वर्षा ऋतु।

बरखाना—सक्रि० वर्षा करना, ऊपरसे गिराना।

बरखास, बरखास्त—वि० मौकूफ विसर्जित, 'करि भूपति दूतन बिदा सभा कियो बरखास।' रघु० १३२

बरगद—पु० वटवृक्ष।

बरच्छा—स्त्री० देखो 'बरेच्छा'।

बरछा—पु०,-छी—स्त्री० भाला।

बरछैत—पु० बरछा चलानेवाला।

बरजना—सक्रि० रोकना (उदे० 'जुरना', 'झहरना')। हटकना (उदे० 'करोंट')।

बरजोर—वि० प्रबल, जबरदस्त 'ये बरजोर तुरंग लौं ऐंचत ही चलजाहिं।' बि० २५२। क्रिवि० बलपूर्वक।

बरजोरी—स्त्री० जबरदस्ती। क्रिवि० बलपूर्वक।

बरत—पु० उपवास। रस्सी (रतन० २९)।

बरतन—पु० पात्र, भाँड़ा।

बरतना—अक्रि० व्यवहार करना (साखी १४१)। सक्रि० व्यवहारमें लाना।

बरतरफ—वि० अलग, किनारे, अलग किया हुआ, मौकूफ।

बरतोर—पु० बालतोड़, बाल टूटनेके कारण हुआ फोड़ा (उदे० 'पाक')।

बरद, बरदा—पु० बरधा, बैल 'बर बौराह बरद असवारा।' रामा० ५७

बरदिया, बरधिया—पु० चरवाहा।

बरधाना—सक्रि० गाय आदिका गर्भ धारण कराना। अक्रि० गाय इ० का सगर्भ होना।

बरन—पु० रंग (उदे० 'अवरेखना')।

बरनना—सक्रि० वर्णन करना 'बनै न बरनत नगर निकाई।' रामा० ११८

बरना—सक्रि० वरण करना, पति या पत्नी रूपमें स्वीकार करना 'लछिमन कहा तोहि सो बरई।' रामा० ३७१। नियुक्त करना, निमंत्रित करना 'बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुम्ब समेत।' रामा० ९६। अक्रि० जलना (उदे० 'झाँखर', 'बुताना')।

बरनेत—स्त्री० विवाहकी एक रीति।

बरबंड—वि० प्रबल, प्रचंड, उद्धत।

बरबट, बरबस—क्रिवि० हठात्, बलपूर्वक, 'बरबस बेधत मो हियो तो नासाको बेध।' बि० १७ (बंग), 'नैन मीन। ये नागरनि बरबट बाँधत आइ।' मति० १७८। व्यर्थ।

बरबर—स्त्री० बड़बड़, बकबक। पु० अशिष्ट मनुष्य।

बरबाद—वि० नष्ट, चौपट।

बरम—पु० कवच।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बरमा—पु० छद करनेका औज़ार (प० १५२)।
बरम्हाउ—दे० 'बरम्हाव', (उदे० 'अभाऊ')।
बरम्हाना, बरम्हावना—सक्रि० दुवा देना 'दाहिन हाथ उठाएउँ ताही। और को असँ बरम्हावौं जाही।'
बरम्हाव—पु० आशीर्वाद। ब्राह्मणत्व। [प० १२३
बररै—पु० एक कीड़ा, तितैया 'बररै बालक एक सुभाऊ।'
बरवट—स्त्री० पिलही, तिल्ली। [रामा० १'११
बरषना—अक्रि० वृष्टि होना। सक्रि० वृष्टि करना।
बरषा—स्त्री० वृष्टि। वर्षाऋतु।
बरषासन—पु० एक वर्षके खाने योग्य भोजन-सामग्री
बरस—पु० वर्ष। [(रामा० २३७)।
बरसगाँठ—स्त्री० जयन्ती, सालगिरह।
बरसना—अक्रि० वृष्टि होना, जलकी तरह ऊपरसे गिरना, टपकना। स्पष्टतः छलकना।
बरसात—स्त्री० वर्षाऋतु।
बरसाना—सक्रि० वर्षा करना, ऊपरसे टपकाना।
बरसी—स्त्री० मृत्युके एक वर्ष बादका श्राद्ध।
बरहा—पु० मोटा रस्सा। सिंचाईकी नाली।
बरही—स्त्री० सन्तानोत्पत्तिके बाद बारहवें दिनकी एक रस्म। लकड़ीका भार। पु० मोर 'बरही मुकुट इन्द्र धनु मानहुँ तड़िन दसन छवि लाजत।' सू० ८९
बरहीपीड़—पु० मोरमुकुट।
बरहीमुख—पु० देवता।
बरहौं—पु० बच्चा होनेके बादका बारहवाँ दिन।
बरा—पु० उड़दकी पीठीका बना एक पकवान (उदे० 'अनगनियाँ')।
बराक—वि० शोचनीय, बेचारा, अधम, तुच्छ 'महावीर बाँकुरे बराकी बाहुपीर क्यों न लंकिनी ज्यों लात घात ही मरोरि मारिये।' कविता० २५८
बराट—स्त्री० कौड़ी (दीन० २५२)।
बरात—स्त्री० विवाहका जुलूस।
बराती—पु० वर-पक्षवाला (उदे० 'धुकधुकी')।
बराना—अक्रि० अलग करना। बचाना (उदे० 'उबकौहा'), 'सीयराम पद अंक बराये। लषन चलहिं मग दाहिन बाँये।' रामा० २५८। सक्रि० चुनना, छाँटना। 'कौने देव बराह बिरदहित हठि हठि अधम उधारे।' विन० २६१। जलाना। अक्रि० जलना 'नैन दीउ नहिं दिया बराहीं।' प० १७५
बराबर—वि० समान, तुल्य, एकसा, ठीक, समतल। क्रिवि० लगातार, हमेशा। अ० तक, पर्यन्त 'ज्वाला देखि अकास बराबरि दसहुँ दिसा कहुँ पार न पाइ।' सू० ८१
बरामद—वि० निकाला हुआ, पाया हुआ। स्त्री० आमदनी, निकासी।
बरामदा—पु० दालान।
बरन—पु० विवाह-समयका कंकन (रामल० न०)।
बराव—पु० निवारण, बचाव।
बराह—पु० सुअर।
बरिआई, बरियाई—क्रिवि० हठात्, बलपूर्वक 'तब हम जाइ सिवहि सिर नाई। करवाउब विवाह बरिआई।' रामा० ५०
बरिआता—स्त्री० बरात 'जमकर धार किधौं बरिआता।' रामा० ५७
बरिआर, बरियार—वि० प्रबल, बलवान् 'तपबल बिप्र सदा बरिआरा।' रामा० ९२, (उदे० 'निमरोसी')
बरिच्छा—स्त्री० बरच्छा, फलदान।
बरिबंड—वि० देखो 'बरबंड', (रामा० ३७७)।
बरिया—वि० बली, बलवान्।
बरिल—पु० एक पकवान। [❀ रामा० २०१
बरिस—पु० वर्ष 'जियहु जगतपति बरिस करोरी।' ❀
बरी—स्त्री० मूँग आदिकी पीठीकी बनी खाद्य-वस्तु-विशेष (उदे० 'अनगनियाँ')। वि० बली, बलवान् (सूबे० २८८)। बचा हुआ, मुक्त।
बरीस—पु० वर्ष (प० २१९)।
बरीसना—अक्रि० वर्षा होना। [† दुलहा।
बरु—अ० चाहे, भलेही (उदे० 'कुँआरा')। पु० वर, †
बरुआ,-वा—पु० उपनयन संस्कार। ब्रह्मचारी।
बरुण, बरुन—पु० जल-देवता।
बरुनी—स्त्री० बरौनी, पलकके बाल।
बरूथ—पु० समूह, झुण्ड।
बरेंड़ा—पु०, बरेंड़ी—स्त्री० छाजनके बीचकी लकड़ी, खपरैलके बीचका ऊँचा हिस्सा। [‡ बड़ेमें।
बरे—क्रिवि० बलपूर्वक। उच्च स्वरसे। अ० के लिए, ‡
बरेखी, बरेच्छा—स्त्री० वर या कन्याको देखना, सगाई 'तैसी बरेखी कीन्हि पुनि मुनिसाप स्वारथ बावरी।' पा० मं०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बरेज, बरेजा—पु० पानकी बाढ़ी।
बरेखी—स्त्री० देखो 'बरेखी', (रामा० ४९)।
बरोक—पु० फलदान, वर रोकनेके लिए दिया गया द्रव्य 'मिला सो वंस अंस उजियारा। भा बरोक तब तिलक सँवारा।' प० १२९। सेना। क्रिवि० बलपूर्वक 'होइ सो बेलि जेहि बारी, आनहिं सबै बरोक।' प० ५३
बरोठा—पु० ड्योढ़ी, बैठक 'पूछि लीन्ह रनिवास बरोठा।' [प० २९५
बरोरु—वि० सुन्दर जंघावाली।
बरोह—स्त्री० बरगदकी जटा (रहीम २३)।
बरौनी—स्त्री० देखो 'बरुनी', (उदे० 'कोचर')। पानी भरने इ० का काम करनेवाली स्त्री, कहारिन (बुंदेल०)।
बरौरी—स्त्री० देखो 'बरी', (प० २७३)।
बर्णना—सक्रि० वर्णन करना (राम० ३४४)।
बर्त्तना—सक्रि० देखो 'बरतना'।
बर्त्ताव—पु० बरतनेका ढंग, व्यवहार।
बर्न—पु० वर्ण, जाति, रंग।
बर्फ—स्त्री० हिम, ठोस जमा हुआ पानी।
बर्फी—स्त्री० एक मिठाई।
बर्बर—पु० देखो 'बरबर'।
बर्राना—अक्रि० सोते समय बकना 'सपनहुमें बर्राइके धोखेहु निकरै राम।' साखी ९४। प्रलाप करना।
बर्रै—पु० तितैया नामका कीड़ा।
बलंद—वि० ऊँचा।
बल—पु० शक्ति। सहारा, आसरा। सेना। ऐंठन, टेढ़ापन। लचक, सिकुड़न। कमी।
बलकना—अक्रि० उबलना, जोशमें आना 'बलकि बलकि बोलत बचन...' —वि० १९३, (सू० १०७)
बलकर—वि० बलकारी।
बलकल—पु० वृक्षकी छाल।
बलकाना—सक्रि० खौलाना, उत्तेजित करना।
बलगना—दे० 'बलकना', (छत्र० १४४)।
बलद—पु० बरधा, बैल।
बलना—अक्रि० जलना, धधकना।
बलबलाना—अक्रि० बकना, ऊँटका बोलना।
बलबीर—पु० बलरामके भाई कृष्ण।
बलभी—स्त्री० सबसे ऊपरकी छतवाली कोठरी।
बलम—पु० पति, प्यारा।
बलमीकि—पु० बाँबी।
बलय—पु०, बलया—स्त्री० कंगन, चूड़ी 'छूटी बटभुज फूटी बलया टूटी लर फटी कंचुकी झीनी।' सूबे० ४०३
बलवंड, बलवत—वि० प्रबल, बली।
बलवा—पु० विद्रोह, विप्लव, दंगा।
बलवाई—पु० बागी, विद्रोही, उपद्रवी।
बलवान्, बलवार, बलशील—वि० शक्तिमान्, बली 'सहित बीर बानर बलवारे।' रघु० २६४
बला—स्त्री० दुःख, आपत्ति, रोग, प्रेतबाधा।
बलाइ—स्त्री० देखो 'बला' तथा 'बलाय', 'बारबार मुख निरखि जसोदा पुनि पुनि लेत बलाइ।' सूबे० ५४
बलाक—पु० बगला (सू० ९४)।
बलात्कार—पु० जबरदस्ती, अन्याय।
बलाय—स्त्री० दुःख, विपत्ति (उदे० 'तर')। प्रेतबाधा, पीछा न छोड़नेवाला रोग या शत्रु। —करे, —चाहे = नहीं करेगा।—लेना = किसीकी बलाएँ अपने ऊपर लेना, मंगल चाहना।
बलाहक—पु० बादल।
बलि—स्त्री० देवताको उत्सर्ग किया गया पदार्थ, चढ़ावा। भक्ष्य। देवार्पित पशु। पूजाकी सामग्री। राजकर। सखी। —जाना = निछावर होना 'तात जाउँ बलि बेगि नहाहू।' रामा० २२४
बलित—वि० बलिदान किया हुआ। वलित।
बलिदान—पु० यज्ञादिके लिए पशुवध।
बलिहारना—सक्रि० बलि चढ़ाना, निछावर करना।
बलिहारी—स्त्री० निछावर, आत्मोत्सर्ग।
बली—वि० शक्तिमान्, पराक्रमी। स्त्री० सिकुड़न। लता 'रोमावली त्रिबली उर परसत, बस चढ़ै नट काम बली री।' सू० ११०
बलीमुख—पु० मर्कट, बंदर (राम० ३६६)।
बलुआ—वि० रेतीला।
बलैया—स्त्री० बलाय (सूबे० ६१)।
बल्कि—अ० किन्तु, प्रत्युत, बेहतर है।
बल्लभ—पु० प्रिय व्यक्ति, पति। एक संप्रदाय। वि० अति प्रिय।
बल्लभी—स्त्री० प्रिया, वह स्त्री जो प्यारी हो, गोपी 'सुरति सँदेस सुनाय मेटो बल्लभिनको दाहु।' भ्र० ३
बल्लम—पु० सोंटा, डंडा, बरछा।
बल्लरी—स्त्री० लता (राम० २१०)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बल्लव—पु० चरवाहा।
बल्लवी—स्त्री० देखो 'बल्लभी', (मति० २२६)।
बल्ला—पु० डंडा, छड़, नाव खेनेका डाँड़ा।
बल्ली—स्त्री० देखो 'बल्ला'। लता।
बवँडना—अक्रि० व्यर्थ घूमना फिरना।
बवंडर—पु० बगूला, अंधड़।
बवघूरा—पु० बगूला।
बवन—पु० वमन, क्रै 'जौन बवन करि डारिया स्वान स्वाद करि खाय।' साखी १३९
बवना—पु० छोटे कदका मनुष्य। सक्रि० बोना (उदे० 'काँटा')। बिखराना 'तेरे राज राय दशरथके लयो बयो बिनु जोतो।' विन० ३८४। अक्रि० बिखरना।
बवरना—अक्रि० बौरना, मौर लगना।
बसंत—पु० ऋतु-विशेष।
बसंदर—पु० वैश्वानर, अग्नि (उदे० 'फरहरना'), 'राई समान बसंदरा, केता काठ जराय।' साखी ९५
बस—पु० वश, अधीनता, ज़ोर। वि० काफी, बहुत। क्रिवि० काफी, केवल इतना ही।
बसति—स्त्री० बस्ती (मति० २२५)।
बसन—पु० वस्त्र 'यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चोराई।' रामा० ३१९, (उदे० 'अंब')
बसना—अक्रि० निवास करना (उदे० 'झारि'), रहना, ठहरना (उदे० 'अंब'), आबाद होना (उदे० 'उजारना')। बैठना 'प्यार पगी पगरी पियकी बसि भीतर आपने सीस सँवारी।' रस० ६१। पु० पान इ० रखनेका कपड़ा, थैली। बरतन।
बसनि—स्त्री० निवास, बास।
बसवार—पु० तड़का, बवार, छौंक (उदे० 'बवार')। वि० सोंधा।
बसवास—पु० निवास, रहना, स्थिति, रहनेका सुभीता।
बसह—पु० बैल 'भरि भरि बसह अपार कहारा। पठवे जनक अनेक सुआरा।' रामा० १८२
बसा—स्त्री० तितैया, बर्रे (उदे० 'खीन', 'परिहस')।
बसात—दे० 'बिसात'।
बसाना—सक्रि० बसने देना, टिकाना, आबाद करना। बैठालना। अक्रि० बसना, रहना। वश चलना 'तन मन हारेहू हँसै तिनसौं कहा बसाय।' वि० ७०। गंध देना 'अगरु प्रसंग सुगंध बसाई।' रामा० १०
बसिओरा—पु० बासी भोजन। बासी भोजन करनेका दिन
बसियाना—अक्रि० बासी हो जाना।
बसीकर—वि० वशमें करनेवाला।
बसीठ—पु० दूत 'तौ बसीठ पठवत केहि काजा।' रामा० ४६४
बसीठी—स्त्री० दूतका काम 'दसमुख मैं न बसीठी आयउँ।' रामा० ४६५, (सू० १२४)
बसीना—पु० रहन।
बसु—पु० धन, सुवर्ण। आठकी संख्या। जल। अग्नि। रवि। किरण।
बसुधा, बसुमती—स्त्री० पृथिवी।
बसुरी—स्त्री० वंशी।
बसूला—पु० बढ़ईका एक औज़ार।
बसेरा—पु० ठहरनेका स्थान, वह जगह जहाँ चिड़िया रात बिताती है, घोंसला 'ना घर मेरा ना घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा है।' वास, रहना (सू० ११४)। वि० रहनेवाला।
बसेरी, बसैया—वि० बसनेवाला।
बसोवास—पु० घर, निवासस्थान।
बसौंधी—स्त्री० लच्छेदार रबड़ी।
बस्ता—पु० कपड़ेमें बँधी कागज, पुस्तकों आदिकी गठरी।
बस्ती—स्त्री० आबादी, घरोंका समूह, ग्राम।
बस्तु—स्त्री० चीज़, पदार्थ। सत्य।
बस्त्र—पु० कपड़ा।
बस्य—वि० वशमें आनेवाला, अधीन। पु० अनुचर, सेवक।
बहँगी—स्त्री० बोझ ढोनेके लिए सिकहर-युक्त पाटी, काँवर।
बहकबा—अक्रि० भूलना, भटकना, आवेशमें होना।
बहकाना—सक्रि० भुलावा देना, भटकाना।
बहतोल—स्त्री० पानी बहानेकी नाली।
बहन—स्त्री० बहिन, भगिनी। पु० बहना, झोंका 'वायुको बहन, दिन दावाको दहन, बड़ी बाड़वा अनल ज्वाल जालमें रह्यो परै।' राम० २०२
बहना—अक्रि० प्रवाहित होना, प्रभावित होकर भ्रष्ट होना। (हवाका) चलना। प्रवृत्त होना, चलना (उदे० 'छाती')। सक्रि० वहन करना, धारण करना 'एक अंडको भार बहत है गर्व धर्‌यो जिय शेष।' सू० ८०, (सू० २७८)
बहनापा—पु० बहिनका रिश्ता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बहनी—स्त्री० एक तरहकी ठिलिया। अग्नि 'वै कहियत उडुराज अमृत-मय, तजि स्वभाव मोहिं बहनि बहत।' सू० २०९

बहनु—पु० वाहन, सवारी।

बहनोई—पु० बहिनका पति।

बहनौता—पु० बहिनका पुत्र।

बहम—पु० भ्रम, शंका 'सेवक भाव सदा रहै बहम न आनै चित्त।' साखी १४१

बहर—दे० 'बाहर', 'गावत बधाई सूर भीतर बहरके।' सू० ४९

बहरा—वि० श्रवण-शक्ति-विहीन।

बहराना—सक्रि० ध्यान हटाकर मन प्रसन्न करना (सू० ७९)। भुलावा देना, फुसलाना 'सुनि कपि बचन बिहँसि बहरावा।' रामा० ४२६, 'अति विचित्र लरिकाकी नाईं गुर दिखाय बहरावहु।' अ० ११०

बहरी—स्त्री० बाजकी तरहकी एक चिड़िया 'गगन चढ़ै फिर क्यों तिरै रहिमन बहरी बाज।' रहीम १९, (उदे० 'तोम')

बहरो—वि० बहरा, जो कम सुने।

बहल—स्त्री० बैलगाड़ी 'बहल, घोड़, हस्ती सिंवली। औ सँग कुँवरि लाख दुइ चली।' प० २०, (उदे० 'झार', ब्रज० ३३९, रतन० ३५)

बहलना—अक्रि० मन लगना, मनोरंजन होना।

बहलाना—सक्रि० देखो 'बहराना'।

बहली—स्त्री० एक तरहकी परदेदार गाड़ी।

बहल्ला—पु० आनन्द।

बहस—स्त्री० विवाद, तर्क। होड़।

बहसना—अक्रि० विवाद करना, होड़ लगाना।

बहादुर—वि० वीर, उत्साही।

बहाना—सक्रि० प्रवाहित करना, ढालना, फेंकना, उड़ाना, दूर करना 'उर लै लगाइ बहाइ रिस जिय···' सू० ६९। पु० व्याज, मिस, निमित्त।

बहार—स्त्री० आनन्द, शोभा, तमाशा। वसन्तऋतु। क्रिवि० बाहर (विद्या० १५४)।

बहारना—सक्रि० झाड़ना।

बहारी, बहारू—स्त्री० झाड़ू (उदे० 'फरास')।

बहाल—वि० जैसेका तैसा, पुनर्नियुक्त। प्रसन्न, स्वस्थ।

बहाली—स्त्री० पुनर्नियुक्ति। ज्योंका त्यों होना।

बहाव—पु० बहनेकी क्रिया, प्रवाह, धारा।

बहिक्रम—पु० वय, उम्र (छत्र० ६७)।

बहित्र—पु० जहाज, नौका।

बहिन, बहिनो—स्त्री० भगिनी।

बहियाँ—स्त्री० भुजा, हाथ (उदे० 'छीका', कबीर २१५)।

बहिरंग—वि० बाहरवाला।

बहिर, बहिरा—वि० जिसे सुन न पड़े।

बहिराना—सक्रि० बाहर निकाल देना। अक्रि० बाहर हो जाना। बहिरा हो जाना।

बहिर्मुख—वि० विरुद्ध, विमुख।

बहिष्कार—पु० निकालने या हटानेकी क्रिया, त्याग।

बहिष्कृत—वि० बाहर किया हुआ, दूर किया हुआ।

बही—स्त्री० हिसाब लिखनेकी पुस्तक, खाता, पोथी।

बहीर—स्त्री० भीड़, फौजी सामान 'अब बहीर चलती करौ काल्हि पहुँचनो कोल।' सुजा० ६१। क्रिवि० बाहर।

बहुँटा—पु० बाँहका गहना 'बाँहन्ह बहुँटा टाँड सलोनी।' प० १४३

बहु—वि० बहुत, अधिक, अनेक।

बहुगुना—पु० एक तरहका चौड़े मुँहका बरतन।

बहुटनी—स्त्री० छोटा 'बहुँटा'।

बहुत—वि० अधिक, अनेक।

बहुतक—वि० बहुतसे।

बहुताइत,-ताई—स्त्री० अधिकता।

बहुतेरा—वि० अधिक। क्रिवि० बहुत प्रकारसे।

बहुत्व—पु० प्रचुरता, बाहुल्य, अधिकता।

बहुधा—क्रिवि० प्रायः, बहुत तरहसे।

बहुमत—पु० बहुतसे लोगोंकी एक राय। अनेक लोगोंके अनेक मत।

बहुमूल्य—वि० अधिक दामका।

बहुरंगा—वि० कई रंगोंका। मनमौजी। बहुरुपिया।

बहुरना—अक्रि० लौटना 'गा जुग बीत न बहुरा कोई।' प० ४२, (उदे० 'निबहुर')। फिर प्राप्त होना (रामा० ३२०)।

बहुरि, बहुरो—क्रिवि० फिर, पीछे 'कब वह मुख बहुरौ देखहुँगी।' सूबे० २७५

बहुरिया—स्त्री० बहू, नववधू, दुलहिन 'हरि मेरा पीव मैं हरिकी बहुरिया···' कबीर १२५

बहुरुपिया—पु० वह जो अनेक रूप धारण करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बहुलता—स्त्री० बहुतायत ।
बहुली—स्त्री० इलायची ।
बहुश्रुत—वि० जिसने अनेक बातें सुनी हों, बहुज्ञ, चतुर।
बहूँटा—पु० देखो 'बहुँटा' ।
बहू—स्त्री० पतोहू । दुलहिन ।
बहेड़ा, बहेरा—पु० एक फल ।
बहेरी—स्त्री० मिस, बहाना ।
बहेलिया—पु० व्याधा, चिड़ीमार ।
बहोरना—सक्रि० फेरना, लौटाना (राम० २३) ।
बहोरि—क्रिवि० फिर, पुनः (उदे० 'नयना'), 'बिनती करि मुनि नाइ सिर कह कर जोरि बहोरि ।' रामा० ३६०
बाँ—पु० बार, बेर 'मैं तोसौं कै बाँ कह्यौ तू जिन इन्हें पत्याय ।' बि० ३३
बाँक—वि० तिरछा, टेढ़ा (प० ११) । पु० एक गहना ।
बाँकड़ा—वि० वीर । [टेढ़ापन । धनुष ।
बाँकना—सक्रि० टेढ़ा करना (प० ८०) ।
बाँका—वि० बहादुर । बना ठना । तिरछा, टेढ़ा । पु० एक औज़ार ।
बाँकुड़ी—स्त्री० एक सुनहला या रुपहला फीता ।
बाँकुरा—वि० टेढ़ा, बाँका (उदे० 'तरकना'), पैना, चतुर।
बाँग—स्त्री० आवाज़, सवेरेके वक्त मुरगेका शब्द । पुकार, अजान ।
बाँगुर—पु० फन्दा, जाल 'तुलसिदास यह बिपति बाँगुरो तुमहिं सों बनै निबेरे ।' विन० ४३५
बाँचना—सक्रि० पढ़ना 'पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची ।' रामा० १५७, (उदे० 'आँक') । बचाना 'बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा ।' रामा० १४९ । अक्रि० बचना, शेष रहना 'सत्यकेतु कुल कोउ न बाँचा ।' रामा० ९७ । रक्षा पाना 'जल बरषत गिरिवर तर बाँचे ।' सू०८१ । (फूल इ०) चुनना 'बाँचत कुसुम कुसुंभके, रहे लागि अभिराम ।' मति० १८७
बाँछना—सक्रि० इच्छा करना । छाँटना । स्त्री० वाञ्छा,
बाँछा—स्त्री० इच्छा । [इच्छा ।
बाँझ—स्त्री० वंध्या स्त्री (उदे० 'नतरु') ।
बाँट—पु० बाँटनेकी क्रिया । भाग 'ग्राहूमें कछु बाँट तुम्हारो ।' सूबे० १४४ । गाय भैंसका चारा । बटवारा । बटखरा ।
बाँटना—सक्रि० भाग करना, तकसीम करना । पीसना, घोंटना (सू० २१०) ।
बाँड़ा—वि० कटी पूँछवाला, असहाय ।
बाँद—पु० बन्दा, सेवक । बंधन (उदे० 'कुती') ।
बाँदर—पु० बन्दर, कीश ।
बाँदी—स्त्री० दासी ।
बाँदू—पु० कैदी ।
बाँध—पु० मेंढ़, आड़ ।
बाँधना—सक्रि० जकड़ना, गाँठ देना । रोकना, बद्ध करना, कैद करना । बाँध आदि बनाना । नियत करना ।
बाँधनीपौरि—स्त्री० पशु बाँधनेकी जगह ।
बाँधनू—पु० मंसूबा । कलंक । विशेष तरहसे रँगा हुआ कपड़ा ।
बाँधव—पु० भाई, मित्र, सम्बन्धी ।
बाँबी, बाँमी—स्त्री० साँपका बिल (साखी १३९) । बमीठा ।
बाँभन—पु० ब्राह्मण, विप्र (उदे० 'कन') ।
बाँस—पु० एक लम्बा पतला पेड़ या उसकी लकड़ी । राद ।
बाँसपूर—पु० एक पतला कपड़ा 'बाँसपूर झिलमिलकी सारी ।' प० १५८
बाँसलो—स्त्री० बाँसुरी, वंशी ।
बाँसी—स्त्री० एक मुलायम बाँस । एक तरहका धान या गेंहू । एक पत्थर । बाँसुरी ।
बाँसुरी—स्त्री० वंशी, मुरली ।
बाँह—स्त्री० बाहु, भुजा (उदे० 'दोहनो') । शक्ति । भरोसा, शरण, अधीनता 'जिन्ह भूपिन जग जीति बाँचि जम, अपनी बाँह नसायो ।' विन० १८७ । — देना = सहारा देना ।
बा—पु० 'वा', जल । बार 'कैबा लख्यौ सखी लखे लगै थरहरी देह ।' बि० २१३
बाइ, बाई—स्त्री० वातदोष, अपच ।
बाइनि—स्त्री० बयना (मति० २१०) ।
बाउ—पु० वायु, हवा (मति० २०९) ।
बाउर—वि० बावला 'कर्म लिखा जो बाउर नाहू ।' रामा० ५९, (उदे० 'तुरास') । मूर्ख, गूँगा ।
बाऊ—पु० वायु, हवा (रामा० ३८८) ।
बाएँ—क्रिवि० बाईं तरफ ।
बाक—पु० वाक्य, वचन, शब्द (उदे० 'ऐंड़ा') ।
बाकचाल—वि० बकबकिया, बाचाल ।
बाकना—अक्रि० प्रलाप करना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाकल—पु० बकला, छाल।
बाकस—पु० सन्दूक, पेटी।
बाक्का—स्त्री० वाणी, शब्द।
बाकी—वि० शेष, बचा हुआ। स्त्री० एक तरहका धान। अ० लेकिन।
बाकुल—पु० वल्कल (कबीर ११६)।
बाखरि—स्त्री० बखरी, बड़ा मकान 'एकै बाखरिके बिरह लागे बरस बिहान।' वि० १०८ (बंग०)
बाग—पु० उद्यान, फुलवाड़ी। स्त्री० लगाम (प० ४५)।
बागडोर—स्त्री० लगाम।
बागना—अक्रि० कहना 'एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं।' रामा० ५०६। घूमना फिरना 'जागत बागत सपने न सुख सोइहै।' विन० २०७
बागबान—पु० माली।
बागर—पु० नदी-तटकी ऊँची भूमि। जाल, रस्सी 'घूँघट पट बागर ज्यों बिडवत।' सू० १७०
बागल—पु० बगुला।
बागवान—दे० 'बागबान'।
बागा—पु० एक पुराना पहनावा, जामा (उदे० 'छिगी')।
बागुर—पु० जाल, फंदा 'बागुर बिषम तोराइ मनहु भाग मृग भाग बस।' रामा० २३५
बाघंबर—पु० व्याघ्र-चर्म।
बाघ—पु० व्याघ्र।
बाच—वि० वाच्य, वर्णनीय (सुन्द० १५६)।
बाचना—अक्रि० देखो 'बाँचना', (उदे० 'तेजना')।
बाचा—स्त्री० वचन, प्रतिज्ञा (प० २६३)। बोलनेकी शक्ति।
बाचाबंध—वि० वचनबद्ध।
बाछा—पु० बछड़ा, बच्चा।
बाज—पु० एक पक्षी। बाजा। बाजि, घोड़ा। वि० रहित। कोई कोई। क्रिवि० छोड़कर, बिना 'को उठाइ बैठारै बाज पिवारे जीउ।' प० ९१। बाज करना, बाज रखना = मना करना, रोकना।
बाजन—पु० बाजा (उदे० 'अँदोर')।
बाजना—अक्रि० बजना (उदे० 'खुदावंदि')। भिड़ना, लड़ना 'तिन्हहिं निपाति ताहि सन बाजा।' रामा० ४२४, 'अछरी जनहुँ अखारे बाजैं।' प० २१७। गिरना, लगना, पड़ना 'लहरि अकास लागि भुइँ बाजी।' प० ६६। प्रसिद्ध होना। पहुँचना 'साह आइ चितउर गढ़ बाजा।' प० २५५
बाजरा—पु० एक अन्न।
बाजा—पु० वाद्य, बजानेकी वस्तु।
बाजाप्ता—क्रिवि० नियमानुसार। वि० जो नियमानुसार हो।
बाज़ार—पु० खरीद फरोख्तकी जगह, हाट।
बाजि—पु० घोड़ा। पक्षी। बाण।
बाजी—स्त्री० दाँव, शर्त (रहीम ४७), 'बाजी जात बुँदेलकी राखो बाजी लाज।' छत्रसाल। घोड़ा।
बाजीगर—पु० जादूगर। [बजनिया।
बाजु—क्रिवि० देखो 'बाज'।
बाजू—पु० बाहु। बाहुपर पहननेका एक गहना। सेनाका एक दल।
बाजूबंद, बाजूबीर—पु० बाहुपर पहननेका एक गहना (उदे० 'तौक')।
बाझ—वि० रहित 'भिस्त न मेरे चाहिए बाझ पियारे तुझ।' कबीर १९
बाझन—स्त्री० उलझन, बखेड़ा, झगड़ा।
बाझना—अक्रि० फँसना, उलझना 'तैं सुभटा पंडित होइ कैसे बाझा आइ।' प० ३१
बाट—स्त्री० ऐंठन, बल। पु० रास्ता (उदे० 'ठाट')। बटखरा।—जोहना = आसरा देखना।—एड़ना = डाका पड़ना, छिन जाना 'बाट परै मोरि नाव उड़ाई।' रामा० २४६।—पारना = डाका डालना 'बाटपर ठाढ़ी बाट पारत बटोहिन की ...' रवि० २६
बाटना—सक्रि० कुचलना, चूर्ण करना, पीसना 'सुनु री सखी! श्यामसुन्दर बिन बाटि बिषम बिष पीजै।' भ्र० ६५। बटना, ऐंठना।
बाटकी—स्त्री० बटुली (सुदामा० १५)।
बाटिका—स्त्री० फुलवारी।
बाटी—स्त्री० गोली। बहुत मोटी रोटी, लिट्टी।
बाड़—स्त्री० बाढ़। धार, तेजी। एक गहना। टट्टी, रक्षा 'खेत बिचारा का करै जो धनी करै नहिं बाड़।' [साखी ६७
बाड़व—पु० बड़वानल। ब्राह्मण।
बाड़ा—पु० हाता, पशुशाला।
बाड़ि—स्त्री० बाड़ी, टट्टर, मेंड़ (कबीर १७०)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाड़ी—स्त्री० फुलवारी, घिरी जगह, घर।
बाड़ौ—पु० देखो 'बाड़व', (दास १०३)।
बाढ़—स्त्री० जलप्लावन, वृद्धि, अधिकता। धार, सान। तोप इ० का लगातार चलना।
बाढ़ना—अक्रि० बढ़ना 'दिन चलि गयेउ ब्याज बहु बाढ़ा।' रामा० १४९, (उदे० 'जुआर', 'तार')। उमड़ना।
बाढ़ि, बाढ़ी—स्त्री० वृद्धि 'दसमुख देखि सिरन्हकै बाढ़ी।' रामा० ५०८। लाभ 'मकु तहँ गये होइ किछु बाढ़ी।' प० ३३
बाढ़ीवान—पु० धार तेज़ करनेवाला।
बाण—पु० शर। आग। पाँचकी संख्या।
वाणिज्य—दे० 'वाणिज्य'।
बात—स्त्री० वचन, चर्चा, प्रवाद, कथन, संदेश। प्रतिष्ठा। आशय। वस्तु। घटना। काम। वायु। बात रोग। बात उठना या चलना = चर्चा छिड़ना '...अली चली क्यों बात।' वि० ९२। बातकी बातमें = शीघ्र, तुरंत। बात गढ़ना या बनाना = झूठे प्रसंगकी रचना करना 'कदम तीर तें मोहिं बुलायो गढ़ि गढ़ि बातैं बानति।' सूवे० ११३, (उदे० 'आसन')। बात जाना = प्रतिष्ठा नष्ट होना। बात न पूछना = आदर न करना। बात बढ़ाना = झगड़ा करना। बात बनना = काम बनना, सफलता होना 'आन उपाय बनहि नहिं बाता।' रामा० २३९। बात बनाना या सँवारना = मतलब गाँठना, कार्य पूरा करना। बात बहना या उड़ना = सर्वत्र चर्चा फैलना। बात बिगाड़ना = काम नष्ट करना 'मिलहि माँझ बिधि बात बिगारी।' रामा० २२१
बातचीत—स्त्री० कथोपकथन।
बाती—स्त्री० बटी हुई रुई या कपड़ेका टुकड़ा, बत्ती 'भक्ति-को दीप प्रेमकी बाती।' हितहरि०, (उदे० 'अघट', साखी ६)
बातुल—वि० पागल, बकवादी 'मद्यपान-रत तिय बिरहित होई। सन्निपात युत बातुल जोई।' राम० २२९
बातूनी—वि० वाचाल, बकवादी।
बाद—क्रिवि० पश्चात्। व्यर्थ (देखो 'बादि')। वि० छोड़ा हुआ, अतिरिक्त। पु० तर्क, विवाद, झगड़ा, प्रतिज्ञा, होड़ाहोड़ी।
बादना—सक्रि० तर्क करना, झगड़ना। ललकारना। (उदे० 'घाट'), 'जहाँ मार ही मार यौं बीर बादे।' सुजा० २३
बादवान—पु० मस्तूलके सहारे तना हुआ कपड़ा।
बादर, बादल—पु० मेघ, जलद 'आये बीर बादर बहादर मदनके।' भू० १८२
बादरिया, बादरी—स्त्री० बदली, मेघमाला।
बादला—पु० कामदानीका तार (रवि० ४५)।
बादशाह—पु० सम्राट्, शासक, राजा, सरदार।
बादामी—वि० बादामके रँगका। पु० एक धान। एक चिड़िया (किलकिला)। बादामी रँगका घोड़ा।
बादि—क्रिवि० व्यर्थ 'विविध भाँति भूषन बसन बादि किये करतार।' रामा० २५६, (उदे० 'नतरु')
बादी—पु० मुद्दई, शत्रु 'पहुँचे आइ तुरुक सब बादी।' प० ३१९। स्त्री० वायु-दोष। वि० बात सम्बन्धी, वायु कुपित करनेवाला।
बादुर—पु० चमगीदड़ 'ते बिधना बादुर रचे रहे उरध मुख झूल।' साखी ६५
बाध—पु० एक तरहकी रस्सी। बाधा, कठिनाई।
बाधक—पु० विघ्न करनेवाला, दुःखदायी। रुकावट।
बाधना—सक्रि० बाधा डालना 'भुव भूप जे चारि पदारथ साधत। तिनको कबहूँ नहिं बाधक बाधत।' [राम० ७५३
बाधा—स्त्री० विघ्न, अड़चन, कष्ट, भय।
बाधित—वि० रोका हुआ, असंगत। आभारी।
बाध्य—वि० जो रोका जानेवाला हो, लाचार, विवश।
बान—पु० बाण। चमक, आब 'कंचन जरे अधिक होइ बानू।' प० ८४। स्त्री० आदत। बनावट, वेश-भूषा, रूप 'कर धरि चक्र चरनकी धावनि, नहिं बिसरति वह बान।' सू० १६
बानइत—पु० देखो 'बानैत'।
बानक—स्त्री० सजधज, वेष 'बानक बनी सुभानु किशोरी।' सू० १६५। एक तरहका रेशम।
बानगी—स्त्री० मालका नमूना।
बानना—सक्रि० बनाना (उदे० 'बात')।
बानर—पु० बन्दर।
बाना—पु० वेश, सजावट 'का बरनौं जस उन्ह कर बाने।' प० २४६। रीति, स्वभाव, चिह्न (सू० २७)। एक हथियार जिसके सिरेपर कभी कभी झंडा बाँधते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुनावट, बुनावटका आड़ा तागा। निशान 'बाने फहराने घहराने घंटा गजनके।' भू० १५०। सक्रि० पसारना, खोलना 'मुख बाइ धावहिं खान।' रामा० ५१४, (सु० ६४)

बानावरी—स्त्री० बाण-विद्या। बाण चलानेकी रीति।

बानि—स्त्री० आदत, स्वभाव 'एक बानि करुना-निधान की। सो प्रिय जाके गति न आनकी।' रामा० ३६४। वेष, बनावट। वाणी। चमक, आब 'सीसते मणि हरी जिनके कौन तिनमें बानि।' भ्र० ५६, 'सुवा, बानि तोरी जस सोना।' प० ३७

बानिक—स्त्री० बनावट, वेश 'देखे बानिक आजुको वारौं कोटि अनंग।' ललित० ९३

बानिया—पु० वैश्य, वणिक्।

बानी—स्त्री० वाणी, शब्द, सरस्वती (राम० ३)। प्रतिज्ञा। चमक, आभा, रंग (प० १७७)। पु० आरंभ करनेवाला। बनिया 'बानी बैठो हाट।' दास ५। व्यापार।

बानैत—पु० तीरंदाज। सैनिक, योद्धा। बाना फेरने या धारण करनेवाला (रामा० ३८७, सू० १०)।

बाप—पु० पिता।

बापिका, बापी—स्त्री० सीढ़ीयुक्त कुआँ।

बापुरा—वि० बेचारा, गरीब, तुच्छ (रहीम ४५), 'सिय मुख समता पाव किमि चंद बापुरो रंक।' रामा० १३०

बाफ—स्त्री० वाष्प, भाप।

बाफता—पु० एक रेशमी कपड़ा (उदे० 'खासा')।

बाबत—स्त्री० सम्बंध।

बाबा—पु० पिता। दादा। वृद्ध मनुष्य।

बाबी—स्त्री० संन्यासिन।

बाबुव, बाबू—पु० एक आदरसूचक शब्द। पिता।

बामन—पु० ब्राह्मण।

बाम—स्त्री० स्त्री। एक गहना। एक मछली। पु० कोठा, अटारी। वि० उलटा, प्रतिकूल।

बामदेव—पु० शिवजी।

बामन—पु० ब्राह्मण।

बामा—स्त्री० स्त्री। दुर्गादेवी।

बामी—स्त्री० बाँबी। वि० वाममार्गी।

बाय—स्त्री० वायु (उदे० 'बिजना')। वातका कोप 'अद्य एकको चित करै करै एकको बाय।'

बायक—पु० कहने या पढ़नेवाला। दूत।

बायन—पु० देखो 'बयना'। भेंट। देखो 'बयाना'।

बायबिडंग,-विरंग—पु० एक लता जिसके फल दवामें काम आते हैं।

बायस—पु० कौआ (रामा० ३५८)।

बायाँ—वि० दाहिनाका उलटा। प्रतिकूल, उलटा।

बायु—स्त्री० हवा।

बायें—क्रिवि० बाईं तरफ। विरुद्ध दिशा या विरुद्ध पक्षमें (उदे० 'दाहिना')।

बारंबार—क्रिवि० फिर फिर, लगातार।

बार—पु० बाल, केश। बालक 'जाय कै यह बात वर्णहु रक्षियो मुनि बार।' के० ३४९। द्वार 'हस्ति सिंवली बाँधे बारा।' प० १९। ठिकाना। किनारा, धार। घेरा। वारि, जल 'खेवनिहार पुकार बार नहिं कोऊ साथी।' दीन० १११। स्त्री० मरतबा। बेला, समय, देर 'रहिमन वित्त अधर्मको जात न लागै बार।' रहीम। बाल न खसना, या बाँका न होना = कुछ भी हानि न पहुँचना 'न्हात बार न खसै इनको कुशल पहुँचै धाम।' सूबे० २७६

बारगह—स्त्री० डेवढ़ी। तम्बू।

बारता—स्त्री० वार्त्ता, कथा, बात।

बारतिय—स्त्री० वेश्या।

बारदाना—पु० माल रखनेकी वस्तु (बोरा इ०), रसद।

बारन—पु० निवारण, विघ्न, रुकावट (उदे० 'उतारना')। हाथी (राम० १६)। कवच। अंकुश।

बारना—अक्रि० रोकना, बचाना (उदे० 'ठाँव', रघु० ५१)। जलाना। न्योछावर करना 'तो पर बारौं उरबसी सुनु राधिके सुजान।' बि० १६

बारबधू, बारबधूटी—स्त्री० वेश्या।

बारबरदार—पु० बोझा ढोनेवाला।

बारमुखी—स्त्री० वेश्या।

बारह—वि० ग्यारह और एक। बारह बाट घालना = नष्ट भ्रष्ट करना '...घालेसि सब जग बारह बाटा।' [रामा० ३००

बारहदरी—स्त्री० हवादार बैठक।

बारहबाना—वि० सूर्यके समान प्रकाशवान्। चोखा (भ्र० १४२)।

बारहबानी—वि० सूर्यकी सी चमकवाला, चोखा (उदे० 'दिनार')। सच्चा, पूर्ण। स्त्री० तेज या असली चमक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बारहमासो—वि० सदाबहार। वर्षभर जारी रहनेवाला।
बारहवाँ, बारहाँ—वि० ग्यारहवेंके बादवाला।
बारहसिंगा—पु० हरिणकी तरहका एक पशु।
बारहीं—स्त्री० जन्मसे बारहवाँ दिन, बरही।
बारा—वि० अल्पवयस्क, बालक, छोटा। 'मत्त अमत्त बड़े अरु बारे। कुंजर पुंज जगावत हारे।' राम० ४५०। पु० बालक, बच्चा 'अति सुकुमार जुगल मेरे बारे।' रामा० ५३८, (दे० 'बीधना') बारेतें = बचपनसे [(अ० ५४)।
बारात—स्त्री० वरका जुलूस।
बाराह—पु० वराह, सुअर।
बारि—पु० जल। स्त्री० वाटिका। घेरा कन्या।
बारिक—पु० बालक (कबीर ३१७)।
बारिगर—पु० सान चढ़ानेवाला (रतन० ४२)।
बारिगह—स्त्री० तम्बू 'चितउर सौंह बारिगह तानी।' [प० २४५
बारिज, बारिजात—पु० कमल।
बारिद, बारिधर, बारिवाह—पु० बादल।
बारिधि—पु० समुद्र।
बारिश—स्त्री० वृष्टि, वर्षा।
बारी—स्त्री० वाटिका, उद्यान (उदे० 'उकठना')। क्यारी। घेरा। कन्या 'पद्मावति राजा कै बारी।' प० ४१, (उदे० 'उजियारी')। नवयुवती। घर। खिड़की। किनारा, हाशिया, धार। कानकी बाली (सू० १६१)। पारी, ओसरी। पु० एक जाति। वि० स्त्री० छोटी उम्रकी 'अबहि बारि तुइँ पेम न खेला।' प० ७९
बारीक—वि० सूक्ष्म, महीन।
बारीकी—स्त्री० सूक्ष्मता, पतलापन। विशेषता।
बारीस—पु० समुद्र।
बारुणी, बारुनी—स्त्री० मदिरा (रामा० २८५)।
बारू—स्त्री० बालू, धूल 'दुपहर जेठ जरत बारूमें घायन लौन लगाये।' व्यासजी
बारूत, बारूद—स्त्री० एक बुकनी जो आगसे भभक उठती है।
बारोठा—पु० द्वार। द्वारपूजा (उदे० 'चार')।
बाल—पु० बालक। केश। स्त्री० बालि, मंजरी, दानेयुक्त डंठल। बाला, तरुणी (उदे० 'दुपहरी')।—बाँका न होना या खसना—देखो 'बार'।
बालक—पु० लड़का, बच्चा, बछेड़ा। केश। 'मोथा' नामका जल-पौधा (के० २५९)।
बालकता—स्त्री० बचपन, बाल्यावस्था (उदे० 'बालकता')।
बालकताई-स्त्री०-पन—पु० लड़कपन, नादानी।
बालखोरा—पु० सिरके बाल झड़नेका रोग।
बालटी—स्त्री० एक तरहका डोल।
बालधि, बालधी—स्त्री० पूँछ 'बालधी बढ़म लागी ठौर ठौर दीन्ही आगि...।' कविता० १३४
बालना—सक्रि० जलाना।
बालपन, बालापन—पु० बचपन, लड़कपन। (उदे० 'तरुनापन')
बालम—पु० प्रेमी, पति (उदे० 'जोरना')।
बालविधु—पु० नव विधु, शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा या द्वितीयाका चन्द्रमा।
बाला—स्त्री० कन्या, पुत्री, नवयुवती। पत्नी। एक गहना। वि० छोटी उम्रका, भोला 'देखो री एक बाला जोगी मेरे द्वारे आया हो।'—गीत।
बालि—स्त्री० दानेयुक्त डण्ठल, मंजरी 'बापुरी, मंजुल आँबकी बालि, सुभाल सी ह्वै उरमें अरती क्यों।' देव, (ब्रज० २९६) (उदे० 'कोदव')।
बालिका—स्त्री० कन्या, पुत्री। कानकी बाली। रेत।
बालिग—पु० वयःप्राप्त, जवान।
बालिश, बालिस—पु० बालक, मूर्ख व्यक्ति। स्त्री० तकिया। वि० नासमझ।
बाली—स्त्री० कानका एक गहना। दे० 'बालि'।
बालुका, बालू—स्त्री० रेत, रेणु।
बालूसाही—स्त्री० एक तरहकी मिठाई।
बाव—पु० वायु '...बिस्ना बाव चहूँ दिसि डोला।' कबीर ११६। वातदोष।
बावड़ी—स्त्री० सीढ़ीयुक्त कुआँ, वापी।
बावना—वि० बौना, ठिंगना।
बावर, बावरा, बावला—वि० पागल, मूर्ख 'बावरो रावरो नाह भवानी।' विन० ७१
बावरची पु० रसोइया, पाचक।
बावरी, बावली—स्त्री० देखो 'बावड़ी'। वि० स्त्री० पागल, (उदे० 'क्यों', 'डाँवरी')।
बावाँ—वि० बाईं ओरका, उलटा।
बाशिंदा—पु० निवासी।
बाष्प—पु० भाफ। अश्रु। कोहा।
बास—पु० रहना, निवास, निवास-स्थान। वस्त्र (के०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२९०)। बासर, दिन 'नैनन तो झरि लाइया रहट बहै निसु बास।' साखी ३९। स्त्री० महँक 'नेको वह न जुदी करी, हरपि जु दी तुम माल। उर ते बास छुट्यो नहीं, बास छुटे हू लाल।' वि० २५४। एक अस्त्र। आग। वासना।

बासन—पु० बरतन, वस्त्र। 'लेहिं न बासन बसन चुराई।' रामा० ३१९, (उदे० 'आसन')।

बासनवारा—वि० सुगंधित करनेवाला (रतन० ८)।

बासना—स्त्री० इच्छा (रामा० १९१)। महँक। सक्रि० सुगन्धित करना।

बासमती—पु० एक सुगन्धित चावल (उदे० 'कजरी')।

बासर—पु० दिन, सवेरा, सवेरेका राग (उदे० 'खाँगना')

बासव—पु० इन्द्र।

बाससो—स्त्री० वस्त्र।

बासा—पु० एक पक्षी। निवास, निवासस्थान 'बासो किधो आय हर एक की अकल पै।' ग्वाल। 'बिचके बासे बसि गया काल रहा सिर पूर।' साखी ७८। वि० 'बासी'।

बासिग—पु० वासुकि, शेषनाग (कबीर २०३)।

बासी—वि० देरका रखा हुआ या बना हुआ, मुरझाया हुआ। वि० रहनेवाला।

बासौंधी—देखो 'बसौंधी'।

बाह—स्त्री० जोत 'जैसे करनि किसान बापुरो नौ नौ बाहैं देत।' भ्र० १४६

बाहक—पु० सवार 'बिनहूँ बाग लगाम वह चाबुक लेत न हाथ। फेरत बाहक मैन लख नैन हरिन इक साथ।' रतन० १३

बाहकी—स्त्री० कहारिन, पालकी वहन करनेवाली स्त्री।

बाहन—पु० सवारी (उदे० 'कुस्टी', 'दिच्छित')।

बाहना—सक्रि० ढोना। फेंकना 'फरे बिरिछ कोइ ढेल न बाह।' प० २१५। चलाना 'त्यौं उहि बहकि सैहथी बाही।' छत्र० ९८। मारना (साखी ३, उदे० 'कठैठा')। हाँकना। अक्रि० प्रवाहित होना।

बाहनी—स्त्री० सेना। नदी।

बाहर—क्रिवि० भीतरका उलटा, अलग, अन्यत्र।

बाहाँजोरी—क्रिवि० हाथसे हाथ जोड़ कर।

बाहिज—क्रिवि० बाहरसे, ऊपरसे 'बाहिज नम्र देखि मोहिं साँई।' रामा० ५९५

बाहिनी—स्त्री० सेना, नदी (राम० ६२)। सवारी।

बाहिय—क्रिवि० बाहर (उदे० 'छिरकना')।

बाहिर—देखो 'बाहर'।

बाहु, बाहू—स्त्री० भुजा।

बाहुरना—अक्रि० लौटना, मुड़ना 'जतन किये नहिं बाहुरै लगी मरमकी चोट।' साखी २३

बाहुल्य—पु० प्रचुरता, अधिकता।

बाह्य—वि० बाहरका, बाहरी। पु० भार ढोनेवाला पशु

बिंग—पु० व्यंग्य, आक्षेपपूर्ण उक्ति। [(बैल इ०)

बिंजन—पु० व्यंजन, भोज्य वस्तु।

बिंद—पु० बूँद, बिंदी या तिलक 'नाक सरबसु सुलैन चाहो सरसरीको बिंद।' सू० २९

बिंदा—पु० बड़ी बिंदी, गोल टीका। स्त्री० एक गोपी।

बिंदी—स्त्री० बिन्दु, छोटा टीका।

बिंदुका—पु० देखो 'बिंदा'।

बिंदुरी, बिंदुली—स्त्री० बिंदी, टिकुली, छोटा टीका।

बिंधना—अक्रि० फँसना। छेदा जाना। सक्रि० छेदना, नाथना 'ताल बिंधे अरु सिन्धु बँध्यो यह चेटक बिक्रम कौन कियो।' राम० ४०९

बिधुंतुद—पु० राहु (दास १६३)।

बिंब—पु० छाया। सूर्य चन्द्र इ० का मण्डल। कुँदरू। झलक। बाँबी (साखी १४०)।

बिंबफल—पु० कुँदरू।

बिंबा—पु० कुँदरू। बिम्ब।

बि, बिअ वि० दो।

बिआज—पु० सूद। बहाना, मिस।

बिआध, बिआधु—पु० शिकारी।

बिआधि—स्त्री० रोग, पीड़ा।

बिआना—सक्रि० जनना (उदे० 'नतरु')।

बिआहना—सक्रि० विवाह करना (रामा० १३४)।

बिओग—पु० देखो 'बियोग'।

बिकट—वि० कठिन, कठोर, भयंकर, टेढ़ा।

बिकना—अक्रि० बेचा जाना। मुग्ध होना।

बिकरार—वि० विकराल, भयंकर। व्याकुल 'नाक कान बिनु भइ बिकरारा।' रामा० ३७१

बिकराल—वि० भयंकर, कठिन, कठोर।

बिकर्म—पु० दुष्कर्म, कुकृत्य (सुन्द २१)।

बिकल—वि० व्याकुल, बेचैन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिकलई, बिकलाई—स्त्री० व्याकुलता 'प्रभुकृत खेल सुरन्ह बिकलई।' रामा० ५०८, 'उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।' रामा० ४८४

बिकलाना—अक्रि० बिकल होना 'एक एक ह्वै ढूँढ़हीं तरुनी बिकलाहीं।' सूबे० २१७। सक्रि० व्याकुल करना।

बिकसना—अक्रि० प्रस्फुटित होना, खिलना, प्रसन्न होना।

बिकसाना—सक्रि० प्रस्फुटित करना, प्रसन्न करना। अक्रि० खिलना।

बिकाऊ—वि० बिकनेवाला।

बिकाना—अक्रि० बिकना (उदे० 'नीपजना')। वशमें होना '··· तौ तुलसी बिन मोल बिकातो।' विन०, ४१६ (सू० ७०)

बिकार—पु० विकृत होनेकी क्रिया। परिवर्त्तन। दोष। रोग, दुःख। विषय-वासना 'जो निज मन परिहरै बिकारा।' विन० २९९। वि० विकृत।

बिकारी—वि० हानिकारक। परिवर्त्तित। काम क्रोधादि युक्त। बिगड़े हुए रूपवाला। स्त्री० टेढी पाई (उदे० 'दाम')।

बिकास—पु० प्रफुल्लता, खिलना, वृद्धि। हर्ष। प्रकाश।

बिकासना—सक्रि० विकसित करना, खोलना, प्रकट करना। अक्रि० विकसित होना, प्रकट होना।

बिकुंठ—पु० वैकुण्ठ।

बिक्ख, बिख—पु० विष, जहर, 'कीन्हेसि बिक्ख मीचु जेहि खाये।' प० २, 'बरु बिख देइ पियाइ मान सहित मरिबो भलो।' रहीम २९

बिक्रम—पु० वीरता, शक्ति। विष्णु।

बिक्री—स्त्री० खपत, बेचनेकी क्रिया।

बिखम—पु० विष। वि० असम, तीव्र, भीषण।

बिखय, बिखे—अ० सम्बन्धमें, में (साखी १३६)।

बिखरना—अक्रि० फैल जाना।

बिखराना—सक्रि० छितराना, फैलाना।

बिखाद—पु० दुःख, खेद।

बिखान—पु० विषाण, सींग 'तुलसी जेहि राम सों नेह नहीं सो सही पसु पूँछ बिखान न द्वै।' कविता० २१२

बिगंध—स्त्री० दुर्गन्धि 'माखी चंदन परहरै जहँ बिगंध तहँ जाइ।' कबीर २५६

बिग—पु० भेड़िया 'बिग जम्बुक घर बाजहिं तूरा।' प० २५६ (उदे० 'बैहर')।

बिगड़ना, बिगरना—अक्रि० खराब होना, भ्रष्ट होना, [अप्रसन्न होना।

बिगड़ैल—वि० क्रोधी, हठी।

बिगर—क्रिवि० विना, रहित।

बिगराइल, बिगरैल—वि० क्रोधी, हठी।

बिगलित—वि० देखो 'विगलित' (भ्र० ११३)।

बिगसना—अक्रि० खिलना (उदे० 'कोंई')। प्रसन्न होना, 'सकुचत अरु बिगसत वा छविपर अनुदिन जनम गँवावत।' सू० ९४। फटना 'मधुकर, मो मन अधिक कठोर। बिगसि न गयो कुंभ काचे ज्यों बिछुरत नंदकिसोर।' सू० २३९

बिगसाना—दे० 'बिकसना', 'बिकसाना' 'पाहन बीच कमल बिगसाहीं, जलमें अगिनि जरै।' सू० ७ (भ्र० ९०)

बिगाड़—पु० झगड़ा, खराबी, द्वेष।

बिगाड़ना—सक्रि० खराब करना, भ्रष्ट करना, हानि पहुँचाना, तोड़ना।

बिगाना—वि० दूसरेका। अनजान।

बिगार—दे० 'बिगाड़', 'बिगारि'।

बिगारना—दे० 'बिगाड़ना' ('उदे० उजारना')।

बिगारि, बिगारी—स्त्री० बलपूर्वक लिया गया काम।

बिगास—पु० देखो 'बिकास'।

बिगिर—क्रिवि० बिना 'पच्छनि बिगिर बिहंग हैं सुण्डन बिगिर मतंग।' ललित० ४४

बिगुन—वि० गुणरहित।

बिगुरचिन, बिगुर्चन—स्त्री० दिक्कत, अड़चन, असमंजस। 'खरी बिगुर्चन होयगो लेखा देती बार।' साखी १५६, (भ्र० २५)।

बिगुरदा—पु० एक प्राचीन हथियार 'कपटौ जब लौं कपट नहिं साच बिगुरदा धार।' रतन० ५

बिगूचन—स्त्री० अड़चन, असमंजस (कबीर १८२)।

बिगूचना—अक्रि० असमंजसमें या दिक्कतमें पड़ना, दबाया जाना। सक्रि० दबा लेना, छीनना।

बिगूतना—दे० 'बिगूचना' (कबीर १५३)।

बिगोना—सक्रि० नष्ट करना (साखी १०२,१०४), बिगाड़ना, दुर्दशा करना (उदे० 'दादीजार')। बिताना, खोना 'बरनै दीन दयाल काल तुम बादि बिगोये।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दान० २४१ (भ० १००)। बहकाना 'हरि तेरी माया को न बिगोयो।' सुवि० १७। छिगना।

बिग्यान—पु० विज्ञान, पूर्ण ज्ञान।

बिग्रह—पु० शरीर। झगड़ा, युद्ध 'संधि करो बिग्रह करो सीता को तो देह।' राम० ४६०

बिघटना—सक्रि० नष्ट करना, बिगाड़ना।

बिघन—पु० विघ्न, बाधा।

बिघार—पु० व्याघ्र 'बकरी बिघार खायो, हरनि खायो चीता।' कबीर १४१

बिच—क्रिवि० बीच, में, भीतर 'चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पट झीन।' बि० २३९

बिचकना, बिचुकना—अक्रि० चौंकना, भड़कना। वि० चौंकनेवाला (ब्रज० ४९७)। [ॐ चिढ़ाना।

बिचकाना – सक्रि० भड़काना। (मुँह) टेढ़ा करना, ॐ

बिचच्छन—वि० निपुण, चतुर, प्रकाशमान।' छिन छिन खरी बिचच्छनौ लहति छानि तिनु आलि।' बि० १५०

बिचरना—अक्रि० इधर उधर घूमना।

बिचलना—अक्रि० विचलित होना, हटना, घबड़ाना।

बिचला—वि० बीचका, जो बीचमें हो।

बिचलाना—सक्रि० विचलित करना, तितर बितर करना।

बिचवान, बिचवानी—पु० मध्यस्थ। [

बिचारना – सक्रि० सोचना, ख्याल करना।

बिचारा—वि० असहाय, दीन।

बिचाल—पु० हटाना। अन्तर।

बिचेत—वि० बेहोश, मूर्छित।

बिचौंहा—वि० मध्यस्थ. बीचवाला (रतन० १८)।

बिच्छी, स्त्री०, बिच्छू— पु० वृश्चिक।

बिच्छेप—पु० फेंकना, चित्तकी चंचलता, विघ्न।

बिछना—अक्रि० बिछाया जाना, फैलना।

बिछलना,-लाना-अक्रि० रपटना, फिसलना, डगमगाना।

बिछाना—सक्रि० फैलाना, पसारना।

बिछिआ, बिछिया—पु० पाँवकी अँगुलियोंका एक गहना (उदे० 'अनवट', 'झमकना')।

बिछिप्त—वि० विक्षिप्त, फेंका हुआ, पागल।

बिछुआ—देखो 'बिछुवा'।

बिछुड़ना, बिछुरना—अक्रि० अलग होना, वियोग होना (उदे० 'उसाँस')।

बिछुवा—पु० बिछिया (उदे० 'ठमकाना')। एक हथियार 'कोरदार बिछुवा अनियारे सुरमा सान धरे अति निपट गँसीले।' ललित कि० (ब्रज० ५०६)।

बिछूना—वि० बिछुड़ा हुआ (व्यक्ति) 'कित रोइय जौं मिलै बिछूना।' प० ८२

बिछोई—पु० वियोगी, जो बिछुड़ गया हो 'अधिक मोह जो मिलै बिछोई।' प० ८२

बिछोय, बिछोह—पु० जुदाई, वियोग (उदे० 'दमावति')।

बिछोवना—सक्रि० वियोग कराना 'तुही बिछोवसि करसि मेराऊ।' प० १९८

बिछौना—पु० बिस्तर, बिछावन।

बिजन—पु० बिजना, पंखा। वि० अकेला '...बिजन डुलातो तेवैं बिजन डुलाती हैं।' भू० १५३

बिजन, बिजना—पु० पंखा 'बिजन बयारि लागे लचकत लंक है।' ललित ७०, 'हित करि तुम पठयो लगे बा बिजना की बाय।' बि० २४५, (रघु० ४६)।

बिजली—स्त्री० विद्युत्, चपला। कानका एक गहना।

बिजाती—वि० दूसरी जातिका, जातिच्युत। दलाल

बिजान—वि० अनजान। [(रतन० २९)।

बिजायठ—पु० बाजूबंद (उदे० 'कटक')।

बिजुरी—स्त्री० बिजली (उदे० 'कनय')।

बिजूका, बिजूखा—पु० पक्षियों इ० को डरानेके लिए खेतमें रखा गया पुतला, 'धोखा'।

बिजै—स्त्री० विजय जीत।

बिजोग—पु० वियोग, जुदाई (साखी २६)।

बिजोना—सक्रि० भलीभाँति देखना, 'पिय ठाढ़े भे मान लखि तिय हत रही बिजोय।' ललित० २१, निगरानी करना 'आछी भाँति सुधार कै खेत किसान बिजोय।' दीन० २३६ [ॐ एक तरहकी चपटी बरी।

बिजोरा, बिजौरा – पु० एक फल। तिलके मेलसे बना ॐ

बिजौरी—स्त्री० कुम्हड़ौरी।

बिज्जु—स्त्री० बिजली (सुजा० ५४)।

बिज्जुल—स्त्री० बिजली 'बिज्जुलसी लपटैं झलकैं कन कज्जलसी अँग उज्जल धोती।' रवि० २३। पु० त्वचा।

बिझकना, बिझुकना—अक्रि० चौंकना, डरना। 'दान दया सुभ सील सखा बिझुकैं, गुणभिक्षुकको बिझुकावैं।' के० ९१। तनना।

बिझुका—पु० देखो 'बिजूका', 'बुधि मेरी किरपी, गुर मेरो बिझुका अखिर दोइ रखवारे।' कबीर २१९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिभुकाना—सक्रि० चौंकाना, डराना।
बिट—पु० नायकका सखा। बीट। वैश्य। वेश्यागामी (दे० 'बिट')। वि० नीच।
बिटप—पु० पेड़।
बिटारना—सक्रि० गंदा करना (उदे० 'छीना')।
बिटिनिया, बिटिया—स्त्री० बेटी, लड़की (सूबे०१७४)।
बिटौरा—पु० उपलोंका ढेर (सुन्द० १६०)।
बिठलाना, बिठाना—सक्रि० बैठाना, आसीन करना, प्रतिष्ठित करना, जमाना, दबा देना, धँसाना।
बिडंब—पु० आडम्बर (साखी ३३)।
बिडंबना—स्त्री० नकल, अपकीर्त्ति, हँसी, लज्जाकी बात 'केशव कोदंड विपदंड ऐसो खंडैं अब मेरे भुज-दण्डनकी बड़ी है बिडम्बना।' राम० ६७
बिड—पु० बीट, बिष्ठा 'बिडकन घन घूरे भक्षि क्यों बाज जीवै।' राम० ३२९। खल, नीच 'बीर करि-केसरी कुठारपानि मानी हारि तेरी कहा चली बिड तोसो गनै घालिको।' कविता० १८८
बिडरना—अक्रि० चौंकना, डरना, तितर बितर होना, भागना (छत्र० ७४), 'बिडरि चले घन प्रलय जानिकै, दिगदंतौ न सकेलत।' सू० ५९
बिडराना—सक्रि० चौंकाना, तितर बितर करना।
बिडवना—सक्रि० खंडित करना, तोड़ना 'धूँघट पट बागर ज्यों बिडवत'—सू० १७०
बिड़ा—पु० वृक्ष 'कबीर चन्दनका बिड़ा बैठ्या आक पलास। आप सरीखे करि लिये जे होते उन पास।' कबीर ५०
बिडारना—सक्रि० तितर बितर करना, भगाना। 'मारीच बिडारयो जलधि उतारयो'—राम० ५५। डराना (कबीर २१९)। नष्ट करना 'कुम्भकरन दससीस बीस भुज दानव-दलहिं बिडारौं।' सू० ३९०
बिड़ाल—पु० बिल्ली।
बिढ़ती—पु० लाभ, कमाई।
बिढ़वना—सक्रि० जोड़ना। कमाना।
बित—पु० शक्ति। धन, कद।
बितताना—अक्रि० व्याकुल होना, दुखी होना 'गये बितताइ ब्रज नरनारि। धरत सँभार धाम धामन नाहिं सुरति सँभारि।' सूबे० १२९। सक्रि० दुःखी करना।
बितना—पु० बालिश्त (रतन० ८७)। अक्रि० बीतना 'बिते बहुत दिन जात न जाना।' रघु० १८३, (प० १७९)।
बितरना—सक्रि० वितरित करना।
बितवना, बिताना, बितावना—सक्रि० व्यतीत करना, काटना। अक्रि० बीतना 'भयो द्रौपदीको बसन बासर नहीं बिताय।' रस० ३१
बितीतना—अक्रि० बीतना, व्यतीत होना। सक्रि० बिताना।
बितु, बित्त—पु० धन, शक्ति 'देहिं निछावरि बित्त बिसारी।' प० १४४
बित्ता—पु० बालिश्त।
बिथकना—अक्रि० मुग्ध होना (उदे० 'जोल')। थकना. 'समुझाई समझत नहीं सिख दै बियकेउ गाँव।' सू० १०७। चकित होना (उदे० 'चकवारि')।
बिथरना, बिथुरना - अक्रि० बिखरना, फैलना, 'गनत न मन पथ अपथ लखि बिथरे सुथरे बार।' वि० ९५, 'कुंचित अलक बिथुरि रहे भुवगर, तापर तन मन वारति।' सू० १२२। (सू० ६२) खिलना।
बिथराना, बिथुराना—सक्रि० छितराना, फैलाना (ब्रज ५७७)
बिथा—स्त्री० पीड़ा (उदे० 'अंसुआ', भ्र० १३३)।
बिथारना, बिथोरना—सक्रि० छितराना।
बिदकना—अक्रि० फटना, क्षत होना।
बिदकाना—सक्रि० फाड़ना, घायल करना।
बिदरना—अक्रि० विदीर्ण होना, फटना 'हृदय न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतम नीर।' रामा० २६९, 'जे बासना न बिदरत अन्तर तेइ तेह अधिक अनूअर दाहत।' भ्र० २५
बिदलना—सक्रि० दलित करना।
बिदा—स्त्री० गमन। गमनकी अनुमति (राम० ३५५), 'माँगहु बिदा मातु सन जाई।' रामा० २३३
बिदाई—स्त्री० बिदा। बिदाके समय दिया गया द्रव्यादि।
बिदारना—सक्रि० फाड़ना, 'जैसे सरिता सिन्धुमें मिली जु कूल बिदारि।' सू० १०८, नष्ट करना (उदे० 'दरिद्र')
बिदुराना—अक्रि० मुसकुराना।
बिदूषना—सक्रि० दूषित करना 'सुनु सठ काल-ग्रसित यह देही। जनि तेहि लागि बिदूषहि केही।' विन० ३०३
बिदेस—पु० परदेश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिदोख—पु० विद्वेष, वैर।
बिद्रुम—पु० मूँगा (प० २३१)। कोंपल।
बिधँसना—सक्रि० विध्वस्त करना (प० ९२)।
बिध—पु० ब्रह्मा। हाथियोंका चारा। स्त्री० भाँति, प्रकार। लेखा।
बिधना—पु० ब्रह्मा। अक्रि० छेदा जाना 'बानन साथ बिधे सब बानर।' राम० ४९०। सक्रि० फँसाना 'बिधये मैन खिलारने रूरजाल दृग मीन।' रतन० १४
बिधवपन—पु० वैधव्य।
बिधवा—वि० स्त्री० जिसके पतिकी मृत्यु हो गयी हो। धवा वृक्षसे रहित (राम० ३२)। स्त्री० विधवा स्त्री।
बिधाँसना—सक्रि० विध्वंस करना। अक्रि० विध्वस्त किया जाना, बिगड़ना (प० १५३)।
बिधाई—पु० विधान करनेवाला।
बिधान—पु० देखो 'विधान'। 'होन लाग होमके जहाँ तहाँ सबै बिधान।' राम० ५२
बिधाना—सक्रि० छेदवाना' सुन्दर क्यूँ पहिले न संभारत जो गुड़ खाय सुकान बिधावे।' सुन्द० १७
बिधानी—पु० विधान करनेवाला, विधाता, रचयिता।
बिधि—पु० ब्रह्मा। स्त्री० भाँति, रीति, नियम, व्यवस्था बिधि निषेध = करनेकी आज्ञा और न करनेकी आज्ञा, 'बिधि निषेधमय कलिमल हरनी। कर्म कथा रवि-
बिधिना—पु० ब्रह्मा। [नन्दिनि बरनी।' रामा० ४
बिधुर—वि० व्याकुल, भयभीत, असमर्थ, दुःखित। मृत-
बिन—अ० बिना, रहित। [स्त्रीक।
बिनई—पु० बिनयी, नम्र।
बिनठना—अक्रि० विनष्ट होना, बिगड़ना (कबीर २५१)।
बिनति, बिनती—स्त्री० प्रार्थना।
बिनना—सक्रि० बुनना। छाँटना, चुनना।
बिनय—स्त्री० नम्रता, अनुरोध, नीति।
बिनयना, बिनवना—सक्रि० अनुरोध करना, प्रार्थना करना 'तेहि मंदिरमें नृपसों बिनयो। बर देहु हुतो हमको जु दयो।' राम० १९३। (उदे० 'चिरिहार', रामा० १६)
बिनशना, बिनसना—अक्रि० नष्ट होना। सक्रि० नष्ट करना।
बिनसाना—सक्रि० नष्ट करना, बिगाड़ना। अक्रि० नष्ट होना।
बिना—अ० बगैर, रहित।
बिनाई—स्त्री० बिनने या बुननेकी क्रिया या मजदूरी।
बिनाती—स्त्री० बिनती, प्रार्थना 'ए गोसाईं सुनु मोरि बिनाती।' प० ६३
बिनानी—वि० अनजान। स्त्री० गौर, मनन। पु० विज्ञानी, विद्वान्।
बिनास—पु० ध्वंस, नाश, तबाही (उदे० 'अतिबल')।
बिनासना—सक्रि० बिगाड़ना, नष्ट करना (प० ३१६)।
बिनाह—पु० विनाश 'साकत संग न कीजिये जाते होइ बिनाहु।' कबीर २५९
बिनूठा—वि० विलक्षण, सुन्दर।
बिनै—स्त्री० देखो 'विनय'।
बिनौला—पु० कपासका बीज।
बिपक्ष, बिपच्छ—वि० विमुख, विरुद्ध, अप्रसन्न,। पु० शत्रु। शत्रु-पक्ष।
बिपच्छी—पु० शत्रु, विरोधी।
बिपत, बिपता, बिपत्ति—स्त्री० संकट, आफत।
बिपद, बिपदा—स्त्री० विपत्ति।
बिपर—पु० विप्र, ब्राह्मण।
बिपरीत—वि० उलटा, प्रतिकूल।
बिपाक—पु० पकना। फल। कर्मभोग, दुर्गति।
बिफर, बिफल—वि० फलरहित, व्यर्थ। निराश, असफल।
बिफरना—अक्रि० विद्रोही होना, बिगड़ पड़ना, चिढ़ना।
बिबछना—अक्रि० फँसना। विरोधी होना।
बिबर—पु० गड्ढा, छिद्र, गुफा 'पैठे बिबर बिलम्ब न कीन्हा।' रामा० ४०८
बिबरन—वि० जिसका रङ्ग उड़ गया हो, कान्तिहीन। पु० ब्योरा, हाल, व्याख्या।
बिबस—वि० लाचार, पराधीन। क्रिवि० लाचार होकर।
बिबहार—पु० बर्त्ताव, कार्य, व्यापार।
बिबाई—स्त्री० पाँवका चमड़ा फटनेका रोग 'ऐसे बिहाल बिवाइन सों भये कंटकजाल लगे पुनि जोये।' सुदामा०
बिबाकी—स्त्री० हिसाब चुकता होना। अन्त 'सहित-सेन-सुत कीन्ह बिबाकी।' रामा० १९
बिबाहना—सक्रि० ब्याह करना (उदे० 'पंच')।
बिबि—वि० दो, 'बिबि लोचन सु बिसाल दुहुनके चितवत चित्त हरे।' सू० ७६। दूसरा।
बिभचारी, बिभिचारी—वि० दूषित आचारवाला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परस्त्री-गामी 'सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनी धन सुभगति बिभिचारी।' रामा० ३७०

बिभाना—अक्रि० शोभा पाना, चमकना, देख पड़ना 'भूतलकी वेणी सी त्रिवेणी शुभ शोभिजति एक कहैं सुरपुर मारग बिभात है।' राम० '५१४

बिभावरी—स्त्री० रात्रि जिसमें तारे चमकते हों 'ज्यों ज्यों बढ़त बिभावरी त्यों त्यों बढ़त अनन्त'। बि० २०३ मुखरा स्त्री।

बिभिनाना—सक्रि० भिन्न करना, पृथक् करना।

बिभु—पु० स्वामी, ईश्वर। वि० सर्वव्यापक। महान्,

बिभौ—पु० ऐश्वर्य, सम्पत्ति, प्रचुरता। [शक्तिमान्।

बिमन—वि० उदास, दुःखित। क्रिवि० बिना मन दिये।

बिमान—पु० रथ, वायुयान। अनादर।

बिमूढ़—वि० अत्यन्त मोहित। महामूर्ख (रामा० ३५८)।

बिमोहना—सक्रि० मोहित करना, लुभाना। अक्रि० मुग्ध होना 'को सोवै, को जागै, अस हौं गएउँ बिमोहि।' प० १५१

बिय—वि० दो। दूसरा। पु० बिया, बीज।

बियत—पु० आकाश। एकान्त (व्रज० २१५)।

बिया—पु० बीज। वि० दूसरा (विन० १२१)।

बियाज—पु० सूद। बहाना।

बियाध, बियाधा—पु० शिकारी (उदे० 'खाधु', प० ३०)।

बियाधि—स्त्री० रोग, झंझट 'रहिमन ब्याह बियाधि है सकहु तो जाहु बचाय।' रहीम २६

बियाना—सक्रि० जनना।

बियापना—अक्रि० देखो 'व्यापना'।

बियावान—वि० वह जंगल जहाँ पानी आसानीसे न मिले।

बियारी, बियारू—स्त्री० रात्रिका भोजन।

बियाल—पु० साँप, शेर।

बियाह—वि० विवाह।

बियाहना—सक्रि० विवाह करना (प० १९९)।

बियोग—पु० जुदाई, विरह, विच्छेद।

बिरंग—वि० बिना रंगका, फीका। कई रंगोंका।

बिरकत—वि० विरक्त 'बैरागी बिरकत भला। ग्रेही चित्त उदार।' साखी १४२

बिरखभ—पु० वृषभ, बैल (साखी १७)।

बिरचना—सक्रि० बनाना, सजाना। अक्रि० (मन) उचटना 'बिरचि मन फेरि राच्यो जाइ।' सू०, (प० ४०)

बिरछ—पु० वृक्ष, पेड़ (रहीम १७)।

बिरछिक,-छीक—पु० बिच्छू, वृश्चिक राशि (प० १८६)।

बिरज—वि० निर्दोष, निर्मल। गुणरहित 'ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।' रामा० ३४

बिरझना—अक्रि० उलझना। क्रुद्ध होना 'बिरझ्यो चंपति-राइ बुंदेला। फौजन पर कीन्हो बगमेला।' छत्र० २९। मचलना 'बदन चंद के लखन को सिस ज्यों बिरझत नैन।' रतन० ४८

बिरझाना—अक्रि० क्रुद्ध होना (छत्र० १२, ७४)।

बिरतंत, बिरतांत—पु० हाल, समाचार (सुजा० ४०)।

बिरताना—सक्रि० वितरित करना।

बिरति—वि० विरक्ति, निवृत्ति।

बिरथा—वि० व्यर्थ। क्रिवि० किसी कारण या अभिप्रायके बिना। [† कबीर १६४

बिरदंग—दे० 'मृदंग', '...केस गहे काल बिरदंग बजावै।'†

बिरद—पु० नामवरी, बड़ा नाम, बड़ाई 'कौन भाँति रहिहै बिरद अब देखिबी मुरारि।' बि० १९, 'बढ़े न हूजत गुनन बिन बिरद बड़ाई पाय।' बि० ८२

बिरदैत—वि० विख्यात। पु० प्रतिज्ञावाला, बड़े नामवाला। प्रसिद्ध योद्धा।

बिरध—वि० वृद्ध, बूढ़ा (कबीर २४२)।

बिरधाई—स्त्री० बुढ़ापा।

बिरमना—अक्रि० देर करना 'सूरदास स्वामी सों कहियो अब बिरमियो नहीं।' सू० ३५। ठहरना, विश्राम करना, मुग्ध होना 'मुनि मन मुदित मलिन्द निरन्तर बिरमत जहँ नित।' सत्यना०

बिरमाना—सक्रि० ठहराना, फँसा रखना, 'सूर श्याम हमको बिरमावत खीझत बहिनी [illegible]।' सूबे० १५१। बिताना। अक्रि० बि[illegible] बैठि उन पर भौंर हैं बिरमाहिं।' [illegible]

बिरला—वि० एकाध, कोई क[illegible]।'

बिरवा—पु० पौधा, पेड़ 'होनहार बिरवानके होत चीकने

बिरस—वि० रसहीन। बुरा (विद्या० ११५)। पु० बिगाड़ (छत्र० ५४)।

बिरसना—अक्रि० बिलास करना।

बिरह, बिरहा—पु० वियोग, दुःख (उदे० 'अछेह' 'गादें')।

बिरहाना—अक्रि० विरहपीड़ित होना 'राधा बिरह देखि बिरहानी, यह गति बिन नँदनन्द।' सूबे० २१६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिरही—पु० विरह-पीड़ित मनुष्य।
बिराग—पु० विरक्ति, उदासीनता।
बिरागना—अक्रि० विरक्त होना 'सुनि मुनि बचन जनक अनुरागे। लखि गति ज्ञान बिराग बिरागे।' रामा० ३३८
बिराजना—अक्रि० शोभा देना, बैठना।
बिरान, बिराना—वि० दूसरेका, पराया (उदे० 'चूपड़ी')
बिराना, बिरावना—सक्रि० बिढ़ाना, मुँह बनाना।
बिरास—पु० देखो 'बिलास'।
बिरिख—पु० वृक्ष। बैल। वृषराशि प० १८६)।
बिरिछ—पु० वृक्ष, पेड़ (उदे० 'उचारना')।
बिरिध—वि० वृद्ध, बूढ़ा।
बिरियाँ—स्त्री० वेला, समय (उदे० 'आली'), 'पर्यो काज जब अंतकी बिरियाँ तिनिही आनि बँधायो।' सू० २६, । बार (रतन० ३)।
बिरो—स्त्री० पानका बीड़ा, खिली, 'खरे अरे प्रियके प्रिया लगी बिरी मुँह दैन।' वि० २५९। बिड़ी।
बिरुझना, बिरुझाना—अक्रि० उलझना, लड़ना 'लागी भूख चन्द मैं खैहौं देहु देहु रिस करि बिरुझावत।' सूवे० ५८ (उदे० 'बिरुदैत', सू० ५७)।
बिरुद—पु० यशकीर्त्तन, प्रशंसा।
बिरुदैत—वि० देखो 'बिरदैत' 'बिरुझे बिरुदैत जे खेत अरे, न टरे इठि बैर बढ़ावनके।' कविता० १९५
बिरुधाई—स्त्री० बुढ़ापा 'देखत ही आई बिरुधाई।' विन० ३२२
बिरूप—वि० परिवर्त्तित, कुरूप, उलटा, पूर्णतया भिन्न।
बिरोधना—अक्रि० विरोध या शत्रुता करना 'तब मारीच हृदय अनुमाना। नवहिं बिरोधे नहिं कल्याना।' रामा० ३७७
बिरोलना—दे० 'बिलोरना' (कबीर १८२)।
बिलंद—वि० ऊँचा 'मंद बिलंद अभेरा दलकन पाइय दुख झकझोरा रे।' विन० ४३८
बिलंब—पु० देर।
बिलंबना—अक्रि० देर करना, ठहरना। लटकना।
बिलंबित—वि० जिसमें विलम्ब हुआ हो। लटकता हुआ।
बिल—पु० बिवर, छिद्र।
बिलकुल—क्रिवि० पूर्ण रूपसे, सब, निपट।
बिलखना—अक्रि० लख लेना, ताड़ना। विकल होना, विलाप करना।
बिलखाना—अक्रि० बिलखना 'कबहुँक मग मग धूरि टटोरत भोजनको बिलखात।' सू० २५। सक्रि० दुःखित करना, रुलाना।
बिलग—पु० पार्थक्य, बुराई, रंज 'आरत बस सनमुख भयउँ बिलग न मानब तात।' रामा० २४५ (उदे० 'गँवारी') वि० पृथक्।
बिलगाना—सक्रि० पृथक् करना, छाँटना 'मथत मथत माखन रहे दही मही बिलगाय।' रहीम १८। अक्रि० पृथक् होना 'सो बिलगाउ बिहाइ समाजा।' रामा०
बिलच्छन—वि० आश्चर्यजनक, अपूर्व। [१४७]
बिलछना—अक्रि० लक्ष करना।
बिलनी—स्त्री० आँख परकी फुंसी। काले रंगकी भौंरी (कबीर २३७)।
बिलपना—अक्रि० बिलाप करना (उदे० 'कुररी')।
बिलबिलाना—अक्रि० छटपटाना, रोना-चिल्लाना।
बिलम—पु० देर (स्त्री० भी 'एक समय पयपानकी बिलम भई बस काम।' रघु० ४०)।
बिलमना—अक्रि० देर करना, रुक रहना, ठहरना 'प्रीति सहित आदर जहाँ हम बिलमैं तेहि ठौर।' चाचा हित०
बिलमाना—सक्रि० अटका रखना, रोक रखना (प०९७)।
बिललाना—अक्रि० रोना, व्याकुल होना, (उदे० 'छरीदार', 'पाइमाल', कविता० २१९) बिललात परे हक कटे गात।' सुजा० २४
बिलसना—अक्रि० शोभा देना, विराजना। आनंद करना 'रासरस रचौ मिलि संग बिलसहु सबै...।' सूवे० २०६। सक्रि० भोगना।
बिलसाना—सक्रि० भोगना। भोगवाना।
बिलहरा—पु० पान रखनेका बाँसकी तीलियोंका बना पात्र, 'मवला'।
बिलाई—स्त्री० बिल्ली, कद्दूकस। लोहेका काँटा। सिटकिनी।
बिलाना—अक्रि० गायब होना (उदे० 'छिरकना')। नष्ट होना (राम० ५२२), '...रावनसे बली तेऊ बुलासे बिलाइगे।' बेनो (उदे० 'घोर')।
बिलापना—अक्रि० बिलाप करना। सक्रि० पेड़ लगाना।
बिलायत—दे० 'बिलायत'। वि० बहुत (सुन्द० २३)।
बिलार—स्त्री० बिल्ली।
बिलारी—स्त्री० बिल्ली (उदे० 'छरछंदी')।
बिलावल—स्त्री० पत्नी, प्रिया। पु० एक राग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिलास—पु० क्रीड़ा, आनन्द, मनोहर चेष्टा, हिलना डुलना, 'बानीको बसन कैधौं बातके बिलास डोलै कैधौं मुखचन्द चारु चंद्रिका प्रकास है।' ललित० ५१

बिलासना—सक्रि० भोगना, काममें लाना।

बिलासिनी—स्त्री० वेश्या 'धनके हेत बिलासिनी रहैं सँवारे बेस।' मति० १९७

बिलिया—स्त्री० कटोरी।

बिलुटना—अक्रि० लोटना 'तुम बिनु माधव बिलुटए धूले।' विद्या० ६९

बिलेशय—पु० बिलमें शयन करनेवाला, साँप।

बिलैया—स्त्री० बिल्ली। कद्दूकस। सिटकनी।

बिलोकना—सक्रि० देखना। जाँचना।

बिलोचन—पु० नेत्र।

बिलोड़ना—सक्रि० मथना, उलट पुलट करना, हिलाना 'बहत नदी अति निकट सुगम तट साखा सलिल बिलोरै।' रघु० ८१, (छत्र० १४)।

बिलोन—वि० लावण्य-रहित, कुरूप।

बिलोना—वि० देखो 'बिलोन'। सक्रि० देखो 'बिलोवना'।

बिलोवना—सक्रि० मथना (उदे० 'दही')। टपकाना 'तुलसी मदोवै रोइ रोइकै बिलोवै आँसु...' कबिता० १७२ (पाठा०)।

बिलोरना—सक्रि० देखो 'बिलोड़ना'।

बिलोल—वि० चंचल, चारु, सुन्दर।

बिलोलना—अक्रि० हिलना।

बिल्ली—स्त्री० बिलाई, मार्जार।

बिल्लौर—पु० एक सफेद पत्थर।

बिवछना—अक्रि० उरझ जाना (रतन० २)।

बिवरना—सक्रि० अलग अलग करना, सुलझाना। अक्रि० सुलझना, तै होना 'नीक सगुन बिवरिहि झगर होइहि धरम नियाउ।'—रामाश्व

बिवराना—सक्रि० सुलझाना, सुलझवाना 'पुनि निज जटा राम बिवराये।' रामा० ५४२

बिवसाइ—पु० व्यवसाय, व्यापार, जीविका।

बिवाई—स्त्री० देखो 'बेवाई'। [† बिवाना।' प० १८७

बिवान—पु० वितान, रथ 'सबहि लोग पुनि चढ़ी †

बिषया, बिषिया—स्त्री० विषय-वासना 'जो बिषया संतन तजी मूढ़ ताहि अपनाय।' कबीर १४, (कबीर६१)

बिषान—पु० सींग।

बिसंच—पु० संचयका अभाव, अपव्ययिता। विघ्न, भय।

बिसंभर—वि० जो सँभाला न जा सके। असावधान। पु० विश्वपोषक, ईश्वर।

बिसँभार—वि० बेसम्हाल, बेसुध 'भा बिसँभार देखि कै नैना। सखिन्ह लाज का बोलौं बैना।' प० १०७

बिस—पु० विष, जहर। कमलकी नाल (बिसदंड)।

बिसकरमा—पु० ब्रह्मा, ईश्वर, एक चतुर शिल्पी (उदे० 'चौपार')।

बिसखपरा,-खापर—पु० एक विषैला जंतु।

बिसतरना—अक्रि० फैलना। सक्रि० फैलाना, बढ़ाना 'परम अलौकिक जुगल केलिरस बिसतरयो।' अलबेली अलि

बिसद—वि० स्वच्छ, व्यक्त, सुंदर, प्रसन्न।

बिसन—पु० व्यसन, विषयासक्ति, शौक। विपत्ति, पतन, दुर्भाग्य, दोष।

बिसनी—वि० जिसे कोई व्यसन हो, शौकीन।

बिसमउ,-मय,-मव—पु० आश्चर्य। गर्व। सन्देह। दुःख, विषाद 'बिसमउ हरष न हृदय कछु पहिरे बलकल चीर।' रामा० २७८, 'हरष समय बिसमय करहि कारण मोहिं सुनाउ।' रामा० २०६

बिसमरना—सक्रि० विस्मृत होना, भूलना 'ललित किसोरी बलि बलिहारी, सपथ करौं जिनि बिसमरिहौं।' ललितकि०

बिसमिल्ला—पु० आरंभ, श्रीगणेश।

बिसयक—पु० देश, राज्य।

बिसरना—सक्रि० भूलजाना (उदे० 'सोई' रामा० २०५)।

बिसरात—पु० खजर (उदे० 'ढेंक')।

बिसराना,-बना—सक्रि० भूल जाना (उदे० 'दृष्टिन'), 'थोरेई गुन रीझिबो बिसराई वह बानि।' कि० ३७

बिसराम—पु० आराम, चैन (उदे० 'उदय')।

बिसरामी—वि० आराम देनेवाला, मनोरंजनकी वस्तु 'सुआ सो राजाकर बिसरामी।' प० ३८

बिसवासी—वि० जिसका विश्वास किया जाय, जो विश्वास करे। अविश्वसनीय, विश्वासघाती 'ऐ मन देह सदा बिसवासी।' प० ६५

बिसहना—सक्रि० विश्वास करना। सह जाना। धीरज। बिसहाना—सक्रि० सहीदना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिसहर—पु० विषधर, साँप (उदे० 'करिल') '...का बिसहर कौ दूध पिलाये।' कबीर १६२

बिसाइँध, बिसायँध—वि० जिसमें मछलीकी सी गंध हो 'फिरहिं भँवर तोरे नयनाहीं। नीर बिसाइँध होइ तोहि पाहीं।' प० २१६। स्त्री० मछलीकी दुर्गंध 'सहस बार जो धोवै कोई। तौहु बिसाइँध जाइ न धोई।' प०

बिसात—स्त्री० पूँजी, सामर्थ्य, हैसियत। चौपड़ आदि खेलनेका वस्त्र (रतन० ३३,३७,६२)।

बिसाती—पु० फुटकर चीजें बेचनेवाला।

बिसाना—सक्रि० बस चलना। विषैला होना, विषका असर करना।

बिसारद—वि० दक्ष, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ। पु० वह जो विद्वान् या दक्ष हो।

बिसारना—सक्रि० भुला देना (उदे० 'बिसारा')।

बिसारा—वि० विषययुक्त 'गाढ़े ह्वै गड़े हैं न निसारे निसरत मैन बानसे बिसारे न बिसारे बिसरत हैं।' छलित० ३०, 'नैन बिसारे बान सों चली बटाउइ मारि।' मति० १७४

बिसास—पु० विश्वास, धारणा, यकीन।

बिसासी—वि० धोखेबाज, छली 'ऐसो फलहीन वृच्छ बसुधामें भयो यारो सेमर बिसासी बहुतेरनको ठग्यो है।' गंगकवि, 'जैसे बधिक बिसासि बिबस करि बधत बिषम सर तानि।' भ्र० १०२

बिसाहना—सक्रि० मोल लेना। पु० मोल लेनेकी क्रिया या वस्तु 'नरु कूपके बीच फँसै सुगमै बरु मीचतें बैर बिसाहनो है।' दीन० २५९

बिसाहनी—स्त्री० मोल ली हुई वस्तु, सौदा, खरीद 'कोऊ करै बिसाहनी, काहू केर बिकाय।' प० १६

बिसाहा—पु० सौदा, बिसाहना।

बिसिख—पु० बाण (रामा० ३७२)।

बिसियर—वि० जहरीला। पु० सर्प 'कौआ कहा कपूर चराये। कह बिसियर कौ दूध पिआये।' कबीर २७५

बिसुकरमा,-कर्मा—पु० विश्वकर्मा, दिव्य शिल्पी, ईश्वर (प० १३८)।

बिसुरना, बिसूरना—अक्रि० चिंता करना, सोच करना 'सेज परी मतिराम बिसूरति आई अली अबहीं लखि मैं हूँ।' रस० २९। स्त्री० चिंता (कविता २३९)।

बिसेख, बिसेस—वि० खास, मुख्य, बहुत अधिक। पु० विचित्रता। नियम। सार। भेद, मर्म 'प्रेम-बार सो कहै जो देखा। जो न देख का जान बिसेखा।' प० ४३

बिसेखना—अक्रि० विशेष रूपसे वर्णन करना, ठहराना या निश्चित करना।

बिसोक—पु० अशोक वृक्ष। वि० शोकरहित 'सिय-निंदक अघ ओघ नसाये। लोक बिसोक बनाइ बसाये।' [रामा० १५

बिस्तर—पु० बिछावन। फैलाव।

बिस्तरना—देखो 'बिसतरना'। 'बिमल जस नाथ केहि भाँति बिस्तरहुगे।' विन० ४८७

बिस्तरा—पु० बिछौना।

बिस्तार—पु० फैलाव।

बिस्तारना सक्रि० फैलाना।

बिस्तुइया—स्त्री० छिपकली, पल्ली।

बिस्मय—पु० आश्चर्य, गर्व।

बिश्राम—पु० देखो 'बिसराम'।

बिस्वा—पु० बीघेका बीसवाँ अंश। बीस बिस्वा = पूर्ण रूपसे, निश्चय ही (उदे० 'बीस')।

बिस्वास—पु० विश्वास, यक़ीन, धारणा। भरोसा।

बिहंग—पु० पक्षी। बादल। तीर। सूर्य।

बिहंडना—सक्रि० नष्ट करना (छत्र० १), मार डालना। तोड़ना, 'नख दंतन सों भुजदंड बिहंडत...' कविता०

बिहँसना—अक्रि० मुसकराना (रामा० ७३)।

बिहँसाना—सक्रि० हँसाना। अक्रि० मुसकराना 'सुनि सोहाग रानी बिहँसानी।' प० १५७। खिलना।

बिहँसौंहा—वि० हँसता हुआ (उदे० 'नचौहाँ')।

बिहग—पु० देखो 'बिहंग'।

बिहतरी—स्त्री० अच्छाई, भलाई, कल्याण।

बिहद, बिहद्द—वि० बहुत अधिक 'व्याधहूँ तें बिहद असाधु हौं अजामिलौं'—पद्माकर

बिहबल—वि० विह्वल, व्याकुल।

बिहरना, बिहराना—अक्रि० विचरना, भ्रमण करना (उदे० 'कमरिया' 'अखज')। विहार करना, क्रीड़ा करना 'जमुना जल बिहरत ब्रजनारी।' सू० ११२ टूटना, फटना 'सरवर हिया घटत नित जाई। टूक टूक होइकै बिहराई।' प० १७१, 'हृदय मोर बड़ दारुनरे पिया बिनु बिहरि न जाए।' विद्या० २४९

बिहान—पु० भोर, सवेरा, अन्त 'तहँ तब रहिहि सुखेन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिय जब लगि बिपति बिहान।' रामा० २४५। क्रिवि० कल (सू० ९९)।

विहाना—अक्रि० बीतना, अंत होना 'एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी।' रामा० २७३। सक्रि० त्यागना 'भजिय तुम्हहिं सब देव बिहाई।' रामा० ३६२

विहारना—अक्रि० क्रीड़ा करना, विचरण करना (राम० ५०७)।

विहाल—वि० व्याकुल 'देखि पवन सुत कटकु बिहाला।'

विहि—पु० विधि, ब्रह्मा (विद्या० ३)। [रामा० ४७९,

विहिश्त—पु० स्वर्ग।

विही—स्त्री० अमरूद।

विहीन, विहून—क्रिवि० विना, रहित 'कब लगि रहै परान बिहूना।' प० ५४

विहोरना—अक्रि० अलग होना, बिछुड़ना।

बींड़ी—स्त्री० रस्सीकी पिंडी, गेंडुरी।

बींधना—अक्रि० फँसना (उदे० 'चूँच')। सक्रि०

बीख—पु० डग, कदम। विष। [छेदना

बींग—पु० भेड़िया।

बीच—पु० मध्य। अंतर '...घन औ घनश्याममें बीच बढ़ो'। अवकाश, मौका 'पायी बीच इन्द्र अभिमानी, हरि बिनु गोकुल जान्यो।' सू० २०४, 'बीच पाइ निज बात सँवारी।' रामा० २०७। बचाव, रक्षा 'बीच न काहू तब कियो, दूतनि काढ्यो बार।' सू० २२। —करना = झगड़ा मिटाना, अलग करना 'रहा न कोउ धरहरिया करै दुहुन्ह महँ बीचु।' प० २१८। स्त्री० लहर।

बीचि—स्त्री० लहर।

बीछना—सक्रि० छाँटना (सुन्द० १२१)।

बीछी—स्त्री० बिच्छू (उदे० 'डाँक')।

बीछू—पु० बिच्छू (भू० ३९)।

बीज—पु० बीया, दाना। वीर्य। हेतु, प्रधान कारण। स्त्री० बिजली।

बीजक—पु० सूची। बीज।

बीजन, बीजना—पु० बिजना, पंखा (उदे० 'झलना', 'डुरावना')।

बीजमंत्र—पु० मूलमंत्र, ठीक रीति।

बीजरी—स्त्री० बिजली 'पिकको चुरायो बैन मृगको चुरायो नैन दसन अनार हाँसी बीजरी गँभीर की।' बेनी

बीजा—पु० बीया। वि० दूसरा।

बीजी—स्त्री० मींगी, गुठली। वि० बीज सम्बन्धी।

बीजु, बीजुरी—स्त्री० बिजली 'चमकहिं दसन बीजु कै नाईं।' प० १४, (वि० १८)।

बीझ, बीझा—वि० शून्य, निर्जन, सघन 'दंडाकरन बीझ बन जाहीं।' प० ६१

बीझना—अक्रि० फँसना 'इक मैं मेरी मैं बीझैं, इक अहंमेव मैं रीझै।' कबीर १८२

बीट—स्त्री० पक्षियोंकी विष्टा।

बीड़ा—पु० लगा हुआ पान।—उठाना = कोई काम करनेकी प्रतिज्ञा करना।—जोड़ना = बीड़ा उठाना

बीड़ी—स्त्री० देखो 'बीरी'। [(भ्र० ५५)।

बीतना—अक्रि० गुजरना, व्यतीत होना, घटना। दूर होना (उदे० 'निबुकना')।

बीता—पु० बालिश्त 'बन बन खोजत फिरे बन्धु सँग कियो सिन्धु बीताको।' भ्र०, ३५

बीथि, बीथी—स्त्री० सड़क, रास्ता (उदे० 'खरा', 'चौक')।

बीथित—वि० व्यथित, पीड़ित।

बीधना—अक्रि० फँसना 'मनहुँ कमल संपुट महँ बीधे, उड़ि न सकल चंचल अलिबारे।' सू० १६९। सक्रि० वेधना।

बीन—स्त्री० एक बाजा 'ले कर बीन प्रवीन, तिय गायो राग मलार।' वि० ६५

बीनना—सक्रि० चुनना, 'ब्रज बनिता मृग सावक नैनी बीनति कुसुम कली।' सू० १६४, बराना। बुनना

बीफै—पु० बृहस्पतिवार। [(उदे० 'झीना')।

बीबी—स्त्री० स्त्री, कुलवधू। नँनद, कुआँरी लड़की।

बीभत्स—वि० घृणित, दुष्ट। पु० एक रस।

बीमा—पु० किसी विशेष हानिको पूर्तिका दायित्व।

बीमार—वि० अस्वस्थ, रोगी।

बीय, बीया—वि० दूसरा। पु० बीज।

बीर—वि० साहसी, बहादुर। पु० वह जो साहसी हो, योद्धा। भाई 'हम दोउ बीरैं डारि परबरै मानो थाती सौंपि गये।' भ्र० १, 'बीते अवधि जाउँ जौं जियत न पावउँ बीर।' रामा० ५२७। स्त्री० सखी 'फिरत कहा है बीर बावरी भई सी, तोहि कौतुक दिखाऊँ चलि परे कुंज द्वारी के।'—हठी। कानका एक गहना, बीरी।

बीरउ—पु० बिरवा, पेड़। [चरागाह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बीरज—पु० वीर्य, शुक्र।
बीरन—पु० भाई।
बीरबहूटी—स्त्री० लाल रँगका बरसाती कीड़ा।
बीरा—पु० लगा हुआ पान (उदे० 'काथ', 'पहराना')।
बीरी—स्त्री० बीड़ा 'निज कर बीरी नृपहिं खवायो।' रघु० १७५। मिस्सी 'कोइ बीरा, कोइ लीन्हें बीरी। कोइ परिमल अति सुगँध समीरी।' प० १३८। कानका एक गहना। पत्तेका बना चुरुट।
बीरौ—पु० बिरवा, पेड़ 'पद्मावति कहँ दुख तस बीता। जस असोक बीरौ तर सीता।' प० २०१
बील—पु० मंत्र (रतन० ३०)। बेल। झील इ० की भूमि। वि० खोखला।
बीवी—स्त्री० देखो 'बीबी'।
बीस—पु० जहर (सू० १७२)। वि० पन्द्रह और पाँच। बीस बिसे = बहुत करके, पूर्णतया, निश्चय पूर्वक 'बीस बीसे व्रत भंग भयो सुकहो अब केशवको धनु ताने।' राम० ८९
बीसरना—सक्रि० भूल जाना। अक्रि० विस्मृत होना 'हँसों तो दुख ना बीसरै, रोओं बल घटि जाय।' (साखी ४१)
बीसी—स्त्री० कोड़ी, बीस वस्तुओंका समूह।
बीह—वि० बीस 'साँचहु मैं लवार भुज बीहा।' रामा० ७६८
बीहड़—वि० विकट, ऊबड़ खाबड़ (प० १६७)। जुदा।
बुंद—स्त्री०, पु० बिंदु, बूँद 'बुंद सूखि गो कहा भहा समुद्र छीजई।' राम० ३४९
बुँदकी—स्त्री० छोटी बिन्दी या छोटा चिह्न।
बुंदा—पु० बड़ी टिकली। कानका गहना। बूँद (उदे० 'उपनना')।
बुंदिया, बुंदौरी—स्त्री० एक मिठाई (उदे० 'पिराक')।
बुआ—स्त्री० पिताकी बहिन।
बुकनी—स्त्री० चूर्ण।
बुकुन—पु० बुकनी। राचक।
बुक्का—पु० अभ्रकका चूर्ण। स्त्री० रुधिर, कलेजा। एक बाजा (प० ८८)।
बुखार—पु० ज्वर, ताप, आवेग। वाष्प।
बुजुर्ग—वि० अनोखुद। पु० पूर्वज, बुरुजा।
बुझना—अक्रि० बुतना, ठंडा होना।
बु ाना—सक्रि० ठंडा करना (उदे० 'झल'), ताप दूर करना। 'लपट बुझावत बिरहकी कपट भरेऊ आय।' वि० २०। समझाना (उदे० 'चौधपन'),। अक्रि० शांत होना (उदे० 'अँचवना'), 'कैसे हूँ न बुझाति है ज्यों सपनेकी प्यास।' मति० १७९
बुट—स्त्री० बूटी।
बुटना—अक्रि० पलाना, भागना।
बुड़की—स्त्री० डुबकी।
बुड़ाना—सक्रि० डुबाना।
बुड्ढा, बुढ़वा—वि० वृद्ध। पु० वृद्ध मनुष्य।
बुढाई, बुढ़ौती—स्त्री० बुढ़ापा (उदे० 'धाई')।
बुढ़ाना—अक्रि० वृद्ध होना।
बुत—पु० मूर्त्ति, पुतला। स्नेहपात्र।
बुतना—अक्रि० बुझना, ठंडा होना।
बुताना—सक्रि० ठंडा करना। अक्रि० शांत होना, गुल होना 'मनमोदकन्हि कि भूख बुताई।' रामा० १३४ ठंडा होना, 'धराको प्रमान यहै तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना।'
बुदबुद, बुदबुदा—पु० पानीका बुल्ला (उदे० 'काँगुरा')।
बुद्ध—वि० सर्वज्ञ, बुद्धिमान्। पु० बुद्ध देव।
बुद्धि, बुद्धी—स्त्री० समझ, विवेकशक्ति।
बुध—पु० एक ग्रह। बुद्धिमान् मनुष्य। देवता।
बुधवान्—वि० बुद्धिमान्।
बुनना—सक्रि० बिनना, जाली आदि काढ़ना।
बुनियाद, बुन्याद—स्त्री० मूल, असलियत 'आदि बुन्यादि सबै हम जानति काहेको सतरात।' सूबे० १४५
बुबुकना—अक्रि० डाढ़ मारकर रोना, गला फाड़कर चिल्लाना।
बुबुकारी—स्त्री० डाढ़ मारकर रोना। [
बुभुक्षित—वि० भूखा।
बुरकना, बुरकाना—सक्रि० छिड़कना, डालना 'ललित-किसोरी जखम जिगर पर नौनपुरी बुरकाता है।' ललितकि०
बुरा—वि० खराब, निकृष्ट।
बुराई—स्त्री० खराबी, ऐब, बुक्स, नीचता, निन्दा।
बुरादा—पु० लकड़ीका चूर। चूर्ण।
बुरुज, बुर्ज—पु० मीनारका ऊपरी हिस्सा, या उसी तरहका किले इ० की दीवारका ऊपर निकला हुआ गोल हिस्सा, गुंबज। (उदे० 'ओदरना' प० ५५६)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुलंद - वि० बहुत ऊँचा, भारी।
बुलबुल—स्त्री० गानेवाला एक छोटा पक्षी।
बुलबुला—पु० पानीका बबूला।
बुलाक—पु० नाकका एक गहना।
बुलाकी—पु० घोड़ेकी एक जाति।
बुलाना—सक्रि० टेरना, पुकारना।
बुलावा, बुलौआ—पु० निमंत्रण।
बुल्ला—पु० बुदबुदा (उदे० 'बिलाना')।
बुहारना—सक्रि० झाड़ना (उदे० 'कतवार')।
बुहारी—स्त्री० बढ़नी, झाड़ू।
बूँद—स्त्री० छींटा, जलकण।
बूँदा—पु० बड़ी टिकली। बड़ी बूँद।
बूँदा बाँदी—स्त्री० हलकी वर्षा।
बूँदी—स्त्री० वर्षाके जलकी बूँद। एक मिठाई।
बू—स्त्री० गंध, बास। दुर्गंध।
बूआ—स्त्री० पिताकी बहिन।
बूक—पु० एक पेड़। चंगुल।
बूकना—सक्रि० पीसना, कूटना।
बूचा—वि० कनकटा, (उदे० 'खुभी')।
बूजना—सक्रि० छल करना।
बूझना—सक्रि० पूछना (उदे० 'जोतिक', 'ठगमूरि')। '...रामहिं यों सब बूझैं'—राम० २०७, समझना। 'ऐसी तोहि न बूझिये हनुमान हठीले।' विन० ११९.
बूट—पु० चनेका पौधा। पेड़ 'सब सोच-विमोचन चित्र-कूट। कलिहरन करन कल्यान बूट।' विन० १००
बूटना—अक्रि० भागना 'कहूँ बाजि स्यौ साजके जात बूटे।' सुजा० २३
बूटनि—स्त्री० बीरबहूटी।
बूटा—पु० पौधा। फूल आदि जैसा चिन्ह।
बूटी—स्त्री० जड़ी, भाँग। छोटा बूटा।
बूड़ना—अक्रि० डूबना 'ज्यों ज्यों बूड़े श्याम रंग त्यों त्यों उज्वल होय।' वि० ५४, (उदे० 'तरना', 'डमगना')।
बूढ़—वि० बुड्ढा। पु० बीरबहूटी। लाल रंग।
बूत, बूता—पु० शक्ति, सामर्थ्य (प० ६३, ४१)।
बूरना—अक्रि० बूड़ना, डूबना।
बूरा—पु० कच्ची चीनी, शक्कर। बारीक चूर्ण।
बृच्छ—पु० पेड़।
बृष—पु० बैल। इन्द्र। एक राशि। धर्म।
बृषकेतु, बृषध्वज—पु० शिवजी।
बृहत्—वि० बड़ा, उच्च, विशाल। दृढ़।
बेंग—पु० दादुर, मेंढक
बेंचना - सक्रि० दाम लेकर देना।
बेंट—पु० मूठ, हैण्डिल।
बेंड़—स्त्री० सहारेके लिए लगी लकड़ी (प० ३१९)।
बेंडना – सक्रि० बन्द करना, घेरना।
बेंड़ा—पु० ब्योंड़ा, अरगल (सुन्द० ५८)। वि० टेढ़ा
बेंत—पु० देखो 'बेत'। [कठिन।
बेंदा – पु० टीका। एक गहना।
बेंदी—स्त्री० एक गहना 'तियमुख लखि हीरा-जरी बेंदी बढ़त बिनोद।' वि० २९२। टिकली। शून्य, बिन्दी
बेंबडा—पु० देखो 'ब्योंड़ा'। [(उदे० 'उदोत')
बे—अ० बिना।
बेअंत—वि० अनंत, असीम।
बेअदब—वि० जो बड़ोंका अदब न करे, अशिष्ट, गुस्ताख।
बेआब—वि० कान्तिहीन (उदे० 'गरकाब')।
बेइज्जती—स्त्री० अपमान, अप्रतिष्ठा, निरादर।
बेइलि—पु० बेला, मोगरा।
बेईमान—वि० अविश्वसनीय, धोखेबाज़।
बेकरार—वि० व्याकुल, शान्तिरहित (प० २८, ११५)।
बेकल—वि० विकल, व्याकुल।
बेकली—स्त्री० व्याकुलता, बेचैनी।
बेकसूर—वि० निर्दोष, निरपराध।
बेकाम—वि० व्यर्थ, निकम्मा। क्रिवि० व्यर्थ।
बेकार—वि० व्यर्थ। बेरोज़गार।
बेकाखो—पु० ज़ोरसे पुकारनेकी आवाज़।
बेख—पु० वेष (उदे० 'जटिल')। स्वरूप, नक़ल 'सुर-पति सुत धरि बायस बेखा।' रामा० ३५८
बेखबर—वि० अनजान, बेहोश।
बेग—पु० शीघ्रता, तेज़ी, प्रवृत्ति।
बेगना—अक्रि० शीघ्रता करना 'बेगिय नाथ न लाइय बारा।' रामा० २०१
बेगर—वि० देखो 'बेहर' (?) (कबीर १४३)।
बेगाना—वि० दूसरा, अनजान।
बेगार—पु० जबरदस्ती कराया गया काम।
बेगि—क्रिवि० शीघ्र ही, तुरन्त (प० ५३)।
बेचना—सक्रि० दाम लेकर देना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बेचारा—वि० दीन, असहाय।
बेचैन—वि० व्याकुल।
बेजा—वि० अनुचित, बुरा। बेमौके।
बेज़ार—वि० तंग आया हुआ, परेशान, दुःखी। बीमार।
बेजोड़—वि० अद्वितीय, अखंड। उपमारहित।
बेझ, बेझा—पु० वेध्य, निशाना 'धानुक आप बेझ जग कीन्हा।' प० ४५. (क्षे० १३५)।
बेटकी—स्त्री० बेटी, पुत्री।
बेटला, बेटवा, बेटा—पु० पुत्र।
बेटौना—पु० पुत्र।
बेड़—पु० मेंढ़, घिराव।
बेड़ा—पु० नावोंका समूह। तख्तों आदिका ढाँचा।
बेड़िनी—स्त्री० वेश्या, नाचने गानेवाली स्त्री 'कहूँ लोलिनी बेदिनी गीत गावें।' राम० ११२
बेड़ी—स्त्री० हाथ या पाँव बाँधनेकी जंजीर, बंधन।
बेडौल—वि० बेढंगा, कुरूप।
बेढंगा—वि० बुरे ढंगका, भद्दा, बदशकल।
बेढ—पु० घेरनेका कार्य। नाश, ध्वंस।
बेढना—सक्रि० रूँधना, घेरना (कबीर १९३)। लपेटना (विद्या० १५२)।
बेढब—क्रिवि० बुरी तरहसे। वि० बेढंगा, भद्दा। विकट।
बेढ़ा—पु० हाथका एक गहना।
बेत—पु० एक लता या उसके डंठलकी लचीली लकड़ी। बेतपानि = जिसके हाथमें बेत या दण्ड हो 'बेतपानि रच्छक चहुँ पासा।' रामा० ५२१
बेतना—अक्रि० मालूम होना, जान पड़ना।
बेतहाशा—क्रिवि० बहुत घबड़ाकर, तेज़ीसे।
बेताब—वि० व्याकुल, बेचैन। दुर्बल।
बेताल—देखो 'बैताल'।
बेतुका—वि० बेमेलका, बेढब, विलक्षण।
बेद—पु० हिन्दुओंके प्राचीनतम धर्मग्रन्थ। बेत 'बिरिछ होइ जौ चन्दन पासा। चन्दन होइ बेद तेहि बासा।' प० ९
बेदन, बेदना—स्त्री० पीड़ा (सू० १३१), '...बड़ी है बाहु-बेदन कही न सहि जाति है।' कविता० २६०
बेदर्दी—स्त्री० बेरहमी, निष्ठुरता। वि० बेपीर।
बेदाना—पु० एक तरहका उत्तम अनार। बिहीदाना।
बेदाम—वि० बिना दामका। पु० बादाम। [वि० मूर्ख।
बेध—पु० छेद (उदे० 'बेधना')। नक्षत्रयुत योग।
बेधक—वि० बेधनेवाला, (उदे० 'अनियारा')।
बेधड़क—वि० बेरोक, निर्भय। क्रिवि० बेखटके।
बेधना—सक्रि० छेदना, घाव करना 'बरबस बेधत मो हियो तो नासाको बेध।' बि० १७, (उदे० 'कत')।
बेधिया—पु० अंकुश।
बेधीर—वि० अधीर।
बेन—पु० वेणु, बाँसुरी। बाँस।
बेना—पु० पंखा। बाँस। खस 'औ कपूर बेना कस्तूरी।' प० १६
बेनिमून—वि० निरुपम।
बेनी—स्त्री० त्रिवेणी। स्त्रियोंकी चोटी 'बेनी गूँथि माँग मोतिनकी सीसफूल सिर धारति।' सूबे० १३०, (उदे० 'गूँदना')। किवाड़में लगी एक लकड़ी।
बेनु—पु० देखो 'बेन' (उदे० 'दिन', सू० १९)।
बेनौरी—स्त्री० बिनौलेके सदृश छोटे ओले, पत्थर।
बेपाइ—वि० भौचक, किंकर्त्तव्यविमूढ़ (उदे० 'कौंहर')।
बेपीर—वि० निर्दय, सहानुभूति न रखनेवाला।
बेबस—वि० लाचार, परवश।
बेबाक—वि० चुकता, साफ।
बेर—पु० एक कँटीला पेड़ या उसका फल, बदर। स्त्री० बार 'कुबेर बेर कै कही न यक्ष भीर मंदिरे।' राम० ४००। देर, समय।
बेरवा—पु० विवरण। सोने या चाँदीका कड़ा।
बेरहमी—स्त्री० दयाहीनता, कठोरता।
बेरा—स्त्री० समय (प० २९९)। सवेरा। जहाजोंका समूह 'ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भये समर सागर कहँ बेरे।' रामा० ५४०। बार, दफा 'इक बीस बेरा दई विप्रन रुधिर जल अन्हवाइके।' राम० १२५
बेरिआ, बेरियाँ—स्त्री० बेला, समय।
बेरी—स्त्री० बेर। एक लता। बेढ़ी 'पायन बेरी परत है डोल बजाय बजाय।' रहीम २६। नौका 'चरन परसि पाषान उड़त है मति बेरी उड़ि जात।' [सू रा० १३
बेलंद—वि० बुलंद, ऊँचा।
बेलंब—पु० विलम्ब, देरी।
बेल—पु० बिल्व वृक्ष या उसका फल। लता। फूल-पत्ती जैसे चिह्न। बेला।
बेलदार—पु० मिट्टी खोदनेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बेलन—पु० लकड़ी इत्यादिका गोल लम्बा टुकड़ा।
बेलना—सक्रि० (रोटी) बढ़ाना। नष्ट करना। पानीके छींटे उड़ाना। पु० रोटी बेलनेका लकड़ीका गोल लम्बा टुकड़ा।
बेलसना—अक्रि० आनन्द उड़ाना।
बेला—पु० एक सुगंधित सफेद फूल, मोंगरा। मल्लिका। समुद्रतट। कटोरा। तरंग। समय।
बेली—पु० साथी। स्त्री० बेल (भ्र० ५४)।
बेवपारी—पु० व्यवसायी।
बेवरा—पु० ब्योरा, हाल।
बेवस्था—स्त्री० शास्त्र-सम्मत विधान। प्रबन्ध। स्थिति 'कठिन मरनतें पेम-बेवस्था।' प० ५३
बेवहरना—अक्रि० बरतना, व्यवहार करना।
बेवहरिया—पु० देखो 'व्यवहरिया'।
बेवहार—पु० देखो 'व्योहार'।
बेवा—स्त्री० विधवा।
बेवाई—स्त्री० पाँव फटनेका रोग।
बेवान—पु० विमान, रथ 'मँझ पद्मावति कर जो बेवानू।' प० १६०
बेश, बेष—दे० 'बेस'।
बेशी—स्त्री० अधिकता, लाभ।
बेशुमार—वि० असंख्य, अगणित।
बेश्म—पु० घर।
बेसंदर—पु० अग्नि।
बेसँभर—वि० बेसुध।
बेस—पु० भेष। वस्त्र, स्वरूप 'माधव तेरे बिरहमें तज्यो सकल निज बेस।' सत्यना०।
बेसन—पु० चनेका आटा।
बेसबब—क्रिवि० बिना किसी कारणके।
बेसर—पु० बुलाक 'बेसर-मोती-दुति-झलक परी अधरपर आय।' बि० ७५। गदहा, खच्चर 'बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती। चले वस्तु भरि अगनित भाँती।' रामा० १६१
बेसरा—वि० निराश्रय। पु० खच्चर। 'हस्ति घोड़ औ दर पुरुष जावत बेसरा ऊँट।' प० २४५। एक पक्षी।
बेसवा, बेसा—स्त्री० वारांगना, वेश्या (साखी १६७)।
बेसारा—वि० बैठाने या जमानेवाला।
बेसाहना—दे० 'बिसाहना'। 'हौ बनिजार तो बनिज बेसाहौ।' प० १०१
बसाहा—पु० मोल ली हुई वस्तु।
बेसुध—वि० बेहोश, अचेत।
बेसुरा—वि० बेमेल स्वरवाला, बेराग, बेठिकाने।
बेस्वा—स्त्री० वेश्या 'बेस्वा केरा पूत ज्यूँ कहै कौन सूँ बाप।' कबीर ६
बेहँसना अक्रि० ज़ोरसे हँसना।
बेह—पु० छिद्र 'कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू।' रामा० ३२४, (प० २३५, कबीर ९५)।
बेहड़—वि० ऊबड़खाबड़। पु० जंगल (रामा० २६५)।
बेहद—वि० अपरिमित, अत्यधिक।
बेहना—पु० धुनिया।
बेहया—वि० बेशर्म, निर्लज्ज।
बेहर—वि० पृथक्, भिन्न 'बेहर बेहर सबकै बोली।' प० २४७। अचल। पु० बाघड़ी।
बेहरना—अक्रि० फटना, दरकना।
बेहरा—वि० पृथक्, न्यारा।
बेहराना—सक्रि० फाड़ना। अक्रि० फटना 'कंथा टूक टूक बेहराना।' प० १०९
बेहरी स्त्री० चंदा कर बटोरा हुआ धन, चंदा।
बेहाल—वि० बेचैन (उदे० 'उचटना')।
बेहु—पु० देखो 'बेह', (भ्र० ११५)।
बेहूदा—वि० अशिष्ट, बदतमीज।
बेहून—क्रिवि० विहीन, रहित, बिना।
बेहैफ—वि० निश्चिन्त।
बेहोश—वि० बेसुध।
बैंगन—पु० भंटा।
बैंड़ना—सक्रि० देखो 'बेंड़ना'।
बैंड़ा—वि० कठिन, टेढ़ा, आड़ा।
बै—स्त्री० वय, उम्र। बेचनेका कार्य। बैसंधि = वयः संधि 'नव बै संधि दुहुनि नित उलहत, जब देखो तब औरै।' चाचा हित०।
बैकना—अक्रि० बहकन 'बँहकाये तैं और के ये ही तैं जनि बैकु।' रतन० ३२
बैकल—वि० व्याकुल, पागल।
बैकुंठ—पु० विष्णुका धाम। स्वर्ग।
बैखानस—पु० एक तरहका तपस्वी (रामा० २८१)।
बैजंती—स्त्री० श्रीकृष्णकी माला। एक पुष्प-वृक्ष।
बैठक—स्त्री० बैठनेकी जगह। आसन। अधिवेशन। मेल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बैठकी—स्त्री० आसन । बैठक ।
बैठन, बैठनि—स्त्री० बैठनेकी क्रिया या ढंग ।
बैठना—अक्रि० उपविष्ट होना, आसीन होना, नीचे जम जाना । दब जाना । गिर पड़ना ।
बैठाना, बैठारना—दे० 'बिठाँना' (उदे० 'अंकमाल') ।
बैत—पु० पद्य, कविता ।
बैतरनी—स्त्री० एक पौराणिक नदी ।
बैताल—पु० स्तुति पढ़नेवाला, भाट । एक भूत-योनि,
बैतालिक—पु० स्तुतिपाठक । [द्वारपाल ।
बैद—पु० वैद्य 'वहई रोग निदान वहै बैद औषध वहै ।' लि० २३०, (रतन० २२) ।
बैदई, बैदाई—स्त्री० वैद्यका काम '...बेधा सकल शरीर बैद करै बैदाई'—गिरिधर
बैदेही—स्त्री० जानकी ।
बैन—पु० वचन ।
बैनतेय—पु० गरुड़ ।
बैना—पु० देखो 'बयना' । सक्रि० बोना ।
बैपारी—पु० व्यापारी, व्यवसायी ।
बैयर—स्त्री० स्त्री (उदे० 'चुरी') ।
बैरंग—वि० जिसका महसूल पहले अदा न किया गया हो ।
बैर—पु० शत्रुता, विरोध, द्वेष । —पड़ना = कष्ट देना । —लेना = बदला लेना 'लैहौं बैर पिता तेरे को जैहैं कहाँ पराई ।' सू० । पु० बेरका पेड़ या फल ।
बैरख—पु० झंडा '...इन्द्रको न चाप रूप बैरख समाज को ।' भू० ३२ । 'बैरख फिरयो जनकपुरके दिसि तुङ्ग व्योम फहराना ।' रघु० १५८ (अ० ११४) ।
बैराखी—स्त्री० भुजापर पहननेका एक आभूषण ।
बैराग, बैराग्य—पु० विरक्ति ।
बैराना—अक्रि० उन्मत्त होना, वायुके कोपसे प्रभावित होना 'जे अखियाँ बैरारहीं लगै बिरहकी बाह ।' रतन० ३१, (९२) ।
बैरी—पु० शत्रु ।
बैल—पु० वृष, बरधा ।
बैसंतर, बैसंदर—पु० वैश्वानर, अग्नि (कबीर ३२२) ।
बैस—स्त्री० उम्र (उदे० 'तलवेली', वि० ९९) । जवानी, पु० वैश्य ।
बैसना—अक्रि० बैठना 'कृत युग कैसे । जनु जन बैसे ।' राम० ३४, (उदे० 'धूस', सू० १७)
बैसाख—पु० चैत्रके बादका महीना ।
बैसाखी—स्त्री० टेककर चलनेकी लाठी । वैशाख-पूर्णिमा ।
बैसारना—सक्रि० बैठालना, 'माये नहिं बैसारिय जौं सुठि सुआ सलोन ।' प० ३९
बैसिक—पु० वह नायक जो वेश्यासे प्रेम करे ।
बैहर—स्त्री० वायु । वि० डरावना 'बानर बरार बाघ बैहर बिलार बिग बगरे बराह जानवरनके जोम हैं ।' भू० १४२
बोक, बोकरा—पु० बकरा 'कहूँ बोक बाँके कहूँ मेष सूरे ।'
बोग—पु० घोड़ोंकी एक जाति । [राम० ११२
बोजा—स्त्री० चावलकी शराब ।
बोझ—पु० वजन, भार । गट्ठर । श्रम । व्यय ।
बोझना—सक्रि० लादना. माल चढ़ाना ।
बोझल, बोझिल—वि० वज़नदार ।
बोझा—दे० 'बोझ' ।
बोटी—स्त्री० मांसका टुकड़ा ।
बोड़ना—सक्रि० डुबोना (कबीर १३४) ।
बोड़ा—पु० एक लम्बी फली, 'बरबटी' । अजगर ।
बोड़ी—स्त्री० दमड़ी । बोंड़ी ।
बोत—पु० घोड़ोंका एक भेद ।
बोतल—स्त्री० बड़ी शीशी ।
बोदा—वि० फुसफुसा, सुस्त । मूर्ख ।
बोध—पु० ज्ञान । सन्तोष, धैर्य (मति० २१३) ।
बोधक—पु० बोध करानेवाला, सूचक, ज्ञापक ।
बोधना—सक्रि० समझाना, (उदे० 'चिरैया', सूवे० ५८) । 'युवति बोधि सब घरहिं पठाई' सूवे० ११२
बोना—सक्रि० खेतमें बीज डालना, वपन करना, छित-
बोया—पु० स्तन, गठरी । [राना ।
बोय—स्त्री० बास, सुगंध ।
बोरका—पु० दावात ।
बोरना—सक्रि० डुबाना, (उदे० 'करिया', 'घाटारोह') । 'तासु दूत होइ हम कुल बोरा ।' रामा० ४६०
बोरा—पु० चाँदी या सोनेका घुँघरू । टाटका थैला ।
बोरिया—पु० बिस्तरा । स्त्री० थैली ।
बोरी—स्त्री० छोटा बोरा । —बाँधना = जानेका सामान ठीक करना ।
बोल—पु० वचन, । बोली (उदे० 'कढ़ना') । प्रतिज्ञा 'सो हमहूँ तुमहूँ मिलि कीजे । बापको बोल न नेकहु छीजै ।' राम० २२९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बोलचाल—स्त्री० बातचीत। मेल-मुहब्बत।
बोलती—स्त्री० बोलनेकी शक्ति, वाणी।
बोलना—अक्रि० मुखसे शब्द निकालना, आवाज़ करना। सक्रि० बात करना, कहना। बुलाना, ललकारना 'सुनौ राम संग्रामको तोहि बोलौं।' राम० ४६३, सँदेशा भेजकर बुलवाना 'अब बोलहु बेगि बरात सबै।' राम० १०८ (अ० ७७)। छेड़छाड़ करना। समझना, जानना 'बालक बोलि बधहुँ नहिं तोही।' रामा० १४७
बोलवाना—सक्रि० दूसरेके द्वारा बुलाना। दूसरेके मुखसे कहलाना।
बोलसर—पु० मौलसिरी, बकुल।
बोलावा—दे० 'बुलावा'।
बोली—स्त्री० वाणी, बात, शब्द, भाषा। नीलामकी वस्तुका दाम ज़ोरसे कहना। व्यंगोक्ति।
बोह—स्त्री० डुबकी, गोता।
बोहनी—स्त्री० पहली बिक्री।
बोहारना—सक्रि० झाड़ना (प० १२३)।
बोहित, बोहिथ—पु० जहाज (उदे० 'उपराहीं', सू०१४८)।
बौंड़—स्त्री० दूरतक फैली हुई पतली शाखा, लता, 'बढत बौंड जनु लही सुसाखा।' रामा० २०१
बौंड़ना—अक्रि० लिपटना, दूरतक फैलना, आगे बढ़ना।
बौंडर—पु० बवंडर, बगूला 'उनहीमें मन भ्रमत है है बौंडरको पान।' रस० ४४
बौंड़ी—स्त्री० नवजात फल। कली। फली। छदाम।
बौआना—अक्रि० अंडबंड बकना, बर्राना।
बौखलाना—अक्रि० पागल सा हो जाना।
बौछाड़, बौछार—स्त्री० हवाके साथ पानीका झोंका, हवाके कारण वर्षाकी बूंदोंका भीतर आ जाना।
बौना—वि० छोटे क़दका। पु० छोटे क़दका मनुष्य।
बौर—पु० मौर, आमका फूल।
बौरना—अक्रि० मौर निकलना। [❀ रामा० ५७४
बौरहा—वि० पागल 'तृसना केहि न कीन्ह बौरहा।' ❀
बौरा—वि० पागल, भोला-भाला (उदे० 'निबौरी')। गूँगा 'प्रेम बात सुनि बौरा होई। तहाँ सयान रहै नहिँ कोई।' ध्रुवदास।
बौराई—स्त्री० पागलपन।
बौराना—अक्रि० पागल हो जाना। सक्रि० उन्मत्त करना 'कुमति कुसंगति काम ये सब बौरावत प्रान।' —पद्माकर। बहकाना 'साँचेहु सुत भयो मँद नायकहे, हौं नाहिन बौरावति।' सू० ४०
बौराह—वि० पागल।
बौहर—स्त्री० बहू, स्त्री।
ब्यंग—पु० ताना, चुटकी। गूढ़ अर्थ।
ब्यजन—पु० बिजना, पंखा (रामा० १९०)।
ब्यतीतना—अक्रि० बीत जाना।
ब्यथा—स्त्री० दुःख, पीड़ा।
ब्यलीक—वि० अप्रिय। विलक्षण। अपरिचित। पु० डाँट-डपट। अपराध। दुःख।
ब्यवसाय—पु० रोज़गार, व्यापार।
ब्यवस्था—स्त्री० देखो 'बेवस्था'।
ब्यवहरिया—पु० ऋण देनेवाला, हिसाब करनेवाला।
ब्यवहार—पु० देखो 'ब्योहार'।
ब्यसन—पु० विषयासक्ति, विशेष रुचि, लत, अभ्यास। दुःख, दुर्भाग्य, दोष। पतन, विनाश।
ब्याज—पु० सूद। बहाना, छल, बाधा।
ब्याध,-धा—पु० बहेलिया, शिकारी।
ब्याधा, ब्याधि—स्त्री० रोग, दुःख।
ब्याना—सक्रि० जनना। अक्रि० बच्चा देना।
ब्यापक—वि० विस्तृत। स्त्री० व्यापकता 'मधुकरके पठये ते तुम्हरी ब्यापक न्यून परी।' अ० १०२
ब्यापना—अक्रि० फैलना, भर जाना, 'नगर ब्यापि गई बात सुतीछी।' रामा० २२१। ग्रसना।
ब्यापार—पु० व्यवसाय, रोज़गार। काम। क्रिया।
ब्यार, ब्यारि—स्त्री० हवा।
ब्यारी, ब्यालु—स्त्री० रात्रिका भोजन।
ब्याल—पु० साँप, हाथी, दुष्ट, व्याघ्र।
ब्याह—पु० विवाह, परिणय।
ब्याहना—सक्रि० विवाह करना।
ब्योंत—स्त्री० काट छाँट। वृत्तान्त, हाल 'बलि बामनको ब्योंत सुनि को बलि तुमहिं पत्याय।' वि० ७०। व्यवस्था, प्रबंध। उपाय। ढंग, विधि। मौक़ा।
ब्योंतना, ब्योतना—सक्रि० सीनेके लिये कपड़ेको कतरना। (उदे० 'छिपी')।
ब्योपार—पु० देखो 'व्यापार'।
ब्योरना—सक्रि० सुलझाना, अलग अलग करना 'भंजन करि खंजन-नयनि बैठी ब्योरति बार।' वि० ३७ (वंग)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्योरा—पु० विवरण, नफ़सील, वृत्तान्त। अन्तर।
ब्योसाय—पु० व्यापार, रोज़गार।
ब्योहर—पु० व्यवहार, लेनदेन।
ब्योहरिया—पु० देखो 'व्यवहरिया'।
ब्योहार, ब्यौहार—पु० लेनदेन, व्यापार। बर्त्ताव। कार्य। न्याय। झगड़ा।
ब्रंद—पु० वृन्द, समूह 'मनु अढोल वारिधिमें बिंबित राका उडुगन ब्रन्द।' सू० ८६
ब्रजना—अक्रि० जाना।
ब्रह्मंड—दे० 'ब्रह्मांड'।
ब्रह्म—पु० परमात्मा, ब्रह्मा, ब्राह्मण, वेद, ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मचर्य—पु० जीवनका प्रथम आश्रम, अध्ययनकाल, वीर्यरक्षाका व्रत।
ब्रह्मचारी—पु० ब्रह्मचर्यसे रहनेवाला, प्रथम आश्रममें रहकर विद्याभ्यास करनेवाला।
ब्रह्मदोष—पु० ब्रह्महत्याका पाप।
ब्रह्मद्वार—पु० मस्तकका मध्य भाग।
ब्रह्ममुहूर्त्त—पु० सूर्योदयसे चार घड़ी पूर्वका समय।
ब्रह्मरंध्र—पु० देखो 'ब्रह्मद्वार'।
ब्रह्मराक्षस—पु० ब्राह्मण जो मरनेके बाद प्रेत हो गया हो।
ब्रह्मवादी—वि० केवल ब्रह्मकी सत्ता माननेवाला, अद्वैतवादी।
ब्रह्मविद्,-वेत्ता—पु० ब्रह्मको जाननेवाला। तत्वज्ञ।
ब्रह्महत्या—स्त्री० ब्राह्मणका वध।
ब्रह्मांड—पु० अखिल सृष्टि। कपाल।
ब्रह्मा—पु० विधाता।
ब्राह्मणी—स्त्री०ब्रह्माकी स्त्री सरस्वती।
ब्रात—पु० वृन्द, समूह 'विष्णु विरंचि आदि सुर ब्राता। चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराता।' रामा० ५५
ब्राह्मण—पु० विप्र. द्विज।
ब्रीड, ब्रीड़ा—स्त्री० लज्जा, संकोच 'समुझत चरित होत मोहि ब्रीड़ा।' रामा० ५६८
ब्रीड़ना—अक्रि० लज्जित होना, सकुचाना (सू०११८)।

भ

भंकार—पु० भीषण शब्द।
भंग—स्त्री० भाँग, बूटी। पु० खंड, हार, नाश, टूटनेका भाव, विघ्न, उपद्रव 'परगट होहुँ त होइ अस भंगू। जगत दिवाकर होइ पतंगू।' प० ९१। कुटिलता, लहर।
भंगना—सक्रि० खंडित करना, तोड़ना, नष्ट करना। अक्रि० टूटना, परास्त होना।
भँगार—पु० बरसातका गड्ढा। कतवार, कूड़ा 'बाहर भेष बनाइया, भीतर भरी भंगार।' साखी १३८ (उदे० 'कली', कबीर २५९)।
भंगि—स्त्री० टेढ़ापन, विन्यास, विच्छेद. लहर।
भंगी—पु० विन्यास। मेहतर। भंग करनेवाला। भंग होनेवाला। स्त्री० कुटिलता, टेढ़ापन।
भंगुर—वि० भंग होनेवाला, अस्थायी।
भँगेड़ी—वि० भाँग पीनेवाला।
भँजना—अक्रि० घटा जाना। विभक्त होना।
भंजना—सक्रि० खंडित करना, तोड़ना 'प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा।' रामा० १५५
भंटा—पु० भाँटा, बैंगन।
भंड—पु० भाँड, मसखरा। पात्र 'चींटी अंड-भंडमें समान्यो ब्रह्मंड सब।' देव।
भँडफोड़, भंडाफोड़—पु० बर्त्तनोंको तोड़ने फोड़ने या भेद खोलनेकी क्रिया।
भँडरिया—स्त्री० दीवारमें बना छिद्र या आलमारी जिसमें किवाड़ लगे हों। एक जाति। पु० मक्कार, पाखण्डी।
भंडा—पु० पात्र। बर्त्तन (प० ३१५)। गुप्त भेद।
भँडाना—सक्रि० तोड़ना फोड़ना, मथना।
भंडार—पु० वह घर जिसमें अन्नादि रखा जाय, कोष।
भंडारा—पु० कोष, राशि, अन्नगृह। साधुओंका भोज।
भंडारी—पु० कोठारी, खजानची। स्त्री० दीवारमें बना किवाड़ोंवाला ताख, कोष।
भँडौआ—पु० हास्य रसके भद्दे गीत।
भँभाना—अक्रि० रँभाना।
भँभीरी—स्त्री० एक तरहका फतिंगा 'जिउ बाउर या फिरे भँभीरी।' प० १६७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भँभेरि—स्त्री० डर।
भँवना—अक्रि० भ्रमना, घूमना, भँडराना (उदे० 'कोहाँर', 'तुलाना') 'तेइ भ्रमर भँवत रस रूप आस।' राम० १३४
भँवर—पु० भ्रमर (उदे० 'कँवल')। पानीका चक्कर। गड्ढा, छिद्र। 'नाभि मनोहर लेत जनु जमुन भँवर छवि छीन।' रामा०।
भँवरभीख—स्त्री० घूम फिरकर माँगी गयी भिक्षा।
भँवरा—पु० भ्रमर। एक खिलौना, 'दे मैया भँवरा चक डोरी।' सूवे० ७५
भँवरी—स्त्री० आवर्त्त, सिर या पीठादि पर बालोंका चक्र। परिक्रमा, फेरी, चक्कर 'तब तिन्ह चढ़ै फिरै नौ भँवरी।' प० २७५
भँवाना—सक्रि० घुमाना। बहकाना।
भँवारा—वि० चक्कर लगानेवाला।
भ—पु० नक्षत्र, पर्वत, राशि, मधुप, इ०।
भइया—पु० भाई।
भउजाई—स्त्री० भौजाई, भ्रातृ-पत्नी।
भकुआ, भकुवा—वि० मूर्ख 'घाघ कहैं ये तीनों भकुआ सिर बोझा औ गावें।' घाघ। (उदे० 'उढरना')।
भकोसना—सक्रि० लालच वश जल्दी जल्दी खाना।
भक्त—पु० सेवक। भात। वि० पृथक् किया हुआ।
भक्ताई—स्त्री० भक्ति, सेवा। [अनुयायी।
भक्ति—स्त्री० सेवा, पूजा, श्रद्धा। भाग।
भक्ष, भक्षण—पु० आहार, भक्षण।
भक्षना—सक्रि० खाना (उदे० 'जूठा')।
भक्ष्य—पु० खाद्य वस्तु, अन्न। वि० खाने योग्य।
भख—पु० खानेकी वस्तु (उदे० 'भखना')। भख करना = भखना।
भखना—सक्रि० खाना (उदे० 'अथवना', साखी ४२)।
भगंदर—पु० एक रोग।
भग—पु० सूर्य, कान्ति, ऐश्वर्य, योनि।
भगत—दे० 'भक्त'।
भगना—अक्रि० भागना। पु० भानजा।
भगनी—स्त्री० भगिनी, बहिन।
भगर, भगल—पु० धोखा, छल। जादू।
भगवंत—पु० ईश्वर।
भगवती—स्त्री० देवी, दुर्गा, सरस्वती।
भगवान्—पु० ईश्वर, पूज्य व्यक्ति। वि० ऐश्वर्ययुक्त।
भगाना—अक्रि० भागना। सक्रि० खदेड़ना, दौड़ाना, हटाना। बहका कर ले जाना।
भगिनी—स्त्री० बहिन।
भगीरथ—पु० गंगाको पृथ्वीपर लानेवाले एक सूर्यवंशी राजा। वि० अत्यन्त कठिन, बहुत बड़ा (प्रयत्न, परिश्रम इ०)।
भगेहू, भगेलू, भगोड़ा—वि० भागनेवाला। भागा हुआ।
भगोहाँ, भगौहाँ—वि० भागनेको तैयार। गेरुआ (सुजा० २००, सूवे० ३८५)।
भगौती—स्त्री० देवी, दुर्गा।
भग्गुल—वि० भागा हुआ, कायर।
भग्न—वि० टूटा हुआ, गिरा हुआ, निराश।
भग्नावशेष—पु० मकान इ० का बचा हुआ टूटाफूटा
भच्छ—पु० आहार, आहारकी वस्तु। [अंश, खँडहर।
भच्छना—सक्रि० खाना।
भजन—पु० कीर्तन, जप, पूजा। स्तुतिके गीत।
भजना—सक्रि० भजन करना, जपना। आश्रय लेना। अक्रि० भागना, 'भजन कह्यो तातें भज्यौ भज्यौ न एको बार।' वि० १'५३ (उदे० 'थाति') पहुँचना।
भजनी—पु० भजन करनेवाला।
भजाना—अक्रि० भागना। सक्रि० भगाना, हटाना।
भजियाउर—स्त्री० एक भोज्य वस्तु।
भट—पु० वीर, योद्धा, सैनिक।
भटकटाई, भटकटैया—स्त्री० एक कँटीला पौधा।
भटकना—अक्रि० व्यर्थ घूमना। मार्ग भूलना, (उदे० 'झहराना', वि० ४१)।
भटका—पु० व्यर्थ घूमनेकी क्रिया, चक्कर 'द्वार न पावै सबदका फिरि फिरि भटका खाय।' साखी १०६
भटकौंहा—वि० भटकानेवाला।
भटभेरा—पु० मुठभेड़, आकस्मिक भेंट (दास ९६) 'निसिदिन निरखौ जुगुल माधुरी रसिकनते भटभेरो।'†
भटा—पु० भंटा, बैंगन। [† ललित कि०। मारपीट।
भटिहारिन, भटिहारी—स्त्री० सरायका प्रबन्ध करने वाली स्त्री (दीन० ११२)।
भट्टू—स्त्री० सखी, आली, स्त्री 'या ब्रजमण्डलमें रसखानि सु कौन भट्टू जु लट्टू नहिं कीनी।' रसखानि। (उदे० 'छकना')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भटैया—स्त्री० भटकटैया नामक कंटीला पौधा।
भट्ट—पु० भाट। योद्धा, सैनिक। एक उपाधि।
भट्ठी—स्त्री० भाड़। एक तरहका बड़ा चूल्हा।
भठियारा, भठिहारा—पु० सरायका प्रबन्धक।
भड़क—स्त्री० चमकदमक। भड़कनेका भाव, झिझक।
भड़कना—अक्रि० चमकना, बिदकना, प्रज्वलित या कुपित हो उठना।
भड़काना—सक्रि० बिचकाना, उत्तेजित करना, बहकाना।
भड़कीला—वि० चमकीला। भड़कनेवाला। चौंकनेवाला।
भड़भड़—स्त्री० भीड़भड़क्काके कारण उत्पन्न गड़बड़ी। चीज़ोंके बराबर गिरने टकराने आदिकी आवाज़।
भड़भूँजा—पु० भाड़में अन्न भूँजनेवाला, भुजवा।
भड़ार—पु० देखो 'भंडार'।
भड़िहा—पु० चोर।
भड़िहाई—स्त्री० चोरी। क्रिवि० चोरोंकी तरह 'हतवत चितै चला भड़िहाई।' रामा० ३७९
भड्डर—पु० ब्राह्मणोंकी एक निम्न श्रेणी।
भणना—सक्रि० कहना, वर्णन करना।
भणित, भणिति—स्त्री० कथा, कही हुई बात। रचना।
भतवान—पु० विवाहके एक दिन पूर्वकी एक रीति।
भतार—पु० भर्त्तार, पति (भू० ९०)।
भतीजा—पु० भाईका लड़का।
भदेस, भदेसिल—वि० भद्दा, कुरूप 'विद्यमान आपुन मिथिलेसू। मोरकहब सबभाँति भदेसू।' रामा० ३४०
भदौंह—वि० भाद्रपद मासमें होनेवाला।
भद्दा—वि० बदसूरत, कुरूप, भोंडा।
भद्र—वि० शिष्ट, साधु। पु० मंगल, हित। खंजन। सिर, दाढ़ी आदिका मुण्डन। वह जिसका मुंडन हुआ हो 'लीनो हृदय लगाय सूर प्रभु पूँछत भद्र भये क्यों॰ भाई।' सूरा० १८
भद्री—वि० भाग्यशाली।
भनक—स्त्री० अस्पष्ट ध्वनि, झनक 'नन्द भवन भनक सुनी कंस कहि पठायो।' सूबे० २५८
भनकना—अक्रि० आवाज़ करना, बोलना।
भनना—सक्रि० कहना 'सुकवि लषन मनकी गति भनई।' रामा० ३१४ [† भुनभुनाना।
भनभनाना—अक्रि० 'भन भन' करना, गुञ्जार करना। †
भनिति—स्त्री० कथन, कथा। रचना।
भबकी, भभकी—स्त्री० घुड़की।
भम्भड़, भम्भड़—स्त्री० भीड़भाड़, भड़भड़।
भभकना—अक्रि० प्रज्वलित होना, भड़कना, उबलना।
भमरना—अक्रि० डरना। दुविधामें पड़ना, 'प्रमुदित गे भगवान बिलोकि बरातहिं। भमरे, बनइ न रहत, न बनइ परातहिं।' पा० मं० ३८। 'बालक भमरि भुलान फिरहिं घर हेरत।' पा० मं० ३८
भभूका—पु० ज्वाला। वि० अंगारे जैसा लाल 'हस्ती घोड़ धाइ जो धूका। ताहि कीन्ह सो रुहिर भभूका।' प० ३२१
भभूत, भभूति—स्त्री० भस्म (साखी १३७, प० ९७)।
भमीरी—पु० झींगुर, (दे० 'भँभीरी') 'बरषा भयेतें जैसे बोलत भमीरी स्वर...'—सुन्द० ३०
भयंकर—वि० भीषण, डरावना।
भय—पु० डर। अक्रि० भया, भये 'अरुणगात अति प्रात पद्मिनी-प्राणनाथ भय।' राम० ८४
भयकर, भयप्रद—वि० डरावना।
भयभीत—वि० भयाक्रान्त, डरा हुआ।
भयान, भयानक—वि० डरावना। '...ज्यों गृह बिना दीप भयान।' (सूबे० ४०३) 'वह भूमि भई भारी भयान।' सुजा० २५
भयाना—अक्रि० डरना। सक्रि० डराना।
भयावन, भयावना, भयावह—वि० भयंकर।
भरंत—स्त्री० भ्रान्ति, शंका, सन्देह।
भर—पु० भार। पीनता। युद्ध। एक जाति। वि० सारा, पूर्ण। क्रिवि० के बल 'सिर भर जाउँ उचित अस मोरा।' रामा० २९६
भरकना—अक्रि० देखो 'भड़कना'।
भरण, भरन—पु० पोषण, वेतन। भरणी नक्षत्र।
भरता—पु० आलू, भाँटा आदिको भूनकर बनायी हुई तरकारी, चोखा। पति।
भरतार—पु० पति, स्वामी (उदे० 'पतिवर्त',राम० १९७)।
भरना—सक्रि० पूरा करना, चुकाना, डालना। बिताना, 'सेजवाँ रोइ रोइ निसि भरसी।' प० २१६। काटना, सहना 'रूपव कौन अधिक सीतातें जन्म वियोग भरे।' सू० २। पोतना। अंक भरना, भेंटना। अक्रि० किसी वस्तुसे पूर्ण होना, रिक्त न रहना, बराबर होना।
भरनि—स्त्री० बाना, वेशभूषा।
भरनी—स्त्री० एक नक्षत्र। भरण गान जिससे सर्प-विष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उतरता है। मयूरी 'राम कथा कलि-पन्नग भरनी।' रामा० २३। देखो 'भरनि' (जैसी करनी तैसी भरनी)।
भरपाई—क्रिवि० पूर्णतः (सूबे० ४४)। स्त्री० पूरा पूरा वसूल होनेकी क्रिया। चुकता होनेकी रसीद।
भरपूर—क्रिवि० पूर्णतः। वि० परिपूर्ण, मुँहामुहँ।
भरभराना—अक्रि० फूलना, रोमांच होना, घबराना।
भरभूँजा—पु० भड़भूँजा, भुजवा।
भरभेंटा—पु० मुठभेड़।
भरम—पु० भ्रम, शंका, भेद।
भरमना—अक्रि० भटकना, घूमना, बहकना। 'तेली केर वृषभ ज्यों भरम्यो भजत न सारंगपानि।' सू० ५२। स्त्री० भ्रान्ति, गलती।
भरमाना—सक्रि० भटकाना, बहकाना (उदे० 'चतुराई')। अक्रि० चकित होना। भटकना (उदे० 'छेमकरी')।
भरमार—स्त्री० बाहुल्य। प्रचुरता। इफरात।
भरराना—अक्रि० 'भरर' शब्द करके गिरना या टूटना।
भरसन,-सना—स्त्री० भर्त्सना, डाँट।
भरहरना, भरहराना—अक्रि० सहसा गिर पड़ना, टूट पड़ना।
भरांति—स्त्री० भ्रान्ति, शंका।
भराव—पु० भरनेकी क्रिया या भाव, कशीदे की पत्तियोंके बीचकी जगहको सूत इ० से भरना।
भरी—स्त्री० रुपयेके बराबर तौल।
भरु—पु० भार, बोझ
भरुआ—पु० भड़ुआ। वेश्याका साथी। एक तरहका कपड़ा।
भरुआना—अक्रि० भारी होना।
भरुहाना—सक्रि० भ्रममें डालना। 'तुमको नन्दमहर भरुहाए।' सूबे० १३७। अक्रि० गर्व करना।
भरैया—वि० भरनेवाला। पोषक।
भरोस, भरोसा—पु० आशा, सहारा, विश्वास। (उदे० 'जड़ता', 'टाँड़ा')।
भर्ग—पु० शंकर। दीप्ति, ज्योति।
भर्त्ता, भर्त्तार—दे० 'भरता', 'भरतार'।
भर्म—पु० देखो 'भरम'।
भर्राना—अक्रि० 'भर्र भर्र' आवाज निकलना।
भर्सन—स्त्री० भर्त्सना, निन्दा।
भल—वि० भला, उत्तम, सुन्दर (उदे० 'आचरना')।
भलका, भालका—स्त्री० गांसी (साखी ८,२६)।
भलपति—पु० भाला धारण करनेवाला।
भलमनसाहत, भलमनसी—स्त्री० सुशीलता, सौजन्य।
भला—वि० देखो 'भल'। पु० हित, लाभ। अ० खैर।†
भलाई—स्त्री० हित, नेकी, अच्छापन। [†सही, अच्छा
भलेरा—पु० भला, हित, लाभ।
भल्ल—पु० वध, दान, भाला, बरछा।
भवंग, भवंगा—पु० सर्प (कबीर १४१)।
भवंगम—पु० सर्प 'संसार भवंगम डसिले काया।' कबीर ११४
भवँना, भवना—अक्रि० देखो 'भँवना'। 'बोहित भवँहि, भँवै सब पानी।' प० १६२
भवँर—पु० देखो 'भँवर'।
भव—पु० संसार, जन्म। शिवजी 'भवहिं समरपी जानि भवानी।' रामा० ६१। प्राप्ति, डर।
भवदीय—वि० आपका। तुम्हारा।
भवन—पु० घर। संसार। जन्म।
भवनी—स्त्री० गृहिणी, घरनी, स्त्री।
भवभूष, भवभूषण—पु० सृष्टिके भूषण, शिवजीका भूषण, राख (राम० ९४)।
भवाँ—स्त्री० चक्कर, फेरी।
भवाँना—सक्रि० घुमाना।
भवा, भवानी—स्त्री० पार्वती, दुर्गा।
भवितव्यता—स्त्री० होनहार, भाग्य।
भविष, भविष्य—पु० आनेवाला समय।
भवोला—वि० भावपूर्ण।
भव्य—वि० शुभ, सुन्दर, श्रेष्ठ, शानदार।
भष, भषना—देखो 'भख, भखना'।
भसना—अक्रि० तैरना, गिरना, डूबना।
भसाना—सक्रि० बहाना, डुबाना।
भसुंड—पु० हाथी।
भसुर—पु० पतिका बड़ा भाई।
भस्म—स्त्री० राख, भभूत। वि० दग्ध।
भहराना—अक्रि० देखो 'भरहराना' 'तब दोऊ धरनि परे भहराइ।' सूबे० ७०। (उदे० 'भभिरना' 'हरहराना')।
भाँउँ—पु० भाव, मतलब।
भाँउर, भाँउरि—स्त्री० परिक्रमा, चक्कर।
भाँग—स्त्री० विजया, बूटी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाँजना—सक्रि० तह करना, घटना, घुमाना 'भाँजहि पूँछ चँवर जनु ढारहिं।' प० २५२। भंजन करना, नष्ट करना 'एक साजै औ भाँजै चहै सँवारे फेर।' प० ३

भाँटा—पु० भंटा, बैंगन।

भाँड़—पु० मसखरा, नकल उतारनेवाला, निर्लज्ज व्यक्ति। बर्त्तन। गड़बड़ी। भंडाफोड़, 'इहाँ कपट कर होइहि भाँड़।' रामा० ३०३। हँसी (सुन्द० ९१)।

भाँड़ना—अक्रि० भटकना। सक्रि० बिगाड़ना, निन्दा करना।

भाँड़ा—पु० बर्त्तन। भाँड़ेभरना = पछताना।

भाँड्यो—पु० भाँड़पन।

भाँत, भाँति—स्त्री० प्रकार, रीति।

भाँपना—सक्रि० ताड़ना, देखना।

भाँवना—सक्रि० (खराद आदि पर) घुमाना।

भाँवर, भाँवरी—स्त्री० घुमरी, परिक्रमा 'तव मण्डल भरि भाँवर दीन्ही।' (उदे० 'कुँअर', 'गोहन', सूवे० २१०)। —भरना = चक्कर लगाना. परिक्रमा करना 'भौंर भाँवरे भरत हैं कोकिल कुल मँडरात।' मति० २०१

भा—स्त्री० चमक, शोभा, विद्युत्। अ० चाहे, वा।

भाइ—पु० भाव, प्रेम, विचार। स्त्री० प्रकार, रीति।

भाइप—पु० भ्रातृत्व।

भाई—पु० भ्राता, बन्धु, साथी।

भाउ—पु० भाव, प्रेम। विचार। जन्म।

भाऊ—पु० भाव, प्रेम, स्वभाव, विचार, स्वरूप, प्रभाव, [महिमा।

भाकसी—स्त्री० भट्टी।

भाकुर—स्त्री० एक मछली (प० २६९)।

भाखना—सक्रि० बोलना, कहना (सू० १६) 'सत्य कहौं कछु झूठ न भाखौं।' राम० ४४२

भाखा—स्त्री० भाषा, बोली। हिन्दी भाषा।

भाग—पु० अंश, हिस्सा। भाग्य, ललाट। सबेरा। पार्श्व, बगल।

भागधेय—पु० भाग्य। राजाको देय कर।

भागना—अक्रि० पलायन करना, हट जाना।

भागवंत, भागवान—वि० अच्छी किस्मत वाला।

भागी—पु० साझीदार, अधिकारी।

भाग्य—पु० प्रारब्ध, क़िस्मत।

भाग्यवान्, -शाली—वि० अच्छी किस्मत वाला।

भाजक—पु० भाग देनेवाला।

भाजन—पु० पात्र, बर्त्तन, आधार।

भाजना—अक्रि० भागना 'चला भाजि वायस भय पावा।' रामा० ३५८

भाजी—स्त्री० साग, तरकारी।

भाज्य—पु० वह अंक जिसमें भाग दिया जाय।

भाट—पु० एक जाति। बन्दी, चारण। स्त्री० नदी-तट। उतार।

भाटा—पु० समुद्रके पानीका उतार।

भाट्यौ—पु० भाटका कार्य, स्तुतिपाठ।

भाठी—स्त्री० भाटा। भट्ठी (कबीर २७६)।

भाड़—पु० भड़भूँजेका चूल्हा। —झोंकना = समय खोना, तुच्छ कार्य करना (उदे० 'झोंकना')।

भाड़ा—पु० महसूल, किराया।

भात—पु० ओदन, पका हुआ चावल। प्रभात।

भाति—स्त्री० छवि, शोभा।

भाथा—पु० तूणीर 'जब लगि उर न बसत रघुनाथा, धरे चाप सायक कटि भाथा।' रामा० ४३८

भाथी—स्त्री० चमड़ेकी धौंकनी।

भादौं, भाद्रपद—पु० श्रावणके बादका महीना।

भान—पु० भानु, सूर्य, आभास, सुधि 'लियो अंक गुरु रह्यो न भाना।' रघु० २६८। दीप्ति, प्रकाश।

भानना—सक्रि० खण्डित करना, 'सरिता चलै मिलन सागरको कूल मूल द्रुम भानै।' भ्र० १५ 'अजहूँ सिय सौंपि नतरु बीस भुजा भानै।' सूरा० ४५। नष्ट करना, दूर करना, 'विपति जनकी भानवेको तुम विना कहु कवन।'—भगवत रसिक 'मोसों मिलवति चातुरी तू नहिं भानति भेउ।' बि० २०८

भानमती—स्त्री० जादूका खेल करनेवाली नटी।

भानवी—स्त्री० यमुना।

भाना—अक्रि० अच्छा लगना, सोहना। भासित होना, खरादपर चढ़ाना (उदे० 'कुंद')।

भानु—पु० सूर्य।

भानुजा, भानुतनूजा—स्त्री० जमुना।

भाप, भाफ—स्त्री० वाष्प, सूक्ष्म जलकणयुक्त धुआँ।

भाभरा—वि० लाल रंगका।

भाभी—स्त्री० भौजाई, भावज।

भाम—स्त्री० भामिनी, स्त्री 'हैरी, वैरी लाजकी, धीर भगावन भाम।' नागरी०। पु० क्रोध। रोशनी। बहनोई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भामक—पु० बहनोई।
भामा, भामिन, भामिनी—स्त्री० स्त्री, भार्या।
भाय - पु० भाव, प्रेम, इच्छा। दर। भाँति। भाई।
भायप—पु० भ्रातृभाव।
भाया—वि० प्रिय, जो अच्छा लगे।
भारंगी—पु० एक पौधा।
भार—पु० वजन, बोझ, (उदे० 'ढोव')। दायित्व, रक्षा, आश्रय। भाड़, (रहीम २९)।
भारत—पु० भारतवर्ष, भरतका वंशज, महाभारत, तुमुल युद्ध 'धरी एक भारत भा भा असवारन्ह मेल।' प०
भारति, भारती—स्त्री० सरस्वती, वाणी। [३२०।
भारथ—पु० देखो 'भारत'।
भारथी—पु० वीर, सैनिक।
भारना—सक्रि० भार लादना, भारसे परिपूर्ण करना, दबाव डालना। 'भारके उतारिबेको अवतरे रामचन्द्र किधौं केशोदास भूमि भारत प्रबल दल।' राम० ३७०
भारा—वि० विशाल, कराल, गुरु, अधिक, 'सीतहिं देकै रिपुहिं सँहारौ। मोहति है विक्रम बल भारो।' राम० ४७२। असह्य पु० भाड़ा।
भारी—वि० वज़नदार, गुरु, विशाल, विस्तृत, प्रबल, अधिक।
भार्या—स्त्री० पत्नी, स्त्री, सहधर्मिणी।
भाल—पु० माथा, ललाट। भालू। भाला, गाँसी। अच्छा
भाला—पु० बरछा। [(उदे० 'झड़ना')।
भालि—स्त्री० बरछी, कोई नुकीली वस्तु।
भाली—स्त्री० बरछी, या बरछी इत्यादिकी नोक। कटारी। फाँस।
भालु, भालू—पु० रीछ।
भावंता—पु० भाग्य, होनहार। प्रेमी, प्रीतम 'कैसे मन धन लूटते भावन्ताके नैन।' रतन० २६, (७४)
भाव—पु० विचार, अभिप्राय, प्रवृत्ति, चेष्टा, क्रिया, मनोविकार, जन्म, संसार, स्नेह, स्वभाव, आदर, विश्वास, श्रद्धा, अस्तित्व, दर।
भावइ—अ० चाहो तो, इच्छा हो तो, चाहे।
भावक—पु० भावना करनेवाला, प्रेमी (रतन० ३)। वि० भावपूर्ण। उत्पन्न करनेवाला। क्रिवि० तनिक, थोड़ासा 'भावकु उभरौंहौं भयौ, कछुक परयौ भरु-आइ।' वि० १०५
भावज—स्त्री० भ्रातृपत्नी, भौजाई। वि० भावसे उत्पन्न।
भावता—पु० प्रियतम (भावती=प्रियतमा) 'भावत सुनो है मन भावनको भावतीने आँखिन अनन्द आँसू ढरकि ढरकि उठैं।' देव। वि० जो अच्छा लगे, अभिलषित 'सुनि परम भावती भरत बात।' के० ९
भावन—वि० भानेवाला, अच्छा लगनेवाला।
भावना—अक्रि० अच्छा लगना 'मुरली तऊ गुपालहिं भावति।' सू० ९३ 'अति पतिके मन भावै।' राम० २१। स्त्री० इच्छा, विचार, चिन्ता।
भावभक्ति—स्त्री० भक्तिभाव, सम्मान, सत्कार।
भावी—स्त्री० आनेवाला समय। होनहार 'जो रहीम भावी कहूँ होत आपने हाथ।' रहीम। वि० होनेवाला।
भावुक—पु० कल्याण, मंगल। साधु व्यक्ति। वि० भावनापूर्ण। सोचनेवाला।
भावै—अ० चाहे।
भाव्य—वि० भावनीय, चिन्तनीय। भवितव्य।
भाषण—पु० व्याख्यान। कथन।
भाषना—अक्रि० बात करना, कहना 'यह सब रुचिर चरित मैं भाषा।' रामा० १०५
भाषांतर—पु० तरजुमा, अनुवाद।
भाषा—स्त्री० बोली, हिन्दी भाषा, वाणी, कथा।
भाषित—वि० कहा हुआ।
भाष्य—पु० व्याख्या, टीका।
भासना—अक्रि० प्रतीत होना, ज्ञात होना (उदे० 'आभोग')। प्रकाशित होना। फँसना, डूबना 'यह मत दै गोपिन कहँ आवहु विरह नदीमें भासति।' भ्र० ३ (उदे० 'नरि')। भाषना, कहना। भुल जाना (विद्या० ५५)।
भासमान—वि० भासता हुआ, प्रकाशमान।
भासुर—वि० चमकीला।
भास्कर—पु० सूर्य, अग्नि, सोना, शिव, इ०।
भास्वर—वि० चमकीला। पु० सूर्य। दिन।
भिंग—पु० भृंग, भौंरा। बिलनी नामक कीड़ा। (प० ८५)
भिंगाना, भिंजाना—सक्रि० तर करना।
भिंडिपाल, भिंदिपाल—पु० एक अस्त्र, छोटा दण्डा 'चले निसाचर आयसु माँगी। गहि कर भिंडिपाल बर साँगी।' रामा० ४७२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भिंडी—स्त्री० एक तरकारी।
भिंसार—पु० भिनसार, सवेरा।
भिक्षा—स्त्री० भीख, याचना।
भिक्षु—पु० भिखारी, संन्यासी।
भिक्षुक—पु० भिखारी।
भिखमंगा, भिखारी—पु० भीख माँगनेवाला।
भिखिया—स्त्री० भिक्षा 'रूप नगर मैं नैन, निसदिन फेरी देत है। मोहन मूरत मैन, दरसन भिखियाके लिए।' रतन० ३७
भिगाना, भिगोना—सक्रि० गीला करना, तर करना।
भिच्छा, भिच्छुक—दे० 'भिक्षा, भिक्षुक'।
भिजवना—सक्रि० तर करना।
भिजाना, भिजोना—सक्रि० तर करना (उदे० 'बीथरा')।
भिटनी—स्त्री० स्तनका अग्रभाग।
भिड़—स्त्री० बर्रैं, ततैया।
भिड़ना—अक्रि० झगड़ना, टक्कर खाना, लड़ना (उदे० 'तर्जना'), लग जाना, सटना।
भितल्ला—पु० भीतरी पल्ला, अस्तर (उदे० 'उपल्ला')।
भिताना—सक्रि० भयभीत होना (कविता० २२७)।
भित्ति—स्त्री० दीवार। चित्राधार। डर।
भिद—पु० भेद, फर्क।
भिदना—अक्रि० मिल जाना, घुसना, विद्ध होना। 'मैन बलित नव बसन सुदेश। भिदत नहीं जल ज्यों उप-देश।' के० ४८
भिदुर—पु० वज्र।
भिनकना—अक्रि० भिनभिनाना, (मक्खियोंका) बैठना। घिनियाना।
भिनसार, भिनुसार—पु० प्रातःकाल (उदे० 'गुदारा')।
भिनहीं—क्रिवि० सवेरे।
भिन्न—वि० पृथक्। दूसरा।
भिन्नता—स्त्री० भेद, पार्थक्य, अन्तर।
भियना—अक्रि० डरना।
भिया—पु० भैया, भाई 'यो पर कीबी तोहि जो करि लेहि भियारे।' विन० १२०
भिरंग—पु० देखो 'भृंग' 'सुमिरनसे मन लाइये जैसे कीट भिरंग।' साखी ९७
भिरना—देखो 'भिड़ना' (उदे० 'अभिरना', 'चौंदना')।
भिरिंग—पु० भौंरा। बिजनी नामक कीड़ा।
भिलनी—स्त्री० एक करड़ा। भीलनी।
भिलावाँ—पु० एक वृक्ष या उसका फल।
भिल्ल—पु० भील नामक जंगली जाति।
भिश्त, भिसत, भिस्त—स्त्री० बिहिश्त, स्वर्ग (उदे० 'बाझ', छत्र० ८२, कबीर १७४, ३२४)।
भिश्ती—पु० मशकमें भर कर पानी ढोनेवाला मनुष्य।
भिषक, भिषज—पु० वैद्य।
भिष्टा, भिसटा—पु० मल, मैला, पुरीष।
भींगना—अक्रि० गीला होना।
भींगी—पु० देखो 'भिरिंग'।
भींजना—अक्रि० गीला होना, स्नान करना, गद्गद होना।
भी—स्त्री० डर। अ० एक संयोजक शब्द।
भीउं—पु० भीमसेन।
भीक, भीख—स्त्री० भिक्षा (मति० २४१)।
भीखन—वि० भीषण। विकराल, (उदे० 'झाँवर')। डरावना।
भीखम—वि० भीषण, प्रचंड (उदे० 'आस')। पु० भीष्म पितामह।
भीगना, भीजना—अक्रि० गीला होना, आर्द्र होना, 'भीजत ग्वाल गाइ गोसुत सब।' सू० ९८ (उदे० 'तचना')।
भीटा—पु० ऊँची उठी हुई भूमि, ढूह, टीला। खँडहर।
भीड़—स्त्री० जन-समूह, जमघट। संकट। † मसलना।
भीड़ना—सक्रि० भिडाना, मिलाना। मींडना, †
भीड़भड़क्का, भीड़भाड़—स्त्री० आदमियोंका जमघट, भीड़के कारण धक्कमधक्का होना।
भीड़ा—वि० तंग, संकीर्ण।
भीड़ी—स्त्री० भिंडी नामक तरकारी। भीड़।
भीत—वि० डरा हुआ। स्त्री० दीवार, गच। डर।
भीतर—क्रिवि० अन्दर।
भीतरी—वि० अन्दरका, गुप्त।
भीति, भीती—स्त्री० डर। भित्ति, दीवार।
भीनना—अक्रि० आर्द्र होना, भर जाना 'यह बात कहां जलसों गल भीनों।' राम० २२९
भीम—वि० भयानक, विकराल, विशाल। पु० अर्जुनके भाई। भीमके हाथी = न लौटनेवाली वस्तु।
भीर—स्त्री० जमघट, जमाव। राशि (दास २७)। विपत्ति 'रहिमन सोई मीत है भीर परे ठहराय।' रहीम १८। वि० भीरु, कायर, डरा हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भीरना—अक्रि० डरना।
भीरु, भीरू—वि० कायर, डरपोक।
भीरुता, भीरुताई—स्त्री० कायरता, भय, भीति।
भीरे—क्रिवि० पास, निकट।
भील—पु० एक जंगली जाति।
भीव—पु० अर्जुनके भाई भीम।
भीष—स्त्री० भीख, भिक्षा।
भीषज—पु० वैद्य।
भीषण, भीषन—वि० भयानक, घोर।
भीषम, भीसम—वि० भयानक। पु० शान्तनु-पुत्र।
भुँइ—स्त्री० धरती, भूमि।
भुँइहरा—पु० तहखाना। ज़मीन खोद कर बनायी हुई जगह।
भुँजना—अक्रि० भुनना, किंचित् जल जाना।
भुंजना—सक्रि० भूनना, जलाना 'पवन पानि घनसार सजीवनि दधिसुत किरन भानु भँइ भुंजैं।' भ्र० ३६
भुंडा—वि० बिना सींगका। दुष्ट, बदमाश 'खसम परयो जोरूके पीछे, कह्यो न मानै भुंडो राँड़।' सुन्द० ९१
भुअंग, भुअंगम—पु० नाग, सर्प 'मानहु सरोष भुअंग-भामिनि बिषम भाँति निहारई।' रामा० २११। (उदे० 'काँचुरी', 'डासना')।
भुअ—स्त्री० भ्रू, भौंह 'नैन मीन भुवंगिनी भुअ, नासिका थल बीच।' सू० १२४। पृथ्वी 'चरन चिन्ह दंडक भुअमंडन।' सू० १००
भुअन—पु० लोक, जगत्।
भुअना—अक्रि० भूलना, बहक जाना 'सुआ भुआ सेवँरकै आसा।' प० ४०
भुआ—पु० देखो 'भूआ'।
भुआर, भुआल—पु० भूपाल, राजा 'अवध भुआर अगारमें, लखि कुमार अवतार।' रघु ३०, 'सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन।' रामा० १४४
भुइँ—स्त्री० धरती, भूमि (उदे० 'उदरना')।
भुइँकंप,-चाल,-डोल—पु० भूकंप (प० २५०, २४५)।
भुक—पु० भोजन। हुताशन, अग्नि।
भुकाना—अक्रि० बकवाद करना। 'सूरदास प्रभु अलि अनुरागी काहेको और भुकादत।' भ्र० १०२।
भुक्कड़, भुक्खड़—वि० भूखा रहनेवाला, निर्धन।
भुक्ति—स्त्री० भोग, भोजन, लौकिक सुख।
भुखाना—अक्रि० भूखा होना।
भुगतना—सक्रि० भोगना, सहना। अक्रि० व्यतीत होना, समाप्त होना।
भुगतान—पु० देन चुकानेका कार्य, निबटारा।
भुगताना—सक्रि० भोगवाना, सहाना। पूरा करना, बिताना, समाप्त करना, चुकाना।
भुगुति—स्त्री० विषयोपभोग। भोजन, 'चला भुगुति माँगै कहँ साधि कथा तप जोग।' प० ५७ (प० २)
भुजंग—पु० सर्प।
भुजदंड—पु० (डंडेजैसी) लम्बी भुजाएँ (उदे० 'अवछंग')
भुज—पु० भुजा, (उदे० 'ठठकना')। राहु, हाथ।
भुजइल—पु० भुजंगा पक्षी 'तू भुजइल, हौं हंसिनि भोरी।' प० २१५
भुजग—पु० सर्प।
भुजबंद, भुजबंध—पु० बाजूबन्द, केयूर।
भुजबाथ—पु० आलिंगन करनेकी मुद्रा, अँकवार 'दृग मिहचत मृगलोचनी, भरयौ उलटि भुजबाथ।' वि० ८५
भुजवा—पु० भड़भूँजा।
भुजा—स्त्री० बाहु, हाथ।
भुजाली—स्त्री० छोटी सी बरछी, टेढ़ी छुरी, खुखरी।
भुजिया—पु० उसने हुए धानका चावल।
भुजैना—पु० चबैना।
भुजैल—पु० देखो 'भुजइल'।
भुजौना—पु० चबैना। भुनाई।
भुट्टा—पु० मक्केकी बाल। गुच्छा।
भुठौर—पु० घोड़ोंका एक भेद।
भुनगा—पु० उड़नेवाला छोटा कीड़ा, फतिंगा।
भुनना—अक्रि० सिंक जाना, भूना जाना। छोटे सिक्कों में परिणत होना।
भुनभुनाना—अक्रि० 'भुनभुन' करना, बड़बड़ाना।
भुनाना—सक्रि० भूननेका कार्य कराना। (रुपया इ०) [तुड़ाना।
भुवि—स्त्री० धरती।
भुमिया—पु० जमींदार (छत्र ९०)।
भुरकना—सक्रि० बुरकना, सूखी वस्तु छिड़कना, (उदे० 'बंदन')। अक्रि० भूलना, बहक जाना।
भुरकस, भुरकुस—पु० चूरा, चूर्ण, बुरी तरह कुचली हुई वस्तु।
भुरका—पु० बुकनी। एक तरहकी दावात, बोरका।
भुरकाना—सक्रि० बहकाना। भुरभुराना। [कुचलना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भुरभुरा—वि० सूखा और चूर्ण रूपमें।
भुरभुराना—सक्रि० चूर्णरूप वस्तु छिड़कना, भुरकना।
भुरवना—सक्रि० देखो 'भुराना' (१)।
भुरसना, भुलसना—अक्रि० झुलसना।
भुरहरीवेर—स्त्री० प्रातःकाल (ब्रज० ३६०)।
भुराई—स्त्री० भोलापन, सादगी (उदे० 'भुराना', भ्र० ७५)।
भुराना, भुरावना—सक्रि० (१) भुलावेमें डालना, बहकाना। (२) भूल जाना, 'मोचन लागी भुराई-की बातनि सौतिनि सोच भुरावन लागी।' ललित० ६२
भुलाना—अक्रि० भूल जाना, भटकना (उदे० 'पतंग')। सक्रि० भुलावा देना, छलना, भूलना।
भुलावा—पु० धोखा, चकमा।
भुवंग, भुवंगम—पु० साँप 'गुरुमुख गुरु चितवत रहे जैसे मनी भुवंग।' साखी १५, 'बिरह भुवंगम तन डसा।' साखी ४०
भुव—स्त्री० भ्रू, भौंह 'कुटिल बंक भुव सँग भये कुटिल बंक गति नैन।' बि० १२७ (बंग)। धरतो (उदे० 'ऊजर', 'निझरना')।
भुवन—पु० लोक, सृष्टि, जन, चौदहकी संख्या।
भुवपति, भुवपाल—पु० राजा (उदे० 'धना')।
भुवार, भुवाल—पु० राजा (भू० ४)।
भुवि—स्त्री० पृथिवी।
भुशुंडी, भुसुंडी—स्त्री० एक अस्त्र (सुजा० ३२)।
भुस, भुसा—पु० देखो 'भूसा' (सू० २२)।
भुसी—स्त्री० देखो 'भूसी'।
भुसौरा—पु० भूसा रखनेका घर।
भूँकना—अक्रि० देखो 'भौंकना'।
भूँजना—सक्रि० भोगना (प० २) 'राज कि भूँजब भरत पुर नृप कि जियहिं बिन राम।' रामा० २२२। पकाना, तलना, पीड़ा देना।
भूँड़—स्त्री० बालू मिली हुई भुरभुरी मिट्टी 'कब पटतर गोता मारत हौ निरे भूँडके खेत।' भ्र० ८२
भूँसना—अक्रि० भूँकना 'कबीर गुरुकी भक्ति बिनु नारि कूकरी होय। गली गली भूँसत फिरै टूक न डारे कोय।' साखी० १७
भू—स्त्री० पृथिवी, स्थान। भ्रू, भौंह।
भूआ—पु० सेमर आदिकी रुई 'बिनु सत जस सेवर कर भूआ।' प० ४१
भूकंप—पु० भूडोल, भूचाल।
भूक, भूख—स्त्री० क्षुधा, भोजनकी इच्छा, अभिलाषा, तृष्णा, आवश्यकता।
भूखण, भूखन—पु० भूषण, अलंकार।
भूखना—सक्रि० सजाना, भूषित करना।
भूखा—वि० क्षुधित, इच्छुक।
भूचरी—स्त्री० योगकी एक मुद्रा।
भूचाल, भूडोल—पु० पृथिवीका हिलना, भूकंप।
भूड़—स्त्री० देखो 'भूँड़'। कुएँका स्रोत।
भूत—पु० प्रेत, मृत देह, प्राणी, अतीत काल। वि० बीता हुआ।
भूतनाथ,-पति,-भर्त्ता,-राज—पु० शिवजी।
भूति—स्त्री० भस्म, वैभव, सिद्धि, अधिकता।
भूतिनि, भूतिनी—स्त्री० भूतयोनि-गता स्त्री।
भूधर—पु० पर्वत।
भून—पु० भ्रूण, गर्भस्थ शिशु।
भूनना—सक्रि० भूँजना, पकाना, तलना।
भूप, भूपति, भूपाल—पु० राजा।
भूभल, भूभुर, भूभुरि—स्त्री० गर्म राख, गर्म धूल, 'ततूरी' (उदे० 'डाढ़ना', 'पँवरी')।
भूभुज्, भूभृत्—पु० राजा।
भूमि—स्त्री० धरणी, देश, जगह।
भूमिका—स्त्री० प्राक्कथन, रचना, आभास। भूमि, पृथिवी। नाटकमें किसी चरित्रका अनुकरण।
भूमिजा, भूमिसुता—स्त्री० जानकी, सीता।
भूमिया—पु० जमीन्दार, भूम्यधिकारी।
भूमिरुह—पु० पेड़।
भूमिसुत—पु० मंगल ग्रह। पेड़। केवाँच।
भूमींद्र—पु० राजा।
भूर—पु० रेत, बालू। स्त्री० भूल (छत्र ६४)। वि० [बहुत।
भूरजपत्र—पु० भोजपत्र।
भूरपूर—वि० परिपूर्ण।
भूरा—वि० पिंगल, धूमिल रँगका।
भूरि—वि० बहुत, अधिक (उदे० 'दुरना')।
भूरिदा—वि० बहुत देनेवाला।
भूरुह—पु० पेड़, तरु।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूल—स्त्री० चूक, भ्रम, दोष।
भूलक—पु० भूल करनेवाला।
भूलना—सक्रि० विस्मृत करना, ग़लतीसे छोड़ देना, खो देना। अक्रि० विस्मृत होना, चूकना, खो जाना।
भूलभुलैयाँ—स्त्री० भ्रममें डालनेवाला, चक्करदार मार्ग या घर। कोई पेचीदा बात।
भूवा—पु० भूआ, रुई। वि० सफ़ेद, उजला।
भूषण, भूषन—पु० अलंकार, श्रेष्ठ व्यक्ति।
भूषना—सक्रि० भूषित करना, सँवारना।
भूषा—स्त्री० सजावट। आभूषण।
भूसन—पु० भूषण।
भूसना—अक्रि० भोंकना 'जैसे श्वान काँच-मंदिरमें भ्रमि भ्रमि भूसि मरयो।' सू० २५
भूसा—पु०, गेंहू जौ आदिके सूखे पौधों तथा बालोंका चूरा। भुस।
भूसी—स्त्री० धान, तथा दूसरे अनाजोंके ऊपरका छिलका। चोकर।
भूसुर—पु० भूदेव, ब्राह्मण।
भृंग—पु० भ्रमर। बिलनी नामक कीड़ा, लखेड़ी।
भृंगी—स्त्री० भ्रमरी। बिलनी, 'डरियतु भृंगी कीट लौं मत बहई है जाति।' वि० २४३। पु० एक शिव-गण।
भृकुटी—स्त्री० भ्रू, भौंह।
भृगुरेखा,-लता—स्त्री० विष्णुकी छातीपर भृगु मुनिके लात मारनेका चिह्न।
भृति—स्त्री० वेतन, नौकरी। भरण-पोषण।
भृत्य—पु० नौकर।
भेंट भेट—स्त्री० मिलाप, दर्शन। सौग़ात, उपहार।
भेंटना—सक्रि० गले मिलाना मिलना, हृदयसे लगाना [(उदे० 'छकना')।
भेंड—स्त्री० भेड़।
भेंवना—सक्रि० तर करना।
भेद, भेउ—पु० भेद, रहस्य (सू० ५४) '...जननी जौं पहु जानउँ भेऊ'—रामा० २७९
भेक—पु० मेंढक।
भेख—पु० वेष, रूप, पहिनावा (दीन० २६१)।
भेखज—पु० दवा। सुख। जल।
भेजना—सक्रि० पठाना, रवाना करना।
भेजा—पु० सिरका भीतरी भाग। मेंढक (उदे० 'गवेजा')।
भेड़, भेड़ी—स्त्री० एक पालतू पशु।
भेड़िया—पु० शृगालकी जातिका एक मांसाहारी पशु।
भेद—पु० रहस्य। समाचार 'जबतें क्रूर गयो लै मोहन तबतें भेद न पाये।' भ्र० १०५। अन्तर। जाति। भेदने की क्रिया। शत्रुपक्षमें फूट पैदा करनेका उपाय।
भेदना—सक्रि० छेदना 'भेदि दुसार कियो हियो तन-द्युति, भेदै सार।' वि० १८२
भेदभाव—पु० अन्तर, भेदबुद्धि।
भेदिया, भेदी—पु० भेद लेने या जाननेवाला, गुप्तचर।
भेदीसार—पु० छेद करनेका औज़ार, बरमा।
भेना—सक्रि० देखो 'भेंवना'। 'लुचुई पोइ पोइ घिउ-मेई। पाछे छानि खाँडरस मेई।' प० २७०
भेर—स्त्री० नगाड़ा, भेरी (उदे० 'नौबत)।
भेरा—पु० बेड़ा (छत्र ७९, कबीर १७३) '...भौसा-गर तरिबेकूँ भेरा।' कबीर २४१
भेरि, भेरी—स्त्री० नगाड़ा (उदे० 'धुरना', 'शंख')।
भेला—पु० मिलावाँ। गोला। भेंट।
भेव—पु० भेद 'नहिं बेद बखानत सकल भेव।' राम० १७५ (उदे० 'तुलना'), पारी।
भेवना—सक्रि० भिगोना, तर करना।
भेश—दे० 'भेख'।
भेष, भेस—पु० वेष, पहनावा, रूप।
भेषज—पु० दवाई। पानी।
भेषना—सक्रि० भेष धारण करना, धारण करना।
भेसज—स्त्री० भेषज, दवा।
भेसना—दे० 'भेषना'।
भैंस—स्त्री० एक पशु।
भैंसा—पु० भैंसका नर।
भै—पु० भय, डर।
भैचक, भैचक्क—वि० चकित, घबराया हुआ(सुन्द० ९५)।
भैजन, भैदा - वि० भयोत्पादक।
भैन, भैनी—स्त्री० बहिन।
भैया—पु० भाई, छोटों या बराबरीवालोंके लिए प्रयुक्त शब्द, तात।
भैयाचार,-चारा—पु० भाईचारा, भाई भाईका परस्पर-का व्यवहार।
भैरव—पु० शिवजी, शिवजीके गणोंके मुखिया। वि० [भीषण।
भैरवी—स्त्री० दुर्गा, चामुंडा। एक रागिनी।
भैषज,-ज्य—पु० दवा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भैहा—वि० भयभीत। पुं० वह जो अमुहाता हो।
भौंकना—अक्रि० भूँकना, भौं भौं करना। सक्रि० †
भौंचाल—पु० भूकंप। [† घुसेड़ना।
भौंड़ा—वि० कुवेशयुक्त, कुरूप, कुडौल। मूर्ख '...अभागे तिय त्यागे भौंदे भागे जात साथ सों।' कविता० १७७
भौंदू—वि० बहुत सीधा, मूर्ख।
भोकस—पु० दानव 'कीन्हेसि भोकस देव दईता।'-प० २। वि० भूखा।
भोग—पु० सुख-दुःख-प्राप्ति, संभोग, विषय, सुख, सुख-सामग्री, नैवेद्य, दुःख। सर्पफण।
भोगना, भोगवना—सक्रि० भुगतना, सुख या दुःख उठाना।
भोगबंधक—पु० एक प्रकारका रेहन जिसमें ब्याज न लेकर उसके बदले जायदादकी आय लेते या उसका उपयोग करते हैं।
भोगी—वि० विलासी, सुखी, सहनेवाला। पु० भोगने वाला। साँप (दीन० ७)।
भोज—पु० जेवनार। भोजन 'मोहिं मातु तात बूधभात भोजको दियो।' के० ३०२॥ पाक-शाला 'भोज एक चौक मध्य दूसरे रची सभा।' के० १७०
भोजक—पु० भोगी, विलासी।
भोजन—पु० खानेकी क्रिया, खानेकी वस्तु।
भोजनखानी,-शाला—पु० रसोईघर।
भोडर, भोडल—पु० अबरक 'भोडल माहिं दुरै नहिं दीपक, यद्यपि वे मुख मौन गहैंगे।' सुन्द० १४५
भोथरा—वि० जिसकी धार तेज़ न हो, कुण्ठित, 'भयो अबहुँ नहिं भोथरो, मोर उदंड कुठार।' रघु० १९१
भोना—अक्रि० रंगना, अनुरक्त होना, भीनना 'इहि कलिकाल कराल व्याल विषज्वाल विषम भोये हम।'†
भोमि—स्त्री० पृथ्वी (कबीर १३९)। [† गदाधरभट्ट।
भोर—पु० सवेरा, प्रभात। भ्रम, भूल (उदे० 'कीदहुँ') 'केसर बरन हिया या तोरा। मानहुँ मनहिं भयउ किछु भोरा।' ७९। वि० भोला। मुग्ध, चकित 'सूर प्रभुकी निरखि शोभा, भईं तरुनी भोर।' सू० १२५
भोराई—स्त्री० भोलापन, सीधापन।
भोराना—सक्रि० भुलावा देना, बहकाना 'ज्यों बूती परबुद्धिहिं भोरि कै लै पर-पुरुष दिखावै।' सू० ४१ अक्रि० भुलावेमें आना।
भोरानाथ—दे० 'भोलानाथ'।
भोलना—सक्रि० भुलावा देना, बहकाना '...(माया) अग्यानी पुरुष कौं भोलि भोलि खाई।'-कबीर १६६
भोला—वि० सीधा सादा, सरल, सौम्य।
भोलानाथ—पु० शिवजी। बहुत सीधा आदमी।
भोलाभाला—वि० सीधासादा।
भोहरा—पु० खोह (सुन्द० ११६)।
भौं—स्त्री० भृकुटी।
भौंकना—अक्रि० भौं भौं करना।
भौंड़ा—वि० कुरूप, भद्दा मूर्ख।
भौंतुवा—पु० हाथका एक रोग जिसमें सूजनके साथ कुछ दर्द भी होता है।
भौंर—पु० पानीका चक्कर (उदे० 'झौंर')। भ्रमर। घोड़ोंका एक भेद।
भौंरा—पु० भ्रमर। एक खिलौना (उदे० 'कछनी')। हिंडोलेके ऊपरकी लकड़ी।
भौंराना—सक्रि० भँवरी फिराना, घुमाना।
भौंरी—स्त्री० भ्रमरी। भँवरी, परिक्रमा, पानीका चक्कर, बालोंका चक्र।
भौंह—स्त्री० भृकुटी (उदे० 'जेह', 'धनुऊ')।
भौ—पु० भव, संसार। डर।
भौचक—वि० चकित (साखी १५३)। क्रिवि० अचानक।
भौज, भौजाई—स्त्री० भ्रातृपत्नी।
भौजलि—पु० भवजाल, भवबंधन '...मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा।' कबीर ९८
भौतिक—वि० पंचभूत सम्बन्धी, पार्थिव, देह-सम्बंधी।
भौन—पु० भवन, घर (उदे० 'जकना')।
भौना—अक्रि० भँवना, घूमना।
भौर—पु० घोड़ोंकी एक जाति। भौंरा।
भृंग—पु० भृंग, भौंरा 'कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी...'-गदाधर।
भ्रंश, भ्रंस—पु० नाश, अधःपतन। वि० भ्रष्ट 'सूर सुज्ञान सुनावत अवलनि, सुनत होत मति भ्रंस।' सू० २२९
भ्रकुटि,-टी—स्त्री० भौंह।
भ्रम—पु० मिथ्या ज्ञान, धोखा, भूल, सन्देह, भ्रमण। प्रतिष्ठा (प० ३०९)। भ्रमजार = भ्रमजाल (उदे० 'जार')

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भ्रमण, भ्रमन—पु० घूमना, विचरण, चक्कर।
भ्रमना—अक्रि० घूमना, भटकना (उदे० 'ढेरा', सू० २०), भूल करना, (उदे० 'ठगिनी') 'सूर सुमुजा समेत सुदर्शन देखि विरंचि भ्रम्यो।' सू० १५
भ्रमनि—स्त्री० देखो 'भ्रमण'।
भ्रमर—पु० मधुप, भौंरा।
भ्रमाना—सक्रि० बहकाना, घुमाना।
भ्रमी—वि० जो भ्रममें हो, चकित 'भूली सी भ्रमीसी चौंकी, जकीसी, थकी गोपी'—हरि०। स्त्री० भ्रमण, [चक्कर।
भ्रष्ट—वि० पतित, दूषित।
भ्रांत—वि० भ्रममें पड़ा हुआ, व्याकुल।
भ्रांति—स्त्री० सन्देह, भूल। भ्रमण। मोह।
भ्राजना—अक्रि० शोभित होना 'बहु मनि-रचित झरोखा भ्राजहिं।' रामा० ५५२ (उदे० 'झंझरी', सू० ८८)।
भ्रात, भ्राता—पु० भाई।
भ्रामक—वि० घुमानेवाला, बहकानेवाला।
भ्रुकुटि, भ्रुकुटी—स्त्री० भौंह।
भ्रुव, भ्रू—स्त्री० भौंह (सू० १२१)।
भ्रूण—पु० गर्भस्थ शिशु, गर्भ।
भ्यहरना—अक्रि० डर जाना।

म

मंग—स्त्री० सीमन्त देश, माँग (प० १५७, भ्र० २५)।
मँगता, मंगन—पु० भिखारी, याचक 'सब जाति कुजाति भये मँगता।' रामा० ५९३, (उदे० 'घना')।
मँगनी—स्त्री० माँगनेकी क्रिया। उधार। सगाई।
मंगल—पु० भलाई, शुभ। एक ग्रह। भौमवार।
मंगलामुखी—स्त्री० वेश्या (रघु० ३१)।
मँगवाना, मँगाना—सक्रि० माँगनेका काम कराना।
मंच, मंचक—पु० उच्चासन, चबूतरा। मचान, खाट।
मंछर—पु० मच्छर 'काम क्रोध माया मद मंछर ए संतति हम माँहीं।' कबीर १५२
मंजन—पु० दाँत मलनेका चूर्ण। स्नान, मालिश (उदे० 'जूझा') 'मंजन के नित न्हाय कै अंग अँगोछि कै वार छुरावन लागी।' ललित० ६२
मंजना—सक्रि० माँजना, मलना 'काया मंजसि कौन गुण' —कबीर १८२
मंजरी—स्त्री० बौर, कोंपल, लता।
मंजार—पु० बिलाव 'पंजर-गत मंजार ढिग सुक लौं सूकति जाति।' बि० ४०
मंजारी—स्त्री० बिल्ली (प० २४)।
मंज़िल—स्त्री० पड़ाव। मार्गका उतना भाग जितना एक दिनमें तै हो सके। गन्तव्य स्थान। मकानका खंड।
मँजीठ—दे० मजीठ।
मंजीर—पु० घुँघुरू (सू० १५७, मति० २०२)।
मंजु, मंजुल—वि० चारु, सुन्दर।
मंजूर—वि० स्वीकृत।
मंजूरी—स्त्री० स्वीकृति।
मंजूषा, मंजूसा—स्त्री० पिटारी, पेटी। पींजरा।
मंझा—वि० बीचका।
मँझार, मँझारि—अ० में, बीचमें 'मानौं सुर-गुरु सुक्र भौम सनि चमकत चन्द्र मँझारि।' सू० १४०
मंड—पु० माँड़, सार। मंडन, सजावट। वि० मंडित (उदे० 'प्रयंत')।
मंडना—सक्रि० सजाना, भूषित करना, पुष्ट करना। माँडना, मर्दन करना। व्याप्त करना, भरना (उदे० 'धार')।
मंडप—पु० तृणादिसे छाया हुआ स्थान (उदे० 'बनना'), [चँदोवा।
मंडर—पु० देखो 'मण्डल'।
मंडरना—अक्रि० चारों तरफसे घेर लेना।
मँडराना, मँडलाना—सक्रि० ऊपर चारों ओर घूमना, मण्डल बनाते हुए उड़ना, पास पास चलना, चक्कर लगाना।
मंडल—पु० गोल स्थान, चक्कर, घेरा, बिम्ब, देश, गोला, समूह, क्षितिज, कुत्ता, बारह राज्योंका समूह।
मंडली—स्त्री० समूह, सभा, गोष्ठी। वटवृक्ष, गुडूच, सूर्य।
मंडलीक—पु० मण्डलाधिपति।
मंडार, मँडारा—पु० टोकरा, छाबा (उदे० 'पतंग')। गड्ढा 'जहाँ समुद मझधार मँडारू'। प० १९२
मंडित—वि० आभूषित, सुसज्जित। आच्छादित। पूरित।
मंडी—स्त्री० बाज़ार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मंडूक—पु० मेंढक।
मंत—पु० मत, सलाह। मंत्र '...सो साधै प्राणायाम मंत'—के० ९२
मंत्र—पु० दिव्य प्रभावयुक्त शब्द या वाक्य, युक्ति,
मंत्रणा—स्त्री० विचार, परामर्श, सलाह। [सलाह।
मंत्री—पु० सलाह देनेवाला, अमात्य।
मंत्रेला—पु० मन्त्र जाननेवाला 'आपै मंत्र आपै मंत्रेला।'—कबीर २४३
मंथ—पु० बिलोड़न, मथानी, एक नेत्ररोग।
मंथन—पु० बिलोड़न, अवगाहन। मथानी।
मंथर—वि० सुस्त, भारी, टेढ़ा, स्थूल। पु० कोष, बालोंका गुच्छा, मथानी, दूत। रोक। मक्खन।
मंथान—पु० मथानी।
मंद—वि० नीच, सुस्त, कम।
मंदरा, मंदला—पु० एक बाजा 'जैसे मंदला, तुमहिं बजावा, तैसे नाचत मैं दुख पावा।' कबीर ११३। वि० बौना, ठिगना।
मंदा—वि० धीमा, सस्ता, ठण्डा, ढीला, निकृष्ट।
मंदाना—अक्रि० मंद पड़ना (?) '...काम पियास मंदानी।' कबीर २२१
मंदार—पु० एक देवतरु, मदार, धतूरा, (उदे० 'बजना'), स्वर्ग।
मंदिर, मंदिल—पु० गृह, देवालय, नगर।
मंदिरा—स्त्री० मँजीरा। अस्तबल।
मँदोवै—स्त्री० मंदोदरी 'तुलसी मँदोवै रोइ रोइ कै बिगोवै आपु।' कविता० १७६
मंशा—पु०, स्त्री० आशय, इच्छा।
मंसब—पु० पद, अधिकार।
मंसा—स्त्री० अभिप्राय, इच्छा, निश्चय।
मंसूख—वि० रद्द, उठाया हुआ।
मंसूबा—पु० ढंग, उपाय। इरादा, विचार। आयोजन।
मंसूर—पु० मनसूर नामक सूफी साधु।
मइका—पु० नैहर (रामा० २४५)।
मइमंत—वि० देखो 'मैमंत'।
मकई—स्त्री० बड़े दानेकी जुआर।
मकड़ी—स्त्री० एक कीड़ा।
मकतब—पु० पाठशाला।
मक़दूर—पु० सामर्थ्य, बस।
मक़बरा—पु० समाधि-मन्दिर, इमारत जिसमें क़ब्र हो।
मकरंद—पु० मधु, पुष्परस, भ्रमर, कोकिल।
मकर—पु० एकराशि, एक जलजन्तु, मगर, मछली। धोखा।
मकरकेतु, मकरध्वज, मकरपति—पु० कामदेव।
मकराज—स्त्री० कतरनी, कैंची (उदे० 'जेब')।
मकरी—स्त्री० मगरी, (कविता० २५७)। मछली, मकड़ी।
मक़सद—पु० अभिप्राय, मनोरथ, उद्देश्य।
मकान—पु० घर।
मकु—अ० चाहे, बल्कि, शायद, 'तेहिं डर राँध न बैठौं मकु साँवरि होइ जावँ'। प० २१५
मकुना—पु० बिना दाँतवाला या छोटे दाँतवाला हाथी। बिना मूँछका आदमी।
मकुनी, मकूनी—स्त्री० बेसन भरकर बनायी हुई रोटी।
मकोइ, मकोय—स्त्री० एक बनफल (प० २३६)।
मकोड़ा—पु० छोटा कीड़ा।
मकोरना—सक्रि० ऐंठना, मरोड़ना।
मक्का—पु० मकई। मुसलमानोंका प्रधान तीर्थ।
मक्कार—वि० छली, कपटी, ढोंगी।
मक्खन, मखन—पु० नवनीत, माखन।
मक्खी—स्त्री० मक्षिका।
मक्खीचूस—वि० कृपण।
मख—पु० यज्ञ।
मखतूल—पु० एक तरहका काला रेशम (उदे० 'चाँदिला') 'अंजन जुत अँसुवानि की धार धसति जुग नैन। मनो डोर मखतूलके बाँधे खंजन नैन।' मति० १८५
मखनिया—पु० मक्खन बेचने या बनानेवाला। वि० [मक्खनरहित।
मख़मल—पु० एक मुलायम कपड़ा
मखी—स्त्री० मक्षिका।
मखाना—पु० एक कपड़ा।
मखौल—पु० परिहास, हँसी-दिल्लगी।
मग—पु० मार्ग, रास्ता (उदे० 'बिलखाना')। मगध।
मगज, मग़ज़—पु० दिमाग़, भेजा, भींगी।
मगजी—स्त्री० पतली पट्टी, गोट (उदे० 'दुलारी')।
मगदा—पु० मार्ग-दर्शक।
मगदूर—पु० मक़दूर, वश, सामर्थ्य।
मगन, मग्न—वि० डूबा हुआ, लीन। प्रसन्न।
मगना—अक्रि० डूबना, लीन होना। [† लेकिन।
मगर—पु० एक जल-जन्तु, मकर (उ० 'काहू')। अ० †

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मग़रूर—वि० घमंडी।
मगह, मगहय, मगहर—पु० मगध देश।
मघवा—पु० इन्द्र।
मघा—स्त्री० एक नक्षत्र।
मघोनी—स्त्री० इन्द्राणी 'करैं सेव बानी मघोनी मृडानी।' राम० ३२७
मघौना—पु० इन्द्र, नीले रंगका वस्त्रविशेष (उदे० 'चिकवा')।
मचक—स्त्री० हलकी पीड़ा, दबाव।
मचकना—अक्रि० ज़ोरसे हिलना (उदे० 'दचकना')। सक्रि० ज़ोरसे हिलाना या दबाना।
मचना—अक्रि० होना, किया जाना, व्याप्त होना (उदे० 'खैर मैर')। सक्रि० ज़ोरसे हिलाना 'एक सँग लै मचत मोहन एक देत झुलाइ।' सू० १७५
मचका—पु० धक्का, झोंका, पेंग।
मचमचाना—सक्रि० चारपाई आदिको इस प्रकार उछल कर हिलाना कि आवाज़ निकले। हुमचना।
मचलना—अक्रि० हठ करना।
मचला—वि० हठी, मचलनेवाला, (विन ६०५)। पु० बाँसकी डिबिया, बिलहरा।
मचलाई—स्त्री० हठ, (रामा० ४४३)।
मचवा—पु० खाट, मचान।
मचान—स्त्री० ऊँची बैठक, मंच।
मचाना—सक्रि० करना, बनाना। गंदा करना (बुन्देल०)।
मचिलई—स्त्री० देखो 'मचलाई'।
मच्छ, मछ—पु० मत्स्य, बड़ी मछली (उदे० 'काछू',
मच्छर—पु० मच्छड़, मसा। डाह। ['टीवा', 'ठोर')।
मच्छरता—स्त्री० डाह।
मछरिया, मछरी, ली—स्त्री० मीन (उदे० 'धीमर')।
मछुआ, मछुवा—पु० मल्लाह, धीवर।
मज़दूर—पु० कुली, बनिहार, श्रमी।
मजना—अक्रि० मज्जित होना, प्रेममें डूबना।
मज़बूत—वि० दृढ़, अचल, बलवान्।
मजबूर—वि० विवश, लाचार।
मजमा—पु० भीड़, जमघट।
मज़मून—पु० लेख, निबन्ध लेखका विषय।
मजलिस—स्त्री० सभा-भवन, सभा, जलसा।
मज़हब—पु० धर्म।
मज़ा—पु० स्वाद, आनन्द, लुत्फ़, दिल्लगी, कुफल।
मज़ाक़—पु० हँसी, दिल्लगी, रुचि।
मज़ार—पु० क़ब्र, समाधिमंदिर।
मजारि, मजारी—स्त्री० बिल्ली (प० २९)।
मजिल—स्त्री० देखो 'मंज़िल'।
मजीठ—स्त्री० एक लता जिससे लाल रंग बनता है (उदे० 'आल', प० १०६)।
मजीर—स्त्री० फूलों या फलोंका गुच्छा, मंजरी।
मजीरा—पु० एक बाजा, जोड़ी (प० २६०)।
मजूर—पु० कुली। मयूर।
मजेज—पु० घमण्ड, गर्व, हठ (सुजा० ३०)।
मज्ज, मज्जा—पु० हड्डीके भीतरका गूदा।
मज्जन—पु० स्नान।
मज्जना—अक्रि० स्नान करना, डूबना।
मज्झ, मझ—वि० मध्य। क्रिवि० बीच, मध्य।
मझधार में)—क्रिवि० बीचमें।
मझला—वि० बीचका।
मझाना—अक्रि० प्रविष्ट होना 'नदी उतर बन सघन मझाये।' छत्र० १२। सक्रि० प्रवेश कराना।
मझार—क्रिवि० बीचमें, में।
मझियाना—अक्रि० मध्यसे निकलना। नाव चलाना।
मझियारा—वि० बीचका। क्रिवि० बीचमें (उदे० 'कोटवार')।
मझु—सर्व० मैं, मेरा (विद्या० १११, ११४)।
मझोला—वि० बिचला, मध्यम आकारका।
मट—पु० मटका।
मटक, मटकनि—स्त्री० मटकनेकी क्रिया, चाल, लटक।
मटकना—अक्रि० लटकके साथ चलना, इठलाना, शृंगार करना (उदे० 'धन')। हिलना, 'मटकत गिरी गागरी सिरते।' सूबे० ११३। लौटना।
मटका—पु० बड़े मुँहका मिट्टीका घड़ा, कमोरा।
मटकाना—सक्रि० हिलाना, चमकाना।
मटकी—स्त्री० गगरी, कमोरी।
मटर—पु० एक अनाज।
मटरगश्त,-गश्ती—स्त्री० व्यर्थ घूमना, आवारागर्दी।
मटियाना—सक्रि० मिट्टी लगाकर धोना। बदबूदार कर देना।
मटुकिया, मटुकी—स्त्री० देखो 'मटकी' (उदे० 'पकवना')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मट्ठा, मठा—पु० महा, छाछ (मातं० २३९)।
मठ—पु० साधुओंके रहनेकी जगह। देवालय।
मठधारी,-पति,मठाधीश—पु० मठका अध्यक्ष या स्वामी।
मठिया—स्त्री० छोटा मठ।
मठी—स्त्री० छोटा मठ। पु० मठधारी, मठपति।
मठोर—स्त्री० मठा रखनेकी मटकी।
मड़या—पु० मँडवा, मंडप (उदे० 'गाँठ')।
मड़वा—पु० मंडप।
मड़हट—पु० मरघट 'मड़हट लूँ सब लोग कुटुंबी हंस अकेलौ जाइ।' कबीर १९४
मड़ा—पु० कोठा। एक नेत्ररोग, माड़ा '...मायाको मड़ा सो अँखियन तें उघारि दै।'—देव।
मड़ैया—स्त्री० झोपड़ी, कुटी (उदे० 'तनिक')।
मढ़ना—सक्रि० कपड़ा आदि चढाना या लपेटना (उदे० 'परचा')। चारों तरफसे घेर लेना 'जल जोर दिशा बिदिशान मढ़ै।' राम० ३८६ (उदे० 'छत्री')। किसीके सिरपर डालना।
मढ़ी, मढ़ैया—स्त्री० झोपड़ी, छोटा मठ या मन्दिर।
मणि—स्त्री० रत्न, नग। [(प० ९०)
मणिबंध—पु० कलाई।
मतंग—पु० हाथी। मेघ।
मतंगी—पु० गजारोही।
मत—पु० सलाह, राय। आशय। धर्म। क्रिवि० नहीं।
मतना—अक्रि० मतवाला होना। राय ठहराना, सलाह करना 'मतैं बैठि बादल औ गोरा।' प० ३१५
मतरिया—वि० मत देनेवाला, मंत्रित। स्त्री० महतारी।
मतलब—पु० अभिप्राय, उद्देश्य, अर्थ, सम्बन्ध।
मतलबी—वि० स्वार्थी।
मतली—स्त्री० कै की इच्छा।
मतवारा, मतवाला—वि० उन्मत्त, नशेमें चूर (उदे० 'अलक,' 'सुखकावना', प० १५४)।
मता, मतो—पु० सलाह (अ० १७), उपदेश, सम्मति।
मति, मती—स्त्री० समझ। राय। चाह। क्रिवि० मत, नहीं।
मतिमाँह—वि० मतिमान्, समझदार (प० ९)।
मतीर, मतीरा—पु० तरबूज 'इत मरुभूमि मतीर जल पीव बटोही बीर।' दीन० ११२
मतीस—पु० एक बाजा।
मतेह—स्त्री० सौतेली मा।
मत्त—वि० मस्त, मतवाला, प्रसन्न। स्त्री० मात्रा।
मत्तताई—स्त्री० मस्ती।
मत्ता—स्त्री० मात्रा। शराब।
मत्था—पु० माथा, मस्तक।
मत्सर—पु० डाह, क्रोध।
मथन—पु० बिलोना, मथनेकी क्रिया। वि० मथनेवाला, नाश करनेवाला (उदे० 'फिराना')।
मथना—सक्रि० बिलोना, महना (उदे० 'फैन'), घिसना, नष्ट करना, 'रिपुमद मथि प्रभु सुजस सुनायो। यह कहि चलेउ बालि नृप जायो।' रामा० ४६९। क्षुब्ध करना 'छबि देखत ही मन, मदन मथ्यो तन, सूर्पनखा तेहि काल।' राम० २५४। छान डालना। पु० मथानी।
मथनियाँ, मथनी—स्त्री० मथनेका डंडा, रई (उदे० 'डाँड़ी')। दही मथनेकी हाँड़ी (उदे० 'अरगाना')।
मथवाह—पु० महावत। सिर पीड़ा, 'दिस्टि तरहुँडी, हेर न आगे। जनु मथवाह रहै सिर लागे।' प० २२९
मथानी—स्त्री० मथनेका डंडा, बिलोनी (उदे० 'कर्पना')।
मथौरा—पु० एक तरहका रंदा।
मदंध—वि० मदसे अंधा।
मद—पु० हर्ष, गर्व, नशा, पागलपन, प्रमाद, शराब, हाथीके मस्तकका स्राव। काम। वीर्य। स्त्री० शीर्षक, स्तंभ, खाता। वि० मस्त।
मदक—स्त्री० एक नशीली वस्तु।
मदकची, मदकी—वि० मदकका सेवन करनेवाला।
मदगल—वि० मस्त, मतवाला। पु० मस्त हाथी (भू० २४)।
मदजल—पु० मस्त हाथीके मस्तकका स्राव, दान।
मदद—स्त्री० सहायता।
मदन—पु० कामदेव। वसन्त। भ्रमर। धतूरा। खैरका वृक्ष। प्रेम।
मदर—पु० धावा, आक्रमण।
मदरसा—पु० पाठशाला।
मदांध—वि० देखो 'मदंध'।
मदार—पु० आक। हाथी। सूअर। धूर्त व्यक्ति।
मदारिया, मदारी—पु० बंदर नचानेवाला, बाजीगर, [संपेरा।
मदिरा—स्त्री० शराब।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मदीला—वि० नशा लानेवाला, नशीला।
मदोवै—स्त्री० मन्दोदरी (दे० 'मँदोवै')।
मद्रिम—वि० मंदा, मध्यम।
मद्धे—अ० विषयमें, बाबत। बीचमें।
मद्य—पु० शराब।
मध, मधि—पु० मध्य, बीच। क्रिवि० बीचमें।
मधु—पु० शहद, मदिरा, वसंत, चैत्र, पुष्परस, मक्खन, दूध, एक दैत्य, अशोक वृक्ष। वि० मीठा।
मधुकर—पु० भ्रमर, रसिक व्यक्ति। उद्धव। भँगरा। एक तरहका चावल (उदे० 'कजरी')।
मधुकरी—स्त्री० भ्रमरी (मति० २३८)। रोटी, दाल चावल आदिकी भिक्षा (उदे० 'दर')। बाटी, लिट्टी।
मधुप—पु० भ्रमर। उद्धव।
मधुपर्क—पु० दही, घृत, शहद आदिका मिश्रण।
मधुमक्खी,-मक्षिका—स्त्री० शहद एकत्र करनेवाली मक्खी।
मधुर—वि० मीठा, रुचिकर, सुन्दर। शान्त, धीमा, हलका। पु० मीठा रस, गुड़, इ०।
मधुरई, मधुरता, मधुराई—स्त्री० मिठास, कोमलता, [(पद्माभ० ५२)।
मधुराज—पु० भ्रमर।
मधुराना—अक्रि० मीठा या रुचिकर होना।
मधुरी—स्त्री० मिठास, सुन्दरता। एक बाजा। वि० स्त्री० मीठी, रुचिकर 'मधुरी बोलनि बरनि न जाई।' सू० ८२
मधुसूदन—पु० मधु दैत्यके संहारक श्रीकृष्ण।
मधूक—पु० महुएका वृक्ष या पुष्प (मति० २३०)।
मध्य—पु० बीच, भीतर, अन्तर। वि० बीचका। क्रिवि० बीचमें।
मध्यम—वि० बीचका। पु० एक स्वर। एक राग।
मध्यमा—स्त्री० बीचकी अँगुली।
मध्याह्न—पु० दोपहर।
मन—पु० चित्त, हृदय, इच्छा। एक तौल। सर्पमणि।—**करना** = इच्छा करना।—**टूटना**=निराश होना।—**बढ़ना** = उत्साह बढ़ना।—**मानना** = संतोष होना, अच्छा लगना, अनुरक्त होना।—**मारना** = मनको दबाना, उदास होना।—**में आना** समझ पड़ना, अच्छा लगना, चित्तमें उदय होना।—**में धरना** = स्मरण रखना।—**में बसना** = अच्छा लगना, रुचना।—**में लाना** = ध्यान करना, सोचना।—**लगाना,—लाना** = ध्यान देना, जी लगाना, प्रेम करना।—**से उतरना** = विस्मृत या तिरस्कृत होना।—**हारना** = उत्साहहीन होना।—**ही मन** = भीतर ही भीतर, चुप-चाप।
मनकना—अक्रि० चलायमान होना, हिलना (उदे० 'लरीदार')।
मनकरा—वि० चमकीला।
मनका—पु० गुरिया, दाना, 'करका मनका छाँड़िकै मनका मनका फेर।' साखी ९७
मनकामना—स्त्री० इच्छा, मनोरथ (उदे० 'पूजना')।
मनगढ़ंत—वि० कपोल-कल्पित। स्त्री० कपोल-कल्पना।
मनचला—वि० शूर, साहसी, हौसिलेवाला, मौजी, रसिक।
मनचाहा, मनचीता—वि० मनोवाञ्छित, मनको अच्छा लगनेवाला 'कहँ गये नृपकिसोर मनचीता।' रामा० १२७
मनजात—पु० कामदेव।
मनन—पु० चिन्तन, ध्यान, गंभीर अध्ययन।
मननाना—अक्रि० भनभन करना, गूँजना।
मनवांछित—वि० अभिलषित, मनचाहा।
मनभाया, मनभावना—वि० प्रिय, मनोनुकूल।
मनभावता—वि० मनभावना, प्रिय। पु० प्रिय व्यक्ति।
मनमत—वि० मदोन्मत्त।
मनमथ—पु० कामदेव।
मनमाना—वि० मनोनुकूल, यथेच्छ।
मनमुखी—वि० मनमौजी, मनमानी करनेवाला।
मनमुटाव—पु० वैमनस्य, रंजिश।
मनमोदक—पु० मनका लड्डू, कल्पित बात।
मनमौजी—वि० अपनी मौजके मुताबिक चलनेवाला।
मनरंज, मनरंजन—वि० मनोरंजक। पु० मनोविनोद।
मनलाडू—पु० कल्पित बात।
मनशा—पु०, स्त्री० आशय, मतलब, इच्छा।
मनसना—सक्रि० मंशा या इच्छा करना, निश्चय करना।
मनसब—पु० ओहदा, अधिकार, काम।
मनसा—स्त्री० इच्छा, (उदे० 'धापना')। मतलब, संकल्प। बुद्धि, मन, 'जो ब्रज में आनन्द हतो सो मुनि मनसहु न गहै।' सू० १९७। क्रिवि० मनसे। वि० मन सम्बन्धी, मनसे उत्पन्न।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनसाकर—वि० इच्छित फल देनेवाला। पु० कल्पवृक्ष।
मनसाना—अक्रि० जोशमें आना।
मनसिज—पु० कामदेव।
मनसूबा—पु० इरादा, विचार, युक्ति।
मनहरण, मनहरन—वि० मनोहर, सुहावना। पु० एक छन्द।
मनहुँ—अ० मानो, जैसे।
मना—वि० रोका हुआ, वर्जित।
मनाक, मनाग—वि० थोड़ा, अल्प।
मनादी—स्त्री० ढिंढोरा।
मनाना—सक्रि० रूठेको प्रसन्न करनेका यत्न करना। प्रार्थना करना 'सबके उर अभिलाष अस कहहिं मनाइ महेसु।' रामा० १९९
मनावन—पु० मनानेकी क्रिया या भाव।
मनाही—स्त्री० मुमानियत, रोक।
मनिका—पु० देखो 'मनका'।
मनिधर—पु० साँप।
मनिया—स्त्री० गुरिया, 'गुहि गुहि देते नन्द जसोदा तनक काँचके मनियाँ।' अ० ६१। कण्ठी।
मनियार—वि० कान्तिमान्, सोहावना 'बरनौं कहा देस मनियारा।' प० ८३ (अ० ६१)।
मनिहारी—स्त्री० चूड़ी बेचनेवाली स्त्री।
मनी—स्त्री० मणि। गर्व, अहंकार।
मनीषा—स्त्री० बुद्धि, प्रशंसा।
मनु—अ० मानो।
मनुआँ,-वाँ—पु० मन (उदे० 'जमधर')। मनुष्य।
मनुज—पु० मनुष्य (उदे० 'बंगा')।
मनुजाद—पु० राक्षस (रामा० ४६७)।
मनुष, मनुष्य—पु० आदमी। पति।
मनुसाई—स्त्री० मनुष्यत्व, पुरुषार्थ 'देखहु कालि मोरि मनुसाई।' रामा० ४९१
मनुहार, मनुहारि—स्त्री० विनती, आदर, खुशामद। 'चलिये विप्र जहाँ यज्ञ वेदी, बहुत करी मनुहारी।' सू० २८। 'करत लाल मनुहार पै तू न लखत इहि ओर।' ललित० १२६ (उदे० 'कोट')।
मनुहारना—सक्रि० विनती करना, मनाना, आदर करना (उदे० 'कुरला')।
मनो—अ० मानो।
मनोकामना—स्त्री० इच्छा।
मनोगत—वि० मनमें आया हुआ।
मनोगति—स्त्री० मनकी गति।
मनोज—पु० कामदेव।
मनोज्ञ—वि० सुन्दर।
मनोनीत—वि० मनके योग्य, चुना हुआ।
मनोयोग—पु० मनको किसी एक विषयपर लगाना।
मनोरंजन—पु० दिलबहलाव।
मनोरथ—पु० इच्छा, अभिलाषा।
मनोरम—वि० मनोहर, सुन्दर।
मनोरा—पु० गोबरके बने चित्र।
मनोराझूमक—पु० एक तरहका गीत (प० ८७)।
मनोरिया—स्त्री० एक तरहका गहना जो स्त्रियोंकी साड़ी इ० के किनारेपर टाँक दिया जाता है।
मनोवांछा—स्त्री० इच्छा।
मनोविकार—पु० चित्तका विकार, क्रोधद्वेषादि मनोभाव।
मनोसर—स्त्री० मनोविकार।
मनोहर—वि० मनोज्ञ, सुन्दर।
मनोहरता,-ताई, मनोहराई—स्त्री० सुन्दरता।
मनौती—स्त्री० मन्नत, विनती। (दास ६८)
मन्नत—स्त्री० मनौती, कार्यकी सफलताके निमित्त पूजा इ० की प्रतिज्ञा।
मन्यु—पु० क्रोध, गर्व, शोक, स्तोत्र, इ०।
मम—सर्व० मेरा, मेरी।
ममता-स्त्री०, ममत्व-पु० 'मेरापन', मोह, स्नेह, गर्व।
ममास—पु० देखो 'मवास' (रतन० २७)।
ममियाउर, ममियौरा—पु० मामाका घर।
मयंक—पु० चन्द्रमा।
मयंद—पु० मृगेन्द्र, सिंह (उदे० 'अरिंद')।
मय - प्रत्य० युक्त, निर्मित। पु० ऊँट। घोड़ा। सुख।
मयगल—पु० मस्त हाथी। एक शिल्पज्ञ दानव।
मयन—पु० कामदेव।
मयमंत, मयमत्त—वि० मदोन्मत्त (उदे० 'पखाल')।
मयस्सर—वि० प्राप्त। सुलभ।
मया—स्त्री० दया, माया, मोह, प्रीति, जीवन, संसार, कृपा 'हौं तो धाइ तुम्हारे सुतकी मया करति तुम रहियो।' सूवे० ३१३ (उदे० 'चिरिहार')।
मयार—वि० कृपालु (प० ९९)।
मयारी—स्त्री० धरन 'खंभ जंबूनद सुविद्रुम, रची रुचिर मयारि।' सू० १०६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मयूख—पु० किरण, ज्वाला, शोभा, प्रकाश।
मयूर—पु० मोर पक्षी।
मरंद—पु० मकरंद, पुष्परस (उदे० 'कागद')।
मरक—पु० मरी, मृत्यु। इशारा, बढ़ावा 'अरतैं टरत न बर परे दई मरक मनु मैन।' बि० ४
मरकट—पु० बन्दर।
मरकत—पु० एक मणि, पन्ना (उदे० 'खंजरीट')।
मरकना—अक्रि० दबना, दबकर टूटना।
मरकहा—वि० मारनेवाला (पशु)।
मरगजा—वि० मला हुआ, मर्दित किया हुआ, (उदे० 'पटोरी') 'मरगजि माल सिथिल कटिकिंकिनि अरुन नैन चहुँ जाम जगे।' स्वा० हरिदास। मैला।
मरघट—पु० श्मशान
मरचा—पु० मिरचा।
मरज़—पु० मर्ज़, रोग।
मरजाद, मरजादा—स्त्री० मर्यादा, प्रतिष्ठा, (उदे० 'पासी')। सीमा, नियम, रीति (राम० ५०८, रामा० ४१)।
मरजिया—पु० समुद्रादिमें डुबकी लगानेवाला, ग़ोताख़ोर 'जो मरजिया होइ तहँ सो पावै वह सीय।' प० १४। वि० मरनेवाला, मर कर पुनः जी उठनेवाला। अधमरा।
मरज़ी—स्त्री० मंशा, इच्छा, आज्ञा, खुशी।
मरजीया, मरजीवा—पु० देखो 'मरजिया' 'समुद न डरै पैठि मरजीवा।' प० ६७ (प० १४, साखी १२५)।
मरण, मरत—पु० मृत्यु।
मरतबा—पु० बार, दफ़ा। पद।
मरद—पु० पुरुष। पति। वीर पुरुष।
मरदई—स्त्री० पुरुषत्व, वीरता, मनुष्यत्व (उदे० 'कनूक')।
मरदना—सक्रि० मर्दन करना, चूर करना 'जेहि शर मधु-मद मरदि महा मुर मर्दन कीन्हो।' राम० ४९६ (उदे० 'पारना')।
मरदनिया—पु० तेलादि मलनेवाला नौकर।
मरदानगी—स्त्री० साहस, वीरता।
मरदाना—वि० वीरों या पुरुषोंका सा। पुरुष-सम्बन्धी। साहसी। पु० मकानका वह भाग जहाँ मर्दोंका उठना बैठना हो।

मरना—अक्रि० पंचत्वको प्राप्त होना, जान देना, नष्ट होना, शान्त होना, पराजित होना, कुम्हलाना, अधिक कष्ट सहना, शक्तिहीन या कान्तिहीन होना। अतिशय प्रेम करना।
मरनि, मरनी—स्त्री० मृत्यु, मरण (उदे० 'नेवरना'), दुःख, विपत्ति,। अंत्येष्टि क्रिया।
मरम—पु० भेद (उदे० 'छीन')। स्वरूप। प्राणमय स्थान
मरमराना—अक्रि० चरचराना [(रामा० २७५)।
मरमी—वि० मर्मज्ञ, तत्त्वज्ञ (उदे० 'कुदारी')।
मरम्मत—स्त्री० किसी बिगड़ी हुई चीज़को दुरुस्त करनेकी क्रिया या भाव। मारना, पीटना।
मरहट—पु० मरघट (कबीर २८५)। मोठ नामक अन्न।
मरहम—पु० घाव इ० पर चढ़ानेका दवाका गाढ़ा लेप।
मरातिब—पु० दरजा, खण्ड, ध्वजा।
मरायल—वि० मार खानेवाला, 'सठहु सदा तुम मोर मरायठ।' रामा० ५११। निर्बल।
मराल—पु० हंस, घोड़ा, बादल, कज्जल।
मरिंद—पु० भ्रमर।
मरिच—स्त्री० मिर्च (मति २०९)।
मरी—स्त्री० वह संक्रामक बीमारी जिसके कारण थोड़े समयमें बहुतसे लोग मरें, महामारी। एक तरहका भूत।
मरीचि—स्त्री० किरण, (मति० २०९) ज्योति, मृगतृष्णा।
मरीचिका—स्त्री० मृगतृष्णा।
मरीचिमाली, मरीची—पु० सूर्य। चन्द्र।
मरीज़—वि० रोगी।
मरु—पु० मरुभूमि।
मरुआ—पु० एक पौधा। छाजनके या हिंडोलेके ऊपरकी लकड़ी 'मरुवा लगे नगलछित कीला, सुविधि सिल्प [सँवारि'। सू० १७६
मरुतवान, मरुत्वान्—पु० इन्द्र, पवनपुत्र हनुमान।
मरुधर—पु० मारवाड़।
मरुरना—अक्रि० ऐंठ जाना।
मरू—वि० कठिन। मरूकरि = कठिनाई से 'सँभारयो घरी एक तूमें मरूकै'—राम० ४६५ (कलित० १८५)।
मरूरा—पु० मरोड़, ऐंठन (साखी १३१)।
मरोड़, मरोर—स्त्री० ऐंठन, (उदे० 'पौरिया') गर्व (उदे० 'बूहरा'), शक्ति, क्रोध 'रह्यो मोहु मिलनौ रह्यो यों कहि गहे मरोर'। वि० २०३ (मति० २१०)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरोड़ना, मरोरना—सक्रि० ऐंठना, घुमाना, (उदे० 'अटकाना')। मसलना, मर्दन कर नष्ट करना। हाथ मरोरना = पछताना 'काहू छुवै न पाये गये मरोरत हाथ।' प० ५० (उदे० 'झांखना')।

मर्कट, मर्कत, मर्ज़, मर्ज़ी—देखो 'मरकत' इ०।

मर्तबा—दे० 'मरतबा'।

मर्तबान—पु० घी इ० रखनेका बर्तन।

मर्द—पु० पुरुष। साहसी मनुष्य। पति। योद्धा।

मर्दन—पु० मलने, कुचलने आदिकी क्रिया। वि० कुचलनेवाला, नाशक।

मर्दना—सक्रि० मसलना, कुचलना (उदे० 'ठट्ट'), मलना, नष्ट करना 'सकल मुनिगण मुकुटमणि को मर्दियो अभिमान।' के० १३१

मर्दानगी—स्त्री० बहादुरी, साहस।

मर्दाना—दे० 'मरदाना'।

मर्दुमशुमारी—स्त्री० मनुष्यगणना।

मर्दुमी—स्त्री० वीरता, मरदानगी। पुंसत्व।

मर्म—पु० देखो 'मरम'।

मर्मी—वि० भेद जाननेवाला। तत्त्वज्ञ।

मर्याद, मर्यादा—स्त्री० प्रतिष्ठा, सीमा, रीति, किनारा।

मलंग—पु० एक पक्षी। एक तरहके फकीर।

मल—पु० विष्ठा, मैल, पाप, विकार, दोष।

मलकना—अक्रि० मचकना, हिलना।

मलका—स्त्री० महारानी।

मलखम—पु० लकड़ीका खंभा जिसपर कसरत करते हैं।

मलखाना—वि० मल खानेवाला।

मलगजा—पु० बैंगनकी पकौड़ी। वि० देखो 'मरगजा।'

मलना—सक्रि० मर्दन करना, रगड़ना, मसलना, ऐंठना। हाथ मलना = पछताना।

मलमल—स्त्री० एक महीन सूती कपड़ा।

मलमलाना—सक्रि० कई बार खुलाना या आलिंगन करना। (आँखका) जल्दी जल्दी खोलना और बन्द करना।

मलमास—पु० अधिकमास जो चान्द्रमानके अनुसार तीन वर्षों पर पड़ता है।

मलय—पु० एक पर्वत, सफ़ेद चंदन, नंदनवन।

मलराना—दे० 'मल्हराना'। 'कोऊ दुलरावैं मलरावैं हलरावैं कोऊ चुटकी बजावैं कोऊ देति करतारैं हैं।'—रामरसायन

मलरुचि—वि० बुरी रुचिवाला, अधम।

मलहम—दे० 'मरहम'।

मलाई—स्त्री० दूधकी साढ़ी, रस, सार।

मलान—वि० मलिन, मैला, दुखी।

मलानि—स्त्री० मलिनता, उदासी, ग्लानि।

मलामत—स्त्री० फटकार, भर्त्सना। कूड़ा, मैला।

मलार—पु० एक राग।

मलाल—पु० दुःख। उदासी।

मलाह—पु० मल्लाह, केवट।

मलिनाई—स्त्री० मैलापन, नीचता।

मलिनाना—अक्रि० मलिन होना।

मलियामेट—वि० तहस-नहस, ध्वस्त-विध्वस्त।

मलीन—वि० गंदा, अपवित्र, नीच, उदास।

मलूक—पु० एक पक्षी, कीट-विशेष। वि० मनोहर।

मलेच्छ—दे० 'म्लेच्छ'।

मलोला—पु० मानसिक दुःख, शोक 'राधे अहो हरि भावतेको भरिकै भुज भेंटिये भेटि मलोलें।' रसवि० १३

मल्ल—पु० पहलवान। दीपक। एक देश।

मल्लक—पु० दीपक, दाँत, नारियलका पात्र।

मल्लयुद्ध—पु० कुश्ती।

मल्लाह—पु० धीवर, केवट।

मल्लिका, मल्ली—स्त्री० एक फूलका पौधा, मोतिया।

मल्हराना, मल्हाना—सक्रि० पुचकारना, प्रेम दिखाना 'मधुर झुलाइ मल्हावहीं गावैं उँमगि उमँगि अनुराग' —गीता० २८५ (उदे० 'दुलराना', 'छैया')।

मल्हार—पु० मलार राग।

मवरा—पु० मरुआ नामक पौधा (?) (कबीर २४०)।

मवाद—पु० पीब। सामग्री।

मवास—पु० शरण, शरणकी जगह (उदे० 'पास'), 'इती संपति सहित क्यों पिय देत नाहिं मवास'—गदाधर भट्ट। दुर्ग (भ्र० १३६), प्राकार परके वृक्ष।

मवासी—स्त्री० छोटा दुर्ग। पु० दुर्ग-रक्षक, नायक।

मवेशी—पु० ढोर, पशु।

मशक—पु० मसा, मच्छड़। पानी भरनेका चर्म-पात्र।

मशक्कत—स्त्री० परिश्रम।

मशगूल—वि० (काममें) लगा हुआ, लीन।

मशविरा—पु० सलाह।

मशहूर—वि० प्रसिद्ध।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मशान—पु० श्मशान, मरघट।
मशाल—स्त्री० कपड़ेकी खूब मोटी बत्ती।
मशालची—पु० मशाल दिखानेवाला।
मश्क़—पु० किसी कामको करनेका अभ्यास।
मष—पु० मख, यज्ञ (उदे० 'नेवतना')।
मषि, मषी—स्त्री० स्याही, काजल।
मष्ट—वि० चुप, मौन।
मस—स्त्री० स्याही। पु० मंसा, मच्छड़।
मसक—पु० देखो 'मशक', 'निज पौरुष अनुसार जिमि मसक उड़ाहिं अकास।' रामा० ५१५ (उदे० 'पाँसुरी')।
मसकत—स्त्री० परिश्रम।
मसकना—सक्रि० दबाना, दबा कर फाड़ना। अक्रि० दबनेसे फटना, टूटना (सुबे० १८६)।
मसकरा, मसख़रा—पु० हँसोड़ 'लालच लोभी मसकरा तिनहूँ आदर होय।' कबीर ३६। विदूषक।
मसकला—पु० हथियार इ० साफ करनेका एक औज़ार।
मसका—पु० मक्खन। दहीका पानी। मच्छड़ (उदे० 'जर')।
मसकीन—वि० बेचारा, दरिद्र, साधु, (कबीर १७४)।
मसख़री—स्त्री० हँसी-ठट्ठा।
मसखवा, खावा—पु० मांस खानेवाला (प० २५६)।
मसजिद—स्त्री० (मुसलमानोंका) उपासना-मन्दिर।
मसनंद, मसनद—स्त्री० गद्दी, बड़ा तकिया।
मसनवी—स्त्री० एक छन्द, कथाकाव्य (उर्दू-फारसी)।
मसमुंद—पु० ठेलमठेल, धकमधुक्का।
मसयारा—पु० मशालची, मशाल।
मसरफ़—पु० उपयोग।
मसल—स्त्री० कहावत, लोकोक्ति।
मसला—पु० कहावत। प्रश्न, समस्या।
मसलति, मसलहत—स्त्री० अप्रकट शुभ हेतु, गुप्त युक्ति 'बहूको बुलाय मसलहत सिखाय कान पैठ जा रसोई कोऊ परसे बेगानी ना।' बेनी। छिपा लाभ। सलाह 'बैठे इकले जादू करन मसलति भली'—सुजा० १३
मसलना सक्रि० रगड़ना, कुचलना, दबाना।
मसवासी पु० एक मास ठहरनेवाला। वेश्या।
मसविदा—पु० खर्रा, उपाय।
मसहार—पु० मांसाहारी (शृगालादि) 'मास खाइ मसहार डकारे।' छत्र० १३९। (सुजा० १८२)।
मसहूर—वि० मशहूर, विख्यात।
मसा—पु० मच्छड़। देहपर उठा हुआ मांसका दाना।
मसान—पु० श्मशान। —जगाना = शव सिद्ध करना 'हम तौ जरि वरि भस्म भये तुम आनि मसान जगायो।' सुबे० ३६३
मसानी—स्त्री० डाकिनी इ०।
मसाल—स्त्री० मशाल।
मसाला—पु० कोई चीज़ तैयार करनेके लिए आवश्यक वस्तुएँ। तरकारी, अचार इ० में पड़नेवाली चीज़ें। सामग्री, साधन।
मसाहत स्त्री० पैमाइश (सू० ११)।
मसि—स्त्री० स्याही, कालिमा, कालख, कालिख (राम० ९४)।
मसिअर,-आर—पु० मशाल (प० १२१, १६२, १३४)।
मसिदानी, —स्त्री० दावात।
मसिबुंदा—पु० दिठौना।
मसियर, मसियार—दे० 'मसिअर'।
मसियाना—अक्रि० भर जाना।
मसीत, मसीद—स्त्री० मसजिद 'माँगिके खैबो मसीत को सोइबो...'—कविता० २२८
मसू—स्त्री० कठिनाई।
मसूड़ा—पु० दाँतोंके ऊपर या नीचेका मांस।
मसूर—पु० एक अन्न।
मसूरा—पु० मसूड़ा। वेश्या। मसूरकी दाल या बरी।
मसूरी, -रिया—स्त्री० एक प्रकारकी चेचक।
मसूसन—स्त्री० कुढ़न, मानसिक दुःख 'बाल नवेलि मसूसनि रोवै।' रस० २२
मसूसना, मसोसना—अक्रि० मनमें दुःख करना, मनोवेगको दबाना। निचोड़ना, ऐंठना।
मसेवरा—पु० मांसके बने भोज्य पदार्थ।
मसौदा—दे० 'मसविदा'।
मस्करा—वि० मसख़रा, हँसोड़।
मस्कला—पु० सिकली करनेका औज़ार (साखी ३९)।
मस्ट—वि० चुप (प० ३१)।
मस्त—वि० उन्मत्त, अभिमानी, प्रसन्न और निश्चिन्त।
मस्तक—पु० माथा, सिर।
मस्ताना—अक्रि० मस्त होना। वि० मस्त।
मस्तिष्क—पु० दिमाग़।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मस्तूल—पु० पाल बाँधनेका डण्डा।
महँ—अ० में।
महँई—वि० भारी।
महँकना—अक्रि० बास देना।
महँगा—वि० उचितसे ज़्यादा क़ीमतका, अधिक मूल्यका।
महँगाई, महँगी—स्त्री० महँगापन, दुर्भिक्ष।
महंत—पु० मठाधिपति। मुखिया।
महँदी—स्त्री० एक कटीला पौधा।
मह—वि० बड़ा, बहुत।
महक, महकान—स्त्री० बास।
महकना—दे० 'महँकना'।
महज़—वि० केवल, मात्र। निरा।
महत—वि० बड़ा। पु० महत्त्व। स्त्री० महत्ता, प्रतिष्ठा 'बचन कठोर कहत, कहि दाहत अपनी महत गँवावत।' भ्र० २८
महता—स्त्री० बड़ा होनेका भाव, बड़प्पन। अभिमान।
महताब—स्त्री० एक आतिशबाजी। चाँदनी। पु० चन्द्रमा।
महतारी—स्त्री० माता (रामा० २२५)।
महती, महतु—स्त्री० महिमा।
महतो—पु० प्रमुख कृषक (कबीर १६१)।
महत्तत्व, महत्ता, महत्तत्तु—पु० सांख्य दर्शनके अनुसार प्रकृतिका प्रथम विकार, बुद्धितत्व।
महना—सक्रि० मथना, बिलोडना, पिष्टपेषण करना।
महनिया, महनु—वि० मथनेवाला, नाश करनेवाला।
महफ़िल—स्त्री० सभा, मजलिस। नाच गानेका जलसा।
महफ़ूज़—वि० निरापद, सुरक्षित।
महबूब—पु० प्रेमपात्र, प्यारा (उदे० 'गैल')।
महमंत—वि० उन्मत्त 'मन कुंजर महमन्त था फिरता गहिर गँभीर।' साखी १६३
महमदी, महम्मदी—पु० मुसलमान। वि० मुहम्मद द्वारा प्रवर्तित, मुसलमानी।
महमह—क्रिवि० सुगंधिके साथ।
महमहा—वि० सुगंधित 'मुख कसतूरी महमहीं बाणी फूटी बास।' कबीर १३
महमहाना—अक्रि० सुगंधि देना।
महर—पु० एक आदरसूचक शब्द, (उदे० 'बगर')। मुखिया। नन्द। एक पक्षी। कहार। वि० सुगंधित।
महरम—पु० भेद जाननेवाला 'कोऊ जरनि न जानहि बारी बेमहरम सब लोय'—हरि०। अँगिया। अँगियाकी कटोरी।
महरा—वि० प्रधान। पु० कहार, नौकरोंका नायक (प० १९१)
महराई—स्त्री० श्रेष्ठता।
महराज—पु० आदरसूचक शब्द, राजा, स्वामी।
महरानी—पु० महरोंके रहनेकी जगह (सूबे० १४९)।
महराब—स्त्री० द्वार, खंभों इ० के ऊपर बना हुआ अर्द्ध वृत्ताकार भाग।
महरि, महरी—स्त्री० भद्र-महिला-सूचक शब्द, स्वामिनी, यशोदा (सू० ६८)। ग्वालिन पक्षी (भू० १, प० २११)।
महरेटा—पु० महर-पुत्र, श्रीकृष्ण। महरेटी = राधिका।
महल—पु० प्रासाद, अन्तःपुर।
महल्ला—पु० बस्तीका एक भाग।
महसिल—पु० महसूल उगाहनेवाला।
महसूल—पु० किराया, कर, लगान।
महसूस—वि० मालूम। अनुभूत। —करना = अनुभव करना, समझना। —होना = अनुभव होना।
महा—वि० बड़ा, श्रेष्ठ, बहुत।
महाउत—पु० हाथीवान (प० १९)।
महाउर—पु० देखो 'महावर'।
महाकल्प—पु० ब्रह्मकल्प, ब्रह्मायु-काल।
महाकाव्य—पु० कमसे कम आठ सर्गोंवाला वह प्रबन्ध-काव्य जिसमें विवाह, युद्ध, सूर्योदय, सूर्यास्त, ऋतुओं इ० का वर्णन हो। बड़ा काव्य।
महाजन—पु० भला आदमी, बड़ा या धनी व्यक्ति, कोठीवाल।
महाजनी—स्त्री० सूदपर रुपया देनेका व्यवसाय, कोठीवाली। वि० महाजन सम्बन्धी, महाजनोंमें प्रचलित या महाजनोंके योग्य।
महाजल—पु० सागर, समुद्र, वारीश।
महातम—पु० महिमा, बड़ाई, पुण्य 'कमल नैनको छाँड़ि महातम और देवको धावै।' सू० १२
महात्मा—पु० उच्च आचार-विचार वाला व्यक्ति, महापुरुष। साधु। परमात्मा।
महादंडधारी—पु० यमराज।
महादेव—पु० शंकरजी।
महादेवी—स्त्री० दुर्गाजी। पटरानी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महाधन—वि० बहुमूल्य, बहुत धनवाला।
महान्—वि० बड़ा, उच्च।
महानाम—पु० एक मंत्र।
महानुभाव—पु० संभ्रान्त पुरुष, महान् व्यक्ति, महाशय।
महापद्म—पु० सौ पद्मकी संख्या। एक निधि।
महापातक—पु० ब्रह्महत्या, चोरी, मद्यपान इ० पाप।
महापातर, महापात्र—पु० महाब्राह्मण।
महाप्रलय—पु० कल्पान्तके समय संसारका विनाश, सृष्टि-विनाश-काल।
महाप्रसाद—पु० देवताओंका नैवेद्य, जगन्नाथजीका भात।
महाप्राण—पु० वर्गका दूसरा तथा चौथा वर्ण।
महाबल—वि० बहुत बलवान्। पु० बुद्ध, वायु।
महाबाहु—वि० बड़ी भुजाओंवाला, बलवान्।
महाबोधि—पु० बुद्ध भगवान्।
महाब्राह्मण—पु० अन्त्येष्टि कर्म करानेवाला ब्राह्मण, मृतक सम्बन्धी दान लेनेवाला ब्राह्मण।
महामाई—स्त्री० दुर्गा, देवी।
महामारी—स्त्री० मरी; हैजा आदि रोग।
महाय—वि० बहुत, ज़्यादा।
महायात्रा—स्त्री० महाप्रस्थान, मृत्यु।
महारथ, महारथी—पु० दस हजार वीरोंसे लड़नेवाला, अद्वितीय योद्धा।
महाराज—पु० एक आदरसूचक शब्द, राजा, स्वामी।
महाराजाधिराज—पु० बड़ा राजा। राजाओंकी एक उपाधि।
महाराणा—पु० मेवाड़के राजाओंकी उपाधि।
महारात्रि—स्त्री० महाप्रलयकी रात।
महार्घ—वि० अधिक मूल्यका, महँगा।
महाल—पु० मुहल्ला। ज़मींदारीका जाबितेसे बटा हुआ हिस्सा, पट्टी।
महालय—पु० पितृपक्ष। एक तीर्थ।
महावट—स्त्री० जाड़ेकी वर्षा।
महावत—पु० हाथी चलानेवाला।
महावर—पु० लाख इत्यादिका बना रंग, जावक।
महावरी—स्त्री० महावरकी गोली 'फिरि फिरि जानि महावरी एडी मोड़ति जाय।' बि० २१
महावीर—पु० सिंह, गरुड़, हनुमानजी, जैनियोंके अन्तिम तीर्थंकर। वि० बड़ा वीर।
महाशय—पु० सज्जन, महानुभाव, समुद्र।
महिं, महीं—अ० महँ, में (उदे० 'तानना')।
महि—स्त्री० धरती। महिमा।
महिख—दे० 'महिष'।
महिदेव—पु० ब्राह्मण।
महिपाल—पु० राजा।
महिमा—स्त्री० महत्ता, बड़ाई, प्रताप, बड़ा बन जानेकी सिद्धि।
महियाँ—अ० में '...प्रगटे भूतल महियाँ।' सू० ३०
महियाउर—पु० मठेमें पकाया हुआ चावल (प० २७३)।
महिला—स्त्री० स्त्री, नारी।
महिष—पु० भैंसा। एक राक्षस।
महिषी—स्त्री० भैंस। पटरानी, रानी।
महिषेश—पु० यमराज, महिषासुर।
महिसुर—पु० ब्राह्मण।
मही—स्त्री० धरणी, पृथ्वी। पु० छाँछ, तक्र।
महीधर—पु० पहाड़, शेषनाग।
महीन—वि० बारीक, सूक्ष्म।
महीना—पु० मास। तनख़ाह।
महीप,-पति,-पाल—पु० राजा।
महीभुज,-भृत—पु० राजा।
महीरुह—पु० पेड़।
महीसुर—पु० ब्राह्मण।
महुअर—पु० सँपेरोंका बाजा, तूंबड़ी (प० ८८)। स्त्री० एक तरहकी भेड़।
महुआ, महुवा—पु० एक पेड़ या उसका फूल।
महुआरी—स्त्री० महुएका बाग।
महुकम—वि० देखो 'मुहकम' (रतन० २८)।
महुर्छा—पु० महोत्सव।
महुवरि—दे० 'महुअर'।
महूख—पु० महुआ 'ऊख महूष पियूखकी तौ लगि भूख न जाय।' बि० २०७
महूरत—पु० दो घड़ीका समय, शुभ काल, क्षण।
महेर, महेरा—पु० मठेमें पका चावल।
महेरि, महेरी—स्त्री० महेर। उबाली हुई ज्वार। वि० झगड़नेवाला।
महेश, महेस—पु० महादेव।
महेशी, महेसी—स्त्री० पार्वती।
महोक, महोख, महोखा—पु० एक पक्षी (उदे० '[illegible]'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महोच्छव, महोछा—पु० महोत्सव।
महोदय—पु० महाशय, स्वामी।
महोला, महौला—पु० व्याज, बहाना, धोखा (कबीर [७१, साखी ९८)।
मह्यो—पु० मही, छाँछ।
माँ—स्त्री० माता। अ० में।
माँखना—अक्रि० क्रोध करना, अप्रसन्न होना।
माँखी—स्त्री० मक्षिका, मक्खी।
माँग—स्त्री० बालोंके बीचकी सीमा 'माँग पारि बेनीहिं सँवारति गूँथी सुन्दर भाँति।' सूबे० ८२। माँगनेकी क्रिया, जो वस्तु माँगी जाय, मुतालबा। आवश्यकता।
माँगटीका,-फूल—पु० सिर परका एक आभूषण।
माँगन—पु० याचना, भिक्षुक।
माँगना—सक्रि० याचना करना, प्रार्थना करना, बुला मँगाना 'चहौं आजु माँगों धरि केसा।' प० १२३। पु० भिक्षुक (उदे० 'जागा')।
माँचना—अक्रि० शुरू होना, प्रख्यात होना, फैलना 'कीरति जासु सकल जग माँची।' रामा० १५
माँछ—पु०, माँछर—स्त्री० मछली।
माँछी—स्त्री० मक्खी (उदे० 'जागा')।
माँजना—सक्रि० मलना, साफ या पवित्र करना (अ० ५२)।
माँजर—स्त्री० पंजर, ठठरी।
माँजा—पु० प्रथम वर्षाका फेन 'माँजा मनहु मीन कहँ ब्यापा।' रामा० २७२
माँझ—अ० में, बीच, भीतर 'नैना नैनन माँझ समाने' सू० १४८। पु० अंतर।
माँझिल—वि० मँझला, बीचका।
माँझी—पु० मल्लाह। मध्यस्थ।
माँट—पु० मटका। अटारी।
माँठ—पु० मटका, कुंडा। एक मिष्टान्न।
माँठी—स्त्री० एकपकवान। धातुकी बनी एक तरहकी चूड़ी।
माँड—पु० भातका पसावन। ब्रह्माण्ड (?) 'सकल मांड मैं रमि रह्या साहिब कहिये सोय।' कबीर ६०
माँडना—सक्रि० सानना, लगाना, बनाना, ठानना 'बुनहु सूर हमसों हठ माँडति कौन नफा करि लैहौ।' सूबे० १४३। 'हौं तुमसे फिर युद्धहिं माडौं।' राम० १६० (उदे० 'छाँड़ना')। स्थापित करना (उदे० 'माडना')। दायँ कराना (सूत्रि० ४६)।
माँडनी—स्त्री० मगजी, किनारा।
मांडलिक—पु० अधीन या कर देनेवाला राजा।
मांडव—पु० मँडवा, मंडप 'रचि रचि मानिक माँडव छावा।' प० १३१
माँडा—पु० एक तरहकी घीमें पकी रोटी, पराठा (प० २८०)। मंडप। एक नेत्ररोग।
माँड़ो—स्त्री० माँड़, कपड़ेका कलफ़।
माँडो माँड़ौ, माँढा—देखो 'माँडव'।
माँड्यो—पु० मंडप, देवगृह, अतिथिगृह।
माँत, माँता—वि० मस्त, (रामा० ४९८) उन्मत्त।†
माँतना—अक्रि० उन्मत्त होना। [† कान्तिहीन।
माँद—स्त्री० सिंह इ० के रहनेकी जगह। खोह, गुफा। वि० मंदा, फीका, हलका।
माँदगी—स्त्री० रोग, थकान 'अब सवार तुम होउ, जाइ माँदगी कटककी।' सुजा० १६२
माँदर—पु० एक तरहका मृदंग (प० १३०, २६०)।
माँदा—वि० थका हुआ।
माँपना—सक्रि० नापना। अक्रि० मतवाला होना।
माँयँ—अ० माँहिं, में, मध्य।
मांस—पु० गोश्त, आमिष।
मांसल—वि० मांसयुक्त, हृष्टपुष्ट, दृढ़।
माँह माँहि—अ० में, भीतर।
मा—स्त्री० माता, लक्ष्मी, कान्ति।
माइँ, माईं—स्त्री० विवाहके समयका एक पकवान। मामी। कुल-देवता '...अरु साइन में थपिहौं।' सू० ४३
माइ, माई—स्त्री० माँ, बूढ़ी या सम्माननीय स्त्री 'साजु तुम्हार कौसिलहिं माई।' रामा० २०७, स्त्रियोंका सम्बोधन, सखी (उदे० 'फँदना')।
माइका—पु० नैहर।
माकूल—वि० युक्तिसंगत। मुनासिब, ठीक। समझदार। क़ायल। खासा, अच्छा।
माख—पु० क्रोध, अप्रसन्नता। पश्चात्ताप। गर्व 'तिन्ह महुँ रावन तैं कवन सत्य बदहि तजि माख।' रामा० ४६३
माखन—पु० मक्खन (उदे० 'बछरुवा')।
माखना—अक्रि० क्रुद्ध या अप्रसन्न होना '...तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा।' रामा० ५२। 'ठावहिं ठाँव कुँवर सब माखे।' प० १०३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माखी—स्त्री० मक्षिका ।
मागध—पु० एक देश । जरासंध । एक तरहके भाट ।
माघ—पु० मास-विशेष । कुन्द-पुष्प ।
माच—पु० मंच । मार्ग ।
माचना—दे० 'माँचना' । (उदे० 'तरभर', दीन० १५९) 'माच्यो खैरभैर राजमन्दिरमें भारी है ।' रघु० २६
माचल—वि० हठ करनेवाला, मचलनेवाला (सूबि० २८) । पु० रोग । कैदी । ग्रह ।
माछ—पु० मछली (उदे० 'टांक') ।
माछर—पु० मछली । मच्छड़, मसा 'माछी कहै अपनो घरु माछरु मूसो कहै अपनो घरु ऐसो ।' के० ७७
माछरी—स्त्री० मछली (उदे० 'बंगा') ।
माछली—स्त्री० मछली (उदे० 'चहोड़ना') ।
माछी—स्त्री० मक्खी (उदे० 'माछर') ।
माजरा—पु० घटना, हाल ।
माट—पु० दही रखनेका घड़ा 'सूरदास प्रभुके गुन ऐसे दधिके माट भूमि दरिकाये ।' सूबे० १३५ । मटका 'मानहु नील माटतें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे ।' भ्र० १८
माटा—पु० आम हू० के पेड़ोंपर रहनेवाले लाल चींटे ।
माटी—स्त्री० मिट्टी, धूल, शरीर 'दिस्टि जो माटी सों करै माटी होइ अमोल ।' प० ७६
माठ—पु० मिट्टीका घड़ा (गीता० ३७६) । एक पकवान, बड़ी टिकिया (प० २९५) (उदे० 'पिराक') ।
माठा—पु० मही, तक्र (प० २७३) ।
माठी—स्त्री० एक तरहकी कपास ।
माडना—सक्रि० देखो 'माँडना', 'सुमति सुंदरी परसि प्रिया रस लंपट माड़ी आरि ।' सू० १२४ । मंडित करना, पहनना, पूजना । अक्रि० जाना, फिरना ।
माड़व—पु० मंडप ।
माढ़ा—पु० परकी बैठक, कोठा ।
माढ़ी—स्त्री० कुटी, छोटा मन्दिर । मंच, मचिया 'को पालक पौढ़ै, को माढ़ी ।' प० २९८
माणिक, माणिक्य—पु० एक रत्न, पद्मराग लाल ।
मातंग—पु० हाथी, चांडाल 'मदमत्त यदपि मातंग संग' —राम० १५ (के० १२२) ।
मात—वि० उन्मत्त । पराजित । स्त्री० पराजय । माता ।
मातदिल—वि० न अधिक गरम, न अधिक ठंडा (जल-वायु या ओषधि) ।
मातना—अक्रि० उन्मत्त होना (दीन० १५९) ।
मातबर—वि० विश्वसनीय ।
मातम—पु० किसीके मरनेका शोक ।
मातमपुर्सी—स्त्री० मृत व्यक्तिके घर जाकर उसके सम्बन्धियोंके साथ समवेदना प्रकट करनेका कार्य ।
मातल—वि० मतवाला, मस्त 'जस मत मातल हथिया हुमकति जाति ।' रहीम ३७
मातहत—पु० अधीनस्थ कर्मचारी ।
माता—स्त्री० मा, जननी, सम्मानार्ह स्त्री । शीतला ।
मातु—स्त्री० माँ । [दि० नदोन्मत ।
मातुल—पु० मामा । धतूरा ।
मात्र—अ० बस, भर, केवल ।
मात्रा—स्त्री० ह्रस्व अक्षरके उच्चारणका समय, स्वर-सूचक चिह्न, दवाकी खुराक, परिमाण ।
मात्स्य—वि० मछली-सम्बन्धी ।
माथ, माथा—पु० मस्तक । माथा कूटना, धुनना, या पीटना = सिर पीट कर शोक प्रकट करना । माथा ठनकना = पहलेसे ही अमंगलकी आशंका होना । माथे चढ़ाना, या धरना; माथे मानना = आदर सहित स्वीकार करना ।
माथना—सक्रि० मंथन करना ।
माथे, माथै—क्रिवि० मस्तकपर, भरोसे ।
मादक, मादिक—वि० नशीला । पु० नशा उत्पन्न करनेवाली वस्तु ।
मादकता, मादिकता—स्त्री० नशीलापन ।
मादर—दे० 'माँदर' (उदे० 'तूर') ।
मादर, मादरिया—स्त्री० मा 'मादरिया घर बेटी आई ।' कबीर ।
मादा—स्त्री० स्त्री जातिका जीवधारी (जीवजंतु) ।
माद्दा—पु० योग्यता । सृष्टिका उपादान द्रव्य । किसी वस्तुका उपादान या मूल ।
माधव—पु० श्रीकृष्ण, वसन्तऋतु, वैशाख मास, महुएका
माधवी—स्त्री० एक लता । एक प्रकारकी चमेली । [पेड़ ।
माधुरई, माधुरता—स्त्री० मिठास ।
माधुरि, माधुरिया—स्त्री० माधुर्य, सुन्दरता 'सुर प्रभु अँग निरखि माधुरि मदन सहु परयो दंड ।' सू० ८७
माधुरी—स्त्री० माधुर्य, सौन्दर्य । शराब ।
माधुर्य—पु० मिठास, सौन्दर्य ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माधैया, माधो—पु० माधव, श्रीकृष्ण।
मान—पु० सम्मान, गर्व, प्रतिष्ठा, रूठनेका भाव (उदे० 'तट')। पैमाना। परिमाण, (उदे० 'झूमका')। शक्ति।
मानचित्र—पु० किसी देश या स्थानका नक़शा।
मानता—स्त्री० मनौती, प्रतिज्ञा।
मानदंड—पु० नापनेका डंडा, पैमाना।
मानना—सक्रि० स्वीकार करना, (उदे० 'तरना'), समझना, आदर करना।
माननीय—वि० आदरणीय। मान लेने योग्य।
मानपरेखा—पु० आशा, भरोसा (भ्र० १८)।
मानमंदिर—पु० वेधशाला। कोपभवन।
मानमरोर—पु० वैमनस्य, बिगाड़।
मानव—पु० मनुष्य। वि० मनुष्योचित।
मानवी—स्त्री० स्त्री। वि० मनुष्य सम्बन्धी।
मानस—पु० मन। मनुष्य 'मनु अनेक मानस उपजाये।' छत्र० ३। मानसरोवर। दूत। संकल्प। वि० मानसिक, मनोजात।
मानसर,-सरोवर—पु० हिमालयके उत्तरकी एक बड़ी झील।
मानसी—वि० मनसे उत्पन्न। स्त्री० मनःकृत पूजा।
मानहुँ—अ० मानो, जनु।
माना—सक्रि० नापना, जाँच करना (गीता० ३७७)। अक्रि० अमाना, अटना, 'इन मेरे लोभी नैननिमें सोभा-सिन्धु न मात।' व्यासजी (सूरा० ७०)।
मानिंद—वि० तुल्य, नाईं।
मानिक—पु० पद्मराग, लाल।
मानिनी—स्त्री० रुष्टा नायिका। वि० स्त्री० रुष्टा, गर्ववती।
मानी—वि० अभिमानी, प्रतिष्ठित। स्त्री० अर्थ, मतलब।
मानुख, मानुष—पु० मनुष्य। वि० मनुष्य-सम्बन्धी (उदे० 'उछारना')।
मानुषी—वि० मनुष्य-सम्बन्धी। स्त्री० स्त्री।
मानुस—पु० मनुष्य।
माने—पु० अर्थ, मतलब।
मानौं, मानो—अ० जैसे, जानो, गोया।
मान्य—वि० पूज्य, आदरणीय।
माप—स्त्री० नाप, तौल, जाँच, मान।
मापना—सक्रि० नापना, तौलना, परिमाण देखना। अक्रि० मतवाला होना।
माफ़—वि० क्षमित।
माफ़क़त, माफ़िक़त—स्त्री० मेलजोल, मैत्री, अनुकूलता।
माफ़िक़—वि० अनुसार, मुताबिक़।
माफ़ी—स्त्री० क्षमा। बेलगान ज़मीन।
माम—पु० ममत्व, अधिकार।
मामलत,-लति—स्त्री० झगड़ेका विषय। मामला।
मामला, मामिला—पु० काम, व्यवहार। मुक़दमा, विषय, (उदे० 'खामी')।
मामा—पु० मातुल। स्त्री० माँ, पाचिका, दासी, बुढ़िया।
मामूल—पु० नित्यनियम, रीति, अभ्यास, बंधेज़।
मामूली—वि० साधारण, बँधा हुआ। नियमित।
मामी—स्त्री० अपनी त्रुटि न मानना। --पीना = अपनी त्रुटिपर ध्यान न देना (भ्र० १७)।
माय—स्त्री० देखो 'माई', 'माया'। 'मेरे गुरुको धनुष यह सीता मेरी माय।' रा० ७८
मायक—पु० नैहर। वि० छली, मायावी।
मायका—पु० नैहर।
मायन—पु० मातृका-पूजनकी तिथि।
मायनी—स्त्री० मायाविनी, ठगिनी।
माया—स्त्री० छल, कपट, मोह, भ्रम, धन, लक्ष्मी, प्रकृति, जादू, शक्ति, प्रेरणा, ममता, दया। माता।
मायावी—वि० छली। पु० एक दानव।
मायिक—वि० मायावी, मायाका, बनावटी।
मायूस—वि० निराश।
मार—पु० कामदेव। स्त्री० प्रहार, आघात, युद्ध। माला (राम० १३०)। अ० बहुत।
मारक—वि० संहारक। शमन करनेवाला (ओषधि, इ०)।
मारका—पु० लड़ाई, मुक़ाबला। निशान। मारकेका = महत्वपूर्ण, बड़ा।
मारग—पु० पथ, रास्ता, (उदे० 'निबहना' 'ओग')-- मारना = पथिकोंको लूटना।--लगना या लेना = रास्ता लेना, चल देना।
मारगन—पु० बाण 'राम-मारगन-गन चले लहलहात जनु व्याल।' रामा० ५०७। भिक्षुक।
मारजन—पु० परिष्कार, सफ़ाई।
मारजार—स्त्री० बिल्ली।
मारण—पु० प्राण लेना। तांत्रिकोंका एक प्रयोग।
मारतंड—पु० सूर्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मारना—सक्रि० पीटना, ज़ोरसे पटकना (उदे० 'तमकना'), दण्ड देना 'असाधु साधु बूझि कै यथापराध मारिये।' राम० ३८६। गिराना, वध करना, फेंकना, चलाना, सताना, दबाना, 'तजिकै सुरारि रिसचित्त मारि'—राम० ७७। नष्ट करना, हड़पना, हथियाना। डसना। **गाल मारना** = देखो 'गाल'।

मारपेच—पु० धोखेबाज़ी।

मारफ़त, मार्फ़त—अ० द्वारा, जरियेसे।

मारा—स्त्री० माला 'टूट आँसु जनु नखतन्ह-मारा।'

मारामार—क्रिवि० जल्दी, जल्दी, शीघ्रतापूर्वक। [प० २११

मारिच—पु० मारीच राक्षस।

मारी—स्त्री० सांघातिक संक्रामक रोग।

मारुत—पु० वायु।

मारुति—पु० हनुमान, भीम।

मारू—पु० बड़ा नगाड़ा, युद्धके समयका एक राग। मरु-देशवासी (दीन० १११)। वि० मारने या वेधनेवाला।

मारे—अ० कारण।

मार्ग, मार्गन, मार्जन, मार्जारि—देखो 'मारग', 'मार-गन' इ०।

मार्मिक—वि० असर डालनेवाला। मर्मज्ञ।

माल—स्त्री० माला, पंक्ति। पु० सामान, धन। मछ, जवान। चीज़। रक़म। बढ़िया भोजन। चरखेकी डोरी

मालगुज़ारी—स्त्री० भूमिकर, लगान। [करकी आमदनी।

मालति, मालती—स्त्री० एक लता।

मालदार—वि० धनी।

मालन—स्त्री० मालीकी स्त्री।

मालपुआ, -पुवा—पु० एक पकवान।

मालपूआ,-पूवा—देखो 'मालपुआ'।

माला—स्त्री० हार, पंक्ति, समूह, सुमरनी।

मालामाल—वि० धन-सम्पन्न।

मालिक—पु० स्वामी, पति, ईश्वर, माली। धोबी।

मालिश—स्त्री० मर्दन, मलना।

माली—पु० बाग़बान, फूल बेचनेवाला। वि० जो

मालूम—वि० ज्ञात। [माला पहने हो। आर्थिक।

माल्य—पु० पुष्पमाल, पुष्प।

मावन—पु० महावत, हाथीवान्।

मावस—स्त्री० अमावस्या 'अलिसे मावस-रैनसे बाला तेरे वार।' भाषाभूषण।

मावा—पु० निचोड़, माँड़, खोया, अंडेका रस, मसाला।

माशा—पु० सोना इ० तौलनेका एक मान। आठ रत्ती।

माशूक़—पु० प्रेमपात्र।

माशूक़ा—स्त्री० प्रिया, प्रियतमा।

माष—पु० क्रोध, गर्व 'तुम्हरे लाज न रोष न माषा'—रामा० ४६२। उड़द। शरीरका मसा।

माषना—देखो 'माखना' (रघु० १९१)।

मास—पु० महीना। मांस, आमिष।

मासना—अक्रि० मिश्रित हो जाना, मिल जाना।

मासा—दे० 'माशा'।

मासिक—वि० मास-सम्बन्धी, महीने महीने होनेवाला।

मासी—स्त्री० मौसी।

माहँ—अ० में, के भीतर।

माह—पु० महीना। उड़द। माघ मास 'जियकी जीवनि जेठ, सो माह न छाँह सुहाय।' वि० ९५

माहत—स्त्री० महत्ता।

माहना—अक्रि० उमड़ना, उमंगमें आना।

माहर—पु० फल-विशेष, इन्द्रायन।

माहली—पु० अन्तःपुरका सेवक, सेवक।

माहवार—वि० हर मासका। पु० वेतन। क्रिवि० हर मास।

माहवारी—वि० महीनेका, महीने महीने होनेवाला।

माहाँ, माहिं, माहीं—अ० में, भीतर (उदे० 'अतीत')।

माहिर—वि० निपुण, जानकार।

माहिला—पु० मल्लाह, केवट।

माहुर—पु० विष।

मित—पु० मित्र (उदे० 'चिचावना', साखी ३४)।

मिआद—स्त्री० अवधि, नियत समय।

मिचना—अक्रि० (नेत्र) बन्द होना।

मिक़दार—स्त्री० मात्रा, परिमाण।

मिचलाना—अक्रि० वमनकी प्रवृत्ति होना।

मिछा—वि० मिथ्या, झूठ।

मिज़ाज—पु० स्वभाव, तबीयत। गर्व।

मिटना—अक्रि० नष्ट होना, अन्यथा होना, दूर होना।

मिटाना—सक्रि० दूर करना, नष्ट करना, बिगाड़ना।

मिटिया—स्त्री० मिट्टीकी छोटी हाँडी।

मिट्टी—स्त्री० मृत्तिका, धूल, भस्म, भूमि, गठन, मृत-देह, देह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिट्ठू—पु० तोता। वि० प्रिय-भाषी, चुप रहनेवाला।
मिठाई—स्त्री० मीठी वस्तु। मिष्टान्न, मिठास, 'तेरे अंग अंगमें मिठाई औ लुनाई भरी'—ललित ६१
मिठाना—अक्रि० मीठा होना।
मिठास—स्त्री० मीठापन, माधुर्य (पुं० भी 'कितौ मिठास दयो दई इते सलोने रूप।' बि० १९५)।
मिड़ाई—स्त्री० मीड़नेकी क्रिया या मज़दूरी।
मितंग—पु० मतंग, हाथी।
मित—वि० परिमित, अल्प। स्त्री० मिति, सीमा 'ममकृत दोस लिखैं बसुधा भर तऊ नहीं मित नाथ।' सू० ७
मितव्यय—पु० किफ़ायत।
मिताई—स्त्री० मित्रता (प० ९)।
मिति—स्त्री० सीमा, अवधि, परिमाण।
मिती—स्त्री० तिथि, दिन।
मित्त, मित्र—पु० सुहृद, सखा, हितू, 'क्यों रहीम ढूँढत नहीं गाढे दिनको मित्त।' रहीम। सूर्य।
मित्रता, मित्राई—स्त्री० सौहार्द, बन्धुत्व (अ० ६४)।
मिथुन—पु० स्त्री पुरुषका जोड़ा, एक राशि, संयोग, दोकी संख्या।
मिथ्या—वि० झूठ, असत्य।
मिनकी—स्त्री० बिल्ली '...मूसा इत उत फिरै ताकि रही मिनकी।' सुन्द० १४
मिनती, मिन्नत—स्त्री० विनती, दीनता।
मिनमिन—क्रिवि० मन्द या अस्पष्ट स्वरमें।
मिनमिनाना—अक्रि० मन्द स्वरमें बोलना।
मिन्हा—वि० मुजरा किया हुआ। काटा हुआ।
मियान—पु० मध्य भाग। स्त्री० म्यान।
मियाना—पु० पालकी। बल्ली। गाँवके बीचवाले खेत। वि० मझोले आकारका।
मिरग—पु० मृग, हरिण (प० १६)।
मिरगी—स्त्री० एक रोग, अपस्मार।
मिरचा—पु० एक तिक्त फल।
मिरजई—स्त्री० कमरतक लम्बा पहनावा, बंडी।
मिरदंग—पु० एक तरहका ढोल।
मिरवना, मिलवना—सक्रि० मिलाना।
मिरिग—दे० 'मृग' (प० १६, ९३)।
मिरिच, मिर्च—स्त्री० तिक्त फलोंका एक वर्ग। काली मिर्च।
मिरियासि—स्त्री० बपौती, पैतृक सम्पत्ति (उदे० 'करट')।
मिलक—स्त्री० मिलकियत, जागीर।
मिलकना—सक्रि० जलाना 'तब फिरि जरनि भई नख सिखतें, दिया बाति जनु मिलकी।' सू० २०१
मिलनसार—वि० सबसे मेल रखनेवाला।
मिलना—अक्रि० भेंटना, भेंट होना, अंतर न रहना, मिश्रित होना, सम्मिलित होना, कुछ कुछ समान होना, पाया जाना। सक्रि० खूब दुहना।
मिलान—पु० तुलना, मेल, जाँच। पड़ाव (कबीर १९६) 'ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई।' प० ६१
मिलाना—सक्रि० भेंट कराना, मेल कराना, साथी बनाना, सम्मिलित या मिश्रित करना, जोड़ना, तुलना करना।
मिलाप—पु० भेंट, मेल, मित्रता, संयोग।
मिलाव—पु० मिलाप, मिलावट।
मिलावट—स्त्री० मिश्रणकी क्रिया या भाव। अच्छी चीज़में बुरी चीज़ मिलाना।
मिलिंद—पु० भौंरा, मधुप।
मिलिक—पु० देखो 'मिलक' (अ० ११४)।
मिलौनी—स्त्री० मिलावट। विवाहकी एक रस्म।
मिल्लत—स्त्री० मेलजोल। सम्प्रदाय, धर्म। फिरक़ा।
मिश्र—वि० संयुक्त, मिलाया हुआ, बड़ा।
मिश्रण—पु० मिलावट, मेल।
मिष—पु० बहाना, होड़। डाह। कपट।
मिष्ट—वि० मीठा।
मिस—पु० बहाना, छल, पाषंड।
मिसकीन, मिस्कीन—वि० ग़रीब, दीन, सीधा-सादा, बेचारा।
मिसकीनता—स्त्री० दरिद्रता, नम्रता।
मिसना—अक्रि० मला जाना। मिलना, मिश्रित होना।
मिसरा—पु० छन्दका चरण।
मिसरी—स्त्री० साफ करके जमायी हुई चीनी।
मिसाल—स्त्री० उदाहरण, नमूना। मसल। उपमा।
मिसिल—स्त्री० किसी मामले या कार्रवाईके काग़ज़ात। वि० मिस्ल, सदृश।
मिसी, मिस्सी—स्त्री० एक तरहका मंजन।
मिस्कला—दे० 'मस्कला'।
मिस्ल—वि० तुल्य, सदृश, मानिन्द।
मिहचना—सक्रि० मीचना, (नेत्र) बन्द करना।
मिहनत—स्त्री० परिश्रम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिहरारू, मिहरी—स्त्री० औरत, स्त्री 'ठाठ बनाइ धरयो मिहरी को है पूरब तें आगर।' स्वामी हरिदास।
मिहानी—स्त्री० मथानी।
मिहिर—पु० सूर्य, बादल, हवा, आक, चन्द्र।
मींगी—स्त्री० बीजका भीतरी अंश, गिरी।
मींजना—सक्रि० मलना, मसलना, 'हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मींजहिं हाथ।' रामा० ५१४ (उदे० 'खोरना')।
मींडक—दे० 'मेंढक'। '...मींडक सोवै साँप पहरिया।' कबीर ११३
मींडना—सक्रि० मसलना, मींजना (सू० २०२) 'मींडत हाथ सकल गोकुल जन बिरह बिकल बेहाल।' सूवे० २७० (अ० १०१)।
मीआद—स्त्री० अवधि, नियत काल।
मीच, मीचु—स्त्री० मृत्यु 'सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच।' रामा० ७। (उदे० 'कीच')।
मीचना—सक्रि० (नेत्र) बन्द करना।
मीज़ान—पु० (संख्याओंका) योग, तराजू।
मीठा—वि० सुस्वाद, मधुर, प्रिय, धीमा।
मीत—पु० मित्र, सखा।
मीन—स्त्री० मछली, एक राशि। मीन-मेष = आगा पीछा, हिचकिचाहट (प० ३१२)।
मीनकेतन,—मीनकेतु—पु० कामदेव।
मीनार—स्त्री० लाट, स्तंभ।
मीमांसा—स्त्री० दर्शन-शास्त्र-विशेष। विवेचन, निर्णय।
मीर—पु० सरदार, (उदे० 'तासीर'), सरदारका पुत्र। समुद्र, सीमा। पानी।
मीरमजलिस—पु० सभापति।
मुँगरा—पु०, मुँगरी—स्त्री० खूँटा गाड़ने इ० के लिये हथौड़ेके आकारका बना काठका औज़ार।
मुँगौछी—स्त्री० मूँगका पकवान 'भई मुँगौछी मरिचैं परी। कीन्ह मुँगौरा औ बहु बरी।' प० २७३
मुँगौरा—पु० मूँगकी पीठीकी पकौड़ी (उदे० 'मुँगौछी')।
मुँगौरी—स्त्री० दे० 'मुँगौरा'।
मुंचना—सक्रि० मुक्त करना, खोलना, छोड़ना 'मानहुँ मदन मिले चाहति है मुंचत मरुत समेत।' सू० ४०६
मुँज, मूँज—स्त्री० एक घास (मति० १७१)।
मुंड—पु० सिर, कटा हुआ सिर।
मुंडन—पु० एक संस्कार। उस्तुरेसे बाल बनवाना।
मुंडना—अक्रि० मूँडा जाना, ठगा जाना।
मुंडमाली—पु० शिव।
मुंडा—वि० मुँडे हुए सिरवाला। जिसके सींग न [निकले हों।
मुंडिया, मुंडो—पु० संन्यासी।
मुंडेरा—स्त्री० छतपरकी मेंढ़, दीवारका ऊपरी भाग। मेंढ़।
मुंतज़िम—पु० व्यवस्थापक। प्रबन्धक।
मुंदना—अक्रि० बन्द होना, छिपना (दास १५), ढँक जाना।
मुंदरी—स्त्री० अँगूठी (उदे० 'कनगुरिया')।
मुँह—पु० मुख, आनन, बदन, चेहरा, सिरा, छिद्र। साहस, ताब। —उतरना = उदास या सुस्त होना। —खोलना = बोलना, गाली देना। —चढ़ाना = उद्दण्ड बनाना। —चिढ़ाना = मुँह बनाकर नकल करना। —जुठारना,—जूठा करना, = नाममात्रको खाना। —देना = खाद्य या पेय वस्तुमें मुख डालना, ढीठ बनाना 'कबहूँ बालक मुँह न दीजिए मुँह न दीजिए नारि।' सू० १०४। —भरके = लबालब, यथेष्ट। —मारना = चुप कराना, मात करना, बढ़कर होना। —में पानी आना = कोई वस्तु पानेके लिए अत्यन्त इच्छुक होना, डाह होना। —में कालिख लगना या पुतना = कलंक लगना। —मोड़ना = इनकार करना, हराना, उपेक्षा करना।
मुँहअखरी—वि० जबानी।
मुँहछुट—वि० मुँहफट।
मुँहज़ोर—वि० बिगड़ैल, तेज, उद्दण्ड, (मति० २१०) 'ये मुँहजोर तुरंग लौं ऐंचत हूँ चलि जाहिं'। वि० २५२। बकबकिया।
मुँहदेखा—वि० सामनेका, बनावटी, ऊपरी।
मुँहफट—वि० बिना विचारे अंडबंड बोलनेवाला।
मुँहाचही—स्त्री० डींग मारना, बढ़ बढ़ कर बातें करना, 'मुहाँचही सेनापति कीन्ही सब्दासुर मन गर्व बढ़ायो।' सूवे० ५०। बोलचाल।
मुँहासा—पु० मुँहपरकी फुन्सी।
मुअत्तल—वि० जो अपने कामसे दंड-स्वरूप कुछ कालके लिये हटाया गया हो।
मुअना—दे० 'मुवना' 'हरि दरशनकी साध मुई।' सूवे० १८४ (रहीम १०१)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुआवज़ा—पु० बदला, बदलेमें दी गयी रक़म या चीज़।
मुकट—पु० मुकुट, ताज।
मुकतई, मुकति—स्त्री० मुक्ति, मोक्ष।
मुकता—पु० मोती। वि० बहुत 'मुकती साँठि गाँठि जो करै।' प० २०६
मुक़द्दमा, मुक़द्दमा—पु० दावा, अभियोग, झगड़ा।
मुकना—अक्रि० छूटना, समाप्त होना। पु० देखो 'मकुना'।
मुकरना—अक्रि० नकारना, नटना, इनकार करना। मुक्त होना।
मुकराना, मुकलाना—सक्रि० इनकार कराना। खोलना, छुड़ाना, 'जमके फंद काटि मुकराये, अभै अजात किये।' सू० २८२ (उदे० 'एक', 'खोंपा')।
मुक़ाबला—पु० मिलान, बराबरी, मुठभेड़, विरोध।
मुक़ाम—पु० पड़ाव, घर, स्थान। विराम, अवसर।
मुकियाना—सक्रि० मुक्कियाँ लगाना।
मुकुट पु० एक शिरोभूषण, ताज।
मुकुल, मुकुता—पु० मोती (उदे० 'कारा' प० २९७)।
मुकुताहल—पु० मोती 'हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा। चुनहिं रतन मुकुताहल हीरा।' प० ७२। कपूर।
मुकुर—पु० दर्पण, शीशा। कुम्हारके चाकका डंडा, बकुलवृक्ष।
मुकुल—पु० कली, बौर, देह।
मुकुलित—वि० अधखिला।
मुक्का पु० घूँसा।
मुक्की—स्त्री० मुक्के लगाकर की गयी मालिश। मुष्टियुद्ध।
मुक्त—वि० छूटा हुआ, क्षिप्त, भवबन्धनसे छूटा हुआ, स्वच्छन्द।
मुक्तकण्ठ—वि० स्पष्ट कहनेवाला। ज़ोरसे बोलनेवाला।
मुक्ता—पु०, स्त्री० मोती, कपूर, लवनी फल।
मुक्ताहल—पु० मुक्ताफल, मुक्ता।
मुक्ति—स्त्री० छुटकारा, मोक्ष, गति, उद्धार।
मुख—पु० मुँह, बदन, द्वार, छोर, आदि, ऊपरका या आगेका भाग।
मुखआगर—दे० 'मुखागर'। 'चारों बेद पढ़त मुख आगर।' सू० २७
मुखड़ा—पु० चेहरा, मुख, बदन।
मुखबिर—पु० भेदिया, जासूस।
मुखबंध—पु० भूमिका।
मुख़बिरी—स्त्री० दूसरेका भेद खोलनेका कार्य 'जूआ चोरी मुख़बिरी ब्याज घूस परनारि।' साखी १८८। जासूसी।
मुखभेड़—स्त्री० लड़ाई, सामना।
मुखर—वि० बकवादी, अप्रियवादी (रामा० १३५)।
मुखागर, मुखाग्र - वि० कण्ठस्थ। क्रिवि० ज़बानी 'कहेउ मुखागर मूढ़ सन...' रामा० ४४१
मुखाग्नि—स्त्री० अग्नि-संस्कारकी क्रिया। जंगलकी आग।
मुखापेक्षी—पु० परावलम्बी, आश्रित।
मुख़ालिफ़ वि० दुश्मन, विरोधी।
मुखिया—पु० नायक, प्रधान।
मुख़्तसर—वि० संक्षिप्त।
मुख्य—वि० प्रधान, बड़ा।
मुगदर—पु० देखो 'मुदगर'।
मुगलई, मुगलाई—वि० मुगलों जैसा। स्त्री० मुग़लपन।
मुगुध—दे० 'मुग्ध' (उदे० 'अँगोछना')।
मुग्ध—वि० मोहित, मूढ़, सुन्दर।
मुग्धा—स्त्री० यौवनप्राप्त सरला नायिका।
मुचकुंद—पु० एक पेड़।
मुचना—सक्रि० देखो 'मुंचना', 'गर्भ मुच्यो कोशल्या माता रामचन्द्र निधि आई।' सूबे० ३४
मुछंदर—पु० बड़ी मूछोंवाला, मूर्ख, बदसूरत।
मुजमिल—पु० जुमला, योग (सू० ११)। क्रिवि० कुल मिलाकर।
मुजरा—पु० किसी बड़े आदमीके यहाँ जाकर प्रणाम करना। काटी हुई रकम। वेश्याका नृत्यहीन गान।
मुजरिम—पु० अपराधी (अभियुक्त)।
मुटाना—अक्रि० मोटा या घमण्डी हो जाना
मुठभेड़, मुठभेरी—स्त्री० लड़ाई, टक्कर (रामा० २१२), सामना।
मुठिका—स्त्री० मुट्ठी, घूँसा (उदे० 'तरजना')।
मुठिया—स्त्री० कब्जा, बेंट।
मुठी—स्त्री० मुट्ठी।
मुठुकी—स्त्री० लकड़ीका एक खिलौना (उदे० 'घुनघुना')।
मुट्ठा—पु० मुट्ठी भर वस्तु, पुल्लिन्दा। बेंट।
मुट्ठी—पु० बँधी हथेली, मुक्का। लकड़ीका एक खिलौना। मुट्ठीमें = वशमें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुड़ना—अक्रि० फिरना, लौटना, लचकना, झुक जाना।
मुड़ला—वि० मुंडा, केशहीन सिरवाला (सू० २२५)।
मुड़वारी—स्त्री० सिरहाना, मुँडेरा।
मुड़हर—पु० सादीका वह भाग जो सिरपर हो 'मुख पखारि मुड़हर भिजै सीस सजल करहाइ।' वि० २७४
मुड़ाना—सक्रि० मुण्डन कराना।
मुडिया—पु० संन्यासी या सिरमुँडा व्यक्ति।
मुडेरा—दे० 'मुँडेरा'।
मुतअल्लिक़—वि० सम्बद्ध, शामिल। क्रिवि० बारेमें,
मुतफ़न्नी—वि० धूर्त्त, चालबाज़। [विषयमें
मुतबन्ना—पु० गोद्य पुत्र, गोद लिया हुआ लड़का।
मुतलक़—क्रिवि० बिलकुल, तनिक भी।
मुतसिरी—स्त्री० मोतियोंकी माला।
मुताबिक़—क्रिवि० अनुसार। वि० अनुकूल।
मुत्तालया—पु० पावना। मांग।
मुताह—पु० अस्थायी विवाह (मुसलमानोंमें)।
मुतिलाडू—पु० मोतीचूरका लड्डू।
मुतेहरा—पु० कलाईपर पहननेका एक गहना।
मुद्—पु० खुशी, हर्ष।
मुदगर—पु० लकड़ीकी मुँगरी, कसरत करनेकी मोटी वज़नी लकड़ी, मुगदर।
मुदर्रिस—पु० अध्यापक।
मुदवंत—वि० हर्षयुक्त, प्रफुल्ल (रघु० ७)।
मुदा—स्त्री० खुशी। अ० मतलब यह कि, लेकिन।
मुदाम—क्रिवि० निरन्तर, सर्वदा।
मुदामी—वि० हमेशा रहने या होनेवाला।
मुदित—वि० प्रसन्न, खुश।
मुदिर—पु० मेघ, मेंढक 'कहै मतिराम दीने दीरघ दुरद वृन्द मुदिरसे मेदुर मुदित मतवारे हैं।' ललित० ६२
मुद्दई—पु० वादी, दावेदार, शत्रु।
मुद्दत—स्त्री० मीयाद, चिरकाल।
मुद्दालेह—पु० प्रतिवादी।
मुध—वि० मुग्ध, आसक्त, मूढ़।
मुद्रण—पु० छपाई, अंकित करनेकी क्रिया।
मुद्रा—स्त्री० छाप, अँगूठी, मोहर, सिक्का, अंगादिकी स्थिति, मुखाकृति, साधुओंके पहननेका एक प्रकारका कुण्डल 'मुद्रा श्रवन कण्ठ जपमाला।' ः० ५७ (उदे० 'आधारी')।
मुद्रिक, मुद्रिका—स्त्री० अँगूठी, कुशकी पैंती। सिक्का।
मुद्रित—वि० छपा हुआ, बन्द किया हुआ।
मुधा—क्रिवि० नाहक, व्यर्थ। पु० मिथ्या। वि० मिथ्या, [व्यर्थका।
मुनक्का—पु० बड़ी किशमिश, दाख।
मुनादी—स्त्री० ढिंढोरा, घोषणा।
मुनाफ़ा—पु० लाभ।
मुनारा—पु० लाट, मीनार 'मुल्ला मुनारे क्या चढ़हि साईं न बहरा होइ।' कबीर २५८ (रघु० ९५)।
मुनासिब—वि० ठीक, उचित। [† संख्या।
मुनि—पु० मननशील व्यक्ति। ऋषि, तपस्वी। सातकी †
मुनियाँ—पु० एक धान। स्त्री० एक छोटी चिड़िया।
मुनीब, मुनीम—पु० हिसाब लिखनेवाला, नायब।
मुफ़लिस—वि० निर्धन।
मुफ़ीद—वि० लाभदायक।
मुफ़्त—वि० बिना मूल्यका।
मुबारक—वि० कल्याणकारी, शुभ।
मुबारकबाद—पु० बधाई
मुबारकबादी—स्त्री० बधाई, बधाई देनेकी रस्म।
मुमकिन—वि० संभव।
मुमुक्षु—वि० मुक्ति चाहनेवाला।
मुमूर्षु—वि० मरणासन्न।
मुयस्सर—वि० सुलभ, प्राप्त।
मुरंडा, मुरंदा—पु० भूने गेहूँ और गुड़का लड्डू। लड्डू (प० १३५,२७४)।
मुरकना—अक्रि० लौटना, (उदे० 'खम'), घूमना, मुड़ना, मोच खाना, 'करी सिया यह कह लरिकाई। मुरकी होय न मृदुल कलाई।' राम रसायन। नष्ट होना। 'मुरकि मुरकि चितवनि चित चोरैं।' ललित कि०।
मुफ़स्सल, मुफ़स्सिल—वि० विस्तृत, ब्योरेवार। पु० किसी केन्द्रस्थानके आस पासके अन्य नगर आदि, प्रान्तके साधारण ज़िले।
मुरकाना—सक्रि० घुमा देना, मोच डालना (छन्न ५१)।
मुरखाई—स्त्री० मूर्खता।
मुरगा—पु० एक पक्षी, कुक्कुट।
मुरचंग—पु० एक बाजा (रघु० २९)।
मुरचा—पु० ज़ंग।
मुरछना, मुरछाना—अक्रि० मूर्छित होना (उदे० 'दियारा')। लस्त पड़ना (प० ५६, विद्या० ७५)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुरछल—पु० मोरपंखका चँवर (उदे० 'जरौट')।
मुरछा—स्त्री० बेहोशी (उदे० 'निबुकना')।
मुरछायंत, मुरछित—वि० बेहोश, बेसुध (उदे० 'झइँ')।
मुरज—पु० मृदंग 'बाजत पनव निशान पंच विधि. रुंज मुरज सहनाई।' सूबे ४६
मुरझना—अक्रि० कुम्हलाना, 'ज्यों ज्यों छवि अधिकाति है, नवल बाल मुख इन्दु। त्यों त्यों मुरझत सौतिको अमल बदन अरविन्दु।' मति० १८५
मुरझाना—अक्रि० कुम्हलाना, कान्तिहीन होना।
मुरद—पु० श्रीकृष्ण।
मुरदा—पु० मृतक, शव। वि० मृत, निःशक्त।
मुरदार—वि० मृत, कमज़ोर। पु० मरा हुआ पशु।
मुरदासंख, मुरदासन—पु० औषध-विशेष।
मुरधर—पु० मारवाड़ देश।
मुरना—अक्रि० देखो 'मुड़ना' 'जुरि न मुरे संग्राम लोकको लीक न लोपी।' राम० ९; 'मुरयो न मनु मुरवानु चलि भौ चूरनु चपि चूरु।' वि० ८८। (उदे० 'पछरा')। सक्रि० मोड़ना 'इत उत अंग मुरति झुक झोरति···।' सू० ६७
मुरपरैना—पु० फेरीवालेके सिरका बोझ।
मुरब्बा—पु० फलोंका पाक जो चाशनीमें तैयार करके रखा जाता है।
मुररिया—स्त्री० मरोड़, ऐंठन।
मुरलिका, मुरलिया, मुरली—स्त्री० बाँसुरी।
मुरवा—पु० पादमूल, पैरकी गाँठ (दे० 'मुरना')।
मुरवी—स्त्री० चिल्ला, प्रत्यंचा।
मुरशिद, मुरसिद, मुर्शिद—पु० धर्मगुरु।
मुरहा—पु० मुरारि, श्रीकृष्ण। वि० दुष्ट, नटखट।
मुरहारि—पु० श्रीकृष्ण।
मुराड़ा—पु० दहकती हुई लकड़ी 'हम घर जाल्या आपना लिया मुराड़ा हाथि।' कबीर ६७
मुराद—स्त्री० आशा, कामना। अभिप्राय।
मुराना—सक्रि० चबाना। मोड़ना।
मुरार—पु० श्रीकृष्ण। कमलनाल।
मुरारि—पु० श्रीकृष्ण।
मुरासा—पु० कर्णफूल 'लसै मुरासा तियस्रवन यौं मुकुतनि दुति पाइ।' वि० २७६
मुरीद—पु० चेला, अनुगामी।
मुरुख—वि० मूर्ख, नासमझ।
मुरुछना—अक्रि० मूर्च्छित होना 'परी मुरुछि धरनी सुकुमारी।' सूबे० २१४
मुरुझना—अक्रि० मुरझाना, कुम्हलाना।
मुरेठा—पु० पगड़ी।
मुरेरना—सक्रि० ऐंठना, घुमाना, मसलना।
मुरौअत, मुरौवत—स्त्री० संकोच, सौजन्य।
मुर्चा—दे० 'मुरचा'।
मुर्रा—पु०, मुर्री—स्त्री० ऐंठन, मरोड़।
मुर्वी—स्त्री० चिल्ला।
मुलक—दे० 'मुल्क' (उदे० 'गदेला')।
मुलकना—अक्रि० पुलकित होना, मुसकराना। मलकना 'मुलकि कँपति पुलकति पलकु पसीजत जाति।' वि० ९९
मुलज़िम—पु० अभियुक्त।
मुलतवी, मुल्तवी—वि० स्थगित, रोका या उठाया हुआ।
मुलना—पु० मौलवी 'मुलना तें मुरगा भला सहर जगावे सुत्ता।' कबीर (उदे० 'गुदारना')।
मुलम्मा—पु० सोने चाँदीका पानी या पत्तर जो किसी वस्तुपर चढ़ाया जाय, पानी, कलई।
मुलहा—वि० बदमाश। मूलनक्षत्रमें उत्पन्न।
मुलाँ—पु० मौलवी।
मुलाक़ात—स्त्री० मिलाप, भेंट। परिचय।
मुलाज़िम—पु० नौकर, कर्मचारी।
मुलाम, मुलायम—वि० कोमल, ढीला।
मुलाहज़ा—पु० संकोच। निरीक्षण। रियायत।
मुलुक—पु० देश, जात
मुल्की—वि० शासन या राज्य प्रबन्ध सम्बन्धी।
मुल्ला—पु० मौलवी।
मुवना—अक्रि० मरना, दुःख उठाना, 'जननी कत भार मुई दसमास।' कविता०।
मुवाना—सक्रि० मार डालना।
मुशकी—वि० कस्तूरी युक्त, हलके स्याह रंगका। पु० स्याह घोड़ा।
मुशली—पु० मूशलधारी बलराम।
मुश्क—पु० कस्तूरी। भुजा।
मुश्किल—वि० कठिन। स्त्री० कठिनाई, संकट।
मुश्त—पु० मुट्ठी। एक मुश्त = एक ही बार में (रुपयेके लेनदेनके सम्बन्धमें)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुश्ताक़—वि० इच्छुक, चाहनेवाला।
मुषुर—स्त्री० भनभनाहट, गूँज।
मुष्टि—स्त्री० मुट्ठी, घूँसा। बेंट। एक तौल। एक मछ। वि० मष्ट, मौन (?) 'संत मिलै कछु कहिये कहिये। मिलै असंत मुष्टि करि रहियेष' कबीर १०९
मुष्टिक—पु० घूँसा। चार अंगुल। कंसके दरबारका एक मल्ल, मुष्टि। सुनार।
मुष्टिका—स्त्री० घूँसा। मुट्ठी।
मुसकनि,-कनिया—स्त्री० मुसकराहट (उदे० 'बट')।
मुसकराना, मुसकाना—अक्रि० मन्द मन्द हँसना।
मुसकान,-कानि, मुसकुराहट—स्त्री० मंद हँसी।
मुसकाना,-क्याना—अक्रि० मुसकराना (उदे० 'पौरि')।
मुसजर—पु० एक तरहका कपड़ा।
मुसटी—स्त्री० चुहिया, छोटा चूहा।
मुसना—अक्रि० छीना या लूटा जाना, चुराया जाना। सक्रि० देखो 'मूसना' '...चोर मुसै घर जाई।' कबीर ९६, (उदे० 'पहराइत')।
मुसमुंद, मुसमुंध—वि० नष्ट। पु० नाश।
मुसम्मात—वि० नामकी, नामधारिणी। स्त्री० औरत।
मुसल—पु० मूसल (उदे० 'पट्टिश'), धान कूटनेका डंडा। मूर्ख 'चन्द्र सो जो बरनत रामचन्द्रकी दोहाई सोई मतिमंद कवि केसव मुसलसो।' राम० २१३
मुसलधार—क्रिवि० बड़े ज़ोरसे (वर्षा)।
मुसलमान—पु० इस्लाम धर्मका अनुयायी।
मुसली—पु० हलधर, बलराम। एक वनौषधि।
मुसल्लम—वि० समूचा। पु० मुसलमान।
मुसल्ला—पु० मुसलमान। नमाज़का आसन।
मुसव्विर—पु० चित्रकार।
मुसाफ़िर—पु० पथिक, बटोही।
मुसाहब—पु० राजा आदिके साथ उठने बैठनेवाला, पार्श्ववर्ती (मुद्रा० ४८)।
मुसीबत—स्त्री० विपत्ति, दुःख।
मुस्किल—दे० 'मुश्किल',
मुस्की—स्त्री० मुसकराहट। वि० जिसमें कस्तूरी मिली हो। हल्का काला। पु० काले रंगका घोड़ा।
मुस्क्यान—स्त्री० मंद हँसी।
मुस्टंडा—वि० हृष्ट पुष्ट, उद्दण्ड।
मुस्तक़िल—वि० दृढ़, स्थिर, स्थायी।
मुस्तहक़—वि० अधिकारी, पात्र। हक़दार।
मुस्तैद—वि० तैयार, तेज़।
मुहकम—वि० मज़बूत, पक्का।
मुहकमा—पु० विभाग, सरिश्ता।
मुहताज—वि० कंगाल, अनाथ, आश्रित। अपेक्षा [रखनेवाला।
मुहब्बत—स्त्री० प्रेम, मैत्री।
मुहर—स्त्री० सोनेका सिक्का, छाप।
मुहरा—पु० देखो 'मोहरा'।
मुहर्रमी—वि० मुहर्रम सम्बन्धी। शोक-सूचक, उदास।
मुहर्रिर—पु० लेखक।
मुहलत—स्त्री० अवकाश। अवधि।
मुहसिल—पु० पैदल सैनिक। वि० वसूल करनेवाला।
मुहाल—वि० असंभव। कठिन।
मुहाला—पु० हाथीके दाँतपरकी चूड़ी।
मुहावरा—पु० रूढ अर्थमें प्रयुक्त शब्द-योजना। रोज़मर्रा, बोल चाल। अभ्यास।
मुहासबा,-सिबा—पु० लेखा (उदे० 'दस्तक')।
मुहिम, मुहीम—स्त्री० चढ़ाई, युद्ध, कठिन कार्य।
मुहूर्त्त—पु० देखो 'महूरत'।
मूँग—स्त्री० एक अनाज।
मूँगफली—स्त्री० एक खाद्य पदार्थ और उसका पौधा,
मूँगा—पु० विद्रुम, प्रवाल। [चीनिया बादाम।
मूँछ—स्त्री० ऊपरी ओंठ परके बाल।
मूँज—स्त्री० एक पवित्र घास।
मूँड—पु० सिर (उदे० 'फेंकरना')। —चढ़ाना = ढीठ बनाना।
मूँड़कटा—वि० दूसरेकी हानि करनेवाला।
मूँड़ना—सक्रि० मुंडन करना, चेला करना, ठगना।
मूँदना—सक्रि० ढाँकना, बन्द करना (उदे० 'अटपटाना'), मींचना। अक्रि० अस्त होना, छिपना (उदे० 'खुमान')।
मूँदर—स्त्री० मुँदरी, अँगूठी (उदे० 'प्रतिबिंबना')।
मूक—वि० गूँगा, विवश।
मूकना—सक्रि० मुक्त करना, अलग करना 'परेहू चूक मूकिये ना।' कविता० २६१
मूका—पु० घूँसा, मुट्ठी 'मूकन मारत आवई नींद बिचारी दौर।' रहीम १६। छोटा छेद या झरोखा (कबीर २९२)।
मूखना—सक्रि० चुरा लेना, लूटना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूचना—सक्रि० मुक्त करना, छोड़ना।
मूठ—स्त्री० बँट, मुठिया। मुट्ठी, मुट्ठी भर वस्तु। एक प्रकारका मारण-प्रयोग।
मूठना—अक्रि० न रह जाना, विनष्ट होना।
मूठि, मूठी—स्त्री० मुट्ठी (उदे० 'अगूठना'), घूंसा [(रघु० २२२)
मूड़—पु० सिर।
मूढ़—वि० मूर्ख, नासमझ।
मूत—पु० पेशाब।
मूतना—अक्रि० लघुशंका करना।
मूर—पु० जड़, असल, मूलधन (उदे० 'निबेरना'), मूलनक्षत्र। वि० बूटी, ओषधि 'कह रघुनाथ मूरके कारन मोको लैन पठाये।' सूरा० ७२
मूरख—वि० मूर्ख, बेवकूफ़।
मूरखताई—स्त्री० मूर्खता।
मूरछना—अक्रि० बेसुध होना। स्त्री० मूर्छा।
मूरछा—स्त्री० बेहोशी।
मूरत, मूरति—स्त्री० प्रतिमा, आकृति, सूरत, चित्र।
मूरतिवन्त—वि० मूर्त्तिमान्, शरीरयुक्त।
मूरध—पु० सिर।
मूरि, मूरी—स्त्री० जड़, बूटी (सू० ४१)।
मूरुख, मूर्ख—वि० नासमझ, मूढ़।
मूर्छा—स्त्री० बेहोशी।
मूर्त्त—वि० आकारवाला। ठोस।
मूर्त्ति—स्त्री० देखो 'मूरत'।
मूर्द्ध, मूर्द्धा—पु० सिर।
मूल—पु० एक नक्षत्र, जड़, नींव, असल धन, आदि कारण, आरंभ। वि० मुख्य।
मूलक—पु० मूली 'सकउँ मेरु मूलक इव तोरी।' रामा०
मूलिका—स्त्री० जड़ी, बूटी। [१३८। एक विष।
मूली—स्त्री० एक जड़, मुरई। जड़ी।
मूल्य—पु० मोल, दाम, महत्त्व।
मूष, मूषक, मूषिक—पु० चूहा, मूसा।
मूसना—सक्रि० चुरा लेना, लूटना, ठगना (सू० ३३) 'जात कहा बलि बाँह छुड़ाये मूसे मन सम्पति सब मेरी।' सूबे० १८८
मूसर, मूसल—पु० चावल आदि कूटनेका डंडा, बलदेवजीका अस्त्र।
मूसलचंद—पु० हृष्टपुष्ट बेकार मनुष्य। मूर्ख।
मूसलधार—क्रिवि० बड़े ज़ोरसे (वर्षा)।
मूसा—पु० चूहा (उदे० 'जागा')।
मृग—पु० हरिण, कुरंग। पशु। मार्गशीर्ष।
मृगछाला—पु० हिरनका चमड़ा।
मृगज—पु० मृगशिशु, कस्तूरी।
मृगजल—पु०,-तृष्णा,-मरीचिका—स्त्री० जलसी प्रतीत होनेवाली वायुकी लहरें, रेतीली भूमिपर जलकी [भ्रान्ति।
मृगधर, मृगमित्र—पु० चन्द्रमा।
मृगन—पु० खोज (मति० १७५)।
मृगनाथ, मृगपति, मृगराज—पु० सिंह।
मृगनाभि, मृगनाभिजा, मृगमदा—स्त्री० कस्तूरी।
मृगमेद, मृगरोचन—पु० कस्तूरी।
मृगया—स्त्री० आखेट, शिकार।
मृगलांछन, मृगांक—पु० चन्द्रमा।
मृगिन—स्त्री० हरिणी।
मृगी—स्त्री० हरिणी। मिरगी रोग। कस्तूरी।
मृगेंद्र, मृगेश—पु० सिंह।
मृड़ा, मृड़ानी—स्त्री० भवानी, दुर्गा।
मृणाल, मृणाली—पु० पद्मनाल, मुरार।
मृणालिनी—स्त्री० कमलिनी।
मृत—वि० मरा हुआ।
मृतकंबल—पु० कफ़न।
मृतक—पु० मरा हुआ व्यक्ति।
मृतजीवनी,-संजीवनी—स्त्री० एक विद्या, एक बूटी।
मृत्तिका—स्त्री० मिट्टी।
मृत्यु—स्त्री० मौत, यमराज।
मृथा—क्रिवि० नाहक़, व्यर्थ।
मृदंग—पु० ढोलकी तरहका बाजा।
मृदु, मृदुल—वि० कोमल, मंद, सुकुमार।
मृदुलाई—स्त्री० कोमलता, दयालुता 'सिव अज पूज्य चरन रघुराई। मोपर कृपा परम मृदुलाई।'
मृनाल—पु० पद्मनाल, कमलकी डंडी। [रामा० ६१४
मृषा—वि० झूठ। अ० व्यर्थ।
मेंगनी—स्त्री० गोलियोंके आकारवाली पशुओंकी विष्टा (बकरी इ०), लेंडी।
मेंड—स्त्री० बाँध, घेरा (प० ३१९)।
मेंड़राना—अक्रि० मँडराना, चक्कर लगाना 'राजपंखि तेहिपर मेंडराहीं।' प० ६७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेंढक—पु० दादुर।
मेकलकन्या,-सुता—स्त्री० नर्मदा नदी।
मेख—स्त्री० खूँटा, कील (उदे० 'दमरी', रहीम १६) एक राशि, मेढ़।
मेखल, मेखला—स्त्री० करधनी (प० ५७)। पहाड़का बिचला हिस्सा। होमकुंडका ऊपरी घेरा।
मेखली—स्त्री० करधनी। साधुओंका वस्त्रविशेष। (उदे० 'आधारी', भ्र० २५)।
मेगज़ीन—पु० बारूदखाना।
मेघ—पु० बादल। [† मेघगर्जन।
मेघडंबर—पु० बड़ा शामियाना, एक प्रकारका छत्र। †
मेघवाई, मेघावरि—स्त्री० मेघावली, बादलोंकी पंक्ति
मेघवाहन—पु० इन्द्र। [(रघु० २०३)
मेघसार—पु० कपूर।
मेचक—वि० कृष्ण वर्णका, श्याम (भ्र० १२२, मति० २३१)। पु० अँधेरा, धूम्र, बादल।
मेचकता, मेचकताई—स्त्री० श्यामता 'कह प्रभु ससि महँ मेचकताई। कहहु काह निज निज मत भाई।'
मेज़बान—पु० आतिथ्य करनेवाला। [रामा० ४५५।
मेजा—पु० मेंढ़क (उदे० 'गदेजा')।
मेटक, मेटनहार—पु० मेटनेवाला, तोड़नेवाला।
मेटना—सक्रि० मिटाना, (उदे० 'पुरबिला'), पोंछ डालना, दूर करना (उदे० 'कहल', 'गारी')।
मेटा—पु० एक प्रकारकी हँड़िया (उदे० 'गुरंब')।
मेठ—पु० हाथीवान। कुलियोंका सरदार।
मेड—स्त्री० देखो 'मेंड' (प० २४०)।
मेडराना—अक्रि० देखो 'मेंडराना'।
मेड़िया—स्त्री० मवैया, कुटिया।
मेढा—पु० एक पशु, मेढ़ा।
मेढ़ियाँ—स्त्री० मढ़ी, घर (उदे० 'उसारि')।
मेढ़ी—स्त्री० तीन लड़ोंकी चोटी 'मेढी लटकन मनि-कनक-रचित, बाल-भूषन बनाइ आछे अंग अंग ठये हैं।' गीता० २८० (उदे० 'झंडूला')।
मेथी—स्त्री० एक साग (उदे० 'बघार')।
मेथौरी—स्त्री० मेथीका साग मिलाकर बनायी हुई बरी 'भई मेथौरी सिरका परा।' प० २०३
मेद—पु० चरबी, मज्जा, मोटा होनेका रोग, कस्तूरी, (उदे० 'गौरा', 'जवादि')।
मेदा—पु० एक सुगंधित जड़। आमाशय, पेट।
मेदिनी—स्त्री० पृथ्वी।
मेधा—स्त्री० धारणा शक्ति। बुद्धि, ज़ेहन।
मेधावी—वि० बुद्धिमान्, चतुर। पु० तोता।
मेना, मेयना—सक्रि० मोयन डालना।
मेमना—पु० बकरी या भेड़का बच्चा। घोड़ेका एक भेद।
मेमार—पु० राज, मकान बनानेवाला।
मेर—पु० देखो 'मेल' (प० २१०)। देखो 'मेह'।
मेरवना—सक्रि० मिलाना (उदे० 'टूट')। जुड़वाना, भेंट कराना 'बर सों जोग मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि।' प० ८९
मेरा—पु० मेला, भीड़।
मेराउ, मेराव—पु० मिलाप, भेंट 'गहन छूट दिनिअर कर, ससिसों भएउ मेराउ।' प०३२४ (उदे०'बिछोवना')।
मेरी—स्त्री० घमण्ड, ममत्व।
मेरु—पु० एक पर्वत। जप-मालाके बीचवाला दाना।
मेरुदंड—पु० रीढ़।
मेल—पु० मिलाप, मित्रता, सुलह, संगति, अनुकूलता, प्रकार, बराबरी।
मेलना—सक्रि० मिलाना, डालना, (उदे० 'नबेला') 'कर गहि पग अँगुठा मुख मेलत।' सू० ४९; । छोड़ना, चलाना, (उदे० 'झेलना') 'जापै मेलत सूल बह सुनिये त्रिभुवनराय।' के० ३१२। पहनाना 'मेली कंठ सुमनकी माला।' रामा० ३९९ दबाना, ढकेलना, 'तुरत बिभीषन पाछे मेला' रामा० ५०८। अक्रि० जमा होना, पहुँचना '...गढतर छाँदि अनत होइ मेलहिं।' प० १०१; 'महादेव मढ़ मेला आई।' प० ८३१
मेला—पु० उत्सवादिके लिए लोगोंका जमाव, भीड़।
मेलान—पु० ठहरना, पड़ाव, डेरा डालना 'सागर तीर मेलान पुनि करिहैं रघुकुल नाह।' रामा० ३४०
मेव—पु० एक लुटेरी जातिके लोग।
मेवा—पु० बादाम आदि सूखे फल। फल।
मेवाटी—स्त्री० एक तरहका मेवायुक्त पकवान।
मेवासा—पु० मवासा। गढ़, घर।
मेवासी—पु० गढ़ीमें रहनेवाला, गृहस्वामी (साखी१३९)।
मेष—पु० एक राशि, मेढ़। मेष करना = भागना पीछा करना (सूबे० २५७)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेहँदी—स्त्री० एक झाड़ी जिसकी पत्ती पीसकर स्त्रियाँ हाँथ पाँवमें लगाती हैं।
मेह—पु० मेघ (उदे० 'निझरना'), वर्षा, प्रमेह रोग।
मेहतर—पु० भंगी।
मेहनत—स्त्री० परिश्रम।
मेहमान—पु० अतिथि।
मेहमानी—स्त्री० पहुनाई, आतिथ्य।—करना = सजा देना।
मेहर, मेहरबानी—स्त्री० कृपा, दया।
मेहराब—पु० द्वार इ० के ऊपरका अर्द्धवृत्ताकार भाग।
मेहरारू, मेहरी—स्त्री० स्त्री, पत्नी।
मैं—सर्व० वक्ता द्वारा अपने लिए प्रयुक्त शब्द। स्वयं।
मै—प्रत्य० युक्त, निर्मित। [अ० में।
मैका—पु० नैहर।
मैगल—पु० मतवाला हाथी (कबीर २०) 'मेरे जान गज्जो चाहत हौ, फेरिकै मैगल भातो।' अ० ३४
मैजल—स्त्री० दिन भरकी यात्रा, यात्रा।
मैड—स्त्री० देखो 'मेंड'। प्रतिष्ठा 'मैड बुंदेलखंडकी राखी।' छत्र० ३४
मैथिली—स्त्री० सीता।
मैथुन—पु० स्त्री-संसर्ग।
मैदा—पु० खूब महीन आटा।
मैदान—पु० खुली हुई विस्तृत समभूमि। युद्ध या खेल इ० की जगह (उदे० 'कुहादा')।—करना = युद्ध करना।
मैन—पु० कामदेव। मोम। 'मैन तुरंग चढ़े पावक बिच, नाहीं पिघरि परेंगे।' नागरी० (वैस० १०), मोयन।
मैना—पु० एक जाति, 'मीना'। स्त्री० सारिका, पार्वती-जीकी माता।
मैमन्त—वि० मतवाला 'देखि कटक औ मैमँत हाथी।' प० ११२
मैमत—स्त्री० ममता (अ० १३५)।
मैया—स्त्री० माता (उदे० 'ओग')।
मैर—स्त्री० सांपके ज़हरकी लहर।
मैल—पु० धूल, कीट आदि, मलिनता, दोष, बुराई।
मैला—वि० गंदा, मलिन। पु० विष्टा।
मों—अ० में।
मोंगरा—पु० बेलाका पौधा या फूल। मुद्गर, लकड़ीका
मोंछ—स्त्री० देखो 'मूँछ'। [हथौड़ा।
मोंढ़ा—पु० बाँस, बेत इ० का बना हुआ तिपाई सरीखा आसन। कंधा।
मो—सर्व० मेरा।
मोकना—सक्रि० मुक्त करना, छोड़ना, फेंकना 'मोक्यो तहीं जोर नाराच मोक्यो।' के० ३२८
मोकल—वि० मुक्त, स्वच्छन्द।
मोख, मोक्ष—पु० मुक्ति, उद्धार (उदे० 'निहचै'), मृत्यु।
मोखा—पु० दीवारका छेद या झरोखा (गीता० ३८२), ताख।
मोगरा—पु० देखो 'मोंगरा' (उदे० 'कटरा')।
मोघ—वि० व्यर्थ।
मोच—स्त्री० नसका अपने स्थानसे हट जाना, मुरकना।
मोचना—सक्रि० मुक्त करना, गिराना 'भये अरुन बिकाल कमल दल लोचन मोचत नीर।' सू० ३९
मोची—पु० जूता बनानेवाला।
मोच्छ, मोछ—पु० मोक्ष, मुक्ति (प० २४३)।
मोज़ा—पु० पायताबा।
मोट—स्त्री० गठरी 'मीन इन्द्रिहिं अतिहि काटत, मोट अघ सिर भार।' सू० ६, 'जोग मोट दासी सिर दीजै।' भ्र० ७३। पु० चरसा। वि० मोटा, घटिया।
मोटरी—स्त्री० गठरी।
मोटा—वि० स्थूल, हृष्टपुष्ट, भद्दा, घटिया, भारी, घमंडी।
मोटाई—स्त्री० स्थूलता, गर्व, शरारत।
मोटाना—अक्रि० मोटा होना, घमंडी होना।
मोटिया—पु० कुली। एक तरहका मोटा कपड़ा, गज़ी।
मोठस—वि० चुप।
मोड़—स्त्री० वह स्थान जहाँ रास्ता मुड़ा हो, नुक्कड़। मुड़नेकी क्रिया या भाव।
मोड़ना—सक्रि० घुमाना, फेरना, ऐंठना।
मोतबर—वि० विश्वसनीय।
मोतिया—पु० एक तरहका बेला। मोती-संबंधी।
मोतियाबिंद—पु० आँखका एक रोग।
मोती—पु० मुक्ता, मौक्तिक (उदे० 'पुहना')। स्त्री० मोतीयुक्त बाली।
मोतीचूर—पु० बूँदीका लड्डू।
मोतीझरा,-झिरा—पु० एक तरहका रोग जिसमें बुखारके साथ शरीरमें छोटे छोटे दाने निकल आते हैं।
मोतीबेल—स्त्री० मोतिया नामक बेल।
मोतीसिरी—स्त्री० मोतियोंकी माला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मोथरा—वि० कुंठित ।
मोथा—पु० एक प्रकारकी घास या उसकी जड़ ।
मोद—पु० हर्ष, (उदे० 'ऐंचना) । सुगंध ।
मोदक—पु० लड्डू ।
मोदकी—स्त्री० एक तरहका मुगदर ।
मोदना—अक्रि० मुदित होना । सुगंध फैलाना 'फूलि फूलि तरु फूल बढ़ावत । मोदत महामोद उपजावत ।' राम० १८
मोदी—पु० आटा दाल इ० बेचनेवाला बनिया (सू०१०) ।
मोधुक—पु० मधुमा ।
मोन-पु०, मोनिया—स्त्री० पिटारा, डब्बा 'कुंदन बेल साजि जनु कूँदे । अमृत रतन मोन दुइ मूँदे ।' प० ५०
मोना—पु० देखो 'मोन' । सक्रि० भिगोना ।
मोम—पु० एक पदार्थ जिससे मधु मक्खियोंका छत्ता बना रहता है ।
मोयन—पु० सानते समय आटेमें घीका मेल ।
मोर—सर्व० मेरा । पु० मयूर, बरही ।
मोरखंदा,-चंद्रिका—स्त्री० मोरपंख परकी चंद्राकार बूटी ।
मोरचा, मोर्चा—पु० परिखा, सुरक्षित स्थान जहाँसे कड़ाई की जाती है । ज़ंग, मैल 'जनम जनमका मोरचा पलमें डारै धोय ।' साखी १०
मोरछल, मोरछाँह—पु० मोरपंखका चँवर 'बाँधे मोर छाँह सिर सारहिं ।' प० २५२
मोरन—स्त्री० सिखरन । मोड़ना ।
मोरना—सक्रि० मोड़ना, घुमाना, फेरना, (सू० ९६) । बिलोवना, मक्खन निकालना ।
मोरपंख,-पखा—पु० मोरका पंख, मोरपंखकी कलगी ।
मोरपखौआ—पु० देखो 'मोरपंख' (भ्र० ९०) ।
मोरवा – पु० मोर, कलापी ।
मोराना—सक्रि० घुमाना, फिराना ।
मोरी—स्त्री० गन्दे पानीकी नाली । मयूरी । मोहरी । बागडोर 'आयौ चोर तुरंग मुसि ले गयौ मोरी राखत मुगध फिरै ।' कबीर १७०
मोल—पु० मूल्य, कीमत । दाम घटा बढ़ाकर कहना ।
मोलना—पु० मौलवी ।
मोवना—सक्रि० भिगोना ।
मोष—पु० मोक्ष, 'मोहूँ दीजे मोष, ज्यों अनेक अधमन दयो ।' वि० १०९ । छुटकारा 'भये संकुचित कमल निसि मधुकर लह्यो न मोष ।' दास १२७
मोह—पु० दुलार, प्रेम, भ्रम, मूर्छा, अज्ञान, दुःख ।
मोहताज—वि० देखो 'मुहताज' ।
मोहन—पु० मोहनेवाला व्यक्ति, श्रीकृष्ण । एक अस्त्र । एक तांत्रिक प्रयोग ।
मोहनमाला—स्त्री० सोनेके दानोंकी माला ।
मोहना—सक्रि० लुभाना (उदे० 'पलिका'), मन हरना, धोखा देना, छलना 'राक्षस कपटबेस तहँ सोहा । मायापति दूतहिं चह मोहा ।' रामा० ४८२ । निष्फल करना 'सीतहिं देकै रिपुहिं संहारौ । मोहति है विक्रम बल भारो ।' राम० ४७२ । अक्रि० मुग्ध होना (उदे० 'पुष्पवती', 'निहारना') ।
मोहनी—स्त्री० रूपवती स्त्री । मोहकशक्ति, माया, जादू । वि० स्त्री० मोहनेवाली ।
मोहफ़िल—स्त्री० महफ़िल, मजलिस, सभा ।
मोहब्बत—स्त्री० प्रेम ।
मोहर—स्त्री० देखो 'मुहर' ।
मोहरा—पु० सेना या अन्य वस्तुका अगला भाग, सेनाकी गति, तनी, छेद, शतरंजकी गोटी (प० २८२) । [जहरमोहरा ।
मोहर्रिर—पु० लेखक ।
मोहार—पु० मोहरा, दरवाज़ा, बड़ी अधुमक्खी ।
मोहिं—सर्व० मुझे ।
मोहिनी—देखो 'मोहनी' ।
मौंगा—वि० चुप, मौन 'सुनि खग कहत अम्ब मौंगी रहु समुझि प्रेमपथ न्यारो ।' गीता० ३६०
मौंजी—स्त्री० मूँजकी बनी करधनी ।
मौंडा—पु० लड़का (व्रज० २८८) ।
मौक़ा—पु० अवसर, देश, घटनास्थल ।
मौकूफ़—वि० बरखास्त । रद्द, मुल्तवी । निर्भर ।
मौक्तिक—पु० मोती ।
मौख—पु० एक मसाला ।
मौखिक—वि० मुख सम्बन्धी, ज़बानी ।
मौज—स्त्री० लहर, 'उमड़ी दरिया कैसी मौजैं ।' छत्र० ३२ । मनकी लहर, मजा, उमंगसे दिया हुआ दान 'जाँचि निराखर हू चलै लै लाखनकी मौज ।' वि० ३८ । प्रसन्नता (भू० ६०) ।
मौज़ा—पु० ग्राम ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मौजूद—वि० हाज़िर, विद्यमान, वर्तमान।
मौत—स्त्री० मृत्यु। आफ़त।
मौताद—स्त्री० खुराक, मात्रा।
मौन—वि० चुप। पु० चुप्पी। मौना, पिटारा, बरतन। मोयन (घी) 'नेह मौन छवि मधुरता मैदा रूप मिलाय।' रतन० १३
मौना—पु० डब्बा, पिटारा।
मौनी—वि० चुप रहनेवाला। स्त्री० मौना।
मौर—पु० बौर, मंजरी। ग्रीवा। दुलहेका मुकुट। श्रेष्ठ व्यक्ति।
मौरना—अक्रि० मौर लगना, फूलना 'नर अंध भये दरसे तरु मौरे।' के० २४९ (उदे० 'अँबुवा')।
मौरसिरी—स्त्री० मौलसिरी, बकुल।
मौरूसी—वि० पैतृक।
मौर्वी—स्त्री० प्रत्यंचा, चिल्ला।
मौलवी—पु० मुसलमानोंका धर्माचार्य। अरबीका विद्वान्।
मौलसिरी—स्त्री० बकुल (उदे० 'गौरी')।
मौलि—स्त्री० मस्तक, चोटी, चूड़ा, किरीट।
मौसम, मौसिम—पु० ऋतु, अनुकूल समय।
मौसर—वि० सुलभ, प्राप्त 'औसरकौ मौसर भए मत दै कर तै खोइ।' रतन० १५
मौसी—स्त्री० माकी बहिन।
म्यान—पु० तलवार आदिका कोष या खोली (उदे० 'खाँड़ा,' 'जमधर')।
म्याना—पु० पालकी। सक्रि० म्यानमें रखना।
म्रजाद—स्त्री० मर्यादा, 'लाज म्रजाद मिली औरनको, मृदु मुसकनि मेरे बट आई।' नारायण स्वामी।
म्लान—वि० मलिन, उदास, दुर्बल।
म्लेच्छ—पु० वर्णव्यवस्था-हीन जाति। वि० अधम, नीच, पापी।
म्हाको—सर्व० मुझको।
म्हारा सर्व० हमारा।

य

यंत्र—पु० कल, औज़ार, बाजा, ताला, फंदा 'लोचन मनहु मनोभव यंत्रहि।' के २२३। तावीज़, जन्तर।
यंत्रणा—स्त्री० दुःख, व्यथा, पीड़ा।
यंत्र-मंत्र—पु० झाड़-फूंक। टोना, जादू।
यंत्रालय—पु० वह जगह जहाँ यंत्रादि हों, छापाख़ाना।
यंत्रिका—स्त्री० ताला।
यंत्रित—वि० तालोंमें बंद किया हुआ, बाँधा या रोका हुआ।
यंत्री—पु० देखो 'जंत्री'।
यक—वि० एक।
यकटक—क्रिवि० लगातार, निर्निमेष दृष्टिसे (सू० ९९)।
यकसाँ—वि० एक सदृश, बराबर।
यकायक—क्रिवि० सहसा, अचानक।
यक़ीन—पु० विश्वास।
यकृत—पु० जिगर। जिगरकी खराबी।
यक्ष—पु० एक देवयोनि।
यक्षकर्दम—पु० एक तरहका अंगराग, 'स्वच्छ यक्षकर्दम हिय देवन अभिलाषे'—के० १६६
यक्षपति, यक्षाधिप—पु० कुबेर।
यक्षिणी, यच्छिनी—स्त्री० दुर्गाकी एक सेविका, यक्ष या कुबेरकी स्त्री।
यक्षी—स्त्री० यक्षिणी; कुबेर-पत्नी। पु० यक्षपूजक।
यक्ष्मा—पु० क्षयी रोग।
यच्छ—पु० यक्ष।
यजना—सक्रि० पूजना (सुन्द० ८४), यज्ञ करना।
यजमान—पु० यज्ञ करनेवाला, दक्षिणा देकर पूजनादि कराने वाला।
यज्ञ—पु० याग, हवन-पूजन।
यज्ञपुरुष—पु० विष्णु, नारायण (राम० २८०)।
यज्ञसूत्र—अ० जनेऊ।
यज्ञोपवीत—पु० जनेऊ, एक संस्कार।
यज्वा—पु० यज्ञ करनेवाला।
यति, यती—पु० संन्यासी। स्त्री० विश्राम, छन्दमें विराम-स्थान।
यतीम—पु० अनाथ।
यत्न—पु० उपाय, प्रयास, उद्योग।
यत्र—क्रिवि० जहाँ।
यथा—अ० जिस तरह, जैसे, जैसा।
यथातथ्य—अ० जैसा हो वैसा ही, ज्यों का त्यों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यथारथ, यथार्थ—वि० उचित, ठीक, ज्योंका त्यों।
यथावत्—अ० ज्योंका त्यों।
यथाविधि—क्रिवि० विधिवत्, यथायोग्य।
यथाशक्ति—क्रिवि० जैसी सामर्थ्य हो वैसा, भरसक।
यथेच्छ—क्रिवि० इच्छानुरूप, मनचाहा।
यथेष्ट—वि० प्रचुर, पर्याप्त।
यथोचित—वि० यथायोग्य।
यदपि—अ० यद्यपि, अगरचे।
यदा—अ० जब। यदा कदा = कभी कभी।
यदि—अ० जो, अगर।
यदुनन्दन, यदुनाथ, यदुराई—पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
यद्यपि—अ० अगरचे, हालांकि।
यम—पु० धर्मराज, मृत्यु। जोड़ा। मन इ० का निग्रह।
यमकात, यमकातर—स्त्री० देखो 'जमकात'।
यमज, यमजात—पु० एक साथ पैदा हुए दो बच्चे, अश्विनीकुमार।
यमदुतिया,-द्वितीया—स्त्री० भाईदूज।
यमधार—पु० दोनों ओर धारवाली तलवार।
यमन—पु० यवन, बंधन, रोक।
यमनाह, यमराज—पु० धर्मराज, कृतांत।
यमल—पु० यमज, जोड़ा।
यमी, यमुना—स्त्री० यम-भगिनी जमुनाजी। दुर्गा।
यव—पु० जौ। वेग। एक बैल।
यवन—पु० यूनानी, म्लेच्छ। वेग।
यवनिका—स्त्री० नाटकका पर्दा।
यवास—पु० देखो 'जवास'।
यश—पु० कीर्त्ति, प्रसिद्धि, प्रशंसा।
यशस्वी, यशी, यशोल—वि० विख्यात, कीर्त्तिमान्।
यशुमति, यशोदा, यशोमति—स्त्री० नन्द-पत्नी।
यष्टि—स्त्री० डंडा, लकड़ी, शाखा, बाहु।
यष्टिका—स्त्री० छड़ी। गलेका हार। वापी।
यह—सर्व० निकटवर्ती वस्तुको बतलानेवाला निश्चय-वाचक सर्वनाम।
यहाँ—क्रिवि० इस जगह।
याँचना—देखो 'याचना'।
या—अ० वा, अथवा। सर्व० यह ('याकहँ, यातें')।
याक—वि० एक।
याकूत—पु० एक बहुमूल्य पत्थर, लाल।
याग—पु० यज्ञ।
याचक—पु० माँगनेवाला, प्रार्थी।
याचना—सक्रि० माँगना, प्रार्थना करना (उदे० 'दात')। स्त्री० प्रार्थना।
यातना—स्त्री० यंत्रणा, पीड़ा।
याता—पु० जानेवाला, सारथी। स्त्री० जेठानी, देवरानी।
यातायात—पु० गमनागमन।
यातुधान—पु० राक्षस।
यात्रा—स्त्री० प्रयाण, कूच, तीर्थाटन।
यात्रिक, यात्री—पु० पथिक, तीर्थाटन करनेवाला।
याद—स्त्री० स्मरण, सुध, स्मृति।
यादगार—स्त्री० स्मारक।
याददाश्त—स्त्री० स्मृतिके निमित्त लिखित लेख।
यादव—पु० यदु-वंशज, श्रीकृष्ण। [स्मरणशक्ति।
यादृश—वि० जैसा।
यान—पु० विमान, गाड़ी।
यानी, याने—अ० अर्थात्।
यापन—पु० बिताना, चलाना, परित्याग।
याम—पु० पहर। समय। स्त्री० रात्रि (सूवे० २१३)।
यामल—पु० यमज बच्चे।
यामाता—पु० जामाता।
यामिक—पु० पहरुआ।
यामिका, यामिनि-नी—स्त्री० रात्रि।
यार—पु० मित्र, साथी। प्रेमी, जार।
यारी—स्त्री० मित्रता, अनुचित प्रेम।
यावक—पु० महावर। उड़द। जौ।
याहि—सर्व० इसको।
युक्त—वि० मिला हुआ, सहित, उचित, अनुरक्त।
युक्ति—स्त्री० उपाय, उचित तर्क, न्याय, चतुरता, रीति।
युक्तियुक्त—वि० वाजिब, उचित।
युग—वि० दो। पु० जोड़ा, गोटियोंका जोड़ा, समय, सत्य युगादि कालमान।
युगति—स्त्री० उपाय, तर्क। हिकमत।
युगपत्—क्रिवि० एक ही समयमें।
युगम—पु० द्वंद्व, जोड़ा।
युगल—पु० जोड़ा, दो वस्तुएँ।
युगांतर—पु० दूसरा ज़माना, क्रांति।
युग्म—पु० जोड़ा, दो वस्तुएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युत—वि० मिला हुआ, सहित।
युद्ध—पु० लड़ाई, संग्राम।
युयुत्सा—स्त्री० लड़नेकी इच्छा।
युयुधान—पु० योद्धा, क्षत्रिय। इन्द्र।
युवक—पु० तरुण पुरुष।
युवती—स्त्री० युवावस्था-प्राप्त स्त्री। वि० प्राप्तयौवना।
युवराई—पु० युवराज। स्त्री० युवराजत्व।
युवराजी—स्त्री० युवराजका पद।
युवा—वि० तरुण, जवान।
यूत—पु० मिलावट।
यूथ—पु० समूह, दल (उदे० 'बतकही')।
यूथप, यूथपाल—पु० दलपति, सेनापति।
यूथिका, यूथी—स्त्री० पुष्पविशेष, जूही।
यूप—पु० यज्ञ-स्तंभ।
यूपा—पु० जूआ।
यूह—पु० यूथ, झुंड।
येतो—वि० इतना।
यों—अ० इस प्रकार।
योंही—अ० इसी तरहसे, विना किसी उद्देश्यके।
योग—पु० मेल, प्रेम, संग। शुभ अवसर, लगन, (उदे० 'जोइसी')। चित्त-वृत्ति-निरोध। विशेष समय। समाधि। वशीकरण। लाभ। दवा। धन, जोड़।
योगरूढ़ि—स्त्री० विशेष अर्थमें प्रचलित यौगिक शब्द।
योगिनी—स्त्री० चंडिका, तपस्विनी, रण-चंडिका, दुर्गा-सहचरी। ज्योतिषके अनुसार विशेष तिथिको विशेष दिशामें स्थित कोई देवी।
योगिया, योगी—पु० योग-साधक, तपस्वी।
योगींद्र, योगीश्वर—पु० श्रेष्ठयोगी, याज्ञवल्क्य।
योगीनाथ—पु० शिवजी।
योग्य—वि० समर्थ, लायक़, श्रेष्ठ, उचित, उपयुक्त, सुन्दर। पु० पुष्य नक्षत्र।
योग्यता—स्त्री० सामर्थ्य, क्षमता, विद्वत्ता। (औचित्य)।
योजन—पु० मेल। चार कोस।
योजना—स्त्री० मेल, रचना, प्रयोग, नियुक्ति, व्यवस्था।
योद्धा, योध, योधी,—पु० वीर सैनिक।
योनि—स्त्री० जीवोंके वर्ग। उत्पत्तिस्थान, खानि, गर्भ। [देह। जन्म।
योषा, योषित—स्त्री० स्त्री, नारी।
यौं—अ० इस प्रकार।
यौगिक—पु० दो शब्दोंके मेलसे बना हुआ शब्द।
यौतक, यौतुक—पु० दहेज, दाइजा।
यौवन—पु० जवानी, तरुणावस्था।
यौवराज्य—पु० युवराजका पद। युवराज होनेका भाव।

र

रंक—वि० दरिद्र, कृपण। पु० दरिद्र व्यक्ति 'कहु केहि रंकहि करहुँ नरेशू।' रामा० २११
रंग—पु० वर्ण, वह वस्तु जिससे कोई चीज रंगी जाय। नाच-गाना। अभिनय-स्थल। युद्धस्थल। रौंगा। शोभा। प्रभाव। दशा। आनन्द, मौज 'ग्रीव प्रयंत नीरमें ठाढो छिरकत जल अपने अपने रँग।' सूबे० १७६। युद्ध। चाल 'तिनको दान लेत हैं हम सों देखहु इनको रंग।' सूबे० १४७। प्रेम 'ऐसे भये तो कहा तुलसी जु पै जानकी नाथके रंग न राते।' कविता० २१२ (रतन० ७६)। कृपा, अनुग्रह। प्रकार
रंगत—स्त्री० रंग, वर्ण, हालत, मज़ा।
रंगना—सक्रि० रंग चढ़ाना, अनुकूल या अनुरक्त बनाना। अक्रि० अनुरक्त होना, लीन होना।
रंगबाति—स्त्री० गात्रानुलेपनके निमित्त सुगन्धित द्रव्य की बनी बत्ती (मति० २३४)।
रंगबिरंग, रंगबिरंगा—वि० भिन्न भिन्न रंगोंका, कई तरहका।
रंगभवन,-महल—पु० आमोद-प्रमोदका स्थान।
रंगभूमि—स्त्री० रंग-स्थल, नाट्यशाला, क्रीडास्थल, रणभूमि।
रंगरली—स्त्री० हँसी खुशी, क्रीड़ा, विहार।
रंगरस—पु० आनन्द, क्रीड़ा।
रंगरसिया—पु० विलासमें लीन पुरुष।
रँगराता—वि० शोभामय, सुन्दर (उदे० 'झूंक')।
रँगरूट—पु० नया सिपाही। नया या अनुभवहीन व्यक्ति।
रँगरेज—पु० कपड़ा रंगनेवाला।
रंगरेली—स्त्री० देखो 'रँगरली'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रँगवाना, रंगाना--सक्रि० रँगनेका कार्य दूसरेसे कराना।
रंगसाज़—पु० रंग बनानेवाला या मेज़ इ० पर रंग [चढ़ानेवाला।
रंगिया--पु० रँगरेज़।
रंगीन--वि० रँगदार, रसिक, आनन्दी।
रँगीला--वि० रसिक, (उदे० 'झमकीला')। अनुरागी। छबीला।
रंच, रंचक--वि० तनिक, किञ्चित् (उदे 'बीकना') तुमहिं सबै मिलि दांवरि दीन्हीं रंच दया नहिं आई।' अ० ५, 'जहाँ वारुणीकी करी रंचक रुचि द्विजराज।' राम० ८७
रंज--पु० अफसोस, दुःख।
रंजक—पु० रँगरेज। भिलावाँ। स्त्री० बंदूकमें रखनेकी बारूद (छत्र १०५)। वि० रँगनेवाला, हर्षित करनेवाला।
रंजन--पु० रंगने या प्रसन्न करनेकी क्रिया। प्रसन्न करनेवाला। सोना। लाल चन्दन।
रंजना--सक्रि० रँगना। आनंदित करना, भजना।
रंजित--वि० रँगा हुआ, आसक्त, प्रसन्न।
रंजिश--स्त्री० बिगाड़, वैमनस्य।
रंजीदा--वि० अप्रसन्न, दुखी।
रंडा—स्त्री० विधवा (के० ३०७)।
रँडापा—पु० वैधव्य।
रंडी—स्त्री० वेश्या।
रँडुआ—पु० मृतस्त्रीक व्यक्ति।
रंता—वि० रमण करनेवाला, अनुरक्त (के० ३१२)।
रंद्र--पु० रोशनदान, दुर्ग-प्राचीरका छिद्र।
रँदना—सक्रि० रंदा फेरकर लकड़ीको समतल करना।
रंदा—पु० लकड़ीकी सतह छीलनेका हथियार।
रँधना—सक्रि० राँधना (सुन्द० १५३)।
रंध्र—पु० छिद्र, दोष।
रंभ—पु० बाँस, घोर शब्द 'नीर होइ तर ऊपर सोई। माथे रंभ समुद जस होई।' प० ७०। केला 'रंभ खंभ मंडित अखंड अति तोरन तड़प तमाशा।' रघु० १६
रंभा—स्त्री० एक अप्सरा, वेश्या। डेला (सू० ६३)।
रंभाना—अक्रि० गायका बोलना।
रँहचटा—पु० चसका, प्रलोभन 'रूप रँहचटे लगि लग्यो मागन सब जग आनि।' वि० १२४
रइकौ—क्रिवि० राई भर भी, जरा भी।
रइनि—स्त्री० रात्रि।
रई—स्त्री० मथानी (उदे० 'जावन')। मोटा पिसान, चूर्ण, सूजी। वि० स्त्री० प्रेममें रँगी हुई, संयुक्त 'सरिता इक केशव शोभ रई।' राम० २७६
रईस—पु० धनी मनुष्य, अमीर।
रउताई—स्त्री० स्वामित्व 'दानि कहाउब अरु कृपनाई। होइ कि प्रेम कुसल रउताई।' रामा० २१५
रउरे—सर्व० आप (रामा० २०७)।
रकछु—पु० एक तरहकी पकौड़ी।
रकत—पु० रुधिर (उदे० 'गारना')। वि० लाल।
रकतांक—पु० कुंकुम, रक्त चंदन।
रकबा—पु० क्षेत्रफल।
रक़म—स्त्री० सम्पत्ति, ज़ेवर, छाप, प्रकार, स्थान (उदे० 'आमिल')। रुपये पैसेकी नियत संख्या।
रकाब—स्त्री० ज़ीनका पायदान। तश्तरी।
रकाबी, रकेबी—स्त्री० तश्तरी।
रक्त—पु० रुधिर, कुंकुम, कुसुंभ सेंदुर, लाख, बंधूक, [रक्तचंदन।
रक्तकंठ—पु० कोयल, बैंगन।
रक्तक—पु० बंधूक, केसर, लाल घोड़ा।
रक्तपात—पु० खूनख़राबी।
रक्तपुष्प—पु० बंधूक वृक्ष, दाड़िमका पेड़, कनेर, सेमल।
रक्तफल—पु० वट वृक्ष, कुँदरू, सेमल।
रक्तबीज—पु० अनार। एक राक्षसका नाम।
रक्ताक्ष—पु० महिष, सारस, चकोर, कबूतर।
रक्ति—स्त्री० प्रेम। रत्ती नामक तौल।
रक्तिमा—स्त्री० लालिमा।
रक्ष—पु० राक्षस। रक्षा, रक्षक। लाख, लाह।
रक्षक—पु० पालक, रक्षा करनेवाला, चौकीदार।
रक्षण, रक्षन—पु० रक्षा, परित्राण, पालन।
रक्षना—सक्रि० परित्राण करना, बचाना 'भगे कौस सब चले पुकारत रक्षहु रघुकुलनाथा।' रघु० २३६
रक्षस—पु० राक्षस।
रक्षा—स्त्री० परित्राण, बचाव।
रक्षाइद—स्त्री० राक्षसपन।
रक्षित—वि० रक्षा किया हुआ, पाला हुआ। विशेष अवसरके लिए अलग रखा हुआ।
रक्षी—पु० रक्षक, चौकीदार। पु० राक्षस-पुरुष।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रखना—अक्रि० रक्षा करना, संग्रह करना, धरना, बचाना, पालन करना, स्थापित या नियुक्त करना।
रखनी—स्त्री० उपपत्नी।
रखवाई, रखाई—स्त्री० चौकीदारी, रखवाली करनेकी क्रिया या मजदूरी।
रखवार,-वारा,-वाला—पु० रक्षक, त्राता, चौकीदार (उदे 'ताल')।
रखवारी,-वाली—स्त्री० चौकसी, रक्षा।
रखाना—सक्रि० रखनेका कार्य कराना, धराना, धारण करना। रक्षा करना, रखवाली करना।
रखिया—पु० रखनेवाला, रक्षा करनेवाला।
रखियाना—सक्रि० राखसे रगड़ना।
रखीसर—पु० ऋषीश्वर (कबीर २८७)।
रखैल, रखैली—स्त्री० रखी हुई स्त्री, खरीदी हुई स्त्री, '(अँखियाँ) तजि कै लाज साज गुरुजनकी, हरिकी भई रखैल।' हरि०
रखैया—पु० रक्षक।
रग—स्त्री० नाड़ी, नस।
रगड़—स्त्री० संघर्ष, हलकी चोट, झगड़ा। टेक 'जनम कोटि लगि रगरि हमारी।' रामा० ४९
रगड़ना—सक्रि० घिसना, मलना, पीसना, दिक करना।
रगड़ा—पु० रगड़, कठिन परिश्रम, प्रति दिनका झगड़ा।
रगत—पु० रक्त, खून 'सो स्यावज जिनि मारै कंता जाकै रगत मास न होई।' कबीर १६०
रगदना—दे० 'रगेदना' (रघु० २५६)।
रगदल—वि० कुबड़ा।
रगर, रगरा—दे० 'रगड़', 'रगड़ा'।
रगवाना—सक्रि० शांत कराना।
रगाना—सक्रि० शांत कराना। अक्रि० शांत होना।
रगेदना—सक्रि० पीछा करना, दौड़ाना।
रघुनंद,-पति,-राइ-रैया—पु० रामचन्द्रजी।
रचक—पु० रचयिता, निर्माता। वि० थोड़ा।
रचना—सक्रि० निर्माण करना, उत्पन्न करना, बनाना, सजाना। रँगना। अक्रि० रँग चढ़ना, प्रेम रंजित होना। स्त्री० निर्माण, गढ़न, बनावट, निर्मित वस्तु।
रचयिता—पु० निर्माता, रचनेवाला।
रचाना—सक्रि० बनाना, आयोजन करना। (जावक इ०) लगाना।
रचिपचि—क्रिवि० परिश्रम करके, गढ़ गढ़कर (सू०२६)।
रचौंहा—वि० रंजित, अनुरक्त (वि० ३५)।
रच्छ—पु० राक्षस। रक्षा, रक्षक।
रच्छक—पु० चौकीदार, रक्षा करनेवाला (उदे० 'काँड़ना')।
रच्छस—पु० राक्षस।
रच्छा—स्त्री० बचाव, परित्राण (उदे० 'पहराइत')।
रज—स्त्री० धूल। रजनी। राजश्री। पु० चाँदी। धोबी। आर्त्तव। पानी। बादल। पाप। आकाश। रजोगुण।
रजक—पु० धोबी।
रजगुण,-गुन—पु० रजोगुण।
रजतंत—स्त्री० वीरत्व।
रजत—स्त्री० चाँदी, हाथी दाँत, स्वर्ण, हार। वि० श्वेत।
रजताई—स्त्री० श्वेतता।
रजधानी—स्त्री० राजनगर, राज्य (?) 'हमको लिखि लिखि जोग पठावत आपु करत रजधानी।' भ्र० १०७
रजना—अक्रि० रंजित होना, रँगा जाना (भावि० ५२)।
रजनी—स्त्री० रात्रि। हलदी।
रजनीकर,-पति,-नीश—पु० चन्द्रमा।
रजनीमुख—पु० संध्या।
रजपूत—पु० राजपूत, क्षत्रिय, वीर।
रजबार—पु० देखो 'रजवार'।
रजवती—वि० स्त्री० रजस्वला, ऋतुमती।
रजवाड़ा—पु० राज्य। राजा।
रजवार—पु० राजद्वार 'पुनि बाँधे रजवार तुरंगा'—प० १९
रजस्वला—वि० स्त्री० ऋतुमती।
रज़ा—स्त्री० स्वीकृति, इच्छा, अनुमति। 'और कीजै वही आपकी जो रजा।' रजा० १६
रजाइ—स्त्री० आदेश, आज्ञा।
रजाइस—स्त्री० राजाका आदेश, आज्ञा।
रजाई—स्त्री० राजापन। रूईदार ओढ़ना।
रजाना—सक्रि० राज्य कराना, सुख देना।
रज़ामंद—वि० सहमत।
रजाय, रजायसु—स्त्री० राजाका आदेश, 'रामहिं देखि रजायसु पाई। निज निज भवन चले सिर नाई।' [रामा० १९३
रज़ील—वि० नीच।
रजु, रज्जु—स्त्री० रस्सी (उदे० 'करपना')।
रजोकुल—पु० राजकुल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रटंत—स्त्री० रटनेकी क्रिया या भाव।
रट, रटन—स्त्री० पुकार, बारबार कहना, कहना।
रटना—सक्रि० बार बार कहना या पढ़ना, 'रुचिर रसना तू राम राम क्यों न रटत'—विन० ३०७। बजना। बोलना (उदे० 'कुखेत')।
रठ—वि० रूखा, सूखा।
रढ़ना—सक्रि० रटना 'पुनि पीवत ही कच टकटोवै झूठे जननि रढ़ै।' सूबे० ५८ (सू० ३१, राम० ५०)।
रण—पु० संग्राम, युद्ध।
रणखेत पु०,-भूमि-स्त्री०,-स्थल—पु०, लड़ाईका मैदान।
रणरंग—पु० युद्धका उत्साह, युद्ध।
रत—वि० तत्पर, अनुरक्त। पु० प्रेम, रति, संयोग।
रतजगा—पु० देखो 'रतिजगा'।
रतन—पु० रत्न, मणि, नग, श्रेष्ठ वस्तु।
रतनजात—स्त्री० मणिविशेष।
रतनाकर, रतनागर—पु० समुद्र।
रतनार, रतनारा—वि० ललाई लिये हुए (उदे० 'अमी')।
रतनारी—स्त्री० लालिमा। पु० धानका एक भेद (उदे० 'कजरी')।
रतनालिया—वि० रतनारा।
रतमुहाँ—वि० लाल मुखवाला।
रताना—सक्रि० अनुरक्त करना। अक्रि० रत होना।
रति—स्त्री० कामदेवकी स्त्री, प्रेम, भक्ति, 'स्याम कृपा बिनु, साधु संग बिनु कहि कौनै रति पाई।' व्यासजी। संभोग। शोभा। रात। एक तौल, घुँघची। कान्ति।
रतिक—क्रिवि० रत्ती भर, किञ्चिन्मात्र।
रतिजगा—पु० रातभर होनेवाला उत्सव, जागरण, 'सँगी रँगीले रतिजगे जगी पगी सुख चैन।' वि० ११५
रतिनाथ,-नाह—पु० कामदेव।
रतियाना—अक्रि० रत होना।
रतिराह,-राज—पु० कामदेव।
रतिवंत—पु० शोभावान्, सुंदर।
रती—स्त्री० देखो 'रति'। क्रिवि० रत्ती भर।
रतीक—क्रिवि० देखो 'रतिक', 'कोटि उपाय किये कहि केशव केहूँ न छाँड़त भूमि रतीको।' राम० ७८
रतोपल—पु० रक्तोत्पल, लाल कमल। लाल खड़िया।
रतौंधी—स्त्री० रातको न दिखाई देनेका रोग।
रत्त—पु० रक्त, रुधिर (मति० २१२)।
रत्ती—स्त्री० एक तौल, घुँघची, शोभा।
रत्थी—स्त्री० अरथी, विमान।
रत्न—पु० नग, मणि, मानिक, श्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति।
रत्नगर्भा, रत्नवती, रत्नसू—स्त्री० पृथ्वी।
रत्नपारखी—पु० जौहरी।
रत्नाकर—पु० रत्नोंका पुंज, समुद्र।
रथ—पु० एक तरहकी गाड़ी या विमान, देह।
रथपति,-वान—पु० सारथी।
रथवाह—पु० घोड़ा, सारथी (उदे० 'तुखार')।
रथांग—पु० रथका पहिया। चकवा पक्षी (रामा० २३९)।
रथी—स्त्री० अरथी, टिकठी। पु० रथपर चढ़नेवाला, वीर योद्धा। वि० रथारूढ़, 'रावन रथी बिरथ रघुबीरा।' रामा० ४९७
रथ्य—पु० रथका चक्र, सारथी। रथका घोड़ा।
रथ्या—स्त्री० रथमार्ग, रथसमूह, नाली।
रद—पु० दाँत। वि० रद्दी, तुच्छ, फीका।
रदच्छद—पु० ओंठ।
रदछद—पु० ओंठ। दाँत लगनेका निशान। 'हद रदछद छवि देति यह सद रदछदकी रेख।' वि० ९०, (देखो 'दंतछद')
रददान—पु० दाँत गड़ाना (रतिके समय)।
रदन—पु० दाँत।
रदनच्छद—पु० ओंठ।
रदनी—वि० दाँतवाला (सू० १४२)।
रदपट—पु० ओंठ।
रद्द—वि० बेकार, निकम्मा, काटा हुआ, मंसूख।
रद्दबदल—पु० हेर-फेर।
रद्दी—वि० निकम्मा।
रन—पु० युद्ध।
रनकना—अक्रि० घूँघरू आदिका बजना।
रनछोर—पु० श्रीकृष्ण।
रनना—अक्रि० ध्वनित होना, बजना।
रनबका,-बाँकुरा—वि० वीर।
रनवादी—पु० वीर, योद्धा।
रनवास, रनिवास—पु० अन्तःपुर (उदे० 'अछरा')।
रनित—वि० आवाज़ करता हुआ, बजता हुआ (वि० [१५९]
रनी—पु० रण करनेवाला, योद्धा।
रपटना—अक्रि० फिसलना। शीघ्रतासे चलना या कोई काम करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रपट्टा—पु० फिसलना। अधिक श्रम, चपेट।
रफ़—वि० जो साफ या चिकना न हो। खुरदरा।
रफ़ा—वि० निवारित, मिटाया हुआ।
रफ़ू—पु० तागेसे फटे कपड़ेका छेद भरना।
रफ़ूगर—पु० रफ़ू करनेवाला।
रफ़ूचक्कर—वि० ग़ायब।
रफ़्तनी—स्त्री० गमन, निर्यात।
रफ़्तार—स्त्री० चाल, ढंग।
रफ़्ता-रफ़्ता—क्रिवि० क्रमशः, धीरे धीरे।
रबड़, रबर—पु० एक तरहकी गोंदसे बना लचीला पदार्थ।
रबड़ी, रबरी—स्त्री० चीनी मिश्रित लच्छेदार दूध, बसौंधी।
रबाब—पु० एक बाजा 'सुर मादर रबाब भल साजा।' प० २६०। (दे० 'रबाब')।
रबी—स्त्री० वसन्त ऋतु, वसन्तकी फसल।
रब्त—पु० अभ्यास, मेल। रब्त-ज़ब्त = हेल मेल।
रभस—पु० वेग, आनन्द (विद्या० २४८, २९४), दुःख, औत्सुक्य।
रमक—पु० प्रेमी। स्त्री० झकोरा। हलका नशा।
रमकना—अक्रि० हिंडोलेपर झूलना, थिरकते हुए चलना।
रमण—पु० वह जो रमण करे, पति, कामदेव, क्रीड़ा। वि० आनंद देनेवाला, प्रिय, सुन्दर।
रमणी—स्त्री० स्त्री, सुन्दरी।
रमणीक, रमणीय—वि० मनोहर, सुहावना।
रमता—वि० जो बराबर घूमता फिरता रहे, कहीं स्थिर रूपसे न रहे।
रमन, रमनी, रमनीक, रमनीय—देखो 'रमण' इत्यादि।
रमना—अक्रि० रमण करना, आनन्द करना, (उदे० 'छेह')। प्रेममुग्ध होना, टिकना, विचरना, चल देना। पु० घेरा, चरागाह, उद्यान।
रमल—पु० पासेके द्वारा शुभाशुभ फल निकालनेकी विद्या।
रमा—स्त्री० लक्ष्मी।
रमाकांत,-नरेश,-पति—पु० विष्णु।
रमाना—सक्रि० बिलमाना, रोकना, लगाना, अनुरक्त या अनुकूल बनाना।
रमानिकेत,-निवास—पु० विष्णु।
रमित—वि० मुग्ध।
रमूज़—स्त्री० रहस्य, संकेत, कटाक्ष।
रमैया—पु० राम, भगवान्।
रम्माल—पु० रमल विद्या जाननेवाला।
रम्य—वि० रमणीक, सुन्दर।
रम्हाना—अक्रि० देखो 'रँभाना'।
रय—पु० वेग, प्रवाह। धूल, रज।
रयत, रय्यत—स्त्री० रैयत, प्रजा 'सुनि शत्रु मित्रकी, नृपचरित्रकी, रयत रावत बात।' के० २०१
रयन, रयनि—स्त्री० रात्रि।
रयना—अक्रि० रँग जाना (राम० ८३), अनुरक्त होना (उदे० 'उरहन'), मस्त होना, 'जोबन बन ते निकसि चले ये मुरली नाद रये।' सू० १४७। बोलना, उच्चारण करना।
रर—स्त्री० रट, रटना।
ररकना—अक्रि० पीड़ा देना, कसकना।
ररना—सक्रि० रटना, फिर फिर कहना 'सदा राम नामैं ररै दीन बानी।' राम० ३२१ (ध्रु० ४२)।
ररिहा—पु० रट लगानेवाला, बार बार माँगनेवाला। देखो 'रुरुआ'।
ररी—पु० ररिहा। वि० फ़सादी।
रलना—अक्रि० एक हो जाना, मिलना 'तैसिय पियकी मुरली जु रली अधर सुधारस'—नन्द० (सुजा० १३; दास १६३, १७३, कबीर २)
रलाना—सक्रि० मिलाना।
रली—स्त्री० विलास, क्रीड़ा, खुशी।
रल्ल—पु० रेला, धक्कमधक्का।
रव—पु० आवाज़, ध्वनि। रवि, सूर्य।
रवकना—अक्रि० झपटना, लपकना, उछलना। 'मैन मीन सरवर आनन भे चंचल करत बिहार। मानों कर्नफूल चाराको, रवकत बारम्बार।' सू० १६०
रवताई—स्त्री० राजा या स्वामी होनेका भाव, स्वामित्व।
रवन—पु०, वि० देखो 'रमण', 'जय जय रसिक रवनी-रवन।' भगवतरसिक।
रवना—पु० रावण। अक्रि० रमण करना 'सो पद रवहु जि बहुरि न रवना।' कबीर ३०६। बोलना।
रवनि, रवनी—स्त्री० रमणी, स्त्री (उदे० 'रवन', 'धीरक', सू० ११४)।
रवन्ना—पु० महसूलकी रसीद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रवाँ—वि० चलता हुआ। प्रवाहमय। तेज़। अभ्यस्त।
रवा—पु० दाना, कण, सूजी। वि० उचित 'रामको किंकर सो तुलसी समुझैहि भलो कहिबो न रवा है।' [कविता० २१४
रवाज—स्त्री० प्रथा, रीति, चलन।
रवादार—वि० दानेदार। सहिष्णु सम्बन्धी।
रवानगी—स्त्री० प्रस्थान।
रवाब—पु० एक बाजा (उदे० 'गवैया', 'किन्नरी')।
रवि—पु० सूर्य, अग्नि, आक।
रविजा, रवितनया—स्त्री० यमुना।
रवितनय,-नंद,-पुत्र—पु० यमराज, शनि, सुग्रीव, कर्ण,†
रविवार,-वासर—पु० इतवार। [† अश्विनीकुमार।
रविश—स्त्री० क्यारियोंके बीचका मार्ग। चाल, तरीक़ा।
रविसुअन,-सूनु—पु० देखो 'रवितनय'।
रशना—स्त्री० करधनी, रस्सी। रसना, जीभ।
रश्क—पु० ईर्ष्या।
रश्मि—स्त्री० किरण, लगाम।
रस—पु० सार, स्वाद, सुखानुभूति, वह अनुभव जो शोक हास्यादि स्थायी भावोंके प्रकट होनेसे होता है, उमंग, इच्छा, प्रेम, पानी, जूस, धातु-भस्म, छः या
रसकोरा—पु० एक मिष्टान्न, रसगुल्ला। [नौकी संख्या।
रसखीर—पु० मीठा चावल।
रसगुनी—पु० रसज्ञ, काव्यमर्मज्ञ।
रसगुल्ला—पु० एक मिठाई।
रसज्ञ—वि० काव्य या संगीतका मर्मज्ञ, जानकार।
रसद—स्त्री० बाँट, हिस्सा, भोजन-सामग्री। वि० स्वादिष्ट, सुखद।
रसदार—वि० रसवाला।
रसना—स्त्री० करधनी। जीभ। घोड़ेकी बाग। अक्रि० रसका अनुभव करना, तन्मय होना, अनुरक्त होना, 'सारस हैं सारस न हैं तातें रसैं न हँस।' दीन० २०३। 'निहचय भौंर कँवल-रस रसा।' प० १४९। टपकना,
रसनेंद्रिय—स्त्री० जीभ। [स्रवना
रसपति—पु० चन्द्रमा, पारा, शृंगार रस, राजा।
रसबधावा—पु० देखो 'रहसबधावा'।
रसबरी, रसभरी—स्त्री० एक मीठा फल।
रसम—स्त्री० प्रथा।
रसमसा—वि० रसमग्न, अनुरक्त, भीगा हुआ, पसीनेसे तर, रस (आनन्द) मय 'गोपी जौ गोपालको अति रसमसो समाज।' हरि० (ब्रज० ५७३)।
रसमि—स्त्री० रश्मि, किरण, चमक।
रसरा-पु०, रसरी—स्त्री० रस्सा, रस्सी 'रसरी आवत जाततें सिलपर परत निसान।' (उदे० 'चरस')।
रसराज,-राय—पु० शृंगाररस, रसौत, पारा।
रसवंत—पु० रसिक, काव्यमर्मज्ञ, प्रेमी।
रसवंती, रसवत—स्त्री० अंजन विशेष, एक ओषधि।
रसवाद—पु० रस या प्रेमकी बात, बकवाद (सूबे० २०१)।
रसा—स्त्री० पृथिवी, द्राक्षा, रसना, पादा। पु०
रसाइनी—पु० रसायनज्ञ, कीमियागर। [शोरबा।
रसाई—स्त्री० पहुँच।
रसातल—पु० सातवाँ पाताल।
रसाना—अक्रि० आनंद लूटना 'राधा ब्रजमिश्रित जस रसनि रसाइये'—नागरी०।
रसाभास—पु० अनुचित या अनुपयुक्त स्थानमें किसी रसका वर्णन।
रसायन—पु० सोना बनानेकी विद्या, कीमिया। जरा-व्याधि-नाशक ओषधि। विष। तक्र। कमर।
रसार, रसाल—वि० रसमय। मीठा (उदे० 'दुलम'), सुंदर 'महामोहके नूपुर बाजत निंदा सब्द रसाल'—सू० १२। 'मनि लाल मानिक जटित भँवरा, सुरँग रंग रसार।' सू० १७६। पु० आम, ऊख, गेंहू, कटहल।
रसाला—स्त्री० एक चटनी, सिखरन, दाख, जीभ।
रसावर, रसावल—पु० रसौर, रसखीर।
रसिआउर, रसिआवर—पु० रसखीर, एक गीत।
रसिक—पु० रसज्ञ, सहृदय, प्रेमी। सारस।
रसिकता, रसिकाई—स्त्री० सहृदयता, परिहास।
रसित—वि० ध्वनि करता हुआ, रसयुक्त। पु० ध्वनि।
रसिया—पु० रसिक, फागुनमें गाया जानेवाला एक गीत।
रसियाव—पु० देखो 'रसिआउर'।
रसी—पु० रसिक।
रसीद—स्त्री० प्राप्ति-पत्र, प्राप्ति।
रसील, रसीला—वि० रसमय (उदे० 'शमकीला'), मीठा, विलास-प्रेमी।
रसूम—पु० नेग। नियम, दस्तूर, किसी कार्यके निमित्त सरकारको दिया जानेवाला धन।
रसूल—पु० पैग़म्बर, दूत।
रसेश, रसेस—पु० श्रीकृष्ण। पारा। लवण।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रसोइया—पु० रोटी बनानेवाला।
रसोई—स्त्री० तैयार भोजन, भोजन (उदे० 'जगरमगर', 'तरना')। भोजनगृह।
रसोय—स्त्री० भोजन।
रसौत—स्त्री० औषध विशेष, रसवत।
रसौर—पु० देखो 'रसावर'।
रस्म—स्त्री० प्रथा, रीति, व्यवहार।
रस्मि—स्त्री० किरण, घोड़ेकी बाग।
रस्सा—पु० मोटी रस्सी।
रस्सी—स्त्री० रज्जु, डोरी।
रहँकला, रहकला—पु० छकड़ा, गाड़ीपर रखी हुई छोटी तोप (छत्र० ११९) (उदे० 'दवान')।
रहँचटा, रहचटा—पु० देखो 'रँहचटा' (मति० १७९)।
रहँट—पु० पानी खींचनेकी चर्खी 'स्रवन कूपकी रँहटि घंटिका, राजत सुभग समाज।' सू० १५५ (उदे० ['घरी'।)
रहँटा, रहटा—पु० चर्खा (कबीर० १६५)।
रहचह—स्त्री० चहचहाहट। [† ४१३
रहन, रहनि—स्त्री० रहनेका ढँग, रीति, व्यवहार, निवास, प्रीति 'जो पै रहनि राम सों नाहीं।' विन० †
रहनसहन—पु०, स्त्री० चाल-ढाल। रहनेका ढँग।
रहना—अक्रि० निवास करना, ठहरना, मौजूद या जीवित रहना, रुकना (उदे० 'गरना')।
रहम—पु० दया, अनुग्रह।
रहमान—पु० ईश्वर (उदे० 'थाहना')।
रहरू, रहलू—स्त्री० एक देहाती गाड़ी।
रहल—स्त्री० पुस्तक रखनेकी चौकी।
रहस—पु० रहस्य, भेद। सुख, आनन्द (दे० 'फुलवार')। एकान्तता, 'वृन्दा विपिन रस अति अगोचर रहस सब प्रगटहिं कह्यो-'अलबेली अलि।
रहसना—अक्रि० हर्षित होना 'बोलेउ राउ रहसि मृदु-बानी।' रामा० २०० (उदे० 'तारा')।
रहसबधावा—पु० विवाह समयकी एक रस्म।
रहसि—स्त्री० निराला स्थान।
रहस्य—पु० भेद, मर्म, गोप्य बात, मज़ाक़।
रहाई—स्त्री० रहनेकी क्रिया, चैन, कल।
रहाना—अक्रि० रहना, होना। रहा सहा = बचा हुआ, अवशिष्ट।
रहावन—स्त्री० पशुओंके छुटनेकी जगह। [
रहित—क्रिवि० हीन, वंचित।
रहिला—पु० चना (रहीम १९)।
रहुवा—पु० दूसरेके मत्थे रहनेवाला व्यक्ति, टुकदखोर।
राँक, राँकव—वि० गरीब, निर्धन 'रांकव कौन सुदामा-हूतें आपसमान करे।' सूवि० १५
राँग, राँगा—पु० एक धातु।
राँच—अ० ज़रा भी, किञ्चित्।
राँचना—अक्रि० रंजित होना, प्रेममें डूबना, लिप्त होना 'जो बिलोकि मुनिवर मन राँचा।' रामा० ५५२, 'करि अभिमान विषयरस राँच्यों।' सू० २८०। सक्रि० रँगना, रचना, बनाना 'कोटि इन्द्र छिनहीमें राँचै, छिनमें करै बिनास।' सू० १००
राँटा—पु० रहँटा। टिट्टिभ पक्षी।
राँड़—स्त्री० विधवा।
राँढ़ना—अक्रि० रुदन करना।
राँध—पु० पड़ोस, पास 'राँध न तहवाँ दूसर कोई।' प० ३२६। वि० परिपक्व बुद्धिवाला 'राँध जो मंत्री बोले सोई।' प० १११
राँधना—सक्रि० सिझाना, पकाना।
राँभना—अक्रि० रँभाना (उदे० 'खिरका')।
राआ, राइ, राउ—पु० राजा 'बिलपत राउ बिकल बहु भाँती।' रामा० २७३
राई—स्त्री० छोटी सरसों। राधा (विद्या० २५५)। पु० राजा, श्रेष्ठ व्यक्ति। राई लोन उतारना = नजर-का कुप्रभाव दूर करनेके लिए राई नमक बच्चेके चारों ओर घुमाकर आगमें डालना (उदे० 'उतराना', 'चील्ही')।
राउत—पु० सरदार, क्षत्रिय, वीर, 'गुह राउतहिं जुहारे जाई।' रामा० २९०
राउर—सर्व० आपका 'भरत कि राउर पूत न होंही'-रामा० २१३ (उदे० 'उदबेग')। पु० अन्तःपुर 'गे सुमंत तब राउर माहीं।' रामा०२१७
राउल—पु० राजा, राजकुलका व्यक्ति।
राकस—पु० राक्षस (उदे० 'दैपत', 'बालकता', 'सुलाना')।
राकसिनि, राकसी—स्त्री० राक्षसी 'दहूँ ओर हैं राकसी दुःखदाएनी।' राम० ३२१
राका—स्त्री० पूर्णिमा, पूर्णिमाकी रात।
राकापति, राकेश—पु० चन्द्रमा।
राक्षस—पु० दैत्य, निशिचर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राख—स्त्री० भस्म, भभूत।

राखना—सक्रि० रक्षा करना, रोक रखना, ठहराना। 'जेहि पावा, राखा नहिं ताहू।' रामा० १०८; 'है ब्रजमें कोउ हितू हमारो, चलत गोपालहिं राखै।' सू० १८८

राखी—स्त्री० रक्षाबन्धनका डोरा, श्रावणीपूर्णिमाका पर्व।

राग—स्त्री० प्रेम, क्रोध, द्वेष, लेप, गानेकी ध्वनि, लाल रंग, लाली 'कुवलय मुकलित होत ज्यों परसि प्रातरबिराग।' मति० २३३

रागना—सक्रि० अलापना, गाना। अक्रि० रंजित होना, (मति० १९३) अनुरक्त होना, क्रुद्ध होना।

रागी—पु० प्रेमी। वि० लाल, अनुरक्त, रंजित। विषय-संलिप्त। स्त्री० रानी।

राघव—पु० रघु-वंशज, श्रीराम। एक बड़ी मछली।

राचना—अक्रि० अनुरक्त होना, तन्मय होना 'सो बर मिलहि जाहि मन राचा।' रामा० १२९। रंजित होना। अच्छा जान पड़ना। सक्रि० बनाना 'एक जीव देही द्वै राची, यह कहि कहि जु सुनावै।' सू० १३६

राछ—पु० अस्त्र-विशेष। जुलूस।

राछस—पु० राक्षस।

राज—पु० राज्य, देश, शासन, शासनकाल। घर बनाने वाला कारीगर। राजा।

राजकीय—वि० राज्य या राजाके सम्बन्धका।

राजकुँअर,-कुमार—पु० राजपुत्र।

राजगीर—पु० थवई, राज।

राजतिलक—पु० राज्याभिषेक।

राजदण्ड—पु० विधानानुमोदित दण्ड। राजशासन।

राजद्रोह—पु० बग़ावत।

राजधानी—स्त्री० राजाके रहनेका नगर, प्रधान नगर।

राजना—अक्रि० शोभा देना, (उदे० 'जनेत' 'जेहरि' रामा० १३३)।

राजन्य—पु० क्षत्रिय, राजा। अग्नि। खिरनी।

राजपंखि—पु० बहुत बड़ा पक्षी 'राजपंखि तेहि पर मेंडराहीं। सहस कोस तिनकै परछाहीं।' प० ६७

राजपंथ, राजपथ—पु० राजमार्ग, चौड़ा रास्ता।

राजपुरुष—पु० राज्यका कर्मचारी।

राजभोग—पु० एक महीन धान।

राजमान—वि० विराजमान, बैठा हुआ 'राजमान जल-जान उपरि दोउ कान्ह भानुकी नन्दिनी।' श्री भट्ट।

राजमार्ग,-वर्त्मा—पु० देखो 'राजपथ'।

राजयक्ष्मा, राजरोग—पु० क्षय रोग।

राजराज—पु० सम्राट्, श्रेष्ठराजा, कुबेर, चन्द्रमा।

राजलोक—पु० राजमहल '...केशव बहु राय राज, राज-लोक देखो।' के० १६८

राजविद्रोह—पु० बग़ावत।

राजस—वि० रजोगुणप्रधान, रजोगुणी। पु० क्रोध, गर्व, (वि० १६२)।

राजसत्ता—स्त्री० राजशक्ति।

राजसिक—वि० देखो 'राजस'।

राजसिरी—स्त्री० राजलक्ष्मी। 'बिन्दु किधौं मुख फेननके किधौं राजसिरी स्रव मंगल लाजनि।' के० ३२३

राजसी—वि० राजाओंका सा, रजोगुणी।

राजसूय—पु० एक यज्ञ।

राजस्व—पु० राजकर।

राजहंस—पु० वह हंस जिसकी चोंच और पाँव लाल होते हैं।

राजा—पु० नरपति, शासक, स्वामी।

राजाधिकारी—पु० न्यायाधीश।

राजि, राजिका—स्त्री० श्रेणी, कतार, रेखा। राई।

राजित—वि० शोभित। उपस्थित।

राजिव—पु० कमल।

राजी—स्त्री० देखो 'राजि' 'मनहु सुभग सावन घन-राजी।' रामा० १६१। वि० सम्मत, प्रसन्न, स्वस्थ।

राज़ीनामा—पु० वादी प्रतिवादीका समझौता, सुलहनामा।

राजीव—पु० कमल। एक मछली। एक तरहका हिरन।

राज्ञी—स्त्री० रानी।

राज्य—पु० राजाके अधीन देश, शासन।

राज्यतंत्र—पु० शासनप्रणाली।

राज्य-व्यवस्था—स्त्री० शासन-प्रबन्ध। क़ानून।

राट्—पु० राजा, श्रेष्ठ व्यक्ति।

राठ—पु० देखो 'राट्'। राज्य।

राठवर, राठौर—पु० राजपूतोंका एक भेद।

राड़—वि० तुच्छ, अधम, कायर। (विन० ४१०, साखी १७७)।

रात—स्त्री० रात्रि, रजनी। वि० लाल 'जनु मेरु पर्वत शृंग अद्भुत चन्द्र राजत रात जू।' राम० ३७१

रातना—अक्रि० रंग जाना, रक्त वर्ण होना, प्रेमासक्त होना (उदे० 'रंग', विनु० ३६६)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राता—वि० रंजित, लाल (उदे० 'उपरना', 'डहन')।
रातिचर—पु० राक्षस 'मारे रन रातिचर, रावन सकुल दल...'—कविता० २०२
रातिब—पु० हाथी घोड़े आदिका खाना (चना, रोट इ०)।
रातुल—वि० राता, लाल।
रात्रि, रात्री—स्त्री० रात।
राधना—सक्रि० उपासना करना, साधना, सिद्ध करना (कविता० २४१)।
राधा—स्त्री० विशाखा नक्षत्र, वैशाख पूर्णिमा। प्रेम।
रान—स्त्री० जाँघ।
राना—पु० राजा। अक्रि० रँगना, अनुरक्त होना 'कौन कली जो भौंर न राई।' प० १४४
रानी—स्त्री० राज्ञी, राजपत्नी, स्वामिनी।
रानीकाजर—पु० धानका एक भेद।
रापी—स्त्री० चमड़ा काटनेका औज़ार।
राब—पु० पका कर गाढ़ा किया हुआ गन्नेका रस।
राबड़ी—स्त्री० रबड़ी, बसौंधी।
राम—पु० रामचन्द्र, बलराम, परशुराम। तीनकी संख्या। राम राम करके = कठिनाईसे। राम राम हो जाना = मृत होना।
रामजनी—स्त्री० वेश्या, अज्ञात पिताकी पुत्री।
रामता—स्त्री० रामत्व, रामका गुण।
रामति—स्त्री० भिक्षार्थ भ्रमण।
रामना—अक्रि० रमना, विचरना।
रामफल—पु० शरीफा।
रामबाँस—पु० केतकीसे मिलता जुलता एक पौधा।
रामबाण,-बान—वि० तत्क्षण प्रभाव दिखानेवाला।
रामभोग—पु० एक आम। एक तरहका चावल।
रामरज—स्त्री० एक तरहकी पीली मिट्टी।
रामरस—पु० नमक।
रामराज्य—पु० रामका शासन या वैसाही सुखदायक शासन।
रामराम—पु० नमस्कार।
रामा—स्त्री० शोभावती स्त्री, नदी, लक्ष्मी, सीता, राधा।
रामायण, रामायन—स्त्री० रामकथा, वह पुस्तक जिसमें रामकथाका वर्णन हो।
राय—स्त्री० सलाह, सम्मति। पु० राजा, सरदार।
रायकरौंदा—पु० एक फल।
रायता—पु० दहीमें डाला हुआ कुम्हड़ा आदि।
रायभोग—पु० एक धान, राजभोग।
रायमुनी—स्त्री० 'लाल' पक्षी (रामा० ५१७)।
रायरासि—स्त्री० राजकोष।
रायसा—पु० देखो 'रासो'।
रार, रारि—स्त्री० लड़ाई, झगड़ा (उदे० 'तबेला', 'थँभना') 'स्वामि काज करिहउँ रन रारी।' रामा० २९०। राल 'लै अपार रार ऊन दून सूत सों कसी।' राम० ३४९
राल—स्त्री० एक तरहकी धूप। लसदार थूक, लार।
राव—पु० राजा (सू० १४९)। राजकुमार, सरदार, भाट। रव, शब्द 'जनु मराल प्रवाल छीनो, किंकनी कलराव।' सू० १९
रावचाव—पु० लाड़-प्यार। आमोद-प्रमोद।
रावट—पु० राजप्रासाद, महल 'रावट कनक सो तो कहँ भयेऊ।' प० १७५
रावटी—स्त्री० छोलदारी, छोटा तम्बू (भावि० ६०)। बारहदरी (भावि० ७८)।
रावत—पु० छोटा राजा, सरदार, स्वामी, वीर 'गोरा बादल राजा पाहाँ। रावत दुवौ दुवौ जनु बाहाँ।' ए० २७७
रावना—सक्रि० रुलाना।
रावर—दे० 'राउर'।
रावल—पु० राजा, सरदार। अन्तःपुर, महल—'चितहि उचाटि मेलि गये रावल मन हरि हरि जु लये।' भ्र० १०४
राशि, राशी—स्त्री० मेष, वृष आदि तारा-पुंज। ढेर।
राष्ट्र—पु० देश, राज्य, प्रजा। एक ही देश तथा राज्यमें बसनेवाला जनसमूह।
रास—पु० एक तरहका नाच (सू० ७८)। कोलाहल। नर्त्तक मंडली। लगाम। राशि या तारापुंज, ढेर, व्याज। ठीक (उदे० 'पैंत')। दत्तक।
रासधारी—पु० रासलीला करनेवाले।
रासभ—पु० गदहा, खच्चर।
रासमण्डल—पु० रास करनेवालोंका समूह, रास करनेकी जगह।
रासलीला—पु० कृष्णकी रासक्रीड़ा। कृष्णलीला सम्बन्धी अभिनय।
रासविलास—स्त्री० रास-क्रीड़ा।
रासि, रासी—स्त्री० पुंज, तारा-पुंज (उदे० 'ओन्ह')।
रासु—वि० सीधा, उचित।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रासो—पु० वह प्राचीन (हिन्दी) काव्य जिसमें किसी राजाके जीवनका वर्णन हो।

रास्ता—पु० पथ, मार्ग, उपाय, रीति। —देखना = इन्तज़ार करना। —बताना = उपाय सुझाना; टालना, चलता करना। —पर लाना = ठीक करना।

राह—स्त्री० रास्ता, नियम, प्रथा। रोहू मछली। राहु ग्रह।

राहगीर—पु० मुसाफ़िर।

राहचलता—पु० मुसाफ़िर। कोई साधारण या अनजान आदमी।

राहज़नी—पु० डकैती, लूट-मार।

राहत—स्त्री० सुख, आराम।

राहना—सक्रि० रेतने योग्य बनाना; जाँता कूटना।

राहर—स्त्री० अरहर।

राहि—स्त्री० राधा (विद्या० ६७,७८)। [अक्रि० रहना।

राही—पु० यात्री, पथिक। राधा (कबीर ११२)।

राहु—पु० एक ग्रह। रोहू मछली 'कली वेधि जनु भँवर भुलाना। हना राहु अरजुनके बाना।' प० १५२

रिंगन—स्त्री० रेंगना।

रिंगना—अक्रि० बहुत धीरे धीरे चलना (सू० १६४)।

रिंगाना—सक्रि० धीरे धीरे चलाना, फिराना 'सूर स्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रिंगाइ।' सू० ७९

रिंद—वि० मस्त। पु० स्वच्छंद व्यक्ति 'मनसो न यो जगत माहिं रिंद है।' सुन्द० ५७

रिआयत—स्त्री० नरम या दयायुक्त बर्त्ताव, कमी।

रिआया—स्त्री० प्रजा।

रिकवँच,-छ—स्त्री० एक प्रकारकी तरकारी जो अरुईके पत्तोंको बेसनमें लपेटकर बनायी जाती है (प० २७३)।

रिकशा—स्त्री० एक छोटी सवारी जिसे आदमी खींचते हैं।

रिकाब, रिकाबी—दे० 'रकाब', 'रकाबी'।

रिक्त—वि० शून्य, धनहीन।

रिक्षपति—पु० जाम्बवन्त, चन्द्रमा।

रिखभ—पु० बैल, एक बानर, संगीतमें एक स्वर।

रिखि—पु० ऋषि, मन्त्रद्रष्टा, तपस्वी, मुनि (दीन० १२९)।

रिग—पु० ऋग्वेद, ऋचा।

रिचा—स्त्री० वेदमन्त्र, स्तोत्र।

रिच्छ—पु० रीछ, भालु।

रिजक,-रिज़्क़—पु० जीविका, आहार 'काहे कूँ बबूरा भयो फिरत अज्ञानी नर, तेरो तो रिजक तेरे घर बैठे आइहै।'

रिजाली—स्त्री० बेहयापन, निर्लज्जता। [सुन्द० ४७

रिझकवार, रिझवार, रिझवैया—पु० रीझनेवाला, 'रीझत नहिं रिझवार वह बिना हिएके साँच।' रतन० २ 'बजवैया पुनि आप ही रिझवैया पुनि आप।' रतन० ७। प्रसन्न होनेवाला, प्रेमी (वि० २४२)।

रिझाना, रिझावना—सक्रि० प्रसन्न या मुग्ध करना (उदे० 'जमाना', 'तरबर')। अनुरक्त बनाना 'कहहु कवन बिधि लोक रिझाये।' रामा० ९१

रिझायल—वि० रीझनेवाला।

रिझाव—पु० रीझनेका भाव।

रितवना—सक्रि० रिक्त करना (उदे० 'दादि')।

रितु—स्त्री० ऋतु (उदे० 'पैराठ'), मौसिम। रजोदर्शन।

रिद्धिसिद्धि—स्त्री० ऋद्धि-सिद्धि।

रिन—पु० ऋण, कर्ज़, एहसान।

रिनिआँ, रिनियाँ, रिनी—पु० कर्ज़दार (बिन० २५९, [३९९)

रिपु—पु० वैरी, शत्रु।

रिपुता—स्त्री० दुश्मनी।

रिपोर्ट—स्त्री० घटना इ० का विस्तृत वर्णन, विवरण। सूचना, इत्तिला।

रिमझिम—स्त्री० हल्की वर्षा। क्रिवि० छोटी छोटी बूँदोंके रूपमें।

रियासत—पु० राज्य, ऐश्वर्य, अमीरी। [

रिर—स्त्री० हठ।

रिरना—अक्रि० गिड़गिड़ाना।

रिरिहा—पु० हठी व्यक्ति, गिड़गिड़ा कर माँगनेवाला 'रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काज।' विन०

रिलना—अक्रि० मिल जाना, प्रविष्ट होना। [५०२

रिवाज—पु० रीति, प्रथा, चलन।

रिश्ता—पु० नाता।

रिश्तेदार,-मंद—पु० नातेदार, सम्बन्धी।

रिश्वत—स्त्री० लाँच, घूस, उत्कोच।

रिषभ—पु० बैल। एक स्वर।

रिषि—पु० ऋषि, मुनि।

रिष्ट—पु० शुभ, भलाई। अनिष्ट, पाप। वि० प्रसन्न।

रिस—स्त्री० क्रोध (उदे० 'करपना', 'छाती')।

रिसवाना—सक्रि० खीजना, किसीपर क्रोध करना।

रिसहा—वि० क्रोधी।

रिसहाया—वि० क्रोधयुक्त, कुपित।

रिसाना—सक्रि० खीझना, किसीपर नाराज़ होना। अक्रि० नाराज़ होना (उदे० 'कोही', 'सुरना')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रिसानी, रिसि—स्त्री० क्रोध 'घोर धार भृगुनाथ रिसानी।' रामा० ३०

रिसाल—पु० राजाके पास भेजा जानेवाला राज्यकर, ख़िराज।

रिसाला—पु० घुड़सवार सेना।

रिसियाना,-याना—सक्रि० खीझना। अक्रि० क्रुद्ध होना।

रिसिक—स्त्री० खड्ग, तलवार।

रिसौंहा—वि० क्रोधयुक्त, कुपित सा (उदे० 'काऊ')।

रिहा—वि० मुक्त।

रिहाई—स्त्री० मुक्ति, छुटकारा।

रिहाना—सक्रि० छुड़ाना 'सुर कृपालु भये करुणामय आपुन हाथ सों दूत रिहाये।' सू० ५८

रींधना—सक्रि० उबालना, पकाना 'चूक लाइकै रींधे भाटा।' प० २७२

री—अ० एरी, अरी।

रीगन—पु० एक प्रकारका धान।

रीछ—पु० भालू। रीछराज = जांबवान।

रीझ—स्त्री० रीझनेकी क्रिया या भाव। मुग्ध होनेका भाव (उदे० 'खीझ', 'झलकना')।

रीझना—अक्रि० मुग्ध होना, प्रसन्न होना। (उदे० 'निमोत', 'पतिवर्त')।

रीठा-पु०, रीठी—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल।

रीढ़—स्त्री० पीठके बीचकी हड्डी, मेरुदंड।

रीत, रीति—स्त्री० प्रथा, रस्म, नियम, गति, स्वभाव, चाल्ढाल, ढंग, परम्परा।

रीतना—अक्रि० रिक्त होना, खाली होना।

रीता—वि० रिक्त, खाली (सू० २२) 'ज्योति पतंग हेति बपु जारत भये न प्रेम घट रीते।' सू० (ब्रज०)।

रीस—स्त्री० बराबरी, देवन सीस चढ़ाय कौन तुव रीस करैगो।' दीन० २१३। ईर्ष्या। क्रोध 'सुनि बलीठ मन उपनी रीसा।' प० १०२

रीसना—अक्रि० रिसाना।

रुंज—पु० एक बाजा 'बाजत पनव निशान पंचविधि रुंज मुरज सहनाई।' सूवे० ४६

रुंड—पु० बिना सिरका शरीर।

रुँदवाना—सक्रि० खुँदवाना, कुचलवाना।

रुँधती—स्त्री० बधिर-पत्नी, अरुंधती।

रुँधना—अक्रि० रुकना, उलझ जाना, रूँधा जाना।

रु—अ० और, नह।

रुआँली—स्त्री० (रुईकी) पूनी।

रुआ—पु० गेआँ, रोम।

रुआना—सक्रि० रुलाना।

रुआब—पु० रोब, दबदबा, डर।

रुई—स्त्री० कपासके फलके भीतरका धूआ जिससे कपड़े बनते हैं।

रुकना—अक्रि० आगे न बढ़ना, थमना, ठहरना, बन्द होना।

रुकमनी, रुक्मिणी—स्त्री० श्री कृष्णकी बड़ी रानी।

रुकवाना—सक्रि० दूसरेसे रोकनेका कार्य कराना।

रुकावट—स्त्री० अड़चन, बाधा, रोक, मनाही।

रुकुम रुक्म—पु० सोना, धतूरा, लोहा।

रुक़्क़ा—पु० पुरजा, पत्र।

रुक्ख—पु० रूख, वृक्ष।

रुक्ष—पु० पेड़। वि० रूखा, नीरस।

रुख़—पु० मुख, कपोल, प्रवृत्ति, मनका भाव (उदे० 'चिकनाना'), संकेत, कृपादृष्टि, शतरंजका एक मोहरा (हाथी) (प० २८४)। सामना 'रुख माँगत रुख ता सहुँ भयेऊ।' प० २८४। क्रिवि० तरफ, सम्मुख।

रुख़सत—स्त्री० छुट्टी, बिदाई।

रुख़सार—पु० कपोल।

रुखाई, रुखावट, रुखाहट—स्त्री० रूखापन, अशिष्ट या कठोर वर्त्ताव।

रुखाना—अक्रि० रूखा या स्नेहहीन होना। सक्रि० की तरफ रुख करना, लगाना '...विभीषण बैन तन-कानन रुखाये जू।' राम० ४७६

रुखानी—स्त्री० बढ़इयों या संगतराशोंका एक औज़ार।

रुखौंहाँ—वि० रूखा-सा।

रुग्ण, रुग्न—वि० रोगग्रस्त, बिगड़ा हुआ। टेढ़ा।

रुच, रुचि—स्त्री० इच्छा, प्रवृत्ति, स्वाद, चाव, अनुराग, दिलचस्पी, किरण, सौन्दर्य, 'मनो रसिक लोचन रुचि रचे।' के० १५५, कान्ति 'सहज सुचिक्कन स्याम रुचि सुचि सुगन्ध सुकुमार।' वि० ४३

रुचना—अक्रि० अच्छा लगना (उदे० 'चितना') 'तप तीरथ उपवास दान मख जेहि जो रुचै सो सो।' विन० ३०७

रुचिकर—वि० अच्छा लगनेवाला।

रुचिकारक,-कारी—वि० रुचिकर (अ० ६), स्वादिष्ट।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुचिर—वि० सुंदर, स्वादिष्ट।
रुचिराई—स्त्री० मनोहरता, शोभा।
रुच्छ—वि० रूखा, स्नेहहीन, कठोर, क्रुद्ध।
रुज—पु० रोग, कष्ट, घाव।
रुजा—स्त्री० रोग, पीड़ा। रुजाली = रोगोंका समूह।
रुजी—वि० रुग्ण, बीमार।
रुजु—वि० प्रवृत्त, 'रुजू होव नँदलाल सै चित, वित ल्याइ सुजान।' रतन० १५ (७१, १०१)। आकृष्ट।
रुझना—अक्रि० उलझना। घाव भरना।
रुट—पु० रिस, क्रोध।
रुणित—वि० बजता हुआ।
रुत—पु० ध्वनि, कल-रव। स्त्री० ऋतु।
रुतबा—पु० ओहदा, दरजा। प्रतिष्ठा।
रुदन—पु० रोना।
रुदराछ—दे० 'रुद्राक्ष' (प० ५७)।
रुदवा—पु० एक तरहका चावल (प० २७०)।
रुदित—वि० रोता हुआ।
रुध—वि० रुका हुआ, घेरा हुआ, बंद।
रुद्र—पु० शिवजीका एक रूप, ग्यारहकी संख्या। वि० भयानक।
रुद्राक्ष, रुद्राछ—पु० एक पेड़ या उसका बीज।
रुद्राणी—स्त्री० पार्वतीजी।
रुधिर—पु० खून, रक्त, मंगलग्रह, केसर।
रुधिराशन, रुधिराशी—वि० खून पीनेवाला।
रुनझुन—स्त्री० झनकार, मंदध्वनि।
रुनाई—स्त्री० अरुणाई, लालिमा 'नील स्वेतपर पीत लाल मनि लटकनि भाल रुनाई।' सू० ५२
रुनित—वि० बजता हुआ, शब्दायमान 'चरन रुनित नूपुर कटि किंकिन, करतल ताल रसाल।' सू० १५४
रुनी—पु० घोड़ोंका एक भेद।
रुनुक-झुनुक, रुनुझुन—स्त्री० देखो 'रुनझुन'।
रुपना—अक्रि० जमना, अड़ना 'वह बाजि लै अरु धीर। रणमें रह्यो रुपि धीर।' के० ३३९, ठहरना (छत्र० ८८)।
रुपमना—वि० स्त्री० रूपवती, सुंदर 'एक सों एक चाहि रुपमनो।' प० २००
रुपया, रुपैया—पु० चाँदीका एक सिक्का। धन।
रुपहला, -ला—वि० चाँदीके रंगका। चाँदीके योगसे बना हुआ।
रुमंच—पु० रोमांच।
रुमांचित—वि० रोमाञ्चित, पुलकित।
रुमाल—पु० रूमाल।
रुमावली—स्त्री० रोमराजि, रोमोंकी पंक्ति या रेखा।
रुराई—स्त्री० चारुता, सुन्दरता।
रुरुआ—पु० एक तरहका उल्लू।
रुरुचु—वि० रूखा।
रुलाना—सक्रि० रोनेमें प्रवृत्त करना। तंग करना।
रुवा—पु० भूआ।
रुवाब—पु० देखो 'रुआब'।
रुष—पु० रुख। रोष, क्रोध।
रुष्ट, रुस्ट—वि० क्रुद्ध, रूठा हुआ।
रुसना—अक्रि० रूठना।
रुसवा—वि० निंदित, बदनाम।
रुसवाई—स्त्री० बदनामी, निंदा।
रुसिन—वि० क्रुद्ध, अप्रसन्न।
रुहठि—पु० रूठनेकी क्रिया।
रुहिर—स्त्री० रुधिर, खून 'खाँडै धार रुहिर बहु भरा।' प० ४४
रूँदना—सक्रि० कुचलना (प० २५३) 'माटी रूँदै कुम्हारसों हूँ क्यों रूँदै मोहिं।' साखी ६५
रूँध—वि० रुका हुआ।
रूँधना—सक्रि० काँटों आदिसे घेरना, छेकना 'चुनहु मधुप! निर्गुन कंटक तें राजपंथ क्यों रूँधो।' भ्र० २६। 'रूँधहु करि उपाउ बरवारी।' रामा० २०७
रू—पु० मुख, सिरा, सामना। रूसे = अनुसार।
रूई—स्त्री० देखो 'रुई'।
रूख, रूखड़ा—पु० वृक्ष 'पाके फल वे देखि मनोहर चाहे कृपा करि रूख।' भ्र० ४५ (उदे० 'दाखना')।
रूखना—अक्रि० रूठना।
रूखा—वि० स्नेहहीन, सूखा, नीरस, अरुचिकर, उदासीन, कठोर (उदे० 'चिकनाना') 'अब कैसे रहति स्याम रँगराती, ए बातें सुनि रूखी।' सू० २२६ 'जे जन रूखे विषय रस, चिकने राम सनेह।' दोहा० ११० (सू० १८)।
रूचना—सक्रि० रुचना, अच्छा लगना।
रूझना—अक्रि० उलझना, 'जो घर ध्यान न आव सेवि रूझै।' अखरा० ३४३। रुद्ध हो जाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूठ, रूठनि—स्त्री० रूठनेकी क्रिया, अप्रसन्नता, क्रोध।
रूठना—अक्रि० रुष्ट होना, अप्रसन्न होना, बिगड़ जाना। (प० १९०)।
रूढ़—वि० पैदा हुआ, प्रसिद्ध, आरूढ़। (सू० १२) कठोर, उद्धत।
रूढ़ि—स्त्री० उत्पत्ति, प्रसिद्धि, वृद्धि, आरूढ़ होनेका भाव, प्रथा।
रूप—पु० आकार, सुन्दरता, वेश, शरीर, लक्षण, चाँदी, (उदे० 'डार', प० ६०) स्वभाव। वि० रूपवान्, 'समय समय सुंदर सबै रूप कुरूप न कोइ।' वि० १७८। अनुरूप। तुल्य। [† चाँदी।
रूपक—पु० एक अलंकार, दृश्यकाव्य, रूप, प्रतिकृति, †
रूपमंजरी—स्त्री० धानका एक भेद, एक फूल। (उदे० ['गौरी')।
रूपमती—वि० रूपवाली, सुंदर।
रूपमय, रूपमान—वि० सुंदर।
रूपवंत, रूपव, रूपवान्—वि० अच्छे रूपवाला, सुंदर 'रूपव कौन अधिक सीतातें जन्म वियोग भरे।' [सू० ६
रूपा—स्त्री० चाँदी।
रूपी—वि० के सदृश रूपवाला, समान, सुंदर।
रूबरू—क्रिवि० सामने।
रूम—पु० तुर्की देश।
रूमना—अक्रि० हिलना, झूलना।
रूमाल—पु० मुँह पोंछनेका कपड़ा।
रूर—वि० दग्ध, तप्त।
रूरना—अक्रि० चिल्लाना 'संगहिं सबै चलौ माधवके ना तौ मरि हौं रूरि।' सूबे० ४३९
रूरा—वि० अच्छा, सुंदर 'दीन्हों तिनको हम ही वर रूप, रूपा—दे० 'रूख', 'रूखा'। [रूरो।' के० ७
रूसना—अक्रि० रूठना 'तेहि रिस हौं परहेली, रूसेउ नागर नाँह।' प० ४० (उदे० 'कालर')।
रूसा—पु० अहसा (मति० १८३)।
रूसी—स्त्री० सिरके चमड़ेपर छिलकेके रूपमें जमा हुआ मैल। वि० रूस-सम्बन्धी, रूसका।
रूह—स्त्री० आत्मा, सत्त।
रूहना—अक्रि० आरूढ़ होना, छा जाना, घेरना, 'साम घटा मेघन्ह अस रूहा।' प० २५२
रूहना—अक्रि० गधेका बोलना।
रेंगना—अक्रि० पेटके बल चलना, धीरे धीरे चलना या सरकना (प० ७, भ० ६६) 'कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगै'—सूबे० ५२
रेंगनी—स्त्री० एक तरहका कँटीला छोटा पौधा, भटकटैया।
रेंगाना—सक्रि० धीरे धीरे चलाना 'अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई।' रामा० ३९७
रेंट—पु० नाकका मैल।
रेंड—पु० अंडीका वृक्ष (उदे० 'गाड़ना')।
रेंड़मेवा—पु० पपीता। रेंडी = रेंड़का फल।
रे—अ० अरे, हे।
रेख, रेखा—स्त्री० लकीर (उदे० 'लगा'), भूँछोंकी रेखा, पाकृति, [illegible] (उदे० 'धंधरकधोरी', 'थपना')।
रेखता—पु० एक तरहकी ग़ज़ल।
रेखना—सक्रि० (रेखा) खींचना, निशान बनाना,
रेखित—वि० अंकित, खरोंचा हुआ। [खरोंचना।
रेग—स्त्री० बालू, धूल (सुजा० ८६)।
रेगिस्तान—पु० मरुस्थल, बालूका मैदान।
रेचक—वि० दस्त लानेवाला। पु० दस्तावर दवा, जमालगोटा, प्राणायामकी एक क्रिया।
रेचना—सक्रि० वायु बाहर निकालना, कोष्ठशुद्धि करना।
रेज़ा—पु० छोटा टुकड़ा, थान 'ज्यों कोरी रेजा घुने नियरा आवै घोर।' साखी ७६
रेणु, रेणुका—स्त्री० धूल, कणिका।
रेत—स्त्री० बालू। पारा, वीर्य।
रेतना—सक्रि० रगड़कर काटना।
रेता—स्त्री० बालू 'उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता।' रामा० २४७
रेती—स्त्री० बालू, नदी या समुद्रके किनारे की बलुई
रेतीला—वि० बालुकामय। [ज़मीन। रेतनेका औज़ार।
रेतु, रेतुका—दे० 'रेणु' 'रेणुका'।
रेफ—पु० 'र' का यह रूप ' ' । रकार।
रेबा, रेवा—पु० एक तरहका उल्लू।
रेल—स्त्री० बहाव, भीड़, भरमार (भू० २२, दास ६५)। रेलगाड़ी। लोहेकी पटरी जिसपर रेल चलती है।
रेलठेल, रेलपेल—स्त्री० भीड़, आधिक्य।
रेलना—सक्रि० ठेलना, धक्का देना। डूब या जाना। अधिक होना।
रेला—पु० धक्का, धावा, बहाव, आधिक्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रेवड़ी—स्त्री० चीनी और तिलसे बनी हुई एक मिठाई।
रेवती—स्त्री० एक नक्षत्र, बलदेवजीकी स्त्री।
रेवा—स्त्री० नर्मदा, रति, दुर्गा।
रेशम—पु० पाट।
रेशा—पु० बारीक सूत, तंतु।
रेष—स्त्री० रेख।
रेह—स्त्री० खारी मिट्टी, राख (प० ४)। रेखा 'लसत कसौटीमें मनो, तनक कनककी रेह।' मति० १८८। 'नव जलधर तरे सञ्चर रे जनु बीजुरि रेह।' विद्या० ४१ (६९, २६९ भी)।
रेहन—पु० गिरवी।
रेहल—स्त्री० पुस्तक रखनेकी मुड़ जानेवाली चौकी।
रेहू—पु० एक तरहकी मछली। रोहू।
रैंट—दे० 'रेंट' (उदे० 'कलोई')।
रैअति—स्त्री० रैयत, प्रजा।
रैतुवा—पु० रायता।
रैदास—पु० एक भक्त, एक जाति।
रैन, रैनि—स्त्री० रात (उदे० 'बसेरा')। रेणु 'श्री बैकुंठनाथ उरबासिनि चाहत जा पदरैन।' सू०। [(ब्रज० २०)
रैयत—स्त्री० प्रजा।
रोंग—पु० शरीरपरका बाल।
रोंगटा—पु० सिरके अतिरिक्त शरीरपरके बाल।
रोंगटी—स्त्री० बेईमानी (खेल इ० में)।
रोंव, रोआँ—पु० रोम, शरीरपरके छोटे छोटे बाल।
रोआब—पु० दबदबा, प्रभाव।
रोउँ, रोवँ—पु० रोम (उदे० 'नगवाली')।
रोक—स्त्री० बाधा, प्रतिबंध, मनाही। पु० नकद रुपया (उदे० 'धावन')।
रोकटोक—स्त्री० बाधा, निषेध।
रोकड़—स्त्री० नकद रुपया, धन।
रोकड़िया—पु० मुनीम।
रोकना—सक्रि० ठहराना, बाधा डालना, वशमें रखना, रोख—पु० रोष, क्रोध। [थामना, सहना, बन्द करना।
रोग—पु० बीमारी। संकट।
रोगदई, रोगदैया—स्त्री० रोंगटी, बेईमानी।
रोगन—पु० तेल, पालिश।
रोगिया, रोगिहा—पु० रोगी व्यक्ति।
रोगी—वि० रोगग्रस्त। पु० बीमार आदमी।
रोचक—वि० मनोरंजक, अच्छा लगनेवाला, भूख पैदा करनेवाला।
रोचन—पु० गोरोचन, रोली 'दधि दुरवा रोचन फल फूला।' रामा० ५३६। काला सेमर, प्याज, इ०। वि० रोचक, शोभावान्। लाल।
रोचि, रोचिस्—स्त्री० शोभा, चमक, दीप्ति, किरण।
रोज़—पु० दिन। अ० प्रतिदिन। रोज़=पु० रोना, विलाप 'बरजा पितै हँसी औ रोजू'। प० ११४ (१२६) (मति० २४९)।
रोज़गार—पु० उद्यम, धंधा, व्यापार।
रोज़मर्रा—पु० बोलचाल, मुहावरा। अ० हर रोज़।
रोज़ा—पु० व्रत। मुसलमानोंका विशेष व्रत।
रोज़ाना—क्रिवि० हमेशा, हर रोज़।
रोज़ी—स्त्री० जीविका, जीवन-निर्वाहका साधन, नित्यका भोजन।
रोज़ीना—पु० दैनिक मज़दूरी।
रोझ—स्त्री० नीलगाय (उदे० 'झँवकारा'), 'हरिय रोझ कोइ भागि न बाँचा।' प० २४१, 'हम भी पाहन पूजते होते बनके रोझ।' साखी १८०
रोट—पु० मोटी रोटी, साना हुआ आटा, चूर्ण, 'बिसरिहि भुगुति, होइ सब रोटा।' प० १०२
रोटिहा—पु० रोटीके बदले काम करनेवाला नौकर।
रोटी—स्त्री० चपाती, भोजन। जीविका।
रोठा—पु० एक तरहका बाजरा, रोड़ा, टुकड़ा। 'रोंक सो कौन सोपारी रोठा।' प० २१५
रोड़ा—पु० पत्थर आदिका टुकड़ा, कंकड़ (साखी १९८), [बाधा।
रोदन—पु० रोना।
रोदसी—स्त्री० पृथिवी, स्वर्ग (उदे० 'पूना')।
रोदा—पु० बिछा, प्रत्यञ्चा।
रोध—पु० रुकावट। किनारा।
रोधना—सक्रि० रोकना, दबाना।
रोना—अक्रि० रोदन करना, पछताना। कोसना। पु० दुःख।
रोपना—सक्रि० लगाना, जमाना, 'रोपै बेद बखानी...' बोना। स्थापित करना। 'सभा माँझ पन करि पद रोपा।' रामा० ४६८ (उदे० 'लगना'), रोकना।
रोपनी—स्त्री० रोपाई, धान आदिके पौधे रोपनेका काम।
रोब—पु० दबदबा, आतंक, धाक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रोमंथ—पु० पगुर, जुगाली।
रोम—पु० रोवाँ (उदे० 'कमरी') छिद्र।
रोमपाट—पु० ऊनी वस्त्र।
रोमराजी,-लता—स्त्री० रोमावली।
रोमहर्ष, रोमांच—पु० रोओंका खड़ा हो जाना।
रोमाली, रोमावली—स्त्री० रोओंकी रेखा जो नाभिसे ऊपरको जाती है (उदे० 'वली')।
रोयाँ—पु० रोम।
रोर—स्त्री० कोलाहल, शब्द, हलचल, (उदे० 'जोर', भ्र० ११७) दरिद्रता ? (सुवि० ८)। वि० प्रबल, दुर्दम, 'ते रन-रोर कपीस-किसोर बड़े बरजोर परे फँग पाये।' कविता० १९५। उद्धत, दुष्ट।
रोरी—स्त्री० रोली, 'औचक ही देखी तहँ राधा नयन विशाल भाल दिय रोरी।' सूवे० ७६७। दौड़ धूप, चहलपहल, कोलाहल 'रोरि परी गोकुलमें जहँ तहँ गाइ फिरत पय गोदोहनको।' सूवे० २६६। वि० हरा, नच्छा, सुंदर।
रोल—स्त्री० रोर, कोलाहल। पु० प्रवाह।
रोला—पु० एक छन्द। कोलाहल। तुमुल युद्ध।
रोली—स्त्री० रोरी, लाल बुकनी।
रोवनहार, रोवनिहार—पु० रोनेवाला, शोक मनानेवाला।
रोवना—अक्रि० रुदन करना (उदे० 'अंधर')। वि० शीघ्र रो देनेवाला, चिढ़नेवाला।
रोवनी-धोवनी—स्त्री० शोक मनानेकी क्रिया। वि० शोक प्रकट करनेवाली।
रोवाँ—पु० रोम, शरीरपरका बाल (उदे० 'फीली')।
रोवासा—वि० रोनेको उद्यत।
रोशन—वि० प्रकाशमान, ज़ाहिर।
रोशनदान—पु० गवाक्ष।
रोशनाई—स्त्री० स्याही, रोशनी।
रोशनी—स्त्री० प्रकाश, उजेला। चिराग़। दीपक-समूहका [प्रकाश।
रोष—पु० क्रोध, द्वेष, चिढ़।
रोषी—वि० क्रोधी
रोस, रोसनाई, रोसनी—दे० 'रोष' (उदे० 'बकाउ'), 'रोशनाई', 'रोशनी'।

रोहु—पु० चंद्र, चढ़ाई। नील गाय।
रोहना—अक्रि० सवारी करना, चढ़ना 'चित्र चकोरके चंद किधौं मृगलोचन चाढ़ विमानन रोही।' राम० २५५। धारण किया जाना 'नखकी सी रेखा चन्द्र, चंदन सी चारु रज, अंजन सिंगारहू गरल रुचि रोहिबे।' के० ९५। सक्रि० चढ़ाना, धारण करना।
रोहिणी, रोहिनी—स्त्री० एक नक्षत्र, बलदेवकी माता, बिजली, एक मछली, चन्द्र-पत्नी।
रोहित—वि० लोहित, लाल। पु० लाल रंग, रोहू मछली, बर्रैका फूल।
रोही—पु० एक हथियार। पीपल वृक्ष, रोहू मछली। वि० चढ़नेवाला।
रोहू—स्त्री० एक मछली (उदे० 'चाल्ह')।
रौंदना—सक्रि० पाँवसे कुचलना।
रौ—स्त्री० प्रवाह, वेग, चाल, धुन। पु० आवाज।
रौग़न—पु० देखो 'रोग़न'।
रौज़ा—स्त्री० समाधि, बाग़।
रौताइन—स्त्री० रावतकी स्त्री। ठकुराइन।
रौताई—स्त्री० स्वामित्व, ठकुराई, समर (दोहा० १०६)।
रौद्र—वि० भयानक, क्रोधपूर्ण। पु० क्रोध, एक रस। धूप (भ्र० ६२)।
रौन—पु० रमण करनेवाला, पति।
रौनक़—स्त्री० तेज, शोभा, कांति, प्रफुल्लता, चहलपहल।
रौना—पु० रोदन। गौना।
रौनी—स्त्री० रमणी।
रौर—पु० रोर, कुहराम 'तिनके जात बहुत दुख पायो, रौरि परी यहि खेरे।' सूवे० ३०५। शब्द 'तमचुर खग रौर सुनहु बोलत बनराई।' सू० ५८
रौरव—पु० एक नरकका नाम।
रौराना—अक्रि० शोर करना, बकना।
रौरे—सर्व० आप।
रौला—पु० शोरगुल, हलचल।
रौल, रौलि—स्त्री० चपत 'जम सिर घाली रौल।' साखी २६
रौस—स्त्री० चालढाल, क्यारियोंके बीचका रास्ता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ल

लंक—स्त्री० लंका। कमर 'तोरयो सरासन संकरको जेहि सोच कछा तुव लंक न तोरहि।' राम० ३७९ (दे० 'लीन', 'बक्षोज')।

लंकनायक,-पति, लंकापति—पु० रावण, विभीषण।

लंग—वि० लंगड़ा। पु० लँगड़ापन। लौंग, काष्ठ।

लंगड़—पु० लंगर। वि० पंगु।

लंगड़ा—वि० जिसका एक पाँव टूटा हो।

लँगड़ाना—अक्रि० लंगड़ा होकर चलना।

लंगर—पु० जहाज आदिको रोक रखनेके लिए लोहेका बड़ा काँटा। लोहेकी बज़नी जंजीर। लटकती हुई भारी चीज़, ठेंगुर, बागडोर 'बिडरत बिलुकि जानि रथते मृग, जनु ससंक ससि लंगर डारे।' स० १२०। वि० बज़नी। शरारती, ढीठ 'लरिका लैबे के मिसनि लंगर मो ढिग आय।' बि० २२

लँगराई, लँगराई, लँगरी—स्त्री० शरारत। 'सूरबचन मिथ्या लँगराई ये दोऊ ऊधोकी न्यारी।' भ्र० ५३, (उदे० 'गँवुरी')। [† हुआ भोजन मिले।

लंगरख़ाना—पु० सत्र, वह स्थान जहाँ गरीबोंको पका †

लंगूर, लंगूर—पु० दुम। बन्दर (कबीर ३०२)।

लँगरैया—दे० 'लँगराई' (सूवे० ११२)।

लंगूरफल—पु० नारियल।

लंगूल—पु० दुम, पूँछ।

लँगोटी—स्त्री० कछनी, बहुत छोटी धोती।

लंघन—पु० लाँघनेकी क्रिया। फ़ाक़ा, उपवास।

लंघना—सक्रि० लाँघन, डाँकना (उदे० 'जोना,' 'दरखाना')। वि० जिसने लंघन किया हो, भूखा 'सिंह बचा जो लंघना तौ भी घास न खाय।' साखी ३०

लंठ—वि० उजड्ड। निरक्षर, मूर्ख।

लंतरानी—स्त्री० लंबी चौड़ी बातें, डींग।

लंपट—वि० कामी, कुकर्मी, लोभी, 'कहि श्रीभट नटवर रसलम्पट प्रिय तन हाथ न डार री।' श्रीभट्ट। छली (उदे० 'अनिआई')।

लंब—वि० लम्बा। पु० समकोण बनानेवाली लम्बी रेखा।

लंबरदार—पु० महालका प्रधान जमीन्दार।

लंबा—वि० जो किसी एक ही दिशामें दूरतक गया हो, ऊँचा, दीर्घ, विस्तृत।

लंबान—पु० लम्बाई।

लंबोतरा—वि० लम्बापन लिये हुए।

लंबोदर—पु० गणेशजी। अधिक खानेवाला व्यक्ति।

लउ—स्त्री० लगन, लौ 'साधक नाम जपहिं लउ लाये।' रामा० १८

लकड़बग्घा—पु० एक मांसाहारी जंगली जन्तु।

लकड़हारा पु० जंगल आदिसे तोड़ कर लकड़ी बेचने [वाला।

लकड़ी—स्त्री० इंधन, लाठी, काष्ठ।

लक़ब—पु० उपाधि, पदवी

लकलक—वि० बहुत दुबला पतला।

लक़वा—पु० वातरोग विशेष।

लकीर—स्त्री० रेखा, धारी। पंक्ति।

लकुच—पु० बड़हर।

लकुट—स्त्री० छड़ी, लाठी (उदे० 'उनमानना', सू० ६७) पु० एक वृक्ष।

लकुटिया, लकुटी—स्त्री० लाठी 'जेहि डर भ्रमत पवन रवि ससि जल, सो क्यों डरे लकुटियाके डर।' सू० ७१ (उदे० 'कमरिया')।

लक्का—पु० एक तरहका कबूतर।

लक्खी—पु० एक तरहका घोड़ा। लखपती। वि० लाखके

लक्तक—पु० अलक्तक, महावर। लत्ता। [रंगका।

लक्ष—पु० सौ हजार। उद्देश्य।

लक्षण—स्त्री० आसार, चिह्न, शरीर परके भाग्यसूचक चिह्न। परिभाषा।

लक्षणा—स्त्री० शब्दकी वह शक्ति जिससे विशेष अर्थ लक्षित होता है।

लक्षना—स्त्री० लक्षणा। अक्रि० दिखाई पड़ना 'शुभ अंग अंगद कंध लक्ष्मन लक्षिये यहि भाँति जू।' राम० ३७१। देखना।

लक्षि—स्त्री० लक्ष्मी।

लक्ष्मी—स्त्री० विष्णुपत्नी। शोभा, सम्पत्ति, गृहिणी।

लक्ष्य—पु० उद्देश्य, निशाना।

लखन—पु० लक्ष्मण। स्त्री० लखनेकी क्रिया

लखना—सक्रि० देख कर समझ लेना, ताड़ना (उदे० 'छीजना') 'लखन लखेउ रघुबंसमनि, ताकेउ हरको दण्ड।' रामा० १४१। देखना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लखपती—पु० लाख रुपयेवाला, धनी।
लखलखा—पु० बेहोशी दूर करनेवाली एक सुगंधित वस्तु।
लखाउ, लखाव—पु० चिह्न, पहिचान (रामा० ९४), निशानी।
लखाना—सक्रि० दिखलाना (उदे० 'जुन्हैया'), सुझाना (साखी १)। अक्रि० देख पड़ना।
लखिमी—स्त्री० लक्ष्मी, सम्पत्ति।
लखिया—पु० लखनेवाला।
लखुआ—पु० गेंहूका एक रोग, लाखा।
लखेटा—पु० चूड़ियाँ बनानेवाला, चुड़िहार।
लखेदना—सक्रि० खदेड़ना, भगाना।
लखौट—स्त्री० लाखकी चूड़ी।
लखौटा—पु० लेख, लिखावट, सिंदूर रखनेका डिब्बा। एक सुगन्धित लेप। स्त्री० लाखकी चूड़ी 'हाथनि लखौटा पाइ चूरा पचमनी गरै गोरीकी जुगल जानु है उन्हारि केराकी।' रसवि० २९
लखौरी—स्त्री० भ्रमरीका घर। पुराने ढँगकी ईंट।
लग—स्त्री० लगन, प्रेम। पतली छड़ी 'लहलहाति तन तरुनई लचि लगौं लफ जाय। लगैं लाँक लोइनभरी, लोइनु लेति लगाइ।' वि० २२०। अ० लिये। तक, पास। लौं, के समान (उदे० 'लगि')
लगढग—क्रिवि० क़रीब, लगभग।
लगन, लगनि—स्त्री० लगाव, दृढ़ता, लौ। प्रेम। विवाहमुहूर्त्त, कोई शुभ मुहूर्त्त। राशिका उदय (उदे० 'उदयना')।
लगना—अक्रि० प्रतीत होना, जान पड़ना। पीड़ा या जलन उत्पन्न करना। शुरू होना। आवश्यक होना। एक वस्तुका दूसरी वस्तुसे छूजाना। स्थापित होना। रगड़ खाना या टकरा जाना। जुड़ना, मिलना। प्रवृत्त होना। चुभना, गड़ना। छेड़ छाड़ करना। बंद होना। व्यय होना। चढ़ाया जाना, लेप किया जाना, चिपकाया जाना। उगना, उत्पन्न होना। असर होना। चिह्नित होना। हुआ जाना। पीछे पड़ना, साथ होलेना। ठीक बैठना, आरोपित होना। रिश्तेमें कुछ होना। सजाया जाना।
लगभग—क्रिवि० अन्दाजन, प्रायः, क़रीब।
लगर—पु० एक शिकारी पक्षी, बाज (रतन० ४०)।
लगलग—वि० लड़कड़, बहुत नाजुक।
लगाव—वि० व्यर्थ। असफल।
लगवार—पु० यार, उपपति।
लगातार—क्रिवि० निरन्तर, सिलसिलेसे।
लगान—पु० जमींदारको मिलनेवाला भूमिकर, पोत, राजस्व।
लगाना—सक्रि० छुवाना, टकरा देना, मिलाना, जोड़ना, खर्च करना, प्रवृत्त करना, नियुक्त करना, बन्द करना, लेप करना, चढ़ाना, स्थापित करना, आरोपित करना, चिह्नित करना, दुहना, सजाना, प्रज्वलित करना, चुगली खाना, धारण करना।
लगाम—स्त्री० लोहेकी काँटेदार छड़ जो घोड़ेके मुँहमें दे दी जाती है। बाग, रास (उदे० 'ताजना')। नियंत्रण, रोक।
लगाय—स्त्री० लगन, प्रेम, प्रीति 'सूर जहाँ लौं स्यामगात हैं तिन सों क्यों कीजिए लगाय।' भ्र० ३८
लगार—स्त्री० लगाव, लगन (साखी ३९)। सिलसिला, बँधेज, जिससे लगाव हो, भेद लेनेको भेजा गया व्यक्ति।
लगालगी—स्त्री० लगन, स्नेह, सम्बन्ध 'लगालगी लोइन करहिं नाहक मन बँध जाहिं।' वि० १६९। लगान।
लगाव-पु० लगावन—स्त्री० सम्बन्ध।
लगावट—स्त्री० प्रेम, लगन। मोहक चेष्टा, सम्बन्ध।
लगावना—देखो 'लगाना'।
लगि—अ० देखो 'लग', 'मोहि लगि भे सियराम दुखारी।' रामा० २८६, 'जहँ लगि नाथ नेह अरुनाते।' रामा० २२९। 'बौरी लगि दौरीं उठीं चोरी लों भ्रमति मनि…' भावि० २१। स्त्री० लगन, लगी।
लगी—स्त्री० बाँसकी लम्बी छड़ी।
लगुड़—पु० डंडा।
लगूर, लगूल—स्त्री० दुम।
लगौहा—वि० लगनेवाला, रीझनेवाला।
लग्गा—पु० लंबा बाँस। कार्यारंभ (लग्गा लगाना)।
लग्गी, लग्घी—स्त्री० बाँसकी लंबी छड़ी, लंबा बाँस।
लग्घड़—पु० बाज। देखो 'लगड़बग्घा'।
लग्न—पु० मुहूर्त्त, राशिका उदय, विवाह। स्त्री० देखो 'लगन'। वि० लगा हुआ।
लघिमा—स्त्री० लघु होनेकी क्रिया, एक सिद्धि।
लघु—वि० छोटा, हलका, फुर्तीला, थोड़ा, नीच।
लघुत्व, लघुता—स्त्री० छोटाई, नीचता, तुच्छता, हलकापन, फुर्ती 'कोटि भाँतिन पौनते मनते महा लघुतालसे' राम० ४८९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लघुशंका—स्त्री० मूत्रत्याग। पेशाबकी हाजत।
लचकना—अक्रि० मोच खाना, झुकना (उदे० 'चौसर', लचकनि, लचनि—स्त्री० लचक, झुकाव। ['विजन')।
लचकीला, लचलचा—वि० जो आसानीसे लच जाय।
लचकौहाँ—वि० लचनेवाला, झुका हुआ (मति० १७४)।
लचना—दे० 'लचकना'।
लचाना—अक्रि० झुकाना, नीचा करना (भावि० १८)।
लचार—वि० विवश, मजबूर।
लचारी—स्त्री० विवशता। नज़र, भेंट। एक तरहका गीत।
लचीला—वि० जो आसानीसे झुक सके, मुड़नेवाला।
लच्छ—पु० उद्देश्य, निशाना, 'जीभ कमान बचन सर नाना। मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना।' रामा० २१८। लाख। बहाना। स्त्री० लक्ष्मी।
लच्छण, लच्छन—पु० लक्षण, चिह्न। लक्ष्मण।
लच्छमी—स्त्री० विष्णुपत्नी, संपत्ति, शोभा।
लच्छा—पु० एक जेवर। लपेटा हुआ सूत इ०, अंटी।
लच्छि,-मी—स्त्री० लक्ष्मी (उदे० 'दीठना', रामा० १५६)
लच्छित—वि० देखा हुआ, अंकित। लक्षणयुक्त।
लच्छिनिवास—पु० लक्ष्मीपति, नारायण।
लच्छी—स्त्री० छोटा लच्छा, अंटी। लक्ष्मी 'लच्छी सी जहँ मालिन बोलै।' सू० ४७। पु० घोड़ेका एक भेद।
लच्छेदार—वि० जिसका क्रम जल्द न टूटे (बात)। [लच्छोंवाला।
लछन—पु० लक्षण, लक्ष्मण।
लछना—सक्रि० लखना, ताड़ना।
लछमी, लछिमी—स्त्री० लक्ष्मी।
लज—स्त्री० लाज, शर्म।
लजना—अक्रि० लज्जित होना (रघु० २) 'तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै।' विन० २३९
लजनी—स्त्री० लजालू पौधा।
लजवाना—सक्रि० शर्मिन्दा करना।
लजाना—अक्रि० लज्जित होना (उदे० 'अकृत', 'चेराई', 'नासिक'), संकोच करना। सक्रि० लज्जित करना
लजारू, लजालू—स्त्री० एक पौधा। [(उदे० 'छदंब')।
लजियाना—देखो 'लजाना'।
लज़ीज़—वि० ज़ायकेदार, स्वादिष्ट।
लजीला, लजीर—वि० लजाशील 'विदित न सलमुख है सकै मसिचाँ लहीं लजीर।' रतन० ३१
लजोहा, लजौहा—वि० लज्जायुक्त, लजीला।
लजौना—वि० लजाशील। लज्जित करनेवाला 'सूर नंद सुत मदन लजौना।' सूबे० २४७
लज़्ज़त—स्त्री० ज़ायका, स्वाद, मज़ा, सुख।
लज्जा—स्त्री० शर्म, संकोच, आबरू।
लट—स्त्री० सिरके बाल, अलक (उदे० 'बगराना'), उलझे हुए बाल। ज्वाला।
लटक—स्त्री० लचक, चटक मटक, अंगभंगी।
लटकन—पु० लटकनेवाली वस्तु। मोतियों आदिका गुच्छा 'लटकन लटकि रहे भ्रू ऊपर, पंचरंग मनि पोहैरी।' सू० ५३। एक गहना, '...नासा लटकन मोतीरी।' सू० ५३। स्त्री० लटक।
लटकना—अक्रि० झूलना (उदे० 'अलिक'), अटक रहना, टँगना, लचकना, झुकना (उदे० 'बगराना')।
लटका—पु० टोटका। छोटा नुसख़ा। चाल। बातचीतका ढँग।
लटकाना—सक्रि० लटकनेमें प्रवृत्त करना। टाँगना। अक्रि० झूलना, टँगा रहना (उदे० 'बगराना')।
लटकीला—वि० लचकदार, झूमता हुआ।
लटकौवा—वि० लटकनेवाला (दास १२७)।
लटना—अक्रि० थक जाना, ढीला पड़ना, व्याकुल होना, लड़खड़ाना 'रटत रटत रसना लटी तृषा सूखि गे अंग।' दोहा० ११८, 'अबहूँ आउ कन्त! तन लटा।' प० १६७। सक्रि० ललचाना (विन० ३०७) 'चंद करौं मुख देखि निछावरि, केहरि कोटि लटौं कटि ऊपर।' भावि० ७६, आसक्त होना (विन० ३१०)।
लटपट, लटपटा—वि० शिथिल, अशक्त, (उदे० 'बगराना')। टूटा फूटा, लड़खड़ाता हुआ, कुछ कुछ गाढ़ा, अस्तव्यस्त, उलझा हुआ 'बार लटपटे मानो भँवर जूथ लरत परस्पर...' स्वा० हरिदास 'नींद भरे तन लटपटे छके द्रगनिकी हेर।' नागरी०।
लटपटाना—अक्रि० लड़खड़ाना (रतन० १७), विचलित होना। लुभाना, आसक्त होना।
लटा—वि० दुबला, नीच, तुच्छ, बुरा (उदे० 'परिगलना', 'उपानह')।
लटापटी—स्त्री० गुत्थम गुत्था होनेकी क्रिया, भिड़ंत।
लटापोट—वि० आसक्त, मुग्ध।
लटी—स्त्री० बुराई (उत्र ४०), बुरी चाल, मिथ्या कथन। —मारना = गप मारना 'जब लूटनके बहुत निहारत मारत फिरत लटी।' सू० ५

CC-0. Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लटुआ—पु० एक खिलौना, भौंरा, लट्टू ।
लटुरी—स्त्री० सिरके बाल, अलक (उदे० 'छिटकना') ।
लट्टू—पु० एक खिलौना, 'भौंरा'।—होना = मुग्ध होना (उदे० 'भट्ट') ।
लट्टूरी—स्त्री० देखो 'लटुरी' (छत्र० २३) ।
लट्टपट्ट—वि० लथपथ ।
लट्टू—पु० कीलपर घूमनेवाला खिलौना, भौंरा । देखो 'लट्टू' ।
लट्ठ, लठ—पु० मोटी लाठी, सोंटा । वि० अजड्ड ।
लट्ठा—पु० धरन, शहतीर, लकड़ीका मोटा लम्बा टुकड़ा । मारकीन । खेत ६० नापनेकी ५½ हाथ लम्बी लग्गी ।
लठिया—स्त्री० छोटी लाठी ।
लठैत—पु० लट्ठबाज़ ।
लड़ंत—स्त्री० मुठभेड़, मुक़ाबला ।
लड़—स्त्री० सीधमें गुथी हुई फूल मोती आदिकी पंक्ति, लड़ी, सिलसिला ।
लडकई—स्त्री०, लडकपन—पु० बाल्यावस्था, नासमझी ।
लडका—पु० पुत्र, बच्चा, बालक ।
लडकाई—स्त्री० देखो 'लड़कई' ।
लड़किनी, लडकी—स्त्री० बालिका, बेटी ।
लडकौरी वि०स्त्री० जिसकी गोदमें बच्चा हो (स्त्री) ।
लड़खड़ाना - अक्रि० डगमगाना, उचित रूपसे काम न करना ।
लड़ना—अक्रि० युद्ध करना, झगड़ा करना, भिड़ना, विवाद करना ।
लड़बायर, लडबोग—वि० लड़कों जैसा, नासमझ, मूर्ख, मूर्खतापूर्ण ।
लड़ाई—स्त्री० युद्ध, झगड़ा, विवाद, वैर ।
लड़ाका—वि० बहादुर, लड़नेवाला । कलहकारी ।
लड़ाकू—वि० लड़ाका, लड़ाईके कामका ।
लड़ाना—सक्रि० युद्धके लिए प्रवृत्त करना, भिड़ाना । लगाना (बुद्धि आदि) । लाड़ करना, प्रेमसे देना या खिलाना 'खान पान परिधान राजसुख जो कोउ कोटि लड़ावे ।' सू० १९७
लड़ायता—वि० लाड़िला, प्यारा ।
लड़ी—स्त्री० मोतियों आदिकी गुथी हुई पंक्ति, सिलसिला, तार, पंक्ति ।
लडुआ—पु० लड्डू ।
लड़ैता—वि० लड़नेवाला । दुलारा 'कहा कहौं मेरे लाल लड़ैते जब तू बिदा कियो ।' सूवे० ३१०, (भ्र० ६६) ।
लड्डू—पु० मोदक ।
लड्याना—सक्रि० अधिक प्यार करना ।
लढ़ा-पु० लढ़िया—स्त्री० बैलगाड़ी 'जातहिं देहैं लदाय लढ़ा भरि ।' सुदामा० ३
लत—स्त्री० कुटेव, दुर्व्यसन, बान ।
लतखोर, लतखोरा—वि० लात खानेवाला, कमीना । पु० पायंदाज, चौखट । दास ।
लतडी,-री—स्त्री० एक कद्दू, खेसारी । एक तरहकी चट्टी ।
लतपत—वि० लथपथ ।
लतर—स्त्री० बेल ।
लता—स्त्री० बेल, बौर, माधवी । लताभवन = लताओंसे बना हुआ कुंज ।
लतिका स्त्री० छोटी लता ।
लतियर, लतियल—वि० लतखोर ।
लतियाना—सक्रि० लातोंसे कुचलना, लातोंसे प्रहार करना ।
लतिहर,-हल—वि० लतखोर ।
लतोफ़ा—पु० चुटकुला, हँसीकी बात ।
लत्ता—पु० पुराने कपड़ेका टुकड़ा, धज्जी ।
लत्ती—स्त्री० पदाघात ।
लथपथ—वि० भीगा हुआ, तराबोर । सना हुआ ।
लथाड़—स्त्री० भर्त्सना, फटकार । पराजय ।
लथाड़ना, लथेड़ना—सक्रि० कीचड़ आदिसे तराबोर करना, दे मारना, हराना, डाँटना, झिड़कना, थकाना ।
लदना—अक्रि० भार युक्त होना, वस्तुओंका भरा या रखा जाना, सवार होना ।
लदलद—क्रिवि० 'लदलद' शब्दके साथ, जो प्रायः गीली चीज़के गिरनेसे होता है ।
लदाउ, लदाऊ—पु० देखो 'लदाव' ।
लदाना—अक्रि० दूसरेको लादनेके काममें प्रवृत्त करना । लादनेमें सहायक होना ।
लदाव—पु० लादनेकी क्रिया । पटाव, बोझ । बिना शह-तीरकी जोड़ाई या पटाव ।
लद्धड़—वि० काहिल, सुस्त ।
लद्धना—सक्रि० पाना, मिलना ।
लप—पु० मुट्ठी, अञ्जलि । छुरी आदिकी चमक या चलानेका शब्द ।
लपक—स्त्री० कान्ति, लपट, फुरती ।
लपकना—अक्रि० झपटना, शीघ्रतासे जाना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लपझप—स्त्री० तेज़ी, चंचलता, चालाकी, हाथकी चालाकी।
लपट—स्त्री० लौ, ज्वाला (उदे० 'विज्जुल')। झलक (उदे० 'तमक')। गंध, हवाकी लहर।
लपटना—अक्रि० चिपटना (उदे० 'भाँटी'). सटना, फँसना।
लपटाना—अक्रि० चिपटना (सू० १११), फँसना। लथपथ होना 'जे पद कमल धूरि लपटाने।' सू० ८०। सक्रि० लपेटना, गले लगाना।
लपना—अक्रि० झुकना, झटकेके साथ लचना। ललचना, लपकना (विन० ३०८)।
लपलपाना—सक्रि० इधर उधर हिलाना, चमकाना, वेगसे इधर उधर लचाना। अक्रि० इधर उधर लचना या हिलना, चमकना।
लपसी—स्त्री० कम घीका हलुआ, लेई (कबीर १३१)।
लपाना—सक्रि० झोका देकर लचाना।
लपेट—स्त्री० लपेटनेकी क्रिया, घेरा, फेरा, तह, बल, चक्कर, उलझन।
लपेटन—स्त्री० देखो 'लपेट'। पु० लपेटनेकी वस्तु।
लपेटना—सक्रि० परिवेष्टित करना, समेटना, ग्रसना, पंजेमें करना, लेपन करना।
लपेटा—पु० देखो 'लपेट'।
लफंगा—वि० आवारा, दुष्ट, लंपट।
लफना—अक्रि० देखो 'लपना' (उदे० 'लग', 'चिलक')।
लफाना—सक्रि० झुकाना, लचाना, इधर उधर हिलाना।
लफ्ज़—पु० शब्द, बात।
लब—पु० ओंठ।
लबझना—अक्रि० फँसना।
लबड़धोंधों—स्त्री० व्यर्थका हल्ला, अव्यवस्था, अंधेर, अनीति।
लबड़ना—अक्रि० झूठ बोलना। [
लबदा—पु० मोटा डंडा।
लबरा, लबार—वि० झूठ बोलनेवाला 'मिलि तपसिन्ह तैं भयसि लबारा।' रामा० ४६८
लबादा—पु० एक लम्बा चौड़ा पहनावा, चोगा।
लबारी—स्त्री० असत्यभाषण। वि० मिथ्याभाषी, चुगुली करनेवाला।
लबालब—क्रिवि० मुँहतक, ऊपर किनारेतक (भरा हुआ)।
लबेद—पु० अशास्त्रीय वचन व्यवहारादि।
लब्ध—वि० प्राप्त, उपार्जित। लब्धकीर्ति = नामवर, प्रसिद्ध।
लब्धि—स्त्री० लाभ, प्राप्ति, प्राप्त संख्या। [

लभकना—अक्रि० लचकना, बस्तुद होना।
लमधिचा—वि० जिसकी गर्दन लंबी हो।
लमछड़—वि० लम्बा और पतला। पु० भाला।
लमतड़ंग—वि० लम्बा, ऊँचा।
लमधी—पु० समधीका पिता। [† बढ़ जाना।
लमाना—सक्रि० लम्बा करना, फैलाना। अक्रि० दूर †
लय—स्त्री० धुन, गानेकी आवाज़। पु० लीन होनेका भाव, प्रेम, एकाग्रता, विनाश, स्थिरता।
लर—स्त्री० देखो 'लड़'।
लरकई—स्त्री० लड़कपन, नादानी, चंचलता।
लरकना—अक्रि० झुकना, लटकना।
लरका—पु० लड़का, पुत्र।
लरकाना—सक्रि० झुकाना, लटकाना।
लरकिनी—स्त्री० लड़की, बेटी।
लरखरना—लराना—अक्रि० देखो 'लड़खड़ाना'. 'गँजेउ सो गर्जेउ घोर धुनि सुनि भूमि भूधर लरखरे।' जामं०।
लरखरनि—स्त्री० लड़खड़ानेकी क्रिया (सू० ५३)।
लरजना—अक्रि० डुलना, हिलना, डरना। झेंपना (उदे० 'तुजुक')।
लरजा—पु० कँपकँपी। भूकंप।
लरझना—अक्रि० शब्द करना (दीन० ४१)।
लरझर—वि० बरसता हुआ, विपुल, प्रचुर।
लरना, लराई, लराका—देखो 'लड़ना', 'लड़ाई', 'लड़ाका'।
लरनि—स्त्री० लड़नेका तरीक़ा। युद्ध।
लरिकई—स्त्री० देखो 'लरकई'।
लरिकपन—पु० देखो 'लरकई' (विन० ५३२)।
लरिका—पु० लड़का, पुत्र (उदे० 'लंगर' 'अखारा')।
लरिकाई—स्त्री० देखो 'लरकई' 'सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम।' रामा० ५८१ (उदे० 'अवगरी', 'जोबन')।
लरी—दे० 'लड़ी'…'दाड़िम दसन लरी।' सू० ३३
ललक—स्त्री० लालसा, तीव्र इच्छा (दोहा० २३३)।
ललकना—अक्रि० लालसा करना, इच्छाकी उमंगसे पूरित होना, मग्न होना 'यह अरविन्द सुधारस कारन भँवर वृन्द जुरि मानहुँ ललकैं।'—ललित माधुरी।
ललकार—स्त्री० लड़नेका बढ़ावा। चुनौती।
ललकारना—सक्रि० चुनौती देना, युद्धार्थ पुकारना, बढ़ावा देना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ललचना—अक्रि० लालसा करना, लुभा जाना, मुग्ध होना।
ललचाना—अक्रि० देखो 'ललचना'। सक्रि० लुभाना, आकर्षित करना, लालसा पैदा करना (उदे० 'चूपड़ी')।
ललचौहाँ—वि० लालचयुक्त, लालसापूर्ण, ललचानेवाला 'को ललचाय न लाल के लखि ललचौहैं नैन।' वि० २५९
ललन—पु० लाल, कुमार, प्रिय बालक, प्रियपति। क्रीड़ा।
ललना—स्त्री० रमणी, स्त्री।
ललो—पु० लड़के या नायकके लिए प्यारका सम्बोधन।
ललाई—स्त्री० लालिमा।
ललाट—पु० मस्तक, भाल, कपाल।
ललाना—अक्रि० लालायित होना, पानेको अधीर होना। (उदे० 'पाइमाल', 'खरिया')।
ललाम—पु० रत्न, भूषण, चिह्न। (चन्द्रमाललाम = शिवजी)। वि० लाल रंगका, सुंदर।
ललामी—स्त्री० लालिमा।
ललित—वि० सुंदर, सुहावना, प्रिय। पु० अंगचेष्टा-
ललितई,-ताई—स्त्री० चारुता, सुन्दरता। [विशेष।
ललो—स्त्री० लाड़ली लड़की। प्रियतमा।
ललौहाँ—वि० लालिमा लिये हुए।
लल्ला—पु० बच्चोंके लिए प्यारका शब्द। बुंदेलखंडमें साले, बहनोई, दामाद आदिके लिए सम्बोधन।
लल्लो—स्त्री० जीभ।
लल्लो-चप्पो,-चप्पो—स्त्री० चापलूसी, ठकुरसुहाती।
लवंग—पु० लौंग। नाककी कील।
लव—पु० क्षण, अत्यल्प मात्रा (उदे० 'पुलना')। लौ
लवण—पु० नमक, नोन। [(उदे० 'लाजना')।
लवन—पु० नमक। काटना लुनाई।
लवना—सक्रि० लुनना, (फसल) काटना। 'बोवै बहुर लवै कित धाना।' अखरा ३४८
लवनाई—स्त्री० लावण्य, सौन्दर्य।
लवनि, लवनी—स्त्री० लुनाई। नवनीत 'लवनी दधि मिठाय जोरिके बहुगति मेरे हाथ पठाई।' सू० ७३
लवर—स्त्री० ज्वाला, [illegible]।
लवलाखी—स्त्री० [illegible]।
लवलीन—वि० [illegible], तल्लीन।
लवलेश, लवलेस—पु० अल्प मात्रा, अति लघु अंश (उदे० 'लारि')। थोड़ा सा लगाव।
लवहर—पु० यमज बालक।
लवा—पु० एक पक्षी। लावा।
लवाई—वि० थोड़े दिनकी ब्याई हुई गाय (उदे० 'बच्छ', रामा० २१८) [❀ ज़रूरी सामान।
लवाज़मा—पु० साथकी भीड़भाड़ और साजसामान। ❀
लवासी—वि० लबार, झूठा, छलिया (सूबे० ३८३)।
लशकर, लसकर, लसगर—पु० सेना, दल, छावनी (छत्र० ७४)। जहाजमें काम करनेवालोंका समूह।
लषन, लषना—दे० 'लखन', 'लखना'।
लस—पु० लासा। आकर्षण। चिपचिपाहट।
लसदार—वि० लसवाला।
लसना—अक्रि० सुशोभित होना, विराजना 'राजमण्डली लसै, देवलोकको हँसै।' राम० ३५। (उदे० 'ऊजरा')।
लसनि—स्त्री० शोभा (उदे० 'ओलि'), स्थिति।
लसम—वि० खोटा, दूषित।
लसलसा—वि० लसदार।
लसलसाहट—स्त्री० चिपचिपाहट।
लसी—स्त्री० चिपचिपाहट, आकर्षण, सम्बन्ध। दूध-
लसीला—वि० चिपचिपा। फसीला। [पानीका शरबत।
लस्त—वि० शिथिल, अशक्त।
लहँगा—पु० एक घेरदार पहनावा (उदे० 'झोंका')।
लहकना—अक्रि० भभकना, हिलना, लहराना (प० २३३), ललकना, लपकना, झोंके देना।
लहकाना—सक्रि० लपकाना, उत्साहित करना, भड़काना।
लहकौर, लहकौरि—स्त्री० कोहबरकी एक रस्म 'लह-कौरि गौरि सिखाव रामहिं सीयसन सारद कहहिं।'
लहजा—पु० स्वर, ध्वनि। [रामा० १७९
लहज़ा, लहमा—पु० क्षण, पल।
लहनदार—पु० कर्ज़ देनेवाला, महाजन।
लहना—सक्रि० पाना 'नारि बिरह दुख लहेउ अपारा।' रामा० ३२। काटना, कतरना। पु० पावना, 'ऊधो लहनो अपनो पैए।' अ० ७५। ऋण। भाग्य।
लहर, लहरि—स्त्री० तरंग, उमंग, मौज, झोंका, लपट, टेढ़ी रेखा या टेढ़ी चाल (प० ५०, ५१)।
लहरना, लहराना—अक्रि० झोंका खाना, हिलोर मारना, उछलित होना, शोभित होना, टेढ़ी चालसे चलना। सक्रि० हिलकोरा देना, हिलाना डुलाना, टेढ़ा चलाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लहरपटोर—पु० रेशमी लहरिया कपड़ा। 'सारी कंचुकि लहरिपटोरी।' प० १५८

लहरिया—पु० टेढ़ीमेढ़ी लकीरें। एक कपड़ा।

लहरी—वि० मनमौजी। स्त्री० लहर 'त्रिवली तामें लखिय भाँति जनु उपजत लहरी।' नन्द०

लहलह, लहलहा—वि० लहलहा, हराभरा, विकसित, प्रफुल्ल (मति० १७२)।

लहलहाना—अक्रि० हराभरा होना, पनपना, प्रसन्न होना, लहरें मारना (उदे० 'सारगन')।

लहसुन—पु० तीक्ष्ण गंधवाला एक पौधा।

लहसुनिया—पु० एक बेशकीमती पत्थर।

लहा—पु० देखो 'लाह'।

लहाछेह—पु० एक तरहका नाच। नाचनेमें पदलाघव।

लहालह—वि० हराभरा, प्रफुल्ल।

लहालोट—वि० खूब हँसता हुआ। मुग्ध, प्रसन्न, उल्लसित।

लहासी—स्त्री० गाय या जहाज बाँधनेकी रस्सी।

लहि—अ० लग, तक 'जौ लहि जिअौं रात दिन सबेरौं लोहि कर नावँ।' प० ४१

लहु—अ० पर्यन्त। वि० लघु (रामाज्ञा १००, विद्या० ७)।

लहुरा—वि० उम्रमें या पदमें छोटा (छत्र० ४)।

लहू—पु० रुधिर, लोहू।

लहेटा—पु० रेशम रँगनेवाला, लाखका काम करनेवाला।

लाँक—स्त्री० हालकी कटी फसल, भूसी। लंक, कमर।

लाँग—स्त्री० कछोटा, काछ।

लांगली—पु० सर्प। नारियल। मजीठ।

लांगुल, लांगूल—पु० पूँछ। लांगूली = बन्दर।

लाँघना—सक्रि० पार करना, डाँकना (उदे० 'किलकिला')।

लाँच—स्त्री० घूस, उत्कोच।

लांछन—पु०, लांछना—स्त्री० कलंक। दोष, चिह्न।

लांछनित—वि० लांछित, कलंकित।

लाँजी—पु० एक तरहका धान।

लांबा—वि० लंबा, फैला हुआ। 'ते ते पायँ पसारिये जेती लाँबी सौर।'

लाइ—स्त्री० आग (उदे० 'लावना')।

लायक—वि० योग्य, समर्थ, उचित।

लाई—स्त्री० धानका लावा। भुगली।

लाकड़ी, लाकरी—स्त्री० लकड़ी (उदे० 'लोदा')।

लाख—स्त्री० लाख। लाखारस = महावर। [†संख्या

लाज—स्त्री० लाह। वि० सौ हजार। पु० सौ हजारकी†

लाखना—सक्रि० लख लेना, ताड़ जाना (प० ९९)। अक्रि० लाखसे छिद्र बन्द करना।

लाखपती—पु० देखो 'लखपती'।

लाखा—पु० गेहूंका एक रोग। लाखका बना एक तरह-

लाखिराज—वि० बे-लगान (ज़मीन)। [का रंग।

लाखी—वि० लाखके रंगका।

लाग—स्त्री० लगाव, सम्बन्ध, सहारा 'राम सखा कर दीन्हें लागू।' रामा० ३०२। लगन (छत्र० ९५), प्रेम (दास ९३), वैर, प्रतियोगिता, चोट, टोना, लगान (सूबे० २६१), भस्म, एक तरहका नाच। रसद 'लाग देहि सब सायको, रोज मृगनिकौं मारि।' छत्र० ७८। अ० तक।

लागडाँट—स्त्री० प्रतियोगिता। दुश्मनी।

लागत—स्त्री० तैयार या प्रस्तुत करनेका व्यय।

लागना—दे० 'लगना', 'लोल कपोल झलक कुंडलकी, यह उपमा कछु लागत।' सू० ९१

लागि, लागे—अ० लिये, कारण (प० १०६), तक।

लागू—वि० लगने योग्य, घटित या चरितार्थ होने योग्य।

लाघव—पु० हलकापन, कमी, फुर्ती।

लाचार—वि० विवश। लाचारी—स्त्री० विवशता।

लाछन—पु० लांछन, दोष, कलंक।

लाछी—स्त्री० लक्ष्मी 'अठहूँ अमावस ईंधन लाछी।' प० १८५

लाज—स्त्री० शर्म। प्रतिष्ठा, आबरू (उदे० 'बाजी')। पु० धानका लावा, खस।

लाजना—अक्रि० लज्जित होना (उदे० 'जंपना') 'श्रुति स्यामल एक विराजतु है। अलि स्यों सरसीरुह लाजति है।' के० ३२२। सक्रि० लज्जित करना, 'तौ लाजौं गंगा जननी को, सान्तनु सुत न कहाऊ।' [सू० १४

लाजवंत—वि० हयादार।

लाजवाब—वि० निरुत्तर। बेजोड़।

लाजा—स्त्री० लावा, चावल (रामा० १८८)।

लाज़िम—वि० अवश्यकर्तव्य, उचित, शुभासिव।

लाज़िमी—वि० आवश्यक, ज़रूरी। अनिवार्य।

लाट—स्त्री० ऊंचा मोटा खंभा। पु० एक अनुप्रास। बिकनेवाली चीजोंका समूह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लाटी—स्त्री० ओंठ और जीभका सूखना 'सूखहिं अधर जनि मुँह लाटी।' रामा० २६८

लाँठ—स्त्री० देखो 'लाट'।

लाठी—स्त्री० सोंटा, डंडा, लकड़ी।

लाड़—पु० दुलार, प्यार (उदे० 'पोढ़', भ्र० २४)।

लाड़लड़ैता, लाड़ला—वि० दुलारा।

लाडू—पु० लड्डू (उदे० 'खेरौरा')।

लात—स्त्री० चरण, चरण-प्रहार।

लाथ—पु० बहाना 'ततहि जाइ हरि न करह लाथ।'

लाद—स्त्री० पेट, अँतड़ी। लादनेकी क्रिया। [विद्या० १९८

लादना—सक्रि० भार रखना, बोझेसे भरना।

लादी—स्त्री० गदहेकी पीठपर लादी हुई कपड़ोंकी गठरी। किसी पशुपर लादी हुई गठरी।

लाधना—सक्रि० पाना 'जो सुख शिव सनकादि न पावत सो सुख गोपिन लाधो।' सूबे० ३२२ (रामा० १६६)

लाना—सक्रि० ले आना, पेश करना, पैदा करना। लगाना, (उदे० 'दव', सू० ७४) 'सोखि समुद्र उतारौं कपिदल सनिक बिलंब न लाऊँ।' सूरा० ५२, जलाना 'हनुमत लाई लंक सब बच्यो बिभीषण धाम।' राम० ३५४

लाने—अ० लिये।

लापता—वि० जिसका पता न हो। गायब।

लापरवा, लापरवाह—वि० असावधान, बेख़बर। बेफ़िक्र।

लापसी—स्त्री० लपसी (साखी ३४)।

लाबर—वि० झूठ बोलनेवाला।

लाभ—पु० फायदा, प्राप्ति।

लाभकारी,-दायक—वि० फायदेमंद, फलप्रद।

लामन-पु० लम्बमान होना, लटकना, हिलना (ब्रज०४६४)।

लामा—वि० लम्बा (सूबे० ३६५) पु० तिब्बतके बौद्धों का आचार्य।

लाय—स्त्री० अग्नि, ज्वाला। 'निसिदिन दाझै बिरहिनी अन्तरगत की लाय।' साखी ४४

लायक़—वि० योग्य, समर्थ, उचित। पु० धानका लावा।

लायक़ी—स्त्री० योग्यता।

लार—स्त्री० लबदार थूक (उदे० 'दँतियाँ'), लुआब, पंक्ति। क्रिवि० साथ।

लाल—पु० पुत्र, बच्चे, या गायकके लिए प्यारका सम्बोधन। लालिमा। पु० लोहे चिड़िया। स्त्री० लार। इच्छा 'लाली लली लेति, लाड़ करै पहु, मुख चहै'—अजरा० ३५०। वि० सुर्ख। (गोटी) जो पूरा पलर लगाकर बीचके खानेमें पहुँच गयी हो, 'परो पाप लेरो लरो करि लै सारी लाल।' दीन० २३७। (खिलाड़ी) जो जीत गया हो। लाल होना = क्रुद्ध होना।

लालच—पु० लोभ, तृष्णा (स्त्री० भा—रघु० १०५)।

लालचहा, लालची—वि० लोभी।

लालड़ी—पु० नथ आदिके मोतीके दोनो ओर लगाया जानेवाला लाल नग।

लालन—पु० दुलार, प्यार। बालक, प्रिय पुत्र।

लालना—सक्रि० प्यार करना, (उदे० 'उपवना', रामा० २२७), लालसा करना (के० १३१)।

लालबुझक्कड़—पु० हर बातमें अटकल लगाकर बुद्धिमान् बननेवाला।

लालमन—पु० एक तरहका तोता, श्रीकृष्ण।

लालमुहाँ—पु० निनावेंका एक भेद।

लालरी—स्त्री० देखो 'लालड़ी'।

लालसा—स्त्री० उत्कट इच्छा, उत्सुकता (उदे० 'ईखना')।

लालसिखा, लालसिखी—पु० मुर्गा 'भानु आगमन जानिकै, लालसिखा धुनि कीन।' रघु० ६२

लालसी—वि० उत्सुक, इच्छुक।

लाला—पु० बच्चे, देवर, वैश्य, आदिके लिए सम्बोधन। पोस्तका फूल। स्त्री० लार।

लालायित—वि० उत्सुक, ललचाया हुआ। लालसी।

लालित—वि० पालित। दुलारा।

लालित्य—पु० सुन्दरता, सरसता।

लालिमा, लाली—स्त्री० सुर्खी।

लाले, लालो—पु० अरमान, लालसा 'रहै यही लालो भजहुँ कादत यहि जब भोर।' सत्य०। लाले पड़ना = किसी बातका होना अति कठिन या असंभव सा हो जाना।

लाल्हा—पु० एक साग।

लाव—स्त्री० आग (सुन्द० १६०)। रस्सी (उदे० 'झौर')। पु० लवा पक्षी।

लावक—पु० लवा पक्षी। नोट। धानकी बालीकी जड़।

लावण्य—पु० सुघराई, सुन्दरता।

लावदार—पु० लोप छोड़नेवाला। वि० लम्बी लगनेको प्रस्तुत (लोप)।

लावनता—स्त्री० लावण्य, सुंदरता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लावना—सक्रि० लगाना, जलाना, लाना।

लावनि—स्त्री० लुनाई, सुन्दरता, नमक। 'लावनिनिधि गुननिधि सोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाउँ' सूबे० १०२

लाव लश्कर—पु० साथके बहुतसे नौकर इ०, किसीके साथकी भीड़, हमराहियोंकी बड़ी संख्या।

लावल्द—वि० जिसे कोई संतान न हो।

लावा—पु० भूना हुआ धान, ज्वार, आदि (उदे० 'कया'), लवापक्षी।—मेल देना = मंत्र द्वारा उच्चाटन करना (उदे० 'आखा')।

लावारिस—वि० जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। जिसका कोई दावेदार न हो।

लाश—स्त्री० शव, मृत देह।

लाष—स्त्री० लाख, लाह।

लास—पु० रास, नृत्यविशेष, विलास, मटक। रसा।

लासा—पु० लुआब, चेप। गोंद।

लासानी—वि० बेजोड़, अद्वितीय।

लास्य—पु० नृत्यविशेष।

लाह—पु० लाभ (प० १५४, भ० ५०, दास १२३)। स्त्री० लाख। कान्ति।

लाही—वि० लालके रंगका। स्त्री० लाख बनानेवाला कीड़ा। सरसों।

लाहु—पु० लाभ 'जीवन जनम लाहु किन लेहू।' रामा० २००

लिंग—पु० शिवमूर्ति लक्षण, पुरुषचिह्न।

लिंगदेह—पु० सूक्ष्म शरीर।

लिंगी—पु० आडंबर रचनेवाला। चिह्नवाला।

लिखाड़—पु० भारी लेखक (व्यंग्यमें)।

लिखधार, लिखवार—पु० लेखक, मुहर्रिर 'साँचो सो लिखधार कहावै।' सू० ११

लिखना—सक्रि० लिपिबद्ध करना, अंकित करना।

लिखनी—स्त्री० लेखनी 'मसि नैना, लिखनी बरुनि, रोइ रोइ लिखा अकत्थ।' प० १०४

लिखाई—स्त्री० लिखावट, लिपि, लेखन-व्यय।

लिखाना—सक्रि० लिपिबद्ध कराना।

लिखापढ़ी—स्त्री० पत्रव्यवहार। लिखनेकी कार्रवाई।

लिखावट—स्त्री० लिपि। लेख। लिखनेका ढँग।

लिखेरा—पु० लिखनेवाला।

लिटाना—सक्रि० पौढ़ाना, सुलाना।

लिट्ठ—पु० लिट्टी, बाटी।

लिडार—वि० डरपोक। पु० गीदड़।

लिपटना—अक्रि० सट जाना, चिपकना, लग जाना।

लिपटाना—सक्रि० संलग्न करना, गले लगाना।

लिपना—अक्रि० गोबर आदिसे पुत जाना।

लिपवाना, लिपाना—सक्रि० लेप कराना, पुताना।

लिपाई—स्त्री० लीपनेकी क्रिया या उसकी मज़दूरी।

लिपि, लिवि—स्त्री० लिखावट, लेख।

लिपिकर,-कार—पु० लेखक।

लिप्त—वि० चर्चित, लीन।

लिप्सा—स्त्री० लालच, चाह।

लिफ़ाफ़ा—पु० पत्र भेजनेकी कागजकी खोली। दिखावटी पोशाक, झूठी तड़क भड़क।

लिबड़ी-बरताना—स्त्री० गोरिया बधना, माल असबाब।

लिबास—पु० पोशाक, पहनावा।

लियाक़त—स्त्री० योग्यता, सामर्थ्य।

लिलाट, लिलार—पु० मस्तक, भाल 'नशा भई हँकारहु, धरती धरै लिलाट।' प० २२०। 'दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहँ पाउब तहीं।' रामा० ५९ (उदे० 'आड़', 'चौथ', सू० १५९)।

लिलोही—वि० लोभी।

लिव—स्त्री० लौ, लगन 'दास कबीर कहै समझाइ। केवल राम रहहु लिव लाइ।' कबीर २८७ (२८६)

लिवाना—सक्रि० ग्रहण कराना। लानेका काम दूसरेसे कराना। साथमें लाना।

लिवैया—वि० लानेवाला, लेनेवाला।

लिहाज़—पु० संकोच, मुरव्वत। किसी बातका ख्याल, अदबका ख़याल।

लिहाड़ी—स्त्री० निन्दा, उपहास। [

लिहाफ़—पु० रज़ाई।

लीक—स्त्री० लकीर, पहियेका निशान, थाप, 'आपन आपन करहिं सो लीका' प० १८१, मर्यादा, (उदे० 'लोपना', 'अलीक')। रीति, यश, गणना। 'भुजबल अतुल जासु जग लीका।' रामा० ४७१

लीख—स्त्री० जूँका अंडा (उदे० 'कीचर')। लीक, 'विस्वंभर श्रीपति त्रिभुवनपति वेद-विदित यह लीख'- विन० २२४। पोस्तेके दानेके बराबर आम 'रहे जो लाख भये ते लीखा।' प० १२६

लीचड़, लीचर—वि० निकम्मा, चिपटनेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लीची—स्त्री० एक फल।
लीझी—स्त्री० सीठी, देहका मैल। वि० निःसार।
लीद—स्त्री० घोड़े आदिकी विष्ठा (कबीर ४८)।
लीन—वि० डूबा हुआ, तन्मय।
लीपना—सक्रि० गोबर आदिकी तह चढ़ाना, पोतना।
लील—वि० नीला। पु० नील। लीलकंठ = नीलकंठ।
लीलना—सक्रि० खा जाना, निगलना 'बूड़न समुद, मगर नहिं लीला।' प० ७१
लीलया, लीलहिं—क्रिवि० खेलकी तरह, अनायास 'अति उतंग तरु सैलगन लीलहिं लेहिं उठाइ।' रामा० ४४९
लीला—स्त्री० खेल, चरित्र, रहस्यमय कार्य, रामादिके चरित्रका अभिनय। वि० नीला। पु० काला घोड़ा, नीलचिह्न, गोदना 'ललित श्याम लीला ललन बढ़ी चिबुक छवि दून।' वि० ११३
लुँगाड़ा—पु० लफंगा, आवारा।
लुंगी—स्त्री० छोटी धोती, कपड़ेका टुकड़ा।
लुंचित—वि० उखाड़ा हुआ। पु० एक तरहके साधु (कबीर १७२)।
लुंज—वि० लूला, ठूँठ। (उदे० 'कदन', भ्र० ३६, भावि० ७९)।
लुंठन—पु० चोरी। लुढ़कन।
लुंड—पु० रुंड, कबन्ध। चोर।
लुंडा—पु०, लुंडी—स्त्री० लपेटे हुए सूत इ० की पिंडी।
लुआठ, लुआठा—पु० जलती हुई लकड़ी, अधजली लकड़ी।
लुआब—पु० लासा, लसदार गूदा।
लुकंजन—पु० आँखनेवालेको छिपा देनेवाला अंजन।
लुक—पु० चमक लानेवाला लेप, पालिश। लौ।
लुकना—अक्रि० छिपना।
लुकमा—पु० कौर, ग्रास।
लुकाठ, लुकेठा—पु० देखो 'लुआठ' (उदे० 'कजरौटा')।
लुकाना—अक्रि० छिपना। (उदे० 'झपट', 'बतरस') रामा० ४१९। सक्रि० छिपाना।
लुकोना—सक्रि० छिपाना 'रजनी अँधेरी है न सूझति हमेरी रंच, चोर करैं फेरी लखि मुख ना लुकोवै तू।'
लुगड़ा—पु० कपड़ा।
लुगदी—स्त्री० पीसी हुई गीली वस्तुका लोंदा।
लुगरा—पु० कपड़ा, ओढ़नी (रवि० २९)। वि० लुगड़ोर।
लुगाई—स्त्री० स्त्री (उदे० 'अथाई')।
लुगी—स्त्री० लुंगी, लहँगेका किनारा।
लुग्गा—पु० कपड़ा।
लुचकना—सक्रि० झटकेसे छीन लेना।
लुचरी, लुचुई—स्त्री० मैदेकी पतली पूरी 'लुचुई पोइ पोइ घिउ-मेई।' प० २७० (कबीर १३१)।
लुचवाना—सक्रि० नोचवाना।
लुच्चा—वि० बदमाश, दुराचारी।
लुटंत—स्त्री० लूट।
लुटकना—दे० 'लटकना'।
लुटना—अक्रि० लूटा जाना (उदे० 'चौंटना'), बरबाद होना। लोटना 'छाँडिकै रज लुटत रजमें, दीन दीसत अंग।' नागरी०।
लुटाना, लुटावना—सक्रि० लूटने देना, उड़ाना, फेंकना।
लुटिया—स्त्री० छोटा लोटा।
लुटेरा—पु० लूटनेवाला, डाकू।
लुठना—अक्रि० लोटना, लुढ़कना, 'लुठत सकके सीस चरन तर युग गुन गत समये।' सू० १०२
लुठाना—सक्रि० लोटाना, लुढ़काना।
लुड़कना, लुढ़कना, लुढ़ना—अक्रि० जमीनपर चक्कर खाते हुए जाना, गिर पड़ना।
लुढ़ाना—सक्रि० लुढ़काना, ढुलकाना, 'बरजै न मानत खात कबहूँ दही देत लुढ़ाइ।' सूवे० ३२१ (दास)
लुतरा—वि० चुगुलखोर। शरारती।
लुत्थ—स्त्री० लोथ, लाश।
लुत्फ़—पु० आनन्द, स्वाद, अनुग्रह।
लुनना—सक्रि० फसल काटना, हटाना। 'बवा सो लुनिय लहिय जो दीन्हा।' रामा० २०६
लुनाई—स्त्री० सुंदरता (उदे० 'कोमलाई')।
लुनेरा—पु० नोनिया नामक जाति। फसल काटने-वाला।
लुपना—अक्रि० लुकना, छिपना।
लुप्त—वि० गुप्त, नष्ट।
लुबधना—अक्रि० लुब्ध होना (साखी १२१)।
लुबरी—स्त्री० तरौंछ, गाद।
लुबुध, लुब्ध—वि० लुभाया हुआ, मोहित। पु० प्रेमी,
लुबुधना, लुब्धना—अक्रि० लुब्ध होना (सू० १३४) 'स्याम रूप रसवारिज लोचन तहाँ जाइ लुब्धेरें' सू० (ब्रज० १९); (उदे० 'पालु')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लुब्धक—वि० लुभानेवाला, व्याध।
लुभाना—सक्रि० लुब्ध करना, रिझाना, बहकाना। अक्रि० मोहित होना 'मन मधुकर पद कमल लुभान्यो।' सू० १३१
लुरकी—स्त्री० कानकी बाली।
लुरना—अक्रि० लटकना (उदे० 'थहरना'), झुक पड़ना, 'बिसहर लुरे लेहिं अरघानी।' प० ४४। हिलना डुलना, 'लुरहिं मुरहिं जनु मानहिं केली।' प० २३३ मुग्ध होना।
लुरी—स्त्री० हालकी ब्याई गाय (दास ८०)।
लुलना—दे० 'लुरना'।
लुवार—स्त्री० लू 'जेठ जरै जग चलै लुवारा।' प० १७१
लुहना—अक्रि० लुभाना, मुग्ध होना (भावि० ३६)।
लुहार—पु० लोहेकी चीजें बनानेवाला।
लूँबरी—स्त्री० लोमड़ी ससक लूँबरी आदि सुतंत्र करैं बनराजैं।' दीन० १०३
लू—स्त्री० गरम हवा।
लूक—पु० टूटा हुआ तारा 'दिनही लूक परन बिधि लागे।' रामा० ४६७। जलती हुई लकड़ी, 'दोउ लियो टोक बिचारि। यक लूक लीन्हों बारि।' रघु० २४६। स्त्री० लू, लपट। आग।
लूकट—पु० लुआठ (?) 'जिहि मुख पाँचौ अमृत खाये। तिहि मुख देखत लूकट लाये।' कबीर २९०
लूकना—अक्रि० लुकना। सक्रि० आग लगाना।
लूका,—पु०,लूकी—स्त्री० जलती हुई लकड़ी, लुआठ 'हम घर जारा आपना लूका लीन्हा हाथ।' साखी १८। ज्वाला, चिनगारी।
लूखा—वि० देखो 'रूखा'।
लूगा—पु० कपड़ा।
लूबर—पु० लुआठ, जलती हुई लकड़ी (बुंदेल०)।
लूट, लूटि—स्त्री० लूटनेकी क्रिया, लूटी हुई वस्तुएँ।
लूटक—पु० लुटेरा। शोभा छीन लेनेवाला।
लूटना—सक्रि० ज़बरन छीन लेना, ठगना (उदे० 'भावन्ना'), मुग्ध करना, नष्ट करना।
लूत—स्त्री० मकड़ी (मति० १८७)।
लूता—स्त्री० देखो 'लूका'। मकड़ी।
लून—पु० लवण। वि० कटा हुआ।
लूनना—सक्रि० (फसल) काटना।
लूम—स्त्री० पूँछ।
लूमड़ी—स्त्री० देखो 'लूंबरी'।
लूमना—अक्रि० झूलना, लटकना।
लूरना—देखो 'लुरना'।
लूला—वि० बिना हाथका। असहाय, असमर्थ।
लूह—स्त्री० लू, गरम हवा।
लूहर—स्त्री० लू। पु० देखो 'लूबर' (के० ६३)।
लेंड़ी—स्त्री० बकरी आदिकी विष्टा। बँधा हुआ मल।
लेंहड़ा—पु० (चौपायोंका) समूह, झुंड (साखी १२९)।
लेइ—अ० लेकर, तक।
लेई—स्त्री० लपसी, पका हुआ लसदार आटा।
लेख—पु० लिखित बात, लिखावट, लिपि, लेखा। वि० लेख्य, लिखने योग्य।
लेखक—पु० लिखनेवाला, मुहर्रिर, ग्रन्थकर्ता।
लेखन—पु० लिखनेका कार्य, चित्र बनाना। हिसाब करना। लिखनेकी कला।
लेखना—सक्रि० हिसाब लगाना, मानना, समझना, 'कनक बिंदु दुइ चारिक देखे। राखे सीस सीय सम लेखे।' रामा० २९४। लिखना 'चारुचरन नख लेखति धरनी।' रामा० २२६
लेखनी—स्त्री० कलम।
लेखा—पु० हिसाब, गणना। स्त्री० रेखा। लिपि।
लेज, लेजुर, लेजुरी—स्त्री० कुएँसे पानी निकालनेकी रस्सी (प० २९१)।
लेज़म—स्त्री० एक जंजीरदार कमान जिससे कसरत करते हैं।
लेटना—अक्रि० पड़ना, पौढ़ना, आराम करना।
लेदी—स्त्री० एक चिड़िया (प० २६९)।
लेनदेन—पु० व्यवहार, महाजनी, सरोकार।
लेना—सक्रि० ग्रहण करना, प्राप्त करना, जीतना, क्रय करना, पकड़ना, आगे बढ़कर मिलना, स्वागत करना। —एक न देना दो = कोई सरोकार नहीं। कानमें लेना = सुनना।
लेप—पु० उबटन, मरहम, गाढ़ी गीली चीज़।
लेपन—पु० लेपनेकी क्रिया, लेप चढ़ाना।
लेपना—सक्रि० चुपड़ना, पोतना।
लेरुआ, लेरुवा—पु० लड्डू। बछड़ा 'ललन लोने। लेरुआ, बलि मैया।' गीता० २८३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेव—पु० लेप। दीवारपर छोपनेका गिलावा।
लेवा—पु० लेप, गिलावा, गीली मिट्टी। वि० लेनेवाला।
लेवादेई—स्त्री० लेनदेन।
लेश—पु० अल्पता, कण, अणु, चिह्न, सूक्ष्मांश, सम्बन्ध। एक काव्यालंकार। वि० थोड़ा।
लेष—दे० 'लेख' तथा 'लेश'।
लेषना, लेषनी—दे० 'लेखना', 'लेखनी'।
लेस—पु० देखो 'लेश' (उदे० 'टकटोना')। लस, गाढ़ी सनी हुई मिट्टी।
लेसना—सक्रि० जलाना, प्रज्वलित करना 'लेसा हिये प्रेमकर दीया।' प० ८
लेहन—पु० चाटना।
लेहना—पु० फसलका वह भाग जो मजूरों या नाई आदि को मिलता है। पावना।
लेहाफ़—पु० लिहाफ। रजाई।
लेह्य—पु० चाटने योग्य वस्तु, चटनी।
लै—अ० तक।
लैन—स्त्री० लकीर, पंक्ति। सिपाहियोंके रहनेकी जगह।
लैस—पु० एक तरहका बाण। कपड़ेपर चढ़ानेकी किनारी। वि० कटिबद्ध, तैयार। निमग्न (उदे० 'ऐस')।
लों—अ० समान। तक।
लोंदा—पु० गोली वस्तुका गोला, पिण्डा। (साखी ३४)।
लोइ—पु० लोग (कबीर २२९, भाववि० १८)। स्त्री० लव, ज्वाला, दीप्ति 'इनमें होइ दरसात है हर मूरतकी लोइ।' रतन० ३४
लोइन—पु० लोचन, नेत्र। सुंदरता, लावण्य, नमक (उदे० 'लग')।
लोई—स्त्री० एक तरहका ऊनी चद्दर। साने हुए आटेकी गोली। लोग (कबीर ९७, १००, छव० १८)।
लोकंजन—पु० देखो 'लुकंजन'।
लोकंदा—पु० पहिली विदाई पर लड़कीके साथ दासीका जाना।
लोक—पु० विश्व विभाग, संसार, समाज, लोग, कीर्त्ति।
लोकचार, लोकाचार—पु० लोकका व्यवहार।
लोकश्रुति—स्त्री० किंवदन्ती, जनश्रुति।
लोकना—सक्रि० झेलना, बीचमें ही पकड़ लेना।
लोकनाथ, लोकप—पु० ब्रह्मा, राजा, दिग्पाल।
लोकरव—पु०, **लोकश्रुति**—स्त्री० अफ़वाह
लोकलीक—स्त्री० लोकमर्यादा।
लोकहार—वि० लोकसंहारक 'वियोग सीयको न, काल लोकहार जानिये।' राम० २७८
लोकोक्ति—स्त्री० कहावत। एक काव्यालंकार।
लोखंड़ी—स्त्री० लोमड़ी।
लोखर—पु० हज्जामके या लुहार इ० के औज़ार।
लोग—पु० मनुष्य।
लोगाई—स्त्री० औरत 'कहहिं परस्पर लोग लोगाई।' रामा० २५७ (उदे० 'घरहाई')।
लोच—स्त्री० कोमलता, लचक (वि० २२१)। पु० रुचि, इच्छा।
लोचन—पु० नेत्र (उदे० 'प्रेषना')।
लोचना—सक्रि० प्रकाशित करना, चाहना 'जासुखको ब्रह्मादिक लोचैं सो माँगत ललचाय।' सूवे० ५७। अक्रि० इच्छा करना, ललचाना, 'बिलोचन लोचत हैं लखि तोहि'—के० ३४६। विराजना।
लोट—स्त्री० लेटनेका भाव। त्रिवली (उदे० 'चौंटना')। बाट।
लोटन—पु० एक कबूतर। एक तरहका हल। छोटे कंकड़।
लोटना—अक्रि० भूमि आदिपर लेट कर फिरना, करवटें बदलना, लेटना, लुढ़कना, छटपटाना।
लोटपटा—पु० विवाहमें वर-वधूका पटा. (पीढ़ा) बदलना। उलट-फेर।
लोटा—पु० धातुका बना एक तरहका छोटा जलपात्र।
लोटिया—स्त्री० देखो 'लुटिया'।
लोड़ना—सक्रि० ज़रूरत पड़ना। चाहना 'नैन हमारे बावरे छिन छिन लोड़ैं तुझ।' साखी ४१
लोढ़ना—सक्रि० (फूल) तोड़ना, (विद्या० ३०४) 'वह माली यह फूल किते दिन लोढ़त आयो।' दीन० ९४। साफ करना, ओटना। चाहना (सुन्द० २०)
लोढ़ा—पु० वह पत्थर जिससे कोई चीज़ कुचलते या पीसते हैं। लोढ़ा डालना = सम करना।
लोढ़िया—स्त्री० छोटा लोढ़ा।
लोण—पु० नमक।
लोथ, लोथि—स्त्री० लाश, मृतदेह (उदे० 'अरकना'। सू० ३९)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोथड़ा, लाथरा—पु० मांसका बड़ा टुकड़ा।
लोन--पु० नमक, लुनाई, सुंदरता।
लोन-हरामी—वि० कृतघ्न (मति० १७५)।
लोना—वि० खारा, सलोना, सुंदर (उदे० 'तमक') 'दहु हौं लोनि कि वै पदमिनी।' प० ३७। पु० क्षार, एक कीड़ा, एक घास, दीवारका रोग, एक जादूगरनी (प० १७८)। सक्रि० लुनना 'बीज बोइये जोइ अन्त लोनिये सो हैं।' सूबे० ४२२
लोनाई—स्त्री० सुंदरता।
लोनिका—स्त्री० लोनी या नोनिया साग।
लोनिया—पु० नमक बनानेवाली एक जाति, नोनिया।
लोनी—स्त्री० नोनिया साग, एक तरहकी मिट्टी। पु० नवनीत 'ले आई वृषभानु सुता हँसि सद लोनी है मेरो।' सूबे० १६२। स्त्री० (सुन्दर) नायिका
लोप—पु० अदर्शन, नाश। [(मति० १७६)
लोपना—सक्रि० छिपाना (प० ३१७), लुप्त करना, तोड़ना, नष्ट करना 'जुरि न मुरे संग्राम लोकको लीक न लोपी।' राम० ११। अक्रि० लुप्त होना।
लोवान—पु० एक सुगंधित गोंद।
लोभ—पु० तृष्णा, लालच।
लोभना—सक्रि० लुभाना। अक्रि० लुब्ध होना (सू० ४७)
लोभाना—सक्रि० मुग्ध करना। अक्रि० मुग्ध होना
लोभार—वि० मुग्ध करनेवाला। [(प० २१०)।
लोभित—वि० मुग्ध।
लोभी—वि० लालची, कृपण, मुग्ध।
लोम—पु० बाल, रोवाँ। लोमड़ी (भू० १४२)।
लोमड़ी, लोमरी—स्त्री० गीदड़की तरहका एक जन्तु।
लोमहर्षण—वि० भयंकर। पु० रोमांच।
लोय—पु० लोग। 'भूपन पूरब रूप सो कहत सयाने लोय।' भू० ११४। नेत्र। स्त्री० लपट, 'कथनी मीठी खाँडसी करनी बिषकी लोय।' साखी ८५
लोयन—पु० नेत्र (उदे० 'लगालगी')।
लोर—पु० लोलक, झुमका। आँसू 'चारु आनन लोरधारा बरनि कापै जाइ।' सू० १५१। वि० लोल, उत्कंठापूर्ण।
लोरना—अक्रि० तैरना। लचकना, चंचल होना, झुकना, लोटना। 'देखोरी मलु इनहिं मारनको लोरैं।'
लोरी—स्त्री० बच्चेको सुलानेका गीत। [सूबे० २८९।
लोल वि० चंचल, उत्सुक, क्षणस्थायी।
लोलक—पु० झुमका, लटकन। लोलकी।
लोलकी—स्त्री० कानकी लव, कानके नीचेका भाग।
लोलना—अक्रि० चंचल होना, डोलना (सू० ९६) 'गूढ़ जानु आजानु बाहु मद-गज गति लोलैं।' नंद० सक्रि० हिलाना 'दौवा तमकि तेग कर लोली।' छत्र० १४४
लोला—स्त्री० जीभ। पु० बच्चोंका एक खिलौना।
लोलुप—वि० लालची, अत्यन्त उत्सुक।
लोवा—स्त्री० लोमड़ी (उदे० 'अकासी', 'हुँदुर'), लवा पक्षी।
लोहँड़ा—पु० लौहपात्र, तसला (प० २७४)।
लोह—पु० लोहा। रक्त।
लोहवान दे० लोबान।
लोहसार—पु० फ़ौलाद (प० २४५)।
लोहा—पु० एक धातु। हथियार (प० २५६)। धाक। युद्ध 'दुवौ अनी सनमुख भई, लोहा भयेउ अमूल।' प० ३२८। लाल बैल। वि० लाल। दृढ़, सख्त।
लोहाना—अक्रि० सम्पर्कके कारण किसी चीजमें लोहेका स्वाद या रंग आजाना।
लोहार—पु० एक जाति।
लोहित—वि० लाल। पु० रक्त, मंगल ग्रह।
लोहिया—पु० लोहा बेचनेवाला। लाल बैल।
लोहू—पु० रुधिर।
लौं—अ० समान (उदे० 'मुँहजोर') 'नहिं हरि लौं हियरा धरौं नहिं हरलौं अरधंग।' वि० २०४। तक।
लौंकना—अक्रि० चमकना, दूरसे दिखाई पड़ना, सूझना।
लौंग—स्त्री० एक वृक्षका फल। नाक या कानकी कील (उदे० 'आँक')।
लौंडा—पु० लड़का। वि० अबोध। लौंड़ी = दासी। [(उदे० 'कनौड़ा')।
लौंद—पु० मलमास।
लौंदा—पु० देखो 'लोंदा'।
लौ—स्त्री० ज्वाला, दीपशिखा (साखी १८) चाह, आशा, लगन 'प्रेम तु कोऊ वस्तु रूप देखत लौ लागे।'
लौआ, लौका—पु० लौकी, कद्दू। [नंद०।
लौंकना—दे० 'लौंकना' (उदे० 'कौंध')।
लौकिक—वि० लोक-सम्बन्धी, व्यवहारी।
लौकी—स्त्री० एक लम्बा फल जिसकी तरकारी बनती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लौजोरा—वि० पीतल आदि गलानेवाला।
लौटना—अक्रि० पलटना, वापस आना, फिरना। सक्रि० [उलटना।
लौटाना—सक्रि० वापस करना, फेरना।
लौन—पु० नोन, नमक।
लौना—पु० कटाई। अगले पिछले पैरमें बँधी रस्सी,
लौनी—स्त्री० कटाई। नवनीत। ['छान'। वि० सुन्दर।
लोह—पु० लोहा। हथियार।
लौहकार—पु० लोहार।
लौहसार—पु० एक लवण।
ल्याना, ल्यावना—सक्रि० लाना।
ल्यौ—स्त्री० लौ '...तूँ ताहीं सों ल्यौ लाइ।' कबीर ४४
ल्वारि—स्त्री० लू।

व ❀।

वंकट—वि० विकट, टेढ़ा।
वंकनाली—स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी।
वंचक—वि० पाखण्डी, धूर्त्त। पु० ठग। गीदड़।
वंचना—सक्रि० छलना, ठगना। बाँचना, पढ़ना। स्त्री० [छल।
वंचित—वि० रहित। छला गया।
वंजुल—पु० अशोक वृक्ष, बेंत।
वंदन-पु०, वंदना—स्त्री० प्रणाम, स्तुति।
वंदनमाल,-वार—स्त्री० उत्सवके समय लटकायी जानेवाली पत्तों और फूलोंकी माला।
वंदा—पु० एक पौधा जो वृक्षोंकी डालियोंमें लगकर उन्हींके रससे बढ़ता है।
वंश—पु० कुल, जाति, बाँस, बाँसुरी।
वंशज—पु० संतति, पुत्र। बाँसका चावल।
वंशी—स्त्री० मुरली।
वक—पु० बगला।
वकील—पु० प्रतिनिधि, राजदूत, पक्ष समर्थन करनेवाला।
वक्त—पु० समय, अवकाश। नियत काल। मौक़ा।
वक्तव्य—पु० कथन। वि० कहने योग्य।
वक्ता—पु० भाषण करनेवाला या कथा कहनेवाला व्यक्ति।
वक्तृता—स्त्री०, वक्तृत्व—पु० व्याख्यान। कथन।
वक्त्र—पु० मुख।
वक्र—वि० कुटिल, टेढ़ा।
वक्ष, वक्षःस्थल—पु० छाती।
वक्षोज,वक्षोरुह—पु० स्तन।
वग़ैरह—अ० इत्यादि।
वचन—पु० बात। कथन।
वच्छ—पु० वक्ष, छाती।
वज़न—पु० तौल, भार। महत्त्व, गौरव।
वजह—स्त्री० कारण।
वज़ीफा—पु० छात्रों इ० को दी गयी नियत आर्थिक सहायता, वृत्ति।
वज़ीर—पु० मंत्री, शतरंजकी एक गोटी।
वज्र—पु० इन्द्रका आयुध, भाला, बिजली, हीरा। वि० दृढ, कठिन, दारुण 'लंक गढ़ माँहि वज्र लागे किंवारा।' सूरा० ३१
वट—पु० एक वृक्ष, बरगद।
वटिका, वटी—स्त्री० गोली।
वटु, वटुक—पु० ब्रह्मचारी। बालक।
वतन—पु० वासस्थान। स्वदेश।
वत्स—पु० बच्चा, बछड़ा। छाती। वत्सर।
वत्सर—पु० साल, वर्ष।
वत्सल—वि० पुत्र-प्रेम-युक्त, छोटोंके प्रति कृपालु।
वदन—पु० मुख।
वदान्य—वि० उदार। मीठे वचन बोलनेवाला।
वदि, वदी—स्त्री० असित पक्ष, अँधेरा पाख।
वदुसाना—सक्रि० दोष देना।
वध—पु० घात।
वधू—स्त्री० पतोहू। पत्नी। दुलहिन।
वध्य—वि० मार डालनेके योग्य।
वन—पु० अरण्य, जल, स्थान।
वनचर, वनेचर—पु० जंगलमें फिरने या रहनेवाला।
वनमाला—स्त्री० वनके फूलोंकी माला। दे० 'वनमाला'।

❀ इस अक्षरसे प्रारम्भ होनेवाले अनेक शब्द "व" अक्षरके नीचे मिलेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वनमाली—पु० कृष्ण।
वनराज—पु० सिंह।
वनराजि—स्त्री० वन या वृक्षोंका समूह।
वनस्पति—स्त्री० पेड़-पौधा।
वनिता—स्त्री० स्त्री।
वनी—स्त्री० छोटा वन।
वपन—पु० बीज बोना। बाल बनवाना।
वपु—पु० देह (उदे० 'प्रतिगरना')।
वफ़ा—स्त्री० बातका निर्वाह, सुशीलता।
वफ़ात—स्त्री० मौत। मरण।
वमन—पु० क़ै, उलटी।
वमना—सक्रि० क़ै करना (उदे० 'उनमनना')।
वयःक्रम—पु० अवस्था। उम्र।
वयःसन्धि—स्त्री० बाल्यकाल और यौवन कालके मध्य [की स्थिति।
वय—पु० उम्र। अवस्था।
वयस्क—वि० उम्रवाला, सयाना।
वयस्य—पु० समान वयवाला व्यक्ति, मित्र।
वरंच—अ० बल्कि, किन्तु।
वर—पु० पति। देवता इ० से माँगा हुआ मनोरथ या फल। वि० उत्तम।
वरक़—पु० पत्रा, पत्रा। सोने इ० का पतला पत्तर।
वरटा—स्त्री० हंसिनी। भिड़।
वरण—पु० चुनना, वर रूपमें स्वीकार करना, पूजा।
वरद—वि० वर देनेवाला।
वरदान—पु० वर देना। जो वरस्वरूप दिया गया हो।
वरना—अ० अन्यथा, नहीं तो। पु० ऊँट। देखो 'वरना'।
वराट,-वराटक—पु० कौड़ी, कमलगट्टेका बीज, डोरी।
वरानना—स्त्री० सुन्दर मुखवाली स्त्री, सुन्दरी।
वराह—पु० सुअर, विष्णु।
वरुण—पु० जलदेवता, जल, सूर्य।
वर्ग—पु० श्रेणी, समूह। प्रकरण।
वर्जना—सक्रि० रोकना, मना करना, त्यागना।
वर्जित—वि० निषिद्ध, त्यक्त।
वर्ण—पु० रंग। जाति। अक्षर, भेद, यश, सोना।
वर्णन—पु० बयान, कथन। प्रशंसा।
वर्णसंकर—पु० विभिन्न जातीय माता-पिताकी सन्तान, दोगला।
वर्णित—वि० कहा हुआ।
वर्ण्य—वि० वर्णनके योग्य। पु० उपमेय, प्रस्तुत। कुंकुम। वनतुलसी।
वर्तन—पु० व्यवहार, परिवर्तन, वृत्ति, पिसाई, पात्र।
वर्त्तमान—वि० मौजूद, हालका, जो चल रहा हो।
वर्त्ति—स्त्री० बत्ती। उबटन। अंजन। गोली।
वर्त्तिका—स्त्री० बत्ती, सलाई। बटेर।
वर्त्ती—वि० रहने या बरतनेवाला। स्त्री० बत्ती।
वर्त्तुल—वि० गोलाकार। पु० मटर, गाजर। सुहागा।
वर्त्म—पु० मार्ग, रास्ता, किनारा, पहियेकी लीक।
वर्द्धमान—वि० बढ़ता हुआ, बढ़नेवाला।
वर्म—पु० कवच। आश्रयस्थान।
वर्ष—पु० साल। वर्षा।
वर्षा—स्त्री० वृष्टि, चौमासा।
वर्ही—पु० मोर।
वलय—पु० घेरा, कड़ा, चूड़ी, कंकण।
वलयित—वि० घेरा हुआ, वेष्टित।
वलाहक—पु० बादल।
वलि—स्त्री० लकीर, झुर्री। पंक्ति। राजकर। दे० 'बलि'।
वलित—वि० घेरा हुआ, झुकाया हुआ, जिसमें झुर्रियाँ पड़ गयी हों। ढका हुआ, लगा हुआ, युक्त।
वली—स्त्री० रेखा, झुर्री। पु० अभिभावक, मालिक।
वल्कल—पु० पेड़की छाल, बकला, छालका वस्त्र।
वल्द—पु० बेटा।
वल्मीक—पु० बमीठा, बाँमी। वा मीकि मुनि।
वल्लभ—वि० प्रिय।
वल्लरी—स्त्री० लता, बेल, मंजरी।
वल्ली—स्त्री० बेल। लता।
वश—पु० काबू, अधिकार, प्रभुत्व, इच्छा।
वशवर्ती—वि० वशमें रहनेवाला।
वशीकरण—पु० वश करनेकी रीति, वश करनेके लिए किया गया प्रयोग।
वशीभूत—वि० अधीन, आसक्त।
वश्य—वि० वशमें आनेवाला, अधीन।
वसंत—पु० छः ऋतुओंमेंसे एक। मौसिम बहार।
वसंती—वि० हलके पीले रंगका। पु० वसंती रंग।
वसंतोत्सव—पु० वसन्त पञ्चमीके दूसरे दिन होनेवाला एक प्राचीन उत्सव। मदनोत्सव। होलिकोत्सव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वसति,-ती—स्त्री० वास, आबादी, घर। रात।
वसन—पु० कपड़ा, आवरण। रहनेकी क्रिया।
वसवास—पु० भुलावा। शंका। भ्रम।
वसवासी—वि० शक करनेवाला। भुलावेमें डालनेवाला।
वसह—पु० बैल।
वसा—स्त्री० चरबी।
वसीका—पु० इक़रारनामा।
वसीयतनामा—पु० मृत्युके पूर्व लिखा गया दानपत्र।
वसीला—पु० जरिया, द्वारा (साखी १५९), सम्बन्ध।
वसुंधरा—स्त्री० पृथ्वी।
वसु—पु० धन, रत्न, किरण, पानी, अग्नि, रवि, आठकी [संख्या।
वसुधा, वसुमती—स्त्री० पृथिवी।
वसूल—वि० प्राप्त।
वस्तु—स्त्री० चीज़, पदार्थ, वृत्तान्त।
वस्तुतः—क्रिवि० दरअसल।
वस्त्र—पु० कपड़ा।
वह—सर्व० निश्चयवाचक सर्वनाम।
वहन—पु० ढोना, उठाकर या खींच कर ले जाना।
वहम—पु० झूठी शंका, भ्रम।
वहशी—वि० जंगली। असभ्य।
वहाँ—अ० उस जगह।
वहित्र-पु०, वहिनी—स्त्री० नाव।
वहिरंग—वि० बाहरका, अनावश्यक, ऊपरी। पु० बाहरी हिस्सा, शरीरका बाह्य भाग।
वहिर्गत—वि० बाहर गया हुआ, बाहरका।
वहिष्करण, वहिष्कार—पु० बाहर करना, परित्याग।
वहीं—अ० वहाँ ही, उसी जगह।
वह्नि—पु० अग्नि, चीता, तीनकी संख्या।
वांछनीय—वि० अभिलषणीय, इष्ट।
वांछा—स्त्री० अभिलाषा।
वांछित—वि० चाहा हुआ।
वा—अ० अथवा, या। सर्व० 'वह' का विकृत रूप ('वातें', 'वामें' इ०)।
वाइ—सर्व० उसको (वाहि)। स्त्री० वापी।
वाक—स्त्री० वाणी, सरस्वती। वाक्य।
वाक़ई—अ० वस्तुतः।
वाक़या—पु० घटना।
वाक़िफ़—वि० जानकार।
वाक़्फ़ियत—स्त्री० जानकारी।
वाक्य—पु० वचन, पूर्णार्थयुक्त पदसमूह।
वागना—दे० 'बागना' 'ठुमुकि ठुमुकि वागैं कौशिलाके आँगनमें।' रघु० ४३
वागीश—पु० ब्रह्मा, बृहस्पति, वक्ता, कवि।
वागुरा—पु० जाल, फंदा।
वाग्जाल—पु० बातोंका जाल।
वाग्दत्त—वि० वचनों द्वारा प्रदत्त, जिसे दूसरेको देनेका वचन दे चुके हों।
वाग्मी—पु० अच्छा बोलनेवाला, बृहस्पति।
वाङ्मय—पु० साहित्य। वि० वाणी-विषयक।
वाङ्मुख—पु० गद्यकाव्यका एक भेद।
वाचक—वि० बोलनेवाला, बोधक, सूचक।
वाचन—पु० पठन, उच्चारण करना।
वाचा—स्त्री० वाणी, वचन। शब्द।
वाचाबंध, -बद्ध—वि० वचनसे बँधा हुआ।
वाचाल—वि० बहुत बोलनेवाला, अच्छा वक्ता।
वाचिक—वि० वाणी सम्बंधी, वचनों द्वारा प्रकट किया हुआ, संकेत द्वारा कहा हुआ।
वाच्—स्त्री० वाणी।
वाच्यार्थ—पु० नियत शब्दार्थ।
वाजिब, वाजिबी—वि० ठीक, उचित।
वाजी—पु० घोड़ा।
वाट—पु० मार्ग। मंडप।
वाटिका—स्त्री० फुलवाड़ी, घर।
वाड़व—पु० समुद्रकी अग्नि।
वाण—पु० तीर।
वाणिज्य—पु० व्यापार।
वाणी—स्त्री० शब्द, वचन, भाषा, वाक्शक्ति सरस्वती, [जीभ।
वात—पु० हवा।
वातायन—पु० खिड़की।
वातुल—वि० उन्मत्त।
वात्सल्य—पु० संतान या छोटोंके प्रति स्नेह।
वाद—पु० बहस, शास्त्रार्थ, तर्क। किसी विशेष दर्शनादिके सिद्धान्त।
वादन, वाद्य—पु० बाजा। बाजा बजानेका कार्य।
वादरायण—पु० व्यासजी।
वादा—पु० प्रतिज्ञा, निश्चित समय।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वादित्र—पु० बाजा।
वापसी—स्त्री० लौटानेकी क्रिया, लौटनेकी क्रिया। वि० लौटा हुआ।
वापी—स्त्री० बावली।
वाम—वि० प्रतिकूल, उलटा, बायाँ, बुरा, वक्र। पु० वामदेव, वरुण, कामदेव। स्त्री० वामा, स्त्री।
वामन—पु० विष्णुका एक अवतार। वि० बौना।
वामा—स्त्री० स्त्री (उदे० 'पेलना')।
वाय—स्त्री० देखो 'वाइ' (उदे० 'औथरा')।
वायस—पु० कौआ।
वायु—पु०, स्त्री० हवा।
वार—पु० आक्रमण। दिन, द्वार, अवसर, आवरण, रोक, किनारा (प० ६४) 'हरि सुमिरै सो वार है गुरु सुमिरै सो पार।' साखी ४
वारण—पु० रोक। निषेध। हाथी। कवच।
वारतिय—स्त्री० देखो 'नार-स्त्री'।
वारद—पु० बादल।
वारदात—स्त्री० दुर्घटना।
वारन—पु० वंदनवार। स्त्री० निछावर।
वारना—सक्रि० बलि जाना। (उदे० 'बिथुरना', 'डरबसी', 'कमरी')। राई नोन आदि उतारना 'वारि वारि जल पियत यसोदा, उठु मेरे प्रान अधार।' सू० ७१। पु० निछावर, बलि।
वारनारी—स्त्री० वेश्या।
वारपार—अ० एक किनारेसे दूसरे किनारेतक, इस तरफसे उस तरफतक। पु० अंत, पूर्ण विस्तार।
वारफेर—स्त्री० निछावर, निछावरमें दी गयी वस्तु।
वारमुखी,-स्त्री,-वारांगणा—स्त्री० वेश्या।
वारांनिधि—पु० वारिधि, समुद्र।
वारा—वि० जो न्योछावर हुआ हो। पु० लाभ, बचत (रतन० ४)।
वारान्यारा—पु० निबटेरा, फैसला।
वारि—स्त्री० जल। सरस्वती। कलसी।
वारिज, वारिजात—पु० कमल, शंख, मछली इ०।
वारिद,-धर—पु० मेघ (उदे० 'धौरहर')।
वारिधि,-नाथ, निधि—पु० समुद्र।
वारियाँ—स्त्री० निछावर।
वारिस—पु० उत्तराधिकारी।
वारीश—पु० समुद्र।
वारुणी—स्त्री० शराब, वरुणकी स्त्री, पश्चिम दिशा।
वार्त्ता—स्त्री० वृत्तान्त, खबर, बातचीत, मामला, गप्प।
वार्त्तालाप—पु० बातचीत।
वार्द्धक, वार्द्धका—पु० बुढ़ापा।
वार्षिक—वि० वर्ष संबन्धी, सालाना।
वालिद—पु० पिता।
वालुका—स्त्री० बालू। कपूर। शाखा।
वाष्प—पु० भाफ, धुआँ, आँसू, लोहा, गरमी।
वासंतिक—पु० विदूषक, नर्तक।
वासंती—स्त्री० माधवी। मदनोत्सव।
वास—पु० गंध, रहना, घर। अडूसा।
वासन पु० वस्त्र। सुगंधित करना।
वासना—दे० 'बासना'। स्त्री० इच्छा। संस्कार।
वासर—पु० दिन। वासरमणि = सूर्य
वासव—पु० इन्द्र।
वासा—स्त्री० अडूसा।
वासित—वि० सुगंध युक्त किया हुआ, वस्त्रसे ढँका हुआ।
वासिल—वि० वसूल, प्राप्त।
वास्तव—वि० यथार्थ।
वास्तविक—वि० यथार्थ, सच।
वास्ता—पु० सम्बन्ध।
वास्तु-शास्त्र—स्त्री० भवननिर्माण-शास्त्र।
वास्ते—अ० लिए, हेतु।
वास्प—दे० 'वाष्प'।
वाह—अ० आनंद, आश्चर्य, आदि सूचक शब्द। पु० सवारी, बैल, घोड़ा, हवा।
वाहन—पु० सवारी।
वाहना—सक्रि० चलाना, ढोना (ब्रज० ६६)।
वाहवाही—स्त्री० साधुवाद, कीर्त्ति, तारीफ।
वाहिनी—स्त्री० सेना।
वाहियात—वि० व्यर्थ। खराब।
वाही—वि० बैठाठाला, निकम्मा, निर्बुद्धि।
वाहीतवाही—स्त्री० बेहूदा या अंड बंड बात, गालीगलौज।
विंद—पु० समूह, बिंदु।
विंदक—पु० बेचा, जाननेवाला, पानेवाला।
विंदु—पु० बिंदी, शून्य, बूँद, अनुस्वार, कण (उदे० 'लेखना')।
विंदुर—पु० बिंदु, बेंदी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विंध—पु० विंध्याचल।
विकच—वि० खिला हुआ। केशरहित।
विकट—वि० कठिन, भयंकर, टेढ़ा।
विकरार—वि० व्याकुल। विकाल, भयावना।
विकराल—वि० भयंकर, भीषण।
विकल—वि० बेचैन। खंडित। कलाहीन।
विकलाना—अक्रि० बेचैन होना।
विकल्प—पु० विविध कल्पना, आगापीछा, विरुद्ध [कल्पना, भ्रम।
विकसना—अक्रि० खिलना।
विकार—पु० वासना। परिवर्तन। दोष। हानि।
विकारी—वि० दोषयुक्त। परिवर्तित। बुरी वासनावाला।
विकाल—पु० विलम्ब, संध्याकाल।
विकाश, विकास—पु० क्रमशः बढ़ना। फैलाव। खिलना।
विकासना—सक्रि० विकसित करना। प्रकट करना। निकालना। अक्रि० विकसित होना। प्रकट होना।
विकीर्ण—वि० छितराया हुआ।
विकुंठ—पु० बैकुंठ। वि० तेज।
विकृत—वि० बिगड़ा हुआ, अस्वाभाविक, कुरूप।
विक्रम—पु० बल, शक्तिकी अधिकता, पराक्रम।
विक्रमी—वि० प्रतापी, पराक्रमी। विक्रम सम्बन्धी।
विक्रय—पु०, विक्री—स्त्री० बेचनेकी क्रिया।
विक्रेता—पु० बेचनेवाला।
विक्षत—वि० जिसमें चोट लगी हो, घायल।
विक्षिप्त—वि० फेंका हुआ, पागल, व्याकुल।
विक्षेप—पु० फेंकनेकी क्रिया असंयम, व्याकुलता, विघ्न।
विक्षोभ—पु० मनकी अस्थिरता। [रोदा चढ़ाना।
विख—पु० ज़हर। वि० नासिकाहीन।
विखान—पु० सांग।
विखायंध—स्त्री० कड़वी गंध।
विख्यात—वि० प्रसिद्ध, यशस्वी।
विगंध—वि० दुर्गन्धयुक्त।
विगत—वि० बीता हुआ, पिछला। रहित।
विगर्हित—वि० खराब। जो फटकारा गया हो।
विगलित—वि० जो बह गया या गिर गया हो, 'विगलित सांस निचोल'—सू० १५३। जो बिगड़ गया हो। विशीर्ण 'बाही तें दाड़िम उर बिगलित तिनकी लग नहिं पावैरी।' सू० १८०

विग्रह—पु० शरीर, युद्ध, झगड़ा, रूप, मूर्त्ति।
विघटित—वि० जो तोड़ फोड़ डाला गया हो, बिगाड़ा [हुआ।
विघन, विघ्न—पु० बाधा, अड़चन।
विघाती—वि० घातक, विघ्नकारी।
विघ्नजित, विघ्नपति—पु० गणेशजी।
विचक्षण, विचच्छन—वि० सुनिपुण, चतुर, बुद्धिमान्।
विचरण, विचरन—पु० भ्रमण, पर्यटन।
विचरना—अक्रि० घूमना फिरना।
विचरनि—स्त्री० देखो 'विचरण'।
विचलना—अक्रि० स्थानभ्रष्ट होना। घबराना।
विचलाना—सक्रि० विचलित करना। घबरा देना।
विचार—पु० ख्याल, समझ, ध्यान, तत्वनिर्णय। विचरण।
विचारक—पु० विचार करनेवाला, तत्व-निर्णायक।
विचारना—अक्रि० गौर करना, ढूंढना।
विचित्र—वि० अद्भुत, कौतूहलवर्द्धक, रंगविरंगा।
विची—स्त्री० लहर।
विचेतन—वि० चेतनाहीन, विवेकरहित।
विच्छिन्न—वि० छेद कर या काट कर पृथक् किया हुआ।
विच्छेद पु० पृथक्करण, विनाश, वियोग।
विछलना—अक्रि० फिसलना, स्थानभ्रष्ट होना।
विछेद—पु० विच्छेद, वियोग।
विछोह—पु० वियोग।
विछोई—पु० वियोगी।
विजई विजयी—पु० जीतनेवाला।
विजन—वि० निर्जन (पु० देखो 'बिजन')। एकान्त।
विजना—पु० पंखा।
विजया—स्त्री० भाँग, दुर्गा।
विजात—वि० कुजात, वर्णसंकर।
विजाति—स्त्री० दूसरी जाति। वि० दूसरी जातिका।
विजानना—सक्रि० विशेष रूपसे जानना।
विजिगीषु—वि० विजयका इच्छुक।
विजित—वि० हारा हुआ। पु० जीता हुआ स्थान। हारा [हुआ व्यक्ति।
विजेता—पु० जीतनेवाला।
विजोग पु० वियोग, बिछुड़न।
विजोगी—पु० वियोगी।
विजोर—वि० कमज़ोर। पु० बिजौरा।
विज्जु—स्त्री० बिजली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विज्ञ—वि० जाननेवाला, प्रवीण, बुद्धिमान् ।
विज्ञप्ति—स्त्री०, विज्ञापन—पु० सूचना, इश्तिहार ।
विज्ञान—पु० विशिष्ट ज्ञान, पूर्ण ज्ञान, जानकारी । शास्त्र ।
विट—पु० विष्टा । नायकका सखा; वेश्यागामी, लंपट, धूर्त नायक 'ज्यों विट परि परतीय बस भोर भये भय-भीन ।' सू० २१
विटप—पु० वृक्ष, नयी शाखा, कोंपल ।
विटपी—पु० वृक्ष, वट वृक्ष ।
विडंबना—स्त्री० फटकार । अनुकरण, हँसी, उपहास । अपकीर्त्ति, लज्जा की बात ।
विडरना—अक्रि० देखो 'बिडरना' ।
विडराना, विडारना—सक्रि० चौंकना, भगाना, नष्ट करना । तितर बितर करना ।
विड़ाल—पु० बिल्ली ।
वितंडा—स्त्री० व्यर्थका विवाद । स्वपक्ष-समर्थन ।
वितंत—पु० बिना तंत्र (तार) का बाजा (उदे० 'धनतार')।
वित—पु० धन, शक्ति । वि० वेत्ता, निपुण ।
वितताना—अक्रि० अधीर होना ।
वितपन्न—वि० व्युत्पन्न, निपुण (सुबे० १८५)।
वितरण,-रन—पु० बाँटनेकी क्रिया । बाँटनेवाला ।
वितरना—सक्रि० बाँटना ।
वितरिक्त—क्रिवि० व्यतिरिक्त, सिवा ।
वितरेक—क्रिवि० सिवा, अतिरिक्त ।
वितर्क—पु० अनुमान । शक । तर्कान्तर ।
वितान—पु० मंडप, विस्तार, जमाव, यज्ञ, अवकाश ।
वितानना—सक्रि० तानना, फैलाना, चढाना 'जिन रघुनाथ पिनाक वितान्यो तोरयो निमिष मही ।' [सूरा० ४१
वितिक्रम—पु० व्यतिक्रम, क्रम-भंग ।
वितीत—वि० व्यतीत, गत ।
वितुंड—पु० हाथी ।
वित्त—पु० धन । वि० लब्ध, ख्यात । सोचा हुआ ।
वित्थकना—अक्रि० शिथिल पड़ना । मुग्ध होनेपर कुछ न बोल सकना ।
वित्थराना, वित्थारना—सक्रि० फैलाना ।
वित्था—स्त्री० पीड़ा ।
विदग्ध—वि० जला हुआ । चतुर, पंडित ।
विदमान—अ० विद्यमान होते हुए, सामने ।
विदरना—सक्रि० फाड़ना । अक्रि० फटना ।
विदलना—सक्रि० नष्ट करना, दलन करना ।
विदा—स्त्री० जानेकी आज्ञा । प्रस्थान ।
विदारक—पु० फाड़नेवाला ।
विदारना—सक्रि० विदीर्ण करना ।
विदित—वि० जाना हुआ, प्रसिद्ध ।
विदिशा,-सा—स्त्री० दो दिशाओंके बीचवाली दिशा, उपदिशा (उदे० 'अवगाहना') ।
विदीर्ण—वि० फाड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ ।
विदुषी—स्त्री० विद्वान् स्त्री । पंडिता । वि० स्त्री० सुशिक्षिता ।
विदूषक—पु० मसखरा, भाँड़, विषयी मनुष्य, दुष्ट ।
विदेह—वि० देहरहित (उदे० 'आगू')। पु० राजा जनक ।
विद्ध—वि० छेद किया हुआ । आबद्ध ।
विद्यमान—वि० मौजूद ।
विद्या—स्त्री० इल्म, ज्ञान, दुर्गा ।
विद्याधर—पु० एक देवयोनि । पंडित ।
विद्यार्थी—पु० छात्र ।
विद्युत्—स्त्री० बिजली, तड़ित । संध्या ।
विद्रुम—पु० मूँगा । कोंपल ।
विद्रोह—पु० विद्वेष, बलवा ।
विद्वान्—पु० विद्यावान्, पण्डित ।
विद्वेष—पु० विद्रोह, शत्रुता ।
विध्वंस—वि० नष्ट । पु० नाश ।
विध—पु० विधि, दैव । स्त्री० तरीका ।
विधना—पु० ब्रह्मा । सक्रि० प्राप्त करना, ऊपर लेना । देखो 'बिधना' ।
विधर्मी—पु० दूसरे धर्मका माननेवाला । वह जो धर्म-च्युत हो ।
विधवा—स्त्री० बेवा । पतिविहीन स्त्री ।
विधाँसना—सक्रि० बरबाद करना, गड़बड़ करना ।
विधाता—पु० ब्रह्मा, रचनेवाला, कर्त्ता, प्रबंधक ।
विधान—पु० विधि, क्रिया, आचार, व्यवस्था, रचना, कथन, उपाय, अनुष्ठान, नियम ।
विधायक—वि० रचनात्मक । पु० बनानेवाला, विधान या व्यवस्था करनेवाला ।
विधायी—पु० देखो 'विधायक' (विन० १०५)।
विधि—पु० ब्रह्मा, भाग्य, दैव । स्त्री० नियम, रीति, व्यवस्था, शास्त्रोक्त व्यवहार, भाँति ।
विधिरानी—स्त्री० सरस्वती ।
विधुंत, विधुंतुद—पु० चन्द्रपीड़क (राहु) 'मानो विधु जु विधुन्त ग्रहन उर आयो तेरे सरन सखी री ।'
विधु—पु० चन्द्रमा । ब्रह्मा । वायु । विष्णु [सू० ११६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विधुबंधु—पु० कुमुद।
विधुबैनी—वि० स्त्री० विधुवदनी, चन्द्रमुखी।
विधुर—पु० वियोग। दुःख। मृतस्त्रीक, रँडुआ। वि० व्याकुल। भीत। त्यक्त। अशक्त।
विधूत—वि० कंपित, परित्यक्त।
विधूम—वि० धूमरहित।
विधेय—वि० करणीय। होनहार। अधीन। पु० किसी वस्तुके सम्बन्धमें जो कुछ कहा जाय (व्याक०)।
विध्वंस—पु० विनाश, तिरस्कार, शत्रुता।
विध्वस्त—वि० नष्ट किया हुआ।
विन—अ० बिना बग़ैर।
विननड़ी, विनति—स्त्री० प्रार्थना, नम्रता, झुकाव।
विनती—स्त्री० प्रार्थना।
विनम्र—वि० सुशील, विनीत।
विनय—स्त्री० नम्रता। प्रार्थना। नीति।
विनयशील विनयी—वि० नम्र, सुशील।
विनशना, विनसना—अक्रि० नष्ट होना।
विनश्वर—वि० नष्ट होनेवाला।
विनष्ट—वि० विध्वस्त, भ्रष्ट, विकृत, मृत।
विनसाना—सक्रि० नष्ट करना। अक्रि० नष्ट होना।
विना—अ० बग़ैर, सिवा।
विनायक—पु० गणेशजी, गुरु, गरुड़। विघ्न।
विनाश, विनास—पु० ध्वंस, लोप, विकृति, हानि।
विनाशन,-सन—पु० नष्ट करना, नष्ट करनेवाला।
विनिमय—पु० परिवर्तन, बदला, बंधक।
विनियोग—पु० बैठाना, प्रयोग, प्रवेश, प्रेषण।
विनिर्गत—वि० बाहर निकला हुआ, बीता हुआ।
विनीत—वि० विनययुक्त (उदे० 'प्रतोषना'), शिष्ट, संयमी, शासित, शिक्षित।
विनु—अ० बिना, बग़ैर।
विनोद—पु० हँसी, कौतुक, हर्ष।
विनोदी—वि० कौतुकी, क्रीडाशील।
विन्यास—पु० स्थापना, रचना, संग्रह।
विपंची—स्त्री० क्रीड़ा। एक बाजा (दीन० ५०)।
विपक्ष—पु० विरोधी। विरुद्ध पक्ष।
विपत्ति—स्त्री० कष्ट, संकट। आफ़त। बखेड़ा।
विपन्न—वि० विपत्तिग्रस्त, दुःखी।
विपरीत—वि० उलटा। प्रतिकूल।
विपर्यय, विपर्यास—पु० औरका और हो जानेकी स्थिति, उलट-फेर। भ्रम। गड़बड़ी।
विपल—पु० समयका एक बहुत छोटा मान।
विपाक—पु० कर्मफल, परिपक्वावस्था, दुर्गति, स्वाद।
विपिन—पु० जंगल, उपवन।
विपुल—वि० बहुत, प्रचुर, बड़ा।
विपुला—स्त्री० पृथ्वी।
विपुलाई—स्त्री० प्रचुरता, अधिकता।
विपोहना—सक्रि० पोहना। पोतना। संहार करना।
विप्र—पु० ब्राह्मण।
विप्रलंभ—पु० वियोग, इष्ट वस्तुका न मिलना।
विप्लव—पु० जल-प्रलय, उत्पात, अशान्ति, बलवा, पानीकी बाढ़। विनाश।
विफल—वि० निष्फल, निराश, फलहीन।
विबुध—पु० देवता, विद्वान्, चन्द्रमा।
विबुधविलासिनी—स्त्री० अप्सरा, देववाला।
विबोध—पु० जागरण, प्रबोध।
विभक्ति—स्त्री० पार्थक्य, अंश, विभाग, कारक-चिह्न।
विभव—पु० ऐश्वर्य, प्रताप, सम्पत्ति, अधिकता। मुक्ति।
विभा—स्त्री० कान्ति, शोभा, किरण।
विभाकर—पु० सूर्य, अग्नि, राजा।
विभाग—पु० हिस्सा, खंड, बँटवारा, क्षेत्र।
विभाजन—पु० बाँटनेकी क्रिया। भाजन, पात्र।
विभात—पु० प्रभात।
विभाति—स्त्री० कान्ति, छवि (दीन० ६४)।
विभाना—अक्रि० चमकना, शोभा देना।
विभारना—अक्रि० कान्तियुक्त होना, चमकना।
विभावरी—स्त्री० रात्रि जिसमें तारे चमकते हों। दूती, कुटिल स्त्री।
विभास—पु० चमक।
विभासना—अक्रि० झलकना, कान्तियुक्त होना।
विभिन्न—वि० पृथक्, कई प्रकारका, कटा हुआ।
विभीति—स्त्री० डर, शंका।
विभीषिका—स्त्री० भय, भयप्रदर्शन, डरानेवाली बात।
विभु—वि० सर्वव्यापक। पु० ईश्वर। स्वामी। आत्मा।
विभुता—स्त्री० ऐश्वर्य, प्रभुत्व, सर्वव्यापकता।
विभूति—स्त्री० ऐश्वर्य, सम्पत्ति, वृद्धि (उदे० 'पराइ'), भस्म।
विभूषना—सक्रि० मंडित करना, सजाना।
विभूषित—वि० अलंकृत, सुशोभित।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विभेंटन—पु० भेंटनेकी क्रिया, आलिंगन।
विभेद—पु० अंतर, भेद। कटाव।
विभेदना—सक्रि० छेदना, फोड़ना, प्रवेश करना।
विभौ—पु० ऐश्वर्य, सम्पत्ति।
विभ्रम—पु० भ्रान्ति, सन्देह, भ्रमण, घबराहट।
विभ्राट्—पु० बखेड़ा, झगड़ा, विपत्ति।
विमंडित—वि० शोभित, युक्त।
विमत—पु० उलटा मत, असम्मति।
विमत्सर—पु० अधिक अभिमान। वि० मत्सरहीन।
विमन—वि० खिन्न, अनमना।
विमनस्क—वि० अन्यमनस्क, उदास।
विमर्दन—पु० मसलने, मार डालने, नष्ट करने इ० की क्रिया।
विमर्श—पु० समीक्षा, विवेचन, विचार।
विमर्ष—दे० 'विमर्श'। नाटकका एक अंग।
विमल—वि० स्वच्छ, निर्मल, सुन्दर।
विमला—स्त्री० सरस्वती।
विमलापति—पु० ब्रह्मा (राम० ९७)।
विमाता—स्त्री० सौतेली मां।
विमान—पु० वायुयान। रथ (उदे० 'दिवान')। वह आसन जिसपर रामलीला इ० की सवारियाँ निकाली जाती हैं। परिमाण। अनादर।
विमुक्त—वि० छोड़ा हुआ, स्वतंत्र, बंधनरहित।
विमुख—वि० प्रतिकूल, अप्रसन्न, विरत, फिरा हुआ।
विमुग्ध—वि० विशेष मोहित, उन्मत्त, भ्रांत, बेहोश।
विमुद—वि० अप्रसन्न, उदास।
विमूढ़—वि० मूर्ख। मुग्ध। भ्रममें पड़ा हुआ। अचेत।
विमोचना—सक्रि० मुक्त करना, छोड़ना, बाहर करना, †टपकाना।
विमोह—पु० विषयासक्ति, भ्रान्ति, मूर्च्छा।
विमोहनशील, विमोही—वि० मोहित करनेवाला, भ्रममें डालनेवाला, बेसुध करनेवाला, निर्दय।
विमोहना—अक्रि० मुग्ध होना (उदे० 'कल्पसाखी')। सक्रि० मोहित करना, संज्ञा—हीन करना, भ्रममें डालना।
विमौट—पु० बमौटा, बाँबी।
वियंग—पु० शिवजी।
वियुक्त—वि० बिछुड़ा हुआ, रहित, पृथक्।
वियो—वि० दूसरा।
वियोग—पु० जुदाई। पार्थक्य।
वियोगिन,-गिनी—स्त्री० पति-विरहसे व्याकुल स्त्री।
वियोगी—वि० विरही। पु० विरही मनुष्य।
विरंग—वि० कई रंगोंका। फीके रंगका।
विरंचि—पु० ब्रह्मा।
विरक्त—पु० उदासी, वैरागी। वि० उदासीन, अप्रसन्न।
विरचना—सक्रि० सजाना, बनाना। अक्रि० उदासीन होना।
विरत—वि० विशेष रूपसे रत। उदासीन, विमुख।
विरथ—वि० रथहीन।
विरद—पु० प्रसिद्धि, नाम, कीर्ति, यश (उदे० 'उधारन')।
विरदैत—वि० नामवर, प्रसिद्ध।
विरमना—अक्रि० रमना (उदे० 'कमाल')। रुकना, ठहरना (उदे० 'गैन')। विलंब करना।
विरमाना—सक्रि० रोकना, अनुरक्त करना। फँसाना।
विरल—वि० अलग अलग, ढीला, शून्य, दुर्लभ।
विरस—वि० रसहीन, अप्रिय।
विरह—पु० वियोग (उदे० 'छाम')।
विरहित—वि० शून्य, रहित।
विरही—वि० वियोगी, जिसे प्रियाका विरह हुआ हो।
विराग—पु० विरक्ति, उदासीनता, विषय-त्याग।
विराजना—अक्रि० शोभित होना। बैठना। रहना।
विराजमान—वि० सुशोभित, प्रकाशमान। आसीन।
विराट्—वि० विशाल, बहुत बड़ा।
विराम—पु० आराम, फुरसत। ठहराव, यति।
विराल—पु० बिड़ाल।
विराव—पु० कलरव, आवाज़, शोरगुल।
विरास—पु० विलास।
विरासी—वि० विलासी (प० २९८)।
विरुझना—अक्रि० उलझना।
विरुझाना—अक्रि० उलझना, बहल जाना (सूवे० ६०)।
विरुद्ध—वि० विपरीत, उलटा, प्रतिकूल।
विरूप—वि० परिवर्तित। बदसूरत। उलटा।
विरेचक—पु० दस्तावर।
विरोध—पु० प्रतिकूलता, शत्रुता, अनबन, अनैक्य।
विरोधना—सक्रि० विरोध करना।
विलंब—पु० देर।
विलक्षण, विलच्छन—वि० अद्भुत, श्रेष्ठ, असाधारण।
विलखना—अक्रि० ताड़ जाना। दुःखित होना।
विलग, विलगाना—दे० 'बिलग' 'बिलगाना।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विलपना—अक्रि० विलाप करना।
विलम—पु० देर।
विलसना—अक्रि० शोभित होना, आनंद मनाना।
विलाप—पु० रुदन।
विलायत—पु० परराष्ट्र देश, विदेश।
विलायती—वि० विदेशी।
विलास—पु० क्रीड़ा। सुखभोग। हावभाव। अंग संचालन। हिलना डुलना (उदे० 'बिलास')।
विलासिनी—स्त्री० मनोहर चेष्टाओंवाली युवती। वेश्या।
विलासी—पु० मौजी। कामी। आरामतलब।
विलीक—वि० व्यलीक, अनुचित।
विलीन—वि० निमग्न, विलुप्त, नष्ट।
विलुलित वि० हिलता हुआ, लहराता हुआ (ब्रज० ४४)।
विलेप पु० लेप, उबटन, गारा।
विलोकना—सक्रि० देखो 'बिलोकना'।
विलोचन—पु० नेत्र।
विलोप पु० नाश। कोई वस्तु उड़ाकर भागना। विघ्न, हानि।
विलोपना सक्रि० लोप करना, उड़ाकर भागना। विघ्न डालना।
विलोपी—पु० नष्ट करनेवाला, लोप करनेवाला।
विलोम—वि० उलटा। पु० सर्प। स्वरका उतार।
विलोल—वि० अस्थिर, चंचल, सुन्दर।
विव—वि० देखो 'बिबि'।
विवक्षा स्त्री० बोलने या कहनेकी इच्छा। मतलब।
विवक्षित—वि० अपेक्षित, अभिलषित।
विवदना—अक्रि० विवाद करना।
विवर—पु० गुफा, छिद्र, बिल।
विवरण—पु० हाल, ब्योरा, व्याख्या।
विवरना—दे० 'बवरना'
विवश, विवस—वि० लाचार, परवश।
विवाद—पु० झगड़ा, तर्क, बहस।
विवाह—पु० शादी।
विवाहना—सक्रि० शादी करना (उदे० 'अवगाह')।
विवि—वि० देखो 'बिबि' (ब्रज० २३)।
विविध—पु० तरह तरहका, कई प्रकारका।
विविर—पु० देखो 'विवर'।
विबुध—पु० देवता। ज्ञानी।
विवेक—पु० भले बुरेका ज्ञान, बुद्धि।
विवेचन—पु० व्याख्या, तत्त्वानुसंधान, निर्णय।
विशद—वि० साफ, सुन्दर। सफेद।
विशारद—वि० दक्ष, पंडित। प्रसिद्ध।
विशाल—वि० सुविस्तृत, बहुत बड़ा, विख्यात।
विशिष्ट—वि० विशेषतायुक्त, संयुक्त, विलक्षण, उत्तम, प्रसिद्ध।
विशुद्ध—वि० निर्मल, खालिस, सच्चा।
विशूचिका स्त्री० हैजा।
विशृंखल—वि० शृंखलाहीन, उच्छृंखल।
विशेष—वि० देखो 'बिसेस'। पु० भेद, विचित्रता, नियम। सार, तत्त्व, अधिकता।
विशेषज्ञ—पु० विशेष ज्ञानवाला, तत्त्वज्ञ।
विशेषण—पु० विशेषता बतलानेवाला गुणवाचक शब्द।
विशेष्य—पु० वे शब्द जिनके साथ विशेषण आता है।
विश्रांत—वि० जो आराम कर चुका हो।
विश्राम—पु० आराम। थकावट दूर करना। ठहरनेका स्थान।
विश्रुत—वि० सुना हुआ, विख्यात।
विश्लिष्ट—वि० अलग अलग किया हुआ, खिला हुआ, मुक्त, ढीला।
विश्लेषण—पु० किसी पदार्थके संयोजकोंको पृथक् पृथक करना।
विश्वंभर—पु० विश्वपोषक, परमात्मा।
विश्व—पु० संसार, ब्रह्मांड।
विश्वनाथ, विश्वबंधु—पु० शिवजी।
विश्वपा, विश्वरूप—पु० परमात्मा, ईश्वर।
विश्वसनीय—वि० विश्वासके योग्य।
विश्वसित, विश्वस्त—वि० विश्वसनीय।
विश्वाधार,-धिप—पु० ईश्वर।
विश्वास—पु० मनकी धारणा, यक़ीन।
विश्वासघात—पु० धोखा।
विश्वासी—पु० विश्वास करनेवाला। विश्वस्त व्यक्ति।
विष पु० ज़हर, गरल। जल। कमलनाल।
विषण्ण वि० दुःखित।
विषधर—पु० साँप।
विषमंत्र—पु० विष उतारनेका मंत्र जाननेवाला।
विषम—वि० भीषण, असमान, विकट, कठिन। पु० संकट।
विषमायुध—पु० कामदेव।
विषय—पु० वस्तु, भोग-विलास, (उदे० 'असक्त')। वासना (उदे० 'बतास'), जनपद। धन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयक—वि० संबंधी।
विषयी—वि० विलासी। धनवान्।
विषाक्त—वि० विषयुक्त।
विषाण—पु० सींग, हाथी या सुअरका दाँत।
विषाद—पु० उदासी, शोक, दुःख।
विष्टप—पु० लोक।
विष्ठा—स्त्री० मल, बीट।
विष्णुपदी—स्त्री० गंगाजी।
विसम—दे० 'विषम'।
विसर्ग—पु० त्याग। दान। मोक्ष। प्रलय। मलत्याग। वियोग। कांति। एक वर्ण जो ऊपर नीचे दो विन्दुओंके रूपमें लिखा जाता है।
विसर्जन—पु० विदा, त्याग, समाप्ति, भेजना।
विसर्पी—वि० फैलनेवाला।
विसाल—वि० देखो 'विशाल'।
विसूचिका, विसूची—स्त्री० हैजा।
विसूरण—पु० चिंता, शोक।
विस्तर—पु० विस्तार। समूह। प्रेम। वि० अधिक।
विस्तार—पु० फैलाव।
विस्तीर्ण, विस्तृत—वि० लंबा-चौड़ा, विशाल।
विस्फार—पु० फैलाव, विकास। तेजी। चिल्लेका शब्द। चिल्ला।
विस्फोट—पु० फूटपड़नेकी क्रिया, धड़ाका। फोड़ा, घाव।
विस्मय—पु० आश्चर्य।
विस्मरण—पु० भूल जाना।
विस्मित—वि० आश्चर्यान्वित, चकित।
विस्मृत—वि० भूला हुआ।
विस्राम—पु० आराम।
विहंग, विहंगम, विहग—देखो 'बिहंग' (उदे० 'पुहुमि')।
विहंडना—दे० 'बिहंडना' (उदे० 'कजरारा')।
विहँसना—अक्रि० मुसकाना (उदे० 'पीर')।
विहरना—अक्रि० देखो 'बिहरना'।
विहायस—पु० आकाश। पक्षी।
विहार—पु० विचरण, क्रीड़ा। संघाराम।
विहित—वि० जिसका विधान हो।
विहीन, विहून—वि० रहित (उदे० 'नौज')।
विह्वल—वि० व्याकुल।
वीचि—स्त्री० लहर, मौज।
वीज—पु० शुक्र। तेज। बीज। फल। तत्व। मूल।
वीजन—पु० पंखा। पंखा झलना।
वीणा—स्त्री० एक वाद्ययंत्र, दो तूँबेवाला सितार।
वीणापाणि, वीणावति—स्त्री० सरस्वती।
वीत—वि० छोड़ा हुआ। निवृत्त। रहित।
वीर—पु० योद्धा। भाई। पति। लड़का। कुश। वि० साहसी, बहादुर।
वीरगति—स्त्री० युद्धमें लड़कर मरनेपर प्राप्त होनेवाली गति।
वीरता—स्त्री० शौर्य, वीरत्व।
वीरशय्या—स्त्री० रणक्षेत्र।
वीरान—वि० उजड़ा हुआ, शोभाहीन।
वीरासन—पु० बैठनेकी एक मुद्रा।
वीर्य—पु० शुक्र। शौर्य, पुरुषार्थ, पराक्रम।
वुराना—अक्रि० उराना, समाप्त होना (बि० ४२)।
वृंत—पु० फल इ० की डंठी।
वृंद—पु० झुंड, एक मुहूर्त।
वृंदा—स्त्री० राधिका, तुलसी।
वृंदारक—पु० देवता।
वृक—पु० भेड़िया, सियार।
वृक्ष—पु० पेड़, तरु, द्रुम।
वृजिन—पु० दुःख, पाप, रुधिर, चर्म।
वृत्त—पु० संवाद, वृत्ति, आचार, चरित्र, घेरा, मंडल। वि० गोल, वर्तुल, जीता हुआ, घटित, दृढ़, उत्पन्न।
वृत्तगंधि—स्त्री० गद्यका एक भेद।
वृत्तांत—पु० हाल, विवरण, प्रस्ताव, प्रक्रिया।
वृत्ति—स्त्री० जीविका, पेशा, वज़ीफ़ा, हाल, व्यवहार, स्वभाव, एक संहारक अस्त्र। सूत्रकी व्याख्या।
वृत्र—पु० मेघ। शत्रु। एक पहाड़। अंधकार। एक दैत्य।
वृत्रघ्न, वृत्रहा, वृत्रारि—पु० इन्द्र।
वृथा—क्रिवि० व्यर्थ ही। वि० व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
वृद्ध—वि० बूढ़ा, पुराना। पु० बूढ़ा मनुष्य।
वृद्धि—स्त्री० बढ़ती, अभ्युदय, अधिकता।
वृश्चिक—पु० बिच्छू, एक राशि।
वृष—पु० शत्रु। साँड़। चूहा। गेहूँ। पति।
वृषण—पु० इन्द्र, बैल। अंडकोष।
वृषभ—पु० बैल।
वृषभकेतु,-धुज,-ध्वज—पु० शिवजी।
वृषल—पु० शूद्र, पापी, घोड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृषली—स्त्री० शूद्रा, अविवाहित रजस्वला, रजस्वला, †
वृषादित,-दित्य—पु० वृष राशिके सूर्य (वि०१५२)।
वृष्टि—स्त्री० वर्षा, बौछार (उ० व्यंग-बाणोंकी वृष्टि)।
वृष्णि—पु० मेष, श्रीकृष्ण, इन्द्र, यदुकुल। [† पुंश्चली।
वृहत्—वि० बड़ा।
वेग—पु० प्रवृत्ति। शीघ्रता। प्रवाह। तेज़ी। वीर्य।
वेणि, वेणी—स्त्री० चोटी, पानीकी धारा।
वेणु—पु० बाँस, बाँसुरी।
वेणुका—स्त्री० बाँसुरी।
वेत—पु० बेंत।
वेतन—पु० तनख्वाह, पारिश्रमिक।
वेतस—पु० बड़वानल। बेंत।
वेत्ता—पु० ज्ञाता, जाननेवाला।
वेत्र—पु० वेत।
वेत्रधर, वेत्री—पु० पहरेदार।
वेद—पु० श्रुति। यथार्थ ज्ञान।
वेदन—पु० व्यथा, पीड़ा (उदे० 'निर्मना')।
वेदवाक्य—पु० वेदका वाक्य। प्रामाणिक बात।
वेदांग—पु० शिक्षा, कल्प इ० वेदोंके छः अंग।
वेदांत—पु० अध्यात्म शास्त्र, उत्तरमीमांसा।
वेदि, वेदिका, वेदी—स्त्री० हवनादिके लिए तैयार की गयी भूमि, हवनपीठ।
वेदित—वि० बतलाया हुआ।
वेध—पु० छेद। छेदनेकी क्रिया। यंत्रादिसे नक्षत्र ग्रह इ० देखना। विष्णु। विद्वान्, सूर्य, इ०।
वेधशाला—स्त्री० वह जगह जहाँ ग्रहादिकोंका पर्यवलोकन करनेके लिए उपयुक्त साधन विद्यमान हों।
वेधा—पु० ब्रह्मा, प्रजापति, विष्णु, सूर्य।
वेपथ, वेपथु—पु० कंप (व्रज० ७६)।
वेला—स्त्री० समय, समुद्रकी लहर या किनारा। मर्यादा।
वेल्लि, वेल्ली—स्त्री० लता, बेल।
वेश—पु० पोशाक पहननेका तरीका। पोशाक। खेमा।
वेशवधू, वेशवनिता, वेश्या—स्त्री० गणिका, रंडी।
वेष—पु० वेषभूषा। देखो 'वेश'।
वेष्टन—पु० लपेटनेकी क्रिया। पगड़ी, मुकुट। वेठन।
वेष्टित—वि० चारों तरफसे घिरा हुआ, लपेटा हुआ।
वै—अ० निश्चयसूचक शब्द। [संदेहपूर्ण।
वैकल्पिक—वि० जो इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके, †
वैकुंठ—पु० स्वर्ग, विष्णु।
वैखानस—पु० वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी।
वैचक्षण्य—पु० चातुर्य, दक्षता।
वैचित्र्य—पु० विलक्षणता, विचित्रता।
वैजयंती—स्त्री० पताका। देखो 'वैजन्ती'।
वैज्ञानिक—वि० विज्ञान-सम्बन्धी। पु० विज्ञान-विशारद।
वैतनिक—वि० वेतन लेकर काम करनेवाला।
वैताल, वैतालिक—पु० स्तुति पाठ करनेवाला।
वैद—पु० वैद्य।
वैदक, वैद्यक—स्त्री० आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्र।
वैदग्ध्य—पु० चातुर्य, नैपुण्य, पांडित्य।
वैदूर्य—पु० रत्नविशेष।
वैदेही—स्त्री० जानकी, सीता।
वैद्य—पु० चिकित्सक, विद्वान्।
वैध—वि० विधि-विहित, क़ानूनके अनुकूल।
वैनतेय—पु० विनता-पुत्र गरुड़।
वैपार—पु० वाणिज्य, व्यापार।
वैभव—पु० ऐश्वर्य, शक्ति, महत्ता।
वैमनस्य—पु० मनमुटाव, द्वेष।
वैमात्र—वि० विमातासे उत्पन्न, सौतेला।
वैयाकरण—पु० व्याकरणका विद्वान्।
वैर—पु० शत्रुता।
वैराग,-ग्य—पु० विरक्ति।
वैरागी—पु० विरक्त, साधु (उदे० 'बंग')।
वैरि, वैरी—पु० शत्रु, दुश्मन।
वैलक्षण्य—पु० विचित्रता, विलक्षणता, अनोखापन।
वैवर्ण—पु० विवर्णता, मलिनता।
वैश्य—पु० वर्ण-विशेष बनिया, वणिक।
वैश्वानर—पु० अग्नि, चित्रकवृक्ष।
वैषम्य—पु० असमता, विषमता।
वैष्णव—वि० विष्णु-सम्बन्धी। पु० विष्णुभक्त, एक [संप्रदाय।
वैसा—वि० उस तरहका।
वैसे—क्रिवि० उस तरह। अ० यों।
वोक—अ० तरफ, ओर (उदे० 'निर्तना')।
वोछा—वि० ओछा, नीच (कबीर १७३)।
वोट—पु० राय, मत।
वोटर—पु० मत देनेवाला।
वोड़ना—सक्रि० (हाथ इ०) फैलाना, पसारना 'दास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दान तोपै चहै दग पल अँजुरी वोड़' ।' रतन० २७
वोद—वि० गीला ।
वोदर—पु० उदर 'जग जाके वोदर बसै तिहि तूँ ऊपर लेय ।' दास १८
वोर—स्त्री० ओर, तरफ (रतन०३१) । धन्न (सूवे०३८२)
व्यंग, व्यंग्य—पु० गूढ़ार्थ, उलटा या विशिष्ट अर्थ ।
व्यंजन—पु० पका हुआ खाद्य पदार्थ, चिह्न, 'क' से 'ह' तकके वर्ण, व्यक्त होनेका भाव ।
व्यंजना—स्त्री० व्यक्त करनेकी क्रिया, एक शक्ति जिससे शब्दोंका विशिष्ट अर्थ निकलता है ।
व्यक्त—वि० स्पष्ट, प्रकट, बड़ा ।
व्यक्ति—स्त्री० प्रकटीकरण, एकाई । पु० मनुष्य ।
व्यग्र—वि० उद्विग्न, परेशान, उलझा हुआ ।
व्यजन—पु० पंखा (उदे० 'ताजना') ।
व्यतिक्रम—पु० सिलसिलेकी गड़बड़ी, विघ्न ।
व्यतिरेक—पु० वृद्धि, अतिक्रम, भेद, अभाव । एक [काव्यालंकार ।
व्यतीत—वि० बीता हुआ ।
व्यतीतना—अक्रि० बीतना, कटना (सूवे० ३१) ।
व्यतीपात—पु० भारी उत्पात, ज्योतिषमें एक योग ।
व्यथा—स्त्री० पीड़ा । डर । क्लेश ।
व्यभिचार—पु० दुराचार, दुष्कृत्य, परस्त्रीगमन ।
व्यय—पु० खर्च, खपत, नाश, क्षय ।
व्यर्थ—क्रिवि० योंही, नाहक़ । वि० निकम्मा, निष्फल, निरर्थक ।
व्यलीक—पु० दुःख, अपराध, छल । वि० दुःखदायी, अप्रिय, विचित्र ।
व्यवकलन—पु० घटाना, बाकी निकालना ।
व्यवच्छेद—पु० भेद, पार्थक्य, निवृत्ति, विभाग ।
व्यवधान—पु० आड़, परदा, विच्छेद ।
व्यवसाय—पु० उद्यम, रोज़गार, प्रयत्न । मतलब ।
व्यवस्था—स्त्री० प्रबन्ध, शास्त्रमत, क़ानून ।
व्यवस्थाता, व्यवस्थापक—पु० प्रबन्धक शास्त्रीयमत बतानेवाला ।
व्यवहार—पु० बरताव । रोज़गार । महाजनी । प्रयोग ।
व्यवहित—वि० छिपा हुआ, जिसके आगे कोई आड़ हो ।
व्यष्टि—स्त्री० समाजसे पृथक् व्यक्ति ।
व्यसन—पु० विषयानुराग, शौक़, प्रवृत्ति । निष्फल प्रयत्न । कष्ट । पतन ।
व्यस्त—वि० फेंका हुआ, उद्विग्न, व्याकुल, व्यग्र, उलझा हुआ ।
व्याकरण—पु० शब्दोंके शुद्ध रूप और प्रयोगके नियमोंका निरूपण करनेवाला शास्त्र ।
व्याकुल—वि० घबराया हुआ, व्यग्र, दुःखी ।
व्याख्या—स्त्री० स्पष्टार्थ, टीका, उपदेश ।
व्याख्याता—पु० व्याख्या करनेवाला, व्याख्यान देनेवाला ।
व्याख्यान—पु० वक्तृता, भाषण, वक्तृतादि द्वारा विषय-[का स्पष्टीकरण ।
व्याघात—पु० विघ्न, प्रहार ।
व्याघ्र—पु० बाघ, शेर ।
व्याज—पु० मूद । बहाना, कपट । देर ।
व्याड़—वि० भग्न । पु० व्याघ्र । सर्प ।
व्यादान—पु० फैलाव ।
व्याध—पु० शिकारी । दुष्ट ।
व्याधि,-धी—स्त्री० रोग (उदे० 'अपाध'), संकट ।
व्यान—पु० शरीरस्थ पाँच वायुओंमेंसे एक ।
व्यापक—वि० विस्तृत, फैला हुआ । ढँकनेवाला ।
व्यापना—दे० 'व्यापना' ।
व्यापादन—पु० हत्या, नाश, परपीड़नका उपाय ।
व्यापार—पु० तिजारत । काम । मदद ।
व्याप्ति—स्त्री० सर्वत्र फैला हुआ होनेका भाव, विस्तार, [एक ऐश्वर्य ।
व्यामोह—पु० अज्ञान, व्याकुलता ।
व्यायाम—पु० मेहनत, कसरत, मल्लका कार्य ।
व्याल—पु० सर्प (उदे० 'फुंकरना') । शेर । दुष्ट हाथी ।
व्यालिक—पु० सँपेरा । [वि० दुष्ट ।
व्यावृत्त—वि० खंडित, निवृत्त, मनोनीत, ढँका हुआ, निषिद्ध ।
व्यास—पु० वृत्तके केन्द्रसे होती हुई दोनों ओर परिधि पर समाप्त होनेवाली रेखा, विस्तार । कृष्णद्वैपायन ।
व्याहत—वि० व्यर्थ, निषिद्ध ।
व्युत्पत्ति—स्त्री० शब्दादिक विशेष उद्भव, उत्पत्तिस्थान, शास्त्रज्ञान, पांडित्य ।
व्युत्पन्न—वि० संस्कृत, विचक्षण, पंडित ।
व्यूह—पु० वृन्द, समूह, रचना, सेना, सैन्य-विन्यास,
व्योम—पु० आकाश, बादल, जल । [नतीजा ।
व्योमचर,-चारी—पु० पक्षी, देवता, ग्रहादि ।
व्योमयान—पु० हवाई जहाज़ ।
व्रज—पु० समूह । गमन । एक स्थान ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्रजनाथ,-पति,-राज—पु० श्री कृष्ण।
व्रज्या—स्त्री० भ्रमण। रंगभूमि। आक्रमण।
व्रण—पु० फोड़ा, जख्म।
व्रत—पु० नियम, दृढ़संकल्प, उपवास।
व्रतिक, व्रती, व्रत्य—पु० व्रत करनेवाला।
व्रात—पु० समूह, भीड़। मनुष्य।
व्रात्य—पु० वह जिसका यज्ञोपवीत न हुआ हो, वह जिसके जात-कर्मादि संस्कार न हुए हों। वर्णसंकर।
व्रीड़ा—स्त्री० लज्जा।
व्रीहि—पु० चावल, धान।

श

शंक—स्त्री० संदेह, भ्रम, डर।
शंकना—अक्रि० शंका करना, डरना।
शंकर—पु० शिवजी, वर्ण-मिश्रण। वि० कल्याणकारक।
शंकरा,-री—स्त्री० पार्वती जी, एक रागिनी। मजीठ।
शंका—स्त्री० संशय, डर, खटका।
शंकित—वि० शंकायुक्त, भयभीत।
शंकु—पु० कील, खूँटी, बरछा या अन्य नुकीली वस्तु, साँसा, शिवजी, पाप, ज़हर, एक नाप।
शंख—पु० लाख करोड़, एक निधि, बड़ा घोंघा, कंठ।
शंखधर, भृत—पु० श्रीकृष्ण, विष्णु।
शंखिनी—स्त्री० स्त्रियोंका एक भेद। सीप, मुखकी नाड़ी, एक औषधि, एक देवी।
शंखिनी डंकिनी—स्त्री० उन्मादका एक भेद।
शंढ—पु० हिजड़ा, अविवाहित व्यक्ति। वि० मूर्ख, उल्लू।
शंड—पु० नपुंसक, साँड।
शंबर—पु० समर। जल। वृक्ष-विशेष। एक मृग। एक राक्षस।
शंबरारि—पु० कामदेव, प्रद्युम्न।
शंबल—पु० पाथेय। विद्वेष। तट।
शंबु—पु० घोंघा, छोटा शंख।
शंबुक, शंबूक—पु० घोंघा। एक शूद्र तपस्वी।
शंभु—पु० शिवजी।
शंभुतेज, बीज—पु० पारा।
शऊर—पु० बुद्धि, तमीज़।
शक—पु० संदेह, भ्रम, भय। संवत्।
शकट—पु० गाड़ी, रथ, एक राक्षस।
शकठ—पु० मचान।
शकर—स्त्री० देखो 'शक्कर'।
शकरकंद—पु० कंद-विशेष। उसका फल।
शकरपारा,-पाला—पु० एक मिठाई, एक वृक्ष या
शकल—स्त्री० सूरत, बनावट, चेष्टा, आकृति। पु० चर्म, छाल, टुकड़ा, शक्कर।
शकुन—पु० शुभाशुभ-सूचक चिह्न, शुभघड़ी। पक्षी।
शकुनि, शकुनी—स्त्री० पक्षी, मादा गौरैया। दुर्योधनका मामा।
शक्कर—स्त्री० चीनी। खाँड।
शक्त—वि० बलवान्, समर्थ, योग्य।
शक्ति—स्त्री० ताक़त, बल, सामर्थ्य, वश। दुर्गा, माया।
शक्तिमत्ता—स्त्री० शक्तिमान् होनेका भाव, बलिष्ठता।
शक्तिमान,-शाली—वि० प्रबल, बलिष्ठ।
शक्य—वि० संभव, होने योग्य।
शक्र—पु० इन्द्र। कुटज या कोरैयाका पेड़।
शक्रप्रस्थ—पु० 'इन्द्रप्रस्थ' नामक प्राचीन नगर।
शक्रसुत—पु० जयन्त, बालि, अर्जुन।
शख्स—पु० व्यक्ति, मनुष्य।
शख्सियत—स्त्री० व्यक्तित्व।
शगल—पु० काम-धंधा।
शगुन, शगून—पु० शकुन। तिलक।
शगुनिया—पु० शकुन बतानेवाला।
शगूफा—पु० फूल, कली। कोई नयी घटना।
शचि, शची—स्त्री० इन्द्राणी। प्रज्ञा। शतावर।
शचीपति, शचीश—पु० इन्द्र।
शठ—वि० दुष्ट, कपटी, ठग, बदमाश।
शत—वि० सौ। पु० सौकी संख्या।
शतक—पु० शताब्द, सौका समूह।
शतक्रतु—पु० वह व्यक्ति जिसने सौ यज्ञ किये हों, इन्द्र।
शतघ्नी—स्त्री० एक तरहकी प्राचीन तोप।
शतदल, शतपत्र—पु० कमल। वि० सौ पत्तोंवाला।
शतद्रु—स्त्री० सतलज नदी।
शतपद—पु०, शतपदी—स्त्री० गोजर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शतमख—पु० इन्द्र । उल्लू ।
शतरंज—पु० एक खेल ।
शतरंजी—पु० शतरंज खेलनेवाला । बिसात, जिसपर शतरंज खेलते हैं । कई रंगोंवाली दरी ।
शताब्द—पु०, शताब्दी—स्त्री० सौ वर्ष ।
शतावधान—पु० वह व्यक्ति जो एक साथ कई बातोंपर ध्यान दे सके और उन्हें स्मरण रखते हुए क्रमशः कई कार्योंमें भाग लेता चले ।
शतावर—पु० सफेद मूसली ।
शती—स्त्री० सौ (पद्यों) का समूह ।
शत्रु—पु० वैरी, रिपु ।
शत्रुघ्न,-मर्दन,-हन्ता, शत्रुहा—वि० वैरीका नाश करनेवाला । पु० लक्ष्मणके छोटे भाईका नाम ।
शत्रुता,-ताई—स्त्री० रिपुता, वैर ।
शनि—पु० एक ग्रह, एक दिन ।
शनिप्रिय—पु० नीलम ।
शनैःशनै - क्रिवि० धीरे धीरे ।
शपथ—स्त्री० सौगन्द, कौल, आन ।
शफरी--स्त्री० एक तरहकी छोटी मछली ।
शफाखाना—पु० अस्पताल, दवाखाना ।
शब—स्त्री० रात ।
शबनम—स्त्री० ओस । [† जाति ।
शबर—वि० कई रंगोंका । पु० एक वृक्ष । एक नीच †
शब्द—पु० आवाज़, आहट, ध्वनि । लफ्ज । किसी महात्माके वचन ।
शब्दबेधी,-भेदी—पु० वह जो केवल शब्द सुन कर लक्ष्यपर बाण छोड़े ।
शब्दसाधन—पु० शब्दोंके भेद, रूपान्तर तथा व्युत्पत्तिका निरूपण करनेवाला भाग (व्याकरण) ।
शम—पु० शान्ति, निवृत्ति, उपचार, मुक्ति, क्षमा ।
शमन—पु० दमन, शान्त करना, शान्ति, यम ।
शमलोक—पु० शान्तिलोक, स्वर्ग (उदे० 'बटपार') ।
शमशेर—स्त्री० तलवार ।
शमा—स्त्री० मोम, मोमबत्ती ।
शमादान—पु० बत्ती रखनेका आधार ।
शमी—पु० वृक्ष-विशेष । वि० शान्त ।
शयन—पु० सोना, लेटना । शय्या ।
शयनगृह, शयनागार—पु० सोनेका कमरा ।
शयित—वि० सोया हुआ ।
शय्या—स्त्री० सेज, पलंग, बिछौना ।
शर—पु० बाण, खस, सरकंडा, सर या चिता ।
शरण—स्त्री० आश्रय, रक्षा, आश्रयस्थान ।
शरणागत, शरणापन्न—वि० शरणमें आया हुआ ।
शरणी, शरनी—वि० स्त्री० शरण देनेवाली ।
शरण्य—वि० शरणागतरक्षक ।
शरतिया—दे० 'शर्तिया' ।
शरत्, शरद—स्त्री० वर्षाके बादवाली ऋतु । साल ।
शरबत—पु० रस, मिष्ट पेय ।
शरबती—वि० हलके पीले रंगका । रसदार । पु० हलका पीला रंग । एक नीबू, एक कपड़ा ।
शरभ—पु० एक पक्षी । टिड्डी । हाथीका बच्चा । ऊँट रामकी सेनाका एक यूथप बन्दर ।
शरम—स्त्री० लज्जा, संकोच । इज़्ज़त, आबरू ।
शरमाना—सक्रि० लज्जित करना । अक्रि० लज्जित होना ।
शरमिंदा—वि० लज्जित । [संकोच करना
शरमीला—वि० लज्जालु ।
शरह—स्त्री० दर, भाव, रीति, व्याख्या ।
शराकत—स्त्री० हिस्सेदारी ।
शरापना—अक्रि० शाप देना 'मति माता करि क्रोध शरापै, नहिं दानव धिग मतिको ।' सूरा० ३८
शराफत—स्त्री० भलमनसी ।
शराब—स्त्री० मद्य, मदिरा ।
शराबखाना—पु० वह जगह जहाँ शराब बनती या बिकती हो ।
शराबी--पु० शराब पीनेवाला ।
शरावोर—वि० भीगा हुआ ।
शरारत—स्त्री० बदमाशी, शैतानी ।
शरासन—पु० धनुष ।
शरिष्ठ, शरेष्ट—वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।
शरीअत—स्त्री० मुसलमानोंका धर्म-शास्त्र ।
शरीक—वि० मिला हुआ । वि० हिस्सेदार, साथी ।
शरीफ—वि० पवित्र । पु० कुलीन या सभ्य व्यक्ति ।
शरीफा—पु० सीताफल ।
शरीर—पु० देह, काया, पिंड, तनु । वि० नटखट, दुष्ट ।
शरीरपात—पु० देहान्त, मृत्यु ।
शरीरी—पु० शरीरवाला, प्राणी, जीव ।
शर्करा—स्त्री० चीनी । बालू, कंकरी । एक बीमारी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शर्त्त—स्त्री० होड़, नियम, दाँव, अपेक्षित बात।
शर्त्तिया—वि० निश्चित (दवा इ०)। क्रिवि० शर्तके साथ, दृढ़तापूर्वक।
शर्वत, शर्वती—दे० 'शरबत', 'शरबती'।
शर्म—स्त्री० लज्जा, संकोच। आबरू।
शर्म्म—पु० सुख, घर। शर्मद वि० आनंददायक।
शर्मा—पु० ब्राह्मणोंके नामके साथ लगनेवाली एक उपाधि।
शर्माऊ, शर्मीला—वि० लज्जाशील, संकोची।
शर्मिंदा—वि० लज्जित।
शर्व—पु० शिवजी। विष्णु।
शर्वरी—स्त्री० रात्रि। संध्या। स्त्री। हलदी।
शलगम, शलजम—पु० मूल-विशेष।
शलभ—पु० फतिंगा, टिड्डी।
शलाका—स्त्री० सलाई, हड्डी, बाण, पाँसा।
शलूका—पु० स्त्रियोंकी एक तरहकी कुरती।
शल्य—पु० एक तरहका बाण, अस्त्र-विशेष, साँग, अस्त्र-चिकित्सा। शल्यक्रिया = शस्त्रक्रिया, चीरफाड़ या नश्तरका काम।
शव—पु० लोथ, लाश, मृतदेह।
शवयान,-रथ—पु० अरथी, टिकठी।
शवर—पु० एक जंगली जाति।
शश—पु० खरहा। चन्द्रमाकी कालिमा।
शशक—पु० खरगोश।
शशभृत्, शशधर—पु० चन्द्रमा। कपूर।
शशांक—पु० चन्द्रमा।
शशा—पु० खरगोश।
शशि, शशी—पु० चन्द्रमा।
शशिज—पु० बुध।
शशिधर,-मौलि,-शेखर—पु० शिवजी।
शशिपुत्र,-सुत—पु० बुधग्रह।
शसि, शसी—पु० चन्द्रमा।
शस्त्र—पु० हथियार, आयुध।
शस्त्रधर,-भृत्—पु० शस्त्रधारण करनेवाला, सैनिक, योद्धा।
शस्त्री—पु० शस्त्रवाला, वह जो शस्त्र चलाता हो। छुरी।
शस्य—पु० धान, कोमल घास, फसल।
शहंशाह—पु० सम्राट्।
शह—पु० घर, गैला, सम्राट्। उभाड़ने या झटका देनेका कार्य। शतरंजमें बादशाहका किसी मोहरेकी घातमें पड़ जाना।
शहजादा—पु० राजपुत्र।
शहतीर—पु० लंबा लट्ठा, म्याल।
शहतूत—पु० एक वृक्ष या उसका फल।
शहद—पु० मधु।
शहना—पु० कोतवाल, मंत्री।
शहनाई—स्त्री० एक बाजा।
शहबाला—पु० वरके साथ बैठनेवाला बालक।
शहमात—स्त्री० 'बादशाह' का शह देकर मात किया जाना (शतरंज)।
शहर—पु० नगर।
शहरपनाह—स्त्री० प्राचीर, परकोटा।
शहादत—स्त्री० सबूत, गवाही। शहीद होना।
शहिजदा—पु० शहजादा, राजपुत्र।
शहीद—पु० धर्मादिके लिये बलि होनेवाला मनुष्य।
शांत वि० चुप, ठंडा, सौम्य, स्थिर, अचंचल।
शांति—स्त्री० चुप्पी, नीरवता ठंडापन, सौम्यता, स्थिरता, उपशम।
शांतिदायक,-दायी,-प्रद—वि० शांति देनेवाला।
शांबरी—स्त्री० इन्द्रजाल। जादूगरनी। पु० क्रोध।
शांबुक, शांबूक—पु० घोंघा।
शांभर—पु० एक नमक। स्त्री० एक झील।
शाइस्ता—वि० नम्र, विनयी। शिष्ट।
शाक—पु० तरकारी, भाजी। वि० शक राजाका।
शाकल—पु० हवन-सामग्री। टुकड़ा।
शाकाहार—पु० निरामिष भोजन।
शाकाहारी—पु० केवल अन्न, फल-फूल, साग इ० खानेवाला।
शाकुन—वि० शकुनसम्बन्धी। पक्षियोंके सम्बन्धका। देखो 'शाकुनि'।
शाकुनि—पु० व्याधा, बहेलिया।
शाक्त—पु० शक्तिकी उपासना करनेवाला।
शाख—स्त्री० विश्वास। डाल, उपधारा।
शाखा—स्त्री० डाल, विभाग, उपभेद, उपधारा।
शाखामृग—पु० बंदर। गिलहरी।
शाखी—पु० वृक्ष। साक्षी। वि० शाखावाला।
शाखोच्चार—पु० विवाहके समय गोत्र इ० का कथन।
शागिर्द—पु० शिष्य।
शाठ्य—पु० क्रूरता, दुष्टता, धूर्तता।
शाण—पु० सान। कसौटी। चार मासोंकी तौल।
शातिर—पु० शतरंजका खिलाड़ी। वि० चतुर, दक्ष।
शादी—स्त्री० विवाह। खुशी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शान—स्त्री० प्रताप, ऐश्वर्य, तड़क-भड़क, प्रतिष्ठा।
शान शौकत—स्त्री० सजधज। तैयारी।
शाप—पु० भर्त्सना, बददुआ, अनिष्ट चाहना।
शापना—स्त्री० शाप देना 'जियमें डरयो मोहि मति शापै व्याकुल बचन कहंत।' सूरा० ३०
शाबाश—अ० धन्य, वाह वाह।
शाब्द, शाब्दिक, शाब्दी—वि० शब्द-सम्बन्धी।
शाम—स्त्री० सन्ध्या। पु० श्याम, कृष्ण।
शामत—स्त्री० दुर्भाग्य, आपत्ति, दुर्दशा।
शामियाना—पु० चँदोवा, वितान, वस्त्रमंडप।
शामिल—वि० मिला हुआ, एक साथ।
शायक—पु० बाण, शर, तलवार।
शायक़—वि० इच्छुक, शौक़ीन।
शायद—अ० संभवतः, कदाचित्।
शायर—पु० कवि।
शायी—वि० सोनेवाला।
शारंग, शारंगपानी—देखो 'सारंग' 'सारंगपानी'।
शारद—स्त्री० शारदा। पु० वर्ष, बादल। वि० शरद् सम्बन्धी, नया।
शारदा—स्त्री० सरस्वती, दुर्गा, एक वीणा।
शारदी, शारदीय—वि० शरद् ऋतु सम्बन्धी।
शारिका—स्त्री० मैना।
शारीरिक—वि० दैहिक, शरीर सम्बन्धी।
शार्ङ्ग—वि० सींगका बना हुआ। पु० धनुष।
शार्दूल—पु० व्याघ्र, शेर, श्रेष्ठ।
शाल—पु० एक पेड़, एक मछली। दुशाला।
शाला—स्त्री० गृह, स्थान।
शालि—पु० एक धान, बासमती चावल।
शालिवाहन—पु० एक राजा जिसने शक संवत् चलाया।
शालीन—वि० लज्जाशील, शिष्ट, विनम्र, अमीर।
शाल्मलि—स्त्री० सेमलका पेड़।
शावक—पु० पशु आदिका छोटा बच्चा।
शाबर—पु० मंत्र-ग्रंथ-विशेष। अपराध, पाप।
शाश्वत—वि० निरन्तर रहनेवाला।
शासक—पु० अधिकारी, राजा, दण्डदाता।
शासन—पु० अधिकार, प्रभुत्व, आदेश, हुकूमत, दण्ड।
शासित—वि० दण्डित। शासन किया हुआ। पु० प्रजा। संयम।
शास्ति—पु० शासन। दण्ड।
शास्त्र—पु० धार्मिक ग्रन्थ।
शाहंशाह—पु० सम्राट्।
शाह—पु० राजा, बादशाह। वि० बड़ा।
शाहज़ादा—पु० राजकुमार।
शाहना—वि० शाही। पु० दुल्हेका बाना।
शाहराह—स्त्री० राजमार्ग।
शाही—वि० राजसी।
शिंशपा, शिंशुपा—पु० शीशमका वृक्ष। अशोक वृक्ष।
शिकंजा—पु० दबानेका यंत्र, कोल्हू।
शिकन—स्त्री० सिकुड़न, बलि।
शिकम—पु० पेट।
शिकवा—पु० शिकायत।
शिकस्त—स्त्री० पराजय, दुर्गति।
शिकायत—स्त्री० उलाहना, चुगली, निन्दा, बुराई, रोग।
शिकार—पु० भक्ष्य, लक्ष्य। आखेट।
शिकारी—पु० व्याधा, अहेरी, शिकार करनेवाला।
शिक्षक—पु० शिक्षा देनेवाला, अध्यापक।
शिक्षण—पु० पढ़ानेका काम। तालीम।
शिक्षा—स्त्री० उपदेश, सीख, अध्ययन। सजा, शासन।
शिक्षित—वि० शिक्षाप्राप्त, पण्डित।
शिखंड—पु० काकपक्ष, मयूरपुच्छ, चोटी।
शिखंडिनी—स्त्री० मोरनी, जूहा।
शिखंडी—पु० मोर, मुर्गा, पीली जूही, बालोंकी चोटी।
शिख—स्त्री० शिखा (यथा नखशिख)। [बाण
शिखर—पु० शृङ्ग, चोटी, कँगूरा, एक रत्न।
शिखरन—पु० पछावर, दहीमें चीनी शक्कर बनाया हुआ एक पेय।
शिखरी—पु० पहाड़, पेड़ अपामार्ग।
शिखा—स्त्री० चोटी, शिखरके बालों या पत्तोंका गुच्छा। शिखर। लौ, लपट।
शिखावल—पु० मोर, कटहल।
शिखिनी—स्त्री० मोरनी, मुर्गी।
शिखी—पु० मोर, मुर्गा, अग्नि, तीनकी संख्या, पुष्पतारा, चित्रकवृक्ष। वि० शिखावाला।
शिगाफ़—पु० छेद, दरार। बहतर।
शिगूफा—दे० 'शगूफा'।
शिताब—क्रिवि० शीघ्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिथिल—वि० सुस्त, ढस्त, ढीला, थका हुआ।
शिथिलता, शिथिलाई—स्त्री० सुस्ती, ढिलाई, थकावट।
शिथिलाना—अक्रि० थकना, शिथिल पड़ना।
शिनाख़—स्त्री० पहचान, परख।
शिफर—पु० ढाल (दे० 'सिफर')।
शिर—पु० माथा, कपाल, चोटी।
शिरकत, शिराकत—स्त्री० साझा। योगदान।
शिरस्त्राण—दे० 'शिरस्त्राण'।
शिरफूल—पु० सिरका एक आभूषण।
शिरमौर—पु० मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरस्त्राण—पु० लोहेकी टोपी, 'कूँढ'।
शिरहन—पु० सिरहाना। तकिया।
शिरा—स्त्री० रक्त-नलिका, नस। धारा। टोपी।
शिरीष—पु० सिरिस वृक्ष।
शिरोधार्य—वि० सिरपर धारण करने योग्य। आदरके साथ स्वीकार करने योग्य।
शिरोमणि—पु० सिरका गहना, श्रेष्ठ व्यक्ति, मुखिया।
शिरोरुह—पु० केश।
शिला—स्त्री० चट्टान, पत्थर।
शिलाजीत—पु० एक शक्तिवर्धक ओषधि।
शिलान्यास—पु० किसी भवन इ० की नींव रखी जानेका [समारोह।
शिलापट—पु० सिलवट, चट्टान।
शिलालेख—पु० पत्थरपर खुदा हुआ लेख।
शिलावृष्टि—स्त्री० ओलेकी वर्षा।
शिला—स्त्री० देहरी। भाला। भोजपत्र।
शिलीमुख—पु० भ्रमर। बाण। मूर्ख। युद्ध।
शिल्प—पु० कारीगरी, वस्तु निर्माणकला।
शिल्पकार, शिल्पी—पु० कारीगर, राज, चित्रकार।
शिल्पजीवी—पु० कारीगर, शिल्पद्वारा जीवन-निर्वाह करनेवाला।
शिव—पु० शंकरजी। रुद्र। शुभ, कल्याण। शृगाल। पानी। ईश्वर। मृगविशेष। वि० शुभकारी।
शिवता—स्त्री० शिवमें लय होना, मोक्ष। शिवका धर्म।
शिवपुरी—स्त्री० काशी।
शिवरात्र, रात्रि—स्त्री० फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी।
शिवा—स्त्री० पार्वती, दुर्गा। शृगाली (सुजा० ३४)। मुक्ति। हर्र। दूर्वा।
शिवानी—स्त्री० पार्वती, दुर्गा, भवानी।
शिवालय, शिवाला—पु० शिव-मंदिर।
शिविका—स्त्री० डोली, पालकी।
शिविर—पु० पड़ाव, क़िला, डेरा। [ठंडा।
शिशिर—पु० जाड़ा, जाड़ेकी ऋतु, सर्दी, हिम। वि०
शिशिरगु,-मयूख, शिशिरांशु—पु० चन्द्रमा।
शिशु—पु० बच्चा। कार्तिकेय।
शिशुता, शिशुताई—स्त्री० लड़कपन, बचपन।
शिशुमार—पु० मगर, मगर जैसा एक नक्षत्र। शिशुमार चक्र = सूर्य तथा ग्रहादि।
शिश्न, शिष्ण—पु० पुरुषेन्द्रिय।
शिष—स्त्री० सिख, शिक्षा। शिखा, चोटी। पु० शिष्य।
शिषा—स्त्री० शिखा, चोटी, लौ।
शिषी—पु० देखो 'शिखी'।
शिष्ट—वि० सभ्य, सुशील, प्रतिष्ठित, शान्त।
शिष्टता—स्त्री० विनय, नम्रता।
शिष्टाचार—पु० सभ्य व्यवहार, सत्कार, आवभगत।
शिष्य—पु० चेला, अनुयायी, विद्यार्थी।
शीकर—पु० जलकण, ओस, फुँही। वायु।
शीघ्र—क्रिवि० जल्द, झटपट।
शीघ्रता—स्त्री०,—त्व—पु० जल्दी, फुरती। [† सुस्त।
शीत—पु० ठंड, जाड़ेका समय ओस, कपूर। वि० ठंडा, †
शीतकर,-किरण,-गु,-दीधिति—पु० चन्द्रमा।
शीतज्वर—पु० जाड़ा देकर चढ़नेवाला ज्वर।
शीतमयूख -रश्मि—पु० चन्द्रमा, कपूर।
शीतल—वि० ठंडा, सर्द, प्रसन्न।
शीतलचीनी—स्त्री० कबाबचीनी।
शीतलता, शीतलताई—स्त्री० ठंडापन।
शीतला—स्त्री० चेचक, एक देवी।
शीरा—पु० चासनी, शर्बत।
शीरी—वि० मीठी। प्रिय।
शीर्ण—वि० टूटाफूटा, निकम्मा, पुराना, दुर्बल।
शीर्य—वि० नश्वर, भंगुर।
शीर्ष—पु० सिर, अग्रभाग, चोटी।
शीर्षक—पु० सिर, चोटी। परिचायक शब्द या शब्द-समूह।
शील—पु० अच्छा स्वभाव, चरित्र, आदत, संकोची [स्वभाव।
शीलवान्—वि० सुशील, सच्चरित्रवाला।
शीश—पु० सिर, माथा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शीशम—पु० एक पेड़।
शीशमहल—पु० शीशेका मकान।
शीशा—पु० एक पारदर्शक धातु, काँच, दर्पण।
शीशी—स्त्री० काँचका एक तरहका लम्बा पात्र।
शुंड—पु० सूँड़। गज-मद।
शुंडा—स्त्री० सूँड। शराब।
शुंडादंड—पु० सूँड़।
शुक—पु० तोता, व्यासपुत्र।
शुकराना—पु० नज़राना। अहसान मानना, कृतज्ञता।
शुक्त—पु० काँजी, खटाई, सिरका। वि० खट्टा। अप्रिय। बुनसान।
शुक्ति—स्त्री० सीपी, घोंघा, एक चक्षुरोग, बवासीर।
शुक्तिका—स्त्री० सीपी, एक नेत्ररोग।
शुक्तिज, शुक्तिबीज—पु० मोती।
शुक्र—पु० वीर्य, पौरुष, एक ग्रह, एक मुनि, एक दिन, एक वृक्ष, चित्रक। धन। धन्यवाद।
शुक्रगुज़ार—वि० कृतज्ञ, उपकृत।
शुक्रांग—पु० मोर।
शुक्रिया—पु० धन्यवाद।
शुक्ल—वि० श्वेत, धवल, उजला। पु० शुक्लपक्ष, धवतुष, मक्खन इ०।
शुचि—वि० स्वच्छ, पवित्र, निर्मल। स्त्री० स्वच्छता, पवित्रता। पु० अग्नि, चन्द्र, इ०।
शुची—वि० साफ, पवित्र।
शुतुरमुर्ग—पु० ऊँट जैसी गर्दनवाला एक विशालकाय पक्षी।
शुदनी—स्त्री० होनहार, भवितव्यता।
शुद्ध—वि० स्वच्छ, पवित्र, खालिस, निर्दोष, उज्वल।
शुद्धि—स्त्री० स्वच्छता, पवित्रता, सुधार, संशोधन, शुद्ध होनेका संस्कार।
शुन—पु० कुत्ता। हवा।
शुनासीर—पु० इन्द्र, वायु।
शुबहा—पु० सन्देह, भ्रम।
शुभंकर—वि० कल्याणकारी।
शुभ—पु० कल्याण, भलाई। वि० भला, मंगलकारी, सुन्दर।
शुभकर,-कारक,-कारी—वि० मंगलकारक।
शुभचिंतक, शुभेच्छु—वि० भला चाहनेवाला, हितैषी।
शुभ्र—वि० सफेद, उज्वल, निर्मल। पु० अबरक, चाँदी, खरा, सोना नमक, शिवजी, मंगलोत्सव।
शुरवा—पु० रसा।
शुरू—पु० आदि, प्रारंभ।
शुल्क—पु० फीस, महसूल, कर, भाड़ा।
शुश्रूषा—स्त्री० सेवा, खुशामद। सुननेकी इच्छा।
शुष्क—वि० सूखा, नीरस, तथ्यहीन, निरर्थक।
शूकर—पु० वाराह, सूअर।
शूची—स्त्री० सुई।
शूद्र—पु० चतुर्थ वर्ण। सेवक।
शूद्रा—स्त्री० शूद्र जातिकी स्त्री।
शूद्राणी, शूद्री—स्त्री० शूद्रकी स्त्री।
शून, शून्य—वि० छूछा, निर्जन, रहित, निराकार। पु० खाली जगह, आकाश, स्वर्ग, बिन्दु, अभाव। निर्जन स्थान।
शून्यवाद—पु० एक बौद्ध सिद्धान्त।
शूप, शूर्प—पु० सूप।
शूर—वि० वीर, साहसी। पु० योद्धा, सिंह, सूर्य।
शूरण, शूरन—पु० देखो 'सूरन'।
शूरता, शूरताई—स्त्री० वीरता।
शूरा—पु० सूर्य। योद्धा, वीर।
शूल—पु० पेटका दर्द, चुभनेवाली पीड़ा, टीस। सलाई, छड़। त्रिशूल। सूली।
शूलधर, शूलधारी—पु० शिवजी।
शूलना—अक्रि० चुभना, पीड़ा देना।
शूलपाणि,-पानि—पु० शिवजी।
शूली—स्त्री० सूली। शूल। पु० शिवजी। खरगोश। एक नरक।
शृंखल—पु० सांकल, जंजीर, करधन।
शृंखला—स्त्री० श्रेणी, पंक्ति, सिलसिला, करधनी, जंजीर।
शृंग—पु० सींग, सींगका बाजा। शिखर, कँगूरा। चिह्न, प्रभुत्व, कमल, अगर।
शृंगार—पु० सजावट, शोभाकी वस्तु। एक मुख्य रस।
शृंगारना—सक्रि० भूषणादिसे सजाना, सँवारना।
शृंगारिया—पु० शृङ्गार करनेवाला। बहुरूपिया।
शृंगी—पु० सींगवाला पशु, सींगका बाजा। हाथी, शिवजी, एक ऋषि, पहाड़, एक औषध।
शृग, शृगाल—पु० सियार, गीदड़। वि० कायर।
शेख—वि० बाकी, समाप्त। पु० समाप्ति, बाकी।
शेखचिल्ली—पु० मूर्ख मसखरा, तरह तरहकी कल्पना करनेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शेखर—पु० सिरा, चोटी, माथा, मुकुट।
शेखी—स्त्री० डींग, घमंड, अकड़। शेखीबाज़ = घमंडी।
शेर—पु० व्याघ्र, वीर पुरुष।
शेरपंजा—पु० 'बघनहा' नामक अस्त्र।
शेरवानी—स्त्री० एक तरहका अंगा।
शेवाल—दे० 'शैवाल'।
शेष—वि० बचा हुआ, समाप्त, अन्य। पु० नागराज, लक्ष्मण। बची हुई वस्तु, परिणाम, समाप्ति, मृत्यु।
शेषधर—पु० शिव।
शेषर—पु० शेखर, माथा, चोटी, मुकुट।
शेषशायी—पु० शेषकी शय्यापर सोनेवाले विष्णु।
शेषांश—पु० बचा हुआ भाग।
शैतान—पु० विघ्नकारक देवता, शरारती या अत्याचारी [मनुष्य, दुष्ट।
शैथिल्य—पु० सुस्ती। ढिलाई।
शैल—पु० पहाड़। वि० पथरीला, पत्थरका।
शैलजा, शैलपुत्री स्त्री० पार्वती, गंगा।
शैलतटी—स्त्री० पहाड़की तराई।
शैलधर—पु० श्रीकृष्ण।
शैलपति,-राज—पु० हिमालय।
शैली—स्त्री० रीति, प्रणाली, लिखनेका तरीक़ा।
शैलेय—पु० सेंधा नमक। शिलाजीत। सिंह। वि० पत्थरसे उत्पन्न, पथरीला।
शैव—पु० शिवभक्त। वि० शिव सम्बन्धी।
शैवलिनी—स्त्री० नदी, सरिता।
शैवाल—पु० सेवार, पानीकी लता।
शैवी—स्त्री० पार्वती, एक देवी।
शैशव—पु० बचपन, बाल्यावस्था। वि० शिशुसम्बन्धी।
शोक—पु० रंज, अफसोस, दुःख।
शोकातुर, शोकार्त्त—वि० शोकसे व्याकुल।
शोख—वि० धृष्ट, दुष्ट, चटकीला।
शोच—पु० रंज, दुःख, चिन्ता।
शोचनीय—वि० जिसके लिए शोक मनाया जाय, चिन्तनीय, जिससे दुःख उत्पन्न हो।
शोण—पु० लाल रंग, अग्नि, सिंदूर, मानिक, रुधिर।
शोणित—पु० रुधिर, केसर। इंगुर। वि० लाल।
शोध—पु० सूजन।
शोध—पु० पता, खोज। होश। अदायगी। संशोधन।
शोधक—पु० शोधनेवाला। ढूँढ़नेवाला, सुधारनेवाला।
शोधना—सक्रि० खोज करना, साफ करना, सुधारना।
शोधैया—पु० शोधनेका कार्य करनेवाला।
शोभ—स्त्री० शोभा।
शोभन—वि० सुन्दर, भला, शुभ। पु० अग्नि, शिव, कमल, ग्रह।
शोभना—अक्रि० शोभायुक्त होना, शोभा देना। (उदे० 'क्षोभना', 'धार')।
शोभा—स्त्री० छवि, कान्ति, सुन्दरता, सजावट, शृंगार।
शोभायमान—वि० शोभा पाता हुआ, सुंदर।
शोभित—वि० शोभायुक्त। उपस्थित।
शोर—पु० हल्ला, (उदे० 'दह'), खलबली, धूम।
शोरबा—पु० रसा, जूस।
शोरा—पु० एक तरहका क्षार।
शोशा—पु० चुटकीली बात, व्यंग्य। निकली हुई नोक।
शोष—पु० सूखनेका भाव, सुखंडी रोग, क्षय।
शोषक—पु० सुखानेवाला, नाश करनेवाला।
शोहदा—पु० गुंडा, छैला, लंपट।
शोहरत-स्त्री०, शोहरा—पु०, कुख्याति। किंवदंती, जन-समूहमें फैली हुई खबर।
शौक—पु० व्यसन रुचि, प्रवृत्ति, लालसा।
शौकत—स्त्री० सजधज।
शौकिया—क्रिवि० शौक़से, शौक़के कारण।
शौक़ीन—पु० शौक करनेवाला, ऐयाश, छैला।
शौक्तिक, शौक्तिकेय—पु० मोती।
शौच—पु० प्रातःकृत्य, पवित्रता, स्नान, दिशा जाना।
शौध—वि० पवित्र, साफ।
शौर्य—पु० वीरता, पराक्रम, उत्साह।
शौहर—पु० पति।
श्मशान—पु० मरघट।
श्मश्रु—पु० मूँछ, दाढ़ी आदि।
श्याम—वि० काला, साँवला। पु० श्रीकृष्ण, कोयल, मेघ।
श्यामकंठ—पु० शिवजी, नीलकंठ पक्षी, मयूर।
श्यामकर्ण—पु० काले कानवाला घोड़ा।
श्यामटीका—पु० दिठौना।
श्यामता—स्त्री० कालापन, मलिनता।
श्यामल—वि० काला, साँवला। पु० पीपल, खिरिसवृक्ष।
श्यामा—स्त्री० एक चिड़िया, साँवली स्त्री, राधा, तरुणी, सुंदर स्त्री, सोमलता, काली गाय, कस्तूरी, रात्रि, इ०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्याल—पु० शृगाल, गीदड़ । साला ।
श्येन—पु० बाज पक्षी ।
श्रंग—पु० सींग (सू० २२) ।
श्रद्धा—स्त्री० विश्वास और पूज्यभाव, भक्ति, विश्वास ।
श्रद्धान—पु० श्रद्धा ।
श्रद्धालु—वि० श्रद्धावान्, श्रद्धायुक्त ।
श्रद्धास्पद—वि० पूज्य, श्रद्धाका पात्र ।
श्रद्धेय—वि० श्रद्धास्पद, पूज्य ।
श्रम—पु० मेहनत, कष्ट, दौड़-धूप, प्रयास, थकावट, पसीना (श्रमकण = पसीनेकी बूँदें) ।
श्रमजल—पु० पसीना ।
श्रमजीवी—पु० मेहनत करके जीवन निर्वाह करनेवाला व्यक्ति, कुली । वि० परिश्रम करके पेट पालनेवाला ।
श्रमण—पु० बौद्ध संन्यासी । कुली ।
श्रमबिंदु,-शीकर—पु० पसीना, श्रमकण ।
श्रमित—वि० थका हुआ ।
श्रमी—वि० श्रम करनेवाला । पु० श्रमजीवी ।
श्रवण, श्रवन—पु० सुननेकी क्रिया । कान । एक नक्षत्र ।
श्रवना—दे० 'स्रवना' । [भक्तिका एक प्रकार ।
श्रवित—वि० बहा हुआ ।
श्रव्य—वि० सुनने योग्य ।
श्रांत—वि० थका हुआ, खिन्न, निवृत्त, शांत ।
श्राद्ध—पु० पितरोंकी तृप्तिके लिए किया गया कृत्य-विशेष ।
श्राद्धपक्ष—पु० पितृपक्ष ।
श्राप—पु० बददुआ, अमंगल वाक्य ।
श्रावक, श्रावग—पु० जैन धर्मानुयायी, बौद्ध संन्यासी । शिष्य । नास्तिक । वि० सुननेवाला ।
श्रावगी—पु० जैनी ।
श्रावण—पु० एक महीनेका नाम । [† विशेष ।
श्रावणी—स्त्री० श्रावणकी पूर्णिमा या उस दिनका कृत्य-†
श्रावन—पु० गिराने या बूँद बूँद टपकानेका कार्य ।
श्रावना—सक्रि० बहाना, टपकाना ।
श्राव्य—वि० देखो 'श्रव्य' ।
श्रिय—स्त्री० शोभा । शुभ, मंगल ।
श्री—स्त्री० लक्ष्मी, शोभा, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, सिद्धि, बेंदी, पदचिह्न-विशेष, श्वेतचंदन ।
श्रीकंठ—पु० शिवजी । [एक पेय पदार्थ ।
श्रीखंड—पु० हरिचन्दन । दही, केसर, और मिस्रीसे बना
श्रीचक्र—पु० देवीकी पूजाका चक्र ।
श्रीदाम—पु० श्रीकृष्णके मित्र सुदामा ।
श्रीधाम, श्रीनिकेत—पु० लक्ष्मीधाम, वैकुण्ठ, कमल ।
श्रीधर, श्रीनिवास, श्रीपति—पु० विष्णु, कृष्ण, राम ।
श्रीपंचमी—स्त्री० वसंतपंचमी ।
श्रीफल—पु० नारियल, बेल, धन, जाँबला, शिरनी ।
श्रीमंत—वि० श्रीमान्, शोभावान्, धनी । पु० सिरका एक गहना । सीमन्त, माँग ।
श्रीमान्—वि० धनी, शोभावान् । पु० धनी व्यक्ति, [आदरसूचक शब्द ।
श्रीमाल—स्त्री० गलेकी माला ।
श्रीरंग, श्रीरवन पु० लक्ष्मीपति, विष्णु ।
श्रीवंत दे० श्रीमंत' (उदे० निरवारना') ।
श्रीवत्स पु० भृगुके चरणप्रहारका चिह्न, विष्णु ।
श्रीहत—वि० निष्प्रभ, शोभाहीन, निस्तेज ।
श्रुत—वि० सुना हुआ, प्रसिद्ध ।
श्रुतपूर्व—वि० पहलेका सुना या जाना हुआ ।
श्रुति—स्त्री० सुननेका काम, सुनी हुई बात, वेद, शब्द, समाचार । श्रवणेन्द्रिय, चारकी संख्या ।
श्रुतिकटु—वि० जो कानोंको कठोर और कर्कश जान पड़े ।
श्रुतिपथ—पु० वेदोक्त मार्ग, कान ।
श्रेणि, श्रेणी—स्त्री० पंक्ति, माला, परम्परा, सिकड़ी, सीढ़ी, समूह ।
श्रेय—पु० कल्याण, शुभ, पुण्य, धर्म । वि० शुभ, श्रेष्ठ ।
श्रेयस्कर—वि० शुभावह ।
श्रेष्ठ—वि० सबसे अच्छा, बढ़िया, पूज्य, बड़ा, प्रधान,
श्रेष्ठी—पु० सेठ, महाजन । [शुभकारी ।
श्रोण, श्रोणित—देखो 'शोण', 'शोणित' ।
श्रोणि, श्रोणी—स्त्री० नितम्ब, कटिप्रदेश ।
श्रोत—पु० कान ।
श्रोता—पु० सुननेवाला ।
श्रोत्र—पु० कान ।
श्रोत्रिय, श्रोत्री—पु० वेदपाठी, वेदज्ञ ।
श्रोन, श्रोनित—देखो 'शोण, शोणित' ।
श्रौत—वि० वेदविहित ।
श्रौन—पु० श्रवण, कान (उदे० 'तर्कसी') ।
श्लाघा—स्त्री० स्तुति, प्रशंसा, । चाह ।
श्लाघ्य—वि० सराहनीय, प्रशंसाके योग्य ।
श्लिष्ट—वि० मिला हुआ, लगा हुआ, श्लेषयुक्त ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्लील—वि० जो भद्दा न हो, उत्तम, शुभ।
श्लेष—पु० मिलान, संयोग, आलिंगन, एक काव्यालंकार।
श्लेष्मा—पु० शरीरका एक विकार, बलग़म। बन्धन।
श्लोक—पु० कीर्त्ति, शब्द, संस्कृतका एक सुप्रसिद्ध छन्द।
श्वपच, श्वपाक—पु० कुत्तेका माँस खानेवाला, चांडाल।
श्वसुर—पु० ससुर।
श्वश्रू—स्त्री० सास।
श्वसन—पु० साँस लेना, वायु।
श्वान—पु० कुत्ता। स्वाननिन्द्रा = हल्की नींद।
श्वापद—पु० व्याघ्रादि हिंसक पशु।
श्वास—पु० नाकसे हवा लेने व छोड़नेकी क्रिया।
श्वासा—स्त्री० प्राणवायु, साँस।
श्वेत—वि० सफेद, गोरा, उज्वल। पु० सफेद रंग। कौड़ी, चाँदी, शुक्र।
श्वेतांबर—पु० जैनियोंका एक सम्प्रदाय।
श्वेतांशु—पु० चन्द्रमा।
श्वेता—स्त्री० कौड़ी, वंशलोचन, भटकटैया, फिटकिरी, मिस्री, चीनी, एक तृण।

ष।

षंड—पु० क्लीव, साँड़, समूह।
षट्—वि० पाँच और एक। पु० छः की संख्या।
षट्कर्म—पु० स्मृतियोंके अनुसार छः काम। ब्राह्मणके छः काम—यजन, याजन, इ०।
षट्चक्र—पु० शरीरस्थ छः चक्र (हठयोग)। षड्यंत्र।
षट्चरण, षट्पद—पु० भौंरा।
षट्पदी—स्त्री० भौंरी। छप्पय।
षट्राग—पु० झंझट, बखेड़ा। संगीतके छः राग।
षट्शास्त्र—पु० न्याय, वैशेषिक आदि छः दर्शन।
षडंग—पु० वेदके छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष। देहके छः अंग हाथ, पाँव, सिर, धड़।
षडंघ्रि—पु० भ्रमर।
षड़ानन—पु० कार्त्तिकेय।
षड्गुण—पु० राजनीतिके छः गुण—सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय।
षड्दर्शन—देखो 'षट्शास्त्र'।
षड्यंत्र—पु० गुप्त आयोजन, साजिश।
षड्रस—पु० छः रस—मीठा, खट्टा, कड़वा, तीता, कसैला, नमकीन।
षड्रिपु—पु० छः मनोविकार, काम क्रोधादि।
षष्ठ—वि० छठवाँ।
षष्ठी—स्त्री० पक्षका छठवाँ दिन। जन्मके बाद छटवें दिनका उत्सव। दुर्गा।
षाण्मासिक—वि० छःमाही।
षोडश—वि० सोलह। सोलहवाँ।
षोडशशृंगार—पु० उबटन, स्नानादि सोलह सिंगार।
षोड़शसंस्कार—पु० गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तादि सोलह वैदिक कर्म।
षोडशी—स्त्री० सोलह वर्षकी स्त्री, श्राद्ध-विशेष। वि० स्त्री० सोलह वर्षकी। सोलहवीं।

स

सँइतना—सक्रि० सँवना, जोड़ना, एकत्र करना। सहेजना।
सँउपना—सक्रि० देखो 'सौंपना'।
संक—स्त्री० शंका, भ्रम, डर।
संकट—पु० दुःख, विपत्ति, भीड़। वि० संकीर्ण, कष्टदायी।
संकना—अक्रि० शंका करना, डरना 'पाँइ परे पलिकापै [illegible] जिय संकति सौंहिन होति न सौंहीं।' भाविं० ४८
संकर—पु० शिवजी। दो वस्तुओंका मेल। दोगला। झाड़नेसे उठी हुई धूल।
सँकरा—वि० संकीर्ण, तंग। स्त्री० सिकड़ी, जंजीर। पु० संकट, दुःख।
सँकराना—सक्रि० संकुचित करना।
संकर्षण—पु० खींचने या ओतनेका कार्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संकल—स्त्री० सिकड़ी, जंजीर। पु० संकलन, योग
संकलन—पु० जमाव, संग्रह, योग।
संकलप—दे० 'संकल्प' (उदे० 'झिलना')।
संकलपना, संकल्पना—सक्रि० संकल्प करना, दान देना, निश्चय करना।
संकलित—वि० एकत्रीकृत, संगृहीत (उदे० 'पंचालिका')।
संकल्प—पु० दृढ़ निश्चय, विचार, इच्छा, हाथमें अक्षत जल इ० लेकर मंत्रोच्चारणके साथ दानादिके सम्बंधमें अपना निश्चय प्रकट करनेकी क्रिया।
संका—दे० 'शंका' (उदे० 'असहन')।
सँकाना—अक्रि० शंकित होना, डरना।
संकारना—सक्रि० संकेत करना।
संकाश, संकास—अ० सदृश, समीप (दिन० १५७)। पु० चमक, कान्ति।
संकीर्ण—वि० तंग, छोटा, सँकरा। पु० विपत्ति।
संकीर्णता—स्त्री० तंगी, छोटापन, क्षुद्रता।
संकीर्त्तन—पु० वर्णन, भजन, कीर्त्ति-कथन।
संकु—स्त्री० बर्छी 'जरे अंगमें संकु ज्यों होत बियाकी खानि।' मति० २३९
सँकुचना—अक्रि० संकोच करना।
संकुचित—वि० सिकुड़ा हुआ, संकीर्ण, लज्जायुक्त, छोटा, क्षुद्र।
संकुल, संकुलित—वि० पूरा, परिपूर्ण (उदे० 'पंथ'), घना।
संकेत—पु० इशारा, चिह्न, पहिलेसे निश्चित स्थान या बात। संकीर्ण (रघु० ९२)।
संकेतना—सक्रि० संकटमें डालना (प० २२३)। संकुचित होना 'कँवल सँकेता, कुमुदिनि फूली।' प० २५१
संकेलना—दे० 'सकेलना' (गंगा० ३४३)।
संकोच—पु० लज्जा (उदे० 'अलकलहैता'), हिचक, आगा पीछा, खिंचाव कली 'जलसंकोच विकल भई मीना।' गंगा० ४०४
सँकोचना—सक्रि० संकुचित करना। अक्रि० संकोच करना।
संकोची—पु० संकोच करनेवाला।
संकोपना—अक्रि० कुपित होना।
संक्रंदन—पु० इंद्र। रोना।
संक्रमण—पु० संक्रान्ति, गमन, पर्यटन।
संक्रांति—स्त्री० एक राशिसे अन्य राशिमें प्रवेश।
संक्रामक—वि० छूनेसे फैलनेवाला (रोग)।
संक्रोन—स्त्री० संक्रमण, संक्रान्ति (वि० ११५)।
संक्षिप्त—वि० थोड़ेमें किया गया, थोड़ा।
संक्षेप—पु० थोड़ेमें कहना, घटाना, सार, संग्रह।
संक्षेपतः,—तया—अ० थोड़ेमें।
संख—पु० शंख (उदे० 'पनव')।
संखिया—पु० एक तरहका विष।
संख्यक—वि० संख्यावाला।
संख्या—स्त्री० गिनती, तादाद।
संग—पु० पत्थर। साँग 'बिये संग सौं फोरि डारै करेजा'- सुजा० २३। साथ, सोहबत, मेल-मिलाप।
संगठन—देखो 'संघटन'।
संगत—स्त्री० संगति, संसर्ग। उदासी साधुओंका मठ।
संगतरा—पु० फल-विशेष, संतरा (प० १५)।
संगतराश—पु० पत्थर काट कर ठीक करनेवाला।
संगति—स्त्री० सोहबत, मित्रता, मेल, मिलाप। 'चदि गढ़ ऊपर संगति देखी।' प० २७६
संगतिया—पु० गाने इ० के साथ साज बजानेवाला।
संगदिल—वि० निष्ठुर, कठोर हृदयवाला।
संगम—पु० मिलाप, संयोग, नदियोंके मिलनेकी जगह।
संगर—पु० युद्ध, नियम, प्रण, विष, विपत्ति, अंगीकार।
सँगरा—पु० बाँसका डंडा जिसके सहारे पत्थर उठाया जाता है। कुएके तख्तेका छेद जिसमें लोहेका पम्प लगा रहता है।
संगराम—पु० संग्राम, युद्ध, समर।
संगाती, संगी—पु० साथी, मित्र 'सूरदास प्रभु ग्वाल संगाती, जानी जाति जनावत।' सू० १५३ (उदे० 'देव')।
संगीत—पु० गाना-बजाना और नाच।
संगीन—वि० विकट, पाषाण-निर्मित, लिहाज। पु० बन्दूकके सिरेपर लगानेका एक अस्त्र।
संगृहीत—वि० संग्रह किया हुआ, एकत्रीकृत।
संगोतरा—पु० संतरा।
संगोपन—पु० छिपानेका कार्य।
संग्रह—पु० जमाव, संकलन, रक्षा, संचय।
संग्रहणी—स्त्री० एक रोग।
संग्रहना—सक्रि० एकत्र करना, संकलन करना। (उदे० 'लड़ा', 'जीरक')। लपटाना (दिन० ५२५)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संग्रही, संग्रहीता—पु० संग्रह करनेवाला।
संग्रहीत—वि० इकट्ठा किया हुआ, संकलित।
संग्राम—पु० युद्ध, लड़ाई।
संघ—पु० दल, समुदाय, समाज, सभा, बौद्धसमाज।
संघट—पु० झगड़ा, संयोग (रामा० १२३)।
संघटन—पु० व्यवस्थित करनेका कार्य, निर्माण, बनावट, [संयोग, संघर्षण।
संघती—दे० 'संघाती'।
संघरना—दे० 'संवारना'।
संघर्ष, संघर्षण—पु० रगड़, प्रतिद्वन्द्विता।
संघात—पु० समूह, जमाव। चोट, मारना। एक नरक। संग, साथ 'धुआँ उठे मुख साँस संघाता।' प० १९० (रामा० ८)।
संघाती—पु० साथी, मित्र (सू० २७१)। प्राणापहारी।
संघार—पु० संहार, नाश।
संघारना—सक्रि० संहारना, नष्ट करना, मार डालना।
संघाराम—पु० बौद्ध मठ।
संच—पु० संचय, रक्षा।
संचकर पु० संचय करनेवाला।
संचना—सक्रि० संचित करना, जोड़ना, बटोरना, रक्षा करना (सूबे० १५९, मति० १८६)।
संचय—पु० संकलन, जमाव, ढेर।
संचरना—अक्रि० चलना (उदे० 'चाँड'), फिरना, फैलना, पासतक पहुँचना 'मन बच अगम अगाध अगोचर, केहि बिधि बुधि सँचरै।' सू० ६। सक्रि० चलाना 'अति आतुर चतुरंग चमू साज, अनंग न सर संचरै।' अ० ३२
संचार—पु० गमन, प्रवेश, प्रसरण, पथ-प्रदर्शन, दुःख।
संचारना—सक्रि० प्रवेश कराना, फैलाना। जन्म देना।
संचारी—वि० चलने फिरनेवाला। पु० वायु। रसोंमें संचण करनेवाले भाव।
संचालक—पु० चलानेवाला, प्रवर्त्तक।
संचित—वि० जमा किया हुआ।
संजम—पु० संयम।
संजमी—वि० संयम करनेवाला (व्यक्ति) (उदे० 'जपी')।
संजात—वि० उत्पन्न।
संजाफ,-व—स्त्री० झालर, मगजी। एक तरहका घोड़ा।
संजीदा—वि० गंभीर। समझदार।
संजीवनी—स्त्री० मरेको जिलानेवाली ओषधि-विशेष।
संजुग—पु० संग्राम।
सँजूत—वि० तैयार, सावधान 'होहु सँजूत बहुरि नहिं अवना।' प० ६६
सँजोइ—क्रिवि० साथमें।
सँजोइल—वि० एकत्र किया हुआ, सुसज्जित 'होहु सँजोइल रोकहु घाटा।' रामा० २८९
संजोऊ—पु० संयोग 'दहुँ का कहँ अस जुरै सँजोऊ।' प० ४५। तैयारी 'अबहीं वेगहिं करौ सँजोऊ।' प० १०३
सँजोग—दे० 'संयोग' (प० ९, रामा० ११३)।
संजोगिनी—स्त्री० वह स्त्री जो अपने प्रेमीके साथ हो।
सँजोना, सँजोवना सक्रि० जुटाना, एकत्र करना, सजाना। पूरा करना (छत्र० १६३)।
संजोवल—वि० सुसज्जित, सैन्यादिसे युक्त, सावधान (प० ११२)।
संज्ञा—स्त्री० नाम, ज्ञान, बुद्धि, चेतना, गायत्री।
संज्ञाहीन—वि० बेसुध, बेख़बर।
सँझला—वि० चार पाँच भाइयोंमें तीसरा, मँझलेसे छोटा। संध्याका।
सँझवाती—स्त्री० संध्याका गीत, शामको जलाया जाने [वाला चिराग़।
संझा—स्त्री० संध्या।
संझाखा—पु० सायंकाल।
सझौखैं—अ० संध्याकालमें (वि० ७६)। [† जंबूरा।
संड़सा—पु०, **सँड़सी**—स्त्री० लोहेका एक औज़ार, †
संडा—वि० मोटा ताज़ा। पु० मोटा ताज़ा मनुष्य।
संडास—पु० एक तरहका गहरा पाखाना।
संड़ास स्त्री० संडसी (प० २९०)।
संत—पु० धर्मात्मा, महात्मा, सज्जन।
संतत—क्रिवि० सर्वदा, हमेशा, बराबर।
संतति—स्त्री० सन्तान, प्रजा, वंश, फैलाव।
संतप्त—वि० विदग्ध, दुःखित, थका हुआ।
संतरा—पु० एक फल, बड़ी नारंगी।
संतरी—पु० चौकीदार, पहरेदार, द्वाररक्षक।
संतान—पु० संतति, बाल-बच्चा, वंश।
संताप—पु० ताप, मानसिक दुःख। कष्ट।
संतापना—सक्रि० संताप देना, पीड़ा पहुँचाना 'हरि माया सब जग संतापै।' सूबे० २८
संती—अ० बदलेमें, जगहमें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संतुष्ट—वि० तृप्त, जिसे संतोष हो गया हो।
संतोख, संतोष—पु० जो मिले उसीसे प्रसन्न रहनेका भाव, तृप्ति, सुख, प्रसन्नता (रामा० ५३०)।
संतोखी,-तोषी—पु० संतुष्ट रहनेवाला (प० ३५)।
संतोषना—सक्रि० सन्तुष्ट करना। अक्रि० सन्तुष्ट होना।
संतोषित—वि० सन्तुष्ट, तृप्त।
संत्री—पु० पहरेदार।
संथा—स्त्री० पाठ, सबक 'तिनके आतम सुद्ध करि, फिरि करि संथा देत।' नन्द० ४३
संद—पु० छिद्र, दरार। दबाव।
संदर्भ पु० लेख, निबन्ध, रचना।
संदली—वि० चंदनका, हलके पीले रंगका। पु० हलका पीला रंग।
संदि—स्त्री० संधि।
संदिग्ध—वि० संशयात्मक, सन्देहयुक्त।
संदीपन—पु० उत्तेजन, उद्दीपन करनेवाला।
संदुक—पु० पेटी, मंजूषा।
संदूर—पु० सेंदुर।
संदेश, सँदेस—पु० खबर (उदे० 'अनिआई'), समाचार। एक मिठाई।
संदेशहर—पु० दूत।
संदेशा, संदेसा—पु० खबर, संवाद।
संदेह—पु० शंका, संशय, शक।
संदोह -पु० राशि, समूह।
संध—स्त्री० देखो 'संधि'।
संधान—पु० खोज, पता। लक्ष्य 'एक पंथ औ एक संधाना।' प० ५। सन्धि। धनुषपर बाण चढ़ाना (सू० ३९)। मिलावट 'बिलज न बदन होत या उचरत जो सन्धान न मूलहु।' भ्र० १०१। कटाक्ष (विद्या० ११, १९)।
संधानना—सक्रि० धनुषपर बाण चढ़ाना, बाण चलाना 'सुमन चाप निज सर संधाने।' रामा० ५२
संधाना—पु० अचार 'पुनि संधाने आये बसाँधे।' प० १३५
संधि—स्त्री० जोड़, गाँठ, मिलाप, संयोग, मेल, सुलह, सेंध, दरार, खाली जगह, अवकाश।
संध्या—स्त्री० सायंकाल, साँझ, सबेरे-दुपहर-शामकी उपासना।
संन्यास—पु० जीवनकी चतुर्थ अवस्था, विषय-त्याग।
संन्यासी—पु० चतुर्थ आश्रममें रहनेवाला, त्यागी, यती।
संपति, संपत्ति—स्त्री० धन, ऐश्वर्य, पूर्णता, अधिकता।
संपद्—स्त्री० ऐश्वर्य, धन, पूर्णता, अधिकता, सौभाग्य।
संपदा—स्त्री० सम्पत्ति, वैभव।
संपन्न—वि० युक्त, पूर्ण, धनी।
संपराय—पु० मृत्यु, लड़ाई। संकटका समय।
संपर्क—पु० स्पर्श, लगाव, मिलाप, मिलावट।
संपा—स्त्री० बिजली (दास २७)।
संपात—पु० स्पर्श, समागम, मिलान, एक साथ गिरना, घटित होना।
संपादक—पु० तैयार या पूरा करनेवाला, क्रमादि ठीक करनेवाला। पत्रकार आदि।
संपादना—सक्रि० पूरा करना. ठीक करना 'विविध अन्न सम्पति सम्पादहु।' रघु० १३
संपुट—पु० दोना, अँजली, डिब्बा, (उदे० 'पला', सू० १४२) जुड़ाव। फूलमें पंखड़ियोंके बीचकी जगह, कोष, दे० 'बीधना'। वि० बन्द 'घोष सरोज भये हैं संपुट दिन मणि ह्वै बिगसाओ।' भ्र० ९०। घुँघरू (?) 'नाचे तदपि घरीक लौं संपुट पगन बजाइ।' छत्र०२७
संपुटी—स्त्री० प्याली, छोटी कटोरी (उदे० 'घरियाल')।
संपूर्ण—वि० समस्त, सारा बिलकुल, समाप्त।
संपृक्त—वि० मिला हुआ।
सँपेरा—पु० साँपका खेल दिखानेवाला।
संपै—स्त्री० सम्पत्ति 'संपै देखि न हर्षिये विपति देखि न रोइ।' कबीर ३२९
संपोला—पु० साँपका बच्चा।
संप्रति—अ० आजकल, इस समय।
संप्रदान—पु० देना, भेंट, दीक्षा।
संप्रदाय—पु० धार्मिक मत, धर्म, फिरका, गुरुमंत्र, मार्ग, रीति।
संबंध—पु० नाता, सम्पर्क, लगाव, मेल।
संबंधी—पु० रिश्तेदार। वि० सम्बन्ध रखनेवाला।
संबद्ध—वि० मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
संबल—पु० पाथेय, मार्गव्यय (रामा० २८)। सेमरका पेड़।
संबुक—पु० घोंघा (उदे० 'करट')।
संबोधना—सक्रि० तसल्ली देना, समझाना।
सँभरना, सँभलना—अक्रि० थमना, रुका रहना, सचेत होना, गिरते गिरते बच जाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संभव—पु जन्म, कारण, संयोग उपाय, उपयुक्तता।
संभवतः—अ० संभव है कि, हो सकता है कि।
संभवना—अक्रि० उत्पन्न होना, मुमकिन होना। सक्रि० उत्पन्न करना।
सँभार—पु०, स्त्री० थमाव, थाम, रोक, खबरदारी, होश, रक्षा, पालन 'सूरदास प्रभु अपने ब्रजको काहे न करत सँभार।' सू० २०५ (रामा० २३०), तैयारी 'भलो विचार कियो नरनायक करहु यज्ञ संभारा।' रघु० ६
सँभारना, सँभालना—सक्रि० थामना, रोक रखना, (सू० २०४), सहारा देना, रक्षा करना गिरनेसे या नष्ट होनेसे बचाना। पकड़ना 'जब जब भीर परी संतन पै चक्रसुदर्शन तहाँ संभारयो।' सूवि० १२। सहायता देना 'गोपाल बिना और मोहिं ऐसो कौन सँभारै।' सू० २७२ (उदे 'धीय')। स्मरण करना 'यह सुनि बोली नारि कैकयी अपनो वचन सँभारो।' सूरा० ९ (उदे० 'पाछिल')।
संभावना—स्त्री० मुमकिन होना, अनुमान, कल्पना। आदर।
संभावित—वि० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध। विचारा हुआ।
संभाव्य—वि० कल्पना योग्य, सम्भव, पूज्य। [संभव।
संभाषण—पु० वार्तालाप।
संभूत—वि० उत्पन्न, उपयुक्त, सहित। हो गया हुआ।
संभूय समुत्थान—पु० साझेका काम।
संभेद—पु० अच्छी तरह भिदना। भेदनीति। वियोग। मिलाप।
संभोग—पु० किसी वस्तुका पूर्ण व्यवहार, मिलनकी अवस्था। सुरति।
संभ्रम—पु० घबड़ाहट, उत्कंठा, खलबली, भूल, आदर, घूमना। क्रिवि० उतावलीसे।
संभ्रांत—वि० घबड़ाया हुआ। सम्भावित।
संमंजना—अक्रि० भलाभाँति शोभित होना।
संमति—स्त्री० राय, अनुमति, सलाह।
संमान—पु० आदर, गौरव।
संमानना—सक्रि० आदर करना।
संमेलन—पु० जमाव, सभा, मिलाप।
संमोज—पु० शाखाओं (दिन० १२९)।
संयत—वि० वशमें रखा हुआ, नियमबद्ध, सजग। निग्रह करनेवाला, संयमी।
संयम—पु० मन तथा इन्द्रियोंको वशमें रखना, रोक, निग्रह, परहेज।
संयमी वि० इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाला, परहेज करने-[वाला।
संयान—वि० साथ साथ गया हुआ।
संयुक्त—वि० मिला हुआ, संबद्ध, सहित।
संयुग—पु० संयोग, मिलाप, लड़ाई।
संयुत—वि० संयुक्त, सहित, संबद्ध (उदे० 'तिष्ठ')।
संयोग—पु० मिलाप, मिलावट, मिलान, जोड़, दैवयोग।
संयोजक—पु० जोड़नेवाला। समय स्थानादिकी सूचना देकर किसी सभाके होनेका आयोजन करनेवाला।
सँयोना—सक्रि० 'सँजाना', जुटाना, सजाना।
संरक्षण—पु० निगरानी, अधिकार, प्रभुत्व, प्रतिबंध।
संरक्षित—वि० भली भाँति बचाया हुआ या रखा हुआ। उपयुक्त अवसरके लिए अलग रखा हुआ।
सँरसी—स्त्री० मछली फँसानेकी कंटिया (उदे० 'बंक')।
संलग्न वि० लगा हुआ, सम्बद्ध।
सँवाँ—वि० सदृश (?) 'हँसी आटा लूंण ज्यूं सोना सँवाँ सरीर।' कबीर २५
संलाप—पु० कथोपकथन, बातचीत।
संलिप्त—वि० लीन।
संवत्—पु० सन्, वर्ष। विक्रमादित्यकी चलायी वर्ष-[गणना।
संवत्सर—पु० साल, वर्ष।
संवरण—पु० रोकना, निग्रह, छिपाना। वर चुनना।
संवरना—अक्रि० सज्जित होना, ठीक होना 'विधि अब सँवरी बात बिगारी।' रामा० १४७। सक्रि० स्मरण करना 'जौ लहि जियौं रातिदिन सँवरौं ओहिकर नावँ।' प० ४१
सँवरिया—वि० साँवला। पु० कृष्ण। [
संवाद—पु० समाचार, विवाद, प्रश्नोत्तर, बातचीत, प्रसंग।
संवाददाता पु० खबर देनेवाला, समाचार भेजनेवाला।
सँवार—पु० रचना (दास १६२)। समाचार। आच्छादन, बाधा (प० १०४)।
सँवारना सक्रि० सुसज्जित करना (उदे० 'पास', 'पेंच') यथास्थान रखना, सँभालना, बनाना (उदे० 'भाँजना' 'अनियारा'), ठीक करना (उदे० 'टूट')।
संवाहन—पु० ले जाना।
संविग्न—वि० आतुर, उद्विग्न।
संविद्—स्त्री० ज्ञान, चेतना, समझौता। संकेत, युद्ध।
संविधान—पु० प्रबंध। रीति। रचना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संवेद—पु० वेदना। सुख-दुःखादिका अनुभव। बोध।
संशय—पु० दुविधा, सन्देह।
संशयात्मक—वि० संदिग्ध, अनिश्चित।
संशोधन—पु० त्रुटि दूर करना, शुद्ध करना, सुधार, तस्लीम, जवाबगी।
संश्रय—पु० शरण, अभिसन्धि, मेल।
संश्लिष्ट—वि० मिला हुआ, युक्त। पु० राशि। पुञ्ज
संश्लेष—पु० आलिंगन, मिलाप।
संस, संसइ—पु० संशय, संदेह (सूवे० १४६)।
संसक्त—वि० संयुक्त, संबद्ध, आसक्त, लिप्त, सहित।
संसय—पु० संशय, सन्देह ('उदे० जहँउना')।
संसरण—पु० गमन। जगत्। मार्ग। धर्मशाला।
संसर्ग—पु० सम्पर्क, सम्बन्ध, सोहबत, संगति।
संसा—पु० देखो 'संस' (साखी ८२)।
संसार—पु० दुनिया, सृष्टि, आवागमन। मायाजाल।
संसारी—वि० लौकिक। दुनियादार। व्यवहार-कुशल। मोहजालमें फँसा हुआ।
संसिक्त—वि० भली भाँति सींचा हुआ। [† स्वस्थ।
संसिद्ध—वि० भली भाँति किया हुआ, मुक्त, निपुण, †
संसृति—स्त्री० संसार, आवागमन (उदे 'नासना')।
संसृष्टि—स्त्री० सम्बन्ध, घनिष्ठता, मिलावट, संग्रह।
संसौ—पु० श्वास, प्राण (वि० ५५)।
संस्कार—पु० मनपर पड़नेवाला प्रभाव, वर्णधर्मानुकूल कृत्य, सफाई, शुद्धि, सुधार।
संस्कृत—वि० ठीक किया हुआ, शुद्ध किया हुआ, परिष्कृत। स्त्री० देव-भाषा।
संस्कृति—स्त्री० सफाई, परिष्कार, सभ्यता।
संस्था—स्त्री० स्थिति, मर्यादा, आकार, समाप्ति, सभा।
संस्थान—पु० रहनेका स्थान, वास। आयोजन। ढाँचा।
संस्थापक—पु० स्थापना करनेवाला, प्रवर्तक।
संहति—स्त्री० समूह, सन्धि, मेल।
संहनन—पु० संहार, वध, एकमें मिलाना, मेल, मालिश।
संहरण—पु० संहार, एकत्र करना।
संहरना—अक्रि० नष्ट होना। सक्रि०:देखो 'संहारना'।
संहार—पु० विनाश, वध, परिहार, लौटा लेना, सार, एकत्रीकरण, संग्रह।
संहारना—सक्रि० नष्ट करना, मारना (उदे० 'पहिरि'), हनन करना।
संहित—वि० इकट्ठा किया हुआ। संयुक्त।
संहिता—स्त्री० प्राचीन मुनियों द्वारा संगृहीत ग्रन्थ, वेदोंका मंत्रभाग। सन्धि, मेल।
सइ—विभक्ति से, साथ।
सइना—स्त्री० सेना, फौज।
सइयो—स्त्री० सखी।
सई—स्त्री० सखी। वृद्धि। प्रयत्न।
सईस—पु० साईस।
सउँ—विभक्ति सों, से।
सउत—स्त्री० सौत।
सक—स्त्री० शक्ति। पु० शक, शंका, संदेह।
सकट—पु० शकट, छकड़ा।
सकत, सकति—दे० 'शक्ति'—'सबकै सकति संभु-धनु भानी।' रामा १७१ (उदे० 'भान') 'सूर सकत जैसे लछिमन तन बिह्वल होइ मुरझान।' सूवे० १२५। सम्पत्ति।
सकना—अक्रि० योग्य या समर्थ होना।
सकपकाना—अक्रि० आश्चर्य या लज्जासे प्रभावित होना। हिचकना। हिलना (प० २३३)।
सकरना—अक्रि० स्वीकृत होना।
सकरा—वि० संकीर्ण, संकुचित (उदे० 'उदरना')। जूठा। पु० जूठन।
सकरुण—वि० करुणायुक्त, दयावान्।
सकल—वि० सब, सारा।
सकलात—पु० उपहार (छत्र० १००)। रजाई।
सकसकाना सकसाना—अक्रि० भयभीत होना (उदे० 'धकधकाना')।
सकाना—अक्रि० शंका करना, आगा पीछा करना, डरना 'बदन देखि विधु विधि सकात मन नैन कुंज कुंडल उजियारी।' सू० ५७। (उदे 'पाँव', प० २४४, रामा० १४५)।
सकाम—वि० कामना सहित। पु० वह जिसे कोई कामना हो या जो किसी इच्छासे कोई कार्य करे।
सकारना—अक्रि० स्वीकार करना, मान लेना। हुंडी पर हस्ताक्षर कर उसे स्वीकार करना।
सकारे, सकारैं—क्रिवि० सवेरे 'बाँग देहि मिल [illegible] सकारै।'—छत्र० ८२ (कविता० १५८, सू० ६२)।
सकाश—पु० पास।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सकिलना—अक्रि० सिमटना, बटुरना (रामा० २७). संकुचित होना। सरकना।
सकुच—स्त्री० संकोच, लज्जा (राम० १७६)।
सकुचना—अक्रि० शरमाना, संकुचित होना 'सकुचत अरु बिगसत वा छविपर, अनुदिन जनम गँवावत।' सू० ९४। (उदे० 'भुआर')।
सकुचाना—अक्रि० देखो 'सकुचना' (उदे० 'जमी') सक्रि० संकुचित करना, लज्जित करना।
सकुचाई—स्त्री० संकोच।
सकुचौंहाँ—वि० लजीला (वि० २४५)।
सकुन—पु० शकुन, शुभाशुभ चिह्न। पक्षी।
सकुनी—स्त्री० पक्षी।
सकुपना—अक्रि० क्रोध करना।
सकूनत—स्त्री० निवास-स्थान।
सकृत—अ० एक बार, (उदे० 'तारन तरन'), सर्वदा।
सकेत—वि० संकीर्ण सकरा। पु० कष्ट, संकट। संकेत, सहेट (?)।
सकेतना—अक्रि० संकुचित होना, संपुटित होना।
सकेलना—सक्रि० इकट्ठा करना, बटोरना (उदे० 'उचका', 'गुदी', जामं ४८, रामा० ३४१)।
सकोच—पु० संकोच (उदे० 'दह')।
सकोतरा—पु० एक नीबू, चकोतरा।
सकोपना—अक्रि० क्रोध करना।
सकोरना—दे० 'सिकोड़ना' 'कामकी ओर सकोरति नाक...' भावि० २८
सकोरा—पु० कसोरा, मिट्टीका प्याला।
सक्का—पु० भिश्ती।
सक्ति—स्त्री० शक्ति, सामर्थ्य, बल।
सक्तु, सक्तुक—पु० सत्तू।
सक्र—पु० शक्र, इन्द्र। सक्रधनु = इन्द्रधनुष (सू० ११६)
सक्रारि—पु० मेघनाद।
सक्षम—वि० समर्थ, क्षमतायुक्त।
सखरा—पु० निखराका विपरीत दाल भात आदि कच्चा [भोजन।
सखा—पु० मित्र, बन्धु, साथी।
सखावत—स्त्री० उदारता। दानशीलता।
सखी—स्त्री० सहेली, संगिनी, आली। सखी = दानी।
सखुआ—पु० साखू। शाल तरु।
सखुन—पु० कविता। बातचीत।
सखुनतकिया—पु० तकिया कलाम।
सख़्त—वि० कठोर, दृढ़। स्त्री० संकट 'मुखपै परी अब सख्त।' सुजा० ६०
सख्य—पु०, सख्यता—स्त्री० मैत्री, बन्धुत्व।
सगनौती—स्त्री० शकुन विचारनेकी क्रिया।
सगपहता—पु० साग मिलाकर बनायी हुई दाल।
सगबग—वि० द्रवित, सराबोर।
सगबगाना—अक्रि० सकपकाना, घबड़ा जाना, सराबोर होना 'पूछैं क्यौं रूखी परति सगिबगि गई सनेह।' वि० २८४
सगरा—वि० सारा, समस्त, कुल (उदे 'अटकाना')। पु० तालाब।
सगर्भा—स्त्री० गर्भवती स्त्री। सगी बहिन।
सगल—वि० सकल, सब।
सगा—वि० सहोदर, निकट सम्बंधवाला।
सगाई—स्त्री० विवाहका निश्चय, मँगनी, नाता (सू० २१९), विवाह तुल्य सम्बन्ध।
सगुण—पु० ब्रह्मका साकार रूप।
सगुन—पु० शुभाशुभ लक्षण, शुभ-सूचक वस्तु (उदे० 'दहेंड़ी'), दे० 'सगुण' (उदे० 'तरकना)।
सगुनाना—सक्रि० शकुन देखना, शकुन बतलाना (सू० २१५)।
सगुनिया—पु० सगुन विचारनेवाला।
सगुनौती—स्त्री० देखो 'सगनौती' 'बैठी जननि कर० सगुनौती।' सू० ४३
सगोत, सगोती, सगोत्र—वि० एक ही गोत्रका (उदे० 'गपकना')।
सघन—वि० गझिन, घना, सटा हुआ।
सच—पु० सत्य। वि० सत्य, ठीक।
सचना—सक्रि० सचित करना, जमा करना। सजाना, पूरा करना 'बहु कुंड शोनित सों भरे पितु तर्पणादि क्रिया सची।' राम० १६७। अक्रि० प्रसन्न होना 'पुलिन वेदी विराजैं दम्पति देखि देखिकै मन सच्यौ।' श्री भट्ट।
सचमुच—क्रिवि० वास्तवमें, निस्सन्देह, यथार्थमें।
सचरना—दे० 'सँचरना'।
सचराचर—पु० स्थावर जंगम वस्तुएँ।
सचाई—स्त्री० सत्यता, वास्तविकता, ईमानदारी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सचारना—सक्रि० संचारित करना।
सचित—वि० चिन्तायुक्त, चिन्तित।
सचिक्कण—वि० बहुत चिकना।
सचिव—पु० मंत्री, सहायक।
सचु—पु० सुख, प्रसन्नता। 'कब वह मुख बहुरों देखौंगी, कब वैसो सचु पैहों।' सू० १९०
सचेत—वि० सावधान, चेतनायुक्त, चालाक, समझदार।
सचेतन—वि० चेतनायुक्त, सावधान। पु० चेतना-युक्त जीव।
सच्चरित,-त्र—वि० अच्छे चरित्रवाला।
सच्चा—वि० चोखा, विशुद्ध, यथार्थ, सत्यभाषी।
सच्चाई—स्त्री० देखो 'सचाई'।
सचान—पु० बाज़ पक्षी (उदे० 'दुकुना')।
सच्चिदानन्द—पु० सत् चित् आनन्द स्वरूप परमात्मा।
सच्छन्द—वि० स्वच्छन्द।
सच्छी—पु० साक्षी।
सज—स्त्री० सजावट, बनाव।
सजग—वि० सतर्क सावधान (उदे० 'गथ')।
सजधज—स्त्री० सजावट, तैयारी, बनाव।
सजन—पु० स्वजन, प्रियतम, पति, सज्जन।
सजना—अक्रि० शृंगार करना, भूषणादि या शस्त्रादि धारण करना, शोभित होना। सक्रि० सजाना। धारण करना 'पायन परि ऋषिके सजि मौनहिं केशव उठि गये भीतर भौनहिं।' राम० ४६ (उदे० 'टोपा')
सजनी—स्त्री० सखी (सू० ८८)।
सजल—वि० जलयुक्त, अश्रुपूर्ण।
सजला—वि० सँझला। वि० स्त्री० जलयुक्त।
सजा,-ए—स्त्री० अपराधका दंड (उदे० 'करुआ'।)।
सजाति. सजातीय—वि० एक ही जातिका।
सजान—पु० सुजान, जानकार।
सजाना—सक्रि० भूषणादिसे संवारना, सिलसिलेसे रखना।
सजाय—दे० 'सजा'।
सजायाफ्ता—पु० वह जो सजा पा चुका हो।
सजाव—पु० एक तरहका बढ़िया दही। दे० 'सजावट'।
सजावट—स्त्री० सजानेकी क्रिया, तैयारी, शोभा।
सजावन—पु० सजाना या तैयारी करना।
सजावल—पु० तहसीलदार। राजकर्मचारी।
सजीला—वि० सजा हुआ, सुंदर, छबीला।
सजीव—वि० जीव-युक्त (उदे० 'बकलना'), ओज-पूर्ण। पु० प्राणी।
सजीवन—पु०, सजीवनी—स्त्री० संजीवनी बूटी।
सजुग—वि० सजग, सावधान।
सजूरी—स्त्री० एक मिष्टान्न।
सजोना—सक्रि० देखो 'सँजोना' तथा 'सजाना'।
सजोयल—दे० 'सँजोइल' (सूबे० ३२९)।
सज्जन—पु० साधु पुरुष, कुलीन व्यक्ति। प्रियतम।
सज्जनता—ताई—स्त्री० साधुता, भलमनसाहत।
सज्जा—स्त्री० शय्या। सजावट।
सज्जित—वि० सजाया हुआ। तैयार।
सज्जी—स्त्री० खारी मिट्टी जिससे कपड़े धोते हैं।
सज्ञान—वि० समझदार, बुद्धिमान्।
सज्या—स्त्री० शय्या 'सुन्यो कुँवर रन सज्या सोयो।' छत्र० २२
सटक—स्त्री० लचीली छड़ी (उदे० 'चिलक'), लंबा नैचा। सटकनेकी क्रिया।
सटकना—अक्रि० चुपकेसे चल देना। सक्रि० छूटना।
सटकाना—सक्रि० छड़ी आदिसे मारना।
सटकार—स्त्री० सटकानेकी क्रिया। झटकारना, हाँकना।
सटकारना—सक्रि० सटकाना। फटकारना।
सटकारा—वि० लंबा और चिकना (रवि० १९)
सटकारी—स्त्री० पतली लचीली छड़ी।
सटना—अक्रि० चिपकना, एक दूसरेसे लग जाना।
सटपट—स्त्री० घबड़ाहट, सकपकाहट, संकट, हिच-किचाहट, संकोच।
सटपटाना—अक्रि० संकुचित होना, सिकुड़ जाना, दब जाना। भौचक्का होना, संशयमें पड़ना (वि० २१६)। 'सटपट' शब्द करना।
सटरपटर—वि० छोटा मोटा, मामूली, तुच्छ। स्त्री० व्यर्थका काम, बखेड़ा।
सटा—स्त्री० अयाल, जटा। वि० मिला हुआ।
सटाना—सक्रि० मिलाना, चिपकाना, संयुक्त करना।
सटीक—वि० टीकाके साथ। बिलकुल ठीक।
सट्टा—पु० बाज़ार। इकरारनामा।
सट्टाबट्टा—पु० चालबाज़ी। मेलजोल।
सट्टी—स्त्री० बाज़ार।
सठ—पु० धूर्त, दुष्ट (उदे० 'बंगा')।
सठता—स्त्री० दुष्टता, मूर्खता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सठियाना—अक्रि० साठ वर्षका होना, बुढ़ापेके कारण विकृत हो जाना, बुद्धिका ह्रास होना।
सठेरा—पु० सन निकाला हुआ डण्ठल।
सठोरा—पु० सोंठका लड्डू।
सड़क—स्त्री० मार्ग, चौड़ा रास्ता।
सड़ना—अक्रि० गलना, बिगड़ जाना, बुरी अवस्थामें रहना।
सड़ाँद, सड़ायँध—स्त्री० सड़ी हुई चीज़की दुर्गन्धि।
सड़ाना—सक्रि० गलाना, बुरी दशामें रखना।
सड़ासड़—क्रिवि० 'सड़ासड़' शब्दके साथ।
सड़ियल—वि० सड़ा हुआ, रद्दी, बेकाम।
सत—पु० सचाई, सत्य, सार (उदे० 'भूआ'), मूल-तत्व। वि० सौ।
सतकारना—सक्रि० सत्कार करना (रघु० ११)।
सतजुग—पु० सत्य युग।
सतत—अ० हमेशा, लगातार।
सतदल—पु० कमल (उदे० 'कल्हार')।
सतपत्र—पु० शतपत्र, कमल (मति० २१८)।
सतनजा—पु० सात विभिन्न अन्नोंका मिश्रण।
सतपतिया,-पुतिया स्त्री० एक तरहकी तरोई।
सतफेरा—पु० विवाह-परिक्रमा, भाँवर, सतपदी।
सतभाय, सतिभाय पु० सद्भाव, सच्चा भाव (बिन० ५९४,११८)
सतभाव—पु० अच्छा भाव, सौहार्द, सचाई।
सतभौंरी—स्त्री० विवाहकी एक रस्म सप्तपदी।
सतमासा—पु० गर्भाधानके सातवें महीनेका उत्सव, सातवें महीनेमें उत्पन्न बच्चा।
सतयुग—पु० सत्ययुग, कृतयुग।
सतरंज—स्त्री० शतरंज नामक खेल।
सतरंजी—स्त्री० दरी।
सतर—स्त्री० लकीर, कतार। वि० कुद, टेढ़ा (वि० २४४)।
सतराना—अक्रि० क्रोध करना, (उदे० 'झाँपना' 'ब्याव'), चिढ़ना 'बोली न बोल कछु सतरायकै भौंहैं चढ़ाय लली तिरछोहीं।' रस० १० (अ० ४०)।
सतरौंहा—वि० क्रोधसूचक, क्रोधपूर्ण 'सतरौंहीं भौंहनि नहीं, दुरै दुरावे गेह।' मति० १७८ (वि० ३५)।
सतर्क—वि० सावधान। तर्कसे युक्त, तर्कयुक्त।
सतलड़ी, सतलरी—स्त्री० सात लड़ियोंकी माला।
सतवंती—वि० स्त्री० सती।
सत्संग—पु० अच्छी संगति।
सतसई—स्त्री० सात सौ पद्योंकी पुस्तक।
सतह—स्त्री० तल, पृष्ठ-भाग।
सतांग—पु० रथ 'कोउ तुरंग चढ़ि कोउ सतंग चढ़ि कोउ सतांग चढ़ि धाये।' रघु० २९
सताना, सतावना—सक्रि० संताप देना, दुःख देना, परेशान करना।
सतालू—पु० एक पेड़ या उसका फल।
सती—स्त्री० साध्वी स्त्री, पतिके साथ जलनेवाली स्त्री।
सतीत्व—पु० पातिव्रत्य।
सतुआ—पु० भुने हुए चने व जौका चूर्ण।
सतून—पु० खम्भा।
सतूना—पु० बाजके झपटनेका एक ढँग।
सतोखना—सक्रि० संतोष देना, समझाना।
सतोगुणी—वि० सद्गुणी, सात्विक।
सत्—पु० सत्य, सार, ब्रह्म। वि० सत्य, ठीक, भला, प्रशस्त।
सत्कार—पु० सम्मान, आवभगत, अतिथि-सेवा।
सत्क्रिया—स्त्री० सत्कार। सत्कर्म।
सत्त—पु० सतीत्व, सत्य। मूलतत्व, सार।
सत्तर—वि० अस्सीसे दस कम।
सत्तरह—वि० सोलह और एक। पु० सत्तरहकी संख्या। दो छक्के एक पंजेका दाँव।
सत्ता—स्त्री० अस्तित्व, प्रभुत्व अधिकार, शक्ति। पु० सात बूटियोंवाला ताशका पत्ता।
सत्तू—पु० देखो 'सतुआ'।
सत्पात्र—पु० योग्य व्यक्ति, उपयुक्त वर।
सत्पुरुष—पु० सज्जन, भला आदमी।
सत्य—वि० ठीक, यथार्थ। पु० ठीक बात, सचाई, धर्म-संगत बात।
सत्ययुग—पु० त्रेताके पहलेका युग, कृतयुग।
सत्यवादी—वि० सच बोलनेवाला, वचन पूरा करनेवाला।
सत्यसंध—वि० प्रतिज्ञा पूरी करनेवाला, सच्चा।
सत्या—स्त्री० सचाई। सीता या दुर्गाका एक नाम।
सत्यानास—पु० विनाश, बरबादी।
सत्यानासी—वि० चौपट करनेवाला। स्त्री० एक कँटीला पौधा।
सत्र—पु० यज्ञ, घर, सदावर्त, क्षेत्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्रु—पु० शत्रु, दुश्मन ।
सत्त्व—पु० सार, तत्त्व, अस्तित्व, तीन गुणोंमेंसे पहिला, सचाई, सद्गुण, विशेषता, शक्ति, साहस, भूत ।
सत्वर—क्रिवि० तुरंत, शीघ्र ।
सत्संग—पु० अच्छी संगति ।
सत्संगति—स्त्री० देखो 'सत्संग' ।
सथर—पु० स्थल, पृथ्वी ।
सथिया—पु० स्वस्तिक चिह्न (सू० ४८) ।
सद—वि० ताज़ा 'सद माखन साखो दधि मीठो मधु मेवा पकवान ।' सूर्य ७२ । क्रिवि० सद्यः, तुरंत, (सदा ?) 'सूरदास सुर जाचत ते पद करहु कृपा अपने जनपर [सद ।' सू० १०१
सदई—दे० 'सदा' ।
सदन—पु० धाम, गृह ।
सदबरग,-वर्ग—पु० एक फूल, गेंदा (प० ८८, २६) ।
सदमा—पु० धक्का, मानसिक आघात, बड़ी हानि ।
सदय—वि० दयावान्, कृपालु ।
सदर—वि० प्रधान । पु० अध्यक्ष, केन्द्रस्थान ।
सदरी—स्त्री० एक तरहकी बंडी ।
सदर्थना—सक्रि० समर्थन करना ।
सदसि, सदस्—पु० गृह । सभा ।
सदस्य—पु० सभासद, पंच ।
सदहा—वि० सैकड़ों ।
सदा—क्रिवि० हमेशा, निरन्तर ।
सदाचरण—पु० अच्छा व्यवहार, शुभ आचरण ।
सदाचार—पु० अच्छा चाल-चलन, सद्-व्यवहार ।
सदाफर, सदाफल—वि० सदा फलनेवाला । पु० बेल, नारियल, गूलर, एक नीबू (उदे० 'तुरंज') ।
सदावरत, सदावर्त—पु० नित्यका अन्न-वितरण ।
सदाबहार—वि० जो सदा हरा रहे या फूले । पु० एक पौधा ।
सदाशय—वि० महानुभाव । सज्जन ।
सदो—स्त्री० सैकड़ा, शताब्द ।
सदूर—पु० शार्दूल (सिंह) 'लंक देखि कै छपा सदूरू ।' [प० १४४
सदृश—वि० तुल्य, समान, अनुरूप
सदेह—क्रिवि० देह-सहित, बिना शरीर छोड़े ।
सदैव—क्रिवि० हमेशा, सर्वदा ।
सद्गति—स्त्री० अच्छी गति, मोक्ष ।
सद्द—क्रिवि० तुरंत, शीघ्र । पु० शब्द 'हटकंत हूल करि हुह सद्द ।' सुजा० ९५ (उदे० 'टामक') ।
सद्भाव—पु० उत्तम भाव, सौहार्द, प्रेमभाव ।
सद्म—पु० घर । युद्ध ।
सद्य—क्रिवि० अभी, आज ही, शीघ्र, हालमें ।
सद्यःप्रसूता—वि० स्त्री० जिसने अभी अभी प्रसव किया हो ।
सधना—अक्रि० अभ्यस्त होना, सिद्ध होना, सँभलना ।
सधर—पु० ऊपरका ओंठ ।
सधवा—स्त्री० सौभाग्यवती, सुहागिन ।
सन—पु० एक पौधा । वर्ष । प्रत्यय—से, साथ (उदे० 'बाजना') । वि० सब्र, स्तब्ध ।
सनई—स्त्री० एक तरहका सन ।
सनक—स्त्री० धुन, खब्त, झक ।
सनकना—अक्रि० झक्की या पागल हो जाना ।
सनकारना—सक्रि० इशारा करना (कविता० २५०) । इशारेसे बुलाना 'सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ ।' रामा० २९३
सनकियाना—अक्रि० पागल होना । सक्रि० संकेत करना । पागल बनाना ।
सनद—स्त्री० प्रमाण, प्रमाण-पत्र ।
सनदी—स्त्री० वृत्तान्त, हाल (?) (नव० ११) ।
सनना—अक्रि० गूँधा जाना, लिप्त होना, पगना ।
सनम—पु० प्रियतम ।
सनमान—दे० 'सम्मान' ।
सनमानना—सक्रि० सम्मान करना (रामा० ४०) ।
सनमुख—क्रिवि० सामने (उदे० 'धोप' 'पछमन') ।
सनसनाना—अक्रि० हवा बहने, या पानी खौलनेका शब्द, सन सन करना ।
सनसनाहट—स्त्री० हवाके तेज़ीसे चलने या पानी उबलने का शब्द ।
सनसनी—स्त्री० झनझनाहट । खलबली, सन्नाटा ।
सनहकी—स्त्री० मुसलमानोंके प्रयोगमें आनेवाला एक मिट्टीका पात्र ।
सनातन—वि० सदा रहनेवाला, अति प्राचीन, परंपरागत । पु० अनादि काल ।
सनातन पुरुष—पु० विष्णु भगवान् ।
सनातनी—पु० सनातन धर्मी । वि० चिरकालागत ।
सनाथ—वि० जिसका कोई रक्षक हो, सफल 'भये सखि नैन सनाथ हमारे ।' सू० १९२ (उदे० 'कदाचि') ।
सनाह—पु० कवच (उदे० 'गजगाह', 'टोपा', रघु० २३६) ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सनि, सनीचर—पु० शनि, एक ग्रह, एक दिन।
सनीचरी—स्त्री० शनिकी दशा।
सनीड़—वि० पासका। क्रिवि० पासमें।
सनेह—पु० प्रेम, तेल (उदे० 'घई', वि० २७०)।
सनेहिया, सनेही—पु० प्रेम करनेवाला।
सनै सनै क्रिवि० धीरे धीरे, क्रमशः।
सन्न वि० स्तब्ध, डर इ० से एकदम चुप, संज्ञाहीन।
सन्नद्ध—वि० प्रस्तुत तैयार, जुड़ा हुआ जकड़ा हुआ।
सन्नाटा—पु० निस्तब्धता, निर्जनता, नीरवता। हवा चलनेका शब्द वि० निर्जन, नीरव।—खींचना = बिलकुल चुप हो जाना। सन्नाटेके साथ = तेज़ीसे।
सन्नाह—पु० देखो 'सनाह'।
सन्निकट—क्रिवि० बहुत पास, निकट।
सन्निकर्ष—पु० निकटता। सम्बन्ध। आश्रय।
सन्निधि—स्त्री० निकटता, सामीप्य, पड़ोस।
सन्निपात—पु० एक साथ गिरना, संयोग, समाहार। एक रोग (उदे० 'नासना')।
सन्निविष्ट—वि० एक साथ रखा हुआ, जड़ा हुआ, प्रतिष्ठित।
सन्निवेश—पु० रखने, बैठने, बैठाने आदिकी क्रिया, स्थिति घर, आसन। इकट्ठा होना।
सन्निहित—वि० पास रखा हुआ, समीपस्थ, सन्नद्ध।
सन्मुख—अ० सामने।
सन्मान—पु० सम्मान, आदर।
सन्यास—पु० देखो 'संन्यास'।
सपक्ष—वि० पक्षयुक्त, सहायक समर्थक। पु० मित्र।
सपत—दे० 'सपदि' 'सपत ऋषिन्ह विधि कहेउ विलंब न लाइय।' पामं ४० (प० १७)।
सपत्नी—स्त्री० सौत।
सपत्नीक—वि० पत्नीके साथ, स्त्री-सहित।
सपथ—पु० शपथ, सौगन्ध।
सपदि—क्रिवि० तत्क्षण, शीघ्र (रामा० ७८)।
सपन, सपना—पु० स्वप्न, ख्वाब (उदे० 'कुचैन' 'झक्ष-काना', सू० १२२)।
सपरना—अक्रि० हो सकना, पार लगना, पूरा होना (रघु० १२०)। स्नान करना (बुंदेल०)।
सपराना—सक्रि० पूरा करना। स्नान कराना।
सपाट वि० एकसा, समथर।
सपाटा पु० तेज़ी, झोंका, दौड़।
सपिंड—पु० सगोत्र।
सपूत—पु० कुलका नाम बढ़ानेवाला लड़का, सुपुत्र।
सपेत, सपेद—वि० सफेद, श्वेत, उजला (उदे० 'डासना', 'तनाय')।
सपेला, सपोला—पु० साँपका बच्चा (रामा० ४७९)।
सप्त—वि० सात।
सप्तऋषि—पु० कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, वशिष्ठ, गौतम, जमदग्नि।
सप्तक—पु० सात चीज़ोंका समूह।
सप्तजिह्व—पु० (सात जिह्वाओंवाला) अग्नि।
सप्तम—वि० सातवाँ।
सप्तमी—स्त्री० पाखकी सातवीं तिथि। अधिकरण कारक-[की विभक्ति।
सप्तर्षि—देखो 'सप्तऋषि'।
सप्तशती—स्त्री० सतसई।
सप्तस्वर—पु० गानके सात स्वर—'सऋगमपधनि'।
सप्तालू—पु० सतालू।
सप्ताह—पु० सात दिनोंका समूह, हफ्ता।
सफतालू—पु० एक फल, आड़ू।
सफर—पु० यात्रा।
सफरी—स्त्री० एक तरहकी मछली 'सफरिन भरे रहीम सर'-रहीम १६। वि० सफरका, यात्रा संबंधी। पु० अमरूद। यात्राकी आवश्यक वस्तुएँ।
सफल—वि० फलयुक्त, कृतार्थ, सार्थक।
सफलता—स्त्री० कामयाबी पूर्णता।
सफलीभूत—वि० जो कामयाब हो चुका हो।
सफहा—पु० पृष्ठ, तल।
सफ़ा—वि० पाक। साफ, चिकना। पु० पृष्ठ।
सफाई—स्त्री० स्वच्छता, निबटेरा, खातमा, निर्दोषिता।
सफ़ाचट—वि० बिलकुल साफ।
सफ़फ—पु० बुकनी, चूर्ण।
सफेद—वि० श्वेत, उजला, धौला।
सफेदी—स्त्री० धवलता। चूनेकी पोताई।
सब—वि० कुल, समग्र, समस्त, समूचा।
सबक—पु० पाठ, सीख, शिक्षा।
सबद—पु० देखो 'शब्द'। (उदे० टांकी सू० १३६)।
सबब—पु० कारण।
सबर—वि० सबल। पु० सब्र, धैर्य, संतोष।
सबल—वि० बलयुक्त, सेनायुक्त।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सवरा—वि० सब, सारा 'दूध दही चाटनमें सवरो जनम गमायो।' सत्यना०

सवार, सवारै—क्रिवि० शीघ्र (दे० 'सवार', 'सवारैं')।

सवील—स्त्री० मार्ग। यत्न, उपाय (उदे० 'घोंसुआ')।

सवेरा—पु० प्रातः काल।

सवेरे—क्रिवि० शीघ्र 'ताहीते आयो सरन सवेरे।' विन० ४३५, (उदे० 'अवार')।

सब्ज—वि० हरा, ताज़ा।

सब्र—पु० संतोष, धैर्य।

सभागा—वि० भाग्यवान् (प० १८)।

सभासद—पु० सदस्य, सभ्य।

सभ्य—वि० शिष्ट, सुशिक्षित, भद्र, भला, चतुर। पु० सदस्य।

समंद—पु० बादामी रंगका घोड़ा (प० १९)।

सम—वि० सदृश, तुल्य, एकसा, पूरा (दोसे भाग देने योग्य)। पु० समता (उदे० 'विगलित'), साम (उदे० 'पनच')। विष।

समकक्ष—वि० बराबर, बराबरीका।

समक्ष—क्रिवि० सम्मुख, सामने।

समग्र—वि० समूचा, कुल।

समचर—वि० समान आचरण करनेवाला, एकसा व्यवहार करनेवाला (विन० १४४)।

समझ—स्त्री० बुद्धि, विचार, राय।

समझना—अक्रि० हृदयंगम करना, विचारना, बूझना।

समझौता पु० मेल, राजीनामा।

समता, समताई—स्त्री० सादृश्य, बराबरी।

समतूल -वि० समान 'सुजनक प्रेम हेम समतूला' विद्या० ७२ (६९, १२९)

समत्थ—वि० समर्थ, शक्तिशाली (उदे० 'चुरी')।

समदना -सक्रि० भेंटना, मिलना (उदे० 'विवान')। भेंट करना, सौंपना, विवाहमें देना 'दुहिता समदौ सुख पाइ अबै।' राम० १०८ आनंदसे मनाना (प० २६५)। 'समदि फाग मेलिय सिर धूरी।' प० २६३

समधी—पु० बेटे या बेटीका ससुर।

समन—दे० 'शमन'। 'मातमृत्यु पितु समन समाना।' रामा० ३५८

समन्वय—पु० मेल, मिलाप, संयोग।

समय—पु० काल, ज़माना, फ़ुरसत, अवसर।

समर—पु० लड़ाई, युद्ध। मनोज (सूबे ९९, भ्र० ४०)।

समरत्थ, समरथ, समर्थ—वि० क्षमताशाली, योग्य, बलवान् (उदे० 'जितवना', 'परदा')।

समर्थन पु० पुष्टीकरण, दृढ़ीकरण, सहमत होना, विवेचन। उत्साह।

समर्पण—पु० भेंट, उपहार देना, सौंपना, दान, उत्सर्ग।

समर्पना—सक्रि० सौंपना, देना (रामा० १७५)।

समर्पित—वि० जो सौंपा गया हो। स्थापित।

समवाय—पु० भीड़, समूह, मेल, 'नित्य सम्बन्ध'।

समवेत—वि० जमा किया हुआ, एकत्रीकृत।

समष्टि—स्त्री० सामूहिक रूपसे कुल, सबका समूह।

समसर—स्त्री० बराबरी 'प्रीतम रूप कजाकके समसर कोई नाहिं।' रतन० १७ 'दमक दसनि ईषद हँसनि उपमा समसर है न।' नागरी०।

समसेर—स्त्री० तलवार (उदे० 'फजर')।

समस्त—वि० सारा, कुल सब। समासयुक्त।

समस्या—स्त्री० मिलानेकी क्रिया, टेढ़ा प्रश्न, उलझन, कठिन प्रसंग, पद्यका अन्तिमांश जिसके आधारपर पूरा पद्य रचा जाता है।

समा—पु० समय, अवस्था, लय। स्त्री० साज। दृश्य, छटा 'तेरौ सो आनन चन्द लसै तुम आननमें सखि चन्द समासी।' भावि १०४

समाउ—पु० गुंजाइश, प्रवेश (विन २५९, कवि २०१)।

समागम—पु० भेंट, साथ, मिलन, जमाव, संभोग।

समाचार—पु० संवाद, खबर, संदेशा।

समाचारपत्र—पु० अखबार, संवादपत्र।

समाज—पु० समुदाय, समूह, ज्ञातीयसंघ मंडली।

समादर—प० सम्मान।

समाधान—पु० निराकरण, तसल्ली।

समाधानना—सक्रि० निराकरण करना, सांत्वना देना 'इतेपर बिनु समाधाने क्यों धरें नित धीर।' भ्र० ४

समाधि—स्त्री० योगकी अन्तिम क्रिया, चित्तकी एकाग्रता, ध्यान। शान्ति (रामा० ६१२) नींद समाधान। कब्र। एक काव्यालंकार।

समान—वि० सदृश, बराबर, तुल्य।

समाना -अक्रि० अटना, भीतर आ सकना (उदे० 'खांड़ा'), प्रवेश करना (सू० ११४, रामा० ३७६)। सक्रि० अटाना, भरना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाप्त—वि० जो पूरा हो गया हो, पूर्ण।
समारोह—पु० बड़ा उत्सव, धूमधाम, तैयारी।
समालोचना—स्त्री० सम्यक् प्रकारसे देखना, गुण दोष-समीक्षा।
समावर्तन—पु० वापस आना। विद्याध्ययन-समाप्तिके समयका एक संस्कार।
समाविष्ट—वि० जो शामिल किया गया हो।
समावेश—पु० मिलाया जाना, संग्रह।
समास—पु० संक्षेप 'कपि सब चरित समास बखाने।' रामा० ३८३, दो या अधिक पदोंका मिलकर एक होना।
समासोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार।
समाहार—पु० समूह। एकत्रीकरण।
समिति—स्त्री० सभा।
समिधा, समिधि—स्त्री० होमकी लकड़ी।
समीकरण—पु० समान करनेकी क्रिया। अज्ञात राशि जाननेकी क्रिया (गणित)। [❀ लोचना।
समीक्षा—स्त्री० अच्छी प्रकार की गयी विवेचना, समा-❀
समीचीन—वि० योग्य, ठीक, उपयुक्त। न्या संगत।
समीति—स्त्री० समिति (विन० ५३२)। समाधान (सूबे ०३६२)
समीप—वि० निकट, पास। **समीपवर्ती** = पासका।
समीर—पु० हवा, वायु।
समीहा—स्त्री० इच्छा, चेष्टा, प्रयत्न। खोज।
समुंद, समुंदर—पु० समुद्र, सागर। (उदे० 'उपनना'
समुचित—वि० उपयुक्त, यथोचित, ठीक। ['डाँक')
समुच्चय—पु० समूह, संग्रह।
समुज्ज्वल—वि० अति उज्ज्वल।
समुझ—स्त्री० समझ।
समुझना—दे० 'समझना'। [†(विन ५४१)
समुझनि—स्त्री० समझनेकी क्रिया या भाव, विचार †
समुत्थान—पु० भली भाँति उठना, उदय, उन्नति। आरम्भ। रोगनिदान।
समुद—पु० समुद्र (उदे० 'ढँढोरना','उलथना', प० ४)।
समुदलहर—पु० एक कपड़ा (प० ५२)।
समुदाइ, समुदाय, समुदाव—पु० झुण्ड, समूह।
समुद्र—पु० उदधि, सागर। [(उदे० 'बापना')
समुन्नत—वि० सम्यग् रूपसे उन्नत, बहुत ऊँचा।
समुहाना—अक्रि० सामने होना, बराबर होना (सूरा० ३०) 'चली बली मुख सेन पराई। अति भयत्रसित न कोउ समुहाई।' रामा० ४८७
समुहैं—अ० सामनेकी ओर (रवि ३०)।
समूर, समूल—क्रिवि० जड़से, जड़सहित। वि० जड़-सहित, पूरा (उदे० 'असोक')।
समूह—पु० समुदाय, भीड़, ढेर।
समृद्धि—स्त्री० उन्नति, ऐश्वर्य।
समेटना—सक्रि० सकेलना, बटोरना।
समेत—अ० सहित।
समै—पु० समय (उदे० 'कमना')।
समो, समौ—पु० समय, वक्त (सूबे० ३८६)।
समोना—सक्रि० मिलाना (उदे० 'गरद')।
समोखना—सक्रि० सहेज कर कहना (उदे० 'ठानना')।
सम्मत—वि० सहमत पु० राय।
सम्मति—स्त्री० राय।
सम्मान—पु० आदर।
सम्मानना—सक्रि० आदर करना। स्त्री० आदर।
सम्मुख—अ० सामने।
सम्मूढ—वि० अज्ञान।
सम्मेलन—पु० सभा। मिलाप। जमघट।
सम्मोह—पु० मोह, मूर्च्छा।
सम्यक्—क्रिवि० भलीभाँति। वि० पूर्ण।
सम्रथ—वि० समर्थ (कबीर ९९)।
सम्राज्ञी—स्त्री० महारानी, मलका।
सम्राट्—पु० बादशाह, राजराजेश्वर। [† विस्तर।
सयन—पु० लेटनेकी क्रिया। (उदे० 'अलसाना')। नींद †
सयान, सयानप—पु० समझदारी, चतुरता, बुद्धिमानी (मति० १९८, २०२, भ्र० १४१, रामा० १३९)।
सयाना—वि० चतुर, समझदार। 'सुनु ऊधो हाँ कौन सयानी।' भ्र० ७२ (उदे० 'बतराना')। वयःप्राप्त।
सर—पु० शर, बाण (उदे० 'फर')। तालाब। सिर। चिता (रामा० ३६३) 'ककनू पंखि जैस सर साजा।' प० ९५। सरकंडा 'मसि खूटी सागर जल भीजे, सर दौ लागि जरे।' भ्र० ३७
सरकंडा—पु० एक पौधा, नरकट।
सरक—स्त्री० मद्यका पात्र 'बारम्बार सरक मदिरानी अरस कहा उघारे।' भ्र० २६। सरकनेकी क्रिया, गति (भ्र० ११६)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सरकना—अक्रि० हिलना, टलना, खिसकना।
सरकार—स्त्री० राज्य-संस्था, गवर्नमेंट। पु० मालिक।
सरग—पु० स्वर्ग (उदे० 'झार', 'नियाव', प० १, ४)
सरगर्म—वि० जोशीला।
सरजा—पु० सिंह। सरदार। शिवाजीकी उपाधि (उदे० 'ताव')।
सरजीव—वि० सजीव 'सरजीव काटहि निर्जीव पूजहि अन्तकाल कौ भारी।' कबीर २९१
सरजोर—वि० ज़बर्दस्त (भावि० २१)।
सरद—पु० शरत् ऋतु (उदे० 'जुन्हाई')।
सरदार—पु० अमीर, मुखिया।
सरधन—वि० सधन, धनी 'जो निर्धन सरधन कै जाई आगे बैठा पीठ फिराई।' कबीर ३०२
सरन—स्त्री० देखो 'शरण' (उदे० 'उधरना' 'तकिया')।
सरनदीप—पु० सुवर्ण-द्वीप, लंका।
सरना—अक्रि० निकलना, चलना, पूरा होना (उदे० 'जाग', 'छापा')। सड़ना। जाना (उदे० 'अनरना', अ० २०) बीतना, कटना (नव० ५६)।
सरनी—स्त्री० रास्ता (सू० १४१)।
सरपंच—पु० प्रधान पंच, श्रेष्ठ व्यक्ति, प्रधान।
सरपंजर—पु० बाणोंका पिंजड़ा (उदे० 'अवघट')।
सरपट—स्त्री० तेज़ दौड़नेकी चाल।
सरपत—पु० एक तृण।
सरपि—पु० घी (रामा० १८०)।
सरपेंच, सरपेच—पु० पगड़ीके ऊपरका आभूषण।
सरफराना—अक्रि० व्याकुल होना (रवि० ७०)।
सरब—वि० सर्व, सब।
सरबबियापी—वि० जो सर्वत्र व्याप्त हो (प० ३)।
सरबदा—दे० 'सर्वदा'।
सरबत्तरि—अ० सर्वत्र 'आपुन मैं जे करै निवाजा सो मुलना सरबत्तरि गाजा।' कबीर २२३
सरबस—पु० सर्वस्व, सब कुछ।
सरम—स्त्री० शर्म, लज्जा (विन० ३०९)।
सररराना—अक्रि० हवा आदिके ज़ोरसे चलनेकी आवाज़ (उदे० 'दररराना')।
सरल—वि० सीधा, साधु, सहल।
सरव—दे० 'सराव' 'सबके उर-सरवनि सनेह भरि सुमन सिलीको घास्यो।' अ० १३
सरवर—पु० सरोवर (उदे० 'पनारी')। वि० बराबर।
सरवरि—स्त्री० होड़, बराबरी। [(उदे० 'जर')।
सरवाक—पु० कटोरा, कसोरा।
सरवान—पु० तम्बू।
सरस—वि० रसयुक्त, मीठा, जलयुक्त। श्रेष्ठ, बढ़कर (नव० २)।
सरसई—स्त्री० सरसता (उदे० 'खंत')। सरयू नदी।
सरसना—अक्रि० रसयुक्त होना (उदे० 'झर'), पनपना, विराजना।
सरसराना—अक्रि० 'सरसर' आवाज़ होना। साँप इ० का चलना। हवाका वेगसे बहना।
सरसरी—वि० जल्दीबाजीका। मोटे तौरपर।
सरसाना—अक्रि० रसयुक्त होना, शोभायुक्त होना। (उदे० 'पटीर')।
सरसाम—पु० त्रिदोष (सन्निपात)।
सरसिज—पु० कमल, पद्म।
सरसिह, सरसी—स्त्री० छोटा तालाब (राम० १३४)।
सरसीरुह—पु० कमल, सरसिज।
सरसुति—दे० 'सरस्वती' (मति० २१८)।
सरसंटना—सक्रि० फटकारना।
सरसो—स्त्री० एक तिल-बीज।
सरस्वती—स्त्री० शारदा, विद्या, ब्रह्माणी, एक नदी।
सरह—पु० शलभ, टिड्डी (प० २४५)।
सरहज—स्त्री० सालेकी स्त्री।
सरहद—स्त्री० सीमा।
सरा—स्त्री० चिता 'सतकहँ सती सँवारै सरा।' प० ४१
सराई—स्त्री० सलाई। पाजामा। ठंडक (कबीर १६४)।
सराग—पु० शलाका, सींक 'बिरह सरागन्हि भूँजै मासू।' प० ७०
सराध—पु० श्राद्ध (उदे० 'नंदीमुख')।
सराना—सक्रि० पूरा कराना।
सराप—पु० देखो 'शाप' (उदे० 'गाढ़ा', 'तराप')।
सरापना—सक्रि० शाप देना।
सराफ—पु० सोना चाँदी बेचनेवाला।
सराफा—पु० सराफोंका बाज़ार। सराफीका काम।
सराब—पु० शराब, मदिरा।
सराय—स्त्री० धरमशाला, घर।
सराव—पु० मद्यपात्र, कटोरा, पात्र, दीया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सरावग, सरावगी—पु० जैन ।
सरावन—पु० हेंगा जिससे मिट्टी बराबर करते हैं ।
सरास—पु० भुसी 'कहो कौन पै कढ़ो जाइ कन बहुत सरास पछोरी ।' सूबे० ३५९
सरासन—पु० शरासन, धनुष (उदे० 'डिगना') ।
सरासर—अ० बिलकुल । स्पष्टतः, प्रत्यक्ष ।
सराह—स्त्री० प्रशंसा ।
सराहना—सक्रि० प्रशंसा करना (उदे० 'अनुरागना' 'निंदना') । स्त्री० बड़ाई ।
सराहनीय—वि० प्रशंसनीय ।
सरि—स्त्री० बराबरी (उदे० 'खड़ग') । नदी (उदे० 'बई' 'नावरी') । अ० पर्यन्त 'आऊ सरि राजा पहँ रहा ।' प० २२० ।
सरित, सरिता—स्त्री० नदी ।
सरिवर, सरिवरि—दे० 'सरवरि' (उदे० 'गाज़ी') ।
सरिश्ता—पु० दफ्तर । कचहरी ।
सरिस—वि० सदृश समान (रामा० ४२२) ।
सरीकता—स्त्री० शामिल रहनेका भाव, साझा 'रावरी पिनाकमें सरीकता कहा रही'—कविता० १६२
सरीखा—वि० समान, सदृश ।
सरीफा—पु० देखो 'शरीफा ।'
सरीर—पु० शरीर, देह (उदे० 'छिरकना') ।
सरीसृप—पु० पेटके बल चलनेवाले जन्तु ।
सरुज—वि० रोगयुक्त, अस्वस्थ ।
सरूप—वि० सुन्दर, समान रूपका ।
सरहना—अक्रि० अच्छा होना 'अजौं न सरुहै निठुर तुम भये और ही भाइ ।' मति० २३४
सरहाना—सक्रि० अच्छा करना ।
सरेख, सरेखा—वि० सज्ञान, सयाना, चतुर 'हँसि हँसि पूछहिं सखी सरेखी ।' प० १५५
सरेस—पु० एक लसीला पदार्थ ।
सरोंट—पु० सिकुड़न, शिकन ।
सरो—पु० झाऊके सदृश एक वृक्ष ।
सरोकार—पु० सम्बन्ध । प्रयोजन, वास्ता ।
सरोज—पु० कमल, पद्म ।
सरोजिनी—स्त्री० कमल । कमलवन ।
सरोरुह—पु० कमल ।
सरोवर—पु० तालाब ।
सरोसामान—पु० असबाब, सामग्री ।
सरौता—पु० सुपारी कतरनेका औज़ार ।
सर्कार—दे० 'सरकार' ।
सर्ग—पु० अध्याय, परिच्छेद । सृष्टि, उत्पत्ति ।
सर्द—वि० ठंढा, उत्साह-हीन, सुस्त, धीमा ।
सर्दी—स्त्री० ठंढक, जुकाम ।
सर्प—पु० साँप । सर्पराज = शेषनाग । बुद्धि ।
सर्पारि—पु० गरुड़, मयूर, नेवला ।
सर्पी—पु० घी । वि० पेटके बल चलनेवाला ।
सर्फ़—वि० खर्च किया हुआ ।
सर्वस—पु० सर्वस्व ।
सर्म—पु० शर्म ।
सर्राफ, सर्राफा—दे० 'सराफ', 'सराफा' ।
सर्व—वि० सब, कुल । पु० शिवजी ।
सर्वग्रास—पु० पूर्ण ग्रहण ।
सर्वजनीन—वि० सार्वजनिक ।
सर्वज्ञ—वि० सबकुछ जाननेवाला । पु० परमेश्वर ।
सर्वत्र—अ० सब जगह ।
सर्वथा—क्रिवि० सब प्रकारसे, पूर्णतः ।
सर्वदा—क्रिवि० हमेशा । वि० स्त्री० सब कुछ देनेवाली ।
सर्वनाम—पु० संज्ञाके स्थानमें आनेवाला शब्द ।
सर्वनाश—पु० विध्वंस ।
सर्वभक्षी—पु० सब कुछ खानेवाला, अग्नि ।
सर्वरी—स्त्री० रात्रि ।
सर्वव्यापी—पु० ईश्वर । वि० सबमें रहनेवाला ।
सर्वशक्तिमान्—वि० जिसमें सब कुछ करनेकी शक्ति [हो । पु० ईश्वर ।
सर्वसंहार—पु० काल ।
सर्वस—पु० सर्वस्व, सब कुछ ।
सर्वसाधारण—पु० जनता । वि० सामान्य ।
सर्सों—स्त्री० देखो 'सरसों' ।
सलई—स्त्री० चीढ़ ।
सलज—वि० लज्जावान्, शर्मीला ।
सलतनत—स्त्री० राज्य । सुभीता । प्रबन्ध ।
सलना—अक्रि० गड़ना, छिदना (उदे० 'असलेठ') ।
सलमा—पु० सोने या चाँदीका तार । [पु० मोती । बरमा ।
सलाई—स्त्री० शलाका, सींक, पतली छड़ ।
सलाक—स्त्री० शलाका, सलाई (अ० १३६), तीर ।
सलाम—पु० नमस्कार, प्रणाम (उदे० 'इलाम', 'गुहार') ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सलामत—वि० स्वस्थ, जीवित, सकुशल।
सलाह—स्त्री० राय, परामर्श (उदे० 'कहर')।
सलाहकार—पु० सलाह देनेवाला।
सलि—स्त्री० चिंता (कबीर ७१)।
सलिता—स्त्री० सरिता (कबीर १२, २८०)।
सलिल—पु० पानी।
सलीका—पु० तमीज़, तौर-तरीका। योग्यता।
सलूक—पु० व्यवहार, बर्त्ताव, उपकार।
सलूना—वि० नमकीन, लावण्यमय, छविवान्।
सलैला—वि० जिसपर पाँव फिसले'... बाट सलैली सैल' कबीर ३१
सलोट—स्त्री० सिलवट, सिकुड़न, शिकन (उदे० 'चारी')
सलोन-ना, सलौना—दे० 'सलूना' (उदे० 'अगौनी')।
सलोनो—पु० रक्षाबंधन, श्रावणी।
सव—पु० शव, लाश। रस, जल।
सवगात—स्त्री० भेंट, तुहफ़ा।
सवत, सवति—स्त्री० सौत, सपत्नी (उदे० 'जढ़')।
सवर्ण—वि० सजातीय, समान वर्णका, समान।
सवा—स्त्री० चौथाई सहित। वि० एक और चौथाई।
सवाद—पु० स्वाद, ज़ायका (रतन० १८)।
सवादिक—वि० सुस्वादु।
सवार—पु० अश्वारोही। वि० सवारीपर चढ़ा हुआ। क्रिवि० सवेरे, शीघ्र 'ऊधो जाहु सवार यहाँते बेगि गहरु जनि लावो।' भ्र० १२
सवारी—स्त्री० वाहन। सवार होनेकी क्रिया।
सवारे, सवारैं—क्रिवि० शीघ्र, दिन रहते 'तुरत चलो अबही फिरि आवैं, गोरस बेचि सवारैं।' सूबे १३०
सवाल—पु० प्रश्न, निवेदन।
सविता—पु० सूर्य, बारहकी संख्या।
सवेरा—पु० प्रातःकाल।
सवैया—पु० एक छन्द। सवा सेरका बाँट। एक तरहका [पहाड़ा।
सव्य—वि० बायाँ, उलटा।
सव्यसाची—पु० अर्जुन।
सशंक—वि० शंकायुक्त, भयभीत।
सशंकना—अक्रि० सशंक होना।
सस—पु० शशि, चन्द्र। शशक (रामा० १४५)। शस्य (रामा० ५५०)
ससक, ससा—पु० शशक, खरगोश (उदे० 'टीपा')।
ससकना, ससना—अक्रि० जी धड़कना, झिझकना 'डाँपी ससी ससकी यहराइ बिसूरि बिसूरि बिथा हियहूकी।' नव० १६ (४४)।
ससधर, ससहर—पु० चन्द्र (प० ३०८)।
ससि—पु० शशि, चन्द्र 'धान 'जिमि सांसि हति हिम उपल बिलाहीं।' रामा० ६११ (४०३)
ससिधर, ससिहर—पु० चन्द्रमा 'उदय न अस्त सूर नहीं ससिहर।' कबीर १३९ (२००)
ससुर—पु० पत्नी या पतिका पिता।
ससुरा—पु० देखो 'ससुर'। स्त्री० ससुराल 'कित नैहर पुनि आउब कित ससुरे यह खेल।' प० २७ (रामा० २४५)।
ससुरार, ससुरारि, ससुराल—स्त्री० ससुरका घर।
सस्ता—वि० कम दामका, मंदा। [(उदे० 'डाँढ़')।
सस्ती—स्त्री० मंदी।
सस्य—पु० धान्य।
सह—अ० सहित, साथ।
सहकार—पु० आम्र वृक्ष। सहायक।
सहकारी—पु० सहायक, साथी।
सहगामिनी—स्त्री० स्त्री। पतिके शवके साथ सती होने वाली स्त्री।
सहगौन—पु० साथ जाना, सहगमन।
सहचर—पु० साथ चलनेवाला, मित्र, नौकर।
सहचरी,—चारिणी—स्त्री० साथ रहनेवाली, सखी, पत्नी।
सहचारी—दे० 'सहचर'।
सहज—वि० जो साथ पैदा हो, स्वाभाविक। सरल।
सहजन—पु० देखो 'सहिजन'।
सहजात—वि० सगा।
सहजानि—स्त्री० स्त्री, पत्नी।
सहजै—अ० सहज ही, अनायास।
सहत—पु० शहद, मधु।
सहताना—अक्रि० सुसताना, आराम करना।
सहतूत—पु० एक पेड़ या उसका फल। [†१८१)।
सहदानी—स्त्री० पहचानकी वस्तु, निशानी। (कविता
सहन—पु० सहिष्णुता, क्षमा। चौक।
सहनशील—वि० सहनेवाला, जिसका स्वभाव सह लेने का हो, संतोषी।
सहना—सक्रि० भोगना, पाना, उठाना (उदे० 'जोखिउँ')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहनाई—स्त्री० एक बाजा (उदे० 'पुकार', 'गड़गड़')।
सहनायन—स्त्री० सहनाई बजानेवाली।
सहपाठी—पु० साथ पढ़नेवाला।
सहभोज,-भोजन—पु० एक साथ खाना।
सहम—पु० लिहाज, भय।
सहमत—वि० एकमत।
सहमना—अक्रि० सहम खाना, डरना (उदे० 'जबास')।
सहमाना—सक्रि० डराना।
सहयोग—पु० साथ देनेका भाव, सहायता, साथ।
सहर—पु० शहर, नगर (सू० ४८)। टोना। सवेरा।
सहरगही—स्त्री० व्रतके दिनका वह भोजन जो कुछ रात रहते किया जाता है।
सहराना—सक्रि० सोहराना, धीरे धीरे मलना या हाथ फेरना। अक्रि० सिहरना, काँपना।
सहरी—स्त्री० शफरी, मछली 'पातगरी सहरी सकल सुत बारे बारे।' कवितां० १६५। दे० 'सहरगही'।
सहलंगी—पु० 'सँगलगा'. साथी (प० ६२)।
सहल—वि० सरल, आसान।
सहलाना—सक्रि० देखो 'सहराना'।
सहवास—पु० साथ रहना, साथ, संभोग।
सहस—पु० सहस्र, हजार।
सहसकिरन,-गो—पु० सूर्य।
सहसदल,-पत्र—पु० कमल। 'लसत बदन सतपत्र सौ सहसपत्रसे नैन।' मति० २१८
सहसनयन, सहसाक्षि, सहसाखी—पु० इंद्र।
सहसबदन,-मुख, सहसानन—पु० शेषनाग।
सहसा—क्रिवि० अचानक, झटपट (उदे० 'पैड़ा')।
सहसाक्षि, सहसाखी—पु० इन्द्र।
सहस्र—वि० हजार। पु० हजारकी संख्या।
सहस्रदल, सहस्रनयन—दे० 'सहसदल', 'सहसनयन'।
सहाइ, सहाई—पु० सहायता। पु० सहायक।
सहानुभूति—स्त्री० हमदर्दी।
सहाय—स्त्री० सहायता (उदे० 'छौना'), भरोसा, सहायक।
सहायक—वि० मददगार, बड़ी नदीमें मिलनेवाली [(छोटी नदी)।
सहायता—स्त्री० मदद, प्रोत्साहन।
सहारना—सक्रि० सहना, उठाना, सँभारना।
सहारा—पु० भरोसा, आश्रय, सहायता।
सहावरा—पु० कोहे इ० का लटकन जिससे दीवारकी सीध मालूम होती है। साहुल।
सहिजन—पु० एक वृक्ष, 'मुनगा'—'सहिजन अति फूलै बड़ उग पावसके हानि।' रहीम २१
सहिदानी—स्त्री० देखो 'सहिदानी'।
सहित—अ० साथ।
सहियी—स्त्री० बर्छी (छत्र ९८)।
सहिदान—पु०, **सहिदानी**—स्त्री० पहचानकी वस्तु, निशानी 'दीन्हि राम तुम कहँ सहिदानी।' रामा० ४२१ (सू० ३३)।
सहिष्णु—वि० सहनशील।
सही—स्त्री० हस्ताक्षर (विन० ६२८)। वि० ठीक, सच। क्रिवि० निश्चय, अवश्य ही (उदे० 'बिखान')। स्त्री० सखी (पार्व० ३५)।
सही सलामत—वि० नीरोग, तंदुरुस्त। जिसमें कोई न्यूनता न आयी हो।
सहुँ—अ० सामने, तरफ 'जासहुँ हेर मार विषवाना।'
सहूलियत—स्त्री० सुगमता। अदब। [प० ४५
सहृदय—वि० रसिक। दयालु। [रखना।
सहेजना—सक्रि० समझा कर सौंपना, देख भाल कर
सहेट, सहेत—पु० मिलन-स्थान (मति० १९८)।
सहेली—स्त्री० सखी, सहचरी।
सहैया—वि० सहनेवाला। पु० सहायक (सू० १८६)।
सहोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार।
सहोदर—वि० सगा।
सह्य—वि० सहने योग्य।
साँई—पु० स्वामी, पति, ईश्वर।
साँकर—स्त्री० सिकड़ी, जंजीर। कष्ट, दुःख 'सांकरेकी साँकरन सनमुख होत तोर...' राम० १ (छत्र ९०)। वि० तंग (उदे० 'खोरी') 'अस साँकर चलि सकै न चाँटा।' प० ७०। दुःख-पूर्ण।
सांग, साँगी—स्त्री० एक तरहकी बर्छी (उदे० 'पट तारना' 'मिंडिपाल', प० ३२२)।
सांगोपांग—क्रिवि० अंगों-उपांगों सहित, पूर्णरूपसे।
साँच—वि० सच। पु० सच बात, सत्य (उदे० 'बटिया')।
साँचा—पु० मिट्टी आदिका उपकरण जिसमें ढालकर कोई वस्तु बनायी जाय (शरीर, प० २६२)। वि० सच्चा (उदे० 'ठाना')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साँचिला—वि० सच्चा 'एक सनेही साँचिलो केवल कोसल-पालु।' विन ४४४

साँची—पु० एक तरहका पान।

साँझ—स्त्री० संध्या (उदे० 'फूलना')।

साँझा—पु० देखो 'साझा'।

साँट—स्त्री० साँटी, छड़ी। कोड़ा (उदे० 'जेवरी')।

साँटा—पु० कोड़ा। गन्ना।

साँटिया—पु० दुरगी पीटनेवाला (प० ५८)।

साँठी—स्त्री० छड़ी (सू० ६४)। बदला 'निगुंन साँटि गोबिंदहिं माँगत, क्यों दुख जात सखो।' भ्र० १२२

साँठ—पु० साँटा, गन्ना (उदे० 'गाँठ')। संयोग। अन्न पीटनेका डंडा। सरकंडा

साँठि, साँठो—स्त्री० पूँजी 'बाम्हन तहवाँ लेइ का गाँठि साँठि सुठि थोर।' प० ३३ (उदे० 'नाठना', प० ५८)।

साँड़—पु० दाग कर छोड़ा हुआ बैल; मस्त बैल।

साँड़नी—स्त्री० ऊँटनी।

साँड़िया—पु० ऊँटनीका सवार।

सांत—वि० शान्त।

सांत्वना—स्त्री० तसल्ली, आश्वासन।

साँथरी—स्त्री० देखो "साथरी"।

साँध—पु० लक्ष्य।

साँधना—सक्रि० सानना, मिलाना, गूँधना, 'तेहिमहं बिप्रमांस खल सांधा।' रामा० ९६ (प०४८)। साधना, सिद्ध करना, संभालना, संधान करना 'मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा। करतल चाप रुचिर सर साँधा।' रामा० ३७८, 'राम धनुष अरु सायक साँधे।' सूग० २२

साँप—पु० सर्प, व्याल।—छछूँदरकी गति = अस मंजसकी अवस्था (रामा० २२५)।

सांपद—वि० धन संबंधी।

सांप्रत—अ० अभी, इस समय।

सांबर—पु० एक नमक। संबल। एक हरिन।

साँभर—पु० एक नमक। एक तरहका हरिन। पाथेय, राहखर्च 'साँभर सोह गाँठि जो होई।' प० २०६

साँवत—पु० सामन्त, वीर।

साँवर,-रा, साँवला—वि० श्याम रंगका (उदे० 'बर')। पु० श्रीकृष्ण (उदे० 'उपरैना')।

साँवाँ—पु० एक कदन्न।

साँस—स्त्री० श्वास, फुरसत, अवकाश।

साँसत,-ति—स्त्री० साँस रुकने जैसा कष्ट; तंगी, यातना

सांसतघर—पु० काल-कोठरी। [(विन० ३१२)

साँसना—सक्रि० शासन करना, पीड़ा देना।

साँसा—पु० शंका, चिन्ता। श्वास, पीड़ा।

सा—अ० समान।

साइक—पु० शायक, बाण। सायंकाल।

साइत—स्त्री० शुभ लग्न।

साइयाँ, साईं—पु० स्वामी, पति।

साई—स्त्री० बयाना, पेशगी। एक कीड़ा। साढ़ी, मलाई (कबीर ११२)।

साउ—पु० शाह, महाजन।

साउज—पु० वे जीव जिनका शिकार किया जाता है 'कीन्हेसि साउज आरन रहई।' प० १

साक—स्त्री० शाक, तरकारी।

साकट, साकत—पु० गुरुरहित, मद्यमांस खानेवाला (उदे० 'जीरना', कबीर १०२, २६०)।

साकल—स्त्री० जंजीर।

साका—पु० शाका, संवत्। समय। इच्छा, शौक (बुंदेल० 'साको') 'आजु आइ पूजी वह साका।' प० ११२। कीर्त्ति (विन० ३६८), दबदबा, नामवरी 'तस फल उन्हहिं देउँ करि साका।' रामा० २१५

साकार—वि० आकारयुक्त, मूर्त्तिमान्, रूप रंगवाला।

साकिन—वि० वासिंदा, निवासी।

साकी—पु० मद्य पिलानेवाला। माशूक।

साकेत, साकेतन—पु० अयोध्या।

साक्षर—वि० पढ़ा-लिखा।

साक्षात्—अ० प्रत्यक्ष, प्रकट, सामने।

साक्षात्कार—पु० देखा-देखी, भेंट।

साक्षी—स्त्री० गवाही। पु० गवाह।

साख—स्त्री० कीर्त्ति, धाक, मर्यादा। पु० गवाही, गवाह। स्त्री० शाखा। पुश्त, पीढ़ी।

साखर—वि० साक्षर, पढ़ालिखा।

साखा—स्त्री० शाखा, डाली (उदे० 'शोनंत')।

साखी—स्त्री० साक्षी, गवाही (उदे० 'जीरना', रामा० १६८)। पु० गवाह, पंच 'तुम ससि होहु तराइन साखी।' प० २७। वृक्ष।

साखू—पु० सखुआ वृक्ष।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साखोचार—पु० गोत्र-वर्णन ।
साग—पु० शाक, तरकारी, सब्जी ।
सागर—पु० समुद्र, सरोवर ।
सागूदाना—पु० एक पेड़का गूदा ।
सागौन—पु० एक पेड ।
साज—पु० सजावटकी चीजें; सजावट, तैयारी ।
साजन—पु० स्वामी, प्रेमी, स्वजन ।
साजना—सक्रि० सँवारना, तैयार करना (उदे० 'जीन')।
साजा—पु० अच्छा, साफ (बुंदेल०) (उदे० 'सद') । सुन्दर 'ये सुत कौनके शोभहिं साजे ।' राम० ९७
साजिंदा—पु० साज बजानेवाला ।
साजिश—स्त्री० षड्यंत्र, मेल ।
साझा—पु० मेल, हिस्सा । पत्ती ।
साझी, साझेदार—पु० हिस्सेदार ।
साटक—पु० भूसा, तुच्छ वस्तु ।
साटन—पु० एक तरहका बढ़िया कपड़ा ।
साटना—सक्रि० चिपकाना, जोड़ना ।
साटमार—पु० हाथियोंको लड़ानेवाला ।
साटा—पु० बदला (रतन० ६८, ७९, ८२) ।
साटी—स्त्री० देखो 'साँटी' ।
साठनाठ—वि० नष्ट हुई पूँजीवाला, निर्धन, सुक्ख (प० १६) । (नीरस । तितर बितर) ।
साठा—वि० साठ वर्षकी अवस्थाका । पु० ऊख ।
साठी—स्त्री० एक तरहका धान ।
साड़ी—स्त्री० स्त्रियोंकी धोती ।
साढ़साती—स्त्री० शनिदशा-विशेष (उदे० 'गढ़ना') ।
साढ़ा—वि० आधा ।
साढी—स्त्री० दूधके ऊपरकी मलाई (सूबे० २७०)।
साढू—पु० स्त्रीका बहनोई ।
सात—वि० चार और तीन । **सात राजा साखी होना** = बिलकुल सत्य होना ।
सातफेरी—स्त्री० विवाहकी एक रस्म ।
साति—स्त्री० शास्ति, दंड 'बुझि करह साति जो होय डचीता ।' विद्या० १८२
सातिक, सातिग—दे० 'सात्विक' (मति० २४०) 'राजस तामस सातिग तीन्यूँ ये सब तेरी माया ।' कबीर १५०
सात्विक—वि० सत्वगुण-प्रधान, सत्वगुण सम्बन्धी । स्तम्भ, रोमाञ्च आदि मनोविकार ।
साथ—पु० संगति । साथी । अ० सहित, द्वारा, प्रति ।
साथरी—स्त्री० बिस्तर, पत्तों या तृणादिका बिछौना (उदे० 'डसाना' 'तुगई') ।
सादगी—स्त्री० सादापन; छलहीनता ।
सादा—वि० मामूली, छलहीन, शुद्ध, जो रंगीन न हो ।
सादी—स्त्री० शादी, विवाह । पु० शिकारी । एक पक्षी । मामूली पूड़ी (कचौड़ी नहीं) ।
सादूर—पु० सिंह (प० २०५) ।
सादृश्य—पु० समानता, तुलना ।
साध—स्त्री० इच्छा (उदे० 'पुराना', कबीर १६४) । पु० सत्पुरुष, साधु (उदे० 'प्रछालना') ।
साधक—पु० साधनेवाला, तपस्वी, योगी ।
साधन—पु० उपाय, उपकरण, कारण, सिद्धि, अभ्यास ।
साधनहार—पु० साधक । साध्य ।
साधना—सक्रि० सिद्ध करना (उदे० 'झाड़ा', सू० ४३) । ठीक करना, वशमें करना 'अब लगि तुमहिं न काहू साधा ।' रामा० ७९ । अभ्यास करना, साबित करना । संधान करना (उदे० 'गरधि') । स्त्री० सिद्धि ।
साधस—पु० भय 'साधस नहिं कर चल प्रिय पासा'
साधारण—वि० सामान्य, सादा, सरल । [विद्या० ९४
साधुवाद—पु० "साधु साधु" कहना, वाहवाही ।
साधु, साधू—वि० अच्छा, भला, सच्चा । पु० सज्जन, सन्त । **साधु साधु** = धन्य धन्य ।
साध्य—वि० जो प्रमाणित करना हो । सिद्ध करने योग्य, आसान । अच्छा होने योग्य (रोग) ।
साध्वी—वि० स्त्री० पतिव्रता । अच्छे आचरणवाली ।
सानंद—क्रिवि० आनन्दपूर्वक । सहर्ष ।
सान—स्त्री० सिल्ली । प्रतिष्ठा । **-धरना** = हथियार इ० तेज़ करना (उदे० 'बिछुवा', विन ४२९) ।
सानना—सक्रि० मिलाना, गूँधना ।
सानी—वि० बराबरीका, दूसरा । पु० पशुओंका सना हुआ भोजन ।
सानु—पु० पहाड़की चोटी । जंगल । पण्डित । सूर्य ।
सान्निध्य—पु० समीपता । मोक्ष । [पत्ता ।
साप—पु० शाप, बददुआ (विन ३३५) ।
सापत्न्य—पु० सौतका भाव । सौतेला लड़का ।
सापना—सक्रि० शाप देना, कोसना ।
साफ—वि० स्पष्ट, स्वच्छ, पवित्र । क्रिवि० बिलकुल ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साफल्य—पु० सिद्धि, सफलता, कामयाबी।
साफा—पु० पगड़ी।
साफी—स्त्री० चिलमके नीचे लपेटनेका कपड़ेका छोटा टुकड़ा, छोटी अँगौछी, छनना।
सावर—पु० एक तरहका मंत्र। हरिनकी एक जाति।
साविक—वि० पहलेका।
साबित—वि० प्रमाणित। पूरा, ठीक।
सावुत, सावूत—वि० अखंडित, सम्पूर्ण। दृढ़।
सावुन—पु० कपड़े इत्यादि साफ करनेके निमित्त मज्जी इत्यादि से तैयार किया गया एक पदार्थ।
सागूदाना—पु० देखो 'सागूदाना'।
सामंजस्य—पु० वैषम्यका अभाव, औचित्य।
सामंत—पु० राजा सरदार। योद्धा। निकटता।
साम—पु० एक वेद (उदे० 'छठी')। मीठे वचन कहकर मिला लेना 'कियो मंत्र अंगद पठवनको साम करन रघुराई।' रघु० २२९। वि० श्याम रंगका 'जमुना साम भई तेहि झारा।' प० २५० (उदे० 'उडैनी')।
सामग्री—स्त्री० आवश्यक वस्तुएँ, सामान, उपकरण।
सामध—पु० समधियोंके परस्पर मिलनेकी रीति, सम धोटा 'सामध देखि देव अनुरागे।' रामा० १७२
सामना—पु० मुकाबला, भेंट, मुठभेड़। आगेका हिस्सा।
सामने—क्रिवि० आगे, सम्मुख, किसीके रहते हुए।
सामयिक—वि० समय सम्बन्धी, समयानुकूल।
सामर—दे० 'साँवर' (भाविं० ३०)। समर।
सामरथ, सामर्थ, सामर्थ्य—स्त्री० शक्ति, पराक्रम, योग्यता।
सामरिक—वि० युद्ध-विषयक।
सामहिं—क्रिवि० सामने।
सामाँ, सामा—पु० सावाँ, सामान। (विन० ५२१)। स्त्री० सामान, ढौल (उदे० 'उपानह')।
सामाजिक—वि० समाज-सम्बन्धी। पु० सदस्य।
सामान—पु० असबाब, सामग्री। [†काव्यालंकार।
सामान्य—वि० साधारण। पु० सादृश्य, बराबरी। एक
सामान्यतः—क्रिवि० आम तौरसे, मामूली तौरसे।
सामान्या—स्त्री० वेश्या।
सामी—पु० स्वामी, प्रभु (विद्या० १९९)।
सामीप्य—पु० समीपता, निकटता। मोक्ष।
सामुझि—स्त्री० समझ (रामा०९) [हस्तरेखा-विज्ञ।
सामुद्रिक—वि० समुद्र सम्बन्धी। पु० हस्तरेखाविज्ञान,
सामुहाँ सामुहैं—क्रिवि० सामने धरे पौनके सामुहैं, दिया भौन को बारि।' मति० १९९
साम्य—पु० सादृश्य, समानता।
साम्राज्य—पु० सार्वभौम राज्य।
साम्हना, साम्हने—देखो 'सामना', 'सामने'।
सायंकाल—पु० संध्याका समय।
सायक—पु० बाण (उदे० 'धर')। सायंकाल (वि०२९)।
सायत—स्त्री० शुभ लग्न, मुहूर्त्त।
सायवान—पु० छाया आदिके लिए डाला गया छप्पर। ओसारा।
सायर—पु० सागर 'नैन नीर सब सायर भरे।' प० १०४ (उदे० 'उजरना', 'कँठा', 'ढंढोलना')।
सायल—पु० प्रश्नकर्त्ता, प्रार्थी, याचक।
साया पु० एक तरहका लहँगा। छाया, प्रभाव।
सायुज्य—पु० एक हो जाना, मुक्तिका एक भेद।
सारंग—पु० सिंह, कमल, मोर, चातक, भ्रमर, चन्द्रमा, मृग, 'सारँग प्रीति करी जो नाद सौं, सनमुख बान सह्यो।' सू० २०३। स्त्री, एक राग, मेघ, सर्प, कोयल, हाथी, कपूर, हंस, खंजन, शिवजी, धनुष, 'धन तन दिव्य कवच सजि करि अरु कर धारयो सारंग।' सू० ४१, बाण, वस्त्र, शंख, सूर्य, सुवर्ण, सरोवर, समुद्र, केश, चन्दन, दिन, रात्रि, मेंढक, आभरण, कामदेव, काजल, दासि, शोभा। 'सारँग नयन बयन पुनि सारँग सारँग तसु समधाने। सारँग उपर उगल दस सारँग केलि करथि मधुपाने।' (विद्या० १५), सारँग दुखी होत सारँग बिनु तोहि दया नहिं आवत। 'सारँग रिपुको नैकु ओट कहि, ज्यों सारँग सुख पावत। सूरदास सारँग केहि कारन, सारँग कुलहिं लजावत।' सू० १११। वि० सरस, मधुर, रंजित।
सारंगपाणि,-पानि—पु० विष्णु।
सारंगिक—पु० बहेलिया। एक छंद।
सारंगी—स्त्री० एक बाजा।
सार—पु० मुख्य भाग, तत्त्व, रस, हीर, गूदा, (विन० ४३६), बल, बड़ाई (भू० ९७)। गोशाला, नतीजा। सँभाल, सेवा, रक्षा, 'बनदेवी बनदेव उदारा। करिहहिं सासु ससुर सम सारा।' रामा० २३०, पांसा, जुआ 'सब रसको रस प्रेम है, विषयी खेलै सार।' सू० २१। संदेश (भ्र० ३१), खबर,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'तलफत छाँड़ि चले मधुवनको किनिकै लई न सार' भ्र० ३१, होश 'मैंमंता घूमत रहै नाहीं तनकी सार।' कबीर १६, हथियार 'सिवसिंह सार सम्हारिकै। मिलि गयौ फौजहि फारिकै।' सुजा० ५३ (छत्र २१) धैर्य (विद्या० २४८) 'बलख बुखारे मुलतान लौं हहर पारै कपि लौं पुकारै कोऊ धरत न सार है।' भू० १८३ लोहा 'मुए चामकी साँस वे सार भसम हो जाय।' (प० २४६)। साला (कबीर २४३)। शय्या, एक छंद, एक काव्यालंकार। वि० उत्तम।

सारखा—वि० सरीखा, समान।

सारथि—पु० रथ हाँकनेवाला।

सारद—स्त्री० सारदा। वि० शरद सम्बन्धी 'सारद नारद बीजुरी, भा रद कीजत लाल।' बि० १९७

सारदा—स्त्री० सरस्वती।

सारदूल—पु० सिंह।

सारना—सक्रि० निकालना, काढ़ना, लगाना 'जातहिं राम तिलक तेहि सारा।' रामा० ४४, 'साजि माँग सिर सेंदुर सारै।' प० १४२। चलाना, निबाहना, रक्षा करना, पूरा करना (उदे० 'छेव', कबीर ४९)।

सारमेय—पु० कुत्ता।

सारल्य—पु० सरलता, सादगी।

सारस—पु० एक पक्षी, एक गहना, चन्द्रमा, कमल, हंस।

सारसुती—स्त्री० सरस्वती।

सारस्य—पु० सरसता, रसीलापन। वि० विशेष रसदार।

सारांश—पु० तात्पर्य। निचोड़। सार।

सारा—वि० सम्पूर्ण। कुल। पु० साला (कबीर २४३)।

सारि—पु० गोटी 'आसा फिरि फिरि मारसी ज्यों चौपड़िकी सारि।' कबीर १९ (प० १४८) पाँसा, 'बैठि कुँअरि सब खेलहिं सारी।' प० १८। जुआड़ी, चौपड़ खेलनेवाला। सारंगीकी खूँटी (?) 'तत करि ताँति धर्म करि डाँडी, सतकी सारि लगाइ।' कबीर १५९

सारिउँ, सारिका—स्त्री० मैना 'सारिउँ सुवा महरि-कोकिला।' प० २११ (उदे० 'ज्याना')।

सारिखा—वि० सरीखा, सदृश (उदे० 'निहोरा')।

सारी—स्त्री० साड़ी (उदे० 'तनसुख')। मैना (रामा० ८)। मलाई। साली। गोटी, चौपड़ (प० १५२)। पु० अनुसरण करनेवाला।

सारूप्य—पु० एकरूपता, मुक्ति-विशेष।

सारो—स्त्री० सारिका, मैना (उदे० 'किराना') 'हवगर हिय सुक सों कह सारो।' गीता० ३६० (प० १२)।

सारौं—स्त्री० मैना। [पु० साला।

सार्थक—वि० अर्थयुक्त, सफल।

सार्दूल—पु० सिंह।

सार्द्ध—क्रिवि० साथ। वि० अर्द्ध सहित।

सार्वजनिक, सार्वजनीन—वि० सब लोगोंसे सम्बन्ध रखनेवाला।

सार्वभौम—वि० सर्व भूमि सम्बन्धी। पु० समस्त भू-मण्डलका राजा।

साल—पु० घाव, छेद, काँटा, दुःख (उदे० 'असलेड', 'उलहना', 'माई') वर्ष। दुःख देनेवाला (विन १३७), धान। स्त्री० शाला।

सालना—सक्रि० चुभाना, दुखाना। अक्रि० चुभना, कष्ट देना (साखी ९)।

सालसा—पु० खून साफ करनेकी दवा।

साला—पु० स्त्रीका भाई। मैना। स्त्री० शाला।

सालाना, सालियाना—वि० वार्षिक।

सालि—पु० धान (रामा० १७, विन० ५०८)।

साली—स्त्री० स्त्रीकी बहिन। बढ़ई आदिको पारिश्रमिक स्वरूप दी गयी ज़मीन या रक़म।। [†प० १०४

सावँ—वि० श्याम 'रकत लिखे आखर भये सावाँ।'†

सावँकरन—पु० श्यामकर्ण, एक तरहका घोड़ा।

सावंत—पु० कर देनेवाला राजा या सरदार, योद्धा (मति० १९५)।

सावक—दे० 'शावक' (सू० १६१)।

सावकाश—पु० मौक़ा, फ़ुरसत। गुंजाइश

सावचेत—वि० सतर्क, सावधान।

सावज—दे० 'साउज'। 'काल अहेड़ी संझ सकारा। सावज ससा सकल संसारा।' कबीर २३१

सावत—पु० सौतिया डाह, ईर्ष्या (विन० ४३१)।

सावध—वि० सावधान (साखी ६३)।

सावधान—वि० सजग, सतर्क।

सावन—पु० एक महीनेका नाम, श्रावण।

सावर—पु० एक मृग।

सावाँ—पु० एक कदन्न।

साष्टांग—वि० आठ अंगों सहित (सिर, हाथ, पाँव, आँख, जाँघ, हृदय, वचन तथा मनसे)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सास, साशु—स्त्री० पति या पत्नीकी माता।
सासत—स्त्री० साँसत, कष्ट।
सासति—स्त्री० शासन, दंड 'सासति करि पुनि करहिं पसारू।' रामा० ५३
सासना—स्त्री० दे० 'शासन' (उदे० 'दरगह')।
सासरा—पु० ससुराल 'जेठी धीय सासरै पठवौं'—
सासा—स्त्री० श्वास। सन्देह। [कबीर ९६
सासुर—पु० ससुर। ससुराल।
साह—पु० सेठ, सज्जन। शाह, राजा, ('उदे० 'दिवान')।
साहचर्य—पु० साथ, संगति।
साहनी—स्त्री० सेना 'आये निसाचर साहनी साजि।' रघु० ८६। साथी (रघु० १८२)। प्रधान (रामा० १६०)।
साहब—पु० स्वामी, ईश्वर, महाशय।
साहबी—स्त्री० बड़ाई। प्रभुता।
साहस—पु० हिम्मत, बल, बलात्कार।
साहि—पु० शाह, राजा (उदे० 'छेंकना'), भला आदमी।
साहित्य—पु० मिलन। किसी भाषाके गद्य-पद्य ग्रन्थोंका समूह, वाङ्मय।
साहित्यिक—वि० साहित्य सम्बन्धी। पु० साहित्य-प्रेमी, साहित्य-सेवी।
साहिबी—स्त्री० देखो 'साहबी' (उदे० 'फबना') लै त्रिलोक की साहिबी दै धतूरको फूल।' मति० २१५०
साही—स्त्री० काँटेदार शरीरवाला एक जंतु।
साहु, साहुकार—पु० महाजन, भला आदमी।
साहुकारी—स्त्री० लेनदेन, महाजनी, व्यवहार।
साहुल—पु० पत्थर इ० का बना राजगीरोंका एक यंत्र जिससे दीवारकी सीध नापते हैं।
साहैं—स्त्री० भुजाएँ। अ० सम्मुख।
सिंकना—अक्रि० पकना, गरम होना।
सिंगार—पु० शृंगार, सजावट (उदे० 'पौढ़ाना'), शोभा, सजधज।
सिंगारदान—पु० शृंगारकी सामग्री रखनेका पात्र या संदूक।
सिंगारना—सक्रि० शृंगार करना, सँवारना (रवि०१४)।
सिंगारहार—पु० 'हरसिंगार' नामक पेड़ (प० १५)।
सिंगारिया,-री—पु० शृंगार करनेवाला।
सिंगी—स्त्री० रक्त खींचनेकी नली। एक मछली। पु० सींगका बाजा (उदे० 'पूरना', भ्र० २३)।
सिंघ—पु० सिंह (उदे० 'आदी', 'उरेहना')।
सिंघल—पु० सिंहल, लंका।
सिंघाड़ा—पु० एक फल।
सिंघासन—पु० सिंहासन, गद्दी, तख्त (उदे० 'झमकना')।
सिंघी—स्त्री० एक छोटी मछली।
सिंचन—पु० सींचना।
सिंचना—अक्रि० सींचा जाना।
सिंचाई—स्त्री० सींचनेकी क्रिया या मजदूरी।
सिंचाना—सक्रि० पानी छिड़काना, तर कराना।
सिंजित—स्त्री० झंकार, आवाज़, ध्वनि (छत्र २४)।
सिंदन—पु० स्यन्दन, रथ।
सिंदूर—पु० एक लाल बुकनी, सेंदुर (उदे० 'तरकुली')।
सिंदूरिया, सिंदूरी—वि० सिंदूरके रंगका।
सिंदोरा—पु० सिंदूर रखनेकी डिबिया।
सिंधव—पु० सैंधव। सिंध देशका। एक नमक। एक तरहका घोड़ा।
सिंधु—पु० समुद्र, नदी। चारकी संख्या। गजमद।
सिंधुर—पु० हाथी। सिंधुरवदन = गणेश।
सिंधुरागामिनी—वि० स्त्री० गजगामिनी।
सिंधोरा—देखो 'सिंदोरा' (साखी ३२)।
सिंसप, सिंसिपा—पु० सीसोंका वृक्ष।
सिंह—पु० मृगेन्द्र। एक राशिका नाम।
सिंहद्वार—पु० सिंहकी मूर्त्तिवाला द्वार।
सिंहनी, सिंहिनी—स्त्री० सिंहकी मादा।
सिंहपौर—दे० 'सिंहद्वार'।
सिंहावलोकन—पु० सिंहकी तरह सिर उठाकर पीछे देखनेकी क्रिया। संक्षिप्त दिग्दर्शन। पद्यरचना-विशेष।
सिंहासन—पु० सिंहकी आकृतिवाला आसन, गद्दी।
सिंही—स्त्री० सिंहनी, एक बाजा।
सिंहोदरी—वि० स्त्री० जिसकी कमर सिंहकी कमरकी तरह पतली हो।
सिअनि—स्त्री० सिलाई (उदे० 'टाट')।
सिअरा—पु० छाया। वि० सिराया हुआ, शीतल, 'सिअरे बदन सूखि गये कैसे।' रामा० २३२
सिआर—पु० शृगाल।
सिकड़ी—स्त्री० जंजीर। करधनी।
सिकत—स्त्री० बालू 'सूर सिकत हठि नाव चलाओ ये सरिता हैं सूखी।' भ्र० १९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिकता—स्त्री० रेत या रेतीली भूमि। चीनी। एक रोग।
सिकत्तर—पु० 'सेक्रेटरी', मंत्री।
सिकर—स्त्री० जंजीर (विद्या० १४१)।
सिकली—स्त्री० सान धरनेका काम।
सिकलीगर—पु० सान चढानेवाला (रतन० ५३)। चमक उत्पन्न करनेवाला (कबीर २६३)।
सिकहर,-हरा—पु० छींका (सूबे० ६५)।
सिकार—पु० शिकार।
सिकुड़न—स्त्री० शिकन। आकुंचन।
सिकुड़ना, सिकुरना—अक्रि० आकुंचित होना।
सिकोड़ना. सिकोरना—सक्रि० बटोरना, संकुचित करना, शिकन डालना (दास २७)।
सिकोही—वि० अभिमानी, पराक्रमी, वीर।
सिक्कर—पु० सिकड़ी।
सिक्का—पु० मुद्रा, छाप। पदक। आतंक।
सिक्त—वि० सींचा हुआ।
सिखंड—पु० मोरकी पूँछ (सू० २०)।
सिखंडी—पु० मोर। मोरपंख (सू० ७२)।
सिख—स्त्री० शिक्षा, नसीहत। शिखा। पु० शिष्य।
सिखना—सक्रि० सीखना (प० ५)।
सिखर—पु० चोटी (उदे० 'ढहाना'), मुकुट (सू० ७२)। छींका।
सिखरन—स्त्री० दही चीनीसे बनी एक खाद्य वस्तु।
सिखलाना, सिखाना—सक्रि० शिक्षा देना, पढ़ाना।
सिखापन, सिखावन—पु० नसीहत, शिक्षा। (उदे० 'अनुहरत')।
सिखी—पु० शिखी, मुर्गा, मोर (उदे० 'जूमना')।
सिगरा-रो—वि० सारा, सम्पूर्ण, सब (उदे० 'काहीं')।
सिचान—पु० देखो 'सचान'।
सिचाना—दे० 'सिंचाना' (रामा० ४२)।
सिच्छा—स्त्री० शिक्षा, उपदेश, सीख।
सिजदा—पु० दंडवत, मस्तक झुकाना।
सिझना—अक्रि० आँचपर पकना।
सिझाना—सक्रि० पकाना, उबालना, संतप्त करना, तैयार करना।
सिटकिनी—स्त्री० चटखनी।
सिटपिटाना—अक्रि० भय खाना, स्तब्ध होना।
सिड़—स्त्री० पागलपन, झक, धुन।
सिड़ी—वि० सनकी, विक्षिप्त।

सित—वि० सफेद, साफ, उजला। पु० शुक्ल, उजेला पाख, चन्दन।
सितकर, सितभानु—पु० चन्द्रमा।
सितम—पु० जुल्म, अनर्थ।
सितसागर—पु० क्षीरसागर।
सिता—स्त्री० शक्कर, (दास ७७) उजेला पाख, चाँदी, इ०।
सिताब, सिताबी—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्रतासे (उदे० 'कूप', रतन० ४५)। स्त्री० शीघ्रता 'तातैं ढील न होइ, काम यह है सिताब कौ।' सुजा०६९
सितार—पु० एक बाजा।
सितारा—पु० सितार। तारा, भाग्य।
सितारिया—पु० सितार बजानेवाला।
सितारी—स्त्री० छोटा सितार।
सितासित—पु० सफेद और काला। गंगा-जमुना।
सितुई-ही—स्त्री० सीपी।
सिथिल—वि० सुस्त, थका हुआ। ढीला (उदे० 'मरगजा')
सिदरी—स्त्री० ऐसा दालान जिसमें तीन द्वार हों।
सिदिक—वि० सच्चा।
सिदौसी—क्रिवि० शीघ्र 'लैयो काम बनाय कै, दैयो यह सन्देस ॥ सिदौसी लौटियो।' सत्यना०
सिद्ध—पु० तपस्वी, योगी, महात्मा, देवता-विशेष। वि० प्रमाणित, प्राप्त, समाप्त, सम्पादित, पका हुआ। अनुकूल किया हुआ। पहुँचा हुआ।
सिद्धकाम—वि० जिसका मनोरथ पूरा हो गया हो।
सिद्धपीठ—वि० तांत्रिक सिद्धि शीघ्र प्राप्त कराने-वाला स्थान।
सिद्धहस्त—वि० निपुण, कुशल।
सिद्धांत—पु० निश्चित मत, उसूल।
सिद्धाई—स्त्री० सिद्ध होनेकी दशा।
सिद्धि—स्त्री० सफलता, पूर्णता, निश्चय, युक्ति, योगसे प्राप्त शक्ति।
सिधाई—स्त्री० सरलता।
सिधाना—अक्रि० सिधारना, चला जाना (उदे० 'कुंदुम', 'जोहार')। पधारना, आना 'तब कर जोरि कह्यो कोशलपति हे प्रभु भले सिधायो।' रघु० १९
सिधारना—अक्रि० चला जाना, जाना (उदे० 'तायँ' 'निठौर'), स्वर्गवासी होना। सक्रि० सुधारना।
सिधि—स्त्री० देखो 'सिद्धि'।
सिनक—पु० नाकका मैल, रेंट।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिन्नी—स्त्री० मिठाई। खुशीमें या देवताके प्रसादमें [बाँटी गयी मिठाई।

सिपर—स्त्री० ढाल।

सिपहसालार—पु० सेनापति।

सिपाई—पु० सिपाही, सैनिक।

सिपाह—स्त्री० सेना।

सिपाही—पु० सैनिक। चपरासी।

सिपुर्द करना—सक्रि० सौंपना, हवाले करना।—होना अक्रि० हवाले होना, सौंपा जाना।

सिप्पर—स्त्री० ढाल (सुजा० १०, १०१)।

सिप्पा—पु० युक्ति, लक्ष्याघात, रोब।

सिफत—स्त्री० गुण, स्वभाव।

सिफात—स्त्री० गुण ? 'पाकजातकी रसिक निध जगत सिफात दिखाइ।' रतन० १०

सिफारिश—स्त्री० नौकरी आदि दिलानेकी दृष्टिसे की गयी तारीफ; समर्थन।

सिबिका—स्त्री० पालकी।

सिमटना—अक्रि० बटुरना, एकत्र होना, सिकुड़ना, [लज्जित होना।

सिमंत—पु० सीमंत, माँग।

सिमर—पु० सेमर 'चन्दन भरम सिमर आलिंगन सालि रहल हिय काँट।' विद्या० १८८

सिमरन—पु० स्मरण, याद (कबीर २९०)।

सिमरना—सक्रि० स्मरण करना।

सिमाना—सक्रि० सिलाई कराना। पु० सीमान्त, सिवाना।

सिमिटना—दे० 'सिमटना' (रामा० १५७)।

सिमृति—स्त्री० स्मृति।

सिमेटना—सक्रि० बटोरना।

सिय—स्त्री० सीता।

सियना—सक्रि० सीना। सृजना, रचना।

सियरा—वि० ठंढा। **सियराई** = ठंढक।

सियराना—अक्रि० ठंढा होना (वि० ७४, १४७)।

सिया—स्त्री० सीता, जानकी।

सियार, सियाल—पु० शृगाल।

सियासत—स्त्री० शासन-व्यवस्था।

सिर—पु० माथा, चोटी। **—उठाना** = विद्रोह करना। गर्व या प्रतिष्ठाके साथ खड़ा होना। **—उतारना** = सिर काटना। **—करना** = चोटी गुहना। **—खाना** = व्यर्थकी बातोंसे तंग करना। **—चढ़ाना** = मुँह लगाना, सम्मान प्रकट करना। **—धुनना** = पछताना। **—पर पड़ना** = गुजरना, अपनेपर बीतना। **—पर जूँ न रेंगना** = ख्याल न होना। **—मारना** = बहुत श्रम करना; व्यर्थ हैरान होना। **—से पैरतक** = पूर्णतः, शुरूसे अखीर तक।

सिरका—पु० धूपमें रखकर खट्टा किया हुआ गन्ने आदिका रस।

सिरकी—स्त्री० सरकंडा, सरकंडेकी बनी टट्टी 'विदित न सनमुख ह्वै सकैं अखियाँ बड़ी कजोर। बदनी सिरकिन ओट ह्वै हेरत मोहन ओर।' रतन० ३१

सिरखपी—स्त्री० मेहनत, हैरानी, जोखिम।

सिरगा—पु० एक तरहका घोड़ा।

सिरजक, सिरजनहार—पु० सृष्टिरचनेवाला, परमात्मा।

सिरजना—सक्रि० उत्पन्न करना, बनाना।

सिरजित—वि० सिरजा हुआ, रचित, बनाया हुआ।

सिरताज—पु० मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति।

सिरदार—पु० सरदार (उदे० 'गोल')।

सिरनामा—पु० पत्रके ऊपरका पता। शीर्षक।

सिरनेत—पु० कलगी, निशान, पगड़ी 'रे नेही मत डगमगै बाँध प्रीति सिरनेत।' रतन० ७७ (११३)।

सिरपाँव, सिरपाव—दे० 'सिरोपाव' (उदे० 'खवास')।

सिरपेंच—पु० पगड़ी; एक आभूषण जो पगड़ीपर बाँधा [जाता है।

सिरफूल—पु० एक शिरोभूषण।

सिरमनि, सिरमौर—पु० सिरका मुकुट श्रेष्ठ व्यक्ति।

सिररुह—पु० बाल, केश।

सिरस, सिरिस—पु० एक वृक्ष। इसका फूल बहुत मुलायम होता है (उदे० 'कन') 'सिरिस कुसुम सम बालके कुम्हिलाने सब गात।' मति० २१९

सिरहाना—पु० चारपाईका सिरा। [❀ रक्तनलिका।

सिरा—पु० शुरूका या अन्तका भाग, छोर। स्त्री० ❀

सिराना, सिरावना—सक्रि० ठंढा करना (उदे० 'अवटना' 'झला' 'दवा')। पानीमें डुबाना, 'तुलसी भाँवरके परत नदी सिरावत मौर।' तु०। बिताना। अक्रि० ठंढा या उत्साहहीन होना (विन० ३०६, भ० ७३) बीतना, खतम होना, दूर होना 'सब सुख सुकृति सिरान हमारा।' रामा० २३२, (मू० १६, ७७) 'चरचहिं सिगरी रैनि सिरानी।' प्रागनि। 'इतनी बयसि सिरानि हमारी।' रघु० ९९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिरी—स्त्री० लक्ष्मी, ऐश्वर्य, शोभा, रोली।
सिरोपाउ, सिरोपाव—पु० सिरसे पाँव तककी पोशाक [(सुजा० ५९)
सिरोमनि—दे० 'शिरोमणि'।
सिरोरुह—दे० 'शिरोरुह' (उदे० 'तनोरुह')।
सिरोही—स्त्री० तलवार। एक पक्षी।
सिर्फ—क्रिवि० केवल।
सिल—स्त्री० शिला, मसाला आदि पीसनेका पत्थर।
सिलक—स्त्री० कतार, पंक्ति, लड़ी। पु० धागा।
सिलकी—पु० बेल।
सिलखड़ी,-खरी—स्त्री० एक चिकना पत्थर खरिया-मिट्टी।
सिलगना—अक्रि० सुलगना, प्रज्वलित होना (उदे० 'ओदा', रतन० ९४)।
सिलप—पु० शिल्प, कारीगरी।
सिलपट—वि० चौरस, बराबर। चौपट। पु० चट्टी।
सिलपोहनी—स्त्री० विवाहके समयकी एक रस्म।
सिलवट—स्त्री० सिकुड़न। शिकन। शिलापट, सिल।
सिलसिला—पु० शृंखला, क्रम। वि० आर्द्र, चिकना (वि० २८०)। सिलसिलेवार = तरतीववार।
सिलह—पु० देखो 'सिलाह' (सुजा० १३४)।
सिलहिला—वि० चिकना, पंक-पिच्छल, फिसलानेवाला (साखी ५९)।
सिला—स्त्री० शिला, पत्थर (उदे० 'फटिक')। फसल कट जानेपर खेतमें गिरा हुआ दाना।
सिलाई—स्त्री० सीनेकी क्रिया या मजदूरी।
सिलाना—सक्रि० सीनेका काम कराना। सिराना, ठंडा करना।
सिलावट—पु० संगतराश।
सिलाह—पु० हथियार। कवच (साखी २८)।
सिलाही—पु० सैनिक।
सिलिप—पु० देखो 'सिलप'।
सिलीमुख—पु० भ्रमर। बाण।
सिलौट, सिलौटा—पु० सिलबट्टा। सिल।
सिल्ला—पु० खेत या खलियानमें गिरा अनाजका दाना।
सिल्ली—स्त्री० धार तेज करनेका पत्थर।
सिव—पु० शिव, महादेव। कल्याण।
सिवई—स्त्री० आटे या मैदेकी एक खाद्यवस्तु जो लच्छोंके रूपमें होती है।
सिवता—स्त्री० शिवत्व (विन० ३१६)।
सिवा—क्रिवि० छोड़कर, अतिरिक्त। वि० अधिक। स्त्री० शृगाली (सुजा० ४९)। पार्वती, दुर्गा।
सिवान—पु० सीमान्त, सरहद।
सिवाय—क्रिवि० देखो 'सिवा'।
सिवार, सिवाल—स्त्री० शैवाल, पानीमें फैलनेवाली लता।
सिवाला—पु० शिवमन्दिर।
सिविका—स्त्री० पालकी (उदे० 'उहार', रामा० ५२१)।
सिविर—पु० शिविर, तम्बू, डेरा।
सिष, सिष्य—पु० शिष्य, चेला।
सिष्ट—वि० शिष्ट, भद्र। स्त्री० बंसीकी डोरी।
सिस—पु० शिशु, बच्चा 'बदन चंदके लखन कौ सिस ज्यों बिरझत नैन।' रतन० ४८
सिसकना—अक्रि० भीतर ही भीतर धीरे धीरे रोना, सिसकी भरना, व्याकुल होना।
सिसकारना—अक्रि० सीटीकी तरह आवाज़ करना, 'सी सी' शब्द करना, शीत्कार करना।
सिसकी—स्त्री० सिसकनेका शब्द। सिसकारी।
सिसिर—स्त्री० शिशिर ऋतु।
सिसु—पु० शिशु, बालक।
सिसुता—स्त्री० शैशवावस्था।
सिस्न—पु० देखो 'शिश्न'।
सिस्य—पु० शिष्य, चेला।
सिहरना—अक्रि० काँपना, भयाक्रांत होना।
सिहरी—स्त्री० कँपकँपी, रोमांच होना।
सिहाना—अक्रि० ललचना, ईर्ष्या करना, देखकर प्रसन्न होना, 'सुहृद नैन नैना बड़े देखत हियौ सिहाई।' रतन० १२। सक्रि० ईर्ष्या या अभिलाषासे देखना 'देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं।' रामा० १७० 'जेपुर गाँव बसहिं मग माहीं। तिन्हहिं नाग सुर नगर सिहाहीं।' रामा० २५३
सिहारना—सक्रि० ढूँढना, ढूँढकर लाना।
सिहिटि—स्त्री० सृष्टि 'औ तेहि प्रीति सिहिटि उपराजी।' प० ५ (६, ८, ४१ भी)।
सिहुंड, सिहाड़, सिहोर—पु० सेंहुड़, थूहर।
सींक—स्त्री० पतला डंठल, सलाई, तीली (रामा० ३५८)। नाककी कौंग (उदे० 'उनारना')।
सींका—पु० सिकहर (सुबे० ६५)। छोटी पतली शाखा।
सींग—पु० विषाण। एक बाजा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सागरी—स्त्री० एक फली।
सींगी—दे० 'सिंगी' (सूवे० ३७५)।
सींचना—सक्रि० पानी देना, छिड़कना, तर करना
सींव—स्त्री० सीमा। [(उदे० 'जई')।
सो—वि० स्त्री० सदृश, समान। स्त्री० शीत्कार।
सोउ—स्त्री० शीन।
सोकचा, सोखचा—पु० जलाका, छड़।
सोकर—स्त्री० सिकड़ी। पु० जलकण (उदे० 'तमयी'),
सोकस—पु० अनुपजाऊ भूमि। [प्रस्वेदबिन्दु।
सोख—स्त्री० शिक्षा, नसीहत।
सोखना—सक्रि० ज्ञान प्राप्त करना, अभ्यास करना।
सोजना, सोझना—अक्रि० पकना (उदे० 'कसी'),
पागा जाना 'आनँद भीजी सनेहमें सीझी चितै कछु पाछे उसासन लेती।' रघु १००, कष्ट सहना, ठंढसे गलना 'रहिमन नीर पखान, भीजै पै सीजै नहीं।' रहीम २९
सोटी—स्त्री० एक तरहका शब्द। एक बाजा।
सोठा—वि० सारहीन, फीका, नीरस (विन० ३९९)।
सोठी—स्त्री० सारहीन अंश। फीकी वस्तु।
सोड़—स्त्री० आर्द्रता, नमी।
सोढ़ी—स्त्री० निसेनी, जीना, परम्परा।
सीत—स्त्री० शीत, ठंढ, जाड़ा।
सीतकर—पु० चन्द्रमा (वि० ९५)।
सीतल—वि० ठंढा (उदे० 'जवास')।
सीतलपाटी—स्त्री० एक तरहकी चटाई।
सीता—स्त्री० हलकी जुताईका गड्ढा। जानकी। सीर, राजाकी अपनी भूमि। जिराअत। मदिरा।
सीताफल—पु० शरीफा।
सीत्कार—पु० अत्यन्त हर्ष या दुःखके समयका 'सी सी' शब्द, सिसकारी।
सीदना—अक्रि० कष्ट उठाना, दुःख पाना।
सीध—स्त्री० सामनेकी लम्बाई। लक्ष्य।
सीधा—पु० विना पका चावल, दाल इ०। वि० सरल, नेक, शुद्ध, शास्त्र, दाहिना।
सीधे—क्रिवि० शान्ति या शिष्टताके साथ। ठीक सामने।
सीना—सक्रि० टाँकना, सिलाई करना। पु० छाती।
सीप—पु० एक जलजन्तु या उसका सम्पुट, शुक्ति, घोंघा।
सीपज—पु० मोती (सू० ५१, १३५)।
सीपर—पु० ढाल।
सीपसुत, सीपिज—पु० मोती (सू० ५१)।
सीपी—स्त्री० देखो 'सीप' (उदे० 'कपपचिया')।
सीबी—स्त्री० 'सीसी' शब्द, शीत्कार (वि० २५०)।
सीमंत—पु० एक संस्कार (मति० १०२), बालोंकी माँग।
सीम, सीमा—स्त्री० सरहद (विद्या १०८), मर्यादा,
सीमांत—पु० सीमाका अन्त, सिवाना। [माँग।
सीय—स्त्री० सीता, वैदेही।
सीयरा—दे० "सियरा" (अ० ८७)।
सीर—स्त्री० वह भूमि जो भूमिपति ही जोतता हो। पु० हल। सूर्य। रक्त-नलिका। वि० सीरा, शीतल (उदे० 'शकोल', 'पटीर')।
सीरक—पु० सूर्य, हल। ठंढक (अ० ९६)।
सीरख, सीरप—पु० देखो 'शीर्ष'।
सीरनी—स्त्री० मिठाई।
सीरा—वि० शीतल (रघु० ९९) ठंढा, शान्त। पु०
सील—पु० शील। स्त्री० तरी, खीढ़। [चाशनी।
सीला—वि० तर। पु० खेतमें गिरे हुए दाने।
सीव—स्त्री० सीमा (उदे० 'चरना')।
सीवन—पु० सिलाई, दरार।
सीस—पु० मस्तक (उदे० 'मुदहर'), सीसा।
सीसताज—पु० शिकारी पशुओंकी टोपी।
सीसतान—पु० शिरस्त्राण।
सीसफूल—पु० सिरपर पहननेका एक आभूषण।
सीसा—पु० एक धातु।
सीसी—स्त्री० शीशी। शीत्कार।
सीह—पु० सिंह 'जिहि बन सीह न संचरै पंषि उड़े नहीं जाइ।' कबीर १८
सोहगोस—पु० एक जन्तु।
सुँघनी—स्त्री० नास।
सुँघाना—सक्रि० सूँघनेमें प्रवृत्त करना।
सुंड, सुंडा—स्त्री० हाथीकी सूँड़।
सुंड भुसुंड, सुंडाल—पु० हाथी 'सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ।'—सुजा० ४२
सुंदर—वि० रूपवान्, सुडौल, मनोहर।
सुंदरता, -ताई—स्त्री० सौन्दर्य, शोभा, छवि।
सुंदराई—स्त्री० सुन्दरता '...विश्व मन हारे धारे विश्व सुंदराई री'—रघु० १०१; 'सहज सुन्दराई पर राई लोन वारती।' दास० १५२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुंदरी—स्त्री० रूपवती स्त्री।
सुँधावट—स्त्री० सोंधापन।
सु—वि० अच्छा। सर्व० वह, सो। उपसर्ग श्रेष्ठता इ० का द्योतक एक उपसर्ग।
सुअ. सुअन—पु० पुत्र (दास १७५)।
सुअटा—पु० सुआ, तोता।
सुअना—पु० तोता। अक्रि० उदय होना।
सुअर—पु० सूअर।
सुआ—पु० तोता, सुग्गा (उदे० 'ओपनिवारी' 'बिस-[रामी')।
सुआन—पु० श्वान, कुत्ता।
सुआमी—पु० स्वामी, प्रभु, पति।
सुआर—पु० सूपकार, रसोइया (उदे० 'बसह') 'लागे परसन निपुन सुआरा।' रामा० ६० (रघु० ३९)।
सुआसिन,-नी—स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री 'सुभग सुआसिन गावहिं गीता।' रामा० १६८। पड़ोसिन।
सुई—स्त्री० कपड़ा सीनेकी पिन, सूची, 'सूजी'।
सुकंठ—पु० सुग्रीव। वि० अच्छे कंठवाला।
सुक—पु० शुक. तोता (उदे० 'ज्याना')।
सुकड़ना—अक्रि० संकुचित होना, सिमटना।
सुकनासा—वि० सुन्दर नाकवाला।
सुकर—वि० आसान। सरल।
सुकरता—स्त्री० सुसाध्यता। मनोहरता।
सुकराना—पु० शुक्रिया, एहसान। वह रुपया जो मुक़दमा जीतनेपर धन्यवाद स्वरूप दिया जाय।
सुकरित—वि० सुकृत, अच्छा।
सुकवाना—अक्रि० अचम्भित होना, चकित होना।
सुकाना, सुकावना—सक्रि० सुखाना, नमी दूर करना।
सुकाल—पु० अच्छा समय, वह समय जब अन्नादि [सस्ता हो।
सुकावना—सक्रि० देखो 'सुखाना'।
सुकिज—पु० सुकार्य, अच्छा काम।
सुकिया—स्त्री० स्वकीया नायिका।
सुकी—स्त्री० सुग्गी. सारिका।
सुकीउ—स्त्री० देखो 'सुकिया'।
सुकुआर—वि० सुकुमार, कोमलांग।
सुकुति—स्त्री० शुक्ति, सीप।
सुकुमार—वि० कोमलांग।
सुकुमारी—वि० स्त्री० कोमलांगी। स्त्री० चमेली। [कन्या।
सुकुरना—अक्रि० सिकुड़ना, सिमटना।
सुकुवाँर,-वार—वि० सुकुमार।
सुकृत—वि० पुण्यात्मा, भाग्यवान्। पु० शुभ कर्म।
सुकृती—वि० देखो 'सुकृत'।
सुकेशी—स्त्री० सुन्दर बालोंवाली स्त्री। एक अप्सरा।
सुक्ख—दे० 'सुख'।
सुक्ति—स्त्री० सीप।
सुक, सुक्क, सुक्खम—दे० 'शुक', 'शुक्ल' 'सूक्ष्म'।
सुखंडी—स्त्री० बालकोंका एक रोग।
सुखंद—वि० सुखद. आनन्दप्रद।
सुख—सु० आनन्द, आराम, शान्ति। क्रिवि० सुखपूर्वक, सहज ही (उदे० 'अवगाहना')।
सुखआसन—पु० पालकी।
सुखकंद, सुखकंदन—वि० सुखमूल, सुखप्रद।
सुखकंदर—वि० सुखका स्थान।
सुखक—वि० शुष्क, सूखा हुआ।
सुखकर,-करन,-कारी—वि० सुख देनेवाला।
सुखद,-दनिया,-दाई—वि० सुख देनेवाला।
सुखदात,-दान,-दानी—वि० सुख देनेवाला।
सुखदायक,-दाया,-दायी,-दाव,-दैन—वि० सुखद।
सुखना—अक्रि० सूखना।
सुखपाल—पु० डोली, पालकी (दीन१४५) 'दग सुखपाल लिये खड़े हाजिर लगन कहार।' रतन० ६७
सुखपूर्वक—क्रिवि० आनंद-पूर्वक, आरामके साथ।
सुखमन—स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी।
सुखमा—स्त्री० सुषमा. शोभा, छटा।
सुखरास,-रासी—वि० सुखपूर्ण।
सुखवंत—वि० सुखी, सुखप्रद।
सुखवन—पु० लिखावट सुखानेकी रेती। सूखनेको डाली गयी फसल।
सुखवना—सक्रि० सुखाना (सू० ७५)।
सुखवाद—पु० सुखको ही जीवनका प्रधान लक्ष्य माननेका सिद्धान्त।
सुखाना—सक्रि० धूपमें रखकर नमी दूर करना, शुष्क बनाना। अक्रि० सूख जाना (उदे० 'झलना', प० ६)।
सुखारा,-री—वि० सुखी, प्रसन्न। 'सुफलमनोरथ होंहि तुम्हारे। राम लषन सुनि भये सुखारे।' रामा० १३०, (उदे० 'उहार')। सुखद।
सुखावह—वि० सुख देनेवाला, सुखद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुखासन—पु० आराम देनेवाला आसन, पालकी 'कहेउ सजावन पालकी सजन सुखासन जान।' रामा० २८८
सुखिआ—वि० सुखी, आनन्दित। [(१६१)
सुखित—वि० सुखी, प्रसन्न। सूखा हुआ।
सुखिया—वि० देखो 'सुखिआ'।
सुखिर—पु० साँपकी बाँबी।
सुखी—वि० जो सुखमें हो, प्रसन्न।
सुखेन—क्रिवि० सुखपूर्वक (उदे० 'बिहान')।
सुखैना—वि० सुखप्रद।
सुगंध, सुगंधि—स्त्री० खुशबू, सौरभ। वि० सुगंधित।
सुगना—पु० तोता (रहीम ३५)।
सुगम—वि० आसान, सहज, सीधा (सू० ६८)। जिसमें प्रवेश करना या जाना आसान हो।
सुगल—पु० सुग्रीव, सुकंठ (रघु० २२७)।
सुगाध—वि० आसानीसे पार करने या सुखपूर्वक स्नान करने योग्य (नदी)।
सुगाना—अक्रि० अप्रसन्न होना, क्रोध करना। शंका [करना।
सुगैया—स्त्री० चोली।
सुग्गा—पु० तोता।
सुघट—वि० सुडौल।
सुघटित—वि० सुन्दर बना हुआ।
सुघड़, सुघर—वि० चतुर, होशियार (उदे० 'कढ़ना')। सुन्दर, सुडौल (उदे० 'तमोर')।
सुघड़ई, सुघड़ता, सुघड़ाई, सुघरई, सुघराई—स्त्री० चतुरता, सुन्दरता।
सुघड़पन, सुघड़ापा, सुघरपन—पु० देखो 'सुघड़ई'।
सुघरी—वि० स्त्री० सुघड़, सुन्दर। स्त्री० शुभ घड़ी।
सुच—वि० शुचि, पवित्र, निर्मल।
सुचना—सक्रि० संचना, संचय करना, जोड़ना 'कहि रहीम पर काज हित संपति सुचहिं सुजान।' रहीम २
सुचरित,-त्र—वि० अच्छे आचरणवाला, सुशील।
सुचाना—सक्रि० ध्यान आकृष्ट करना, सोचनेमें प्रवृत्त [करना।
सुचार—वि० 'सुचारु'। स्त्री० सुचाल।
सुचारु—वि० अति सुन्दर।
सुचि—वि० पवित्र, निर्मल। स्त्री० सुई।
सुचित—वि० शान्त, स्थिर, निश्चिन्त।
सुचितई—स्त्री० स्थिरता, निश्चिन्तता (दास ४४), [शान्ति, फुर्सत।
सुचिती, सुचित्त—दे० 'सुचित'।
सुचिमंत—वि० पवित्र।
सुचिर—वि० पुराना पु० अत्यधिक समय।
सुची—स्त्री० शची, इन्द्र-पत्नी।
सुचेत, सुचेता—वि० सचेत, सावधान।
सुच्छंद—वि० स्वच्छन्द, स्वतंत्र।
सुच्छ—वि० स्वच्छ, साफ।
सुच्छम—वि० सूक्ष्म।
सुजन—पु० भला आदमी। स्वजन, नातेदार।
सुजनता—स्त्री० सौजन्य, भलमनसाहत।
सुजनी—स्त्री० एक तरहकी बड़ी चादर।
सुजन्मा—वि० उत्तम कुलमें उत्पन्न।
सुजस—पु० सुयश, सत्कीर्त्ति।
सुजागर—वि० मनोहर, सुशोभित।
सुजातिया—वि० अच्छे कुलका। स्वजातीय, स्वकुलका।
सुजान—वि० बुद्धिमान्, प्रवीण (उदे० 'जितवना')। पु० प्रियतम, पति। प्रभु, ईश्वर।
सुजानी—वि० सुजान, ज्ञानवान्।
सुजोग—पु० सुयोग, अच्छा मौक़ा।
सुझाना—सक्रि० किसीके ध्यानमें लाना, बताना।
सुजोर—वि० सुदृढ़।
सुटुकना—अक्रि० निगलना, सिकुड़ना, निकल भागना।
सुठ, सुठि—वि० सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर 'सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमार।' रामा० २३८ क्रिवि० बिलकुल, अत्यन्त 'कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके।' [रामा० १७
सुठार—वि० सुढार, सुन्दर।
सुठोना—वि० अच्छा, सुन्दर।
सुड़सुड़ाना—सक्रि० हुक्के इ० से 'सुड़ सुड़' शब्द उत्पन्न करना।
सुडुकना—दे० 'सुटुकना'।
सुडौल—वि० अच्छी आकृतिवाला, जिसका आकार या रचना अच्छी हो, सुन्दर।
सुढंग—पु० अच्छा ढंग। वि० अच्छे स्वभावका। सुडौल।
सुढर—वि० सुडौल। अनुकूल, प्रसन्न।
सुढार—वि० सुडौल, सुन्दर 'तेहि पीछे निचिलेत गृह, कन्या भई सुढार।' राम रसायन (उदे० 'उरमना')।
सुतंत, सुतंत्तर, सुतंत्र—वि० स्वतंत्र, स्वाधीन।
सुत—पु० पुत्र, लड़का।
सुतधार—पु० सूत्रधार, नियन्ता (कबीर २४०)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुतना—अक्रि० सूतना, सोना। पु० सुथना।
सुतर—पु० शुतुर।
सुतरनाल—स्त्री० एक तोप, (छत्र १११)।
सुतराँ—अ० इसलिए। लाचार, अपितु।
सुतरी—स्त्री० डोरी, रस्सी। तुरही। पु० एक तरहका [बैल।
सुतल—पु० एक लोक।
सुतली—स्त्री० रस्सी।
सुतहर, सुतहार—पु० कारीगर, बढ़ई।
सुता—स्त्री० पुत्री, कन्या।
सुतार—वि० अच्छा। पु० शिल्पी, बढ़ई।
सुतारी,-ली—पु० कारीगर। स्त्री० मोचियोंका सूआ।
सुतिन—स्त्री० सुंदर शरीरवाली स्त्री।
सुतिया—स्त्री० हँसली।
सुतिहार—दे० 'सुतार'।
सुती—पु० पुत्रवाला।
सुतुरनाल—दे० सुतरनाल (उदे० 'धरनाल')।
सुतुही—स्त्री० सीपी।
सुत्ता—वि० सोया हुआ (उदे० 'सुलना')।
सुथना—पु० पायजामा।
सुथरा—वि० साफ, स्वच्छ।
सुदती—स्त्री० अच्छे दाँतोंवाली स्त्री।
सुदरसन, सुदर्शन—पु० विष्णुका चक्र। वि० सुन्दर।
सुदिन—पु० अच्छा दिन, शुभ समय।
सुदी—स्त्री० उजाला पाख।
सुदूर—वि० बहुत दूर।
सुदृढ़—वि० खूब मजबूत।
सुदेश, सुदेस—वि० अच्छा, सुन्दर। पु० अच्छा देश या स्थान। स्वदेश (मति० १९०)।
सुद्धि—स्त्री० शुद्धि। सुध, ख्याल, होश।
सुधंग—पु० बढ़िया ढंग।
सुध—वि० शुद्ध। स्त्री० सुधि, स्मरण, होश।
सुधबुध—स्त्री० चेत, होश हवास।
सुधमना—वि० जो होशमें हो।
सुधरना—अक्रि० ठीक हो जाना, बन जाना, संशोधन होना, संभलना।
सुधराई—स्त्री० सुधरने या सुधारनेकी क्रिया. सुधारनेकी मजदूरी।
सुधवाना—सक्रि० ठीक कराना। निश्चित कराना।
सुधांशु—पु० चन्द्रमा।
सुधा—स्त्री० अमृत। जल। चूना (राम० ९६), मधु, दूध. रस, विष, पृथ्वी इ०।
सुधाई—स्त्री० सीधापन (रामा० १५२)।
सुधाकर,-धर,-धाम,-निधि—पु० चन्द्रमा।
सुधाना—सक्रि० ठीक कराना, निश्चित कराना स्मरण दिलाना। पूछना (विद्या ११४)।
सुधामयूख,-योनि—पु० चन्द्रमा।
सुधारना—सक्रि० ठीक करना, अच्छा करना, बना देना।
सुधि—स्त्री० चेत, स्मरण, होश (उदे० 'ठगोरी')।
सुधी—स्त्री० अच्छी बुद्धिवाला (उदे० 'जपी'), बुद्धिमान्।
सुनगुन—स्त्री० टोह।
सुनति, सुन्नत—स्त्री० खतना 'सिवाजी न होतो तो सुनति होति सबकी।' भू० १५९
सुनना—सक्रि० श्रवण करना, कान देना।
सुनयन—वि० सुन्दर नेत्रवाला। पु० हरिन।
सुनवाई, सुनाई—स्त्री० किसी प्रार्थना इ० का सुना-
सुनवैया—वि० सुननेवाला। सुनानेवाला। [जाना।
सुनसान—पु० सन्नाटा। वि० शून्य, निर्जन, एकान्त।
सुनहरा, सुनहला—वि० सोनेका, सोनेके रंगका।
सुनहा—पु० कुत्ता 'अचिरज एक देखहु संसारा, सुनहा खेदै कुंजर असवारा।' कबीर १३४
सुनाना—सक्रि० किसीको सुननेमें प्रवृत्त करना। भला बुरा कहना।
सुनाभ—पु० सुदर्शन चक्र (विन ४९०, ५४६)।
सुनार—पु० सोने आदिका जेवर बनानेवाला।
सुनारी—स्त्री० सुनारका काम। सुनारिन।
सुनासीर—पु० इन्द्र।
सुनैया—वि० सुननेवाला।
सुनोची—पु० घोड़ेका एक भेद।
सुन्न—वि० संज्ञाहीन, निश्चेष्ट। पु० शून्य।
सुन्ना—पु० शून्य।
सुपच—पु० श्वपच, डोम।
सुपत—वि० प्रतिष्ठित।
सुपत्थ, सुपथ—पु० सुमार्ग। वि० समथल।
सुपना, सुपन—पु० स्वप्न।
सुपनाना—सक्रि० स्वप्न दिखाना।
सुपारी—स्त्री० पूँगीफल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुपास—पु० सुभीता, आराम (रामा० ३७०, ३०४)।
सुपासी—वि० सुखप्रद। सुखी 'तुलसी बसि हर पुरी राम जपु, जो भयो चहै 'सुपासी।' विन० ९७
सुपुत्र, सुपूत—पु० अच्छा पुत्र।
सुपुर्द—दे० 'सपुर्द'।
सुपेत, सुपेद, सुफेद—वि० श्वेत, सफेद।
सुपेती—स्त्री० सफेदी।
सुप्त—वि० सोया हुआ।
सुफल—वि० सफल, सिद्ध।
सुबरन—दे० 'सुवर्ण' (उदे० 'पश्यतोहर', विन० ५८३)
सुबस—अ० स्वेच्छासे, के कारण (उदे० 'टोल')। वि० भलीभाँति बसा हुआ (उदे० 'निटोल')।
सुबह—स्त्री० सवेरा।
सुबास—स्त्री० सुगंध। पु० अच्छा कपड़ा, अच्छा घर।
सुबासना—सक्रि० सुगंधित करना।
सुबासिक, सुबासित—वि० सुगंधित।
सुबीता—पुं० सुभीता।
सुबुक—वि० सुन्दर। हलका। पु० दौड़ाक घोड़ा।
सुबू—पु० सबेरा।
सुबूत—दे० 'सबूत'।
सुबोध—वि० अच्छी समझवाला। पु० अच्छी समझ।
सुभ—वि० मंगलकारी, सुंदर। पु० मंगल।
सुभग—वि० सुन्दर (उदे० 'डासना'), प्रिय (सू०८९)।
सुभगा—स्त्री० सुन्दरी, सुहागिन स्त्री, पतिकी प्यारी स्त्री।
सुभट—पु० अच्छा योद्धा।
सुभटवंत—वि० वीर, बहादुर।
सुभट्ट—पु० बड़ा भारी पंडित। बड़ा योद्धा (उदे० 'ठट्ट')।
सुभर—वि० शुभ्र, सफेद, उज्वल 'मान सरोवर सुभर जल हंसा केलि कराहिं।' कबीर १५
सुभाइ, सुभाउ—पु० स्वभाव (उदे० 'जानि', 'बर')। [क्रिवि० स्वभावतः।
सुभागी—वि० भाग्यवान्।
सुभाना—अक्रि० शोभा पाना।
सुभाय, सुभाव—पु० स्वभाव (उदे० 'प्रसंसना')।
सुभायक—वि० स्वाभाविक।
सुभाषित—वि० अच्छा तरह कहा हुआ। पु० अच्छे ढंगसे कही हुई बात।
सुभित्त—पु० सुकाल।
सुभी—वि० स्त्री० शुभ, कल्याणकारिणी।
सुभीता—पु० आराम, अवकाश।
सुभौटी—स्त्री० शोभा।
सुभ्र—पु०, शुभ्र, उज्वल।
सुभ्रु—वि० सुन्दरभौंहोंवाला। स्त्री० स्त्री।
सुमंगली—स्त्री० विवाह सम्बन्धी एक नेग।
सुम—पु० खुर। पु० सुमन 'गुरु समीप सुम दोन दोउ, धरि पद कियो प्रनाम।' रघु० १०५ (१६ भी)
सुमन, सुमनस—पु० फूल, देवता। वि० उत्तम मनवाला।
सुमना—स्त्री० चमेली, मालती (मति० २३०)।
सुमरना, सुमिरना—सक्रि० स्मरण करना (उदे० 'दिच्छित' 'बपुरा'), जपना।
सुमरनी, सुमिरनी—स्त्री० नाम जपनेकी माला।
सुमिरन—पु० स्मरण (उदे० 'भिरंग')।
सुमुख—वि० प्रसन्न, अनुकूल, सुन्दर।
सुमुखी—स्त्री० सुन्दर मुखवाली स्त्री।
सुमृति—दे० 'स्मृति'।
सुमेध—वि० मेधावी, प्रतिभावान्।
सुमेर, सुमेरु—पु० एक पर्वत।
सुयं—दे० 'स्वयम्' (कबीर १३०)।
सुरंग—स्त्री० जमीनके भीतरका मार्ग। पु० अच्छा रंग, 'इंगुर, घोड़ेका एक भेद। वि० अच्छे रंगवाला, लाल (उदे० 'ताम' 'बकौरी'), सुन्दर, स्वच्छ।
सुर—पु० देवता, विबुध। ध्वनि, राग।
सुरकंत, सुरकेतु—पु० इन्द्र।
सुरकना—सक्रि० नाकसे खींच कर पीना।
सुरक्षित—वि० अच्छी तरह रक्षित।
सुरख—वि० सुर्ख, लाल।
सुरखाब—पु० चकवा पक्षी।
सुरखी—स्त्री० ललाई। ईंटका चूरा।
सुरग—पु० स्वर्ग।
सुरगुरु—पु० बृहस्पति।
सुरचाप—पु० इन्द्रधनुष।
सुरजन—वि० चतुर, भला।
सुरझना—अक्रि० गुत्थी इ० का खुलना, हल होना। (उदे० 'ऊआबाई')।
सुरझाना, सुरझावना—सक्रि० खोलना, हल करना (उदे० 'चटिया')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुरत—स्त्री० स्मरण, सुधि, ध्यान। रति, केलि (उदे० 'एटोरी')। चित्तवृत्ति-प्रवाह (सन्तमत)।
सुरता—पु० ध्यानी, समाधि लगानेवाला। श्रोता ? 'कथता बकता सुरता सोई, आप विचारै सो ग्यानी होई।' [कबीर १०२
सुरतान—पु० सुलतान।
सुरति—स्त्री० याद, ख्याल (उदे० 'चोवा')। ध्यान, चित्तवृत्ति-प्रवाह, रति, 'संभोग'।
सुरती—स्त्री० खानेकी तम्बाकू।
सुरद्रोषी—पु० सुरद्वेषी, देवशत्रु (उदे० 'पोषणा')।
सुरधाम—पु० स्वर्ग।
सुरनाह, सुरप, सुरपाल—पु० इन्द्र।
सुरभान—पु० इन्द्र। सूर्य।
सुरभि—स्त्री० गाय (उदे० 'बछेरू'), सुगंध। पु० वसन्त, चैत्रमास। वि० सुगंधित, सुन्दर।
सुरभूप;-भौर—पु० इंद्र। विष्णु।
सुरमई, सुरमै—वि० सुरमेके रंगका। पु० एक रंग।
सुरमा—पु० नेत्रोंमें लगानेका एक चूर्ण।
सुरराह,-राज,-राय,-राव—पु० इन्द्र। (विष्णु)।
सुरवा—पु० हवनमें घी डालनेका पात्र।
सुरस—वि० सुस्वादु, सुंदर, सरस।
सुरसती—स्त्री० सरस्वती।
सुरसर—पु० मान सरोवर।
सुरसरि, सुरसरित्—स्त्री० गंगा।
सुरसाल—वि० देवताओंका पोढ़क।
सुरसुंदरी—स्त्री० देव-कन्या। अप्सरा।
सुरसुराना—अक्रि० भीतर ही भीतर रेंगना। खुजलाना।
सुरहना—अक्रि० भर आना 'सुरह्यौ घाइ देहबल आयौ।' [छत्र० ५३
सुरहरा—वि० 'सुरसुर' शब्दवाला।
सुरही—स्त्री० सुरभि, गाय (कबीर १५६)।
सुरा—स्त्री० शराब (उदे 'गिजा')।
सुराई—स्त्री० सूरता (रामा० १४८)।
सुराख—पु० छिद्र। टोह।
सुराग—पु० पता, टोह। अच्छा राग, दृढ़ प्रेम।
सुरागाय—स्त्री० एक गाय जिसकी पूछके बालोंसे चँवर बनता है।
सुराज, सुराज्य—पु० अच्छा राज्य। स्वराज्य।
सुराप, सुरापी—वि० शराब पीनेवाला।
सुंराही—स्त्री० एक तरहका लम्बे मुँहका पात्र।
सुरीला—वि० मीठे स्वरवाला।
सुरुख—वि० सुर्ख, लाल। प्रसन्न।
सुरुखुरू—वि० तेजस्वी। नामवर।
सुरुज—पु० सूर्य (उदे० 'दिपाना')। वि० बीमार।
सुरुवा—पु० शोरबा, रसा।
सुरूप—पु० स्वरूप। वि० अच्छे रूपवाला।
सुरेश, सुरेस—पु० सुरपति, इन्द्र।
सुरैत, सुरैतिन—स्त्री० रखनी, रखैल।
सुरोचि—वि० सुंदर, कान्तिमान्।
सुर्ख—वि० लाल। सुर्खाब—पु० चकवा पक्षी।
सुर्खी—स्त्री० देखो 'सुरखी'।
सुलक्षण—दे० 'सुलच्छन'।
सुलगना—अक्रि० परचना, प्रदीप्त होना (रहीम २८)।
सुलगाना—सक्रि० प्रज्वलित करना।
सुलच्छन—पु० शुभ लक्षण। वि० अच्छे लक्षणोंवाला।
सुलछ—वि० देखनेमें सुन्दर।
सुलझना—अक्रि० खुलना, निवरना, हल होना।
सुलझाना—सक्रि० निवेरना, हल करना।
सुलटा—वि० सीधा।
सुलतान—पु० बादशाह।
सुलप—वि० स्वल्प, छोटा, किञ्चित्।
सुलफ—वि० लफनेवाला, कोमल।
सुलफा—पु० सूखी तम्बाकू, चरस।
सुलभ—वि० सहज प्राप्य, सुगम, सरल।
सुलभ्य—वि० सहजमें मिलनेवाला, सुलभ, सुगम।
सुलह—स्त्री० मेल, मैत्री, सन्धि।
सुलागना—अक्रि० प्रज्वलित होना।
सुलाना—सक्रि० शयन कराना।
सुलुगना—दे० 'सुलगना' (उदे० 'दगधना')।
सुलमानी—पु० एक पत्थर। एक तरहका घोड़ा।
सुलोचनी—वि० स्त्री० सुन्दर नेत्रोंवाली।
सुव, सुवन—पु० पुत्र।
सुवटा—पु० सुआ, तोता।
सुवना—पु० तोता, सुग्गा (उदे० 'टॅट')।
सुवरण, सुवर्ण—पु० सोना, धन, अच्छी जाति या [अच्छा रंग।
सुवस—वि० जो अपने अधिकारमें हो।
सुवा—पु० तोता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुवादी—पु० स्वाद लेनेवाला, चखनेवाला (सू० १३४)।
सुवाना—सक्रि० शयन कराना।
सुवार—पु० सूपकार, रसोइया (पार्व० ४२)।
सुवास—देखो 'सुवास' (उदे० 'बटना')।
सुविधा—स्त्री० आराम, सुभीता, सुपास।
सुवेश,-स—पु० अच्छा वेश। वि० सुन्दर वेशवाला, सुन्दर।
सुशील—वि० अच्छे शीलवाला, विनम्र।
सुश्रूखा, सुश्रूषा—स्त्री० शुश्रूषा, सेवा।
सुश्लोक—वि० प्रसिद्ध, धर्मात्मा।
सुष—पु० सुख।
सुषमना, सुषमनि—स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी।
सुषमा—स्त्री० निराली छटा, अपूर्व शोभा।
सुषुप्त—वि० प्रगाढ़ निद्रामें सोया हुआ। स्त्री० प्रगाढ़ निद्रा, सुषुप्ति।
सुषुप्ति—स्त्री० प्रगाढ निद्रा, चित्तकी एक अवस्था।
सुषुम्ना, सुषमना—स्त्री० एक नाड़ी।
सुषोपति, सुषोप्ति—स्त्री० सुषुप्ति।
सुष्ठु—अ० अच्छी तरह, ठीक ठीक।
सुसंग—पु०,-ति—स्त्री० सत्संग, अच्छी सोहबत।
सुसकना—अक्रि० सिसकी लेना।
सुसज्जित—वि० अच्छी तरह सजाया हुआ।
सुसताना, सुस्ताना—अक्रि० श्रम दूर करना, आराम करना।
सुसती—स्त्री० आलस्य, ढिलाई।
सुसमय—पु० सुकाल।
सुसमुझि—वि० अच्छी समझवाला।
सुसर, सुसरा—पु० ससुर।
सुसरार,-रारि,-राल—स्त्री० ससुरका घर।
सुसा—स्त्री० स्वसा, बहिन।
सुसाना—अक्रि० सिसकी लेना।
सुसुकना—अक्रि० सिसकना।
सुसुपि—स्त्री० सुषुप्ति।
सुस्त—वि० आलसी, मन्द गतिवाला, निष्प्रभ।
सुस्ती—स्त्री० आलस्य, ढिलाई।
सुस्तैन—पु० आरंभमें किया गया स्वस्ति-वचन या मंगल कार्य ('स्वस्त्ययन')।
सुहंग, सुहँगा—वि० सस्ता।
सुहंगम—वि० सरल, सुगम।
सुस्थ—वि० स्वस्थ, प्रसन्न।
सुस्वादु—वि० अति स्वादिष्ट, मधुर।
सुहटा—वि० मनोहर, सुन्दर।
सुहबत—स्त्री० सोहबत, साथ।
सुहराना—सक्रि० देखो 'सोहराना'।
सुहव—पु०, सुहवी—स्त्री० 'सूहा' राग।
सुहाग—पु० सौभाग्य, अहिवात।
सुहागन,-गिन,-गिनि,-गिल-स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री।
सुहागा—पु० एक क्षार।
सुहाता—वि० सहने योग्य।
सुहाना—अक्रि० अच्छा लगना, रुचना (उदे० 'झर'), फबना (उदे० 'जूमना')। वि० सुहावना।
सुहाया—वि० भला, सुन्दर, प्रिय 'जामवन्तके वचन सुहाये।' रामा० ४१४
सुहारी, सुहाली—स्त्री० पुड़ी, लुचुई।
सुहावता,-वन,-वना—वि० जो अच्छा लगे, रुचिकर, मनोहर, सुन्दर।
सुहावा—वि० सुन्दर, अच्छा, प्रिय।
सुहृद—पु० मित्र।
सुहेल—पु० एक शुभ तारा।
सुहेलरा, सुहेला—वि० सुन्दर, प्रिय, सुखद।
सूँ—अ० से।
सूँघना—अक्रि० बास लेना।
सूँड, सूँडि—स्त्री० हाथीकी शुंड (उदे० 'तिरनी')।
सूँडी—स्त्री० एक कीड़ा।
सूँस—पु० एक जलजन्तु।
सूँह—क्रिवि० सामने।
सूअर—पु० शूकर।
सूआ—पु० खूब मोटी सुई। तोता, कीर (उदे० 'थोथरा')।
सूई—स्त्री० कपड़ा सीनेकी पिन, सूची, घड़ी इ० का कांटा।
सूक—पु० शुक 'उआ सूक जस नखतन माहीं।' प० ९
सूकना—अक्रि० सूखना, शुष्क होना (उदे० 'भंजार')।
सूकर—पु० सूअर।
सूक्त—पु० ऋचाओंका समूह। वि० अच्छी तरह कहा हुआ।
सूक्ति—स्त्री० अच्छी युक्ति, श्रेष्ठ कथन।
सूक्ष्म, सूक्ष्म—वि० थोड़ा, छोटा, महीन (उदे० 'दाझना')। पु० एक अलंकार, परमाणु।
सूक्ष्मदर्शकयंत्र—पु० सुर्दबीन, अणुवीक्षण यंत्र।
सूखना—अक्रि० शुष्क या जलहीन होना, दुबला होना, कड़ा होना।
सूख—वि० शुष्क।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूखा—पु० अवर्षण 'ज्यों सरितन सूखा परे कुवाँ खनावत लोग।' रहीम १५। सूखी जगह। वि० शुष्क, नीरस, निस्तेज, कोरा।

सूघर—वि० सुघड़, चतुर (स्त्री)।

सूचक—वि० बतानेवाला, बोधक, ज्ञापक।

सूचना—स्त्री० इत्तिला, विज्ञप्ति। अक्रि० सूचित करना 'सूचत कटि-केसरी, गति मराल।' विन० ८५

सूचा—वि० शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र (कबीर १७३)। स्त्री०

सुचि—वि० शुचि, पवित्र। स्त्री० सूची, सूई। [सूचना।

सूचित—वि० ज्ञापित।

सूची—स्त्री० तालिका। सूई।

सूचीपत्र—पु० तालिका, कैटलाग।

सूच्छम, सूछम, सूछिम—वि० सूक्ष्म, थोड़ा, छोटा, बारीक (उदे० 'चिलकना')।

सूच्य—वि० सूचित करने योग्य।

सूजना—अक्रि० फूल जाना, शोथ होना, मोटा होजाना।

सूजा—पु० सूआ, मोटी सूई।

सूजी—स्त्री० सूई। मोटा आटा। पु० दरजी।

सूझ—स्त्री० सूझनेका भाव। अनोखी कल्पना।

सूझना—अक्रि० देख पड़ना, दृष्टिमें या ध्यानमें आना (उदे० 'छाकना', 'दाउँ')।

सूझबूझ—स्त्री० समझ।

सूत—पु० तागा, डोरी। भार, सारथी, पौराणिक, बढ़ई।

सूतक—पु० बच्चेके जन्मके बादका अशौच। मृत्युके बाद-

सूतका—स्त्री० जच्चा। [का अशौच।

सूतधार—पु० बढ़ई।

सूतना—अक्रि० सोना, नींद लेना (कविता० ११८, रामा ४८१)।

सूतरी—स्त्री० पतली रस्सी (अ० २३)।

सूता—पु० सूत। स्त्री० जच्चा।

सूतिका—स्त्री० जच्चा।

सूतिकागार, सूतिकागृह—पु० प्रसवगृह, सौरी।

सूती—स्त्री० शुक्ति, सीपी। वि० सूतका बना।

सूत्र—पु० सूत, तागा, पता, संक्षिप्त वचन।

सूत्रकार—पु० बढ़ई, राज। मकड़ी। जुलाहा।

सूत्रधार—पु० नाटकका मुखिया। बढ़ई।

सूत्रपात—पु० प्रारम्भ।

सूत्रयी—वि० सूत्र-रचयिता।

सूत्रात्मा—पु० जीवात्मा।

सूथन, सूथना—पु० पायजामा।

सूद—पु० ब्याज, लाभ। रसोइया। शूद्र (उदे० 'दूँद')।

सूदन—पु० हनन। वि० हन्ता, विनाशक।

सूदना—सक्रि० नष्ट करना, हनन करना।

सूद्र—पु० शूद्र।

सूध—स्त्री० सीध। वि० शुद्ध, सीधा, साधु, निष्कपट।

सूधना—अक्रि० सफल होना, ठीक या सत्य होना।

सूधरा, सूधा—वि० सीधा, छलहीन, उलटा नहीं चित। भोला, सीधा (५७१ विन० ३७६)।

सूधे—क्रिवि० सिधाईके साथ (उदे० 'उपटाना' 'बतराना')।

सून—पु० शून्य, निर्जन स्थान। वि० सूना, खाली, हीन।

सूनसान—वि० निर्जन।

सूना—वि० शून्य निर्जन (उदे० 'ढँढोरना')। चेतनाहीन। पु० एकान्त (उदे० 'नाँऊ')।

सूनिक, सूनी—पु० व्याध, मांस-विक्रेता।

सूनु—पु० पुत्र।

सूप, सूपा—पु० पछोरनेका पात्र, छाज (उदे० 'पछोरना')। रसा। रसोइया।

सूपक, सूपकार, सूपकारी—पु० रसोइया।

सूपच—पु० अपच।

सूबा—पु० प्रान्त। पु० प्रान्ताधिकारी (छत्र ५४)।

सूबेदार—पु० प्रांतका शासक।

सूभर—वि० शुभ्र, उज्वल। सफेद।

सूम—वि० कृपण। सूमति = कृपणता (उदे० 'तेता')

सूर—पु० अंधा मनुष्य, सूरदास, वीर (उदे० 'बताह') सूर्य ('सूर सूर तुलसी ससी')। शूल।

सूरज—पु० सूर्य (उदे० 'सुँगना')। सूर्यपुत्र सुग्रीव, शनि। वीर-पुत्र। सूरदास।

सूरज-तनी—स्त्री० यमुनाजी।

सूरजमुखी—पु० एक फूल या उसका पेड़।

सूरजसुत—पु० सुग्रीव।

सूरत—स्त्री० आकृति, शोभा। सुरति। हालत, उपाय।

सूरता, सूरताई—स्त्री० वीरता।

सूरति—स्त्री० सुरति, स्मरण। शक्ति।

सूरन—पु० जमीकन्द, ओल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर-पुत्र—पु० सुग्रीव।
सूरवीर—पु० वीर पुरुष।
सूरमा—पु० योद्धा।
सूरमुखी मनि—पु० सूर्यकान्त मणि।
सूरवाँ—पु० सूरमा। योद्धा।
सूरसुता—स्त्री० यमुना।
सूरा—पु० अन्धा मनुष्य। एक कीड़ा।
सूराख—पु० छिद्र।
सूरी—स्त्री० शूली। काँटा, बरछा।
सूरुज, सूर्य—पु० रवि। बारहकी संख्या।
सूर्यकान्त—पु० एक मणि।
सूर्य-पुत्र—पु० सुग्रीव, कर्ण, शनि, यम, अश्विनीकुमार।
सूल—पु० स्त्री० काँटा, पीड़ा (उदे० 'ताई'), भाला।
सूलधर, सूलपानि—पु० शिवजी।
सूलना—सक्रि० छेदना, दुःख देना, साजना 'मधुकर कहत सँदेशो सूलहु!' अ० १०१। अक्रि० व्यथा पाना, दुःखित होना।
सूली—स्त्री० प्राणदण्ड-विधि-विशेष, फांसी। पु० शंकर।
सूवना—पु० सुग्गा, तोता। अक्रि० स्रवित होना, बहना।
सूवा—पु० सुआ, तोता। सूआ, सूजा।
सूस, सूसि—पु० मगरके सदृश एक जलचर।
सूहा—वि० लाल रंगका। पु० एक तरहका लाल रंग।
सृंखला—स्त्री० देखो 'शृंखला'।
सृंग—पु० सींग।
सृक, सृग—पु० माला। बाण, शूल, बरछा।
सृगाल—पु० शृगाल, सियार।
सृजक, सृजनहार—पु० रचनेवाला, बनानेवाला।
सृजना—सक्रि० रचना, उत्पन्न करना (उदे० 'डासना')।
सृति—स्त्री० आवागमन, रास्ता, जन्म।
सृष्टि—स्त्री० रचना, दुनिया, संसार, प्रकृति।
सेंकना—सक्रि० आँच दिखाना, गरम करना, भूँजना।
सेंतसी—० मूल्य न लगना, खर्च न होना। सेंतका = बिना दामोंका, प्रचुर। सेंतमें = मुफ्तमें।
सेंतना—सक्रि० हिफाजतसे रखना, इकट्ठा करना।
सेंतमेंत—क्रिवि० मुफ्तमें, व्यर्थ ही।
सेंतो—दे० 'सेंत'। प्रत्यय, से (उदे० 'बड़ा' 'डासना')।
सेंधो—स्त्री० शक्ति, बरछी।
सेंदुर—पु० सिन्दूर (उदे० 'पूरना', 'लाल')।
सेंदुरिया—वि० सिंदूरके रंगका। पु० एक पौधा।
सेंध—स्त्री० छिद्र, सुरंग।
सेंधा—पु० एक तरहका नमक।
सेंधिया—वि० सेंध डालनेवाला। पु० फूट या कचरी
सेंमल—पु० सेमर (उदे० 'थोथरा')। [नामक फल।
सेंवई—स्त्री० देखो 'सिवई'।
सेंवर—पु० सेमर।
सेंहुड—पु० थूहर।
से—प्रत्यय, करण और अपादानकी विभक्ति। सर्व० वे। वि० समान (सा-का बहु०)।
सेउ—पु० सेव नामक फल।
सेख—पु० शेष नाग। बचा हुआ अंश। समाप्ति।
सेखर—पु० देखो 'शेखर'।
सेग़ा—पु० विभाग। विषय।
सेचन—पु० सिंचन
सेज, सेजरिया, सेज्या—स्त्री० शय्या, बिछौना (उदे० 'नाउ', 'पलटाव')।
सेझना—अक्रि० हटना, अलग होना।
सेटना—अक्रि० ख्याल करना, मानना, समझना।
सेठ—पु० महाजन, व्यापारी, धनी व्यक्ति।
सेढ़ा—पु० सिंहाण, नाकका मैल (उदे० 'गीदर')।
सेत—वि० सफेद (उदे० 'छतुरी 'बनौटी')। पु० पुल।
सेतु—पु० पुल, मेंड, मर्यादा (उदे० 'थापना')।
सेतुक—अ० सौतुक, सामने? (मति० २३६)। पु० पुल।
सेद—पु० पसीना।
सेन—स्त्री० सेना (उदे० 'चौपट')। सेंध। पु० श्येन पक्षी (उदे० 'गच')। शरीर।
सेनप, सेनपति—पु० सेनापति।
सेना—स्त्री० फौज, चमू। सक्रि० सेवा या भक्ति करना, सेवन करना (उदे० 'डेंढ़ी', रामा० ४०७)। लगातार निवास करना, पोषण करना।
सेनाधिप,-धीश-ध्यक्ष, सेनानी—पु० सेनाका अगुआ।
सेनापति—पु० फौजका बड़ा अफसर, शिवहसागर। मेवोंका स्वामी 'उत सेनापति बरलि मुखद सम इत प्रभु अमिय दृष्टि चितये।' सू० १०२
सेनि, सेनी—स्त्री० श्रेणी, पंक्ति 'मनौ अलिसेनी विराजत, बनै एकहि भेष।' सू० ८८। मादा बाज़।
सेम—स्त्री० एक तरकारी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सेमई—स्त्री० 'सेंवई'। वि० हलके हरे रंगका।
सेमर, सेमल—पु० शाल्मली वृक्ष (उदे० 'ढेंढ़ी')।
सेर—पु० शेर, व्याघ्र। एक तौल। वि० तृप्त।
सेराना—पु० सिरहाना। सक्रि० ठंडा करना, डुबाना, बहाना 'रहिमन भाँवरके परे नदी सेरावत मौर।' रहीम १९। अक्रि० ठंडा होना, जुड़ाना, तृप्त होना, चुकना, पूरा होना।
सेरी—स्त्री० तृप्ति। रास्ता 'जा सेरी साधू गया सो तो राखी मूँदि।' साखी १३९ (२९, ११७)।
सेल—पु० भाला, बर्छी (उदे० 'खखेटना', 'पटतारना')। माला। लकड़ीका पात्र-विशेष।
सेला—पु० (बर इ० का) डुपट्टा (उदे० 'नबेला')।
सेलिया—पु० घोड़ेका एक भेद। स्त्री० बिल्ली।
सेली—स्त्री० डुपट्टा, योगियोंकी माला। बर्छी। एक आभूषण। एक वृक्ष। एक मछली।
सेल्ह—पु० भाला।
सेल्ही—स्त्री० छोटा डुपट्टा। माला (कविता० १९९)।
सेवँई—स्त्री० मैदाकी बनी खाद्य वस्तु-विशेष।
सेवँर—पु० सेमलका पेड़।
सेव—पु० एक फल (उदे० 'दारिउँ'), बेसनके लच्छे। स्त्री० सेवा (उदे० 'उपासना', 'दात')।
सेवक—पु० नौकर, किंकर, भक्त।
सेवकाई—स्त्री० सेवा (उदे० 'बसन'), भक्ति।
सेवग—पु० देखो 'सेवक' (कबीर ९९)।
सेवड़ा—पु० मैदाका एक पकवान।
सेवति—स्त्री० स्वाति नक्षत्र।
सेवती—स्त्री० एक फूल, सफेद गुलाब (उदे० 'करना')।
सेवना—सक्रि० सेवा या भक्ति करना (उदे० 'जुगम')।
सेवनी—स्त्री० नौकरानी, दासी। सुई। टाँका, सीवन।
सेवर—पु० सेमर (उदे० 'भूआ')।
सेवरा—पु० 'सेवड़ा' नामक पकवान (प० १३)।
सेवा—स्त्री० टहल, नौकरी, भक्ति, पूजा, रक्षा।
सेवाती—स्त्री० स्वाति नक्षत्र।
सेवार, सेवाल—पु० शैवाल, जलमें पैदा होनेवाली घास
सेविका—स्त्री० दासी। [(उदे० 'दरकना')।
सेवी—पु० सेवक, भक्ति या पूजा करनेवाला।
सेष, सेस—पु० नागपति, नाग। बचा हुआ अंश।
सेसर—पु० जाल। [वि० बचा हुआ।
सेहत—स्त्री० रोगमुक्ति। आराम।
सेहरा—पु० मौर, दुलहेका मुकुट।
सेही—पु० साही पशु (अ० ५४)।
सेहुँआँ—पु० एक तरहका सफेद दाग जो देहपर पड़ [जाता है।
सेहुँड—पु० एक वृक्ष, थूहर।
सैंतना—दे० 'सेंतना' (उदे० 'बितताना')।
सैंथी—स्त्री० भाला (छत्र० १०७)। शक्ति 'इन्द्र जीत लीन्हीं जब सैंथी देवन हहा करयो।' सूरा० ६९
सैंधव—वि० सिंधुका। पु० सेंधा नमक. सिंधु-निवासी।
सैंबल—पु० सेमर 'सैंबलके फूलनिपर फूल्यौ गरब्यों कहा गँवार।' कबीर १९४
सैंहथी—स्त्री० बर्छी (छत्र० ६४)।
सै—पु० सौकी संख्या। वि० सौ।
सैकड़ा—पु० सौ।
सैकड़े—क्रिवि० प्रतिशत। सौ पीछे।
सैकत—पु० बालुकामय स्थान। वि० बालुकामय।
सैकल—पु० देखो 'सिकली'।
सैन—स्त्री० सेना (उदे० 'जितवना'), दल। इशारा (उदे० 'तिरीछा'), चिह्न। पु० बाज पक्षी। शयन, लेटना, पौढ़ना।
सैना—स्त्री० फौज, सेना। पु० इशारा (रहीम १५)।
सैनिक—पु० सिपाही, योद्धा।
सैनी—स्त्री० फौज। पु० नाई।
सैनेय—वि० लड़नेके योग्य।
सैनेश, सैनेस—पु० सेनापति।
सैन्य—पु० सेना, कटक।
सैफ—स्त्री खड्ग, तलवार।
सैफ़ी—वि० तिरछा।
सैयाँ—पु० स्वामी, प्रभु, पति।
सैया—स्त्री० शय्या, बिछौना, पलँग।
सैर—स्त्री० दिल बहलावकी यात्रा, मनोरंजनार्थ टहलना फिरना।
सैल—पु० शैल, पहाड़। स्त्री० सैर 'करिये सङ्ग सखीनके कहौ कौन विधि सैल।' मति० २२६। साँग 'जबहिं समर महँ सैल उछालै।' छत्र० १८
सैलजा,-तनया,-सुता—स्त्री० गिरिजा।
सैलानी—वि० मनमौजी। इच्छानुसार घूमनेवाला।
सैलाब—पु० जलप्लावन, बाढ़।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सेवल—दे० 'सेवार'।
सेवलिनी—स्त्री० नदी।
सेवाल—पु० देखो 'सेवार'।
सेसव—पु०, सैसवता—स्त्री० शिशुता, लड़कपन।
सैहथी—स्त्री० सेंथी, भाला, शक्ति (उदे० 'बाहना')।
सों—अ० से, साथ। स्त्री० शपथ।
सोंचर नमक—पु० एक नमक, काला नमक।
सोंटा—पु० छोटी लाठी या डंडा (कबीर ३२९)।
सोंटा बरदार—पु० बल्लमदार, आसाबरदार।
सोंठ—स्त्री० सूखा हुआ अदरक।
सोंध, सौंधा—पु० सुगन्ध, सुगंधित वस्तु, एक सुगन्धित मसाला (उदे० 'उपटाना')। वि० सुवासित। [भुंजमेकी सुगन्ध।
सोंह—स्त्री० शपथ।
सोंह, सोंही, सोहैं—अ० सामने (रवि० ३७)।
सो—सर्व० वह। अ० इसलिए। वि० समान।
सोअना—अक्रि० सोना, शयन करना।
सोक—पु० शोक, दुःख (उदे० 'तिरना')।
सोकना—अक्रि० शोक करना। सोक लेना।
सोखक—वि० सोखनेवाला।
सोखता, सोख्ता—पु० स्याही सोखनेवाला एक कागज।
सोखना—सक्रि० सुखा डालना, पी जाना।
सोग—पु० शोक, विलाप, दुःख (कबीर ३१३)।
सोच—पु० अफसोस, चिन्ता, दुःख, ख्याल।
सोचना—अक्रि० ख्याल करना, चिन्ता या अफसोस करना।
सोज—स्त्री० सामग्री। सूजन।
सोज़न, सौजन—पु० सूई (रतन० ९९), 'अरे निरदई माखिया कहुँ जताय यह बात। केहि हित सुमनन तोरि तैं छेदत सोजन गात।' रतन० १०९
सोझा—वि० सीधा, अनुकूल, खड़ा।
सोढर—वि० भोंदू।
सोत, सोता—पु० पानीका झरना। नदीकी शाखा।
सोतिया—पु० सोता।
सोती—स्त्री० स्वाती नक्षत्र। सोता, झरना।
सोदर—पु० सगा भाई (उदे० 'देव')।
सोदरा, सोदरी—स्त्री० सगी बहिन।
सोध—पु० खोज, खबर, 'सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी, बहुरो सोध न कीनो।' सू० २१६, बुधि, होश 'आनँद मगन भये सब डोलत कछू न सोध सरीर।' सुश० ३, सुधार। अदायगी (उदे० 'उपराग')।
सोधना—सक्रि० शुद्ध करना, सुधारना। ढूँढ़ना 'खग मृग मीन पतंग लौं मैं सोधे सब ठौर।' सू० २ (उदे० 'तालाबेली')।
सोधाना—सक्रि० खोज कराना, ठीक कराना।
सोन—पु० पानीका एक पक्षी। सुवर्ण (उदे० 'उछारना') वि० लाल।
सोनचिरी—स्त्री० नटी (रवि० ३३)।
सोनजरद,-जर्द, जिरद—स्त्री० एक फूलका पौधा।
सोनजुही—स्त्री० पीले फूलोंवाली जूही।
सोनहला—वि० सोनेके रंगका।
सोनहा—पु० एक हिंसक जीव।
सोनहार—पु० एक समुद्री पक्षी (उदे० डाँड़ी)।
सोना—अक्रि० शयन करना, नींद लेना। पु० सुवर्ण।
सोनित—पु० रुधिर (उदे० 'खोरना', 'छिछ')। वि [लाल
सोनी—पु० सुनार।
सोफियाना—वि० सादा पर अच्छा दिखनेवाला।
सोपत—पु० सुभीता।
सोपान—पु० सीढ़ी।
सोफता—पु० एकान्त स्थान।
सोभ, सोभा—स्त्री० 'शोभा'। (उदे० 'छोभना')
सोभन—दे० 'शोभन' (उदे० 'चौंर')।
सोभना—अक्रि० शोभा पाना (उदे० 'छोभना')।
सोभनीक—वि० सुंदर, सुहावना (सुन्द० ७४)।
सोम—पु० चन्द्रमा, यम, कुबेर, एक लता।
सोमन—पु० अस्त्रविशेष।
सोय—सर्व० वही।
सोर—पु० शोर, कोलाहल (उदे० 'जोर')।
सोरठ—पु० एक रागिनी। एक नगर या प्रान्त।
सोरठा—पु० दोहेकी तरहका एक छन्द।
सोरह, सोलह—वि० बारह और चार।
सोरा—पु० क्षार-विशेष, सोरा।
सोलह सिंगार—पु० सारा शृंगार।
सोलाना—सक्रि० किसीको सोनेमें प्रवृत्त करना।
सोवज—पु० सावज, शिकार।
सोवना—अक्रि० सोना, नींद लेना।
सोषक—पु० सुखा डालनेवाला, चूसनेवाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोषना—सक्रि० सोखना, सुखा डालना।
सोषु, सोसु—वि० सुखा डालनेवाला (विन०३८१)।
सोसनी—वि० लालिमा लिये हुए कुछ कुछ नीले रंगका।
सोहगी—स्त्री० तिलकके बादकी रीति-विशेष। सिंदूर इ० सुहागकी चीज़ें।
सोहन—पु० रूपवान् व्यक्ति। वि० रूपवान्, सुन्दर।
सोहना—अक्रि० शोभा देना, सुहावना लगना (उदे० 'छतुरी')। वि० मनोहर। सक्रि० निराना।
सोहनी—स्त्री० झाड़ू। निरानेकी क्रिया।
सोहबत—स्त्री० संगति।
सोहर—पु० शिशुजन्म आदिके समयका मंगलगीत (रघु० २८)।
सोहरत—दे० 'शोहरत' (उदे० 'उपल्ला')।
सोहराना—सक्रि० धीरे धीरे मलना या हाथ फेरना।
सोहला—पु० देखो 'सोहर'।
सोहाई—स्त्री० निरानेका क्रिया या मजदूरी।
सोहाग—पु० सुहागा। सौभाग्य, अहिवात।
सोहागिन,-गिनी,-गिल—स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री।
सोहाता—वि० सुन्दर, मधुर, सुहावना।
सोहाना—अक्रि० अच्छा लगना, शोभित होना।
सोहाया—वि० सुन्दर, मनोहर।
सोहारी—स्त्री० पुड़ी।
सोहावना—वि० सुन्दर, प्रिय, मनोहर (उदे० 'टाट')। अक्रि० अच्छा लगना।
सोहासित—वि० सुहावना, भला लगनेवाला।
सोहिल—पु० एक तारा।
सोहिला—पु० देखो 'सोहर'।
सोहीं, सोहैं—क्रिवि० सामने 'अब निकरे अखरानि सों सोहैं कीजै सौंह।' मति० २०२
सौं—अ० सदृश, सा, से। स्त्री० शपथ
सौंघाई—स्त्री० प्रचुरता, बाहुल्य, अधिकता (रामा० [५०४)।
सौंचना—अक्रि० आबदस्त लेना।
सौंचाना—सक्रि० आबदस्त दिलाना, मल धोना (उदे० 'कुचकुचा')।
सौंज—स्त्री० सामग्री (उदे० 'धौंज', कबीर १८३, १९४) 'मातु बचन सुनि मैथिली, सकल सौंज लै साथ। जाय अलिन युत पूजिके गिरजहिं नायो माथ।' राम रसायन।
सौंतुख—क्रिवि० सामने, सम्मुख। (पामं० ३५) 'सोवत जागत सपने सौंतुख रहि हैं सो पति माने।' भ्र० ५८। पु० प्रत्यक्ष बात।
सौंदना—सक्रि० सानना।
सौंदर्ज, सौंदर्य—पु०, सौन्दर्यता—स्त्री० सुन्दरता, छवि (दास १३५)।
सौंध—पु० सुवास। महल।
सौंधा—वि० सुवासित, रुचिकर। पु० देखो 'सोंधा'। (उदे० 'चौक')।
सौंनी—दे० 'सोनी' (रवि० १८)।
सौंपना—सक्रि० समर्पित करना, सहेजना, किसीके ऊपर छोड़ना (उदे० 'धुरहथा')।
सौंफ—स्त्री० एक पौधा या उसके बीज।
सौंर—स्त्री० चादर 'सेज बिछावन सौंर सुपेती।' प० १६२ (उदे० 'डासना', 'लांबा')।
सौंरई—स्त्री० श्यामता, साँवलापन।
सौंरना—सक्रि० सुमिरना, स्मरण करना 'लरिकाईके सौंरियत चोरमिहचनी खेल।' मति० १९३
सौंरा—वि० साँवला।
सौंह—स्त्री० शपथ (उदे० 'पत्याना' 'अटक', 'सोहैं')। क्रिवि० सामने (उदे० 'बारिगह')।
सौंही—क्रिवि० सामने (उदे० 'संकना', प० ५)। स्त्री० अस्त्रविशेष।
सौ—वि० अस्सी और बीस। पु० सौकी संख्या। वि० [सो, सा।
सौकर्य—पु० सुकरता, सुबीता।
सौख—पु० शौक। सुख।
सौख्य—पु० सुख।
सौंगंद, सौगंध—स्त्री० शपथ।
सौगरिया—पु० क्षत्रियोंका एक भेद।
सौगात—स्त्री० नज़र, भेंट।
सौघा—वि० सस्ता।
सौच—दे० 'शौच'।
सौज—स्त्री० देखो 'सौंज' (भ्र० ५३)।
सौजन्य—पु०, सौजन्यता—स्त्री० सज्जनता, भद्रता।
सौत, सौतन, सौति, सौतिन—स्त्री० सपत्नी (उदे० 'दुरावना')।
सौतुक, सौतुख, सौतुष—दे० 'सौंतुख'। 'सौतुक तौ सपनो भयो सपनो सौतुक रूप।' मति० २०२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौतेला—वि० सौतके जरिये जिसका सम्बंध हो, विमाता से उत्पन्न।
सौदा—पु० क्रय-विक्रय, व्यापार, व्यापारकी वस्तु।
सौदागर—पु० व्यापारी।
सौदामनी, सौदामिनी—स्त्री० विद्युत्, बिजली।
सौध—पु० राजभवन, बड़ा मकान 'सुन्दरि दिया बुझाइकै सोअति सौध मझार।' दास ८
सौन—क्रिवि० सम्मुख। पु० कसाई।
सौनन—स्त्री० कपड़ोंमें रेह मिलाना, सानना।
सौना—पु० सुवर्ण।
सौपना—सक्रि० देखो 'सौंपना'।
सौभग—पु० अच्छा भाग्य। सुन्दरता।
सौभाग्य—पु० अच्छा भाग्य, अहिवात, सुख।
सौमित्र, सौमित्रि—पु० सुमित्रा-पुत्र लक्ष्मण (या शत्रुघ्न)।
सौम्य—वि० शान्त, विनम्र, शीलवल, सुन्दर, प्रफुल्ल। पु० बुध। नम्रता। सोमयज्ञ।
सौम्यता—स्त्री० नम्रता, सुन्दरता, ठंढक, सरलता।
सौर—वि० सूर्य सम्बन्धी। स्त्री० चादर (उदे० 'जेता')।
सौरज—पु० शौर्य, वीरता (रामा० ४९७)।
सौरभ—पु० सुगंध (उदे० 'चौतरा')। आम, केशर।
सौरास्त्र—पु० एक दिव्य अस्त्र।
सौरि—पु० विष्णु, कृष्ण, वसुदेव। शनि।
सौरी—स्त्री० प्रसूतिगृह।
सौरीय, सौर्य—वि० सूर्य संबंधी।
सौवर्ण—वि० सोनेका। पु० सोना।
सौष्ठव—पु० सुन्दरता, अच्छी गढ़न।
सौसनी—वि० देखो 'सोसनी'।
सौहँ—क्रिवि० सामने। स्त्री० शपथ 'काहेको सौंहें हजार करो तुम...'-रस० ७ (उदे० 'नटना')।
सौहार्द, सौहार्द्य, सौहृद—पु० मित्रता।
सौहीं—देखो 'सौंही'
स्कंदन—पु० रेचन। गमन, पतन।
स्कंदित—वि० च्युत, पतित।
स्कंध—पु० कन्धा, पेड़के तनेका वह भाग जहाँसे शाखाएँ फूटती हैं, व्यूह, शाखा।
स्खलित—वि० च्युत, गिरा हुआ, टपका हुआ।
स्तंभ—पु० खंभा। रुकाव, जड़ता।
स्तंभन—पु० रुकावट, थमाव। वीर्यावरोधक ओषधि।
स्तंभित—वि० रुका हुआ, निश्चेष्ट।
स्तन—पु० उरोज, कुच, थन।
स्तनन—पु० मेघ-गर्जन। आर्त्तनाद। ध्वनि।
स्तनपायी—वि० माताके स्तनसे दूध पीनेवाला।
स्तब्ध—वि० निश्चल, जड़ीभूत, सुस्त।
स्तर—पु० तह। शय्या।
स्तव—पु० स्तोत्र, स्तुति, बड़ाई।
स्तवक, स्तावक—पु० स्तोत्र। अध्याय। गुच्छा। स्तुति करनेवाला।
स्तविता, स्तोता—पु० स्तुति करनेवाला।
स्तुति—स्त्री० प्रशंसा।
स्तुत्य—वि० प्रशंसाके योग्य, श्लाघ्य।
स्तूप—पु० मिट्टी, पत्थर आदिका बना टीला।
स्तेन, स्त्येन—पु० चोर।
स्तेय—पु० चोरी वि० जो चुराया जा सके।
स्तैन्य—पु० चोरी। चोर।
स्तोत्र—पु० स्तुति, स्तव।
स्तोम—पु० स्तुति, ढेर, राशि।
स्त्री—स्त्री० औरत, नारी, अर्द्धांगिनी।
स्त्रैण—वि० स्त्री सम्बन्धी, स्त्रीके अधीन। स्त्रियों जैसा।
स्थगित—वि० टाला हुआ, आच्छादित।
स्थल—पु० स्थान, भूमि, अवसर।
स्थली—स्त्री० स्थान, भूमि।
स्थलीय—वि० स्थल सम्बन्धी।
स्थविर—पु० बुड्ढा। वि० वयोवृद्ध, सम्मानार्ह।
स्थाई—वि० देखो 'स्थायी'।
स्थाणु—वि० स्थिर। पु० ठूंठ, स्तंभ।
स्थान—पु० जगह, ठाँव, घर।
स्थानांतर—पु० अन्य स्थान।
स्थानांतरित—वि० एक जगहसे दूसरी जगह हटाया हुआ।
स्थानापन्न—वि० एवजमें काम करनेवाला।
स्थानिक, स्थानीय—वि० उल्लिखित स्थान सम्बन्धी, "लोकल"
स्थापक—वि० कायम करनेवाला।
स्थापत्य—पु० भवन-निर्माण-विद्या।
स्थापना—स्त्री० थापने, जमाने आदिकी क्रिया, प्रतिष्ठा, प्रतिपादन।
स्थापित—वि० कायम किया हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थायी—वि० टिकाऊ, ठहरनेवाला।
स्थाल—पु० थाली, आधार, देगची।
स्थाली—स्त्री० मिट्टीकी थाली, हंडी।
स्थावर—वि० ठहरा हुआ, अचल। पु० अचल सम्पत्ति।
स्थाविर—पु० बुढ़ापा। [पर्वत।
स्थित—वि० ठहरा हुआ, खड़ा हुआ, वर्त्तमान।
स्थितप्रज्ञ—वि० स्थिर बुद्धिवाला।
स्थिति—स्त्री० अस्तित्व, ठहराव, दशा, पद।
स्थितिस्थापक पु० पूर्व अवस्थामें लानेवाला गुण।
स्थिर—वि० अचल, ठहरा हुआ, निश्चित, दृढ़, शांत, स्वस्थ, टिकनेवाला।
स्थिरता—स्त्री०, स्थिरत्व, स्थैर्य—पु० दृढ़ता।
स्थूल—वि० मोटा, भारी, जड़। [ठहराव।
स्नपित, स्नात—वि० नहाया हुआ।
स्नातक—पु० ब्रह्मचारी, वह जो गुरुकुल आदिमें रहकर निर्धारित विद्या प्राप्त कर चुका हो।
स्नान—पु० नहान।
स्नायु—पु० नस, नाड़ी।
स्निग्ध—वि० स्नेहयुक्त, चिकना।
स्नुषा—स्त्री० पतोहू।
स्नेह—पु० प्यार, मित्रता। वह वस्तु जिसमें चिकनाई हो,
स्पंद, स्पंदन—पु० फरकना, हिलना, स्फुरण। [तेल।
स्पर्द्धा—स्त्री० बराबरी, द्वेष, डाह, संघर्ष।
स्पर्श—पु० छूनेका भाव, 'क' से 'म' तकके अक्षर।
स्पष्ट—वि० साफ, प्रकट।
स्पष्टता—स्त्री० सफाई।
स्पष्टीकरण—पु० किसी विषय या बातको स्पष्ट करनेकी
स्पृश्य—वि० छूनेके लायक। [क्रिया।
स्पृहा—स्त्री० वाञ्छा, इच्छा।
स्फटिक—पु० बिल्लौर पत्थर।
स्फुट—वि० फुटकर, विकसित, प्रकट।
स्फुटित—वि० प्रकट किया हुआ। खिला हुआ।
स्फुरण—पु० फड़कना, धीरे धीरे हिलना।
स्फुलिंग पु० चिनगारी।
स्फूर्ति—स्त्री० फुरती, उत्साह, 'जान'।
स्फोट—पु० फोड़कर बाहर निकलना। फोड़ा।
स्फोटक—पु० फोड़ा।
स्मर—पु० कामदेव। स्मरहर—पु० स्मरारि, शिवजी।
स्मरण—पु० याद, सुधि, ख्याल, चिन्तन।
स्मरणीय—वि० स्मरण रखने योग्य।
स्मरना—सक्रि० स्मरण करना।
स्मशान—पु० श्मशान, मरघट।
स्मारक—वि० स्मरण करानेवाला। पु० किसीकी स्मृतिकी रक्षाके लिए किया गया कार्य।
स्मार्त—वि० स्मृति सम्बन्धी। पु० स्मृति शास्त्रका
स्मित—पु० मुसक्यान, हलकी हँसी। [अनुयायी।
स्मृति—स्त्री० स्मरण, स्मरण-शक्ति, धर्मशास्त्र।
स्मृतिकार—पु० धर्मशास्त्र बनानेवाला।
स्यंदन—पु० रथ। टपकना।
स्यात्—अ० शायद।
स्यान, स्याना—वि० बुद्धिमान्, अनुभवी, वयोवृद्ध, चालाक। पु० वयोवृद्ध मनुष्य।
स्यानप,-पन, स्यानापन—पु० बुद्धिमानी, चतुराई।
स्याबास—अ० शाबास, धन्य, धन्य।
स्याम—वि० काला, साँवला। पु० श्रीकृष्ण, मेघ, कोयल।
स्यामकरन,-कर्न—पु० एक तरहका घोड़ा जिसका एक कान काला हो (उदे० 'तुखार')।
स्यामता, स्यामताई—स्त्री० कालिमा, कालापन
स्यामलिया—पु० श्रीकृष्ण। [(उदे० 'उज्यारी')।
स्यामा—स्त्री० देखो 'श्यामा'।
स्यार—पु० शृगाल, गीदड़।
स्याल—पु० शृगाल। साला।
स्यावज—पु० सावज, शिकार (कबीर १६०)।
स्याह—वि० काला। पु० घोड़ोंका एक भेद।
स्याहा—पु० सियाहा, मालगुजारी दर्ज करनेकी बही।
स्याही—स्त्री० रोशनाई, कालिमा।
स्यूत—वि० सीया या बुना हुआ।
स्यों, स्यो—अ० सहित। समीप (उदे० 'अछेह')।
स्रंग—पु० शिखर, कँगूरा, सींग।
स्रक, स्रग, स्रज—स्त्री० पुष्पमाला, माला 'की स्रग सींपज की बग पंगति की मयूरकी पीढ़ पखोरी।' [सू० १३५
स्रगाल पु० सियार।
स्रजना—दे० 'सृजना'।
स्रद्धा—स्त्री० देखो 'श्रद्धा'।
स्रम—पु० परिश्रम, मेहनत (उदे० 'एड')।
स्रमित—वि० थका हुआ (उदे० 'उनींद')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्रवन—पु० देखो 'श्रवण' (उदे० 'नाना')।
स्रवना—अक्रि० चूना, बहना, छूटकर गिरना। सक्रि० चुवाना, गिराना।
स्रष्टा—पु० सृष्टि रचनेवाला। वि० निर्माता।
स्राध—दे० 'श्राद्ध' (विन ४२०)।
स्राप पु० शाप, बददुवा।
स्राव पु० बहना, क्षरण, गिरना। रस इ० जो चूकर या [बहकर निकले।
स्रिंग—दे० 'शृंग'।
स्रुत—वि० सुना हुआ। बहा हुआ।
स्रुति—दे० 'श्रुति'। क्षरण। स्रुतिमाथ = विष्णु।
स्रुवा—पु० आहुति डालनेका पात्र (कविता० १७५)।
स्रेनी—स्त्री० पंक्ति, वर्ग, सिकड़ी, सीढ़ी।
स्रोत—पु० झरना. सोता, धारा।
स्रोतस्वती,-स्विनी—स्त्री० नदी।
स्रोता—पु० सुननेवाला।
स्रोन—पु० श्रवण, कान।
स्रोनित—पु० शोणित, रक्त।
स्व—वि० अपना। पु० धन।
स्वकीया—स्त्री० अपने ही पतिसे प्रेम करनेवाली स्त्री।
स्वगत—क्रिवि० आपही आप (कहना)।
स्वच्छंद—वि० स्वतंत्र, स्वेच्छाचारी। क्रिवि० बे-रोक-टोक, मनमाना।
स्वच्छ—वि० साफ, स्पष्ट, शुभ्र, निर्मल।
स्वच्छना—सक्रि० साफ करना, पवित्र करना।
स्वजन—पु० सम्बन्धी, अपने परिवारका।
स्वतंत्र—वि० स्वाधीन, पृथक्, निर्बन्ध, स्वच्छन्द।
स्वतः—अ० आप ही, अपनेसे, स्वयं ही।
स्वत्व—पु० अधिकार।
स्वधा—अ० देवों पितरों आदिको जल, हवि इत्यादि देते समय प्रयुक्त शब्दविशेष। स्त्री० पितरोंका भोजन।
स्वन—पु० आवाज़, ध्वनि।
स्वपच—पु० श्वपच, चाण्डाल।
स्वपन, स्वपना, स्वप्न—पु० सपना, ख्वाब।
स्वप्माना—सक्रि० स्वप्न देना।
स्वभाउ, स्वभाव—पु० प्रकृति, तासीर, बान।
स्वभावतः—क्रिवि० स्वभावसे, सहजही।
स्वयं—अ० स्वतः, आप, आपसे।
स्वयंभू—पु० ब्रह्मा, शिव, विष्णु, कामदेव, स्वायंभुव मनु।
स्वयंवर—पु० अपना वर आप चुननेकी प्रथा या तत्सम्बंधी समारोह।
स्वयंसेवक—पु० विना कोई पुरस्कार लिये स्वेच्छासे सार्वजनिक सेवा इ० का काम करनेवाला।
स्वर पु० आवाज़, ध्वनि, शब्द। वे अक्षर जिनका उच्चारण अन्य अक्षरोंकी सहायताके विना हो सके।
स्वरग—पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ।
स्वरूप—पु० आकार, रूप, शोभा। अ० की तरह, तौर पर। वि० समान रूपवाला, समान।
स्वरोद—पु० एक बाजा।
स्वर्ग—पु० वैकुण्ठ, ऐश्वर्य और सुखकी जगह, आकाश।
स्वर्गगामी—वि० मृत।
स्वर्गवास—पु० मृत्यु।
स्वर्गीय—वि० मृत। स्वर्गका।
स्वर्ण—पु० सुवर्ण, सोना। स्वर्णकार—पु० सुनार।
स्वल्प—वि० किञ्चित्, नाममात्र।
स्ववरन—पु० सुवर्ण, सोना।
स्वशुर, स्वसुर—पु० ससुर, पति या पत्नीका पिता।
स्वसा—स्त्री० बहिन।
स्वस्ति—अ० आशीर्वाद सूचक शब्द, "भला हो"। स्त्री० मंगल।
स्वस्तिक—पु० एक शुभ चिन्ह 卐, एक मंगल पदार्थ, [एक यंत्र।
स्वस्तेन, स्वस्त्ययन—पु० मंगल-पाठ।
स्वस्थ—वि० नीरोग, शान्त, सावधान।
स्वहाना—अक्रि० शोभित होना।
स्वांग पु० ढोंग, बहाना, बनावटी वेश, नक़ल।
स्वांगना—अक्रि० छद्म-वेश धारण करना।
स्वांगी—पु० स्वाँग करनेवाला (रतन० ६), भाँड़, [बहुरुपिया।
स्वाँस—स्त्री० स्वाँसा—पु० साँस।
स्वागत—पु० आदर-सत्कार अभ्यर्थना।
स्वातंत्र्य—पु० आज़ादी, स्वाधीनता।
स्वात, स्वाति, स्वाती—स्त्री० एक नक्षत्र।
स्वानिसुत, स्वातिसुवन—पु० मोती।
स्वाद—पु० चखनेका अनुभव, ज़ायका, मिठास, चाह (उदे० 'बवन')।
स्वादिष्ट,-दीला—वि० ज़ायकेदार, अच्छे स्वादवाला।
स्वादु—वि० स्वादिष्ट, मधुर। सुन्दर। पु० मधुरता। [गुड़। महुआ।
स्वाधीन—वि० स्वतंत्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वाध्याय—पु० नियमपूर्वक अध्ययन। अनुशीलन।
स्वान—पु० कुत्ता। आवाज़। [वेदाध्ययन।
स्वाना—सक्रि० सुवाना, सुलाना (सू० १६१)।
स्वापन—पु० एक अस्त्र।
स्वाभाविक—वि० नैसर्गिक, प्राकृतिक, बनावटी नहीं।
स्वामि, स्वामी—पु० प्रभु, धनी, पति, राजा, ईश्वर।
स्वामिकार्त्तिक,-कुमार—पु० शिवपुत्र कार्त्तिकेय।
स्वामित,-मित्व, स्वाम्य—पु० प्रभुता (भ्र० १०६)।
स्वामिनी—स्त्री० मालिकिन, प्रभु-पत्नी। राधा।
स्वायत्त—वि० अपने अधिकारका, जो अपने अधीन हो।
स्वारथ, स्वार्थ—पु० अपना लाभ, अपना काम। वि०
स्वारस्य—पु० सरसता। [कृतार्थ, सफल।
स्वार्थपर,-परायण, स्वार्थी—वि० खुदगरज।
स्वाल—पु० सवाल, प्रश्न।
स्वास, स्वासा—दे० 'साँस'।
स्वास्थ्य—पु० तन्दुरुस्ती। शान्ति, सन्तोष।
स्वाहा—अ० हवनके समय प्रयुक्त एक शब्द। वि० नष्ट (स्वाहा करना द०)।
स्वीकार—पु० ग्रहण, अंगीकार।
स्वीकृति—स्त्री० मंजूरी, सम्मति।
स्वीय—वि० अपना। पु० सम्बन्धी, स्वजन।
स्वेच्छाचारी—वि० मनमानी करनेवाला, निरंकुश।
स्वेत—वि० श्वेत, सफेद, उज्वल।
स्वेद—पु० पसीना, ताप।
स्वैर—वि० स्वेच्छाचारी, स्वच्छन्द।
स्वैरिणी—स्त्री० कुलटा स्त्री।

ह।

हँकड़ना; हँकरना—अक्रि० झगड़ते समय ज़ोरसे चिल्लाना। [† १००)
हँकराना—सक्रि० बुलाना, टेरना। बुलवाना (रामा० †
हँकवाना—सक्रि० बुलवाना, आवाज़ देकर भगाना, हटाना या चलाना।
हँकवैया—पु० हाँकनेवाला।
हँका—स्त्री० हाँकने या ललकारनेकी आवाज़। हुंकार।
हँकाना—सक्रि० हाँकना, चलाना, बुलाना।
हंकार—स्त्री० पुकार ललकार (रामा० १०७)। पु० घमण्ड (साखी १४५)।
हँकारना—सक्रि० पुकारना, बुलाना (रामा० ४५)। मल्ल युद्ध प्रति कंस कुटिल मति छल करि इहाँ हँकारे।' सू० १९२। ललकारना।
हंकारना—अक्रि० हुंकार करना, ललकारना।
हँकारा—पु० पुकार, बुलावा।
हँकारी—वि० अहंकारी, अभिमानी (भू० १५१)।
हंगामा—पु० हल्ला। दंगा-फसाद। बलवा।
हंडा—पु० पीतलका बड़ा पात्र।
हँड़िया, हंडी—स्त्री० चावल आदि बनानेका या कोई चीज रखनेका मिट्टीका घड़ा।
हंत—अ० शोकसूचक शब्द।
हंता—पु० हनन करनेवाला, मारनेवाला।
हँफनि—स्त्री० हाँफनेकी क्रिया।
हंस—पु० एक पक्षी, परमात्मा, जीव 'लट छिटकावे तिरिया रोवै हंस इकेला जाई।' कबीर २८७ (उदे० 'सड़हट'), सूर्य, (हंससुता, हंसजा; सुजा० ४), एक तरहके संन्यासी।
हंसक-पु० हंस (या हंस + क = हंस + जल), बिछुआ 'तिन नगरी तिन नागरी प्रतिपद हंसक होन।' राम० ८८
हंसजा—स्त्री० यमुना। [‡ (प० ३५)
हँसतामुखी—वि० हँसते चेहरेवाला, प्रफुल्लवदन‡
हँसना—अक्रि० ठट्ठा मारना, हँसी करना, उपहास करना, प्रसन्न होना।
हँसमुख—वि० प्रसन्नमुख, हास्य-प्रिय।
हंसली—स्त्री० एक गहना, गलेके नीचेकी एक हड्डी।
हंसवाहन—पु० ब्रह्मा। हंसवाहिनी = सरस्वती।
हंस-सुता—स्त्री० सूर्यपुत्री यमुना (उदे० 'कजरी')।
हँसाई—स्त्री० हँसी, उपहास 'सूरदास प्रभु विरद लाज धरि मेटहु हाँकी नेक हँसाई।' भ्र० १३८
हँसाना—सक्रि० किसीको हँसनेमें प्रवृत्त करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हँसिया, हँसुआ—पु० लोहेका गोल सा झुका हुआ एक औज़ार।
हँसी—स्त्री० मज़ाक, हास्य, विनोद, उपहास, भद्द।
हँसोड़, हँसोर—वि० हास्यप्रिय, विनोदशील।
हँसौहा—वि० हास्योन्मुख, हास्ययुक्त (वि० ९५)। जो हँसता रहता हो।
ह—एक व्यंजन। आकाश, स्वर्ग, शिव, जल, इ०।
हई—स्त्री० अचंभा, आश्चर्य। पु० हयी, अश्वारोही।
हक़—पु० अधिकार, दस्तूरी, कर्त्तव्य। सत्य या न्यायकी बात। वि० वाजिब, सच, ठीक।
हक बकाना—अक्रि० भौचकसा होजाना, घबरा जाना।
हकला—वि० हकलानेवाला।
हकलाना—अक्रि० अटक अटक कर बोलना।
हक़ीक़त—स्त्री० सच्ची बात, सचाई।
हकीम—पु० वैद्य, पंडित।
हक़ीयत—स्त्री० अधिकार। वह वस्तु जिसपर हक़ हो।
हकीर—वि० तुच्छ, नगण्य।
हक्का-बक्का—वि० घबराया हुआ सा।
हगना—अक्रि० मलत्याग करना।
हचकाना—सक्रि० धक्का देकर हिलाना।
हचना—अक्रि० हिचकना।
हज—पु० मुसलमानोंकी मक्केकी यात्रा।
हजम होना—अक्रि० पचाना। हजम करना = पचा जाना, उड़ा लेना।
हज़रत—पु० महाशय, महात्मा।
हजाम—पु० नाई।
हजामत—पु० क्षौर, मुण्डन।
हजार—वि० दस सौ। क्रिवि० चाहे जितना।
हजारा—पु० हजार पद्योंका ग्रन्थ, फौवारा।
हजो—स्त्री० निंदा।
हज्जाम—पु० नाई।
हटक—स्त्री० मना करनेका काम, निषेध 'दुख आवत मन, हटक न मानत, सूनो देखि अगारा।' भ्र० १२८
हटकना—सक्रि० रोकना, मना करना (भ्र० १३८, सु० ४)
हटना—अक्रि० दूर होना, अलग होना, सरकना, टलना। सक्रि० हटकना, रोकना (दीन० ६८)।
हटबई—स्त्री० हाटमें बैठकर सौदा बेचनेवाली (रवि० १६)।
हटबया—पु० हाटमें बैठकर सौदा बेचनेवाला।
हटवाई—स्त्री० बाजारका लेन-देन, क्रयविक्रय।
हटवार—पु० सौदागर, व्यापारी।
हटाना—सक्रि० दूर करना, टालना, डिगाना।
हटौती—स्त्री० शरीरकी गठन।
हट्टा कट्टा—वि० मोटा ताज़ा।
हठ—पु० जिद, अड़, प्रण।
हठधर्मी—स्त्री० कट्टरपन।
हठना—अक्रि० हठ करना "करिहौं न तुमसों मान हठ, हठिहौं न माँगत दान।' भ्र० ६९ (विन० ७३१)।
हठात्—अ० हठपूर्वक, जबरन।
हठी, हठीला—वि० जिद्दी, दृढ़ संकल्पवाला।
हड़—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल।
हड़गिल्ल, हड़गीला—पु० एक पक्षी।
हड़ताल—स्त्री० किसी बातके प्रति असन्तोष जतानेको काम-काज बंद कर देना।
हड़पना—सक्रि० खा जाना, उड़ा देना, मार देना।
हड़बड़, हड़बड़ी—स्त्री० उतावलापन, शीघ्रता।
हड़बड़ाना—अक्रि० जल्दी करना। सक्रि० जल्दी करने के लिए प्रेरित करना।
हड़ावरि, हड़ावल—स्त्री० हड्डियोंका ढेर, अस्थिपञ्जर [(कविता० २००)
हड्डा—पु० बर्रेकी एक जाति।
हड्डी—स्त्री० अस्थि।
हत—वि० मारा हुआ, नष्ट किया हुआ, रहित (हतभ्रम, हतबुद्धि, हतोत्साह इ०)।
हतक—वि० पापी 'अब सजनी दूनो चढ्यो हतक मनोजहिं दाप।' मति० २०७
हतक इज़्ज़ती—स्त्री० मानहानि, अप्रतिष्ठा।
हतना—सक्रि० मारना (उदे० 'अपूठा', 'चौपट', रामा० ७२), नष्ट करना, प्रहार करना।
हतभागी, हतभाग्य—वि० भाग्यहीन।
हत्थ—पु० हाथ।
हत्था—पु० केलेका घौद। खेतोंमें पानी पटानेका एक औज़ार। मूठ। पंजेकी छाप।
हत्थि—पु० हाथी (भ्र० ५५)।
हत्या—स्त्री० हिंसा, वध, व्यर्थकी झंझट।
हत्यार, हत्यारा—वि० हत्या करनेवाला, पापी।
हथकंडा—पु० हाथका करतब, चालाकी।
हथकड़ी—स्त्री० कैदियोंके हाथ बाँधनेका लोहेका कड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हथनाल—पु० हाथीपर चलनेवाली तोप (छत्र० १११)।
हथफूल—पु० हाथकी पीठपर पहननेका गहना।
हथफेर—पु० हाथकी सफाई, क्षणिक ऋण, अदला-बदला।
हथलेआ,-लेवा—पु० पाणिग्रहणकी रीति (वि० १०८)।
हथवाँस—पु० पतवार, डाँड़ा इ०।
हथवाँसना—सक्रि० हाथमें लेना, प्रयोग करना, मिलकर पकड़ना (उदे० 'धाटारोह')।
हथसार—स्त्री० हस्तिशाला, पीलखाना।
हथाहथी—क्रिवि० हाथों हाथ, देखते देखते।
हथियाना—सक्रि० हाथसे झपटकर छीन लेना, हाथमें करना, गायब करना।
हथियार—पु० औज़ार, शस्त्र, उपकरण।
हथियारबंद—वि० शस्त्रयुक्त।
हथेरी, हथेली, हथोरी—स्त्री० हाथके भीतरकी ओर का हिस्सा, करतल।
हथौड़ा—पु० हाथसे ठोकने पीटनेका औज़ार।
हथ्यार—पु० औज़ार (उदे० 'अनरथ', 'बनजी')।
हथ्याना—दे० हथियाना (भू० १०५)।
हद—स्त्री० सीमा, चरम संख्या या परिमाण।
हदीस—स्त्री० मुसलमानोंका एक धर्मग्रंथ।
हनना—सक्रि० मार डालना (उदे० 'जेते', 'फिराना'), मारना 'बाँक नैन जनु हनहिं कटारी।' प० १४ पीटना (उदे० 'छवा'), बजाना (उदे० 'बनाव')।
हनु—स्त्री० चिबुक, ठुड्डी।
हनुमंत, हनुमान, हनुवँ—पु० पवनपुत्र, महावीर।
हनोज—अ० अभी।
हफ्ता—पु० सप्ताह।
हबशी, हबसी—पु० हबश देशमें रहनेवाला।
हबूब—पु० बुलबुला, तुच्छ बात।
हबेली—स्त्री० देखो 'हवेली'।
हब्बा डब्बा—पु० बच्चोंकी एक बीमारी।
हम—सर्व० 'मैं' का बहुवचन। पु० घमंड, अहंकार।
हमजोली—पु० साथी।
हमता—स्त्री० अहंकार।
हमदर्दी—स्त्री० सहानुभूति।
हमल—पु० गर्भ।
हमला—पु० आक्रमण, धावा।
हमाम—पु० स्नानागार।
हमाल—पु० बोझ उठानेवाला, मजदूर, रक्षक (भू २९)।
हमेल—स्त्री० एक तरहकी माला (उदे० 'चौकी')।
हमेव—पु० अहमेव, घमण्ड।
हमेशा, हमेसा—क्रिवि० सर्वदा।
हमेस—क्रिवि० हमेशा, सदा (उदे० 'कमाल')।
हम्माम—पु० नहानेका कमरा जहाँ गरम पानी रहता है।
हयंद—पु० श्रेष्ठ घोड़ा। 'हिंसत हयंद गजत करी'—सु० [जा० २९
हय—पु० घोड़ा।
हयना—सक्रि० हनना, मारना (सू० २३०), नष्ट करना, काटना 'प्रभु बहुबार बाहुसिर हये।' रामा ५०७, बजाना
हयनाल—स्त्री० घोड़ों द्वारा खींची जानेवाली तोप।
हयमेध—पु० अश्वमेध।
हयशाला—स्त्री० अस्तबल, घुड़सार।
हया—स्त्री० लाज, शरम।
हयात—स्त्री० ज़िन्दगी।
हर—पु० शिवजी। हल (उदे० 'ढोर')। वि० हरण करनेवाला, मारनेवाला। एक, प्रत्येक।
हरउद—पु० पलनेका गीत (विद्या० २३३)।
हरएँ—क्रिवि० धीरेसे 'दिनकर तनया स्याम जल द्वैधट भरे बनाइ। ताके भर गरुए भए हरएँ धारति पाइ।' मति० १९०
हरकत—स्त्री० चेष्टा, छेड़छाड़।
हरकारा—पु० दूत, डाकिया।
हरखना—अक्रि० हर्षित होना।
हरखाना—अक्रि० हर्षित होना (रामा० ४६)। सक्रि० प्रसन्न करना (उदे० 'जूमना')।
हरगिज़—अ० कदापि।
हरचंद—क्रिवि० बहुत।
हरजाई—स्त्री० वेश्या, कुलटा। पु० लंपट, अवारा।
हरजाना—पु० क्षतिपूर्त्ति।
हरट्ट—वि० हट्टा-कट्टा (उदे० 'गरट्ट')।
हरण—पु० दूरीकरण, चोरी, विनाश।
हरतार, हरताल—स्त्री० एक खनिज वस्तु।
हरद, हरदी—स्त्री० हल्दी 'दधि हरद इव फल फूल पान'-सू० ४५
हरना—सक्रि० हरण करना, ले लेना (उदे० 'जड़ताई'), छीन लेना, आकर्षित करना (उदे० 'फँट'), दूर करना। अक्रि० थकना, हारना। पु० मृग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरफ—पु० अक्षर ।
हरफारयोरी—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल (पं० १५) (उदे० 'कसौंदा') ।
हरबर—क्रिवि० शीघ्र, घबड़ाहटके साथ 'राम काजको काज जानि तहँ मुनिवर हरबर आयो' । रघु १३२
हरबराना—अक्रि० शीघ्रताके कारण घबरा जाना, शीघ्रता करना ।
हरबा—पु० हथियार ।
हरबोंग—वि० उजड्ड । पु० अंधेर ।
हरम—पु० अन्तःपुर (भू० ५९,६७) । स्त्री० रखैल, बीबी ।
हरवल—दे० 'हरावल' (सुजा० ५८) ।
हरवली—स्त्री० सेनाका नेतृत्व ।
हरवा—पु० हार । वि० हलका (सुन्द० १६८) ।
हरवाना—अक्रि० हलका होना । जल्दबाजी करना । हरवाइ = शीघ्रतासे 'काहू हरौ हियको हरवा, हरवाइ कोई कटिको पटु छोरै ।' भावि० ३०
हरवाह, हरवाहा—पु० हल चलानेवाला ।
हरष—पु० हर्ष, प्रसन्नता (उदे० 'छज्जा', प्योसार) ।
हरषना, हरषाना, हरसना—दे० 'हरखना', 'हरखाना' ।
हरसिंगार—पु० एक फूलवाला पेड़, परजाता ।
हरहार—पु० शिवका हार, साँप, शेषनाग ।
हरहाई—वि० स्त्री० तंग करनेवाली (गाय) ।
हरा—वि० सब्ज, ताज़ा, कच्चा, प्रसन्न । पु० हार ।
हराना—सक्रि० परास्त करना, विफल करना । थकाना ।
हराम—वि० अनुचित, निषिद्ध । पु० निषिद्ध वस्तु, अधर्म ।
हरारत—स्त्री० हलका बुखार, गर्मी ।
हरावरि—स्त्री० अस्थि-पुंज, अस्थिपंजर ।
हरावल—पु० सेनाका अग्रभाग, अगुआ ।
हरास—पु० ह्रास, क्षति, दुःख, उदासी (रामा २२५), निराशा 'धनुष तोरि हरि सबकर हरेउ हरास'-बरवै २०
हराहर—पु० देखो 'हलाहल' ।
हरि—पु० विष्णु, सूर्य, इन्द्र, अग्नि, सिंह, बन्दर, यम, चन्द्र, कोयल, मोर इ० ।
हरिअर, हरियर—वि० हरा (उदे० 'चोला'), ताजा ।
हरिअरी, हरिआली—स्त्री० हरापन, हरे हरे पेड़ पौधोंका विस्तार ।
हरिजाई—स्त्री० देखो० 'हरजाई' (रतन० १०२) ।
हरिजान—पु० गरुड़ ।
हरित—वि० हरा, बादामी रंगका ।
हरितमणि—पु० पन्ना या मरकत नामक रत्न ।
हरिधाम, हरिपद, हरिपुर—पु० वैकुण्ठ ।
हरिन, हरिण—पु० मृग ।
हरियाइ—देखो 'हरहाई (उदे० 'ढोलना') ।
हरियारी, हरियाली—स्त्री० देखो 'हरिआली' ।
हरिस, हरीस—स्त्री० हलकी वह लकड़ी जिसमें जूवा बाँधते हैं ।
हरिहाई—स्त्री० पशुओंको तंग करनेकी प्रवृत्ति (कबीर १३१)
हरीफ—पु० शत्रु (सुजा० ४८) ।
हरीरा—वि० हरा, ताज़ा, आनन्दित । पु० एक मसालेदार पेय-विशेष ।
हरुअ, हरुआ, हरुवा—वि० हलका 'उड़ौ फिरत जो तूल सम जहाँ तहाँ बेकाम । ऐसे हरुएको धरयौ कहा जान मन नाम ।' रतन० ५७ (उदे० 'पला') ।
हरुआई,-वाई—स्त्री० हलकापन (सूबे २५७) ।
हरुआना—अक्रि० हलका होना, शीघ्रता करना ।
हरुए—क्रिवि० धीरे धीरे ।
हरू—वि० हलका '...हरू गरू कछू जाइ न तोला ।' कबीर २४०
हरूफ—पु० हरफ़, अक्षर ।
हरें, हरे-हरें—क्रिवि० धीरे धीरे 'बातें बनाइ मनाइकै लाल हँसाइके बाल हरें मुख चूम्यो ।' भावि० ६० (उदे० 'जेठी') ।
हरेव—पु० मंगोल लोगोंकी जाति या देश ।
हरैं हरैं—क्रिवि० धीरे धीरे 'सापनेमें बिछुरे हरि हेरि हरैंई हरैं हरिनीदग रोवै ।' भावि० १९ (दीन० १५)।
हरैया—पु० हरनेवाला ।
हरौल—पु० हरावल ।
हर्ज—पु० नुकसान, अड़चन ।
हर्त्ता—पु० हरण करनेवाला ।
हर्फ—पु० अक्षर ।
हर्म्म—पु० बड़ा मकान, हवेली, अटारी ।
हर्रा—पु० हड़ ।
हर्ष—पु० खुशी, आनन्द ।
हर्षना—दे० 'हरखना' ।
हर्षाना—सक्रि० प्रसन्न करना । अक्रि० प्रसन्न होना ।
हल—पु० खेत जोतनेका यंत्र, हर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हलकंप—पु० व्याकुलता, हलचल '...लंक हलकम्प मच्यो'—रघु० २२५
हलक—पु० कंठ।
हलकना—अक्रि० हिलना (उदे० 'थलकना'), हिलोरा देना, लहराना (उदे० 'घुंघुवारा')।
हलका—वि० कम वज़नका, छोटा, ओछा, मंद, सरल, घटिया, कम, उथला, पतला। पु० मंडल, झुण्ड।
हलकारा—पु० पत्रादि ले जानेवाला, दूत (उदे० 'तरल', सुजा० १८)।
हलचल—स्त्री० खलबली, उथल—पुथल, घबराहट।
हलद, हलदी—स्त्री० हरदी, हरिद्रा।
हलना—अक्रि० हिलना (उदे० 'कनौती', 'ढीच')।
हलफ—पु० सौगंध।
हलफा—पु० लहर।
हलबल, -भल, -भली—स्त्री० हलचल।
हलराना—सक्रि० हिलाना डुलाना (उदे० 'मलराना' 'बुलराना', 'उछंग' रघु० ३७)।
हलवा—पु० हलुवा
हलवाई—पु० मिठाई बेचनेवाला।
हलवाह, -वाहा—देखो 'हरवाहा'।
हलाकानी—स्त्री० परेशानी।
हलाकी—वि० घातक, नाशक।
हलाभला—पु० नतीजा। निश्चय, फैसला।
हलाल—वि० धर्म-संगत, विधि-विहित।
हलालखोर—पु० मेहनतकी कमाई खानेवाला, भंगी।
हलाहल—पु० समुद्रोत्पन्न महाविष, तेज़ ज़हर।
हलुआ, -वा—पु० मोहनभोग।
हलुका—वि० हलका, जो भारी न हो (उदे० 'झीठ' 'गरुआ')।
हलोर—स्त्री०, हलोरा—पु० हिलोर, लहर।
हलोरना—सक्रि० हलोरा देना (सूबे० ११०), अनाज [साफ करना।
हल्ला—पु० हुल्लड़, शोरगुल, हमला।
हवन—पु० होम, आहुति।
हवलदार—पु० एक फौजी या मुल्की अफसर।
हवस—स्त्री० कामना, तृष्णा।
हवा—स्त्री० वायु। —खाना = टहलना। विफल होना। —बिगड़ना = संक्रामक रोग फैलना। —होजाना = भाग जाना या गायब होना।
हवाई—वि० हवामें उड़नेवाला, बेबुनियाद।
हवाल—पु० वृत्तान्त, घटना, नतीजा, दशा।
हवाला—पु० संकेत, नज़ीर। अधिकार, चंगुल 'आजु करउँ खलु काल हवाले।' रामा० ५०६
हवालात—पु० हिरासत, हाजत, पहरेके भीतर रखना। अभियुक्तके रखे जानेका स्थान।
हवास—पु० होश।
हवि—पु० होममें छोड़नेकी वस्तु।
हवेली—स्त्री० बड़ा मकान।
हव्य—पु० हवनकी वस्तु, हवि।
हसद—पु० डाह।
हसरत—स्त्री० अफसोस, दुःख।
हसीन—वि० सुन्दर, मनोहर।
हस्त—पु० हाथ, कर, सूँड़। हस्तगत = प्राप्त।
हस्तक्षेप—पु० किसी काममें दखल देना।
हस्तलिपि—स्त्री० हाथकी लिखावट।
हस्ताक्षर—पु० दस्तखत।
हस्तामलक—पु० हाथका आँवला, खूब जाना हुआ विषय।
हस्तिनी—स्त्री० हथिनी। स्त्रियोंका एक भेद।
हस्ती—पु० हाथी। स्त्री० अस्तित्व।
हस्ते—अ० मारफत।
हहरना—अक्रि० चकपका उठना, चौंकना (भावि० १०), थर्राना, ईर्ष्या करना।
हहराना—अक्रि० चौंकना, डरना, काँपना (उदे० 'झँक')
हहा—स्त्री० विनयसूचक शब्द, विनती (गीता ३५९)।
हाँ—अ० स्वीकृति प्रकट करनेका शब्द।
हाँक—स्त्री० टेर, गर्जन, दुहाई (उदे० 'अड़दार')।
हाँकना—सक्रि० हटाना, खदेड़ना, चलाना (उदे० 'अचाक' 'काल' 'चाँड़')। गर्जन करना, टेरना, ललकारना 'हाँक्यो बाघ उठ्यो बिरझान्यो।' छत्र १२
हांका—पु० टेर, ललकार, गर्जन (भू० १२१, १२९)।
हाँगी—स्त्री० स्वीकृति।
हाँडी—स्त्री० देखो 'हंड़ी', 'हँड़िया'।
हाँता—वि० परित्यक्त, दूरीकृत (ललित० १९४)।
हाँपना, हाँफना—अक्रि० जल्द जल्द साँस लेना।
हाँसल—पु० एक तरहका घोड़ा (प० १९)।
हाँसी—स्त्री० हँसी (उदे० 'जीवबन्द'), मज़ाक, बदनामी, निन्दा, उपहास (उदे० 'एँढ़ा')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हा, हाइ—अ० दुःखसूचक शब्द।
हाई—स्त्री० हालत, तरीक़ा, ढंग (भ्र० ८४)।
हाऊ—पु० हौवा (सू० ६०)।
हाकिम—पु० शासक (उदे० 'पोत')।
हाकिमी—वि० हाकिम या शासक सम्बन्धी। स्त्री० शासन, हुकूमत।
हाजत—स्त्री० हवालात। आवश्यकता (साखी ९८), खबर 'यकटक रही बिलोकि सूर प्रभु तनु की है कह हाजत।' सू० ८९
हाज़मा—पु० पाचनशक्ति, पाचनकार्य।
हाज़िर—वि० उपस्थित, तैयार।
हाज़िरजवाब—वि० चतुराईसे तुरंत उत्तर देनेवाला, प्रत्युत्पन्नमति।
हाजी—पु० हज करनेवाला।
हाट—स्त्री० बाज़ार या दूकान (उदे० 'गथ')।
हाटक—पु० सुवर्ण (उदे० 'फाटक')।
हाटकलोचन—पु० हिरण्याक्ष।
हाड़—पु० हड्डी।
हाड़ा—पु० देखो 'हड्डा'।
हाता—पु० घिरी हुई जगह, घेरा, मण्डल। वि० त्यागा हुआ, हटाया हुआ 'छीरोदक घूँघट हातो करि, सम्मुख दियो उघारि।' सू० १३९ (भाबि० १७,३५), दूर (भ्र० ३४, बिन० ३८९)। नाशक (बिन० १०८)।
हाथ—पु० कर, पाणि, १८ इंच लम्बाई, अधिकार।—आना,—पड़ना = अधिकारमें आना, मिलना।—उठाना = मारना, अभिवादन करना।—का सच्चा = व्यवहारका सच्चा, बढ़िया निशानेबाज़।—का मैल = नगण्य वस्तु।—खाली जाना = वार या दाँव चूक जाना।—खाली होना = खर्चके लिए तंग होना।—खींचना = देना बन्द कर देना, कार्यसे सम्बन्ध न रखना।—चलाना = प्रहार करना, परिश्रम करना।—जमना = अभ्यास होना।—जोड़ना = बिनती करना।—झाड़ना = प्रहार करना, हथियार चलाना।—धोना = दे देना, खो देना।—धोकर पीछे पड़ना = जीजानसे लगजाना।—पर हाथ धरे बैठना = निठल्ले बैठना।—पसारना—माँगनेके लिए हाथ बढ़ाना, याचना करना (उदे० 'कन')।—पाँव चलाना = परिश्रम करना।—पाँव पटकना = बेचैन होना।—पाँव मारना या हिलाना = खूब मेहनत करना, विकल होना।—फेरना = हड़प लेना, प्यार करना।—बैठना = अभ्यास होना।—मलना या मीजना = पछताना, दुःखित होना।—मारना,—साफ करना = डटकर भोजन करना, लूटना, उड़ालेना। हाथों हाथ = देखते देखते।
हाथा—पु० खेत पटानेका एक औजार, मूठ। पंजेकी छाप।
हाथापाई, हाथाबाँही—स्त्री० मुठभेड़।
हाथी—पु० गज। स्त्री० हाथका अवलम्बन।
हाथीपाँव—पु० 'फील पाँव' नामक रोग।
हाथीवान—पु० महावत।
हान, हानि—स्त्री० क्षति, घटी, बुराई।
हामी—स्त्री० स्वीकृति। पु० सहायक।
हाय—अ० दुःखसूचक शब्द। स्त्री० भीड़।
हायन—पु० वर्ष 'एकादस हायनके अंतर सहहिं जनेउ कुमारा।' रघु० ५२
हायल—वि० घायल, बेकाम।
हाय हाय—स्त्री० पीड़ा, दुःख, बेचैनी।
हार—पु० मोतियों इ० की माला। जंगल, खेत। पराजय, थकावट। हाल 'हारिल बिनवै आपन हारा।' प० १३
हारना—अक्रि० परास्त होना। थकना। खोना। नष्ट करना (उदे० 'गपना'), छोड़ना।
हारल—दे० 'हारिल'।
हारसिंगार—पु० देखो 'हरसिंगार'।
हारि—स्त्री० पराजय, थकावट 'मोहि लाग चलत न होइहि हारी।' रामा० २३०
हारित—पु० तोता। वि० हारा हुआ, वंचित, छीना हुआ।
हारिल—पु० एक पक्षी (उदे० 'हार', भ्र० २२)।
हारीत—पु० कबूतर। चोर।
हार्दिक—वि० हृदयका, सच्चा।
हाल—पु० वृत्तान्त, वर्णन, अवस्था,। स्त्री० पहियेपरका लोहेका पट्टा। हिलनेकी क्रिया। वि० वर्तमान।
हालगोला—पु० गेंद।
हालत—स्त्री० दशा।
हालना—अक्रि० हिलना 'केरा पास ज्यों बेर निरन्तर हालत दुख दै जाय।' भ्र० १४७ (उदे० 'जीरना'), झूलना, काँपना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हालमें—क्रिवि० अभी, शीघ्र।
हालरा—पु० बच्चेको लेकर हिलाना। हिलोरा।
हाली—क्रिवि० जल्दी।
हाव—पु० संयोग समयकी विविध चेष्टाएँ, विलास।
हावभाव—पु० नाज़-नखरा, चोचला।
हाशिया—पु० मगजी, किनारा।
हास, हास्य—पु० हँसी, उपहास।
हासिल—पु० उपज। लाभ, राज्यकर, लगान, खिराज। (भू० १६७) वि० प्राप्त।
हाहंत—अ० शोकसूचक शब्द।
हा हा—अ० हाय, हाय। हँसी या अनुनय-सूचक शब्द। पु० विनती (विन० ६२३)।
हाहाकार, हाहाहंतं—पु० दुःख भय इ० की चिल्लाहट, कोलाहल "हाहाकार कीन्ह गुरु"-रामा० ५९७
हिंकरना—अक्रि० हींसना, हिनहिनाना।
हिंछा—स्त्री० इच्छा।
हिंडोर, हिंडोरना, हिंडोरा,-ला—पु० एक तरहका झूला 'हिंडोरनो माई झूलत गोकुल चंद।' सू० १७४, 'यमुना पुलिन रच्यो हिंडोर' सू० १७५। (उदे० 'कुसुंभी' 'झोटा', प० ३१)।
हिंताल—पु० छोटी जातिका खजूर (भू० ८)।
हिंद—पु० हिन्दुस्थान, भारत।
हिंदी—वि० हिन्दका। स्त्री० हिन्द (संयुक्तप्रान्त, बिहार इ०) की भाषा।
हिंदुस्तान,-स्थान—पु० भारतवर्ष।
हिंदुस्तानी, हिंदुस्थानी—वि० भारतीय। स्त्री० हिन्दुस्थानकी बोलचालकी भाषा। पु० भारतवासी।
हिंदू—पु० आर्यधर्मानुयायी।
हिंदोरना—सक्रि० घघोलना।
हिंद्रोल—पु० देखो 'हिंडोर'।
हिंसक—वि० घातक, प्राणापहारी, खूँखार।
हिंसना—अक्रि० हिनहिनाना (उदे० 'हयंद')।
हिंसा—स्त्री० जीववध, घात, उत्पीड़न।
हिंस्र—वि० खूँखार।
हिअ, हिआ—पु० हृदय, उर, छाती।
हिआउ, हिआव—पु० हिम्मत, साहस (विन० ४२५)।
हिकमत—स्त्री० उपाय, विद्या, चाल।
हिकलाना—अक्रि० अटक अटक कर बोलना।
हिक्का—स्त्री० हिचकी।
हिचक, हिचकिचाहट—स्त्री० आगापीछा।
हिचकना, हिचकिचाना—अक्रि० रुकना, आगा पीछा करना, सशंक होना।
हिचकी—स्त्री० पेटकी वायुका धक्का देकर बाहर निकलना।
हिजड़ा, हिजरा—पु० नपुंसक।
हिजरी—पु० मुसलमानी संवत्।
हिज्जे—पु० किसी शब्दके वर्णोंका पृथक्करण।
हिज्र—पु० जुदाई।
हित—पु० कल्याण, भलाई, लाभ (उदे० "ठयना"), प्रेम (उदे० 'बिजना')। वि० हितू, लाभकारी, अनुकूल। अ० लिए, कारण
हितकर, हितकारी—वि० लाभदायक, उपयोगी, उपकारक।
हितता—स्त्री० भलाई।
हितवना, हिताना—अक्रि० प्रेमाविष्ट होना। प्रिय लगना 'नवल बधूके संगमें अहितौ बात हिताति।' मति० १७४
हितवार—पु० प्रेम (?) 'चुंबत अंग परस्पर जनु युग चंद करत हितवार।' सूबे० ८०
हिताई—स्त्री० संबंधी।
हितो, हितु, हितू—पु० शुभकांक्षी, मित्र (उदे० 'ठेलना'), सम्बन्धी।
हतेच्छु—वि० हित चाहनेवाला, शुभकांक्षी।
हितैषी—पु० मित्र। वि० भलाई चाहनेवाला।
हितौना—देखो 'हितवना'।
हिदायत—स्त्री० आदेश।
हिनवाना—पु० तरबूज।
हिनहिनाना—अक्रि० घोड़ेका बोलना, हींसना।
हिना—स्त्री० मेंहदी।
हिफाजत—स्त्री० रक्षा, सावधानी।
हिमंचल—पु० हिमाचल, हिमालय पर्वत।
हिमंत—पु० हेमंत ऋतु।
हिम—पु० बर्फ, जाड़ा, तुषार, चन्द्रमा। वि० ठंढा।
हिमकर—पु० चन्द्रमा।
हिमरश्मि, हिमरुचि, हिमांशु—पु० चन्द्रमा।
हिमवंत—पु० हिमालय, पार्वतीके पिताका नाम (उदे०
हिमवान—पु० हिमालय। वि० बर्फीला। ['अनंदना')।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिमाक़त—स्त्री० मूर्खता।
हिमायती—वि० समर्थक, सहायक।
हिम्मत—स्त्री० साहस, विक्रम।
हियरा, हिया—पु० हृदय, छाती नहिं हरिलौं हियरा धरौं, नहिं हरलौं अरधंग।' वि० २०४ (उदे० 'कैसिक')
हियाव—पु० साहस।
हिरकना—अक्रि० नजदीक जाना, सट जाना 'फिरैं फिरकीसी मौन फिरकी रहैं न नेक, कोऊ खिरकीमें कोऊ हिरकी किवारमें।' रामरसा०
हिरण—पु० हरिण। सोना। हिरण्य। पु० सोना, वीर्य।
हिरण्य—पु० सोना, धतूरा, वीर्य, तत्व, इ०।
हिरदय,-हिरदा—पु० हृदय (उदे० 'बटिया')।
हिरन—पु० हरिण।
हिराना—अक्रि० गुम हो जाना, गायब हो जाना (उदे० 'ऊपर', कबीर १७), 'भूख न दिन निसि नींद हिरानी, एकौ पल नहिं 'सोवत।' सू० २१२। भूल जाना, चकित हो जाना। सक्रि० भूल जाना। ढुँढ़वाना।
हिरास—स्त्री० भय, निराशा। वि० निराश, दुःखी 'यों कहि सुमंत हिय ह्वै हिरास।' रामरसा०
हिरासत—स्त्री० नज़रबन्दी, पहरा।
हिरौल—पु० देखो 'हरावल'।
हिर्स—स्त्री० लालच। स्पर्द्धा।
हिलकी—स्त्री० हिचकी 'सपनेमें लालन चलत लखि रोई अकुलाइ। जागत हू पिय हिय लगी हिलकी छऊ न जाइ।' मति० १२७, 'नाथके हाथके हेरि हरा हिय लागि गई हिलकी गलहीमें।' भावि० ६२। हिलोर, उमंग 'जो जागों तो कोऊ नाहीं, रोके रहनि न हिलकी-' सू० २०१
हिलकोरना—सक्रि० तरंगित करना, लहराना।
हिलकोरा—पु० तरंग।
हिलगना—अक्रि० उरझना, अटकना, हिल जाना, परचना।
हिलना—अक्रि० डोलना, सरकना, विचलित होना, काँपना। परचना।
हिलोर-स्त्री०,-रा, हिलोल—पु० लहर, झोंका, मौज।
हिलोरना—सक्रि० देखो 'हिलकोरना' (उदे० 'गागरी')
हिसका—पु० बराबर होनेकी इच्छा, ईर्ष्या।
हिसाब—पु० लेखा, गणित, दर, रीति, विचार, किफायत।
हिसिया—स्त्री० समकक्ष होनेकी इच्छा बराबरी। 'जो ऐसहि हिसिया करहिं नर विवेक अभिमान।' [रामा० ४३
हिस्सा—पु० भाग, टुकड़ा, अंग।
हिहिनाना—अक्रि० हिनहिनाना।
हींग—स्त्री० मसालेकी एक वस्तु जो छौंकने इ० में काम [आती है।
हींछा—स्त्री० इच्छा।
हींसना—अक्रि० हिनहिनाना।
हींसा—पु० हिस्सा (छत्र ५)।
ही—अ० निश्चय, अवधारण, परमिति इत्यादि सूचक शब्द। पु० हृदय। अक्रि० थी।
हीअ—पु० हृदय।
हीक—स्त्री० दुर्गन्धि, मतलाई, हिचकी।
हीचना—अक्रि० कचियाना, पीछे हटना (उदे० 'ढलीचना')।
हीलना—अक्रि० इच्छा करना। [
हीठना—अक्रि० पहुँचना, निकट जाना।
हीन—वि० रहित, जघन्य, घटिया, क्षुद्र, कम, दीन।
हीनयोनि—वि० नीच कुल या जातिका।
हीनवीर्य—वि० कमज़ोर।
हीनांग—वि० विकलांग।
हीय, हीयरा, हीया—पु० हृदय (प० ८)।
हीर—पु० सार भाग, शक्ति, तत्व, गूदा। हीरा, वज्र।
हीरक, हीरा—पु० एक बहुमूल्य पत्थर, वज्रमणि। कोई अमूल्य या प्यारी वस्तु।
हीरामन—पु० एक तरहका तोता।
हीला—पु० मिस, बहाना। कीचड़।
हुँ—अ० 'हाँ'।
हुँकरना, हुँकारना—अक्रि० हुँकारी भरना, गर्जना,
हुंकार—पु० गर्जन, ललकार। [दपटना।
हुँकारी—स्त्री० 'हुं' कहना, स्वीकृति।
हुंडी—स्त्री० एक तरहका चेक, निधिपत्र।
हुँत—प्रत्य० से, द्वारा, लिए 'तुम्ह हुत मँडप गवेउँ परदेसी।' प० १४९
हुंभी—स्त्री० गायके राँभनेकी आवाज़।
हु—अ० भी।
हुआना—अक्रि० सियारका बोलना (रामा० ५०४)।
हुक—पु० टेढ़ी कँटिया।
हुकरना, हुकारना—दे० 'हुँकरना', 'हुँकारना'।
हुकूमत—स्त्री० अधिकार, प्रभुत्व, शासन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पु० नारियल या धातु इ० का बना हुआ दो नलियोंवाला पात्र जिसपर चिलम बैठा कर तम्बाकू पीते हैं।

हुक्कापानी—पु० खान-पान, बिरादरीमें चलन।

हुक्काम—पु० अफसर (बहुव०)।

हुक्म—पु० आज्ञा, शासन, अनुमति।

हुक्मनामा—पु० आज्ञापत्र।

हुक्मी—वि० आज्ञाकारी। अचूक।

हुजूम—पु० भीड़।

हुजूर—पु० 'स्वामी, प्रभु'। दरबार। सामना, (हुजूरमें [= सामने)

हुज्जत—स्त्री० झगड़ा, व्यर्थ बकवाद।

हुड़दंग, हुरदंगा—पु० हुल्लड़।

हुडुन—पु० एक तरहका छोटा ढोल।

हुत—दे० 'हुँत' (प० १२)।

हुता, हुतो—अक्रि० था (उदे० 'अँजोर')।

हुताशन—पु० आग।

हुति—स्त्री० हवन। अ० अपादान और करणकी विभक्ति।

हुदना—अक्रि० भौंचक होना, ठहर जाना, रुकना।

हुन—पु० सुवर्ण मुद्रा।

हुनना—सक्रि० आहुति देना (रवि०)।

हुनर—पु० कला, विद्या, चतुराई।

हुब्ब—पु० प्रेम।

हुमकना, हुमगना—अक्रि० कूदना, ज़ोरसे पैर उठाना (उदे० 'मातल', रामा० २७७)।

हुमा—स्त्री० एक कल्पित पक्षी।

हुमेल—स्त्री० देखो 'हमेल'।

हुरमत, हुरमति—स्त्री० इज्जत, प्रतिष्ठा 'कहै कबीर बाप राम राया हुरमति राखहु मेरी।' कबीर १७७

हुरुमयी—स्त्री० एक तरहका नाच।

हुलकी—स्त्री० वमन।

हुलसना—अक्रि० प्रसन्न होना (रघु० ३५), आनन्दमय होना, उत्पन्न होना, उमड़ना। (उदे० 'फाल') शोभित होना '...हिये हुलसै बनमाल सुहाई।' रसवि० १

हुलसाना—सक्रि० आनन्दमय करना। अक्रि० आनन्दित होकर उमड़ना (उदे० 'कोरवा', रघु० ३५)।

हुलास—स्त्री० उल्लास, हर्ष, उत्साह (उदे० 'आगम' 'उमहना', प० १२)।

हुलिया—पु० रूपरंग, सूरत-शकल।

हुल्लड़—पु० कोलाहल, गड़बड़।

हुसियार, हुस्यार—वि० चतुर, चालाक।

हुस्न—पु० सुन्दरता, रूप, लावण्य, उत्कर्ष।

हुस्नपरस्ती—पु० सौन्दर्य-प्रेम।

हूँ—अ० स्वीकृति या समर्थन-सूचक शब्द।

हूँकना—अक्रि० हुंकार करना, गर्जना। गायका बछड़ेके लिए रँभना (भ्र० ७५)।

हूँठ—वि० साढ़े तीन, 'हूँठ पैंड़ दे वसुधा हमको, तहाँ रचौं धर्मसारी।' सू० २८

हूँसना—अक्रि० ललचाना, डाह उत्पन्न करना, कोसना।

हू—अ० भी। [सक्रि० नज़र लगा देना।

हूक—स्त्री० वेदना, साल, कसक।

हूकना—अक्रि० पीड़ा देना, सालना।

हूटना—अक्रि० अलग होना, मुड़ना हटना 'काल-ग्रस जंगतें नाहिं हूटयो।' सुजा० १७, 'जे हरौक तिनके मन हूटे।' छत्र० ७३

हूठा—पु० अँगूठा, ठेंगा।

हूड़—वि० उजड्ड, लापरवाह।

हूतो—अ० से, तरफसे (भ्र० १)।

हूदा—पु० धक्का, शूल, पीड़ा।

हूबहू—वि० वैसाही, ज्योंका त्यों।

हूर—स्त्री० स्वर्गकी अफसरा। दे० 'हूल'।

हूरना, हूलना—सक्रि० चुभाना, गड़ाना 'किहू दूर ही तें दये हूरि नेजा।' सुजा० २३ 'नहिं या उक्ति मृदुल श्रीमुखकी जे तुम उरमें हूलहु।' भ्र० १०१

हूल—स्त्री० कसक, पीड़ा, शूल। हर्षतरंग, कोलाहल।

हूह—स्त्री० गर्जन, हुंकार (रामा० ४९९)।

हृदयंगम—वि० समझमें आया हुआ।

हृदय, हृदै—पु० दिल, (उदे० 'ढेरा'), उर, वक्षःस्थल।

हृषीक—पु० इन्द्रिय।

हृष्टपुष्ट—वि० मोटा ताज़ा, प्रसन्न और स्वस्थ।

हेंगा—पु० खेत बराबर करनेकी लकड़ी।

हे—अ० सम्बोधनका एक शब्द। अक्रि० ये।

हेकड़—वि० जबर्दस्त, न दबनेवाला, अक्खड़।

हेच—वि० तुच्छ।

हेठ—क्रिवि० नीचे 'हेठ दाबि कपि भालु निसाचर।' रामा० ४९०। वि० नीचा, क्षुद्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्तिका

हिन्दी शब्दकोश

आचार्य सुधाकर द्विवेदी

- हिन्दी का आधुनिक, प्रामाणिक, नवीनतम कोश.
- संविधान परिषद द्वारा स्वीकृत हिन्दी-अंग्रेजी एवं अंग्रेजी हिन्दी शब्दावली.
- ब्रज भाषा, अवधी, आदि शब्दों का समावेश.
- समाहित शब्दों के ग्रन्थों का सन्दर्भ.
- आधुनिक साहित्य तथा प्राचीन हिन्दी कविता के पाठकों के लिये संग्रहणीय.

• वर्तिका प्रकाशन •
W-127-A, ग्रेटर कैलाश-1
नई दिल्ली-110 048.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu